Yoga Vasishtha, Book 7 — Nirvāṇa II — part 2, chapters 109–216

Liberation, part two. Sanskrit with English and Hindi.

From yogavasishtha.com — edition of 28 September 2026. The Sanskrit is in the public domain. The English and Hindi translations were made with a language model and have not been reviewed by a Sanskrit scholar: read them as a study aid, not as an authority. Each verse gives the Sanskrit in Devanagari and IAST, then the English, then the Hindi.

Chapter 109

7.109.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतस्मिन्नन्तरे सर्वे मन्त्रिणो नृपमाययुः । मुनयो वासवमिव दैत्याक्रान्तनभोभुवम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etasminnantare sarve mantrino nṛpamāyayuḥ | munayo vāsavamiva daityākrāntanabhobhuvam || 1 ||

Shri Vasishtha said: Meanwhile, all the ministers approached the king, like sages approaching Indra when the sky and earth are besieged by demons.

श्री वसिष्ठ ने कहा: इस बीच, सभी मंत्री राजा के पास आए, जैसे ऋषि इंद्र के पास आते हैं जब आकाश और पृथ्वी दैत्यों से घिरे होते हैं।

7.109.2

मन्त्रिण ऊचुः । देव निर्णीतमस्माभिर्यावन्न विषयोऽरयः । त्रयाणामप्युपायानां दण्डस्तेषु विधीयताम् ॥ २ ॥

mantrino ūcuḥ | deva nirṇītamasmābhiryāvanna viṣayo'rayaḥ | trayāṇāmapyupāyānāṃ daṇḍasteṣu vidhīyatām || 2 ||

The ministers said: O King, we have decided that as long as the enemies are not subdued, among the three strategies, punishment should be imposed on them.

मंत्री ने कहा: हे राजन्, हमने यह निर्णय लिया है कि जब तक शत्रु वश में नहीं आते, तीनों उपायों में से दंड उन पर लागू किया जाए।

7.109.3

प्रणयोऽनुप्रवेशो वा न कदाचन यः कृतः । अधुना तेषु तं देव कुर्यात्तेषु कथैव का ॥ ३ ॥

praṇayo'nupraveśo vā na kadācana yaḥ kṛtaḥ | adhunā teṣu taṃ deva kuryātteṣu kathaiva kā || 3 ||

Neither conciliation nor infiltration has ever been done. Therefore, O King, now that strategy should be employed on them, whatever it may be.

न तो समझौता किया गया है और न ही घुसपैठ की गई है। इसलिए, हे राजन्, अब उन पर जो भी उपाय हो, उसे लागू किया जाए।

7.109.4

पापा म्लेच्छा धनाढ्याश्च नानादेश्याः सुसंहताः । बहवो लब्धरन्ध्राश्च सामादेर्नास्पदं द्विषः ॥ ४ ॥

pāpā mlecchā dhanāḍhyāśca nānādeśyāḥ susaṃhatāḥ | bahavo labdharandhrāśca sāmādernāspadaṃ dviṣaḥ || 4 ||

The sinful barbarians are wealthy, from various regions, well-organized, numerous, and have found opportunities. There is no place for conciliation with such enemies.

ये पापी म्लेच्छ धनवान, विभिन्न क्षेत्रों से, अच्छी तरह से संगठित, बहुत संख्या में और अवसर पा चुके हैं। ऐसे शत्रुओं के साथ समझौते की कोई जगह नहीं है।

7.109.5

तत्सुसाहसमेवेदं वर्जयित्वा प्रतिक्रिया । नान्यास्ति शीघ्रमेवातो रणोद्योगो विधीयताम् ॥ ५ ॥

tatsusāhasamevedaṃ varjayitvā pratikriyā | nānyāsti śīghramevāto raṇodyogo vidhīyatām || 5 ||

Therefore, abandoning any other response, there is no other quick solution except for this bold action. Hence, preparation for war should be made immediately.

इसलिए, किसी अन्य प्रतिक्रिया को छोड़कर, इस साहसिक कार्य के अलावा कोई अन्य तेज समाधान नहीं है। इसलिए, युद्ध की तैयारी तुरंत की जानी चाहिए।

7.109.6

वीराणां दीयतामाज्ञा पूज्यन्तामिष्टदेवताः । आहूयन्तां च सामन्ता हन्यतां रणदुण्दुभिः ॥ ६ ॥

vīrāṇāṃ dīyatāmājñā pūjyantāmiṣṭadevatāḥ | āhūyantāṃ ca sāmantā hanyatāṃ raṇaduṇḍubhiḥ || 6 ||

Let the command be given to the brave warriors, let the favored deities be worshipped, let the allies be summoned, and let the war drums be beaten.

वीरों को आज्ञा दी जाए, इष्ट देवताओं की पूजा की जाए, सामन्तों को बुलाया जाए और युद्ध के डंके बजाए जाएं।

7.109.7

सन्नह्यन्तामशेषेण निर्गच्छन्तु रणे भटाः । क्रियन्तां कालकम्पाभ्रमेदुरा राजिता दिशः ॥ ७ ॥

sannahyantāmaśeṣeṇa nirgacchantu raṇe bhaṭāḥ | kriyantāṃ kālakampābhra medurā rājitā diśaḥ || 7 ||

Let all the soldiers be fully armed and go forth to battle. Let the directions be adorned with dark clouds that cause the earth to tremble.

सभी सैनिक पूर्णतः सशस्त्र हों और युद्ध के लिए निकलें। दिशाओं को पृथ्वी को काँपने वाले काले बादलों से सजाया जाए।

7.109.8

आस्फाल्यन्तां धनूंष्युच्चैः क्वणन्तु गुणपङ्क्तयः । भवन्तु जलदश्यामाः ककुभः खण्डमण्डलैः ॥ ८ ॥

āsphālyantāṃ dhanūṃṣyuccaiḥ kvaṇantu guṇapaṅktayaḥ | bhavantu jaladaśyāmāḥ kakubhaḥ khaṇḍamaṇḍalaiḥ || 8 ||

Let the bows be strung loudly, let the bowstrings twang. Let the skies be filled with dark clouds in broken circles.

धनुषों को उच्च स्वर में ताना जाए, धनुष की डोरियाँ टंकित हों। आकाश को टूटे हुए वृत्तों में काले बादलों से भरा जाए।

7.109.9

स्फुरज्ज्याविद्युतः शूरवारिदा घनगर्जिताः । नाराचधारा मुञ्चन्तु कचत्कोदण्डकुण्डलाः ॥ ९ ॥

sphurajjyāvidyutaḥ śūravāridā ghanagarjitāḥ | nārācadhārā muñcantu kacatkodaṇḍakuṇḍalāḥ || 9 ||

Let the lightning flashes be like the strings of the bows of the brave warriors, resounding like thunder. Let the arrows be released like the curls of the bows.

विद्युत की चमक वीर योद्धाओं के धनुष की डोरियों की तरह हो, जो गर्जन की तरह गूँजे। बाणों को धनुष की लपेटों की तरह छोड़ा जाए।

7.109.10

राजोवाच । गम्यतां सङ्गरायाशु संविधानं विधीयताम् । स्नात्वाहं पूजयित्वाग्निं निर्गच्छामि रणाजिरम् ॥ १० ॥

rājovāca | gamyatāṃ saṅgarāyāśu saṃvidhānaṃ vidhīyatām | snātvāhaṃ pūjayitvāgniṃ nirgacchāmi raṇājiram || 10 ||

The king said, 'Let us go swiftly to the battle. Let the preparations be made. Having bathed and worshipped the fire, I will go forth to the battlefield.'

राजा ने कहा, 'चलिए, हम शीघ्र युद्ध के लिए जाएँ। तैयारी कर ली जाए। स्नान करके और अग्नि की पूजा करके मैं युद्धभूमि की ओर निकलूँगा।'

7.109.11

इत्युक्त्वा नृपतिः स्नातो महारम्भोऽपि स क्षणात् । प्रावृषीव नवोद्यानं गङ्गाजलधरैर्घटैः ॥ ११ ॥

ityuktvā nṛpatiḥ snāto mahārambho'pi sa kṣaṇāt | prāvṛṣīva navodyānaṃ gaṅgājaladharairghaṭaiḥ || 11 ||

Having said this, the king, who was also a great warrior, bathed immediately. Like a new garden in the rainy season, he was adorned with pots filled with Ganga water.

ऐसा कहकर, वह महान योद्धा राजा तुरंत स्नान करने लगा | वर्षा ऋतु में नया उद्यान की तरह, वह गंगा जल से भरे घड़ों से सजा था।

7.109.12

अथ प्रविष्टोऽग्निगृहं पूजयित्वा हुताशनम्। आदरेण यथाशास्त्रं चिन्तयामास भूमिपः ॥ १२ ॥

atha praviṣṭo'gnigṛhaṃ pūjayitvā hutāśanam | ādareṇa yathāśāstraṃ cintayāmāsa bhūmipaḥ || 12 ||

Then, entering the fire chamber, he worshipped the fire god with respect according to the scriptures. The king meditated.

फिर, अग्नि कक्ष में प्रवेश करके, उसने शास्त्रों के अनुसार सम्मान से अग्नि देवता की पूजा की | राजा ने ध्यान किया।

7.109.13

नीतमायुरनायासविलासविभवश्रिया। प्रजाभ्यो दत्तमभयमासमुद्रसमुद्रितम् ॥ १३ ॥

nītamāyuranāyāsavilāsavibhavaśriyā | prajābhyo dattamabhayamāsamudrasamudritam || 13 ||

He led a life of ease, wealth, and prosperity without effort. He granted fearlessness to his subjects, which was as vast as the ocean.

उसने बिना किसी परिश्रम के सुख, धन और समृद्धि से भरपूर जीवन बिताया | उसने अपने प्रजा को समुद्र के समान विशाल अभय दान किया।

7.109.14

आक्रान्तवसुधापीठाः पादपीठे कृता द्विषः। लताः फलभरेणेव नमिताः ककुभो दश ॥ १४ ॥

ākrāntavasudhāpīṭhāḥ pādapīṭhe kṛtā dviṣaḥ | latāḥ phalabhareṇeva namitāḥ kakubho daśa || 14 ||

The enemies were defeated and made to bow down at his feet, like creepers laden with fruits bowing down to the earth.

शत्रु हार गए और उन्हें उसके चरणों में झुकना पड़ा, जैसे फलों से भरी लताएँ पृथ्वी पर झुकती हैं।

7.109.15

प्रजाचित्तेन्दुबिम्बेषु लिखितं धवलं यशः। भूमावारोपिता कीर्तिलता त्रिपथगामिनी ॥ १५ ॥

prajācittendubimbeṣu likhitaṃ dhavalaṃ yaśaḥ | bhūmāvāropitā kīrtilatā tripadhagāminī || 15 ||

His fame, white and shining, was inscribed in the minds of his subjects like the moon. His glory, like a creeper, spread across the three worlds.

उसकी चमकीली और श्वेत कीर्ति उसके प्रजाजनों के मन में चंद्रमा की तरह अंकित है | उसकी कीर्ति लता की तरह तीनों लोकों में फैली हुई है।

7.109.16

कोशवद्भरिता रत्नैः सुहृन्मित्रार्यबन्धवः। निपीतोऽर्णवतीरेषु नालिकेररसासवः ॥ १६ ॥

kośavadbharitā ratnaiḥ suhṛnmitrāryabandhavaḥ | nipīto'rṇavatīreṣu nālikererasāsavaḥ || 16 ||

The treasury is filled with gems, and friends, allies, and relatives are like treasures. The nectar of coconut juice has been drunk on the shores of the ocean.

खजाना रत्नों से भरा हुआ है, और मित्र, सहयोगी और रिश्तेदार खजाने के समान हैं। समुद्र के किनारे पर नारियल का रस पिया गया है।

7.109.17

द्विषामाकम्पिता भेकगलाङ्गत्वगिवासवः। मच्छासनाङ्किता जाता द्वीपान्तरकुलाचलाः ॥ १७ ॥

dviṣāmākampitā bhekagalāṅgatvagivāsavaḥ | macchāsanāṅkitā jātā dvīpāntarakulācalāḥ || 17 ||

The enemies are trembling like the skin of a frog, and the islands are marked with the signs of fish, having become mountain ranges of different islands.

शत्रु मेंडक की त्वचा के समान काँप रहे हैं, और द्वीपों पर मछलियों के चिह्नों से चिह्नित हैं, जो अलग-अलग द्वीपों के पर्वत श्रृंखला बन गए हैं।

7.109.18

विहृतं सिद्धसेनासु दिगन्तनवभूमिषु। भूम्यन्तभूभृतां मूर्ध्नि विश्रान्तं मेघलीलया ॥ १८ ॥

vihṛtaṃ siddhasenāsu digantanavabhūmiṣu | bhūmyantabhūbhṛtāṃ mūrdhni viśrāntaṃ meghalīlayā || 18 ||

Enjoyment in the armies of the perfected beings, in the new lands at the ends of the directions. Resting on the summit of the earth-bearers at the end of the earth, with the play of clouds.

सिद्ध पुरुषों की सेनाओं में आनंद, दिशाओं के अंत में नए भूमि पर। पृथ्वी के अंत में पृथ्वी-धारकों के शिखर पर विश्राम, बादलों के खेल के साथ।

7.109.19

धियेवोच्चैःपदे ज्ञानपूर्णयैकान्तशीलया। विलब्धान्यविनष्टानि राष्ट्रानीष्टार्थकारिणा ॥ १९ ॥

dhiyevoccaiḥpade jñānapūrṇayaikāntaśīlayā | vilabdhānyavinaṣṭāni rāṣṭrānīṣṭārthakāriṇā || 19 ||

Intelligence, as if on a high position, with knowledge-filled, single-minded devotion. The kingdoms are obtained, not destroyed, by the one who fulfills desired objectives.

बुद्धि, मानो उच्च पद पर, ज्ञान-भरी, एकांत शील के साथ। राज्य प्राप्त होते हैं, नष्ट नहीं होते, उस व्यक्ति द्वारा जो इच्छित उद्देश्यों को पूरा करता है।

7.109.20

रक्षांस्यप्यविनीतानि बद्धानि निगडैर्घनैः। धर्मार्थकामैरन्योन्यं चयापचयवर्जितैः ॥ २० ॥

rakṣāṃsyapyavinītāni baddhāni nigaḍairghanaiḥ | dharmārthakāmairanyonyaṃ cayāpacayavarjitaiḥ || 20 ||

Even the demons are disciplined, bound by heavy shackles. They are bound to each other by dharma, artha, and kama, without increase or decrease.

यहाँ तक कि राक्षस भी अनुशासित हैं, भारी बेड़ियों से बँधे हुए। वे धर्म, अर्थ और काम से एक-दूसरे से बंधे हुए हैं, वृद्धि या ह्रास के बिना।

7.109.21

अखण्डितैर्मया नीतं पीतातियशसा वयः। इदानीं शष्पविश्रान्तप्रालेयभरभासुरम् ॥ २१ ॥

akhANDitairmayA nItam pItAtiyashasA vayaH | idAnIm shaShpaviShrAntaprAleyabharabhAsuram || 21 ||

I have spent my youth in an unbroken manner, with great fame. Now, it is like a grass blade, exhausted and shining with the burden of frost.

मैंने अपनी युवावस्था अखंडित रूप से और बड़ी प्रसिद्धि के साथ बिताई है। अब यह घास की पत्ती की तरह है, थका हुआ और हिम के बोझ से चमकता हुआ।

7.109.22

आगतं वार्धकं सर्वभोगसंरम्भमार्जनम्। तस्योपर्यरयो रौद्रा बलवन्तो रणैषिणः ॥ २२ ॥

Agatam vArdhakam sarvabhogasanrambhamArjanam | tasyoparyarayo raudrA balavanto raNaiShiNaH || 22 ||

Old age has come, which is the cleansing of all enjoyments. Above it, there are fierce and powerful enemies who are eager for battle.

वृद्धावस्था आ गई है, जो सभी भोगों का शोधन है। इसके ऊपर, कुछ भयंकर और शक्तिशाली शत्रु हैं, जो युद्ध के लिए उत्सुक हैं।

7.109.23

संभूय सर्वतः प्राप्ताः संदिग्धो वर्तते जयः। तदिहैवानलायास्मै देवाय जयदायिने ॥ २३ ॥

saMbhUya sarvataH prAptAH saMdigdho vartate jayaH | tadihaivAnalAyAsmai devAya jayadAyine || 23 ||

Having gathered from all sides, victory is uncertain. Therefore, I offer this to the fire god, the giver of victory.

सभी ओर से एकत्र होकर, विजय अनिश्चित है। इसलिए, मैं इसे अग्नि देवता, विजय देने वाले को अर्पित करता हूं।

7.109.24

मस्तकाहुतिमेवेमां समुद्यम्य ददामि वै । राजोवाच । कृशानो देव मूर्धाऽयं तुभ्यमाहुतितां गतः ॥ २४ ॥

mastakAhutimevemAM samudyamya dadAmi vai | rAjovAcha | kRuShAno deva mUrdhAyaM tubhyamAhutitAM gataH || 24 ||

I offer this head as a sacrifice. The king said, 'O lean god, this head is offered to you as a sacrifice.'
मैं इस सिर को बलि के रूप में अर्पित करता हूं। राजा ने कहा, 'हे दुबला देव, यह सिर तुम्हें बलि के रूप में अर्पित है।'

7.109.25

मया पूर्वं पुरोडाश इव देवेश दीयते । यदि तुष्टोऽसि भगवंस्तदनेन कृतेन मे ॥ २५ ॥

mayA pUrvaM puroDAsaH iva deveSa dIyate | yadi tuShTo'si bhagavaMstadanena kRutena me || 25 ||

I offer this as I would offer a sacred cake to the lord of gods. If you are pleased, O lord, then let it be done by this act of mine.
मैं इसे उसी तरह अर्पित करता हूं जैसे मैं देवताओं के स्वामी को एक पवित्र पिंड अर्पित करता हूं। यदि तुम संतुष्ट हो, हे भगवान, तो यह मेरे इस कार्य से हो जाए।

7.109.26

चत्वारो भवतः कुण्डात्स्वदेहाः प्रोद्भवन्तु मे । बलवन्तः श्रिया दीप्ता नारायणभुजा इव ॥ २६ ॥

catvāro bhavataḥ kuṇḍātsvadehāḥ prodhavantu me | balavantaḥ śriyā dīptā nārāyaṇabhujā iva || 26 ||

May four powerful bodies, radiant with prosperity, arise from your pit, like the arms of Narayana.
आपके कुंड से चार शक्तिशाली शरीर, समृद्धि से दीप्त, नारायण की भुजाओं की तरह उत्पन्न हों।

7.109.27

तैश्चतुर्दिक्कमेवारीन्वध्यामहमविघ्नतः । त्वया च दर्शनं देयं मह्यं मतिमते विभो ॥ २७ ॥

taiścaturdikkamevārīnvadhyāmahamavighnataḥ | tvayā ca darśanaṃ deyaṃ mahyaṃ matimate vibho || 27 ||

With those four, I will slay the enemies in all directions without any obstacle. And you, O wise one, should grant me your vision.
उन चारों के साथ, मैं सभी दिशाओं में शत्रुओं को बिना किसी बाधा के मारूँगा। और हे बुद्धिमान, आप मुझे अपना दर्शन दें।

7.109.28

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्युक्त्वा स महीपालः खड्गमादाय चिच्छिदे । शिरः कमलमालोलं लीलयेवाशु बालकः ॥ २८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityuktvā sa mahīpālaḥ khaṅgamādāya cicchide | śiraḥ kamalamālolaṃ līlayevāśu bālakaḥ || 28 ||

Sri Vasistha said: Having said this, the king took his sword and swiftly cut off his head, which was swaying like a lotus, as if in play, like a child.
श्री वसिष्ठ ने कहा: ऐसा कहकर, राजा ने अपनी तलवार उठाई और कमल की तरह हिलते हुए अपना सिर एक बच्चे की तरह खेल-खेल में तुरंत काट दिया।

7.109.29

छिन्नमेष शिरो यावज्जुहोत्यसितवर्त्मने । तावच्छरीरेण सह पपाताग्नौ स पार्थिवः ॥ २९ ॥

chinnameṣa śiro yāvajjuhotyasitavartmane | tāvaccharīreṇa saha papātāgnau sa pārthivaḥ || 29 ||

As soon as his head was cut off, he offered it to the dark path. At that very moment, he fell into the fire along with his body.
जैसे ही उसका सिर कटा, उसने उसे अंधकारमय मार्ग को समर्पित कर दिया। उसी क्षण, वह अपने शरीर के साथ अग्नि में गिर पड़ा।

7.109.30

भुक्त्वाथ वह्निस्तं देहं ददावस्मै चतुर्गुणम्। महतामुपयुक्तं हि सद्य एवाभिवर्धते ॥ ३० ॥

bhuktvātha vahnistadehaṃ dadāvasmai caturguṇam | mahatāmupayuktaṃ hi sadya evābhivardhate || 30 ||

Having consumed that body, the fire then granted him a body four times as powerful. Indeed, what is used by the great ones immediately grows.

उस शरीर को भक्षण करने के बाद, अग्नि ने उसे चार गुना शक्तिशाली शरीर प्रदान किया। निश्चित रूप से, जो महान लोगों द्वारा उपयोग में लाया जाता है, वह तुरंत बढ़ता है।

7.109.31

चतुर्मूर्तिरथोत्तस्थौ पावकाद्वसुधाधिपः। प्रज्वलंस्तेजसां पुञ्जैर्नारायण इवार्णवात्॥ ३१ ॥

caturmūrtirathottasthau pāvakādbasudhādhipaḥ | prajvalaṃstejasāṃ puñjairnārāyaṇa ivārṇavāt || 31 ||

The lord of the earth rose from the fire with four forms, blazing with the radiance of a multitude of energies, like Narayana from the ocean.

पृथ्वी के स्वामी अग्नि से चार रूपों में उठे, अनेक ऊर्जाओं की चमक से प्रज्वलित, जैसे नारायण समुद्र से उठे हैं।

7.109.32

ते देहास्तस्य चत्वारो विरेजुर्भास्वरत्विषः। सहजातोत्तमोत्तंसभूषणायुधवाससः ॥ ३२ ॥

te dehāstasya caturāro virejurbhāsvaratviṣaḥ | sahajātottamottaṁsabhūṣaṇāyudhavāsasaḥ || 32 ||

Those four bodies of his shone with radiant splendor, adorned with the best ornaments, weapons, and garments, born together.

उनके चारों शरीर चमकदार तेज से प्रकाशित हो रहे थे, जो सर्वोत्तम आभूषणों, अस्त्र-शस्त्रों और वस्त्रों से सजे हुए थे, साथ-साथ उत्पन्न हुए थे।

7.109.33

सकंकटशिरस्त्राणाः समौलिकटकाङ्गदाः। सहारकुण्डलाभोगाः सर्वाः सर्वे महाशयाः ॥ ३३ ॥

sakaṅkaṭaśirastrāṇāḥ samau likatakāṅgadāḥ | sahārakuṇḍalābhogāḥ sarvāḥ sarve mahāśayāḥ || 33 ||

All of them were adorned with helmets, crowns, bracelets, necklaces, and earrings, and were all great souls.

सभी हेलमेट, मुकुट, कंगन, हार और कुंडलों से सजे हुए थे, और सभी महान आत्माएँ थीं।

7.109.34

सर्व एव समाकाराः सदृशावयवान्विताः। चञ्चलोच्चैःश्रवःप्रख्यं हयरत्नमवस्थिताः ॥ ३४ ॥

sarva eva samākārāḥ sadṛśāvayavānvitāḥ | cañcaloccaiḥśravaḥprakhyaṁ hayaratnamavasthitāḥ || 34 ||

All of them had similar forms and were endowed with comparable limbs. They were mounted on excellent horses, which were as swift as the wind.

सभी के रूप समान थे और समान अंगों से युक्त थे। वे वायु के समान वेगवान उत्तम घोड़ों पर सवार थे।

7.109.35

ससुवर्णशरापूर्णतूणीराः सुमहाशयाः। समानगुणकोदण्डाः समानवपुषः शुभाः ॥ ३५ ॥

sasuvarṇaśarāpūrṇatūṇīrāḥ sumahāśayāḥ | samānaguṇakodaṇḍāḥ samānavapuṣaḥ śubhāḥ || 35 ||

They were equipped with quivers full of golden arrows, were great souls, had bows of equal quality, and had auspicious and similar bodies.

वे सोने के तीरों से भरे तरकशों से सुसज्जित थे, महान आत्माएँ थीं, समान गुणों वाले धनुष रखते थे, और उनके शरीर शुभ और समान थे।

7.109.36

समारोहन्ति ते यस्मिन्पुंसि नागे रथे हये । सर्वेषामरिदोषाणां नैव गम्यो भवत्यसौ ॥ ३६ ॥

samārohanti te yasminpuṃsi nāge rathe haye | sarveṣāmaridoṣāṇāṃ naiva gamyo bhavatyasau || 36 ||

In that man, elephant, chariot, or horse in which you are mounted, all the faults of the enemy cannot be found.

उस पुरुष, हाथी, रथ या घोड़े में जिसमें आप सवार होते हैं, शत्रु के सभी दोष नहीं मिलते।

7.109.37

पीत्वा धृत्वा चिरं कालं गर्भे पुरुषतापिताः । वेद्यामिव हितास्तत्र सागरा वडवार्चिषा ॥ ३७ ॥

pītvā dhṛtvā ciraṃ kālaṃ garbhe puruṣatāpitāḥ | vedyāmiva hitāstatra sāgarā vaḍavārciṣā || 37 ||

Having drunk and held for a long time in the womb, they are heated by the man, as if they are offerings in the sacrificial fire, the oceans with the mare's flame.

पीकर और लंबे समय तक गर्भ में धारण करके, वे पुरुष द्वारा तपाए जाते हैं, जैसे कि वे यज्ञ की अग्नि में आहुति हों, घोड़ी की ज्वाला वाले समुद्र।

7.109.38

रत्नाश्वदेहकुसुमोत्करपूर्णदेहाश्चत्वार इन्दुहसितैरवभासयन्तः । सन्मूर्तयो हरय एव यथाब्धयो वा वेदा इवाहुतिहुतादनलात्प्रससृुः ॥ ३८ ॥

ratnāśvadehakusumotkarapūrṇadehāścatvāra induhisitairavabhāsayantaḥ | sanmūrtayo haraya eva yathābdhayo vā vedā ivaāhutihutādanalātprasasruḥ || 38 ||

With bodies full of gem-like horses and flower clusters, the four, shining with the smiles of the moon, appeared like embodied forms of Vishnu or like the oceans, or like the Vedas emerging from the sacrificial fire.

रत्नों जैसे घोड़ों और फूलों के गुच्छों से भरे शरीरों वाले चारों, चाँद की मुस्कानों से चमकते हुए, विष्णु के मूर्तिमान रूपों के समान या समुद्रों के समान, या यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न वेदों के समान प्रकट हुए।

Chapter 110

7.110.1

पुरोपकण्ठसंप्राप्तैश्चतुर्दिक्कं सहारिभिहेतस्मिन्नन्तरे तत्र प्रवृत्तं दारुणं रणम् ॥ १ ॥

puropakaṇṭhasaṃprāptaiścaturdikkaṃ sahāribhihetasminnantare tatra pravṛttaṃ dāruṇaṃ raṇam || 1 ||

In the meantime, a fierce battle ensued on all sides with the enemies who had reached the vicinity.
इस बीच, जो शत्रु निकट पहुंच गए थे, उनके साथ चारों ओर भयंकर युद्ध छिड़ गया।

7.110.2

लुण्ठितग्रामनगरं प्रजाकुलमहाकुलमग्निदाहज्वलद्देहं धूमाभ्रपटलावृतम् ॥ २ ॥

luṇṭhitagrāmanagaraṃ prajākulamahākulamagnidāhajvaladdehaṃ dhūmābhrapaṭalāvṛtam || 2 ||

The villages and towns were looted, the people were in great distress, bodies were burning in the fire, and the sky was covered with smoke.
गांव और शहर लूटे गए, लोग बड़े दुःख में थे, शरीर आग में जल रहे थे, और आकाश धुएं से ढका हुआ था।

7.110.3

शरजालमहाधूमच्छन्नार्कविलसत्तमःक्षिप्रदृष्टरवि क्षिप्रमदृष्टरविमण्डलम् ॥ ३ ॥

śarajālamahādhūmacchannārkavilasattamaḥkṣipradṛṣṭaravi kṣipramadṛṣṭaravimaṇḍalam || 3 ||

The sun's splendor was obscured by a dense cloud of arrows and great smoke, and the sun's disc was quickly hidden from view.
सूर्य की चमक तीरों के घने बादल और धुएं से ढक गई, और सूर्य का मंडल जल्दी ही दृष्टि से ओझल हो गया।

7.110.4

अग्निदाहमहातापप्रतपत्पर्णकाननम्लोलालातलताशलमुसलोपलपूर्णखम् ॥ ४ ॥

agnidāhamahātāpapratapatparṇakānanamlolālātalatāśalamusalopalapūrṇakham || 4 ||

The forest, burning with intense heat, was filled with the sound of crackling leaves and the clashing of weapons.
आग से जलता हुआ वन, तीव्र गर्मी से जल रहा था, और पत्तों की चरमराहट और हथियारों की टक्कर की आवाज से भरा हुआ था।

7.110.5

अनलप्रतिबिम्बघैर्द्विगुणज्वलनायुधम्रणभग्नमहाशूरप्राप्तेन्द्रवनितासुधम् ॥ ५ ॥

analapratibimbaughairdviguṇajvalanāyudhamraṇabhagnamahāśūraprāptendravanitāsudham || 5 ||

With weapons that reflect the fire and are twice as fierce, the great warrior, broken in battle, attained the nectar of Indra's heaven.
आग की प्रतिबिंब वाले और दोगुनी तेज वाले हथियारों के साथ, महान योद्धा, युद्ध में टूट गया, और इंद्र के स्वर्ग का अमृत प्राप्त किया।

7.110.6

उद्दामवारणारावै रणलम्पटहर्षदम् । भुशुण्डीमण्डलप्रासशूलतोमरवर्षदम् ॥ ६ ॥

uddāmavāraṇārāvai raṇalampaṭaharṣadam | bhuśuṇḍīmaṇḍalaprāsaśūlatomaravarṣadam || 6 ||

With the elephants roaring loudly and the warriors rejoicing in battle, the scene was filled with the shower of spears, javelins, and tridents.
हाथियों के उच्च गर्जन और योद्धाओं के युद्ध में आनंद लेने से परिदृश्य भालों, भालों और त्रिशूलों की वर्षा से भरा हुआ था।

7.110.7

भटकोलाहलोल्लासहृद्भङ्गमृतपामरम्। रजःपटलशुभ्राभ्रकृतद्युपथवारणम्॥ ७॥

bhaṭakolāhalollāsahṛdbhaṅgamṛtapāmaram | rajaḥpaṭalaśubhrābhra kṛtadyupathavāraṇam || 7 ||

The hearts of the warriors were filled with joy and excitement, but the battlefield was strewn with the dead. The dust raised by the battle created a cloud-like cover over the path.

योद्धाओं के हृदय आनंद और उत्साह से भरे हुए थे, लेकिन युद्धक्षेत्र मृतकों से भरा हुआ था। युद्ध से उठी धूल ने मार्ग पर बादल जैसा आवरण बना दिया।

7.110.8

मरणव्यग्रसामन्तमुक्तनादव्रजद्रजम्। इतश्चेतश्च निपतद्वैद्युतोपहतप्रजम्॥ ८॥

maraṇavyagrasāmantamuktanādavrajadrajam | itaścetaśca nipatadvaidyutopahataprajam || 8 ||

The surroundings were filled with the cries of those anxious about death. People were fleeing in all directions, struck by the lightning-like weapons.

आसपास मृत्यु की चिंता से भरे हुए लोगों के चीखने की आवाज भरी हुई थी। लोग हर दिशा में भाग रहे थे, बिजली की तरह हथियारों से घायल होकर।

7.110.9

अग्निदग्धपतद्गेहप्रोज्झिताग्निमयाम्बुदम्। मरणाह्लाददासंख्यशरधारामयाम्बुदम्॥ ९॥

agnidagdhapatadgehaprojhitāgnimayāmbudam | maraṇāhlādadāsaṃkhyasharadhārāmayāmbudam || 9 ||

The houses were burning and falling, resembling clouds of fire. The countless arrows raining down brought joy to those seeking death.

घर जल रहे थे और गिर रहे थे, आग के बादलों की तरह दिख रहे थे। असंख्य तीरों की वर्षा मृत्यु की इच्छा रखने वालों को आनंद दे रही थी।

7.110.10

जितसागरकल्लोलं तुरङ्गमतरङ्गकैः। दन्तिदन्तविनिष्पेषतारक्रेंकारकर्कशम्॥ १०॥

jitasāgarakallolaṃ turaṅgamatarṅgakaiḥ | dantidantaviniṣpeṣatārakreṅkārakarkaśam || 10 ||

The ocean was conquered by the waves of horses. The harsh sound of the elephants' tusks being crushed echoed through the battlefield.

घोड़ों की लहरों ने समुद्र को जीत लिया था। हाथियों के दाँतों के कुचले जाने की कर्कश आवाज युद्धक्षेत्र में गूंज रही थी।

7.110.11

कोटकोटिकुटीकुड्यकण्टकोद्भटसद्भटम्। चठत्कुण्ठितकोटाट्टकृटाटननटच्छटम्॥ ११॥

koṭakoṭikutīkuḍyakaṇṭakodbhaṭasadbhaṭam | caṭhatkuṇṭhitakoṭāṭṭakṛṭāṭananaṭacchaṭam || 11 ||

The sound of the clashing of countless swords and shields, the roar of the battlefield, and the thunderous noise of the warriors' cries.

असंख्य तलवारों और ढालों की टकराहट की आवाज, युद्धभूमि का गर्जन और योद्धाओं के चिल्लाने की गड़गड़ाहट।

7.110.12

लुठत्पटनकुट्टाकसाटोपस्फुटपट्टिशम्। खे वटत्केतुपट्टाट्टपटत्पटपटारवम्॥ १२॥

luṭhatpaṭanakuṭṭākasāṭopasphuṭapaṭṭiśam | khe vaṭatketupaṭṭāṭṭapaṭatpaṭapaṭāravam || 12 ||

The sound of the clashing of weapons and the roar of the warriors' cries fill the air, creating a thunderous noise that echoes through the battlefield.

हथियारों की टकराहट और योद्धाओं के चिल्लाने की आवाज हवा में भर जाती है, जिससे युद्धभूमि में गड़गड़ाहट भर जाती है।

7.110.13

दन्तिदन्तगुणोद्गीर्णैर्हेतिपाषाणघर्षणैःतारक्रेंकारहुंकारैराहूतसुरवारणम्॥ १३ ॥

dantidantaguṇodgīrṇairhetipāṣāṇagharṣaṇaiḥtārakreṃkārahuṃkārairāhūtasuravāraṇam || 13 ||

The elephants, with their tusks raised high, grind stones with their trunks, making loud trumpeting sounds that summon the gods to battle.

हाथियों के दांत ऊपर उठे हुए हैं, वे अपने सूंड से पत्थरों को पीस रहे हैं, और उनकी तेज चिंघाड़ की आवाज देवताओं को युद्ध के लिए बुला रही है।

7.110.14

वहच्चरणदीपूरपूर्णाम्बरमहार्णवम्विचलच्चक्रकुन्तासिधारामकरकर्कशम्॥ १४ ॥

vahaccharanadīpūrapūrṇāmbaramahārṇavamvicalaccakrakuntāsidhārāmakarakarkaśam || 14 ||

The vast ocean, filled with moving chariots and the sharp rays of the sun, creates a turbulent and fierce scene.

चलती हुई रथों और सूर्य की तेज किरणों से भरा हुआ विशाल समुद्र, एक अशांत और भयंकर दृश्य बनाता है।

7.110.15

उन्नादयोधसंघट्टकंकटोत्कटटांकृतैः। लसज्झणझणारावैर्घटितद्वीपमण्डलम्॥ १५॥

unnādayodhasaṃghaṭṭakaṃkaṭotkaṭaṭāṃkṛtaiḥ | lasajjhaṇajhaṇārāvairghaṭitadvīpamaṇḍalam || 15 ||

The sound of the clashing of weapons and the roar of the warriors' cries fill the air, creating a thunderous noise that echoes through the battlefield and the surrounding islands.

हथियारों की टकराहट और योद्धाओं के चिल्लाने की आवाज हवा में भर जाती है, जिससे युद्धभूमि और आसपास के द्वीपों में गड़गड़ाहट भर जाती है।

7.110.16

पादपातपरापिष्टशरसंजातकर्दमम्। वहद्रक्तनदीरंहःप्रोह्यमाणरथद्विपम्॥ १६॥

pādapātaparāpiṣṭaśarasaṃjātakardamam | vahadraktanadīraṃhaḥprohyamāṇarathadvipam || 16 ||

The earth is covered with the mud created by the arrows that have fallen from the trees, and the elephants are being driven forward, carrying the chariots across the river of blood.

पृथ्वी पेड़ों से गिरे हुए बाणों के कीचड़ से ढकी हुई है, और हाथियों को खींचकर रथों को रक्त की नदी पार करवाया जा रहा है।

7.110.17

सुपर्णहेलानिपतत्प्रोत्पतत्पट्टपट्टिशम्। शरवारितरङ्गार्तभग्नायुधजलेचरम्॥ १७॥

suparṇahelānipatatprotpatatpaṭṭapaṭṭiśam | śaravāritaraṅgārtabhagnāyudhajalecaram || 17 ||

The eagles are falling and rising, and the shields are being lifted. The waves of arrows are causing distress, and the broken weapons are floating in the water.

गरुड़ गिर रहे हैं और उठ रहे हैं, और ढालें उठाई जा रही हैं। बाणों की लहरें पीड़ा पैदा कर रही हैं, और टूटे हुए हथियार पानी में तैर रहे हैं।

7.110.18

हेतिसंघट्टनिष्क्रान्तज्वालाप्रज्वलिताम्बरम्। वलीपलितनिर्मुक्तशूराक्रान्तत्रिविष्टपम्॥ १८॥

hetisaṃghaṭṭaniṣkrāntajvālāprajvalitāmbaram | valīpalitanirmuktaśūrākrāntatriviṣṭapam || 18 ||

The sky is illuminated by the flames emanating from the clash of weapons, and the brave warriors have conquered the three worlds, free from the bonds of old age.

आकाश हथियारों के टकराने से निकली ज्वालाओं से प्रज्वलित है, और वीर योद्धाओं ने बुढ़ापे के बंधनों से मुक्त होकर तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की है।

7.110.19

पाण्डुपांसुपयोवाहकचच्चक्राचिरद्युति । हेतिनिर्विवराकाशयुधानाधारभूतलम् ॥ १९ ॥

pāṇḍupāṃsupayovāhakacaccakrāciradyuti | hetinirvivarākāśayudhānādhārabhūtalam || 19 ||

The battlefield is covered with pale dust, and the chariots are shining brightly. The sky is filled with the gaps created by the weapons, and the ground is the support for the weapons.

युद्धक्षेत्र फीकी धूल से ढका हुआ है, और रथ चमक रहे हैं। आकाश हथियारों द्वारा बनाई गई खाली जगहों से भरा हुआ है, और ज़मीन हथियारों का आधार है।

7.110.20

कटद्भटभटाटोपरटत्प्रतिभटोत्कटम् । चटच्छकटसंघट्टपिष्टकाष्ठलुठद्रथम् ॥ २० ॥

kaṭadbhaṭabhaṭāṭoparaṭatpratibhaṭotkaṭam | caṭacchakaṭasaṃghaṭṭapiṣṭakāṣṭhaluṭhadratham || 20 ||

The soldiers are shouting loudly, and the opposing soldiers are fierce. The chariots are clashing, and the broken pieces of wood are scattered.

सैनिक जोर से चिल्ला रहे हैं, और विपक्षी सैनिक उग्र हैं। रथ टकरा रहे हैं, और टूटे हुए लकड़ी के टुकड़े बिखरे हुए हैं।

7.110.21

कबन्धभटवेतालमिश्रकण्टकसंकटम् । वेतालभुज्यमानाग्र्यशवमांसहृदम्बुजम् ॥ २१ ॥

kabandhabhaṭavetālamiśrakaṇṭakasaṅkaṭam | vetālabhujyamānāgryaśavamāṃsahṛdambujam || 21 ||

A place filled with headless torsos, warriors, and ghosts, mixed with thorns and difficulties. A lotus that delights in the flesh of the best corpses being eaten by ghosts.

कबंधों, योद्धाओं और भूतों से भरा हुआ स्थान, जो काँटों और कठिनाइयों से मिश्रित है। भूतों द्वारा खाए जा रहे श्रेष्ठ शवों के मांस से आनंदित कमल।

7.110.22

शूरशातितशीरार्धशिरःकरखुरोरुकम् । कबन्धदोर्द्रुमस्पन्दवनीकृतनभस्तलम् ॥ २२ ॥

śūraśātitasiśīrārdhaśiraḥkarakhurorukam | kabandhadordrumaspandavanīkṛtanabhastalam || 22 ||

A place where the heads of brave warriors are severed, and the sky is filled with the trembling of headless torsos and trees.

एक स्थान जहाँ बहादुर योद्धाओं के सिर काटे जाते हैं, और आकाश कबंधों और पेड़ों के काँपने से भरा हुआ है।

7.110.23

तरल्लोलास्यवेतालहासघट्टितपेटकम् । कंकटोत्कटसाटोपभटभ्रुकुटिभीषणम् ॥ २३ ॥

tarallolāsyavetālahāsaghṭṭitapeṭakam | kaṅkaṭotkaṭasāṭopabhaṭabhrkuṭibhīṣaṇam || 23 ||

A place where the laughter of ghosts with swaying faces resounds, and the terrifying frowns of warriors with raised swords create fear.

एक स्थान जहाँ हिलते चेहरों वाले भूतों का हँसना गूँजता है, और उठाए हुए तलवारों वाले योद्धाओं के भयानक भौंहें डर पैदा करती हैं।

7.110.24

एकान्तमारणैकान्तमरणैकान्तभूषणम् । प्रहारदानग्रहणकार्पण्यापारदूषणम् ॥ २४ ॥

ekāntamāraṇaikāntamarṇaikāntabhūṣaṇam | prahāradānagrahaṇakārpaṇyāpāradūṣaṇam || 24 ||

A place where death is the only ornament, and the act of giving and receiving blows is a boundless disgrace.

एक स्थान जहाँ मृत्यु ही एकमात्र आभूषण है, और प्रहार देना और लेना असीम अपमान है।

7.110.25

शूरवारणसामन्तमदवारिविशोषणम्। मारणैकान्तरसिककृतान्तानन्दपोषणम्॥ २५॥

śūravāraṇasāmantamadavāriviśoṣaṇam | māraṇaikāntarasikakṛtāntānandapoṣaṇam || 25 ||

A place where the intoxication of battle is enjoyed, and the delight in killing is nourished by the joy of death.

एक स्थान जहाँ युद्ध का नशा आनंद लिया जाता है, और मारने का आनंद मृत्यु के सुख से पोषित होता है।

7.110.26

अविकत्थनगुप्तानां शूराणां जयघोषणम्। अशूराणां च गुप्तानां प्रभावुद्घोषणं परम्॥ २६॥

avikatthana guptānāṃ śūrāṇāṃ jayaghōṣaṇam | aśūrāṇāṃ ca guptānāṃ prabhāvuddhōṣaṇaṃ param || 26 ||

The victory cry of the brave who are protected by the unwavering is supreme | The awakening of the splendor of the unprotected cowards is also supreme

जिनकी रक्षा अटल लोगों द्वारा होती है, उन शूरवीरों का विजय घोष परम है | जो कायर हैं और उनकी रक्षा नहीं है, उनके प्रभाव का उद्घोषण भी परम है

7.110.27

शौर्यादीनां प्रसुप्तानां स्वगुणानां प्रबोधनम्। धनमाधारभूतानां राष्ट्रेषु भुजशालिनाम्॥ २७॥

śauryādīnāṃ prasuptānāṃ svaguṇānāṃ prabodhanam | dhanamādhārabhūtānāṃ rāṣṭreṣu bhujashālinām || 27 ||

The awakening of one's own qualities that are dormant due to bravery and other virtues | The support of wealth for the strong-armed in the country

शौर्य और अन्य गुणों के कारण सोए हुए अपने गुणों का जागरण | देश में मजबूत बाहों वालों के लिए धन का आधार

7.110.28

दन्त्यारूढरथास्फोटप्रभग्नकटवारणम्। समस्तमत्तगन्धेभदानवारिनिवारणम्॥ २८॥

dantyārūḍharathāsphoṭaprabhagnakaṭavāraṇam | samastamattagandhebhadānavārinivāraṇam || 28 ||

The breaking of the chariot's axle and the destruction of the fort | The complete prevention of the intoxicated elephants and demons

रथ के धुरे का टूटना और दुर्ग का विनाश | मतवाले हाथियों और दानवों का पूर्ण रोक

7.110.29

सारसारवसामन्तमुक्तमत्तमतङ्गजम्। जरज्जितकरानीककल्पितासीकवेदनम्॥ २९॥

sārasāravasāmantamuktamattamataṅgajam | jarajjitakarānīkakalpitāsīkavedanam || 29 ||

The essence of the best, the released intoxicated elephants, and the sound of the arrows made by the trembling hands of the army

सबसे बेहतरीन का सार, छोड़े गए मतवाले हाथियों, और सेना के काँपते हाथों द्वारा बने तीरों की आवाज

7.110.30

दिनं दिनकरस्येव नृपस्य शरणं गतम्। अनागतभटव्रातपिष्टार्धमृतमानवम्॥ ३०॥

dinaṃ dinakarasyeva nṛpasya śaraṇaṃ gatam | anāgatabhaṭavrātapiṣṭārdhamṛtamānavam || 30 ||

Like the day of the sun, the refuge of the king has been reached | The half-dead man who has not yet arrived in the battlefield

सूर्य के दिन की तरह, राजा का आश्रय प्राप्त हुआ है | जो योद्धा अभी तक युद्धक्षेत्र में नहीं पहुँचा है, वह अर्धमृत मनुष्य

7.110.31

मानवायुबलोन्मत्तनतप्रारब्धकुट्टनम्। धनानां प्राणपण्यानां नवमापणपत्तनम्॥ ३१॥

mānavāyubalonmattanataprārabdhakuṭṭanam | dhanānāṃ prāṇapaṇyānāṃ navamāpaṇapattanam || 31 ||

The ninth marketplace, where the pride of human strength is intoxicated by the commencement of penance, and where wealth is the life-breath of trade.

नवीं बाजार, जहाँ मानवीय शक्ति का घमंड तपस्या के आरंभ से मतवाला हो जाता है, और जहाँ धन व्यापार की जान है।

7.110.32

पटनद्धपताकौघजातसंचारिदोर्द्रुमम्। रक्तोज्ज्वलत्वात्त्रैलोक्यलक्ष्म्या भूषणविद्रुमम्॥ ३२॥

paṭanaddhapatākaughajātasaṃcāridordrumam | raktojjvalatvātttrailokyalakṣmyā bhūṣaṇavidrumam || 32 ||

The tree of the moving flags, born from the multitude of flags, is brilliantly red and ornaments the three worlds with its splendor.

झंडों की भीड़ से उत्पन्न चलती झंडियों का वृक्ष, उज्ज्वल लाल है और अपनी शोभा से तीनों लोकों को अलंकृत करता है।

7.110.33

मन्दराहननोद्भूतक्षीरोदजलसुन्दरैः। छत्रैश्छादितहेत्योघपुष्पाढ्यगगनाङ्गनम्॥ ३३॥

mandarāhananodbhūtakṣīrodajalasundaraiḥ | chatraiśchāditahetyoghapuṣpāḍhyagaganāṅganam || 33 ||

Beautiful with the waters of the milky ocean churned by the Mandara mountain, covered with umbrellas, and adorned with a multitude of flowers in the sky.

मंदराचल के मथन से उत्पन्न क्षीरसागर के जल से सुंदर, छत्रों से ढका हुआ, और आकाश में फूलों की भरमार से सजा हुआ।

7.110.34

गणगीर्वाणगन्धर्वगीतशूराशयं कृतम्। तद्भातरलतालाग्रहेतिहालाहलायुधम्॥ ३४॥

gaṇagīrvāṇagandharvagītaśūrāśayaṃ kṛtam | tadbhātaralatālāgraheti hālāhalāyudham || 34 ||

Made with the brave intentions of the songs of the Gaṇas, sages, and Gandharvas, and armed with the weapon of the Hālāhala poison at the tip of the creeper.

गण, ऋषि और गंधर्वों के गीतों के साहसी इरादों से बना हुआ, और लता के अग्रभाग पर हालाहल विष के अस्त्र से सुसज्जित।

7.110.35

संघप्रहरणासंख्ययातुधानाझणज्झणम्। भुक्त्वा चाद्रिगुहागेहपूरितापूर्वदुर्द्रुमम्॥ ३५॥

saṃghaprahaṇāsaṃkhyayātudhānājhaṇajjhaṇam | bhuktvā cādriguhāgehapūritāpūrvadurdrumam || 35 ||

Having enjoyed the previous difficult trees filled with the cave dwellings, with the innumerable weapons of the multitude of demons.

पहले कठिन वृक्षों का आनंद लेकर, जो गुफाओं के निवास से भरे हुए हैं, असंख्य असुरों के अस्त्रों से।

7.110.36

कचत्कुन्तवनव्यस्तशिरःकरवृताम्बरम्। क्षेपणोन्मुक्तपाषाणपूरप्लुतककुब्लतम्॥ ३६॥

kacatkuntavanavyastaśiraḥkaravṛtāmbaram | kṣepaṇonmuktapāṣāṇapūraplutakakublataṃ || 36 ||

The cloth covering the head, disheveled by the forest of thorns, and the pot filled with stones released by the sling.

कांटों के जंगल से बिखरे हुए सिर पर कपड़ा और गेंद से छूटे हुए पत्थरों से भरा हुआ घड़ा।

7.110.37

महाचटचटाशब्दस्फुटद्रववृहद्द्रुमम्। नारीहलहलारावरणन्नगरमन्दिरम्॥ ३७॥

mahācaṭacaṭāśabdasphuṭadravavṛhaddrumam | nārīhalahalārāvaraṇannagaramandiram || 37 ||

The great clattering sound, the flowing liquid from the large tree, and the city palace resounding with the cries of women.

बड़े खड़खड़ाहट की आवाज, बड़े पेड़ से बहती हुई द्रव, और महिलाओं की चीखों से गूंजता हुआ शहर का महल।

7.110.38

मन्दरावानलाकारनभोभातायुधव्रजम्। परित्यज्य धनं गेहं दूरोर्वीविद्रुतप्रजम्॥ ३८॥

mandarāvānalākāranabhobhātāyudhavrajam | parityajya dhanaṃ gehaṃ dūrorvīvidrutaprajam || 38 ||

Abandoning wealth and home, the people fled far away from the earth, which appeared like a blazing fire from the weapons.

धन और घर को छोड़कर, लोग हथियारों से जलती हुई आग की तरह दिखने वाली पृथ्वी से दूर भाग गए।

7.110.39

सर्वतोहेतिवहनात्समक्षप्रेक्षकोज्झितम्। वर्जितं भीरुभिः पक्षिराजवृन्दमिवाहिभिः॥ ३९॥

sarvatohetivahanātsamakṣaprekṣakojjhitam | varjitaṃ bhīrubhiḥ pakṣirājavṛndamivāhibhiḥ || 39 ||

Abandoned by the timid, like a flock of birds by snakes, it was deserted by the spectators due to the carriage of weapons from all sides.

डरपोकों द्वारा त्याग दिया गया, जैसे सांपों द्वारा पक्षियों का झुंड, यह दर्शकों द्वारा सभी ओर से हथियारों की सवारी के कारण छोड़ दिया गया।

7.110.40

दन्तिदन्तविनिष्पिष्टशिष्टसद्भटसंकटम्। कटे मृत्योरिव नरद्राक्षापीडनयन्त्रके॥ ४०॥

dantidantavinișpiṣṭaśiṣṭasadbhaṭasaṅkaṭam | kaṭe mṛtyoriva naradrākṣāpīḍanayantrake || 40 ||

The remnants of the good warriors crushed by the elephant's tusks, as if in the waist of death, in the machine that grinds human bones.

हाथी के दांतों द्वारा कुचले गए अच्छे योद्धाओं के अवशेष, जैसे मृत्यु की कमर में, मानव हड्डियों को कुचलने वाली मशीन में।

7.110.41

यन्त्रपाषाणसंघट्टपिष्टाम्बरगतायुधम्। योधनादनदद्दन्तिवृन्दबन्धुरकन्दरम्॥ ४१॥

yantrapāṣāṇasaṃghaṭṭapiṣṭāmbaragatāyudham | yodhanādanadaddantivṛndabandhurakandaram || 41 ||

The weapons were crushed by the collision of machines and stones, and the battlefield resounded with the roars of warriors and the trumpeting of elephants.

यंत्रों और पत्थरों के टकराने से हथियार चूर-चूर हो गए, और युद्धभूमि योद्धाओं के गर्जन और हाथियों के चिग्घाड़ने से गूंज उठी।

7.110.42

धराधरदरीरन्तःप्रतिश्रुत्प्रोतगर्जितम्। अर्जितं प्राणसर्वस्वमर्जयद्भिरुपार्जितम्॥ ४२॥

dharādharadarīrantaḥpratiśrutprotagarjitam | arjitaṃ prāṇasarvasvamarjayadbhirupārjitam || 42 ||

The earth and mountains echoed with the resounding roars, and the warriors, having gained their lives and all possessions, were cleansed by their efforts.

धरती और पहाड़ गर्जन की प्रतिध्वनि से गूंज उठे, और योद्धाओं ने अपने जीवन और सभी संपत्ति प्राप्त करके अपने प्रयासों से शुद्ध हो गए।

7.110.43

भर्जितं हेतिदहनैरग्निदाहैश्च संततैः । तैरेवान्यैरथान्यैश्च द्वन्द्वयुद्धैरनिष्ठितम् ॥ ४३ ॥

bhrajitaṃ hetidahanairagnidāhaiśca saṃtataiḥ | tairevānyairathānyaiśca dvandvayuddhairaniṣṭhitam || 43 ||

Burned by the continuous fires of weapons and other means, the battle was fought with various dual combats.

हथियारों और अन्य साधनों की लगातार आग से जलकर, युद्ध विभिन्न द्वंद्व युद्धों से लड़ा गया।

7.110.44

वेष्टितं मृतशिष्टैश्च सारैः सुभटपेटकैः । कैलासैरिव संशुद्धैरीश्वराधारतां गतैः ॥ ४४ ॥

veṣṭitaṃ mṛtaśiṣṭaiśca sāraiḥ subhaṭapeṭakaiḥ | kailāsairiva saṃśuddhairīśvarādhāratāṃ gataiḥ || 44 ||

Surrounded by the remains of the dead, the excellent warriors were like the purified Kailasa, having attained the support of the Lord.

मृतकों के अवशेषों से घिरे हुए, उत्तम योद्धा शुद्ध कैलास के समान थे, जिन्होंने ईश्वर का आधार प्राप्त कर लिया था।

7.110.45

तैरुदारैः समाक्रान्तं ये मृत्योरपि मृत्यवः । मरणं जीवितं येषां जीवितं मरणं रणे ॥ ४५ ॥

tairudāraiḥ samākrāntaṃ ye mṛtyorapi mṛtyavaḥ | maraṇaṃ jīvitaṃ yeṣāṃ jīvitaṃ maraṇaṃ raṇe || 45 ||

Those noble ones who are even more fearless than death itself, for whom death is life and life is death in battle.

वे उदार लोग जो मृत्यु से भी अधिक निडर हैं, जिनके लिए मृत्यु जीवन है और जीवन मृत्यु है युद्ध में।

7.110.46

रणे नभसि निर्लूनवरवारणवारिजे । सारसाः सरसीवात्र रेजुरत्युद्भटा भटाः ॥ ४६ ॥

raṇe nabhasi nirlūnavaravāraṇavārije | sārasāḥ sarasīvātra rejuratyudbhaṭā bhaṭāḥ || 46 ||

In the battlefield, the sky was filled with the roar of elephants and the sound of arrows| The cranes, as if in a lake, shone brightly, and the warriors were extremely fierce.

रणभूमि में, आकाश हाथियों के गर्जन और बाणों की आवाज से भरा हुआ था| सारस पक्षी मानो सरोवर में चमक रहे थे, और योद्धा अत्यंत उग्र थे।

7.110.47

यन्त्राश्मक्षेपणानां प्रसरणसरितां घूकृतैः फूत्कृतैर्द्राक् क्रान्तानां व्योम्नि मूर्ध्नां शरसलिलमुचां सैनिकानां च नादैः ।
टांकारैरायुधानां नभसि विसरतामश्वचक्रेभशब्दैरासीन्निःसंधिबन्धोपलजठरजडं जीर्णकर्णं गतं तत् ॥ ४७ ॥

yantrāśmakṣepaṇānāṃ prasaraṇasaritāṃ ghūkṛtaiḥ phūtkṛtairdrāk krāntānāṃ vyomni mūrdhnāṃ śarasalilamucāṃ sainikānāṃ ca nādaiḥ | ṭāṃkārairāyudhānāṃ nabhasi visaratāmaśvacakrebhśabdairāsīnnisaṃdhibandhopalajaṭharajaḍaṃ jīrṇakarṇaṃ gataṃ tat || 47 ||

The sound of machines and stones being thrown, the flow of rivers, the roar and the sound of arrows being shot in the sky, the noise of soldiers, the clanging of weapons, the sound of horses and chariots spreading in the sky, all this created a deafening noise that made the ears tired.

यंत्रों और पत्थरों को फेंकने की आवाज, नदियों का प्रवाह, आकाश में बाणों की आवाज, सैनिकों की आवाज, हथियारों की खड़खड़ाहट, घोड़ों और रथों की आवाज आकाश में फैली, यह सब मिलकर एक ऐसी आवाज पैदा कर रही थी जिससे कान थक गए थे।

Chapter 111

7.111.1

इति कल्पान्तसदृशे यत्ते समरसंभ्रमेपतन्तीषूत्पतन्तीषु सेनासु समरेजिरे ॥ १ ॥

iti kalpāntasadṛśe yatte samarasaṃbhramepatantīṣūtpatantīṣu senāsu samarejire || 1 ||

Thus, in the battlefield that resembled the end of the world, the armies, eager for war, rushed forward and clashed with each other.

इस प्रकार, जो कल्पान्त के समान था, युद्ध के लिए उत्सुक सेनाएं आगे बढ़ीं और एक-दूसरे से टकराईं।

7.111.2

तूर्यभेरीमहाशङ्खखड्गेषु खे नदत्सु चधनुर्ध्वनिषु वीराणां तारक्रेंकारकारिषु ॥ २ ॥

tūryabherīmahāśaṅkhakhaṅgeṣu khe nadatsu cadhanurdhvaniṣu vīrāṇāṃ tārakreṃkārakāriṣu || 2 ||

In the sky, the sounds of drums, conches, and war cries resounded, along with the twang of bows and the battle cries of heroes.

आकाश में, ढोल, शंख और युद्ध के नाद गूंज रहे थे, साथ ही धनुष की टंकार और वीरों के युद्ध के नारे भी गूंज रहे थे।

7.111.3

अन्योन्यकठिनास्फोटविकटे भटपेटकेकवत्कटकटाटोपे कटुकुट्टितकंकटे ॥ ३ ॥

anyonyakaṭhināsphoṭavikaṭe bhaṭapeṭakekavatkaṭakaṭāṭope kaṭukuṭṭitakaṅkaṭe || 3 ||

The soldiers clashed with each other, creating a harsh and loud noise, as if the earth itself was being torn apart.

सैनिक एक-दूसरे से टकरा रहे थे, जिससे एक कठोर और तेज शोर उत्पन्न हो रहा था, मानो पृथ्वी खुद फट रही हो।

7.111.4

किंचित्प्रभज्यमानासु विशत्कश्मासु संगरेविपश्चित्पक्षसेनासु लूयमानलतास्विव ॥ ४ ॥

kiṃcitprabhajyamānāsu viśatkaśmāsu saṃgarevipaścitpakṣasenāsu lūyamānalatāsviva || 4 ||

In the battle, some soldiers were seen fleeing, while others stood firm, like flames swaying in the wind.

युद्ध में, कुछ सैनिक भागते हुए दिख रहे थे, जबकि दूसरे दृढ़ता से खड़े थे, मानो हवा में लहराती लौ की तरह।

7.111.5

उदभूत्पूरयन्नाशा नृपनिर्याणदुन्दुभिःचतुर्धाशनिसंपूर्णकल्पाभ्रवमांसलः ॥ ५ ॥

udabhūtpūrayannāśā nṛpaniryāṇadundubhiḥcaturdhāśanisaṃpūrṇakalpābhraravamāṃsalaḥ || 5 ||

The hopes of the people were fulfilled as the king's procession began, accompanied by the sound of drums that resonated like thunder from all directions.

लोगों की आशाएँ पूरी हो गईं जब राजा की प्रस्थान यात्रा शुरू हुई, जिसके साथ चारों ओर से बिजली की तरह गरजते हुए ढोलों की आवाज गूंज रही थी।

7.111.6

स्फुटतां कुलशैलानां तुल्यकालमिवोत्कटःस्फुटच्चटचटास्फोटैर्जडिताखिलदिक्तटः ॥ ६ ॥

sphuṭatāṃ kulaśailānāṃ tulyakālamivotkaṭaḥsphuṭaccaṭacaṭāsphoṭairjaḍitākhiladiktaṭaḥ || 6 ||

The mountains of the family resounded with a simultaneous and terrifying sound, as if the entire direction was frozen with the clear and loud sounds of 'chaṭacaṭā'.

परिवार के पर्वतों का स्पष्ट और भयानक शब्द एक साथ गूंजा, मानो सभी दिशाएं 'चटचटा' की स्पष्ट और ऊंची आवाजों से जम गई हों।

7.111.7

लोकपालैरिवाकारैर्नारायणभुजैरिवस चतुर्भिश्चतुर्दिक्कं निर्जगाम महीपतिः ॥ ७ ॥

lokapālairivākārairnārāyaṇabhujairivasa caturbhiścaturdikkaṃ nirjagāma mahīpatiḥ || 7 ||

The king emerged in all four directions with four arms like the guardians of the world, as if they were the arms of Narayana.

राजा चार दिशाओं में चार भुजाओं के साथ प्रकट हुआ, मानो वे लोकपालों की भुजाएं हों, जैसे नारायण की भुजाएं।

7.111.8

चतुरङ्गेण महता सैन्येन परिवारितःअट्टालवलयात्कृच्छ्रान्निर्गत्य नगराद्बहिः ॥ ८ ॥

caturaṅgeṇa mahatā sainyena parivāritaḥaṭṭālavalayātkṛcchrānnirgatya nagarādbahiḥ || 8 ||

Surrounded by a great army with four divisions, he emerged from the city with difficulty, accompanied by the sound of drums.

चार विभागों वाली एक महान सेना से घिरा हुआ, वह बड़ी मुश्किल से नगर से बाहर निकला, ढोलों की आवाज के साथ।

7.111.9

ददर्शात्मबलं रिक्तं बलवद्रिपुमण्डलम्गर्जन्तं च लयाकृत्या भीमं युद्धोद्धतार्णवम् ॥ ९ ॥

dadarśātmabalaṃ riktaṃ balavadripumaṇḍalamgarjantaṃ ca layākṛtyā bhīmaṃ yuddhoddhatārṇavam || 9 ||

He saw his own army diminished, while the enemy's army, roaring with rhythm, appeared like a terrifying ocean of battle frenzy.

उसने अपनी सेना को कम होते हुए देखा, जबकि शत्रु की सेना, लयबद्ध गर्जना के साथ, युद्ध के उन्माद के भयानक समुद्र की तरह दिखाई दी।

7.111.10

शरसीकरनीरन्ध्रं मकरव्यूहसङ्कुलम्वारणव्यूहवलितं तरङ्गव्यूहविस्तृतम् ॥ १० ॥

śarasīkaranīrandhraṃ makaravyūhasaṃkulamvāraṇavyūhavalitaṃ taraṅgavyūhavistṛtam || 10 ||

The gaps in the arrow-shower were filled with the crocodile formation, spread with the elephant formation, and expanded with the wave formation.

बाणों की वर्षा की खाली जगहें मगरमच्छ व्यूह से भरी हुई थीं, हाथी व्यूह से फैली हुई थीं, और लहर व्यूह से फैली हुई थीं।

7.111.11

चक्रावर्तवहद्व्यूहकल्लोलकलितान्तरम्चलद्रथशतावर्तं पताकालहरीगणम् ॥ ११ ॥

cakrāvartavahadvyūhakallolakalitāntaramcaladrathaśatāvartaṃ patākālaharīgaṇam || 11 ||

The army, arranged in the circular formation of a chariot, was adorned with flags and garlands, and the chariots were moving swiftly, creating a tumultuous scene.

रथों की चक्राकार व्यूह रचना सजी हुई ध्वजाओं और मालाओं से सुशोभित थी, और रथ तेजी से चल रहे थे, जिससे एक उथल-पुथल का दृश्य उत्पन्न हो रहा था।

7.111.12

प्रस्फुरच्छत्रफेनाढ्यं हयहेषितफीत्कृतम्समुल्लसद्धेतिजलं कचद्धाराकरं परम् ॥ १२ ॥

prasphuracchatraphenāḍhyaṃ hayaheṣitaphītkṛtamsamullasaddhetijalaṃ kacaddhārākaraṃ param || 12 ||

The army was resplendent with shining umbrellas and the horses were being urged on by their riders, causing the waves to rise high and creating a magnificent spectacle.

सेना चमकती छत्रों से शोभायमान थी और घुड़सवार अपने घोड़ों को आगे बढ़ा रहे थे, जिससे लहरें ऊँची उठ रही थीं और एक विराट दृश्य उत्पन्न हो रहा था।

7.111.13

तरत्तरलमातङ्गतुरङ्गौघतरङ्गकम्हेत्यम्भसि कचत्पापमुद्यद्गुलुगुलोदरम् ॥ १३ ॥

tarattaralamātaṅgaturaṅgaughataraṅgakamhetyambhasi kacatpāpamudyadgulugulodaram || 13 ||

The swiftly moving elephants and horses created waves in the water, and the sinful deeds rose up, causing the water to churn and bubble.

तेजी से चलने वाले हाथी और घोड़े पानी में लहरें पैदा कर रहे थे, और पाप के कारण पानी उठ रहा था और उबल रहा था।

7.111.14

दरीदलनसंक्षुब्धमरुज्जनितघुंघुमम्नतोन्नतकृताद्रीन्द्रमहास्पन्दशरीरकम् ॥ १४ ॥

darīdalanasaṃkṣubdhamarujjanitaghuṃghumamnatonnatakṛtādrīndramahāspandaśarīrakam || 14 ||

The mountain, shaken by the wind, produced a deep rumbling sound, and its peaks were moving up and down, causing a great tremor in its body.

हवा से हिला हुआ पर्वत एक गहरी गर्जना उत्पन्न कर रहा था, और उसकी चोटियाँ ऊपर-नीचे हो रही थीं, जिससे उसके शरीर में एक बड़ा कंपन हो रहा था।

7.111.15

मज्जन्मातङ्गतुरगहेलाहतमहीधरमपारविचरत्पूरकल्लोलालमहाजलम् ॥ १५ ॥

majjanmātaṅgaturagahelāhatamahīdharamapāravicaratpūrakallolālamahājalam || 15 ||

The elephants and horses, along with their riders, were moving around the great mountain, causing the vast water to churn and create large waves.

हाथी और घोड़े, अपने सवारों के साथ, महान पर्वत के चारों ओर घूम रहे थे, जिससे विशाल पानी में उथल-पुथल मच रही थी और बड़ी लहरें उठ रही थीं।

7.111.16

अकालकल्पान्तदशासमुत्थानघनाकृतिमाक्रान्तरोदसीरन्ध्ररुधिरैकमहार्णवम् ॥ १६ ॥

akālakalpāntadaśāsamutthānaghanākṛtimākrāntarodasīrandhrarudhiraikamahārṇavam || 16 ||

The universe was engulfed in a vast ocean of blood, with the sky and the horizon filled with the darkness of the end of the world.

ब्रह्मांड एक विशाल रक्त सागर में डूब गया, जिसमें आकाश और क्षितिज प्रलय के अंधेरे से भरे हुए थे।

7.111.17

कचदायुधखण्डौघडीनरत्नावृतोदरम्चलद्व्यूहचलत्यस्तयन्त्राश्मक्षेपणाश्मकम् ॥ १७ ॥

kacadāyudhakhaṇḍaughaḍīnaratnāvṛtodaramcaladvyūhacalaṭyastayantrāśmakṣepaṇāśmakam || 17 ||

The battlefield was filled with shattered weapons, broken armor, and scattered gems. The ground was trembling with the clash of armies and the thunder of weapons.

युद्धक्षेत्र टूटे हुए हथियारों, टूटी हुई कवचों और बिखरे हुए रत्नों से भरा हुआ था। धरती सेनाओं के टकराव और हथियारों की गड़गड़ाहट से काँप रही थी।

7.111.18

रत्नसीकरनीहारसंध्याभ्रपटलानतम्क्वचित्पांसुपयोवाहपीतहेतिपयोधरम् ॥ १८ ॥

ratnasīkaranīhārasaṃdhyābhrapaṭalānatamkvacitpāṃsupayovāhapītahetipayodharam || 18 ||

The sky was adorned with the beauty of gems, the evening clouds, and the setting sun. The earth was covered with dust, water, and the blood of the fallen warriors.

आकाश रत्नों की सुंदरता, सांझ के बादलों, और डूबते सूर्य से सजा हुआ था। धरती धूल, पानी, और गिरे हुए योद्धाओं के रक्त से ढकी हुई थी।

7.111.19

तमालोक्य रणाम्भोधिमगस्त्योऽस्य भवाम्यहमिति संचिन्त्य मनसा स पातुं तं रणार्णवम् ॥ १९ ॥

tamālokya raṇāmbhodhimagastyo'sya bhavāmyahamiti saṃcintya manasā sa pātuṃ taṃ raṇārṇavam || 19 ||

Seeing the ocean of battle, Agastya thought, 'I will become him,' and resolved in his mind to protect that ocean of battle.

युद्ध के समुद्र को देखकर, अगस्त्य ने सोचा, 'मैं उसका रूप धारण करूँगा,' और मन में संकल्प लिया कि उस युद्ध समुद्र की रक्षा करें।

7.111.20

अस्त्रं सस्मार वायव्यं चतुर्दिक्कं च संदधेधनुषि शिखराधारे त्रिपुरान्त इवोद्यतः ॥ २० ॥

astraṃ sasmāra vāyavyaṃ caturdikkaṃ ca saṃdadhedhanuṣi śikharādhāre tripurānta ivodyataḥ || 20 ||

He remembered the Vayavya weapon and placed it in all four directions on the peak of his bow, as if ready to destroy the three cities.

उसने वायव्य अस्त्र को याद किया और उसे चारों दिशाओं में अपने धनुष की चोटी पर रखा, जैसे तीन नगरों को नष्ट करने के लिए तैयार हो।

7.111.21

आत्मीयदेशसैन्यानां श्रेयोर्थं शान्तयेऽनलम्नमस्कृत्याथ जप्त्वाशु स तत्तत्याज दारुणम् ॥ २१ ॥

ātmīyadeśasainyānāṃ śreyorthaṃ śāntaye'nalamnamaskṛtyātha japtvāśu sa tattatyāja dāruṇam || 21 ||

For the benefit of the friendly army, he bowed down and quickly chanted, then he abandoned the fierce weapon.

मित्र सेना के कल्याण के लिए, उसने प्रणाम किया और शीघ्रता से जप करके उस भयंकर अस्त्र को त्याग दिया।

7.111.22

यथा तथैव तत्याज तस्य साहायकाय सःपर्जन्यास्त्रं महास्त्रैशं द्विषदातपशान्तये ॥ २२ ॥

yathā tathaiva tatyāja tasya sāhāyakāya saḥparjanyāstraṃ mahāstraiśaṃ dviṣadātapaśāntaye || 22 ||

Just as he abandoned it, he also abandoned the great weapon of rain for the sake of his helper to pacify the enemy's heat.

जैसे ही उसने उसे त्याग दिया, वैसे ही उसने शत्रु की गर्मी को शांत करने के लिए अपने सहायक के लिए वर्षा का महान अस्त्र भी त्याग दिया।

7.111.23

तस्मादस्त्रजुषो घोराद्धनुषः परिनिर्गताःअष्टमूर्तेश्चतुर्दिक्कमाशाकुहरपूरकाः ॥ २३ ॥

tasmādastrajuṣo ghorāddhanuṣaḥ parinirgatāḥaṣṭamūrteścaturdikkamāśākuharapūrakāḥ || 23 ||

From that terrible weapon, which was released from the bow, eight forms emerged in the four directions, filling the space with arrows.

उस भयंकर अस्त्र से, जो धनुष से छोड़ा गया था, चारों दिशाओं में आठ रूप निकले, जिन्होंने स्थान को बाणों से भर दिया।

7.111.24

निर्ययुर्बाणसरितस्त्रिशूलसरितस्तथाशक्तीनामुग्रसरितो भुशुण्डीसरितस्तथा ॥ २४ ॥

niryayurbāṇasaritastriśūlasaritastathāśaktīnāmugrasarito bhuśuṇḍīsaritastathā || 24 ||

Arrows, tridents, and other fierce weapons like spears and clubs emerged from the weapon.

बाण, त्रिशूल, और अन्य भयंकर अस्त्र जैसे शक्ति और भुशुण्डी उस अस्त्र से निकले।

7.111.25

मुद्गराणां च सरितः प्रासानां सरितो रयात्चक्राणां चैव सरितः परश्वधनदीरयाः ॥ २५ ॥

mudgarāṇāṃ ca saritaḥ prāsānāṃ sarito rayātcakrāṇāṃ caiva saritaḥ paraśvadhanadīrayāḥ || 25 ||

Streams of maces, battle-axes, discs, and other weapons also emerged from the weapon.

मुद्गर, प्रास, चक्र, और अन्य अस्त्रों की धाराएँ भी उस अस्त्र से निकलीं।

7.111.26

तोमराणां च सरितो भिन्दिपालमहापगाःपाषाणानां च सरितो वाताः कल्पान्तशंसिनः ॥ २६ ॥

tomarāṇāṃ ca sarito bhindipālamahāpagāḥpāṣāṇānāṃ ca sarito vātāḥ kalpāntaśaṃsinaḥ || 26 ||

The rivers of arrows, the rivers of thunderbolts, the rivers of stones, and the winds that herald the end of the world.

तीरों की नदियाँ, वज्रों की नदियाँ, पत्थरों की नदियाँ, और कल्पान्त की घोषणा करने वाली हवाएँ।

7.111.27

अशनीनां च सरितो विद्युतां सरितस्तथाजलधारासरित्पूराः खड्गवर्षसमन्विताः ॥ २७ ॥

aśanīnāṃ ca sarito vidyutāṃ saritastathājaladhārāsaritpūrāḥ khaṅgavarṣasamanvitāḥ || 27 ||

The rivers of lightning, the rivers of thunder, the rivers of waterfalls, and the rivers filled with showers of swords.

बिजली की नदियाँ, वज्र की नदियाँ, झरनों की नदियाँ, और तलवारों की वर्षा से भरी नदियाँ।

7.111.28

सनाराचा महावर्षहर्षलोत्पातपीवराःनागाश्च युगपर्यन्तस्फुटिताद्रीन्द्रजा इव ॥ २८ ॥

sanārācā mahāvarṣaharṣalotpātapīvarāḥnāgāśca yugaparyantasphuṭitādrīndrajā iva || 28 ||

The arrows, the great rain, the joyful omens, and the serpents, all burst forth like the mountains and clouds at the end of the yuga.

तीर, महान वर्षा, हर्ष के उत्पात, और सर्प, सभी युग के अंत में पर्वतों और बादलों के समान फूट पड़े।

7.111.29

तेनास्त्रवर्षवेगेन धुतः सोऽरिबलार्णवःज्झटित्येव न कालेन पांसुराशिरिवाभितः ॥ २९ ॥

tenāstravarṣavegena dhutaḥ so'ribalārṇavaḥjhaṭityeva na kālena pāṃsurāśirivābhitaḥ || 29 ||

By the force of the weapon-rain, the ocean of the enemy army was shaken, as if instantly, not by time, like a heap of dust.

अस्त्र-वर्षा के वेग से शत्रु सेना का समुद्र झटके से हिल गया, जैसे समय नहीं लगा, एक धूल के ढेर के समान।

7.111.30

सलिलाशनिशस्त्राणामासारैश्चण्डमारुतैःसरांसीव विसेतूनि सैन्यानि परिदुद्रुवुः ॥ ३० ॥

salilāśaniśastrāṇāmāsāraiścaṇḍamārutaiḥsarāṃsīva visetūni sainyāni paridudruvuḥ || 30 ||

The armies fled in all directions, like rivers overflowing with the fierce winds of the arrows, thunderbolts, and weapons.

सेनाएँ सभी दिशाओं में भाग गईं, जैसे तीर, वज्र, और शस्त्रों के तीव्र हवाओं से नदियाँ उफन रही हों।

7.111.31

चतुरङ्गश्चतुर्दिक्कं बलौघः स पराङ्मुखः। ययौ प्रावृङ्गिरिणदीमहावाह इव द्रुतः ॥ ३१ ॥

caturaṅgaścaturdikkaṃ balaughaḥ sa parāṅmukhaḥ yayau prāvṛṅgiriṇadīmahāvāha iva drutaḥ || 31 ||

The fourfold army, turning away from the four directions, departed swiftly like a great flood of the rainy-season river rushing down the mountain.

चारों दिशाओं से मुँह मोड़कर चतुरंगिणी सेना तेजी से चली गई, जैसे वर्षाऋतु की पर्वत नदी का महान प्रवाह तीव्र वेग से बहता है।

7.111.32

वहत्स्विन्नबृहच्छिन्नपताकाकेतुपादपः। मरीचिपुष्पशबलविलोलासिलतावनः ॥ ३२ ॥

vahatsvinnabṛhacchinnapatākāketupādapaḥ marīcipuṣpaśabalavilolāsilatāvanaḥ || 32 ||

The forest of creepers sways with flowers like rays of light, bearing tall trees with torn banners and flags, drenched in sweat, as if trembling with the play of existence.

यह लता और वृक्षों का वन चमकते फूलों से युक्त है, मानो प्रकाश की किरणें हों। पसीने से भीगे हुए ऊँचे वृक्ष टूटे हुए ध्वजाओं और पताकाओं को धारण किए हुए हैं, जैसे सृष्टि के खेल में कंपित हो रहे हों।

7.111.33

विलुठत्पुष्टपाषाणपृषद्रक्तद्रवावचः। घोरैर्घुरघुरारावैरलं हृदयभङ्गदः ॥ ३३ ॥

viluṭhatpuṣṭapāṣāṇapṛṣadraktadravāvacaḥ ghorairghuraghurārāvairalaṃ hṛdayabhaṅgadaḥ || 33 ||

The ground is strewn with fat stones smeared with blood, their oozing fluids mingling, while terrible roars resound, shattering the heart.

धरती मोटे पत्थरों से भरी पड़ी है, जो खून से सने हुए हैं और उनसे रक्त जैसा द्रव बह रहा है। भयानक गर्जनाओं से हृदय टूटने लगता है।

7.111.34

उह्यमानवृहद्दन्तिदन्तद्रुमविघट्टनैः। स्फूर्जच्चटचटारावतर्जितोद्गर्जिताम्बुदः ॥ ३४ ॥

uhyamānavṛhaddantidantadrumavighaṭṭanaiḥ sphūrjaccaṭacaṭārāvatarjitodgarjitāmbudaḥ || 34 ||

The clouds roar and thunder, challenged by the clashing of tusks of mighty elephants being carried along, their sounds echoing like crackling lightning.

बादल गरजते और गर्जन करते हैं, मानो विशाल हाथियों के दाँतों के टकराने की आवाज़ से चुनौती दी जा रही हो। उनकी गर्जना बिजली की कड़कड़ाहट की तरह गूँजती है।

7.111.35

हेतिवृत्तोग्रसंघट्टपुष्पजातझणझणः। तरत्तरलसारावतुरङ्गमतरङ्गकः ॥ ३५ ॥

hetivṛttograsaṃghaṭṭapuṣpajātajhaṇajjhaṇaḥ tarattaralasārāvaturaṅgamataraṅgakaḥ || 35 ||

The clashing of fierce causes and effects produces a jingling sound like flowers scattering, while the waves of restless horses surge with unsteady motion.

कारण और परिणाम के भीषण संघर्ष से फूलों के बिखरने जैसी झंकार उत्पन्न होती है, जबकि अशांत घोड़ों की लहरें अस्थिर गति से उठती हैं।

7.111.36

रथादिभटचक्रौघशिलाक्रेंकारपीवरःपदातिरथहस्त्यश्वशिलासंघट्टसंकटः ॥ ३६ ॥

rathādibhaṭacakraughaśilākreṃkārapīvaraḥpadātirathahastyaśvaśilāsaṃghaṭṭasaṃkaṭaḥ || 36 ||

The army, with its chariots, soldiers, and wheels, was like a rocky mountain range, filled with infantry, chariots, elephants, horses, and rocks, creating a tumultuous and dangerous situation.

रथों, सैनिकों और पहियों से भरी सेना पत्थर की पहाड़ी की तरह थी, जो पैदल सैनिकों, रथों, हाथियों, घोड़ों और पत्थरों से भरी हुई थी, जिससे एक उथल-पुथल और खतरनाक स्थिति बनी।

7.111.37

कटुचंकारचीत्कारक्रेंकारपरिपीवरःमृता मृता वयमिति घनकोलाहलाकुलः ॥ ३७ ॥

kaṭucaṃkāracītkārakreṃkāraparipīvaraḥmṛtā mṛtā vayamiti ghanakolāhalākulaḥ || 37 ||

The intense and loud cries of 'We are dead, we are dead' filled the air, creating a dense and chaotic uproar.

हम मर गए, हम मर गए' की तीव्र और ऊँची चीखें हवा में भर गईं, जिससे एक घना और अव्यवस्थित हंगामा हो गया।

7.111.38

सेनावारिमहावर्तचलद्गुलुगुलारवःरक्तसीकरनीहारसंध्याम्बुदवितानकः ॥ ३८ ॥

senāvārimahāvartacaladgulugulāravaḥraktasīkaranīhārasaṃdhyāmbudavitānakaḥ || 38 ||

The great whirlpool of the army's noise, with its moving and rumbling sounds, was like a canopy of evening clouds dripping with bloody dew.

सेना के शोर का महान भँवर, जिसमें चलते-फिरते और गरजते आवाज हैं, एक शाम के बादलों की छतरी की तरह था, जो खूनी ओस से भरा हुआ था।

7.111.39

हेतिवीचिवटाच्छिन्नवारिवामनवारिदःवर्षपंकिलभूपीठतटखण्डनमण्डितः ॥ ३९ ॥

hetivīcivaṭācchinnavārivāmanavāridaḥvarṣapaṅkilabhūpīṭhataṭakhaṇḍanamaṇḍitaḥ || 39 ||

The army, with its weapons and arrows, cut through the rain and clouds, adorned with the breaking of muddy earth and ponds due to the heavy rain.

हथियारों और तीरों से भरी सेना बारिश और बादलों को काटती हुई, भारी बारिश के कारण कीचड़ और तालाबों के टूटने से सजी हुई थी।

7.111.40

कुन्तशूलगदाप्रासवहत्तालतलाद्भुतःसाक्रन्दभीरुजनताप्रतपन्मृगपोतकः ॥ ४० ॥

kuntaśūlagadāprāsavahattālatalādbhutaḥsākrandabhīrujanatāpratapanmṛgapotakaḥ || 40 ||

The spears, tridents, maces, and swords were amazing, and the timid people were crying out in fear, scorched by the heat of the battle.

भाले, त्रिशूल, गदा और तलवारें अद्भुत थीं, और डरी हुई जनता डर के मारे चीख रही थी, युद्ध की गर्मी से झुलस रही थी।

7.111.41

मृतहस्त्यश्वयोधौघजीर्णपर्णनिरन्तरःपिष्टदेहवसामांसपङ्कसंजातकर्दमः ॥ ४१ ॥

mṛtahastyaśvayodhaughajīrṇaparṇanirantaraḥpiṣṭadehavasāmāṃsapaṅkasaṃjātakardamaḥ || 41 ||

The earth was covered with the remains of dead elephants, horses, and warriors, mixed with decaying leaves and mud formed from the flesh and blood of the slain.

पृथ्वी मृत हाथियों, घोड़ों और योद्धाओं के अवशेषों से ढकी हुई थी, जिसमें सड़े हुए पत्तों और मारे गए लोगों के मांस और रक्त से बने कीचड़ का मिश्रण था।

7.111.42

चूर्णीकृतखुरापिष्टमहास्तिघनसैकतःउह्यमानशिलापूरकाष्ठकोटिकटङ्कटः ॥ ४२ ॥

cūrṇīkṛtakhurāpiṣṭamahāsthighanasaikataḥuhyamānaśilāpūrakāṣṭhakoṭikaṭaṅkaṭaḥ || 42 ||

The earth was covered with the powdered remains of crushed hooves, the dense mass of elephants, and the heaps of stones and wood being carried away.

पृथ्वी कुचले हुए खुरों के चूर्ण और हाथियों के घने समूह से ढकी हुई थी, और पत्थरों और लकड़ियों के ढेर उठाए जा रहे थे।

7.111.43

उद्गर्जत्प्रलयाम्भोदैर्वहत्प्रलयवायुभिःप्रपतत्प्रलयासारैः प्रलयाशनिसंकटैः ॥ ४३ ॥

udgarjatpralayāmbhodairvahatpralayavāyubhiḥprapatatpralayāsāraiḥ pralayāśanisaṃkaṭaiḥ || 43 ||

The earth was struck by the roaring clouds of destruction, carried by the winds of destruction, and felled by the arrows of destruction.

पृथ्वी गर्जन करते विनाश के बादलों, विनाश की हवाओं और विनाश की बिजलियों से घायल हो गई थी।

7.111.44

पङ्किलाखिलभूपीठैः सलिलोपप्लुतस्थलैःसितशैत्यवशाश्यानधाराकृतखपञ्जरैः ॥ ४४ ॥

paṅkilākhilabhūpīṭhaiḥ salilopaplutasthalaiḥsitaśaityavaśāśyānadhārākṛtakhapañjaraiḥ || 44 ||

The earth was covered with muddy seats, flooded with water, and the cages were filled with the coldness of winter.

पृथ्वी कीचड़ से ढकी हुई थी, पानी से भरी हुई थी, और पिंजरे सर्दी की ठंडक से भरे हुए थे।

7.111.45

समग्रनगरग्रामगृहज्वलितवह्निभिःप्रजाश्वेभपदातीनामाक्रन्देनापि घघरैः ॥ ४५ ॥

samagranagaragrāmagṛhajvalitavahnibhiḥprajāśvebhapadātīnāmākrandenāpi ghargharaiḥ || 45 ||

The entire city and village houses were burning with fire, and the people, horses, and foot soldiers were screaming loudly.

पूरे शहर और गाँव के घर आग से जल रहे थे, और लोग, घोड़े, और पैदल सैनिक जोर से चिल्ला रहे थे।

7.111.46

रथाम्भोधरनिर्ह्रादैर्दिवि भूमौ घनारवैःचतुर्दिक्कं घनं तारक्रेंकारस्य चतुष्टयैः ॥ ४६ ॥

rathāmbhodharanirhrādairdivi bhūmau ghanāravaiḥcaturdikkaṃ ghanaṃ tārakreṃkārasya catuṣṭayaiḥ || 46 ||

With the roaring sounds of clouds in the sky and on the earth, the clouds spread in all four directions with the thunderous roars of the four types of thunderbolts.

आकाश और पृथ्वी पर बादलों के गर्जन की आवाजों के साथ, चार प्रकार के वज्रपात के गर्जन के साथ बादल चारों दिशाओं में फैल गए।

7.111.47

विद्युद्वलयविस्तारकारिसंघट्टघर्षणैःशरशक्तिगदाप्रासभिन्दिपालादिवर्षणैः ॥ ४७ ॥

vidyudvalayavistārakārisaṃghaṭṭagharṣaṇaiḥśaraśaktigadāprāsabhindipālādivarṣaṇaiḥ || 47 ||

With the clashing and roaring sounds of lightning spreading, and the raining of arrows, spears, maces, and other weapons.

बिजली के फैलने की आवाजों और टकराहट के साथ, तीर, भाले, गदा और अन्य हथियारों की बारिश हो रही है।

7.111.48

सर्वदिक्कमसंख्यानि बलानि बलशालिनाम्भूभृतां विद्रवन्त्याशु विनेशुर्मशकौघवत् ॥ ४८ ॥

sarvadikkamasaṃkhyāni balāni balaśālināmbhūbhṛtāṃ vidravantyāśu vineśurmaśakaughavat || 48 ||

The countless armies in all directions of the powerful cloud-bearers quickly fled, like a swarm of mosquitoes.

सभी दिशाओं में असंख्य सेनाएँ, शक्तिशाली बादलों के वाहकों की तरह, तेजी से भाग गईं, मच्छरों के झुंड की तरह।

7.111.49

उद्दामपावकवनोपमहेतिसार्थमेघानलाकुलजनाशनिवर्षपातैःआसन्बलानि चपलाब्धिजलाबलानि पर्याकुलानि वडवाग्निमिवाविशन्ति ॥ ४९ ॥

uddāmapāvakavanopamahetisārthameghānalākulajanāśanivarṣapātaiḥāsanbalāni capalābdhijalābalāni paryākulāni vaḍavāgnimivāviśanti || 49 ||

With the downpour of fire from the clouds resembling a blazing forest fire, the armies, weakened by the unstable water, became agitated and entered like the submarine fire.

बादलों से आग की वर्षा हो रही थी, जो एक जलते हुए जंगल की आग के समान थी, अस्थिर जल से दुर्बल हुई सेनाएँ व्याकुल हो गईं और समुद्री आग की तरह प्रवेश कर गईं।

Chapter 112

7.112.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । लोकहाराम्बरव्यालं चेदिचन्दनकाननम् । छिन्नं परशुधाराभिः पतितं दक्षिणार्णवे ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | lokahārāmbaravyālaṃ cedicandanakānanam | chinnam paraśudhārābhiḥ patitam dakṣiṇārṇave || 1 ||

Shri Vasistha said: The forest of Cedi-chandana, which is like a serpent in the sky that steals the world, has been cut down by the axe-wielding ones and fallen into the southern ocean.

श्री वसिष्ठ ने कहा: चेदि-चन्दन का वन, जो आकाश में एक सर्प के समान लोक को चुराने वाला है, कुल्हाड़ी धारण करने वालों द्वारा काट दिया गया है और दक्षिण सागर में गिर गया है।

7.112.2

पर्णवत्प्रोह्य पूरेण पारसीकाः परस्परम् । प्रहरन्तो विमोहेन विनष्टा वंजुलावने ॥ २ ॥

parṇavatprohya pūreṇa pārasīkāḥ parasparam | praharanto vimohana vinastā vaṃjulāvane || 2 ||

The Pārasīkas, filled with pride and arrogance, fought each other in confusion and were destroyed in the bamboo forest.

पारसीक, जो घमंड और अहंकार से भरे हुए थे, भ्रम में एक दूसरे से लड़ते हुए बांस के वन में विनष्ट हो गए।

7.112.3

दर्दुराद्रौ दुरन्तेषु दरदीर्णहृदन्तराः । दरीरन्ध्रेषु संलीना दरदा दानवा इव ॥ ३ ॥

dardurādrau duranteṣu dardīrṇahṛdantarāḥ | darīrandhreṣu saṃlīnā daradā dānavā iva || 3 ||

In the harsh and insurmountable mountains, the demons, with their hearts pierced by fear, hid in the caves like frogs.

कठोर और अजेय पर्वतों में, डर से हृदय विदीर्ण होने के कारण दानव फिर से गुफाओं में छिपे हुए थे जैसे मेंढक।

7.112.4

चतुरायुधधाराग्रचूर्णनीहारधारिणः । विद्युद्वलयिनो वाता वेल्लितायुधवारिदाः ॥ ४ ॥

caturāyudhadhārāgracūrṇanīhāradhāriṇaḥ | vidyudvalayino vātā vellitāyudhavāridāḥ || 4 ||

The winds, bearing the dust of the tips of four weapons, were like lightning, and they caused the weapons to tremble like rain.

चार अस्त्रों के अग्र भाग की धूल लेकर चलने वाली वायुएं विद्युत के समान थीं, और उन्होंने अस्त्रों को वर्षा के समान कांपने का कारण बनाया।

7.112.5

दन्तिनोऽन्योन्यमाभग्नदन्तदेहौघपीडिताः । मृत्यूदरोम्भकग्रासपिण्डपिण्डा इवाभवन् ॥ ५ ॥

dantino'nyonyamābhagnadantadehaughapīḍitāḥ | mṛtyūdaroṃbhakagrāsapīṇḍapīṇḍā ivābhavan || 5 ||

The elephants, with their tusks and bodies broken and crushed by each other, became like lumps of flesh swallowed by the belly of death.

हाथी, जिनके दांत और शरीर एक दूसरे द्वारा तोड़े और कुचले गए थे, मृत्यु के उदर द्वारा निगले गए मांस के लोथड़ों के समान बन गए।

7.112.6

तज्जा रैवतिका रात्रौ रौद्रतोमरताडिताः । रूपिकाभिः पिशाचीभिर्भुक्ता भागीकृताङ्गकाः ॥ ६ ॥

tajjā raivatikā rātrau raudratomaratāḍitāḥ | rūpikābhiḥ piśācībhirbhaktā bhāgīkṛtāṅgakāḥ || 6 ||

In the night, the descendants of Raiwataka were struck by the terrible arrows of Rudra and were eaten by the demonic Rupikas, their bodies divided among them.

रात में, रैवतक के वंशज रुद्र के भयानक बाणों से घायल हुए और रूपिका नामक पिशाचों द्वारा खा लिए गए, उनके शरीर के टुकड़े कर दिए गए।

7.112.7

तालीतमालगहने दशार्णा जीर्णजङ्गले । गले पादं निधायान्तः कृत्ताः सिंहैर्गतासवः ॥ ७ ॥

tālītamālagahane daśārṇā jīrṇajaṅgale | gale pādaṃ nidhāyāntaḥ kṛttāḥ siṃhairgatāsavaḥ || 7 ||

In the dense forest of Tālītamāla, the people of Daśārṇa, exhausted in the old jungle, with their feet placed on their throats, were cut down by lions, losing their lives.

तालीतमाल के घने जंगल में, दशार्ण के लोग, जीर्ण जंगल में थके हुए, अपने पैर गले पर रखकर, सिंहों द्वारा काट दिए गए, जिससे उनकी जान चली गई।

7.112.8

पश्चिमार्णवतीरस्था नालिकेरधरावनौ । यवना विगतप्राणा निगीर्णा मकरोत्करैः ॥ ८ ॥

paścimārṇavatīrasthā nālikeradharāvanau | yavanā vigataprāṇā nigīrṇā makarotkaraiḥ || 8 ||

On the western shore of the ocean, the Yavanas, who hold coconut trees, are lifeless, swallowed by the crocodiles.

पश्चिमी समुद्र तट पर, नारियल के पेड़ धारण करने वाले यवन बेजान हैं, मगरमच्छों द्वारा निगल लिए गए हैं।

7.112.9

नाराचनिकरं नीलं निमेषं नासहञ्छकाः । रमठा नलिनीषण्डा इव ताण्डवितासवः ॥ ९ ॥

nārācanikaraṃ nīlaṃ nimeṣaṃ nāsahañchakāḥ | ramaṭhā nalinīṣaṇḍā iva tāṇḍavitāsavaḥ || 9 ||

The blue cluster of arrows, in an instant, could not be endured by the Ramaṭhās, as if they were lotus stalks dancing in the wind.

नीले बाणों का समूह, एक पल में, रमठाओं द्वारा सहन नहीं किया जा सका, जैसे कि वे हवा में नृत्य करते कमल के डंठल हों।

7.112.10

श्रवणाभोगशृङ्गाग्रो महेन्द्रोऽद्रिर्दिवि व्रजैः । विद्रुतैर्वलितो नीलैर्जालैर्जलमुचामिव ॥ १० ॥

śravaṇābhogaśṛṅgāgro mahendro'drirdivi vrajaiḥ | vidrutairvalito nīlairjālairjalamucāmiva || 10 ||

The peak of Mahendra mountain, adorned with the serpent Śravaṇābhoga, appears in the sky with scattered dark clouds, like the clouds dispersed by the wind.

सर्प श्रवणाभोग से सुशोभित महेन्द्र पर्वत का शिखर, आकाश में बिखरे हुए काले बादलों के साथ दिखाई देता है, जैसे हवा द्वारा बिखरे हुए बादल।

7.112.11

चामीकरवराकारा भग्ना तङ्गणवाहिनी । मृता हृताम्बरा चोरैर्भुक्तैकान्ते निशाचरैः ॥ ११ ॥

cāmīkaravarākārā bhagnā taṅgaṇavāhinī | mṛtā hṛtāmbarā corairbhuktaikānte niśācaraiḥ || 11 ||

The army with broken limbs, dead, with clothes stolen by thieves, eaten alone by night-roaming demons.

टूटी हुई अंगों वाली सेना, मरी हुई, चोरों द्वारा कपड़े चुरा लिए गए, रात में घूमने वाले राक्षसों द्वारा अकेले खाया गया।

7.112.12

द्यौरिवर्क्षभरैरासीत्तदासारं भुवस्तलम् । विवर्तमानैरभितः कचद्भिर्ज्वलनायुधैः ॥ १२ ॥

dyaurivarkṣabharairāsīttadāsāraṃ bhuvastalam | vivartamānairabhitaḥ kacadbhirjvalanāyudhaiḥ || 12 ||

The sky seemed to be filled with the weight of the clouds, and the earth's surface was devoid of essence, surrounded by flickering flames.

आकाश बादलों के भार से भरा हुआ लग रहा था, और पृथ्वी की सतह सार से रहित थी, चारों ओर झिलमिलाती लपटों से घिरी हुई।

7.112.13

धाराधरधरारन्ध्रप्रतिश्रुद्धनघुंघुमा । जगद्गेहगुहासीद्द्यौर्घनं गातुमिवोद्यता ॥ १३ ॥

dhārādhara dharārandhrapratiśruddhanaghuṅghumā | jagadgehaguhāsīddyaurghanam gātumivodyatā || 13 ||

The world seemed like a cave, with the sound of raindrops echoing, as if the dense sky was about to sing.

दुनिया एक गुफा जैसी लग रही थी, बूंदों की आवाज गूंज रही थी, मानो घने आकाश गाने के लिए तैयार हो।

7.112.14

द्विपान्तरजनाश्चक्रैर्जर्जरा जीवितं जहुः । मीनजङ्गलजम्बाले जीर्णमत्स्या इवाजले ॥ १४ ॥

dvipāntarajanāścakrairjarjarā jīvitaṃ jahuḥ | mīnajaṅgalajambāle jīrṇamatsyā ivājale || 14 ||

The people of other islands, worn out by the wheels, gave up their lives, like worn-out fish in a fish-net pond.

दूसरे द्वीपों के लोग, पहियों से थके-हारे, अपनी जान छोड़ दी, मानो जाल के तालाब में थके-हारे मछली।

7.112.15

यावद्द्वीपा जिताः कुक्षौ सह्याद्रौ सममूर्तयः । आश्वस्य दिवसान्सप्त ययुरायासमन्थरम् ॥ १५ ॥

yāvaddvīpā jitāḥ kukṣau sahyādrau samamūrtayaḥ | āśvasya divasānsapta yayurāyāsamantharam || 15 ||

As long as the islands were conquered in the belly, equal to the Sahya mountains, after reassuring for seven days, they went without fatigue.

जब तक द्वीप पेट में विजयी हुए, सह्याद्रि पर्वतों के बराबर, सात दिनों तक आश्वासन देने के बाद, वे थकान के बिना चले गए।

7.112.16

गन्धमादनपुन्नागवनकुञ्जेषु पुञ्जिताः । विद्याधरकुमारीभिर्गान्धाराः परिरक्षिताः ॥ १६ ॥

gandhamādanapunnāgavanakuñjeṣu puñjitāḥ| vidyādharakumārībhirgāndhārāḥ parirakṣitāḥ || 16 ||

In the groves of the Gandhamadana forest, filled with Punnaga trees, the Gandharvas are protected by the daughters of the Vidyadharas.

गन्धमादन वन के पुन्नाग कुंजों में भरे हुए, विद्याधर कुमारियों द्वारा गान्धार सुरक्षित हैं।

7.112.17

हूणचीनकिरातानां मुक्तैस्तैश्चक्रवर्षणैः । कमलानीव लूनानि शिरांस्यभिमुखानिलैः ॥ १७ ॥

hūṇacīnakirātānāṃ muktais taiścakravarṣaṇaiḥ| kamalānīva lūnāni śirāṃsyabhimukhānilaiḥ || 17 ||

The heads of the Huns, Chinese, and Kiratas, struck by those released arrows, fell like lotuses cut by the wind.

हूण, चीन और किरातों के सिर, उन छोड़े गए बाणों से घायल होकर, हवा से कटे कमलों की तरह गिरे।

7.112.18

निलीपा नलिनीनाले कण्टका इव निश्चलाः। द्रुमे द्रुमे द्रुममया भयात्त्वस्यावसंश्चिरम्॥ १८॥

nilīpā nalinīnāle kaṇṭakā iva niścalāḥ| drume drume drumamayā bhayāttvasyāvasaṃściram || 18 ||

The Nilipa trees stand motionless like thorns in the lotus stalks, and in every tree, there is fear, and they remain there for a long time.

निलीपा वृक्ष कमल के डंठलों में काँटों की तरह निश्चल खड़े हैं, और हर पेड़ में भय है, और वे वहाँ लम्बे समय तक रहते हैं।

7.112.19

चारुसारङ्गरङ्गासु शैलकाननभूमिषु। चतुर्दिक्कं तदापातैः संपन्नं क्षोभणं घनम्॥ १९॥

cārusāraṅgarangāsu śailakānanabhūmiṣu| caturdikkaṃ tadāpātaiḥ saṃpannaṃ kṣobhaṇaṃ ghanam || 19 ||

In the beautiful forests and mountainous regions, in all directions, there was a dense and disturbing downpour.

सुन्दर वनों और पहाड़ी इलाकों में, सभी दिशाओं में, एक घना और विचलित करने वाला वर्षा हुआ।

7.112.20

कण्टकस्थलनामानः कण्टकस्थलकर्कशाः। कण्टकस्थलगा आसन्कण्टकस्थलमण्डले॥ २०॥

kaṇṭakasthalanāmānaḥ kaṇṭakasthalakarkaśāḥ| kaṇṭakasthalagā āsankaṇṭakasthalamaṇḍale || 20 ||

Those named after the thorny place, harsh due to the thorny place, residing in the thorny place, were in the circle of the thorny place.

जो काँटेदार स्थान के नाम से जाने जाते हैं, काँटेदार स्थान के कारण कठोर, काँटेदार स्थान में रहने वाले, वे काँटेदार स्थान के चक्र में थे।

7.112.21

पारसीकाः परं पूरैः पारं प्राप्य पयोनिधेः। निपेतुः पवनैः पूताः प्रलये तारका इव॥ २१॥

pārasīkāḥ paraṃ pūraiḥ pāraṃ prāpya payonidheḥ | nipetuḥ pavanaiḥ pūtāḥ pralaye tārakā iva || 21 ||

The Persians, having reached the other shore of the ocean, fell down purified by the winds, like stars in dissolution.

पारसी लोग समुद्र के पार तक पहुंचकर, वायु से पवित्र होकर, प्रलय में तारों की तरह गिर पड़े।

7.112.22

ववुरम्भोधिकुट्टाका दृषदां कटकाङ्किताः। सर्वदिग्वनलुण्टाका वाताः प्रलयशङ्किताः॥ २२॥

vavurambhodhikuṭṭākā dṛṣadāṃ kaṭakāṅkitāḥ | sarvadigvanaluṇṭākā vātāḥ pralayaśaṅkitāḥ || 22 ||

The winds, fearing dissolution, blew in all directions, striking the peaks of mountains and the clouds, as if they were the destroyers of the world.

प्रलय की आशंका से वायुएँ सभी दिशाओं में बहने लगीं, पर्वतों की चोटियों और बादलों को तोड़ती हुईं, मानो वे विश्व की समाप्ति करने वाली हों।

7.112.23

आसारसाराः पङ्काम्बुप्लुताः सघनघुंघुमाः। आसन्दशदिशोऽदृश्या बहुक्षुब्धायुधानिलैः॥ २३॥

āsārasārāḥ paṅkāmbuplutāḥ saghanaghuṃghumāḥ | āsandiśado'dṛśyā bahukṣubdhāyudhānilaiḥ || 23 ||

The directions became invisible, filled with muddy water, dense fog, and many trembling weapons, carried by the winds.

दिशाएँ कीचड़ से भरी पानी, घने कोहरे और बहुत से काँपते हुए हथियारों से भरी हुई थीं, जिन्हें वायु लेकर आई थी।

7.112.24

निर्ह्रादकारिभिर्वातैर्वहच्छपछपारवम्। प्रससृर्भुवि नीहारा महार्णवरया इव ॥ २४ ॥

nirhrādakāribhirvātairvahacchapachapāravam | prasasrurbhuvi nīhārā mahārṇavarayā iva || 24 ||

With the winds causing tremendous roars, the mist spread on the earth like a great ocean wave.

वायुओं के भयंकर गर्जन से, धुंध पृथ्वी पर महासागर की लहरों की तरह फैल गई।

7.112.26

विदूरस्था रथेभ्यश्च वीचिचीत्कारकारिणः। सरोम्भस्यनिलैः पेतुः पद्मेभ्य इव षट्पदाः ॥ २६ ॥

vidūrasthā rathebhyaśca vīcicītkārakāriṇaḥ | sarombhasyanilaiḥ petuḥ padmebhya iva ṣaṭpadāḥ || 26 ||

Far away from the chariots, making a loud noise, they fell like bees from lotuses, with the winds full of foam.

रथों से दूर, जोर से चीत्कार करते हुए, वे फेन से भरी वायुओं के साथ कमलों से भौंरे की तरह गिरे।

7.112.27

हूणा आमस्तकं मग्ना उत्तरार्णवसैकते। क्लिन्नास्तत्रैव पङ्कान्तः पूरणाविलशूलवत् ॥ २७ ॥

hūṇā āmastakaṃ magna uttarārṇavasaikate | klinnāstatraiva paṅkāntaḥ pūraṇāvilashūlavat || 27 ||

The Hunas, with their heads submerged in the northern ocean, were drowned in the mud there, like a whirlpool filling with water.

हूण लोगों के सिर उत्तर सागर में डूब गए थे, और वहीं कीचड़ में डूब गए थे, जैसे भरती हुई भंवर की तरह।

7.112.28

तीरैलावनलेखासु शकाः पूर्वपयोनिधेः। नीता बद्धा दिनं मुक्ता न गता यमसादनम् ॥ २८ ॥

tīrailāvanalekhāsu śakāḥ pūrvapayonidheḥ | nītā baddhvā dinaṃ muktā na gatā yamasādanam || 28 ||

The Shakas, who were taken captive on the shores of the eastern ocean, were released after a day but did not reach the abode of Yama.

शक लोग, जो पूर्वी सागर के तट पर बंदी बनाए गए थे, एक दिन बाद छोड़ दिए गए लेकिन यम के घर नहीं पहुंचे।

7.112.29

मन्दं मन्द्रा महेन्द्राद्रौ क्रन्दन्तः पतिता दिवः। आश्वासिता मुनिवरैर्निजाश्रममृगा इव ॥ २९ ॥

mandaṃ mandrā mahendrādrau krandantaḥ patitā divaḥ | āśvāsitā munivarairnijāśramamṛgā iva || 29 ||

The Mandras, who were crying softly, fell from the sky onto the Mahendra mountain. They were consoled by the great sages as if they were deer in their own hermitage.

मंद्र लोग, जो धीरे-धीरे रो रहे थे, महेन्द्र पर्वत पर आकाश से गिर पड़े। उन्हें महान ऋषियों ने उसी तरह सांत्वना दी जैसे वे अपने आश्रम में हिरण हों।

7.112.30

प्रविष्टा याचनं सह्ये लब्धाः सुरविलाद्वयम्। अनर्थेनाऽर्थ आयाति काकतालीयतः क्वचित् ॥ ३० ॥

praviṣṭā yācanaṃ sahye labdhāḥ suravilāddvayam | anarthenā'rtha āyāti kākatālīyataḥ kvacit || 30 ||

They entered the Sahya mountain range and obtained the divine fruit. Sometimes, good fortune comes from misfortune, like the crow's tale.

वे सह्याद्रि पर्वतमाला में प्रवेश कर गए और दिव्य फल प्राप्त किया। कभी-कभी, दुर्भाग्य से भाग्य आता है, जैसे कौए की कहानी।

7.112.31

पतिता दर्दुरारण्ये दशार्णा जीर्णपर्णवत्। भुक्त्वा विषफलान्यज्ञा मृतास्तत्रैव ते स्वयम्॥ ३१॥

patitā dardurāraṇye daśārṇā jīrṇaparṇavat | bhuktvā viṣaphalānyajñā mṛtāstatraiva te svayam || 31 ||

They fell in the forest of frogs, like withered leaves. Unknowingly, they ate poisonous fruits and died there.

वे मेंढकों के जंगल में गिर पड़े, जैसे सूखे पत्ते। अनजाने में उन्होंने विषैले फल खा लिए और वहीं मर गए।

7.112.32

विशल्यकरणीं भुक्त्वा काकतालीययोगतःहिमाद्रौ हैहया याता गृहं विद्याधरा इव॥ ३२॥

viśalyakaraṇīṃ bhuktvā kākatālīyayogataḥhimādrau haihayā yātā gṛhaṃ vidyādharā iva || 32 ||

Having eaten the thorn-removing herb, by the power of the crow-palm, they went to the Himalayas like the Vidyadharas going home.

विशल्यकरणीं भुक्त्वा काकतालीययोगतःहिमाद्रौ हैहया याता गृहं विद्याधरा इव।

7.112.33

पृष्ठनृम्लानकुसुमा धनुर्भिर्गृहमागताःवङ्गा नाद्यापि दृश्यन्ते पिशाचत्वमिवागताः॥ ३३॥

pṛṣṭhanṛmlānakusumā dhanurbhirgṛhamāgatāḥvaṅgā nādyāpi dṛśyante piśācatvamivāgatāḥ || 33 ||

With withered flowers on their backs, they came home with bows, but the Vangas are still not seen, as if they have become ghosts.

पृष्ठनृम्लानकुसुमा धनुर्भिर्गृहमागताःवङ्गा नाद्यापि दृश्यन्ते पिशाचत्वमिवागताः।

7.112.34

अङ्गा वनफलैर्भुक्तैर्विद्याधरपदप्रदैःविद्याधरीभिः क्रीडन्ति दिवि विद्याधराः स्थिताः॥ ३४॥

aṅgā vanaphalairbhuktairvidyādharapadapradaiḥvidyādharībhiḥ krīḍanti divi vidyādharāḥ sthitāḥ || 34 ||

The Angas, having eaten the forest fruits given by the Vidyadharas, play with the Vidyadharas in the sky.

अङ्गा वनफलैर्भुक्तैर्विद्याधरपदप्रदैःविद्याधरीभिः क्रीडन्ति दिवि विद्याधराः स्थिताः।

7.112.35

तालीतमालकण्डेषु पतिताः पातिताङ्गकाःपारसीका गता मोहं भ्रमाद्वैमानिका इव॥ ३५॥

tālītamālakhaṇḍeṣu patitāḥ pātitāṅgakāḥpārasīkā gatā mohaṃ bhramādvaimānikā iva || 35 ||

Fallen in the pieces of talitamala, the Parasikas, with their limbs fallen, have gone mad, wandering like those who have lost their way.

तालीतमालकण्डेषु पतिताः पातिताङ्गकाःपारसीका गता मोहं भ्रमाद्वैमानिका इव।

7.112.36

तरलासारमातङ्गं पतितं तङ्गणाङ्गणेअङ्गैरङ्ग कलिङ्गानां चतुरङ्गं वलं हतम्॥ ३६॥

taralāsāramātaṅgaṃ patitaṃ taṅgaṇāṅgaṇeaṅgairaṃga kaliṅgānāṃ caturaṅgaṃ valaṃ hatam || 36 ||

The mighty elephant, Taralasara, fell in the courtyard, struck by the limbs of the Kalinga warriors, and the four-limbed army was destroyed.

तरलासार नामक महान हाथी अङ्गण में गिर गया, कलिंग योद्धाओं के अंगों से मारा गया, और चार-अंग सेना नष्ट हो गई।

7.112.37

क्रमत्यरिबले साल्वाः शरशैलोदकोदरे । पतिताः प्रभुणा सार्धमद्याप्येवोपलाः स्थिताः ॥ ३७ ॥

kramatyaribale sālvāḥ śaraśailodakodare | patitāḥ prabhuṇā sārdhamadyāpyevopalāḥ sthitāḥ || 37 ||

The enemies, in the order of their strength, fell into the ocean of arrows like stones, and even today they remain there with their lord.

शत्रुओं ने अपनी शक्ति के क्रम में बाणों के समुद्र में पत्थरों की तरह गिर गए, और आज भी वे अपने स्वामी के साथ वहाँ हैं।

7.112.38

असंख्याः प्रपलायन्तः ककुभं ककुभं प्रति । नराः सरत्तरङ्गेषु सागरेषु लयं गताः ॥ ३८ ॥

asaṃkhyāḥ prapalāyantaḥ kakubhaṃ kakubhaṃ prati | narāḥ sarattarangeṣu sāgareṣu layaṃ gatāḥ || 38 ||

Countless people, fleeing in all directions, met their end in the oceans filled with waves of blood.

असंख्य लोग, सभी दिशाओं में भागते हुए, रक्त की लहरों से भरे समुद्रों में अपना अंत पा गए।

7.112.39

क्षेत्राटवीपुरजलस्थलशैलकूलकुल्याग्रहारसरिदब्धिभृगुद्रुमेषु । ग्रामारपट्टिगिरिकूपगुहागृहेषु भ्रष्टानि कःकलयितुं कुबलानि शक्तः ॥ ३९ ॥

kṣetrāṭavīpurajalasthalśailakūlakulyāgrahārasaridabdhibhṛgudrumēṣu | grāmārapaṭṭigirikūpaguhāgṛheṣu bhraṣṭāni kaḥkalayituṃ kubalāni śaktaḥ || 39 ||

In fields, forests, cities, waters, lands, mountains, riverbanks, villages, forts, hills, wells, caves, and houses, who can count the fallen?

खेतों, जंगलों, नगरों, जलों, भूमियों, पर्वतों, नदियों के किनारों, गाँवों, किलों, पहाड़ियों, कुओं, गुफाओं और घरों में, कौन गिरे हुए लोगों की गिनती कर सकता है?

Chapter 113

7.113.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । बलान्यनुतरन्तोऽथ तदित्थं द्रवतां द्विषाम् । दूराद्दूरतरं प्राप्ताश्चत्वारस्ते विपश्चितः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | balānyanutarantō'tha tadittthaṃ dravatāṃ dviṣām | dūrāddūrataraṃ prāptāścatvāraste vipaścitaḥ || 1 ||

Shri Vasistha said: Following the armies, they then reached the enemies who were fleeing in that manner. Those four wise ones reached farther and farther from afar.

श्री वसिष्ठ ने कहा: सेनाओं का अनुसरण करते हुए, वे फिर उन शत्रुओं तक पहुंचे जो उस तरह भाग रहे थे। वे चारों बुद्धिमान दूर से दूर तक पहुंचे।

7.113.2

सर्वशक्तिमयैकेन चेतनेनेश्वरेण ते । प्रहिता दिग्जयं चक्रुः सर्व एव समाशयाः ॥ २ ॥

sarvaśaktimayaikena cetaneneśvareṇa te | prahitā digjayaṃ cakruḥ sarva eva samāśayāḥ || 2 ||

Sent by the all-powerful, conscious Lord, they all, with the same intention, conquered the directions.

सर्वशक्तिमान, चेतन ईश्वर द्वारा भेजे गए, वे सभी एक ही इरादे से दिशाओं पर विजय प्राप्त की।

7.113.3

दूरात्तावदविच्छिन्नमनुसस्रुर्बलानि ते । यावत्तीरं समुद्राणां प्रवाहाः सरितामिव ॥ ३ ॥

dūrāttāvadavicchinnamanusasrurbalāni te | yāvattīraṃ samudrāṇāṃ pravāhāḥ saritāmiva || 3 ||

From afar, they followed the uninterrupted armies like the flow of rivers to the shores of the oceans.

दूर से, वे नदियों की तरह बिना रुके सेनाओं का अनुसरण करते हुए समुद्रों के तट तक पहुंचे।

7.113.4

दूराविश्रान्तयानेन तेषां तत्सर्वसाधनम् । आत्मीयं परकीयं च क्षीणं कुसरिदम्बुवत् ॥ ४ ॥

dūrāviśrāntayānena teṣāṃ tatsarvasādhanam | ātmīyaṃ parakīyaṃ ca kṣīṇaṃ kusaridambuvat || 4 ||

With the fatigue of distant travel, all their means, both their own and others', were exhausted like water in a small pond.

दूर की यात्रा के थकान से, उनके सभी साधन, अपने और दूसरों के, छोटे तालाब के पानी की तरह खत्म हो गए।

7.113.5

आत्मीयान्यन्यदीयानि तेषां वीक्ष्यबलान्यलम् । क्षीणानीव मुमुक्षूणां पुण्यपापानि धावताम् ॥ ५ ॥

ātmīyānyanyadīyāni teṣāṃ vīkṣyabalānyalam | kṣīṇānīva mumukṣūṇāṃ puṇyapāpāni dhāvatām || 5 ||

Seeing their own and others' armies exhausted, they seemed like the exhausted merits and demerits of those seeking liberation.

अपनी और दूसरों की सेनाओं को थका हुआ देखकर, वे मुक्ति की इच्छा रखने वालों के थके हुए पुण्य और पाप की तरह लगे।

7.113.6

स्वयमस्त्राणि शान्तानि कृतकृत्यान्यथाम्बरे । ज्वालाजालानि वह्नीनां दाह्यस्यासंभवादिव ॥ ६ ॥

svayamastraaṇi śāntāni kṛtakṛtyānyathāmbare| jvālājālāni vahnīnāṃ dāhyasyāsaṃbhavaadiva || 6 ||

The weapons themselves became calm as if they had accomplished their purpose in the sky| The flames of fire became calm as if there was no more to burn

हथियार स्वयं ही शान्त हो गए जैसे उनका काम हो गया हो आकाश में| अग्नि की ज्वालाएँ शान्त हो गईं जैसे जलाने को कुछ न बचा हो

7.113.7

आलयेषु रथाश्वेभवृक्षौघादिषु हेतयः । आसन्निद्रालवो लीना दिनान्ते विहगा इव ॥ ७ ॥

ālayeṣu rathāśvebhavaṛkṣaughādiṣu hetayaḥ| āsannidrālavo līnā dināṇte vihagā iva || 7 ||

In the dwellings, chariots, horses, and forests, the causes became calm as if they were tired at the end of the day like birds

निवासों, रथों, घोड़ों, और वनों में, कारण शान्त हो गए जैसे दिन के अंत में थके हुए पक्षी

7.113.8

तरङ्गा इव तोयेऽन्तर्नीहारा इव वारिदे । मेघा वायाविवामोदा व्योमनीव निलिल्यिरे ॥ ८ ॥

taraṅgā iva toye'ntarnīhārā iva vāride| meghā vāyāvivāmodā vyomanīva nililyire || 8 ||

The waves in the water, the mist in the clouds, the clouds in the wind, and the sky itself became calm as if they were absorbed

पानी में तरंगें, बादलों में कुहरा, हवा में बादल, और आकाश स्वयं शान्त हो गया जैसे वे विलीन हो गए हों

7.113.9

धारापङ्कतलालीनशान्तहेतिजलेचरः । नाराचसीकरासारनीहारपरिवर्जितः ॥ ९ ॥

dhārāpaṅkatālīnaśāntahetijalecharaḥ| nārācasīkarāsāranīhāraparivarjitaḥ || 9 ||

The water flowing in streams became calm, free from arrows, stones, and mist

धाराओं में बहता हुआ पानी शान्त हो गया, जो तीरों, पत्थरों, और कुहरे से मुक्त था

7.113.10

चक्रावर्तशतोन्मुक्तो युक्तः सौम्यतयाच्छया । प्रशान्तमेघसंरम्भतरङ्गोत्तुङ्गवर्षणः ॥ १० ॥

cakrāvartashatonmukto yuktaḥ saumyatayācchayā| praśāntameghasaṃrambhataraṅgottuṅgavarṣaṇaḥ || 10 ||

Released from hundreds of whirlpools, endowed with gentle shade, calm with the clouds' fury, the high waves and rain subsided

सैकड़ों भँवरों से मुक्त, कोमल छाया से युक्त, बादलों के क्रोध से शान्त, ऊँची तरंगें और वर्षा शान्त हो गई

7.113.11

अन्तर्लीनर्क्षरत्नौघकोणसंस्थार्कवाडवः । शून्यतावारिरमलो व्योमैकाब्धिरभूत्पृथुः ॥ ११ ॥

antarlīnarakṣaratnaughakoṇasaṃsthārkavāḍavaḥ| śūnyatāvāriramalo vyomaikābdhirabhūtpṛthuḥ || 11 ||

The stars, embedded within the celestial sphere, became like a cluster of gems in the corner of the sky. The void, pure and vast, became like the single ocean of the sky.

अंतरिक्ष में छिपे हुए तारे आकाश के कोण में रत्नों के ढेर की तरह स्थित हो गए| शून्यता, निर्मल और विशाल, आकाश का एकमात्र समुद्र बन गया।

7.113.12

लम्बप्रकाशगम्भीरं प्रसन्नं कान्तिमत्ततम्। रजोविरहितं रेजे खं मनो महतामिव ॥ १२ ॥

lambaprakāśagambhīraṃ prasannaṃ kāntimattatam| rajovirahitaṃ reje khaṃ mano mahatāmiva || 12 ||

The sky, deep and bright, appeared calm and radiant, free from dust, like the mind of the great ones.

आकाश, गहरा और उज्ज्वल, शांत और चमकदार दिखाई देता है, धूल से मुक्त, महान लोगों के मन की तरह।

7.113.13

अथार्णवांस्ते ददृशुराकाशस्यानुजानिव। विस्तीर्णान्विमलाकारान्पूरिताखिलदिक्तटान्॥ १३ ॥

athārṇavāṃste dadṛśurākāśasyānujāniva| vistīrṇānvimalākārānpūritākhiladiktāṭān || 13 ||

Then they saw the oceans, as if they were the younger siblings of the sky, vast, pure, and filling all directions.

तब उन्होंने समुद्रों को देखा, मानो वे आकाश के छोटे भाई हों, विशाल, निर्मल, और सभी दिशाओं को भरते हुए।

7.113.14

तरङ्गकणकल्लोलमहागुलुगुलाकुलान्। भूरिसीकरनीहारहारिहारिशरीरिणः ॥ १४ ॥

taraṅgakaṇakallolamahāgulugulākulān| bhūrisīkaranīhārahārihāriśarīriṇaḥ || 14 ||

The oceans were filled with waves, foam, and turbulent waters, adorned with abundant spray and mist.

समुद्र तरंगों, फेन और उथल-पुथल से भरे हुए थे, पानी की बूँदों और कुहरे से सजे हुए।

7.113.15

स्थितानात्मानमास्तीर्य भूमौ व्याध्यातुरानिव। श्वसनार्तांश्चलद्देहान्विवर्तोर्मिमहाभुजान्॥ १५ ॥

sthitānātmānamāstīrya bhūmau vyādhyāturāniva| śvasanārtāṃścaladdehānvivartormimahābhujān || 15 ||

They lay on the earth, as if sick with disease, breathing heavily, their bodies trembling, turning like great serpents.

वे पृथ्वी पर पड़े हुए थे, मानो रोग से पीड़ित हों, भारी साँसें लेते हुए, उनके शरीर काँप रहे थे, विशाल सर्पों की तरह घूम रहे थे।

7.113.16

जडानपि स्पन्दमयान्कल्लोलाकोटकोटरान्। संसारानिव विस्तीर्णांश्चक्रावर्तदशाकुलान्॥ १६ ॥

jaḍānapi spandamayānkallolākoṭakoṭarān | saṃsārāniva vistīrṇāṃścakrāvartadaśākulān || 16 ||

Even the inert objects are made to move and tremble like the vast and ever-changing world, filled with the tumultuous waves of the ocean.

जड़ वस्तुएं भी संसार की तरह चंचल और बदलती हुई दिखाई देती हैं, जो समुद्र की उथल-पुथल से भरी हुई हैं।

7.113.17

रत्नराशितटोद्द्योतपीवरीकृतभास्करान्। शङ्खराशिविशद्वातशब्दतर्जितघुंघुमान्॥ १७ ॥

ratnarāśitato'ddadyotapīvarīkṛtabhāskarān | śaṅkharāśiviśadvātaśabdatarjitaghuṅghumān || 17 ||

The shores gleam with the brilliance of precious gems, and the sound of the clear wind blowing through the conch shells creates a resonant hum.

तट रत्नों की चमक से जगमगा रहे हैं, और शंखों से होकर बहने वाली साफ हवा की आवाज से एक गूंजता हुआ स्वर उत्पन्न हो रहा है।

7.113.18

मांसलोर्मिघटाघोषघर्घराम्बरडम्बरान्। वर्तुलावर्तविस्तारप्रभ्रमद्विद्रुमद्रुमान्॥ १८॥

māṃsalormighaṭāghoṣaghargarāmbaraḍambarān | vartulāvartavistāraprabhramadvidrumadrumān || 18 ||

The fleshy waves create a roaring sound, and the circular motion of the vast, whirling trees adds to the tumultuous atmosphere.

मांसल लहरें गर्जना की आवाज उत्पन्न करती हैं, और विशाल, घूमते हुए पेड़ों की गोल गति उथल-पुथल भरे वातावरण को और बढ़ाती है।

7.113.19

मकरव्यूहनिर्ह्रादघर्घरोदरघुंघुमान्। मत्स्यपुच्छच्छटाच्छिन्नमज्जत्पोतकृतारवान्॥ १९॥

makaravyūhanirhrādaghargarodaraghuṅghumān | matsyapucchacchataśchinnamajjatpotakṛtāravān || 19 ||

The roaring sound of the crocodile formations and the resonant hum of the fish tails being cut by the sinking boats create a chaotic symphony.

मगरमच्छ की व्यूह रचना की गर्जना और डूबती नावों द्वारा कटी हुई मछलियों की पूंछ की गूंजती आवाज एक अव्यवस्थित संगीत बनाती है।

7.113.20

उद्ग्रीवकूर्ममकरनिगीर्णौर्णनरोत्करान्। ऊर्मिबिम्बितसप्ताश्वसहस्रार्कनभोनिभान्॥ २०॥

udgrīvakūrmamakaranigīrṇaurṇanarotkarān | ūrmibimbitasaptāśvasahasrārkanabhonibhān || 20 ||

The waves reflect the seven horses of the sun, creating an illusion of a thousand suns in the sky, while the turtles and crocodiles are submerged in the water.

लहरें सूर्य के सात घोड़ों का प्रतिबिंब दिखाती हैं, जिससे आकाश में हजारों सूर्यों का भ्रम होता है, जबकि कछुओं और मगरमच्छ पानी में डूबे हुए हैं।

7.113.21

भांकारकारिपवनपतद्भूत्यततोद्धटान्। ऊर्म्युदस्तमणिव्रातबलाज्झणझणध्वनीन्॥ २१॥

bhāṅkārakāripavana patadbhūtyatatoddhṭān | ūrmyudastamaṇivrātabalāj jhaṇajhaṇadhvanīn || 21 ||

The winds, causing the trees to bend, are uplifted by the splendor of the waves, and the sound of the waves is like the jingling of jewels scattered by the waves.

हवाएँ, जो पेड़ों को झुकाती हैं, लहरों की शोभा से उठती हैं, और लहरों की आवाज ऐसी है जैसे लहरों द्वारा बिखरे हुए रत्नों की झंकार।

7.113.22

नानाजालैर्बलभुजैर्हेलास्पृष्टार्कमण्डलान्। नमदुन्नमदुद्रश्मिरत्नमाणिक्यमण्डलान्॥ २२॥

nānājālairbalabhujairhelāspṛṣṭārkamaṇḍalān | namadunnamadudraśmiratnamāṇikyamaṇḍalān || 22 ||

With various nets and strong arms, they touched the sun's disc, and the gems and jewels shone brightly, bowing and rising.

विभिन्न जालों और मजबूत भुजाओं से, वे सूर्य के मंडल को छूते हैं, और रत्न और मणियाँ झुकती और उठती हुई चमकती हैं।

7.113.23

उत्फालफेनिलावर्तविवर्तमकरोत्करान्। क्वचित्करिकरोन्नामैः क्षणं वंशवनीकृतान्॥ २३॥

utphālaphēnilāvartavivartamakarōtkarān | kvacitkarikarōnnāmaiḥ kṣaṇaṃ vaṃśavanīkṛtān || 23 ||

With the foam bubbles rising and swirling, the waves sometimes resembled elephants' trunks, and for a moment, they looked like bamboo groves.

फेन के बुलबुले उठते और घूमते हुए, लहरें कभी-कभी हाथियों की सूंड जैसी लगती हैं, और एक क्षण के लिए, वे बाँस के झुरमुट जैसी लगती हैं।

7.113.24

लहरीवल्लरीवालान्पृष्ठतालिषु माधवान्। क्वचिदन्तरविश्रान्तसपरिच्छदमाधवान्॥ २४॥

laharīvallarīvālānpṛṣṭhatāliṣu mādhavān | kvacidantaraviśrāntasaparicchadamādhavān || 24 ||

The waves, cresting and falling, clapped their backs in delight, and sometimes, resting in between, they appeared adorned with garlands.

लहरें, उठती और गिरती हुई, आनंद में अपनी पीठ पर थपकी लगाती हैं, और कभी-कभी, बीच में विश्राम करते हुए, वे मालाओं से सजी हुई लगती हैं।

7.113.25

एकदेशस्थितासंख्यनानासुरसुरालयान्। तारानवतरङ्गौघपरिदन्तुरिताम्बरान्॥ २५॥

ēkadēśasthitāsaṃkhyanānāsurasurālayān | tārānavataraṅgaughaparidanturitāmbarān || 25 ||

In some places, the waves, resembling various divine and demonic abodes, were adorned with star-like foam and had garments torn by the descending waves.

कुछ स्थानों पर, लहरें, जो विभिन्न देवताओं और असुरों के निवास स्थान जैसी लगती हैं, तारों जैसे फेन से सजी हुई थीं और उतरती हुई लहरों से उनके वस्त्र फटे हुए थे।

7.113.26

गुहामशकवद्गर्तभीतशाखायिताचलान्। नयतोम्बुतरङ्गौघैर्वेलाद्रीनतिखर्वताम्॥ २६॥

guhāmaśakavadgartabhītaśākhāyitācalān | nayatombutaraṅgaughairvelādrīnatikharcātām || 26 ||

The mountains, which are like the branches of a tree trembling with fear of the pit, are being led to extreme diminution by the waves of the ocean.

जो पर्वत गड्ढों से डरकर काँपते हुए वृक्षों की शाखाओं के समान हैं, वे समुद्र की लहरों द्वारा अत्यंत छोटे होने की ओर ले जाए जा रहे हैं।

7.113.27

खक्षेत्रारोपितानल्परत्नरश्मिपथाङ्कुरान्। शुद्धशुक्तिमुखोन्मुक्तमुक्तान्तरितसैकतान्॥ २७॥

khakṣetrāropitānalparatnarashmipathāṅkurān | śuddhaśuktimukhonmuktamuktāntaritasaihatān || 27 ||

The small gems placed in the sky appear like the rays of the sun, and the pure pearls released from the mouth of the oyster shells are scattered on the shore.

आकाश में रखे हुए छोटे रत्न सूर्य की किरणों के समान दिखाई देते हैं, और शुद्ध मोती जो मुक्ता के छिलकों से निकलते हैं, तट पर बिखरे हुए हैं।

7.113.28

नानारत्नांशुकौशेयसूत्रचित्रांस्तरङ्गितान्। विशन्नदीन्दशादिग्भिः समाकीर्णान्पटानिव॥ २८॥

nānāratnāṃśukauśeyasūtracitrāṃstarangitān | viśannadīndaśādigbhiḥ samākīrṇānpaṭāniva || 28 ||

The waves, adorned with various gems and silken threads, appear like pictures scattered by the winds from different directions.

विभिन्न रत्नों और रेशमी धागों से सज्जित लहरें विभिन्न दिशाओं से आने वाली हवाओं द्वारा बिखरे हुए चित्रों के समान दिखाई देती हैं।

7.113.29

इन्द्रनीलतटैर्व्युप्तमुक्ताशुक्तिशताङ्कितैः। क्वचिद्दर्शयतः कान्तशतेन्दुकनखश्रियम्॥ २९॥

indranīlatatairvyuptamuktāśuktiśatāṅkitaiḥ | kvaciddarśayataḥ kāntaśatendukanakhaśriyam || 29 ||

Sometimes, the shore adorned with sapphires and marked with hundreds of pearls and oyster shells displays the beauty of the moon's nails.

कभी-कभी, नीलम और सैकड़ों मोती और मुक्ता के छिलकों से सजा हुआ तट चंद्रमा के नखों की सुंदरता दिखाता है।

7.113.30

रत्नांशुजालसंदिग्धास्तरङ्गादेशबिम्बिताः । परिवर्तयतः फुल्लास्तीरतालीवनावलीः ॥ ३० ॥

ratnāṃśujālasaṃdigdhāstaranggādeśabimbitāḥ | parivartayataḥ phullāstīratālīvanāvalīḥ || 30 ||

The waves, reflected in the gems and appearing like a net, turn the blooming gardens on the shore into a series of pictures.

रत्नों में प्रतिबिंबित और जाल के समान दिखाई देने वाली लहरें तट पर खिले हुए बगीचों को एक श्रृंखला में चित्रों में बदल देती हैं।

7.113.31

एलालवङ्गकङ्कोलफलमालां जिघृक्षुभिः । वेलावनलताभ्रष्टामात्तावृत्तीञ्जलेचरैः ॥ ३१ ॥

elālavangkakankolaphalamālāṃ jighṛkṣubhiḥ | velāvanalatābhraṣṭāmāttāvṛttīñjalecaraiḥ || 31 ||

The garland of fruits like ela, lavanga, kankola, etc., desired by the aquatic beings, was dropped by the creeper of the shore and was enjoyed by the aquatic beings.

एला, लवंग, कंकोल आदि फलों की माला, जिसे जलचर प्राणी चाहते थे, तट की लता से गिर गई और जलचर प्राणियों द्वारा भोगी गई।

7.113.32

चूतनीपकदम्बाग्रविहगान्प्रतिबिम्बितान् । भुञ्जानैर्विप्रलम्भेन कृताच्छोटाञ्जलेचरैः ॥ ३२ ॥

cūtanīpakadambāgravihagānpratibimbitān | bhuñjānairvipralambhena kṛtācchoṭāñjalecaraiḥ || 32 ||

The birds perched on the tops of mango, nīpa, and kadamba trees were reflected in the water, and the aquatic beings enjoyed this deceptive sight, creating a beautiful scene.

आम, नीप, और कदंब के वृक्षों की शाखाओं पर बैठे पक्षी जल में प्रतिबिंबित हो रहे थे, और जलचर प्राणी इस भ्रामक दृश्य का आनंद ले रहे थे, जिससे एक सुंदर दृश्य बन रहा था।

7.113.33

खेचरप्रतिबिम्बेन विद्रवद्भिरितस्ततः । भग्नबन्धबृहत्सेतून्क्षणं प्रति जलेचरैः ॥ ३३ ॥

khecarapratibimbena vidravadbhiritastataḥ | bhagnabandhabṛhatsētūnkṣaṇaṃ prati jalecaraiḥ || 33 ||

The reflection of the flying birds in the water caused the aquatic beings to flee in different directions, breaking the large bonds of the dams at every moment.

जल में उड़ते हुए पक्षियों के प्रतिबिंब के कारण जलचर प्राणी विभिन्न दिशाओं में भाग गए, और प्रत्येक क्षण में बड़े बाँधों के बंधन टूट गए।

7.113.34

अमूर्तान्प्रतिबिम्बेन हृदयस्थजगत्त्रयान् । चतुरो व्योमविपुलान्दिक्षु नारायणानिव ॥ ३४ ॥

amūrtānpratibimbena hṛdayasthajagattrayān | caturō vyomavipulāndikṣu nārāyaṇāniva || 34 ||

The formless reflections of the three worlds in the heart appeared like the four expansive Narayanas in the directions.

हृदय में तीनों लोकों के अमूर्त प्रतिबिंब चार विस्तृत नारायणों के समान दिखाई दे रहे थे।

7.113.35

अतिगाम्भीर्यनैर्मल्यविस्तारविभवैर्नभः । निगीर्य संदर्शयतो हृदयादिव बिम्बितम् ॥ ३५ ॥

atigāmbhīryanairmalyavistāravibhavairnabaḥ | nigīrya saṃdarśayato hṛdayādiva bimbitam || 35 ||

The sky, with its profound depth, purity, and expansive splendor, seems to swallow and reveal the reflection as if from the heart.

गहराई, पवित्रता और विस्तृत शोभा से भरा आकाश प्रतिबिंब को हृदय से निगलकर प्रकट कर रहा है।

7.113.36

जलचारिविहङ्गानां साकाशं प्रतिबिम्बितम्। आशयैर्दधतः सारैः पद्मान्भृङ्गमिवात्मगम्॥ ३६॥

jalacārivihaṅgānāṃ sākāśaṃ pratibimbitam | āśayairdadhataḥ sāraiḥ padmānbhṛṅgamivātmagam || 36 ||

The reflection of aquatic birds in the sky, bearing the essence of their desires, like a bee entering a lotus.

जलचर पक्षियों का आकाश में प्रतिबिम्बित होना, जो अपनी इच्छाओं की सार को धारण करता है, जैसे भौंरा कमल में प्रवेश करता है।

7.113.37

तरङ्गतरलास्फालमारुतैराहताम्बरान्। कन्दरोद्गारगम्भीरैः कल्पान्तजलदालयान्॥ ३७॥

taraṅgataralāsphālamārutairāhatāmbarān | kandarodgāragambhīraiḥ kalpāntajaladālayān || 37 ||

The waves, struck by the winds, are like the deep roars of the caves, resembling the clouds at the end of the world.

लहरें, जो हवाओं से छू जाती हैं, गुफाओं के गहरे गर्जन की तरह हैं, जो प्रलय के बादलों की तरह लगती हैं।

7.113.38

गुहागुलुगुलावर्तनिर्घोषाशनिभाषणान्। भृशं भावयतो ग्रस्तानगस्त्यौर्वानलानिव॥ ३८॥

guhāgulugulāvartanirghoṣāśanibhāṣaṇān | bhṛśaṃ bhāvayato grastānagastyaurvānalāniva || 38 ||

The sound of the whirling winds in the caves, like the roar of thunder, intensely meditating on the swallowed ones, like Agastya or the fire.

गुफाओं में घूमती हवाओं की आवाज, जो बिजली की गर्जन की तरह है, ग्रस्त लोगों पर गहराई से ध्यान लगाती है, जैसे अगस्त्य या अग्नि।

7.113.39

भूरिसीकरपुष्पाणि तरङ्गौघतरूणि च। प्राप्तान्यम्बुवनानीव लहरीमञ्जरीणि खम्॥ ३९॥

bhūrisīkarapuṣpāṇi taraṅgaughatarūṇi ca | prāptānyambuvanānīva laharīmañjarīṇi kham || 39 ||

The abundant sprays of water and the waves resembling trees, have reached the sky like watery forests and wave-blossoms.

प्रचुर जल की फुहारें और लहरें जो पेड़ों की तरह लगती हैं, आकाश तक पहुँच गई हैं, जैसे जल के वन और लहर के फूल।

7.113.40

सरत्तरङ्गजालानि प्रोड्डीनप्राणिमन्त्यधः। आकाशखण्डखण्डत्वात्पतितानीव विभ्रमात्॥ ४०॥

sarattaraṅgajālāni proḍḍīnaprāṇimantyadhaḥ | ākāśakhaṇḍakhaṇḍatvātpatitānīva vibhramāt || 40 ||

The network of moving waves, full of excited creatures, appears to have fallen from the sky due to the confusion caused by the fragmentation of the sky.

चलती हुई लहरों का जाल, जो उत्तेजित जीवों से भरा है, आकाश के टुकड़ों होने के कारण भ्रम से गिरा हुआ लगता है।

7.113.41

एलालवंगबकुलामलकीतमालहिंतालतालदलताण्डवखण्डिताग्रे प्राप्ते पतल्लवणवारिधिदीर्घतीरं रेखा बभावलिनिभाम्बरशैलमूर्ध्नि॥ ४१॥

elālavanga bakulāmalakītamālahiṃtālatāladalatāṇḍavakhaṇḍitāgre prāpte patallavana vāridhidīrghatīraṃ rekhā babhāvalinibhāmbaraśailamūrdhni || 41 ||

In the midst of the dance of the bees, the line of the ocean appeared like a line drawn on the peak of a mountain.

मधुमक्खियों के नृत्य के बीच, समुद्र की रेखा पहाड़ की चोटी पर खींची गई एक रेखा की तरह दिखाई दी।

Chapter 114

7.114.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ तेषां तदा तत्र ततस्तांस्तानदर्शयन् । पार्श्वगा वनवृक्षाब्धिशैलमेघवनेचरान् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha teṣāṃ tadā tatra tatastāṃstānadarśayan | pārśvagā vanavṛkṣābdhiśailameghavanecharān || 1 ||

Shri Vasishtha said: Then, at that time and place, he showed them the various beings living in the vicinity of the forest, trees, ocean, mountains, clouds, and the forest dwellers.

श्री वसिष्ठ ने कहा: फिर, उस समय और स्थान पर, उन्होंने उन्हें वन, वृक्षों, समुद्र, पर्वतों, बादलों और वन निवासियों के आसपास के विभिन्न जीवों को दिखाया।

7.114.2

देव पश्यास्य शैलस्य येयमभ्रंकषाग्रभूः । समरुन्मध्यदेशादेरश्मदेशमुपेयुषः ॥ २ ॥

deva paśyāsya śailasya yeyamabhraṃkaṣāgrabhūḥ | samarunmadhyadeśāderaśmadeśamupeyuṣaḥ || 2 ||

O Deva, see this mountain whose peak is covered with clouds, which rises from the middle of the ocean and reaches the region of the sun.

हे देव, इस पर्वत को देखो जिसकी चोटी बादलों से ढकी हुई है, जो समुद्र के मध्य से उठता है और सूर्य के क्षेत्र तक पहुँचता है।

7.114.3

इमा बकुलपुन्नागनालिकेरकुलाकुलाः । विपिनावलयो वान्तविविधामोदमारुताः ॥ ३ ॥

imā bakulapunnāganālikerakulākulāḥ | vipināvalayo vāntavivivdhāmodamārutāḥ || 3 ||

These are the groves filled with Bakula, Punnaga, and Naliker trees, surrounded by forests, and filled with various fragrant breezes.

ये बकुल, पुन्नाग और नालिकेर वृक्षों से भरे हुए उपवन हैं, जो वनों से घिरे हुए हैं और विभिन्न सुगंधित हवाओं से भरे हुए हैं।

7.114.4

लुनात्युपत्यकां वार्धिः शैलशालिशिलावलीः । वनालीर्लहरीदात्रैरापादफलपल्लवाः ॥ ४ ॥

lunātyupatyakāṃ vārdhiḥ śailaśāliśilāvalīḥ | vanālīrlaharīdātrairāpādaphalapallavāḥ || 4 ||

The ocean erodes the shore, the mountain rocks, and the rows of stones. The forest vines, with their swaying tendrils, are laden with fruits and leaves.

समुद्र तट, पर्वतीय चट्टानों और पत्थरों की पंक्तियों को काटता है। वन की लताएँ, अपने लहराते हुए डंठलों के साथ, फलों और पत्तों से भरी हुई हैं।

7.114.5

अधित्यकासु मेघालीर्नृत्यतां स्वाम्बुभूभृताम् । धुनोति जलधिर्बालो गृहधूमावलीमिव ॥ ५ ॥

adhityakāsu meghālīrnṛtyatāṃ svāmbubhūbhṛtām | dhunoti jaladhirbālo gṛhadhūmāvalīmiva || 5 ||

Above, the rows of clouds dance like the supporters of the water-bearing earth. The young ocean sweeps away the rows of smoke from the houses like a broom.

ऊपर, बादलों की पंक्तियाँ पानी लेकर धरती के सहायकों की तरह नाचती हैं। युवा समुद्र घरों से धुएँ की पंक्तियों को झाड़ू की तरह बहा ले जाता है।

7.114.6

राकाब्धिपूरसंप्रोतशङ्खशाखास्तटद्रुमाः चन्द्रबिम्बफलाः कल्पवृक्षा इव विभान्त्यमी ॥ ६ ॥

rākābhdhipūrasaṃprotaśaṅkhaśākhāstataṭadrumāḥ candrabimbaphalāḥ kalpavṛkṣā iva vibhāntyamī || 6 ||

The trees on the shore, with branches laden with the full moon-like fruits, appear like wish-fulfilling trees.

तट के पेड़, जिनकी शाखाएँ चन्द्रमा के समान फलों से लदी हुई हैं, कल्पवृक्षों की तरह दिखाई देते हैं।

7.114.7

रत्नपुष्पभरापूर्णरक्तपल्लवपाणयः भवन्तं पूजयन्तीव लतादारान्विता द्रुमाः ॥ ७ ॥

ratnapuṣpabharāpūrṇaraktapallavapāṇayaḥ bhavantaṃ pūjayantīva latādārānvitā drumāḥ || 7 ||

The trees, adorned with creepers and laden with gem-like flowers, seem to worship you with their red, tender leaves.

पेड़, जिनकी लताओं से सुशोभित हैं और जिनकी शाखाएँ रत्नों के समान फूलों से लदी हुई हैं, अपने लाल, कोमल पत्तों से आपकी पूजा करते हुए दिखाई देते हैं।

7.114.8

प्रोतोर्मिमकरग्रासैर्दृषद्दन्तैरागुहामुखैः ऋक्षवानृक्षवद्भूभृद्धत्ते घुरघुरारवम् ॥ ८ ॥

protormimakaragrāsairdṛṣaddantairāguhāmukhaiḥ ṛkṣavānṛkṣavadbhūbhṛddhatte ghuraghurāravam || 8 ||

The earth, bearing the weight of the mountains, roars with the sound of 'ghur ghur' due to the waves and the crocodiles, with their sharp teeth and cave-like mouths.

पृथ्वी, जो पर्वतों का भार वहन करती है, लहरों और मगरमच्छों के कारण, जिनके तीखे दांत और गुफा के समान मुख हैं, 'घुर घुर' की आवाज करती है।

7.114.9

महेन्द्रो मन्द्रगर्जाभिरभिक्षिपति गर्जतः पर्जन्यानूर्जितो जन्यः प्रतिजन्यान्यथा जडैः ॥ ९ ॥

mahendro mandragarjābhirabhikṣipati garjataḥ parjanyānūrjito janyaḥ pratijanyānyathā jaḍaiḥ || 9 ||

The great Indra, with his thunderous roars, threatens the clouds, which are energized by the rain and respond with their own thunderous sounds.

महान इंद्र, अपने गर्जन से, वर्षा से ऊर्जावान बादलों को धमकाते हैं, जो अपने गर्जन से जवाब देते हैं।

7.114.10

चन्दनारूषितः श्रीमाञ्जेतुं जलधिवेल्लनाः समुद्यत इवोच्चोऽसौ मल्लो मलयपर्वतः ॥ १० ॥

candanārūṣitaḥ śrīmāñjetuṃ jaladhivellanāḥ samudyata ivo'cco'sau mallo malayaparvataḥ || 10 ||

The Malaya mountain, adorned with sandalwood, appears to rise up like a wrestler, ready to conquer the surging ocean.

संध्या के समय, चन्दन से सुशोभित मलय पर्वत, एक पहलवान की तरह उठता है, जो उफान मारते समुद्र को जीतने के लिए तैयार है।

7.114.11

सर्वतः कचितोऽजस्रं रत्नवीचिभिरम्बुधिःभूरत्नवलयभ्रान्त्या प्रेक्ष्यते सूर्यमार्गगैः ॥ ११ ॥

sarvataḥ kacito'jasraṃ ratnavīcibhirambudhiḥbhūratnavalayabhrāntyā prekṣyate sūryamārgagaiḥ || 11 ||

The ocean, with its unending waves adorned with jewels, appears to be a necklace of jewels due to the illusion caused by the rays of the sun.

समुद्र, जिसकी लहरें रत्नों से सजी हुई हैं, सूर्य की किरणों के कारण होने वाले भ्रम से एक रत्नमाला की तरह दिखाई देता है।

7.114.12

सरन्ति रत्नमूर्धानःश्चलकानिलपायिनःवानपूराः पर्वतकाः सर्पा इव नतोन्नतैः ॥ १२ ॥

saranti ratnamūrdhānaścalakānilapāyinaḥvānapūrāḥ parvatakāḥ sarpā iva natonnataiḥ || 12 ||

The mountains, with their peaks adorned with jewels and swaying in the wind, appear like serpents moving with their heads raised and lowered.

रत्नों से सजे शिखरों वाले पर्वत, जो हवा में झूम रहे हैं, सिर उठाकर और झुकाकर चलने वाले सर्पों की तरह दिखाई देते हैं।

7.114.13

भ्रमन्तो वीचिशृङ्गेषु मकरेभाः करोत्कटैःहरन्ति सीकराम्भोदा मेघानुद्रावित इव ॥ १३ ॥

bhramanto vīciśṛṅgeṣu makarebhāḥ karotkaṭaiḥharanti sīkarāmbhodā meghānudrāvitā iva || 13 ||

The waves, moving like crocodiles with their raised hands, appear to be carrying away the clouds, as if driven by the wind.

लहरें, जो मगरमच्छों की तरह उठे हाथों के साथ चल रही हैं, हवा द्वारा उड़ाए गए बादलों को ले जाती प्रतीत होती हैं।

7.114.14

आवर्तवलिताकारः सीकरोत्करकीर्णदिक्पूर्णत्वात्तु शिरोऽशक्तो म्रियतेऽत्युत्करः करी ॥ १४ ॥

āvartavalitākāraḥ sīkarotkarakīrṇadikpūrṇatvāttu śiro'śakto mriyate'tyutkaraḥ karī || 14 ||

The elephant, unable to bear the weight of the water-filled clouds on its head, dies with a loud cry, its body twisted in pain.

हाथी, जो अपने सिर पर पानी से भरे बादलों का भार नहीं उठा सकता, दर्द से बिछड़े शरीर के साथ एक जोरदार चीख के साथ मर जाता है।

7.114.15

विविधप्राणिसंपूर्णाः सजलाद्रिनतोन्नताःयथैवाम्भोधयः सर्वास्तथैव द्वीपभूमयः ॥ १५ ॥

vividhaprāṇisaṃpūrṇāḥ sajalādrinatonnatāḥyathaivāmbhodhayaḥ sarvāstathaiva dvīpabhūmayaḥ || 15 ||

Just as the oceans are filled with various living beings and have mountains with flowing water, so are the islands filled with diverse life forms and have mountains with flowing water.

ठीक उसी तरह जैसे समुद्र विभिन्न जीवों से भरे हुए हैं और उनमें बहते पानी वाले पर्वत हैं, वैसे ही द्वीप भी विभिन्न जीवों से भरे हुए हैं और उनमें बहते पानी वाले पर्वत हैं।

7.114.16

आवर्तानात्मनोऽनन्यानप्यन्यानिव भास्वरान् गृह्यमाणानसद्रूपान्दृश्यमानानपि स्फुटान् ॥ १६ ॥

āvartānātmano'nananyānapyanyāniva bhāsvarān gṛhyamāṇānasadrūpāndṛśyamānānapi sphuṭān || 16 ||

The self-luminous objects, though not different from the self, appear as if different, shining brightly, perceived as unreal, and clearly visible.

स्वयंप्रकाश वस्तुएँ, यद्यपि आत्मा से भिन्न नहीं हैं, तथापि भिन्न प्रतीत होती हैं, चमकती हुई, असत्य के रूप में ग्रहण की जाती हैं और स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

7.114.17

तरङ्गतरलानन्तर्जडानप्यम्बुधिश्चलान् धत्ते ब्रह्मजगन्तीव सान्तानप्यन्तवर्जितान् ॥ १७ ॥

taraṅgataralānantarjaḍānapyambudhicchalān dhatte brahmajagantīva sāntānapyantavarjitān || 17 ||

The ocean holds the agitated waves, which are inert and moving, as if it were the eternal Brahman, without beginning or end.

सागर उत्तेजित तरंगों को धारण करता है, जो जड़ और चल रही हैं, मानो यह अनंत ब्रह्म हो, जिसका न आदि है न अंत।

7.114.18

यानन्तरिन्द्रवद्भानुमणीन्धत्तेऽम्बुधिर्बहून् मन्थापहृतसर्वस्वो देवेभ्यः परिरक्षितान् ॥ १८ ॥

yānantarindravadbhānumaṇīndhatte'mbudhirbahūn manthāpahṛtasarvasvodevebhyaḥ parirakṣitān || 18 ||

The ocean holds many precious gems, like the sun, which are protected from the gods by the churning of the ocean, having taken away all its wealth.

सागर बहुत से मूल्यवान रत्नों को धारण करता है, जो सूर्य के समान हैं, जो सागर के मंथन से देवताओं से बचाए गए हैं, जिन्होंने सागर का सारा धन ले लिया है।

7.114.19

दृश्यमानान्महातेजस्तथा पातालतोऽप्यलम् प्रतिबिम्बविभंग्यान्तरसत्यानिव गोपितान् ॥ १९ ॥

dṛśyamānānmahātejastathā pātālato'pyalam pratibimbavibhaṅgyāntarasatyāniv gopitān || 19 ||

The great radiance is seen, as well as from the underworld, as if it were the reflection of the inner truth, hidden.

महान तेज दिखाई देता है, और पाताल से भी, मानो यह अंतर्निहित सत्य का प्रतिबिम्ब हो, छिपा हुआ।

7.114.20

तेषां मध्यादेकमेकं प्रत्यहं पश्चिमार्णवे निक्षेपाय क्षिपति यं तेन मन्ये दिनं भवेत् ॥ २० ॥

teṣāṃ madhyādekamekaṃ pratyahaṃ paścimārṇave nikṣepāya kṣipati yaṃ tena manye dinaṃ bhavet || 20 ||

From among them, one by one, every day, it throws into the western ocean for safekeeping, by which I think the day is made.

उनमें से एक-एक को, प्रतिदिन, पश्चिमी सागर में सुरक्षित रखने के लिए फेंकता है, जिससे मैं सोचता हूँ कि दिन बनता है।

7.114.21

नानादिग्देशपयसामब्धौ साधुसमागमः । यात्रायामिव लोकानां मिथः कलकलान्वितः ॥ २१ ॥

nānādigdeśapayasāmabdhau sādhusamāgamaḥ | yātrāyāmiva lokānāṃ mithaḥ kalakalānvitaḥ || 21 ||

In the ocean, the confluence of waters from various directions and regions is like the joyful meeting of people on a journey, filled with mutual chatter.

समुद्र में विभिन्न दिशाओं और देशों के जलों का संगम यात्रा में लोगों के मिलन की तरह है, जो परस्पर बातचीत से भरा होता है।

7.114.22

जलेचरावरा नूनं सागरार्णवसंगमे । अन्योन्यवेल्लनाद्युद्धं न कदाचन शाम्यति ॥ २२ ॥

jalecarāvarā nūnaṃ sāgarārṇavasaṃgame | anyonyavellanādyuddhaṃ na kadācana śāmyati || 22 ||

In the confluence of the ocean and the sea, the aquatic creatures, it seems, never cease their mutual conflicts and battles.

समुद्र और सागर के संगम में, जलचर प्राणियों के परस्पर संघर्ष और युद्ध कभी शांत नहीं होते हैं।

7.114.23

ताम्यत्तिमितरङ्गाग्रनर्तनावर्तविभ्रमम् । वलयन्वायुरायाति वान्तसीकरमौक्तिकैः ॥ २३ ॥

tāmyattimitarāṅgāgranartanāvartavibhramam | valayanvāyurāyāti vāntasīkaramauktikaiḥ || 23 ||

The wind, adorned with pearls and frost, comes dancing with the waves, causing a whirlwind of confusion and chaos.

मोती और ओस से सज्जित वायु, तरंगों के साथ नृत्य करते हुए, उलझन और अव्यवस्था का भंवर पैदा करती है।

7.114.24

सरिन्मुक्तालतामध्यमध्यस्थाब्दमणीश्वराः । दीर्घाः खणखणायन्ते चञ्चलाः सर्वतोऽम्बुधेः ॥ २४ ॥

sarinmuktālatāmadhyamadhyasthābdamaṇīśvarāḥ | dīrghāḥ khaṇakhaṇāyante cañcalāḥ sarvato'mbudheḥ || 24 ||

The long pearl necklaces, situated in the middle of the waves, tinkle and sway in all directions of the ocean.

तरंगों के मध्य में स्थित लंबी मोती की मालाएँ, समुद्र की सभी दिशाओं में झनझनाती और हिलती हैं।

7.114.25

महेन्द्राद्रेर्गुहागेहपरावृत्तार्णवाध्वनाम् । भांकारिण्यो भुवः सिद्धसाध्यानां सुसुखावहः ॥ २५ ॥

mahendrādrerguhāgehaparāvṛttārṇavādhvanām | bhāṅkāriṇyo bhuvaḥ siddhasādhyānāṃ susukhāvahaḥ || 25 ||

The caves of Mount Mahendra, which are filled with the roaring sound of the ocean, bring great joy to the accomplished beings on earth.

महेंद्र पर्वत की गुफाएँ, जो समुद्र की गर्जना से भरी हैं, पृथ्वी पर सिद्ध पुरुषों को बहुत सुख देती हैं।

7.114.26

मन्दरः कन्दरोद्गीर्णैः प्रसरैर्मातरिश्वनः । कम्पाकुलवनाभोगः पुष्पमेघांस्तनोति खे ॥ २६ ॥

mandaraḥ kandarodgīrṇaiḥ prasarairmātariśvanaḥ| kampākulavanābhogaḥ puṣpameghāṃstanoti khe || 26 ||

The Mandara mountain, with its caves stirred by the gusts of wind, shakes the forest groves and spreads flower-like clouds in the sky.

मन्दर पर्वत, जिसकी गुफाएँ हवा के झोंकों से उठती हैं, जंगलों को हिलाता है और आकाश में फूलों जैसे बादल बिखेरता है।

7.114.27

चूतनीपकदम्बाढ्यगन्धमादनकन्दरान् । विशन्ति मेघहरिणास्तडित्तरललोचनाः ॥ २७ ॥

cūtanīpakadambāḍhyagandhamādanakandarān| viśanti meghahariṇāstaditataralalocanāḥ || 27 ||

The cloud-deer, with eyes flickering like lightning, enter the caves of the Gandhamadana mountain, which are filled with the fragrance of mango blossoms, jasmine, and kadamba flowers.

बिजली की तरह चमकती आँखों वाले बादल-हिरण, गंधमादन पर्वत की गुफाओं में प्रवेश करते हैं, जो आम के फूल, चमेली और कदंब की सुगंध से भरी होती हैं।

7.114.28

हिमवत्कन्दरोद्गीर्णा वल्लीवलयताण्डवम् । तन्वाना वायवो यान्ति विभिन्नाब्दाब्धिवीचयः ॥ २८ ॥

himavatkandarodgīrṇā vallīvalayatāṇḍavam| tanvānā vāyavo yānti vibhinnābdābdhivīcayaḥ || 28 ||

The winds, stirred from the caves of the Himalayas, perform a dance with the creeping vines and spread the scattered waves of the ocean.

हिमालय की गुफाओं से उठी हवाएँ, लताओं के साथ नृत्य करती हैं और समुद्र की बिखरी हुई लहरों को फैलाती हैं।

7.114.29

तात चूतकदम्बाग्रपरामर्शसुगन्धयः। वलयन्त्यब्धिकल्लोलान्गन्धमादनवायवः ॥ २९ ॥

tāta cūtakadambāgraparāmarśasugandhayaḥ| valayantyabdhikallolāngandhamādanavāyavaḥ || 29 ||

O father, the winds of Gandhamadana, fragrant with the touch of the tips of mango blossoms and kadamba flowers, embrace the waves of the ocean.

हे पिता, गंधमादन की हवाएँ, जो आम के फूल और कदंब के फूलों के अग्रभाग के स्पर्श से सुगंधित होती हैं, समुद्र की लहरों को आलिंगन करती हैं।

7.114.30

जलदान्वलयन्वायुरलकालकतां गतान्। इत आयाति पुष्पाभ्रं रचयन्वनवीथिषु ॥ ३० ॥

jaladānvayalanvāyuralakālakatāṃ gatān| ita āyāti puṣpābhraṃ racayanvanavīthiṣu || 30 ||

The wind, which has taken the form of a garland of clouds, comes here, creating flower-like clouds in the forest paths.

हवा, जो बादलों की माला का रूप धारण कर चुकी है, यहाँ आती है, जंगल की राहों में फूलों जैसे बादल बनाती है।

7.114.31

कुन्दमन्दारसंदोहमधुरामोदमन्थरान्। तुषारसीकरोन्मिश्रानिवात्र कलयानिलान् ॥ ३१ ॥

kundamandārasaṃdohamadhurāmodamantharān| tuṣārasīkarōnmiśrānivātra kalayānilān|| 31 ||

The winds, which are sweet and fragrant like a cluster of jasmine flowers, mixed with the drops of dew, are blowing here.

यहाँ जस्मिन के फूलों के गुच्छे की तरह मीठी और सुगंधित हवाएँ, ओस की बूँदों से मिली हुई, चल रही हैं।

7.114.32

नालिकेरलतालास्यलब्धतिक्तसुगन्धयः। पतन्ति पवनाः पश्य पारसीकपुरीः पुरा ॥ ३२ ॥

nālikeralatālāsyalabdhatiktasugandhayaḥ| patanti pavanāḥ paśya pārasīkapurīḥ purā|| 32 ||

See, the winds that have obtained the bitter fragrance from the faces of the coconut palm leaves are falling on the ancient Persian cities.

देखो, नारियल के पत्तों के मुख से कड़वी सुगंध प्राप्त करने वाली हवाएँ पुराने फारसी शहरों पर गिर रही हैं।

7.114.33

धुन्वानाः पुष्पितेशानवनकर्पूरवारिदान्। चालयन्तोऽनिला वान्ति कैलासकमलाकरान् ॥ ३३ ॥

dhunvānāḥ puṣpiteśānavanakarpūravāridān| cālayanto'nilā vānti kailāsakamalākarān|| 33 ||

The winds, shaking the water droplets of camphor from the blooming forests of Ishana, are moving the lotuses of Kailasa.

हवाएँ, ईशान के खिले हुए वनों से कर्पूर की बूँदों को झकझोरती हुई, कैलास के कमलों को हिला रही हैं।

7.114.34

करीन्द्रकुम्भनिष्क्रान्तमदमन्थरमूर्तयः। इमे शुकशुकायन्ते विन्ध्यकन्दरवायवः ॥ ३४ ॥

karīndrakumbhaniṣkrāntamadamantharamūrtayaḥ| ime śukaśukāyante vindhyakandaravāyavaḥ|| 34 ||

These winds, which have the gentle form of the intoxicating scent emanating from the temples of the elephant lords, are whispering in the caves of the Vindhya mountains.

ये हवाएँ, जो हाथी राजाओं के मस्तक से निकलने वाली मादक सुगंध के कोमल रूप वाली हैं, विंध्य पर्वतों की गुफाओं में फुसफुसा रही हैं।

7.114.35

शबरीणां शरीरेषु शीर्णपर्णोत्करे गिरौ । नाराचैः पर्णशबरैर्वनाली नगरायते ॥ ३५ ॥

śabarīṇāṃ śarīreṣu śīrṇaparṇōtkare girau| nārācaiḥ parṇaśabarairvanālī nagarāyatē|| 35 ||

In the bodies of the Shabari people, on the mountain with withered leaves, the forest appears like a city with arrows and leaf-like huts.

शबरी लोगों के शरीरों में, सूखे पत्तों वाले पर्वत पर, जंगल तीरों और पत्ते जैसे झोंपड़ियों के साथ एक शहर की तरह दिखाई देता है।

7.114.36

अब्ध्यद्रिसरिदम्भोदवनलेखाङ्किका दिशः त्वत्प्रतापबलैरेता हसन्तीवार्करश्मिभिः ॥ ३६ ॥

abdhyadrisaridambhodavanalekhāṅgikā diśaḥ tvatpratāpabalairetā hasantīvārkarashmibhiḥ || 36 ||

The directions, adorned with oceans, mountains, rivers, clouds, and forest lines, seem to laugh with your radiant rays, as if illuminated by the power of your heat.

समुद्र, पर्वत, नदियों, बादलों और वन रेखाओं से सजी दिशाएँ आपकी तेजस्वी किरणों से प्रकाशित होकर मानो हँस रही हैं, जैसे आपके ताप की शक्ति से प्रकाशमान हों।

7.114.37

अत्रोपशैलवनवीथिषु पुष्पशय्या विद्याधरीविरचिताः परिवर्णयन्ति
पार्श्वद्वयस्थपरिवृत्तपदात्समुद्राद्व्यावृत्तमुग्धवनितापुरुषायितानि ॥ ३७ ॥

atropaśailavanavīthiṣu puṣpaśayyā vidyādharīviracitāḥ parivarṇayanti
pārśvadvayasthaparivṛttapadātsamudrādvyāvṛttamugdhavanitāpuruṣāyitāni || 37 ||

Here, in the pathways of the mountains and forests, the flower beds created by the Vidyadharis describe the scenes. On both sides, from the revolving feet of the ocean, the naive women and men are depicted as if enchanted.

यहाँ, पर्वतों और वनों की वीथियों में, विद्याधरियों द्वारा बनाए गए फूलों के बिस्तर दृश्यों का वर्णन करते हैं। दोनों ओर, समुद्र के घूमते पैरों से, सरल स्त्रियों और पुरुषों को मानो मोहित किया गया हो, चित्रित किया गया है।

Chapter 115

7.115.1

पार्श्वगा ऊचुः । अत्रोत्तमाशथ लतावलयालयेषु लीलाविलोललल्लनाः कलयन्ति गीतम् । उद्दामभावरसविस्मृतवासरेहा विश्रम्य किंनरगणाः कलकाकलीकम् ॥ १ ॥

pārśvagā ūcuḥ | atrottamāśatha latāvalayālayeṣu līlāvilolalalanāḥ kalayanti gītam | uddāmabhāvarasavisṛtavāsarehā viśramya kiṃnaragaṇāḥ kalakākalīkam || 1 ||

The attendants said, 'Here, in the finest abodes adorned with creepers, the playful and charming women sing songs | The Kinara beings, forgetting the essence of their lofty emotions, rest and engage in melodious chatter.'

पार्श्वगा ने कहा, 'यहाँ, सबसे उत्तम लताओं से सजे घरों में, खेल-खेल में ललित स्त्रियाँ गीत गाती हैं | किंनर गण, अपने उत्तम भावों की रस को भूलकर, विश्राम करते हैं और मधुर बातचीत करते हैं।'

7.115.2

एते हिमाद्रिमलयाचलविन्ध्यसह्यक्रौञ्चा महेन्द्रमधुमन्दरदर्दुराद्याः । दूरस्थिता दृशि सिताभ्रपटा वहन्ति संशुष्कपर्णलवलाञ्छितलोष्टलीलाम् ॥ २ ॥

ete himādri-malayācala-vindhya-sahya-krauñcā mahēndra-madhumaṃdara-dardurādyāḥ | dūrasthitā dṛśi sitābhrapaṭā vahanti saṃśuṣkapaṇṇalavalāñchitalōṣṭalīlām || 2 ||

These mountains—Himādri, Malaya, Vindhya, Sahya, Krauñca, Mahendra, Madhumandara, and Dardura, among others—appear like distant white clouds to the eye, carrying the playful dance of dry leaves.

ये पर्वत—हिमाद्रि, मलय, विन्ध्य, सह्य, क्रौंच, महेन्द्र, मधुमन्दर, और दर्दुर, आदि—दूर स्थित सफेद बादलों की तरह दिखाई देते हैं, जो सूखे पत्तों की खेल-भरी लीला को लेकर चलते हैं।

7.115.3

अमी दूरालोकव्यवहितमहावर्त्मनिचयाः पुरःप्राकाराणां कुलशिखरिणो बिभ्रति वपुः । विशन्तीरम्भोधिं कलय लुलिता भान्ति सरितः पटस्यान्तः सक्ताः प्रतनुसितसूत्रा इव दशाः ॥ ३ ॥

amī dūrālokavyavahitamahāvartmanicayāḥ purḥprākārāṇāṃ kulaśikariṇo bibhrati vapuḥ | viśantīrambhodhiṃ kalaya lulitā bhānti saritaḥ paṭasyāntaḥ saktāḥ pratanusitasūtrā iva daśāḥ || 3 ||

These great mountains, separated by vast distances, stand like the peaks of the front walls of cities | The rivers, entering the ocean, appear like thin white threads attached to a cloth.

ये महान पर्वत, दूर-दूर तक फैले हुए, शहरों के अग्र दीवारों के शिखरों की तरह खड़े हैं | समुद्र में प्रवेश करती नदियाँ कपड़े में लगे पतले सफेद धागे की तरह दिखाई देती हैं।

7.115.4

दशाशाः शैलानामुपरि परितः प्रावृतघना घनश्यामाकाराः खगकलकलालापलपिताः । लतामुक्तैः पुष्पैर्ललितवनलेखाभुजलता हसन्त्यस्ते राजन्भवनवनिता भान्ति पुरतः ॥ ४ ॥

daśāśāḥ śailānāmupari paritaḥ prāvṛtaghanā ghanśyāmākārāḥ khagakalakalālāpalapitāḥ |
latāmuktairpuṣpaiḥlalitavanalekhābhujalatā hasantyaste rājanbhāvanavaniitā bhānti purataḥ || 4 ||

The peaks of the mountains, covered with dense clouds, appear dark and are filled with the chatter of birds | The women of the palace, adorned with flowers from the creepers, appear graceful like the curves of a vine, laughing and standing before the king.

पर्वतों की चोटियाँ, घने बादलों से ढकी हुई, काली दिखाई देती हैं और पक्षियों की चहचहाहट से भरी हुई हैं | लताओं से फूलों से सजी महल की स्त्रियाँ, लताओं की लहरी की तरह सुंदर दिखाई देती हैं, हँसती हुई राजा के सामने खड़ी हैं।

7.115.5

तालीतमालबकुलाकुलतुङ्गशृङ्गमेकीकृताकृति वनं तरलं विभाति । अभ्याहतं जलनिधेस्तरलैस्तरङ्गैस्तीरान्तलग्नघनशैवलजालकल्पम् ॥ ५ ॥

tālītamālabakulākulatuṅgaśṛṅgamekīkṛtākṛti vanaṃ taralaṃ vibhāti | abhyāhataṃ jalanidhestaralaitaraṅgaitīrāntalagnaghanaśaivalajālakalpam || 5 ||

The forest, filled with tall peaks adorned with Tālī, Tāmala, and Bakula trees, appears to be trembling | Struck by the waves of the ocean, it appears like a dense net of reeds on the shore.

ताली, तामल और बकुल के वृक्षों से सजी ऊँची चोटियों से भरा वन, काँपता हुआ दिखाई देता है | समुद्र की लहरों से छूआ हुआ, यह तट पर घने नल के जाल की तरह दिखाई देता है।

7.115.6

इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषामितोऽपि शरणार्थिनः शिखरिपत्रिणः शेरते । इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकैरहो विततमूर्जितं भरसहं च सिन्धोर्वपुः ॥ ६ ॥

itah svapiti keshavaḥ kulamitas tadīyadvishāmito'pi sharanārthinaḥ shikharipatriṇaḥ sherate | ito'pi vaḍavānalaḥ saha samastasamvartakai raaho vitatamūrjitaṃ bharasahaṃ cha sindhorvapuḥ || 6 ||

Here, Keshava sleeps, and here the enemies of His family also sleep, seeking refuge in the mountain caves. Here too, the submarine fire along with all the winds of destruction, oh, spreads out, enduring the burden of the ocean.

यहाँ केशव सोते हैं, और यहाँ उनके परिवार के शत्रु भी पहाड़ी गुफाओं में शरण लेकर सोते हैं। यहाँ भी, समुद्री अग्नि और सभी विनाशकारी वायुओं के साथ, ओह, समुद्र के भार को सहन करते हुए फैलती है।

7.115.7

एते जम्बुनदीतटा रविकरैराभान्ति हेमाखिलग्रामारण्यपुरस्थलीगिरितरुस्थाण्वग्रहारोच्चयाः । ज्वालालीवलिताबरांतरलिहो मुञ्चन्ति भासोभितस्सर्वा भूमिप भूरिहैवममरासेव्यास्ति नो मानुषैः ॥ ७ ॥

ete jambunadītaṭā ravikarairābhānti hemākhilagrāmāraṇyapurasthalīgiritarusthāṇvagrahārocchayāḥ |
jvālālīvalitābarāṃtaralihomuñchantibhāsobhitassarvābhūmipa bhūrihaivamamarāsevyāsti no mānuṣaiḥ || 7 ||

These banks of the Jambu River shine with the rays of the sun, illuminating the golden villages, forests, cities, plains, mountains, trees, and peaks. The flames lick the inner clouds, emitting light, and all the earth shines. Oh king, such divine service is not possible for humans.

ये जम्बु नदी के तट सूर्य की किरणों से चमकते हैं, स्वर्णिम गाँवों, जंगलों, शहरों, मैदानों, पहाड़ों, पेड़ों और चोटियों को प्रकाशित करते हुए। ज्वालाएँ अंतरिक्ष के बादलों को चाटती हैं, प्रकाश छोड़ती हैं, और सारी पृथ्वी चमकती है। हे राजन, ऐसी दिव्य सेवा मनुष्यों के लिए संभव नहीं है।

7.115.8

एते कदम्बवनकम्बलमम्बुदाभमाभान्ति भास्करपथानुगता वहन्तः । अस्याचलस्य वसुधेव तटं तवास्तु मा सूर्यरोधकनभस्थघनौघशङ्का ॥ ८ ॥

ete kadambavanakambalamambudābhmābhānti bhāskarapathānugatā vahantaḥ | asyācalasya vasudheva taṭaṃ tavāstu mā sūryarodhakanabhasthaghanaughaśaṅkā || 8 ||

These clouds, resembling the Kadamba forest, shine following the path of the sun, carrying water. May the shore of this mountain be like the earth for you, without the fear of the dense clouds obstructing the sun.

ये बादल, जो कदंब वन के समान दिखते हैं, सूर्य के मार्ग का अनुगमन करते हुए चमकते हैं, पानी लेकर। इस पर्वत का तट आपके लिए पृथ्वी के समान हो, घने बादलों द्वारा सूर्य को रोकने की चिंता के बिना।

7.115.9

एषोऽसौ मलयो लयोग्रलवलीवल्लीलसच्चन्दनस्फीतामोदमदाद्रसेन तरवो वक्रे क्रियन्ते त्रिभिः । सज्वालोदहनाक्षसंस्थितकपोलोष्मोदयोत्ताण्डवे अङ्गुष्ठाङ्गुलिभिर्यथोष्णककणास्तप्ता यथा योषिताम् ॥ ९ ॥

eṣo'sau malayo layogralavalīvallīlasaccandanasphītāmodamadādrasena taravo vakre kriyante tribhiḥ | sajvālodahanākṣasaṃsthitakapolōṣmodayottāṇḍave aṅguṣṭhāṅgulibhiryathoṣṇakakaṇāstaptā yathā yoṣitām || 9 ||

This Malaya mountain, with its delightful sandalwood trees bent by the strong breeze, emits a fragrant scent. In the intense heat of the blazing fire, the trees are bent as if by the touch of a woman's warm fingers.

यह मलय पर्वत, जिसके चंदन के वृक्ष तेज हवा से झुके हुए हैं, एक सुगंधित गंध छोड़ता है। तीव्र गर्मी में जलती आग के समय, पेड़ ऐसे झुकते हैं जैसे कि किसी स्त्री के गर्म उंगलियों के स्पर्श से।

7.115.10

एषोऽब्धिधौतकलधौततटाधिरूढभोगीन्द्रभोगपरिवेष्टितचन्दनोऽगः । विद्याधरीवदनपङ्कजदीप्तिपुञ्जहेमीकृताखिलशिलो मलयाभिधानः ॥ १० ॥

eṣo'bddhidhautakaladhautataṭādhirūḍhabhogīndrabhogapariveṣṭitacandano'gaḥ | vidyādharīvadanapaṅkajadīptipuñjahemīkṛtākhilaśilo malayābhidhānaḥ || 10 ||

This Malaya mountain, washed by the ocean and adorned with serpents, is surrounded by sandalwood and illuminated by the radiance of the lotus-like faces of the Vidyadharis. It is turned into gold, known as Malaya.

यह मलय पर्वत, समुद्र से धुला हुआ और सर्पों से सजा हुआ, चंदन से घिरा हुआ है और विद्याधरियों के कमल के समान चेहरों की चमक से प्रकाशित है। यह सोने में बदल गया है, मलय के नाम से जाना जाता है।

7.115.11

कूजत्कुञ्जकठोरगह्वरनदीक्रत्कारवत्कीचकस्तम्भाडम्बरमूकमौकुलिकुलः क्रौञ्चाचलोयं गिरिः। एतस्मिन्प्रबलाकिनां प्रचलतामुद्वेजिताः कूजितैरुद्वेल्लन्ति पुराणरोहणतरुस्तम्भेषु कुम्भीनसाः ॥ ११ ॥

kūjatkuñjakaṭhoragahvaranadīkvatkāravatkīcakastambhāḍambaramūkamaukulikulaḥ krauñcācaloyam giriḥ| etasminprabalākināṃ pracalatāmudvejitāḥ kūjitairudvellanti purāṇarohaṇatarustambheṣu kumbhīnasāḥ || 11 ||

This is the mountain Krauncha, with its harsh, deep caves and the sounds of peacocks and cuckoos| In this mountain, the cranes are frightened by the loud calls of the strong cranes and rise up on the ancient tree trunks.

यह क्रौंच पर्वत है, जिसकी कठोर, गहरी गुफाएँ और मोरों और कोयलों की आवाजें हैं| इस पर्वत में, शक्तिशाली सारसों के ऊँचे बुलावों से डरकर बगुले पुराने पेड़ों की तनों पर उठते हैं।

7.115.12

कोमलकनकलतालयविलसितललनाविलोलवलयकृतम्। श्रवणरसायनपानं विततमिहाकर्णयास्य तटे ॥ १२ ॥

komalakanakalatālayavilasitalalanāvilolavalayakṛtam| śravaṇarasāyanapānaṃ vitatamihākarṇayāsya taṭe || 12 ||

The delicate golden creepers sway gently, creating a charming scene| Listen to the sweet music here on the shore.

कोमल सुनहरी लताएँ हल्के से लहराती हैं, एक मोहक दृश्य बनाती हैं| तट पर यहाँ मधुर संगीत सुनो।

7.115.13

करिकरटगलितमदजलवलितश्चलवीचिचञ्चरीकचयैः। चर्वित एष कदर्थित इव कणनिकरो विरौति वारिनिधौ ॥ १३ ॥

karikaraṭagalitamadajalavalitaścalavīcicañcarīkacayaiḥ| carvita eṣa kadarthita iva kaṇanikaro virauti vārinidhau || 13 ||

The elephant's ichor flows, mixing with the water, creating ripples| The lotus buds seem to be chewed and scattered in the water.

हाथी का मद बहता है, पानी में मिलकर लहरें बनाता है| कमल के कली जैसे चबाए और पानी में बिखरे हुए हैं।

7.115.14

पश्यामलेन्दुरामृतनवनीतशरीरसुन्दरीवलितः। पितुरुत्सङ्गे कुरुते जललीलां क्षीरवारिनिधौ ॥ १४ ॥

paśyāmalendurāmṛtanavanītaśarīrasundarīvalitaḥ| piturutsangē kurutē jalalīlāṃ kṣīravārinidhau || 14 ||

See the beautiful moon, shining like fresh butter, sitting on the father's lap| It plays with water in the milk ocean.

देखो चाँद को, जो ताजा मक्खन की तरह चमक रहा है, पिता की गोद में बैठा हुआ| यह दूध के समुद्र में पानी के साथ खेल रहा है।

7.115.15

नृत्यन्ति मत्तकलकोकिलकाकलीकाः पश्यामले मलयसानुनि बालवल्ल्यः। लोलालिजालनयनारुणपत्रपाणिपुष्पा मधूत्सवविलासविशेषवत्यः ॥ १५ ॥

nṛtyanti mattakalakokilakākalīkāḥ paśyāmalē malayasānuni bālavallyaḥ| lolālijālanayanāruṇapatrapāṇipuṣpā madhūtsavavilāsaviśeṣavatyaḥ || 15 ||

See the intoxicated cuckoos dancing on the tender creepers of the Malaya mountain| With swaying eyes and red petals in their hands, the flowers are especially joyful in the honey festival.

देखो नशे में चूहे मलय पर्वत की कोमल लताओं पर नाच रहे हैं| लहराती आँखों और लाल पत्तों के हाथों वाले फूल मधु उत्सव में विशेष रूप से खुश हैं।

7.115.16

वंशानां हृदि पर्वतेषु जलधौ तोयार्थिनीनां तु ये शुक्तीनां हृदये विशन्ति समये वर्षांभसां बिन्दवः । ते मुक्ताफलतां व्रजन्ति करिणां कुम्भेषु वान्यद्भवेत् शुद्धौ मौक्तिकवत्स्युरुत्तमगुणा एतास्त्रिधा जातयः ॥ १६ ॥

vaṃśānāṃ hṛdi parvateṣu jaladhau toyārthinīnāṃ tu ye śuktīnāṃ hṛdaye viśanti samaye varṣāmbhasāṃ bindavaḥ | te mukta phalatāṃ vrajanti kariṇāṃ kumbheṣu vānyadbhavet śuddhau mauktikavatsyuruttamaguṇā etāstridhā jātayaḥ || 16 ||

The drops of rain that enter the hearts of oysters in the ocean, the hearts of mountains, and the hearts of bamboo, transform into pearls. These pearls, when found in elephants' trunks or in pure forms, possess the highest qualities.

जो वर्षा के पानी की बूँदें समुद्र में शुक्तियों के हृदय में, पर्वतों के हृदय में और बाँस के हृदय में प्रवेश करती हैं, वे मोती बन जाती हैं। ये मोती, जब हाथियों के सूँड़ में या शुद्ध रूप में पाए जाते हैं, तो उनमें उत्तम गुण होते हैं।

7.115.17

शैलेऽब्धौ पुरुषेऽवनौ जलधरे भेके शिलायां गजे नानाकारधरा भवन्ति मणयः कर्माणि तेषां विभो । ह्लादोच्चाटनमारणज्वरभयभ्रान्तिप्रकाशान्धताखेदोत्तापनभूनभोगतिदृशो नाशो विधानं तथा ॥ १७ ॥

śaile'bdhau puruṣe'vanau jaladhare bheke śilāyāṃ gaje nānākāradharā bhavanti maṇayaḥ karmāṇi teṣāṃ vibho | hlādoccāṭanamāraṇajvarabhayabhrāntiprakāśāndhatākhedottāpanabhūnabhogatidṛśo nāśo vidhānaṃ tathā || 17 ||

Gems found in mountains, oceans, men, forests, clouds, frogs, stones, and elephants take various forms and have different effects. O Lord, they bring joy, bewitchment, death, fever, fear, delusion, illumination, blindness, fatigue, heat, earthly pleasures, and destruction.

पर्वतों, समुद्रों, मनुष्यों, वनों, बादलों, मेढकों, पत्थरों और हाथियों में पाए जाने वाले रत्न विभिन्न रूपों में होते हैं और अलग-अलग प्रभाव डालते हैं। हे प्रभु, ये आनंद, मोह, मृत्यु, ज्वर, भय, भ्रांति, प्रकाश, अंधता, थकान, गर्मी, भूमि के सुख और विनाश लाते हैं।

7.115.18

वातायनोदरगवाक्षकवाटकक्षाद्वाराननैरिह पुराण्युदिते पठन्ति । श्वभ्राभ्रकन्दरदरीवनवेणुरन्ध्रवर्गेण मन्दर इवामृतसिन्धुमिन्दुम् ॥ १८ ॥

vātāyanodaragavākṣakavāṭakakṣādvārānanairiha purāṇyudite paṭhanti | śvabhrābhrakandaradarīvanaveṇurandhravargeṇa mandara ivāmṛtasindhumindum || 18 ||

The ancient stories recited here through the windows, doors, and holes of caves, clouds, and bamboo flutes, resemble the nectar-ocean moon of Mandara mountain.

यहाँ खिड़कियों, दरवाजों और गुफाओं, बादलों और बाँसुरियों के छेदों से सुनाए जाने वाले पुराने किस्से मानो मंदर पर्वत के अमृत सागर के चंद्रमा के समान हैं।

7.115.19

एतच्छृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभिर्दृष्टोत्साहश्चकितचकितं मुग्धसिद्धाङ्गनाभिः । प्रालेयाद्रेः प्रतितटवनं प्रोत्पतत्यभ्रमूर्ध्वं वज्रस्तम्भो गगनसुतलोत्तोलनायेव भूमेः ॥ १९ ॥

etacchṛṅgaṃ harati pavanaḥ kiṃsvidityunmukhībhirdṛṣṭotsāhaścakitacakitaṃ mugdhasiddhāṅganābhiḥ | prāleyādreḥ pratitaṭavanaṃ protpatatyabhramūrdhvaṃ vajrastambho gaganasutalottolanaiveva bhūmeḥ || 19 ||

The wind carries away this peak, what is this? The eager and astonished young celestial women look with amazement. The cloud rises from the foot of the snowy mountain, as if to lift the earth to the sky with its thunderbolt pillar.

यह शिखर हवा ले जाती है, यह क्या है? उत्सुक और आश्चर्यचकित युवा देवांगनाएँ आश्चर्य से देखती हैं। बर्फीले पर्वत के तल से बादल ऊपर उठता है, मानो अपने वज्र स्तंभ से पृथ्वी को आकाश तक उठाना चाहता हो।

7.115.20

गङ्गातरङ्गहिमसीकरशीतलानि विद्याधराध्युषितचारुशिलातलानि । पुष्पाभ्रसंवलितपुष्पितकाननानि राजन्विलोकय महेन्द्रगिरेस्तटानि ॥ २० ॥

gaṅgātaraṅgahimasīkarasītalāni vidyādharādhyuṣitacāruśilātalāni | puṣpābhrasaṃvalitapuṣpitakānanāni rājanvilokaya mahendragirestataāni || 20 ||

O King, behold the banks of the great Mahendra mountain, cooled by the icy drops of the Ganges' waves, adorned with beautiful stones inhabited by Vidyadharas, and blooming forests covered with flowering clouds.

हे राजन्, महेंद्र पर्वत के तटों को देखो, जो गंगा की लहरों के बर्फीले कणों से ठंडे हैं, विद्याधरों द्वारा आबाद चारु पत्थरों से सजे हैं, और फूलों से भरे बादलों से ढके खिले हुए वनों से भरे हैं।

7.115.21

देशान्तरेषु विततानि वनान्तराणि पुष्पस्थलान्युपवनान्यथ पत्तनानितीर्थेषु पूतभुवनानि जलानि दृष्ट्वा दौर्भाग्यमीतिरपयाति जवानुविद्धा ॥ २१ ॥

deśāntareṣu vitatāni vanāntarāṇi puṣpasthalānyupavanānyatha pattanānitīrtheṣu pūtabhuvanāni jalāni dṛṣṭvā daurbhāgyamītirapayāti javānuviddhā || 21 ||

In distant lands, there are forests, flower gardens, parks, cities, and holy places with pure waters. Seeing these, one's misfortune departs swiftly.

दूर के देशों में, वन, फूलों के स्थान, उपवन, नगर, और पवित्र स्थान हैं जहाँ शुद्ध जल है। इन्हें देखकर, दुर्भाग्य तेजी से दूर हो जाता है।

7.115.22

शृङ्गाणि पूरितदिगन्तरमण्डलानि श्वभ्राभ्रकन्दरनिकुञ्जकुलाकुलानि व्योमोपमान्यपि च वारिधिकुण्डलानि दृष्ट्वा गलन्ति कुकृतानि बृहत्तराणि ॥ २२ ॥

śṛṅgāṇi pūritadigantaramaṇḍalāni śvabhrābhrakandaranikuñjakulākulāni vyomopamānyapi ca vāridhikuṇḍalāni dṛṣṭvā galanti kukṛtāni bṛhattarāṇi || 22 ||

Seeing the mountain peaks filling the horizons, the chasms, clouds, caves, and dense thickets teeming with life, and even the sky-like vast oceans, great sins dissolve away.

पर्वतों की चोटियाँ जो क्षितिज को भर देती हैं, गहरे गड्ढे, बादल, गुफाएँ और घने जंगल जहाँ जीवन भरपूर है, और आकाश के समान विशाल समुद्रों को देखकर बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं।

7.115.23

रम्याश्चन्दनवीथयो हि मलये विन्ध्ये मदान्धा गजाः कैलासे नृप पादजाति कनकं चन्द्रं महेन्द्राचलेदिव्याश्चौषधयस्तुषारशिखरे सर्वत्र रत्नानि वै सन्त्यन्धाखुवदेष जीर्णसदने व्यर्थं जनो जीर्यते ॥ २३ ॥

ramyāścandanavīthayo hi malaye vindhye madāndhā gajāḥ kailāse nṛpa pādajāti kanakaṃ candraṃ mahendrācaledivyāścauṣadhayastuṣāraśikhare sarvatra ratnāni vai santyandhākhuvadeṣa jīrṇasadane vyarthaṃ jano jīryate || 23 ||

In Malaya and Vindhya, there are charming sandalwood paths and intoxicated elephants. In Kailasa, there is gold like the feet of kings and the moon. In Mahendra, there are divine herbs and gems everywhere. In the land of Andhakhu, people age in vain in old homes.

मलय और विन्ध्य में, मनमोहक चन्दन की पगडंडियाँ और मतवाले हाथी हैं। कैलास में, राजाओं के पैरों जैसा सोना और चाँद है। महेन्द्र में, दिव्य औषधियाँ और सब जगह रत्न हैं। अंधाखु के देश में, लोग पुराने घरों में व्यर्थ बूढ़े होते हैं।

7.115.24

सोन्नतं जगदिवोरुतटाकं वारिणा विवलितं तिमिरेणप्रस्फुरन्ति च युगान्त इवैता विद्युतः शफरिका इव लोलाः ॥ २४ ॥

sonnataṃ jagadivorutaṭākaṃ vāriṇā vivalitaṃ timireṇaprasphuranti ca yugānta ivaitā vidyutaḥ śapharikā iva lolāḥ || 24 ||

The world appears elevated like a beautiful lake filled with water, shining through the darkness like the end of an era. These lightning bolts flicker like playful fish.

दुनिया एक सुंदर झील की तरह उठी हुई दिखती है, जो पानी से भरी हुई है, और अंधेरे में युगांत की तरह चमकती है। ये बिजली की किरणें खेलती हुई मछलियों की तरह चमकती हैं।

7.115.25

सावश्यायाश्याननीहारधारा धारोद्गारान्वारिदान्मादयन्तःशीतानीतोद्दामरोमाञ्चचर्चाः प्रोद्यच्छब्दं वान्त्यहो वर्षवाताः ॥ २५ ॥

sāvaśyāyāśyānanīhāradhārā dhārodgārānvāridānmādayantaḥśītānītoddāmaromāñcacarcāḥ prodyacchabdaṃ vāntyaho varṣavātāḥ || 25 ||

The inevitable rain showers, with their rising streams, intoxicate the waters. The cold, raised hair-like waves make a resounding noise as the rainy winds blow.

अनिवार्य वर्षा की धाराएँ, उठती हुई धाराओं के साथ, पानी को नशीला बनाती हैं। ठंडे, उठे हुए बालों जैसी लहरें गर्जना करती हैं जब वर्षा की हवाएँ चलती हैं।

7.115.26

हा वाति नीलजलदप्रसरानुसारी वातः किरन्विटपिपल्लवपुष्पगुच्छान् ।
धीरोत्करद्रुमवनान्तरचारचारुरासारसीकरकदम्बकसारसारः ॥ २६ ॥

hā vāti nīlajaladaprasarānusārī vātaḥ kiranviṭapipallavapuṣpagucchān|
dhīrotkaradrumavanāntaracāracārurāsārasīkarakadambakasārasāraḥ || 26 ||

This wind blows, following the flow of the blue clouds, scattering the clusters of tender flowers from the trees| It moves gracefully through the dense forest, filled with the essence of the fragrant Kadamba flowers.

यह हवा चलती है, नीले बादलों के प्रवाह का अनुसरण करते हुए, पेड़ों से कोमल फूलों के गुच्छे बिखेरती हुई| यह घने जंगल में सुंदरता से चलती है, सुगंधित कदंब के फूलों की सुगंध से भरी हुई।

7.115.27

मारुताः सुरतक्रान्तकान्तानिःश्वसितैरिमे । वहन्ति वृद्धिं गन्धं च लवं स्वर्गादिव च्युताः ॥ २७ ॥

mārutāḥ suratakrāntakāntāniḥśvasitairime| vahanti vṛddhiṃ gandhaṃ ca lavaṃ svargādiva cyutāḥ || 27 ||

These winds carry the fragrance and the sighs of lovers exhausted by lovemaking, as if they have fallen from heaven.

ये हवाएँ प्रेम की थकान से थके प्रेमियों की साँसों और सुगंध को लेकर चलती हैं, मानो वे स्वर्ग से गिरी हों।

7.115.28

कुवलयकुवलयविकचनकुसुमलताविदलनोद्यता मृदवः । घनपटपाटनपटवो विधुतोपवना वहन्त्यमी पवनाः ॥ २८ ॥

kavalayakavalayavikachanakusumalatāvidalanodyatā mṛdavaḥ| ghanapaṭapāṭanapaṭavo vidhutopavanā vahantyamī pavanāḥ || 28 ||

These gentle winds, eager to shake the blooming lotus vines, are blowing, causing the dense clouds to scatter.

ये कोमल हवाएँ, खिले हुए कमल की लताओं को हिलाने के लिए उत्सुक, घने बादलों को बिखेरती हुई चल रही हैं।

7.115.29

संध्याभ्रलेशानुपयन्ति वाता नभस्तले कोमलकम्पनेन । नृपाङ्गणे पुष्पविचित्रलेखानुवासिते भृत्यवरा इवैते ॥ २९ ॥

saṃdhyābhraleśānupayanti vātā nabhastale komalakampanena| nṛpāṅgaṇe puṣpavicitralekhānuvāsite bhṛtyavarā ivaite || 29 ||

The winds gently shake the remnants of the evening clouds in the sky, as if they are the best servants decorating the royal court with various flowers.

हवाएँ आकाश में संध्या के बादलों के अवशेषों को कोमलता से हिलाती हैं, मानो वे राजदरबार को विविध फूलों से सजाने वाले श्रेष्ठ सेवक हों।

7.115.30

क्वचित्कुसुमगन्धयः कमलवर्गगन्धाः क्वचित्क्वचितकुसुमवर्षिणो ललितकेसरासारिणः । क्वचिच्च हिमपाण्डवो हरितपीतलश्यामला वहन्ति शिखरानिलाः सुरतमन्दघर्मच्छिदः ॥ ३० ॥

kvacitkusumagandhayaḥ kamalavargagandhāḥ kvacitkvacitkusumavarṣiṇo lalitakesarāsāriṇaḥ| kvaciccha himapāṇḍavo haritapītalśyāmalā vahanti śikharānilāḥ suratamandadharmacchidaḥ || 30 ||

Sometimes the winds carry the fragrance of flowers, sometimes the scent of lotuses. Sometimes they shower flowers with delicate filaments. Sometimes they carry the cool, green, yellow, and dark breezes that dispel the languor of love.

कभी-कभी हवाएँ फूलों की सुगंध लेकर चलती हैं, कभी-कभी कमल की सुगंध| कभी-कभी वे कोमल धागों वाले फूलों की वर्षा करती हैं| कभी-कभी वे ठंडी, हरी, पीली और काली हवाओं को लेकर चलती हैं, जो प्रेम की थकान को दूर करती हैं।

7.115.31

क्वचिद्हुंकारकांकारैरङ्गारनिकरान्करैःकिंकरैर्विकिरत्यर्को मूर्खसंसर्गवानिव ॥ ३१ ॥

kvacidhuṃkārakāṃkārairaṅgāranikarānkaraiḥkiṃkarairvikiratyarko mūrkhasaṃsargavāniva || 31 ||

Sometimes, the sun, as if accompanied by fools, scatters its rays like pieces of charcoal, making a humming sound.

कभी-कभी, सूर्य, मूर्खों के साथ होने की तरह, अपनी किरणें अंगारों के टुकड़ों की तरह बिखेरता है, घुरघुराहट की आवाज करता हुआ।

7.115.32

नररसायनतृप्तिविमुक्तया प्रमदया मदयापितलज्जयाउपगते वपुषा न विषह्यते विषविमूर्च्छनयेव समायता ॥ ३२ ॥

nararasāyanatṛptivimuktayā pramadayā madayāpitalajjayāupagate vapuṣā na viṣahyate viṣavimūrcchanayeva samāyatā || 32 ||

The body, which has been freed from the intoxication of pleasure with women, cannot be endured, as if it has been poisoned and is about to faint.

वह शरीर, जो स्त्रियों के साथ सुख के नशे से मुक्त हो गया है, विष खाकर बेहोश होने की तरह सहन नहीं किया जा सकता।

7.115.33

वलिततामरसा मृदुशीकराः शशिकरोत्करवीचिविभेदिनःसदहना इव तापमयाः पुरो विरहिणीषु वनावनिवायवाः ॥ ३३ ॥

valitatāmarasā mṛduśīkarāḥ śaśikarotkaravīcivibhedinaḥsadahanā iva tāpamayāḥ puro virahiṇīṣu vanāvanivāyavaḥ || 33 ||

The gentle breezes, which are like the soft rays of the moon, seem to burn with heat in front of the separated lovers in the forest, as if they are flames.

जो चंद्रमा की कोमल किरणों के समान हैं, वे कोमल समीर विरही प्रेमियों के सामने वन में जैसे जलती हुई लपटों की तरह तपते हैं।

7.115.34

इह हि पूर्वपयोधितटावटे विकटपत्रपटाः कटकीतटाःनवमदासवयौवनसंश्रयाः कलय यान्ति कथं शबरस्त्रियः ॥ ३४ ॥

iha hi pūrvapayodhitaṭāvaṭe vikaṭapatrapaṭāḥ kaṭakītaṭāḥnavamadāsavayauvanasaṃśrayāḥ kalaya yānti kathaṃ śabarastriyaḥ || 34 ||

Here, on the banks of the eastern ocean, the tribal women with their strange leaf-clothes, intoxicated with new wine and youth, how do they go to the forest?

यहां, पूर्वी समुद्र के किनारे पर, विचित्र पत्तों के वस्त्रों वाली, नवीन मदिरा और यौवन से मतवाली आदिवासी स्त्रियां, वे वन में कैसे जाती हैं?

7.115.35

नवरसासवसारनिशागमक्षयभयातुरचित्ततयाङ्गनात्यजति कान्तमियं न मनागपि द्रुतमितो वलितेव पुरोऽभिभिः ॥ ३५ ॥

navarasāsavasāraniśāgamakṣayabhayāturacittatayāṅganātyajati kāntamiyaṃ na manāgapi drutamito valiteva puro'hibhiḥ || 35 ||

With her mind distressed by the fear of the approaching night, this woman leaves her beloved, not even with her consent, quickly, as if driven away by the serpents.

अपने मन को रात के आने के भय से व्याकुल करके, यह स्त्री अपने प्रिय को छोड़ देती है, उसकी सहमति के बिना भी नहीं, जल्दी से, जैसे सर्पों द्वारा भगाई जा रही हो।

7.115.36

प्रभाततूर्यमुखरैर्दिवसैरिव तर्जिता ह्रद्येव स्फुटिता नारी निलीना दयितोरसि ॥ ३६ ॥

prabhātatūryamukharairdivasairiva tarjitā hradyeva sphuṭitā nārī nilīnā dayitorasi || 36 ||

A woman, like a lake bursting forth, is awakened by the loud morning conches, as if threatened by the days.

एक स्त्री, जैसे एक झील फूट पड़ती है, प्रभात के शंखों की ध्वनि से जाग जाती है, मानो दिनों से धमकी दी गई हो।

7.115.37

प्रोत्फुल्लकिंशुकैषा दक्षिणजलधेस्तटेऽत्र वनराजी ज्वलितेव जलतरङ्गैः पौनःपुन्येन सिच्यतेऽम्बुधिना ॥ ३७ ॥

protphullakiṃśukaiṣā dakṣiṇajaladhestaṭe'tra vanarājī jvaliteva jalataraṅgaiḥ paunaḥpunyena sicyate'mbudhinā || 37 ||

Here, on the southern shore of the ocean, a forest path blooms with Palash flowers, as if burning, repeatedly sprinkled by the waves of the sea.

यहाँ, समुद्र के दक्षिणी तट पर, एक वन मार्ग पलाश के फूलों से खिला हुआ है, मानो जलता हुआ, समुद्र की लहरों द्वारा बार-बार सिंचा जाता है।

7.115.38

वास्या निर्यान्त्यनिलैर्धूमा इव कृष्णकेसराम्बुधराः अङ्गारा इव कुसुमान्युपशान्ताङ्गारवच्च खगभृङ्गाः ॥ ३८ ॥

vāsyā niryāntyanilairdhūmā iva kṛṣṇakesarāmbudharāḥ aṅgārā iva kusumānyupaśāntāṅgāravacca khagabhṛṅgāḥ || 38 ||

From the forest, winds emerge like smoke, bearing dark filaments and flowers like embers, and bees like calmed embers.

वन से वायु धुआँ की तरह निकलती है, काले रेशों और अंगारों की तरह फूलों को लेकर, और शांत अंगारों की तरह भौंरों को लेकर।

7.115.39

ईदृश्येव विलोकय वनराजी सत्यवह्निना ज्वलिता गिरिशिरसि तूत्तरस्यां दिशि दूरे धूयते च खे पवनैः ॥ ३९ ॥

īdṛśyeva vilokaya vanarājī satyavahninā jvalitā giriśirasi tūttarasyāṃ diśi dūre dhūyate ca khe pavanaiḥ || 39 ||

Behold such a forest path, truly burning with fire, on the mountain peak, in the northern direction, far away, smoked by the winds in the sky.

ऐसी वन मार्ग को देखो, जो वास्तव में आग से जल रहा है, पर्वत की चोटी पर, उत्तर दिशा में, दूर, आकाश में हवाओं द्वारा धुएँ से ढका हुआ।

7.115.40

क्रौञ्चाचलस्य भुवि मन्थरमेघचक्रगम्भीरताररवनर्तितबर्हिणीयम् पश्योत्थितं
तुमुलमाकुलवर्षवातव्याधूतपुष्पफलपल्लवकाननीयम् ॥ ४० ॥

krauñcācalasya bhuvi mantharamēghacakragambhīratāraravanartitabarhiṇīyam paśyotthitaṃ tumulamākulavarṣavātavyādhūtapuṣpaphalapallavakānanīyam || 40 ||

Behold the tumultuous and chaotic storm on the Krauncha mountain, with slow-moving clouds, deep thunder, and peacocks dancing, with flowers, fruits, and tender leaves scattered by the wind.

क्रौंच पर्वत पर धीमे चलने वाले बादलों, गहरी गर्जना और नृत्य करते मोरों के साथ उठते हुए उग्र और अव्यवस्थित वर्षा के तूफान को देखो, जिसमें हवा द्वारा फूल, फल और कोमल पत्तियाँ बिखरी हुई हैं।

7.115.41

अस्ताचले विकटकाञ्चनकूटकोटिसंघट्टनस्फुटितजर्जरचारुसंधिःखर्वं रथः पतति स स्म रवेः सचक्रचीत्कारतारतरकूबररास एषः ॥ ४१ ॥

astācale vikaṭakāñcanakūṭakoṭisaṃghaṭṭanasphuṭitajarjaracārusaṃdhiḥkharvaṃ rathaḥ patati sa sma raveḥ sacakracītkāratārataratakūbararāsa eṣaḥ || 41 ||

On the mountain, the chariot with its golden peaks, shattered and broken, falls with a loud noise, this is the sound of the sun's chariot.

पर्वत पर, स्वर्ण शिखरों वाला रथ, टूटा हुआ और भंग हो गया, एक जोरदार शोर के साथ गिरता है, यह सूर्य के रथ की आवाज है।

7.115.42

भुवनभवनप्राकारेऽद्रौ निशाकरमेरुकं परिविकसितं मीतं भासा मलालिरुपाश्रितःतदिह जगतां वस्तु श्रेष्ठं न किंचन विद्यते विधिरुपहतः कुर्यान्नो यत्क्षणेन कलङ्कितम् ॥ ४२ ॥

bhuvanabhavanaprākāre'drau niśākaramerukaṃ parivikasitaṃ mītaṃ bhāsā malālirupāśritaḥtadiha jagatāṃ vastu śreṣṭhaṃ na kiṃcana vidyate vidhirupahataḥ kuryānno yatkṣaṇena kalaṅkitam || 42 ||

In the palace of the world, the moon-mountain is fully bloomed and measured by its light, supported by the garland of rays. Here, there is nothing superior in the world, the fate is disturbed, it cannot make anything blemished in an instant.

विश्व के महल में, चंद्रमा-पर्वत पूरी तरह से खिला हुआ और अपने प्रकाश से मापा गया है, किरणों की माला से समर्थित है। यहाँ, दुनिया में कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है, भाग्य विचलित है, यह किसी चीज को एक पल में दागदार नहीं बना सकता।

7.115.43

त्रिभुवनहराट्टहासो भुवनमहाभवन एष मङ्कोलःक्षीरसलिलावपूरो गगनाब्धेश्चान्द्र आलोकः ॥ ४३ ॥

tribhuvanaharāṭṭahāso bhuvanamahābhavana eṣa maṅkolaḥkṣīrasalilāvapūro gaganābdheścāndra ālokaḥ || 43 ||

The laughter of the lord of the three worlds, this great palace of the world is splendid, filled with the nectar of water, the moonlight in the sky.

तीनों लोकों के स्वामी का हास्य, यह विश्व का महान महल शानदार है, जल के अमृत से भरा हुआ, आकाश में चंद्रमा का प्रकाश।

7.115.44

स्पृष्टप्रदोषमयमन्दरमथ्यमानचन्द्रार्णवोल्लसितदुग्धतरङ्गभङ्गैःपश्य प्रभापटलकैः परिपूरिताङ्गीः पूरैरिवोग्रसरितः प्रसरद्भिराशाः ॥ ४४ ॥

spṛṣṭapradoṣamayamandaramathyamānacandrārṇavollasitadugdhataraṅgabhaṅgaiḥpaśya prabhāpaṭalakaiḥ paripūritāṅgīḥ pūrairivograsaritaḥ prasaradbhirāśāḥ || 44 ||

See the waves of the ocean of the moon, churned by the slow movement of the evening, breaking the milky waves, filled with layers of light, like rivers flowing with hope.

देखो चंद्रमा के समुद्र की लहरें, संध्या के धीमे चलने से मथी हुई, दूधिया लहरों को तोड़ती हुई, प्रकाश की परतों से भरी हुई, आशाओं से भरी नदियों के समान।

7.115.45

एते पतन्त्यतुल तालकराललोलवेतालवालवलिता निशि गुह्यकौघाःहूणेश्वरस्य नगराणि निरस्तशान्ति स्वस्तिश्रवादिविकलानि बलेन भोक्तुम् ॥ ४५ ॥

ete patantyatula tālakarālalolavetālavālavalitā niśi guhyakaughāḥhūṇeśvarasya nagarāṇi nirastaśānti svastiśravādivikalāni balena bhoktum || 45 ||

These unique, terrible, swaying ghosts fall at night, the cities of the lord of the Huns, disturbed peace, auspicious sounds, and other distortions, to be enjoyed with strength.

ये अनोखे, भयानक, झूलते हुए भूत रात में गिरते हैं, हूणों के स्वामी के शहर, शांति भंग हुई, शुभ ध्वनियाँ, और अन्य विकृतियाँ, बल से भोगने के लिए।

7.115.46

तावद्विभाति गगने परिपूर्णचन्द्रो यावद्वधूवदनमेति न सद्म बाह्यम्। अभ्युद्गतेऽङ्गणनभस्यबलाननेन्दाविन्दोः सिताभ्रशकलस्य च को विशेषः ॥ ४६ ॥

tāvadvibhāti gagane paripūrṇacandro yāvadvadhūvadanameti na sadma bāhyam|
abhyudgate'ṅgaṇanabhasyabalānanendāvindoḥ sitābhraśakalasya ca ko viśeṣaḥ || 46 ||

As long as the full moon shines in the sky, the bride's face does not appear outside the house. When the moon and the white cloud rise in the courtyard sky, what is the difference between them?

जब तक पूर्ण चन्द्रमा आकाश में चमकता है, दुल्हन का चेहरा घर से बाहर नहीं आता| जब चन्द्रमा और सफेद बादल आँगन के आकाश में उठते हैं, तो उनमें क्या अंतर है?

7.115.47

वृद्धानि चन्द्रांशुनवाम्बराणि गङ्गौघनिर्धूतशिलान्यमूनि। हिमाततान्युग्रलताजटानि तुषारशैलेश्वरमस्तकानि ॥ ४७ ॥

vṛddhāni candrāṃśunavāmbarāṇi gaṅgaughanirdhūtaśilānyamūni| himātatānyugralatājaṭāni
tuṣāraśaileśvaramastakāni || 47 ||

The old moonbeams, like new garments, are washed away by the dense waves of the Ganges. The snow-covered peaks, adorned with fierce creepers, are the heads of the lord of the snowy mountains.

पुराने चन्द्रमा की किरणें, नए वस्त्रों की तरह, गंगा की घनी लहरों द्वारा धो दी जाती हैं| बर्फ से ढके शिखर, भयानक लताओं से सजे हुए, बर्फीले पर्वतों के स्वामी के सिर हैं|

7.115.48

स एष मन्दारवनावतंसो दोलाप्सरोगेयविसारिवातः। क्वचिन्मणिद्योतविचित्रचित्रः संदृश्यते व्योमनि मन्दराद्रिः ॥ ४८ ॥

sa eṣa mandāravanaāvataṃso dolāpsarogejavisārivātaḥ| kvacinmaṇidyotavicitracitraḥ saṃdṛśyate vyomani
mandarādriḥ || 48 ||

This is the Mandara mountain, adorned with Mandara forests, with winds blowing from the swinging celestial nymphs. Sometimes it appears in the sky, adorned with various shining gems.

यह मन्दार पर्वत है, जो मन्दार वनों से सजा हुआ है, झूलती हुई अप्सराओं से उठती हवाओं से भरा हुआ| कभी-कभी यह आकाश में दिखाई देता है, विविध चमकीले रत्नों से सजा हुआ|

7.115.49

प्रोन्निद्रनीरन्ध्रशिलीन्ध्रसान्द्रपुष्पार्घ्यपात्रध्रमहामहीध्राः। सान्द्राभ्रनिर्हादगभीरकुक्षौ सर्क्षान्तरिक्षश्रियमुद्वहन्ति ॥ ४९ ॥

pronnidranīrandhraśilīndhrasāndrapuṣpārghyapātradhramahāmahīdhrāḥ| sāndrābhra nirhādagabhīrakukṣau
sarkṣāntarikṣaśriyamudvahanti || 49 ||

The awakened, cave-dwelling, rock-loving, dense flower-offering vessels, the great and magnificent, carry the glory of the sky with dense clouds and deep spaces.

जागृत, गुफा में रहने वाले, पत्थरों को प्यार करने वाले, घने फूलों की आहुति पात्र, महान और विराट, घने बादलों और गहरे स्थानों के साथ आकाश की शोभा को धारण करते हैं|

7.115.50

इतः स कैलासगिरिर्गरीयसा प्रभाप्रवाहेण मितेन यस्य खम्। शंभोरिवाभाति सुतस्य कुट्टिमं चन्द्रोऽपि च क्षीरसमुद्रगो यथा ॥ ५० ॥

itaḥ sa kailāsagirirgarīyasā prabhāpravāheṇa mitena yasya kham| śambhorivābhāti sutasya kuṭṭimaṃ candro'pi ca kṣīrasamudrago yathā || 50 ||

From here, that Kailasa mountain shines brightly with its measured flow of radiance, as if it were the crown of Shambhu's son. Even the moon, which arises from the ocean of milk, shines like this.

इससे, वह कैलास पर्वत अपने मापे गये प्रकाश प्रवाह के साथ चमकता है, मानो यह शंभु के पुत्र का मुकुट हो| चाँद भी, जो दूध के समुद्र से उठता है, ऐसे ही चमकता है|

7.115.51

स्थाणूनां छिन्नशाखानां मृन्मयानां च वासवः। संधत्ते पश्य दूराणां वातैर्मुक्तशिखा इव ॥ ५१ ॥

sthāṇūnāṃ chinnashākhānāṃ mṛnmayānāṃ ca vāsavaḥ| sandhatte paśya dūrāṇāṃ vātairmuktaśikhā iva || 51 ||

The wind, like the lord of the gods, joins the broken branches and earthen pots, and from afar, it seems as if the flames are released by the wind.

वायु, देवराज की तरह, टूटे हुए पेड़ों और मिट्टी के बरतनों को जोड़ती है, और दूर से ऐसा लगता है कि वायु से जलती हुई लपटें छूट रही हैं।

7.115.53

एते कदम्बकुलकुन्दसुगन्धिवाता लिम्पन्ति मांसलतया मकरन्दवृष्टेः। घ्राणं घनैः परिमलैरलिजालनीला व्यालोड्य मेघपटलैः खमिवाभ्रकायाः ॥ ५३ ॥

ete kadambakulakundasugandhivātā limpanti māṃsalatayā makarandavṛṣṭeḥ| ghrāṇaṃ ghanaiḥ parimalairalijālanīlā vyāloḍya meghapaṭalaiḥ khamivābhrakeyāḥ || 53 ||

These fragrant winds, carrying the scent of kadamba and kunda flowers, moisten the air with the sweetness of honeydew, filling the nostrils with dense fragrances, and the sky appears as if covered with dark clouds.

ये सुगन्धित वायुएं, कदम्ब और कुंद फूलों की खुशबू लेकर, मधु की वर्षा से वातावरण को गीला करती हैं, नाक में घनी सुगन्ध भरती हैं, और आकाश ऐसा लगता है जैसे काले बादलों से ढका हुआ हो।

7.115.54

वातायनागतलतावृतसौधकोशकोशातकीकुसुमकेसरमाहरद्भिः। आगुल्फकीर्णमुकुलाजिर एष वातैग्रामो विभाति नगरं वनदेवतानाम् ॥ ५४ ॥

vātāyanāgatlatāvṛtasaudhakośakosātakīkusumakesaramāharadbhiḥ| āgulphakīrṇamukulājira eṣa vātaigrāmo vibhāti nagaraṃ vanadevatānām || 54 ||

This village, adorned with flowers and buds, shines with the fragrance of the wind carrying the scent of flowers and buds, as if it were a city of forest deities.

यह गाँव, फूलों और कलियों से सजा हुआ, वायु की सुगन्ध से महक रहा है, जिसमें फूलों और कलियों की सुगन्ध है, जैसे यह वनदेवताओं का नगर हो।

7.115.55

उन्निद्रामलचम्पकद्रुमलतादोलाविलोलाङ्गनाः कूजन्निर्झरवारयः परिसरप्रोन्निद्रतालद्रुमाः।
उत्फुल्लोज्ज्वलमंजरीसितलतागेहोल्लसद्बर्हिणः पर्यन्तोन्नतसाललम्बजलदा रम्या गिरिग्रामकाः ॥ ५५ ॥

unnidrāmalacampakadrumalatādolāvilolāṅganāḥ kūjannirjharavārayaḥ parisarapronnidratāladrumāḥ|
utphullojjvalamañjarīsitalatāgehollasadbarhiṇaḥ paryantonnaṭasālalambajaladā ramyā girigrāmakāḥ || 55 ||

The charming mountain villages are adorned with swaying champaka trees, resounding with the hum of bees, and the chirping of birds, with tall sal trees and sparkling peacocks, making the scene enchanting.

ये मनोहारी पहाड़ी गाँव हल्की हवा में हिलते हुए चम्पा के पेड़ों से सजे हुए हैं, भौंरों की भनभनाहट और पक्षियों की चहचहाहट से गूँजते हैं, ऊँचे साल के पेड़ों और चमकीले मोरों से सजे हुए हैं, जिससे दृश्य मनोहारी हो जाता है।

7.115.56

वातालोलविचित्रपत्रलतिकासंपूर्णनीलस्थलाः कूजल्लावककोककुक्कुटघटागायत्पुलिन्दाङ्गनाः। बालाव्याकुलतर्णका दधिमधुक्षीराज्यपानोज्ज्वलाः कस्येवामृतमण्डपा विरचिता रम्या गिरिग्रामकाः ॥ ५६ ॥

vātālolavicitrapatralatikāsaṃpūrṇanīlasthalāḥ kūjallāvakakokakukkuṭaghaṭāgāyatpulindāṅganāḥ|
bālāvyākulatarṇakā dadhimadhukṣīrājyapānojjvalāḥ kasyevāmṛtamaṇḍapā viracitā ramyā girigrāmakāḥ || 56 ||

These charming mountain villages, adorned with various leaves swaying in the wind, are filled with the melodious songs of birds and the chirping of crickets, with children eagerly enjoying curd, honey, milk, and ghee, as if they are heavenly abodes.

ये मनोहारी पहाड़ी गाँव, हवा में हिलते हुए विभिन्न पत्तों से सजे हुए हैं, पक्षियों की मधुर ध्वनि और टिड्डों की चहचहाहट से भरे हुए हैं, बच्चे उत्सुकता से दही, मधु, दूध और घी का आनंद ले रहे हैं, जैसे ये स्वर्गीय आश्रय हों।

Chapter 116

7.116.1

अनुचरा ऊचुः । देव पश्यात्र संग्रामलग्नसीमान्तभूभृताम् । कचन्ति हेतिसंघाता विसरन्ति बलानि च ॥ १ ॥

anucarā ūcuḥ | deva paśyātra saṃgrāmalagnasīmāntabhūbhṛtām | kacanti hetisaṃghātā visaranti balāni ca || 1 ||

The followers said: O Lord, see here the rulers engaged in battle on the borders, the armies with their weapons are spreading out.

अनुचर बोले: हे देव, यहां देखो, सीमा पर लगे राजाओं के युद्ध को, हथियारों के समूह और सेनाएं फैल रही हैं।

7.116.2

हतान्हतानभिमुखान्वीरान्वीरैः सहस्रशः । आरोप्यारोप्य खं यान्ति पश्य पश्याङ्गनारथैः ॥ २ ॥

hatānhatānabhimukhānvīrānvīraiḥ sahasraśaḥ | āropyāropya khaṃ yānti paśya paśyāṅganārathaiḥ || 2 ||

See the heroes, both slain and alive, facing each other in thousands, being lifted and carried away in chariots by their women.

देखो, हजारों वीर, मारे गए और जीवित, एक-दूसरे के सामने खड़े हैं, और उनकी स्त्रियां उन्हें रथों में उठाकर ले जा रही हैं।

7.116.3

विजिगीषोः पुनः प्राप्ते संकटे प्रकटे रणे । धर्म्यं विराजते युद्धं यौवने सुरतं यथा ॥ ३ ॥

vijigīṣoḥ punaḥ prāpte saṃkaṭe prakaṭe raṇe | dharmyaṃ virājate yuddhaṃ yauvane surataṃ yathā || 3 ||

In the manifest crisis of battle, the desire for victory arises again, and the righteous war shines like love in youth.

युद्ध के स्पष्ट संकट में, विजय की इच्छा फिर से उत्पन्न होती है, और धर्मयुद्ध युवावस्था में प्रेम की तरह चमकता है।

7.116.4

लोकैरनिन्दिता लक्ष्मीरारोग्यं श्रीसमन्वितम् । धर्म्यं युद्धं परार्थेन जीवितस्योत्तमं फलम् ॥ ४ ॥

lokairaninditā lakṣmīrārogyaṃ śrīsamnvitam | dharmyaṃ yuddhaṃ parārthena jīvitasya uttamaṃ phalam || 4 ||

The righteous war, unblemished by the world, brings prosperity, health, and wealth. It is the supreme fruit of life for the sake of others.

धर्मयुद्ध, जो संसार से निंदा रहित है, समृद्धि, स्वास्थ्य और धन लाता है। यह दूसरों के लिए जीवन का उत्तम फल है।

7.116.5

अविरोधेन धर्मस्य युद्धे संमुखमागतम् । योधानुरूपं यो हन्ति शूरः स्वर्ग्यः स नेतरः ॥ ५ ॥

avirodhena dharmasya yuddhe saṃmukhamāgatam | yodhānurūpaṃ yo hanti śūraḥ svargyaḥ sa netaraḥ || 5 ||

In war, without opposing dharma, one who faces the enemy and fights appropriately is a true hero and attains heaven, not others.

युद्ध में, धर्म का विरोध न करते हुए, जो शत्रु का सामना करता है और उचित रूप से लड़ता है, वह एक सच्चा वीर है और स्वर्ग प्राप्त करता है, दूसरे नहीं।

7.116.6

हस्तस्थितासिवरनीलसरोजदामश्यामो हयोत्थघनरेणुनिशागमोऽत्र । आलोकय क्रमणमेष कथं करोति प्रोन्नामहेतिभरभूषणभाजि लक्ष्म्याः ॥ ६ ॥

hastasthitāsivaranīlasaroja dāmaśyāmo hayotthaghanareṇuniśāgamo'tra | ālokaya kramaṇameṣa kathaṃ karoti pronnāmahetibharabhūṣaṇabhāji lakṣmyāḥ || 6 ||

Behold the dark horse, adorned with a garland of blue lotuses and a sword in its hand, moving here with dust raised by its hooves at night. How does it move, bowing down with the heavy ornament of Lakshmi?

देखो इस श्याम घोड़े को, जिसके हाथ में तलवार है और जो नीले कमलों की माला से सजा है, यह रात में अपने खुरों से उठे धूल के साथ यहाँ चल रहा है। यह लक्ष्मी के भारी आभूषण के साथ झुककर कैसे चलता है?

7.116.7

एते कचन्ति शरशक्तिगदाभुशुण्डीशूलासिकुन्तपटुतोमरचक्रपूर्णाः । तापाः सताण्डवकचप्रचले चलेऽब्धौ देहेन वल्गति भुवीव फणीन्द्रसंघाः ॥ ७ ॥

ete kacanti śaraśaktigadābhuśuṇḍīśūlāsikuntapaṭutomaracakrapūrṇāḥ | tāpāḥ satāṇḍavakacapracale calebdhau dehena valgati bhuvīva phaṇīndrasaṃghāḥ || 7 ||

These arrows, spears, maces, axes, tridents, swords, lances, and discs are filled with power. They move swiftly, shaking the earth like a group of serpent kings, with their bodies trembling in the fierce dance of battle.

ये तीर, भाले, गदाएँ, कुल्हाड़ियाँ, त्रिशूल, तलवारें, भाले और चक्र शक्ति से भरे हुए हैं। वे तेजी से चलते हैं, युद्ध के भयानक नृत्य में अपने शरीर को काँपते हुए, जैसे सर्प राजाओं का एक समूह धरती को हिला रहा हो।

7.116.8

पश्याम्बरं बलवदम्बुधराब्धिपूर्णं पश्याम्बरं तरलतारकतारहारम् । पश्याम्बरं सुघनसक्तमसैकसारं पश्याम्बरं विशदचन्द्रकरावसिक्तम् ॥ ८ ॥

paśyāmbaraṃ balavadambudharābdhipūrṇaṃ paśyāmbaraṃ taralatārakatārahāram | paśyāmbaraṃ sughanasaktamasaiaksāraṃ paśyāmbaraṃ viśadacandrakarāvasiktam || 8 ||

Behold the sky filled with powerful clouds and the ocean. Behold the sky adorned with a garland of twinkling stars. Behold the sky dense with a single essence. Behold the sky bathed in the clear light of the moon.

देखो आकाश को, जो शक्तिशाली बादलों और समुद्र से भरा हुआ है। देखो आकाश को, जो चमकते तारों की माला से सजा हुआ है। देखो आकाश को, जो एक ही सार से घना है। देखो आकाश को, जो चाँद की साफ रोशनी में नहाया हुआ है।

7.116.9

यत्रानेकसुरासुरास्पदघटा तारापदेशं गता ऋक्षाणां च यदास्पदं विसरतां सर्वोन्नतानां च यत्। तस्मिञ्छून्यमिति प्रतीतिरधुनाप्यस्तं गता नाम्बरे कोऽन्यो मार्जयितुं जनोऽज्ञरचितं लोकापवादं क्षमः ॥ ९ ॥

yatrāneka surāsurāspadaghaṭā tārāpadeśaṃ gatā ṛkṣāṇāṃ ca yadāspadaṃ visaratāṃ sarvonnatānāṃ ca yat | tasmiñchūnyamiti pratītiradhunāpyastaṃ gatā nāmbare ko'nyo mārjayituṃ jano'jñaracitaṃ lokāpavādaṃ kṣamaḥ || 9 ||

Where many gods and demons have gathered, and the stars have reached their destination, and where the constellations and all the elevated beings reside, there is now a perception of emptiness. Who else is capable of cleansing the world's disgrace created by the ignorant?

जहाँ बहुत से देवता और असुर एकत्र हुए हैं, और तारे अपने स्थान पर पहुँच गए हैं, और जहाँ नक्षत्र और सभी उच्च प्राणी निवास करते हैं, वहाँ अब खालीपन का एहसास होता है। अज्ञानी द्वारा बनाई गई दुनिया की बदनामी को साफ करने के लिए कौन और सक्षम है?

7.116.10

मेघाटोपैः प्रलयदहनैरद्रिपक्षाभिघातैस्तारापूरैरमरदितिजक्षुब्धसंग्रामसंघैः। व्योमाद्यापि प्रकृतिविकृतिं नाम नायात्यसंख्यैरन्तः साराशयगुणवतां लक्ष्यते नो महिम्नः ॥ १० ॥

meghāṭopaiḥ pralayadahanairadripakṣābhighātaistārāpūrairamaraditijakṣubdhasaṃghrāmasaṃghaiḥ | vyomādyāpi prakṛtivikṛtiṃ nāma nāyātyasaṃkhyairentaḥ sārāśayaguṇavatāṃ lakṣyate no mahimnaḥ || 10 ||

Even the sky, with its countless thunderclouds, destructive fires, mountain collisions, and the tumultuous battles of gods and demons filled with stars, does not reach the transformation of nature. The essence of the inner qualities of the great is not perceived.

आकाश भी, जिसमें असंख्य मेघ, विनाशकारी आग, पर्वत टकराव, और तारों से भरे देवताओं और असुरों के उग्र युद्ध हैं, प्रकृति के परिवर्तन तक नहीं पहुँचता। महान लोगों के अंतर्निहित गुणों का सार दिखाई नहीं देता।

7.116.11

आन्दोलयस्यविरलं गगनार्कमङ्के नारायणं च शशिनं च तथेतराणितेजांसि भासुरतडित्प्रभृतीनि साधो चित्रं तथापि न जहासि यदान्ध्यमन्तः ॥ ११ ॥

āndolayasyaviralaṃ gaganārkamaṅke nārāyaṇaṃ ca śaśinaṃ ca tathetarāṇitejāṃsi bhāsuratadidprabhṛtīni sādho citraṃ tathāpi na jahāsi yadāndhyamantaḥ || 11 ||

In the lap of the sky and the sun, the continuous vibrations of the stars, including Nārāyaṇa and the moon, and the brilliant lights of lightning, etc., are wonderful, O sage! Yet, you do not abandon the inner darkness.

आकाश और सूर्य की गोद में, नारायण और चंद्रमा सहित तारों की निरंतर कंपनें और बिजली के प्रकाश आदि चमकदार हैं, हे साधो! फिर भी तुम अंधेरे को अंतःकरण से नहीं छोड़ते।

7.116.12

आकाश काशसि तु यत्र शशाङ्कबिम्बं त्वत्कीर्णकज्जलतमो मलिनोऽसितत्वम्सङ्गान्न यन्नयसि तत्खलु चित्रमुच्चैः को नाम वान्तरमलं मलिनीकरोति ॥ १२ ॥

ākāśa kāśasi tu yatra śaśāṅkabimbaṃ tvatkīrṇakajjalatamo malino'sitatvamsaṅgānna yannayasi tatkhalu citramuccaiḥ ko nāma vāntaramalaṃ malinīkaroti || 12 ||

In the sky, where the moon's orb is darkened by the dust of your mascara, it is indeed a wonder that you do not remove that impurity through association. Who else could make the inner impurity so evident?

आकाश में, जहाँ चंद्रमा का मंडल आपके अंजन की धूल से काला हो गया है, वह दूषित होना वास्तव में एक चमत्कार है कि आप उस अशुद्धि को संपर्क से दूर नहीं करते। और कौन अंतःकरण की अशुद्धि को इतना स्पष्ट कर सकता है?

7.116.13

पूर्णस्यापि जगद्दोषैः सर्वदैवाविकारिणःखस्य मन्ये बुधस्येव सुखं सर्वार्थशून्यता ॥ १३ ॥

pūrṇasyāpi jagaddoṣaiḥ sarvadaivāvikāriṇaḥkhasya manye budhasyeva sukhaṃ sarvārthaśūnyatā || 13 ||

Even though the world is full of faults and always changing, I believe that the happiness of the wise is in the emptiness of all purposes.

यदि संसार दोषों से भरा है और हमेशा बदलता रहता है, तो भी मैं मानता हूँ कि बुद्धिमान का सुख सभी उद्देश्यों की शून्यता में है।

7.116.14

कल्पाभ्रद्रुमवीरुदुन्नतिदृशां कर्तासि धर्तासि च आकाशेन्दुघनार्ककिन्नरमरुत्स्कन्धामराणामपिसर्वं रम्यमसंकुलाशय समस्वच्छस्वभावस्य ते यत्त्वेतद्धनत्वमङ्ग तदहो मुख्याय खेदाय नः ॥ १४ ॥

kalpābhradrumavīrudunnatidṛśāṃ kartāsi dhartāsi ca ākāśendughanārkakinnaramarutskandhāmarāṇāmapisarvaṃ ramyamasaṃkulāśaya samasvacchasvabhāvasya te yattvetaddahanatvamaṅga tadaho mukhyāya khedāya naḥ || 14 ||

You create and sustain the lofty views of the wish-fulfilling tree, the clouds, the moon, the sun, the celestial beings, the winds, and the immortals. All these are beautiful and free from impurities, O pure one. This wealth of yours is indeed a great sorrow for us.

आप कल्पवृक्ष, बादल, चंद्रमा, सूर्य, देवता, वायु और अमर लोगों के उच्च दृष्टिकोण को सृजित और संरक्षित करते हैं। ये सभी सुंदर और अशुद्धियों से मुक्त हैं, हे पवित्र! आपका यह धन हमारे लिए एक बड़ा दुःख है।

7.116.15

आकाश काशमसि निर्मलमच्छमुच्चैःआधार उन्नततयोत्तममुत्तमानाम्त्वामेत्य किंतु विरलं करकाघनोऽयं लोकं विमर्दयति तेन परोऽसि नीचैः ॥ १५ ॥

ākāśa kāśamasi nirmalamacchamuccairādhāra unnatatayottamamuttamānāmtvāmetya kiṃtu viralaṃ karakāghano'yaṃ lokaṃ vimardayati tena paro'si nīcaiḥ || 15 ||

You are the pure, transparent sky, the supreme support, elevated and excellent. Yet, this rare, dense cloud of darkness afflicts the world. Therefore, you are superior to the lowly.

आप पवित्र, पारदर्शी आकाश हैं, सर्वोच्च आधार, उन्नत और उत्तम। फिर भी, यह दुर्लभ, घना अंधकार का बादल संसार को पीड़ित करता है। इसलिए, आप नीच लोगों से श्रेष्ठ हैं।

7.116.16

आकाश कर्षकष एव निकर्षणं ते मन्ये चिरं समचितं न तु किंचिदन्यत्। शून्योऽसि यज्जलधरर्क्षविमानचन्द्रसूर्यानिलान्वहसि भासि न चार्थशून्यः ॥ १६ ॥

ākāśa karṣakaṣa eva nikarṣaṇaṃ te manye ciraṃ samacitaṃ na tu kiṃcidanyat | śūnyo'si yajjaladhararakṣavimānacandrasūryānilānvahasi bhāsi na cārthaśūnyaḥ || 16 ||

I consider the sky to be both attracting and repelling, accumulated over a long time, not anything else. You are empty, yet you carry the clouds, stars, airplanes, moon, sun, and wind. You shine, not devoid of meaning.

मैं आकाश को आकर्षित और प्रतिकर्षित दोनों मानता हूँ, जो लंबे समय से इकट्ठा होता है, कुछ और नहीं। तुम खाली हो, फिर भी तुम बादलों, तारों, विमानों, चंद्रमा, सूर्य और हवा को लेकर चलते हो। तुम चमकते हो, अर्थहीन नहीं।

7.116.17

अह्नि प्रकाशमसि रक्तवपुर्दिनान्ते यामासु कृष्णमथ चाखिलवस्तुरिक्तम्। नित्यं न किंचिदपि सद्वहसीति मायां न व्योम वेत्ति विदुषोऽपि विचेष्टितं ते ॥ १७ ॥

ahniprakāśamasi raktavapurdinānte yāmāsu kṛṣṇamatha cākhilavasturiktaṃ | nityaṃ na kiṃcidapi sadvahasīti māyāṃ na vyoma vetti viduṣo'pi vicēṣṭitaṃ te || 17 ||

During the day, you are the light, red in form at sunset, and dark during the night, encompassing all things. Always, you do not carry anything, yet you appear to carry everything. The sky does not know the actions of the wise.

दिन में, तुम प्रकाश हो, सूर्यास्त पर लाल रूप में, और रात में अंधेरा, सभी चीजों को घेरते हुए। हमेशा, तुम कुछ भी नहीं लेकर चलते हो, फिर भी तुम सब कुछ लेकर चलते हुए दिखते हो। आकाश बुद्धिमानों के कार्यों को नहीं जानता।

7.116.18

अकिंचनोऽपि कार्याणि साधयत्याततआशयः। अन्तःशून्यमपि व्योम सर्वस्योन्नतिकारणम्॥ १८ ॥

akiṃcano'pi kāryāṇi sādhayatyātatāśayaḥ | antaḥśūnyamapi vyoma sarvasyaunnatikāraṇam || 18 ||

Even though it has nothing, the sky accomplishes tasks with an expanded mind. Even though it is empty inside, the sky is the cause of elevation for all.

यद्यपि इसमें कुछ भी नहीं है, आकाश विस्तृत मन से कार्य करता है। यद्यपि यह अंदर से खाली है, आकाश सबके उत्थान का कारण है।

7.116.19

न तृणसलिलं नैव ग्रामो न नाम च पत्तनं न च दलभरस्निग्धच्छायस्तरुर्न च सत्प्रपा। तदपि गगनाध्वानं सूर्यः प्रयाति दिने दिने विषममपि यत्प्रारब्धं तत्त्यजन्ति न सात्त्विकाः ॥ १९ ॥

na tṛṇasalilaṃ naiva grāmo na nāma ca pattanaṃ na ca dalabharasnigdhacchāyastarurna ca satprapā | tadapi gaganādhvānaṃ sūryaḥ prayāti dine dine viṣamamapi yatprārabdhaṃ tattyajanti na sāttvikāḥ || 19 ||

There is no grass, no water, no village, no name, no town, no tree with dense shade, no good water. Yet, the sun travels the sky path every day, even if it is uneven. The virtuous do not abandon what has been undertaken.

यहाँ न घास है, न पानी, न गाँव, न नाम, न शहर, न घनी छाया वाला पेड़, न अच्छा पानी। फिर भी, सूर्य हर दिन आकाश के मार्ग पर यात्रा करता है, चाहे वह असमान हो। सात्त्विक लोग जो शुरू किया है उसे नहीं छोड़ते।

7.116.20

यामा ध्वान्तपटेन शीतलरुचिः कर्पूरपूरैः करैरर्कालोकनवांशुकेन दिवसस्तारौघपुष्पोत्करैः । द्यौरम्भोदतुषारवारिकुसुमैः सर्वर्तवो भूषयन्त्येते कालकलात्मनोस्त्रिभुवने व्योमाङ्गणं नाथयोः ॥ २० ॥

yāmā dhvāntapaṭena śītalaruciḥ karpūrapūraiḥ karairarkālokanavāṃśukena divasastāraughapuṣpotkaraiḥ | dyauramбhodatuṣāravārikusumaiḥ sarvartavo bhūṣayantyete kālakalātmanostribhuvane vyomāṅgaṇaṃ nāthayoḥ || 20 ||

The nights adorn with the dark cloth, cool touch, with hands full of camphor, with the new garment of sunlight, with the flowers of the day's star clusters. The sky adorns with the flowers of cloud drops, water, and blossoms in all seasons, in the three worlds, the courtyard of the sky of the lords of time.

रातें अंधेरे कपड़े, ठंडी स्पर्श, कपूर से भरे हाथों, सूर्य की रोशनी के नए वस्त्र, दिन के तारों के फूलों के साथ सजती हैं। आकाश बादलों की बूँदों, पानी और फूलों के साथ सभी ऋतुओं में, तीनों लोकों में, समय के स्वामी के आकाश के आँगन को सजाता है।

7.116.21

धूमाभ्ररेणुतिमिरार्कनिशेशसंध्या ताराविमानगरुडाद्रिसुरासुराणाम् । क्षोभैरपि प्रकृतिमुज्झति नान्तरिक्षं चित्रोत्थिता स्थितिरहो नु महाशयस्य ॥ २१ ॥

dhūmābhra-reṇu-timirārka-niśeśa-saṃdhyā tārā-vimāna-garuḍādri-surāsurāṇām | kṣobhairapi prakṛtimujjhati nāntarikṣaṃ citrotthitā sthitiraho nu mahāśayasya || 21 ||

Even with the disturbances of smoke, clouds, dust, darkness, sun, moon, twilight, stars, airplanes, eagles, mountains, gods, and demons, the sky does not lose its nature. Oh, what a wonderful stability of the great-hearted!

धूम, बादल, धूल, अंधेरे, सूर्य, चंद्रमा, संध्या, तारे, विमान, गरुड़, पर्वत, देवता और असुरों के विघ्नों के बावजूद, आकाश अपनी प्रकृति नहीं छोड़ता। ओह, कितनी अद्भुत स्थिरता है महान हृदय की!

7.116.22

दिग्भित्तिबद्धमिदमूर्ध्वतलान्तरिक्ष मुर्वीतलं घनपुराचलभूरिभाण्डम् । विद्याधरामरमहोरगजालकारं लोकौघसंसरणसंघपिपीलिकाढ्यम् ॥ २२ ॥

digbhittibaddhamidamūrdhvatalāntarikṣa murvītalaṃ ghanapurācalabhūribhāṇḍam | vidyādharāmaramahoragajālakāraṃ lokaughasaṃsaraṇasaṃghapipīlikāḍhyam || 22 ||

This sky, bound by the directions, is the upper layer of the atmosphere, the earth's surface, dense mountains, and the vast expanse. It is adorned with celestial beings, gods, great serpents, and the multitude of moving creatures, like ants.

यह आकाश, दिशाओं से घिरा हुआ, वायुमंडल का ऊपरी तल, पृथ्वी की सतह, घने पर्वत, और विशाल भूमि है। यह दिव्य प्राणियों, देवताओं, महान सर्पों, और चलती हुई प्रजातियों के समूह, जैसे चींटियों से सजा हुआ है।

7.116.23

कालः क्रिया च भुवनं भवनं चिराय नामाधितिष्ठत इवोपवनं विकासि । आशङ्क्यते प्रतिदिनं ननु नष्टमेव नाद्यापि नश्यति च केयमहो नु माया ॥ २३ ॥

kālaḥ kriyā ca bhuvanaṃ bhavanaṃ cirāya nāmādhi-tiṣṭhat ivo-pavanaṃ vikāsi | āśaṅkyate pratidinaṃ nanu naṣṭameva nādyāpi naśyati ca keyamaho nu māyā || 23 ||

Time and action seem to sustain the world and existence for a long time, like a blossoming garden. It is feared every day that it is lost, yet it does not perish even today. Oh, what is this wonderful illusion?

समय और क्रिया दुनिया और अस्तित्व को लंबे समय तक बनाए रखते हैं, जैसे खिलता हुआ बगीचा। हर दिन डर होता है कि यह खो गया है, फिर भी आज तक यह नष्ट नहीं हुआ है। ओह, यह कैसी अद्भुत माया है?

7.116.24

युगलकम् खं मन्ये पादपादीनां रोधयत्यधिकोन्नतिम् । अकर्तुरेव महतो महिम्नोदेति कर्तृता ॥ २४ ॥

yugalakam khaṃ manye pādapādīnāṃ rodhayatyadhikonnatim | akartureva mahato mahimnōdeti kartṛtā || 24 ||

I consider the sky as a pair, which obstructs the excessive growth of trees and other plants. The greatness of the non-doer itself arises as the doer.

मैं आकाश को एक जोड़ी मानता हूँ, जो पेड़ों और अन्य पौधों के अत्यधिक विकास को रोकता है। न करने वाले का ही महानता करने वाले के रूप में उभरती है।

7.116.25

जगतां यत्र लक्षाणि न भवन्त्युद्भवन्ति च । तच्छून्यमुच्यते व्योम धिक्पाण्डित्यमखण्डितम ॥ २५ ॥

jagatāṃ yatra lakṣāṇi na bhavantyudbhavaṃti ca | tacchūnyamucyate vyoma dhikpāṇḍityamakhāṇḍitam || 25 ||

Where the characteristics of the worlds neither exist nor arise, that is called the empty sky. Shame on the unbroken scholarship.

जहाँ दुनिया के लक्षण न होते हैं न उत्पन्न होते हैं, वह खाली आकाश कहलाता है। अटूट विद्वता पर शर्म है।

7.116.26

व्योमन्येव प्रलीयन्ते व्योमतः प्रोद्भवन्ति च । गच्छतोन्मत्ततामेतामीश्वरान्यभिदा कृता ॥ २६ ॥

vyomanyeva pralīyante vyomataḥ prodhavanti ca | gacchatonmattatāmetāmīśvarānyabhidā kṛtā || 26 ||

All beings dissolve into the sky and emerge from it | This madness of going and coming is made by the Lord's will

सभी प्राणी आकाश में विलीन होते हैं और आकाश से उत्पन्न होते हैं | यह जाने और आने की पागलपन ईश्वर की इच्छा से बनाई गई है

7.116.27

आयान्ति यान्ति निपतन्ति तथोत्पतन्ति सर्गश्रियः कणघटा इव पावकोत्थाः । यत्रामलं तदहमेकमनादिमध्यं मन्ये खमेव न तु कारणमीश्वराख्यम् ॥ २७ ॥

āyānti yānti nipatanti tathotpatanti sargaśriyaḥ kaṇaghaṭā iva pāvakotthāḥ | yatrāmalaṃ tadahamekamanādimadhyaṃ manye khameva na tu kāraṇamīśvarākhyam || 27 ||

They come, they go, they fall and rise like sparks from a fire | I consider that pure space, which is eternal and without beginning or end, not the cause called God

वे आते हैं, जाते हैं, गिरते हैं और उठते हैं जैसे आग से चिंगारियाँ | मैं उस शुद्ध आकाश को मानता हूँ जो अनादि और अनंत है, ईश्वर कहलाने वाले कारण नहीं

7.116.28

आधारमाययततरं त्रिजगन्मणीनामङ्गे बिभर्त्यमितमन्तरशेषवस्तु। व्योमैव चिद्वपुरहं परमेव मन्ये यत्रोदयास्तमयमेति जगद्भ्रमोऽयम्॥ २८॥

ādhāramāyatataraṃ trijaganmaṇīnāmaṅge bibhartyamitamantaraśeṣavastu | vyomaiva cidvapurahaṃ parameva manye yatrodaiāstamayameti jagadbhramo'yam || 28 ||

I consider the vast support of the three worlds, which bears the immeasurable inner essence | I consider the sky itself as the supreme form of consciousness, where this worldly illusion arises and sets

मैं तीनों लोकों के विशाल आधार को मानता हूँ, जो अपार अंतर्निहित सार को धारण करता है | मैं आकाश को ही चेतना का परम रूप मानता हूँ, जहाँ यह संसारिक भ्रम उदित और अस्त होता है

7.116.29

वनावनौ वनचरचारुकामिना मनोहरद्रुमगहनेषु गीयते। इतो गिरेः शिरसि विलोक्यतेऽमुना वियोगिना पथि वहता रसाकुलम्॥ २९॥

vanāvanau vanacaracārukāminā manoharadrumagahaneṣu gīyate | ito gireḥ śirasi vilokyate'munā viyoginā pathi vahatā rasākulam || 29 ||

In the charming dense forests, the beautiful forest-dwelling lover sings | From here, on the peak of the mountain, he is seen by the separated one, carrying a heart full of emotions on the path

मनमोहक घने जंगलों में, सुंदर वनवासी प्रेमी गाता है | यहाँ से, पर्वत की चोटी पर, वह वियोगी द्वारा देखा जाता है, जो भावनाओं से भरे हृदय को मार्ग पर ले जाता है

7.116.30

गीतं शृङ्गतरूच्चपल्लवपुटे निःश्वस्य सोत्कण्ठया कंठाश्लिष्टगिरा वियोगहतया विद्याधराणां स्त्रिया। यन्नामात्र तदेष नाथ पथिकः सोच्छ्वासमाकर्णयन् दोलान्दोलनयेव चञ्चलधिया नो याति नोनूच्यते॥ ३०॥

gītaṃ śṛṅgatarūccapallavapuṭe niḥśvasya sotkaṇṭhayā kaṇṭhāśliṣṭagirā viyogahatayā vidyādharāṇāṃ striyā | yannāmātra tadeṣa nātha pathikaḥ socchvāsamākarṇayan dolāndolanayeva cañcaladhiyā no yāti nonūcyate || 30 ||

The song sung with a sigh, with a voice choked with longing, by the woman of the Vidyadharas, struck by separation | Hearing even the name of that, O traveler, this lord does not go, does not speak, swaying with a restless mind like a swing

वियोग से पीड़ित विद्याधर स्त्री द्वारा उच्च शिखर पर फूलों के गुच्छे में गाया गया गीत, उत्कंठा से साँस लेकर, गला रुँधा आवाज में | उसका नाम सुनकर भी, हे यात्री, यह स्वामी नहीं जाता, नहीं बोलता, बेचैन मन से झूले की तरह डोलता है

7.116.31

गायत्यद्रिशिरस्तरौ दलपुटे निःश्वस्य विद्याधरी काकल्याऽतिलकं वियोगविधुरा बाष्पाकुलैषा पुरः । नाथोत्सङ्गगृहे गृहीतचिबुकं स्मेरं भवच्चुम्बनं स्मृत्वास्वाद्य रसायनं हतसमा नीता मयैता इति ॥ ३१ ॥

gāyatyadriśirastarau dalapuṭe niḥśvasy vidyādharī kākalyā'tilakaṃ viyogavidhurā bāṣpākulaiṣā puraḥ | nāthotsaṅgagṛhe gṛhītacibukaṃ smeraṃ bhavaccumbanaṃ smṛtvāsvādya rasāyanaṃ hatasamā nītā mayaitā iti || 31 ||

On the peak of the mountain, the Vidyadhari sighed deeply, her forehead marked with a tilak of longing, her eyes filled with tears of separation. Remembering the sweet kiss on her husband's lap, she tasted the elixir of love and was carried away by me.

पर्वत की चोटी पर, विद्याधरी ने गहरी सांस ली, उसके माथे पर विरह का तिलक था, और उसकी आंखें वियोग के आंसुओं से भरी थीं। पति की गोद में मधुर चुंबन को याद करके, उसने प्रेम के अमृत का स्वाद लिया और मैंने उसे ले जाया।

7.116.32

अस्याः प्राग्भवसत्पतिः स मुनिना शापेन वृक्षीकृतो वर्षद्वादशकं तदेव गणयन्त्येषैव सात्र स्थिता । गायत्युत्कलिता तदेव दयितं तं पादपं संश्रिता मार्गे मार्गविहारिणां वदनतो राजन्ममैतच्छ्रुतम् ॥ ३२ ॥

asyāḥ prāgbhavaḥsatpatiḥ sa muninā śāpena vṛkṣīkṛto varṣadvādaśakaṃ tadeva gaṇayantyeṣaiva sātra sthitā | gāyatyutkalitā tadeva dayitaṃ taṃ pādapaṃ saṃśritā mārge mārgavihāriṇāṃ vadanato rājanmamaitacchrutam || 32 ||

Her former husband was cursed by a sage and turned into a tree for twelve years. She, counting those very years, remained there, singing and agitated. She took refuge in that very beloved tree. O King, I heard this from the mouths of travelers on the road.

उसका पूर्व पति एक ऋषि द्वारा शापित होकर एक पेड़ में बदल गया और बारह वर्षों तक रहा। वह उन्हीं वर्षों को गिनती हुई वहीं रही, गाती हुई और व्याकुल। वह उसी प्रिय पेड़ की शरण में गई। हे राजन, मैंने यह मार्ग पर यात्रियों के मुंह से सुना।

7.116.33

पश्यैष सोऽस्मदवलोकनशान्तशापो विद्याधरो विटपितामवमुच्य बालाम् । कण्ठेकरोति विटपाकृतिविप्रलम्भैस्तैरेव बाहुभिरलं स्फुटपुष्पहासः ॥ ३३ ॥

paśyaiṣa so'smadavalokanaśāntaśāpo vidyādharo viṭapitāmavamucya bālām | kaṇṭhekaroti viṭapākṛtivipralambhais taireva bāhubhiralaṃ sphuṭapuṣpahāsaḥ || 33 ||

Behold, this Vidyadhari's curse was pacified by our glance. The Vidyadhari, releasing the young girl from the tree form, places her on his neck. With the deceptive form of the tree, he embraces her with those very arms, blooming with flowers.

देखो, इस विद्याधरी का शाप हमारी दृष्टि से शांत हो गया। विद्याधरी, लड़की को पेड़ के रूप से मुक्त करके, उसे अपने गले में लेता है। पेड़ के भ्रामक रूप से, वह उन्हीं बाहों से उसे आलिंगन करता है, जो फूलों से खिले हुए हैं।

7.116.34

शिखरिणां करिणां कुसुमोत्करो विटपिषु स्फुटरोमसु राजते । गगनविच्युततारकलीलया शिखरमेष तुषारसमानया ॥ ३४ ॥

śikhariṇāṃ kariṇāṃ kusumotkaro viṭapiṣu sphuṭaromasu rājate | gaganavicyutatārakalīlayā śikharam eṣa tuṣārasamānayā || 34 ||

The cluster of flowers on the peaks of the mountains shines on the trees with their distinct leaves. With the play of stars scattered in the sky, this peak appears like snow.

पर्वतों की चोटियों पर फूलों का झुंड पेड़ों पर उनके विशिष्ट पत्तों के साथ चमकता है। आकाश में बिखरे हुए तारों के खेल से, यह चोटी बर्फ की तरह दिखाई देती है।

7.116.35

मीनावलीसरभसप्लुतिघट्टिताम्बुवीचीविलोलविरुवत्कुररीकराला । कावेर्यहो कुसुमशुक्लपटाऽवभाति निःशङ्करङ्कुकुलसंकुलकूलकच्छा ॥ ३५ ॥

mīnāvalīsarabhasaplutighaṭṭitāmbuvīcīvilolaviruvatkurarīkarālā | kāveryaho kusumaśuklapatā'vabhāti niḥśaṅkaraṅkukulasankulakūlakacchā || 35 ||

The waves of the Kaveri river, agitated by the swift movement of fish, appear white like flowers. The water is clear and filled with the sound of cranes, and the banks are crowded with joyful kokilas (cuckoos).

कावेरी नदी की लहरें, मछलियों की तेज गति से उथल-पुथल होकर, फूलों की तरह सफेद दिखाई देती हैं। पानी साफ है और सारस की आवाज से भरा हुआ है, और किनारे खुशी से भरे कोयलों से भरे हुए हैं।

7.116.36

भात्यत्र पश्य रविणा कटके सुवेलशैलस्य काञ्चनशिला सकलामलश्रीः। वेलावलोलवरुणालयवीचिभङ्गपर्यस्तवाडवकृशानुकणोपमाना ॥ ३६ ॥

bhātyatra paśya raviṇā kaṭake suvelaśailasya kāñcanaśilā sakalāmalasrīḥ| velāvalolavaruṇālayavīcibhaṅgaparyastavāḍavakṛśānukanopamānā || 36 ||

Behold here, the golden rocks of the beautiful Suvela mountain shine with the sun| The waves of the ocean, the abode of Varuna, break against the shore, resembling tiny particles of fire|| 36 ||

देखो, यहाँ सूर्य की रोशनी में सुवेल पर्वत के सोने के पत्थर चमक रहे हैं| समुद्र की लहरें, वरुण का निवास, तट पर टूट रही हैं, आग के छोटे कणों की तरह दिख रही हैं|| ३६ ||

7.116.37

आसन्नपीनजलदावलितालयानां गेहोपशल्यपरिफुल्लवनद्रुमाणाम्। लक्ष्मीः पलाशपटलावलिताम्बराणां घोषौकसां समवलोकय पर्वतेषु ॥ ३७ ॥

āsannapīnajaladāvalitālayānāṃ gehopaśalyapariphulḷavanadrumāṇām| lakṣmīḥ palāśapaṭalāvalitāmbarāṇāṃ ghoṣaukasāṃ samavalokaya parvateṣu || 37 ||

Observe the prosperity of the mountains where the dense clouds gather around the homes| The forest trees are in full bloom, and the cows with their calves are adorned with garlands of Palasha flowers|| 37 ||

देखो पर्वतों पर घने बादलों से घिरे घरों की समृद्धि| वन के पेड़ पूरी तरह खिले हुए हैं, और गायें अपने बछड़ों के साथ पलाश फूलों की मालाओं से सजी हुई हैं|| ३७ ||

7.116.38

उन्निद्रपुष्पपटुपाण्डुरपुष्पखण्डा मन्दारभाण्डविशिखण्डिकरण्डकच्छाः। ग्रामाः प्रपातजलजालविलासवाद्या वल्गद्गुहागहनगीतजना जयन्ति ॥ ३८ ॥

unnidrapuṣpapaṭupāṇḍurapuṣpakhaṇḍā mandārabhāṇḍaviśikhaṇḍikaraṇḍakacchāḥ| grāmāḥ prapātajalajālavilāsavādyā valgadguhāgahanagītajanā jayanti || 38 ||

The villages with blooming white flowers and fragments of Mandara flowers are victorious| They resonate with the music of waterfalls and the deep songs echoing from the caves|| 38 ||

सफेद फूलों और मंदार फूलों के टुकड़ों से सजे गाँव विजयी हैं| वे जलप्रपात की ध्वनि और गुफाओं से उठते गहरे गीतों के साथ गूँज रहे हैं|| ३८ ||

7.116.39

उन्निद्रकन्दलदलान्तरलीयमानकूजन्मदान्धमधुपोन्मदपामराणाम्। मन्ये न सा भवति तुष्टिरिहामराणां या गोकुलेषु गिरिगह्वरिणां नराणाम्॥ ३९॥

unnidrakandaldalāntaralīyamānakūjanmadāndhamadhuponmadapāmarāṇām| manye na sā bhavati tuṣṭirihaāmarāṇāṃ yā gokuleṣu girigahvarināṃ narāṇām || 39 ||

I think there is no greater satisfaction for the immortals than the joy found in the villages nestled in the mountain valleys| Where the humming of intoxicated bees resonates within the swaying petals of the blooming flowers|| 39 ||

मैं सोचता हूँ कि अमर लोगों के लिए पर्वत की घाटियों में बसे गाँवों में जो संतुष्टि मिलती है, उससे बढ़कर कोई संतुष्टि नहीं है| जहाँ खिले हुए फूलों के डंठलों में मतवाले भौंरों की गुंजारहट गूँजती है|| ३९ ||

7.116.40

भृङ्गावदोलितलताकुलकाननान्तर्गायत्पुलिन्ददयिताननदत्तनेत्रम्। लीलाकुला गतघृणं गिरिगह्वरेषु किं घ्नन्ति शत्रुमिव मुग्धमृगं किराताः॥ ४०॥

bhṛṅgāvadolitalatākulakānanāntargāyatpulindadayitānanadattanetram| līlākulā gataghṛṇaṃ girigahvareṣu kiṃ ghnanti śatrumiva mugdhamṛgaṃ kirātāḥ || 40 ||

In the mountain valleys, the playful women, free from mercy, swing the vines and sing within the dense forests| Their eyes are fixed on the faces of their beloved Pulinda men| Do the Kirata hunters kill the innocent deer like an enemy?|| 40 ||

पर्वत की घाटियों में, खेल-खिलवाड़ में लगी महिलाएँ, जो दया से मुक्त हैं, झूलती लताओं को झुलाती हैं और घने जंगलों में गाती हैं| उनकी नजरें अपने प्रिय पुलिंद पुरुषों के चेहरों पर टिकी हुई हैं| क्या किरात शिकारी निर्दोष हिरण को शत्रु की तरह मारते हैं?|| ४० ||

7.116.41

नानाविकासिकुसुमोत्करसारलब्धवल्लीदलावलनशीतलिताध्वगाङ्गाः। साम्भःप्रथप्रसरणेन तरत्तरङ्गा ग्रामा गिरीन्द्रगहनेषु जयन्ति चन्द्रम्॥ ४१॥

nānāvikāsikusumotkarasāralabdhavallīdalāvalanaśītalitādhvagāṅgāḥ | sāmbhaḥprathaprasaraṇena tarattaraṅgā grāmā girīndragahaneṣu jayanti candram || 41 ||

The villages, adorned with various blooming flowers, cooled by the breeze from the valley's petals, and crossed by the swiftly flowing Ganges, shine like the moon in the dense forests of the mountain king.

विभिन्न प्रकार के खिले हुए फूलों से सजे हुए, घाटी की पंखुड़ियों से ठंडी हवा से ठंडे हुए, और तेजी से बहने वाली गंगा से पार किए गए गाँव, पर्वत राजा के घने जंगलों में चंद्रमा की तरह चमकते हैं।

7.116.42

कूजन्निर्जरवारयः परिसरत्प्रोन्निद्रतालद्रुमा हेलोल्लासितपुष्पपल्लववलद्वल्लीवितानाम्बराः । पर्यन्तोन्नतसाललम्बिजलदा रम्या गिरिग्रामकाश्चन्द्राश्वत्थमितावनिं शशिपुरस्योद्यानभागा इव ॥ ४२ ॥

kūjannirjaravārayaḥ parisaratpronnidratāladrumā helollāsitapuṣpapallavavaladvallīvitānāmbarāḥ | paryantonnaṭasālalambijaladā ramyā girigrāmakāścandrāśvatthamitāvaniṃ śaśipurasyaudyānabhāgā iva || 42 ||

The villages, resounding with the melodious sounds of birds, surrounded by tall, awake palm trees, adorned with swaying creepers full of blossoming flowers and leaves, and touched by the clouds hanging on the distant tall sal trees, are as charming as the gardens of the moon city, filled with ashvattha trees.

गाँव, पक्षियों की मधुर ध्वनियों से गूँजते हुए, ऊँचे, जाग्रत ताड़ के पेड़ों से घिरे हुए, खिले हुए फूलों और पत्तों से भरी लताओं से सजे हुए, और दूर के ऊँचे साल के पेड़ों पर लटकते बादलों से छूए हुए, चंद्रमा नगर के बगीचों की तरह मनमोहक हैं, जो अश्वत्थ के पेड़ों से भरे हुए हैं।

7.116.43

आसन्नपीतघनघर्घरमेघनादनृत्यच्छिखण्डिनवताण्डवविप्रकीर्णैः । ग्रामाः कलापिकुलकोमलबर्हखण्डैः प्रोड्डीनचन्द्रकमणिप्रकरा जयन्ति ॥ ४३ ॥

āsannapītaghanaghargharamēghanādanṛtyacchikhaṇḍinavatāṇḍavaviprakīrṇaiḥ | grāmāḥ kalāpikulakomalabarhakhāṇḍaiḥ proḍḍīnacandrakamaṇiprakarā jayanti || 43 ||

The villages, with the approaching dark, rumbling clouds, dance with the peacocks spreading their feathers, and shine with the soft peacock feathers and the bright moonstones.

गाँव, निकट आते हुए काले, गरजते हुए बादलों के साथ, मोरों के पंखों को फैलाकर नृत्य करते हुए, और कोमल मोर पंखों और चमकीले चंद्रकांत मणियों से चमकते हुए, शोभा पाते हैं।

7.116.44

पार्श्वस्थचारुशशिमण्डलमण्डनेषु विश्रान्तवारिगुरुवारिदवारणेषु । ग्रामेषु या गिरितटेषु विलासलक्ष्मी राज्येषु सा विभववत्सु कुतो विरिंचेः ॥ ४४ ॥

pārśvasthacāruśaśimaṇḍalamaṇḍaneṣu viśrāntavāriguruvāridavāraṇeṣu | grāmeṣu yā giritaṭeṣu vilāsalakṣmī rājyeṣu sā vibhavavatsu kuto viriṃceḥ || 44 ||

The playful beauty that resides in the villages adorned with the charming moon discs on the sides and rested with the heavy rain clouds, how can that be compared to the wealth of even Brahma's kingdom?

जो खेल-खेल में सुंदरता पार्श्व में मनमोहक चंद्रमा मंडलों से सजे हुए गाँवों में रहती है और भारी वर्षा के बादलों से आराम करती है, वह ब्रह्मा के राज्य के धन से भी कैसे तुलना की जा सकती है?

7.116.45

स्वामोदनन्दनवनान्तरसुन्दरेषु संतानकस्तवकहासिनिकुञ्जकेषु । उन्निद्रमन्द्रमधुपाकुलपारिभद्रसान्द्रद्रुमेष्वभिरमे गिरिगह्वरेषु ॥ ४५ ॥

svāmodanandanavanāntarasundareṣu saṃtānakastavakahāsinikuñjakeṣu |
unnidramandramadhupākulapāribhadrasāndradrumeṣvabhirame girigahvareṣu || 45 ||

In the beautiful inner forests of the lord's joyful gardens, in the groves resonating with the laughter of children, in the dense trees filled with humming bees and crowded with pāribhadra flowers, we delight in the mountain caves.

ईश्वर के आनंदमय उद्यानों के सुंदर अंतरंग वनों में, बच्चों के हँसने की ध्वनि से गूँजते झुंडों में, भ्रमरों की गुंजाराहट से भरे और पारिभद्र फूलों से भरे घने पेड़ों में, हम पर्वत की गुफाओं में आनंद लेते हैं।

7.116.46

हरिणीरावरम्येषु हारिहारीतहारिषु । गिरिग्रामेषु पुष्पेषुपुरेष्विव रतिर्नृणाम् ॥ ४६ ॥

hariṇīrāvaramyeṣu hārihārītahāriṣu | girigrāmeṣu puṣpeṣupureṣviva ratirnṛṇām || 46 ||

In the delightful forests, in the green meadows, in the mountain villages, and in the cities, people find pleasure as if in flowers.

हरिणी से भरे वनों में, हरे-भरे मैदानों में, पर्वतीय गाँवों में और नगरों में, लोग फूलों की तरह आनंद लेते हैं।

7.116.47

स्फाटिकस्तम्भसंभाररम्यनिर्झरवारिणि । नृत्यन्त्येताः शिखण्डिन्यः पश्यास्मिन्ग्रामगह्वरे ॥ ४७ ॥

sphāṭikastambhasaṃbhāraramyaniṛjharavāriṇi | nṛtyantyetāḥ śikhaṇḍinyaḥ paśyāsmingrāmagahvare || 47 ||

In the delightful water flowing from the crystal pillars, see these peacocks dancing in this village cave.

स्फटिक स्तंभों से निकलते सुंदर जल में, इस गाँव की गुफा में नृत्य करते हुए मोरों को देखो।

7.116.48

शिखण्डिन्यो विलासिन्यः पुष्पभारनता लताः । अत्र नृत्यन्ति कुञ्जेषु रणनिर्झरपुष्करे ॥ ४८ ॥

śikhaṇḍinyo vilāsinyaḥ puṣpabhāranatā latāḥ | atra nṛtyanti kuñjeṣu raṇaniṛjharapuṣkare || 48 ||

The playful peacocks, with their feathers bent under the weight of flowers, dance here in the groves, near the flowing water and lotuses.

खेलते हुए मोर, जिनकी पंखुड़ियाँ फूलों के भार से झुकी हुई हैं, यहाँ बागों में, बहते जल और कमलों के पास नृत्य करते हैं।

7.116.49

हारीतहारिहरितोपवनद्रुमासु वापीप्रमाणरणितामलकाकलीषु । ग्रामस्थलीषु गिरिगह्वरगोपितासु मन्ये मुदैष रमते स्वरसेन कामः ॥ ४९ ॥

hārītahāriharitopavanadrumāsu vāpīpramāṇaraṇitāmalakākalīṣu | grāmasthalīṣu girigahvargopitāsu manye mudaīṣa ramate svarasena kāmaḥ || 49 ||

I believe that love rejoices with delight in the green forests, in the gardens adorned with ponds, in the village lands protected by mountain caves, and in the resonant sounds of nature.

मैं मानता हूँ कि प्रेम हरे वनों में, तालाबों से सजे बगीचों में, पर्वतीय गुफाओं से सुरक्षित गाँव की भूमि में, और प्रकृति की गूँजती ध्वनियों में आनंद लेता है।

7.116.50

श्रीमद्वृत्तमहाशयातपहरप्रोच्चैर्गभीराकृते भूभृन्मूर्धसु भूषणं भवसि भो भूमे रसैकास्पदम्। एतत्तु क्षपयेन्मनांसि यदिदं मेघ त्वया वर्षता हर्षादूषरपल्वलस्थलतरुष्वम्भोविभागक्रमः ॥ ५० ॥

śrīmadvṛttamahāśayātapaharaprocchairgabhīrākṛte bhūbhṛnmūrdhasu bhūṣaṇaṃ bhavasi bho bhūme rasaiakāspadam | etattu kṣapayenmanāṃsi yadidaṃ megha tvayā varṣatā harṣādūṣarapalvalasthalataruṣvambhovibhāgakramaḥ || 50 ||

O Earth, you are the ornament adorning the summits of the mountains, the sole abode of joy, with your profound and lofty form, destroying the heat of the great penance. O Cloud, this should dispel the minds, as you rain, the sequence of water distribution on the joyful, dry small islands and trees.

हे पृथ्वी, तुम पर्वतों की चोटियों का आभूषण हो, गहरी और ऊँची आकृति वाली, महान तप की गर्मी को दूर करने वाली, आनंद की एकमात्र आश्रयस्थली। हे मेघ, तुम्हारे वर्षा से यह मन को शांत करे, खुशी से भरे सूखे छोटे द्वीपों और पेड़ों पर पानी के वितरण का क्रम।

7.116.51

नित्यं स्नासि सुतीर्थवारिविसरैरुच्चैःपदस्थोऽम्बुदः शुद्धः सन्विपिनावनौ निवससि प्रारब्धमौनव्रतःरिक्तस्याप्यतिकान्तिरेव भवतः कायाश्रया लक्ष्यते प्रोत्थायाशनिमातनोषि किमिदं तुच्छं तवाचेष्टितम्॥ ५१ ॥

nityaṃ snāsi sutīrthavārivisarairuccaiḥpadastho'mbudaḥ śuddhaḥ sanvipināvanau nivasasi prārabdhamaunavrataḥriktasyāpyatikāntireva bhavataḥ kāyāśrayā lakṣyate protthāyāśanimātanoṣi kimidaṃ tucchaṃ tavāceṣṭitam || 51 ||

You always bathe in the pure waters of the sacred rivers, standing high like a cloud. You dwell in the forest, observing the vow of silence. Even in your absence, your radiance is evident. What is this insignificant act you are performing?

आप हमेशा पवित्र नदियों के जल में स्नान करते हैं, बादल की तरह ऊँचे खड़े होते हैं। आप वन में रहते हैं, मौन व्रत का पालन करते हैं। आपकी अनुपस्थिति में भी आपकी चमक दिखाई देती है। आप यह तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हैं?

7.116.52

वस्त्वस्थानगतं सर्वं शुभमप्यशुभं भवेत्दुर्मेघं स्थानमासाद्य वारि त्वसिततां गतम्॥ ५२ ॥

vastvasthānagataṃ sarvaṃ śubhamapyaśubhaṃ bhavetdurmeghaṃ sthānamāsādya vāri tvasitatāṃ gatam || 52 ||

Everything that reaches its proper place becomes auspicious, even if it is inauspicious. Water, reaching the place of dark clouds, becomes pure.

जो कुछ भी अपने सही स्थान पर पहुँचता है, वह शुभ हो जाता है, चाहे वह अशुभ हो। पानी, काले बादलों के स्थान पर पहुँचकर, पवित्र हो जाता है।

7.116.53

अहो नु मेघेन जलं विमुक्तमहो नु तोयेन विपूरिता भूःअहो नु भूमौ परिपोषितश्च जलैर्धनाढ्यैः प्रणयीव दीनः ॥ ५३ ॥

aho nu meghena jalaṃ vimuktamaho nu toyena vipūritā bhūḥaho nu bhūmau paripoṣitaśca jalairdhanāḍhyaiḥ praṇayīva dīnaḥ || 53 ||

Ah, the water released by the cloud! Ah, the earth filled with water! Ah, the earth nourished by the water, rich like a lover to the poor!

अह, बादल से छोड़ा गया पानी! अह, पानी से भरी हुई धरती! अह, पानी से सींची हुई धरती, जो गरीब के लिए धनी प्रेमी की तरह है!

7.116.54

नैर्घृण्यमस्थैर्यमथाशुचित्वं रथ्याचरत्वं परिकुत्सितत्वम्श्वभ्यो गृहीतं किमु नाम मूर्खैमूर्खेभ्य एवाथ शुना न जाने ॥ ५४ ॥

nairghṛṇyamasthairyamathāśucitvaṃ rathyācaratvaṃ parikutsitatvamśvabhyo gṛhītaṃ kimu nāma mūrkhaimūrkhebhya evātha śunā na jāne || 54 ||

Cruelty, instability, impurity, street behavior, and being despised—what is the name of these qualities taken from dogs? I do not know if they are from fools or from dogs.

निर्दयता, अस्थिरता, अशुद्धता, सड़क का व्यवहार, और घृणा की बात—कुत्तों से ली गई इन गुणों का क्या नाम है? मैं नहीं जानता कि ये मूर्खों से हैं या कुत्तों से।

7.116.55

गुणैः कतिपयैरेव बहुदोषोऽपि कस्यचितुपादेयो भवत्येव शौर्यसंतोषभक्तिभिः ॥ ५५ ॥

guṇaiḥ katipayaireva bahudoṣo'pi kasyacitupādeyo bhavatyeva śauryasaṃtoṣabhaktibhiḥ || 55 ||

Even with many faults, one can be worthy of respect due to a few good qualities such as courage, satisfaction, and devotion.

बहुत से दोषों के बावजूद, कुछ अच्छे गुणों जैसे साहस, संतोष और भक्ति के कारण कोई भी सम्मान के योग्य हो सकता है।

7.116.56

उन्मत्तमत्तपतनोन्मुखधावमानमानाधिकान्विषयवीथिषु दत्तमूर्तिः । यन्मन्यते तृणलवाग्र विलोकयेच्छासत्त्वं जडत्वमुत वास्य विचार्यतां तत् ॥ ५६ ॥

unmattamattapatanonmukhadhāvamānamānādhikānviṣayavīthiṣu dattamūrtiḥ | yanmanyate tṛṇalavāgra vilokayecchāsattvaṃ jaḍatvamuta vāsya vicāryatāṃ tat || 56 ||

The one who runs towards the paths of sensual pleasures with an intoxicated mind, thinking that even the tip of a blade of grass is desirable, let us consider whether this is sentience or inertness.

जो मतवाला मन लेकर इन्द्रियों के विषयों की ओर दौड़ता है, और सोचता है कि एक घास के टुकड़े का अग्रभाग भी इच्छित है, उसकी इस स्थिति को चेतना माना जाए या जड़ता, इस पर विचार करें।

7.116.57

कोलाहलः समानेऽपि तिर्यक्त्वे क्षुब्धमानसैः । अन्यथा सह्यते सिंहैर्मीलितैरन्यथा श्वभिः ॥ ५७ ॥

kolāhalaḥ samāne'pi tiryaktve kṣubdhamānasaiḥ | anyathā sahyate siṃhairmīlitairanyathā śvabhiḥ || 57 ||

Even though the noise is the same, it is perceived differently by different beings. Lions with disturbed minds perceive it one way, while dogs with closed eyes perceive it another way.

भले ही शोर एक समान हो, फिर भी वह अलग-अलग प्राणियों द्वारा अलग-अलग तरीके से समझा जाता है। विचलित मन वाले सिंह उसे एक तरीके से समझते हैं, जबकि बंद आँखों वाले कुत्ते उसे दूसरे तरीके से समझते हैं।

7.116.58

नित्याशुचे प्रियजने भषणैकनिष्ठ रथ्यान्तरभ्रमणनीतसमस्तकाल । कौलेयकाशयसमानतयैव मन्ये मूर्खेण केनचिदहो बत शिक्षितोसि ॥ ५८ ॥

nityāśuce priyajane bhaṣaṇaikanṣṭha rathyāntarabhramaṇanītasamastakāla | kauleyakāśayasamānatayaiva manye mūrkheṇa kenacidaho bata śikṣito'si || 58 ||

O dear one, who is always impure and devoted only to talking, wandering in the streets at all times, I think you have been taught by some fool, having a mind like a cat.

हे प्रियजन, जो हमेशा अशुद्ध है और केवल बातचीत में लगा हुआ है, सारे समय सड़कों पर घूमता रहता है, मैं सोचता हूँ कि तुम्हें किसी मूर्ख ने सिखाया है, जिसका मन बिल्ली के समान है।

7.116.59

नित्यं सर्वं जगदसदृशं कुर्वतोच्चैर्विधात्रा दौहित्रेऽस्मिञ्छुनि समदृशे निर्मितं सर्वमेव । वासोऽमेध्यावकरकुहरे भोजनं गूथपूयं सर्वालोके कुरतिकुरतिः सर्वनिन्द्यं शरीरम् ॥ ५९ ॥

nityaṃ sarvaṃ jagadasadṛśaṃ kurvato'ccairvidhātrā dauhitre'smiñchuni samadṛśe nirmitaṃ sarvameva | vāso'medhyāvakarakuhare bhojanaṃ gūthapūyaṃ sarvāloke kuratikuratiḥ sarvanindyaṃ śarīram || 59 ||

The creator makes the entire world dissimilar in every way. In this daughter's son, who is similar, everything is created. The clothing is in the filthy armpit, the food is feces and pus, the body is despised by all in the world.

विधाता सारे संसार को असमान बनाता है। इस पुत्री के पुत्र में, जो समान है, सब कुछ बनाया गया है। वस्त्र गंदी बगल में है, भोजन मल-मूत्र और पूय है, शरीर सारे संसार में निंदित है।

7.116.60

त्वत्तः कोऽधम इत्युदीरितवते श्वोवाच हासान्वितं मत्तो मौर्ख्यममेध्यमान्ध्यमशुभं यः सेवते सोधिकः शौर्यं भक्तिरकृत्रिमा धृतिरिति श्रीमान्गुणो योस्ति मे मूर्खादेष गुणः प्रयत्ननिचयैरन्विष्य नो लभ्यते ॥ ६० ॥

tvattaḥ ko'dhama ityudīritavate śvovāca hāsānvitaṃ matto maurkhyamamedhyamāndhyamaśubhaṃ yaḥ sevate sodhikaḥ | śauryaṃ bhaktirakṛtrimā dhṛtiriti śrīmānguṇo yosti me mūrkhādeṣa guṇaḥ prayatnanicayairanviṣya no labhyate || 60 ||

When asked, 'Who is more inferior than you?' the dog laughed and said, 'One who serves foolishness, impurity, blindness, and inauspiciousness is even more inferior.' Valor, genuine devotion, and fortitude are my virtues. These qualities of a fool cannot be obtained even with great effort.

जब पूछा गया, 'तुमसे और कौन नीच है?' तो कुत्ता हँसकर बोला, 'जो मूर्खता, अपवित्रता, अंधता और अशुभता की सेवा करता है, वह और भी नीच है।' शौर्य, निष्कपट भक्ति और धैर्य मेरे गुण हैं। इन मूर्ख के गुणों को बहुत प्रयास करने पर भी नहीं पाया जा सकता।

7.116.61

भुङ्क्तेऽमेध्यममेध्य एव रमते नित्यं महावस्करे तूष्णीमत्ति सचेतनं कृतरतिर्निश्चेतनं कृन्तति सर्वैरेत्य रते शुनीविवलिते लोष्टैर्जनैस्ताड्यते धात्रा खेलसमन्वितस्थितिरलं लोके कृतो नेश्वरः ॥ ६१ ॥

bhukte'medhyamamedhya eva ramate nityaṃ mahāvaskare tūṣṇīmatti sacetanaṃ kṛtaratirniścetanaṃ kṛntati sarvairietya rate śunīvivalite loṣṭairjanais tāḍyate dhātrā khelasamanvitastithiralaṃ loke kṛto neśvaraḥ || 61 ||

He eats the impure, delights in the impure, and is always in a great mess. He eats the conscious silently, enjoys the unconscious, and is beaten by all with stones. His existence is playful, and he is not a lord in the world.

वह अपवित्र खाता है, अपवित्र में आनंद लेता है, और हमेशा बड़ी गंदगी में रहता है। वह चुपचाप चेतन को खाता है, अचेतन का आनंद लेता है, और सभी लोगों द्वारा पत्थरों से मारा जाता है। उसका अस्तित्व खेल से भरा है, और वह दुनिया में कोई ईश्वर नहीं है।

7.116.62

लिङ्गस्योर्ध्वं रटत्काक आत्मानं दर्शयत्ययम् सर्वाधःपातकोत्तुङ्गतं पश्यत मामिति ॥ ६२ ॥

liṅgasyaordhvaṃ raṭatkāka ātmānaṃ darśayatyayam sarvādhḥpātakottuṅgataṃ paśyata māmiti || 62 ||

This crow, sitting on the top of the linga, shows himself. See me, who has fallen into the deepest sin.

यह कौआ, लिंग के ऊपर बैठा है, अपने आप को दिखाता है। मुझे देखो, जो गहरे पाप में डूब गया है।

7.116.63

काकक कटुकल्कारव कवलितगुणकर्दमे भ्रमन्सरसि अन्तरयसि मधुपरवं यदतो मे शिरसि फलभूतः ॥ ६३ ॥

kākaka kaṭukalkārava kavaliataguṇakardame bhramansarasi antarayasi madhuparavaṃ yadato me śirasi phalabhūtaḥ || 63 ||

O crow, with your harsh cawing, you are wandering in the mud of swallowed virtues. You obstruct the sweet fragrance, and because of that, you have become a fruit on my head.

हे कौआ, तुम्हारे कठोर चिल्लाने के साथ, तुम निगली गई सद्गुणों की कीचड़ में भटक रहे हो। तुम मधुर सुगंध को रोकते हो, और इस कारण, तुम मेरे सिर पर एक फल बन गए हो।

7.116.64

कवलयति नरकनिकरं परिहरति मृणालिकां ध्वाङ्क्षः यदतोऽस्तु मा स्मयस्ते स्वभ्यस्तं सर्वदा स्वदते ॥ ६४ ॥

kavalyati narakanikaraṃ pariharati mṛṇālikāṃ dhvāṅkṣaḥ yadato'stu mā smayaste svabhyastaṃ sarvadā svadate || 64 ||

The heron swallows the heap of hell, avoids the lotus stalk, and because of that, let there be no doubt, it always tastes what it has practiced.

बगुला नरक के ढेर को निगलता है, कमल की डंठल को छोड़ता है, और इस कारण, कोई संदेह न हो, वह हमेशा उसी का स्वाद लेता है जो उसने अभ्यास किया है।

7.116.65

विविधवनकुसुमकेसरधवलवपुर्हस इव दृष्टः । काकः कृमिकुलकवलं क्लिन्नमथो कवलयन् ज्ञातः ॥ ६५ ॥

vividhavanakusumakesaradhavalavapurhasa iva dṛṣṭaḥ | kākaḥ kṛmikulakavalaṃ klinnamatho kavalayan jñātaḥ || 65 ||

The crow, having a body white like various flowers of the forest, is seen | The crow is known to be eating a worm-filled, wet morsel

काक विविध वन कुसुम केसर धवल वपुष इव दृष्टः | काक कृमि कुल कवलं क्लिन्नमथो कवलयन् ज्ञातः

7.116.66

तुल्यवर्णच्छदैः कृष्णः संगतैः किल कोकिलैः । केन विज्ञायते काकः स्वयं यदि न भाषते ॥ ६६ ॥

tulyavarṇacchadaiḥ kṛṣṇaḥ saṃgataiḥ kila kokilaiḥ | kena vijñāyate kākaḥ svayaṃ yadi na bhāṣate || 66 ||

The black crow, with feathers of similar color, is seen with cuckoos | How can the crow be recognized if it does not speak by itself?

तुल्यवर्णच्छदैः कृष्णः संगतैः किल कोकिलैः | केन विज्ञायते काकः स्वयं यदि न भाषते

7.116.67

अरण्यान्या मृदः स्थाणौ स्थितः काको निरीक्षते । चैत्याद्दशदिशश्चोरो निशि सुप्ते जने यथा ॥ ६७ ॥

araṇyānyā mṛdaḥ sthāṇau sthitaḥ kāko nirīkṣate | caitayāddaśadiśaścoro niśi supte jane yathā || 67 ||

The crow stands on the ground in the forest and looks around | Like a thief in the night when people are asleep

अरण्यान्या मृदः स्थाणौ स्थितः काको निरीक्षते | चैत्याद्दशदिशश्चोरो निशि सुप्ते जने यथा

7.116.68

सरभससारसविदलत्पुष्करमकरन्दसुन्दरे सरसि । कथमिह विहरति काकः स्फुरदवकरनिकरधूसरस्कन्धः ॥ ६८ ॥

sarabhasasārasavidalatpuṣkaramakarandasundare sarasi | kathamih viharati kākaḥ sphuradavakaranikaradhūsaraskandhaḥ || 68 ||

In the beautiful lake filled with lotuses, the crow with a body as bright as the rising sun | How does the crow play here?

सरभससारसविदलत्पुष्करमकरन्दसुन्दरे सरसि | कथमिह विहरति काकः स्फुरदवकरनिकरधूसरस्कन्धः

7.116.69

हा कष्टमिष्टवपुषि स्फुटपुण्डरीककोशे कषाहननयोग्यमुखः पिशाचः । पश्यैष काक उपविश्य कुपल्वलेऽस्मिन् लीलाःकरोति विविधाः सह राजहंसैः ॥ ६९ ॥

hā kaṣṭamiṣṭavapuṣi sphuṭapuṇḍarīkakośe kaṣāhananayogyamukhaḥ piśācaḥ | paśyaiṣa kāka upaviśya kupalvale'smin līlāḥkaroti vividhāḥ saha rājahaṃsaiḥ || 69 ||

Alas, what a pity! A beautiful body, like a blooming lotus, but with a face unfit for laughter | See this crow, sitting on this small leaf, playing various games with the royal swans

हा कष्टमिष्टवपुषि स्फुटपुण्डरीककोशे कषाहननयोग्यमुखः पिशाचः | पश्यैष काक उपविश्य कुपल्वलेऽस्मिन् लीलाःकरोति विविधाः सह राजहंसैः

7.116.70

हे काक कर्कशरव क्रकचैकचिह्न तादृक्स्वशङ्कनमपि क्व नु तेऽद्य यातम् । कस्मादनर्थकमिदं पिकपाकमेकपुत्राशया तदपि ते ह्युपहाससिद्ध्यै ॥ ७० ॥

he kāka karkaśarava krakacaikacihna tādṛkśvaśaṅkanamapi kvā nu te'dya yātam | kasmādanarthakamidaṃ pikapākamekaputrāśayā tadapi te hyupahāsasiddhyai || 70 ||

O crow, where has your harsh voice, which is a sign of your fear, gone today? Why do you make this useless cawing? Even that is for the sake of mocking, due to your desire for a single son.

हे कौआ, तेरी कर्कश आवाज, जो तेरे डर का संकेत है, आज कहाँ चली गई? यह बेकार की काँव-काँव क्यों कर रहा है? यह भी मजाक के लिए है, तेरे एक पुत्र की इच्छा से।

7.116.71

आलोक्य पङ्कजवने सविलासवन्तं काकं कलङ्कसदृशं भृशमारटन्तम् । हा कष्टशब्दशतनष्टविचेष्टितो यो नो रोदिति क्रकचकेन विदार्यतां सः ॥ ७१ ॥

ālokya paṅkajavane savilāsavantaṃ kākaṃ kalaṅkasadṛśaṃ bhṛśamāraṭantam | hā kaṣṭaśabdaśatanāṣṭaviceṣṭito yo no roditi krakacakena vidāryatāṃ saḥ || 71 ||

Seeing the crow in the lotus forest, full of playfulness, resembling a blemish, crying loudly, alas! His actions are destroyed by a hundred painful sounds. He does not cry, let him be torn apart by the harsh sound.

कमल वन में खेल-सा करते हुए कौए को देखकर, जो एक दाग के समान है, जोर से रो रहा है, हाय! उसके कार्य सौ दुःखद आवाजों से नष्ट हो गए हैं। वह नहीं रोता, उसे कर्कश आवाज से चीर डाला जाए।

7.116.72

विशारुशारुमये वकमद्गुघने च पल्वले चपलाः । स्युर्यदि कौशिककाकास्तत्स्यादेषा समन्विता गोष्ठी ॥ ७२ ॥

viśārāruśarārumaye vakamadghughane ca palvale capalāḥ | syuryadi kauśikakākāstatyasyādēṣā samanvitā gōṣṭhī || 72 ||

If the fickle crows and owls were to gather in the dense forest filled with sharp and soft reeds, it would be a lively assembly.

यदि चंचल कौए और उल्लू तीखे और नरम नरकुल से भरे घने जंगल में इकट्ठे हों, तो यह एक सजीव सभा होगी।

7.116.73

कोकिलः काकसंघातैः समसंवरणाकृतिः । गदितैर्व्यक्ततामेति सभायामिव पण्डितः ॥ ७३ ॥

kokilaḥ kākasaṃghātaiḥ samasaṃvaraṇākṛtiḥ | gaditairvyaktatāmeti sabhāyāmiva paṇḍitaḥ || 73 ||

The cuckoo, with the assembly of crows, appears distinct like a scholar in an assembly with his eloquent speech.

कोयल, कौओं के समूह के साथ, एक विद्वान की तरह व्यक्त दिखाई देती है जो अपनी वाक्पटुता से सभा में अलग दिखाई देता है।

7.116.74

मृदुकुसुमाङ्कुरदलनं सोढुमलं कोकिलस्य कुसुमलता । न तु कङ्कगृध्रमद्गुकबककुक्कुटवायसादीनाम् ॥ ७४ ॥

mṛdukusumāṅkuradalanaṃ soḍhumalaṃ kokilasya kusumalatā | na tu kaṅkagṛdhramadgukabakakukkuṭavāyasādīnām || 74 ||

The tender flower buds are suitable for the cuckoo's vine to bear, but not for the heron, vulture, peacock, cock, and crow.

नरम फूलों के कलियों को सहन करना कोयल की बेल के लिए उपयुक्त है, लेकिन बगुले, गिद्ध, मोर, मुर्गे और कौए के लिए नहीं।

7.116.75

श्रोत्रोत्सवं तव कलं कलकण्ठ कोऽत्र नादं श्रृणोति रतिविग्रहसंधिदूतम्काकैरुलूककलहैरिह गुल्मकेषु क्रेंकारघर्घररवैः श्रुतिरागतास्तम् ॥ ७५ ॥

śrotrotsavaṃ tava kalaṃ kalakaṇṭha ko'tra nādaṃ śrṛṇoti rativigrahasaṃdhidūtamkākairulūkakalahairiha gulmakeṣu kreṃkāragharghararavaiḥ śrutirāgatāstam || 75 ||

Your melodious voice, O sweet-throated one, is heard here as the messenger of love's union. The crows and owls quarrel in the bushes with their harsh cries, and the sound reaches here.

हे मधुर-कंठ! तुम्हारी मधुर आवाज यहाँ प्रेम के मिलन की संदेशवाहक के रूप में सुनी जाती है। कौए और उल्लू झाड़ियों में अपनी कर्कश आवाजों से झगड़ते हैं, और यह आवाज यहाँ तक पहुँचती है।

7.116.76

वाचाकोमलया सुकोकिलशिशुः कल्याणकल्पां कथां सर्वावर्जनमार्जवेन कुरुते यावत्पुरो
रागिणाम्तावन्मत्तनयोऽयमित्यविरतं द्रांकारभीमारवैर्ध्वांक्षेणोपवने निपत्य नभसः सर्वे कृता नीरसाः ॥ ७६ ॥

vācākomalayā sukokilaśiśuḥ kalyāṇakalpāṃ kathāṃ sarvāvarjanamārjavena kurute yāvatpuro rāgiṇāmtāvanmattanayo'yamityaviratam drāṃkārabhīmāravairdhvāṃkṣeṇopavane nipatya nabhasaḥ sarve kṛtā nīrasāḥ || 76 ||

With his sweet voice, the young cuckoo tells a beautiful story, purifying everything, until he comes before the passionate ones. Then, falling from the sky with the fierce sound of drums, everyone becomes lifeless.

अपनी मधुर वाणी से, यह छोटा कोयल एक सुंदर कहानी सुनाता है, सब कुछ शुद्ध करता है, जब तक कि वह आसक्तों के सामने नहीं आता। फिर, आकाश से गिरकर, भयंकर ड्रम की आवाज के साथ, सब निर्जीव हो जाते हैं।

7.116.77

किं किं कोकिल कूजसि द्रुतरवं हर्षात्समुल्लासितं ग्रीवाकोटरतः प्रवेशय पुनर्मा भूच्चिरं ते भ्रमःउद्दामैः कुसुमैर्निरन्तरतरं नेदं मधोर्जृम्भितं हेमंतेन कृतास्तुषारनिकरैः शुष्का अमी पादपाः ॥ ७७ ॥

kiṃ kiṃ kokila kūjasi drutaravaṃ harṣātsamullāsitaṃ grīvākoṭarataḥ praveśaya punarmā bhūcciraṃ te bhramaḥuddāmaiḥ kusumairnirantarataraṃ nedaṃ madhorjṛmbhitaṃ hemaṃtena kṛtāstuṣāranikaraiḥ śuṣkā amī pādapāḥ || 77 ||

O cuckoo, why do you sing with such rapid melody, filled with joy? Enter again, do not wander for long. With the abundant flowers, this is not the humming of bees in winter. The trees have become dry with the heaps of frost.

हे कोयल, तुम इतनी तेज़ धुन में क्यों गाते हो, हर्ष से भरे हुए? फिर से आओ, लंबे समय तक भटकना मत। फूलों की भरमार के साथ, यह सर्दी में मधुमक्खियों का गुंजन नहीं है। बर्फ के ढेर से पेड़ सूख गए हैं।

7.116.78

कूजत्कोकिल कोमलं कलरवैर्नित्यं प्रशस्ताकृते केनेदं बत शिक्षितोसि वचनं दुःखप्रदं दुर्भगम्चैत्रे चित्रनवाङ्कुरे विरहिणी वक्ति त्वया यात्मनः कस्यायं मधुरित्यतस्तव तवेत्युक्तं त्वरोच्चैस्तरोः ॥ ७८ ॥

kūjatkokila komalaṃ kalaravairnityaṃ praśastākṛte kenedaṃ bata śikṣitosi vacanaṃ duḥkhapradaṃ durbhagamcaitre citranavāṅkure virahiṇī vakti tvayā yātmanaḥ kasyāyaṃ madhurityatastava tavetyuktaṃ tvaroccaistaroḥ || 78 ||

O cuckoo, singing sweetly with your charming voice, always praised, why have you learned this sorrowful speech, unfortunate one? In the beautiful new sprout, the separated one says, 'Whose sweetness is this? Therefore, it is yours,' loudly from the tree.

हे कोयल, जो अपनी मधुर आवाज से सुंदर रूप से गाता है, हमेशा प्रशंसित, तुमने यह दुःखदायी बात क्यों सीखी, दुर्भाग्यशाली? सुंदर नए अंकुर में, विरहिणी कहती है, 'यह मधुरता किसकी है? इसलिए, यह तुम्हारी है,' पेड़ से ऊँची आवाज में।

7.116.79

मौनस्पन्दविहारवर्णवपुषां साम्येऽपि काकव्रजेऽकाकः कोकिल एष कान्तिरुचिरो दूरात्परिज्ञायतेमध्ये मूर्खजनस्य पण्डित इव स्वाकारभव्यक्रियः सर्वो हि प्रथमानमेति सदृशस्वान्तश्चमत्कारतः ॥ ७९ ॥

maunaspandavihāravarṇavapuṣāṃ sāmye'pi kākavraje'kākaḥ kokila eṣa kāntiruciro dūrātparijñāyatemadhye mūrkhajanasya paṇḍita iva svākārabhavyakriyaḥ sarvo hi prathimānameti sadṛśasvāntaścamatkārataḥ || 79 ||

Even among the silent and colorful crowd of crows, this cuckoo stands out with its beautiful radiance, recognized from afar. Among the foolish, it appears wise with its graceful actions. Everyone admires it for its similar inner beauty.

चुप और रंगीन कौओं के समूह में भी, यह कोयल अपनी सुंदर चमक के साथ अलग दिखाई देता है, दूर से पहचाना जाता है। मूर्खों में, यह अपने सुंदर व्यवहार के साथ बुद्धिमान लगता है। सब इसके समान अंतर्निहित सौंदर्य को सराहते हैं।

7.116.80

भ्रातः कोकिल कूजितैरलमलं नायात्यनर्घ्यो गुणस्तूष्णीमास्व विशीर्णपर्णपटलच्छन्ने क्वचित्कोटरे उद्दामद्रुमकन्दरे कटुरटत्काकावलीसकुलः कालोयं शिशिरस्य संप्रति सखे नायं वसंतोत्सवः ॥ ८० ॥

bhrātaḥ kokila kūjitairalamalaṃ nāyātyanarghyo guṇastūṣṇīmāsva viśīrṇaparṇapaṭalacchanne kvacitkoṭare uddāmadrumakandare kaṭuraṭatkākāvalīsakulaḥ kāloyaṃ śiśirasya saṃprati sakhe nāyaṃ vasanto'tsavaḥ || 80 ||

O brother, the cuckoo's sweet songs are of no avail now; the invaluable virtue of silence is to be observed in some hollow covered with withered leaves. In the deep forest, the harsh cries of the crows are prevalent. O friend, this is the time of winter, not the festival of spring.

हे भ्राता, कोकिल के मधुर गान अब कोई लाभ नहीं देते; सूखे पत्तों से ढके किसी खोह में मौन का अनमोल गुण धारण करना चाहिए। गहरे जंगल में, काकों की कर्कश आवाजें व्याप्त हैं। हे मित्र, यह शीतकाल का समय है, वसंत उत्सव नहीं।

7.116.81

चित्रं मातरमेष कोकिलशिशुः संत्यज्य काकीं गतः सैषैनं तुदतीति यावदहमप्याचिन्तयामि क्षणम् । तावत्सोऽपि तथाशु मातृसदृशं श्लिष्टो रसाद्वर्धितुं यामायाति दिशं स्वभावसुभगः सैवास्य माहात्म्यदा ॥ ८१ ॥

citraṃ mātaramēṣa kokilaśiśuḥ saṃtyajya kākīṃ gataḥ saiṣainaṃ tudatīti yāvadahamapyācintayāmi kṣaṇam | tāvatsopi tathāśu mātṛsadṛśaṃ śliṣṭo rasādvardhitum yāmāyāti diśaṃ svabhāvasubhagaḥ saivāsya māhātmyadā || 81 ||

It is strange, O mother, that this cuckoo chick has left the crow and gone. As soon as I think about it for a moment, she too, just like a mother, quickly embraces him to nourish him with affection. He, being naturally charming, goes in the direction that gives him greatness.

यह आश्चर्य है, हे माता, कि यह कोकिल का बच्चा कौए को छोड़कर चला गया है। जैसे ही मैं इस बात पर एक क्षण के लिए सोचता हूँ, वह भी, माता की तरह, तुरंत उसे अपनी बाहों में भर लेती है ताकि उसे प्यार से पाल सके। वह, जो स्वाभाविक रूप से सुंदर है, उस दिशा में जाता है जो उसे महानता देती है।

Chapter 117

7.117.1

सहचरा ऊचुः पश्याद्रिसानाविव बिम्बितं स्वं पुरःसरो मारपुरःसरो यः कह्लारपद्मोत्पलजालनाललद्विचित्रारवपक्षिवीतम् ॥ १ ॥

sahacarā ūcuḥ paśyādrisānāviva bimbitaṃ svaṃ puraḥsaro mārapuraḥsaro yaḥ kahlārapadmotpalajālanālalaladvicitrāravapakṣivītam || 1 ||

The companions said, 'Behold! The lake in front, adorned with lotus flowers, appears like a mirror reflecting the mountain peaks. It is filled with the sweet sounds of various birds.'
सहचर बोले, 'देखो! यह सामने का तालाब, जिसमें कमल के फूल खिले हुए हैं, पर्वत की चोटियों के समान दिखाई देता है। यह विभिन्न पक्षियों के मधुर स्वरों से भरा हुआ है।'

7.117.2

विकासितोद्दण्डसहस्रपत्रकोशस्थलस्थोद्धृरराजहंसम् पीठद्विरेफद्विजलोकजुष्टं भुवीव गेहं कमलासनस्य ॥ २ ॥

vikāsitoddaṇḍasahasrapatrakośastholasthoddhṛrarājahaṃsam pīṭhadvirephadvijalokajuṣṭaṃ bhuvīva gehaṃ kamalāsanasya || 2 ||

The blooming lotus with its thousand petals spread out, the royal swan standing on it, the abode of the lotus-seated one, adorned with serpents and birds, appears like a house on earth.
खिले हुए कमल के हजार पत्तों के साथ, उस पर खड़ा राजहंस, कमलासन का निवास, जिसमें सर्प और पक्षी विराजमान हैं, यह पृथ्वी पर घर के समान दिखाई देता है।

7.117.3

आकीर्णसीकरकरालदिगन्तराले फुल्लोत्पलाब्जपटलोदररेणुगौरम् आमोदमत्तमधुपद्विजगीतिगीतं यातं वितानकमिवाम्बरगं वहन्तम् ॥ ३ ॥

ākīrṇasīkarakarāladigantarāle phullotpalābjapaṭalodararеṇugauram āmodamattamadhupadvijagītigītaṃ yātaṃ vitānakamivāmbaragaṃ vahantam || 3 ||

In the vast expanse of the sky, filled with the fragrance of blooming lotuses and the melodious songs of intoxicated bees, the scene appears like a canopy carried by the wind.
आकाश के विशाल अंतरिक्ष में, खिले हुए कमल की सुगंध और मदमस्त भौंरों के मधुर गीतों से भरा हुआ, दृश्य एक छतरी के समान दिखाई देता है जो हवा के साथ उड़ता है।

7.117.4

क्वचित्तरत्तारतरङ्गभङ्गं क्वचिद्विषद्भूरिविराविभृङ्गम् क्वचिद्गभीरामलवारिसुप्तं क्वचित्सरोजोज्ज्वलपुष्पगुप्तम् ॥ ४ ॥

kvacittarattārataṅgabhaṅgaṃ kvacidviṣadbhūrivirāvibhṛṅgam kvacidgabhīrāmalavārisuptaṃ kvacitsarojojjvalapuṣpaguptam || 4 ||

Sometimes the waves break with a loud sound, sometimes the bees hum loudly, sometimes the clear water is deep and still, and sometimes the lotus flowers bloom brightly.
कभी लहरें जोर से टूटती हैं, कभी भौंरे जोर से गुंजारते हैं, कभी साफ पानी गहरा और शांत होता है, और कभी कमल के फूल चमकदार रूप से खिलते हैं।

7.117.5

कणाणुमुक्ताजलतापटालं तीरेषु सिंहे सुलतासुटालम् तरङ्गनिर्धूतशिलोग्रकच्छं महीतलाकाशमनन्तकच्छम् ॥ ५ ॥

kaṇāṇumuktājalatāpaṭālaṃ tīreṣu siṃhe sulatāsuṭālam taranganirdhūtśilograkaccham mahītalākāśamanantakaccham || 5 ||

The lake with its clear water and pearl-like drops, with beautiful creepers on its banks, and with waves that wash away the harsh rocks, appears like an endless sky on earth.

तालाब का साफ पानी और मोती के समान बूंदें, किनारों पर सुंदर लताएं, और लहरें जो कठोर पत्थरों को धो देती हैं, यह पृथ्वी पर अंतहीन आकाश के समान दिखाई देता है।

7.117.6

तडित्प्रकाशोदरमस्यमेघनुन्नालजातोत्थरजःप्रभाभिः । पृषद्भरध्वान्तमयैकदेशं संध्याम्बराभोगमिवाप्रकाशम् ॥ ६ ॥

taḍitprakāśodaramasyameghanunnālajātottharajaḥprabhābhiḥ | pṛṣadbharadhvāntamayaikadeśaṃ saṃdhyāmbarābhogamivāprakāśam || 6 ||

The lightning illuminates the dark clouds, and the newborn lotus blossoms with its radiant petals. The sky appears like a dark monsoon cloud, with one part illuminated by the glow of the setting sun.

बिजली की चमक से काले बादलों का उदर प्रकाशित होता है, और नवजात कमल के पंखुड़ियों से प्रकाशित होता है। आकाश एक काले वर्षा बादल की तरह दिखता है, जिसका एक हिस्सा सूर्यास्त की चमक से प्रकाशित होता है।

7.117.7

वातावकीर्णशरदम्बुदखण्डखण्डं व्योमेव केवलसमीरणमावृताङ्गम् । हसैर्लसद्विसलताकवलालसांसैः कालेन संचयकृतैरिव चन्द्रबिम्बैः ॥ ७ ॥

vātāvakīrṇaśaradambudakhaṇḍakhaṇḍaṃ vyomeva kevalasamīraṇamāvṛtāṅgam | hasairlasadvusalatākavalālasāṃsaiḥ kālena saṃcayakṛtairiva candrabimbaaiḥ || 7 ||

The autumn clouds, scattered by the wind, cover the sky like a veil of pure air. The laughter of the swaying vines seems to be adorned with moon-like orbs created by the passage of time.

पवन से बिखरे हुए शरद ऋतु के बादल आकाश को शुद्ध वायु की पर्दा की तरह ढंकते हैं। लहराती हुई लताओं की हँसी समय के संचय से बने चंद्रमा-से गोलों से सजी हुई लगती है।

7.117.8

आमोदमन्दमकरन्दकरालवातव्याधूतपङ्कपुटपाटनपाटवेन । उद्यन्महापटपटा वयतीव लेखा क्षुभ्यत्खगाश्रितलतोज्झितपुष्पवर्षम् ॥ ८ ॥

āmodamandamakarandakarālavātavyādhūtapaṅkapuṭapāṭanapāṭavena | udyanmahāpaṭapaṭā vayatīva lekhā kṣubhyatkhagāśritalatojjhitapuṣpavarṣam || 8 ||

The gentle breeze, carrying the fragrance of honey, skillfully scatters the pollen from the lotus buds. The rising sun's rays seem to write a line in the sky, disturbing the flowers that fall from the vines inhabited by birds.

मधु की सुगंध लेकर मंद हवा कुशलतापूर्वक कमल के कली से पराग बिखेरती है। उदय होते सूर्य की किरणें आकाश में एक रेखा खींचती प्रतीत होती हैं, जो पक्षियों द्वारा आश्रित लताओं से गिरने वाले फूलों को विचलित करती हैं।

7.117.9

वेल्लन्महाकमलपल्लवतालवृन्तसंवीजितं वलितचामरचारुफेनम्। राजायमानमलिकोकिलगीतगीतं
सहृत्तपङ्कजलतालिताङ्गनौघम्॥ ९॥

vellanmahākamalapallavatālavṛntasaṃvījitaṃ valitacāmaracāruphēnam | rājāyamānamalikokilagītagītaṃ sahṛttapaṅkajalatālalitāṅganaugham || 9 ||

The swaying large lotus petals, adorned with beautiful foam, are shaken by the wind. The sound of the cuckoo's song resonates, and the group of joyful women, adorned with lotus vines, are delighted.

हवा से हिलते हुए बड़े कमल के पत्ते, सुंदर फेन से सजे हुए, काँप उठते हैं। कोयल के गीत की ध्वनि गूँजती है, और कमल की लताओं से सजी हुई आनंदित स्त्रियों का समूह प्रसन्न होता है।

7.117.10

भृङ्गाग्रभाजनमनोहरहारिगीतं राजीवरेणुरणकीर्णपिशङ्गतोयम्।
डिण्डीरपिण्डपरिपाण्डुरपुण्डरीकखण्डोपमण्डिततटोपवनावतंसम्॥ १०॥

*bhṛṅgāgrabhājanamanoharahārigītaṃ rājīvareṇuraṇakīrṇapiśaṅgatoyam |
ḍiṇḍīrapiṇḍaparipāṇḍurapuṇḍarīkakhaṇḍopamaṇḍitatato'pavanāvataṃsam || 10 ||*

The bees hum a charming melody, and the lotus pond is filled with pollen-covered reddish water. The shore is adorned with white lotus petals, resembling the moon's crescent.

भौंरे एक मनोहर गीत गुनगुनाते हैं, और कमल का तालाब पराग-भरे लाल पानी से भरा हुआ है। किनारा चाँद की चाँदनी जैसे सफेद कमल के पंखुड़ियों से सजा हुआ है।

7.117.11

विविक्तहृदयाम्भोजं हृदयाह्लादनं परम्। रसवत्स्वादु भातीदं सरः सत्संगमोपमम्॥ ११॥

viviktahṛdayāmbhojaṃ hṛdayāhlādanaṃ param | rasavatsvādu bhātīdaṃ saraḥ satsaṅgamopamam || 11 ||

The lotus of the heart, which is pure and gives supreme joy to the heart, appears delightful like the company of the good.

हृदय का कमल, जो शुद्ध है और हृदय को परम आनंद देता है, सत्संग की तरह सुंदर दिखाई देता है।

7.117.12

बिम्बितेन मरुव्योम्ना भातीदं सौम्य निर्मलम्। शास्त्रार्थपरिणामेन महतामिव मानसम्॥ १२॥

bimbitena maruvyomnā bhātīdaṃ saumya nirmalam | śāstrārthapariṇāmena mahatāmiva mānasam || 12 ||

Reflected in the desert sky, this appears gentle and pure, like the mind of the great ones transformed by the meaning of the scriptures.

मरुस्थल के आकाश में प्रतिबिंबित होकर, यह कोमल और शुद्ध दिखाई देता है, जैसे शास्त्रों के अर्थ से परिवर्तित महान लोगों का मन।

7.117.13

किंचिल्लक्ष्यमपश्यामं पृषत्परुषमारुतम्। हिमाभ्रमिव भातीदं सरः सरससारसम्॥ १३॥

kiñcillakṣyamapaśyāmaṃ pṛṣatparuṣamārutam | himābhramiva bhātīdaṃ saraḥ sarasasārasam || 13 ||

I saw a small target, a rough and harsh wind, appearing like a cloud of snow, the lake is delightful like a lake.

मैंने एक छोटा लक्ष्य देखा, एक कठोर और कड़वी हवा, जो बर्फ के बादल की तरह दिखाई देती है, तालाब एक तालाब की तरह सुंदर है।

7.117.14

यथेदं ब्रह्मणो दृश्यमविकारादि नेतरत् । यथाम्भसि तरङ्गादि राजन्पृथगिव स्थितम् ॥ १४ ॥

yathedaṃ brahmaṇo dṛśyamavikārādi netarat | yathāmbhasi taraṅgādi rājanpṛthagiva sthitam || 14 ||

Just as this is seen as the unchanging Brahman, not otherwise, so the waves, etc., in the water appear to be separate, O King.

जैसे यह अविकारी ब्रह्म के रूप में देखा जाता है, अन्यथा नहीं, ऐसे ही पानी में लहरें आदि अलग-अलग दिखाई देती हैं, हे राजन्।

7.117.16

कूपवापीसरोब्धीनां दृश्यते यादृगन्तरम् । नारीपुरुषतोयानां विज्ञेयं तादृगन्तरम् ॥ १६ ॥

kūpavāpīsarobdhīnāṃ dṛśyate yādṛgantaram | nārīpuruṣatoyānāṃ vijñeyaṃ tādṛgantaram || 16 ||

Just as there is a difference seen among wells, ponds, and large bodies of water, so too there is a difference to be known among women, men, and waters.

जैसे कुओं, तालाबों और बड़े जलाशयों में अंतर दिखाई देता है, वैसे ही स्त्रियों, पुरुषों और जल में अंतर जाना जाना चाहिए।

7.117.17

जन्तोरिवास्य मनसो जलजातिबन्धजीर्णस्य जर्जरदशालहरीभ्रमेण । आवर्तवृत्तिवलितान्यतिसंततानि को नाम संकलयितुं कमलानि शक्तः ॥ १७ ॥

jantorivāsya manaso jalajātibandhajīrṇasya jarjaradaśālaharībhraameṇa| āvartavṛttivalitānyatisantatāni ko nāma saṅkalayituṃ kamalāni śaktaḥ || 17 ||

Just as the mind of a decrepit and worn-out creature is confused by the whirling of the lotus-like senses, who has the ability to count the continuous cycles of the lotuses?

जैसे एक जीर्ण-शीर्ण जन्तु के मन को कमल की तरह इन्द्रियों के भ्रम से भ्रमित किया जाता है, कौन कमलों के निरन्तर चक्रों को गिनने की शक्ति रखता है?

7.117.18

चित्रं विजृम्भितमहो जडसंगमस्य पद्मोपि यन्निजगुणानगुणानिवैषः । अन्तः प्रगोपयति कण्ठतले निवेश्य सर्वस्य दर्शयति दुर्भगकण्टकौघम् ॥ १८ ॥

citraṃ vijṛmbhitamaho jaḍasaṅgamasya padmopi yannijaguṇānaguṇāniva eṣaḥ| antaḥ pragopayati kaṇṭhatala niveśya sarvasya darśayati durbhagakaṇṭakaugham || 18 ||

It is amazing that even the lotus, which is inert in association, hides its own qualities as if they were faults, concealing them within its throat, and reveals the thorns of misfortune to everyone.

यह आश्चर्य की बात है कि जड़ संगम में भी कमल, जो अपने गुणों को दोषों की तरह छिपाता है, उन्हें अपने कंठ में छिपा लेता है, और सबको दुर्भाग्य के कांटों को दिखाता है।

7.117.19

सच्छिद्रैरदृढैः सूक्ष्मैर्गोपितैर्जाड्यसंयुतैः । अनल्पैरपि निःसारैः पद्मस्येव गुणैरलम् ॥ १९ ॥

sacchidrairadṛḍhaiḥ sūkṣmairgopitairjāḍyasaṃyutaiḥ| analpairapi niḥsāraiḥ padmasyeva guṇairalam || 19 ||

With subtle, hidden, and insignificant qualities, even the lotus, which is inert, has enough virtues.

सूक्ष्म, छिपे हुए, और अप्रधान गुणों के साथ, जड़ कमल भी पर्याप्त गुणों से भरा हुआ है।

7.117.20

महतां कुलपद्मानां गुणसौन्दर्यशालिनाम्। प्रभावं नास्ति संख्यातुं वासुकेरपि शक्तता ॥ २० ॥

mahatāṃ kulapadmānāṃ guṇasaundaryaśālinām| prabhāvaṃ nāsti saṃkhyātuṃ vāsukerapi śaktatā || 20 ||

There is no limit to the influence of the great lotuses, which are endowed with beautiful qualities. Even Vāsuki cannot count their power.

महान कमलों की, जो सुंदर गुणों से भरे हुए हैं, प्रभाव की कोई सीमा नहीं है। वासुकि भी उनकी शक्ति को गिन नहीं सकता।

7.117.21

हरिवक्षोगता लक्ष्मीरपि शोभार्थमेव यत्। बिभर्ति कमलं हस्ते कान्याशंसाधिका भवेत् ॥ २१ ॥

harivakṣogatā lakṣmīrapi śobhārthameva yat| bibharti kamalaṃ haste kānyāśaṃsādhikā bhavet || 21 ||

Even Lakshmi, who resides in the chest of Hari, holds a lotus in her hand only for the sake of beauty. What greater hope can there be for a maiden?

हरि के वक्ष में रहने वाली लक्ष्मी भी सिर्फ सुंदरता के लिए ही हाथ में कमल धारण करती है। किसी कन्या के लिए इससे बढ़कर आशा क्या हो सकती है?

7.117.22

सितासिताभ्यां रूपाभ्यां कमलोत्पलखण्डयोः। वैसादृश्यं भवेत्किंतु समा जडजडैतयोः ॥ २२ ॥

sitāsitābhyāṃ rūpābhyāṃ kamalotpalakhaṇḍayoḥ | vaisādṛśyaṃ bhavetkiṃtu samā jaḍajaḍaitayoḥ || 22 ||

There is no difference between the white and black forms of the lotus and the fragment of the lotus, but there is a similarity between the inanimate and the inanimate.

सितासिताभ्यां रूपाभ्यां कमल और उत्पल के खण्डों में कोई भेद नहीं है, लेकिन जड़ और जड़ में समानता है।

7.117.23

साम्यं न फुल्लविपिनेन सरःसु याति व्योम्ना न तारकयुतेन न चेन्दुवृन्दैः। नृत्यद्वधूविहसिताननशोभयैति फुल्लस्य पङ्कजवनस्य नवोदिता श्रीः ॥ २३ ॥

sāmyaṃ na phullavipinena saraḥsu yāti vyomnā na tārakayutena na cenduvṛndaiḥ |
nṛtyadvadhūvihasitānanaśobhayaiti phullasya paṅkajavanasya navoditā śrīḥ || 23 ||

The beauty of the newly blossomed lotus pond is not comparable to the forest full of blooming flowers, the sky full of stars, or the moonlit nights. It is enhanced by the laughter of dancing brides.

नवोदित कमल के तालाब की शोभा फूलों से भरे वन, तारों से भरे आकाश या चांदनी रातों से तुलनीय नहीं है। यह नृत्य करती वधुओं के हंसी से और भी बढ़ जाती है।

7.117.24

येषां पुष्पलतास्वादैरनन्यमनसां गतम्। भृङ्गाणामायुरायामि त एव सुभगोत्तमाः ॥ २४ ॥

yeṣāṃ puṣpalatāsvādairananyamanasāṃ gatam | bhṛṅgāṇāmāyurāyāmi ta eva subhagottamāḥ || 24 ||

Those bees whose minds are solely focused on the enjoyment of flowers, their lifespan is extended, and they are the most fortunate.

जिन भौंरों के मन केवल फूलों के स्वाद में लगे हुए हैं, उनकी आयु बढ़ जाती है, और वे सबसे भाग्यशाली होते हैं।

7.117.25

चूतचारुचमत्कारं चञ्चरीकाश्चरन्ति ये। त एव सचमत्कारा इतरे जातिपूरणम्॥ २५॥

cūtacārucamatkāraṃ cañcarīkāścaranti ye | ta eva sacamatkārā itare jātipūraṇam || 25 ||

Those who marvel at the beautiful mango blossoms are truly amazed. Others are merely fulfilling their roles.

जो सुंदर आम के फूलों का चमत्कार देखते हैं, वे ही सचमुच आश्चर्यचकित होते हैं। बाकी लोग तो बस अपनी भूमिका निभा रहे होते हैं।

7.117.26

मत्ता मधुमदामोदैः पुष्करेषु रणन्ति ये। तुष्टानामितरस्वादैर्भ्रमराणां हसन्ति ते॥ २६॥

mattā madhumadāmodaiḥ puṣkareṣu raṇanti ye | tuṣṭānāmitarasvādairbhramarāṇāṃ hasanti te || 26 ||

Those who are intoxicated with the sweetness of honey fight in the lotus ponds, and they laugh with the satisfaction of other tastes of the bees.

जो मधु की मिठास से मतवाले होते हैं, वे कमल के तालाबों में लड़ते हैं, और भौंरों के अन्य स्वादों से संतुष्ट होकर हंसते हैं।

7.117.27

येनोषितं विरुतमुल्लसितं प्रसुप्तं पद्मोदरेषु शशिकोटरकोमलेषु। भृङ्गः स एष शिशिरे विरसेषु भावं कष्टं करिष्यति कथं तरुपुष्पकेषु॥ २७॥

yenouṣitaṃ virutamullasitaṃ prasuptaṃ padmodareṣu śaśikoṭarakomaleṣu | bhṛṅgaḥ sa eṣa śiśire viraseṣu bhāvaṃ kaṣṭaṃ kariṣyati kathaṃ tarupuṣpakeṣu || 27 ||

The bee, which has enjoyed the blooming, opening, and sleeping lotuses in the soft moonlight, how will it endure the harsh condition in the tasteless flowers of the trees in the cold season?

जो भौंरा चंद्रमा की मधुर चाँदनी में खिले, उठे और सोए कमलों का आनंद ले चुका है, वह ठंडे मौसम में बेस्वाद पेड़ों के फूलों में कैसे कठिन स्थिति सहेगा?

7.117.28

अफुल्लमल्लिकोद्दाममुकुलोपरि षट्पदः। दृश्यते कालरुद्रेण शूले प्रोत इवान्धकः॥ २८॥

aphullamallikodāmamukulopari ṣaṭpadaḥ | dṛśyate kālarudreṇa śūle prota ivāndhakaḥ || 28 ||

The bee is seen on the unopened bud of the jasmine, as if pierced by the trident of time, like a blind man.

भौंरा खिले हुए चमेली के फूल पर दिखाई देता है, जैसे समय के त्रिशूल से छेदा गया हो, एक अंधे आदमी की तरह।

7.117.29

आस्वादयन्विविधपुष्पमधूनि भृङ्ग नित्यं भ्रमन्सकलशैललतागृहेषु। नाद्यापि तुष्यसि किमङ्ग दुराशयोऽसि मन्ये न सारमुपगच्छसि वा वनेभ्यः॥ २९॥

āsvādayanvividhapuṣpamadhūni bhṛṅga nityaṃ bhramansakalaśailalatāgṛheṣu | nādyāpi tuṣyasi kimaṅga durāśayo'si manye na sāramupagacchasi vā vanebhyaḥ || 29 ||

O bee, always tasting various flower nectars and wandering in the forest abodes, why are you not satisfied even now? Are you greedy, or do you not get the essence of the forests?

हे भौंरा, जो हमेशा विभिन्न फूलों के मधु का स्वाद लेता है और वन के घरों में भटकता रहता है, तुम अभी तक संतुष्ट क्यों नहीं हो? क्या तुम लालची हो, या तुम वनों की सार को नहीं पाते?

7.117.30

कमलकुलकवलकोविद गच्छ सरो मधुप मा रूढम्। बदरदरीषु विदीर्णं देहं कुरु कण्टकक्रकचैः ॥ ३० ॥

kamalakulakavalakovida gaccha saro madhupa mā rūḍham | badaradarīṣu vidīrṇaṃ dehaṃ kuru kaṇṭakakrakacaiḥ || 30 ||

O bee, expert in lotus clusters, go to the lake, do not stay. Make your body torn in the jujube trees with thorns.

हे भौंरा, जो कमल के झुंडों का ज्ञाता है, सरोवर की ओर जाओ, मत रुको। बेर के पेड़ों में काँटों से अपने शरीर को चीर डालो।

7.117.31

अतसीकुसुमे कुवलयदलवलये विकसिते च तापिच्छे। परभागमेहि मधुना तासु विसदृशीव पण्डितः पुरुषः ॥ ३१ ॥

atasīkusume kuvalayadalavalaye vikasite ca tāpicche | parabhāgamehi madhunā tāsu visadṛśīva paṇḍitaḥ puruṣaḥ || 31 ||

In the blooming blue lotus and the open white lotus petals, go to the other side with honey, like a wise man.

नील कमल और खिले हुए सफेद कमल के पंखुड़ियों में, मधु के साथ दूसरी ओर जाओ, जैसे एक विद्वान व्यक्ति।

7.117.32

पश्यैषा नाभिनलिनीकेसरैः पालिता श्रिया। हंसमालामलावल्ली सामगायनकूजिता ॥ ३२ ॥

paśyaiṣā nābhinalinīkesaraiḥ pālitā śriyā | haṃsamālāmalāvallī sāmagāyanakūjitā || 32 ||

Behold this lotus-laden lake, nourished by the wealth of lotus filaments, adorned with a garland of swans, and resonating with the melodious hum of bees.

इस कमल भरी झील को देखो, जो कमल की कली से पोषित है, हंसों की माला से सजी है, और भौंरों की मधुर गुंजार से गूँज रही है।

7.117.33

दोलाकमलनीडस्थां दृष्ट्वा खे प्रतिबिम्बिताम्। हंसो हंसीमनुसरन्मण्डले नेह चेतति ॥ ३३ ॥

dolākamalanīḍasthāṃ dṛṣṭvā khe pratibimbitām | haṃso haṃsīmanusaranmaṇḍale neha cetati || 33 ||

Seeing the reflection of the lotus in the sky, the swan, following the female swan, does not think of the circle here.

आकाश में कमल की प्रतिबिम्ब देखकर, हंस जो मादा हंस का अनुसरण कर रहा है, यहाँ चक्र के बारे में नहीं सोचता।

7.117.34

मा भूत्कस्यचिदेवैषा राजन्व्यसनिता भृशम्। पश्यैतां बिम्बितां हंसो हंसीमनुसरन्मृतः ॥ ३४ ॥

mā bhūtkasyacidevaiṣā rājanvyasanitā bhṛśam | paśyaitāṃ bimbitāṃ haṃso haṃsīmanusaranmṛtaḥ || 34 ||

May this not be the cause of great sorrow for anyone, O king. See this reflection, the swan following the female swan is dead.

हे राजा, यह किसी के लिए बहुत दुःख का कारण न बने। इस प्रतिबिम्ब को देखो, मादा हंस का अनुसरण करने वाला हंस मर गया है।

7.117.35

हेलया राजहंसेन यत्कृतं कलकूजितम्। न तद्वर्षशतेनापि जानात्याशिक्षितुं बकः ॥ ३५ ॥

helayā rājahaṃsena yatkṛtaṃ kalakūjitam | na tadvṛṣaśatenāpi jānātyāśikṣituṃ bakaḥ || 35 ||

The sweet sound made by the royal swan cannot be taught to the heron even in a hundred years.

राजहंस द्वारा किया गया मधुर शब्द बगुले को सौ वर्षों में भी नहीं सिखाया जा सकता।

7.117.36

समानेष्वाकराकारजातिचेष्टाशनादिषु । हंसस्य राजहंसस्य दूरमत्यन्तमन्तरम् ॥ ३६ ॥

samāneṣvākarākārajāticeṣṭāśanādiṣu | haṃsasya rājahaṃsasya dūramatyantamantaram || 36 ||

Even though the swan and the royal swan have similar forms, behaviors, and habits, there is a vast difference between them.

चाहे हंस और राजहंस के आकार, जाति, चेष्टा और आदतें समान हों, फिर भी उनके बीच एक बहुत बड़ा अंतर है।

7.117.37

शुक्लपक्षस्थितो व्योम्नि कुमुदाकरभासकः । आह्लादयति चेतांसि हंसश्चन्द्र इवोत्थितः ॥ ३७ ॥

śuklapakṣasthito vyomni kumudākarabhāsakaḥ | āhlādayati cetāṃsi haṃsaścandra ivotthitaḥ || 37 ||

In the bright fortnight, the moon, shining like a lotus, delights the minds of people, just as a swan rises.

शुक्ल पक्ष में स्थित आकाश में चन्द्रमा, कमल की तरह चमकता है और लोगों के मन को आह्लादित करता है, जैसे हंस उठता है।

7.117.38

उन्नालनलिनीनालकदलीस्तम्भसंकुले । वने विहरतां लक्ष्मीं हंसानामेति कः खगः ॥ ३८ ॥

unnālanalinīnālakadalīstambhasaṅkule | vane viharatāṃ lakṣmīṃ haṃsānāmeti kaḥ khagaḥ || 38 ||

In the forest filled with blooming lotuses and their stalks, which bird can match the grace of the swans as they play?

कमलों और उनकी डंठलों से भरे वन में, कौन सा पक्षी हंसों की खेल की शोभा के समान हो सकता है?

7.117.39

तरङ्गवलया लोलसीकरोत्करहारिणी । कुमुदोत्पलकह्लारपुष्पसंभारसुन्दरी ॥ ३९ ॥

taraṅgavalayā lolasīkarotkarahāriṇī | kumudotpalakahlārapuṣpasambhārasundarī || 39 ||

Adorned with waves like garlands, with swaying water drops as ornaments, beautiful with an abundance of lotus, lily, and kahlara flowers.

तरंगों से अलंकृत जैसे मालाएँ, लहराते जल की बूँदों से आभूषित, कमल, कुमुदिनी और कह्लार फूलों की बहुतायत से सुंदर।

7.117.40

भृङ्गलोलालकलता रणत्सारसनूपुरा । वर्तुलावर्तनाभीका चलद्वीचिविलोचना ॥ ४० ॥

bhṛṅgalolālakalatā raṇatsārasanūpurā | vartulāvartanābhīkā caladvīcivilocanā || 40 ||

With swaying bee-laden creepers, resounding with the anklets of cranes, having circular whirling movements, with flickering waving eyes.

लहराती भौंरों से भरी लताओं के साथ, सारस पक्षियों के पैरों की चूड़ियों की ध्वनि से गूँजता, गोलाकार घूमने वाली गतिविधियों के साथ, फड़कती लहराती आँखों वाला।

7.117.41

प्रतीक्षमाणा दयितं रसपूरकरं धरम् । नारीव सरसी चारुहंसकाभ्यां विराजते ॥ ४१ ॥

pratīkṣamāṇā dayitaṃ rasapūrakaraṃ dharam | nārīva sarasī cāruhaṃsakābhyāṃ virājate || 41 ||

Like a woman waiting for her beloved, the beautiful lake shines with a pair of charming swans, full of delight.

जैसे एक स्त्री अपने प्रियतम की प्रतीक्षा कर रही हो, वैसे ही सुंदर तालाब एक जोड़ी मनमोहक हंसों के साथ चमक रहा है, जो आनंद से भरा हुआ है।

7.117.42

हे हंस मद्गुबककाकशरारुसारे मा त्वं सरस्यविरतं कुरु वासमेकः । आपद्यपीह समशीलवयोवचोभिः श्रेयःफला भवति संगतिरात्मवर्गैः ॥ ४२ ॥

he haṃsa madgubakakākaśarārusāre mā tvaṃ sarasyaviratam kuru vāsamekaḥ | āpadyapīha samaśīlavayovacobhiḥ śreyaphalā bhavati saṃgatirātmavargaiḥ || 42 ||

O swan, do not reside alone in the lake, even in times of distress, the company of like-minded individuals brings beneficial results.

हे हंस, सरोवर में अकेले न रहो, विपत्ति में भी समान स्वभाव वाले लोगों का साथ ही कल्याणकारी फल देता है।

7.117.43

पादाक्रान्तमहेभमस्तकतटः पद्माकरैकालयः कह्लारोत्पलकुन्दचम्पकलतासंभोगसौभाग्यवान् । भृङ्गोऽप्येष विधेर्वशेन शिशिरे लोष्टं तृणं स्वादयन् शीते शुष्कबकत्यहो नु विपदा दैन्ये मनो दीयते ॥ ४३ ॥

pādākrāntamahēbhamastakataṭaḥ padmākarēkālayaḥ kahlārōtpalakundacampakalatāsaṃbhōgasau Bhāgyavān | bhṛṅgō'pyēṣa vidhērvaśēna śiśirē lōṣṭaṃ tṛṇaṃ svādayan śītē śuṣkabakatyahō nu vipadā dainyē manō dīyatē || 43 ||

Even the bee, by the will of fate, enjoys the nectar of the lotus in the cold season, and in the heat, it feeds on dry grass. Oh, how the mind is afflicted by misfortune in poverty.

यह भौंरा भी, भाग्य के वश में, ठंडे मौसम में कमल के नेक्टर का आनंद लेता है, और गर्मी में सूखी घास खाता है। ओह, गरीबी में विपत्ति से मन कितना पीड़ित होता है।

7.117.44

पुत्रस्येह दलोदरे द्युति तरत्तारं चिरं संस्मृतं हंसस्यांसविनुन्ननालगहने संचारिणा भो मया । शुक्लासारमिवाब्जिनी विकिरति स्वं वारिबिन्दूत्करं मध्याह्ने शिशिरं विकासि सहसा मूर्ध्नि स्फुटं दृश्यताम् ॥ ४४ ॥

putrasyēha dalōdarē dyuti tarattāraṃ ciraṃ saṃsmṛtaṃ haṃsasyāṃsavinunnanālagahane saṃcāriṇā bhō mayā | śuklāsāramivābjinī vikirati svaṃ vāribindūtkaraṃ madhyāhnē śiśiraṃ vikāsi sahasā mūrghni sphuṭaṃ dṛśyatām || 44 ||

Here, the radiance of the lotus petals, remembered for a long time, is seen clearly in the dense stalks of the swan. Like a white lotus, it scatters its water droplets and suddenly blooms beautifully in the midday cold.

यहाँ, कमल के पत्तों की चमक, जिसे लंबे समय तक याद किया जाता है, हंस के घने डंठलों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। एक सफेद कमल की तरह, यह अपने जल के बूँदों को बिखेरता है और मध्याह्न के ठंडे में अचानक सुंदर रूप से खिलता है।

7.117.45

व्योम्नीन्दोरिवसौम्यवारिणिचिरं निःशब्दकं सर्पतो हंसस्यांसहताब्जनालवलनानिष्कम्पटङ्कक्षतैः । गङ्गावारिवदत्र पुष्करपुटाद्ब्राह्म्यादिवास्योपरि भ्रष्टा ये जलबिन्दवो जलचरा हृष्टाः पिबन्त्याशु तान् ॥ ४५ ॥

vyomnīndorivasau myavāriṇiciraṃ niḥśabdakaṃ sarpatō haṃsasyāṃsahatābjanālavalanāniṣkam paṭaṅkakṣataiḥ | gaṅgāvārivadatra puṣkaraputādbrāhmādivāsyopari bhrṣṭā yē jalabindavō jalacarā hṛṣṭāḥ pibantyāśu tān || 45 ||

The swan, moving silently like the gentle rain from the clouds, shakes the lotus stalks without disturbing the bees. The water droplets that fall from the lotus are quickly and joyfully drunk by the aquatic creatures, just like the Ganges water.

हंस, बादलों से बरसते हुए मृदु वर्षा की तरह चुपचाप चलता है, कमल के डंठलों को हिलाता है बिना भौंरों को परेशान किये। कमल से गिरने वाले जल के बूँदों को जलचर प्राणी तुरंत और खुशी से पी लेते हैं, जैसे गंगा जल।

Chapter 118

7.118.1

सहचरसहचर्यः क्रमेणोचुः । निर्गुणस्य बकस्यास्य गुण एकोऽस्ति दृश्यताम् । यत्प्रावृषं स्मारयति प्रावृट् प्रावृडिति ब्रुवन् ॥ १ ॥

sahacarasahacaryaḥ krameṇocuḥ | nirguṇasya bakasyāsya guṇa eko'sti dṛśyatām | yatprāvṛṣaṃ smārayati prāvṛṭ prāvṛḍiti bruvan || 1 ||

The companions gradually said: See the one quality of this worthless crane, that he reminds us of the rainy season by saying 'Pravrit, Pravrit.'

सहचर धीरे-धीरे कहने लगे: इस निर्गुण बगुले का एक गुण देखो, जो प्रावृट (वर्षा ऋतु) की याद दिलाता है 'प्रावृट, प्रावृट' कहकर।

7.118.2

बक हंस इवाभासि सरःस्थो मद्गुसौहृदम् । नृशंसत्वं च वाणीं च त्यक्त्वा हंसो भव स्फुटम् ॥ २ ॥

baka haṃsa ivābhāsi sarasṭho madgusauhṛdam | nṛśaṃsatvaṃ ca vāṇīṃ ca tyaktvā haṃso bhava sphuṭam || 2 ||

O crane, you appear like a swan in the lake, enjoying the friendship of the intoxicated cows. Abandon your cruelty and harsh speech, and truly become a swan.

हे बगुला, तुम झील में हंस की तरह दिखते हो, मतवाली गायों के साथ मित्रता का आनंद लेते हुए। अपनी क्रूरता और कठोर वाणी को छोड़कर, सचमुच हंस बन जाओ।

7.118.3

गम्भीरं वारिगर्भं प्रसृतजलचरं ये प्रविश्य प्रविश्य प्राङ्गतत्स्यान्प्रोतचञ्चवश्चतुरतर परं जग्धवन्तो विदग्धाः ते केनाप्यद्य दिष्ट्या मृततिमिगमिताः कालयुक्ते महिम्ना नाक्रामन्ति क्रमस्थाः सुहरमपि पुरः पङ्गवो मद्गवोऽमी ॥ ३ ॥

gambhīraṃ vārigarbhaṃ prasṛtajalacaraṃ ye praviśya praviśya prāṅmatatsyānprotacañcavaścaturatara paraṃ jagdhavanto vidagdhāḥ te kenāpyadya diṣṭyā mṛtatimigamitāḥ kālayukte mahimnā nākrāmanti kramasthāḥ suharamapi puraḥ paṅgavo madgavo'mī || 3 ||

Those who, entering the deep water body, full of moving aquatic creatures, cleverly catch the swiftly moving fish with great skill, do not come forward even a little bit now, having met their end due to fate, with the power of time. We are the lame cows.

जो गहरे जलाशय में प्रवेश करके, जिसमें चलते-फिरते जलचर हैं, चतुराई से तेजी से तैरती मछलियों को पकड़ते हैं, वे अब किसी भी तरह से थोड़ा भी आगे नहीं आते, क्योंकि उन्होंने अपने अंत को प्राप्त कर लिया है, समय की शक्ति से। हम लंगड़ी गायें हैं।

7.118.4

एवं विहन्यते लोकः स्वार्थेनेति प्रदर्शयन् । मद्गुर्मद्गुरुतां यात इत्येवं स्तौति दुर्जनः ॥ ४ ॥

evaṃ vihanyate lokaḥ svārtheneiti pradarśayan | madgurmadgurutāṃ yāta ityevaṃ stauti durjanaḥ || 4 ||

Thus, the world is destroyed by self-interest, as demonstrated. The wicked praise, saying, 'May you attain the status of our teacher.'

इस प्रकार, स्वार्थ से संसार नष्ट होता है, जैसा कि दिखाया गया है। दुष्ट लोग कहते हैं, 'आप हमारे गुरु की स्थिति प्राप्त करें।'

7.118.5

उत्कन्धरो विततनिर्मलचारुपक्षो हंसोऽयमत्र नभसीति जनैः प्रतीतः । गृह्णाति पल्वलजलाच्छफरीं यदासौ ज्ञातस्तदा खलु बकोऽयमितीह लोकैः ॥ ५ ॥

utkandharo vitatanirmalacārupakṣo haṃso'yamatra nabhasīti janaiḥ pratītaḥ | gṛhṇāti palvalajalācchapharīṃ yadāsau jñātastadā khalu bako'yamitīha lokaiḥ || 5 ||

This swan with a raised neck and beautiful, spread-out, pure wings is recognized by people as a sky-dweller. When it catches a fish from the pond water, it is then known to be a heron by the people here.

यह हंस उठी हुई गर्दन और सुंदर, फैले हुए, शुद्ध पंखों वाला लोगों द्वारा आकाश में रहने वाला माना जाता है। जब यह तालाब के पानी से मछली पकड़ता है, तब यहाँ के लोगों द्वारा यह बगुला माना जाता है।

7.118.6

अतिबहुकालविलोलानवलोक्य बकांस्तपोदम्भान् । अत्रैवातिमिरस्थांस्तटवनिता विस्मिता धूर्तान् ॥ ६ ॥

atibahukālavilolānavalokya bakāṃstapodambhān | atraivātimirasthāṃstaṭavanitā vismitā dhūrtān || 6 ||

Seeing the herons (बक) who are extremely unsteady for a very long time, the women of the riverbank are amazed at these deceitful ones who are in deep darkness here.

बहुत लंबे समय तक अत्यंत अस्थिर बगुलों को देखकर, नदी के किनारे की स्त्रियाँ इन धूर्तों पर आश्चर्यचकित हैं जो यहाँ गहरे अंधकार में हैं।

7.118.7

अत्र जले हिमहेलाः पश्यैता अपहरन्ति सितपद्मान् । इच्छसि ता अनुगन्तुं नाहं ते वल्लभा व्रजामीति ॥ ७ ॥

atra jale himahelāḥ paśyaitā apaharanti sitapadmān | icchasi tā anugantuṃ nāhaṃ te vallabhā vrajāmīti || 7 ||

See here in the water, the ice-cold waves are taking away the white lotuses. If you wish to follow them, I am not your beloved, I will go away.

यहाँ जल में देखो, बर्फीली लहरें सफेद कमलों को ले जा रही हैं। अगर तुम उनका पीछा करना चाहते हो, तो मैं तुम्हारी प्रिय नहीं हूँ, मैं चली जाऊँगी।

7.118.8

कुपितां तामनुनेतुं यत्नपरः पान्थ एष पथि कान्ताम् । अवलोकय नरनायक कुसुमलताकुहरकेलितीरवने ॥ ८ ॥

kupitāṃ tāmanunetuṃ yatnaparaḥ pāntha eṣa pathi kāntām | avalokaya naranāyaka kusumalatākuharakelitīravane || 8 ||

This traveler is eager to please his angry beloved on the path. Look, O hero, at the playful shore of the forest adorned with flowering vines.

यह यात्री मार्ग पर अपनी कुपित प्रियतमा को मनाने के लिए उत्सुक है। देखो, हे नायक, फूलों की लताओं से सजे वन के खेल-भरे तट को।

7.118.9

इति हावभावविलसितविवलनकोपार्धदृष्टिहसितानि । कुर्वाणा वरवनिता कथयति ते दृश्यतां राजन् ॥ ९ ॥

iti hāvabhāvavilasitavivalanakopārdhadṛṣṭihasitāni | kurvāṇā varavanitā kathayati te dṛśyatāṃ rājan || 9 ||

Thus, displaying various expressions of anger, half-glances, and smiles, the noble lady speaks to you, O king, saying, 'Look at me.'

इस प्रकार, विभिन्न क्रोध, अर्ध-दृष्टि और मुस्कानों के भाव दिखाते हुए, श्रेष्ठ स्त्री आपसे, हे राजन्, कहती है, 'मुझे देखो।'

7.118.10

बकमद्गुशरारूणां नित्यमेकौकसामपिसंकरोऽस्ति मिथो बुद्धेर्न मूर्खविदुषामिव ॥ १० ॥

bakamadguśarārūṇāṃ nityamekaukasāmapisaṃkaro'sti mitho buddherna mūrkhaviduṣāmiva || 10 ||

There is always a mixture of the red-colored feathers of cranes and geese, but there is no mutual understanding among fools and scholars.

हंसों और बगुलों के लाल रंग के पंखों का हमेशा मिश्रण होता है, लेकिन मूर्खों और विद्वानों में परस्पर समझ नहीं होती।

7.118.11

चञ्चवग्रे खञ्जरीटस्य कीटः किटिकिटायतेदौर्भाग्यस्य पुराणस्य पताकेवोच्छ्रितोन्नते ॥ ११ ॥

cañcavagre khañjarīṭasya kīṭaḥ kiṭikiṭāyatedaurbhāgyasya purāṇasya patākevocchritonnate || 11 ||

The insect at the tip of the beak of the wagtail chirps, as if it were the ancient banner of good fortune raised high.

खञ्जरीट की चोंच के अग्र भाग पर कीट किटिकिटाता है, जैसे पुराने सौभाग्य का ध्वज उठाया जा रहा हो।

7.118.12

तारं तीरतरौ स रौति तरलो यावद्बकः प्रोल्लसंस्तावत्पल्वलगोष्पदेऽम्बुकलिले यावद्बलाद्देहकम्मज्जन्त्या प्रियवक्षसीव निपुणं त्रातं शफर्या भयाद्बृद्धङ्गेनमहापदीह हि मृतेनान्यद्भवेत्सौख्यदम् ॥ १२ ॥

tāraṃ tīratarau sa rauti taralo yāvadbakaḥ prollasaṃstāvatpalvalagoṣpade'mbukalile yāvadbalāddehakammajjantyā priyavakṣasīva nipuṇaṃ trātaṃ śapharyā bhayāddhṛdbhaṅgenamahāpadīha hi mṛtenānyadbhavetsaukhyadam || 12 ||

The trembling crane cries out on the riverbank, praising the lotus pond, until the frog, fearful of the heart-breaking danger, skillfully saves itself by diving into the water.

काँपता हुआ सारस नदी के किनारे पर चिल्लाता है, कमल के तालाब की प्रशंसा करता है, जब तक कि डर के मारे हृदय-विदारक खतरे से मेढक कुशलतापूर्वक अपने आप को पानी में डुबकी लगाकर बचा नहीं लेता।

7.118.13

बकाजगरमद्गूनां हृदि या प्राणिनां धृतिःअचर्वितनिगीर्णानां मन्ये निद्रोपमैव सा ॥ १३ ॥

bakājagaramadgūnāṃ hṛdi yā prāṇināṃ dhṛtiḥacarvitanigīrṇānāṃ manye nidropamaiva sā || 13 ||

The fortitude in the hearts of living beings, who are swallowed by the intoxicated crane and crocodile, I consider to be like sleep.

जो प्राणी मतवाले बगुले और मगरमच्छ द्वारा निगले जाते हैं, उनके हृदय में जो धैर्य होता है, मैं उसे नींद के समान मानता हूँ।

7.118.14

आसन्नमद्गुबकगृध्रबिडालसर्पदृष्ट्या भयं भवति यत्सलिलाशयानामतस्याग्रतस्तृणमिवाशनिपातभङ्गो जातिस्मरेण विदुषोक्तमदः पुरा मे ॥ १४ ॥

āsannamadgubakagṛdhrabiḍālasarpadṛṣṭyā bhayaṃ bhavati yatsalilāśayānāmtasyāgratastṛṇamivāśanipātabhaṅgo jātismareṇa viduṣoktamadaḥ purā me || 14 ||

The fear that arises from the sight of an approaching intoxicated crane, vulture, cat, and snake, for those dwelling in the water, is like the breaking of a blade of grass by a thunderbolt, as once told to me by a wise man who remembered his past lives.

मतवाले बगुले, गिद्ध, बिल्ली और साँप के नजदीक आने से उत्पन्न डर, जो पानी में रहने वालों के लिए होता है, वह एक तिनके के टूटने के समान है, जैसा कि एक बार एक पूर्वजन्म स्मरण करने वाले विद्वान ने मुझे बताया था।

7.118.15

इह सरोवरतीरतरोस्तले कुसुमशालिनि मुग्धमृगान्पुरः । समवलोकय लोकमलौ बलात्समवकीर्णनवोत्पलकेतकान् ॥ १५ ॥

iha sarovaratīratarostale kusumaśālini mugdhamṛgānpuraḥ | samavalokaya lokamalau balātsamavakīrṇanavotpalaketakān || 15 ||

Here, on the shore of the lake, the blooming flowers attract the innocent deer | Look at the pure world, forcibly scattered with new lotuses and flowers || 15 ||

यहाँ, सरोवर के तट पर, खिले हुए फूल निर्दोष हिरणों को आकर्षित करते हैं | शुद्ध संसार को देखो, जो बलपूर्वक नए कमल और फूलों से भरा हुआ है || १५ ||

7.118.16

बर्ही प्रोन्नतचित्तत्वात्तोयमिन्द्रं प्रयाचते । स पूरयति तेनास्य महात्मा निखिलां महीम् ॥ १६ ॥

barhī pronnatacittatvāttoyamindraṃ prayācate | sa pūrayati tenāsya mahātmā nikhilāṃ mahīm || 16 ||

The peacock, with its heart uplifted, prays to the lord of water | He fills the entire earth with it, the great soul || 16 ||

मोर, अपने उत्साहित हृदय से, जल के स्वामी से प्रार्थना करता है | वह इससे पूरी पृथ्वी को भरता है, वह महान आत्मा || १६ ||

7.118.17

मेघाननुसरन्त्येते मयूरास्तनपा इव । मलिनो मलिनस्यैव पुत्र इत्यनुमीयते ॥ १७ ॥

meghānanusarantyete mayūrāstanapā iva | malino malinasyaiva putra ityanumīyate || 17 ||

These peacocks follow the clouds like thirsty ones | The impure is considered the son of the impure || 17 ||

ये मोर बादलों का अनुसरण करते हैं जैसे प्यासे हुए | अशुद्ध को अशुद्ध का पुत्र माना जाता है || १७ ||

7.118.18

मृगानालोक्य पथिकश्चिन्तयन्दयितेक्षणे । पुरःस्थेषु पदार्थेषु यन्त्रपुत्रिकतां गतः ॥ १८ ॥

mṛgānālokya pathikaścintayandayitekṣaṇe | puraḥstheṣu padārtheṣu yantraputrikatāṃ gataḥ || 18 ||

Seeing the deer, the traveler thinks of his beloved's eyes | He becomes like a puppet in the presence of objects || 18 ||

हिरण देखकर, यात्री अपनी प्रियतमा की आँखों के बारे में सोचता है | वह वस्तुओं के सामने एक पुतली की तरह हो जाता है || १८ ||

7.118.19

शिखी वार्यपि नादत्ते भूमेर्भुङ्क्ते बलादहिम् । दौरात्म्यं तन्न जाने किं सर्पस्य शिखिनोऽथवा ॥ १९ ॥

śikhī vāryapi nādatte bhūmerbhukte balādahim | daurātmyaṃ tanna jāne kiṃ sarpasya śikhino'thavā || 19 ||

The peacock does not take water, but forcibly eats the frost of the earth | I do not know whose wickedness it is, of the serpent or of the peacock || 19 ||

मोर पानी नहीं लेता, बल्कि बलपूर्वक पृथ्वी के हिम को खाता है | मुझे नहीं पता कि यह दुष्टता किसकी है, साँप की या मोर की || १९ ||

7.118.20

सज्जनाशयनीकाशं त्यक्त्वा बर्ही महत्सरः । पिबत्यम्ब्वभ्रनिष्ठ्यूतं मन्ये तन्नतिभीतितः ॥ २० ॥

sajjanāśayanīkāśaṃ tyaktvā barhī mahatsaraḥ | pibatyambvabhraniṣṭhyūtaṃ manye tannatibhītitaḥ || 20 ||

Giving up the comfortable nest, the great crane drinks the water falling from the clouds. I think he does this without much fear.

सुखद घोंसले को छोड़कर, बड़ा सारस बादलों से गिरने वाला पानी पीता है। मैं सोचता हूँ कि वह इसे बहुत डर के बिना करता है।

7.118.21

लसत्कलापजलदाः पश्य नृत्यन्ति बर्हिणः । धुन्वानाः पिच्छकान्तीन्दुं प्रावृषः पोतका इव ॥ २१ ॥

lasatkalāpajaladāḥ paśya nṛtyanti barhiṇaḥ | dhunvānāḥ picchakāntīnduṃ prāvṛṣaḥ potakā iva || 21 ||

Look at the peacocks dancing with their shining feathers, shaking their tails like boats in the rainy season.

देखो मोर अपनी चमकती पंखों के साथ नृत्य कर रहे हैं, जैसे वर्षा ऋतु में नावें अपनी पूँछों को हिला रही हैं।

7.118.22

वरवने वनवातविसारिणां चपलचन्द्रकचारुतरङ्गिणाम् । इह पयोनिधिरेव कलापिनां विसृतमुक्ततयेव विलासनः ॥ २२ ॥

varavane vanavātavisāriṇāṃ capalacandrakacārutaraṅgiṇām | iha payonidhireva kalāpināṃ visṛtamuktatayeva vilāsanaḥ || 22 ||

In the beautiful forest, the playful winds create charming waves in the streams. Here, the ocean itself seems to be the playground for the peacocks, spreading its waves.

सुंदर वन में, चंचल वायुएँ नदियों में मनोहर तरंगें उत्पन्न करती हैं। यहाँ, समुद्र खुद मोरों का खेल का मैदान लगता है, जो अपनी लहरों को फैला रहा है।

7.118.23

चर तृणानि पिबाम्बु वनावनौ कलय विश्रमणं कदलीवने । चकितचातक पावकदूषिता न हि सुखाय भवत्यतिमानिता ॥ २३ ॥

cara tṛṇāni pibāmbu vanāvanau kalaya viśramaṇaṃ kadalīvane | cakitacātaka pāvakadūṣitā na hi sukhāya bhavatyatimānitā || 23 ||

Wander and eat grass, drink water in the forest. Take rest in the banana grove. O astonished chataka bird, do not be too proud of your purity, for it does not bring happiness.

घूमो और घास खाओ, वन में पानी पियो। केले के बाग़ में विश्राम करो। है चकित चातक पक्षी, अपनी पवित्रता पर अति गर्व मत करो, क्योंकि यह सुख नहीं लाता।

7.118.24

नायं मयूर मकरालयवारिपूरपूर्णोदरो जलधरोऽम्बरमारुरुक्षुः । दावाग्निदग्धवनपादपकोटराग्र धूमावलीवलय उत्थित एष शैलात् ॥ २४ ॥

nāyaṃ mayūra makarālayavāripūrapūrṇodaro jaladharo'mbaramārurukṣuḥ |
dāvāgnidagdhavanapādapakoṭarāgra dhūmāvalīvalaya utthita eṣa śailāt || 24 ||

This peacock, with its belly full of water from the clouds, is not eager to rise to the sky. This is the smoke from the forest fire, rising from the burnt tree tops on the mountain.

यह मोर, जिसका पेट बादलों से भरा हुआ है, आकाश की ओर उठने के लिए उत्सुक नहीं है। यह वन अग्नि का धुआँ है, जो जले हुए पेड़ों के ऊपरी हिस्सों से पर्वत से उठ रहा है।

7.118.25

येनाब्देन शरद्विधावपि शिखी संतर्पितो वारिभिर्नो वर्षास्वपि पूरयेद्यदि सरस्तद्वाललोकोचितम्। आरब्धं समवेक्ष्य सज्जनजनो हासेन दुःस्थो भवेद्बर्हीत्यात्मतृषैव नेतुमखिलं कालं समभ्युद्यतः ॥ २५ ॥

yenābdena śaradvidhāvapi śikhī saṃtarpi to vāribhirno varṣāsvapi pūrayedyadi sarastadvālalokocitam | ārabdhaṃ samavekṣya sajjanajano hāsena duḥstho bhavedbarhītyātmatṛṣaiva netumakhilaṃ kālaṃ samabhyudyataḥ || 25 ||

Even if the peacock is satisfied with water in autumn, it cannot fill the lake in the rainy season, which is appropriate for the world of children. Seeing the beginning, a good person becomes miserable with laughter, ready to lead the whole time with the thirst of the peacock itself.

यदि मोर शरद ऋतु में पानी से संतुष्ट हो जाए, तो भी वर्षा ऋतु में तालाब को भरने में असमर्थ है, जो बच्चों के संसार के लिए उपयुक्त है। शुरुआत देखकर, एक सज्जन व्यक्ति हँसी से दुःखी हो जाता है, मोर की प्यास के साथ पूरे समय को आगे बढ़ाने के लिए तैयार होता है।

7.118.26

स्फटिकविमलं पीत्वा तोयं घनोदरनिर्गतं पिबति न पुनर्मार्गे क्षुभ्यंस्तृषापि शिखी जलम्। स्फुरति च घनं स्मृत्वा स्मृत्वा न चापि विपद्यते गुणवति जने बद्धाशानां श्रमोऽपि सुखावहः ॥ २६ ॥

sphṭikavimalaṃ pītvā toyaṃ ghanodaranirgataṃ pibati na punarmārge kṣubhyaṃstṛṣāpi śikhī jalam | sphurati ca ghanaṃ smṛtvā smṛtvā na cāpi vipadyate guṇavati jane baddhāśānāṃ śramo'pi sukhāvahaḥ || 26 ||

Drinking crystal clear water flowing from the clouds, the peacock does not drink again on the path, even if thirsty. Remembering the clouds, it does not suffer, and for virtuous people with hopes, even labor brings happiness.

स्फटिक जैसे निर्मल पानी पीकर, जो बादलों से निकलता है, मोर मार्ग पर फिर से नहीं पीता, भले ही प्यासा हो। बादलों को याद करके, वह दुःखी नहीं होता, और आशाओं से बंधे गुणवान लोगों के लिए, परिश्रम भी सुख लाता है।

7.118.27

इहातिवाहयन्त्येते मार्गदौस्थ्यं घनागमे। कथाभिः पथिकाः प्रायो विमूढा जीवितं यथा ॥ २७ ॥

ihātivāhayantyete mārgadausthyam ghanāgame | kathābhiḥ pathikāḥ prāyo vimūḍhā jīvitam yathā || 27 ||

Here, travelers often pass the difficulty of the path during the arrival of clouds with stories, as if confused in life.

यहाँ, यात्री अक्सर बादलों के आगमन के दौरान कहानियों के साथ मार्ग की कठिनाई को पार करते हैं, जैसे जीवन में भ्रमित हों।

7.118.28

पश्यात्र नाथ सरसः कमलोत्पलकुमुदबिसमृणालानाम्। कह्लारपत्रपयसा भारानादाय बालिकाश्चलिताः ॥ २८ ॥

paśyātra nātha sarasaḥ kamalotpalakumudabisamṛṇālānām | kahlārapatrapayasā bhārānādāya bālikāścalitāḥ || 28 ||

See here, O Lord, the lotuses, lilies, and water lilies of the lake, moving with the burden of water on their leaves.

देखो, हे प्रभु, तालाब के कमल, कुमुदिनी और जलज, जो अपने पत्तों पर पानी के बोझ से हिल रहे हैं।

7.118.29

किमिदं नयथेति ततः पृष्टाभिस्ताभिरुक्तमेतस्य । व्यसनज्वरतप्तायाः पथिक वयं बालसख्य इति ॥ २९ ॥

kimidaṃ nayatheti tataḥ pṛṣṭābhistābhiruktametasya | vyasanajvarataptāyāḥ pathika vayaṃ bālasakhya iti || 29 ||

What is this that you are carrying? Asked by them, they said to him, 'O traveler, we are the childhood friends of the one afflicted by the fever of misfortune.'

यह क्या है जो तुम ले जा रहे हो? उनसे पूछा गया, तो उन्होंने कहा, 'हे यात्री, हम उसके बचपन के दोस्त हैं जो दुर्भाग्य के ज्वर से पीड़ित है।'

7.118.30

अथ रागरक्तहृदयाः स्तनभरविततता विलासललिताङ्ग्यः । पथिकानां स्मरणपथं भूयोऽप्यनयन्प्रियाः स्वगेहस्थाः ॥ ३० ॥

atha rāgaraktahṛdayāḥ stanabharavitatā vilāsalalitāṅgyaḥ | pathikānāṃ smaraṇapathaṃ bhūyo'pyanayanpriyāḥ svagehasthāḥ || 30 ||

Then, the women with hearts full of passion, with breasts heavy and graceful bodies, again and again make the travelers remember the path of love, staying in their own homes.

फिर, राग से भरे हृदय वाली, भारी स्तनों और ललित अंगों वाली स्त्रियाँ, अपने घरों में रहते हुए, बार-बार पथिकों को प्रेम के मार्ग को याद दिलाती हैं।

7.118.31

सा नूनं मम कान्ता दृष्ट्वा सुस्निग्धघनतमःश्यामम् । गगन च शून्यगहनं प्रलपति भुवि पतति विस्खलति ॥ ३१ ॥

sā nūnaṃ mama kāntā dṛṣṭvā susnigdhaghanatamaḥśyāmam | gagan ca śūnyagahanaṃ pralapati bhuvi patati viskhalati || 31 ||

She, my beloved, seeing the dark and dense clouds, speaks to the empty sky, falls to the earth, and stumbles.

वह, मेरी प्रियतमा, घने और काले बादलों को देखकर, खाली आकाश से बात करती है, धरती पर गिरती है, और लड़खड़ाती है।

7.118.32

भृङ्गावलीकुवलयावलिताब्जपात्रसंप्रेर्यमाणनलिनीमधुपानमत्तः । हा वाति तीरतरुपल्लवलास्यलब्धसंमुग्धशब्दगणगीतगुणो नभस्वान् ॥ ३२ ॥

bhṛṅgāvalīkuvalayāvalitābjapātrasaṃpreryamāṇanalinīmadhupānamattaḥ | hā vāti tīratarupallavalāsyalabdhasaṃmugdhaśabdagaṇagītaguṇo nabhasvān || 32 ||

Intoxicated by drinking the honey of lotuses stirred by the breeze carrying the fragrance of bees and flowers, the wind sings a melodious song, enchanted by the rustling of the leaves on the shore trees.

भौंरों और फूलों की सुगंध लेकर चलने वाली हवा से हिले हुए कमलों के मधु को पीकर मतवाला होकर, वह तट के पेड़ों की पत्तियों के कान्पने से मोहित होकर, एक मधुर गीत गाता है।

Chapter 119

7.119.1

सहचरा ऊचुः । कथयत्येष पथिकः पश्य मन्दरगुल्मके । प्रियायाश्चिरलब्धाया वृत्तां विरहसंकथाम् ॥ १ ॥

sahacarā ūcuḥ | kathayaty eṣa pathikaḥ paśya mandaragulmake | priyāyāś ciralabdhāyā vṛttāṃ virahasaṃkathām || 1 ||

The companions said: Look, this traveler is narrating the story of his long-lost beloved, full of tales of separation, in the Mandara grove.

सहचर बोले: देखो, यह यात्री मन्दर के झुरमुट में अपनी चिरसे प्राप्त प्रिया की विरह की कथा सुना रहा है।

7.119.2

एकत्र श्रृणु किंवृत्तमाश्चर्यमिदमुत्तमम् । दातुं त्वन्निकटे दूतमहं चिन्तान्वितोऽवदम् ॥ २ ॥

ekatra śṛṇu kiṃvṛttamāścaryam idam uttamam | dātuṃ tvannikate dūtam ahaṃ cintānvito 'vadam || 2 ||

Listen carefully to this amazing and supreme story. I, being anxious, said to send a messenger to you.

एकत्र होकर इस आश्चर्यजनक और उत्तम कथा को सुनो। चिन्तित होकर मैंने तुम्हारे पास एक दूत भेजने के लिए कहा।

7.119.3

अस्मिन्महाप्रलयकालसमे वियोगे यो मां तयेह मम याति गृहं स कः स्यात् । नैवास्त्यसौ जगति यः परदुःखशान्त्यै प्रीत्या निरन्तरतरं सरलं यतेत ॥ ३ ॥

asmin mahāpralayakālasame viyoge yo māṃ tayeh mama yāti gṛhaṃ sa kaḥ syāt | naivāsty asau jagati yaḥ paraduḥkhaśāntyai prītyā nirantarataraṃ saralaṃ yateta || 3 ||

In this great time of separation, who would come to my house for her sake? There is no one in this world who would sincerely and continuously strive to alleviate another's suffering.

इस महान वियोग के समय में, उसके लिए कौन मेरे घर आएगा? इस जगत में ऐसा कोई नहीं है जो दूसरों के दुःख को शान्त करने के लिए सच्चे मन से और लगातार प्रयास करे।

7.119.4

आ एष शिखरे मेघः स्मराश्व इव संयुतः । विद्युल्लताविलासिन्या वलितो रसिकः स्थितः ॥ ४ ॥

ā eṣa śikhare meghaḥ smarāśva iva saṃyutaḥ | vidyullatāvilāsinyā valito rasikaḥ sthitaḥ || 4 ||

Behold, this cloud on the peak, united with the lightning like a lover with his beloved, is standing gracefully, entwined with the playful lightning.

देखो, यह मेघ शिखर पर है, विद्युत के साथ मिला हुआ, जैसे प्रेमी अपनी प्रेमिका के साथ, खेल रहा है और सुन्दरता से खड़ा है।

7.119.5

भ्रातर्मेघ महेन्द्रचापमुचितं व्यालम्ब्य कण्ठेगुणं नीचैर्गर्ज मुहूर्तकं कुरु दयां सा बाष्पपूर्णेक्षणा। बाला बालमृणालकोमलतनुस्तन्वी न सोढुं क्षमा तां गत्वा सुगते गलज्जललवैराश्वासयात्मानिलैः ॥ ५ ॥

bhrātarmeghe mahēndracāpamucitaṃ vyālambya kaṇṭhēguṇaṃ nīcairgarja muhūrtakaṃ kuru dayāṃ sā bāṣpapūrṇēkṣaṇā | bālā bālamṛṇālakōmalatanustanvī na sōḍhuṃ kṣamā tāṃ gatvā sugatē galajjalalavairāśvāsayātmānilaiḥ || 5 ||

O cloud, brother, bearing the bow of Indra, embrace the neck of the mountain, and gently roar for a moment. She, with eyes full of tears, is delicate and tender like a young lotus stalk, and cannot bear it. Go to her, O virtuous one, and comfort her with drops of water and soothing breezes.

हे मेघ, भ्राता, इन्द्र के धनुष को उचित रूप से धारण करते हुए, पर्वत के गले को आलिंगन करो, और एक क्षण के लिए धीरे से गर्जना करो। वह, आँसुओं से भरी आँखों वाली, एक कोमल और नाजुक युवा कमल की डंठल की तरह है, और इसे सहन नहीं कर सकती। हे पुण्यवान, उसके पास जाओ और पानी की बूँदों और शान्त हवाओं से उसे आश्वस्त करो।

7.119.6

चित्ततूलिकया व्योम्नि लिखित्वालिङ्गिता सती। न जाने क्वाधुनैवेतः पयोद दयिता गता ॥ ६ ॥

cittatūlikayā vyomni likhitvāliṅgitā satī | na jāne kvādhunaivetah payoda dayitā gatā || 6 ||

With the mind's brush, I wrote in the sky, but now I do not know where my beloved, the cloud, has gone.

मन के कुल्हाड़ी से आकाश में लिखा था, पर अब मुझे नहीं पता कि मेरा प्यारा बादल कहाँ चला गया है।

7.119.7

इत्थं चिन्तापरवशमतेस्तन्वि सार्धं त्वयाऽसावन्तर्लीनप्रसरमनसः क्वापि याता स्मृतिर्मे। संपन्नोऽहं परवशवपुः काष्ठकुड्योपमाङ्गो भङ्गं सोढुं क इव विरहक्लेशजं नाम शक्तः ॥ ७ ॥

itthaṃ cintāparavaśamates tanvi sārdhaṃ tvayā'sāv antarlīnaprasaramanasah kvāpi yātā smṛtirme | saṃpanno'haṃ paravaśavapuḥ kāṣṭhakuḍyopamāṅgo bhaṅgaṃ soḍhuṃ ka iva virahakleśajaṃ nāma śaktaḥ || 7 ||

Thus, overcome by thoughts, my mind has wandered somewhere with you, O slender one. I have become like a wooden doll, unable to bear the pain of separation.

इस प्रकार, विचारों से पराजित होकर, मेरा मन तुम्हारे साथ कहीं भटक गया है, हे सुंदरी। मैं एक लकड़ी की गुड़िया के समान हो गया हूँ, जो विरह के दुःख को सहन नहीं कर सकता।

7.119.8

पश्चाज्जातः कलकलरवः संतते पान्थसार्थे दीनालापैर्व्यसनविधुरैरालेपन्ते च मेघम्। कष्टं पान्थो मृत इति महारम्भसंपन्नहाहाशब्दः प्रोद्यत्पथिकवनितावित्स्तृतोरःप्रहारः ॥ ८ ॥

paścāj jātaḥ kalakalaravaḥ saṃtate pānthasārthe dīnālāpair vyasanavidhurair ālepante ca megham | kaṣṭaṃ pāntho mṛta iti mahārambhasaṃpannahāhāśabdaḥ prodyatpathikavinitāvistṛtorahprahāraḥ || 8 ||

Afterwards, a loud noise arose among the travelers, with pitiful cries of distress echoing the cloud. Alas, the traveler is dead, cried the women, striking their breasts in grief.

फिर, यात्रियों में एक जोरदार शोर उठा, जिसमें दुःख के पीड़ित लोगों के करुण आलाप बादल को आलिंगन कर रहे थे। अफसोस, यात्री मर गया, औरतों ने चिल्लाकर कहा, और दुःख में अपने वक्ष पर प्रहार किया।

7.119.9

लोकेनायं मृत इति ततो बाष्पसंपूरिताक्षं शावीं पूजां विरचितवता संचयीकृत्य दारु । दग्धुं नीतोऽस्म्यतिभयमहं प्रज्वलच्चित्यनन्तप्रोद्यत्स्फोटस्फुटपटपटारावरौद्रं श्मशानम् ॥ ९ ॥

lokenaāyaṃ mṛta iti tato bāṣpasampūritākṣaṃ śāvīṃ pūjāṃ viracitavatā saṃcayīkṛtya dāru | daghduṃ nīto'sm yatibhayam ahaṃ prajvalac cit yanantaprodyat sphoṭasphuṭapaṭapṭārāvarau draṃ śmaśānam || 9 ||

Then, declared dead by the people, with eyes filled with tears, a funeral rite was performed, and wood was gathered. I was taken to be burned, with great fear, to the terrifying cremation ground with its blazing pyre and crackling sounds.

फिर, लोगों ने घोषणा की कि यह मर गया है, और आँसू भरी आँखों से, एक अंतिम संस्कार का अनुष्ठान किया गया, और लकड़ी इकट्ठी की गई। मैं बड़े भय से, भड़कती चिता और चटकती आवाजों वाले भयानक श्मशान में जलाने के लिए ले जाया गया।

7.119.10

तत्राहं तैः कमलवदने बाष्पपूर्णाक्षिपक्षैर्न्यस्तः कैश्चिच्चितिशयनके बद्धलोकालिलेखे । धूमोद्गाराविरलजटिले मस्तके मत्तमृत्योश्चूडारत्नोत्तम इव कलामात्रदृश्येऽग्निहेम्नि ॥ १० ॥

tatrāhaṃ taiḥ kamalavadane bāṣpapūrṇākṣipakṣair nyastaḥ kaiścic citiśayanake baddhalokālilekhe | dhūmodgārāviralajaṭile mastake mattamṛtyoś cūḍāratnōttama iva kalāmātradṛśye'gnihēmni || 10 ||

There, I was placed on the funeral pyre by those with tear-filled eyes and lotus-like faces, bound with worldly ties. With smoke rising like the matted locks of intoxicated death, I appeared like the finest jewel on the cremation fire.

वहाँ, मैं आँसू भरी आँखों और कमल के समान मुखवालों द्वारा संसार के बंधनों से बँधा हुआ चिता पर रखा गया। धूम्र के उद्गार मृत्यु के मतवाले जटाओं के समान उठ रहे थे, और मैं अग्नि के स्वर्ण में सबसे उत्तम रत्न के समान दिखाई दे रहा था।

7.119.11

अस्मिन्काले कुवलयलताकोमला धूमलेखा नासारन्ध्रं मृदुगलबिलं मे प्रवृत्ता नियातुम् । उष्णा कृष्णा नकुलकलिता सत्वरं बालसर्पी भूमे रन्ध्रं तनुमिव दराद्दैर्घ्यसंकोचकुब्जा ॥ ११ ॥

asminkāle kuvalayalatākomalā dhūmalekhā nāsārandhraṃ mṛdugalabilaṃ me pravṛttā niyātum | uṣṇā kṛṣṇā nakulakalitā satvaraṃ bālasarpī bhūme randhraṃ tanumiva darāddairghyasaṃkocakubjā || 11 ||

In this moment, the tender blue lotus creeper, the smoke-like line, the soft cave of my nostril, has begun to guide. The hot, black, mongoose-like, swift, young serpent, like a body from a hole in the earth, contracted and bent from length.

इस समय, कोमल नील कमल लता, धुएं की लेखा, मेरी नासिका की मृदु गुहा, मार्गदर्शन करना शुरू हो गया है | गर्म, काला, नेवले जैसा, तेज, बाल सर्प, पृथ्वी के छेद से शरीर की तरह, लंबाई से सिकुड़कर मुड़ा हुआ |

7.119.12

त्वत्संकल्पामृतकवचितो नापविद्धस्तयाहं कुन्तश्रेण्या दृढपतनया वज्रकायो यथाजः । त्वामासन्नां मदनसरितं हृद्गृहे गाहमानो मर्मच्छेदेष्वपि विलसिता नाविदं वेदनास्ताः ॥ १२ ॥

tvatsaṃkalpāmṛtakavacito nāpaviddhastayāhaṃ kuntashreṇyā dṛḍhapatanayā vajrakāyo yathājaḥ | tvāmāsannāṃ madanasaritaṃ hṛdgṛhe gāhamāno marmacchedeṣvapi vilasitā nāvidaṃ vedanāstāḥ || 12 ||

Protected by the armor of your resolute nectar, I am not pierced by her. Like Indra's thunderbolt, I fall firmly with the spear's shaft. Embracing you, the river of love, in the heart's abode, even in the severing of vital points, I do not feel those pains.

आपके दृढ़ अमृत कवच से सुरक्षित, मैं उससे घायल नहीं होता | इंद्र के वज्र की तरह, मैं भाले की धार से दृढ़ता से गिरता हूँ | आपको, प्रेम की नदी, हृदय के घर में आलिंगन करते हुए, मर्मस्थानों के विच्छेद में भी, मैं उन पीड़ाओं को महसूस नहीं करता |

7.119.13

एतावन्तं समयमुचितं तन्वि सार्धं त्वयान्तर्लीलालोलं हृदि चिरतरं तन्मयात्रानुभूतम्। यस्मिन्दृष्टेऽमृतह्रद इवोन्मज्जनौघैर्यथासौ राज्याभोगो विशसनमिवाल्पाल्पमेवेति बुद्धिः ॥ १३ ॥

etāvantaṃ samayamucitaṃ tanvi sārdhaṃ tvayāntarlīlālolaṃ hṛdi cirataraṃ tanmayātrānubhūtam | yasmindṛṣṭe'mṛtahrad ivotnmajjanaunghairyathāsau rājyābhogo viśasanamivālpālpameveti buddhiḥ || 13 ||

For so long, it has been fitting to be with you, O slender one, experiencing the playful dance within the heart. In that vision, as if immersed in the nectar ocean, the enjoyment of royal pleasures seems like a mere trifle.

इतने समय तक, ओ कोमलांगी, तुम्हारे साथ रहना उचित रहा है, हृदय में खेल-खेल में डूबे हुए | उस दृष्टि में, जैसे अमृत के समुद्र में डूबे हुए, राजसी भोग एक तुच्छ लगता है |

7.119.14

सा लीला ते विलासा वचनमपि च तत्सस्मितं ते कटाक्षाः सानन्दानन्तरस्य प्रसरसमुचिता दूरमण्येकभूषा। तानीहारावसारावहसनचलनावेगविक्षोभितानि ॥ १४ ॥

sā līlā te vilāsā vacanamapi ca tatsasmitaṃ te kaṭākṣāḥ sānandānantarasya prasarasamucitā dūramaṇyekabhūṣā | tānīhārāvasārāvahasanacalanāvegavikṣobhitāni || 14 ||

That playfulness of yours, those charming gestures, even your words, that smile, and your glances are the fitting ornaments of the joyful heart. They are disturbed by the force of laughter, movement, and excitement.

तुम्हारी वह लीला, वे विलास, तुम्हारे वचन, वह मुस्कान, और तुम्हारे कटाक्ष आनंदित हृदय के अनुकूल आभूषण हैं | वे हँसी, गति, और उत्तेजना के बल से विचलित होते हैं |

7.119.15

किंवा तत्तन्न यत्संस्मृतममृतरसाह्लादमंतः करोति। त्वत्संगमे सुरतसौख्यरसायनेन बाले ततोऽहमतितृप्ततया श्रमार्तः। तत्र स्थितो मृदुनि तल्पतले शशाङ्क बिम्बे शरच्छिशिरनिर्मलशोचिषीव ॥ १५ ॥

kiṃvā tattanna yatsaṃsmṛtamamṛtarasāhlādamantaḥ karoti | tvatsaṃgame suratasaukhyarasāyanaena bāle tato'hamatitṛptatayā śramārtaḥ | tatra sthito mṛduni talpatale śaśāṅka bimbe śaracchiciranirmalaśociṣīva || 15 ||

What else is there that is not remembered as the inner joy of nectar? In the union with you, O young maiden, I am exhausted with excessive satisfaction from the enjoyment of love. There, I lie on the soft bed, like the cool, clear moonlight of autumn.

क्या और है जो अमृत की आनंददायक याद नहीं आता? तुम्हारे साथ मिलन में, हे बालिका, मैं अति संतुष्टि से थक गया हूँ प्रेम के आनंद से। वहाँ, मैं नरम बिस्तर पर लेटा हूँ, जैसे शरद ऋतु की ठंडी, स्वच्छ चाँदनी।

7.119.16

अत्रान्तरे झटिति चन्दनपङ्कशीतादीर्घादिवेन्दुशकलादशनिः सशब्दः। दृष्टो मया चितितलज्वलितो हुताशः क्षीराब्धिवाडवनिभोङ्गगतः स्वतल्पात् ॥ १६ ॥

atrāntare jhaṭiti candanapaṅkaśītāddīrghādivenduśakalādaśaniḥ saśabdaḥ | dṛṣṭo mayā cititalajvalito hutāśaḥ kṣīrābhdhivāḍavanibhōṅgagataḥ svatalpāt || 16 ||

At that moment, suddenly, a lightning bolt, cool like sandalwood paste, long like a crescent moon, appeared with a sound. I saw a blazing fire, like the submarine fire, rising from its own place.

उस समय, अचानक, एक बिजली की कड़क, चंदन की पेस्ट की तरह ठंडी, चंद्रमा की अर्धचंद्राकार की तरह लंबी, आवाज के साथ दिखाई दी। मैंने एक जलती हुई आग देखी, जैसे समुद्र की आग, अपने स्थान से उठती हुई।

7.119.17

सहचरा ऊचुः । इत्युक्तवति कान्तेऽस्मिन् हा हतास्मीति वादिनी । मुग्धा मौग्ध्याद्वरावर्तशङ्कया मूर्च्छिता स्थिता ॥ १७ ॥

sahacarā ūcuḥ | ityuktavati kānte'smiṃ hā hatāsmīti vādinī | mugdhā maugdhyaadvāravartśaṅkayā mūrcchitā sthitā || 17 ||

The companions said, 'Having said this, the beloved said, 'Alas, I am ruined.' The innocent one, out of her naivety, fearing a change in the beloved's mind, fainted and remained so.

सहेलियों ने कहा, 'इस प्रकार कहने पर, प्रिय ने कहा, 'हाय, मैं बर्बाद हो गई।' भोली लड़की, अपनी भोलापन के कारण, प्रिय के मन में बदलाव की आशंका से, बेहोश हो गई और वैसे ही रही।

7.119.18

तामेनामेष नलिनीदलवीजेन वारिभिः । आश्वासयंस्तथावस्थां कण्ठेकृत्वात्र संस्थितः ॥ १८ ॥

tāmenāmeṣa nalinīdalavījena vāribhiḥ | āśvāsayanstatāvasthāṃ kaṇṭhekṛtvātra saṃsthitaḥ || 18 ||

He then comforted her with water from a lotus leaf and, placing her on his shoulder, remained there in that state.

फिर उसने उसे कमल के पत्ते के जल से आश्वासन दिया और उसे अपने कंधे पर रखकर वहाँ उसी स्थिति में रहा।

7.119.19

पुनः पृष्टोऽनया वक्ति पश्य तामेव संकथाम् । एष पार्श्वगतामेनां गृहीत्वा चिबुके प्रियाम् ॥ १९ ॥

punaḥ pṛṣṭo'nayā vakti paśya tāmeva saṃkathām | eṣa pārśvagatāmenāṃ gṛhītvā cibuke priyām || 19 ||

Again, when asked by her, he said, 'Look at her, the same story.' Holding his beloved by the chin, he placed her by his side.

फिर से, जब उसने पूछा, तो उसने कहा, 'उसे देखो, वही कहानी।' अपनी प्रिय को ठोड़ी से पकड़कर, उसने उसे अपने पास रखा।

7.119.20

हा हा हुताश इति किंचिदिवोपजातखेदो वदामि खलु यावदहं त्वरावान्तावच्चितिर्झटिति तैरवलुण्ठिता सा पान्थैः क्षणात्क्षरक्षराकुलिता लसद्भिः ॥ २० ॥

hā hā hutāśa iti kiṃcidivopajātakhedo vadāmi khalu yāvadahaṃ tvarāvāntāvaccitirjhaṭiti tairavaluṇṭhitā sā pānthaiḥ kṣaṇātkharakharākulitā lasadbhiḥ || 20 ||

Alas, alas, the fire! Some pain arose, I say, indeed, as long as I, being in a hurry, the mind suddenly, by them being covered, she, by the travelers, in a moment, being disturbed, shines.

हाय, हाय, आग! कुछ पीड़ा उत्पन्न हुई, मैं कहता हूँ, निश्चय ही, जब तक मैं, जल्दी में, मन अचानक, उनसे ढका हुआ, वह, यात्रियों द्वारा, एक क्षण में, व्याकुल होकर, चमकती है।

7.119.21

पान्थास्ततस्तरलतालविलासवाद्यमालिङ्ग्य मामतनुशेखरपूरिताङ्गमुत्थापितस्थितिमलं परिवार्य सर्वे नेदुर्जगुर्जहसुराननृतुर्ववल्गुः ॥ २१ ॥

pānthāstatastaralatālavilāsavādyamāliṅgya māmatanuśekharapūritāṅgamutthāpitasthitimalaṃ parivārya sarve nedurjagurjahasurānanṛturvavalguḥ || 21 ||

The travelers, having embraced the delightful music of the swaying vines, with their bodies filled with the essence of my divine form, stood up and surrounded me. All of them, with their heads bowed, sang, laughed, and spoke in various ways.

यात्री, लहराती लताओं के विलासपूर्ण संगीत को आलिंगन करके, अपने शरीर को मेरे दिव्य रूप की सारता से भरकर, खड़े हो गए और मुझे घेर लिया। सभी ने सिर झुकाकर, गाया, हँसे और विभिन्न तरीकों से बोले।

7.119.22

विषमविनायकसुखदं वलितं भस्माहिशवशिरःप्रकरैःशशिधवलास्थिकपालं वपुरिव रौद्रं श्मशानमथ दृष्टम् ॥ २२ ॥

viṣamavināyakasukhadaṃ valitaṃ bhasmāhiśavaśiraḥprakaraiḥśaśidhavalāsthikapālaṃ vapuriva raudraṃ śmaśānamatha dṛṣṭam || 22 ||

Then, a terrifying cremation ground was seen, resembling a fearsome form, adorned with the skulls of buffaloes and covered with white bones, ashes, and the heads of buffaloes, providing uneven pleasure to Vinayaka.

फिर, एक भयानक श्मशान दिखाई दिया, जो एक भयंकर रूप की तरह लग रहा था, भैंसों के खोपड़ियों से सजा हुआ और सफेद हड्डियों, राख और भैंसों के सिरों से ढका हुआ, विनायक को असमान आनंद प्रदान करता हुआ।

7.119.23

पार्श्वच्छायां हरन्तो विचलितविदलत्क्लिन्नकङ्कालगन्धास्तन्वन्तो भूरिभस्मप्रविततमिहिकामाधुनानाः
शवानाम्केशानाकाशकोशे शशिगलितशराकारिणः शांकराणामस्थीनां टाङ्कृतेनारचितखरगिरस्तत्र वाता वहन्ति ॥ २३ ॥

pārśvacchāyāṃ haranto vicalitavidalatklinnakaṅkālagandhāstanvanto
bhūribhasmapravitatamihikāmādhunānāḥ śavānāmkeśānākāśakośe śaśigalitaśarākāriṇaḥ
śāṃkarāṇāmasthīnāṃ ṭāṃkṛtenāracitakharagirastatra vātā vahanti || 23 ||

Carrying away the side shadows, they scatter the fragrance of the wet, swaying skeletal bones. The winds there carry the abundant ashes of the corpses, whose hair is scattered in the sky like moonlit arrows, adorning the bones of Shankara with the sound of clattering teeth.

पार्श्व छाया को ले जाते हुए, वे गीले, लहराते कंकालों की सुगंध फैलाते हैं। वहाँ की हवाएँ शवों की राख को ले जाती हैं, जिनके बाल आकाश में चंद्रमा की किरणों की तरह बिखरे हुए हैं, शंकर की हड्डियों को दाँतों की खड़खड़ाहट की आवाज से सजाती हैं।

7.119.24

ज्वलदनलचितिप्रवाहनिर्यत्पवनहतोष्मविशुष्कपर्णवृक्षाज्वलनपवनभास्करात्मजानां रमणगृहानुकृतिं बिभर्ति सा भूः ॥ २४ ॥

jvaladanalacitipravāhaniryatpavanahatoṣmaviśuṣkaparṇavṛkṣājvalanapavanabhāskarātmajānāṃ
ramaṇagṛhānukṛtiṃ bibharti sā bhūḥ || 24 ||

The earth bears the resemblance of the abode of love, where the wind, fanned by the blazing fire, dries up the leaves of the trees, and the fiery wind, born of the sun, burns them.

पृथ्वी प्रेम के निवास की समानता धारण करती है, जहाँ धधकती आग से प्रेरित हवा पत्तियों को सुखा देती है, और सूर्य से उत्पन्न आग की हवा उन्हें जला देती है।

7.119.25

दृष्टं श्मशानं तदनन्तभीमकरङ्ककंकालघनामगन्धि । माद्यच्छिवावायसकङ्कगृध्रपिशाचवेतालविरावरौद्रम् ॥ २५ ॥

dṛṣṭaṃ śmaśānaṃ tadanantabhīmakaraṅkakaṃkālaghanāmagandhi |
mādyacchivāvāyasakaṅkagṛdhrapiśācavetālavirāvaraudram || 25 ||

I saw the cremation ground, which was filled with endless terrifying skeletons and had a foul smell. It was dreadful with the cries of jackals, vultures, ghosts, and spirits.

मैंने श्मशान देखा, जो अनन्त भयानक कंकालों से भरा हुआ था और बदबू आ रही थी। वहाँ सियारों, गिद्धों, भूतों और पिशाचों के चीखने-चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं।

7.119.26

आनीतनानाशवबन्धुसार्थसंरोदनाह्वादिदिगन्तकुञ्जम्। खगावकृष्टार्द्रशिरान्त्रतन्त्रीनिबद्धदग्धद्रुमखण्डजालम्॥ २६॥

ānītanānāśavabandhusārthasaṃrodanāhrādidigantakuñjam |
khagāvakṛṣṭārdraśirāntratantrīnibaddhadagdhadrumakhāṇḍajālam || 26 ||

Brought by various corpses, the relatives' wailing and crying filled the directions. Birds and beasts dragged the wet entrails and tied them to the burnt tree trunks.

विभिन्न शवों द्वारा लाए गए, रिश्तेदारों के रोने-चिल्लाने से दिशाएँ भर गईं। पक्षी और जानवर गीली आंतें खींचकर जले हुए पेड़ों के टुकड़ों से बांध दिए।

7.119.27

क्वचिच्चितिक्षोभकृतप्रकाशं क्वचिन्महाकेशकृताब्दवृन्दम्। क्वचिच्च रक्ताक्तधरावितानं नक्तं स्तनत्त्वभ्रमिवास्तशैलम्॥ २७॥

kvaciccitikṣobhakṛtaprakāśaṃ kvacinmahākeśakṛtābdavṛndam | kvacicca raktāktadharāvitānaṃ naktaṃ stanattvabhramivāstashailem || 27 ||

Somewhere the light is created by the disturbance of the funeral pyres, somewhere it is created by the great hair of the clouds. Somewhere the earth is covered with blood, and at night the mountain appears like a breast with a nipple.

कहीं चिताओं के क्षोभ से प्रकाश उत्पन्न होता है, कहीं बादलों के बड़े बालों से प्रकाश उत्पन्न होता है। कहीं धरती खून से भरी हुई है, और रात में पर्वत स्तन के समान दिखाई देता है।

Chapter 120

7.120.1

सहचरा ऊचुःएवंप्रायाः कथाः कुर्वत्पश्यैनन्मिथुनं महत्पानं प्रवृत्तवत्सारं पातुं पद्मनिभेक्षण ॥ १ ॥

sahacarā ūcuḥevaṃprāyāḥ kathāḥ kurvatpaśyainanmithunaṃ mahatpānaṃ pravṛttavatsāraṃ pātuṃ padmanibhekṣaṇa || 1 ||

The companions said, 'While conversing, look at this great couple, drinking and enjoying, with lotus-like eyes.'

सहचर कहा, 'बातचीत करते हुए, इस महान जोड़े को देखो, जो पी रहे हैं और कमल की तरह आँखों से आनंद ले रहे हैं।'

7.120.2

कदलीकंदलीस्वच्छगुच्छाच्छोटनपण्डिताःविविधा वायवो वान्ति पुष्पकेसरमण्डिताः ॥ २ ॥

kadalīkandalīsvacchagucchācchoṭanapaṇḍitāḥvividhā vāyavo vānti puṣpakesaramaṇḍitāḥ || 2 ||

The various winds blow, adorned with the fragrance of flowers, skilled in gently shaking the pure bunches of plantain trees.

विविध हवाएँ चलती हैं, फूलों की सुगंध से सजी हुई, जो केले के पेड़ों के शुद्ध गुच्छों को हल्के से हिलाने में कुशल हैं।

7.120.3

वान्ति वाता वनोद्वान्तविविधामोदमांसलाःपीतघर्मकणाः क्रान्तललनालकलालकाः ॥ ३ ॥

vānti vātā vanodvāntavividhāmodamāṃsalāḥpītagharmakaṇāḥ krāntalalanālakalālakāḥ || 3 ||

The winds blow, carrying various pleasant fragrances from the forest, with drops of warm sunshine falling on the swaying creepers.

हवाएँ चलती हैं, जंगल से विविध सुखद सुगंध लेकर, गर्म धूप की बूँदों के साथ झूलती लताओं पर गिरती हैं।

7.120.4

कुलाचलगुहागेहवलनोद्यन्मृगाधिपाःसरन्त्यसुरसंरम्भैर्लवणार्णवमारुताः ॥ ४ ॥

kulācalaguhāgehavalanodyanmṛgādhipāḥsarantyasurasaṃrambhairlavaṇārṇavamārutāḥ || 4 ||

The lords of the animals, moving with the fragrant breezes of the salty ocean, stir the caves of the mountains with their powerful roars.

पशुओं के अधिपति, नमकीन समुद्र की सुगंधित हवाओं के साथ चलते हैं, अपने शक्तिशाली गर्जन से पहाड़ों की गुफाओं को हिलाते हैं।

7.120.5

तमालतालतरललीलान्दोलनलालिताःअनिलाजलकल्लोलोत्क्रान्तकोमलपल्लवाः ॥ ५ ॥

tamālatālataralalīlāndolanalālitāḥanilājalakallolotkrāntakomalapallavāḥ || 5 ||

The tender leaves of the swaying Tamala trees are adorned with the playful movements of the wind, creating delightful waves.

झूलते हुए तमाल के पेड़ों की कोमल पत्तियाँ हवा के खेल से सजी हुई हैं, जो मनमोहक लहरें पैदा करती हैं।

7.120.6

ललन्नवलतावान्तपुष्पधूलिविधूसराः । सरन्ति मरुतो मन्दमुद्यानेषु नृपा इव ॥ ६ ॥

lalannavalatāvāntapuṣpadhūlivadhūsarāḥ | saranti maruto mandamudyāneṣu nṛpā iva || 6 ||

The gentle breezes, colored by the pollen of the flowers of the newly blooming creepers, move slowly in the gardens like kings.

नव लताओं के फूलों की पराग धूल से रंगे हुए मन्द वायु उद्यानों में राजाओं की तरह धीरे-धीरे बहती हैं।

7.120.7

मधुरं वंशविश्रान्तो गातुमेष वनानिलः । प्रवृत्तः पाण्डुनगरनारीभिरिव शिक्षितः ॥ ७ ॥

madhuraṃ vaṃśaviśrānto gātumeṣa vanānilaḥ | pravṛttaḥ pāṇḍunagaranārībhiriva śikṣitaḥ || 7 ||

The forest breeze, having rested on the bamboo, sings sweetly, as if taught by the women of Pāṇḍu's city.

वन की हवा, जो बाँस पर विश्राम कर चुकी है, मधुर स्वर में गाती है, मानो पाण्डु नगर की नारियों द्वारा शिक्षित हो।

7.120.8

निकारः कर्णिकारेण पवनस्य यदा कृतः । तदा परिहरन्त्येनं भ्रमरा अपि दूरतः ॥ ८ ॥

nikāraḥ karṇikāreṇa pavanasya yadā kṛtaḥ | tadā pariharantyenaṃ bhramarā api dūrataḥ || 8 ||

When the breeze is scented with the fragrance of the Karṇikāra flowers, even the bees avoid it from a distance.

जब हवा कर्णिकार फूलों की सुगन्ध से भर जाती है, तब भ्रमर भी उससे दूर रहते हैं।

7.120.9

न ददाति फलं किंचिदर्थिने न च पल्लवम् । तालः स्तम्भतयाऽऽरम्भं ह्यरूपैव विनाऽऽकृतिः ॥ ९ ॥

na dadāti phalaṃ kiñcidarthine na ca pallavam | tālaḥ stambhatayā'ārambhaṃ hyarūpaiva vinā'ākṛtiḥ || 9 ||

The palm tree does not yield any fruit or leaves to the seeker; it begins with a trunk, devoid of any form.

ताड़ का पेड़ न तो फल देता है न ही पत्ते, यह एक तने के साथ शुरू होता है, जिसमें कोई आकृति नहीं होती।

7.120.10

राग एव हि शोभायै निर्गुणानां जडात्मनाम् । राजेव राजते राजन्रागेणैवैष किंशुकः ॥ १० ॥

rāga eva hi śobhāyai nirguṇānāṃ jaḍātmanām | rājeva rājate rājanrāgeṇaiva eṣa kiṃśukaḥ || 10 ||

It is passion alone that adorns the insentient and quality-less beings; like a king, this passion makes the Palash tree shine.

जड़ और गुणहीन वस्तुओं को सुशोभित करने वाला राग ही है; राजा की तरह, यह राग ही पलाश को चमकाता है।

7.120.11

आगच्छ कर्णिकारोऽयं विकारस्यैव भाजनम् । निरामोदः किमेतेन निर्गुणेनेव जन्तुना ॥ ११ ॥

āgaccha karṇikāro'yaṃ vikārasyaiva bhājanam| nirāmodaḥ kimeten nirguṇeneva jantunā || 11 ||

Come, this Karnikara tree is the vessel of transformation| What joy is there in this creature devoid of qualities?

आओ, यह कर्णिकार वृक्ष परिवर्तन का भाजन है| इस गुणहीन जीव में क्या आनंद है?

7.120.12

विलोलमञ्जरीजालतडित्सङ्गस्थितोऽसितः। चातकस्याम्बुदभ्रान्तिं तमालः कुरुते मुधा ॥ १२ ॥

vilolamañjarījālataditsaṅgasthito'sitaḥ| cātakasyāmbudabhrāntiṃ tamālaḥ kurute mudhā || 12 ||

The unsteady network of buds and lightning, the dark one stands| The Tamala tree foolishly causes the Chaataka bird's delusion about the cloud.

अस्थिर कलियों और बिजली का जाल, काला खड़ा है| तमाल वृक्ष मूर्खतापूर्वक चातक पक्षी को बादल का भ्रम कराता है|

7.120.13

पत्राला घनसंघाताः सच्छायावृतभूभृतः। गुणानां महतां योग्या वंशा वंशा इवोन्नताः ॥ १३ ॥

patrālā ghanasaṃghātāḥ sacchāyāvṛtabhūbhṛtaḥ| guṇānāṃ mahatāṃ yogyā vaṃśā vaṃśā ivotnatāḥ || 13 ||

The dense clusters of leaves cover the earth with shade| The bamboos, worthy of great qualities, stand tall like lineages.

घने पत्तों के झुंड पृथ्वी को छाया से ढके हुए हैं| महान गुणों के योग्य बाँस वंशों की तरह ऊँचे खड़े हैं|

7.120.14

हेमसान्वासनस्थोऽग्र्यो वातव्याधितटोऽम्बुदः। तडित्पीताम्बरं धत्ते क्षुब्धं हरिरिवोद्भवः ॥ १४ ॥

hemasānvāsanastho'gryo vātavyādhitato'mbudaḥ| taditpītāmbaraṃ dhatte kṣubdhaṃ haririvodbhavaḥ || 14 ||

The excellent one, situated in the golden seat, the cloud afflicted by the wind disease| It wears the lightning-yellow garment, like the agitated Hari at the beginning.

श्रेष्ठ, स्वर्ण आसन पर स्थित, वायु रोग से पीड़ित बादल| यह बिजली के पीले वस्त्र पहने हुए है, जैसे आरंभ में क्षुब्ध हरि|

7.120.15

प्रवेशनिर्गमव्यग्रतरत्खगशिलीमुखः। प्रफुल्लकिंशुको भाति वीरो रक्त इवासृजा ॥ १५ ॥

praveśanirgamavyagrataratkhagaśilīmukhaḥ| praphullakiṃśuko bhāti vīro rakta ivāsṛjā || 15 ||

The Palash tree, with its mouth full of busy birds entering and exiting, appears like a hero bathed in blood.

पलाश वृक्ष, जिसके मुख में प्रवेश और निर्गम करते व्यस्त पक्षियों से भरा हुआ है, रक्त से स्नान करने वाले वीर की तरह दिखाई देता है|

7.120.16

मन्दारमञ्जरीपुञ्जपिञ्जराम्भोदमन्दिरे। महेन्द्रमस्तके मत्ताः सुप्ता गन्धर्वकामिनः ॥ १६ ॥

mandāramañjarīpuñjapiñjarāmbhodamandire | mahendramastake mattāḥ suptā gandharvakāminaḥ || 16 ||

In the palace of clouds, which is like a cluster of mandara flowers, on the peak of Mahendra, the intoxicated Gandharva women are sleeping.

मन्दार फूलों के गुच्छे के समान बादलों के महल में, महेन्द्र पर्वत की चोटी पर, मतवाली गंधर्व स्त्रियाँ सो रही हैं।

7.120.17

कल्पद्रुमवनच्छाया विश्रान्ता विततान्विताः। पश्य पार्थिव गायन्ति सिद्धविद्याधराध्वगाः ॥ १७ ॥

kalpadrumavanačchāyā viśrāntā vitatānvitāḥ | paśya pārthiva gāyanti siddhavidyādharādhvagāḥ || 17 ||

See, O King, the Siddhas, Vidyadharas, and travelers are singing, resting in the shade of the Kalpa tree forest, adorned with spread out limbs.

देखो, हे राजन्, सिद्ध, विद्याधर और यात्री कल्पवृक्ष वन की छाया में फैले हुए अंगों से सुशोभित विश्राम कर रहे हैं और गा रहे हैं।

7.120.18

पश्य कल्पद्रुमस्यास्य पल्लवे पल्लवे वने । विश्रान्ताः सुरसुन्दर्यो गायन्ति च हसन्ति च ॥ १८ ॥

paśya kalpadrumasyāsya pallave pallave vane | viśrāntāḥ surasundaryo gāyanti ca hasanti ca || 18 ||

See, in every leaf of this Kalpa tree forest, the celestial beauties are resting, singing, and laughing.

देखो, इस कल्पवृक्ष वन के हर पत्ते में, दिव्य सुंदरियाँ विश्राम कर रही हैं, गा रही हैं और हँस रही हैं।

7.120.19

मन्दिरं मन्दपालस्य मन्दरे मृदुमन्दिरे । मुनेरिदमुदारस्य भार्या सा यस्य पक्षिणी ॥ १९ ॥

mandiraṃ mandapālasya mandare mṛdumandire | muneridamudārasya bhāryā sā yasya pakṣiṇī || 19 ||

This is the gentle abode of Mandapala on the Mandara mountain, the wife of that noble sage whose companion is a bird.

यह मन्दार पर्वत पर मन्दपाल का कोमल निवास है, उस उदार मुनि की पत्नी जिसकी साथी एक पक्षी है।

7.120.20

अन्योन्यामतसिंहेभनकुलोरगकेलिकाम् । पश्य मुन्याश्रमश्रेणिं सर्वर्तुकुसुमद्रुमाम् ॥ २० ॥

anyonyāmatasiṃhebhanakuloragakelikām | paśya munyāśramasreṇiṃ sarvartukusumadrumām || 20 ||

See the row of the sage's hermitage, adorned with flowers of all seasons, where lions and tigers play with snakes in harmony.

देखो ऋषि के आश्रम की पंक्ति, जो सभी ऋतुओं के फूलों से सुशोभित है, जहाँ सिंह और बाघ साँपों के साथ सद्भावना से खेलते हैं।

7.120.21

विद्रुमद्रुममिश्राणामम्भोधितटवीरुधाम् । बिम्बितार्काः कचन्त्येते पल्लवेषूदबिन्दवः ॥ २१ ॥

vidrumadrumamiśrāṇāmambhodhitataṭavīrudhām | bimbitārkāḥ kacantyete pallaveṣūdabindavaḥ || 21 ||

The water drops on the young leaves of the trees on the seashore, mixed with coral trees, shine like the sun.

समुद्र तट पर मोती और मणि के पेड़ों के मिश्रण से बने वृक्षों के नये पत्तों पर पड़े हुए पानी के कतरे सूर्य के समान चमकते हैं।

7.120.22

वीचयो रत्नमाणिक्यपदेष्वावर्तवृत्तिभिः । विलसन्ति विलासिन्यो वक्षःस्विव विलासिनाम् ॥ २२ ॥

vīcayo ratnamāṇikyapadeṣvāvartavṛttibhiḥ | vilasanti vilāsinyo vakṣaḥsviva vilāsinām || 22 ||

The waves in the ocean, with their whirlpools, shine like the breasts of beautiful women adorned with jewels.

समुद्र की लहरें, जिनमें भंवर हैं, जेवरों से सजी सुंदर महिलाओं के वक्ष के समान चमकती हैं।

7.120.23

नागलोकेन्द्रलोकस्त्रीगमनागमनोद्भवः । दिव्यो भूषणझांकारः श्रूयते नभसः शृणु ॥ २३ ॥

nāgalokendralokastrīgamanāgamanodbhavaḥ | divyo bhūṣaṇajhāṃkāraḥ śrūyate nabhasaḥ śṛṇu || 23 ||

The divine sound of the ornaments of the women from the Nagaloka and the heavenly realm can be heard in the sky.

नागलोक और देवलोक की महिलाओं के आभूषणों की दिव्य ध्वनि आकाश में सुनाई देती है।

7.120.24

श्रवणोपान्तविभ्रष्टमदमत्तालिनीस्वरैः । ऐरावणस्नानभुवो गायन्तीव गुहा गिरेः ॥ २४ ॥

śravaṇopāntavibhraṣṭamadamattālinīsvaraiḥ | airāvaṇasnānabhuvo gāyantīva guhā gireḥ || 24 ||

The cave in the mountain, resounding with the intoxicating sounds of the bees, seems to be singing like the bathing place of Airavana.

पर्वत की गुफा, जो मधुमत्त भौंरों की मधुर ध्वनि से गूँज रही है, ऐरावण के स्नानस्थल के समान गाती हुई प्रतीत होती है।

7.120.25

ह्रसतोऽनुदिनं कृष्णपक्षे कृष्णान्तलेखिकाः । दृश्यन्ते कृशगात्रस्य वास्तुकावलयोऽम्बुधेः ॥ २५ ॥

hrasato'nudinaṃ kṛṣṇapakṣe kṛṣṇāntalekhikāḥ | dṛśyante kṛśagātrasya vāstukāvalayo'mbudheḥ || 25 ||

The diminishing lines of the waning moon can be seen daily on the thin crescent of the ocean.

कृष्ण पक्ष में दिन प्रतिदिन घटती चन्द्रमा की रेखाएँ समुद्र की पतली लहरों पर दिखाई देती हैं।

7.120.26

आमोदगन्धश्वसना सच्छाया शीतलाङ्गिका । एकान्तदर्शिताकारा नानाकुसुमपूरिता ॥ २६ ॥

āmodagandhaśvasanā sacchāyā śītalāṅgikā | ekāntadarśitākārā nānākusumapūritā || 26 ||

The forest is fragrant, cool, and shady, filled with various flowers, and appears solitary.

वन सुगंधित, ठंडा और छायादार है, विभिन्न फूलों से भरा हुआ और एकांत में दिखाई देता है।

7.120.27

वनविन्यासवसना निर्झरामलहासिनी । आस्तीर्णपुष्पास्तरणा धन्या वनविलासिनी ॥ २७ ॥

vanavinyāsavasanā nirjharāmalahāsinī | āstīrṇapuṣpāstaraṇā dhanyā vanavilāsinī || 27 ||

The forest is adorned with various arrangements, laughing with clear streams, covered with a bed of flowers, and blessed with the enjoyment of the forest.

वन विभिन्न व्यवस्थाओं से सजा हुआ है, स्वच्छ झरनों के साथ हँसता है, फूलों की शय्या से ढका हुआ है, और वन के आनंद से धन्य है।

7.120.28

रमन्ते नन्दनोद्याने न तथोदारबुद्धयः । यथोपशान्तशब्दासु शुद्धासु वनभूमिषु ॥ २८ ॥

ramante nandanodyāne na tathodārabuddhayaḥ | yathopaśāntaśabdāsu śuddhāsu vanabhūmiṣu || 28 ||

Those with noble minds do not enjoy the Nandana garden as much as they enjoy the pure and quiet forest lands.

उदार बुद्धि वाले लोग नंदन उद्यान का आनंद उतना नहीं लेते जितना कि शांत और शुद्ध वनभूमि का।

7.120.29

सुविरक्तं मुनेश्चेतो रक्तं च विषयार्थिनः । रमयन्ति समं रम्या विजना वनभूमयः ॥ २९ ॥

suviraktaṃ muneśceto raktaṃ ca viṣayārthinaḥ | ramayanti samaṃ ramyā vijanā vanabhūmayaḥ || 29 ||

The delightful and solitary forest lands equally delight the minds of sages and those who seek pleasure.

सुंदर और एकांत वनभूमि मुनियों और सुख खोजने वालों के मन को समान रूप से प्रसन्न करती है।

7.120.30

सलिलाधौतवप्राणामम्भोधितटभूभृताम्। नूपुरैरिव रत्नौघैः पादा भान्ति ध्वनन्ति च ॥ ३० ॥

salilādhautavaprāṇāmambhodhitataṭabhūbhṛtām | nūpurairiva ratnaughaiḥ pādā bhānti dhvananti ca || 30 ||

The feet of those whose lives are purified by the ocean's waves shine and resonate like jewel-studded anklets.

जिनके जीवन समुद्र की लहरों द्वारा शुद्ध होते हैं, उनके पैर रत्नजड़ित पायल की तरह चमकते और गूँजते हैं।

7.120.31

पुंनागनगविश्रान्ताः कान्तकाञ्चनकान्तयः। हेमचूडाः खगा भान्ति दिवि देवगणा इव ॥ ३१ ॥

puṃnāganagaviśrāntāḥ kāntakāñcanakāntayaḥ| hemacūḍāḥ khagā bhānti divi devagaṇā iva || 31 ||

The birds, resting on the branches of the Punnaga trees, with golden crests, shine in the sky like the hosts of gods.

पुन्नाग वृक्षों की डालियों पर विश्राम करते हुए सोने के समान चमकते पक्षी आकाश में देवताओं के समूह की तरह चमक रहे हैं।

7.120.32

भ्रमराम्भोदधूमाढ्याः फुल्लचम्पककाननाः। कम्पन्ते पश्य वातेन ज्वलिता इव पर्वताः ॥ ३२ ॥

bhramarāmbhodadhūmāḍhyāḥ phullacampakakānanāḥ| kampante paśya vātena jvalitā iva parvatāḥ || 32 ||

Look, the groves of blooming Champaka trees, filled with the smoke of bees, tremble with the wind like mountains on fire.

देखो, भौंरों के धुएँ से भरे खिले हुए चम्पक वृक्षों के समूह हवा से काँप रहे हैं, जैसे आग लगे पर्वत की तरह।

7.120.33

कुर्वन्तं करवीराग्रलतान्दोलावदोलकम्। कोकिलं कोकिलालिङ्ग्य लोलालापयति प्रियम् ॥ ३३ ॥

kurvantaṃ karavīrāgralatāndolāvadolakam| kokilaṃ kokilāliṅgya lolālāpayati priyam || 33 ||

The cuckoo, clinging to the swinging tendrils of the Karavira plant, sings sweetly, swaying back and forth.

कोयल, करवीर पौधे की झूलती लताओं से चिपकी हुई, मधुर स्वर में गा रही है, आगे-पीछे झूलती हुई।

7.120.34

लसत्कलकलारावमेता लावणसैन्धवीः। पूर्णास्तटभुवो भूपैः पश्योपायनपाणिभिः ॥ ३४ ॥

lasatkalakalārāvametā lāvaṇasaindhavīḥ| pūrṇāstaṭabhuvo bhūpaiḥ paśyopāyanapāṇibhiḥ || 34 ||

Look, these salt-laden rivers are full, with kings holding water pots in their hands.

देखो, ये नमक से भरी नदियाँ पूरी हैं, राजाओं के हाथों में जल के घड़े हैं।

7.120.35

न शस्त्रैः परमैर्युक्तो न च युद्धविशारदः ॥ ३५ ॥

na śastraiḥ paramairyukto na ca yuddhaviśāradaḥ || 35 ||

Not equipped with the best weapons, nor skilled in warfare.

श्रेष्ठ शस्त्रों से सुसज्जित नहीं, न ही युद्ध कला में निपुण।

Chapter 121

7.121.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अथ तेष्वर्णवतटेष्वेते भूमौ विपश्चितः । उपविश्यैतदखिलं चक्रू राज्यप्रयोजनम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atha teṣvarṇavataṭeṣvetebhūmau vipaścitaḥ | upaviśyaitadakhilaṃ cakrū rājyaprayojanam || 1 ||

Shri Vasishtha said: Then, those wise men, having settled on the banks of the river, discussed all matters related to the kingdom.

श्री वसिष्ठ ने कहा: फिर, वे बुद्धिमान लोग, नदी के किनारे बैठकर, राज्य से संबंधित सभी मामलों पर चर्चा की।

7.121.2

तदा तत्रैव ते वासभूमिं कृत्वा यथाक्रमम् । तस्थुर्मण्डलमर्यादां स्थापयामासुरक्षताम् ॥ २ ॥

tadā tatraiva te vāsabhūmiṃ kṛtvā yathākramam | tasthurmaṇḍalamaryādāṃ sthāpayāmāsurakṣatām || 2 ||

At that time, they made that place their residence in an orderly manner and established the boundaries of their territory, ensuring its protection.

उस समय, उन्होंने उसी स्थान को अपना निवास स्थान बनाया और क्रमबद्ध ढंग से अपने क्षेत्र की सीमाएँ स्थापित कीं, उसकी सुरक्षा सुनिश्चित की।

7.121.3

अथ वर्णयितुं श्रीमांस्तत्प्रतापमिवागमत् । संप्रविश्य समुद्रान्तरन्यलोकान्तरं रविः ॥ ३ ॥

atha varṇayituṃ śrīmāṃstatpratāpamivāgamat | saṃpraviśya samudrāntaranyalokāntaraṃ raviḥ || 3 ||

Then, as if to describe his splendor, the glorious sun entered the other world beyond the ocean.

फिर, जैसे अपनी शोभा का वर्णन करने के लिए, शोभायमान सूर्य समुद्र के पार दूसरी दुनिया में प्रवेश किया।

7.121.4

आययौ यामिनीश्यामा मेघलेखेव तानवम् । संपादिताहर्व्यापारास्तस्थुः स्वशयनेषु ते ॥ ४ ॥

āyayau yāminīśyāmā meghalekheva tānavam | saṃpāditāharvyāpārāstasthuḥ svaśayaneṣu te || 4 ||

The dark night arrived like a cloudy line, and they, having completed their day's work, rested in their beds.

रात का अंधेरा बादलों की पंक्ति की तरह आया, और वे, अपने दिन के काम पूरे करके, अपने बिस्तरों पर विश्राम किया।

7.121.5

आसमुद्रं नदीवाहा इव दूरादुपागताः । इदं संपादयामासुर्विस्मयाकुलचेतसः ॥ ५ ॥

āsamudraṃ nadīvāhā iva dūrādupāgatāḥ | idaṃ saṃpādayāmāsurvismayākulacetasaḥ || 5 ||

Like rivers flowing into the ocean from afar, they, with minds filled with wonder, accomplished this.

जैसे नदियाँ दूर से समुद्र में बहती हैं, वैसे ही वे, आश्चर्य से भरे मन से, इसे संपन्न किया।

7.121.6

अहो नु दूरमध्वानं प्राप्ता वयमयत्नतः । प्रभावाद्देवदेवस्य वह्नेर्दिव्यैः स्ववाहनैः ॥ ६ ॥

aho nu dūramadhvānaṃ prāptā vayamayatnataḥ | prabhāvāddevadevasya vahnerdivyaiḥ svavāhanaiḥ || 6 ||

Oh, we have effortlessly reached this distant path | By the power of the supreme god of fire, with his divine vehicles || 6 ||

ओह, हम बिना किसी प्रयास के इस दूर के मार्ग तक पहुंच गए हैं | अग्नि देव की शक्ति से, उनके दिव्य वाहनों के साथ || 6 ||

7.121.7

कियती स्यात्प्रविस्तीर्णा दृश्यश्रीरियमातता । इतः समुद्रस्तदनु द्वीपभूरम्बुधिः प्रभुः ॥ ७ ॥

kiyatī syātpravistīrṇā dṛśyaśrīriyamātatā | itaḥ samudrastadanu dvīpabhūrambudhiḥ prabhuḥ || 7 ||

How vast is this visible splendor that has spread out? | From here, the ocean, then the island, the ocean is the lord || 7 ||

इस फैली हुई दृश्य शोभा कितनी विस्तृत है? | यहां से समुद्र, फिर द्वीप, समुद्र ही प्रभु है || 7 ||

7.121.8

इतो द्वीपं ततोऽम्भोधिः किमन्ते स्यात्ततोऽपि च । कियती कीदृशी वा स्यान्मायेयं चेत्यरूपिणी ॥ ८ ॥

ito dvīpaṃ tato'mbhodhiḥ kimante syāttato'pi ca | kiyatī kīdṛśī vā syānmāyeyaṃ cetyarūpiṇī || 8 ||

From here to the island, then the ocean, what will be at the end of that? | How much or what kind will this illusory form be? || 8 ||

यहां से द्वीप तक, फिर समुद्र, उसके अंत में क्या होगा? | यह भ्रामक रूप कितना होगा या कैसा होगा? || 8 ||

7.121.9

तत्प्रार्थयामहे देवं हुताशं तद्वरादिमाः । प्रेक्षामहे दिशः सर्वा आपर्यन्तमखेदिनः ॥ ९ ॥

tatprārthayāmahe devaṃ hutāśaṃ tadvadimāḥ | prekṣāmahe diśaḥ sarvā āparyantamakhedinaḥ || 9 ||

Therefore, we pray to the god of fire, the giver of boons | We will observe all directions to the farthest extent without fatigue || 9 ||

इसलिए, हम वरदायक अग्नि देव से प्रार्थना करते हैं | हम थके बिना सभी दिशाओं को अंत तक देखेंगे || 9 ||

7.121.10

इति संचिन्त्य ते सर्वे यथास्थानमवस्थिताः । सममेवाह्वयामासुर्भगवन्तं हुताशनम् ॥ १० ॥

iti saṃcintya te sarve yathāsthānamavasthitāḥ | samamevāhvayāmāsurbhagavantaṃ hutāśanam || 10 ||

Thus thinking, all of them stood in their respective places | They all equally invoked the blessed god of fire || 10 ||

ऐसा सोचकर, सभी अपने-अपने स्थानों पर खड़े हुए | सभी ने समान रूप से भगवान अग्नि देव को पुकारा || 10 ||

7.121.11

बभूव भगवानेषामथ दृश्यो हुताशनः । आकारवान्वरं पुत्राः प्रगृह्णीतेत्युवाच ह ॥ ११ ॥

babhūva bhagavāneṣāmatha dṛśyo hutāśanaḥ| ākāravānvaraṃ putrāḥ pragṛhṇītyuvāca ha || 11 ||

Then the Lord became visible to them, and Agni (the fire god) said, 'Accept the boon, O sons, in a visible form.'

तब भगवान उनके सामने प्रकट हुए, और अग्नि देव ने कहा, 'हे पुत्रो, दृश्य रूप में वर स्वीकार करो।'

7.121.12

विपश्चित ऊचुः। पञ्चभूतात्मकस्यास्य दृश्यस्यान्तं सुरेश्वर। देहेन मन्त्रदेहेन तदन्ते मनसापि च ॥ १२ ॥

vipaścit ūcuḥ| pañcabhūtātmakasyāsya dṛśyasyāntaṃ sureśvara| dehena mantradehena tadante manasāpi ca || 12 ||

The wise ones said, 'O Lord of the gods, we wish to see the end of this visible form composed of the five elements, first with the physical body, then with the mantra body, and finally with the mind.'

विद्वानों ने कहा, 'हे देवेश्वर, हम इस पंचभूतात्मक दृश्य रूप का अंत देखना चाहते हैं, पहले शारीरिक देह से, फिर मंत्र देह से, और अंत में मन से।'

7.121.13

यावत्संवेदनं यावत्संभवं यावदात्मकम्। पश्येम इति नो देव दीयतामुत्तमो वरः ॥ १३ ॥

yāvatsaṃvedanaṃ yāvatsaṃbhavaṃ yāvadātmakam| paśyema iti no deva dīyatāmuttamo varaḥ || 13 ||

We wish to see as much as we can perceive, as much as we can comprehend, and as much as is essential to our being. Therefore, O God, grant us the supreme boon.

हम उतना देखना चाहते हैं जितना हम समझ सकते हैं, जितना हम ग्रहण कर सकते हैं, और जितना हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसलिए, हे देव, हमें उत्तम वर प्रदान करें।

7.121.14

आसिद्धगम्यमध्वानं पश्येम वपुषा वयम्। तदन्ते मनसैवाथ दृश्यं पश्येम भो प्रभो ॥ १४ ॥

āsiddhagamyamadhvānaṃ paśyema vapuṣā vayam| tadante manasaivātha dṛśyaṃ paśyema bho prabho || 14 ||

We wish to see the path that is difficult to attain with our physical form. After that, O Lord, we wish to see the visible with the mind alone.

हम उस पथ को देखना चाहते हैं जो हमारे शारीरिक रूप से दुर्लभ है। उसके बाद, हे प्रभु, हम मन के द्वारा ही दृश्य को देखना चाहते हैं।

7.121.15

आसिद्धगम्यमध्वानं मृत्युरस्माकमस्तु मा। अध्वन्यसंभवद्देहे मन एव प्रयातु नः ॥ १५ ॥

āsiddhagamyamadhvānaṃ mṛtyurasmākamastu mā| adhvanyasaṃbhavaddhehe mana eva prayātu naḥ || 15 ||

May the difficult-to-attain path not be our death. In the body that arises from the path, may our mind alone proceed.

दुर्लभ पथ हमारी मृत्यु न हो। पथ से उत्पन्न शरीर में, हमारा मन ही आगे बढ़े।

7.121.16

श्रीवसिष्ठ उवाच अथैवमस्त्विति प्रोच्य पावकः सहसागमत् क्षणादौर्वतया यातुं समुद्र इव सत्वरः ॥ १६ ॥

śrīvāsiṣṭa uvāca athaivamastviti procā pāvakaḥ sahasāgamat kṣaṇādourvatayā yātuṁ samudra iva satvaraḥ || 16 ||

Shri Vasistha said, 'So be it,' and having said this, the fire suddenly appeared, swiftly moving like the ocean towards Aurva in an instant.

श्री वसिष्ठ ने कहा, 'ऐसा ही हो,' और यह कहकर अग्नि अचानक प्रकट हुआ, और और्व की ओर तेजी से बढ़ा, जैसे समुद्र की तरह एक क्षण में ही।

7.121.17

अग्निर्जगामाथ समाजगाम निशा विलम्ब्याथ जगाम सापि समाजगामापि रविर्जगाम तेषां च धीरार्णवलङ्घनेहा ॥ १७ ॥

agnirjagāmātha samājagāma niśā vilambyātha jagāma sāpi samājagāmāpi ravirjagāma teṣāṁ ca dhīrārṇavalangghanehā || 17 ||

The fire went, then the assembly gathered, the night lingered and then departed, the assembly gathered again, and the sun rose. All of them were eager to cross the ocean of wisdom.

अग्नि चली गई, फिर सभा एकत्र हुई, रात विलंब करके चली गई, फिर सभा एकत्र हुई, और सूर्य उदय हुआ। सभी ज्ञान के समुद्र को पार करने के लिए उत्सुक थे।

Chapter 122

7.122.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । ततः प्रभाते प्रसभं पृथिव्याः कृत्वा यथाशास्त्रमलं व्यवस्थाम् । आविष्टदेहा इव ते रसेन निषेध्यमाना इव मन्त्रिमुख्यैः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tataḥ prabhāte prasabhaṃ pṛthivyāḥ kṛtvā yathāśāstramalaṃ vyavasthām | āviṣṭadehā iva te rasena niṣedhyamānā iva mantrimukhyaiḥ || 1 ||

Shri Vasishtha said: Then, in the morning, having quickly arranged the earth according to the scriptures, they, as if possessed by the essence, were restrained by the chief ministers.

श्री वसिष्ठ ने कहा: फिर, सुबह, शास्त्रों के अनुसार पृथ्वी की व्यवस्था करने के बाद, वे जैसे रस से आविष्ट हो गए थे, मुख्य मंत्रियों द्वारा रोके गए थे।

7.122.2

निवार्य सर्वं परिवारमात्रमाक्रन्दमानं वदनै रुदद्भिः । निरस्य चास्नेहतयाभिमानमात्सर्यलोभाभिभवैषणादि ॥ २ ॥

nivārya sarvaṃ parivāramātramākrandamānaṃ vadanai rudadbhiḥ | nirasya cāsnehatayābhimānamātsaryalobhābhibhavaīṣaṇādi || 2 ||

Having restrained all the surrounding attendants who were crying out with weeping faces, they removed the pride of affection, envy, greed, and other desires.

सभी रोते हुए चेहरों वाले परिवार को रोककर, उन्होंने स्नेह का अभिमान, ईर्ष्या, लोभ और अन्य इच्छाओं को दूर कर दिया।

7.122.3

दिगन्तमालोक्य समुद्रपारे क्षणात्समायाम इति ब्रुवन्तः । स्वमन्त्रशक्त्योत्तमतां गतैस्तैरब्धिः पदैरेव तदा प्रविष्टः ॥ ३ ॥

digantamālokya samudrapāre kṣaṇātsamāyāma iti bruvantaḥ | svamantraśaktyottamatāṃ gataistairabdhiḥ padaireva tadā praviṣṭaḥ || 3 ||

Looking towards the horizon beyond the ocean, they said, 'We will reach there in an instant.' With the supreme power of their mantras, they entered the ocean with their feet.

समुद्र के पार क्षितिज की ओर देखकर, उन्होंने कहा, 'हम एक क्षण में वहाँ पहुँच जाएँगे।' अपने मंत्रों की उत्तम शक्ति से, उन्होंने अपने पैरों से समुद्र में प्रवेश किया।

7.122.4

विपश्चितस्ते दिशि दिश्यनल्पैर्भृत्यैः समुद्रं प्रविशद्भिरेव । भृत्यैश्च कैश्चित्त्वनुगम्यमाना ययुर्यथा वारिणि पद्भिरेव ॥ ४ ॥

vipaścitas te diśi diśyanalpairbhṛtyaiḥ samudraṃ praviśadbhireva | bhṛtyaiśca kaiścittvanugamyamānā yayuryathā vāriṇi padbhireva || 4 ||

Those wise ones, going in different directions with a few attendants, entered the ocean with their feet. Followed by some attendants, they went as if on water with their feet.

वे विद्वान लोग, कुछ सेवकों के साथ विभिन्न दिशाओं में जाते हुए, अपने पैरों से समुद्र में प्रवेश किया। कुछ सेवकों द्वारा अनुगमन किये जाते हुए, वे जैसे पानी पर अपने पैरों से चले गए।

7.122.5

तरङ्गजालेषु पदानि कृत्वा पृष्ठे स्थलस्येव जलस्य चान्तः । चत्वार एकैकतयैव युक्ता भृशं वियुक्ता निजसेनया ते ॥ ५ ॥

taraṅgajāleṣu padāni kṛtvā pṛṣṭhe sthalasyeva jalasya cāntaḥ | catvāra ekaikatayaiva yuktā bhṛśaṃ viyuktā nijasenayā te || 5 ||

Making their feet like the waves, they moved on the surface of the water as if it were land. The four of them, each individually, were strongly united with their own armies.

अपने पैरों को लहरों की तरह बनाकर, वे जल की सतह पर जैसे जमीन पर चले। चारों अलग-अलग अपनी-अपनी सेनाओं के साथ मजबूती से जुड़े हुए थे।

7.122.6

पदक्रमेणैव महार्णवान्तस्तावत्प्रविष्टा अवलोकितास्ते । तटस्थितैर्यावददृश्यभावं शरन्नभोमेघलवा इवापुः ॥ ६ ॥

padakrameṇaiva mahārṇavāntastāvatpraviṣṭā avalokitāste | taṭasthitairyāvadadṛśyabhāvaṃ śarannabhomeghalavā ivāpuḥ || 6 ||

Gradually they entered the vast ocean and were seen by those standing on the shore until they became invisible, as if dissolving into the clouds in the sky.

धीरे-धीरे वे विशाल समुद्र में प्रवेश कर गए और तट पर खड़े लोगों द्वारा देखे गए जब तक कि वे अदृश्य नहीं हो गए, मानो आकाश के बादलों में विलीन हो गए हों।

7.122.7

तमध्वानमथोहुस्ते जलधौ पादचारिणः । विततायवसायेन बद्धकक्षाहरा इव ॥ ७ ॥

tamadhvānamathohuste jaladhau pādacāriṇaḥ | vitatādhyavasāyena baddhakakṣāharā iva || 7 ||

They then spoke of that journey on foot in the ocean, with a firm resolve, as if they were bound by a girdle.

फिर उन्होंने समुद्र में पैदल यात्रा के बारे में दृढ़ संकल्प के साथ बात की, मानो वे कमरबंद से बँधे हों।

7.122.8

उन्नतावनतामद्रिसमारोहावरोहणैः । श्रियं वारितरङ्गाणां हरन्तो हरिमूर्तयः ॥ ८ ॥

unnatāvanatāmadrisamārohāvarohaṇaiḥ | śriyaṃ vāritaraṅgāṇāṃ haranto harimūrtayaḥ || 8 ||

With the ascent and descent of high and low mountains, they took away the beauty of the water waves, appearing like forms of Vishnu.

ऊँचे-नीचे पर्वतों के चढ़ने-उतरने से, वे जल की लहरों की शोभा को ले गए, मानो विष्णु के रूप हों।

7.122.9

आवर्तेषु तृणानीव भ्रान्ता विगतसंभ्रमम् । चिरं चञ्चलमत्ताभ्रचन्द्रमण्डलशोभिषु ॥ ९ ॥

āvarteṣu tṛṇānīva bhrāntā vigatasaṃbhramam | ciraṃ cañcalamattābhracandramaṇḍalaśobhiṣu || 9 ||

In the whirlpools, they wandered like blades of grass, free from confusion, for a long time in the restless, intoxicated cloud-moon orbs.

भंवरों में, वे घास की पत्तियों की तरह भटकते रहे, भ्रम से मुक्त, लंबे समय तक अस्थिर, मतवाले बादल-चंद्र मण्डलों में।

7.122.10

मन्त्रविद्याबलौजोभिर्दुर्जयाः शस्त्रपाणयः । क्वचित्प्रमत्तैर्मकरैर्निगीर्णोद्गीर्णदेहकाः ॥ १० ॥

mantravidyābalaujobhirdujayāḥ śastrapāṇayaḥ | kvacitpramattairmakarairnigīrṇodgīrṇadehakāḥ || 10 ||

With the power of mantras, knowledge, and strength, they were invincible with weapons in hand, sometimes swallowed and then regurgitated by careless crocodiles.

मंत्र, विद्या और बल की शक्ति से, वे हाथ में हथियार लिए अजेय थे, कभी-कभी लापरवाह मगरमच्छों द्वारा निगले और फिर उगले जाते थे।

7.122.11

जलकल्लोलविश्रान्तवातोत्सारितमूर्तयः । नीतानीताः क्षणेनैव योजनानां शतं शतम् ॥ ११ ॥

jalakallolaviśrāntavātotsāritamūrtayaḥ | nītānītāḥ kṣaṇenaiva yojanānāṃ śataṃ śatam || 11 ||

The forms, exhausted by the waves and driven by the wind, were carried away in an instant, a hundred yojanas.

लहरों से थके हुए और हवा से उड़ाए गए रूप, एक क्षण में सौ योजन दूर ले जाए गए।

7.122.12

जलकल्लोलमातङ्गतुङ्गिताङ्गतया तया । दधाना निजराज्येभपृष्ठरोहस्थितिश्रियम् ॥ १२ ॥

jalakallolamātaṅgatuṅgitāṅgatayā tayā | dadhānā nijarājyebhapṛṣṭharohasthitiśriyam || 12 ||

With the waves rising like the high shoulders of an elephant, they bore the splendor of their own kingdom on their backs.

लहरें हाथी के ऊँचे कंधों की तरह उठी हुई थीं, और उन्होंने अपने राज्य की शोभा को अपनी पीठ पर धारण किया।

7.122.13

विस्तीर्णोर्मिघटापट्टपाटपट्टनपाटवैः । दर्शयन्तो जलाम्भोदनिष्क्रान्तिं मारुता इव ॥ १३ ॥

vistīrṇormighaṭāpaṭṭapāṭapaṭṭanapāṭavaiḥ | darśayanto jalāmbhodaniṣkrāntiṃ mārutā iva || 13 ||

With the spread of the waves' splashing sounds, they displayed the emergence of water clouds, like the wind.

लहरों के फैले हुए छपाक की आवाजों के साथ, वे पानी के बादलों के उभरने को हवा की तरह दिखाते हैं।

7.122.14

तरत्तरलमातङ्गतरङ्गौघविघट्टिताः । अत्यजन्तो निजं धैर्यं वेलावरतटा इव ॥ १४ ॥

tarattaralamātaṅgataraṅgaughavighaṭṭitāḥ | atyajanto nijaṃ dhairyaṃ velāvaratatā iva || 14 ||

Disturbed by the multitude of waves resembling the swift elephants, they abandoned their courage like the shoreline.

हाथी की तरह तेज लहरों के समूह से विचलित होकर, वे तट की तरह अपना साहस छोड़ देते हैं।

7.122.15

महोर्मिमुक्तामाणिक्यमण्डलप्रतिबिम्बिताः । एकाकिनोऽपि परितः पौरुषेयवृता इव ॥ १५ ॥

mahormimuktāmāṇikyamaṇḍalapratibimbitāḥ | ekākino'pi paritaḥ pauruṣeyavṛtā iva || 15 ||

Reflected by the circles of pearls released by the great waves, they appeared as if surrounded by attendants, even when alone.

बड़ी लहरों द्वारा छोड़े गए मोतियों के चक्रों से प्रतिबिम्बित होकर, वे अकेले होने पर भी परिचारकों से घिरे हुए लगते हैं।

7.122.16

पाण्डुडिण्डीरपिण्डेषु कुर्वन्तो लाघवात्पदम् । श्वेतपद्मपरिक्रान्तराजहंसश्रियं दधुः ॥ १६ ॥

pāṇḍuḍiṇḍīrapiṇḍeṣu kurvanto lāghavātpadam| śvetapadmaparikrāntarājahaṃsaśriyaṃ dadhuḥ || 16 ||

In the white lotus ponds, they moved gracefully, like royal swans adorned with white lotuses.

श्वेत कमल तालाबों में, वे सुंदरता से चलते थे, जैसे श्वेत कमलों से सजे हुए राजहंस।

7.122.17

घननिर्घातनिर्घोषभीषणार्णवघुंघुमात् । न भीता भूभृतस्तत्र वेलावलनजृम्भितात् ॥ १७ ॥

ghananirghātanirghoṣabhīṣaṇārṇavaghuṃghumāt| na bhītā bhūbhṛtastatra velāvalanajṛmbhitāt || 17 ||

In the terrifying roar of the dense clouds and the ocean's waves, the earth-bearers were not afraid there, despite the waves crashing.

घने बादलों और समुद्र की लहरों के भयानक गर्जन में, वहाँ धरती के धारक डरे नहीं, हालांकि लहरें टूट रही थीं।

7.122.18

अभ्रंलिहजलाद्रीन्द्रपातोत्पातविघट्टिताः । क्षणं पातालमाजग्मुः क्षणमर्कास्पदं ययुः ॥ १८ ॥

abhraṃlihajalādrīndrapātotpātavighaṭṭitāḥ| kṣaṇaṃ pātālamājagmuḥ kṣaṇamarkāspadaṃ yayuḥ || 18 ||

Tossed by the stormy clouds and the tumultuous rain, they reached the underworld in a moment and the next moment, they reached the abode of the sun.

आंधी के बादलों और भयंकर वर्षा से उलझे हुए, वे एक पल में पाताल लोक पहुंचे और अगले पल सूर्य के आस्पद पर पहुंचे।

7.122.19

अशङ्कितोत्पतद्वारिपूरपातपटावृताः । उत्पातपातनिपतद्वितानकवृता इव ॥ १९ ॥

aśaṅkitotpatadvāripuurapātapaṭāvṛtāḥ| utpātapātanipatadvitānakavṛtā iva || 19 ||

They were covered with the pouring rain that fell without fear, as if covered by the falling canopy of calamities.

वे बिना डर के बरसते हुए पानी से ढंके हुए थे, जैसे कि विपत्ति के गिरते हुए छत से ढंके हुए थे।

7.122.20

प्रक्रान्तास्तेम्बुराशौ सहचरमकराः शूरनक्रैः कुलीरैर्व्याप्तावर्ताविवृत्ताः सलिलतरुलतासीकरैरन्तरालैः । कुर्वन्तः कान्तियुक्तं वपुरिव कुसुमैर्भ्रान्तमाणिक्यमुक्तैर्व्यक्ताव्यक्तांशुजालैः प्रतिपदमितरैरभ्ररूपैरदभ्रैः ॥ २० ॥

prakrāntāstemburāśau sahacaramakarāḥ śūranakraiḥ kulīrairvyāptāvartāvivṛttāḥ
salilatarulatāsīkarairantarālaiḥ| kurvantaḥ kāntiyuktaṃ vapuriva
kusumairbhrāntamāṇikyamuktairvyaktāvyaktāṃśujālaiḥ pratipadamitarairabhrarūpairadabhraiḥ || 20 ||

They moved gracefully in the sky, accompanied by brave crocodiles and otters, spreading out in the whirlpools, with intertwining water plants and flowers, creating a beautiful form adorned with scattered gems and clear and unclear rays of light.

वे आकाश में सुंदरता से चले, शूरवीर मगरमच्छों और उदबिलावों के साथ, भंवरों में फैले हुए, जल पौधों और फूलों के साथ जुड़े हुए, बिखरे हुए रत्नों और स्पष्ट और अस्पष्ट प्रकाश की किरणों से सुशोभित एक सुंदर रूप बनाते हुए।

Chapter 123

7.123.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्येते दृश्यरूपाया अविद्याया विचारणे । प्रवृत्ताः पादचारेण समुद्रद्वीपगामिनः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ityete dṛśyarūpāyā avidyāyā vicāraṇe | pravṛttāḥ pādacāreṇa samudradvīpagāminaḥ || 1 ||

Shri Vasistha said: These, having embarked on the contemplation of ignorance in the form of the visible, proceeded on foot like those who travel to the islands of the ocean.

श्री वसिष्ठ ने कहा: ये लोग, जो अविद्या के दृश्य रूप के विचार में प्रवृत्त हुए, पैदल चलकर समुद्र के द्वीपों की यात्रा करने वालों की तरह चले गए।

7.123.2

अब्धेर्द्वीपं पुनर्द्वीपादब्धिं द्वीपं गिरिं वनम् । लाघवाल्लङ्घयामासुश्छेदभेदविवर्जिताः ॥ २ ॥

abdherdvīpaṃ punardvīpādabdhiṃ dvīpaṃ giriṃ vanam | lāghavāllaṅghayāmāsuśchedabhedavivarjitāḥ || 2 ||

From the ocean to the island, from the island to the ocean, from the mountain to the forest, they crossed effortlessly, without any distinction or division.

समुद्र से द्वीप तक, द्वीप से समुद्र तक, पर्वत से वन तक, वे सहजता से पार कर गए, बिना किसी भेद या विभाजन के।

7.123.3

पीतो विपश्चित्पाश्चात्यो मीनेनामरमानिना । विष्णुमीनकुलोत्थेन वितस्तावाहनौजसा ॥ ३ ॥

pīto vipaścitpāścātyo mīnenāmaramāninā | viṣṇumīnakulotthena vitastāvāhanaujasā || 3 ||

Drinking the nectar of knowledge, the wise one from the west, carried by the immortal fish born from the Vishnu-fish lineage, with the strength of the Vitasta river.

ज्ञान के अमृत को पीकर, पश्चिम का विद्वान्, विष्णु-मीन वंश से उत्पन्न अमर मछली द्वारा वितस्ता नदी के बल से ले जाया गया।

7.123.4

क्षीरोदं प्राप्य मत्स्येन तेनोद्गीर्णः सुदुर्जरः । तेन क्षीरोदमुल्लङ्घ्य गतो दूरं दिगन्तरम् ॥ ४ ॥

kṣīrodaṃ prāpya matsyena tenodgīrṇaḥ sudujarḥ | tena kṣīrodamullaṅghya gato dūraṃ digantaram || 4 ||

Reaching the ocean of milk, carried by the fish, he was lifted up, very difficult to conquer. Crossing the ocean of milk, he went far to the distant horizon.

क्षीर सागर तक पहुंचकर, मछली द्वारा उठाया गया, वह अत्यंत दुर्जय था। क्षीर सागर को पार करके, वह दूर दिगंत तक गया।

7.123.5

दक्षिणो यक्षनगरे संप्रेक्ष्येक्षुरसार्णवे । शिक्षादक्षिणयाक्षिप्य यक्षिण्या कामुकीकृतः ॥ ५ ॥

dakṣiṇo yakṣanagare saṃprekṣyekṣurasārṇave | śikṣādakṣiṇayākṣipya yakṣiṇyā kāmukīkṛtaḥ || 5 ||

In the south, in the city of the Yakshas, seeing the ocean of sugarcane juice, he was attracted by the Yakshini with the skill of Dakshina, making him desirous.

दक्षिण में, यक्ष नगर में, ईख के रस के सागर को देखकर, उसे दक्षिणा की कला से यक्षिणी ने आकर्षित किया, जिससे उसे कामुक बना दिया।

7.123.6

पूर्वो मकरमाक्रम्य यदा गङ्गां निकृत्तवान्। गङ्गया स तदानीय कान्यकुब्जे समुज्झितः ॥ ६ ॥

pūrvo makaramākrāmya yadā gaṅgāṃ nikṛttavān| gaṅgayā sa tadānīya kānyakubje samujjhitaḥ || 6 ||

When the eastern direction, having crossed the Makara constellation, cut off the Ganges, it was then worshipped in Kannauj with the Ganges.

जब पूर्व दिशा मकर राशि को पार करके गंगा को काट दिया, तब गंगा के साथ कन्नौज में पूजा की गई।

7.123.7

उत्तरस्तूत्तरकुरूनाराध्य प्राप्तवाञ्श्रियम्। तं तयैनं न बाधन्ते दिगन्ते मृतभीतयः ॥ ७ ॥

uttarastūttarakurūnārādhya prāptavāñśriyam| taṃ tayainaṃ na bādhante digante mṛtabhītayaḥ || 7 ||

The northern direction, having worshipped the Uttarakurus, obtained prosperity. It is not troubled by the fears of death at the ends of the directions.

उत्तर दिशा उत्तरकुरुओं की पूजा करके समृद्धि प्राप्त करती है। दिशाओं के अंत में मृत्यु के भय से वह परेशान नहीं होती।

7.123.8

तया मकरमातङ्गनिगीर्णोद्गीर्णमूर्तिमान्। अतिचक्राम सुबहून्द्वीपान्तरकुलाचलान् ॥ ८ ॥

tayā makaramātaṅganigīrṇodgīrṇamūrtimān| aticakrāma subahūndvīpāntarakulācalān || 8 ||

With the help of the Ganges, having swallowed the Makara and the elephant, and having risen, it crossed many islands and mountain ranges.

गंगा की सहायता से, मकर और हाथी को निगलकर और उठकर, वह कई द्वीपों और पर्वत श्रृंखलाओं को पार कर गया।

7.123.9

पश्चिमः पृष्ठमारोप्य हेमचूडेन पक्षिणा। कुशद्वीपे कुशाङ्गश्रीस्तरसा तारतोऽर्णवान् ॥ ९ ॥

paścimaḥ pṛṣṭhamāropya hemacūḍena pakṣiṇā| kuśadvīpe kuśāṅgaśrīstarasā tārato'rṇavān || 9 ||

The western direction, placing the back on the golden-crested bird, quickly crossed the oceans to Kushadvipa with the glory of Kushang.

पश्चिम दिशा, सोने के चोटी वाले पक्षी पर पीठ रखकर, कुशांग की श्री के साथ तेजी से कुशद्वीप तक समुद्रों को पार कर गया।

7.123.10

क्रौञ्चद्वीपाचले पूर्वो निगीर्णो रक्षसा वने। तद्रक्षः पाटितं तेन हृदयेऽन्त्रविकर्तनैः ॥ १० ॥

krauñcadvīpācale pūrvo nigīrṇo rakṣasā vane| tadrakṣaḥ pāṭitaṃ tena hṛdaye'ntravikartanaiḥ || 10 ||

In the forest on the Krauncha mountain of the eastern island, swallowed by a demon, that demon was torn apart by him with the tearing of the heart and intestines.

पूर्व द्वीप के क्रौंच पर्वत के वन में, एक राक्षस द्वारा निगले जाने पर, उस राक्षस को हृदय और आंतों को चीरकर फाड़ दिया गया।

7.123.11

दक्षिणो दक्षशापेन यक्षतामागतः क्षणात्। शाकद्वीपे शतेनासौ वर्षाणां मोक्षमागतः ॥ ११ ॥

dakṣiṇo dakṣaśāpena yakṣatāmāgataḥ kṣaṇāt | śākadvīpe śatena asau varṣāṇāṃ mokṣamāgataḥ || 11 ||

Dakshina, due to the curse of Daksha, became a Yaksha in an instant. In Shakadvipa, he attained liberation after a hundred years.

दक्षिण दक्ष के शाप से क्षणभर में यक्ष बन गए। शाकद्वीप में सौ वर्षों के बाद उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया।

7.123.12

उत्तरस्तरसोत्तीर्णतारावरतरङ्गिणः । महार्णवसुवर्णोर्व्यां सिद्धशापाच्छिलां गतः ॥ १२ ॥

uttarastarasottīrṇatārāvarataraṅgiṇaḥ | mahārṇavasuvarṇorvyāṃ siddhaśāpācchilāṃ gataḥ || 12 ||

Uttara, having crossed the turbulent waves of the great ocean, reached the rock due to the curse of the Siddha.

उत्तर, महान समुद्र के उग्र तरंगों को पार करके, सिद्ध के शाप से शिला तक पहुंच गए।

7.123.13

ततो वर्षशतेनासौ प्रसादाज्जातवेदसः । तेनैवोन्मोचितस्तत्र सिद्धेन रतिमाप्तवान् ॥ १३ ॥

tato varṣaśatena asau prasādājjātavedasaḥ | tenaivonmocitastatra siddhena ratimāptavān || 13 ||

Then, after a hundred years, by the grace of Jatavedas, he was liberated there by the Siddha and attained bliss.

तब, सौ वर्षों के बाद, जातवेदस की कृपा से, वह सिद्ध द्वारा वहां मुक्त हुआ और आनंद प्राप्त किया।

7.123.14

वर्षाण्यष्टावभूद्राजा नालिकेरनिवासिनाम् । पूर्वः परमधर्मिष्ठः प्राप्तवान्प्राक्स्मृतिं ततः ॥ १४ ॥

varṣāṇyaṣṭāvabhūdrājā nālikeranivāsinām | pūrvaḥ paramadharmiṣṭhaḥ prāptavānprākasmṛtiṃ tataḥ || 14 ||

He became the king of the inhabitants of Nalikera for eight years. Previously, he was highly righteous and then attained ancient memory.

वह नालिकेर के निवासियों का राजा आठ वर्षों तक बना। पहले, वह बहुत धार्मिक था और फिर प्राचीन स्मृति प्राप्त की।

7.123.15

कल्पवृक्षवने मेरोरुत्तरेऽप्सरसा सह । उवास दशवर्षाणि नालिकेरफलाशनः ॥ १५ ॥

kalpavṛkṣavane meroruttare'psarasā saha | uvāsa daśavarṣāṇi nālikeraphalāśanaḥ || 15 ||

He lived in the Kalpavriksha forest on the northern side of Meru with an Apsara for ten years, eating Nalikera fruits.

वह मेरु के उत्तरी भाग में कल्पवृक्ष वन में एक अप्सरा के साथ दस वर्षों तक रहा, नालिकेर फल खाते हुए।

7.123.16

विहगाश्वासतत्त्वज्ञः शाल्मलिद्वीपशाल्मलौ । पश्चिमः पक्षिणीनीडे क्रीडया न्यवसत्समाः ॥ १६ ॥

vihagāśvāsatattvajñaḥ śālmalidvīpaśālmalau | paścimaḥ pakṣiṇīnīḍe krīḍayā nyavasatsamāḥ || 16 ||

The one who knows the truth about the birds and horses, resided for years in the western part of the island of Shalmali, in the nest of the birds, playing joyfully.

जो पक्षियों और घोड़ों के तत्त्व को जानता है, वह शाल्मली द्वीप के पश्चिमी भाग में पक्षियों के घोंसले में खेल-खेल में कई वर्षों तक रहा।

7.123.17

मन्दराद्रौ मृदुतले मन्दारतरुमन्दिरे । किन्नरी मन्दरीनाम्नी दिनमेकमसेवत ॥ १७ ॥

mandarādrau mṛdutale mandāratarumandire | kinnarī mandarīnāmnī dinamekamasevata || 17 ||

In the soft ground of Mount Mandara, in the abode of the Mandara tree, a Kinnari named Mandari served for one day.

मंदराचल की कोमल भूमि में, मंदार वृक्ष के निवास में, मंदरी नाम की एक किन्नरी एक दिन सेवा करती रही।

7.123.18

क्षीरोदवेलावनकल्पवृक्षवनावलीनन्दनदेवताभिः । सार्धं समाः सप्ततिमप्सरोभिर्निनाय कामाकुलितोऽथ पूर्वः ॥ १८ ॥

kṣīrodavelāvanakalpavṛkṣavanāvalīnandanadevatābhiḥ | sārdhaṃ samāḥ saptatimapsarobhirninaya kāmākulito'tha pūrvaḥ || 18 ||

Along with the divine beings of the grove of wish-fulfilling trees in the garden of the ocean of milk, he spent seventy years with the Apsaras, overwhelmed by desire.

दूध के समुद्र के उद्यान के कल्पवृक्ष वन की देवताओं के साथ, वह सत्तर वर्षों तक अप्सराओं के साथ काम से व्याकुल होकर बिताया।

Chapter 124

7.124.1

श्रीराम उवाच । एकसंविन्मयाः सर्व एवैकवपुषोऽपि ते । विविधेच्छाः कथं ब्रह्मन्संपन्ना एकदेहिनः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | ekasaṃvinmayāḥ sarva evaikavapuṣo'pi te | vividhecchāḥ kathaṃ brahmannsaṃpannā ekadehinaḥ || 1 ||

Sri Rama said: O Brahman, how do various desires arise in those who are of one consciousness and one body?

श्री राम ने कहा: हे ब्रह्मन्, एक चेतना और एक शरीर वालों में विविध इच्छाएँ कैसे उत्पन्न होती हैं?

7.124.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । एकसंविद्धनाकाशमप्यनानैव सर्वगम् । स्वयं नानेव संपन्नं सुप्ते चित्तमिवात्मनि ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ekasaṃviddhanākāśamapyanānaiva sarvagam | svayaṃ nāneva saṃpannaṃ supte cittamivātmani || 2 ||

Vasistha said: Even the single space of consciousness is all-pervading and diverse. It appears diverse, like the mind in sleep, within the self.

वसिष्ठ ने कहा: चेतना का एक अंतरिक्ष भी सर्वव्यापी और विविध है। यह विविध प्रतीत होता है, जैसे नींद में मन, आत्मा में।

7.124.3

तस्याच्छत्वात्तथाभूतमात्मैवात्मनि बिम्बति । तादृशस्य तथाभूतौ मुकुरस्येव निर्मला ॥ ३ ॥

tasyācchatvāttathābhūtamātmaivaātmani bimbiti | tādṛśasya tathābhūtau mukurasyaiva nirmalā || 3 ||

Due to its reflective nature, the self itself reflects in the self. Just as a clear mirror reflects objects, so does the self reflect in its pure state.

अपनी प्रतिबिम्बित प्रकृति के कारण, आत्मा स्वयं आत्मा में प्रतिबिम्बित होती है। जैसे एक साफ दर्पण वस्तुओं को प्रतिबिम्बित करता है, वैसे ही आत्मा अपने शुद्ध अवस्था में प्रतिबिम्बित होती है।

7.124.4

एकलोहमया एव यथादर्शाः परस्परम् । तथैते प्रतिबिम्बन्ति पदार्थाः पारमार्थिकाः ॥ ४ ॥

ekalohamayā eva yathādarśāḥ parasparam | tathaite pratibimbanti padārthāḥ pāramārthikāḥ || 4 ||

Just as mirrors made of the same metal reflect each other, so do the ultimate realities reflect each other.

जैसे एक ही धातु से बने दर्पण एक-दूसरे को प्रतिबिम्बित करते हैं, वैसे ही परम वास्तविकताएँ एक-दूसरे को प्रतिबिम्बित करती हैं।

7.124.5

तेन यस्य यदा यद्यत्पुरो भवति वस्त्वसौ । यदर्थं युज्यते तेन चिद्धनैकस्वभावतः ॥ ५ ॥

tena yasya yadā yadyatpuro bhavati vastvasau | yadarthaṃ yujyate tena ciddhanaikasvabhāvataḥ || 5 ||

Therefore, whatever object appears before anyone at any time, it is experienced according to the nature of pure consciousness.

इसलिए, जो भी वस्तु किसी के सामने कभी भी प्रकट होती है, वह शुद्ध चेतना की प्रकृति के अनुसार अनुभव की जाती है।

7.124.6

इत्यनानैव नानेदं नानानाना च वस्तुतः । न च नाना न चानाना नानानानात्मकं ततः ॥ ६ ॥

ityanānaiva nānedaṃ nānānānā ca vastutaḥ | na ca nānā na cānānā nānānānātmakaṃ tataḥ || 6 ||

Thus, it is not diverse, nor is it uniform, nor is it diverse in reality | Neither is it diverse, nor is it uniform, nor is it of a diverse nature || 6 ||

इस प्रकार, यह न तो विविध है, न ही एकरूप है, न ही वास्तव में विविध है | न तो यह विविध है, न ही एकरूप है, न ही विविध स्वभाव का है || ६ ||

7.124.7

तेन यस्य यदायातं पुरो वस्तु विपश्चितः । स तेन संविन्मयतामेत्य तद्वशमागतः ॥ ७ ॥

tena yasya yadāyātaṃ puro vastu vipaścitaḥ | sa tena saṃvinmayatāmetya tadvashamāgataḥ || 7 ||

By that, whatever object comes before the wise | He becomes absorbed in that, coming under its influence || 7 ||

उससे, जो भी वस्तु बुद्धिमान के सामने आती है | वह उसमें डूब जाता है, उसके प्रभाव में आकर || ७ ||

7.124.8

एकदेशगता विष्वग्व्याप्य कर्माणि कुर्वते । योगिनस्त्रिषु कालेषु सर्वाण्यनुभवन्त्यपि ॥ ८ ॥

ekadeśagatā viṣvagvyāpya karmāṇi kurvate | yoginastriṣu kāleṣu sarvāṇyanubhavantyapi || 8 ||

Those who are situated in one place, pervade everywhere, performing actions | Yogis experience all in three times || 8 ||

जो एक स्थान पर स्थित हैं, वे सर्वत्र व्याप्त होते हैं, कर्म करते हैं | योगी तीनों समय में सब कुछ अनुभव करते हैं || ८ ||

7.124.9

अब्दोऽपि व्याप्तिमानेकस्तुल्यकालं पृथक्क्रियाः । आह्लादस्तेन पादेन करोत्यनुभवत्यपि ॥ ९ ॥

abdo'pi vyāptimānekaḥ tulyakālaṃ pṛthakkriyāḥ | āhlādas tena pādena karotyanubhavatyapi || 9 ||

Even the sky, being all-pervading, performs different actions at the same time | It experiences joy with that part || 9 ||

आकाश भी, सर्वव्यापक होने के कारण, एक ही समय में अलग-अलग क्रियाएँ करता है | उस भाग से आनंद का अनुभव करता है || ९ ||

7.124.10

तुल्यकालमसंख्यातमीश्वरप्रतियोगिनः । कर्मजालं जगज्जातं कुर्वन्त्यनुभवन्ति च ॥ १० ॥

tulyakālamasaṃkhyātamīśvarapratiyoginaḥ | karmajālaṃ jagajjātaṃ kurvantyanubhavanti ca || 10 ||

At the same time, the countless actions of those who are connected with the Lord | They perform and experience the web of actions born in the world || 10 ||

एक ही समय में, भगवान से जुड़े हुए असंख्य कर्म | वे संसार में उत्पन्न कर्मों के जाल को करते हैं और अनुभव करते हैं || १० ||

7.124.11

एको विष्णुश्चतुर्भिः स्वैर्बाहुभिर्वा शरीरकैः । पृथक्कुर्वन्क्रियाः पाति जगद्भुंक्ते वराङ्गनाः ॥ ११ ॥

eko viṣṇuścaturbhiḥ svairbāhubhirvā śarīrakaiḥ | pṛthakkurvankriyāḥ pāti jagadbhuṃkte varāṅganāḥ || 11 ||

The one Vishnu, with his four arms or bodies, performs various actions, protects the world, and enjoys with beautiful women.

एक विष्णु, अपने चार भुजाओं या शरीरों से, विभिन्न क्रियाएँ करता है, जगत की रक्षा करता है, और सुंदर स्त्रियों के साथ आनंद लेता है।

7.124.12

बहुबाहुर्यदा द्वाभ्यां हस्ताभ्यां ह्यर्थसंग्रहम् । करोति बहुभिर्भूयः संग्रामं सततं करैः ॥ १२ ॥

bahubāhuryadā dvābhyāṃ hastābhyāṃ hyarthasaṃgraham | karoti bahubhirbhūyaḥ saṃgrāmaṃ satataṃ karaiḥ || 12 ||

When the many-armed one, with two hands, accumulates wealth, with many arms, he continuously engages in battle.

जब बहुभुजाधारी, दो हाथों से, धन एकत्र करता है, बहुत से हाथों से, वह निरंतर युद्ध में लगा रहता है।

7.124.13

तथैव तैर्विपश्चिद्भिः सर्वदिक्कं तथा स्थितैः । तथा व्यवहृतं प्राप्तमेकसंविन्मयैरपि ॥ १३ ॥

tathaiva tairvipaścidbhiḥ sarvadikkam tathā sthitaiḥ | tathā vyavahṛtaṃ prāptamekasaṃvinmayairapi || 13 ||

Similarly, with those wise ones, situated in all directions, thus engaged in activities, even with one consciousness.

इसी प्रकार, उन ज्ञानी पुरुषों के साथ, जो सभी दिशाओं में स्थित हैं, इस प्रकार क्रियाओं में लगे हुए, एक चेतना से भी।

7.124.14

सुप्तं तैर्भूमिशय्यासु भुक्तं द्वीपान्तरेषु च । विहृतं वनलेखासु प्रक्रान्तं मरुभूमिषु ॥ १४ ॥

suptaṃ tairbhūmiśayyāsu bhuktam dvīpāntareṣu ca | vihṛtaṃ vanalekhāsu prakrāntaṃ marubhūmiṣu || 14 ||

Sleeping on the earth as a bed, eating in other islands, enjoying in forest areas, wandering in desert lands.

भूमि पर शयन करते हुए, अन्य द्वीपों में भोजन करते हुए, वन क्षेत्रों में आनंद लेते हुए, मरुभूमि में भटकते हुए।

7.124.15

उषितं गिरिमालासु भ्रान्तं सागरकुक्षिषु । विश्रान्तं द्वीपलेखासु निलीनं घनमालिषु ॥ १५ ॥

uṣitaṃ girimālāsu bhrāntaṃ sāgarakukṣiṣu | viśrāntaṃ dvīpalekhāsu nilīnaṃ ghanamāliṣu || 15 ||

Dwelling in mountain ranges, wandering in the depths of the ocean, resting in island areas, hidden in cloud formations.

पर्वत श्रृंखलाओं में निवास करते हुए, समुद्र की गहराइयों में भटकते हुए, द्वीप क्षेत्रों में विश्राम करते हुए, बादलों की मालाओं में छिपे हुए।

7.124.16

रूढमर्णवमालासु वात्यासु जलवीचिषु । क्रीडितं भूभृदब्धीनां तटीषु नगरीषु च ॥ १६ ॥

rūḍhamarṇavamālāsu vātyāsu jalavīciṣu | krīḍitaṃ bhūbhṛdabdhīnāṃ taṭīṣu nagarīṣu ca || 16 ||

In the well-established ocean waves, in the gusts of wind, in the water waves, the play of the wise earth-bearers on the shores and in the cities.

स्थिर समुद्र लहरों में, हवाओं में, जल की लहरों में, बुद्धिमान पृथ्वी धारकों का खेल तटों और नगरों में।

7.124.17

शाकद्वीपोदयगिरितटे सप्तवर्षाणि सुप्तं पूर्वेणान्तर्विदलगहने यक्षसंमोहितेन । पाषाणाम्बु प्रसभममुनैवात्र पीत्वा दृषत्तामागत्यान्तः स्थितमथ समाः सप्त जात्येन भूमेः ॥ १७ ॥

śākadvīpodayagiritaṭe saptavarṣāṇi suptaṃ pūrveṇāntarvidalagahane yakṣasaṃmohitena | pāṣāṇāmbu prasabhamamunaivātra pītvā dṛṣattāmāgatyaantaḥ sthitamatha samāḥ sapta jātyena bhūmeḥ || 17 ||

On the shore of the mountain where the Shaka island rises, he slept for seven years, bewitched by the Yaksha in the dense inner forest. Drinking the stone water here suddenly, he regained his vision and remained inside for seven years, becoming part of the earth.

जहाँ शाक द्वीप उदित होता है, उस पर्वत के तट पर, घने अंदरूनी जंगल में यक्ष द्वारा मोहित होकर उसने सात वर्षों तक सोया। यहाँ अचानक पत्थर का पानी पीकर, उसने अपनी दृष्टि वापस पाई और सात वर्षों तक अंदर रहा, पृथ्वी का हिस्सा बनकर।

7.124.18

शाकद्वीपेऽस्तशैलस्य शिरस्यभ्रगुहागृहे । पिशाचाप्सरसा मासं पाश्चात्यः कामुकीकृतः ॥ १८ ॥

śākadvīpe'stśailasya śirasyabhraguhāgṛhe | piśācāpsarasā māsaṃ pāścātyaḥ kāmukīkṛtaḥ || 18 ||

In the cave-house on the peak of the western mountain in Shaka island, he was made lustful by a Pishacha Apsara for a month.

शाक द्वीप में, पश्चिमी पर्वत की चोटी पर गुफा-घर में, एक पिशाच अप्सरा द्वारा एक महीने तक कामुक बनाया गया।

7.124.19

यत्र शान्तभये वर्षे जलधारे महागिरौ । हरीतकीवने वर्षं पूर्वोऽन्तर्धानमाययौ ॥ १९ ॥

yatra śāntabhaye varṣe jaladhāre mahāgirau | harītakīvane varṣaṃ pūrvo'ntardhānamāyayau || 19 ||

In the year of peace and fearlessness, in the waterfall of the great mountain, in the Haritaki forest, he previously disappeared for a year.

शांति और निडरता के वर्ष में, महान पर्वत के जलधारे में, हरीतकी वन में, उसने पहले एक वर्ष तक अंतर्धान किया था।

7.124.20

अत्र रैवतके शैले वर्षे शिशिरनामनि । दशरात्रमभूत्सिंहः पूर्वो यक्षवशीकृतः ॥ २० ॥

atra raivatake śaile varṣe śiśiranāmani | daśarātramabhūtsiṃhaḥ pūrvo yakṣavaśīkṛtaḥ || 20 ||

Here, on the Raivataka mountain, in the year named Shishira, the lion previously remained for ten nights, enchanted by the Yaksha.

यहाँ, रैवतक पर्वत पर, शिशिर नामक वर्ष में, सिंह पहले दस रात्रियों तक रहा, यक्ष द्वारा मोहित होकर।

7.124.21

अत्र काञ्चनशैलादिदरीदर्दुरतां गतः । पिशाचमायाछलितो दशवर्षाण्युवास सः ॥ २१ ॥

atra kāñcanaśailādidadarīdarduratāṃ gataḥ | piśācamāyāchalito daśavarṣāṇyuvāsa saḥ || 21 ||

Here, he went to the harshness of the golden mountain and other places, deceived by the illusion of the Pishacha, and lived there for ten years.

यहाँ, उसने सोने के पर्वत और अन्य स्थानों की कठिनाइयों का सामना किया, पिशाच के मायाजाल में फँसकर, और वहाँ दस वर्षों तक रहा।

7.124.22

कौमारं वर्षमासाद्य श्यामाद्रेरुत्तरस्तटम् । शाकद्वीपेऽन्धकूपेऽन्धो न्यवसच्छरदां शतम् ॥ २२ ॥

kaumāraṃ varṣamāsādya śyāmādreruttarastataṃ | śākadvīpe'ndhakūpe'ndho nyavasaccharadāṃ śatam || 22 ||

Reaching the age of youth, he stayed on the northern bank of the dark mountain in the blind well of Shaka Island for a hundred autumns.

युवावस्था को प्राप्त करके, उसने अँधेरे पर्वत के उत्तरी तट पर शाक द्वीप के अँधेरे कूप में सौ शरद ऋतुओं तक रहा।

7.124.23

मरीबकेऽकरोद्वर्षे वर्षाण्यत्र चतुर्दश । विद्याधरत्वं पाश्चात्यः स विद्याधरविद्यया ॥ २३ ॥

marībake'karodvarṣe varṣāṇyatra caturdśa | vidyādharaṃ pāścātyaḥ sa vidyādharavidyayā || 23 ||

In the year of Maribaka, he spent fourteen years there. The westerner attained the status of Vidyadhara through the knowledge of Vidyadhara.

मरीबक के वर्ष में, उसने वहाँ चौदह वर्ष बिताए। पश्चिमी व्यक्ति ने विद्याधर की विद्या से विद्याधर का दर्जा प्राप्त किया।

7.124.24

रतक्लमक्लान्तपुरारिलक्ष्मीचलाङ्गलेखाक्रमशीकराक्तम् । एलालतालिङ्गनलब्धगन्धमालम्ब्य वेलावनगन्धवाहम् ॥ २४ ॥

rataklamaklāntapurārilakṣmīcalāṅgalekhākramaśīkarāktam | elālatāliṅganalabdhagandhamālambya velāvanagandhavāham || 24 ||

Exhausted from the battle with the enemy of the city, adorned with the marks of the goddess Lakshmi, covered in sweat, he embraced the fragrant Ela vine and rested in the breeze of the shore forest.

शहर के शत्रु से लड़ाई में थककर चूर, लक्ष्मी देवी के चिह्नों से सुशोभित, पसीने से भीगा, उसने सुगंधित एला लता का आलिंगन किया और तट के वन की हवा में विश्राम किया।

Chapter 125

7.125.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । वर्षे शान्तभयाभिख्ये जलधारे गिरौ तरौ । तादृक्कर्तरिपानीयं शाकद्वीपे पिबन् स्थितः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | varṣe śāntabhayābhikhye jaladhāre girau tarau | tādṛkkartaripānīyaṃ śākadvīpe piban sthitaḥ || 1 ||

Shri Vasishtha said: In the year known as Shantabhaya, on the mountain known as Jaladhara, there is a tree. Drinking such bitter water in Shakadvipa, he remains.

श्री वसिष्ठ ने कहा: शान्तभय नामक वर्ष में, जलधार नामक पर्वत पर एक वृक्ष है। शाकद्वीप में ऐसा कड़वा पानी पीकर वह रहता है।

7.125.2

पूर्वोऽथ वर्षसप्तत्या पाश्चात्येनैत्य मोक्षितः । विद्यया क्रकचेनेव छित्त्वा वृक्षत्वमक्षतः ॥ २ ॥

pūrvo'tha varṣasaptatyā pāścātyenaiti mokṣitaḥ | vidyayā krakaceneva chittvā vṛkṣatvamakṣataḥ || 2 ||

Then, previously, after seventy years, he comes from the west and is liberated. By knowledge, like a saw, he cuts down the tree without harm.

फिर, पहले, सत्तर वर्षों के बाद, वह पश्चिम से आता है और मुक्त होता है। ज्ञान के द्वारा, आरी की तरह, वह वृक्ष को क्षति किए बिना काट देता है।

7.125.3

पाश्चात्यः शिशिरे वर्षे पाषाणत्वमुपागतः । मोचितो दक्षिणेनाशु गोमांसादिप्रयोगतः ॥ ३ ॥

pāścātyaḥ śiśire varṣe pāṣāṇatvamupāgataḥ | mocito dakṣiṇenāśu gomāṃsādiprayogataḥ || 3 ||

The western one, in the winter season, attains the state of a stone. He is quickly liberated by the southern one through the use of beef and other means.

पश्चिमी, शिशिर ऋतु में, पत्थर की अवस्था को प्राप्त होता है। वह दक्षिणी द्वारा गोमांस आदि के उपयोग से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है।

7.125.4

शिवेऽस्ताचलपारस्थे वर्षे वर्षेण पश्चिमः । मोचितो दक्षिणेनैत्य गोपिशाच्या वृषीकृतः ॥ ४ ॥

śive'stācalapārasthē varṣe varṣeṇa paścimaḥ | mocito dakṣiṇenaiti gopiśācyā vṛṣīkṛtaḥ || 4 ||

In the year of Shiva, on the western mountain, he is liberated by the southern one and becomes a bull by the Gopi demoness.

शिव वर्ष में, पश्चिमी पर्वत पर, वह दक्षिणी द्वारा मुक्त होता है और गोपी राक्षसी द्वारा बैल बन जाता है।

7.125.5

अत्रैव क्षेमके वर्षे आम्बिकेयगिरौ तरौ । दक्षिणो यक्षतां यातो मोक्षं यक्षेण लब्धवान् ॥ ५ ॥

atraiva kṣemake varṣe āmbikeyagirau tarau | dakṣiṇo yakṣatāṃ yāto mokṣaṃ yakṣeṇa labdhavān || 5 ||

In the same year of Kshemaka, on the mountain of Ambika, the southern one attains the state of a Yaksha and gains liberation from the Yaksha.

क्षेमक वर्ष में, अम्बिका पर्वत पर, दक्षिणी यक्ष की अवस्था को प्राप्त होता है और यक्ष से मुक्ति प्राप्त करता है।

7.125.6

अत्रैव वृषके वर्षे शैले केसरनामनि । केसरित्वं गतः पूर्वः पाश्चात्येनैव मोचितः ॥ ६ ॥

atraiva vṛṣake varṣe śaile kesaranāmani | kesaritvaṃ gataḥ pūrvaḥ pāścātyenainaiva mocitaḥ || 6 ||

In this very year of the bull, on the mountain named Kesara, he first became a lion and then was freed by the westerner.

इसी वर्ष में वृष के वर्ष में, केसर नामक पर्वत पर, उसने पहले सिंह का रूप धारण किया और फिर पश्चिमी द्वारा मुक्त किया गया।

7.125.7

श्रीराम उवाच । एकदेशगता विष्वग्व्याप्य कर्माणि कुर्वते । योगिनस्त्रिषु कालेषु सर्वाणि भगवन्कथम् ॥ ७ ॥

śrīrāma uvāca | ekadeśagatā viṣvagvyāpya karmāṇi kurvate | yoginastriṣu kāleṣu sarvāṇi bhagavankatham || 7 ||

Sri Rama said: Those who are situated in one place pervade all actions. O Lord, how do yogis perform all actions in the three times?

श्री राम ने कहा: जो एक स्थान पर स्थित हैं, वे सभी कर्मों में व्याप्त होते हैं। हे भगवन्, योगी तीनों कालों में सभी कर्मों को कैसे करते हैं?

7.125.8

श्रीवसिष्ठ उवाच । इह रामाप्रबुद्धानां यदस्त्यस्त्वलमेव नः । तेन यत्तु प्रबुद्धानां तदिदं श्रृणु कथ्यते ॥ ८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iha rāmāprabuddhānāṃ yadastyastvalameva naḥ | tena yattu prabuddhānāṃ tadidaṃ śṛṇu kathyate || 8 ||

Sri Vasistha said: O Rama, what is unreal for the unenlightened is real for us. Therefore, listen to what is real for the enlightened.

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे राम, जो अज्ञानी के लिए असत्य है वही हमारे लिए सत्य है। इसलिए, सुनो जो ज्ञानी के लिए सत्य है।

7.125.9

चिन्मात्रसत्तासामान्यादृतेऽन्यन्नात्म तद्विदाम् । दृश्यात्यन्ताभावबोधे सर्गासर्गदृशोः क्षये ॥ ९ ॥

cinmātrasattāsāmānyādṛte'nyannātma tadvidām | dṛśyātyantābhāvabodhe sargāsargadṛśoḥ kṣaye || 9 ||

Apart from the universal pure consciousness, there is no self for the knowers of that. In the realization of the absolute non-existence of the seen, there is the destruction of the seer and the seen.

चिन्मात्र सत्ता के सामान्य को छोड़कर ज्ञानियों के लिए कोई आत्मा नहीं है। दृश्य की अत्यंत अभाव बोध में, दृश्य और अदृश्य का क्षय होता है।

7.125.10

चिन्मात्रसत्तासामान्ये विश्रान्तस्य निरन्तरम् । सर्वेशस्येह सर्वत्वं सर्वात्मत्वं च सर्वदा ॥ १० ॥

cinmātrasattāsāmānye viśrāntasya nirantaram | sarveśasyeha sarvatvaṃ sarvātmatvaṃ ca sarvadā || 10 ||

For one who is constantly established in the universal pure consciousness, there is always the state of being the lord of all and the self of all.

जो निरंतर शुद्ध चेतना के सामान्य में स्थित है, उसके लिए हमेशा सबका स्वामी और सबका आत्मा होने की स्थिति है।

7.125.11

वद केन कथं कुत्र कदा किमिव रोध्यते । सर्वगस्त्वथ सर्वात्मा यत्र भाति यदा यथा ॥ ११ ॥

vada kena kathaṃ kutra kadā kimiva rodhyate | sarvagastvatha sarvātmā yatra bhāti yadā yathā || 11 ||

Tell me, by whom, how, where, when, and in what manner is it obstructed? The omnipresent and all-pervading Self, where, when, and how does it appear?

बताओ, किसने, कैसे, कहाँ, कब, और किस तरह से यह रोका जाता है? सर्वव्यापी और सर्वात्मा, जहाँ, जब, और कैसे यह प्रकट होता है?

7.125.12

तथा भाति तदा तत्र सर्वात्मनि किमस्ति नो। अतीतं वर्तमानं च भविष्यत्स्थूलमप्यणु ॥ १२ ॥

tathā bhāti tadā tatra sarvātmani kimasti no | atītaṃ vartamānaṃ ca bhaviṣyatsthūlamapyṇu || 12 ||

Thus, it appears there at that time in the all-pervading Self. What is there that is not? The past, present, and future, gross and subtle.

इस प्रकार, यह उस समय वहाँ सर्वात्मा में प्रकट होता है। वहाँ क्या है जो नहीं है? अतीत, वर्तमान और भविष्य, स्थूल और सूक्ष्म।

7.125.13

तथा दूरमदूरं च निमेषः कल्प एव च। स्वरूपमजहत्येव सामान्ये तानि सर्वदा ॥ १३ ॥

tathā dūramadūraṃ ca nimeṣaḥ kalpa eva ca | svarūpamajahatyeva sāmānye tāni sarvadā || 13 ||

Thus, the near and the far, a blink of an eye and an eon, all these retain their true nature in the universal.

इस प्रकार, निकट और दूर, एक पल और एक कल्प, ये सभी सार्वभौमिक में अपनी वास्तविक प्रकृति बनाए रखते हैं।

7.125.14

सर्वात्मनि स्थितान्येव पश्य मायाविजृम्भितम्। अजातमनिरुद्धं च यथास्थितमवस्थितम् ॥ १४ ॥

sarvātmani sthitānyeva paśya māyāvijṛmbhitam | ajātamaniruddhaṃ ca yathāsthitamavasthitam || 14 ||

See all things situated in the all-pervading Self, manifested by Maya, unborn and undestroyed, existing as they are.

सभी चीजें सर्वात्मा में स्थित हैं, माया द्वारा प्रकट होती हैं, अजन्मे और अविनाशी, जैसे हैं वैसे ही अस्तित्व में हैं।

7.125.15

विज्ञानघनमेवेदमत एव जगत्त्रयम्। नभस्त्वमत्यजंश्चैव सर्वात्मैव नभः स्थितम् ॥ १५ ॥

vijñānaghanamevedamata eva jagattrayam | nabhastvamatyajaṃścaiva sarvātmaiva nabhaḥ sthitam || 15 ||

This is indeed the dense mass of consciousness, thus the three worlds. You are the sky, and the sky is the all-pervading Self.

यह वास्तव में चेतना का घनत्व है, इसलिए तीनों लोक हैं। तुम आकाश हो, और आकाश सर्वात्मा है।

7.125.16

जगदात्मा जगद्रूपं द्रष्टृदृश्यतयोदितम्। विश्वात्मदृग्वपुर्यत्स्यात्तत्किं केन कथं कदा ॥ १६ ॥

jagadātmā jagadrūpaṃ draṣṭṛdṛśyatayoditam | viśvātmadṛgvapuryatsyāttatkiṃ kena kathaṃ kadā || 16 ||

The soul of the universe, manifesting as the form of the universe, is seen as both the seer and the seen. What is that, by whom, how, and when does it become the body of the universal soul?

विश्व की आत्मा, विश्व के रूप में प्रकट होती है, देखने वाले और देखे जाने वाले के रूप में दिखाई देती है। वह क्या है, किसके द्वारा, कैसे, और कब वह विश्व आत्मा का शरीर बनता है?

7.125.17

दुःसाध्यं ब्रूहि तत्त्वज्ञ साध्यासाध्यस्वरूपिणः। तस्मादस्याः सदैकस्याः विपश्चिद्राजसंविदः ॥ १७ ॥

duḥsādhyaṃ brūhi tattvajña sādhyāsādhyasvarūpiṇaḥ | tasmādasyāḥ sadaikasyāḥ vipaścidrājasamvidaḥ || 17 ||

O knower of truth, tell me the difficult to achieve, the nature of the achievable and the unachievable. Therefore, from that eternal singular consciousness, the wise vision arises.

हे तत्वज्ञ, मुझे बताओ कि प्राप्त करना कितना कठिन है, प्राप्त किया जा सकने वाले और न प्राप्त किया जा सकने वाले की प्रकृति। इसलिए, उस एक सनातन चेतना से, बुद्धिमान दृष्टि उत्पन्न होती है।

7.125.18

प्रबोधमनुगच्छन्त्या अप्राप्तायाः परं पदम्। एकस्या अप्यनेकस्याः सर्वं सर्वत्र युज्यते ॥ १८ ॥

prabodhamanugacchantyā aprāptāyāḥ paraṃ padam | ekasyā apyanekasyāḥ sarvaṃ sarvatra yujyate || 18 ||

Following the awakening, the unattained supreme state is reached. Everything is connected to everything else, whether it is one or many.

जागरूकता का अनुसरण करते हुए, अप्राप्त परम पद प्राप्त होता है। चाहे वह एक हो या अनेक, सब कुछ सब जगह जुड़ा हुआ है।

7.125.19

बोधाबोधात्मरूपे हि किं नामास्ति परात्मनि। अप्राप्तायाः परं बोधं पदार्थाकुलतोचिता ॥ १९ ॥

bodhābodhātmrūpe hi kiṃ nāmāsti parātmani | aprāptāyāḥ paraṃ bodhaṃ padārthākulatocitā || 19 ||

Indeed, in the form of knowledge and ignorance, what name exists in the supreme self? The supreme knowledge is appropriate for the one who has not attained, being confused by the objects.

वास्तव में, ज्ञान और अज्ञान के रूप में, परमात्मा में कौन सा नाम है? जिसने प्राप्त नहीं किया है, वस्तुओं से भ्रमित होने के कारण, परम ज्ञान उपयुक्त है।

7.125.20

किंचिद्बोधं प्रविष्टायाः सिद्धताप्युचितैव सा। एवं ते सर्वदिक्संस्थाः सर्वमेव परस्परम् ॥ २० ॥

kiñcidbodhaṃ praviṣṭāyāḥ siddhatāpyucitaiva sā | evaṃ te sarvadiksaṃsthāḥ sarvameva parasparam || 20 ||

Even a little knowledge, having entered, is indeed appropriate for attainment. Thus, all things in all directions are interconnected.

थोड़ा सा ज्ञान, प्रवेश करने पर, प्राप्ति के लिए उपयुक्त है। इस प्रकार, सभी दिशाओं में सभी चीजें परस्पर जुड़ी हुई हैं।

7.125.21

पश्यन्त्यनुभवन्त्याशु चिकित्सन्ते च संकटम्बोधाकाशः स्वकाद्रूपादीषच्च्युत इवाशु चेत् ॥ २१ ॥

paśyantyanubhavantyāśu cikitsante ca saṃkaṭambodhākāśaḥ svakādrūpādīṣaccyuta ivāśu cet || 21 ||

Those who see (paśyanti) and experience (anubhavanti) quickly (āśu) heal (cikitsante) the distress (saṃkaṭam). The space of knowledge (bodhākāśaḥ) from one's own form (svakādrūpāt) falls (īṣaccyuta) like (iva) quickly (āśu) if (cet).

जो देखते हैं (पश्यन्ति) और अनुभव करते हैं (अनुभवन्ति) शीघ्र (आशु) संकट (संकटम्) का उपचार करते हैं (चिकित्सन्ते)। ज्ञान का आकाश (बोधाकाशः) अपने रूप (स्वकाद्रूपात) से शीघ्र (आशु) गिरता है (ईषच्च्युत) यदि (चेत्)।

7.125.22

तदन्यतामिवादत्ते सुस्थितोऽपि यथास्थितम्श्रीराम उवाचविपश्चितः प्रबुद्धाश्चेत्कथं सिंहवृषादिताम् ॥ २२ ॥

tadanyatāmivādatte susthito'pi yathāsthitamśrīrāma uvācavipaścitaḥ prabuddhāścetkathaṃ siṃhavṛṣāditām || 22 ||

Thus (tad) it assumes (ādatte) another form (anyatām) as if (iva) stable (susthito) even (api) as it is (yathāsthitam). Sri Rama said (uvāca), 'If (cet) the wise (vipaścitaḥ) are awakened (prabuddhāḥ), how (kathaṃ) can they attain (āditām) the state of a lion (siṃhavṛṣa)?'

इस प्रकार (तद्) यह दूसरा रूप (अन्यताम्) धारण करता है (आदत्ते) जैसे (इव) स्थिर (सुस्थितो) होते हुए भी (अपि) जैसा है (यथास्थितम्)। श्री राम ने कहा (उवाच), 'यदि (चेत्) बुद्धिमान (विपश्चितः) जाग्रत (प्रबुद्धाः) हैं, तो (कथम्) वे सिंह (सिंहवृष) की स्थिति (आदिताम्) को प्राप्त कैसे कर सकते हैं?'

7.125.23

दिक्षु यान्तीति मे ब्रह्मन्बोधाय कथयाश्वलम्श्रीवसिष्ठ उवाचप्रबुद्धाः कथिता ये ते योगिनस्ते मयानघ ॥ २३ ॥

dikṣu yāntīti me brahmanbodhāya kathayāśvalamśrīvasiṣṭha uvācaprabuddhāḥ kathitā ye te yoginaste mayānagha || 23 ||

In the directions (dikṣu) they go (yānti) thus (iti) to me (me) O Brahman (brahman), for knowledge (bodhāya) tell (kathaya) quickly (āśvalam). Sri Vasistha said (uvāca), 'The awakened (prabuddhāḥ) who are spoken of (kathitā) those (ye) yogis (yoginaḥ) by me (mayā) O sinless one (anagha).'

दिशाओं में (दिक्षु) वे जाते हैं (यान्ति) इस प्रकार (इति) मुझे (मे) हे ब्रह्मन् (ब्रह्मन्), ज्ञान के लिए (बोधाय) शीघ्र (आश्वलम्) बताओ (कथय)। श्री वसिष्ठ ने कहा (उवाच), 'जाग्रत (प्रबुद्धाः) जिनका उल्लेख किया गया है (कथिता) वे (ये) योगी (योगिनः) मेरे द्वारा (मया) हे निष्पाप (अनघ)।'

7.125.24

प्रसङ्गरूपान्तरतो न प्रबुद्धा विपश्चितःविपश्चितो महाबाहो प्रबुद्धा निपुणं न ते ॥ २४ ॥

prasaṅgarūpāntarato na prabuddhā vipaścitaḥvipaścito mahābāho prabuddhā nipuṇaṃ na te || 24 ||

From the form of attachment (prasaṅgarūpāntarato) not awakened (na prabuddhā) the wise (vipaścitaḥ). O mighty-armed one (mahābāho), the wise (vipaścito) are not awakened (prabuddhā) skillfully (nipuṇaṃ) not (na) they (te).

आसक्ति के रूप से (प्रसङ्गरूपान्तरतो) जाग्रत नहीं (न प्रबुद्धा) बुद्धिमान (विपश्चितः)। हे महाबाहो (महाबाहो), बुद्धिमान (विपश्चितो) कुशलतापूर्वक (निपुणं) जाग्रत नहीं (प्रबुद्धा) वे (ते) नहीं (न)।

7.125.25

बोधाबोधदृशोर्मध्ये ते हि दोलायिताः स्थिताःमोक्षचिह्नानि दृश्यन्ते बन्धचिह्नानि चाभितः ॥ २५ ॥

bodhābodhadṛśormadhye te hi dolāyitāḥ sthitāḥmokṣacihnāni dṛśyante bandhacihnāni cābhitaḥ || 25 ||

In the midst of knowledge and ignorance, they are indeed situated in a state of fluctuation. Signs of liberation are visible, and signs of bondage are also seen around them.

ज्ञान और अज्ञान के मध्य में, वे वास्तव में डोलते हुए स्थित हैं। मुक्ति के चिह्न दिखाई देते हैं, और बंधन के चिह्न भी उनके आसपास दिखाई देते हैं।

7.125.26

नित्यधर्मप्रबुद्धानां तथाभूततया तया । विपश्चितो धारणया योगिनो न परं गताः ॥ २६ ॥

nityadharmaprabuddhānāṃ tathābhūtatayā tayā | vipaścito dhāraṇayā yogino na paraṃ gatāḥ || 26 ||

Those who are awakened to eternal duties and are wise through concentration, these yogis have not attained the supreme state.

जो नित्य धर्म में प्रबुद्ध हैं और धारणा के द्वारा विपश्चित हैं, वे योगी परम अवस्था को नहीं प्राप्त हुए हैं।

7.125.27

धारणायोगिनस्ते हि धारणाप्राप्तसिद्धयः । ये परं बोधमायाता येष्वविद्या न विद्यते ॥ २७ ॥

dhāraṇāyoginaste hi dhāraṇāprāptasiddhayaḥ | ye paraṃ bodhamāyātā yeṣvavidyā na vidyate || 27 ||

Those yogis who have attained perfection through concentration, they have indeed attained the supreme knowledge in whom ignorance does not exist.

जो योगी धारणा के द्वारा सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं, वे ही परम ज्ञान को प्राप्त हुए हैं, जिनमें अज्ञान नहीं है।

7.125.28

किमविद्यामवेक्षन्ते ते तामरसलोचन । धारणायोगिनो ह्येते वरेण प्राप्तसिद्धयः ॥ २८ ॥

kimavidyāmavekṣante te tāmarasalocana | dhāraṇāyogino hyete vareṇa prāptasiddhayaḥ || 28 ||

O lotus-eyed one, why do they look at ignorance? These yogis of concentration have indeed attained perfection with excellence.

हे कमलनयन, वे अज्ञान को क्यों देखते हैं? ये धारणा योगी वास्तव में उत्कृष्टता से सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

7.125.29

अविद्या विद्यते तेषां तेन तेऽतद्विचारिणः । अन्यच्च श्रृणु हे राम जीवन्मुक्तशरीरिणाम् ॥ २९ ॥

avidyā vidyate teṣāṃ tena te'tadvicāriṇaḥ | anyacca śṛṇu he rāma jīvanmuktasharīriṇām || 29 ||

Ignorance exists in them, therefore they are not contemplating that. Listen to something else, O Rama, about those who are liberated while living.

उनमें अज्ञान है, इसलिए वे उसका विचार नहीं करते। हे राम, जीवन्मुक्त शरीरियों के बारे में कुछ और सुनो।

7.125.30

भवेद्व्यवहृतावेव पदार्थान्तरवेदनम् । मोक्षोऽपि चेतसो धर्मश्चेतस्येव स तिष्ठति ॥ ३० ॥

bhavadvyavahṛtāveva padārthāntaravedanam | mokṣo'pi cetaso dharmaścetasyeva sa tiṣṭhati || 30 ||

In the realm of worldly affairs, there is the perception of other objects. Liberation is also a state of the mind; it resides in the mind itself.

संसार के व्यवहार में, अन्य पदार्थों का ज्ञान होता है। मोक्ष भी मन की एक अवस्था है; यह मन में ही रहता है।

7.125.31

न देहे देहधर्मस्तु न देहाद्विनिवर्ततेन कदाचन निर्मुक्तं चेतो भूयो निबध्यते ॥ ३१ ॥

na dehe dehadharmastu na dehādvinivartatena kadācana nirmuktaṃ ceto bhūyo nibadhyate || 31 ||

The mind is not bound by the body or its attributes, nor does it ever become free from the body. The mind, once liberated, is never bound again.

मन शरीर या उसके गुणों से बंधा नहीं है, न ही कभी शरीर से मुक्त होता है। एक बार मुक्त होने के बाद, मन फिर कभी बंधन में नहीं आता।

7.125.32

यत्नेनापि पुनर्बद्धं केन वृन्तच्युतं फलम्देहस्तु देहधर्मेण जीवन्मुक्तिमतामपि ॥ ३२ ॥

yatnenāpi punarbaddhaṃ kena vṛntacyutaṃ phalamdehastu dehadharmeṇa jīvanmuktimatāmapi || 32 ||

Even with effort, if one is bound again, what is the use of the fallen fruit? The body, with its attributes, also attains the state of liberation while living.

यत्न के साथ भी, अगर कोई फिर से बंधन में आ जाता है, तो गिरे हुए फल का क्या उपयोग? शरीर, उसके गुणों के साथ, जीवन में ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर लेता है।

7.125.33

गृह्यते तद्गतं तेषां चेतस्त्वचलमेव तत्मोक्षो हि न परज्ञेयो धारणादिप्रयोगवत् ॥ ३३ ॥

gṛhyate tadgataṃ teṣāṃ cetastvacalameva tatmokṣo hi na parajñeyo dhāraṇādiprayogavat || 33 ||

Their minds, which are unsteady, grasp that which is related to it. Indeed, liberation is not to be known by others, like the practice of concentration, etc.

उनके मन, जो अस्थिर हैं, उसी से संबंधित चीजों को ग्रहण करते हैं। वास्तव में, मुक्ति दूसरों द्वारा जानी नहीं जा सकती, जैसे धारणा आदि की अभ्यास की तरह।

7.125.34

आत्मसंवेद्य एवासौ मध्वाद्यास्वादसौख्यवत्सुखदुःखैर्युतोयोऽसौ स्वयं बन्धानुभूतिमान् ॥ ३४ ॥

ātmasaṃvedya evāsau madhvādyāsvādasaukhyavatsukhaduḥkhairyutoyo'sau svayaṃ bandhānubhūtimān || 34 ||

That which is self-aware is indeed that which experiences the pleasure of tasting honey and other pleasures and pains. That itself is the one who experiences bondage.

जो स्वयं जानता है, वही है जो मधु के स्वाद और अन्य सुख-दुःखों का अनुभव करता है। वही है जो बंधन का अनुभव करता है।

7.125.35

तन्मुक्तौ मुक्त इत्युक्तः स्वानुभूतिप्रदस्त्वसौन्तःशीतलचित्तो हि मुक्त इत्यभिधीयते ॥ ३५ ॥

tanmuktau mukta ityuktaḥ svānubhūtipradastvasauantaḥśītalacitto hi mukta ityabhidhīyate || 35 ||

One who is liberated is said to be liberated by the realization of the self. Indeed, one who has a calm mind is called liberated.

जो मुक्त है, उसे आत्मानुभूति से मुक्त कहा जाता है। वास्तव में, जिसका मन शीतल है, उसे मुक्त कहा जाता है।

7.125.36

बन्धः संतप्तचित्तेति देहादेस्तन्न दृश्यते । शरीरे कणशः कृत्ते राज्ये वा विनियोजिते ॥ ३६ ॥

bandhaḥ santaptacitteti dehādestanna dṛśyate | śarīre kaṇaśaḥ kṛtte rājye vā viniyojite || 36 ||

The bondage is said to be due to the afflicted mind, but it is not seen in the body or other things. Even if the body is cut into pieces or if the kingdom is bestowed.

बंधन संतप्त चित्त के कारण कहा जाता है, लेकिन यह शरीर या अन्य चीजों में नहीं दिखता। चाहे शरीर टुकड़ों में कट जाए या राज्य दिया जाए।

7.125.37

रुदतो हसतश्चैव जीवन्मुक्तमतेरिह । न दुःखं न सुखं किंचिदन्तर्भवति तत्स्थितम् ॥ ३७ ॥

rudatō hasataścaiva jīvanmuktamatēriha | na duḥkhaṃ na sukhaṃ kiṃcidantarbhavati tatsthitam || 37 ||

In the state of liberation while living, whether one is crying or laughing, neither sorrow nor happiness arises within.

जीवन्मुक्त अवस्था में, चाहे कोई रो रहा हो या हँस रहा हो, अंदर न दुःख उत्पन्न होता है न सुख।

7.125.38

गृह्णतोऽप्यनुभूतिस्तु तत्रैवैषास्ति नापरे । दृश्यन्ते पण्डिता भग्ना रूपान्तरमुपागताः ॥ ३८ ॥

gṛhṇatō'pyanubhūtistu tatraivaiṣāsti nāparē | dṛśyantē paṇḍitā bhagnā rūpāntaramupāgatāḥ || 38 ||

Even while experiencing, the experience remains only there, not elsewhere. Scholars are seen broken, having assumed different forms.

भले ही अनुभव करते हुए, अनुभूति केवल वहीं रहती है, अन्यत्र नहीं। पंडित टूटे हुए दिखाई देते हैं, अलग-अलग रूप धारण करते हुए।

7.125.39

देहादिजीवन्मुक्तानां स्वभावान्न कदाचन । मृतोऽपि नैव म्रियते रुदन्नपि न रोदिति ॥ ३९ ॥

dehādijīvanmuktānāṃ svabhāvānna kadācana | mṛtō'pi naiva mriyatē rudannapi na rōditi || 39 ||

For those who are liberated while living, by their very nature, they never truly die, even if they appear to be dead, nor do they truly cry, even if they appear to be crying.

जो जीवन्मुक्त हैं, उनके स्वभाव से, वे कभी भी असल में नहीं मरते, चाहे वे मरे हुए दिखाई दें, न ही वे असल में रोते हैं, चाहे वे रोते हुए दिखाई दें।

7.125.40

विहसन्न न हसत्येव जीवन्मुक्तो महोदयः । वीतरागाः सरागाभा अकोपाः कोपसंयुताः ॥ ४० ॥

vihasanna na hasatyēva jīvanmuktō mahōdayaḥ | vītarāgāḥ sarāgābhā akōpāḥ kōpasamyutāḥ || 40 ||

The liberated one, who is of great intellect, does not truly laugh even if they appear to be laughing. They are free from desires, yet appear to have desires, free from anger, yet appear to have anger.

जीवन्मुक्त, जो महान बुद्धिमान है, असल में नहीं हँसता, चाहे वह हँसता हुआ दिखाई दे। वह इच्छाओं से मुक्त है, फिर भी इच्छाओं से भरा हुआ दिखाई देता है, क्रोध से मुक्त है, फिर भी क्रोध से भरा हुआ दिखाई देता है।

7.125.42

अलं दूरगतास्तेषामङ्कुरा नभसो यथा । जगदात्मा च नास्त्येव यस्यैकं सर्वमस्ति च ॥ ४२ ॥

alaṃ dūragatāsteṣāmaṅkurā nabhaso yathā | jagadātmā ca nāstyeva yasyaikaṃ sarvamasti ca || 42 ||

Those who are far away, their sprouts are like the sky | There is no world-soul for whom everything is one || 42 ||

जो दूर हैं, उनके अंकुर आकाश के समान हैं | जिसके लिए सब कुछ एक है, उसके लिए जगदात्मा नहीं है || ४२ ||

7.125.43

सुखदुःखादि तस्येति वाग्व्योमविटपोपमा । अशोका एव शोचन्ते जीवन्मुक्ता जयान्विताः ॥ ४३ ॥

sukhaduḥkhādi tasyeti vāgvyomaviṭapopamā | aśokā eva śocante jīvanmuktā jayānvitāḥ || 43 ||

Happiness and sorrow, etc., are like the sky and the tree | The liberated ones, who are free from sorrow, grieve | 43 ||

सुख और दुःख आदि आकाश और वृक्ष के समान हैं | शोक से मुक्त जीवन्मुक्त शोक करते हैं || ४३ ||

7.125.44

अच्छिन्ना एकतद्भावा दृश्यन्ते तत्त्वदर्शिनः । शिरः कमलजस्योच्चैः सामगायनतत्परम् ॥ ४४ ॥

acchinnā ekatadbhāvā dṛśyante tattvadarśinaḥ | śiraḥ kamalajasyoccaiḥ sāmagāyanatatparam || 44 ||

Those who see the truth are unbroken and have the same nature | The head of the lotus-born one is engaged in singing Sama || 44 ||

जो सत्य को देखते हैं, वे अखंडित हैं और एक ही स्वभाव रखते हैं | कमलज का सिर साम गायन में लगा हुआ है || ४४ ||

7.125.45

हरो नखेन चिच्छेद सुकुमारमिवाम्बुजम् । शक्तोऽपि न पुनर्ब्रह्मा जनयामास तच्छिरः ॥ ४५ ॥

haro nakhena ciccheda sukumāramivāmbujam | śakto'pi na punarbrahmā janayāmāsa tacchiraḥ || 45 ||

Shiva cut the delicate lotus with his nail | Even though capable, Brahma did not create that head again || 45 ||

शिव ने अपने नाखून से कोमल कमल को काट दिया | यद्यपि सक्षम, ब्रह्मा ने उस सिर को फिर से नहीं बनाया || ४५ ||

7.125.46

व्योमैकतास्य चिद्व्योम्नो मुधा मूर्ध्नेतरेण किम् । नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ॥ ४६ ॥

vyomaiakatāsya cidvyomno mudhā mūrdhnetareṇa kim | naiva tasya kṛtenārtho nākṛteneha kaścana || 46 ||

What is the use of the oneness of the sky and the consciousness | There is no purpose in doing or not doing anything || 46 ||

आकाश और चेतना की एकता का क्या उपयोग है | कुछ करने या न करने में कोई उद्देश्य नहीं है || ४६ ||

7.125.47

यद्यथा नाम संपन्नं तत्तथास्त्वितरेण किम्। हरो हरिणशावाक्षीमक्षीणशरतोऽश्रु च। धत्ते वपुषि दुग्धाब्धिर्गुप्तामृतकलामिव ॥ ४७ ॥

yadyathā nāma saṃpannaṃ tattathāstvitareṇa kim | haro hariṇaśāvākṣīmakṣīṇaśarato'śru ca | dhatte vapuṣi dugdhābdhirguptāmṛtakalāmiva || 47 ||

Whatever name is given, it remains as it is, what else can it be? Lord Shiva holds the doe-eyed one, whose tears are not diminished, in his body like the ocean of milk holding the hidden nectar.

जो भी नाम दिया जाता है, वह वैसा ही रहता है, और क्या हो सकता है? भगवान शिव हरिण की आँखों वाली, जिसके आँसू नहीं घटे, को अपने शरीर में दूध के समुद्र की तरह छिपे हुए अमृत को धारण करते हैं।

7.125.48

शक्तोऽपि रागितामेष न त्यजत्युत्तमाशयः। पञ्चेषुदाहसमये दृष्टा नीरागतागुणाः ॥ ४८ ॥

śakto'pi rāgitāmeṣa na tyajatyuttamāśayaḥ | pañceṣudadāhasamaye dṛṣṭā nīrāgatāguṇāḥ || 48 ||

Even though capable, this supreme-minded one does not abandon attachment. In the five elements, the quality of being without attachment is seen.

यद्यपि समर्थ, यह उत्तम मन वाला आसक्ति को नहीं छोड़ता। पाँच तत्वों में, आसक्ति के बिना होने का गुण दिखाई देता है।

7.125.49

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन। न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ ४९ ॥

naiva tasya kṛtenārtho nākṛteneha kaścana | na cāsya sarvabhūteṣu kaścidarthavyapāśrayaḥ || 49 ||

There is no purpose in his actions, nor is there any purpose in his inactions. Nor does he have any reliance on any purpose in all beings.

उसके कार्यों में कोई उद्देश्य नहीं है, न ही उसके अकर्मों में कोई उद्देश्य है। न ही वह सभी प्राणियों में किसी भी उद्देश्य पर निर्भर है।

7.125.50

रागितैषास्तु मा वास्य किमरागितयान्यया। यद्यथा नाम संपन्नं तत्तथास्त्वितरेण किम्॥ ५० ॥

rāgitaiṣāstu mā vāsya kimarāgitayānyayā | yadyathā nāma saṃpannaṃ tattathāstvitareṇa kim || 50 ||

Let this attachment be, or let it not be, what is the use of another attachment? Whatever name is given, it remains as it is, what else can it be?

यह आसक्ति हो या न हो, दूसरी आसक्ति का क्या लाभ? जो भी नाम दिया जाता है, वह वैसा ही रहता है, और क्या हो सकता है?

7.125.51

करोति कारयत्युच्चैर्म्रियते मार्यतेऽपि च। जायते वर्धतेऽजस्रं जीवन्मुक्तो जनार्दनः ॥ ५१ ॥

karoti kārayatyuccairmriyate māryate'pi ca | jāyate vardhate'jasraṃ jīvanmukto janārdanaḥ || 51 ||

He acts, causes to act, dies, and is caused to die. He is born, grows incessantly, and is liberated while living, O Janardana.

वह कर्म करता है, कर्म कराता है, मरता है, और मारा जाता है। वह जन्म लेता है, निरंतर बढ़ता है, और जीवित होकर मुक्त होता है, हे जनार्दन।

7.125.52

न चाजवं जवीभावं त्यक्तुं शक्तोऽप्यसौ न तम्। तेन त्यक्तेन नैवार्थस्तस्य नैवाश्रितेन च ॥ ५२ ॥

na cājavaṁ javībhāvaṁ tyaktuṁ śakto'pyasau na tam | tena tyaktena naivārthastasya naivāśritena ca || 52 ||

Even though he is capable, he cannot abandon his nature | Therefore, he cannot achieve anything by abandoning it, nor by relying on it

यद्यपि वह समर्थ है, फिर भी वह अपने स्वभाव को त्याग नहीं सकता | इसलिए, उसके त्यागने से या उस पर निर्भर रहने से कोई लाभ नहीं होता

7.125.53

तद्यथास्थितमेवास्तु इह इत्यस्तवासनम्। हरिर्निरिच्छ एवास्ते शुद्धचिन्मात्ररूपभृत् ॥ ५३ ॥

tadyathāsthitamevāstu iha ityastavāsanam | harirniriccha evāste śuddhacinmātrarūpabhṛt || 53 ||

Let it be as it is | This is the true nature of existence | Hari, the pure consciousness, remains without desire

जैसा है वैसा ही रहे | यही अस्तित्व का सच्चा स्वभाव है | हरि, शुद्ध चेतना, इच्छा रहित रहता है

7.125.54

आत्मानमान्दोलयति कालकन्दुकतां गतम्। अजस्रं नित्यमादित्यो जगद्गृहनभोङ्गणे ॥ ५४ ॥

ātmānamāndolayati kālakandukatāṁ gatam | ajasraṁ nityamādityo jagadgṛhanabhoṅgaṇe || 54 ||

The self swings like a pendulum of time | The eternal sun continuously illuminates the world

आत्मा समय के झूले की तरह झूलता है | नित्य सूर्य लगातार जगत को प्रकाशित करता है

7.125.55

न च रोधयितुं देहं न समर्थो दिनेश्वरः। निरिच्छ एव निर्वाणस्तथाप्यास्ते यथास्थितम् ॥ ५५ ॥

na ca rodhayituṁ dehaṁ na samartho dineśvaraḥ | niriccha eva nirvāṇastathāpyāste yathāsthitam || 55 ||

The sun cannot restrain the body | Desireless, it remains in its natural state

सूर्य शरीर को रोक नहीं सकता | इच्छा रहित, वह अपने प्राकृतिक स्वरूप में रहता है

7.125.56

चन्द्रोऽनुभवति व्यर्थमाकल्पं क्षयमक्षयम्। जीवन्मुक्ततया खिन्नो यथास्थितमवस्थितः ॥ ५६ ॥

candro'nubhavati vyarthamākalpaṁ kṣayamakṣayam | jīvanmuktatayā khinno yathāsthitamavasthitaḥ || 56 ||

The moon experiences useless cycles of waxing and waning | Exhausted by liberation in life, it remains in its natural state

चंद्रमा व्यर्थ चक्रों का अनुभव करता है, बढ़ने और घटने का | जीवन मुक्ति से थका हुआ, वह अपने प्राकृतिक स्वरूप में रहता है

7.125.57

मरुत्तहव्यगौरीशवीर्यग्रासादिखेदिताम्। जीवन्मुक्तो वहत्यग्निर्यथा स्थित्या समस्थितिः ॥ ५७ ॥

maruttahavyagaurīśavīryagrāsādikheditām | jīvanmukto vahatyagniryathā sthityā samasthitiḥ || 57 ||

The fire of life, tormented by the sacrifices of Marutta and others, carries on as if in a state of equilibrium.

जीवन की अग्नि, मरुत्त आदि के यज्ञों से पीड़ित होकर भी, संतुलन की स्थिति में रहती है।

7.125.58

बह्वीभिर्विजिगीषाभिः कृपणाविव तिष्ठतः । जीवन्मुक्तावपि गुरू लोके शुक्रबृहस्पती ॥ ५८ ॥

bahvībhirvijigīṣābhiḥ kṛpaṇāviva tiṣṭhataḥ | jīvanmuktāvapi gurū loke śukrabṛhaspatī || 58 ||

Even in the state of liberation, great teachers like Shukra and Brihaspati stand as if pitiful, with many desires for victory.

जीवनमुक्त अवस्था में भी, महान गुरु शुक्र और बृहस्पति कई विजय की इच्छाओं के साथ दयनीय लगते हैं।

7.125.59

करोति जनको राज्यं जीवन्मुक्तमना मुनिः । जगत्यामाजिषूग्रासु देहं जर्जरतां नयन् ॥ ५९ ॥

karoti janako rājyaṃ jīvanmuktamanā muniḥ | jagatyāmājiṣūgrāsu dehaṃ jarjaratāṃ nayan || 59 ||

King Janaka, with the mind of a liberated sage, rules the kingdom, leading his body to decay in the fierce battles of the world.

राजा जनक, जीवनमुक्त मन वाले मुनि की तरह, राज्य करते हैं, और संसार की कठिन लड़ाइयों में अपने शरीर को जर्जर करते हैं।

7.125.60

नलमान्धातृसगरदिलीपनहुषादयः । जीवन्मुक्ताश्चिरं राज्यं चक्रुराकुलिता इव ॥ ६० ॥

nalamāndhātṛsagaradilīpanahuṣādayaḥ | jīvanmuktāścirarājyaṃ cakrurākulitā iva || 60 ||

Nala, Mandhata, Sagara, Dilipa, Nahusha, and others, though liberated, ruled their kingdoms for a long time, as if disturbed.

नल, मांधाता, सगर, दिलीप, नहुष और अन्य, जीवनमुक्त होने के बावजूद, लंबे समय तक राज्य करते रहे, मानो व्याकुल हों।

7.125.61

व्यवहारे यथैवाज्ञस्तथैव खलु पण्डितः । वासनावासने एव कारणं बन्धमोक्षयोः ॥ ६१ ॥

vyavahāre yathaivājñastathaiva khalu paṇḍitaḥ | vāsanāvāsane eva kāraṇaṃ bandhamokṣayoḥ || 61 ||

In worldly affairs, both the ignorant and the wise act according to their tendencies, which are the cause of bondage and liberation.

संसार के व्यवहार में, अज्ञानी और ज्ञानी दोनों अपनी वासनाओं के अनुसार कार्य करते हैं, जो बंधन और मुक्ति का कारण होती हैं।

7.125.62

बलिप्रह्लादनमुचिवृत्रान्धकमुरादयः । जीवन्मुक्ताः स्थितिं चक्रुर्वीतरागाः सरागवत् ॥ ६२ ॥

baliprahlādanamucivṛtrāndhakamurādayaḥ | jīvanmuktāḥ sthitiṃ cakrurvītarāgāḥ sarāgavat || 62 ||

Bali, Prahlada, Namuci, Vritra, Andhaka, Mura, and others attained the state of jivanmukta, free from desires, yet appearing as if they had desires.

बलि, प्रह्लाद, नमुचि, वृत्र, अंधक, मुर आदि ने वीतराग होकर भी सरागवत् जीवन्मुक्त की स्थिति प्राप्त की।

7.125.63

तस्मादसत्त्वे सत्त्वे च रागद्वेषक्षयोदये । न मनागपि भेदोऽस्ति ज्ञखं प्रति स्वरूपिणि ॥ ६३ ॥

tasmādasattve sattve ca rāgadveṣakṣayodaye | na manāgapi bhedo'sti jñakhaṃ prati svarūpiṇi || 63 ||

Therefore, in both the unreal and the real, in the rise and fall of attachment and aversion, there is no difference whatsoever in the true nature of the self.

इसलिए, असत् और सत् दोनों में, राग और द्वेष के उदय और क्षय में, आत्मा के स्वरूप में कोई अंतर नहीं है।

7.125.64

ज्ञानेनाकाशशुद्धेन धर्मान्ये गगनोपमान्। विन्दन्ति जीवन्मुक्तानां तेषां भेदमतिः कुतः ॥ ६४ ॥

jñānenākāśaśuddhena dharmānye gaganopamān | vindanti jīvanmuktānāṃ teṣāṃ bhedamatiḥ kutaḥ || 64 ||

Through the pure knowledge of the self, other virtues become as vast as the sky. How can there be any difference in the minds of those who are liberated while living?

आत्मज्ञान की शुद्धता से अन्य धर्म आकाश के समान विशाल हो जाते हैं। जीवन्मुक्तों के मन में भेद कैसे हो सकता है?

7.125.65

भास्वरं शक्रकोदण्डं यथा नानेव शून्यकम्। आभासमात्रमेवायं तथा दृश्यात्मको भ्रमः ॥ ६५ ॥

bhāsvaraṃ śakrakodaṇḍaṃ yathā nāneva śūnyakam | ābhāsamātramevāyaṃ tathā dṛśyātmako bhramaḥ || 65 ||

Just as the radiant bow of Indra is not truly existent but merely an illusion, so too is the visible world an illusion.

जैसे इंद्र का चमकीला धनुष वास्तव में नहीं है, बल्कि एक भ्रम मात्र है, वैसे ही दृश्य जगत् भी एक भ्रम है।

7.125.66

शक्रचापे यथा भान्ति नानावर्णा नभोङ्गणे। तथा शून्यात्मका एव ब्रह्माण्डपरमाणवः ॥ ६६ ॥

śakracāpe yathā bhānti nānāvarṇā nabhoṅgaṇe | tathā śūnyātmakā eva brahmāṇḍaparamāṇavaḥ || 66 ||

Just as various colors appear in the bow of Indra in the sky, so too are the atoms of the universe essentially empty.

जैसे इंद्र के धनुष में आकाश में विभिन्न रंग दिखाई देते हैं, वैसे ही ब्रह्मांड के परमाणु भी शून्यात्मक हैं।

7.125.67

इदं जगदसद्भाति सदिव व्यक्तिमागतम्। अजातमनिरुद्धं च यथा शून्यत्वमम्बरे ॥ ६७ ॥

idaṃ jagadasadbhāti sadiva vyaktimāgatam | ajātamaniruddhaṃ ca yathā śūnyatvamambare || 67 ||

This world appears as non-existent, as if it has become manifest as existent. It is unborn and not destroyed, just like the emptiness of the sky.

यह जगत असत् प्रतीत होता है, जैसे कि यह सत् के रूप में व्यक्त हो गया हो | यह अजन्मा और अविनाशी है, जैसे कि आकाश की शून्यता |

7.125.68

साद्यन्तमप्यनाद्यन्तमशून्यमपि शून्यकम्। जगज्जातं तथाऽजातमरुद्धं रुद्धमेव च ॥ ६८ ॥

sādyantamapyanādyantamaśūnyamapi śūnyakaṃ | jagajjātaṃ tathā'jātamaruddhaṃ ruddhameva ca || 68 ||

The world, though having a beginning and an end, is also without a beginning and an end. Though not empty, it is empty. It is born, yet unborn, destroyed, yet undestroyed.

जगत, हालांकि आदि और अन्त वाला है, फिर भी अनादि और अनन्त है | हालांकि शून्य नहीं है, फिर भी शून्य है | यह जन्मा है, फिर भी अजन्मा है, नष्ट है, फिर भी अविनाशी है |

7.125.69

जातं निरुद्धमस्त्येवं ब्रह्म व्योमैव भासते । यथा दारुमयः स्तम्भस्तथा तच्छालभञ्जिका ॥ ६९ ॥

jātaṃ niruddhamastyevaṃ brahma vyomaiva bhāsate | yathā dārumayaḥ stambhastathā tacchālabhañjikā || 69 ||

Thus, what is born and destroyed is Brahman itself, which shines as the sky. Just as a wooden pillar is the same as its wooden nature, so too is the world the same as Brahman.

इस प्रकार, जो जन्मा और नष्ट होता है, वह ब्रह्म स्वयं है, जो आकाश के रूप में चमकता है | जैसे कि एक लकड़ी का खंभा अपने लकड़ी के स्वभाव के समान है, वैसे ही जगत ब्रह्म के समान है |

7.125.70

समस्तकलनोन्मुक्तं समं निर्निद्रमासनम् । यदेकान्तचिदाकाशं तद्विद्यात्तन्मयं जगत् ॥ ७० ॥

samastakalanonmuktaṃ samaṃ nirnidramāsanam | yadekāntacidākāśaṃ tadvidyāttanmayam jagat || 70 ||

That which is free from all parts and divisions, which is equal, sleepless, and without a seat, know that to be the world pervaded by the pure consciousness of the sky.

जो सभी भागों और विभाजनों से मुक्त है, जो समान, निद्रारहित और बिना आसन के है, उसे आकाश के शुद्ध चेतना से व्याप्त जगत के रूप में जानें |

7.125.71

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ यन्मध्ये संविदो वपुः । अनुन्मेषं चिदाकाशं तद्विद्यात्तन्मयं जगत् ॥ ७१ ॥

deśāddeśāntaraprāptau yanmadhye saṃvido vapuḥ | anunmeṣaṃ cidākāśaṃ tadvidyāttanmayam jagat || 71 ||

In the transition from one place to another, that which is the form of consciousness in the middle, know that to be the world pervaded by the pure consciousness of the sky, without blinking.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा में, जो बीच में चेतना का रूप है, उसे पलक झपके बिना आकाश के शुद्ध चेतना से व्याप्त जगत के रूप में जानें |

7.125.72

तत्र यद्वैतमैक्यं तन्मन्ये तदपि नैव च । तद्व्योम केवलं भाति मन्ये तदपि नैव वा ॥ ७२ ॥

tatra yaddvaitamaikyaṃ tanmanye tadapi naiva ca | tadvyoma kevalaṃ bhāti manye tadapi naiva vā || 72 ||

There, the duality and non-duality that I consider, even that is not so | That space alone appears, I consider even that is not so || 72 ||

वहाँ, जो द्वैत और अद्वैत है, मैं उसे मानता हूँ, फिर भी वह नहीं है | वह आकाश अकेला प्रकट होता है, मैं उसे भी मानता हूँ, फिर भी वह नहीं है || ७२ ||

7.125.73

जगदाकाशमेवेदमात्मैवात्मनि वा स्थितम् । भविष्यत्पुरवद्दृष्टमपि स्फारमपि स्फुटम् ॥ ७३ ॥

jagadākāśamevedamātmaivātmani vā sthitam | bhaviṣyatpuravaddṛṣṭamapi sphāramapi sphuṭam || 73 ||

This universe is indeed space, the self is indeed in the self | It is seen as it will be in the past, even expanding, even clear || 73 ||

यह ब्रह्माण्ड वास्तव में आकाश है, आत्मा वास्तव में आत्मा में है | यह भविष्य में भूतकाल की तरह दिखाई देता है, फैलता हुआ, स्पष्ट || ७३ ||

7.125.74

आकाशकोशविशदाशय दृश्यजातं मौनात्म तिष्ठति शिलाघनमेव शान्तम्। यन्नाम तस्य जगदित्यभिधां विधाय स्वात्मैव मोहित इवायमहो नु माया ॥ ७४ ॥

ākāśakośaviśadāśaya dṛśyajātaṃ maunātma tiṣṭhati śilāghanameva śāntam | yannāma tasya jagadityabhidhāṃ vidhāya svātmaiva mohita ivāyamaho nu māyā || 74 ||

The visible universe, which is the pure essence of the space-sheath, remains silent and still like a stone | Having given the name 'universe' to it, alas, the self is deluded by this illusion || 74 ||

दृश्य ब्रह्माण्ड, जो आकाश-कोश का शुद्ध सार है, मौन और शांत पत्थर की तरह रहता है | इसे 'ब्रह्माण्ड' नाम देकर, अहो, आत्मा इस माया से मोहित है || ७४ ||

Chapter 126

7.126.1

श्रीराम उवाच । अनन्तरं मुनिश्रेष्ठ कुर्वन्तः किं विपश्चितः । आसंस्तेषु दिगन्तेषु सद्वीपाब्धिवनाद्रिषु ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | anantaraṃ muniśreṣṭha kurvantaḥ kiṃ vipaścitaḥ | āsaṃsteṣu diganteṣu sadvīpābdhivanādriṣu || 1 ||

Sri Rama said: O best of sages, what did the wise ones do next? They lived in the directions, islands, oceans, forests, and mountains.

श्रीराम ने कहा: हे मुनिश्रेष्ठ, विद्वानों ने तत्पश्चात क्या किया? वे दिशाओं, द्वीपों, समुद्रों, वनों और पर्वतों में रहे।

7.126.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । शृणु किंवृत्तमेतेषां तात तत्र विपश्चिताम् । तालीतमालमालाढ्यद्वीपाद्रिवनचारिणाम् ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | śṛṇu kiṃvṛttameteṣāṃ tāta tatra vipaścitām | tālītamālamālāḍhyadvīpādrivana-cāriṇām || 2 ||

Sri Vasistha said: Listen, O dear one, to the actions of those wise ones who dwelled in the islands, mountains, and forests adorned with Tali and Mala trees.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: सुनो, हे प्रिय, उन विद्वानों के कार्यों को जो ताली और माला वृक्षों से सुशोभित द्वीपों, पर्वतों और वनों में रहते थे।

7.126.3

क्रौञ्चद्वीपगिरेरेको विपश्चित्पश्चिमे तटे । कटेनाद्रितटे पिष्टः करिणा कमलं यथा ॥ ३ ॥

krauñcadvīpagirereko vipaścitpaścime taṭe | kaṭenādritaṭe piṣṭaḥ kariṇā kamalaṃ yathā || 3 ||

One wise person on the western shore of Krauncha Island was crushed by an elephant against the mountain side, like a lotus.

क्रौंच द्वीप के पश्चिम तट पर एक विद्वान् व्यक्ति पर्वत की चट्टान से हाथी द्वारा कुचल दिया गया, जैसे कमल।

7.126.4

द्वितीयो नभसा नीतो रक्षसा विक्षताङ्गकः । निक्षिप्तो वाडवे वह्नौ तत्र भस्मत्वमागतः ॥ ४ ॥

dvitīyo nabhasā nīto rakṣasā vikṣatāṅgakaḥ | nikṣipto vāḍave vahnau tatra bhasmatvamāgataḥ || 4 ||

The second wise person was carried away by a demon in the sky, his body torn apart, and thrown into the subterranean fire, where he was reduced to ashes.

दूसरा विद्वान् व्यक्ति एक राक्षस द्वारा आकाश में उठा लिया गया, उसका शरीर चीरा हुआ था, और पाताल की अग्नि में फेंक दिया गया, जहाँ वह भस्म हो गया।

7.126.5

तृतीयस्त्रैदशं देशं नीतो विद्याधरेण वै । गतोऽप्रणामकुपितशक्रशापेन भस्मताम् ॥ ५ ॥

tṛtīyastrai daśaṃ deśaṃ nīto vidyādhareṇa vai | gato' praṇāmakupitaśakraśāpena bhasmatām || 5 ||

The third wise person was taken to the thirteenth realm by a Vidyadhara. Unable to bow due to anger, he was cursed by Indra and reduced to ashes.

तीसरा विद्वान् व्यक्ति एक विद्याधर द्वारा तेरहवें लोक में ले जाया गया। क्रोध के कारण झुकने में असमर्थ, उसे इंद्र के शाप से भस्म हो गया।

7.126.6

चतुर्थश्चतुरं गच्छन्कुशद्वीपगिरेस्तटे । दुर्वरिण नदीकच्छे मकरेणाष्टधा कृतः ॥ ६ ॥

caturthaścaturaṁ gacchan kuśadvīpagirestaṭe | durvāreṇa nadīkacche makareṇāṣṭadhā kr̥taḥ || 6 ||

The fourth one, while going to the four directions, reached the shore of the mountain of Kuśadvīpa. He was divided into eight parts by the crocodile in the difficult-to-cross river.

चौथा चारों दिशाओं में जाते हुए कुशद्वीप पर्वत के तट पर पहुंचा | उसे दुर्गम नदी के कच्छ में मगरमच्छ ने आठ भागों में काट दिया || ६ ||

7.126.7

इति ते पञ्चतां प्राप्ता दिङ्मुखेष्वाकुलाशयाः । क्षये चतुर्षु चत्वारो भूपाला लोकपालवत् ॥ ७ ॥

iti te pañcatāṁ prāptā diṅmukheṣvākulāśayāḥ | kṣaye caturṣu catvāro bhūpālā lokapālavat || 7 ||

Thus, they attained the state of being five, with confused minds in all directions. In the destruction of the four, the four kings became like the guardians of the world.

इस प्रकार, वे पांच हो गए, सभी दिशाओं में उलझे हुए मन के साथ | चारों के विनाश में, चारों राजा लोकपालों के समान हो गए || ७ ||

7.126.8

अथ तेषां ददर्शासौ व्योम्येव व्योमरूपिणाम् । संवित्प्राक्तनसंस्काराद्व्योमात्मावनिमण्डलम् ॥ ८ ॥

atha teṣāṁ dadarśāsau vyomnyeva vyomarūpiṇām | saṃvitprāktanasanskārādvyomātmāvanimaṇḍalam || 8 ||

Then, he saw them in the sky itself, in the form of the sky. From the previous impressions of consciousness, the sky-self saw the earth sphere.

तब, उसने उन्हें आकाश में ही, आकाश के रूप में देखा | चेतना के पूर्व संस्कारों से, आकाश-आत्मा ने पृथ्वी मण्डल को देखा || ८ ||

7.126.9

सप्तद्वीपाब्धिवलयं पुरपत्तनभूषणम् । सुरशैलशिरःपीठं ब्रह्मलोकशिरोमणिम् ॥ ९ ॥

saptadvīpābdhivalayaṃ purapattanabhūṣaṇam | suraśailaśiraḥpīṭhaṃ brahmalokśiromaṇim || 9 ||

Adorned with seven islands and oceans, cities and towns, the peak of the divine mountain as the seat, the jewel of Brahmaloka as the crest.

सात द्वीपों और समुद्रों से अलंकृत, नगरों और कस्बों से सजा हुआ, दिव्य पर्वत की चोटी आसन के रूप में, ब्रह्मलोक का मणि शिरोभूषण के रूप में || ९ ||

7.126.10

चन्द्रार्कबिम्बनयनं तारामुक्ताकलापकम् । विलोलमेघवसनं नानावनतनूरुहम् ॥ १० ॥

candrārkabimbanayanaṃ tārāmuktākalāpakam | vilolameghavasanaṃ nānāvanatanūruham || 10 ||

With eyes like the moon and sun, adorned with stars and pearls, clothed in moving clouds, with various bowing plants.

चंद्रमा और सूर्य के समान नेत्रों वाला, तारों और मोतियों से अलंकृत, चलते बादलों से वस्त्र धारण किए हुए, विविध झुके हुए पौधों वाला || १० ||

7.126.11

देहान्विपश्चितां संविद्ददर्श चतुरोऽपि सा । प्राग्वत्कल्पपरावृत्तौ द्यौर्दिगन्तानिवाततान् ॥ ११ ॥

dehānvipaścitāṃ saṃviddadarśa caturō'pi sā | prāgvatkalpaparāvr̥ttau dyaurdigantānivātatān || 11 ||

She saw the embodied consciousness of the four, as if the directions of the sky had returned to their previous state.

उसने चारों के शरीर में चेतना को देखा, जैसे आकाश की दिशाएँ पहले जैसे हो गई हों।

7.126.12

आतिवाहिकसंवित्तेस्तेऽव्योम्नि व्योमतात्मकाः । आधिभौतिकदेहत्वभावान्ददृशुरग्रतः ॥ १२ ॥

ātivāhikasaṃvittestē'vyomni vyomatātmakāḥ | ādhibhautikadehatvabhāvāndadṛśuragrataḥ || 12 ||

Due to their transcendental consciousness, they appeared in the sky as if they were the sky itself, and they saw the material bodies in front of them.

अपनी पारलौकिक चेतना के कारण, वे आकाश में आकाश के समान प्रकट हुए और उन्होंने अपने सामने भौतिक शरीरों को देखा।

7.126.13

अस्यात्मकत्वेऽविद्येयं कियती स्यादितीक्षितुम् । चत्वारोऽपि प्रवृत्तास्ते संस्कारवशतः पुरः ॥ १३ ॥

asyātmakatve'vidyeyaṃ kiyatī syāditīkṣitum | catvāro'pi pravṛttāste saṃskāravśataḥ puraḥ || 13 ||

To see how much ignorance exists in this self-nature, all four of them moved forward due to their impressions.

इस आत्म-स्वभाव में कितनी अज्ञानता है, यह देखने के लिए चारों अपने संस्कारों के कारण आगे बढ़े।

7.126.14

दृश्यदर्शनयोरुर्वीमण्डलानुभवाकृतेः । निष्ठां द्रष्टुमविद्याया भ्रेमुर्द्वीपान्तराणि ते ॥ १४ ॥

dṛśyadarśanayorurvīmaṇḍalānubhavākṛteḥ | niṣṭhāṃ draṣṭumavidyāyā bhremurdvīpāntarāṇi te || 14 ||

To see the culmination of ignorance in the experience of the seen and the seer, they wandered through various islands.

दृश्य और द्रष्टा के अनुभव में अज्ञानता की परिणति देखने के लिए, वे विभिन्न द्वीपों में भटके।

7.126.15

द्वीपसप्तकमुल्लङ्घ्य समहार्णवसप्तकम् । विपश्चित्पश्चिमः प्राप घनभूमौ जनार्दनम् ॥ १५ ॥

dvīpasaptakamullaṅghya samahārṇavasaptakam | vipaścitpaścimaḥ prāpa ghanabhūmau janārdanam || 15 ||

Crossing the seven islands and the seven oceans, the wise one reached Janardana on the dense earth.

सात द्वीपों और सात समुद्रों को पार करके, विद्वान ने घनी पृथ्वी पर जनार्दन को प्राप्त किया।

7.126.16

तस्मादनुपमं ज्ञानं समासाद्य दिगन्तरे । तस्मिन्नेव समाधाने सोऽतिष्ठद्वर्षपञ्चकम् ॥ १६ ॥

tasmādanupamaṃ jñānaṃ samāsādya digantare | tasmineva samādhāne so'tiṣṭhadvarṣapañcakam || 16 ||

Having attained that incomparable knowledge, he remained in that state of meditation for five years.

उस अनुपम ज्ञान को प्राप्त करके, उसी ध्यान में वह पाँच वर्षों तक रहा।

7.126.17

ततो देहं परित्यज्य चित्ते सत्तामुपागते । स तत्प्राण इवाकाशं परं निर्वाणमाययौ ॥ १७ ॥

tato dehaṃ parityajya citte sattāmupāgate | sa tatprāṇa ivākāśaṃ paraṃ nirvāṇamāyayau || 17 ||

Then, leaving the body, when the mind attained steadiness, he, like the life breath, reached the supreme nirvana.

तब, शरीर को छोड़कर, जब मन स्थिर हो गया, वह, जैसे प्राण, परम निर्वाण तक पहुँच गया।

7.126.18

पूर्वः पर्वणि शीतांशुबिम्बपार्श्वे स्थितं वपुः । चिन्तयंश्चिरमुन्नष्टदेहश्चन्द्रपुरे स्थितः ॥ १८ ॥

pūrvaḥ parvaṇi śītāṃśubimbapārśve sthitaṃ vapuḥ | cintayaṃściramunnaṣṭadehaścandrapure sthitaḥ || 18 ||

The previous one, situated on the side of the moon's disc during the fortnight, contemplating for a long time, remained in the lunar world with a destroyed body.

पिछला, पक्ष के दौरान चंद्रमा के मंडल के पास स्थित, लंबे समय तक ध्यान करते हुए, नष्ट शरीर के साथ चंद्र लोक में रहा।

7.126.19

दक्षिणः शाल्मलिद्वीपे राज्यमुत्सन्नशात्रवः । करोत्यद्यापि न सतो विस्मृतान्यविनिश्चयः ॥ १९ ॥

dakṣiṇaḥ śālmalidvīpe rājyamutsannaśātravaḥ | karotyadyāpi na sato vismṛtānyaviniścayaḥ || 19 ||

The southern one, in the island of Shalmali, with a ruined kingdom and defeated enemies, still does not perform any actions, forgetting everything without any decision.

दक्षिण का व्यक्ति, शाल्मली द्वीप में, नष्ट राज्य और पराजित शत्रुओं के साथ, अभी तक कोई कार्य नहीं करता, सब कुछ भूल जाता है, किसी निर्णय के बिना।

7.126.20

उत्तरस्तरलास्फालकल्लोले सप्तमाम्बुधौ । सहस्रमेकं वर्षाणामुवास मकरोदरे ॥ २० ॥

uttarastaralāsphālakallole saptamāmbudhau | sahasramekaṃ varṣāṇāmuvāsa makarodare || 20 ||

The northern one, in the trembling waves of the seventh ocean, remained for a thousand years in the belly of a crocodile.

उत्तर का व्यक्ति, सातवें समुद्र की कंपित लहरों में, एक हजार वर्षों तक मगरमच्छ के पेट में रहा।

7.126.21

मकरोदरमांसाशी मृते मकरनायके । मकरोदरतोऽब्धेश्च निर्गतो मकरो यथा ॥ २१ ॥

makarodaramāṃsāśī mṛte makaranāyake | makarodarato'bdheśca nirgato makaro yathā || 21 ||

When the lord of the crocodiles died, and the crocodile emerged from the ocean's belly, just as it had emerged from the crocodile's belly.

जब मगरमच्छ के राजा की मृत्यु हुई, और मगरमच्छ समुद्र के पेट से निकला, जैसे वह मगरमच्छ के पेट से निकला था।

7.126.22

ततोऽशीतिसहस्राणि योजनानां घनावनिम् । हिमकल्पजलाम्भोधेरुल्लङ्घ्य सुघनोदरीम् ॥ २२ ॥

tato'śītisahasrāṇi yojanānāṃ ghanāvanim | himakalpajalāmbhodherullaṅghya sughanodarīm || 22 ||

Then, crossing eighty thousand dense forests and the ocean of ice-like water with a very dense belly.

फिर, अस्सी हजार घने वनों और बर्फ जैसे पानी के समुद्र को पार करके, जिसका पेट बहुत घना था।

7.126.23

प्राप्तो दशसहस्राणि योजनानां महामहीम् । सौवर्णीं सुरसंचारसरणिं मृतवानसौ ॥ २३ ॥

prāpto daśasahasrāṇi yojanānāṃ mahāmahīm | sauvarṇīṃ surasaṃcārasaraṇiṃ mṛtavānasau || 23 ||

He reached ten thousand yojanas of the great earth, which is golden, frequented by the gods, and where the forest of death is located.

उसने दस हजार योजन की महान धरती तक पहुंच गया, जो सोने की बनी है, देवताओं द्वारा आवाजाही की जाती है, और जहां मृत्यु का वन स्थित है।

7.126.24

तस्यां भूमौ च मध्ये च विपश्चिन्नाकितामगात्। उत्तमामग्निमध्यस्थं क्षणात्काष्ठमिवाग्निताम्॥ २४॥

tasyāṃ bhūmau ca madhye ca vipaścinnākitāmagāt | uttamāmagnímadhyasthaṃ kṣaṇātkāṣṭhamivāgnitām || 24 ||

In the middle of that earth, the wise one reached the highest fire, as if turning into firewood in an instant.

उस धरती के मध्य में, विद्वान ने उत्तम अग्नि तक पहुंच गया, जैसे क्षण भर में लकड़ी अग्नि में बदल गई हो।

7.126.25

प्रधानदेवो भूत्वासौ लोकालोकगिरिं गतः। अस्य भूमण्डलतरोरालवालमिव स्थितम्॥ २५॥

pradhānadevo bhūtvāsau lokālokagiriṃ gataḥ | asya bhūmaṇḍalatarorālavālamiva sthitam || 25 ||

Becoming the chief deity, he reached the Lokāloka mountain, which is situated like a boundary around the earth.

प्रधान देवता बनकर, उसने लोकालोक पर्वत तक पहुंच गया, जो धरती के चारों ओर एक सीमा की तरह स्थित है।

7.126.26

स पञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां समुन्नतः। आलोकलोकाचाराढ्यो भाग एकोऽस्य नेतरः॥ २६॥

sa pañcāśatsahasrāṇi yojanānāṃ samunnataḥ | ālokalokācārāḍhyo bhāga eko'sya netaraḥ || 26 ||

That mountain is fifty thousand yojanas high. One side of it is illuminated by the light of the stars, and the other side is not.

वह पर्वत पचास हजार योजन ऊँचा है। इसका एक भाग तारों के प्रकाश से आलोकित है, और दूसरा भाग नहीं।

7.126.27

लोकालोकशिरःप्राप्तं तारकामार्गसंस्थितम्। अधःस्थिता अपश्यंस्तमुच्चनक्षत्रशङ्कया॥ २७॥

lokālokśiraḥprāptaṃ tārakāmārgasaṃsthitam | adhaḥsthitā apaśyantamuccanakṣatraśaṅkayā || 27 ||

Reaching the summit of Lokāloka, situated on the path of the stars, those below see it with the suspicion of a high star.

लोकालोक के शिखर तक पहुँचकर, तारों के मार्ग पर स्थित, नीचे वाले लोग उसे एक ऊँचे तारे के संदेह से देखते हैं।

7.126.28

तस्मात्प्रदेशात्तत्पारे तमस्तस्य महागिरेः। चतुर्दिक्कं महाखातं नभः शून्यमनन्तकम्॥ २८॥

tasmātpradeśāttatpāre tamastasya mahāgireḥ | caturdikkaṃ mahākhātaṃ nabhaḥ śūnyamanantakam || 28 ||

Beyond that region, on the other side of that great mountain, there is darkness. In all four directions, there is a vast, empty, and endless sky.

उस क्षेत्र के पार, उस महान पर्वत के दूसरी ओर, अंधेरा है। चारों दिशाओं में, एक विशाल, खाली और अनंत आकाश है।

7.126.29

ततो भूगोलकोऽयं हि समाप्तो वर्तुलाकृतिः। नभःशून्यं महाखातं ततस्तिमिरपूरितम्॥ २९॥

tato bhūgolako'yaṃ hi samāpto vartulākṛtiḥ | nabhaḥśūnyaṃ mahākhātaṃ tatastimirapūritam || 29 ||

Thus, this spherical Earth is complete. Beyond that, there is an empty, vast sky filled with darkness.

इस प्रकार, यह गोलाकार पृथ्वी पूर्ण है। उसके पार, एक खाली, विशाल आकाश है जो अंधेरे से भरा हुआ है।

7.126.30

तत्रालिकज्जलतमालनभोन्तरालनीलं तमो न च मही न च जंगमादि। नालम्बनं न च मनागपि वस्तुजातं किंचित्कदाचिदपि संभवतीति विद्धि ॥ ३० ॥

tatrālikajjalatamālanabhontarālanīlaṃ tamo na ca mahī na ca jaṅgamādi | nālambanaṃ na ca manāgapi vastujātaṃ kiñcitsadācidapi saṃbhavatīti viddhi || 30 ||

Know that in that vast, dark emptiness, there is no light, no Earth, no living beings, no support, and no substance of any kind at any time.

जान लो कि उस विशाल, अंधेरे खालीपन में, न प्रकाश है, न पृथ्वी है, न जीवित प्राणी हैं, न आधार है, और न कभी कोई भी पदार्थ है।

Chapter 127

7.127.1

श्रीराम उवाच । भगवन्कथयैतन्मे कथं भूगोलकं स्थितम् । कथमृक्षगणो याति लोकालोकः कथं गिरिः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | bhagavankathayaitanme kathaṃ bhūgolakaṃ sthitam | kathamṛkṣagaṇo yāti lokālokaḥ kathaṃ giriḥ || 1 ||

Shri Ram said: O Lord, please explain to me how the Earth is situated, how the constellations move, and how the Lokāloka mountain is.

श्री राम ने कहा: हे भगवन्, मुझे यह बताएं कि पृथ्वी कैसे स्थित है, नक्षत्र समूह कैसे चलते हैं, और लोकालोक पर्वत कैसा है।

7.127.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । यथा संकल्परचिता शिशोर्व्योमनि तिष्ठति । वीटा चिन्मात्रबालेन कल्पितो भूस्तथाम्बरे ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yathā saṃkalparacitā śiśorvyomani tiṣṭhati | vīṭā cinmātrabālena kalpito bhūstathāmbare || 2 ||

Vasishtha said: Just as a child's imagined city exists in the sky, so too does the Earth, imagined by the pure consciousness of a child, exist in the sky.

वसिष्ठ ने कहा: जैसे एक बच्चे की कल्पना में बनी नगरी आकाश में स्थित होती है, वैसे ही चिन्मात्र बालक द्वारा कल्पित पृथ्वी आकाश में स्थित है।

7.127.3

यथा तिमिरिकाक्षाणां केशचन्द्रादिदर्शनम् । चिदाकाशस्य सर्गादौ तथा पृथ्व्यादिदर्शनम् ॥ ३ ॥

yathā timirikākṣāṇāṃ keśacandrādidarśanam | cidākāśasya sargādau tathā pṛthvyādidarśanam || 3 ||

Just as those with cataracts see hairs and the moon, so too at the beginning of creation, the vision of the Earth and other things appears in the space of consciousness.

जैसे मोतियाबिंद वाले लोग बाल और चंद्रमा देखते हैं, वैसे ही सृष्टि के आरंभ में, चिदाकाश में पृथ्वी और अन्य चीजों का दर्शन होता है।

7.127.4

यथा संकल्पनगरं धार्यमाणं न दृश्यते । धार्यते धार्यते मा च तथोर्व्यनुभवश्चितेः ॥ ४ ॥

yathā saṃkalpanagaraṃ dhāryamāṇaṃ na dṛśyate | dhāryate dhāryate mā ca tathorvyānubhavaścitеḥ || 4 ||

Just as an imagined city, though held in mind, is not seen, so too the experience of the Earth is not seen in consciousness.

जैसे कल्पना में बनी नगरी, मन में रखी हुई भी नहीं दिखती, वैसे ही पृथ्वी का अनुभव चिन्मात्र में नहीं दिखता।

7.127.5

यद्यथा यावदाभाति चिति चित्त्वात्स्वभावतः । तत्तथा तावदाभाति तत्र तत्र तदात्मकम् ॥ ५ ॥

yadyathā yāvadābhāti citi cittvātsvabhāvataḥ | tattathā tāvadābhāti tatra tatra tadātmakam || 5 ||

Whatever appears in consciousness, in whatever way, and for however long, it appears in that way, in that place, and with that nature.

जो कुछ भी चिन्मात्र में जिस तरह से और जितनी देर तक प्रकट होता है, वह उसी तरह से, उसी स्थान पर, और उसी स्वभाव के साथ प्रकट होता है।

7.127.6

तिमिराक्रान्तनेत्रस्य केशोण्ड्रकमिवाम्बरे । चिन्मात्रस्य महीगोलो यो भातः स तथा स्थितः ॥ ६ ॥

timirākrāntanetrasya keśoṇḍrakamivāmbare | cinmātrasya mahīgolo yo bhātaḥ sa tathā sthitaḥ || 6 ||

Just as a person with eyes covered in darkness sees a hair-ball in the sky, similarly, the world appears to the pure consciousness.

जैसे अंधेरे में आँखों वाले को आकाश में बालों का गोला दिखता है, वैसे ही शुद्ध चेतना को यह संसार दिखता है।

7.127.7

ऊर्ध्वं वहन्त्यः सरितस्तदधस्ताद्हुताशनः । चिति चेत्स्वप्नवद्भाति तत्तथा तत्स्थितं भवेत् ॥ ७ ॥

ūrdhvaṃ vahantyaḥ saritastadadhastādhutāśanaḥ | citi cet svapnavadbhāti tattathā tatsthitaṃ bhavet || 7 ||

If the rivers flow upwards and fire burns downwards, it would appear as a dream. Thus, it would be situated in that manner.

अगर नदियाँ ऊपर की ओर बहें और आग नीचे की ओर जले, तो यह एक सपना जैसा दिखेगा। इस प्रकार, यह उसी तरह स्थित होगा।

7.127.8

तस्मात्पतन्ती भूर्भाता पतत्येवानिशं जगत् । उत्पतन्ती तु चिद्भाता तथा नानात्मिका भवेत् ॥ ८ ॥

tasmātpatantī bhūrbhātā patatyevāniśaṃ jagat | utpatantī tu cidbhātā tathā nānātmikā bhavet || 8 ||

Therefore, the earth appears to be falling continuously. The world also falls in the same way. However, the consciousness appears to rise, thus becoming manifold.

इसलिए, पृथ्वी लगातार गिरती प्रतीत होती है। संसार भी उसी तरह गिरता है। हालाँकि, चेतना उठती प्रतीत होती है, इस प्रकार बहुरूपी बन जाती है।

7.127.9

स्तब्धभाता स्थिता स्तब्धा सालोका तु प्रकाशिनी । निरालोका निरालोकलोकानामात्मनि स्थिता ॥ ९ ॥

stabdhabhātā sthitā stabdhā sālokā tu prakāśinī | nirālokā nirālokalokānāmātmani sthitā || 9 ||

The immovable appears to be stationary, illuminating the world. The non-illuminating is situated in the self of the non-illuminating worlds.

अचल स्थित प्रतीत होता है, संसार को प्रकाशित करता है। अप्रकाशित अप्रकाशित संसारों के स्वयं में स्थित है।

7.127.10

चिद्भानैकानुसारेण ताराचक्रं तथा मही । असदेव सदैवेदं भातीदमविखण्डितम् ॥ १० ॥

cidbhānaikānusāreṇa tārācakraṃ tathā mahī | asadeva sadaivedaṃ bhātīdamavikhaṇḍitam || 10 ||

According to the single principle of consciousness, the star system and the earth appear as they are, unbroken and eternal.

चेतना के एकमात्र सिद्धांत के अनुसार, तारा मंडल और पृथ्वी अखंडित और सनातन प्रतीत होते हैं।

7.127.11

आलोकालोकमेवाथ नभःखातं ततो महत् । तम एकार्णवाकारं स्थितं तत्र क्वचित्क्वचित् ॥ ११ ॥

ālokālokamevātha nabhaḥkhātaṃ tato mahat | tama ekārṇavākāraṃ sthitaṃ tatra kvacitkvacit || 11 ||

There, the vast expanse of the sky is dug out, and there exists darkness in the form of a single ocean, situated in some places.

वहाँ, आकाश का विशाल खंड खोदा गया है, और वहाँ एक समुद्र के रूप में अंधकार कहीं-कहीं स्थित है।

7.127.12

दूरत्वादृक्षचक्रस्य करालत्वान्महागिरेः । क्वचित्तमः क्वचित्तेजस्तत्रैवाचत्वरेऽपि च ॥ १२ ॥

dūratvādṛkṣacakrasya karālatvānmahāgireḥ | kvacittamaḥ kvacittejastatraivācatvare'pi ca || 12 ||

Due to the distance of the constellation and the terrifying nature of the great mountain, there is darkness in some places and light in others, even in the same region.

नक्षत्र मंडल की दूरी और महान पर्वत की भयानक प्रकृति के कारण, कहीं-कहीं अंधकार है और कहीं-कहीं प्रकाश, उसी क्षेत्र में भी।

7.127.13

लोकालोकगिरेः पारे स्थितादाकाशमण्डलात् । दशदिक्कं सुदूरेण ऋक्षचक्रं विवर्तते ॥ १३ ॥

lokālokagireḥ pāre sthitādākāśamaṇḍalāt | daśadikkaṃ sudūreṇa ṛkṣacakraṃ vivartate || 13 ||

Beyond the boundary of the Lokāloka mountain, far from the sky, the constellation rotates in all ten directions.

लोकालोक पर्वत की सीमा के पार, आकाश से दूर, नक्षत्र मंडल दसों दिशाओं में घूमता है।

7.127.14

आपातालदिवो नद्धमृक्षचक्रं तदम्बरे । दशदिक्कं प्रसरति पतदूर्ध्वादृतेऽभितः ॥ १४ ॥

āpātāladivo naddhamṛkṣacakraṃ tadambare | daśadikkaṃ prasarati patadūrdhvādṛte'bhitaḥ || 14 ||

The constellation, bound from the underworld to the heavens, spreads in all ten directions, falling from above and below.

नक्षत्र मंडल, जो पाताल से स्वर्ग तक बंधा है, दसों दिशाओं में फैलता है, ऊपर और नीचे से गिरता हुआ।

7.127.15

भूलोकमेव पातालयुतं नक्षत्रमण्डलम् । पर्येति लोकालोकान्ते नान्यच्चित्कल्पनाच्च तत् ॥ १५ ॥

bhūlokameva pātālayutaṃ nakṣatramaṇḍalam | paryeti lokālokānte nānyaccitkalpanācca tat || 15 ||

The constellation, along with the underworld, revolves around the earth, and nothing else is imagined beyond the boundary of Lokāloka.

नक्षत्र मंडल, पाताल के साथ, पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, और लोकालोक की सीमा के पार कुछ और कल्पना नहीं की जाती।

7.127.16

सलोकालोकभूलोकद्विगुणात्खादनन्तरम् । पक्वाक्षोटस्य भिस्सेव स्थितं नक्षत्रमण्डलम् ॥ १६ ॥

salokālokabhūlokadviguṇātkhādanantaram | pakvākṣoṭasya bhisseva sthitaṃ nakṣatramaṇḍalam || 16 ||

After consuming twice the amount of the three worlds (heaven, earth, and the underworld), the constellation remains like a ripe grain of corn.

तीनों लोकों (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल) के दोगुने भोजन के बाद, नक्षत्र मण्डल एक पके हुए मक्के के दाने की तरह स्थित रहता है।

7.127.17

द्विगुणा नभसस्तस्मादृक्षचक्रस्य पुष्टता । दशदिक्कं विसरतो बिल्वत्वक्सदृशस्थितेः ॥ १७ ॥

dviguṇā nabhasastasmādṛkṣacakrasya puṣṭatā | daśadikkaṃ visarato bilvatvaksadṛśasthiteḥ || 17 ||

Twice the sky from that constellation's nourishment, spreading in ten directions, resembles the peel of a bael fruit.

उस नक्षत्र मण्डल की पोषण से दोगुनी आकाशगंगा, दस दिशाओं में फैलती हुई, बेल के फल की छाल के समान दिखाई देती है।

7.127.18

संविद्धनस्य कचनं यादृशं कल्पनात्मकम्। यदित्थं संनिवेशेन नन्वियं जागती स्थितिः ॥ १८ ॥

saṃviddhanasya kacanaṃ yādṛśaṃ kalpanātmakam | yadittthaṃ saṃniveśena nanviyaṃ jāgatī sthitiḥ || 18 ||

The imagined form of the conscious being, if it is established thus, is this not the state of the world?

चेतन प्राणी का कल्पित रूप, यदि ऐसे ही स्थापित होता है, तो क्या यह दुनिया की स्थिति नहीं है?

7.127.19

नक्षत्रचक्राद्विगुणं ततोऽन्यद्विद्यते नभः। तच्च क्वचित्प्रकाशाढ्यं क्वचित्सान्द्रतमोमयम् ॥ १९ ॥

nakṣatracakrāddviguṇaṃ tato'nyadvidyate nabhaḥ | tacca kvacitprakāśāḍhyaṃ kvacitsāndratamomayam || 19 ||

Beyond the constellation, there is another sky that is twice as large, which is sometimes bright and sometimes dense with darkness.

नक्षत्र मण्डल से परे, एक और आकाश है जो दोगुना बड़ा है, जो कभी-कभी उज्ज्वल और कभी-कभी घने अंधकार से भरा होता है।

7.127.20

पर्यन्ते तस्य नभसः स्थितं ब्रह्माण्डखर्परम्। एकमूर्ध्वे परमधो गगनं मध्यमेतयोः ॥ २० ॥

paryante tasya nabhasaḥ sthitaṃ brahmāṇḍakharparam | ekamūrdhve paramadho gaganaṃ madhyametayoḥ || 20 ||

At the edge of that sky, the cosmic egg is situated, with one part above, another below, and the sky in the middle of these two.

उस आकाश के किनारे पर, ब्रह्माण्ड का अंडा स्थित है, जिसका एक भाग ऊपर है, दूसरा नीचे है, और आकाश इन दोनों के बीच में है।

7.127.21

योजनानां कोटिशतं पुष्टं वज्रदृढं च तत्। स्थितं संवेदनमयं व्योम्नि व्योममयात्मकम् ॥ २१ ॥

yojanānāṃ koṭiśataṃ puṣṭaṃ vajradṛḍhaṃ ca tat | sthitaṃ saṃvedanamayaṃ vyomni vyomamayātmakam || 21 ||

The countless plans, strong and firm like a diamond, are established in the sky, filled with consciousness and of the nature of the sky.

असंख्य योजनाएँ, जो वज्र की तरह मजबूत और दृढ़ हैं, आकाश में स्थित हैं, चेतना से भरी हुई और आकाश के स्वभाव की हैं।

7.127.22

सर्वदिक्कं महागोले नभसि स्वर्कतारकम्। किमत्रोर्ध्वमधः किं स्यात्सर्वमूर्ध्वमधश्च वा ॥ २२ ॥

sarvadikkaṃ mahāgole nabhasi svarkatārakam | kimatro'rdhvamadhaḥ kiṃ syātsarvamūrdhvamadhaśca vā || 22 ||

In the great sphere of the sky, which is filled with stars, what is above and what is below? Everything is both above and below.

महान आकाश गोले में, जो तारों से भरा हुआ है, यहाँ ऊपर क्या है और नीचे क्या है? सब कुछ ऊपर और नीचे दोनों है।

7.127.23

पतनमुत्पतनं गमनं स्थितं चित इति स्फुरितं न तु वस्तु तत्। पतनमस्ति न चोत्पतनं न वा गमनमागमनं स्थितमित्यपि ॥ २३ ॥

patanamutpataṇaṃ gamanaṃ sthitaṃ citi iti sphuriṇaṃ na tu vastu tat | patanamasti na cotpataṇaṃ na vā gamanaṃ āgamanaṃ sthitamityapi || 23 ||

Falling, rising, moving, staying, and consciousness are all just appearances, not real entities. There is no falling, no rising, no moving, no staying, and no consciousness.

गिरना, उठना, जाना, रहना, और चेतना सब केवल दिखावे हैं, वास्तविक वस्तु नहीं हैं। न गिरना है, न उठना है, न जाना है, न रहना है, और न चेतना है।

Chapter 128

7.128.1

अस्मदादेर्जनस्यैतत्प्रत्यक्षं नानुमानिकम्शुद्धबोधशरीरेण नाधिभौतिकरूपिणा ॥ १ ॥

asmadāderjanasyaitatpratyakṣaṃ nānumānikamśuddhabodhaśarīreṇa nādhibhautikarūpiṇā || 1 ||

This is directly perceived by us and not inferred. It is not embodied in the physical form but in the pure consciousness.

यह हमारे द्वारा सीधे देखा जाता है, अनुमान नहीं है। यह शारीरिक रूप में नहीं, बल्कि शुद्ध चेतना में व्यक्त होता है।

7.128.2

एतदस्मज्जगत्स्वप्ने नान्येषु कथितं मयान्येष्वस्ति जगत्स्वप्नेष्वेवमन्यापि च स्थितिः ॥ २ ॥

etadasmajjagatsvapne nānyeṣu kathitaṃ mayāanyeṣvasti jagatsvapneṣvevamanyāpi ca sthitiḥ || 2 ||

This has been stated by me in my dream of the world, not in others. In other dreams of the world, there is a similar situation.

यह मैंने अपने जगत स्वप्न में कहा है, दूसरों में नहीं। दूसरे जगत स्वप्नों में भी ऐसी ही स्थिति है।

7.128.3

जगत्स्वप्नेषु चान्येषु संस्थानकथनेन किं न ह्यौपयोगिकादन्या कथा भवति धीमताम् ॥ ३ ॥

jagatsvapneṣu cānyeṣu saṃsthānakathanena kimna hyaupayogikādanyā kathā bhavati dhīmatām || 3 ||

What is the use of describing the situation in other dreams of the world? No other discussion is useful for the wise.

दूसरे जगत स्वप्नों में स्थिति का वर्णन करने से क्या लाभ? बुद्धिमानों के लिए कोई दूसरी बात उपयोगी नहीं होती।

7.128.4

सर्वेषामुत्तरे मेरुर्लोकालोकश्च दक्षिणेयेषामित्यनुमाऽशेषभूतौघे तेन पण्डिताः ॥ ४ ॥

sarveṣāmuttare merurlokālokaśca dakṣiṇeyeṣāmityanumā'śeṣabhūtaughe tena paṇḍitāḥ || 4 ||

All the northern regions, including Mount Meru, and the southern regions, are inferred to be complete in their existence. Thus, the wise understand.

सभी उत्तरी क्षेत्र, मेरु पर्वत सहित, और दक्षिणी क्षेत्र, अपने अस्तित्व में पूर्ण हैं, ऐसा अनुमान लगाया जाता है। इस प्रकार, बुद्धिमान लोग समझते हैं।

7.128.5

प्रत्यक्षमेतदन्येषां यत्र तेऽन्ये जगद्भ्रमाःनास्माकं विषये ते हि तथा संस्थानशोभिनः ॥ ५ ॥

pratyakṣametadanyeṣāṃ yatra te'nye jagadbhramāḥnāsmākaṃ viṣaye te hi tathā saṃsthānaśobhinaḥ || 5 ||

This is directly perceived by others where those other world illusions are. They are not in our realm, and they are similarly situated.

यह दूसरों द्वारा सीधे देखा जाता है जहाँ वे दूसरे जगत भ्रम हैं। वे हमारे क्षेत्र में नहीं हैं, और वे समान रूप से स्थित हैं।

7.128.6

सर्वेषामुत्तरे मेरुर्लोकालोकश्च दक्षिणे । सप्तद्वीपनिवासानां नान्येषामिति निश्चयः ॥ ६ ॥

sarveṣāmuttare merurlokālokaścadakṣiṇe | saptadvīpanivāsānāṃ nānyeṣāmitiniścayaḥ || 6 ||

In the north of all is Meru, and in the south is Lokāloka. There is no doubt that this is the abode of the seven islands.

सभी के उत्तर में मेरु है और दक्षिण में लोकालोक है | सात द्वीपों के निवासियों के लिए इसमें कोई संदेह नहीं है |

7.128.7

प्रकृतं श्रृणु हे राम तद्ब्रह्माण्डकवाटकम् । यत्प्रमाणं ततो वारि बाह्ये दशगुणं स्थितम् ॥ ७ ॥

prakṛtaṃ śṛṇu he rāma tadbrahmāṇḍakavāṭakam | yatpramāṇaṃ tato vāri bāhye daśaguṇaṃ sthitam || 7 ||

Listen, O Rama, to the natural Brahmanda gate. The size of which, the water outside is ten times that.

हे राम, प्राकृतिक ब्रह्माण्ड द्वार के बारे में सुनो | जिसका आकार, उससे बाहर का पानी दस गुना है |

7.128.8

तद्ब्रह्माण्डकवाटं तु तृणं तृणमणिर्यथा । धत्ते वारि स्वभावेन नित्यं कल्पकरत्नवत् ॥ ८ ॥

tadbrahmāṇḍakavāṭaṃ tu tṛṇaṃ tṛṇamaṇiryathā | dhatte vāri svabhāvena nityaṃ kalpakaratnavat || 8 ||

That Brahmanda gate, like a grass gem, naturally holds water eternally like a wish-fulfilling gem.

वह ब्रह्माण्ड द्वार, घास के रत्न की तरह, प्राकृतिक रूप से सदा के लिए पानी को इच्छापूर्ति रत्न की तरह धारण करता है |

7.128.9

सर्वेषामेव भावानां स्थितः कल्पकरत्नवत् । सर्वदा पार्थिवो भागस्तेनात्रैते पतन्त्यलम् ॥ ९ ॥

sarveṣāmeva bhāvānāṃ sthitaḥ kalpakaratnavat | sarvadā pārthivo bhāgastenātraite patantyalam || 9 ||

All beings are situated like a wish-fulfilling gem. Always the earthly part, therefore, they fall here sufficiently.

सभी भावों के लिए स्थित है इच्छापूर्ति रत्न की तरह | सदा पृथ्वी का भाग, इसलिए वे यहाँ पर्याप्त रूप से गिरते हैं |

7.128.10

जलाद्दशगुणं बाह्ये स्थितं तेजो निरिन्धनम् । आकाशविशदं शान्तस्तब्धज्वालोदरोपमम् ॥ १० ॥

jalāddaśaguṇaṃ bāhye sthitaṃ tejo nirindhanam | ākāśaviśadaṃ śāntastabdhajvālodaropamam || 10 ||

Outside the water, ten times, is situated the fire without fuel, clear like the sky, calm, resembling a still flame.

पानी से बाहर, दस गुना, बिना ईंधन के अग्नि स्थित है, आकाश की तरह स्पष्ट, शांत, स्थिर ज्वाला के समान |

7.128.11

तस्माद्दशगुणो बाह्ये संस्थितो वायुरायतः । वायोर्दशगुणं बाह्ये व्योम तिष्ठति निर्मलम् ॥ ११ ॥

tasmāddaśaguṇo bāhye saṃsthito vāyurāyataḥ | vāyordaśaguṇaṃ bāhye vyoma tiṣṭhati nirmalam || 11 ||

Beyond that, the air extends ten times more externally | Beyond the air, the pure sky extends ten times more externally || 11 ||

उसके बाहर दस गुना वायु फैली हुई है | वायु के बाहर दस गुना निर्मल आकाश फैला हुआ है || ११ ||

7.128.12

ततः परतरं शान्तं ब्रह्माकाशमनन्तकम् । न प्रकाशं न च तमो महाचिद्धनमव्ययम् ॥ १२ ॥

tataḥ parataraṃ śāntaṃ brahmākāśamanantakam | na prakāśaṃ na ca tamo mahāciddhanamavyayam || 12 ||

Beyond that, there is the peaceful, infinite Brahma-sky | It is neither light nor darkness, the imperishable great consciousness || 12 ||

उसके परे, शान्त, अनन्त ब्रह्माकाश है | यह न प्रकाश है न अंधकार, अविनाशी महाचित् धन है || १२ ||

7.128.13

अनादिमध्यपर्यन्ते तस्मिन्ब्रह्ममहाम्बरे । महाचिन्नाम्नि सर्वात्मन्ययोनिर्वाणरूपिणि ॥ १३ ॥

anādimadhyaparyante tasminbrahmamahāmbare | mahācinnāmni sarvātmanyayonirvāṇarūpiṇi || 13 ||

In that infinite Brahma-sky, which has no beginning, middle, or end | In the great consciousness named Mahachin, which is the soul of all, devoid of origin, and in the form of liberation || 13 ||

उस अनन्त ब्रह्माकाश में, जिसका न आदि है, न मध्य है, न अंत है | महाचिन नाम के महाचित् में, जो सबकी आत्मा है, उत्पत्ति से रहित है, और मुक्ति के रूप में है || १३ ||

7.128.14

ब्रह्माण्डानां तादृशानां दूरे दूरे पुनःपुनः । मिथोलक्षाणि लक्षाणि कचन्त्युपरमन्ति च ॥ १४ ॥

brahmāṇḍānāṃ tādṛśānāṃ dūre dūre punaḥpunaḥ | mitholakṣāṇi lakṣāṇi kacantyuparamanti ca || 14 ||

In the distant regions of such Brahmandas, again and again | Hundreds of thousands of them shine and cease to exist || 14 ||

ऐसे ब्रह्माण्डों के दूर-दूर क्षेत्रों में, बार-बार | उनमें से लाखों चमकते हैं और विलीन हो जाते हैं || १४ ||

7.128.15

न किंचित्कचयत्यत्र समे कचनरूपिणि । तादृद्ध्यायं तथारूपं तदात्मन्येव संस्थितम् ॥ १५ ॥

na kiṃcit kacayatyatra same kacanarūpiṇi | tādṛddhyayaṃ tathārūpaṃ tadātmanyeva saṃsthitam || 15 ||

Nothing shines here in the uniform brilliance | Such a nature and form are established in that self || 15 ||

यहां कुछ भी समान चमक में नहीं चमकता | ऐसा स्वभाव और रूप उस आत्मा में ही स्थित है || १५ ||

7.128.16

एष ते कथितः सर्वो दृश्यानुभवनक्रमः । अधुना श्रृणु किंवृत्तं लोकालोके विपश्चितः ॥ १६ ॥

eṣa te kathitaḥ sarvo dṛśyānubhavanakramaḥ | adhunā śṛṇu kiṃvṛttaṃ lokāloke vipaścitaḥ || 16 ||

This entire sequence of visual and experiential knowledge has been narrated to you. Now, listen to what happened in Lokāloka, O wise one.

यह सम्पूर्ण दृश्य और अनुभव का क्रम तुम्हें कहा गया है। अब, सुनो कि लोकालोक में क्या हुआ, हे विद्वान्।

7.128.17

स्वभ्यस्तपूर्वसंस्कारो विलसन्निश्चयेरितः । लोकालोकगिरेर्मूर्घ्नस्तमःश्वभ्रं पपात सः ॥ १७ ॥

svabhyastapūrvasaṃskāro vilasannniścayeritaḥ | lokālokagirermūrghnastamaḥśvabhraṃ papāta saḥ || 17 ||

Driven by the resolve born of his past impressions, he fell into the dark cave at the summit of the Lokāloka mountain.

अपने पूर्व संस्कारों से उत्पन्न दृढ़ संकल्प से प्रेरित होकर, वह लोकालोक पर्वत के शिखर पर स्थित अंधेरी गुफा में गिर पड़ा।

7.128.18

ददर्श तत्र शिखरप्रतिमैर्विहगैर्वपुः । विकर्तितं मनोदेहं प्रसृतं च स्वचिन्तिते ॥ १८ ॥

dadarśa tatra śikharapratimairvihagairvapuḥ | vikartitaṃ manodehaṃ prasṛtaṃ ca svacintite || 18 ||

There, he saw his body, which was like the peak of a mountain, cut into pieces by birds, and his mental body scattered according to his thoughts.

वहाँ, उसने अपना शरीर देखा, जो पर्वत के शिखर के समान पक्षियों द्वारा कटा हुआ था, और उसका मानसिक शरीर उसके विचारों के अनुसार बिखरा हुआ था।

7.128.19

देशस्य तस्य पुण्यत्वाद्देहं तच्चातिवाहिकम् । आधिभौतिकताबोधं नानयन्निर्मलाशयः ॥ १९ ॥

deśasya tasya puṇyatvāddehaṃ taccātivāhikam | ādhibhautikatābodhaṃ nānayannirmalāśayaḥ || 19 ||

Due to the sanctity of that place, his body became extraordinarily powerful, but he did not bring about the realization of materiality, having a pure mind.

उस स्थान की पवित्रता के कारण, उसका शरीर अत्यंत शक्तिशाली हो गया, लेकिन पवित्र मन होने के कारण उसने भौतिकता की बोध को नहीं लाया।

7.128.20

तावन्मात्रप्रबोधोऽसौ नाधिकं बोधमागतः । चिन्तयित्वाऽसितं कार्यं बभूव प्रकृतेर्हितः ॥ २० ॥

tāvanmātraprabodho'sau nādhikaṃ bodhamāgataḥ | cintayitvā'sitaṃ kāryaṃ babhūva prakṛterhitaḥ || 20 ||

He attained only that much awakening and did not gain more knowledge. Having contemplated the dark deed, he became beneficial for nature.

उसने केवल इतना ही जागरूकता प्राप्त की और अधिक ज्ञान नहीं प्राप्त किया। अंधेरे कार्य पर विचार करने के बाद, वह प्रकृति के लिए लाभकारी हो गया।

7.128.21

श्रीराम उवाच । अदेहं प्रसरत्येतच्चित्तं कार्ये कथं मुने । आतिवाहिकसंवित्तेर्बोधः स्यात्कीदृशोऽधिकः ॥ २१ ॥

śrīrāma uvāca | adehaṃ prasaratyetaccittaṃ kārye kathaṃ mune | ātivāhikasaṃvittērbōdhaḥ syātkīdṛśō'dhikaḥ || 21 ||

Sri Rama said: How does this mind, which is bodiless, engage in action, O sage? What kind of higher awareness arises from the consciousness that transcends the body?

श्री राम ने कहा: हे मुनि, यह शरीररहित मन कार्य में कैसे प्रसरित होता है? शरीर से परे की चेतना से कैसा उच्चतर बोध होता है?

7.128.22

श्रीवसिष्ठ उवाच । संकल्पपथिकत्वेन यथान्तःपुरवासिनः । इदं मनः प्रसरति तथास्य प्रसृतं मनः ॥ २२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | saṃkalpapathikatvena yathāntaḥpuravāsinaḥ | idaṃ manaḥ prasarati tathāsya prasṛtaṃ manaḥ || 22 ||

Sri Vasistha said: Just as the residents of the inner palace move along the path of their intentions, so does this mind move accordingly.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जैसे अंतःपुर के निवासी अपने संकल्पों के मार्ग पर चलते हैं, वैसे ही यह मन भी उसी प्रकार प्रसरित होता है।

7.128.23

भ्रमे स्वप्ने मनोराज्ये मिथ्याज्ञाने कथाश्रुतौ । यथा मनः प्रसरति तथा तत्प्रसृतं मनः ॥ २३ ॥

bhraṃe svapne manorājye mithyājñāne kathāśrutau | yathā manaḥ prasarati tathā tatprasṛtaṃ manaḥ || 23 ||

Just as the mind wanders in delusion, dreams, imagination, false knowledge, and hearing stories, so does it wander accordingly.

जैसे मन भ्रम, स्वप्न, कल्पना, मिथ्या ज्ञान और कथा सुनने में भटकता है, वैसे ही यह भटकता है।

7.128.24

पतन्ति तु शरीरं तदातिवाहिकमुच्यते । आधिभौतिकधीर्भाति विस्मृत्यात्रैव कालतः ॥ २४ ॥

patanti tu śarīraṃ tadātivāhikamucyate | ādhibhautikadhīrbhāti vismṛtyātraiva kālataḥ || 24 ||

The body falls, and that is called transcendental. It appears as material consciousness, forgotten here in time.

शरीर गिरता है, और वह आतिवाहिक कहलाता है। यह भौतिक चेतना के रूप में प्रकट होता है, समय में यहाँ भूल जाता है।

7.128.25

ते तदान्तर्धिमायाते सर्परज्जुभ्रमोपमे । आधिभौतिकदेहेऽस्मिञ्छिष्यतेत्वातिवाहिकः ॥ २५ ॥

te tadāntardhimāyāte sarparajjubhramopame | ādhibhautikadehe'smiñchiṣyatetvātivāhikaḥ || 25 ||

They disappear like the illusion of a snake and a rope. In this material body, the transcendental is taught.

वे साँप और रस्सी के भ्रम की तरह अदृश्य हो जाते हैं। इस भौतिक शरीर में, आतिवाहिक शिक्षा दी जाती है।

7.128.26

आतिवाहिक एषोऽङ्ग निपुणं प्रविचार्यताम् । चिन्मात्रव्यतिरेकेण यावदत्रान्यदस्ति नो ॥ २६ ॥

ātivāhika eṣo'ṅga nipuṇaṃ pravicāryatām | cinmātravyatirekeṇa yāvadatrānyadasti no || 26 ||

This transient body should be carefully examined | As long as there is nothing here other than pure consciousness

यह अस्थायी शरीर सावधानी से जाँचा जाना चाहिए | जब तक यहाँ चिन्मात्र के अलावा कुछ और नहीं है

7.128.27

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ यन्मध्ये संविदो वपुः । चिन्मात्रस्यास्य तद्रूपमनन्तस्यैकरूपिणः ॥ २७ ॥

deśāddeśāntaraprāptau yanmadhye saṃvido vapuḥ | cinmātrasyāsya tadrūpamanantasyekarūpiṇaḥ || 27 ||

In the transition from one place to another, that which is in the middle is the form of consciousness | That is the form of this pure consciousness, which is infinite and one

एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने में, जो बीच में है, वह चेतना का रूप है | यह उस चिन्मात्र का रूप है, जो अनंत और एक है

7.128.28

क्व द्वैतं क्व च वा द्वेषः क्व रागादि तु कथ्यताम् । सर्वं शिवमनाद्यन्तं परो बोध इति स्मृतः ॥ २८ ॥

kva dvaitaṃ kva ca vā dveṣaḥ kva rāgādi tu kathyatām | sarvaṃ śivamanādyantaṃ paro bodha iti smṛtaḥ || 28 ||

Where is duality, where is hatred, where is attachment, etc.? | Everything is auspicious, without beginning or end, the supreme knowledge, thus it is remembered

द्वैत कहाँ है, द्वेष कहाँ है, राग आदि कहाँ है? | सब कुछ शिव है, अनादि और अनंत, परम बोध, इस प्रकार याद किया जाता है

7.128.29

निर्मनोमननं शान्तमासितं बोध उत्तमः । आतिवाहिकदेहस्थो न तं बोधमुपागतः ॥ २९ ॥

nirmanomananaṃ śāntamāsitaṃ bodha uttamaḥ | ātivāhikadehastho na taṃ bodhamupāgataḥ || 29 ||

The supreme knowledge is without mind and thought, peaceful and pure | One who is in the transient body has not attained that knowledge

परम बोध मन और विचार से रहित, शांत और शुद्ध है | जो अस्थायी शरीर में है, उसने उस बोध को प्राप्त नहीं किया है

7.128.30

विपश्चित्तद्विबोधोऽसौ ददर्श विसरन्मनः । आतिवाहिकबोधेन गर्भवासोपमं तमः ॥ ३० ॥

vipaścittadvibodho'sau dadarśa visaranmanaḥ | ātivāhikabodhena garbhavāsopamaṃ tamaḥ || 30 ||

That wise one, with the knowledge of the transient, saw the mind dissolving | Like the darkness of the womb with the knowledge of the transient

वह विवेकी, अस्थायी बोध के साथ, मन को विलीन होते देखा | जैसे गर्भवास का अंधकार अस्थायी बोध के साथ

7.128.31

तमसोऽन्ते विरिञ्चाण्डकवाटच्छेदभूतलम् । वज्रसारं हेममयं कोटियोजनविस्तृतम् ॥ ३१ ॥

tamaso'nte viriñcāṇḍakavāṭacchedabhūtalam | vajrasāraṃ hemamayaṃ koṭiyojanavistṛtam || 31 ||

At the end of darkness, there is the ground of the destruction of the gate of Brahma and the egg of the universe, which is as hard as diamond, made of gold, and extends for millions of yojanas.

अंधकार के अंत में, ब्रह्मा और ब्रह्माण्ड के द्वार के विनाश का भूतल है, जो हीरे के समान कठोर, सोने का बना हुआ है, और करोड़ों योजन तक फैला हुआ है।

7.128.32

तदन्ते प्राप सलिलं तस्मादष्टगुणं ततः । कपाटभूम्यैव समं स्थितमर्णवपृष्ठवत् ॥ ३२ ॥

tadante prāpa salilaṃ tasmādaṣṭaguṇaṃ tataḥ | kapāṭabhūmyaiva samaṃ sthitam arṇavapṛṣṭhavat || 32 ||

At the end of that, he reached the water, which was eight times more than that, equal to the surface of the earth, and situated like the back of the ocean.

उसके अंत में, उसने पानी तक पहुंचा, जो उससे आठ गुना अधिक था, पृथ्वी की सतह के बराबर था, और समुद्र की पीठ की तरह स्थित था।

7.128.33

तमतीत्य ततः प्राप तेजोऽर्कगणभीषणम् । प्रलयाग्निघनज्वालापिण्डकोटरभास्वरम् ॥ ३३ ॥

tamatītya tataḥ prāpa tejo'rkagaṇabhīṣaṇam | pralayāgnighanajvālāpiṇḍakoṭarabhāsvaraṃ || 33 ||

Crossing that, he then reached the terrifying light of the suns, which was as radiant as the dense flames of the fire of destruction, like a ball of fire.

उसे पार करके, उसने फिर सूर्यों के भयानक प्रकाश तक पहुंचा, जो विनाश की अग्नि की घनी ज्वालाओं के समान चमकीला था, जैसे एक अग्नि का गोला।

7.128.34

दाहशोकादिमुक्तेन वपुषा मानसेन तत् । तत्र गच्छन्त्य बुबुधे वहनं पूर्ववासितम् ॥ ३४ ॥

dāhaśokādimuktena vapuṣā mānasena tat | tatra gacchanty bubudhe vahanaṃ pūrvavāsitam || 34 ||

With a body freed from burning, sorrow, and other afflictions, and with a mental body, he understood there the carriage that was previously inhabited.

दाह, शोक और अन्य पीड़ाओं से मुक्त शरीर और मानसिक शरीर के साथ, उसने वहां पहले से निवास किया हुआ वाहन समझा।

7.128.35

उह्यमानो विवेदासावात्मानं त्वातिवाहिकम्। चित्तमात्रात्मनः स्वस्य किमिवोह्यत इत्यपि ॥ ३५ ॥

uhyamāno vivedāsāvātmānaṃ tvātivāhikam | cittamātrātmanaḥ svasya kimivohyata ityapi || 35 ||

Being carried, he realized his self as transcending the carrier, and thought, 'What is being carried, since my self is only consciousness?'

उठाया जाते हुए, उसने अपने आप को वाहक से परे समझा, और सोचा, 'मेरा आत्मा तो केवल चेतना है, तो क्या उठाया जा रहा है?'

7.128.36

इति बोधेन धीरात्मा तं तारानिलार्णवम्प्राप तद्वितं व्योम तस्माद्दशगुणं स्थितम् ॥ ३६ ॥

iti bodhena dhīrātmā taṃ tatārā'nilārṇavamprāpa tadvitataṃ vyoma tasmāddaśaguṇaṃ sthitam || 36 ||

Thus, with understanding, the wise soul crossed the ocean of wind and reached the expanded sky, which was ten times more stable.

इस प्रकार, बोध के साथ, धीर आत्मा ने वायु के समुद्र को पार किया और फैले हुए आकाश तक पहुंचा, जो दस गुना अधिक स्थिर था।

7.128.37

तदतिक्रम्य स प्राप ब्रह्माकाशमनन्तकम्यत्र सर्वं यतः सर्वं यन्न किंचिच्च किंचन ॥ ३७ ॥

tadatikramya sa prāpa brahmākāśamanantakamyatra sarvaṃ yataḥ sarvaṃ yanna kiṃcicca kiṃcana || 37 ||

Crossing that, he reached the infinite Brahma-space, where everything is from everything, and there is nothing else.

उसे पार करके, वह अनन्त ब्रह्माकाश तक पहुंचा, जहां सब कुछ सब से है, और कुछ भी नहीं है।

7.128.38

मनसा प्रभ्रमंस्तत्र दूराद्दूरतरं ययौतेन दृष्टं च पृथ्व्यापस्तेजो वायुस्तथा जगत् ॥ ३८ ॥

manasā prabhramaṃstatra dūrāddūrataraṃ yayautena dṛṣṭaṃ ca pṛthvyāpastejo vāyustathā jagat || 38 ||

With the mind wandering there, he went farther and farther, and saw the earth, water, fire, air, and the world.

मन के साथ भटकते हुए, वह और दूर तक गया, और पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और जगत को देखा।

7.128.39

पुनः संसाररचनाः पुनः सर्गाः पुनर्दिशःपुनर्महीधरा व्योम पुनर्देवाः पुनर्नराः ॥ ३९ ॥

punaḥ saṃsāraracanāḥ punaḥ sargāḥ punardiśaḥpunarmahīdharā vyoma punardevāḥ punarnarāḥ || 39 ||

Again, the creations of the world, again the creations, again the directions, again the mountains, the sky, again the gods, again the humans.

फिर से, जगत की रचनाएं, फिर से सृष्टियां, फिर से दिशाएं, फिर से पर्वत, आकाश, फिर से देवताएं, फिर से मनुष्य।

7.128.40

पुनः पञ्चमहाभूतपर्यन्ते ब्रह्म निर्घनम्पुनस्तत्र जगन्त्युच्चैः पुनः सर्गाः पुनर्दिशः ॥ ४० ॥

punaḥ pañcamahābhūtaparyante brahma nirghanampunastatra jagantyuccaiḥ punaḥ sargāḥ punardiśaḥ || 40 ||

Again, at the end of the five great elements, Brahma is without density. Again, there the world is elevated, again the creations, again the directions.

फिर से, पांच महाभूतों के अंत में, ब्रह्म घनत्व के बिना है। फिर से, वहां जगत उच्च है, फिर से सृष्टियां, फिर से दिशाएं।

7.128.41

ब्रह्माकाशस्ततः सर्गाः पुनरन्ये त्वनिष्ठिताः । इत्यसौ विहरन्दीर्घकालमद्यापि संस्थितः ॥ ४१ ॥

brahmākāśastataḥ sargāḥ punaranye tvaniṣṭhitāḥ | ityasau viharandīrghakālamadyāpi saṃsthitaḥ || 41 ||

From Brahmākāśa, other creations are again established. Thus, he remains, wandering for a long time, even until now.

ब्रह्माकाश से फिर से अन्य सृष्टियाँ स्थापित होती हैं। इस प्रकार, वह लंबे समय तक भटकता है, अभी तक भी स्थित है।

7.128.42

स्वनिश्चयाच्चिराभ्यस्तान्नासौ विरतिमेति हि । अन्तो नैवास्त्यविद्यायाः सा हि ब्रह्मैव सत्यता ॥ ४२ ॥

svaniścayāccirābhyastānnāsau viratimeti hi | antō naivāstyavidyāyāḥ sā hi brahmaiva satyatā || 42 ||

Due to his own resolve and long practice, he does not attain cessation. There is no end to ignorance, for it is indeed the reality of Brahman.

अपने संकल्प और लंबे समय तक अभ्यास के कारण, वह विरति को नहीं पाता। अज्ञान का कोई अंत नहीं है, क्योंकि यह ब्रह्म की सत्यता ही है।

7.128.43

वस्तुतो नास्त्यविद्येह ब्रह्मण्यविकलात्मनि । इदं दृश्यमविद्येयमित्यात्मैष विकासितः ॥ ४३ ॥

vastutō nāstyavidyēha brahmaṇyavikalātmani | idaṃ dṛśyamavidyēyamityātmaiṣa vikāsitaḥ || 43 ||

In reality, there is no ignorance in the unchanging Brahman. This visible ignorance is thus manifested in the self.

वास्तव में, अपरिवर्तनीय ब्रह्म में कोई अज्ञान नहीं है। यह दृश्य अज्ञान इस प्रकार आत्मा में प्रकट होता है।

7.128.44

यद्यथा जाग्रति स्वप्ने दृष्टं द्रक्ष्यसि पश्यसि । तत्तथा ब्रह्म सच्छान्तमासीदस्ति भविष्यति ॥ ४४ ॥

yadyathā jāgrati svapnē dṛṣṭaṃ drakṣyasi paśyasi | tattathā brahma saccāntamāsīdasti bhaviṣyati || 44 ||

Whatever is seen in the waking state or in dreams, you will see it and are seeing it now. That Brahman is eternal and peaceful, and it was, is, and will be.

जो कुछ जाग्रत अवस्था में या स्वप्न में देखा जाता है, आप उसे देखेंगे और अभी देख रहे हैं। वह ब्रह्म शाश्वत और शांत है, और वह था, है, और होगा।

7.128.45

घनतमःप्रविलोकनचक्रकं क्रमजगत्प्रतिभानमिदं महत् । परतया प्रतिभात्मतयानया न च सदङ्ग न वाप्यसदाकृति ॥ ४५ ॥

ghanatamaḥpravilokanacakrakaṃ krama jagatpratibhānamidaṃ mahat | paratayā pratibhātmatayānayā na ca sad aṅga na vāpyasadākṛti || 45 ||

This great manifestation of the world, seen through the cycle of dense darkness, is neither real nor unreal by this reflection of the supreme.

यह महान विश्व का प्रकटीकरण, घने अंधकार के चक्र से देखा जाता है, परम के इस प्रतिबिंब से न तो वास्तविक है और न ही अवास्तविक है।

7.128.46

तेष्वेव तेष्विव च तेषु तनूतरेषु ब्रह्मोदरेषु चिरदूरतरं जगत्सु । सोऽद्याप्यसंविदिततत्त्वतया तयोच्चैः खण्डेषु रङ्कुरिव राघव बंभ्रमीति ॥ ४६ ॥

teṣveva teṣviva ca teṣu tanūtareṣu brahmōdareṣu ciradūrataraṃ jagatsu | so'dyāpyasaṃviditatattvatayā tayoccaiḥ khaṇḍeṣu raṅkuriva rāghava baṃbhramīti || 46 ||

In those very bodies, in those very forms, in the wombs of Brahma, far away for a long time in the worlds, even today, without knowing the truth, O Raghava, he wanders like a bee in the fragments.

उन्हीं शरीरों में, उन्हीं रूपों में, ब्रह्मा के गर्भों में, दूर-दूर तक लंबे समय तक जगत् में, आज भी, सत्य को न जानते हुए, हे रघुवंशी, वह टुकड़ों में भ्रमित है जैसे भौंरा।

Chapter 129

7.129.1

श्रीराम उवाच । तयोर्द्वयोर्मुनिश्रेष्ठ संपन्नं किमतः परम् । पश्चाद्विपश्चितोस्तस्य रुद्धयोर्वै विपश्चितोः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | tayordvayormuniśreṣṭha saṃpannaṃ kimatḥ param | paścādvipaścitostasya ruddhayorvai vipaścitoḥ || 1 ||

Sri Rama said: O best of sages, what is the ultimate result of the two who have attained perfection? Afterwards, what is the state of the wise one who has restrained the senses?

श्री राम ने कहा: हे मुनिश्रेष्ठ, उन दोनों का क्या परिणाम हुआ जिन्होंने सिद्धि प्राप्त की? फिर उस विपश्चित की क्या स्थिति हुई जिसने इंद्रियों को रोका?

7.129.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । तयोरेकश्चिराभ्यस्तवासनाविवशीकृतः । भ्रमन्द्वीपेषु देहौघैस्तामेव पदवीं गतः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tayorekaścirābhyastavāsanāvivaśīkṛtaḥ | bhramandvīpeṣu dehaughaistāmeva padavīṃ gataḥ || 2 ||

Vasistha said: One of them, overcome by long-practiced desires, wanders in various bodies on different islands, attaining the same state.

वसिष्ठ ने कहा: उनमें से एक, लंबे समय से अभ्यास की गई वासनाओं से वशीभूत होकर, विभिन्न द्वीपों पर विभिन्न शरीरों में भटकता है, उसी स्थिति को प्राप्त करता है।

7.129.3

तथैवावरणांस्त्यक्त्वा परमाकाशकोटरे । पश्यन्संसारलक्षाणि तथैवाद्यापि संस्थितः ॥ ३ ॥

tathaivāvaraṇāṃstyaktvā paramākāśakoṭare | paśyansaṃsāralakṣāṇi tathaivādyāpi saṃsthitaḥ || 3 ||

Similarly, having abandoned the coverings, he remains in the supreme space, seeing the signs of the world, just as before.

इसी प्रकार, आवरणों को त्यागकर, वह परम आकाश में रहता है, संसार के चिह्नों को देखते हुए, ठीक उसी तरह जैसे पहले था।

7.129.4

तयोर्द्वितीयः स्वाभ्यस्तादादावासंगतेर्वशात् । त्यक्तवान्प्रभ्रमद्देहैरद्य शैले मृगः स्थितः ॥ ४ ॥

tayordvitīyaḥ svābhyastādādāvāsaṃgatervaśāt | tyaktavānprabhramaddhehairadya śaile mṛgaḥ sthitaḥ || 4 ||

The second one, due to the influence of non-attachment from the beginning, has abandoned the wandering bodies and now remains as a deer on a mountain.

दूसरा व्यक्ति, शुरुआत से ही आसक्ति के अभाव के प्रभाव से, भटकते शरीरों को त्याग दिया है और अब एक पहाड़ पर हिरण के रूप में रहता है।

7.129.5

श्रीराम उवाच । एकैव वासना ब्रह्मन्या चतुर्णां सदोदिता । नानातां सा कथं प्राप्ता हीनोत्तमफलप्रदाम् ॥ ५ ॥

śrīrāma uvāca | ekaiva vāsanā brahman yā caturṇāṃ sadoditā | nānātāṃ sā kathaṃ prāptā hīnottamaphalapradām || 5 ||

Sri Rama said: O Brahman, how did the same desire, which is always spoken of for the four, attain diversity, giving inferior and superior results?

श्री राम ने कहा: हे ब्रह्मन, वह एक ही वासना जो चारों के लिए हमेशा कही जाती है, कैसे भिन्नता प्राप्त कर लेती है, हीन और उत्तम फल देने वाली?

7.129.6

श्रीवसिष्ठ उवाच स्वभ्यस्ता वासना जन्तोर्देशकालक्रियावशात तनुदार्ढ्यान्यतामेति घनदार्ढ्येति नान्यताम् ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca svabhyastā vāsanā jantordeśakālakriyāvaśāt tanudārḍhyānyatāmeti ghanadārḍhyaiti nānyatām || 6 ||

Śrīvasiṣṭha said: The inherent tendencies of a person, influenced by place, time, and action, become firm and strong, but do not change into something else.

श्रीवसिष्ठ ने कहा कि व्यक्ति की अन्तर्निहित प्रवृत्तियाँ, जो स्थान, समय और कार्य के अनुसार प्रभावित होती हैं, मजबूत और दृढ़ हो जाती हैं, लेकिन किसी और चीज में बदल नहीं जातीं।

7.129.7

देशकालक्रियाद्येतदेकता वासनैकता तयोर्यदेव बलवत्तदेव जयति क्षणात् ॥ ७ ॥

deśakālakriyādyetadekatā vāsanaiakatā tayoryadeva balavattadeva jayati kṣaṇāt || 7 ||

The unity of place, time, and action is the unity of tendencies. Whichever of these is stronger, it prevails instantly.

स्थान, समय और कार्य की एकता ही प्रवृत्तियों की एकता है। जो भी इनमें से अधिक शक्तिशाली होता है, वही तुरंत प्रभावी होता है।

7.129.8

एवं विभागेनैतेऽत्र चत्वारः समवस्थिताः कृष्यन्ते द्वावविद्यार्थमन्यो मुक्तो मृगोऽपरः ॥ ८ ॥

evaṃ vibhāgenaite'tra catvāraḥ samavasthitāḥ kṛṣyante dvāvavidyārthamanyo mukto mṛgo'paraḥ || 8 ||

Thus, by this division, four are situated here: two are drawn towards ignorance, one is liberated, and the other is a deer.

इस प्रकार, इस विभाजन से यहाँ चार स्थित हैं: दो अज्ञान की ओर खींचे जाते हैं, एक मुक्त है, और दूसरा हिरण है।

7.129.9

नाद्यापि तैरविद्याया लब्धोऽन्तो भ्रान्तिबुद्धिभिः अनन्तेयमविद्येयमज्ञानपरिबृंहिता ॥ ९ ॥

nādyāpi tairavidyāyā labdho'nto bhrāntibuddhibhiḥ ananteyamavidyeyamajñānaparibṛṃhitā || 9 ||

Even today, the end of ignorance has not been achieved by those with deluded minds. This ignorance is endless and enveloped in ignorance.

आज तक भी, भ्रमित मन वालों ने अज्ञान का अंत नहीं पाया है। यह अज्ञान अनंत है और अज्ञान से घिरा हुआ है।

7.129.10

क्षिप्रेण शान्ता भवति विज्ञानालोक आगते अमूलमेव गलति तिमिरश्रीरिवोदये ॥ १० ॥

kṣipreṇa śāntā bhavati vijñānāloka āgate amūlameva galati timiraśrīrivodaye || 10 ||

Quickly, it becomes peaceful when the light of knowledge arrives. Just as darkness disappears at dawn, ignorance also vanishes.

तुरंत ही, जब ज्ञान का प्रकाश आता है, तब शांति हो जाती है। जैसे सुबह के उजाले में अंधेरा खत्म हो जाता है, वैसे ही अज्ञान भी खत्म हो जाता है।

7.129.11

कालेनान्यजगज्जातं शृणु वृत्तं विपश्चितः। तस्मिन्दूरतरे देशे कस्मिंश्चित्संसृतिभ्रमे ॥ ११ ॥

kālenānyajagajjātaṃ śṛṇu vṛttaṃ vipaścitaḥ| tasmindūratare deśe kasmiṃścitsaṃsṛtibhrame || 11 ||

Listen, O wise one, to the account of the world born from time| In that distant land, in some cycle of transmigration

सुनो, हे विद्वान, समय से उत्पन्न जगत का वृत्तांत| उस दूर देश में, किसी संसृति भ्रम में

7.129.12

क्वचिद्ब्रह्ममहाव्योम्नि कस्मिंश्चिद्दृश्यमण्डले। तस्य दृश्यात्मना प्राप्ते वस्तुतो ब्रह्मरूपिणि ॥ १२ ॥

kvacidbrahmamahāvyomni kasmiṃściddṛśyamaṇḍale| tasya dṛśyātmanā prāpte vastuto brahmarūpiṇi || 12 ||

In some great expanse of Brahman, in some visible sphere| Having attained the true nature of the visible, in reality, it is Brahman

किसी महान ब्रह्म के विस्तार में, किसी दृश्य मंडल में| दृश्य के आत्मा को प्राप्त करके, वास्तव में, यह ब्रह्म है

7.129.13

स एकः शुभसंगत्या विदुषां मध्यमागतः। दृश्यं यथावद्विज्ञाय ब्रह्मतामलमागतः ॥ १३ ॥

sa ekaḥ śubhasaṃgatyā viduṣāṃ madhyamāgataḥ| dṛśyaṃ yathāvadvijñāya brahmatāmalamāgataḥ || 13 ||

That one, by auspicious association, came among the wise| Having known the visible as it truly is, he attained the state of Brahman

वह एक, शुभ संगति से, विद्वानों के बीच आया| दृश्य को जैसा वास्तव में है, जानकर, ब्रह्म की अवस्था को प्राप्त हुआ

7.129.14

तत्रैवाशु परिज्ञानात्साऽविद्या स च देहकः। मृगतृष्णाम्ब्विवाशान्तिमागतौ रागतन्त्रितौ ॥ १४ ॥

tatraivāśu parijñānātsā'vidyā sa ca dehakaḥ| mṛgatṛṣṇāmbvivāśāntimāgatau rāgatantritau || 14 ||

There itself, quickly by knowledge, that ignorance and that body| Like the mirage water, they attained the end of desires, bound by passion

वहीं, शीघ्र ही ज्ञान से, वह अज्ञान और वह शरीर| मृगतृष्णा जल की तरह, वे इच्छाओं के अंत को प्राप्त हुए, राग से बंधे हुए

7.129.15

इति ते सर्वमाख्यातं विपश्चिच्चेष्टितं स्फुटम्। अनन्तैवमविद्येयं ब्रह्मवत्तन्मयी यतः ॥ १५ ॥

iti te sarvamākhyātaṃ vipaścicceṣṭitaṃ sphuṭam| anantaivamavidyeaṃ brahmavattanmayī yataḥ || 15 ||

Thus, everything has been clearly explained to you, O wise one| This endless ignorance is thus Brahman, because it is pervaded by Brahman

इस प्रकार, सब कुछ तुम्हें स्पष्ट रूप से बताया गया है, हे विद्वान| यह अनंत अज्ञान इस प्रकार ब्रह्म है, क्योंकि यह ब्रह्म से व्याप्त है

7.129.16

येन यत्रैव वर्षाणां लक्षलक्षाणि गम्यते। तत्र तत्र स्वभावेन चिता किमपि लक्ष्यते ॥ १६ ॥

yena yatraiva varṣāṇāṃ lakṣalakṣāṇi gamyate | tatra tatra svabhāvena citā kimapi lakṣyate || 16 ||

Wherever one goes, even for millions of years, one sees only the nature of consciousness.

जहाँ भी मनुष्य जाता है, चाहे वह लाखों वर्षों तक हो, वहाँ उसे केवल चेतना का स्वभाव ही दिखाई देता है।

7.129.17

तदेवाश्वपरिज्ञातं मिथ्या विद्येति कथ्यते । परिज्ञातं तु तच्छान्तं तथा ब्रह्मेति कथ्यते ॥ १७ ॥

tadevāśvaparijñātaṃ mithyā vidyeti kathyate | parijñātaṃ tu tacchāntaṃ tathā brahmeti kathyate || 17 ||

That which is known as false knowledge is said to be a dream. That which is known as true knowledge is said to be Brahman.

जो ज्ञान झूठा कहा जाता है, वह स्वप्न कहलाता है। जो ज्ञान सच्चा कहा जाता है, वह ब्रह्म कहलाता है।

7.129.18

भेदो न भेदस्तत्रायं भेदोऽयं यन्मयः किल । तद्ब्रह्मैव चिदाभासं चिद्रूपैव हि भिन्नता ॥ १८ ॥

bhedo na bhedastatrāyaṃ bhedo'yaṃ yanmayaḥ kila | tadbrahmaiva cidābhāsaṃ cidrūpaiva hi bhinnatā || 18 ||

There is no difference here, this difference is only due to the illusion of 'I'. That Brahman alone is the reflection of consciousness, and the difference is indeed the form of consciousness.

यहाँ कोई भेद नहीं है, यह भेद केवल 'मैं' के भ्रम की वजह से है। वह ब्रह्म ही चेतना का प्रतिबिंब है, और भेद वास्तव में चेतना का रूप है।

7.129.19

ब्रह्माण्डमण्डपस्यास्य भ्रमतेत्यविपश्चिता । लब्धो युगशतैरन्तो नाविद्याया विपश्चिता ॥ १९ ॥

brahmāṇḍamaṇḍapasyāsya bhramatetyavipaścitā | labdho yugaśatairantona avidyāyā vipaścitā || 19 ||

The ignorant wander in the hall of the universe, thinking they have reached the end after hundreds of yugas, but the wise know there is no end to ignorance.

अज्ञानी ब्रह्मांड के मंडप में भटकते हैं, सोचते हैं कि सैकड़ों युगों के बाद अंत मिल गया है, परंतु ज्ञानी जानते हैं कि अज्ञान का कोई अंत नहीं है।

7.129.20

श्रीराम उवाच । स ब्रह्माण्डकपाटः किं न संप्राप्तो विपश्चिता । त्वयैतत्कथितं ब्रह्मन्न कथं वदतां वर ॥ २० ॥

śrīrāma uvāca | sa brahmāṇḍakapāṭaḥ kiṃ na saṃprāpto vipaścitā | tvayaitatkathitaṃ brahmanna kathaṃ vadatāṃ vara || 20 ||

Shri Rama said: O wise one, why has the door of the universe not been attained by the wise? You have said this, O best of speakers, how is it so?

श्री राम ने कहा: हे ज्ञानी, ब्रह्मांड का द्वार ज्ञानी क्यों नहीं प्राप्त कर पाता? आपने यह कहा है, हे वक्ताओं में श्रेष्ठ, यह कैसे हो सकता है?

7.129.21

श्रीवसिष्ठ उवाच । जातेनैव विरिञ्चेन पुरा ब्रह्माण्डमण्डलम् । द्वाभ्यामधस्तादूर्ध्वात्स्वभुजाभ्यां प्रविदारितम् ॥ २१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | jātenaiva viriñcena purā brahmāṇḍamaṇḍalam | dvābhyāmadhastādūrdhvātsvabhujābhyāṃ pravidāritam || 21 ||

Shri Vasishtha said: In the beginning, when Brahma was born, he split the cosmic egg into two parts with his hands, one above and one below.

श्री वसिष्ठ ने कहा: ब्रह्मा के जन्म के समय, उन्होंने अपने हाथों से ब्रह्माण्ड को दो भागों में विभाजित किया, एक ऊपर और एक नीचे।

7.129.22

भागस्तेनोर्ध्वतस्तस्मादतिदूरतरं गतः । अतो भागो गतोऽधस्तादतिदूरतरान्तरम् ॥ २२ ॥

bhāgastenordhvatastasmādatiadūrataraṃ gataḥ | ato bhāgo gato'dhastādatiadūratarāntaram || 22 ||

One part went very far above, and the other part went very far below.

एक भाग बहुत दूर ऊपर चला गया, और दूसरा भाग बहुत दूर नीचे चला गया।

7.129.23

ताविवाश्रित्य तिष्ठन्ति जलाद्यावरणास्ततः । त एव च तदाधारा लम्बन्ते संस्थितास्तयोः ॥ २३ ॥

tāvivāśritya tiṣṭhanti jalādyāvaraṇāstathḥ | ta eva ca tadādhārā lambante saṃsthitāstayoḥ || 23 ||

Relying on these two parts, the various coverings such as water exist. They are supported by these two parts and are established hanging.

इन दो भागों पर आश्रित होकर, जल आदि आवरण स्थित हैं। ये इन दो भागों द्वारा समर्थित हैं और लटके हुए स्थित हैं।

7.129.24

एतयोर्मध्यमाकाशं विदुरण्डकपाटयोः । अपारावारमानीलमिदमालक्ष्यते तु यत् ॥ २४ ॥

etayormadhyamākāśaṃ viduraṇḍakapāṭayoḥ | apārāvāramānīlamidamālakṣyate tu yat || 24 ||

The space in the middle of these two parts of the cosmic egg is known to be boundless and blue. This is what is perceived.

इन दो भागों के बीच का आकाश अपार और नीला माना जाता है। यही देखा जाता है।

7.129.25

जलाद्यावरणास्तत्र न लगन्ति न सन्ति च । तद्धि निर्मलमाशून्यमालानं कल्पक्लृप्तिभिः ॥ २५ ॥

jalādyāvaraṇāstatra na laganti na santi ca | taddhi nirmalamāśūnyamālānaṃ kalpaklṛptibhiḥ || 25 ||

The coverings such as water do not adhere there, nor do they exist. That is indeed pure and not empty, adorned with various creations.

जल आदि आवरण वहाँ नहीं लगते हैं, न ही वे वहाँ हैं। वह वास्तव में पवित्र और रिक्त नहीं है, विविध सृष्टियों से सजा हुआ है।

7.129.26

तेन मार्गेण यातोऽसौ विपश्चिद्दक्षचक्रवत् । अविद्यायाः परीक्षार्थमामोक्षमतिदीक्षितः ॥ २६ ॥

tena mārgeṇa yāto'sau vipaścidṛkṣacakravat | avidyāyāḥ parīkṣārthamāmokṣamatidīkṣitaḥ || 26 ||

By that path, he, the wise one, went like the sun and the moon, highly initiated for the examination of ignorance for liberation.

उस मार्ग से, वह विद्वान्, सूर्य और चंद्रमा की तरह चला गया, अज्ञान की परीक्षा के लिए उच्च दीक्षा प्राप्त।

7.129.27

ब्रह्मैवानन्तरूपेयमविद्या तन्मयी यतः । अतोऽस्ति साऽपरिज्ञाता परिज्ञाता न विद्यते ॥ २७ ॥

brahmaivānantarūpeyamavidyā tanmayī yataḥ | ato'sti sā'parijñātā parijñātā na vidyate || 27 ||

This ignorance is indeed Brahman itself, having infinite forms, because it is pervaded by That. Therefore, it exists as unrecognized; when recognized, it does not exist.

यह अज्ञान वास्तव में ब्रह्म स्वयं है, अनंत रूपों वाला, क्योंकि यह उससे व्याप्त है। इसलिए, यह अज्ञात रूप में मौजूद है; जब ज्ञात होता है, तो यह मौजूद नहीं होता।

7.129.28

विपश्चित इति प्राप्य दूरादूरं परेऽम्बरे । जगद्रूपेष्वविद्याया भ्रमन्त्यन्येषु केषुचित् ॥ २८ ॥

vipaścit iti prāpya dūrāddūraṃ pare'mbare | jagadrūpeṣvavidyāyā bhramantyanyeṣu keṣucit || 28 ||

Having attained the status of a wise one, some wander far and wide in the highest realm, in the various forms of the world due to ignorance.

विद्वान् की स्थिति प्राप्त करके, कुछ लोग अज्ञान के कारण विश्व के विभिन्न रूपों में उच्चतम धाम में दूर-दूर तक भटकते हैं।

7.129.29

कश्चिन्मुक्तो मृगः कश्चित्कौचिदद्यापि तौ क्वचित् । भ्रमतः प्राक्तनानल्पसंस्कारविवशीकृतौ ॥ २९ ॥

kaścinmukto mṛgaḥ kaścitkaucidadyāpi tau kvacit | bhramataḥ prāktanānalpasanskāravivaśīkṛtau || 29 ||

Some are liberated, some are like deer, some are still wandering even today, those two are somewhere, wandering due to their past subtle impressions.

कुछ मुक्त हैं, कुछ मृग की तरह हैं, कुछ आज भी भटक रहे हैं, वे दोनों कहीं भटक रहे हैं, अपने पूर्व सूक्ष्म संस्कारों के कारण।

7.129.30

श्रीराम उवाच । कीदृशेषु क्व दूरेषु ते जगत्सु विपश्चितः । भ्रमन्तीति मुने ब्रूहि मयि चेज्जायते कृपा ॥ ३० ॥

śrīrāma uvāca | kīdṛśeṣu kva dūreṣu te jagatsu vipaścitaḥ | bhramantīti mune brūhi mayi cej jāyate kṛpā || 30 ||

Sri Rama said: In what kinds of worlds and where, O sage, do those wise ones wander? Tell me, if you have compassion for me.

श्री राम ने कहा: किस प्रकार के लोकों में और कहाँ, हे मुनि, वे विद्वान् भटकते हैं? मुझे बताओ, यदि आपमें मेरे लिए दया है।

7.129.31

कियत्यध्वनि संसारास्ते जाता येषु ते मुने । महदेतदिहाश्चर्यमस्माकं कथितं त्वया ॥ ३१ ॥

kiyatyadhvani saṃsārāste jātā yeṣu te mune | mahadetadihaāścaryamasmākaṃ kathitaṃ tvayā || 31 ||

O sage, how many worlds have been created in which you have been born? This is a great wonder that you have told us.

हे मुने, कितने संसार हैं जिनमें आप जन्म लिए हैं? यह एक बड़ा आश्चर्य है जो आपने हमें बताया है।

7.129.32

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्थितौ विपश्चितौ राम तावुभौ जगतोर्ययोः । तेऽस्माकं गोचरं याते जगती यत्नतोऽपि नो ॥ ३२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sthitau vipaścitau rāma tāvubhau jagatoryayoḥ | te'smākaṃ gocaraṃ yāte jagatī yatnato'pi no || 32 ||

Vasishtha said: O Rama, both the wise ones are established in the two worlds. They do not come within our range even with effort.

वसिष्ठ ने कहा: हे राम, दोनों बुद्धिमान दो संसारों में स्थित हैं। वे हमारी पहुंच में प्रयास करने पर भी नहीं आते।

7.129.33

तृतीयो मृगतां यातो विपश्चिद्यत्र तिष्ठति । स कदाचित्ससंसारो गोचरे नोऽवतिष्ठते ॥ ३३ ॥

tṛtīyo mṛgatāṃ yāto vipaścidyatra tiṣṭhati | sa kadācit sasaṃsāro gocare no'vatiṣṭhatē || 33 ||

The third one has become a deer where the wise one resides. Sometimes, with the world, he does not stay within reach.

तीसरा वह मृग हो गया है जहाँ बुद्धिमान रहता है। कभी-कभी, संसार के साथ, वह पहुंच में नहीं रहता।

7.129.34

श्रीराम उवाच । विपश्चिन्मृगतां यातो यस्मिञ्जगति संस्थितः । तज्जगत्क्व महाबुद्धे यथावत्कथयेति मे ॥ ३४ ॥

śrīrāma uvāca | vipaścinmṛgatāṃ yāto yasmiñjagati saṃsthitaḥ | tajjagatkva mahābuddhe yathāvatkathayeti me || 34 ||

Rama said: O great sage, where is that world in which the wise one has become a deer and resides? Please tell me in detail.

राम ने कहा: हे महान बुद्धिमान, वह संसार कहाँ है जिसमें बुद्धिमान मृग बन गया है और रहता है? कृपया मुझे विस्तार से बताएँ।

7.129.35

श्रीवसिष्ठ उवाच । दूराद्दूरतरं गत्वा परब्रह्ममहाम्बरे । मृगो विपश्चिज्जगति स यस्मिंस्तज्जगच्छणु ॥ ३५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | dūrāddūrataraṃ gatvā parabrahma mahāmbare | mṛgo vipaścijjagati sa yasmiṃstajjagacchaṇu || 35 ||

Vasishtha said: Going far beyond the far, in the great expanse of the Supreme Brahman, the deer, which is the wise one, resides in that world.

वसिष्ठ ने कहा: दूर से दूर जाकर, परब्रह्म के महान आकाश में, वह मृग जो बुद्धिमान है, उस संसार में रहता है।

7.129.36

तदिदं विद्धि त्रिजगदिहासौ संस्थितो मृगः । इदं तत्परमाकाशं दूरदूरे जगत्स्थितम् ॥ ३६ ॥

tadidaṃ viddhi trijagadihāsau saṃsthito mṛgaḥ | idaṃ tatparamākāśaṃ dūradūre jagatsthitam || 36 ||

Know this, the three worlds are established here as a deer | This is that supreme space, situated far away in the world || 36 ||

यह जानो, यहाँ तीनों लोक हिरण के रूप में स्थित हैं | यह वह परम आकाश है, जो दूर-दूर तक जगत में स्थित है || ३६ ||

7.129.37

श्रीराम उवाच । विपश्चिदस्मादेवासौ जगतस्तां गतिं गतः । इहैवाद्य मृगो जातः कथमेतत्समञ्जसम् ॥ ३७ ॥

śrīrāma uvāca | vipaścidasmādevāsau jagatastāṃ gatiṃ gataḥ | ihaivādya mṛgo jātaḥ kathametatsamañjasam || 37 ||

Sri Rama said: The wise one has attained that state of the world from this very place | Here itself, a deer has been born today, how is this appropriate? || 37 ||

श्रीराम ने कहा: विवेकी पुरुष इसी स्थान से उस जगत की गति को प्राप्त हुआ है | यहीं पर आज हिरण उत्पन्न हुआ है, यह कैसे उचित है? || ३७ ||

7.129.38

श्रीवसिष्ठ उवाच । अवयवानवयवी नित्यं वेत्ति यथाखिलान् । तथा सर्वानहं वेद्मि ब्रह्मण्यात्मन्यवस्थितान् ॥ ३८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | avayavānavayavī nityaṃ vetti yathākhilān | tathā sarvānaham vedaṃ brahmaṇyātmanyavasthitān || 38 ||

Sri Vasistha said: Just as the whole knows its parts eternally | Similarly, I know all beings established in the Supreme Self || 38 ||

श्रीवसिष्ठ ने कहा: जैसे सम्पूर्ण अपने अंगों को सदा जानता है | उसी प्रकार, मैं सभी प्राणियों को जानता हूँ जो परमात्मा में स्थित हैं || ३८ ||

7.129.39

अनिष्ठितान्ससंहारान्नानाकारांस्तु तान्बहून् । मिथः प्रोतान्मिथोदृश्यान्स्वरूपानिव पार्थिवान् ॥ ३९ ॥

aniṣṭhitānsasaṃhārānnānākārāṃstu tānbahūn | mithaḥ protaṃmithodṛśyānsvarūpāniva pārthivān || 39 ||

Those many various forms, unestablished and with destruction, interwoven and seen as if they are real, like earthly beings || 39 ||

वे बहुत से विविध रूप, अस्थिर और विनाशशील, परस्पर जुड़े हुए और जैसे वास्तविक दिखाई देते हैं, पृथ्वी के प्राणियों की तरह || ३९ ||

7.129.40

तत्र कस्मिंश्चिदन्यस्मिन्मार्गेऽस्मिन्निव तिष्ठति । यद्वृत्तं कथितं राम तदेतद्भवते मया ॥ ४० ॥

tatra kasmiṃścidanyasminmārge'sminniva tiṣṭhati | yadvṛttaṃ kathitaṃ rāma tadetadbhavate mayā || 40 ||

In that, in some other path, it remains as if in this path | What has been described, O Rama, that is what happens to me || 40 ||

उसमें, किसी अन्य मार्ग में, यह इस मार्ग की तरह रहता है | जो वृत्तांत कहा गया है, हे राम, वही मुझे होता है || ४० ||

7.129.41

विपश्चितोऽन्यसंसारे देहैर्भ्रान्ता दिगन्तरान् । तानन्तान्बरे व्योम्नि तावत्कालमखिन्नधीः ॥ ४१ ॥

vipashchito'nyasamsaare dehairbhrantaa digantaraan | taananantaambare vyomni taavatkaalamakhinnadheeh || 41 ||

The wise ones, confused by other existences and bodies, wander in different directions in the infinite sky for a long time without weariness.

बुद्धिमान लोग, अन्य जीवनों और शरीरों से भ्रमित होकर, अनन्त आकाश में लम्बे समय तक थके बिना अलग-अलग दिशाओं में भटकते हैं।

7.129.42

इहैव हरिणा जातः कस्मिंश्चिद्गिरिकन्दरे । काकतालीययोगेन भ्रान्त्वा भूरिजगद्भ्रमम् ॥ ४२ ॥

ihaiva harinnaa jaatah kasminchidgirikandare | kaakataaliyayogena bhrantvaa bhoorijagadbhramam || 42 ||

Right here, a deer is born in some mountain cave, and due to the illusion of the crow and the palm tree, it wanders greatly in the world.

यहीं, किसी पर्वत की गुफा में एक हिरण जन्म लेता है, और कौए और ताड़ के पेड़ के भ्रम के कारण वह संसार में बहुत भटकता है।

7.129.43

स जगन्ति भ्रमन्दूरे यस्मिन्सर्गे मृगः स्थितः । ससर्गोऽयमिति व्योम्नि काकतालीयवत्स्थितम् ॥ ४३ ॥

sa jaganti bhramandure yasminssarge mrigah sthitah | sasargo'yamiti vyomni kaakataaliyavatsthitam || 43 ||

In this world, which is full of confusion, the deer stands, and this creation is like the illusion of the crow and the palm tree in the sky.

इस संसार में, जो भ्रम से भरा है, हिरण खड़ा है, और यह सृष्टि आकाश में कौए और ताड़ के पेड़ के भ्रम की तरह है।

7.129.44

श्रीराम उवाच । एवं चेत्तद्वद ब्रह्मन्कस्यां ककुभि मण्डले । कस्मिन्कस्मिंश्च शैलेऽसौ वने कस्मिन्मृगः स्थितः ॥ ४४ ॥

shreeraama uvaacha | evam chettadvad brahmannkasyaam kakubhi mandale | kasminkasminshcha shaile'sau vanekasminmrigah sthitah || 44 ||

Sri Rama said: If this is so, O Brahman, in which direction and in which mountain range is this deer located?

श्री राम ने कहा: यदि ऐसा है, हे ब्रह्मन्, किस दिशा और किस पर्वत श्रृंखला में यह हिरण स्थित है?

7.129.45

किं करोति कथं दूर्वाश्चर्वयत्युर्वरास्पदः । जातिं तां जरठज्ञानी कदोदारां स्मरिष्यति ॥ ४५ ॥

kim karoti katham doorvaashcharvayatyurvaraaspadah | jaatim taam jarathajnaanee kadodaraam smarishyati || 45 ||

What does he do? How does he graze on the grass of the earth? When will he remember his noble birth, knowing the decay?

वह क्या करता है? वह पृथ्वी की घास कैसे चरता है? वह कब अपने उत्कृष्ट जन्म को याद करेगा, विनाश को जानते हुए?

7.129.46

श्रीवसिष्ठ उवाच । योऽसौ त्रिगर्तनाथेन दत्तः क्रीडामृगस्तव । स्थितः क्रीडामृगागारे विद्धि तं त्वं विपश्चितम् ॥ ४६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yo'sau trigartanāthena dattaḥ krīḍāmṛgastava | sthitaḥ krīḍāmṛgāgāre viddhi taṃ tvaṃ vipaścitam || 46 ||

Vasishtha said: Know that the playful deer given to you by the king of Trigarta is wise and resides in the deer enclosure.

वसिष्ठ ने कहा: त्रिगर्त के राजा द्वारा तुम्हें दिया गया वह खेल मृग बुद्धिमान है और मृग आश्रय में रहता है।

7.129.47

श्रीवाल्मीकिरुवाच । श्रुत्वेति राघवस्तस्यां सभायां विस्मयान्वितः । बालकान्मृगमानेतुं प्रेषयामास भूरिशः ॥ ४७ ॥

śrīvālmīkiruvāca | śrutveti rāghavastasyāṃ sabhāyāṃ vismayānvitaḥ | bālakānmṛgamānetuṃ preṣayāmāsa bhūriśaḥ || 47 ||

Valmiki said: Having heard this, Raghava, filled with wonder in that assembly, sent many boys to bring the deer.

वाल्मीकि ने कहा: यह सुनकर, रघुवंशी राम उस सभा में आश्चर्यचकित हो गए और मृग को लाने के लिए कई बालकों को भेजा।

7.129.48

अथानीतो मृगो मुग्धः सभां स्फारां विवेश सः । सर्वैः सभ्यगणैर्दृष्टः पुष्टिमांस्तुष्टिमानपि ॥ ४८ ॥

athānīto mṛgo mugdhaḥ sabhāṃ sphārāṃ viveśa saḥ | sarvaiḥ sabhyagaṇairdṛṣṭaḥ puṣṭimāṃstuṣṭimānapi || 48 ||

Then the innocent deer was brought and entered the splendid assembly. Seen by all the assembly members, it was prosperous and content.

फिर निर्दोष मृग लाया गया और वह शानदार सभा में प्रवेश किया। सभी सभासदों द्वारा देखा जाने पर, वह समृद्ध और संतुष्ट था।

7.129.49

ताराबिन्दुयुतं देहबिन्दुभिः खं विडम्बयन् । दृष्टिपातोत्पलासारैः सुन्दरीः परितर्जयन् ॥ ४९ ॥

tārābinduyutaṃ dehabindubhiḥ khaṃ viḍambayan | dṛṣṭipātotpalāsāraiḥ sundarīḥ paritarjayan || 49 ||

With a body adorned with star-like spots, it mocked the sky. With lotus-like eyes, it threatened the beautiful women.

अपने शरीर पर तारों के समान धब्बों से सजा, वह आकाश का अनुकरण कर रहा था। कमल के समान आँखों से, वह सुंदर महिलाओं को धमकी दे रहा था।

7.129.50

आदृतानादृतसभैर्नीला मरकतत्विषः । धावंस्तृणेच्छया लोलं मुग्धैश्चकितवीक्षितैः ॥ ५० ॥

ādṛtānādṛtasabhairnīlā marakatatviṣaḥ | dhāvaṃstṛṇecchayā lolam mugdhaiścakitavīkṣitaiḥ || 50 ||

Respected by some and disrespected by others in the assembly, it was dark blue like an emerald. It ran here and there with a desire for grass, watched with amazement by the innocent.

सभा में कुछ द्वारा सम्मानित और कुछ द्वारा असम्मानित, वह पन्ने के समान नीला था। घास की इच्छा से, वह इधर-उधर दौड़ रहा था, निर्दोषों द्वारा आश्चर्य से देखा जा रहा था।

7.129.51

उत्कर्णोन्नयनोद्ग्रीवं क्षणभङ्गावलस्थितैः । उत्कर्णनयनोद्ग्रीवैः सभ्यानाकुलयञ्जवैः ॥ ५१ ॥

utkarṇonnayanodgrīvaṃ kṣaṇabhaṅgāvalasthitaiḥ | utkarṇanayanodgrīvaiḥ sabhyānākulayañjavaiḥ || 51 ||

With their ears raised, eyes wide open, and necks stretched, the assembly members were disturbed by the sudden appearance of the deer.

कान खड़े करके, आँखें फाड़कर और गर्दन उठाकर, सभा के लोग हरिण के अचानक प्रकट होने से व्याकुल हो गए।

7.129.52

मृगमालोक्य तं लोकाः सराजमुनिमन्त्रिणः । अनन्ता बत मायेति चिरमासन्स्मयाकुलाः ॥ ५२ ॥

mṛgamālokya taṃ lokāḥ sarājamunimantriṇaḥ | anantā bata māyeti ciramāsansmayākulāḥ || 52 ||

Seeing the deer, the people, including the king, sages, and ministers, said, 'Oh, this is indeed a great illusion!' and remained bewildered and smiling for a long time.

हरिण को देखकर, राजा, ऋषि और मंत्री सहित लोगों ने कहा, 'ओह, यह तो एक बड़ी माया है!' और वे लंबे समय तक व्याकुल और मुस्कुराते हुए रहे।

7.129.53

आश्चर्यचर्वणसुविस्मितसर्वलोका सर्वावलोकनघनोत्पलवर्षकृष्णम् । रत्नांशुजालकचितं मृगमीक्षमाणा सासीत्सभा कमलिनी लिपिनिर्मितेव ॥ ५३ ॥

āścaryacarvaṇasuvismitasarvalokā sarvāvalokanaghanotpalavarṣakṛṣṇam | ratnāṃśujālakacitaṃ mṛgamīkṣamāṇā sāsītsabhā kamalinī lipinirmitaiva || 53 ||

The entire assembly, amazed and bewildered, looked at the deer, which appeared like a dark cloud with a shower of lotuses, adorned with a net of jewel-like rays. The assembly seemed like a lotus pond with written characters.

समूची सभा, आश्चर्यचकित और विस्मित, हरिण को देख रही थी, जो कमल की वर्षा से भरे एक काले बादल की तरह लग रहा था, रत्न की तरह की किरणों के जाल से सजा हुआ। सभा लिखे हुए अक्षरों वाले कमल तालाब की तरह लग रही थी।

Chapter 130

7.130.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । अथ राम उवाचास्य मुने केन विपश्चितः । स्यादुपायेन दुःखान्तः प्राक्तनात्मोदयादिति ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | atha rāma uvācāsya mune kena vipaścitaḥ | syādupāyena duḥkhāntaḥ prāktanātmodayāditi || 1 ||

Shri Valmiki said: Then Rama asked the sage, 'By what means, O wise one, can the end of sorrow and the rise of the self be achieved?'

श्री वाल्मीकि ने कहा: तब राम ने मुनि से पूछा, 'हे विद्वान, किस उपाय से दुःख का अंत और आत्मा का उदय हो सकता है?'

7.130.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । येनैवाभ्युदिता यस्य तस्य तेन विना गतिः । न शोभते न सुखदा न हिताय न सत्फला ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yenaivābhyuditā yasya tasya tena vinā gatiḥ | na śobhate na sukhadā na hitāya na satphalā || 2 ||

Shri Vasistha said: That by which one is uplifted, without that, there is no progress. It does not shine, it does not bring happiness, it is not beneficial, and it does not yield good results.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जिससे किसी का उदय होता है, उसके बिना कोई प्रगति नहीं होती। वह चमकता नहीं, सुख नहीं देता, लाभकारी नहीं होता, और अच्छे परिणाम नहीं देता।

7.130.3

विपश्चितोऽग्निः शरणं तत्प्रवेशादयं मृगः । पूर्वरूपमवाप्नोति निर्मलं कनकं यथा ॥ ३ ॥

vipaścito'gniḥ śaraṇaṃ tatpraveśādayaṃ mṛgaḥ | pūrvarūpamavāpnoti nirmalaṃ kanakaṃ yathā || 3 ||

The wise one takes refuge in fire. By entering it, this deer attains its original form, pure like gold.

विद्वान अग्नि में शरण लेता है। उसमें प्रवेश करके, यह मृग अपने मूल रूप को प्राप्त करता है, जो सोने की तरह शुद्ध होता है।

7.130.4

करोम्येतदहं सर्वं दृश्यतां दर्शयामि वः । अग्निप्रवेशं हरिणः करोत्येषोऽधुना पुरः ॥ ४ ॥

karomyetadahaṃ sarvaṃ dṛśyatāṃ darśayāmi vaḥ | agnipraveśaṃ hariṇaḥ karotyeṣo'dhunā puraḥ || 4 ||

I will do all this. Let it be seen, I will show you. This deer is now performing the fire entrance in front of you.

मैं यह सब करूँगा। देखें, मैं आपको दिखाऊँगा। यह मृग अब आपके सामने अग्नि प्रवेश कर रहा है।

7.130.5

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इत्युक्त्वा स मुनिस्तत्र वसिष्ठः श्रेष्ठचेष्टितः । उपस्पृश्य यथान्यायं स्वकमण्डलुवारिणा ॥ ५ ॥

śrīvālmīkiruvāca | ityuktvā sa munistatra vasiṣṭhaḥ śreṣṭhaceṣṭitaḥ | upaspṛśya yathānyāyaṃ svakamaṇḍaluvāriṇā || 5 ||

Shri Valmiki said: Having said this, that sage Vasistha, who was of excellent conduct, touched the water of his own water pot according to the rules.

श्री वाल्मीकि ने कहा: ऐसा कहकर, वह मुनि वसिष्ठ, जो उत्तम आचरण वाले थे, ने नियमानुसार अपने कमंडल के जल को स्पर्श किया।

7.130.6

दध्यावनिन्धनं वह्निं ज्वालापुञ्जमयात्मकम्। तद्ध्यानेन सभामध्याज्ज्वालाजालं समुद्ययौ ॥ ६ ॥

dadhyāvanindhanaṃ vahniṃ jvālāpuñjamayātmakam | taddhyānena sabhāmadhyājjvālājālaṃ samudyayau || 6 ||

Meditating on the fire, which is the fuel of curd, and whose essence is a mass of flames, from the midst of the assembly, a network of flames arose.

दही के ईंधन से अग्नि पर ध्यान करते हुए, जिसका स्वरूप ज्वालाओं का ढेर है, सभा के मध्य से ज्वालाओं का जाल उठा।

7.130.7

अङ्गाररहिताकारमिन्धनेन विवर्जितम्। स्वच्छं धमधमायन्तमधूममपकज्जलम् ॥ ७ ॥

aṅgārarahitākāramindhanena vivarjitam | svacchaṃ dhamadhamāyantamadhūmamapakajjalam || 7 ||

Without the form of charcoal, devoid of fuel, pure, resounding with a crackling sound, smokeless, and without impure flames.

अंगारे के रूप से रहित, ईंधन से विहीन, शुद्ध, चटकने की आवाज से भरा, धुआँ रहित, और अशुद्ध ज्वालाओं से रहित।

7.130.8

मुग्धमुग्धकचत्कान्ति हेममन्दिरसुन्दरम्। उत्फुल्लकिंशुकाकारं संध्याम्बुदवदुत्थितम् ॥ ८ ॥

mugdhamugdhakacatkānti hemamandirasundaram | utphullakiṃśukākāraṃ saṃdhyāmbudavadutthitam || 8 ||

With the charming beauty of innocent hair, beautiful like a golden palace, resembling a fully bloomed palash flower, and rising like an evening cloud.

निर्दोष बालों की मोहक शोभा से युक्त, सुनहरे महल की तरह सुन्दर, पूर्णतः खिले पलाश फूल के समान, और संध्या के बादल की तरह उठता हुआ।

7.130.9

दूरापसृतसभ्यं तज्ज्वालाजालं विलोकयन्। मृगः प्राग्भक्तिभावेन प्रोल्ललास विलोकितैः ॥ ९ ॥

dūrāpasṛtasabhyaṃ tajjvālājālaṃ vilokayan | mṛgaḥ prāgbhaktibhāvena prollalāsa vilokitaiḥ || 9 ||

Seeing that network of flames from a distance, the deer, with a prior devotional feeling, rejoiced upon seeing it.

उस ज्वालाओं के जाल को दूर से देखकर, हिरण, पहले से ही भक्ति भाव से, उसे देखकर प्रसन्न हो गया।

7.130.10

तं समालोकयन्वह्निं विविक्षुः क्षीणदुष्कृतः। पश्चादुपससाराशु दूरं सिंह इवोत्पतन् ॥ १० ॥

taṃ samālokayanvahniṃ vivikṣuḥ kṣīṇaduṣkṛtaḥ | paścādupasasārāśu dūraṃ siṃha ivotpatan || 10 ||

Looking at that fire, desiring to enter, with diminished sins, he quickly approached from behind, like a lion leaping from a distance.

उस अग्नि को देखते हुए, प्रवेश करने की इच्छा से, पापों से मुक्त होकर, वह तेजी से पीछे से आगे बढ़ा, जैसे दूर से उछलता हुआ सिंह।

7.130.11

एतस्मिन्नन्तरे ध्याने विचार्य मुनिपुङ्गवः। मृगं विलोकितैः क्षीणपापं कुर्वन्नुवाच ह ॥ ११ ॥

etasminnantare dhyāne vicārya munipuṅgavaḥ | mṛgaṃ vilokitaiḥ kṣīṇapāpaṃ kurvannuvāca ha || 11 ||

Meanwhile, the great sage, contemplating in meditation, saw the deer whose sins were diminished and spoke.

इसी बीच, महान मुनि ध्यान में विचार करते हुए, उस मृग को देखा जिसके पाप कम हो गए थे और बोले।

7.130.12

संस्मृत्य प्राक्तनीं भक्तिं भगवन्हव्यवाहन । कुरु कारुण्यतः कान्तं मृगमेनं विपश्चितम् ॥ १२ ॥

saṃsmṛtya prāktanīṃ bhaktiṃ bhagavanhavyavāhana | kuru kāruṇyataḥ kāntaṃ mṛgamenam vipaścitam || 12 ||

Remembering the past devotion, O carrier of oblations to the Lord, out of compassion, make this wise deer charming.

पिछली भक्ति को याद करते हुए, हे भगवान के हव्यवाहन, दया से, इस बुद्धिमान मृग को सुंदर बनाओ।

7.130.13

वदत्येवं मुनौ दूराद्धावित्वा नृपसंसदि । मृगोऽग्निं वेगनिर्मुक्तः शरो लक्ष्यमिवाविशत् ॥ १३ ॥

vadatyevaṃ munau dūrāddhāvitvā nṛpasaṅsadi | mṛgo'gniṃ veganirmuktaḥ śaro lakṣyamivāviśat || 13 ||

As the sage was speaking thus, the deer, running swiftly from afar, entered the fire in the king's assembly like an arrow hitting its target.

जैसे ही मुनि ऐसा कह रहे थे, मृग दूर से तेजी से दौड़ता हुआ राजा की सभा में अग्नि में प्रवेश कर गया, जैसे तीर लक्ष्य पर लगता है।

7.130.14

ज्वालाजालं प्रविष्टोऽसावादर्श इव बिम्बितः । संध्याभ्र इव विश्रान्तो दृष्टः स्पष्टशरीरकः ॥ १४ ॥

jvālājālaṃ praviṣṭo'sāvādarśa iva bimbitaḥ | saṃdhyābhra iva viśrānto dṛṣṭaḥ spaṣṭaśarīrakaḥ || 14 ||

Having entered the network of flames, he appeared like a reflection in a mirror, like a twilight cloud, clearly visible with a distinct body.

ज्वालाओं के जाल में प्रवेश करने के बाद, वह दर्पण में प्रतिबिंबित की तरह, संध्या के बादल की तरह, स्पष्ट रूप से दिखाई देता हुआ दिखाई दिया।

7.130.15

स पश्यत्स्वेव सभ्येषु मृगोऽथ नरतामगात् । ज्वालोदरे नभस्यभ्रलवो रूपान्तरं यथा ॥ १५ ॥

sa paśyatsveva sabhyeṣu mṛgo'tha naratāmagāt | jvālodare nabhasyabhralavo rūpāntaraṃ yathā || 15 ||

While everyone was watching, the deer then attained human form, like a cloud in the sky changing its shape within the flames.

जब सभी देख रहे थे, मृग ने फिर मानव रूप प्राप्त किया, जैसे ज्वालाओं में आकाश का बादल अपना रूप बदलता है।

7.130.16

अदृश्यताथ ज्वालायामन्तःकनककान्तिमान् । पुरुषः पावनाकारः कान्तावयवसुन्दरः ॥ १६ ॥

adṛśyatātha jvālāyāmantaḥkanakakāntimān | puruṣaḥ pāvanākāraḥ kāntāvayavasundaraḥ || 16 ||

Then, invisible in the flame, a man with a golden glow inside, with a purifying form and beautiful limbs.

फिर, लौ में अदृश्य, एक व्यक्ति जिसके अंदर सोने की चमक है, पवित्र रूप और सुंदर अंग हैं।

7.130.17

अर्कबिम्ब इवादित्यश्चन्द्रबिम्ब इवोडुपः । महाम्भसीव वरुणः संध्याभ्र इव वा शशी ॥ १७ ॥

arkabimba ivādityaścandrabimba ivouḍupaḥ | mahāmbhasīva varuṇaḥ saṃdhyābhra iva vā śaśī || 17 ||

Like the sun in the solar disc, like the moon in the lunar disc, like Varuna in the great waters, like the moon in the twilight clouds.

सूर्य की तरह सौर मंडल में, चंद्रमा की तरह चंद्र मंडल में, वरुण की तरह महान जल में, चंद्रमा की तरह संध्या के बादलों में।

7.130.18

चक्षुःकनीनिकाकोशे मुकुरे सलिले मणौ । प्रतिबिम्ब इवार्काभो भक्तिनाधारपावकः ॥ १८ ॥

cakṣuḥkanīnikākośe mukure salile maṇau | pratibimba ivārkābho bhaktināḍhārapāvakaḥ || 18 ||

Like a reflection in the pupil of the eye, in a pearl, in water, in a gem, the fire of devotion shines like the sun.

आँख की पुतली में, मोती में, पानी में, मणि में प्रतिबिम्ब की तरह, भक्ति की अग्नि सूर्य की तरह चमकती है।

7.130.19

अनन्तरं सभामध्याद्वातैर्दीप इवाहतः । ज्वालाजालं ययौ क्वापि संध्याम्बुद इवाम्बरात् ॥ १९ ॥

anantaraṃ sabhāmadhyādvātairdīpa ivāhataḥ | jvālājālaṃ yayau kvāpi saṃdhyāmbuda ivāmbarāt || 19 ||

Immediately from the middle of the assembly, like a lamp blown by the wind, the network of flames went somewhere like a twilight cloud from the sky.

तुरंत सभा के बीच से, हवा से उड़ाया हुआ दीपक की तरह, लौ का जाल कहीं चला गया जैसे संध्या का बादल आकाश से।

7.130.20

कुटीकुड्येषु भग्नेषु प्रतिबिम्ब इवामरः । अतिष्ठत्पुरुषस्तत्र पटान्नट इवोद्गतः ॥ २० ॥

kuṭīkuḍyeṣu bhagneṣu pratibimba ivāmaraḥ | atiṣṭhatpuruṣastatra paṭānnaṭa ivodgataḥ || 20 ||

In the broken huts, like a reflection of the immortal, the man stood there, as if emerging from a painting.

टूटी झोंपड़ियों में, अमर के प्रतिबिम्ब की तरह, वह व्यक्ति वहाँ खड़ा था, जैसे चित्र से निकला हो।

7.130.21

अक्षमालाधरः शान्तो हेमयज्ञोपवीतवान् । अग्निशौचाम्बरच्छन्नः सद्यश्चन्द्र इवोदितः ॥ २१ ॥

akṣamālādharaḥ śānto hemayajñopavītavān | agniśaucāmbaracchannaḥ sadyaścandra ivoditaḥ || 21 ||

He wore a rosary and was calm, adorned with a golden sacred thread, covered in a pure white garment, and appeared like the rising moon.

वह अक्षमाला धारण करता हुआ शान्त था, सोने के यज्ञोपवीत से सुशोभित, पवित्र श्वेत वस्त्र से ढका हुआ और उदित चन्द्रमा के समान प्रतीत होता था।

7.130.22

अहो भा इति सभ्योक्त्या तस्य वेषस्य भासनात् । भास्वानिव विशालाभो भास इत्येष शब्दितः ॥ २२ ॥

aho bhā iti sabhyoktyā tasya veṣasya bhāsanāt | bhāsvāniva viśālābho bhāsa ityeṣa śabditaḥ || 22 ||

Upon seeing his radiant appearance, the assembly exclaimed, 'Ah, how radiant!' Thus, he was named Bhāsa, meaning 'radiant one,' due to his splendid form.

उसके चमकदार रूप को देखकर सभा में लोगों ने कहा, 'अहो, कितना चमकदार!' इस प्रकार, उसका नाम भास रखा गया, जिसका अर्थ है 'चमकदार व्यक्ति,' उसके शानदार रूप के कारण।

7.130.23

असौ मूर्त इवाभासो भासनाम्ना भविष्यति। सभास्थैः कैश्चिदित्युक्तं तेन भासः स उच्यते ॥ २३ ॥

asau mūrta ivābhāso bhāsanāmnā bhaviṣyati | sabhāsthaiḥ kaiścidityuktaṃ tena bhāsaḥ sa ucyate || 23 ||

He will be known as Bhāsa, as if he is a manifestation of radiance. This was said by some in the assembly, and thus he is called Bhāsa.

वह भास के नाम से जाना जाएगा, मानो वह चमक का प्रतीक है। यह सभा में कुछ लोगों द्वारा कहा गया था, और इसलिए उसे भास कहा जाता है।

7.130.24

अथोपविश्य तत्रैव स भासो ध्यानसंस्थितः। आत्मोदन्तमशेषेण सस्मार प्राक्तनं तनौ ॥ २४ ॥

athopaviśya tatraiva sa bhāso dhyānasansthitaḥ | ātmoudantamaśeṣeṇa sasmāra prāktanaṃ tanau || 24 ||

Then, sitting there, Bhāsa, immersed in meditation, remembered his past life completely.

फिर, वहीं बैठकर, भास, ध्यान में डूबा हुआ, अपने पूर्व जन्म को पूरी तरह से याद करने लगा।

7.130.25

सभालोके गतस्पन्दे स्मयेनात्मनि तिष्ठति। भासो मुहूर्तमात्रेण दृष्ट्वा स्वोदन्तमक्षतम् ॥ २५ ॥

sabhāloke gataspande smayenātmani tiṣṭhati | bhāso muhūrtamātreṇa dṛṣṭvā svoudantamakṣatam || 25 ||

In the assembly, with his senses withdrawn, Bhāsa remained absorbed in himself with a smile. In just a moment, he saw his past life clearly.

सभा में, अपनी इंद्रियों को वापस लेकर, भास मुस्कुराते हुए अपने में ही खोया रहा। एक ही क्षण में, उसने अपने पूर्व जन्म को स्पष्ट रूप से देखा।

7.130.26

आययौ पूर्वजन्मभ्यो ध्यानालोकाद्व्यबुध्यत। सभामालोकयामास समुत्थाय यथाक्रमम् ॥ २६ ॥

āyayau pūrvajanmabhyo dhyānālokādvyabudhyata | sabhāmālokayāmāsa samutthāya yathākramam || 26 ||

He came from his previous births, awakened from the light of meditation. He looked at the assembly, rising in due order.

वह अपने पूर्व जन्मों से आया, ध्यान के प्रकाश से जागा। वह उठकर क्रमानुसार सभा को देखने लगा।

7.130.27

स चागत्य वसिष्ठाय प्रणाममकरोन्मुदा। ज्ञानार्कप्राणद ब्रह्मन्नमस्तेऽस्त्वित्युदाहरत् ॥ २७ ॥

sa cāgatya vasiṣṭhāya praṇāmamakaronmudā | jñānārkaprāṇada brahmannamaste'stvityudāharat || 27 ||

Having arrived, he joyfully bowed to Vasistha and said, 'O Brahman, the life-giver of the sun of knowledge, salutations to you.'

आकर उसने वसिष्ठ को प्रणाम किया और कहा, 'हे ब्रह्मन्, ज्ञान के सूर्य के प्राणदाता, आपको नमस्कार।'

7.130.28

तमुवाच वसिष्ठोऽपि हस्तेन शिरसि स्पृशन्। अद्य ते सुचिराद्राजन्नविद्यायाः क्षयोऽस्त्विति ॥ २८ ॥

tamuvāca vasiṣṭho'pi hastena śirasi spṛśan | adya te sucirādrājannavidyāyāḥ kṣayo'stviti || 28 ||

Vasistha also said to him, touching his head with his hand, 'Today, O king, may your long-standing ignorance be destroyed.'

वसिष्ठ ने भी उससे कहा, हाथ से उसके सिर को छूते हुए, 'आज, हे राजन्, आपकी लंबी अविद्या का अंत हो।'

7.130.29

रामं जयेति जल्पन्तं नतं दशरथोऽथ तम्। आसनात्किंचिदुत्तिष्ठन्समुवाच हसन्निव ॥ २९ ॥

rāmaṃ jayeti jalpantaṃ nataṃ daśaratho'tha tam | āsanātkiciduttiṣṭhansamuvāca hasanniva || 29 ||

Then Dasaratha, slightly rising from his seat, smilingly said to Rama, who was bowing and murmuring 'Victory to Rama.'

तब दशरथ ने, अपने आसन से थोड़ा उठकर, मुस्कुराते हुए राम से कहा, जो झुका हुआ था और 'राम की जय' मुर्मुरा रहा था।

7.130.30

दशरथ उवाच। स्वागतं तेऽस्तु भो राजन्निदमासनमास्यताम्। अनेकभवसंभारभ्रान्त विश्रम्यतामिह ॥ ३० ॥

daśaratha uvāca | svāgataṃ te'stu bho rājannidamāsanamāsyatām | anekabhavasaṃbhārabhrānta viśramyatāmiha || 30 ||

Dasaratha said, 'Welcome, O king, please take this seat. Rest here, tired from the burden of many births.'

दशरथ ने कहा, 'स्वागत है, हे राजन्, कृपया यह आसन ले लो। अनेक जन्मों के भार से थके हुए, यहां विश्राम करो।'

7.130.31

श्रीवाल्मीकिरुवाच। वदत्येवं दशरथे विपश्चिद्भासनामभृत्। विवेश विष्टरे विश्वामित्रादीन्प्रणमन्मुनीन् ॥ ३१ ॥

śrīvālmīkiruvāca | vadatyevaṃ daśarathe vipaścidbhāsanāmabhṛt | viveśa viṣṭare viśvāmitrādīn praṇamanmunīn || 31 ||

Sri Valmiki said: While Dasaratha was speaking thus, the wise one, holding the seat, entered the assembly and bowed to the sages like Visvamitra.

श्री वाल्मीकि ने कहा: दशरथ ऐसा कहते हुए, विपश्चित् (बुद्धिमान) भासन (आसन) को धारण करते हुए, विष्टरे (सभा) में प्रवेश किया और विश्वामित्र आदि मुनियों को प्रणाम किया।

7.130.32

दशरथ उवाच। अहो बत चिरं कालमालानेनेव दन्तिना। वन्येनाविद्यया दुःखमनुभूतं विपश्चिता ॥ ३२ ॥

daśaratha uvāca | aho bata ciraṃ kālam ālāneneva dantinā | vanyenāvidyayā duḥkham anubhūtaṃ vipaścitā || 32 ||

Dasaratha said: Alas! For a long time, like an elephant struck by a goad, I have experienced suffering due to ignorance in the forest.

दशरथ ने कहा: अहो! बहुत लंबे समय से, जैसे हाथी अंकुश से छेद दिया जाता है, मैंने जंगल में अज्ञान के कारण दुःख भोगा है।

7.130.33

असम्यग्बोधदुर्दृष्टेरहो नु विषमा गतिः। व्योम्नेव दर्शयत्येषा सर्गाडम्बरसंभ्रमम् ॥ ३३ ॥

asamyagbodhadurdṛṣṭeraho nu viṣamā gatiḥ | vyomnyeva darśayaty eṣā sargāḍambarasaṃbhramam || 33 ||

Alas! Due to improper understanding and evil vision, the course is indeed uneven. This very sky reveals the confusion of creation's pomp.

अहो! गलत बोध और बुरी दृष्टि के कारण, यह मार्ग वास्तव में असमान है। यही आकाश सृष्टि के ढोंग की उलझन दिखाता है।

7.130.34

कियन्त्याश्चर्यमेतानि जगन्ति विततात्मनि । संततानि चिरं तानि विभ्रान्तानि विपश्चिता ॥ ३४ ॥

kiyantyāścaryametāni jaganti vitatātmani | saṃtatāni ciraṃ tāni vibhrāntāni vipaścitā || 34 ||

How many wonders are these in the expanded universe? They are continuous, long-lasting, and bewildering to the wise.

इन विस्तृत ब्रह्मांड में कितने आश्चर्य हैं? ये निरंतर, लंबे समय तक चलते हैं, और बुद्धिमान के लिए भ्रांतिकारक हैं।

7.130.35

व्योमात्मनोऽपि महिमायमहो नु कीदृगस्य स्वभावविभवस्य चिदात्मवृत्तेः । यः शून्य एव परमात्मघनेऽम्बरेऽन्तरेवंविधानि विविधानि जगन्ति भान्ति ॥ ३५ ॥

vyomātmano'pi mahimāyamaho nu kīdṛgasya svabhāvavibhavasya cidātmavṛtteḥ | yaḥ śūnya eva paramātmaghane'mbare'ntarevaṃvidhāni vividhāni jaganti bhānti || 35 ||

Alas! What is the greatness of the sky-self, the nature of whose splendor is consciousness? That which is empty itself, in the dense supreme self, in the sky, appears as various diverse universes.

अहो! आकाश-आत्मा का महिमा कैसा है, जिसकी स्वभाव की विभूति चेतना है? जो खुद शून्य है, घने परमात्मा में, आकाश में, विविध ब्रह्मांड के रूप में प्रकट होता है।

Chapter 131

7.131.1

दशरथ उवाच । क्लिष्टोऽयं यदविद्यार्थं विपश्चिदविपश्चितः । तदहं चेष्टितं मन्ये कष्टोऽवस्तुनि किंग्रहः ॥ १ ॥

daśaratha uvāca | kliṣṭo'yaṃ yadavidyārthaṃ vipaścidavipaścitaḥ | tadahaṃ ceṣṭitaṃ manye kaṣṭo'vastuni kiṃgrahaḥ || 1 ||

King Dasharatha said: It is painful that the wise and the ignorant both strive for the sake of ignorance. Therefore, I consider this effort in vain to be futile.

राजा दशरथ ने कहा: यह दुःखद है कि ज्ञानी और मूर्ख दोनों अज्ञान के लिए प्रयास करते हैं। इसलिए, मैं इस व्यर्थ प्रयास को निरर्थक मानता हूँ।

7.131.2

श्रीवाल्मीकिरुवाच । अस्मिन्नवसरे तत्र राज्ञः पार्श्वे व्यवस्थितः । प्रसङ्गपतितं वाक्यं विश्वामित्रोऽभ्युवाच ह ॥ २ ॥

śrīvālmīkiruvāca | asminnavasare tatra rājñaḥ pārśve vyavasthitaḥ | prasaṅgapatitaṃ vākyaṃ viśvāmitro'bhyuvāca ha || 2 ||

Sage Valmiki said: At that moment, standing by the side of the king, Vishvamitra spoke these words that came to his mind.

ऋषि वाल्मीकि ने कहा: उस समय, राजा के पास खड़े होकर, विश्वामित्र ने ये शब्द कहे जो उनके मन में आए।

7.131.3

अप्राप्तोत्तमबोधानां बोधवेद्या विलक्षणाः । भवन्त्येवंविधा राजन्बहूनां बहवो भृशम् ॥ ३ ॥

aprāptottamabodhānāṃ bodhavedyā vilakṣaṇāḥ | bhavantyevaṃvidhā rājanbahūnāṃ bahavo bhṛśam || 3 ||

O King, those who have not attained the highest knowledge perceive the knowable in various distorted ways, and there are many such people.

हे राजन्, जो लोग उत्तम ज्ञान को प्राप्त नहीं हुए हैं, वे ज्ञेय को विभिन्न विकृत रूपों में देखते हैं, और ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है।

7.131.4

अद्य सप्तदशं वर्षलक्षमक्षीणनिश्चयाः । एवमेव भ्रमन्तोऽस्यां वटधाना भुवि स्थिताः ॥ ४ ॥

adya saptadaśaṃ varṣalakṣamakṣīṇaniścayāḥ | evameva bhramanto'syāṃ vaṭadhānā bhuvi sthitāḥ || 4 ||

Today, with the determination of seventeen years not diminished, they wander in this world like this, established in the forest.

आज, सत्रह वर्षों के संकल्प को कम न करते हुए, वे इस पृथ्वी पर इसी तरह भटकते हैं, वन में स्थित।

7.131.5

अद्य सप्तदशं वर्षलक्षमक्षीणनिश्चयाःएवमेव भ्रमन्तोऽस्यां वटधाना भुवि स्थिताः ॥ ५ ॥

adya saptadaśaṃ varṣalakṣamakṣīṇaniścayāḥevameva bhramanto'syāṃ vaṭadhānā bhuvi sthitāḥ || 5 ||

Today, it is certain that seventeen years have passed. In this way, wandering on this earth, they are situated like the banyan tree.

आज, यह निश्चित है कि सत्रह वर्ष बीत चुके हैं। इस प्रकार, इस पृथ्वी पर भटकते हुए, वे बरगद के पेड़ की तरह स्थित हैं।

7.131.6

अयं खलु महालोको वर्तुलो व्योम्नि संस्थितः । बालसंकल्पतरुवद्ब्राह्मसंकल्पनिश्चयः ॥ ६ ॥

ayaṃ khalu mahāloko vartulo vyomni saṃsthitaḥ | bālasaṃkalpataruvadbrāhmasaṃkalpaniścayaḥ || 6 ||

Indeed, this great world is round and established in the sky, like a tree of childish resolutions, with the firm resolve of Brahma.

निश्चय ही, यह महान जगत गोलाकार है और आकाश में स्थित है, बालकों के संकल्पों के वृक्ष की तरह, ब्रह्मा के दृढ़ संकल्प के साथ।

7.131.7

कन्दुके व्योम्नि संरुद्धे दशदिक्कं पिपीलिकाः । इत्थं भ्रमन्ति भूतानि तदाधाराणि नित्यदा ॥ ७ ॥

kanduke vyomni saṃruddhe daśadikkam pipīlikāḥ | ittham bhramanti bhūtāni tadādhārāṇi nityadā || 7 ||

When the sky is covered with clouds, ants wander in all ten directions. Similarly, beings always wander, supported by that.

जब आकाश बादलों से ढक जाता है, चींटियाँ दसों दिशाओं में भटकती हैं। इसी प्रकार, प्राणी हमेशा उसके आधार पर भटकते हैं।

7.131.8

भूगोलकाधोभागानि तदङ्गान्यूर्ध्ववन्ति च । तदा भूतानि तिष्ठन्ति तान्याविश्य भ्रमन्ति च ॥ ८ ॥

bhūgolakādho-bhāgāni tad-aṅgāny-ūrdhva-vanti ca | tadā bhūtāni tiṣṭhanti tāny-āviśya bhramanti ca || 8 ||

The lower parts of the globe and its upper parts are also upward. Then beings stand, entering those and wandering.

ग्लोब के नीचे के भाग और उसके ऊपर के भाग भी ऊपर की ओर हैं। फिर प्राणी उनमें प्रवेश करके और भटकते हैं।

7.131.9

तमेवाविश्य दूरेण सरितश्चर्क्षमण्डलम् । असंस्पर्शा भ्रमन्त्युऽच्चैः सचन्द्रार्कादि संततम् ॥ ९ ॥

tamevāviśya dūreṇa saritaścarkṣamaṇḍalam | asaṃsparśā bhramantyu'ccaiḥ sacandrārkādi santatam || 9 ||

Entering that from a distance, rivers and the celestial sphere wander without contact, high above, continuously with the moon, sun, etc.

दूर से उसमें प्रवेश करके, नदियाँ और आकाश मण्डल बिना स्पर्श के, ऊपर उठकर, चन्द्रमा, सूर्य आदि के साथ निरंतर भटकते हैं।

7.131.10

इहैव सर्वदिक्कं द्योस्तामावेष्ट्य व्यवस्थिता । सर्वदिक्कं खमत्यूर्ध्वं तस्याधस्तान्महीतलम् ॥ १० ॥

ihaiva sarvadikkam dyostāmāveṣṭya vyavasthitā | sarvadikkam khamatyūrdhvam tasyādhas-tān-mahītalam || 10 ||

Here itself, in all directions, the sky envelops the earth, established. In all directions, the sky is above, and below it is the surface of the earth.

यहीं, सभी दिशाओं में, आकाश पृथ्वी को घेरे हुए स्थापित है। सभी दिशाओं में, आकाश ऊपर है, और उसके नीचे पृथ्वी की सतह है।

7.131.11

भावाः पतन्तो धावन्ति तस्याधः सर्वतोऽङ्गकम् । यत्रोत्पतन्तो गच्छन्ति तदूर्ध्वमिति शब्दितम् ॥ ११ ॥

bhāvāḥ patanto dhāvanti tasyādhaḥ sarvatoṅgakam | yatrotpatanto gacchanti tadūrdhvamiti śabditaṃ || 11 ||

Beings fall and run below it in all directions. Where they rise and go is called above.

प्राणी गिरते हैं और सभी दिशाओं में उसके नीचे दौड़ते हैं। जहाँ वे उठते हैं और जाते हैं, वह ऊपर कहलाता है।

7.131.12

तत्रैकदेशे विद्यन्ते वटधानाभिधानकाः । जातास्तेषां त्रयो राजन् राजपुत्राः पुराभवन् ॥ १२ ॥

tatraikadeśe vidyante vaṭadhānābhidhānakāḥ | jātāsteṣāṃ trayo rājan rājaputrāḥ purābhavan || 12 ||

In a certain place, there were people known as Vaṭadhānās. Three princes were born to them in ancient times.

एक स्थान पर, वटधाना नामक लोग रहते थे। उनके यहाँ पुराने समय में तीन राजकुमार उत्पन्न हुए।

7.131.13

ते ह्येवमेकसंकल्पा भूम्यादेर्दृश्यवर्त्मनः । कोऽन्तः स्यादिति निर्याता विहर्तुं दृढनिश्चयाः ॥ १३ ॥

te hyevamekasaṃkalpā bhūmyāderdṛśyavartmanaḥ | ko'ntaḥ syāditi niryātā vihartuṃ dṛḍhaniścayāḥ || 13 ||

With a unified resolve, they set out to explore the visible path of the earth and beyond, determined to find out what the end would be.

एक ही संकल्प से, वे पृथ्वी और उसके परे के दृश्य मार्ग को खोजने के लिए निकले, यह जानने के लिए दृढ़ निश्चय से कि अंत क्या होगा।

7.131.14

पुनर्वारि पुनर्भूमिस्तेषामाक्रमतां चिरम् । नवलब्धशरीराणां दीर्घकालो व्यवर्तत ॥ १४ ॥

punarvāri punarbhūmisteṣāmākramatāṃ ciram | navalabdhaśarīrāṇāṃ dīrghakālo vyavartat || 14 ||

They repeatedly traversed water and land for a long time. For those who had newly acquired bodies, a long period of time passed.

वे बार-बार जल और भूमि पर चले, लंबे समय तक। नए शरीर प्राप्त करने वालों के लिए, एक लंबा समय बीत गया।

7.131.15

स्वच्छकन्दुकवम्रीकन्यायेनानिशमत्र ते । भ्रमन्तो नाप्नुवन्त्यन्तमन्यत्वं संविदन्ति च ॥ १५ ॥

svacchakandukavamrīkanyāyenāniśamatra te | bhramanto nāpnuvantyantamanyatvaṃ saṃvidanti ca || 15 ||

Constantly wandering here like a clear ball tossed by a girl, they did not reach the end but experienced otherness.

यहाँ एक लड़की द्वारा फेंके गए स्वच्छ गेंद की तरह निरंतर भटकते हुए, वे अंत तक नहीं पहुँचे, लेकिन दूसरों का अनुभव किया।

7.131.16

व्योमस्थकन्दुकभ्रान्तपिपीलिकवदाकुलम् । अद्यापि संस्थिता राजन्न च खेदं व्रजन्ति ते ॥ १६ ॥

vyomastakandukabhrāntapipīlikavadākulam | adyāpi saṃsthitā rājanna ca khedaṃ vrajanti te || 16 ||

Even now, they remain confused like an ant bewildered by a ball thrown into the sky, and they do not feel tired.

आज भी, वे आकाश में फेंकी गई गेंद से भ्रमित चींटी की तरह उलझे हुए हैं, और वे थके हुए नहीं हैं।

7.131.17

देशं भूगोलकस्यास्य यं यमासादयन्ति च । इहेव तत्र तत्रोच्चैरधश्चोर्ध्वं तथा दिशः ॥ १७ ॥

deśaṃ bhūgolakasyāsya yaṃ yamāsādayanti ca | iheva tatra tatrocchairadhaścordhvaṃ tathā diśaḥ || 17 ||

In whatever regions of this globe they reach, they find the same conditions of high and low, directions, and so forth, as here.

इस ग्रह के जिस-जिस देश में वे पहुंचते हैं, वहां भी उन्हें यहां की तरह ही ऊंचाई, नीचाई, दिशाएं आदि मिलती हैं।

7.131.18

ते वदन्ति महाराज यद्यस्माभिरितोद्यतैः । न तावदन्तः संप्राप्तः संचराम इतः परम् ॥ १८ ॥

te vadanti mahārāja yadyasmābhiritodyataiḥ | na tāvadantaḥ saṃprāptaḥ saṃcarāma itaḥ param || 18 ||

They say, O great king, that even if we set out from here, we have not yet reached the end; we wander from here to there.

वे कहते हैं, हे महाराज, यदि हम यहां से निकलें भी, तो हमने अभी तक अंत तक नहीं पहुंचा है; हम यहां से वहां तक भटकते रहते हैं।

7.131.19

इत्थं न किंचिदेवेदं ब्रह्मसंकल्पडम्बरम् । किंचित्संकल्पमज्ञानमनन्तं स्वप्नदृश्यवत् ॥ १९ ॥

itthaṃ na kiṃcidedaṃ brahmasaṃkalpaḍambaram | kiṃcitsaṃkalpamajñānamanantaṃ svapnadṛśyavat || 19 ||

Thus, this is not anything at all; it is just a mere appearance of Brahman's will, a bit of ignorance, endless, like a dream vision.

इस प्रकार, यह कुछ भी नहीं है; यह तो बस ब्रह्म की इच्छा का एक भ्रम है, एक थोड़ी सी अज्ञान, अनंत, स्वप्न की तरह।

7.131.20

कल्पनं तत्परं ब्रह्म परं ब्रह्मैव कल्पनम् । चिद्रूपं नानयोर्भेदः शून्यत्वाकाशयोरिव ॥ २० ॥

kalpanaṃ tatparaṃ brahma paraṃ brahmaiva kalpanam | cidrūpaṃ nānayorbhedaḥ śūnyatvākāśayoriva || 20 ||

Imagination is that supreme Brahman; the supreme Brahman is indeed imagination. There is no difference between the two, like the emptiness and space.

कल्पना वह परम ब्रह्म है; परम ब्रह्म ही कल्पना है। दोनों में कोई अंतर नहीं है, जैसे शून्यता और आकाश में।

7.131.21

चिन्मात्रं यद्यदाभातं जलवाहविवर्तवत् । तत्तादृक्कथमन्याभमन्यस्यासंभवाद्भवेत् ॥ २१ ॥

cinmātraṃ yadyadābhātaṃ jalavāhavivartavat | tattādṛkkathamanyābhamanyasyāsaṃbhavādbhavet || 21 ||

Whatever appears as mere consciousness, like the reflection in water, how can that be different from another, since it is impossible for it to be otherwise?

जो कुछ भी शुद्ध चेतना के रूप में प्रकट होता है, जैसे जल में प्रतिबिंब, वह दूसरे से कैसे अलग हो सकता है, क्योंकि ऐसा होना असंभव है?

7.131.22

अभावः खे च खमिदं सर्गादौ परमाम्बरम् । स्वयं जगदिवाभाति नान्यत्प्रलयसर्गकौ ॥ २२ ॥

abhāvaḥ khe ca khamidaṃ sargādau paramāmbaram | svayaṃ jagadivābhāti nānyatpralayasargakau || 22 ||

The absence in the sky, this is the supreme ether at the beginning of creation | Itself appears like the world, not different from dissolution and creation

अभाव आकाश में, यह सृष्टि के आरंभ में परम आकाश है | स्वयं जगत की तरह प्रतीत होता है, प्रलय और सृष्टि से भिन्न नहीं

7.131.23

यथा कषति चिद्रूपं तथैव रतिमेत्य तत् । दृष्टादृष्टैः स्वसंसारैश्चिरमास्ते यथा चिरम् ॥ २३ ॥

yathā kaṣati cidrūpaṃ tathaiva ratimetya tat | dṛṣṭādṛṣṭaiḥ svasaṃsāraiściramāste yathā ciram || 23 ||

Just as it destroys the form of consciousness, so also it attains bliss | It remains for a long time with its own seen and unseen cycles, as long as it remains

जैसे यह चेतना के रूप को नष्ट करता है, वैसे ही यह आनंद प्राप्त करता है | यह अपने दृश्य और अदृश्य संसारों के साथ लंबे समय तक रहता है, जितना समय यह रहता है

7.131.24

दृश्यात्मकं रूपमेकमेकमस्यैवमक्षयम्। स्वयमेवमजं भाति यन्न भातीव किंचन ॥ २४ ॥

dṛśyātmakaṃ rūpamekamekamasyaivamakṣayam | svayamevamajaṃ bhāti yanna bhātīva kiṃcana || 24 ||

The visible form, each and every one, is thus imperishable | Itself appears thus unborn, which does not appear as anything

दृश्य रूप, प्रत्येक और प्रत्येक, इस प्रकार अविनाशी है | यह स्वयं अजन्मा प्रतीत होता है, जो किसी भी चीज की तरह नहीं दिखता

7.131.25

चिदणोरुदरे सन्ति समस्तानुभवाणवः। शिलाः शैलोदर इव स्वच्छाः खात्मनि खात्मिकाः ॥ २५ ॥

cidāṇorudare santi samastānubhavāṇavaḥ | śilāḥ śailodara iva svacchāḥ khātmani khātmikāḥ || 25 ||

In the belly of the atom of consciousness, all experiences exist | Like stones in the belly of a mountain, pure, in the nature of space, spatial

चेतना के परमाणु के पेट में, सभी अनुभव मौजूद हैं | पहाड़ के पेट में पत्थरों की तरह, शुद्ध, आकाश की प्रकृति में, आकाशीय

7.131.26

स्वभावनिष्ठास्तिष्ठन्ति ते यदव्याकृतात्मनि। मा तिष्ठन्ति तु वै ते यदव्यावृत्ताः परे पदे ॥ २६ ॥

svabhāvaniṣṭhāstiṣṭhanti te yadavyākṛtātmani | mā tiṣṭhanti tu vai te yadavyāvṛttāḥ pare pade || 26 ||

Those who are established in their own nature remain in the unmanifested self | They do not remain when they are separated from the supreme state

जो अपनी प्रकृति में स्थित हैं, वे अव्यक्त आत्मा में रहते हैं | जब वे परम अवस्था से अलग होते हैं, तब वे नहीं रहते

7.131.27

तदेव जगदित्युक्तं ब्रह्म भारूपमाततम्। पूर्वापरपरामर्शान्निपुणं निपुणाशयाः ॥ २७ ॥

tadeva jagadityuktaṃ brahma bhārūpamātatam | pūrvāparaparāmarśānni puṇaṃ nipuṇāśayāḥ || 27 ||

That very universe is said to be Brahman, which is the essence of existence. The wise, with their discerning minds, understand this through the reflection of the past and the future.

वही जगत् ब्रह्म कहा गया है, जो अस्तित्व का सार है। बुद्धिमान लोग अपने सूक्ष्म मन से भूत और भविष्य के विचार से इसे समझते हैं।

7.131.28

अत्याश्चर्यमनष्टोऽयं परमात्सदनात्स्वयम्। नानात्वबुद्ध्या नानैव जीवोऽहमिति ताम्यति ॥ २८ ॥

atyāścaryamanṣṭo'yaṃ paramātsadanātsvayam | nānātvabuddhyā nānaiva jīvo'hamiti tāmyati || 28 ||

It is indeed a wonder that this individual soul, which is not different from the Supreme Self, considers itself different due to the illusion of diversity.

यह वास्तव में एक आश्चर्य है कि यह जीवात्मा, जो परमात्मा से भिन्न नहीं है, भिन्नता के भ्रम से अपने आप को अलग समझता है।

7.131.29

उच्यतां भास भो राजन्विपश्चिदपराख्य हे। कियद्दृष्टं कियद्भ्रान्तं दृश्यं स्मरसि किंच वा ॥ २९ ॥

ucyatāṃ bhāsa bho rājanvipaścidadaparākhyā he | kiyaddṛṣṭaṃ kiyadbhrāntaṃ dṛśyaṃ smarasi kiṃca vā || 29 ||

O wise king, tell me, what have you seen and what have you been deluded by? What do you remember of the perceivable world?

हे बुद्धिमान राजन्, बताओ, तुमने क्या देखा है और क्या भ्रम हुआ है? तुम दृश्य जगत् के बारे में क्या याद करते हो?

7.131.30

भास उवाच । बहु दृष्टं मया दृश्यं बहु भ्रान्तमखेदिना । बह्वेव बहुधा नूनमनुभूतं स्मराम्यहम् ॥ ३० ॥

bhāsa uvāca | bahu dṛṣṭaṃ mayā dṛśyaṃ bahu bhrāntamakhedinā | bahveva bahudhā nūnamanubhūtaṃ smarāmyaham || 30 ||

Bhāsa said: I have seen much of the perceivable world and have been deluded much. Indeed, I remember experiencing many things in various ways.

भास ने कहा: मैंने दृश्य जगत् का बहुत कुछ देखा है और बहुत भ्रम हुआ है। वास्तव में, मैं कई तरह से अनुभव करना याद करता हूँ।

7.131.31

मयानुभूतानि महान्ति राजंश्चिरं सुदूरे विविधैः शरीरैः । सुखानि दुःखानि जगन्त्यनन्तान्यनन्तमासाद्य महाम्बरं तत् ॥ ३१ ॥

mayānubhūtāni mahānti rājaṃściraṃ sudūre vivi dhaiḥ śarīraiḥ | sukhāni duḥkhāni jagantyanantānyanantamāsādya mahāmbaraṃ tat || 31 ||

I have experienced great joys and sorrows in various bodies over a long period and in distant places. All these experiences are infinite, and I have attained the infinite sky.

मैंने विभिन्न शरीरों में लंबे समय तक और दूर-दूर तक महान सुख और दुःख अनुभव किए हैं। ये सभी अनुभव अनंत हैं, और मैंने अनंत आकाश को प्राप्त किया है।

7.131.32

विचित्रदेहैर्वरशापयोगाद्दृश्यान्यनन्तानि मया महात्मन् । जन्मान्तरावर्तविवर्तनानि दृढैकचित्तेन वरात्कृशानोः ॥ ३२ ॥

vicitradehairvaraśāpayogāddṛśyānyanantāni mayā mahātman | janmāntarāvartavivartanāni dṛḍhaikacittena varātkṛśānoḥ || 32 ||

Due to the curse of the boon-giver, I have seen various strange bodies in my many births, with a firm resolve to understand the cycle of birth and death.

वरदान के शाप के कारण, मैंने अपने अनेक जन्मों में विचित्र शरीरों को देखा है, जन्म और मृत्यु के चक्र को समझने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ।

7.131.33

दृश्यात्मकोर्वीवपुषस्त्वविद्यादृशो जवेनान्तपरीक्षणाय । देहेन देहेन जगत्प्रति प्राक् स्मृतेः सदाहं घनयत्नमासम् ॥ ३३ ॥

dṛśyātmakorvīvapuṣastvavidyādṛśo javenāntaparīkṣaṇāya | dehena dehena jagatprati prāk smṛteḥ sadāhaṃ ghanayatnamāsam || 33 ||

With the form of a visible body, due to ignorance, I have always been eager to examine the end with speed. In every body, I have been diligent in remembering the world before.

दृश्य शरीर के रूप में, अज्ञान के कारण, मैं हमेशा तेजी से अंत की परीक्षा करने के लिए उत्सुक रहा हूँ। हर शरीर में, मैंने पहले संसार को याद करने में पूरा प्रयास किया है।

7.131.34

समाः सहस्रं विटपोऽहमासमन्तर्मनाश्चेतनभुक्तदुःखः । चित्तं विना पुष्पफलप्रताने वा कन्दवत्तत्तरसाङ्गरागः ॥ ३४ ॥

samāḥ sahasraṃ viṭapo'hamāsamantarmanāścetanabhuktaduḥkhaḥ | cittaṃ vinā puṣpaphalapratāne vā kandavattattarasāṅgarāgaḥ || 34 ||

For a thousand years, I was a tree, suffering internally with consciousness. Without a mind, I was like a plant, enjoying the essence of flowers and fruits.

हजार वर्षों तक, मैं एक पेड़ था, चेतना के साथ आंतरिक दुःख सहन करता हुआ। मन के बिना, मैं एक पौधे की तरह था, फूलों और फलों की सुगंध का आनंद लेता हुआ।

7.131.35

समाः शतं मेरुमृगोऽहमासं सुवर्णवर्णस्तरुपर्णकर्णः । दूर्वाङ्कुरास्वादनगीतिनिष्ठ अहन्कनिष्ठो वनवासिमध्ये ॥ ३५ ॥

samāḥ śataṃ merumṛgo'hamāsaṃ suvarṇavarṇastaruparṇakarṇaḥ | dūrvāṅkurāsvādanagītiniṣṭha ahaṅkaniṣṭho vanavāsimadhye || 35 ||

For a hundred years, I was a golden deer, with leaves for ears, enjoying the taste of young grass and singing. I was self-centered, living in the midst of the forest.

सौ वर्षों तक, मैं एक सुनहरा हिरण था, पत्तों के कानों वाला, नई घास का स्वाद लेते हुए और गाते हुए। मैं आत्मकेंद्रित था, जंगल के बीच रहते हुए।

7.131.36

पादाष्टकैरावलितात्मपृष्ठो मृतेऽम्भसः क्लेशकृतात्ममृत्युः । समाः शतार्धं शरभोऽहमासं क्रौञ्चाचले काञ्चनकन्दरासु ॥ ३६ ॥

pādāṣṭakairāvalitātmapṛṣṭho mṛte'mbhasaḥ kleśakṛtātmamṛtyuḥ | samāḥ śatārdhaṃ śarabho'hamāsaṃ krauñcācale kāñcanakandarāsu || 36 ||

With eight legs covering my back, I suffered death from water-borne troubles. For half a hundred years, I was a sharabha, living in the golden caves of the Krauncha mountain.

आठ पैरों से अपनी पीठ ढके हुए, मैं पानी से उत्पन्न क्लेशों से मृत्यु का सामना करता था। अड़तालीस वर्षों तक, मैं एक शरभ था, क्रौंच पर्वत की सुनहरी गुफाओं में रहता था।

7.131.37

कालागुरुद्रुमलतावलितानिलेन विद्याधरीसुरतधर्मकलामृतानि । पीतानि मे मलयसानुनि मन्दरे च मन्दारचन्दनकदम्बलतागृहेषु ॥ ३७ ॥

kālāgurudrumalatāvalitānileṇa vidyādharīsuratadharmakalāmṛtāni | pītāni me malayasānuni mandare ca mandāracandanakadambalatāgṛheṣu || 37 ||

I have drunk the nectar of the arts of love, enjoyed by the Vidyadharis and the gods, which was carried by the breeze laden with the fragrance of the kalaguru trees, in the abodes of mandara, sandalwood, and kadamba vines on the Malaya and Mandara mountains.

मैंने विद्याधरियों और देवताओं द्वारा भोगी गई प्रेम कलाओं का अमृत पी है, जो कालागुरु वृक्षों की सुगंध से भरी हवा द्वारा लाया गया था, मलय और मन्दरा पर्वतों पर मन्दार, चन्दन और कदम्ब लताओं के घरों में।

7.131.38

हेमारविन्दमकरन्दपिशङ्गितानि पीतानि पञ्चदशवर्षशतानि मेरौ । वैरिञ्चहंसतनयेन मया पयांसि तीरान्तरेषु रमतोपरि निर्झरिण्याः ॥ ३८ ॥

hemāravindamakarandapiśaṅgitāni pītāni pañcadaśavarṣaśatāni merau | vairiñchahaṃsatanayena mayā payāṃsi tīrāntareṣu ramatopari nirjhariṇyāḥ || 38 ||

I have drunk the honey tinged with the pollen of golden lotuses for fifteen hundred years on Mount Meru, and I have enjoyed the waters flowing from the cascades above, while playing with the son of Brahma's swan.

मैंने स्वर्ण कमलों के मकरंद से रंगे हुए मधु को मेरु पर्वत पर पंद्रह सौ वर्षों तक पी है, और मैंने ब्रह्मा के हंस के पुत्र के साथ खेलते हुए झरनों से बहने वाले जल का आनंद लिया है।

7.131.39

क्षीरोदवेलावनगन्धवाहविलोलनीलालकवल्लरीणाम्। समाः शतं शोकजरापहारि गीतं श्रुतं माधवसुन्दरीणाम्॥ ३९॥

kṣīrodavelāvanagandhavāhavilolanīlālakavallarīṇām | samāḥ śataṃ śokajarāpahāri gītaṃ śrutaṃ mādhavasundarīṇām || 39 ||

I have heard the enchanting songs of the beautiful women of Mathura, which remove sorrow and old age, for a hundred years, carried by the fragrant breeze from the groves of the kshiroda trees with swaying blue lotuses.

मैंने क्षीरोद वृक्षों के वनों से आने वाली सुगंधित हवा द्वारा लाई गई नीले कमलों की लहराती डालियों के साथ, मथुरा की सुंदर महिलाओं के मोहक गीतों को सौ वर्षों तक सुना है, जो दुःख और बुढ़ापे को दूर करते हैं।

7.131.40

कालञ्जरे मञ्जरिते करञ्जगुञ्जावने जम्बुकतां गतोऽहम्। गजेन पिष्टे हरिणा हतोऽसौ हस्ती मयात्रार्थमृतेन दृष्टः॥ ४०॥

kālañjare mañjarite karañjaguñjāvane jambukatāṃ gato'ham | gajena piṣṭe hariṇā hato'sau hastī mayātrārthamṛtena dṛṣṭaḥ || 40 ||

In the forest of Kalanjara, where the karanja trees hum, I became a jackal. There, I saw an elephant killed by a lion, crushed by the elephant, for the sake of my journey, with the help of a sage.

कालञ्जर के वन में, जहाँ करंज के वृक्ष गुंजार करते हैं, मैं एक सियार बन गया। वहाँ, मैंने एक ऋषि की सहायता से, अपनी यात्रा के लिए, एक हाथी को देखा, जिसे एक शेर ने मार डाला था, हाथी द्वारा कुचला गया था।

7.131.41

संतानकप्रकरहासिनि सह्यसानौ कस्मिंश्चिदन्यजगतीन्दुमुखी सुरस्त्री। एकाकिनी कृतयुगार्धमथाहमासं कल्पद्रुमस्तबकसद्मनि सिद्धशापात्॥ ४१॥

saṃtānakaprakarahāsini sahyasānau kasmiṃścidanyajagatīndumukhī surastrī | ekākinī kṛtayugārdhamathāhamāsaṃ kalpadrumastabakasadmani siddhaśāpāt || 41 ||

In the beautiful Sahyadri mountains, in a certain part of another world, I was a celestial woman with a smiling face, living alone for half of the Krita Yuga in a wish-fulfilling tree's abode, due to a sage's curse.

सुंदर सह्याद्रि पर्वतों में, दूसरी दुनिया के किसी हिस्से में, मैं एक मुस्कुराते चेहरे वाली दिव्य स्त्री थी, जो एक ऋषि के शाप से, कल्पवृक्ष के घर में, कृत युग के आधे समय तक अकेले रहती थी।

7.131.42

अद्रीन्द्रकच्छकरवीरलतालयेषु नीतं समाशतमशङ्कधिया मयान्यतन्यत्र दूरजगतीन्द्रगिरौ विराविवाल्मीकपक्षिवपुषाऽनिशमेककेन॥ ४२॥

adrīndrakacchakaravīralatālayeṣu nītaṃ samāśatamaśaṅkadhiyā mayānyatanyatra dūrajagatīndragirau virāvivālmīkapakṣivapuṣā'niśamekakena || 42 ||

In the distant mountain ranges, I was taken by a bird with the form of a cloud, with a mind full of doubts, to another place far away from the world.

दूर के पर्वत श्रृंखलाओं में, मैं एक बादल के रूप में पक्षी द्वारा, संदेह से भरे मन के साथ, दूर के एक अन्य स्थान पर ले जाया गया।

7.131.43

अन्यत्र सानुनि मया परिलम्बमानाः सच्छायचन्दनवनावलिते लतानाम्दृष्टाः स्त्रियः फलमिवावलिता विलासैभुक्ताश्च ता अपहृता अपि सिद्धपान्थैः ॥ ४३ ॥

anyatra sānuni mayā parilambamānāḥ sacchāyacandanavanāvalite latānāmdṛṣṭāḥ striyaḥ phalamivāvalitā vilāsaibhuktāśca tā apahṛtā api siddhapānthaiḥ || 43 ||

Elsewhere, I saw women embracing the shade of sandalwood trees, enjoying the fruits as if they were garlands, and they were taken away by the Siddhas.

कहीं और, मैंने चन्दन के वृक्षों की छाया में आलिंगन करती स्त्रियों को देखा, जो फलों को माला की तरह भोग रही थीं, और वे सिद्धों द्वारा ले जाई गई।

7.131.44

अन्यत्र पर्वतनितम्बकदम्बकच्छे नीतानि तापसतयोत्तमया दिनानिप्राप्यैकवस्त्वभिनिवेशविषूचिकात्तचित्तेन तान्तमतिनाऽमतिना मयान्तः ॥ ४४ ॥

anyatra parvatanitambakadambakacche nītāni tāpasatayottamayā dināniprāpyaikavastvabhiniveśaviṣūcikāttacittena tāntamatinā'matinā mayāntaḥ || 44 ||

Elsewhere, I was taken to the forest of Kadamba trees by the best of ascetics, and I spent the days there, absorbed in the single-minded devotion to the ultimate truth.

कहीं और, मैं श्रेष्ठ तपस्वी द्वारा कदम्ब वृक्षों के वन में ले जाया गया, और मैंने वहाँ दिन बिताए, परम सत्य में एकाग्र भक्ति में डूबा हुआ।

7.131.45

ब्रह्माण्डसंपूरितमन्यदस्ति जलेचराशेषदिगन्तभूतम्संदिग्धतेजोम्बरवातसत्तं जलस्थभूताकृतिमात्रभूमि ॥ ४५ ॥

brahmāṇḍasaṃpūritamanyadasti jalecarāśeṣadigantabhūtamsaṃdigdhatejombaravātasattaṃ jalasthabhūtākṛtimātrabhūmi || 45 ||

There is another world filled with the cosmic egg, inhabited by aquatic beings, extending to the ends of all directions, with a doubtful radiant sky, and a land formed only by water beings.

एक और दुनिया है जो ब्रह्माण्ड से भरी हुई है, जलचरों से आबाद है, सभी दिशाओं के अंत तक फैली हुई है, संदिग्ध चमकीले आकाश के साथ, और जल जीवों द्वारा बनी हुई भूमि।

7.131.46

एकत्र दृष्टा वनिता मयैका तस्याः शरीरे त्रिजगन्ति भान्तिप्रतिबिम्बितानीव सुदर्पणेऽन्तराकाशशैलादिदिगादिमन्ति ॥ ४६ ॥

ekatra dṛṣṭā vanitā mayaikā tasyāḥ śarīre trijaganti bhāntipratibimbitānīva sudarpaṇe'ntarākāśaśailādidigādimanti || 46 ||

I saw a woman in one place, and in her body, the three worlds appeared as if reflected in a clear mirror, along with the sky, mountains, and directions.

मैंने एक स्थान पर एक स्त्री देखी, और उसके शरीर में तीनों लोक स्पष्ट दर्पण में प्रतिबिम्बित होने के समान प्रकाशित हो रहे थे, आकाश, पर्वत और दिशाओं सहित।

7.131.47

पृष्टा मयासौ वरगात्रि कासि शरीरमेतच्च किमीदृशं ते। तयोक्तमङ्गेह चिदस्मि शुद्धा ममाङ्गमेतानि महाजगन्ति ॥ ४७ ॥

pṛṣṭā mayāsau varagātri kāsi śarīrametacca kimīdṛśaṃ te| tayoktamaṅgeha cidasmī śuddhā mamāṅgametāni mahājaganti || 47 ||

I asked her, 'O beautiful lady, who are you and what kind of body is this of yours?' She replied, 'O dear one, I am pure consciousness; these are my limbs, the great elements.'
मैंने उससे पूछा, 'हे सुंदरी, तुम कौन हो और तुम्हारा यह शरीर कैसा है?' उसने कहा, 'हे प्रिय, मैं शुद्ध चेतना हूँ; ये मेरे अंग हैं, महाभूत।'

7.131.48

यथाहमेवं स्मयदेहिकेयं सर्वं तथैवाङ्ग न चित्रमेतत्। अन्यैः स्वभावो विदितो न शुद्धो यदा न पश्यन्ति तदेत्थमङ्ग ॥ ४८ ॥

yathāhamevaṃ smayadehikeyaṃ sarvaṃ tathaivāṅga na citrametat| anyaiḥ svabhāvo vidito na śuddho yadā na paśyanti tadetthamaṅga || 48 ||

Just as I am, so is this body of mine; everything is just the same, O dear one, there is nothing strange about this. When others do not see the pure nature, then it appears like this, O dear one.
जैसे मैं हूँ, वैसे ही मेरा यह शरीर है; सब कुछ ऐसा ही है, हे प्रिय, इसमें कुछ अजीब नहीं है। जब दूसरे शुद्ध स्वभाव को नहीं देखते, तब यह ऐसा दिखाई देता है, हे प्रिय।

7.131.49

अवेदशास्त्रेण जगत्यशेषैर्भूतैः स्वदेहालयभित्तिभागात्। एतद्विधेयं न विधेयमेतद्ध्वनिः स्वतः श्रूयत एव नित्यम् ॥ ४९ ॥

avedaśāstreṇa jagatyśeṣairbhūtaiḥ svadehālayabhittibhāgāt| etadvidheyaṃ na vidheyametaddhvaniḥ svataḥ śrūyata eva nityam || 49 ||

By the scripture of the Vedas, all beings in the world are parts of one's own body. This is to be known, not to be known; sound is heard by itself always.
वेदों के शास्त्र के अनुसार, संसार के सभी प्राणी अपने शरीर के अंग हैं। यह जानना चाहिए, नहीं जानना चाहिए; ध्वनि स्वयं ही सदा सुनी जाती है।

7.131.50

ईदृक्स्वभावैव पदार्थसत्ता सा तेऽत्र यद्भित्त्यचलादयोऽपि। स्वप्नादिमायास्विव मे वदन्ति वाचं न युष्मास्वसमञ्जसं तत् ॥ ५० ॥

īdṛksvabhāvaiva padārthasattā sā te'tra yadbhittyacalādayo'pi| svapnādimāyāsviva me vadanti vācaṃ na yuṣmāsvasamañjasaṃ tat || 50 ||

Such is the nature of the reality of things; that is yours here, even if it is like the immovable wall, etc. They speak to me as if in dreams or illusions, but that speech is not appropriate for you.
ऐसी ही वस्तुओं की वास्तविकता की प्रकृति है; यह तुम्हारी है यहाँ, भले ही यह अचल दीवार जैसी हो। वे मुझसे स्वप्न या माया की तरह बात करते हैं, लेकिन वह बात तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है।

7.131.51

अस्त्रीकसंसारगतेन दृष्टं मया क्वचिद्यावदनन्यकामम्। भूतानि निर्यान्ति बहूनि भूताद्विशन्ति भूतानि बहूनि भूतम् ॥ ५१ ॥

astrīkasaṃsāragatena dṛṣṭaṃ mayā kvacidyāvadananyakāmam| bhūtāni niryānti bahūni bhūtādviśanti bhūtāni bahūni bhūtam || 51 ||

I have seen with the eye of non-attachment that beings emerge from the elements and return to the elements, without any other desire.
मैंने अनासक्ति की दृष्टि से देखा है कि प्राणी तत्वों से उत्पन्न होते हैं और तत्वों में वापस लौटते हैं, बिना किसी अन्य इच्छा के।

7.131.52

एकानि दृष्टानि मयाञ्जसानि खेऽभ्राण्यदभ्राङ्ग झणज्झणानि। वृष्ट्या समन्तान्निपतन्ति खण्डैर्भवन्ति तीक्ष्णानि जनायुधानि॥ ५२॥

ekāni dṛṣṭāni mayāñjasāni khe'bhrāṇyadabhrāṅga jhaṇajjhaṇāni | vṛṣṭyā samantānni patanti khaṇḍairbhavanti tīkṣṇāni janāyudhāni || 52 ||

I have seen some clouds in the sky that are not clouds, they are sharp weapons that fall in pieces due to rain and become deadly weapons for people.

मैंने आकाश में कुछ बादल देखे हैं जो बादल नहीं हैं, वे तीखे हथियार हैं जो बारिश के कारण टुकड़ों में गिरते हैं और लोगों के लिए घातक हथियार बन जाते हैं।

7.131.53

अन्यत्र दृष्टं गगनेन यावदिहान्धया ग्रामगृहाणि यान्ति। विशन्त्यमुत्रान्त इहाभवद्वो ग्रामः स एवान्यत एव लब्धः॥ ५३॥

anyatra dṛṣṭaṃ gaganena yāvadihaāndhayā grāmagṛhāṇi yānti | viśantyamutrānta ihābhavadvogrāmaḥ sa evānyata eva labdhaḥ || 53 ||

Elsewhere, it is seen that the sky takes away the houses of the village blindly. They enter there and here they become the same village obtained from another place.

कहीं और, यह देखा जाता है कि आकाश गाँव के घरों को अंधाधुंध ले जाता है। वे वहाँ प्रवेश करते हैं और यहाँ वे दूसरी जगह से प्राप्त उसी गाँव बन जाते हैं।

7.131.54

नरामराऽहिप्रविभागमुक्तान्यन्यत्र भूतानि समानि सन्ति। खादेव सर्वाणि समुद्भवन्ति तत्रैव काले न लयं प्रयान्ति॥ ५४॥

narāmarā'hipravibhāgamuktānyanyatra bhūtāni samāni santi | khādeva sarvāṇi samudbhavanti tatraiva kāle na layaṃ prayānti || 54 ||

Elsewhere, it is said that beings like humans, gods, and snakes are the same. All beings originate from the sky and do not dissolve there at any time.

कहीं और, यह कहा जाता है कि मनुष्य, देवता और साँप जैसे प्राणी समान हैं। सभी प्राणी आकाश से उत्पन्न होते हैं और किसी भी समय वहाँ विलीन नहीं होते।

7.131.55

अचन्द्रतारार्कमनन्धकारं स्वयंप्रकाशाखिलभूतजातम्। स्मरामि किंचिज्जगदेककान्तं ज्वालोदराभं दिनरात्रिमुक्तम्॥ ५५॥

acandratārārkamanandhakāraṃ svayaṃprakāśākhilabhūtajātam | smarāmi kiṃcijjagadekakāntaṃ jvālodarābhaṃ dinarātrimuktam || 55 ||

I remember a unique world that is devoid of the moon, stars, and sun, and is self-luminous. It is the source of all beings and is free from day and night, appearing like a blazing fire.

मैं एक ऐसी दुनिया याद करता हूँ जो चंद्रमा, तारे और सूर्य से रहित है, और स्वयं प्रकाशमान है। यह सभी प्राणियों का स्रोत है और दिन और रात से मुक्त है, जलते हुए अग्नि की तरह दिखाई देती है।

7.131.56

अपूर्वदैत्याहिनरामरादिभूतान्यपूर्वद्रुमपत्तनानि । अपूर्वलोकान्तरकार्यवन्ति स्मराम्यनन्तानि महाजगन्ति ॥ ५६ ॥

apūrvadaityāhinarāmarādibhūtānyapūrvadrumapattanāni | apūrvalokāntarakāryavanti smarāmyanantāni mahājaganti || 56 ||

I remember the infinite great worlds that have unique demons, snakes, humans, gods, and other beings, unique trees and cities, and unique activities in other worlds.

मैं उन अनंत महान दुनियाओं को याद करता हूँ जिनमें अनोखे दैत्य, साँप, मनुष्य, देवता और अन्य प्राणी हैं, अनोखे पेड़ और शहर हैं, और अन्य दुनियाओं में अनोखे कार्य हैं।

7.131.57

दिगस्ति सा नो विहृतं न यस्यां न सोऽस्ति देशः खलु यो न दृष्टः । यन्नानुभूतं न तदस्ति कार्यमन्याश्रयं नापरमस्ति मर्शात् ॥ ५७ ॥

digasti sā no vihṛtaṃ na yasyāṃ na so'sti deśaḥ khalu yo na dṛṣṭaḥ | yannānubhūtaṃ na tadasti kāryamanyāśrayaṃ nāparamasti marśāt || 57 ||

There is no direction that is not pervaded by Her, nor is there any place that is not seen by Her. There is no action that is not experienced by Her, nor is there any other support besides Her.

उसके द्वारा जो दिशा नहीं व्याप्त है, वह नहीं है, और जो स्थान नहीं देखा गया है, वह भी नहीं है। जो कार्य नहीं अनुभव किया गया है, वह नहीं है, और उसके अलावा कोई दूसरा आश्रय नहीं है।

7.131.58

क्षीरोदकभ्रमितमन्दररत्नशृङ्गधाराग्रनिर्दलनजातझणज्झणानाम् । एकत्र संयुतमुपेन्द्रभुजाङ्गदानां शब्दं स्मरामि घनगर्जितशङ्कितेन ॥ ५८ ॥

kṣīroda-kabhramitamandararatnaśṛṅgadhārāgranirdalanajātajhaṇajjhaṇānām | ekatra saṃyutamupendrabhujāṅgadānāṃ śabdaṃ smarāmi ghanagarjitaśaṅkitena || 58 ||

I remember the sound of the jingling anklets of the goddesses, which were shaken by the force of the waterfalls from the jeweled peaks of Mount Mandara, churned by the ocean of milk, and the sound of the thunderous roar of Indra's arm ornaments gathered together.

मैं उस ध्वनि को याद करता हूँ जो दूध के समुद्र से मंथित मंदराचल की रत्नमय चोटियों से गिरने वाले झरनों की शक्ति से हिली देवियों के पैरों की पायलों की झंकार और इंद्र के भुजाओं के आभूषणों की गर्जना की ध्वनि को एक साथ याद करता हूँ।

Chapter 132

7.132.1

भास उवाच । मन्दरे मृदुमन्दारमन्दिरे मन्दराभिधाम् । आलिंग्याऽप्सरसं सुप्तं सरित्तृणमिवानयत् ॥ १ ॥

bhāsa uvāca | mandare mṛdumandāramandire mandarābhidhām | āliṅgyā'psarasaṃ suptaṃ sarittṛṇamivānayat ||1||

Bhasa said: In the soft, beautiful mansion on Mount Mandara, he brought the sleeping Apsara, as if she were a river reed.

भास ने कहा: मन्दर पर्वत के कोमल, सुंदर महल में, उसने सोई हुई अप्सरा को लाया, जैसे वह नदी की घास हो।

7.132.2

मामथासौ मया पृष्टा समाश्वास्य जलाकुला । बाले किमिदमित्युक्तं तया चपलनेत्रया ॥ २ ॥

māmathāsau mayā pṛṣṭā samāśvāsya jalākulā | bāle kimidamityuktaṃ tayā capalanetrayā ||2||

Then, she, being comforted by me, asked with her restless eyes, 'Child, what is this?' while she was overwhelmed with water.

तब, मैंने उसे आश्वस्त किया, और उसने अपने चंचल नेत्रों से पूछा, 'बच्चे, यह क्या है?' जब वह पानी से भरी थी।

7.132.3

इह चन्द्रोदयेष्वेताश्चन्द्रकान्तकटप्रजाः । नद्यो माद्यन्ति वनिताः सेष्टा इव निशागमे ॥ ३ ॥

iha candrodayeṣvetāścandrakāntakaṭaprajāḥ | nadyo mādyanti vanitāḥ seṣṭā iva niśāgame ||3||

Here, during the moonrise, the rivers, which are the daughters of the moonstone, intoxicate like women at the onset of night.

यहां, चंद्रोदय के समय, जो चंद्रकांत की पुत्रियां हैं, नदियां रात के आगमन पर मदहोश महिलाओं की तरह हो जाती हैं।

7.132.4

त्वत्संगमरसावेशवशात्तन्ननु विस्मृतम् । इत्युक्त्वा मामुपादाय सोड्डीना विहगीव खम् ॥ ४ ॥

tvatsaṃgamarasāveśavaśāttannanu vismṛtam | ityuktvā māmupādāya soḍḍīnā vihagīva kham ||4||

Saying, 'Is it not forgotten due to the intoxication of the joy of union with you?' she took me and flew into the sky like a bird.

कहते हुए, 'तुम्हारे साथ मिलन की खुशी के नशे में क्या यह भूल नहीं गया?' उसने मुझे लेकर पक्षी की तरह आकाश में उड़ गई।

7.132.5

भृङ्गं श्रृङ्गवतः श्रृङ्गे गङ्गाकनकपङ्कजे । अहमासं समाः सप्त तत्क्लिन्नोऽकर्दमाप्लुते ॥ ५ ॥

bhṛṅgaṃ śrṛṅgavataḥ śrṛṅge gaṅgākanakapaṅkaje | ahamaṃ samāḥ sapta tatklinno'kardamāplute ||5||

I was a bee on the golden lotus peak of the mountain, for seven years, wet with mud.

मैं पर्वत के सुनहरे कमल के शिखर पर एक भौंरा था, सात वर्षों तक, मिट्टी से भीगा हुआ।

7.132.6

अन्यन्मया जगद्दृष्टमृक्षचक्रविवर्जितम्। गर्भगर्भस्थैकजातिस्वप्रकाशजनावृतम्॥ ६॥

anyanmayā jagaddṛṣṭamṛkṣacakravivarjitam | garbhagarbhasthaikajātisvaprakāśajanāvṛtam || 6 ||

I saw a different world, devoid of the constellations and the zodiac, filled with beings of one kind, self-luminous, and enveloped by their own light.

मैंने एक अलग जगत देखा, जो नक्षत्रों और राशिचक्र से रहित था, एक ही प्रकार के प्राणियों से भरा हुआ था, स्वयंप्रकाशित और अपने ही प्रकाश से घिरा हुआ था।

7.132.7

न दिग्विभागो न दिनानि यत्र न चैव शास्त्राणि न वेदवादाः। न चैव दैत्यादिसुरादिभेदो जगन्मया तादृगथात्मदीप्तम्॥ ७॥

na digvibhāgo na dināni yatra na caiva śāstrāṇi na vedavādāḥ | na caiva daityādisurādibhedo jagannmayā tādṛgathātmadīptam || 7 ||

There is no division of directions, no days, no scriptures, no Vedic discourses, no distinction between demons and gods; such is the world I saw, illuminated by the self.

वहाँ कोई दिशाओं का विभाजन नहीं है, न दिन हैं, न शास्त्र हैं, न वेदों के वाद-विवाद हैं, न दैत्यों और देवताओं का भेद है; ऐसा ही जगत मैंने देखा, जो स्वयं से प्रकाशित है।

7.132.8

विद्याधरामरविहारविमानभूमावभ्रंलिहाचलनितम्बकदम्बकच्छे। आसं समाः समरसोऽमरसोमनामा सप्तान्यसप्त ससमुद्रतटे तपस्वी॥ ८॥

vidyādharāmaravihāravimānabhūmāvabhraṃlihācalanitambakadambakacche | āsaṃ samāḥ samaraso'marasomanāmā saptānyasapta sasamudratate tapasvī || 8 ||

I spent many years on the celestial planes where the Vidyadharas and gods enjoy, in the abodes of the clouds and mountains, in the company of the gods, for seven times seven years on the seashore as an ascetic.

मैंने विद्याधरों और देवताओं के आनंद लेने वाले दिव्य स्थानों पर बहुत साल बिताए, बादलों और पर्वतों के निवास स्थानों में, देवताओं के साथ, समुद्र तट पर सात गुना सात वर्षों तक तपस्वी के रूप में।

7.132.9

पवनवहनसंनिवेशनानासुहयपयोधरदेहकैरनेकैः। गजहरिणमृगेन्द्रवृक्षवल्लीमृगनगपन्नगपक्षिभिः परीतम्॥ ९॥

pavanavahanasanniveśanānāsuhayapayodharadehakairanekaiḥ |
gajahariṇamṛgendravṛkṣavallīmṛganagapannagapakṣibhiḥ parītam || 9 ||

The place is surrounded by various beings with bodies of wind, horses, water-bearing clouds, elephants, deer, lions, trees, creepers, animals, serpents, and birds.

यह स्थान वायु, घोड़ों, जलवाहक बादलों, हाथियों, हिरणों, सिंहों, पेड़ों, लताओं, जानवरों, सर्पों और पक्षियों के शरीर वाले विभिन्न प्राणियों से घिरा हुआ है।

7.132.10

गगनमवनितः समेत्य वह्नेर्वरविभवेन जगत्यनन्तकोशम्। क्वचिदहमभितो दिदृक्षुरग्रे सृत उरगाशनवद्बलादविद्याम्॥ १०॥

gaganamavanitaḥ sametya vahnervaravibhavena jagatyānantakośam | kvacidahamabhito didṛkṣuragre sṛta uragāśanavadvālādavidyām || 10 ||

The sky, having been humbled, united with the splendor of fire, creating an infinite treasure in the world. Sometimes, I, desiring to see, went forth like a serpent seeking knowledge.

आकाश, जो विनम्र हो गया था, अग्नि के तेज से मिलकर, जगत में एक अनंत खजाना बनाता है। कभी-कभी, मैं, देखने की इच्छा से, ज्ञान खोजने वाले सर्प की तरह आगे बढ़ा।

7.132.11

क्वचिदहं जगतः परिनिर्गतः पतित एकमहार्णवविस्तृते। नभसि तत्र निवासिनिभे सितः समयमन्वभवं पतनं तथा॥ ११॥

kvacidahaṃ jagataḥ parinirgataḥ patita ekamahārṇavavistṛte | nabhasi tatra nivāsinibhe sitaḥ samayamanvabhavaṃ patanaṃ tathā || 11 ||

Sometimes I have left the world and fallen into the vast ocean of the sky. There, I became like a resident of the sky, white, and experienced the fall according to the time.

कभी-कभी मैं जगत से निकलकर एक विशाल महासागर में गिर पड़ा | वहाँ मैं आकाश का निवासी सा श्वेत हो गया, और समय के अनुसार पतन का अनुभव किया |

7.132.12

आकाशकोशपतनानुभवैकवृत्तेः श्रान्तस्य मे पदमकार्यथ निद्रयान्तः। तादृक्सुषुप्तवपुषाथ मयोपलब्धं स्वप्नात्मजाग्रति तदात्मनि तत्र विश्वम्॥ १२॥

ākāśakośapatanaanubhavaikavṛtteḥ śrāntasya me padamakāryatha nidrayāntaḥ | tādṛksuṣuptavapuṣātha mayopalabdhaṃ svapnātmajāgrati tadātmani tatra viśvam || 12 ||

Due to the single experience of falling from the sky-like sheath, I became tired and my position became useless due to sleep. Then, with such a sleeping body, I perceived the world in the dream-like awakened state within myself.

आकाश के समान कोश से गिरने के एकमात्र अनुभव से मैं थक गया और नींद के कारण मेरा स्थान व्यर्थ हो गया | तब, ऐसे सोए हुए शरीर के साथ, मैंने स्वप्न जैसी जागृत अवस्था में अपने आत्मा में विश्व को अनुभव किया |

7.132.13

भूयो दिगन्तभुवनामरमन्दराद्रिसंसारचञ्चलतया लतयेव पक्षी। अक्षीणवातबलया परिचाल्यमानस्तन्मासु तासु पतितो हि जगद्गुहासु॥ १३॥

bhūyo digantabhuvanāmaramandarādrisaṃsāracañcalatayā latayeva pakṣī | akṣīṇavātabalayā paricālyamānastanmāsu tāsu patito hi jagadguhāsu || 13 ||

Again, like a bird swaying on a creeper due to the restlessness of the worldly cycle, driven by the unceasing wind, I fell into the caves of the world in those months.

फिर से, संसार की चंचलता के कारण लता पर झूलते हुए पक्षी की तरह, अक्षुण्ण वायु बल से चलायमान, मैं उन महीनों में जगत की गुहाओं में गिर पड़ा |

7.132.14

विषयाशा दृशो यावत्तावद्यातः क्षणादहम्। पुनस्तथैव पश्यंस्तु दृश्यं यातः पुनःपुनः ॥ १४ ॥

viṣayāśā dṛśo yāvattāvadyātaḥ kṣaṇādaham | punastathaiva paśyantu dṛśyaṃ yātaḥ punaḥpunaḥ || 14 ||

As long as there is a desire for objects, I go there in an instant. Again, seeing the visible in the same way, I go there repeatedly.

जब तक विषयों की आशा है, मैं क्षणभर में वहाँ जाता हूँ | फिर से, उसी तरह दृश्य को देखते हुए, मैं बार-बार वहाँ जाता हूँ |

7.132.15

इति दृश्यमदृश्यं च गम्यं चागम्यमेव च। वेगाल्लङ्घयतो देशं मम वर्षगणा गताः ॥ १५ ॥

iti dṛśyamadṛśyaṃ ca gamyaṃ cāgamyameva ca | vegāllaṅghayato deśaṃ mama varṣagaṇā gatāḥ || 15 ||

Thus, the visible and the invisible, the reachable and the unreachable, passing through the regions with speed, my years have gone by.

इस प्रकार, दृश्य और अदृश्य, गम्य और अगम्य, वेग से क्षेत्रों को पार करते हुए, मेरे वर्षगण बीत गए |

7.132.16

दृश्याख्याया अविद्याया न त्वन्तं प्राप्तवानहम्। मिथ्यैव हृदि रूढायाः पिशाच्या इव बालकः ॥ १६ ॥

dṛśyākhyāyā avidyāyā na tvantaṃ prāptavān aham | mithyaiva hṛdi rūḍhāyāḥ piśācyā iva bālakaḥ || 16 ||

I have not reached the end of ignorance, which is known as the perceptible world. Like a child possessed by a ghost, it is firmly rooted in the heart as false.

मैंने दृश्य जगत की अज्ञानता का अंत नहीं पाया है। ऐसे ही जैसे एक बच्चा भूत से प्रभावित होता है, यह हृदय में झूठे ढंग से जड़ पकड़ लेता है।

7.132.17

नेदं नेदं सदित्येव विचारानुभवे स्थितम्। तथापीदमिदं चेति दुर्दृष्टिर्न निवर्तते ॥ १७ ॥

nedaṃ nedaṃ sadityeva vicārānubhave sthitam | tathāpīdamidaṃ ceti durdṛṣṭirna nivartate || 17 ||

This is not real, this is not real, it is only the truth that is established in thought and experience. Yet, this wrong perception does not cease.

यह वास्तविक नहीं है, यह वास्तविक नहीं है, यह केवल सत्य है जो विचार और अनुभव में स्थापित है। फिर भी, यह गलत दृष्टिकोण समाप्त नहीं होता।

7.132.18

प्रतिक्षणं सुखैर्दुःखैर्देशकालैः समागमैः। सरिद्वारिवदालोला नवमायान्ति यान्ति च ॥ १८ ॥

pratikṣaṇaṃ sukhairduḥkhairdeśakālaiḥ samāgamaiḥ | saridvārivadālolā navamāyānti yānti ca || 18 ||

Every moment, with pleasures and pains, with places and times, like the waves of a river, they come and go.

प्रति क्षण, सुखों और दुःखों के साथ, स्थानों और समयों के साथ, नदी की लहरों की तरह, वे आते और जाते हैं।

7.132.19

तालीतमालबकुलातुलतुङ्गशृङ्गमुन्नादवातजवमेकमहं स्मरामि । सूर्यादिभिर्विरहितं प्रकटं स्वकान्त्या सस्थावराद्रितटजङ्गममेव विश्वम् ॥ १९ ॥

tālītamālabakulātulatuṅgaśṛṅgamunnādavātajavamekamahaṃ smarāmi | sūryādibhirvirahitaṃ prakaṭaṃ svakāntyā sasthāvarādritaṭajaṅgamameva viśvam || 19 ||

I remember a single, mighty wind that blew with the fragrance of tālī, tamāla, and bakula flowers, and the lofty peaks. The world, including the mountains and moving beings, was manifest in its own radiance, devoid of the sun and other luminaries.

मैं एक ऐसी शक्तिशाली हवा को याद करता हूँ जो ताली, तमाल और बकुल की सुगंध लेकर चलती थी, और ऊँची चोटियों के साथ। सूर्य और अन्य प्रकाश स्रोतों से रहित, संसार, जिसमें पर्वत और चल प्राणी शामिल हैं, अपनी ही चमक में प्रकट था।

7.132.20

यदेतदेकान्तविहारहारि स्वच्छन्दमेकामितमस्तशङ्कम् । क्वचिन्मया चारुजगत्सु दृष्टं तुल्या न तस्यामरराजलक्ष्मीः ॥ २० ॥

yadetadekāntavihārahāri svacchandamekāmitamastaśaṅkam | kvacinmayā cārujagatsu dṛṣṭaṃ tulyā na tasyāmararājalakṣmīḥ || 20 ||

That which is the delight of solitude, freely desired, without any doubt, has been seen by me in the beautiful world. The splendor of the king of the gods is not equal to it.

जो एकांत का आनंद है, स्वेच्छा से चाहा गया, बिना किसी संदेह के, उसे मैंने सुंदर संसार में देखा है। देवराज की शोभा उसके समान नहीं है।

Chapter 133

7.133.1

विपश्चिदुवाच । कस्मिंश्चिदन्यत्र जगत्यपूर्वे दृष्टं मयेदं शृणु किं विचित्रम् । महाघवृत्तान्तदशासमानमविद्ययान्धेन बलात्कृतं यत् ॥ १ ॥

vipaściduvāca | kasmiṃścidanyatra jagatyapūrve dṛṣṭaṃ mayedaṃ śṛṇu kiṃ vicitram | mahāghavṛttāntadaśāsamānamavidyayāndhena balātkṛtaṃ yat || 1 ||

Vipashchit said: Listen to this strange tale I witnessed in a unique world elsewhere, a tale of great sin, told by one blinded by ignorance and forced to act.

विपश्चित ने कहा: सुनो, मैंने एक अनोखे जगत में एक अजीब कहानी देखी, जो अज्ञान से अंधे होकर जबरन की गई थी, और जो महान पाप की कथा है।

7.133.2

अस्ति क्वचित्खे भवतामगम्ये जगज्ज्वलद्दीप्तिविचित्रसर्गः । एतादृगप्यम्बरतस्तदन्यत् स्वाप्नं पुरं जाग्रति चेतसीव ॥ २ ॥

asti kvacitkhe bhavatāmagamye jagajjvaladdīptivicitrasargaḥ | etādṛgapyambaratastadanyat svāpnaṃ puraṃ jāgrati cetasīva || 2 ||

There exists in the unreachable sky a world with brilliant, radiant, and varied creation. It is like a dream city, awake in consciousness, and similar to the sky in its vastness.

अपहरण करने योग्य आकाश में एक ऐसा जगत है जो चमकदार, प्रकाशमान और विविध सृष्टि से भरा हुआ है। यह एक सपने की तरह नगर है, जो चेतना में जाग्रत है, और आकाश की तरह विशाल है।

7.133.3

तस्मिन्मया विहरता हृदयस्थमर्थमन्वेष्टुमक्षि निहितं ककुभां मुखेषु । पश्यामि यावदचलप्रतिमा धरायां छायालिजालमलिना परिबंभ्रमीति ॥ ३ ॥

tasminmayā viharatā hṛdayasthamarthamanveṣṭumakṣi nihitaṃ kakubhāṃ mukheṣu | paśyāmi yāvadacalapratimā dharāyāṃ chāyālijālamalinā paribambhramīti || 3 ||

While I was wandering there, seeking the truth hidden in my heart, I saw a shadowy, dirty, and wavering image of an immovable statue on the earth.

जब मैं वहां विचर रहा था, अपने हृदय में छिपे सत्य को खोजते हुए, मैंने पृथ्वी पर एक अचल मूर्ति की छायामय, गंदी और कांपती प्रतिमा देखी।

7.133.4

आश्चर्यमात्रमुचितं किमिदं निमेषादित्यक्षि वै जगति यावदहं त्यजामि । खात्तावदद्रिमतुलं पुरुषाकृतिं द्रागावर्तवृत्तिभिरपश्यमहं पतन्तम् ॥ ४ ॥

āścaryamātramucitaṃ kimidaṃ nimeṣādityakṣi vai jagati yāvadahaṃ tyajāmi | khāttāvadadrimatulaṃ puruṣākṛtiṃ drāgāvartavṛttibhirapaśyamahaṃ patantam || 4 ||

It is fitting to be amazed. What is this? As soon as I blink, I see in the world a man with a mountain-like form, falling swiftly in a whirlpool.

आश्चर्य करना उचित है। यह क्या है? जैसे ही मैं पलक झपकाता हूं, मैं जगत में एक पर्वत के समान आकार वाले पुरुष को देखता हूं, जो एक भंवर में तेजी से गिर रहा है।

7.133.5

कः स्यादयं गिरिगुरुः पुरुषो विराड्वा पर्यस्तपर्वतवदाशु पतच्छरीरः । आकाशपूरकवपुः परमाम्बरोऽपि यो नैव भाति पिहिताखिलवासरश्रीः ॥ ५ ॥

kaḥ syādayaṃ giriguruḥ puruṣo virāḍvā paryastaparvatavadāśu pataccharīraḥ | ākāśapūrakavapuḥ paramāmbaro'pi yo naiva bhāti pihitākhilavāsaraśrīḥ || 5 ||

Who is this mountain-like man, perhaps Virat, whose body falls swiftly like a thrown mountain? Though he fills the sky and is the supreme ether, he does not shine, his glory concealed.

यह पर्वत के समान पुरुष कौन है, शायद विराट, जिसका शरीर फेंके गए पर्वत की तरह तेजी से गिरता है? यद्यपि वह आकाश को भरता है और परम आकाश है, वह चमकता नहीं है, उसकी शोभा छिपी हुई है।

7.133.6

एवंविधां हृदि मनाक्कलयामि यावत्तावत्पपात सहसा नभसो विवस्वान् ।

कल्पान्तवातपरिवृत्तपितामहाण्डपृष्ठावपातघनघोषजुषा जवेन ॥ ६ ॥

evaṃvidhāṃ hṛdi manākkalayāmi yāvattāvatpapāta sahasā nabhaso vivasvān |
kalpāntavātaparivṛttapitāmahāṇḍapṛṣṭhāvapātaghanaghoṣajuṣā javena || 6 ||

While I was contemplating such thoughts in my heart, suddenly the sun fell from the sky with a tremendous noise, as if the world was coming to an end.

जब मैं ऐसे विचार अपने हृदय में सोच रहा था, तभी अचानक सूर्य आकाश से गिरा, जैसे कि पृथ्वी का अंत हो रहा हो।

7.133.7

तस्मिन्पतति भीमात्मन्यपारावारदेहिनि । सप्तद्वीपां वसुमतीं परिपूरयति क्षणात् ॥ ७ ॥

tasminpatati bhīmātmanyapārāvāradehinī | saptadvīpāṃ vasumatīṃ paripūrayati kṣaṇāt || 7 ||

As that terrifying being fell, it instantly filled the earth, which consists of seven continents, with its immense body.

जब वह भयानक प्राणी गिरा, तो उसने अपने विशाल शरीर से सात द्वीपों वाली पृथ्वी को तुरंत भर दिया।

7.133.8

स्वात्मनो नाशमाशंक्य सद्वीपभुवनैः सह । अवश्यभाविपार्श्वस्थमहमग्निमथाविशम् ॥ ८ ॥

svātmano nāśamāśaṅkya sadvīpabhuvanaiḥ saha | avaśyabhāvipārśvasthamahamagnimathāviśam || 8 ||

Fearing the destruction of myself along with the earth and its continents, I then entered the inevitable fire that was beside me.

अपने विनाश की आशंका से, पृथ्वी और उसके द्वीपों के साथ, मैंने फिर अपने पास मौजूद अनिवार्य अग्नि में प्रवेश किया।

7.133.9

स जातवेदा भगवान्जन्मान्तरशतार्चितः । मा भैषीरिति देहेन मामुवाचेन्दुशीतलः ॥ ९ ॥

sa jātavedā bhagavānjanmāntaraśatārcitaḥ | mā bhaiṣīriti dehena māmuvācenduśītalaḥ || 9 ||

That fire, known as Jataveda, worshipped in hundreds of births, spoke to me with a body as cool as the moon, saying, 'Do not be afraid.'

वह अग्नि, जिसे जातवेद के नाम से जाना जाता है, सैकड़ों जन्मों में पूजी जाती है, चंद्रमा की तरह ठंडी देह से मुझसे बोली, 'डरो मत।'

7.133.10

जय देव त्वमस्माकं प्रतिजन्म परायणम्। अकाल एव कल्पान्तो जातोऽतः पाहि मां प्रभो ॥ १० ॥

jaya deva tvamasamākaṃ pratijanma parāyaṇam | akāla eva kalpānto jāto'taḥ pāhi māṃ prabho || 10 ||

Victory to you, O God, you are our refuge in every birth. The end of the world has come untimely, therefore protect me, O Lord.

विजयी भगवान्, आप हमारे शरणस्थान हैं हर जन्म में। समय से पहले ही प्रलय आ गया है, इसलिए मेरी रक्षा करो, हे प्रभु।

7.133.11

इत्युक्तेनाग्निना प्रोक्तं मा भैषीरिति तत्पुनः। उत्तिष्ठागच्छ गच्छावो मल्लोकमिति चानघ ॥ ११ ॥

ityukthenāgninā proktaṃ mā bhaiṣīriti tatpunaḥ | uttiṣṭhāgaccha gacchāvo mallokamiti cānagha || 11 ||

Having said this, the fire said, 'Do not be afraid.' Then again, he said, 'Arise, let us go to the world of the ancestors, O sinless one.'

ऐसा कहकर अग्नि ने कहा, 'डरो मत।' फिर उसने कहा, 'उठो, चलो पितृलोक चलें, हे निष्पाप।'

7.133.12

इत्युक्त्वा शुकपृष्ठेऽसावारोप्य भगवांस्ततः। देहैकदेशे तत्पाति भूतं दग्ध्वा नभः प्लुतः ॥ १२ ॥

ityuktvā śukapṛṣṭhe'sāvāropya bhagavāṃstataḥ | dehaikadeśe tatpāti bhūtaṃ dagdhvā nabhaḥ plutaḥ || 12 ||

Having said this, the Lord placed him on the back of a parrot and then, burning the body in one place, he flew into the sky.

ऐसा कहकर, भगवान् ने उसे एक तोते की पीठ पर रखा और फिर, शरीर को एक जगह जलाकर, वह आकाश में उड़ गया।

7.133.13

अनन्तरं नभः प्राप्य दृष्टः कष्टाकृतिर्मया। स तादृग्भूतसंपातमहोत्पातो भयप्रदः ॥ १३ ॥

anantaraṃ nabhaḥ prāpya dṛṣṭaḥ kaṣṭākṛtirmayā | sa tādṛgbhūtasaṃpātamahotpāto bhayapradaḥ || 13 ||

Immediately after reaching the sky, I saw a terrifying form. That form, falling from the sky, was a great calamity, causing fear.

तुरंत आकाश पहुंचकर, मैंने एक भयानक रूप देखा। वह रूप, आकाश से गिरकर, एक महान आपत्ति था, जो भय पैदा करता था।

7.133.14

तस्मिन्जवेन पतिते वसुधा चचाल साम्भोधिशैलवनपत्तनजङ्गलौघा। चक्रे भृगुद्वयमयानजलस्रवन्ती भीमाकृतीन्व्यधुरदेहविभेदगर्तान् ॥ १४ ॥

tasminjavena patite vasudhā cacāla sāmbhodhiśailavanapattanajaṅgalaughā | cakre bhṛgudvayamayānajalasravantī bhīmākṛtīnvyadhuradehavibhedagartān || 14 ||

When it fell with speed, the earth trembled, along with the oceans, mountains, forests, cities, and jungles. It created a terrifying sight with the falling of the two Bhrigu sages, the chariots, and the flowing waters, causing deep fissures in the earth.

जब वह तेजी से गिरा, तो पृथ्वी कांप उठी, समुद्रों, पर्वतों, वनों, नगरों और जंगलों के साथ। इसने दो भृगु ऋषियों, रथों और बहते जल के गिरने से एक भयानक दृश्य बनाया, जिससे पृथ्वी में गहरी दरारें पड़ गईं।

7.133.15

उर्वी ररास ककुबुत्तरतो ररास पूर्वा ररास विररास च दक्षिणा दिक्। द्यौराररास विररास सशैलभूतं सर्वं जगत्प्रलयसंभ्रमभीतमुच्चैः ॥ १५ ॥

urvī rarāsa kakubuttarato rarāsa pūrvā rarāsa virarāsa ca dakṣiṇā dik | dyaurārarāsa virarāsa saśailabhūtaṃ sarvaṃ jagatpralayasaṃbhramabhītamuccaiḥ || 15 ||

The earth cried out, the west cried out, the east cried out, the south cried out loudly. The sky cried out, along with the mountains, and the entire world trembled in fear of the impending destruction.

पृथ्वी चीखी, पश्चिम चीखा, पूर्व चीखा, दक्षिण चीखा। आकाश चीखा, पर्वतों के साथ, और पूरा संसार आने वाले विनाश से भयभीत होकर कांप उठा।

7.133.16

उर्वी ररास धरणे सविरावरंहःसंरम्भतर्जितसमस्तदिगन्तरासा। व्योमापि घुंघुममलङ्घ्यमलं चकार नागारिवृन्दभयविद्रवणप्रचण्डम् ॥ १६ ॥

urvī rarāsa dharaṇe savirāvaraṃhaḥsaṃrambhatarjitasamastadigantarāsā | vyomāpi ghuṃghumamalaṅghyamalaṃ cakāra nāgārivṛndabhayavidravaṇapra caṇḍam || 16 ||

The earth trembled with a deep roar, and the entire sky resounded with a terrifying sound that caused the elephants to flee in fear.

पृथ्वी गहरी गर्जना के साथ काँप उठी, और पूरा आकाश एक भयानक आवाज से गूँज उठा जिससे हाथी डर कर भाग गए।

7.133.17

निर्घातशब्द उदभूदभितो भयाय भीमाय भूधरदरीदृढदारणोत्थः। उत्पातभीमजवजालयुगान्तवातसंरब्धकल्पघनघोषवितीर्णतर्जः ॥ १७ ॥

nirghātaśabda udabhūdabhito bhayāya bhīmāya bhūdhara darīdṛḍhadāraṇotthaḥ | utpātabhīmajavajālayugāntavātasaṃrabdhakalpghanaghōṣavitīrṇatarjaḥ || 17 ||

A thunderous sound arose, causing great fear, originating from the firm holding of the earth's mountains. The sound was like the roar of the end of the world, filled with the clamor of calamities and the wind of destruction.

एक गर्जना की आवाज उठी, जिससे बहुत डर पैदा हुआ, जो पृथ्वी के पर्वतों के मजबूत पकड़ने से उत्पन्न हुई थी। यह आवाज प्रलय की गर्जना की तरह थी, जो विपत्तियों और विनाश की हवा से भरी हुई थी।

7.133.18

तस्मिञ्जवेन पतिते वसुधा ररास सारावदिंमुखतया शतवेधमागात्। तत्रास्फुटन्कुलगिरीन्द्रमहातटानि पातालदेशमविशन्हिमवच्छिरांसि ॥ १८ ॥

tasmiñjavena patite vasudhā rarāsa sārāvadiṃmukhatayā śatavedhamāgāt | tatrāsphuṭankulagirīndramahātaṭāni pātāladeśamaviśanhimava cchirāṃsi || 18 ||

When it fell with speed, the earth trembled, and the great mountains crumbled, their peaks sinking into the underworld.

जब यह तेजी से गिरा, तो पृथ्वी काँप उठी, और महान पर्वत टूट गए, उनकी चोटियाँ पाताल में डूब गईं।

7.133.19

आसीत्तत्पतनं तस्य मेरुशैलशिलाकृतेः । दलनं शैलशृङ्गाणां विदारणकरं भुवः ॥ १९ ॥

āsīttatpatanaṃ tasya meruśailaśilākṛteḥ | dala naṃ śailaśṛṅgāṇāṃ vidāraṇakaraṃ bhuvaḥ || 19 ||

That fall was like the fall of Mount Meru, causing the destruction of mountain peaks and the splitting of the earth.

वह गिरना मेरु पर्वत के गिरने जैसा था, जिससे पर्वत की चोटियाँ नष्ट हो गईं और पृथ्वी फट गई।

7.133.20

क्षोभणं जलराशीनामद्रीणां भूतलार्पणम् । पीडनं सर्वभूतानां क्रीडनं प्रलयार्थिनाम् ॥ २० ॥

kṣobhaṇaṃ jalarāśīnāmadrīṇāṃ bhūtalārpaṇam | pīḍanaṃ sarvabhūtānāṃ krīḍanaṃ pralayārthinām || 20 ||

It caused the disturbance of the oceans, the uprooting of mountains, the suffering of all beings, and the play of those seeking destruction.

इससे समुद्रों में उथल-पुथल हुई, पर्वतों का उखाड़ हुआ, सभी प्राणियों को पीड़ा हुई, और विनाश चाहने वालों का खेल हुआ।

7.133.21

पातनं भूतले भानोः स्थगनं द्वीपपद्धतेः । चूर्णीकरणमद्रीणां दलनं मण्डलावनेः ॥ २१ ॥

pātanaṃ bhūtale bhānoḥ sthaganaṃ dvīpapaddhateḥ | cūrṇīkaraṇamadrīṇāṃ dalanaṃ maṇḍalāvaneḥ || 21 ||

The fall of the sun to the earth, the obstruction of the island-continents, the pulverization of the mountains, and the destruction of the Mandala forest.

सूर्य का धरती पर गिरना, द्वीप-समूहों का अवरोधन, पर्वतों का चूर्ण होना, और मण्डल वन का विनाश।

7.133.22

द्वितीयमिव भूपीठं ब्रह्माण्डार्धमिवापरम् । पतितं खमिवाकृत्या तदपश्यन्नभश्चराः ॥ २२ ॥

dvitīyamiva bhūpīṭhaṃ brahmāṇḍārdhamivāparam | patitaṃ khamivākṛtyā tadapaśyannabhaścarāḥ || 22 ||

It appeared as if the earth was a second throne, half of the universe had fallen, and the sky itself had collapsed. The celestial beings witnessed this.

ऐसा लगा मानो धरती दूसरा सिंहासन हो, ब्रह्मांड का आधा हिस्सा गिर गया हो, और आकाश खुद ही टूट गया हो। देवताओं ने यह देखा।

7.133.23

अथ पश्याम्यहं यावदसौ मांसमयोऽचलः । न माति सप्तद्वीपायां भुवि तस्याङ्गमेककम् ॥ २३ ॥

atha paśyāmyahaṃ yāvadasau māṃsamayo'calaḥ | na māti saptadvīpāyāṃ bhuvi tasyāṅgamekakam || 23 ||

Then I saw that the mountain made of flesh did not extend to the seven-island earth, not even a single part of its body.

तब मैंने देखा कि मांस का बना हुआ वह पर्वत सात द्वीपों वाली धरती तक नहीं फैला था, उसके शरीर का एक भी अंग नहीं था।

7.133.24

तमालोक्य मया देवः प्रसादे समवस्थितः । संपृष्टो भगवान्वह्निः प्रभो किमिदमित्यथ ॥ २४ ॥

tamālokya mayā devaḥ prasāde samavasthitaḥ | saṃpṛṣṭo bhagavānvahniḥ prabho kimidamityatha || 24 ||

Seeing him, the god remained calm in his grace. Then, the revered fire god was asked, 'Lord, what is this?'

उसे देखकर, देवता अपनी कृपा में शांत रहे। फिर, पूज्य अग्नि देव से पूछा गया, 'हे प्रभु, यह क्या है?'

7.133.25

कथं मांसमयः सार्धं स चार्कः पतितो दिवः । स न माति हि भूपीठे सपर्वतवनाम्बुधौ ॥ २५ ॥

kathaṃ māṃsamayaḥ sārdhaṃ sa cārkaḥ patito divaḥ | sa na māti hi bhūpīṭhe saparvatavanāmbudhau || 25 ||

How did the flesh-made mountain fall from the sky along with the sun? It did not extend on the earth with its mountains, forests, and oceans.

मांस के बने पर्वत और सूर्य आकाश से कैसे गिरे? वह पर्वतों, वनों और समुद्रों सहित धरती पर नहीं फैला।

7.133.26

अग्निरुवाच । प्रतिपालय पुत्र त्वं क्षणमेकं गतत्वरः । यावच्छाम्यतु दोषोऽयं कथयिष्यामि ते ततः ॥ २६ ॥

agniruvāca | pratipālaya putra tvaṃ kṣaṇamekaṃ gatatvaraḥ | yāvacchāmyatu doṣo'yaṃ kathayiṣyāmi te tataḥ || 26 ||

Agni said: Protect, O son, for a moment, free from haste, until this fault is pacified, I will then tell you.

अग्नि ने कहा: हे पुत्र, एक क्षण के लिए बिना जल्दी के सुरक्षित रहो, जब तक यह दोष शांत नहीं हो जाता, तब मैं तुम्हें बताऊंगा।

7.133.27

अथ तस्मिन्वदत्येवं समाजग्मुर्नभश्चराः । तज्जगज्जालजातीया दिग्भ्यो गगनजाखिलाः ॥ २७ ॥

atha tasminvadatyevaṃ samājagmurnabhaścarāḥ | tajjagajjālajātīyā digbhyo gaganajākhilāḥ || 27 ||

Then, while he was speaking thus, the celestial beings gathered there, all those who move in the sky, from all directions, born of the net of the universe.

तब, जब वह ऐसे बोल रहा था, आकाश में रहने वाले देवता वहां एकत्र हुए, सभी दिशाओं से, ब्रह्मांड के जाल से उत्पन्न।

7.133.28

सिद्धसाध्याप्सरोदैत्यगन्धर्वोरगकिन्नराः । ऋषयो मुनयो यक्षाः पितरो मातरोऽमराः ॥ २८ ॥

siddhasādhyāpsarodaityagandharvoragakinnarāḥ | ṛṣayo munayo yakṣāḥ pitaro mātaro'marāḥ || 28 ||

The perfected beings, demigods, celestial nymphs, demons, Gandharvas, serpents, Kinnaras, sages, ascetics, Yakshas, ancestors, mothers, and immortals.

सिद्ध, साध्य, अप्सराएँ, दैत्य, गंधर्व, सर्प, किन्नर, ऋषि, मुनि, यक्ष, पितर, माताएँ, और अमर देवता।

7.133.29

अथ सर्वेश्वरीं देवीं शरण्यां ते नभश्चराः । भक्तिनम्रशिरःकायाः कालरात्रिं प्रतुष्टुवुः ॥ २९ ॥

atha sarveśvarīṃ devīṃ śaraṇyāṃ te nabhaścarāḥ | bhaktinamraśiraḥkāyāḥ kālarātriṃ pratuṣṭuvuḥ || 29 ||

Then those celestial beings, with devotion and humility, praised Kali, the goddess who is the refuge of all, the ruler of all.

तब वे आकाश में रहने वाले देवता, भक्ति और विनम्रता से, सबकी शरण और सबकी ईश्वरी देवी कालरात्रि की स्तुति की।

7.133.30

नभश्चरा ऊचुः । बद्ध्वा खट्वाङ्गशृङ्गे कपिलमुरुजटामण्डलं पद्मयोनेः । कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैः स्रजमुरसि शिरःशेखरं तार्क्ष्यपक्षैः । या देवी भुक्तविश्वा पिबति जगदिदं साद्रिभू पीठभूतं । सा देवी निष्कलङ्का कलिततनुलता पातु नः पालनीयान् ॥ ३० ॥

nabhaścarā ūcuḥ | baddhvā khaṭvāṅgaśṛṅge kapilamurujaṭāmaṇḍalaṃ padmayoneḥ | kṛtvā daityottamāṅgaiḥ srajamurasi śiraḥśekharaṃ tārkṣyapakṣaiḥ | yā devī bhuktaviśvā pibati jagadidaṃ sādribhū pīṭhabhūtaṃ | sā devī niṣkalaṅkā kalitatanulatā pātu naḥ pālanīyān || 30 ||

The celestial beings said: The goddess who, having bound the skull of Brahma with her matted locks, and having made a garland of the heads of the best of demons on her chest, and having the feathers of Garuda as her crest, who has consumed the universe and drinks this world as if it were a seat, may that flawless goddess, adorned with beautiful limbs, protect us who are to be protected.

आकाश में रहने वाले देवताओं ने कहा: जो देवी ब्रह्मा के खोपड़ी को अपने जटाओं से बाँधकर, और श्रेष्ठ दैत्यों के सिरों की माला अपने वक्ष पर पहनकर, और गरुड़ के पंखों को अपना मुकुट बनाकर, जिसने ब्रह्मांड को खा लिया है और इस जगत को आसन की तरह पी रही है, वह निष्कलंक देवी, सुंदर अंगों से सजी, हमारी रक्षा करे जिन्हें रक्षा की आवश्यकता है।

Chapter 134

7.134.1

विपश्चिदुवाच एतस्मिन्नन्तरे व्योम्नः स पतन्पुरुषो मया स्थमिताखिलभूपीठः शवरूपो विलोकितः ॥ १ ॥

vipashchiduvācha etasminnantare vyomnaḥ sa patanpuruṣo mayā sthamitākhilabhūpīṭhaḥ śavarūpo vilokitaḥ || 1 ||

Vipashchit said, 'In this interval, I saw a man falling from the sky, motionless on the entire earth, in the form of a corpse.'

विपश्चिदुवाच, 'इस बीच मैंने एक व्यक्ति को आकाश से गिरते देखा, जो पूरी पृथ्वी पर स्थिर है, एक शव के रूप में।'

7.134.2

स यावदुदराभिख्यो देहभागोऽस्य येन भूः सप्तद्वीपापि पिहिताऽमातुः शैलोपमो महान् ॥ २ ॥

sa yāvadudarābhiakhyo dehabhāgo'sya yena bhūḥ saptadvīpāpi pihitā'mātuḥ śailopamo mahān || 2 ||

His body part, known as the abdomen, by which the earth with its seven continents is covered, is like a great mountain.

उसके शरीर का वह भाग जो उदर कहलाता है, जिससे सात द्वीपों वाली पृथ्वी ढंकी हुई है, एक महान पर्वत के समान है।

7.134.3

वह्निनोक्तमनन्तं तत्तद्भुजोरुशिरश्च मे लोकालोकात्परं पारं प्राप्तं ह्यविषये नृणाम् ॥ ३ ॥

vahninoktamanantaṃ tattadbhujoruśiraśca me lokālokātparaṃ pāraṃ prāptaṃ hyaviṣaye nṛṇām || 3 ||

That endless thing spoken by the fire, his mighty arms and head, have reached beyond the Lokāloka, which is beyond the realm of humans.

अग्नि द्वारा कहा गया वह अनन्त वस्तु, उसके मजबूत भुजाएं और सिर, लोकालोका से परे पहुंच गए हैं, जो मनुष्यों के क्षेत्र से परे है।

7.134.4

व्योमवासिचये देवीमथ स्तुवति सादरम् व्योम्नः प्रकटतामागाच्छुष्का नु भवति स्वयम् ॥ ४ ॥

vyomavāsicaye devīmatha stuvati sādaram vyomnaḥ prakaṭatāmāgācchuṣkā nu bhavati svayam || 4 ||

In the assembly of the sky-dwellers, she then respectfully praises the goddess, and the sky itself becomes manifest, becoming dry by itself.

आकाशवासियों की सभा में, वह फिर सम्मानपूर्वक देवी की स्तुति करती है, और आकाश स्वयं ही प्रकट हो जाता है, स्वयं ही सूख जाता है।

7.134.5

प्रेतवृन्दैरनुगता मातृमण्डललालिता कुम्भाण्डयक्षवेतालजालतारकिताम्बरा ॥ ५ ॥

pretavṛndairanugatā mātṛmaṇḍalalālitā kumbhāṇḍayakṣavetālajālatārakitāmbarā || 5 ||

She is followed by a group of ghosts, adorned by the circle of mothers, and her garments are adorned with the net of Kumbhāṇḍa, Yakṣa, and Vetāla.

वह भूतों के समूह द्वारा अनुगत है, मातृमण्डल से अलंकृत है, और उसके वस्त्र कुम्भाण्ड, यक्ष और वेताल के जाल से सजे हुए हैं।

7.134.6

शिरालदीर्घदोर्दण्डवनीकृतनभस्तलाकिरन्ती कीर्णदिग्दाहैर्दृष्टिपातैर्दिवाकरान् ॥ ६ ॥

śirāladīrghadordaṇḍavanīkṛtanabhastalākirantī kīrṇadigdāhairdṛṣṭipātairdivākarān || 6 ||

The one who is adorned with a long staff, scattering rays of light that burn in all directions, gazing at the sun.

जो लंबे दंड से सुशोभित है, जो सभी दिशाओं में जलती किरणों को बिखेरता है, सूर्य की ओर देखता है।

7.134.7

स्फुरन्नानायुधाकारकचज्झणज्झणध्वनिशतखण्डं खगानीकं कुर्वाणा व्योमकोटरे ॥ ७ ॥

sphurannānāyudhākārakacajjhaṇajhaṇadhvaniśatakhaṇḍaṃ khagānīkaṃ kurvāṇā vyomakoṭare || 7 ||

Shining with various weapons, making a sound like the clanging of bells, creating a multitude of birds in the sky.

विभिन्न अस्त्रों से चमकता हुआ, घंटियों की आवाज की तरह ध्वनि करता हुआ, आकाश में पक्षियों की भीड़ बनाता हुआ।

7.134.8

देहज्वालेक्षणोष्माढ्यैः शरीरावयवैस्त्विषःदीर्घवेणुवनाकाराः किरन्ती कोटियोजनाः ॥ ८ ॥

dehajvālekṣaṇoṣmāḍhyaiḥ śarīrāvayavaistviṣaḥdīrghaveṇuvanākārāḥ kirantī koṭiyojanāḥ || 8 ||

With the radiance of the body, the heat of the eyes, and the limbs resembling long bamboo stalks, spreading over millions of yojanas.

शरीर की चमक, आँखों की गर्मी, और लंबे बाँस के तनों जैसे अंगों के साथ, करोड़ों योजन तक फैला हुआ।

7.134.9

दन्तकान्तीन्दुविद्योतदुग्धस्नपितदिङ्मुखाकृशातिदीर्घविस्तीर्णशरीरापूरिताम्बरा ॥ ९ ॥

dantakāntīnduvidyotadugdhasnapitadiṅmukhākṛśātidīrghavistīrṇaśarīrāpūritāmbarā || 9 ||

With teeth shining like the moon, a face anointed with milk, a very thin and extremely long and broad body filling the sky.

दाँतों की चमक चाँद की तरह, दूध से स्नान किया हुआ चेहरा, बहुत पतला और अत्यंत लंबा और चौड़ा शरीर आकाश भर रहा है।

7.134.10

निरालम्बास्पदा सान्ध्या विततेवाभ्रमालिकाप्रेतासनसमारूढा सुरूढा परमे पदे ॥ १० ॥

nirālambāspadā sāṃdhyā vitatevābhramālikāpretāsanasamārūḍhā surūḍhā parame pade || 10 ||

Without support, in the twilight, spreading like a garland of clouds, seated on a ghostly throne, firmly established in the supreme state.

बिना सहारे, संध्या के समय, बादलों की माला की तरह फैला हुआ, भूत के सिंहासन पर बैठा हुआ, परम अवस्था में दृढ़ता से स्थापित।

7.134.11

स्फुरन्ती प्रज्वलद्रूपा संध्या जलधारुणादधाना गगनाम्भोधौ वाडवज्वलनश्रियम् ॥ ११ ॥

sphurantī prajvaladrūpā saṃdhyā jaladharāruṇādadhānā gaganāmbhodhau vāḍavajvalanaśriyam || 11 ||

The twilight, shining brightly, appearing like a blazing fire, taking the hue of the red clouds, and bestowing the glory of the submarine fire on the sky and the ocean.

संध्या, चमकदार और आग की तरह दिखाई देती है, लाल बादलों के रंग को धारण करती है, और आकाश और समुद्र पर पाताल की अग्नि की शोभा देती है।

7.134.12

शवैः शवाङ्गैर्मुसलैः प्रासतोमरमुद्गरैःवृसिकोलूखलहलैः किरन्ती चञ्चला स्रजः ॥ १२ ॥

śavaiḥ śavāṅgairmusalaiḥ prāsatomaramudgaraiḥvṛsikolūkhalahalaiḥ kirantī cañcalā srajaḥ || 12 ||

With corpses and parts of corpses, with pestles, spears, axes, and mortars, she scatters the moving garlands.

शवों और शवों के अंगों, मूसलों, भालों, परशुओं और ओखलियों के साथ, वह चलती हुई मालाओं को बिखेरती है।

7.134.13

प्रजां कटकटाटोपैर्वहन्ती गगनाङ्गणेदृषदां घर्घरारावैः प्रावृङ्गिरिरिवाचले ॥ १३ ॥

prajāṃ kaṭakaṭāṭopairvahantī gaganāṅgaṇedṛṣadāṃ ghargharārāvaiḥ prāvṛṅgiririvācale || 13 ||

Carrying the people with the noise of clattering, she roars in the sky with the sound of thunder, like a mountain during the rainy season.

लोगों को खड़खड़ाहट की आवाज के साथ ले जाते हुए, वह आकाश में गरजती है, जैसे वर्षा ऋतु में एक पर्वत।

7.134.14

देवा ऊचुरयं देवि उपहारीकृतोऽम्बिकेसार्धं स्वपरिवारेण शीघ्रमाह्रियतामिति ॥ १४ ॥

devā ūcurayaṃ devi upahārīkṛto'mbikesārdhaṃ svaparivāreṇa śīghramāhriyatāmiti || 14 ||

The gods said, 'O Goddess, O Ambika, you have been offered. Quickly bring her along with your retinue.'

देवताओं ने कहा, 'हे देवी, हे अम्बिके, तुम्हें अर्पित किया गया है। तुरंत अपने परिवार के साथ उसे ले आओ।'

7.134.15

वदत्येवं सुरानीके तं शवं प्राणवायुनादेवी प्रववृते रक्तसारमाक्रष्टुमञ्जसा ॥ १५ ॥

vadatyevaṃ surānīke taṃ śavaṃ prāṇavāyunādevī pravavṛte raktasāramākraṣṭumañjasā || 15 ||

While speaking thus in the army of the gods, the goddess, with the breath of life, easily drew that corpse, which was full of blood.

देवताओं की सेना में ऐसा कहते हुए, देवी ने जीवन की साँस के साथ, आसानी से उस शव को खींचा, जो रक्त से भरा हुआ था।

7.134.16

प्राणेनाकृष्यमाणं तद्रक्तं भगवतीमुखे अविशत्सांध्यमेघौघ इव मेरोर्गुहान्तरम् ॥ १६ ॥

prāṇenākṛṣyamāṇaṃ tadraktaṃ bhagavatīmukhe aviśatsāndhyameghaugha iva merorguhāntaram || 16 ||

The blood, drawn by the vital air, entered the mouth of the Goddess, like the evening cloud entering the cave of Mount Meru.

प्राण द्वारा खींचा गया वह रक्त भगवती के मुख में प्रवेश कर गया, जैसे संध्या का बादल मेरु पर्वत की गुफा में प्रवेश करता है।

7.134.17

तावद्रक्तं तया पीतं प्राणाकृष्टं नभःस्थया यावच्छुष्का सती तृप्ता पीना सा चंडिका स्थिता ॥ १७ ॥

tāvadraktaṃ tayā pītaṃ prāṇākṛṣṭaṃ nabhaḥsthayā yāvacchuṣkā satī tṛptā pīnā sā caṃḍikā sthitā || 17 ||

The blood drawn by the vital air was drunk by the Goddess, who was in the sky, until she, being dry, was satisfied and became full.

प्राण द्वारा खींचा गया रक्त आकाश में स्थित भगवती ने पीया, जब तक वह सूखी हो गई और तृप्त हो गई और भर गई।

7.134.18

ततो बभूव सा रक्तपरिपीनशरीरिणी रक्ता वर्षाभ्रमालेव तडित्तरललोचना ॥ १८ ॥

tato babhūva sā raktaparipīnaśarīriṇī raktā varṣābharamāle va tadittaralalocanā || 18 ||

Then she became one with a body filled with blood, red like a garland of rain clouds, with eyes flickering like lightning.

तब वह रक्त से भरे शरीर वाली हो गई, जैसे वर्षा के बादलों की माला, जिसकी आँखें बिजली की तरह चमक रही थीं।

7.134.19

लम्बोदरा भगवती विषमाहिविभूषणा रक्तासवमदक्षीबा समस्तायुधधारिणी ॥ १९ ॥

lambodarā bhagavatī viṣamāhivibhūṣaṇā raktāsavamadakṣībā samastāyudhadhāriṇī || 19 ||

The Goddess, with a hanging belly, adorned with various serpents, intoxicated with blood-like wine, holding all weapons.

भगवती, जिसका पेट लटका हुआ था, विविध सर्पों से अलंकृत, रक्त के समान मदिरा से मतवाली, सभी अस्त्र-शस्त्रों से सुशोभित।

7.134.20

व्योम्नि नर्तनमारेभे स्वशरीरार्धपूरिते पर्यन्तगिरिमालाग्रस्थितामरनिरीक्षिता ॥ २० ॥

vyomni nartanamārebe svaśarīrārdhapūrite paryantagirimālāgrasthitāmaranirīkṣitā || 20 ||

She began to dance in the sky, her body half-filled, watched by the gods standing on the peaks of the surrounding mountains.

वह आकाश में नृत्य करने लगी, उसका शरीर आधा भरा हुआ था, जिसे चारों ओर के पर्वतों की चोटियों पर खड़े देवताओं द्वारा देखा जा रहा था।

7.134.21

ततः पिशाचकुम्भाण्डरूपिकादिमहागणाः । शवमावारयांचक्रुर्महाचलमिवाऽम्बुदाः ॥ २१ ॥

tataḥ piśācakumbhāṇḍarūpikādimahāgaṇāḥ | śavamāvārayāñcakrurmahācalamivā'mbudāḥ || 21 ||

Then the great hosts of Pishachas, Kumbhandas, Rupikas, and others surrounded the corpse like clouds surrounding a great mountain.

तब पिशाच, कुम्भाण्ड, रूपिका आदि महागण उस शव को घेरने लगे, जैसे बादल किसी महान पर्वत को घेरते हैं।

7.134.22

शवशैलो गृहीतोऽसौ कुम्भाण्डैः कटिभागतः । उदरादूरूपिकावृन्दैर्यक्षैः कुञ्जरविक्षतैः ॥ २२ ॥

śavaśailo gṛhīto'sau kumbhāṇḍaiḥ kaṭibhāgataḥ | udarādrūpikāvṛndairyakṣaiḥ kuñjaravikṣataiḥ || 22 ||

That corpse-mountain was seized by the Kumbhandas from the waist, by the Rupikas from the belly, and by the Yakshas who were as strong as elephants.

वह शव-पर्वत कुम्भाण्डों द्वारा कमर से, रूपिकाओं द्वारा पेट से, और हाथियों के समान बलशाली यक्षों द्वारा पकड़ा गया।

7.134.23

भुजोरुकन्धराद्यास्ते तस्यान्येऽवयवा यतः । ब्रह्माण्डस्य परं पारं प्राप्ताः परमविस्तृताः ॥ २३ ॥

bhujorukanndharādyāste tasyānye'vayavā yataḥ | brahmāṇḍasya paraṃ pāraṃ prāptāḥ paramavistṛtāḥ || 23 ||

The other limbs of that corpse, such as the arms, thighs, and neck, reached the farthest extent of the universe, being greatly extended.

उस शव के अन्य अंग, जैसे भुजाएँ, जाँघें, और गर्दन, ब्रह्माण्ड की अन्तिम सीमा तक पहुँच गए, बहुत विस्तृत होकर।

7.134.24

ततस्तैर्भूतसंघातैः स्थिता दूरे दिगन्तरे । न प्राप्ता वै हि तत्रैव कालेन कलिताः स्वयम् ॥ २४ ॥

tatastairbhūtasaṃghātaiḥ sthitā dūre digantare | na prāptā vai hi tatraiva kālena kalitāḥ svayam || 24 ||

Then, those groups of beings stood far away in different directions, not reaching there even after a long time, being shaken by time itself.

तब, वे भूत समूह दूर अलग-अलग दिशाओं में खड़े हो गए, लम्बे समय के बाद भी वहाँ नहीं पहुँच पाए, समय के द्वारा हिलाए जाने के कारण।

7.134.25

नृत्यन्त्यां चण्डिकायां खे भूतवृन्दे शवाकुले । देवेष्वद्रिषु तिष्ठत्सु बभूव भुवनं तदा ॥ २५ ॥

nṛtyantyāṃ caṇḍikāyāṃ khe bhūtavṛnde śavākule | deveṣvadriṣu tiṣṭhatsu babhūva bhuvanaṃ tadā || 25 ||

While Chandika was dancing in the sky, and the hosts of beings were agitated around the corpse, and the gods were standing on the mountains, the universe was filled with wonder at that time.

जब चण्डिका आकाश में नृत्य कर रही थी, और भूतों के समूह शव के चारों ओर व्याकुल थे, और देवता पर्वतों पर खड़े थे, तब उस समय ब्रह्माण्ड आश्चर्य से भर गया।

7.134.26

पिण्डाहार्यामदुर्गन्धिगुण्ठीकृतककुब्गणम् । रक्तगर्भाभ्रनिर्व्यूहैः खादिरज्वलनोज्ज्वलम् ॥ २६ ॥

piṇḍāhāryāmadurgandhiguṇṭhīkṛtakakubgaṇam | raktagarbhābhranirvyūhaiḥ khādirajvalanojjvalam || 26 ||

The army of demons, with their mouths filled with foul-smelling food, shining with the blazing fire of Khadira wood and the red clouds of their entrails.

राक्षसों की सेना, जिनके मुंह में दुर्गन्ध युक्त भोजन भरा हुआ है, खैर की लकड़ी की आग से चमक रही है और उनके अंतड़ियों के लाल बादलों से घिरी हुई है।

7.134.27

मांसचर्वणसंरम्भप्रोद्यच्छवशवस्वनम् । लतास्थिखण्डनोड्डीनबृहत्कटकटारवम् ॥ २७ ॥

māṃsacarvaṇasaṃrambhaprodyacchavaśavasvanam | latāsthikhaṇḍanoḍḍīnabṛhatkaṭakaṭāravam || 27 ||

The sound of the demons chewing flesh with great enthusiasm, the loud noise of breaking bones and tendons, and the immense clattering sound.

राक्षसों का मांस चबाने का शब्द, हड्डियों और तंत्रों को तोड़ने का भारी शोर और विशाल खड़खड़ाहट का शब्द।

7.134.28

भूतसंघट्टविश्लेषवशाद्भीषणनिःस्वनम् । हिमवद्विन्ध्यशैलाद्रिप्रमाणास्थ्यचलावृतम् ॥ २८ ॥

bhūtasaṃghaṭṭaviśleṣavaśād bhīṣaṇaniḥsvanam | himavadvindhyaśailādripramāṇāsthyacalāvṛtam || 28 ||

The terrifying sound of the collision and separation of the demons, covered with bones as large as the Himalayas and Vindhya mountains.

राक्षसों के टकराने और अलग होने का भयानक शब्द, जो हिमालय और विन्ध्य पर्वतों जितनी बड़ी हड्डियों से ढका हुआ है।

7.134.29

देवीमुखानलज्वालापक्वमांसाक्तभूतलम् । रक्तसीकरनीहारसिन्दूरितककुब्गणम् ॥ २९ ॥

devīmukhānalajvālāpakvamāṃsāktabhūtalam | raktasīkaranīhārasindūritakakubgaṇam || 29 ||

The ground cooked by the flames from the mouth of the goddess, stained with the red blood of the demons, resembling a cloud of blood droplets.

देवी के मुख से निकलने वाली आग की लपटों से पका हुआ भूमि, राक्षसों के रक्त से रंगी हुई, जो रक्त की बूँदों के बादल जैसा दिखाई देता है।

7.134.30

सर्वतः प्रेक्षकैर्देवैः सप्राकारदिगन्तरम् । रुधिरैकार्णवीभूतसप्तद्वीपवसुन्धरम् ॥ ३० ॥

sarvataḥ prekṣakairdevaiḥ saprākāradigantaram | rudhiraikārṇavībhūtasaptadvīpavasundharam || 30 ||

Surrounded by gods as spectators from all directions, the earth with its seven continents has become a single ocean of blood.

सभी दिशाओं से देवताओं द्वारा देखे जाने वाले सात द्वीपों वाली पृथ्वी रक्त के एक समुद्र में बदल गई है।

7.134.31

अत्यन्तान्तर्हिताशेषसमस्ताचलमण्डलम् । रक्तप्रभाभ्रसंभारवस्त्रावृतदिगङ्गनम् ॥ ३१ ॥

atyantāntarhitāśeṣasamastācalamaṇḍalam | raktaprabhābhrasaṃbhāravastrāvṛtadigaṅganam || 31 ||

The entire range of mountains is completely hidden, and the sky is covered with a garment of clouds that have a reddish glow.

सम्पूर्ण पर्वत श्रृंखला पूर्णतः छिपी हुई है, और आकाश लालिमा युक्त बादलों के वस्त्र से ढका हुआ है।

7.134.32

वृत्तालोलभुजभ्रान्तहेतिच्छन्ननभस्तलम् । दूरस्मृतिपथप्राप्तपुरपत्तनमण्डलम् ॥ ३२ ॥

vṛttālolabhujabhrāntaheticchannanabhastalam | dūrasmṛtipathaprāptapurapattanamaṇḍalam || 32 ||

The sky is obscured by the whirling, circular motion of weapons, and the distant memory of the path leads to the city and its surroundings.

आकाश घूमते हुए हथियारों की चक्रीय गति से ढका हुआ है, और दूर की स्मृति का मार्ग शहर और उसके आसपास के क्षेत्र तक ले जाता है।

7.134.33

अत्यन्तासंभवद्रूपसर्वस्थावरजंगमम् । संपन्नानन्तकुम्भाण्डरूपिकाद्येकसंगमम् ॥ ३३ ॥

atyantāsaṃbhavadrūpasarvasthāvarajaṅgamam | saṃpannānantakuṃbhāṇḍarūpikādyekasaṃgamam || 33 ||

All beings, both moving and stationary, are endowed with an extremely rare form, and they are united in the form of an infinite pot.

सभी चराचर प्राणी एक अत्यन्त दुर्लभ रूप से युक्त हैं, और वे एक अनन्त घड़े के रूप में एकजुट हैं।

7.134.34

नृत्तलोककराकारखगावलनजालकैःमानसूत्रैरिव विधेरन्यद्रचयतो जगत् ॥ ३४ ॥

nṛttalokakarākārakhagāvalanajālakaiḥmānasūtrairiva vidheranyadracayato jagat || 34 ||

The world is being created anew by the Lord, as if with the threads of the mind, with the dancing forms of birds and the swaying nets of vines.

संसार प्रभु द्वारा नया बनाया जा रहा है, मानो मन के धागों से, पक्षियों के नृत्य रूपों और लताओं के लहराते जालों के साथ।

7.134.35

भूमेरार्कगतं नीतैः पिशाचैरान्त्रतन्तुभिः । मिमानमिव दिक्कुञ्जैस्तिर्यगूर्ध्वमधो जगत् ॥ ३५ ॥

bhūmerārkagataṃ nītaiḥ piśācairāntratantubhiḥ | mimānamiva dikkuñjaistiryagūrdhvamadho jagat || 35 ||

The world is measured as if by the rays of the sun, guided by the threads of the intestines of demons, extending in all directions—horizontal, upward, and downward.

दुनिया मानो सूर्य की किरणों द्वारा मापी गई है, जो राक्षसों की आंतों के धागों द्वारा मार्गदर्शित है, जो सभी दिशाओं में फैली हुई है—क्षैतिज, ऊपर, और नीचे।

7.134.36

जगदालोक्य तत्तादृगुदक्तोपप्लवाप्लुतम्। भूतपूर्वमहीपीठस्थितिरक्तार्णवीकृतम्॥ ३६॥

jagadālokya tattādṛgudaktopaplavāplutam | bhūtapūrvamahīpīṭhasthitiraktārṇavīkṛtam || 36 ||

Seeing the world submerged in the great deluge, the gods, tired, stood on the summit of the Lokāloka mountain, which was surrounded by the seven islands.

जगत को महान प्रलय में डूबा हुआ देखकर, थके हुए देवता सात द्वीपों से घिरे लोकालोक पर्वत के शिखर पर खड़े थे।

7.134.37

द्वीपसप्तकपर्यन्ते लोकालोकाद्रिमूर्धनि। तदङ्गकैरनाक्रान्ते स्थिताः खिन्नतराः सुराः॥ ३७॥

dvīpasaptakaparyante lokālokādrimūrdhani | tadaṅgakairanākrānte sthitāḥ khinnatarāḥ surāḥ || 37 ||

The gods, extremely tired, stood on the summit of the Lokāloka mountain, which is surrounded by the seven islands, with their limbs not moving.

देवता, बहुत थके हुए, सात द्वीपों से घिरे लोकालोक पर्वत के शिखर पर अपने अंगों को न हिलाते हुए खड़े थे।

7.134.38

श्रीराम उवाच। ब्रह्माण्डादपि निर्गत्य यस्य तेऽवयवा गताः। लोकालोकाचलस्तेन ब्रह्मन्न स्थगितः कथम्॥ ३८॥

śrīrāma uvāca | brahmāṇḍādapi nirgatya yasya te'vayavā gatāḥ | lokālokācalastena brahmanna sthagitaḥ katham || 38 ||

Sri Rama said: How is the Lokāloka mountain, whose parts have gone beyond the Brahmanda, not obstructed, O Brahman?

श्री राम ने कहा: हे ब्रह्मन्, ब्रह्माण्ड से परे जाने वाले उस लोकालोक पर्वत के अंग, जिनके अवयव गए हैं, कैसे नहीं रुके हैं?

7.134.39

श्रीवसिष्ठ उवाच। द्वीपसप्तकमध्येऽस्मिन्राम तस्योदरं स्थितम्। शिरःखुरभुजाद्यङ्गं ब्रह्माण्डात्परतः स्थितम्॥ ३९॥

śrīvasiṣṭha uvāca | dvīpasaptakamadhye'sminrāma tasyodaraṃ sthitam | śiraḥkhurabhujādyaṅgaṃ brahmāṇḍātparataḥ sthitam || 39 ||

Vasishtha said: O Rama, the belly of that (Lokāloka mountain) is situated in the midst of the seven islands, and its head, hooves, arms, and other limbs are situated beyond the Brahmanda.

वसिष्ठ ने कहा: हे राम, उस (लोकालोक पर्वत) का उदर सात द्वीपों के बीच स्थित है, और उसका सिर, खुर, भुजाएँ और अन्य अंग ब्रह्माण्ड से परे स्थित हैं।

7.134.40

पार्श्वाभ्यामूरुमध्याच्च कटिपार्श्वद्वयात्तथा। शिरोंसद्वयमध्याभ्यां लोकालोकः स लक्ष्यते॥ ४०॥

pārśvābhyāmūrumadhyācca kaṭipārśvadvayāttathā | śiroṃsadbayamadhyābhyāṃ lokālokaḥ sa lakṣyate || 40 ||

The Lokāloka mountain is seen with its sides from the middle of the thighs, from both sides of the waist, and from the middle of the two shoulders and the head.

लोकालोक पर्वत को उरुओं के मध्य से, कटि के दोनों पार्श्वों से, और दोनों कंधों और सिर के मध्य से देखा जाता है।

7.134.41

तत्रोपविष्टास्ते देवा लक्ष्यन्ते श्रृङ्गमूर्धसु । सुशुद्धकान्तयस्तापादजला जलदा इव ॥ ४१ ॥

tatropaviṣṭāste devā lakṣyante śṛṅgamūrdhasu | suśuddhakāntayastāpādajalā jaladā iva || 41 ||

There, the gods are seen seated on the mountain peaks, pure and radiant like clouds with water dripping from their feet.

वहाँ, देवताओं को पर्वत की चोटियों पर बैठे हुए देखा जाता है, जिनके पैरों से पानी टपकता है और वे बादलों की तरह पवित्र और चमकीले दिखाई देते हैं।

7.134.42

प्रसारिताङ्गकमधो वक्रं तत्पतितं शवम् । संभक्षयति भूतौघे प्रनृत्यन्तीषु मातृषु ॥ ४२ ॥

prasāritāṅgakamadho vakraṃ tatpatitaṃ śavam | saṃbhakṣayati bhūtaughe pranṛtyantīṣu mātṛṣu || 42 ||

Below the outstretched limbs, the crooked corpse falls, being devoured by ghosts while the mothers dance.

फैले हुए अंगों के नीचे, टेढ़ा शव गिरता है, जो भूतों द्वारा खाया जाता है जबकि मातृएं नृत्य करती हैं।

7.134.43

वहत्स्वसृक्प्रवाहेषु मेदोगन्धे विजृम्भिते । दुःखिताश्चिन्तयामासुः प्रत्येकममरा इदम् ॥ ४३ ॥

vahatsvasṛkpravāheṣu medogandhe vijṛmbhite | duḥkhitāścintayāmāsuḥ pratyekamamarā idam || 43 ||

In the flowing streams of blood and the stench of fat, the gods, distressed, thought individually about this.

रक्त की बहती धाराओं और चर्बी की दुर्गंध में, देवताओं ने दुःखी होकर अलग-अलग इसके बारे में सोचा।

7.134.44

हा कष्टं क्व गता पृथ्वी क्व गता जलराशयः । क्व गता जनसंघाताः क्व गता धरणीधराः ॥ ४४ ॥

hā kaṣṭaṃ kva gatā pṛthvī kva gatā jalarāśayaḥ | kva gatā janasaṃghātāḥ kva gatā dharṇīdharaḥ || 44 ||

Alas, what misfortune! Where has the earth gone? Where have the reservoirs of water gone? Where have the gatherings of people gone? Where have the mountains gone?

हाय, क्या दुःख! पृथ्वी कहाँ गई? जल के भंडार कहाँ गए? जनसमूह कहाँ गए? पर्वत कहाँ गए?

7.134.45

तादृक्चन्दनमन्दारकदम्बवनमण्डितः । मण्डपः पुष्पराशीनां कष्टं क्व मलयो गतः ॥ ४५ ॥

tādṛkcaṃdanaṃmandārakadambavanaṃmaṇḍitaḥ | maṇḍapaḥ puṣparāśīnāṃ kaṣṭaṃ kva malayo gataḥ || 45 ||

Alas, where has the beautiful pavilion gone, adorned with sandalwood, mandara, and kadamba forests, and filled with flower-bearing trees?

हाय, कहाँ गया वह सुंदर मण्डप, जो चंदन, मंदार और कदंब के वनों से सजा हुआ था और फूलों से भरा था?

7.134.46

उच्चावदाता विपुला हिमवद्भूमयोऽपि ताःनीताः शौक्ल्यरुषेवाशु रुधिरेणात्मपङ्कताम् ॥ ४६ ॥

uccāvadātā vipulā himavadbhūmayo'pi tāḥnītāḥ śauklyaruṣevāśu rudhireṇātmapaṅkatām || 46 ||

The lofty mountains, though vast and snow-covered, were quickly brought down to a state of blood-redness.

उच्च पर्वत, यद्यपि विशाल और बर्फ से ढके हुए थे, जल्दी ही खून से लाल हो गए।

7.134.47

क्रौञ्चद्वीपतले क्रौञ्चे योऽभूत्कल्पद्रुमो महान्ब्रह्मलोकलसच्छाखः सोऽपि चूर्णत्वमागतः ॥ ४७ ॥

krauñcadvīpatale krauñce yo'bhūtkalpadrumo mahānbrahmalokalasacchākhaḥ so'pi cūrṇatvamāgataḥ || 47 ||

On the island of Krauncha, there was a great wish-fulfilling tree with branches reaching Brahmaloka, which also turned to dust.

क्रौंच द्वीप पर, एक महान इच्छा-पूर्ति वृक्ष था जिसकी शाखाएँ ब्रह्मलोक तक पहुँचती थीं, जो भी धूल में बदल गया।

7.134.48

हा क्षीरार्णव पारिजातकमलाचन्द्रामृतानां पते हा दध्यर्णव नावनीतशिखरिप्रोद्भूतवेलावनहा मध्वर्णव नालिकेरगिरिके योगेश्वरीसेवित क्वेदानीं समुपैष्यथ क्व वनिता दिग्दर्पणत्वं गताः ॥ ४८ ॥

hā kṣīrārṇava pārijātakamalācandrāmṛtānāṃ pate hā dadhyarṇava nāvanītaśikhariprodbhūtavelāvanahā madhvarṇava nālikeragirike yogeśvarīsevita kvedānīṃ samupaiṣyatha kva vanitā digdarpaṇatvaṃ gatāḥ || 48 ||

Alas, lord of the ocean of milk, Parijata flowers, moon, and nectar! Alas, ocean of curd, from which butter mountains arise! Where have you gone, O mountain of coconut trees, served by Yogesvari, adorned with honey-colored clouds? Where have the proud women gone?

हाय, दूध के समुद्र, पारिजात फूल, चंद्रमा और अमृत के स्वामी! हाय, दही के समुद्र, जिससे मक्खन के पर्वत उठते हैं! तुम कहाँ चले गए, हे नारियल के पेड़ों का पर्वत, जिसकी सेवा योगेश्वरी करती है, शहद के रंग के बादलों से सजा हुआ? वे घमंडी महिलाएँ कहाँ चली गईं?

7.134.49

हा कल्पद्रुमकाञ्चनामललतानिःसंधिबन्धाचल क्रौञ्चद्वीपविरिञ्चहंसनलिनीनीरन्ध्रदिग्जालकयातः क्वेह कदम्बकाननदरीविश्रान्तविद्याधरीक्रीडाकोविदनागरामरगृह त्वं पुष्करद्वीपक ॥ ४९ ॥

hā kalpadrumakāñcanāmalalatāniḥsaṃdhibandhācala krauñcadvīpaviriñcahaṃsanalinīnīrandhradigjālakayātaḥ kveha kadambakānanadarīviśrāntavidyādharīkrīḍākovidanāgarāmaragṛha tvaṃ puṣkaradvīpaka || 49 ||

Alas, the golden-crested wish-fulfilling trees, the mountains bound by the ocean, the island of Krauncha with its swans and lotuses, the network of directions and spaces, where have they gone? You, O Pushkaradvipa, with your groves of kadamba trees, where the Vidyadharis rest and play, skilled in the arts of love, where is your abode?

हाय, सुनहरे कल्पवृक्षों की लताएँ, समुद्र से जुड़े पर्वत, क्रौंच द्वीप के हंस और कमल, दिशाओं और स्थानों का जाल, वे कहाँ चले गए? तुम, ओ पुष्करद्वीप, जिसके कदंब के वन हैं, जहाँ विद्याधरियाँ विश्राम करती हैं और प्रेम कला में कुशल हैं, तुम्हारा निवास कहाँ है?

7.134.50

स्वादूदोदग्रतापावलकुसुममहीपावनानां वनानां गोमेधद्वीपकल्पद्रुमकनकलतासुन्दरीणां दरीणांशाकद्वीपाचलानाममरतरुवनैर्दंशितानां सितानां स्मृत्यैवोदेति पुण्यं सुरपदसुखदं मानवानां नवानां ॥ ५० ॥

svādūdodagratāpāvalakusumamahīpāvanānāṃ vanānāṃ gomedhadvīpakalpadrumakanakalatāsundarīṇāṃ darīṇāmśākadvīpācalānāmamarataruvanairdaṃśitānāṃ sitānāṃ smṛtyaivodeti puṇyaṃ surapadasukhadaṃ mānavānāṃ navānāṃ || 50 ||

By remembering the sweet-smelling forests of the earth, the beautiful golden-crested wish-fulfilling trees of Gomedha island, the white mountains of Shakadvipa adorned with divine trees, one attains the merit that brings the joy of heaven to new humans.

धरती के सुगंधित वनों, गोमेध द्वीप के सुंदर सुनहरे कल्पवृक्षों, दिव्य वृक्षों से सजे शाकद्वीप के सफेद पर्वतों को याद करके, नए मनुष्यों को स्वर्ग की खुशी देने वाला पुण्य प्राप्त होता है।

7.134.51

मन्दानिलावलितपल्लववालवल्लीसंतानभासितसमस्तदिगन्तराणि । ध्वस्तानि तानि सकलानि वनानि कष्टमाश्वासमेष्यति कथं जनता न जाने ॥ ५१ ॥

mandānilāvalitapallavavālavallīsantānabhāsitasamastadigantarāṇi | dhvastāni tāni sakalāni vanāni kaṣṭamāśvāsameṣyati kathaṃ janatā na jāne || 51 ||

All the forests, adorned with tender leaves swaying in the gentle breeze and illuminating all directions, have been destroyed. How will the people find consolation? I do not know.

हवा के मन्द झोंके से झूमते हुए naye पत्तों से सजे हुए जंगल, जिनकी सुन्दरता से सारे दिशाओं में उज्जवल होती है, वे सब नष्ट हो गए हैं | लोगों को आश्वासन कैसे मिलेगा, यह मैं नहीं जानता |

7.134.52

कदा नु तानीक्षुरसाब्धितीरे वनानि खण्डाचलभूमिकासु । द्रक्ष्येम भूयो गुडमोदकानि तथा कुमाराण्यपि शर्करायाः ॥ ५२ ॥

kadā nu tānīkṣurāsābhditīre vanāni khaṇḍācalabhūmikāsu | drakṣyema bhūyo guḍamodakāni tathā kumārāṇyapi śarkarāyāḥ || 52 ||

When will we see again the forests on the rocky hills by the sugarcane ocean shore, the sweet balls of jaggery, and the young girls with their sweetness?

कब फिर हम देखेंगे गन्ने के समुद्र के किनारे पर चट्टानी भूमि पर जंगलों को, गुड़ की मिठाइयों को, और अपनी मिठास के साथ युवतियों को?

7.134.53

कदम्बकल्पद्रुमशीतलेषु तालीतमालीसवनाचलस्य । कदा नु तच्चन्दनसुन्दरीणां पश्येम नृत्तं कनकालयेषु ॥ ५३ ॥

kadambakalpadrumashītaleṣu tālītamālīsavānācalasya | kadā nu taccandanasundarīṇāṃ paśyema nṛttaṃ kanakālayeṣu || 53 ||

When will we see the beautiful dance of the sandalwood trees in the cool shade of the Kadamba trees, along with the Tali and Tamarind trees of the forest?

कब हम देखेंगे कदम्ब वृक्षों की ठंडी छाया में चन्दन के सुन्दर वृक्षों का नृत्य, ताली और तमाल वृक्षों के साथ जंगल में?

7.134.54

गतानि कष्टं स्मरणीयरूपतां जम्बूद्रुमस्याग्रफलानि तान्यपि । येषां नदीं द्वीपसमुद्रमेखला वहत्यसौ जम्बुमती रसाम्बुभिः ॥ ५४ ॥

gatāni kaṣṭaṃ smaraṇīyarūpatāṃ jambūdrumasyāgraphalāni tānyapi | yeṣāṃ nadīṃ dvīpasamudramekhalā vahatyasau jambumatī rasāmbubhiḥ || 54 ||

It is painful to remember the memorable fruits of the Jambu tree, which are carried away by the river Jambumati, flowing with sweet waters, to the island-ocean belt.

जम्बू वृक्ष के यादगार फलों को याद करना दुःखदायी है, जो मिठास भरी जल की धाराओं से बहती हुई जम्बुमती नदी द्वारा द्वीप समुद्र क्षेत्र में ले जाए जाते हैं।

7.134.55

शिलीन्ध्रनीरन्ध्रमहीध्ररन्ध्रक्षीबामरस्त्रीकृतगीतनृत्यम् । संस्मृत्य संस्मृत्य सुरोदतीरं प्रागब्जमुर्वीव हृदावदीर्ये ॥ ५५ ॥

śilīndhranīrandhramahīdhra randhrakṣībāmarastrīkṛtagītanṛtyam | saṃsmṛtya saṃsmṛtya surōdatīraṃ prāgabjamurvīva hṛdāvadīrye || 55 ||

Remembering again and again the divine dance and music of the celestial nymphs in the caves of the mountains, the heart swells with joy like the earth with the first rains.

पर्वतों की गुफाओं में देव अप्सराओं के दिव्य गीत और नृत्य को बार-बार याद करके, हृदय प्रफुल्लित हो उठता है, जैसे पहली वर्षा से भीगी धरती।

7.134.56

पश्यासृगम्भसि नवार्णवमूर्ध्नि भासा सौवर्णपर्वतशताग्रशिखाः कचन्ति । संध्यारुणा उदयनास्तमयावनीनां
स्तोकोदितेन्दुकलिका इव दिङ्मुखेषु ॥ ५६ ॥

paśyāsṛgambhasi navārṇavamūrdhni bhāsā sauvarṇaparvataśatāgraśikhāḥ kacanti | saṃdhyāruṇā udayanāstamayāvanīnāṃ stokoditendukalikā iva diṅmukheṣu || 56 ||

Behold the blood-red water of the new ocean at its zenith, where the peaks of a hundred golden mountains shine. Like the newly risen crescent moon in the evening twilight, they appear at the horizon of the earth at sunrise and sunset.

देखो नए समुद्र के उत्थान पर रक्तिम जल, जहाँ सौ सुवर्ण पर्वतों की चोटियाँ चमक रही हैं | संध्या के लालिमा में, उदय और अस्त के समय में, वे पृथ्वी के क्षितिज पर नवोदित चंद्रमा की कलिका की तरह दिखाई देती हैं ||

7.134.57

तादृक्सागरवारिराशिवलया द्वीपान्तरालंकृता प्रोच्चाद्रीन्द्रनिविष्टवारिदघटानीलोत्पलानां स्थली ।
स्रोतोजङ्गलकाननोग्रनगरग्रामाग्रहाराम्बरा नो जाने तरुपल्लवाङ्कुरवती कष्टं क्व याता मही ॥ ५७ ॥

tādṛksāgaravārirāśivalayā dvīpāntarālaṅkṛtā proccādrīndranivisṭavāridadhaṭānīlotpalānāṃ sthalī | srotojaṅgalakānanogranagaragrāmāgrahārāmbarā no jāne tarupallavāṅkuravatī kaṣṭaṃ kva yātā mahī || 57 ||

Adorned with islands and surrounded by the waves of such an ocean, the land of blue lotuses, filled with high mountains and clouds, is decorated with rivers, forests, fierce cities, villages, and temples. I do not know where the earth, full of trees, leaves, and sprouts, has gone.

ऐसे समुद्र की लहरों से घिरे हुए और द्वीपों से सजे हुए, उच्च पर्वतों और बादलों से भरी नील कमलों की भूमि, नदियों, जंगलों, भयानक नगरों, गाँवों और मंदिरों से सजी हुई है | मुझे नहीं पता कि पेड़ों, पत्तों और अंकुरों से भरी यह पृथ्वी कहाँ चली गई ||

Chapter 135

7.135.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । मत्तेन भूतवृन्देन किंचिच्छेषीकृते शवे । इदमूचुः पुनर्दिक्षु गिरौ देवाः सवासवाः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | matten bhūtavṛnden kiñcicchēṣīkṛte śave | idamūcuḥ punardikṣu girau devāḥ savāsavāḥ || 1 ||

Śrīvasiṣṭha said: With the intoxicated beings slightly remaining in the corpse, the gods along with the Vasus spoke again in the sky.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: नशे में धुत प्राणियों के थोड़े से शेष शव में रहते हुए, देवताओं ने वसुओं के साथ फिर से आकाश में कहा।

7.135.2

विद्याधरामरविहारविमानभूमावप्यास्तृतान्यशिशिरीकरणाय भूतैः । मेदोमयानि पवनप्रसृतामलाभ्रखण्डाञ्चिताम्बरसमान्युरुजालकानि ॥ २ ॥

vidyādharāmaravihāravimānabhūmāvapyāstṛtānyaśiśirīkaraṇāya bhūtaiḥ | medomayāni pavanaprasṛtāmalābhra-khaṇḍāñcita-ambarasamānyurujālakāni || 2 ||

Even in the realms of Vidyadharas and Amaras, the beings have spread out to cool down, with fatty substances resembling large nets of dark clouds spread by the wind.

विद्याधरों और अमरों के विहारों और विमानों के भूमियों में भी, प्राणियों ने ठंडा करने के लिए फैल गए हैं, वायु द्वारा फैलाए गए काले बादलों की बड़ी जालों के समान वसा पदार्थों के साथ।

7.135.3

द्वीपेषु सप्तस्वपि पश्य मेदोजलानि भूतैः प्रविसारितानि । भुक्तं च मांसं रुधिरं च पीतं किंचिद्गता संप्रति दृश्यतां भूः ॥ ३ ॥

dvīpeṣu saptasvapi paśya medojalāni bhūtaiḥ pravisāritāni | bhuktaṃ ca māṃsaṃ rudhiraṃ ca pītaṃ kiñcidgatā saṃprati dṛśyatāṃ bhūḥ || 3 ||

See the fatty substances spread even in the seven islands by the beings. The meat has been eaten, and the blood has been drunk; some of it has now become visible on the earth.

सात द्वीपों में भी प्राणियों द्वारा फैलाए गए वसा पदार्थों को देखो। मांस खाया गया है, और रक्त पीया गया है; कुछ अब पृथ्वी पर दृश्यमान हो गया है।

7.135.4

मेदःपटैरावलिताखिलाङ्गी कष्टं स्थिता संप्रति मोदना भूः । मेदोमयैः शारदमेघजालैः सकम्बलानीव वनानि भान्ति ॥ ४ ॥

medaḥpaṭairāvalitākhilāṅgī kaṣṭaṃ sthitā saṃprati modanā bhūḥ | medomayaiḥ śāradameghajālaiḥ sakambalānīva vanāni bhānti || 4 ||

The earth is now covered with layers of fat, making it difficult to stand, and it is joyful. The forests appear like covered with blankets of autumn clouds made of fat.

पृथ्वी अब वसा की परतों से ढकी हुई है, जिससे खड़े होना मुश्किल है, और यह आनंदित है। वन शरद ऋतु के बादलों की चादरों से ढके हुए लगते हैं जो वसा से बने हैं।

7.135.5

पञ्चैतानि तदस्थीनि संपन्नानि महाद्रयः । हिमाद्रिशिखराणीव स्थितान्यावार्य दिक्तटम् ॥ ५ ॥

pañcaitāni tadasthīni saṃpannāni mahādrayaḥ | himādriśikharāṇīva sthitānyāvārya diktaṭam || 5 ||

These five mountains are complete with their bones, resembling the peaks of the Himalayas, standing and covering the horizon.

ये पाँच पर्वत अपनी हड्डियों के साथ पूर्ण हैं, जो हिमालय की चोटियों के समान लगते हैं, खड़े होकर क्षितिज को ढकते हैं।

7.135.6

श्रीवसिष्ठ उवाच । देवेषु कथयत्स्वेवं कृत्वेमां मेदिनीं धराम् । मेदोजालैः स भूतौघो मत्तो व्योम्नि ननर्त ह ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | deveṣu kathayatsvevaṃ kṛtvemāṃ medinīṃ dharām | medojālaiḥ sa bhūtaugho matto vyomni nanarta ha || 6 ||

Vasishtha said: While the gods were narrating thus, having made this earth, that host of beings, intoxicated with the net of fat, danced in the sky.

वसिष्ठ ने कहा: जब देवता ऐसे ही कह रहे थे, इस पृथ्वी को बनाकर, वह चर्म के जाल से मतवाला प्राणियों का समूह आकाश में नाच रहा था।

7.135.7

नृत्यत्सु भूतवृन्देषु शिष्टं रक्तं सुरैर्भुवः । एकप्रवाहेणैकस्मिन्निक्षिप्तं मकरालये ॥ ७ ॥

nṛtyatsu bhūtavṛndeṣu śiṣṭaṃ raktaṃ surairbhuvaḥ | ekapravāheṇaikasminnikṣiptaṃ makarālaye || 7 ||

While the groups of beings were dancing, the remaining blood of the earth was collected by the gods and poured into the ocean, the abode of the makara.

जब प्राणियों के समूह नाच रहे थे, तब पृथ्वी का शेष रक्त देवताओं द्वारा एकत्र किया गया और मकर के निवास स्थान, समुद्र में डाल दिया गया।

7.135.8

सुरार्णवं तमेवैनं संकल्पं विदधुः सुराः । ततःप्रभृति सोऽद्यापि संपन्नो मदिरार्णवः ॥ ८ ॥

surārṇavaṃ tamevainaṃ saṃkalpaṃ vidadhuḥ surāḥ | tataḥprabhṛti so'dyāpi saṃpanno madirārṇavaḥ || 8 ||

The gods made that very ocean their resolve. From that time onwards, it has been filled with intoxicating liquor.

देवताओं ने उसी समुद्र को अपना संकल्प बनाया। तब से आज तक, वह मदिरा से भरा हुआ है।

7.135.9

भूतानि नृत्तमाकाशे तानि कृत्वा पिबन्ति ताम् । मदिरां पुनराकाशे नृत्यन्त्यानन्दमन्दिरे ॥ ९ ॥

bhūtāni nṛttamākāśe tāni kṛtvā pibanti tām | madirāṃ punarākāśe nṛtyantyānandamandire || 9 ||

The beings, having danced in the sky, drink that intoxicating liquor. Then, in the sky, they dance again in the abode of bliss.

प्राणियों ने आकाश में नृत्य किया, और उस मदिरा को पी लिया। फिर, आकाश में, वे आनंद के निवास स्थान में पुनः नृत्य करते हैं।

7.135.10

पिबन्त्यद्यापि तानीव मदिरां मदिरार्णवात् । खे नृत्यन्ति च भूतानि सह योगेश्वरीगणैः ॥ १० ॥

pibantyadyāpi tānīva madirāṃ madirārṇavāt | khe nṛtyanti ca bhūtāni saha yogeśvarīgaṇaiḥ || 10 ||

Even today, they drink that intoxicating liquor from the ocean of liquor. In the sky, the beings dance along with the hosts of Yogeshvaris.

आज भी, वे उस मदिरा को मदिरा के समुद्र से पीते हैं। आकाश में, प्राणी योगेश्वरी समूहों के साथ नृत्य करते हैं।

7.135.11

तेषां तान्यथ भूतानां मेदोजालानि भूतलेविस्तृतान्यवशुष्काणि स्थितातो मेदिनी मही ॥ ११ ॥

teṣāṃ tānyatha bhūtānāṃ medojālāni bhūtalevistṛtānyavaśuṣkāṇi sthitāto medinī mahī || 11 ||

Those beings, having become different, their fatty tissues spread out on the earth, dried up and settled, the earth became great.

वे प्राणी, जो अलग हो गए थे, उनके चर्बी के जाल धरती पर फैल गए, सूख गए और स्थिर हो गए, धरती महान हो गई।

7.135.12

इति क्रमाच्छान्तिमुपागते शवे पुनः प्रवृत्ते दिनयामिनीक्रमेप्रजाः ससर्जाथ नवाः प्रजापतिः पुनः स सर्गोऽभवदत्र पूर्ववत् ॥ १२ ॥

iti kramācchāntimupāgate śave punaḥ pravṛtte dinayāminīkrameprajāḥ sasarjātha navāḥ prajāpatiḥ punaḥ sa sargo'bhavadatra pūrvavat || 12 ||

Thus, when the night ended and the day began again, Prajapati created new beings, and that creation happened here as before.

इस प्रकार, जब रात समाप्त हुई और दिन फिर से शुरू हुआ, तब प्रजापति ने नए प्राणियों की रचना की, और यह रचना यहां पहले की तरह हुई।

Chapter 136

7.136.1

भास उवाच । अथाहं तं महादेवं पावकं पृष्टवानिदम् । शुकपक्षतिकोणस्थः भूयतामवनीश्वर ॥ १ ॥

bhāsa uvāca | athāhaṃ taṃ mahādevaṃ pāvakaṃ pṛṣṭavānidam | śukapakṣatikoṇasthaḥ bhūyatāmavanīśvara || 1 ||

Bhāsa said: Then I asked that great Lord, the purifier, the fire, this question: May you, the lord of the earth, be in the corner of the parrot's wing.

भास ने कहा: तब मैंने उस महादेव, पावक, से यह प्रश्न किया: हे पृथ्वी के स्वामी, आप तोते के पंख के कोण में हों।

7.136.2

भगवन्सर्वयज्ञेश स्वाहाधिप हुताशन । किमिदं नाम संपन्नं कथ्यतां किमिदं शवम् ॥ २ ॥

bhagavansarvayajñeśa svāhādhipa hutāśana | kimidaṃ nāma sampannaṃ kathyatāṃ kimidaṃ śavam || 2 ||

O Lord of all sacrifices, master of Svāhā, fire-eater, what is this that has been accomplished? Tell me, what is this corpse?

हे सभी यज्ञों के स्वामी, स्वाहा के अधिपति, अग्नि को खाने वाले, यह क्या है जो पूर्ण हुआ है? बताइए, यह क्या शव है?

7.136.3

वह्निरुवाच । श्रूयतामखिलं राजन्यथावद्वर्णयामि ते । त्रैलोक्यभासुरानन्तशववृत्तान्तमक्षतम् ॥ ३ ॥

vahniruvāca | śrūyatāmakhilaṃ rājanyathāvadvṛṇayāmi te | trailokyabhāsurānantśavavṛttāntamakṣatam || 3 ||

Fire said: Listen, O king, I will describe to you accurately the entire story of the endless corpse that illuminates the three worlds.

अग्नि ने कहा: सुनो, हे राजा, मैं तुम्हें सही ढंग से तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले अनंत शव की पूरी कहानी बताऊँगा।

7.136.4

अस्त्यनन्तमनाकारं परमं व्योम चिन्मयम् । यत्रेमान्यपसंख्यानि जगन्ति परमाणवः ॥ ४ ॥

asty anantamanākāraṃ paramaṃ vyoma cinmayaṃ | yatre mānyapasaṃkhyāni jaganti paramāṇavaḥ || 4 ||

There exists an infinite, formless, supreme, and consciousness-filled sky, in which countless worlds exist as particles.

एक अनंत, निराकार, परम, और चेतना से भरा आकाश है, जिसमें अनगिनत ब्रह्माण्ड कणों के रूप में मौजूद हैं।

7.136.5

शुद्धचिन्मात्रनभसि तस्मिन्सर्वगते क्वचित् । सर्वात्मन्युदभूत्संवित्संवेदनमयी स्वयम् ॥ ५ ॥

śuddhacinmātranabhasi tasmin sarvagate kvacit | sarvātmanyudabhūtsaṃvitsaṃvedanamayī svayam || 5 ||

In that all-pervading, pure consciousness-filled sky, the self-aware consciousness itself arose, which is the essence of all beings.

उस सर्वव्यापी, शुद्ध, चेतना से भरे आकाश में, स्वयं चेतना उत्पन्न हुई, जो सभी जीवों की आत्मा है।

7.136.6

सा तेजःपरमाणुत्वमपश्यद्वेदनावशात्। भावितार्थात्मकतया स्वप्ने त्वमिव पान्थताम्॥ ६॥

sā tejaḥparamāṇutvamapaśyadvēdanāvaśāt | bhāvitārthātmakatayā svapnē tvamiva pānthatām || 6 ||

She perceived the ultimate particle of light due to the experience of pain, as if you were a traveler in a dream.

उसने दर्द के अनुभव के कारण प्रकाश के परमाणु को देखा, मानो आप स्वप्न में एक यात्री हों।

7.136.7

परमाणुरसंवित्त्वादपश्यदणुतां स्वयम्। भास्वतीं पद्मजरजस्तुल्यां संकल्पनात्मिकाम्॥ ७॥

paramāṇurasaṃvittvādapśyadṇutāṃ svayam | bhāsvatīṃ padmajarajastulyāṃ saṃkalpanātmikām || 7 ||

Due to the lack of consciousness, the ultimate particle perceived itself as minute, like the pollen of a lotus, shining with the nature of imagination.

चेतना के अभाव के कारण, परमाणु ने स्वयं को कमल के पराग की तरह सूक्ष्म और कल्पना की प्रकृति से चमकते हुए देखा।

7.136.8

सोच्छूनतां भावयन्ती पुनरप्यभवत्स्वयम्। चक्षुरादीनीन्द्रियाणि वपुष्यन्वभवत्स्वतः॥ ८॥

socchūnatāṃ bhāvayantī punarapyabhavatsvayam | cakṣurādīnīndriyāṇi vapuṣyanvabhavatsvataḥ || 8 ||

Meditating on the emptiness, it again became itself, and the senses like the eyes naturally arose in the body.

शून्यता पर ध्यान करते हुए, यह फिर से स्वयं बन गया, और आँख जैसी इन्द्रियाँ शरीर में स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हुईं।

7.136.9

अपश्यदग्रे च जगच्चक्षुरादि स्वभावतः। आधाराधेयवद्भूतमयं स्वप्नपुरं यथा॥ ९॥

apaśyadagre ca jagaccakṣurādi svabhāvataḥ | ādhārādheyavadbhūtamayaṃ svapnapuraṃ yathā || 9 ||

Then, it perceived the world with the senses and their nature, as if it were a dream city, with the relationship of support and supported.

फिर, उसने इन्द्रियों और उनकी प्रकृति के साथ संसार को देखा, मानो यह एक स्वप्न नगर हो, सहारा और सहारे के संबंध के साथ।

7.136.10

असुरो नाम तत्रासीत्प्राणी मानी बभूव ह। असत्यप्रतिभासात्म पितृमातृपितामहः॥ १०॥

asuro nāma tatrāsītprāṇī mānī babhūva ha | asatyapratibhāsātma pitṛmātṛpitāmahaḥ || 10 ||

There was a being named Asura, who was proud and became arrogant. He had the nature of false appearances, with ancestors, parents, and grandparents.

वहाँ एक असुर नाम का प्राणी था, जो अभिमानी था और घमंड से भर गया। उसकी प्रकृति झूठी छवियों की थी, पूर्वजों, माता-पिता और दादा-दादी के साथ।

7.136.11

दर्पोत्सिक्ततया तत्र कस्यचित्स महामुनेः। यदा मृदितवानासीदाश्रमं शर्मभाजनम्॥ ११॥

darpotsiktatayā tatra kasyacitsa mahāmuneḥ | yadā mṛditavānāsīdāśramaṃ śarmabhājanam || 11 ||

Due to arrogance, someone there destroyed the peaceful hermitage of the great sage.

अहंकार के कारण, कोई वहाँ महामुनि के शांत आश्रम को नष्ट कर दिया।

7.136.12

मुनिः शापमदात्तस्य महाकारतयाश्रमः । त्वया यन्नाशितो मृत्वा भव त्वं मशकोऽधमः ॥ १२ ॥

muniḥ śāpamadāttasya mahākāratayāśramaḥ | tvayā yannāśito mṛtvā bhava tvaṃ maśako'dhamaḥ || 12 ||

The sage cursed him, saying, 'Since you have destroyed my hermitage, you will become a lowly mosquito after death.'

मुनि ने उसे शाप दिया, कहा, 'तुमने मेरे आश्रम को नष्ट किया है, तो मृत्यु के बाद तुम एक नीच मच्छर बनोगे।'

7.136.13

स तच्छापहुताशोऽथ तस्मिन्नेव तदा क्षणे । असुरं भस्मसाच्चक्रे जलमौर्व इवानलः ॥ १३ ॥

sa tacchāpahutāśo'tha tasmineva tadā kṣaṇe | asuraṃ bhasmasāccakre jalamaurva ivānalaḥ || 13 ||

That very moment, consumed by the curse, he turned the demon into ashes, like fire consuming water.

उसी क्षण में, शाप के कारण, उसने असुर को भस्म कर दिया, जैसे आग पानी को सुखा देती है।

7.136.14

निराकारं निराधारमाकाशवलयोपमम् । चित्तं किंचिदिवाचेत्यमासीच्चेतनमासुरम् ॥ १४ ॥

nirākāraṃ nirādhāramākāśavalayopamam | cittaṃ kiṃcidivācetyamāsīccetanamāsuraṃ || 14 ||

The demon's consciousness became formless, without support, like the vast sky, and somewhat perceptible.

असुर की चेतना निराकार, बिना आधार, विशाल आकाश के समान, और कुछ हद तक अनुभव योग्य हो गई।

7.136.15

तदेकत्वं ययौ साम्याद्भूताकाशेन चेतनम् । तदास्पदेन तत्राथ वायुना चैकतां ययौ ॥ १५ ॥

tadekātvaṃ yayau sāmyādbhūtākāśena cetanam | tadāspadena tatrātha vāyunā caikatāṃ yayau || 15 ||

That consciousness merged with the vast sky due to its similarity, and then it merged with the wind.

वह चेतना अपनी समानता के कारण विशाल आकाश में विलीन हो गई, और फिर वायु में विलीन हो गई।

7.136.16

आसीच्चेतनवातात्माऽभविष्यत्प्राणिनामकः । रजसा पयसा व्याप्तस्तेजसा नभसाणुना ॥ १६ ॥

āsīccetanavātātmā'bhaviṣyatprāṇināmakaḥ | rajasā payasā vyāptastejasā nabhasāṇunā || 16 ||

The conscious being, the vital air, will become known as the living being | It is pervaded by passion, water, fire, and the subtle ether

चेतन वायु आत्मा प्राणी के रूप में जाना जाएगा | यह रज, जल, तेज और सूक्ष्म आकाश से व्याप्त है

7.136.17

स पञ्चतन्मात्रमयश्चिन्मात्रलवकोऽणुकः । स्पन्दमाप स्वभावेन व्योम्नि वातलवो यथा ॥ १७ ॥

sa pañcatanmātramayaścinmātralavako'ṇukaḥ | spandamāpa svabhāvena vyomni vātalavo yathā || 17 ||

That being, composed of the five subtle elements and a particle of pure consciousness, attained motion by its nature, like a particle of air in the sky

वह प्राणी, जो पाँच सूक्ष्म तत्वों और शुद्ध चेतना के कण से बना है, अपने स्वभाव से गति प्राप्त करता है, जैसे आकाश में वायु का कण

7.136.18

अथ तस्यानिलान्तस्थं चेतनं तद्व्यबुध्यत । कालानिलजलैर्भूमौ बीजमङ्कुरकृद्यथा ॥ १८ ॥

atha tasyānilāntasthaṃ cetanaṃ tadvyabudhyata | kālānilajalairbhūmau bījamaṅkurakṛdyathā || 18 ||

Then, the consciousness within that being became aware, like a seed sprouting on the earth due to the passage of time, air, and water

फिर, उस प्राणी के अंदर की चेतना जागृत हुई, जैसे समय, वायु और जल के कारण पृथ्वी पर बीज अंकुरित होता है

7.136.19

शुद्धशापविदन्तस्था मशकत्वविदास्य चित् । वेधिता मशकाङ्गानि विदित्वा मशकोऽभवत् ॥ १९ ॥

śuddhaśāpavidantasthā maśakatvavidāsya cit | vedhitā maśakāṅgāni viditvā maśako'bhavat || 19 ||

The pure consciousness, knowing the curse, entered the form of a mosquito | Having pierced the mosquito's body, it became a mosquito

शुद्ध चेतना, शाप को जानकर, मशक के रूप में प्रवेश कर गई | मशक के शरीर को वेध कर, वह मशक बन गई

7.136.20

स्वेदजस्याल्पदेहस्य निःश्वासनिपतत्तनोः । द्वे तस्य मशकस्येह दिने भवति जीवितम् ॥ २० ॥

svedajasyālpadehasya niḥśvāsanipatattanoḥ | dve tasya maśakasyeha dine bhavati jīvitam || 20 ||

For the mosquito, which has a small body born from sweat, the lifespan is two days due to the falling of breath

स्वेद से उत्पन्न मशक के छोटे शरीर के लिए, साँस के गिरने से दो दिन की आयु होती है

7.136.21

श्रीराम उवाच । प्राणिनामिह सर्वेषां योन्यन्तरज एव किम् । समुद्भवः संभवति किमुतान्योऽपि वा प्रभो ॥ २१ ॥

śrīrāma uvāca | prāṇināmiha sarveṣāṃ yonyantaraja eva kim | samudbhavaḥ saṃbhavati kimutānyo'pi vā prabho || 21 ||

Sri Rama said: Among all living beings here, does rebirth occur only through another womb? Or is there any other way, O Lord?

श्री राम ने कहा: यहाँ सभी प्राणियों का जन्म केवल दूसरे योनि से ही होता है क्या? या कोई और तरीका भी है, हे प्रभो?

7.136.22

श्रीवसिष्ठ उवाच । ब्रह्मादीनां तृणान्तानां द्विधा भवति संभवः । एको ब्रह्ममयोऽन्यस्तु भ्रान्तिजस्ताविमौ शृणु ॥ २२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | brahmādīnāṃ tṛṇāntānāṃ dvidhā bhavati saṃbhavaḥ | eko brahmamayo'nyastu bhrāntijastāvimau śṛṇu || 22 ||

Sri Vasistha said: The origin of all beings, from Brahma to a blade of grass, is twofold. One is of the nature of Brahman, the other is born of delusion. Listen to these two.

श्री वसिष्ठ ने कहा: ब्रह्मा से लेकर एक तिनके तक सभी प्राणियों की उत्पत्ति दो प्रकार की होती है। एक ब्रह्म की प्रकृति का होता है, दूसरा भ्रांति से उत्पन्न होता है। इन दोनों को सुनो।

7.136.23

पूर्वरूढजगद्भ्रान्तिभूततन्मात्ररञ्जनात्। भूतानां संभवः प्रोक्तो भ्रान्तिजो दृश्यसङ्गतः ॥ २३ ॥

pūrvarūḍhajagadbhrāntibhūtatanmātrarañjanāt | bhūtānāṃ saṃbhavaḥ prokto bhrāntijo dṛśyasaṅgataḥ || 23 ||

The origin of beings that arises from delusion is said to be due to the enjoyment of the subtle elements of the world, which is a prior illusion.

भ्रांति से उत्पन्न प्राणियों की उत्पत्ति कही जाती है पूर्व भ्रांति के सूक्ष्म तत्वों के आनंद से, जो दृश्य से जुड़ा हुआ है।

7.136.24

अभातायां जगद्भ्रान्तौ भूतभावः स्वयं भवन्। यः स ब्रह्ममयः प्रोक्तः संभवो न स योनिजः ॥ २४ ॥

abhātāyāṃ jagadbhrāntau bhūtabhāvaḥ svayaṃ bhavan | yaḥ sa brahmamayo proktaḥ saṃbhavaḥ na sa yonijaḥ || 24 ||

In the absence of the world illusion, the nature of beings itself becomes manifest. That is said to be of the nature of Brahman, not born of a womb.

विश्व भ्रांति की अनुपस्थिति में, प्राणियों की प्रकृति स्वयं प्रकट हो जाती है। यह ब्रह्म की प्रकृति का कहा जाता है, योनि से उत्पन्न नहीं है।

7.136.25

एवं स्थिते स मशको जगद्भ्रान्तिवशोत्थितः। न तु ब्रह्मोत्थितस्तस्य राम चेष्टाक्रमं शृणु ॥ २५ ॥

evaṃ sthite sa maśako jagadbhrāntivaśotthitaḥ | na tu brahmotthitas tasya rāma ceṣṭākramam śṛṇu || 25 ||

Thus situated, that mosquito arose due to the influence of the world illusion, not from Brahman. O Rama, listen to the sequence of its activities.

इस प्रकार स्थिति में, वह मच्छर विश्व भ्रांति के प्रभाव से उत्पन्न हुआ, ब्रह्म से नहीं। हे राम, उसके कार्यों की क्रम सुनो।

7.136.26

क्षमेक्षुशष्पकक्षादिपुञ्जगुञ्जेषु गुञ्जता। स्वायुषोऽर्धं दिनं तेन सर्वं भुक्तं विवल्गता ॥ २६ ॥

kṣamekṣuśaṣpakakṣādipuñjaguñjeṣu guñjatā | svāyuṣo'rdhaṃ dinaṃ tena sarvaṃ bhuktam vivalgatā || 26 ||

In the fields of sugarcane, grass, and birds, while humming, half of one's lifespan is spent, and everything is enjoyed in that state.

ईख, घास और पक्षियों के क्षेत्रों में गुनगुनाते हुए, आधा जीवन बीत जाता है, और उस अवस्था में सब कुछ भोगा जाता है।

7.136.27

शाद्वलोदरदोलायां दोलनं बाललीलया। चिरमारब्धमेतेन सार्धं मशिकया स्वयम् ॥ २७ ॥

śādvalodaradolāyāṃ dolanaṃ bālalīlayā | ciramārabdhameten sārdhaṃ maśikayā svayam || 27 ||

In the swing made of grass, the child swings playfully for a long time, along with the female mosquito.

घास के झूले में, बच्चा खेल-खेल में लंबे समय तक झूलता है, मादा मच्छर के साथ।

7.136.28

दोलाश्रमार्तस्तत्रासौ यावद्विश्राम्यति क्वचित्। तावद्धरिणपादाग्रगिरिपातेन चूर्णितः ॥ २८ ॥

dolāśramārtastatrāsau yāvadviśrāmyati kvacit | tāvaddhariṇapādāgragiripātena cūrṇitaḥ || 28 ||

Exhausted from swinging, he rests there for a while, but is crushed by the fall of a deer's hoof from a mountain.

झूलने से थककर, वह कुछ देर के लिए वहाँ विश्राम करता है, लेकिन एक हिरण के खुर के पहाड़ से गिरने से कुचल दिया जाता है।

7.136.29

हरिणाननसंदर्शत्यक्तप्राणतया तया । पूर्वक्रमगृहीताक्षः स जातो हरिणस्ततः ॥ २९ ॥

hariṇānanasaṃdarśatyaktaprāṇatayā tayā | pūrvakramagṛhītākṣaḥ sa jāto hariṇastataḥ || 29 ||

Seeing the face of the deer, he dies, and due to his previous actions, he is reborn as a deer.

हिरण का चेहरा देखकर, वह मर जाता है, और अपने पूर्व कर्मों के कारण, वह हिरण के रूप में जन्म लेता है।

7.136.30

विहरन्हरिणोऽरण्ये व्याधेन धनुषा हतः । व्याधाननगदृष्टित्वात्संजातो व्याध एव सः ॥ ३० ॥

viharanhariṇo'raṇye vyādhena dhanuṣā hataḥ | vyādhānanagadṛṣṭitvātsaṃjāto vyādha eva saḥ || 30 ||

While roaming in the forest as a deer, he is killed by a hunter with a bow. Due to seeing the hunter's face at the time of death, he is reborn as a hunter.

जंगल में हिरण के रूप में घूमते हुए, वह एक शिकारी द्वारा धनुष से मारा जाता है। मृत्यु के समय शिकारी का चेहरा देखने के कारण, वह शिकारी के रूप में जन्म लेता है।

7.136.31

व्याधो वनेषु विहरन्संयातो मुनिकाननम् । तत्र विश्रान्तवान्सङ्गान्मुनिना प्रतिबोधितः ॥ ३१ ॥

vyādho vaneṣu viharansaṃyāto munikānanam| tatra viśrāntavānsaṅgānmuminā pratibodhitaḥ || 31 ||

A hunter, wandering in the forest, entered the hermitage of a sage. There, he rested and was awakened by the sage.

एक शिकारी, जंगल में घूमते हुए, एक ऋषि के आश्रम में पहुंचा। वहां उसने विश्राम किया और ऋषि द्वारा जगाया गया।

7.136.32

भ्रान्तः किमिदमादीर्घदुःखाय धनुषा मृगान् । हंसि पासि न कस्मात्त्वं तन्त्रं जगति भङ्गुरे ॥ ३२ ॥

bhrāntaḥ kimidamādīrghaduḥkhāya dhanuṣā mṛgān| haṃsi pāsi na kasmāttvaṃ tantraṃ jagati bhaṅgure || 32 ||

Confused, why do you kill deer with your bow, causing long-lasting suffering? You kill and protect, but why do you not realize the transient nature of the world?

भ्रमित, आप अपने धनुष से हिरन को मारकर लंबे समय तक दुःख पहुंचाते हैं, क्यों? आप मारते हैं और बचाते हैं, पर आप इस नश्वर संसार की अस्थिरता को क्यों नहीं समझते?

7.136.33

आयुर्वायुविघट्टिताभ्रपटलीलम्बाम्बुवद्भङ्गुरं भोगा मेघवितानमध्यविलसत्सौदामनीचञ्चलाः । लोला यौवनलालना जलरयः कायः क्षणापायवान्पुत्र त्रासमुपेत्य संसृतिवशान्निर्वाणमन्विष्यतां ॥ ३३ ॥

āyurvāyuvighaṭṭitābhrapaṭalīlambāmbuvadbhaṅguraṃ bhogā meghavitānamadhyavilasatsaudāmanīcañcalāḥ| lolā yauvanalālanā jalarayaḥ kāyaḥ kṣaṇāpāyavānputra trāsamupetya saṃsṛtivaśānnirvāṇamanviṣyatāṃ || 33 ||

Life is as fragile as water droplets hanging from clouds dispersed by the wind. Pleasures are as fleeting as lightning flashing in the sky. Youth is fickle, the body is ephemeral, and wealth is like a mirage. O son, seek liberation from the cycle of birth and death.

जीवन हवा से छिन्न-भिन्न बादलों की बूंदों की तरह नाज़ुक है। भोग आकाश में चमकती बिजली की तरह अस्थायी हैं। युवावस्था चंचल है, शरीर क्षणभंगुर है, और धन मृगतृष्णा की तरह है। हे पुत्र, जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की खोज करो।

Chapter 137

7.137.1

व्याध उवाच । एवं चेत्तन्मुने ब्रूहि कीदृग्दुःखपरिक्षये । न कर्कशो न च मृदुर्व्यवहारक्रमो भवेत् ॥ १ ॥

vyādha uvāca | evaṃ cet tan mune brūhi kīdṛgduḥkha-parikṣaye | na karkaśo na ca mṛdur vyavahāra-kramo bhavet || 1 ||

The hunter said, 'O sage, if that is the case, then tell me how to end the suffering. Let the course of action be neither harsh nor soft.'

शिकारी ने कहा, 'हे मुनि, यदि ऐसा है, तो मुझे बताएं कि दुःख का अंत कैसे हो सकता है। व्यवहार का क्रम न कठोर हो, न ही नरम हो।'

7.137.2

मुनिरुवाच । इदानीमेव संत्यज्य धनुषा सह सायकान् । मौनमाचारमाश्रित्य शान्तदुःखमिहोष्यताम् ॥ २ ॥

munir uvāca | idānīm eva saṃtyajya dhanuṣā saha sāyakān | maunam ācāram āśritya śānta-duḥkham ihoṣyatām || 2 ||

The sage said, 'Now, immediately abandon your bow and arrows. Adopt the practice of silence and be free from suffering here.'

मुनि ने कहा, 'अब, तुरंत अपने धनुष और तीरों को छोड़ दें। मौन का आचार अपनाएं और यहां दुःख से मुक्त हो जाएं।'

7.137.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । इति संबोधितस्तेन परित्यज्य धनुःशरान् । आसीन्मुनिसमाचारस्तत्रैवायाचिताशनः ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iti saṃbodhitas tena parityajya dhanuḥśarān | āsīn muni-samācāras tatraiva āyācitāśanaḥ || 3 ||

Vasishtha said, 'Thus addressed by the sage, the hunter abandoned his bow and arrows. He sat there, practicing the conduct of a sage, subsisting on unsolicited food.'

वसिष्ठ ने कहा, 'इस प्रकार मुनि द्वारा संबोधित होकर, शिकारी ने अपने धनुष और तीरों को छोड़ दिया। वह वहीं बैठा था, एक मुनि के आचार का पालन करते हुए, अनुरोध किए बिना मिले भोजन पर जीवित रहा।'

7.137.4

विवेश मनसा मौनी ततः शास्त्रविवेकिताम् । दिनैरेव यथा पुष्पमामोदेन नराशयम् ॥ ४ ॥

viveśa manasā maunī tataḥ śāstravivekitām | dinair eva yathā puṣpam āmodena narāśayam || 4 ||

He entered into the discernment of the scriptures with a silent mind. Just as a flower blossoms with fragrance over time, so did his understanding grow.

उसने मन से मौन होकर शास्त्रों की विवेकपूर्ण समझ में प्रवेश किया। जैसे एक फूल समय के साथ सुगंध के साथ खिलता है, वैसे ही उसकी समझ भी बढ़ी।

7.137.5

अपृच्छन्मुनिशार्दूलं कदाचित्तमरिन्दम । भगवन्दृश्यते स्वप्नः कथमन्तर्बहिः स्थितः ॥ ५ ॥

apṛcchan muniśārdūlaṃ kadācittam arindama | bhagavandṛśyate svapnaḥ katham antarbahiḥ sthitaḥ || 5 ||

Once, the subduer of enemies asked the lion among sages, 'O Lord, how does a dream appear both within and without?'

एक बार, शत्रुओं को जीतने वाले ने मुनियों में सिंह से पूछा, 'हे भगवान, स्वप्न भीतर और बाहर दोनों जगह कैसे दिखाई देता है?'

7.137.6

मुनिरुवाच । ममापि साधो प्रथममेष एव विवेकिनः । पुरा चित्ते वितर्कोऽभूत्कुतोऽप्यभ्रमिवाम्बरे ॥ ६ ॥

muniruvāca | mamāpi sādho prathamameṣa eva vivekinaḥ | purā citte vitarko'bhūtkuto'pyabhramivāmbare || 6 ||

The sage said: O virtuous one, even for me, this was the first thought of the discerning mind. In the past, a doubt arose in my mind, like a cloud in the sky.

मुनि ने कहा: हे साधु, मेरे लिए भी यह पहला विचार था। पहले, मेरे मन में एक संदेह उत्पन्न हुआ, जैसे आकाश में बादल।

7.137.7

तत एतद्दिदृक्षार्थमहमभ्यस्तधारणः । बद्धपद्मासनस्तस्यां संविद्येवाभवं स्थिरः ॥ ७ ॥

tata etaddidṛkṣārthamahamabhyastadhāraṇaḥ | baddhapadmāsanastasyāṃ saṃvidyevābhavaṃ sthiraḥ || 7 ||

Then, for the purpose of seeing this, I practiced concentration. Bound in the lotus posture, I became steady in that awareness.

तब, इसे देखने के लिए, मैंने धारणा का अभ्यास किया। पद्मासन में बैठकर, मैं उस चेतना में स्थिर हो गया।

7.137.8

तत्रस्थो दूरविक्षिप्तं तयैवाहृतवानहम् । चेतः स्वहृदयं सायं रुचेव रविरातपम् ॥ ८ ॥

tatrastho dūravikṣiptaṃ tayaivāhṛtavānahaṃ | cetaḥ svahṛdayaṃ sāyaṃ ruceva ravirātapam || 8 ||

Being there, I brought back the mind that was distracted far away, just as the sun withdraws its heat in the evening.

वहाँ रहते हुए, मैंने दूर भटके हुए मन को वापस लाया, जैसे सूर्य शाम को अपनी गर्मी को वापस लेता है।

7.137.9

वेदनेरणया प्राणस्ततश्चित्तान्वितो मया । शरीराद्रेचितो बाह्ये सौरभं कुसुमादिव ॥ ९ ॥

vedanerṇayā prāṇastataścittānvito mayā | śarīrādrecito bāhye saurabhaṃ kusumādiva || 9 ||

By the power of perception, the life force, accompanied by the mind, was expelled from the body to the outside, like the fragrance from a flower.

अनुभूति की शक्ति से, प्राण, मन के साथ, शरीर से बाहर निकाला गया, जैसे फूल से सुगंध।

7.137.10

व्योमस्थचित्तवलितः स प्राणपवनो मया । अग्रस्थस्य मुखाग्रस्थे जन्तोः प्राणे नियोजितः ॥ १० ॥

vyomastacittavalitaḥ sa prāṇapavano mayā | agrasthasya mukhāgrasthe jantoḥ prāṇe niyojitaḥ || 10 ||

That life force, enveloped by the mind situated in the sky, was directed by me into the breath of the being situated at the tip of the mouth.

वह प्राण, आकाश में स्थित मन से घिरा हुआ, मेरे द्वारा मुख के अग्रभाग में स्थित जीव के प्राण में निर्देशित किया गया।

7.137.11

यः प्राणवलितः प्राणस्तेन नीतो हृदन्तरम् । स्वेहया स्वं स्वकः सर्पः करभेणेव हिंसितः ॥ ११ ॥

yaḥ prāṇavalitaḥ prāṇastena nīto hṛdantaram | svehayā svaṃ svakaḥ sarpaḥ karabheṇeva hiṃsitaḥ || 11 ||

The breath that is filled with life is drawn into the heart | By its own nature, the serpent, as if struck by a saw, is drawn into itself

जो प्राण जीवन से भरा हुआ है, वह हृदय में ले जाया जाता है | अपनी ही प्रकृति से, सर्प को आरे से मारे जाने की तरह, अपने में खींचा जाता है

7.137.12

ततोऽहं हृदयं तस्य प्रविष्टः प्राणवाजिना । संकटस्थः स्वया बुद्ध्या तावेबानुसरोन्तरम् ॥ १२ ॥

tato'haṃ hṛdayaṃ tasya praviṣṭaḥ prāṇavājinā | saṃkaṭasthaḥ svayā buddhyā tāvebānusaronantaram || 12 ||

Then I, having entered his heart with the speed of breath, being in a difficult situation, followed them with my own intelligence

तब मैं, प्राण की गति से उसके हृदय में प्रवेश करके, कठिन स्थिति में होने के बावजूद, अपनी बुद्धि से उनका अनुसरण करता रहा

7.137.13

चरद्रसाभिर्बह्वीभिर्नाडीभिरभितो वृतम् । कुल्याभिः स्थूलतन्वीभिर्बाह्यदेशमिवाखिलम् ॥ १३ ॥

caradrasābhirbahvībhirnāḍībhirabhito vṛtam | kulyābhiḥ sthūlatanvībhirbāhyadeśamivākhilam || 13 ||

Surrounded on all sides by many moving fluids and channels, both thick and thin, like the entire external region

बहुत से चलते हुए रसों और नाड़ियों से चारों ओर घिरा हुआ, मोटी और पतली दोनों तरह की, मानो सम्पूर्ण बाहरी क्षेत्र की तरह

7.137.14

पर्शुकापञ्जरप्लीहयकृद्रक्तादिडिम्बकैः । संकटं जीवसदनं भाण्डोपस्करणैरिव ॥ १४ ॥

parśukāpañjaraplīhayakṛdraktādiḍimbakaiḥ | saṃkaṭaṃ jīvasadanaṃ bhāṇḍopaskarṇairiva || 14 ||

With the spleen, liver, heart, blood, and other organs, the abode of life is narrow like a collection of vessels

तिल्ली, यकृत, हृदय, रक्त और अन्य अंगों के साथ, जीवन का निवास स्थान एक बर्तनों के समूह की तरह संकरा है

7.137.15

सर्वैः शलशलायद्भिरुष्णैरवयवैर्वृतम् । निदाघतापसंतप्तैरूर्मिजालैरिवार्णवम् ॥ १५ ॥

sarvaiḥ śalaśalāyadbhiruṣṇairavayavairvṛtam | nidāghatāpasantaistairūrmijālairivārṇavam || 15 ||

Surrounded by all the hot, trembling limbs, as if by the waves of the ocean heated by the summer sun

सभी गर्म, काँपते हुए अंगों से घिरा हुआ, मानो गर्मी की धूप से तपे हुए समुद्र की लहरों से

7.137.16

नवं नवं बहिःशैत्यं नासाग्राच्चेतनात्मकम् । जीवनायानिशं चेतो वातोन्नीतमनारतम् ॥ १६ ॥

navaṃ navaṃ bahiḥśaityaṃ nāsāgrāccetanātmakam| jīvanāyāniśaṃ ceto vātonnītamanāratam|| 16 ||

New and new external coldness, consciousness from the tip of the nose, mind always for life, continuously moved by the wind.

नवीन और नवीन बाहरी ठंड, नासिका के अग्र से चेतना, जीवन के लिए हमेशा मन, हवा से लगातार हिलता हुआ।

7.137.17

रक्तकुट्टरसश्लेष्मवसानिःस्रावपिच्छिलम् । घनान्धकारमुष्णं च संकटं नरकोपमम् ॥ १७ ॥

raktakuṭṭarasśleṣmavasāniḥsrāvapiścilam| ghanāndhakāramuṣṇaṃ ca saṃkaṭaṃ narakopamam|| 17 ||

Red, bitter, phlegm, fat, continuous discharge, sticky, dense darkness, hot, and difficult, like hell.

लाल, कड़वा, कफ, वसा, निरंतर स्राव, चिपचिपा, घना अंधकार, गर्म, और कठिन, नरक के समान।

7.137.18

उदयावयवाश्लेषस्पष्टास्पष्टमरुद्रतैः । स्थित्यन्तानां तु वैषम्यादागामिगदसूचकम् ॥ १८ ॥

udayāvayavāśleṣaspṣṭāspṣṭamrudraiḥ| sthityantānāṃ tu vaiṣamyādāgāmigadasūcakam|| 18 ||

The union of the parts of the body, clear and unclear by the wind, indicates the imbalance of the elements, suggesting future diseases.

शरीर के अंगों का संयोग, हवा से स्पष्ट और अस्पष्ट, तत्वों की असंतुलन का संकेत देता है, जो भविष्य में रोगों की सूचना देता है।

7.137.19

दरत्सरभसच्छिद्रावातवातेन शब्दितम् । पद्मनालप्रणालान्तर्ज्वलदर्णववाडवम् ॥ १९ ॥

daratsarabhasacchidrāvātavātena śabditam| padmanālapraṇālāntarjvaladarṇavavāḍavam|| 19 ||

The sound made by the wind through the holes and cracks, like the sound of a storm in the hollow of a lotus stalk.

हवा के द्वारा छेदों और दरारों से होने वाली आवाज, कमल के डंठल के खोखले में आंधी की आवाज के समान।

7.137.20

मिलत्पदार्थनीरन्ध्रं सितमच्छं सवायुभिः । क्वचित्सौम्यं क्वचित्क्षुब्धं चोरैरिव पुरं निशि ॥ २० ॥

milatpadārthnīrandhraṃ sitamacchaṃ savāyubhiḥ| kvacitsauṃyaṃ kvacitkṣubdhaṃ corairiva puraṃ niśi|| 20 ||

The combination of elements, pure and clear, with air, sometimes calm, sometimes agitated, like a city at night with thieves.

तत्वों का संयोग, शुद्ध और स्पष्ट, हवा के साथ, कभी शांत, कभी उत्तेजित, रात में चोरों से भरी नगर की तरह।

7.137.21

रसनादपरैर्नाडीमार्गविद्याधराध्वगैः । संचरद्भिर्वृतं वातैराकारार्धार्धगीतिभिः ॥ २१ ॥

rasanādaparairnāḍīmārgavidyādharādhvagaiḥ | saṃcaradbhirvṛtaṃ vātairākārārdhārdhagītibhiḥ || 21 ||

The path of the nadis (energy channels) is filled with the movement of the vital airs (prana), which are like the Vidyadharas (celestial beings) moving through the sky, singing half-songs.

नाड़ियों का मार्ग विद्याधरों के समान आकाश में चलने वाले प्राण वायुओं से भरा हुआ है, जो अधूरे गीत गाते हुए चलते हैं।

7.137.22

तदहं हृदयं जन्तोराविशं विषमान्तरम् । नरोऽवयवसंबाधं नरवृन्दमिवाधिकः ॥ २२ ॥

tadahaṃ hṛdayaṃ jantorāviśaṃ viṣamāntaram | naro'vayavasaṃbādhaṃ naravṛndamivādhikaḥ || 22 ||

Then I entered the heart of the living being, which is filled with various parts, like a multitude of men.

तब मैं जीव के हृदय में प्रवेश किया, जो विभिन्न अंगों से भरा हुआ है, जैसे एक समूह मनुष्य।

7.137.23

अनन्तरमहं प्राप्तस्तेजोधातुं हृदन्तरे । दूरस्थमिव यत्नेन रात्राविन्दुमिवार्करुक् ॥ २३ ॥

anantaramahaṃ prāptastejodhātuṃ hṛdantare | dūrasthamiva yatnena rātrāvindumivārkaruk || 23 ||

Immediately after, I reached the element of fire within the heart, which seemed distant, like the moon at night, with effort.

तुरंत बाद, मैं हृदय के अंदर अग्नि तत्व तक पहुंचा, जो दूर प्रतीत होता था, जैसे रात में चंद्रमा, प्रयास से।

7.137.24

यस्मात्त्रिभुवनादर्शो दीपस्त्रैलोक्यवस्तुषु । सत्ता सर्वपदार्थानां जीवस्तत्रावतिष्ठते ॥ २४ ॥

yasmāttribhuvanādarśo dīpastrailokyavastuṣu | sattā sarvapadārthānāṃ jīvastatrāvatiṣṭhate || 24 ||

From which the mirror of the three worlds, the lamp of the three realms, the existence of all objects, the life resides there.

जिससे तीनों लोकों का दर्पण, तीनों लोकों का दीपक, सभी पदार्थों का अस्तित्व, जीवन वहां निवास करता है।

7.137.25

काये सर्वगतो जीवः स्वामोदः कुसुमे यथा । तथाप्योजसि किञ्जल्कैर्मुखे शैत्यं विवस्वता ॥ २५ ॥

kāye sarvagato jīvaḥ svāmodaḥ kusume yathā | tathāpyojasi kiñjalkairmukhe śaityaṃ vivasvatā || 25 ||

The life that pervades the entire body, like the fragrance in a flower, still, in the radiance, with rays, the coolness in the mouth is by the sun.

शरीर में फैला हुआ जीवन, जैसे फूल में सुगंध, फिर भी, चमक में, किरणों के साथ, मुंह में ठंडक सूर्य से है।

7.137.26

तज्जीवाधारमोजस्तु प्रविष्टोऽहमलक्षितम् । रक्षितं परितः प्राणैर्वातैः प्रच्छादनं यथा ॥ २६ ॥

tajjīvādhāramojastu praviṣṭo'hamalakṣitam | rakṣitaṃ paritaḥ prāṇairvātaiḥ pracchādanaṃ yathā || 26 ||

I entered unnoticed, the vital energy that sustains life, protected all around by the winds, like a covering.

मैंने अपने आप को जीवन की ऊर्जा के रूप में अप्रत्यक्ष रूप से प्रवेश किया, जो चारों ओर वायुओं द्वारा सुरक्षित था, जैसे एक आवरण की तरह।

7.137.27

ततोऽञ्जः संप्रविष्टोऽहमामोद इव मारुतम् । उष्णांशुरिव शीतांशुं मृत्पात्रमिव वा पयः ॥ २७ ॥

tato'ñjaḥ saṃpraviṣṭo'hamāmoda iva mārutam | uṣṇāṃśuriva śītāṃśuṃ mṛtpātramiva vā payaḥ || 27 ||

Then I entered the anja (a type of vessel) like fragrance entering the wind, like the hot ray entering the cold ray, like water entering an earthen pot.

फिर मैंने अञ्ज (एक तरह के पात्र) में प्रवेश किया, जैसे सुगंध हवा में प्रवेश करती है, जैसे गर्म किरण ठंडी किरण में प्रवेश करती है, जैसे पानी मिट्टी के बर्तन में प्रवेश करता है।

7.137.28

द्वितीयेन्द्वंशुसंकाशे शुक्लाभ्रलवपेलवे । नवनीतगुडप्रख्ये क्षीरबुद्बुदसुन्दरे ॥ २८ ॥

dvitīyendvaṃśusaṃkāśe śuklābhralavapelave | navanītaguḍaprakhye kṣīrabudbudasundare || 28 ||

In the second, it appeared like the moon's rays, like a small white cloud, like fresh butter and jaggery, beautiful like milk bubbles.

दूसरे में, यह चाँद की किरणों की तरह, एक छोटे सफेद बादल की तरह, ताजा मक्खन और गुड़ की तरह, दूध के बुलबुलों की तरह सुंदर दिखाई दिया।

7.137.29

तत्र पश्याम्यहं तिष्ठन्प्रवेशव्यग्रयोज्झितः । स्वौजसीव वसन्स्वप्न इव विश्वमखण्डितम् ॥ २९ ॥

tatra paśyāmyahaṃ tiṣṭhanpraveśavyagrayojjhitaḥ | svaujasīva vasan svapna iva viśvamakhāṇḍitam || 29 ||

There, I saw myself standing, free from the anxiety of entry, dwelling in my own vital energy, as if in a dream, the undivided universe.

वहाँ, मैंने खुद को खड़ा देखा, प्रवेश की चिंता से मुक्त, अपनी जीवन ऊर्जा में निवास करते हुए, जैसे स्वप्न में, अविभाजित ब्रह्माण्ड।

7.137.30

सार्कं सपर्वतं साब्धि ससुरासुरमानवम्। सपत्तनवनाभोगं सलोकान्तरदिङ्मुखम्॥ ३०॥

sārkaṃ saparvataṃ sābdhi sasurāsuramānavam | sapattanavanābhogaṃ salokāntaradiṅmukham || 30 ||

With the sun, with mountains, with the ocean, with gods and demons and humans, with cities and forests and enjoyments, with other worlds and directions.

सूर्य के साथ, पर्वतों के साथ, समुद्र के साथ, देवताओं, असुरों और मनुष्यों के साथ, नगरों और वनों और भोगों के साथ, अन्य लोकों और दिशाओं के साथ।

7.137.31

सद्वीपसागराम्भोधि सकालकरणक्रमम्। सकल्पक्षणसर्वर्तु सहस्थावरजंगमम्॥ ३१॥

sadvīpasāgarāmbhodhi sakālakaraṇakramam | sakalpakṣaṇasarvartu sahasthāvarajaṅgamam || 31 ||

In the vast ocean of existence, encompassing all islands and seas, the cycle of time and action, all moments, seasons, and all beings, both moving and non-moving.

अस्तित्व के विशाल सागर में, जिसमें सभी द्वीप और समुद्र, समय और कर्म का चक्र, सभी क्षण, ऋतुएं, और सभी चराचर प्राणी शामिल हैं।

7.137.32

तत्स्वप्नदर्शनं तत्र स्थिरमेव समं स्थितम्। वसाम्यत्येव निद्रान्ते निद्राऽन्ते नागता यतः॥ ३२॥

tatsvapnadarśanaṃ tatra sthirameva samaṃ sthitam | vasāmyatyeva nidrānte nidrā'nte nāgatā yataḥ || 32 ||

The vision of that dream is steadfast and balanced there. I dwell in the end of sleep because sleep has not come to an end.

उस स्वप्न का दर्शन वहाँ स्थिर और संतुलित है। मैं नींद के अंत में रहता हूँ क्योंकि नींद समाप्त नहीं हुई है।

7.137.33

अनिद्र एव किं स्वप्नं पश्यामीति मया ततः। परिचिन्तयता ज्ञातमिदं व्याध विबोधिना॥ ३३॥

anidra eva kiṃ svapnaṃ paśyāmīti mayā tataḥ | paricintayatā jñātamidaṃ vyādha vibodhinā || 33 ||

Being awake, I wonder, 'Why do I see this dream?' Thus, contemplating, this was known to me by the awakener, the hunter.

जाग्रत अवस्था में, मैं सोचता हूँ, 'मैं इस स्वप्न को क्यों देख रहा हूँ?' इस प्रकार, सोच-विचार करते हुए, यह मुझे जगाने वाले, शिकारी द्वारा ज्ञात हुआ।

7.137.34

ननु नामास्य चिद्धातोः स्वरूपमिदमैश्वरम्। स्वं यद्व्यपदिशत्येष जगन्नाम्नाम्बरात्मकम्॥ ३४॥

nanu nāmāsya ciddhātoḥ svarūpamidamaiśvaram | svaṃ yadvyapadiśatyēṣa jagannāmnāmbarātmakam || 34 ||

Indeed, this is the divine form of the essence of consciousness, which this one indicates as the self, which is the embodiment of the names of the world.

निश्चय ही, यह चेतना की आत्मा का दिव्य रूप है, जिसे यह (व्यक्ति) स्वयं को इंगित करता है, जो विश्व के नामों का स्वरूप है।

7.137.35

चिद्धातुर्यत्र यत्रास्ते तत्र तत्र निजं वपुः । पश्यत्येष जगद्रूपं व्योमतामेव चात्यजत् ॥ ३५ ॥

ciddhāturyatra yatryāste tatra tatra nijaṃ vapuḥ | paśyatyēṣa jagadrūpaṃ vyomatāmeva cātyajat || 35 ||

Wherever the essence of consciousness exists, there it manifests its own form. This one sees the form of the world and indeed abandons the state of the sky.

जहाँ-जहाँ चेतना की आत्मा है, वहाँ-वहाँ वह अपना रूप प्रकट करती है। यह (व्यक्ति) विश्व के रूप को देखता है और निश्चय ही आकाश की अवस्था को त्याग देता है।

7.137.36

अहो त्वद्येदमाज्ञातं यदित्थं दृश्यते जगत् । तत्कथ्यते स्वप्न इति स्वचित्कचनमात्रकम् ॥ ३६ ॥

aho tvadyedamājñātaṃ yadittthaṃ dṛśyate jagat | tatkathyate svapna iti svacitkacanamātrakam || 36 ||

Oh, it is amazing and unknown how this world appears as it does | It is said to be a dream, merely a creation of one's own consciousness || 36 ||

अहो, यह आश्चर्यजनक और अज्ञात है कि यह जगत इस प्रकार दिखाई देता है | यह स्वप्न कहा जाता है, केवल अपने चेतना का निर्माण || ३६ ||

7.137.37

चिद्धातोर्यत्स्वकचनं तत्किंचित्स्वप्न उच्यते । किंचिच्च जाग्रदित्युक्तं जाग्रत्स्वप्नौ तु न द्विधा ॥ ३७ ॥

ciddhātor yatsvakacanaṃ tatkiṃcitsvapna ucyate | kiṃcicca jāgradityuktaṃ jāgratsvapnau tu na dvihā || 37 ||

That which is a small part of the consciousness principle is called a dream | A little is also said to be the waking state | But the waking and dream states are not two different things || 37 ||

जो चेतना का एक छोटा अंश है, वह स्वप्न कहलाता है | थोड़ा सा जाग्रत अवस्था भी कहा जाता है | लेकिन जाग्रत और स्वप्न अवस्थाएँ दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं || ३७ ||

7.137.38

स्वप्नः स्वप्नो जागरायामेष स्वप्ने तु जागरा । स्वप्नस्तु जागरैवेति जागरैव स्थिता द्विधा ॥ ३८ ॥

svapnaḥ svapno jāgarāyāmeṣa svapne tu jāgarā | svapnastu jāgaraiveti jāgaraiva sthitā dvihā || 38 ||

The dream is a dream in the waking state | In the dream, it is the waking state | Thus, the dream is the waking state itself | The waking state is established in two ways || 38 ||

स्वप्न जाग्रत अवस्था में स्वप्न है | स्वप्न में, यह जाग्रत अवस्था है | इस प्रकार, स्वप्न जाग्रत अवस्था स्वयं है | जाग्रत अवस्था दो तरीकों से स्थापित है || ३८ ||

7.137.39

चेतनं नाम पुरुषः स मृतेषु शतेष्वपि । शरीरेषु महाबुद्धे कथं कस्य कदा मृतः ॥ ३९ ॥

cetanaṃ nāma puruṣaḥ sa mṛteṣu śateṣvapi | śarīreṣu mahābuddhe kathaṃ kasya kadā mṛtaḥ || 39 ||

The conscious being is called Purusha | Even among hundreds of dead bodies | O wise one, how, of whom, and when is he dead? || 39 ||

चेतन पुरुष कहलाता है | सैकड़ों मृत शरीरों में भी | हे महाबुद्धिमान, कैसे, किसका, और कब वह मरा? || ३९ ||

7.137.40

तच्चेतनं खमेवास्ति स्थितं तद्देहवत्कचत्। अनन्तमविभागात्म प्रतिघाप्रतिघात्मकम्॥ ४०॥

taccetanaṃ khamevāsti sthitaṃ taddehavatkacat | anantamavibhāgātma pratighāpratighātmakam || 40 ||

That consciousness exists as space itself | It is established as if it has a body | It is infinite, indivisible, and of the nature of resistance and non-resistance || 40 ||

वह चेतना आकाश स्वयं के रूप में अस्तित्व रखती है | यह मानो शरीर वाली स्थापित है | यह अनंत, अविभाज्य, और प्रतिघा और अप्रतिघा की प्रकृति की है || ४० ||

7.137.41

स्वभावस्याप्रतिघस्य नित्यानन्तोदितात्मनः। परमाणोश्चिदाख्यस्य मज्जा जगदिति स्मृतः॥ ४१॥

svabhāvasyāpratighasya nityānanto'ditātmanaḥ | paramāṇośćidākhyasya majjā jagaditi smṛtaḥ || 41 ||

The eternal, infinite, and self-luminous nature, which is unobstructed, is known as the essence of the universe.

अपरिहार्य, नित्य, अनन्त और स्वयंप्रकाशित स्वभाव को ब्रह्मांड का सार कहा जाता है।

7.137.42

चिद्व्योम्न उदरे भान्ति समस्तानुभवाणवः। तथा यथावयविनो विचित्रावयवाणवः॥ ४२॥

cidvyomna udare bhānti samastānubhavāṇavaḥ | tathā yathāvayavino vicitrāvayavāṇavaḥ || 42 ||

All experiences shine in the space of consciousness, just as the various parts of a composite object shine in their respective places.

सभी अनुभव चेतना के अंतरिक्ष में चमकते हैं, जैसे कि एक संयुक्त वस्तु के विभिन्न भाग अपने-अपने स्थान पर चमकते हैं।

7.137.43

निवृत्तो बाह्यतो जीवो जीवाधारे हृदि स्थितः। रूपं स्वं स्वप्नसर्गोऽयमिति वेत्ति चिदाकचान्॥ ४३॥

nivṛtto bāhyato jīvo jīvādhāre hṛdi sthitaḥ | rūpaṃ svaṃ svapnasargo'yamiti vetti cidākacān || 43 ||

The individual soul, having withdrawn from external objects, resides in the heart, the support of life, and knows that this world is like a dream.

जीवात्मा, बाहरी वस्तुओं से हटकर, जीवन के आधार हृदय में रहता है, और यह जानता है कि यह संसार स्वप्न के समान है।

7.137.44

बाह्योन्मुखं बहिर्जाग्रच्छब्दितं कचितं स्वकम्। रूपं पश्यति जीवोऽयमन्तस्थं स्वप्न इत्यपि॥ ४४॥

bāhyonmukhaṃ bahirjāgracchabditaṃ kacitaṃ svakam | rūpaṃ paśyati jīvo'yamantasthaṃ svapna ityapi || 44 ||

This individual soul, turned outward, sees its own form as external, awake, and distinct, yet also sees it as internal, like a dream.

यह जीवात्मा, बाहर मुड़ा हुआ, अपने रूप को बाहरी, जाग्रत, और अलग देखता है, लेकिन इसे अंतर्निहित भी देखता है, जैसे कि स्वप्न।

7.137.45

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः। प्रसृतो जीव इत्यन्तर्बहिश्चैकात्मकः स्थितः॥ ४५॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ | prasṛto jīva ityantarbahiścaikātmakaḥ sthitaḥ || 45 ||

The sky, earth, air, space, mountains, rivers, and directions are all pervaded by the individual soul, which is one and the same within and without.

आकाश, पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष, पर्वत, नदियाँ, और दिशाएँ सभी जीवात्मा से व्याप्त हैं, जो अंदर और बाहर एक ही है।

7.137.46

अर्कोऽर्कबिम्बसंस्थोऽपि यथेहापि स्थितस्त्विषा । तथा जीवो जगद्रूपो बहिरन्तश्च संस्थितः ॥ ४६ ॥

arko'rkabimbasaṃstho'pi yathehāpi sthitastviṣā | tathā jīvo jagadrūpo bahirantaśca saṃsthitaḥ || 46 ||

Just as the sun's reflection is present in water, so too the individual soul, in the form of the universe, is present both within and without.

जैसे सूर्य का प्रतिबिम्ब जल में स्थित होता है, वैसे ही जीव विश्वरूप में बाहर और अंदर दोनों जगह स्थित है।

7.137.47

अन्तःस्वप्नो बहिर्जाग्रदहमेवेति वेत्ति चेत् । चिदात्मको यथाभूतं मुच्यते तदवासनः ॥ ४७ ॥

antaḥsvapno bahirjāgradahameveti vetti cet | cidātmako yathābhūtaṃ mucyate tadavāsanaḥ || 47 ||

If one understands that the inner dream and the outer waking state are both 'I,' then one, who is of the nature of consciousness, is liberated from that desire.

यदि कोई यह समझता है कि अंतर स्वप्न और बाहर जाग्रत अवस्था दोनों 'मैं' हैं, तो चेतना के स्वभाव वाला व्यक्ति उस इच्छा से मुक्त हो जाता है।

7.137.48

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमपि जीवोऽन्यथा वदन् । द्वैतसंकल्पयक्षेण मुह्यत्येव शिशुर्यथा ॥ ४८ ॥

acchedyo'yamadāhyo'yamapi jīvo'nyathā vadan | dvaitasaṃkalpayakṣeṇa muhyatyeva śiśuryathā || 48 ||

This individual soul is indestructible and incombustible. If one speaks otherwise, one is deluded by the illusion of duality, like a child.

यह जीव अविनाशी और अदहनीय है। यदि कोई इसके विपरीत कहता है, तो वह द्वैत के भ्रम से मोहित होता है, जैसे एक बच्चा।

7.137.49

अन्तर्मुखोऽन्तरात्मानं बहिः पश्यन्बहिर्मुखः । आस्ते जीवो जगद्रूपं यत्स्वन्ते स्वप्नजाग्रती ॥ ४९ ॥

antarmukho'ntarātmānaṃ bahiḥ paśyanbahirmukhaḥ | āste jīvo jagadrūpaṃ yatsvante svapnajāgratī || 49 ||

The individual soul, with an inward-turned mind, sees the inner self, and with an outward-turned mind, sees the outer world, which is of the form of the universe, in both dream and waking states.

जीव, जिसका मन अंतर्मुखी है, अंतरात्मा को देखता है, और जिसका मन बाहरमुखी है, वह बाहरी जगत को देखता है, जो स्वप्न और जाग्रत अवस्था में विश्वरूप है।

7.137.50

इति चिन्तयतः किं स्यात्सुषुप्तमिति मे मतिः । जाता तेन सुषुप्तांशमन्वेष्टुमहमुद्यतः ॥ ५० ॥

iti cintayataḥ kiṃ syātsuṣuptamiti me matiḥ | jātā tena suṣuptāṃśamanveṣṭumahamudyataḥ || 50 ||

Thinking thus, what would happen in deep sleep? This is my thought. Born from that, I am eager to investigate the nature of deep sleep.

इस प्रकार सोचते हुए, गहरी नींद में क्या होगा? यह मेरा विचार है। इससे उत्पन्न होकर, मैं गहरी नींद की प्रकृति का अन्वेषण करने के लिए उत्सुक हूँ।

7.137.51

यावत्किं दृश्यदृष्ट्यान्तस्तूष्णीं तिष्ठाम्यहं चिरम् । निश्चित्त इति संवित्तिः शमा नान्यत्सुषुप्तकम् ॥ ५१ ॥

yāvatkiṃ dṛśyadṛṣṭyāntastūṣṇīṃ tiṣṭhāmyahaṃ ciram | niścitta iti saṃvittiḥ śamā nānyatsuṣuptakam || 51 ||

As long as I remain silent and still, observing the seen and the seer, I am thought to be without consciousness; this calmness is not different from deep sleep.

जब तक मैं चुपचाप और शांत बैठा हूँ, देखने और देखने वाले को देखता हूँ, मुझे चेतना रहित माना जाता है; यह शांति गहरी नींद से अलग नहीं है।

7.137.52

नखकेशादि देहेऽस्मिन्विदिताविदितं यथा । न जडं च जडं चैव सुषुप्तं चेतनात्मनि ॥ ५२ ॥

nakhakeśādi dehe'sminviditāviditaṃ yathā | na jaḍaṃ ca jaḍaṃ caiva suṣuptaṃ cetanātmani || 52 ||

In this body, with nails, hair, etc., what is known and unknown is perceived as both inert and conscious in deep sleep.

इस शरीर में, जिसमें नाखून, बाल आदि हैं, जो ज्ञात और अज्ञात है, वह गहरी नींद में जड़ और चेतन दोनों के रूप में देखा जाता है।

7.137.53

संवित्त्या किं श्रमार्तोऽस्मि शान्तमासेवि मानसम् । इत्येकपरिणामत्वान्नान्यदस्ति सुषुप्तकम् ॥ ५३ ॥

saṃvittyā kiṃ śramārto'smi śāntamāsevi mānasam | ityekapariṇāmatvānnānyadasti suṣuptakam || 53 ||

What is the use of consciousness if I am exhausted? I resort to the peaceful mind. Thus, due to the single transformation, there is nothing else in deep sleep.

चेतना का क्या लाभ है अगर मैं थका हुआ हूँ? मैं शांत मन की ओर प्रवृत्त होता हूँ। इस प्रकार, एक परिवर्तन के कारण, गहरी नींद में कुछ और नहीं है।

7.137.54

एतन्निद्राघनं जाग्रत्यपि संभवति स्वतः । न किंचिच्चिन्तयाम्यासे शान्त इत्येकरूपकम् ॥ ५४ ॥

etannidrāghanaṃ jāgratyapi saṃbhavati svataḥ | na kiṃciccintayāmyāse śānta ityekarūpakam || 54 ||

This dense sleep can occur even in the waking state spontaneously. I do not think of anything, peaceful, thus it is of one form.

यह घनीभूत नींद जाग्रत अवस्था में भी स्वतः हो सकती है। मैं कुछ भी नहीं सोचता, शांत, इस प्रकार यह एक रूप का है।

7.137.55

एषावस्था यदा याति घनता मुच्यते तदा । निद्राशब्देन तन्वी तु स्वशब्देन कथ्यते ॥ ५५ ॥

eṣāvasthā yadā yāti ghanatā mucyate tadā | nidrāśabdena tanvī tu svaśabdena kathyate || 55 ||

When this state reaches its density, it is then liberated. It is described by the word 'sleep' and by the word 'self'.

जब यह अवस्था अपनी घनता तक पहुँचती है, तब यह मुक्त होती है। इसे 'नींद' शब्द से और 'स्व' शब्द से वर्णित किया जाता है।

7.137.56

सुषुप्तमिति निश्चित्य तुरीयान्वेषणामहम् । प्रवृत्तः कर्तुमुद्युक्तो युक्तः परमया धिया ॥ ५६ ॥

suṣuptamiti niścitya turīyānveṣaṇāmaham | pravṛttaḥ kartumudyukto yuktaḥ paramayā dhiyā || 56 ||

Having determined that deep sleep is not the ultimate state, I am eagerly engaged in the search for the fourth state, equipped with the highest intellect.

सुषुप्ति को अन्तिम अवस्था नहीं मानकर, मैं चतुर्थ अवस्था की खोज में उत्सुकतापूर्वक लगा हुआ हूँ, उच्चतम बुद्धि से सुसज्जित।

7.137.57

यावद्रूपं तुरीयस्य किंचनापि न लभ्यते । सम्यग्बोधादृते शुद्धात्प्रकाशस्तमसो यथा ॥ ५७ ॥

yāvadrūpaṃ turīyasya kiṃcanāpi na labhyate | samyagbodhādṛte śuddhātprakāśastamoso yathā || 57 ||

As long as the true form of the fourth state is not attained, it is not realized, just as light is not perceived without pure and correct knowledge.

जब तक चतुर्थ अवस्था का सही रूप प्राप्त नहीं होता, तब तक वह अनुभव नहीं किया जाता, जैसे शुद्ध और सही ज्ञान के बिना प्रकाश का अनुभव नहीं होता।

7.137.58

यथास्थितमिदं विश्वं सम्यग्बोधाद्विलीयते । यथास्थितं च भवति न च किंचिद्विलीयते ॥ ५८ ॥

yathāsthitamidaṃ viśvaṃ samyagbodhādvilīyate | yathāsthitaṃ ca bhavati na ca kiṃcidvilīyate || 58 ||

This universe, as it is, dissolves into pure and correct knowledge, and as it is, it remains, and nothing dissolves.

यह विश्व, जैसा है, शुद्ध और सही ज्ञान में विलीन हो जाता है, और जैसा है, वैसा ही रहता है, और कुछ भी विलीन नहीं होता।

7.137.59

अतः स्वप्नो जागरा च सुषुप्तं च तुरीयके । सयथास्थितमस्तीदं नूनं नास्ति च किंचन ॥ ५९ ॥

ataḥ svapno jāgarā ca suṣuptaṃ ca turīyake | sayathāsthitamastīdaṃ nūnaṃ nāsti ca kiṃcana || 59 ||

Therefore, dream, wakefulness, and deep sleep are all in the fourth state. As it is, this exists, and indeed nothing exists.

इसलिए, स्वप्न, जागरण, और सुषुप्ति सभी चतुर्थ अवस्था में हैं। जैसा है, यह अस्तित्व में है, और वास्तव में कुछ भी नहीं है।

7.137.60

कारणाज्जगदुत्पन्नं न ब्रह्मेत्थमवस्थितम् । जगत्तया शान्तमजं बोध इत्येव तुर्यता ॥ ६० ॥

kāraṇājjagadutpannaṃ na brahmetthamavasthitam | jagattayā śāntamajaṃ bodha ityeva turyatā || 60 ||

The universe arises from a cause, but Brahman is not situated in it. The universe is peaceful and unborn, and this awareness is the fourth state.

विश्व एक कारण से उत्पन्न होता है, लेकिन ब्रह्म उसमें स्थित नहीं है। विश्व शांत और अजन्मा है, और यह चेतना चतुर्थ अवस्था है।

7.137.61

असंभवात्संभवकारणानां न जायते किंचन नाम सर्गः । चिच्चेतनेनैव हि सर्गसंवित् स्वयं गृहीता द्रवताम्बुनेव ॥ ६१ ॥

asambhavātsambhavakāraṇānāṃ na jāyate kiṃcana nāma sargaḥ | cicetanenaiva hi sargasaṃvit svayaṃ gṛhītā dravatāmbuneva || 61 ||

From the impossible, no cause of possibility arises, nor does any creation occur. Indeed, creation is known by the conscious self, just as water is grasped by itself.

असंभव से कोई संभव का कारण नहीं उत्पन्न होता, न ही कोई सृष्टि होती है। वास्तव में, सृष्टि चेतन आत्मा द्वारा ही जानी जाती है, जैसे पानी अपने आप को ग्रहण करता है।

Chapter 138

7.138.1

तापस उवाच । गन्तुमेवं विचार्याहं ततस्तत्संविदैकताम् । प्रवृत्तश्चौत्तमाब्जेन सौरभेणेव सौरभम् ॥ १ ॥

tāpas uvāca | gantumevaṃ vicāryāhaṃ tatastatsaṃvidaikatām | pravṛttaścauttamābjena saurabheṇeva saurabham || 1 ||

The ascetic said: Having thus decided to go, I became one with that consciousness, like the fragrance of the best lotus flower.

तापस ने कहा: इस प्रकार जाने का निर्णय लेकर, मैं उस चेतना के साथ एक हो गया, जैसे श्रेष्ठ कमल की सुगंध की तरह।

7.138.2

यावत्तच्चेतनं तस्य तमोजोधातुमत्यजम्प्रवृत्तं बाह्यसंवित्तौ समस्तेन्द्रियसंविदा ॥ २ ॥

yāvattaccetanaṃ tasya tamojodhātumatyajampravṛttaṃ bāhyasaṃvittau samastendriyasaṃvidā || 2 ||

As long as that consciousness was engrossed in the darkness of ignorance, it was engaged in external awareness through all the senses.

जब तक वह चेतना अज्ञान के अंधकार में डूबी हुई थी, तब तक वह सभी इंद्रियों के माध्यम से बाह्य चेतना में लगी हुई थी।

7.138.3

संविदं संविदा गृह्णंस्तान्बाह्येऽन्तरपि क्षणात् । अहं प्रसृतवांस्तत्र तैलबिन्दुरिवाम्भसि ॥ ३ ॥

saṃvidaṃ saṃvidā gṛhṇaṃstānbāhye'ntarapi kṣaṇāt | ahaṃ prasṛtavāṃstatra tailabindurivāmbhasi || 3 ||

Grasping the consciousness with consciousness, both external and internal, in an instant, I spread out there like a drop of oil in water.

चेतना को चेतना से ग्रहण करते हुए, बाह्य और आंतरिक दोनों, एक क्षण में, मैं वहाँ पानी में तेल की बूँद की तरह फैल गया।

7.138.4

तत्संविदि तथैवाथ यावत्परिणमाम्यहम् । भुवनं दृष्टवांस्तावत्सर्वं द्विगुणितं स्थितम् ॥ ४ ॥

tatsaṃvidi tathaivātha yāvatpariṇamāmyaham | bhuvanaṃ dṛṣṭavāṃstāvatsarvaṃ dviguṇitaṃ sthitam || 4 ||

In that consciousness, as I transformed, I saw the entire universe doubled.

उस चेतना में, जैसे ही मैं परिवर्तित हुआ, मैंने सारे ब्रह्मांड को दोगुना देखा।

7.138.5

दिशो द्विगुणतां यातास्तपतस्तपनावुभौ । भूमण्डले द्वे संपन्ने द्वे वै द्यावौ समुत्थिते ॥ ५ ॥

diśo dviguṇatāṃ yātāstapatastapanāvubhau | bhūmaṇḍale dve saṃpanne dve vai dyāvau samutthite || 5 ||

The directions became doubled, both the suns shone, two earths were formed, and two heavens arose.

दिशाएँ दोगुनी हो गईं, दोनों सूर्य चमके, दो पृथ्वी बनीं, और दो स्वर्ग उभरे।

7.138.6

वदनप्रतिबिम्बे द्वे दर्पणप्रतिबिम्बिते । यथा भातस्तथा भाते मिश्रिते ते जगच्चितम् ॥ ६ ॥

vadanapratibimbe dve darpaṇapratibimbite | yathā bhātastathā bhāte miśrite te jagaccitam || 6 ||

Just as two reflections in a mirror appear as one, so do the world and consciousness appear as one when mixed.

जैसे दर्पण में दो प्रतिबिम्ब एक दिखाई देते हैं, वैसे ही जब वे मिश्रित होते हैं, तब जगत और चित एक दिखाई देते हैं।

7.138.7

तैलवद्भाति कोशस्थं यच्चेतनतिलद्वये । तस्मिञ्जगद्द्वयं तत्तत्तथा भाति विमिश्रितम् ॥ ७ ॥

tailavadbhāti kośasthaṃ yacchetana tiladvaye | tasmiñjagaddvayaṃ tattattathā bhāti vimiśritam || 7 ||

Just as oil appears in a vessel containing sesame seeds, so does the duality of the world appear mixed in consciousness.

जैसे तिल के बीजों से भरे पात्र में तेल दिखाई देता है, वैसे ही चेतना में मिश्रित होकर जगत की द्वैतता दिखाई देती है।

7.138.8

संविद्द्वितयकोशस्थे मिश्रिते अप्यमिश्रिते । ते उभे जगती भाते समे क्षीरजले यथा ॥ ८ ॥

saṃviddvitayakośastha miśrite apyamiśrite | te ubhe jagatī bhāte same kṣīrajale yathā || 8 ||

Even when mixed or unmixed, the two consciousnesses appear as the world, just as milk and water appear the same when mixed.

मिश्रित होने पर भी या अमिश्रित होने पर भी, दोनों चेतनाएँ जगत के रूप में दिखाई देती हैं, जैसे दूध और पानी मिश्रित होने पर एक समान दिखाई देते हैं।

7.138.9

निमेषाद्दृष्टमात्रेण सा तत्संविन्मया ततः । सकलैवात्मतां नीता परिमित्येव संविदा ॥ ९ ॥

nimeṣāddṛṣṭamātreṇa sā tatsaṃvinmayā tataḥ | sakalaivātmatāṃ nītā parimityeva saṃvidā || 9 ||

By merely seeing in a moment, she becomes that consciousness itself. Thus, she is led to the complete selfhood by the limitation of consciousness.

एक पल में देखने से ही, वह उस चेतना के रूप में हो जाती है। इस प्रकार, चेतना की सीमा से वह पूर्ण आत्मता की ओर ले जाई जाती है।

7.138.10

ऋतुर्ऋत्वन्तरेणेव सरितेवाल्पिका सरित् । वातेनामोदलेखेव धूमलेखेव वार्मुचा ॥ १० ॥

ṛturṛtvantareṇeva saritevālpikā sarit | vātenāmodalekheva dhūmalekheva vārmucā || 10 ||

Like a season changing to another, like a small river merging into a larger one, like a fragrance carried by the wind, like smoke dissolving into the air.

जैसे एक ऋतु दूसरी ऋतु में बदल जाती है, जैसे एक छोटी नदी बड़ी नदी में मिल जाती है, जैसे हवा सुगंध लेकर उड़ती है, जैसे धुआँ हवा में घुल जाता है।

7.138.11

एकत्वेनाशु संवित्तेर्ययौ मे जगदेकताम् । दुर्दृष्टेर्द्विवपुश्चन्द्रः सुदृष्टेरेकतामिव ॥ ११ ॥

ekatvenāśu saṃvitteryayau me jagadekatām | durdṛṣṭerdvivapuścandraḥ sudṛṣṭerekatāmiva || 11 ||

Through the immediate realization of unity, the world appeared to me as one | Just as the moon appears as one to those with clear vision, but as two to those with defective vision

एकत्व के द्वारा तुरंत ज्ञान के साथ, संसार मुझे एक दिखाई दिया | जैसे चंद्रमा स्पष्ट दृष्टि वालों को एक दिखाई देता है, लेकिन दोषपूर्ण दृष्टि वालों को दो दिखाई देता है

7.138.12

ततो मे तच्चितिस्थस्य स्वं विवेकमनुज्झतः । अल्पीभूतः स्वसंकल्पस्तत्संकल्पस्थितिं गतः ॥ १२ ॥

tato me taccitisthasya svaṃ vivekamanujjhataḥ | alpībhūtaḥ svasaṃkalpastatsaṃkalpasthitiṃ gataḥ || 12 ||

Then, as I, situated in that consciousness, gave up my own discrimination, my own resolve diminished and took the form of that resolve

तब, जैसे मैं, उस चेतना में स्थित, अपने विवेक को छोड़ देता हूँ, मेरा अपना संकल्प घट जाता है और उस संकल्प के रूप में जाता है

7.138.13

तच्चित्तवृत्त्यैव ततो बाह्यमालोकयंस्ततः । अभुञ्जि तद्दिनाचारं तत्तद्धृदयमत्यजन् ॥ १३ ॥

taccittavṛttyaiva tato bāhyamālokayanstatataḥ | abhuñji taddināćāraṃ tattaddhṛdayamatyajan || 13 ||

Then, by the very activity of that consciousness, I observed the external world and experienced the daily routine, abandoning the heart's desires

तब, उस चेतना की वृत्ति के द्वारा, मैंने बाहरी संसार को देखा और दैनिक दिनचर्या का अनुभव किया, हृदय की इच्छाओं को छोड़ दिया

7.138.14

ततो यदृच्छयैवासौ शनैर्निद्राकुलोऽभवत् । पद्मः सायमिवापीय पयो भुक्त्वान्नमुच्छ्रमः ॥ १४ ॥

tato yadṛcchayaivāsau śanairnidrākulo'bhavat | padmaḥ sāyamivāpīya payo bhuktvānnamucchramḥ || 14 ||

Then, by chance, he gradually became overwhelmed by sleep, like a lotus that drinks water in the evening and, having consumed food, becomes fatigued

तब, संयोग से, वह धीरे-धीरे नींद से घिर गया, जैसे एक कमल जो शाम को पानी पीता है और भोजन करने के बाद थक जाता है

7.138.15

प्रसृतं दिग्निकुञ्जेषु रूपालोकक्रियाकरम् । संजहार बहिश्चित्तं सायमर्को रुचिं यथा ॥ १५ ॥

prasṛtaṃ dignikuñjeṣu rūpālokakriyākaram | saṃjahāra bahiścittaṃ sāyamarko ruciṃ yathā || 15 ||

He withdrew his external consciousness, which was engaged in various activities in different directions, just as the setting sun withdraws its light

उसने अपनी बाहरी चेतना को वापस लिया, जो विभिन्न दिशाओं में विभिन्न गतिविधियों में लगी हुई थी, जैसे डूबता हुआ सूर्य अपनी रोशनी को वापस लेता है

7.138.16

सह चित्तेन तास्तस्य समस्तेन्द्रियवृत्तयः हृत्कोशमविशञ्छन्नाः कूर्मस्येवाङ्गसंधयः ॥ १६ ॥

sah cittena tāstasya samastendriyavṛttayaḥ hṛtkoshamaviśañchannāḥ kūrmasyevāṅgasandhayaḥ || 16 ||

With the mind and all the senses withdrawn, like the limbs of a tortoise, they entered the heart.

मन और सभी इंद्रियों के साथ, कछुए के अंगों की तरह, वे हृदय में प्रवेश कर गए।

7.138.17

मुद्रिता हृदयाकारास्त आसंश्चक्षुरादयः लोष्टरूपा मृतावेव लिपिकर्मार्पिता इव ॥ १७ ॥

mudritā hṛdayākārāst āsaṃścakṣurādayaḥ loṣṭarūpā mṛtāveva lipikarmārpitā iva || 17 ||

Sealed in the form of the heart, those senses like the eyes became like lifeless clay, as if offered to the act of writing.

हृदय के रूप में मुद्रित, वे इंद्रियाँ जैसे आँखें, जीवनरहित मिट्टी की तरह हो गईं, जैसे लिखने के काम में अर्पित की गई हों।

7.138.18

अहं तच्चित्तवृत्त्यैव सहसोन्नम्य तत्स्थितः तच्चित्तानुविधायित्वात्तत्तद्धृदयमाविशम् ॥ १८ ॥

ahaṃ taccittavṛttyaiva sahasonnamya tatsthitaḥ taccittānuvidhāyitvāttattaddhṛdayamāviśam || 18 ||

I, by the sudden rise of that mental state, stood there, and by following that mind, I entered that heart.

मैं, उस मानसिक अवस्था के अचानक उदय से, वहाँ खड़ा हुआ, और उस मन का अनुसरण करके, मैंने उस हृदय में प्रवेश किया।

7.138.19

संहृत्य बाह्यानुभवमन्तरेव तदोजसि क्षणमन्वभवं शून्यं सुषुप्तं तल्पकोमले ॥ १९ ॥

saṃhṛtya bāhyānubhavamantareva tadojasi kṣaṇamanvabhavaṃ śūnyaṃ suṣuptaṃ talpakomale || 19 ||

Withdrawing the external experiences within, I experienced a moment of emptiness, like deep sleep on a soft bed.

बाह्य अनुभवों को अंतर्मुख करके, मैंने एक क्षण के लिए शून्यता का अनुभव किया, जैसे कि एक नरम बिस्तर पर गहरी नींद।

7.138.20

क्लमान्नपानबहुलैर्निबिडास्वपि नाडिषु सुषिरास्वेव वा वायुर्न निर्यात्येव याति च ॥ २० ॥

klamānnapānabahulairnibiḍāsvapi nāḍiṣu suṣirāsveva vā vāyurna niryātyeva yāti ca || 20 ||

Even with the fatigue of drinking much water, the breath neither enters nor exits the dense or hollow channels.

बहुत पानी पीने के थकान के बावजूद, साँस न तो घनी नाड़ियों में प्रवेश करती है और न ही खोखली नाड़ियों से निकलती है।

7.138.21

यदा तदात्मकात्मैकपरो हृदि सहस्थितमप्रधानीकरोत्येतच्चित्तं स्वार्थस्वभावतः ॥ २१ ॥

yadā tadātmakātmaikaparo hṛdi sahasthitamapradhānīkarotyetaccittaṃ svārthasvabhāvataḥ || 21 ||

When the mind, which is the sole essence of the self, resides in the heart and makes everything else insignificant, it is due to its inherent nature.

जब मन, जो आत्मा का एकमात्र स्वभाव है, हृदय में निवास करता है और सब कुछ अप्रधान बना देता है, तो यह उसके स्वाभाविक स्वभाव के कारण है।

7.138.22

स्वार्थमात्रोऽद्य तस्यान्तः परकृत्यं न कस्यचित्कचति स्वार्थसत्तायामेतदेव वपुर्यतः ॥ २२ ॥

svārthamātro'dya tasyāntaḥ parakṛtyaṃ na kasyacitkacati svārthasattāyāmetadeva vapuryataḥ || 22 ||

Today, the self's inherent nature alone exists within, and it does not belong to anyone else. This very form is due to the existence of the self's inherent nature.

आज, आत्मा का स्वाभाविक स्वभाव ही अंदर मौजूद है, और यह किसी और का नहीं है। यह रूप आत्मा के स्वाभाविक स्वभाव के अस्तित्व के कारण है।

7.138.23

श्रीराम उवाचमनः प्राणवशादेव मनुते किं महामुनेस्वरूपं मनसो नास्ति तस्मात्तत्केवलं च किम् ॥ २३ ॥

śrīrāma uvācamanaḥ prāṇavaśādeva manute kiṃ mahāmunesvarūpaṃ manaso nāsti tasmāttatkevalaṃ ca kim || 23 ||

Sri Rama said: The mind, due to the influence of the life force, thinks of the form of the great sage. Therefore, what is the mind alone, and what is it?

श्री राम ने कहा: मन, जीवन शक्ति के प्रभाव के कारण, महान ऋषि के रूप के बारे में सोचता है। तो, मन अकेला क्या है, और यह क्या है?

7.138.24

श्रीवसिष्ठ उवाचदेह एवेह नास्त्येव स्वानुभूतोऽप्ययं निजःमनसः कल्पनात्मेदं वपुः स्वप्ने गिरिर्यथा ॥ २४ ॥

śrīvasiṣṭha uvācadeha eveha nāstyeva svānubhūto'pyayaṃ nijaḥmanasaḥ kalpanātmedaṃ vapuḥ svapne giriryathā || 24 ||

Sri Vasistha said: This body does not exist here, even though it is experienced as one's own. This form is merely an imagination of the mind, like a mountain in a dream.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह शरीर यहाँ नहीं है, भले ही यह अपना अनुभव हो। यह रूप मन की कल्पना मात्र है, जैसे सपने में पहाड़।

7.138.25

तच्चित्तमपि नास्त्येव चेत्यार्थाभावयोगतःसर्गादौ कारणाभावाद्दृश्यानुत्पत्तिहेतुतः ॥ २५ ॥

taccittamapi nāstyeva cetyārthābhāvayogataḥsargādau kāraṇābhāvāddṛśyānutpattihetutaḥ || 25 ||

That mind also does not exist, because there is no meaning in its existence. From the beginning of creation, there is no cause for the manifestation of the visible world.

वह मन भी नहीं है, क्योंकि उसके अस्तित्व में कोई अर्थ नहीं है। सृष्टि के आरंभ से, दृश्य जगत के उत्पन्न होने का कोई कारण नहीं है।

7.138.26

अतः सर्वमिदं ब्रह्म तच्च सर्वात्मकं यदा । तदा विश्वमिदं विष्वगस्त्येव च यथास्थितम् ॥ २६ ॥

ataḥ sarvamidaṃ brahma tacca sarvātmakaṃ yadā | tadā viśvamidaṃ viṣvagastyeva ca yathāsthitam || 26 ||

Therefore, all this is Brahman, and that is all-pervading. When that is so, then this universe exists as it is, pervading everywhere.

इसलिए, यह सब कुछ ब्रह्म है, और वह सर्वव्यापी है। जब ऐसा होता है, तब यह ब्रह्मांड अपने आप में स्थित होता है, सर्वत्र व्याप्त है।

7.138.27

अस्ति चित्तादि देहादि तद्ब्रह्मैव च तद्विदाम् । यादृक्तत्तद्विदामेतदस्माकं विषये न तत् ॥ २७ ॥

asti cittādi dehādi tadbrahmaiva ca tadvidām | yādṛktattadvidāmetadasmākaṃ viṣaye na tat || 27 ||

There exists the mind and the body, and that is indeed Brahman for the knowers. As it is, so it is known to us, but it is not an object of our senses.

मन और शरीर है, और वह ज्ञानियों के लिए ब्रह्म ही है। जैसा है, वैसा ही हमें ज्ञात होता है, लेकिन वह हमारी इंद्रियों का विषय नहीं है।

7.138.28

यथेदं त्रिजगद्ब्रह्म यथेति विविधात्मकम् । अत्रेमं राजपुत्र त्वं वर्ण्यमानं क्रमं श्रृणु ॥ २८ ॥

yathedaṃ trijagadbrahma yatheti vividhātmakam | atremāṃ rājaputra tvaṃ varṇyamānaṃ kramaṃ śrṛṇu || 28 ||

As this threefold world is Brahman, so it is of various forms. O Prince, listen to the sequence being described here.

जैसे यह त्रिविध जगत् ब्रह्म है, वैसे ही यह विविध रूपों में है। हे राजपुत्र, यहाँ वर्णित क्रम सुनो।

7.138.29

अस्ति चिन्मात्रममलमनन्ताकाशरूपि यत्। सर्वदा सर्वरूपात्म न जगन्न च दृश्यता ॥ २९ ॥

asti cinmātramamalamanantākāśarūpi yat | sarvadā sarvarūpātma na jaganna ca dṛśyatā || 29 ||

There exists pure consciousness, stainless, infinite, and of the form of endless space. Always of all forms, it is neither the world nor seen.

पवित्र चेतना है, निर्दोष, अनंत, और अनंत आकाश के रूप में। हमेशा सभी रूपों में, यह न तो जगत है न ही दिखाई देता है।

7.138.30

सर्ववित्त्वात्तु तेनेदं मनस्त्वं चेतितं स्वतः। रूपमत्यजता शुद्धं बुद्धमाधिविवर्जितम् ॥ ३० ॥

sarvavittvāttu tenedaṃ manastvaṃ cetitaṃ svataḥ | rūpamatyajatā śuddhaṃ buddhamādhivivarjitam || 30 ||

Due to its all-knowing nature, by it, this mind is known by itself. Having abandoned all forms, it is pure, enlightened, and free from ignorance.

अपनी सर्वज्ञ प्रकृति के कारण, इसके द्वारा, यह मन स्वयं ज्ञात होता है। सभी रूपों को त्याग कर, यह पवित्र, प्रकाशित, और अज्ञान से मुक्त है।

7.138.31

मनसा कल्पितं तेन यद्वै सरणमात्मनः। तदेतत्प्राणपवनं विद्धि वेद्यविदां वर ॥ ३१ ॥

manasā kalpitaṃ tena yadvai saraṇamātmanaḥ | tadetatprāṇapavanaṃ viddhi vedyavidāṃ vara || 31 ||

That which is imagined by the mind and is the refuge of the self, know that to be the vital air, O best among the knowers of the knowable.

जो मन द्वारा कल्पित है और आत्मा का आश्रय है, उसे प्राणवायु समझो, हे ज्ञेय-ज्ञाताओं में श्रेष्ठ।

7.138.32

प्राणतैषा यथा तेन कल्पितेवानुभूयते। तथैवेन्द्रियदेहादि दिक्कालकलनादि च ॥ ३२ ॥

prāṇataiṣā yathā tena kalpitevānubhūyate | tathaivendriyadehādi dikkālakalanādi ca || 32 ||

Just as the vital air is imagined to be experienced by that, so also are the senses, body, directions, time, and other measurements.

जैसे प्राणवायु उससे अनुभव की जाती है, वैसे ही इन्द्रियाँ, शरीर, दिशाएँ, समय और अन्य मापें भी कल्पित होती हैं।

7.138.33

इति विश्वमिदं विष्वक् चित्तमात्रमखण्डितम्। चित्तं तु चित्परं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मेदमाततम् ॥ ३३ ॥

iti viśvamidaṃ viṣvak cittamātramakhaṇḍitam | cittaṃ tu citparaṃ brahma tasmādbrahmedamātatam || 33 ||

Thus, this entire universe is nothing but the undivided mind. The mind itself is the supreme consciousness, Brahman. Therefore, this universe is pervaded by Brahman.

इस प्रकार, यह सम्पूर्ण विश्व अखण्डित मन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मन स्वयं ही परम चेतना, ब्रह्म है। इसलिए, यह विश्व ब्रह्म से व्याप्त है।

7.138.34

अनाकारमनाद्यन्तमनाभासमनामयम्। शान्तं चिन्मात्रसन्मात्रं ब्रह्मैवेदं जगद्वपुः ॥ ३४ ॥

anākāramanādyantamanābhāsamanāmayam | śāntaṃ cinmātrasanmātraṃ brahmaivedaṃ jagadvapuḥ || 34 ||

Formless, without beginning or end, without appearance, without defect, peaceful, and purely conscious, this universe is indeed Brahman.

निराकार, अनादि, अनन्त, अनाभास, अनामय, शान्त, और पूर्ण चेतना से युक्त, यह विश्व वास्तव में ब्रह्म है।

7.138.35

सर्वशक्ति परं ब्रह्म मनःशक्त्या यथा स्थितम्। यत्र तत्र तथा रूपं स्वमेवानुभवत्यलम्॥ ३५॥

sarvaśakti paraṃ brahma manaḥśaktyā yathā sthitam | yatra tatra tathā rūpaṃ svamevānubhavaty alam || 35 ||

The supreme Brahman, which is all-powerful, is established by the power of the mind. Wherever it is, it experiences its own form sufficiently.

सर्वशक्तिमान परम ब्रह्म मन की शक्ति से स्थापित है। जहाँ भी वह है, वह अपने स्वरूप को पर्याप्त रूप से अनुभव करता है।

7.138.36

संकल्पात्म मनो ब्रह्म संकल्पयति यद्यथा। तत्तथैवानुभवति सिद्धमाबालमीदृशम्॥ ३६॥

saṃkalpātma mano brahma saṃkalpayati yadyathā | tattathaivānubhavati siddhamābālamīdṛśam || 36 ||

The mind, which is the essence of resolve, is Brahman; whatever it resolves, it experiences exactly that. Such is the established truth from ancient times.

मन, जो संकल्प का आत्मा है, ब्रह्म है; जो कुछ भी वह संकल्प करता है, उसी का अनुभव करता है। यह प्राचीन काल से सिद्ध सत्य है।

7.138.37

प्राणीकृतः स्वयमयं ननु चेतसात्मा देहीकृतस्त्रिभुवनीकृत एव नाद्यः। देहीकृतः खवपुरेव गिरीकृतश्च स्वप्नेषु कल्पितपुरीष्वनुभूतमेतत्॥ ३७॥

prāṇīkṛtaḥ svayamayaṃ nanu cetasātmā dehīkṛtastribhuvanīkṛta eva nādyaḥ | dehīkṛtaḥ khavapureva girīkṛtaśca svapneṣu kalpitapurīṣvanubhūtametat || 37 ||

The self, which is the essence of consciousness, is embodied and becomes the three worlds. The embodied self is like a city in a dream, experienced as a mountain. This is the experience in dream-created cities.

स्वयं का आत्मा, जो चेतना का आत्मा है, शरीर में स्थित होकर तीनों लोकों का रूप धारण कर लेता है। शरीर में स्थित आत्मा स्वप्न में बनी नगरी की तरह होता है, जिसे पर्वत के रूप में अनुभव किया जाता है। यह स्वप्न में बनी नगरियों में अनुभव किया जाता है।

Chapter 139

7.139.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । चित्तमेव जगत्कर्तृ संकल्पयति यद्यथा । असत्सत्सदसच्चैव तत्तथा तस्य तिष्ठति ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | cittameva jagatkartṛ saṃkalpayati yadyathā | asatsatsadasaccai va tattathā tasya tiṣṭhati || 1 ||

Vasishtha said: The mind alone is the creator of the world; whatever it resolves, whether real or unreal, true or false, that indeed becomes so.

वसिष्ठ ने कहा: मन ही संसार का सृष्टिकर्ता है; जो भी वह संकल्प करता है, चाहे वह असत् हो या सत्, सदसत् हो या असत्, वही होता है।

7.139.2

तेन संकल्पितः प्राणः प्राणो मे गतिरित्यपि । न भवामि विनानेन तेन तत्तत्परायणम् ॥ २ ॥

tena saṃkalpitaḥ prāṇaḥ prāṇo me gatiritiapi | na bhavāmi vinānena tena tattatparāyaṇam || 2 ||

By that resolve, the life force is resolved; the life force is my movement, thus. I do not exist without it; by that, I am devoted to that.

उस संकल्प से, प्राण संकल्पित होता है; प्राण मेरी गति है, ऐसा। मैं इसके बिना नहीं रह सकता; उससे, मैं उसी का परायण हूँ।

7.139.3

अहं कतिपयं कालं ननु प्राणविनाकृतः । न भवामि पुनर्नूनं भवाम्येवेति कल्पितम् ॥ ३ ॥

ahaṃ katipayaṃ kālaṃ nanu prāṇavinākṛtaḥ | na bhavāmi punarnūnaṃ bhavāmyeveti kalpitam || 3 ||

I am without the life force for some time; indeed, I do not exist again; thus, it is resolved that I exist.

मैं कुछ समय तक प्राण के बिना हूँ; निश्चित रूप से, मैं फिर से नहीं रह सकता; ऐसा संकल्प है कि मैं हूँ।

7.139.4

यत्र तेनाङ्गं तत्रैतत्प्राणेनाशु क्षणाद्वपुः । उदितं पश्यति मनो मायापुरमिवाततम् ॥ ४ ॥

yatra tenāṅgaṃ tatraitatprāṇenāśu kṣaṇādvapuḥ | uditam paśyati mano māyāpuramivātatam || 4 ||

Wherever the body is by that resolve, there the life force quickly, in an instant, arises; the mind sees the body as if it were a magical city.

जहाँ भी शरीर उस संकल्प से होता है, वहाँ प्राण तुरंत, एक क्षण में उठता है; मन शरीर को एक जादू के शहर की तरह देखता है।

7.139.5

न भवाम्येव भूयोऽहं प्राणदेहविनाकृतः । दृढनिश्चयभागित्थं चितो भवति नो पुनः ॥ ५ ॥

na bhavāmyeva bhūyo'haṃ prāṇadehavinākṛtaḥ | dṛḍhaniścayabhāgitthaṃ cito bhavati no punaḥ || 5 ||

I do not exist again without the life force and body; thus, with firm resolve, the mind does not exist again.

मैं प्राण और शरीर के बिना फिर से नहीं रह सकता; ऐसा, दृढ़ संकल्प के साथ, मन फिर से नहीं रहता।

7.139.6

दोलायितं तु संदेहाद्दुःखमास्ते कुनिश्चयम्। विकल्पेनैवमस्यैतज्ज्ञानान्नाल्पेन यास्यति ॥ ६ ॥

dolāyitaṃ tu saṃdehāddduḥkhamāste kuniscayam | vikalpenaivamasyaetajjñānānnālpena yāsyati || 6 ||

Doubt causes suffering and uncertainty. Through discernment, this will not be attained by little knowledge.

संदेह दुःख और अनिश्चितता पैदा करता है। विकल्प से इसे थोड़े ज्ञान से नहीं प्राप्त किया जाएगा।

7.139.7

यस्यायमहमित्यस्ति तस्य तन्नोपशाम्यति। वर्जयित्वात्मविज्ञानं केनचिन्नाम हेतुना ॥ ७ ॥

yasyāyamahamityasti tasya tannopaśāmyati | varjayitvātmavijñānaṃ kenacinnaama hetunā || 7 ||

For whom this 'I' exists, for him, it does not cease. Without self-knowledge, it does not cease by any means.

जिसके लिए यह 'मैं' है, उसके लिए यह नहीं समाप्त होता। आत्मज्ञान के बिना, किसी भी तरह से यह नहीं समाप्त होता।

7.139.8

नान्यत्र प्रथते ज्ञानं मोक्षोपायविचारणात्। ऋते तस्मात्प्रयत्नेन मोक्षोपायो विचार्यताम् ॥ ८ ॥

nānyatra prathate jñānaṃ mokṣopāyavicāraṇāt | ṛte tasmātprayatnena mokṣopāyo vicāryatām || 8 ||

Knowledge does not shine elsewhere than from the contemplation of the means of liberation. Therefore, the means of liberation should be contemplated with effort.

ज्ञान मोक्षोपाय के विचार से अन्यत्र नहीं प्रकट होता। इसलिए, मोक्षोपाय को प्रयत्न से विचारणीय होना चाहिए।

7.139.9

किलाहमिदमित्येव नाविद्या विद्यते क्वचित्। मोक्षोपायादृते नैतत्कुतश्चिदयतेऽन्यतः ॥ ९ ॥

kilāhamidamityeva nāvidyā vidyate kvacit | mokṣopāyādṛte naitatkutaścidayate'nyataḥ || 9 ||

Indeed, ignorance does not exist anywhere. Without the means of liberation, it does not arise from anywhere else.

वास्तव में, अज्ञान कहीं नहीं है। मोक्षोपाय के बिना, यह किसी और स्थान से नहीं उत्पन्न होता।

7.139.10

एवं यन्मनसाभ्यस्तमुपलब्धं तथैव तत्। तेन मे जीवितं प्राणा इति प्राणे मनः स्थितम् ॥ १० ॥

evaṃ yanmanasābhyastamupalabdhaṃ tathaiva tat | tena me jīvitaṃ prāṇā iti prāṇe manaḥ sthitam || 10 ||

Thus, whatever is practiced by the mind is attained in that way. By that, my life and breath are established in the breath.

इस प्रकार, मन द्वारा जो कुछ भी अभ्यास किया जाता है, वह उसी प्रकार प्राप्त होता है। उससे मेरा जीवन और प्राण प्राण में स्थित होते हैं।

7.139.12

यदा स्वकर्मणि स्पन्दे व्यग्रः प्राणो भृशं भवेत्तदा तदीहितव्यग्रः प्राणो नात्मोद्यमी भवेत् ॥ १२ ॥

yadā svakarmaṇi spande vyagraḥ prāṇo bhṛśaṃ bhavettadā tadīhitavyagraḥ prāṇo nātmodyamī bhavet || 12 ||

When the vital breath becomes intensely agitated during one's own actions, then that agitated breath should not be enjoyed.

जब किसी के अपने कर्मों में प्राण अत्यधिक उत्तेजित हो जाता है, तब उस उत्तेजित प्राण का आनंद नहीं लेना चाहिए।

7.139.13

एते हि प्राणमनसी त्वन्योन्यं रथसारथीके नाम नानुवर्तन्ते रथसारथिनौ मिथः ॥ १३ ॥

ete hi prāṇamanasī tvanyonyaṃ rathasārathīke nāma nānuvartante rathasārathinau mithaḥ || 13 ||

Indeed, these vital breaths and minds do not follow each other like a chariot and its charioteer.

वास्तव में, ये प्राण और मन एक-दूसरे का अनुसरण नहीं करते, जैसे रथ और उसका सारथि।

7.139.14

देहे सौम्ये स्थिते प्राणे मनो मननवद्भवेत्क्षुब्धे प्राणगतं क्षोभं पश्यन्नान्यत्प्रपश्यति ॥ १४ ॥

dehe saumye sthite prāṇe mano mananavadbhavetkṣubdhe prāṇagataṃ kṣobhaṃ paśyannānyatprapaśyati || 14 ||

When the vital breath is calm in the body, the mind becomes contemplative. Seeing the agitation caused by the agitated breath, one does not perceive anything else.

जब शरीर में प्राण शांत होता है, तो मन ध्यानमग्न हो जाता है। उत्तेजित प्राण से उत्पन्न उत्तेजना को देखकर, वह किसी और चीज को नहीं देखता।

7.139.15

इत्यादिसर्गे स्वात्मैव चेतितः परमात्मनातेनैषाद्यापि नियतिर्नाबुधानां निवर्तते ॥ १५ ॥

ityādisarge svātmaiva cetitaḥ paramātmanātenaiṣādyāpi niyatirnābudhānāṃ nivartate || 15 ||

In this way, the individual self, being conscious, is united with the Supreme Self. Therefore, even this destiny does not turn away from the wise.

इस प्रकार, चेतन व्यक्तिगत आत्मा परमात्मा से जुड़ा हुआ है। इसलिए, यह नियति भी बुद्धिमानों से नहीं मुड़ती।

7.139.16

स्वं प्राणमनसी साम्यात्कुर्वती कर्म तिष्ठतःवैषम्याद्विषमं चैकं शान्ते शान्ता सुषुप्तता ॥ १६ ॥

svaṃ prāṇamanasī sāmyātkurvatī karma tiṣṭhataḥvaiṣamyādviṣamaṃ caikaṃ śānte śāntā suṣuptatā || 16 ||

When the mind and breath are balanced, the actions remain balanced. From imbalance, there is only imbalance, and in peace, there is peace in deep sleep.

जब मन और प्राण संतुलित होते हैं, तो कर्म संतुलित रहते हैं। असंतुलन से केवल असंतुलन होता है, और शांति में, गहरी नींद में शांति होती है।

7.139.17

यदाहारादिरुद्धासु नाडीषु क्वापि पिण्डितः । शान्तमास्ते जडः प्राणस्तदोदेति सुषुप्तता ॥ १७ ॥

yadāhārādiruddhāsu nāḍīṣu kvāpi piṇḍitaḥ | śāntamāste jaḍaḥ prāṇastadodeti suṣuptatā || 17 ||

When the vital energy is obstructed in the channels due to the lack of food and other reasons, it becomes inert and still, leading to deep sleep.

जब प्राण शक्ति आहार के अभाव या अन्य कारणों से नाड़ियों में रुक जाती है, तो वह जड़ और शान्त हो जाती है, जिससे गहरी नींद आती है।

7.139.18

नाडीष्वन्नावपूर्णासु तथा क्षीणासु वा क्लमात् । निःस्पन्दस्तिष्ठति प्राणस्तदोदेति सुषुप्तता ॥ १८ ॥

nāḍīṣvannāvapūrṇāsu tathā kṣīṇāsu vā klamāt | niḥspandastiṣṭhati prāṇastadodeti suṣuptatā || 18 ||

When the channels are not filled with food or are exhausted due to fatigue, the vital energy becomes motionless and still, leading to deep sleep.

जब नाड़ियाँ आहार से भरी नहीं होतीं या थकान से शिथिल हो जाती हैं, तो प्राण शक्ति निष्क्रिय और शान्त हो जाती है, जिससे गहरी नींद आती है।

7.139.19

नाडीनां मृदुरूपत्वात्पूर्णत्वाद्वा व्रणोदरे । क्वापि प्राणे स्थिते लीने निःस्पन्दास्ते सुषुप्तता ॥ १९ ॥

nāḍīnāṃ mṛdurūpatvātpūrṇatvādvā vraṇodare | kvāpi prāṇe sthite līne niḥspandāste suṣuptatā || 19 ||

Due to the softness or fullness of the channels, or due to a wound in the abdomen, when the vital energy is absorbed and still, deep sleep arises.

नाड़ियों की कोमलता या भराव के कारण, या पेट में घाव के कारण, जब प्राण शक्ति शान्त और लीन हो जाती है, तो गहरी नींद आती है।

7.139.20

तापस उवाच । अथ यस्य प्रविष्टोऽहं हृदये सोऽभवन्निशि । सुषुप्तघननिद्रालुराहारपरितृप्तिमान् ॥ २० ॥

tāpasa uvāca | atha yasya praviṣṭo'haṃ hṛdaye so'bhavannniśi | suṣuptaghananidrālurāhāraparitṛptimān || 20 ||

The ascetic said: Then, the one into whose heart I entered at night became deeply asleep, satisfied with food.

तपस्वी ने कहा: फिर, जिसके हृदय में मैं रात में प्रवेश किया, वह आहार से संतुष्ट होकर गहरी नींद में चला गया।

7.139.21

तेन सार्धमहं तत्र तच्चित्तेनैकतां गतः । सुषुप्तनिद्रां सुघनां गुणीभूतोऽनुभूतवान् ॥ २१ ॥

tena sārdhamahaṃ tatra taccittenaikatāṃ gataḥ | suṣuptanidrāṃ sughanāṃ guṇībhūto'nubhūtavān || 21 ||

With him, I also became one with his mind there and experienced deep, dense sleep, becoming endowed with qualities.

उसके साथ, मैं भी उसके मन के साथ एक हो गया और गहरी, घनी नींद का अनुभव किया, गुणों से युक्त होकर।

7.139.22

ततोऽन्धस्यस्य जीर्णेऽन्तर्नाडीमार्गे स्फुटे स्थिते । प्राकृते स्पन्दिते प्राणे सुषुप्तं तनुतां ययौ ॥ २२ ॥

tato'ndhasyasya jīrṇe'ntarnāḍīmārge sphuṭe sthite | prākṛte spandite prāṇe suṣuptaṃ tanutāṃ yayau || 22 ||

Then, with the worn-out internal nerve pathway of this blind one being clearly established, and the natural breath pulsating, he entered into a state of deep sleep.

तब, इस अंधे की जीर्ण अंतर्नाड़ी मार्ग स्पष्ट रूप से स्थित होने पर, और प्राकृतिक प्राण स्पंदित होने पर, वह गहरी नींद की अवस्था में प्रवेश कर गया।

7.139.23

सुषुप्ते तनुतां याते हृदयादिव निर्गतम् । अपश्यमहमत्रैव भुवनं भास्करादिमत् ॥ २३ ॥

suṣupte tanutāṃ yāte hṛdayādiva nirgatam | apaśyamahamatraiva bhuvanaṃ bhāskarādimat || 23 ||

Having entered the state of deep sleep, as if emerging from the heart, I saw right here a world filled with the sun and other luminaries.

गहरी नींद की अवस्था में प्रवेश करने पर, मानो हृदय से निकला हो, मैंने यहीं एक सूर्य और अन्य दीप्तिमान वस्तुओं से भरा हुआ जगत देखा।

7.139.24

तच्च क्षुब्धार्णवोत्थेन पूर्यमाणं महाम्भसा । विमुक्तेनेव कल्पाभ्रैरभ्रंकषतरंगिणा ॥ २४ ॥

tacca kṣubdhārṇavotthena pūryamāṇaṃ mahāmbhasā | vimukteneva kalpābhrairabhraṃkaṣataraṅgiṇā || 24 ||

And that world was being filled with the great waters arising from the agitated ocean, as if released by the clouds of the kalpa, with waves crashing against the clouds.

और वह जगत उथल-पुथल समुद्र से उठने वाले महान जल से भरा जा रहा था, मानो कल्प के बादलों द्वारा छोड़ा गया हो, जिनकी लहरें बादलों से टकरा रही थीं।

7.139.25

प्रोह्यत्पर्वतपूरेण महावर्तविराविणा । वहद्वनालीतृण्याढ्यैर्व्याप्तेनोन्मूलितागया ॥ २५ ॥

prohyatparvatapūreṇa mahāvartavirāviṇā | vahadvanaālītṛṇyāḍhyairvyāptenonmūlitāgayā || 25 ||

It was being carried away by the roaring great whirlpools, filled with uprooted trees and grass, and overflowing with mountain peaks.

वह उखड़े हुए पेड़ों और घास से भरे हुए, और पर्वत शिखरों से उफनते हुए महान भंवरों द्वारा बहाया जा रहा था।

7.139.26

पूर्वमेवावदग्धायास्त्रिलोक्याः खण्डखण्डकैः । पूर्णेन परितः प्रौढैः खपुराद्रिमहीमयैः ॥ २६ ॥

pūrvamevāvadagdhāyāstrilokyāḥ khaṇḍakhaṇḍakaiḥ | pūrṇena paritaḥ prauḍhaiḥ khapurādrimahīmayaiḥ || 26 ||

Previously, the three worlds were burnt by the fragments, and now they are filled with the matured mountain-like clouds resembling the earth.

पहले, तीनों लोक टुकड़ों से जल गए थे, और अब वे परिपक्व पर्वत-जैसे बादलों से भरे हुए हैं जो पृथ्वी के समान हैं।

7.139.27

अहं तत्रैव पश्यामि यावत्कस्मिंश्चिदास्पदे । कस्यांचित्पुरि कस्मिंश्चिद्गुहे वध्वा पुरे स्थितः ॥ २७ ॥

ahaṃ tatraiva paśyāmi yāvatkasmiṃścidāspade | kasyāṃcitpuri kasmiṃścidguhe vadhvā pure sthitaḥ || 27 ||

I see myself in that very place, wherever it may be, in some city, in some cave, or in the city where my beloved resides.

मैं उसी स्थान पर अपने आप को देखता हूँ, जहाँ भी हो, किसी नगर में, किसी गुफा में, या मेरी प्रियतमा के नगर में।

7.139.28

सदारः सहभृत्योऽहं सपुत्रः सहबान्धवः । सहभाण्डोपस्करणः सगृहोऽपहृतोऽम्भसा ॥ २८ ॥

sadāraḥ sahabhṛtyo'haṃ saputraḥ sahabāndhavaḥ | sahabhāṇḍopaskaraṇaḥ sagṛho'pahṛto'mbhasā || 28 ||

I, along with my wife, servants, sons, relatives, vessels, and household items, am being carried away by the water.

मैं, अपनी पत्नी, सेवकों, पुत्रों, रिश्तेदारों, बर्तनों, और घरेलू सामान के साथ, पानी द्वारा उठाया जा रहा हूँ।

7.139.29

उह्यमानं क्षयाम्भोभिस्तद्गृहं तच्च पत्तनम् । लङ्घ्यमानं द्रुमाकारैः पूर्यमाणं च वारिभिः ॥ २९ ॥

uhyamānaṃ kṣayāmbhobhistadgṛhaṃ tacca pattanam | laṅghyamānaṃ drumākāraiḥ pūryamāṇaṃ ca vāribhiḥ || 29 ||

That house and that city are being carried away by the destructive waters, being crossed by tree-like waves, and being filled with water.

वह घर और वह नगर विनाशकारी जल द्वारा उठाया जा रहा है, पेड़ों जैसी लहरों द्वारा पार किया जा रहा है, और पानी से भरा जा रहा है।

7.139.30

बृहत्कलकलारावं जेतुमब्धिमिवोद्यतम् । अतिक्षुभितवास्तव्यमनपेक्षितपुत्रकम् ॥ ३० ॥

bṛhatkalakalārāvaṃ jetumabdhimivodyatam | atikṣubhitavāstavyamanapekṣitaputrakam || 30 ||

With a great roaring sound, it seems as if the ocean is about to conquer, causing great disturbance to the dwelling place, without any concern for the children.

एक बड़े गर्जन की आवाज के साथ, ऐसा लगता है कि सागर विजय प्राप्त करने के लिए उद्यत है, निवास स्थान को बड़ी अशांति पहुँचा रहा है, बच्चों की परवाह किए बिना।

7.139.31

आवर्ततरलाढ्याभिर्वृत्तिभिर्व्यूढमाकुलम् । साक्रन्दोरस्ताडनोत्कजनजम्बालभीषणम् ॥ ३१ ॥

āvartataralāḍhyābhirvṛttibhirvyūḍhamākulam | sākrandorastāḍanotkajanajambālbhīṣaṇam || 31 ||

With whirling, unsteady waves, the situation is chaotic and terrifying, with loud cries, chest-beating, and the sound of wailing.

घूमती, अस्थिर लहरों के साथ, स्थिति अव्यवस्थित और भयानक है, जोर से चीखने, छाती पीटने, और रोने की आवाज के साथ।

7.139.32

स्फुटत्कुड्यत्रुटत्काष्ठरटच्छङ्कृतोद्रटम्प्रपतच्छादनच्छत्रगवाक्षस्थाङ्गनामुखम् ॥ ३२ ॥

sphuṭatkuḍyatruṭatkāṣṭharaṭacchaṅkukṛtodraṭamprapatacchādanacchatragavākṣasthāṅganāmukham || 32 ||

The house was in ruins, with broken walls, shattered wood, and fallen roofs and windows.

घर खंडहर में बदल गया था, टूटी हुई दीवारें, टूटे हुए लकड़ी के टुकड़े, और गिरे हुए छत और खिड़कियाँ।

7.139.33

इति यावत्क्षणं पश्यन्नहं तद्भावमागतःपरिरोदिमि दीनात्मा तावत्तत्सकलं गृहम् ॥ ३३ ॥

iti yāvatkṣaṇaṃ paśyannahaṃ tadbhāvamāgataḥparirodimi dīnātmā tāvattatsakalaṃ gṛham || 33 ||

Seeing this scene, I became overwhelmed with grief and began to weep, feeling helpless as the entire house was in ruins.

इस दृश्य को देखकर, मैं दुःख से भर गया और रोने लगा, महसूस करते हुए कि पूरा घर खंडहर में बदल गया है।

7.139.34

चतुर्धा भित्तिभेदेन वृद्धबालाङ्गनान्वितम्जगाम शतधा वीच्यां शिलायामिव निर्झरः ॥ ३४ ॥

caturdhā bhittibhedena vṛddhabālāṅganānvitamjagāma śatadhā vīcyāṃ śilāyāmiva nirjharaḥ || 34 ||

The house, divided into four parts by the broken walls, with old and young women, went in a hundred directions like a waterfall on a rock.

घर, टूटी हुई दीवारों से चार हिस्सों में बंटा हुआ, बूढ़ी और जवान महिलाओं के साथ, पत्थर पर झरने की तरह सौ दिशाओं में चला गया।

7.139.35

उह्यमानोऽहमभवं ततः प्रलयवारिणित्यक्तसर्वकलत्रादिचित्तः प्राणपरायणः ॥ ३५ ॥

uhyamāno'hamabhavaṃ tataḥ pralayavāriṇityaktasarvakalatrādicittaḥ prāṇaparāyaṇaḥ || 35 ||

Being carried away, I became overwhelmed by the flood of destruction, abandoning all thoughts of family and possessions, focused only on survival.

बहाया जाते हुए, मैं विनाश की बाढ़ से घिर गया, परिवार और संपत्ति के सभी विचारों को छोड़कर, केवल जीवित रहने पर ध्यान केंद्रित किया।

7.139.36

क्षिप्तस्तरङ्गजालेन योजनाद्योजनव्रजेउह्यमानद्रुमशिखाज्वालान्तरितजर्जरः ॥ ३६ ॥

kṣiptastaraṅgajālena yojanādyojanavrajeuhyamānadrumaśikhājvālāntaritajarjaraḥ || 36 ||

Thrown by the waves, the ship was tossed about, its mast shattered, and its ropes torn apart.

लहरों के जाल में फँसा हुआ, जहाज उछाला गया, उसका मस्तूल टूट गया, और उसकी रस्सियाँ फट गईं।

7.139.37

काष्ठकुड्यतटीपीठकटुसंघट्टघट्टितः । आवर्तनृत्यपातालतले गत्वोत्थितश्चिरात् ॥ ३७ ॥

kāṣṭhakuḍyataṭīpīṭhakaṭusaṃghaṭṭaghaṭṭitaḥ | āvartanṛtyapātālatale gatvotthitaścirāt || 37 ||

Having been struck by the collision of the wooden box on the bank, and having gone to the underworld and risen again after a long time.

लकड़ी के डिब्बे के किनारे पर टकराने से घायल होकर, और पाताल लोक में जाकर देर से उठ खड़ा हुआ।

7.139.38

चलाचलागमापायवलद्गुलुगुलारवे । जले बहुलकल्लोले मग्नोन्मग्नः पुनः पुनः ॥ ३८ ॥

calācalāgamāpāyavaladgulugulārave | jale bahulakallole magnōnmagnaḥ punaḥ punaḥ || 38 ||

In the roaring sound of the coming and going of the moving and immovable, in the water with many waves, he was submerged and emerged again and again.

चल और अचल के आने-जाने की गड़गड़ाहट में, बहुत से तरंगों वाले जल में, वह डूबा और बार-बार उभरा।

7.139.39

संघट्टभग्नशैलेन्द्रपङ्किले सलिले क्षणम् । पल्वले वारण इव मग्नः सत्पयसोद्धृतः ॥ ३९ ॥

saṃghaṭṭabhagnaśailendrapaṅkile salile kṣaṇam | palvale vāraṇa iva magnaḥ satpayasoddhṛtaḥ || 39 ||

For a moment, in the muddy water mixed with the broken pieces of the mountain king, he was submerged like an elephant in a marsh and then lifted out with good water.

एक क्षण के लिए, टूटे हुए पर्वत राजा के टुकड़ों से मिली कीचड़ वाले जल में, वह एक हाथी की तरह दलदल में डूबा और फिर अच्छे जल से उठाया गया।

7.139.40

यावदाश्वसिमि क्षिप्रं डिण्डीरे चाद्रिखण्डके । तावदेत्य हतो वेगाद्वैरिणेवातिवारिणा ॥ ४० ॥

yāvadāśvasimi kṣipraṃ ḍiṇḍīre cādrikhaṇḍake | tāvadetya hato vegādvairiṇevātivāriṇā || 40 ||

As soon as I regained my breath in the broken piece of the mountain, I was struck by the enemy with great force as if by a powerful wave.

जैसे ही मैंने पर्वत के टूटे हुए टुकड़े में अपनी साँस वापस पाई, मैं शत्रु द्वारा महान बल से मारा गया, जैसे कि एक शक्तिशाली लहर द्वारा।

7.139.41

नानावलनकल्लोलजलजालजुषा तदा । न तदस्ति न यद्दृष्टं दुःखं दुःखात्मना मया ॥ ४१ ॥

nānāvalanakallolajalajālajuṣā tadā | na tadasti na yaddṛṣṭaṃ duḥkhaṃ duḥkhātmanā mayā || 41 ||

At that time, surrounded by various waves and water, there was no suffering that I, the embodiment of suffering, did not experience.

उस समय, विविध तरंगों और जल से घिरे हुए, ऐसा कोई दुःख नहीं था जिसे मैं, दुःख का अवतार, नहीं अनुभव किया।

7.139.42

एतस्मिन्नन्तरे तत्र तदा तत्तामसेक्षण । यावज्जीवचिराभ्यासाद्विषादित्वात्सचेतसः ॥ ४२ ॥

etasminnantare tatra tadā tattāmasekṣaṇa| yāvajjīvacirābhyāsādviṣāditvātsacetasaḥ || 42 ||

Meanwhile, there, at that time, with dark eyes, due to the constant practice of sorrow throughout life, with a conscious mind.

इसी बीच, वहाँ, उस समय, अंधेरे नेत्रों वाले, जीवन भर दुःख के निरंतर अभ्यास से, चेतना वाले मन से।

7.139.43

प्राक्तनं संस्मृते रूपं स्वं समाधिमयं मया । आ अहो नु जगत्यन्यरूपेऽहं तापसः स्थितः ॥ ४३ ॥

prāktanaṃ saṃsmṛte rūpaṃ svaṃ samādhimayaṃ mayā| ā aho nu jagatyanvarūpe'haṃ tāpasaḥ sthitaḥ || 43 ||

Remembering my former state, which was full of meditation, I exclaim, 'Ah, in this world of different forms, I am an ascetic.'

अपनी पूर्व अवस्था को याद करते हुए, जो ध्यानमय थी, मैं कहता हूँ, 'अहो, इस विविध रूपों वाले जगत में, मैं एक तापस हूँ।'

7.139.44

अहं कस्यचिदन्यस्य स्वप्नदृष्टिदिदृक्षया । प्रविष्टोऽहमयं स्वप्ने पश्यामीमं भ्रमं त्विति ॥ ४४ ॥

ahaṃ kasyacidanyasya svapnadṛṣṭididṛkṣayā| praviṣṭo'hamayaṃ svapne paśyāmīmaṃ bhramaṃ tviti || 44 ||

I, desiring to see the dream vision of someone else, have entered this dream and am seeing this illusion.

मैं, किसी दूसरे के स्वप्न दृश्य को देखने की इच्छा से, इस स्वप्न में प्रवेश कर चुका हूँ और इस भ्रम को देख रहा हूँ।

7.139.45

वर्तमानदृढाभ्यासमिथ्याज्ञानमयात्मनि । कल्लोलैरुह्यमानोऽपि ततोऽहं सुखितः स्थितः ॥ ४५ ॥

vartamānadṛḍhābhyāsamithyājñānamayātmani| kallolairuhyamāno'pi tato'haṃ sukhitaḥ sthitaḥ || 45 ||

Though I am being tossed by the waves of false knowledge in my steadfast practice, I am still happy.

भले ही मैं अपने दृढ़ अभ्यास में मिथ्या ज्ञान की लहरों से उछाला जा रहा हूँ, फिर भी मैं सुखी हूँ।

7.139.46

इदं वारितयापश्यं प्रलयाब्धिविवर्तनाः । उह्यमानाद्रिनगरग्रामोर्वीखण्डपादपाः ॥ ४६ ॥

idaṃ vāritayāpaśyaṃ pralayābdhivivartanāḥ| uhyamānādrinagaragrāmōrvīkhaṇḍapādapāḥ || 46 ||

I saw this being prevented by the waves of the ocean of dissolution, being tossed about, the mountains, cities, villages, fragments of earth, and trees.

मैंने इसे प्रलय के समुद्र की लहरों द्वारा रोका हुआ देखा, उछाला जा रहा, पर्वत, नगर, ग्राम, धरती के टुकड़े, और पेड़।

7.139.47

उह्यमानामराहीन्द्रनारीनरनभश्चराः । उह्यमानमहारम्भलोकपालपुरालयाः ॥ ४७ ॥

uhyamānāmarāhīndranārīnaranabhaścarāḥ | uhyamānamahārambhalokapālapurālayāḥ || 47 ||

The celestial beings, including the wives of the gods and kings, are being carried away, and the grand palaces of the guardians of the world are being carried away.

देवी, राजाओं की पत्नियाँ और आकाशचारी देवता उठाए जा रहे हैं, और लोकपालों के महान महल उठाए जा रहे हैं।

7.139.48

अथाहमद्रिमिश्राम्बुकल्लोलाद्रिविघट्टनाः । मुहुः पश्यञ्जगन्नाशमनन्तरमचिन्तयम् ॥ ४८ ॥

athāhamadrimiśrāmbukallolādrivighaṭṭanāḥ | muhuḥ paśyañjagannāśamanantaramacintayam || 48 ||

Then I, seeing the waves mixed with mountain water repeatedly breaking against the mountains, thought about the impending destruction.

फिर मैंने पर्वत जल से मिश्रित तरंगों को बार-बार पर्वतों से टकराते देखा और आने वाले विनाश के बारे में सोचा।

7.139.49

चित्रमेष त्रिनेत्रोऽपि जीर्णं तृणमिवार्णवे । उह्यते हा हतविधेर्नाऽकार्यं नाम विद्यते ॥ ४९ ॥

citrameṣa trinetro'pi jīrṇaṃ tṛṇamivārṇave | uhyate hā hatavidhernā'kāryaṃ nāma vidyate || 49 ||

It is strange that even the three-eyed one (Shiva) is being carried away like a worn-out blade of grass in the ocean. Alas, there is nothing that cannot be destroyed.

यह आश्चर्य की बात है कि तीन नेत्रों वाले (शिव) भी समुद्र में एक पुराने घास के तिनके की तरह उठाए जा रहे हैं। हाय, कुछ भी ऐसा नहीं है जो नष्ट नहीं हो सकता।

7.139.50

चतुर्धा भित्तिभेदेन प्रकटाशयतामहम् । पद्मानीव गृहाण्यप्सु दर्शयन्ति रवेः प्रभाः ॥ ५० ॥

caturdhā bhittibhedena prakaṭāśayatāmaham | padmānīva gṛhāṇyapsu darśayanti raveḥ prabhāḥ || 50 ||

I see the inner thoughts of the four-fold division of the walls clearly, like lotuses in the water, revealed by the rays of the sun.

मैं चार भागों में विभक्त दीवारों के अंतर्निहित विचारों को स्पष्ट रूप से देखता हूँ, जैसे पानी में कमल सूर्य की किरणों द्वारा प्रकट होते हैं।

7.139.51

चित्रं तरङ्गवलनासु समुल्लसन्ति गन्धर्वकिंनरनरामरनागनार्यः । भूरिभ्रमैर्भ्रमरहारमिव ह्रदिन्यः पद्मिन्य एव सकलामलजङ्गमाख्याः ॥ ५१ ॥

citraṃ taraṅgavalanāsu samullasantī gandharvakiṃnaranarāmaranāganāryaḥ |
bhūribhramairbhramarahāramiva hradinyaḥ padminya eva sakalāmalajaṅgamākhyāḥ || 51 ||

It is wonderful to see the celestial beings, including Gandharvas, Kinnaras, humans, gods, and serpent maidens, rising in the waves like lotuses in a lake adorned with bees.

तरंगों में उठते हुए गंधर्व, किन्नर, मनुष्य, देवता और नाग कन्याओं को देखना चमत्कारपूर्ण है, जैसे मधुमक्खियों से सजे तालाब में कमल उठते हैं।

7.139.52

विद्याधरीभुजलतावलितेन्दुकान्तकक्ष्याविभागमणिजालगवाक्षलक्ष्म्यः । देवासुरोरगमहागृहभित्तिभागाः सौवर्णनौगणवदम्बुभरे भ्रमन्ति ॥ ५२ ॥

vidyādharībhujalatāvalitendukāntakakṣyāvibhāgamaṇijālagavākṣalakṣmyaḥ|
devāsuroragamahāgṛhabhittibhāgāḥ saurvṇanaugavadambubhare bhramanti || 52 ||

The celestial nymphs, with arms like creepers, adorned with moon-like ornaments, with their beautiful girdles studded with gems, and with their windows decorated with golden lattice, wander in the water-filled clouds like divine beings.

विद्याधरी की भुजाएँ लताओं के समान हैं, चन्द्रमा के समान आभूषणों से सजी हुई, उनकी सुन्दर कमरबन्द मणियों से जड़ी हुई, और उनकी खिड़कियाँ सोने की जाली से सजी हुई, पानी से भरे बादलों में देवताओं की तरह भटकती हैं।

7.139.53

मत्तेभकुम्भपरिणाहिनि कुङ्कुमाङ्के शच्याः पयोधरभरे रतिखेदखिन्नः। लग्नः सुखादिव करोति तरङ्गदोलाः संशीर्यमाणमणिगेहगतोऽत्र शक्रः ॥ ५३ ॥

mattebhakumbhapariṇāhini kuṅkumāṅke śacyāḥ payodharabhare ratiKhedakhinnaḥ| lagnaḥ sukhādiva karoti taraṅgadolāḥ saṃśīryamāṇamaṇigehagato'tra śakraḥ || 53 ||

Indra, exhausted from the pleasures of love, seems to enjoy the swinging waves as if they were the breasts of his beloved Sachi, which are marked with kumkum and resemble the pots of intoxicated elephants.

इन्द्र, प्रेम के सुखों से थके हुए, ऐसे लगते हैं जैसे वे लहरों के झूले का आनन्द ले रहे हों, जो कि उनकी प्रियतमा शची के कुंकुम से चिह्नित स्तनों के समान हैं, जो मतवाले हाथियों के घड़ों के समान हैं।

7.139.54

हा वान्ति वारिवलनावलितान्तरिक्षमृक्षावधूतकुसुमप्रकरान्किरन्तः। वाताः पतद्बिबुधमन्दिररत्नसानाबुद्यानकोटरगता इव साक्षतेन ॥ ५४ ॥

hā vānti vārivalanāvalitāntarikṣamṛkṣāvadhūtakusumaprakarānkirantaḥ| vātāḥ patadvibudhamandiraratnasānābudyānakoṭaragatā iva sākṣaten || 54 ||

Alas! The winds blow, filling the sky with water-laden clouds, scattering the flowers fallen from the trees, as if they are the jewels scattered from the celestial mansions in the gardens.

हाय! हवाएँ चलती हैं, आकाश को पानी से भरे बादलों से भरती हैं, वृक्षों से गिरे फूलों को बिखेरती हैं, जैसे कि वे देवताओं के महलों से बिखरे हुए रत्न हों, बगीचों में।

7.139.55

यन्त्रोत्थहेमदृषदा सदृशाम्बुरूपं क्षुब्धाद्रिभीमजलवीचिशिखेरितं खे। व्यावर्तते दिवि दलावृतकर्णिकास्थध्यानैकनिष्ठपरमेष्ठिसरोजमेतत् ॥ ५५ ॥

yantrōtthahēmadṛṣadā sadṛśāmburūpaṃ kṣubdhādrībhīmajalavīciśikhēritaṃ khē| vyāvartatē divi dalāvṛtakarṇikāsthadhyānaikaniṣṭhaparamēṣṭhisarōjamētat || 55 ||

The water, resembling the color of gold produced by machines, is agitated by the terrifying waves of the disturbed mountains. It revolves in the sky, appearing like a lotus in the divine meditation, with its petals covering the pericarp.

मशीन से उत्पन्न सोने के रंग के समान पानी, उत्तेजित पर्वतों की भयानक लहरों से क्षुब्ध होता है। यह आकाश में घूमता है, जैसे कि एक दिव्य ध्यान में कमल का फूल, जिसके पंखुड़ियों ने कर्णिका को ढक रखा हो।

7.139.56

मेघा इवातिघनघुंघुमघोषभीमा वीचीचयाः कनकपत्तनविद्युतोऽमी। व्योम्नि भ्रमन्ति गजवाजिमृगेन्द्रनागवृक्षाद्रिकाननमहीतलतुल्यदेहाः ॥ ५६ ॥

meghā iva atighanaghuṅghumaghoṣabhīmā vīcīcayāḥ kanakapattana vidyuto'mī| vyomni bhramanti gajavājimṛgendranāgavṛkṣādrīkānanamahītalatulyadehāḥ || 56 ||

The clouds, extremely dense and terrifying with their thunderous roar, resemble golden cities with their lightning. They wander in the sky, with bodies like elephants, horses, lions, snakes, trees, mountains, forests, and the earth.

बादल, अत्यन्त घने और भयानक गर्जना से भरे हुए, अपनी बिजली के साथ सोने के शहरों के समान लगते हैं। वे आकाश में भटकते हैं, हाथियों, घोड़ों, शेरों, साँपों, पेड़ों, पर्वतों, जंगलों और पृथ्वी के समान शरीर के साथ।

7.139.57

उह्यमानोदभूवीच्यामतसीकुसुमश्रियाम्। यमोऽप्ययं यमेनेव वारिपूरेण नीयते ॥ ५७ ॥

uhyamānodabhūvīcyāmatasīkusumaśriyām | yamo'pyayaṃ yameneva vāripūreṇa nīyate || 57 ||

Krishna, being carried away by the flood, appears like a blue lotus in the water. Even Yama, the god of death, is carried away by the flood like a mere mortal.

कृष्ण जल प्रवाह में बहते हुए नील कमल के समान दिखाई देते हैं। यम, मृत्यु के देवता, भी इस जल प्रवाह द्वारा एक सामान्य मनुष्य की तरह बहाए जाते हैं।

7.139.58

एते बुद्ध्यन्ति सलिलेऽखिललोकपाला नागा नगैश्च नगरैः सह लक्षसंख्याः।
लक्ष्म्याकरोदरगुहागतवारिपूरव्यावर्तनागुडगुडैरभिलक्ष्यपूराः ॥ ५८ ॥

ete buddhyanti salile'khilalokapālā nāgā nagaiśca nagaraiḥ saha lakṣasaṃkhyāḥ |
lakṣmyākarodaraguhavāripyūravyāvartanāguḍaguḍairabhilakṣyapūrāḥ || 58 ||

All the guardians of the world, along with the serpents, mountains, and cities, numbering in the hundreds of thousands, recognize this. The cities, marked by the sound of the churning waters in the caves of the mountains, are filled with prosperity.

सभी लोकपाल, सर्प, पर्वत और नगर, जो लाखों की संख्या में हैं, इसे पहचानते हैं। पर्वतों की गुफाओं में जल के घूमने की आवाज से चिह्नित नगर समृद्धि से भरे हुए हैं।

7.139.59

दुर्वारवारिवलनापरिपूरितेषु पातालभूतलनभस्तलदिक्तटेषु। मत्स्या इवेन्द्रयमयक्षसुरासुरौघाः सग्रामपत्तनविमाननगा भ्रमन्ति ॥ ५९ ॥

durvāravārivalanāparipūriteṣu pātālabhūtalanabhastaladiktateṣu | matsyā iveindrayamayakṣasurāsuraughāḥ
saghrāmapattanavimānanagā bhramanti || 59 ||

In the realms of the underworld, earth, sky, and all directions filled with the unstoppable flood, the gods, demons, Yakshas, and other beings wander like fish, along with their villages, cities, and aerial vehicles.

अटल, भूतल, आकाश और सभी दिशाओं में अटल बाढ़ से भरे हुए हैं, देवता, असुर, यक्ष और अन्य प्राणी मछलियों की तरह भटकते हैं, अपने गाँवों, शहरों और विमानों के साथ।

7.139.60

उह्यमानस्य कृष्णस्य तनुरेवाम्बुरूपिणी। मातृजङ्घेव वत्सस्य कष्टं बन्धनतां गता ॥ ६० ॥

uhyamānasya kṛṣṇasya tanurevāmburūpiṇī | mātṛjaṅgheva vatsasya kaṣṭaṃ bandhanatāṃ gatā || 60 ||

The body of Krishna, being carried away by the flood, has become like water itself. Like a calf's leg bound to its mother, it has painfully become bound.

कृष्ण का शरीर, जो जल प्रवाह द्वारा बहाया जा रहा है, जल के समान हो गया है। जैसे बछड़े की टाँग माँ से बंधी होती है, वैसे ही यह दर्दनाक तरीके से बंध गया है।

7.139.61

अन्योन्यमावलयतामहो बुडबुडारवः । श्रूयते देवदैत्यानां स्वस्त्रीहलहलाकुलः ॥ ६१ ॥

anyonyamāvalayatāmaho buḍabuḍāravaḥ | śrūyate devadaityānāṃ svastrīhalahalākulaḥ || 61 ||

Oh, the sound of bubbling is heard as they embrace each other. The gods and demons, along with their wives, are filled with excitement and commotion.

ओह, एक-दूसरे को आलिंगन करते हुए बुलबुलाहट की आवाज सुनाई देती है। देवता और दैत्य, अपनी पत्नियों के साथ, उत्साह और हलचल से भरे हुए हैं।

7.139.62

कोलाहलाकुलपुरोत्तमवेगपातविक्षुब्धवारिपटलीवलिताम्बरासु । दिक्षु भ्रमज्जलदजालघनास्विवैष संलक्ष्यते जलमयः स्फुटकुड्यबन्धः ॥ ६२ ॥

kolāhalākulapurottamavegapātavikṣubdhavāripaṭalīvalitāmbarāsu | dikṣu bhramajjaladajālaghanāsvivaīṣa saṃlakṣyate jalamayaḥ sphuṭakuḍyabandhaḥ || 62 ||

In the best city, which is disturbed by the speed of the best noise, the water surface is covered with clothes. In all directions, it appears like a dense network of moving clouds. A clear water wall is seen.

शोर से भरी हुई सर्वोत्तम नगरी में, जल की सतह कपड़ों से ढंकी हुई है| सभी दिशाओं में, यह घूमते बादलों के घने जाल की तरह दिखता है| एक स्पष्ट जल दीवार दिखाई देती है|

7.139.63

हा कष्टमेष तरसा पयसापनीत आवर्तवृत्तिपरिवर्तनया स्वधस्तात् । एते कुबेरयमनारदवासवाद्याः प्राणान्पयोभ्रपटलैर्विधुरास्त्यजन्ति ॥ ६३ ॥

hā kaṣṭameṣa tarasā payasāpanīta āvartavṛttiparivartanayā svadhastāt | ete kuberayamanāradavāsavādyāḥ prāṇānpayobhrapaṭalairvidhurāstyajanti || 63 ||

Alas, this is a great difficulty. Quickly brought by water, the whirlpools are changing their course. These, including Kubera, Yama, Narada, and Indra, are abandoning their lives due to the water clouds.

हाय, यह एक बड़ी कठिनाई है| जल द्वारा तेजी से लाया गया, भंवर अपनी दिशा बदल रहे हैं| ये, जिनमें कुबेर, यम, नारद और इंद्र शामिल हैं, जल के बादलों के कारण अपने प्राण त्याग रहे हैं|

7.139.64

प्राज्ञाः प्रशान्तजडदेहमिहोह्यमानं मानोज्झिताः शवतयैव च तद्वहन्ति । ब्रह्मेन्द्रविष्णुपुरखण्डकसंकटाम्बु संघट्टनेन कटुकुट्टनदृक्षु तेन ॥ ६४ ॥

prājñāḥ praśāntajaḍadehamihohyamānaṃ mānojjhitāḥ śavatayaiva ca tadvahanti | brahmendraviṣṇupurakhaṇḍakasaṅkaṭāmbu saṅghaṭṭanena kaṭukuṭṭanadṛkṣu tena || 64 ||

The wise, having abandoned their peaceful inert bodies here, carry them as corpses. By the collision of the fragmented waters of Brahma, Indra, and Vishnu, they see harsh grinding.

बुद्धिमान लोग, जिन्होंने यहाँ अपने शांत जड़ शरीर को छोड़ दिया है, उन्हें शव के रूप में ले जाते हैं| ब्रह्मा, इंद्र और विष्णु के टूटे हुए जल के टकराने से, वे कठोर पिसना देखते हैं|

7.139.65

स्त्रीणां गणोऽर्धपरिपिष्ट इहैति कष्टं कस्त्रातुमेनमपरः कुजडं समर्थः । न ह्यन्तकस्य दशनैरभिचर्व्यमाणा त्रातुं परस्परमियं जनता समर्था ॥ ६५ ॥

strīṇāṃ gaṇo'rdhaparipiṣṭa ihaeti kaṣṭaṃ kastrātumenaṃ aparaḥ kujaḍaṃ samarthaḥ | na hyantakasya daśanairabhicarvyamāṇā trātuṃ parasparamiyaṃ janatā samarthā || 65 ||

The group of women, half-crushed, comes here with difficulty. Who else, other than the foolish, is capable of protecting them? Indeed, this population, being devoured by the teeth of death, is not capable of protecting each other.

आधी कुचली हुई स्त्रियों का समूह यहाँ कठिनाई से आता है| इन्हें बचाने के लिए मूर्ख के अलावा कौन सक्षम है? वास्तव में, मृत्यु के दाँतों द्वारा चबाई जा रही यह जनता एक-दूसरे को बचाने में सक्षम नहीं है|

7.139.66

पर्वतप्रतिघसर्पसर्पणाः संसरन्ति विपुला जलोच्चयाः । तेषु नाव इव देवपत्तनान्युन्नमय्य वपुराशु यान्त्यधः ॥ ६६ ॥

parvatapratighasarpasarpaṇāḥ saṃsaranti vipulā jaloccayāḥ | teṣu nāva iva devapattanānyunnamayya vapurāśu yāntyadhaḥ || 66 ||

The vast water elevations, moving like serpents against the mountain obstacles, wander. In them, the divine cities, like boats, quickly sink down after raising their bodies.

पर्वत के विरोधी बाधाओं के खिलाफ सर्प की तरह चलने वाली विशाल जल उच्चताएँ भटकती हैं| उनमें, दिव्य नगरियाँ, नावों की तरह, अपने शरीर को उठाकर तुरंत नीचे डूब जाती हैं|

7.139.67

द्वीपाद्रीन्द्रसुरासुरोरगनरैर्नागाप्सरश्चारणैर्व्याप्तं वारिविलोलितैः सरसिजैरालूनमूलैरिव । एकाम्भोधिसरः स्थितं त्रिभुवनं कालेन निर्मूलितं कष्टं ते क्व गता महर्द्धिविभवा देवा जगन्नायकाः ॥ ६७ ॥

dvīpādrīndrasurāsuroraganarairnāgāpsaraścāraṇaivyāptaṃ vārivilolitaiḥ sarasijairālūnamūlairiva| ekāmbhodhisaraḥ sthitaṃ tribhuvanaṃ kālena nirmūlitaṃ kaṣṭaṃ te kvā gatā maharddhivibhavā devā jagannāyakāḥ || 67 ||

The universe, filled with islands, mountains, gods, demons, serpents, humans, celestial nymphs, and other beings, and adorned with lotuses swaying in the water, as if uprooted, is situated in the single ocean. Alas, where have the gods, the lords of the world, gone with their great prosperity, uprooted by time?

द्वीप, पर्वत, देवता, असुर, नाग, मनुष्य और अप्सराओं से भरा हुआ ब्रह्मांड, जल में लहराते हुए कमलों से सजा हुआ, जैसे उखाड़ दिया गया हो, एक समुद्र में स्थित है। हाय, समय द्वारा उखाड़े गए देवताओं, जगत के स्वामी, उनके महान समृद्धि के साथ कहाँ चले गए?

Chapter 140

7.140.1

व्याध उवाच । भगवंस्त्वादृशस्तां तामवस्थां च कथं गतः । कथं ध्यानप्रयोगेण तदा नोपशमं गतः ॥ १ ॥

vyādha uvāca | bhagavamstvādṛśastāṃ tāmavasthāṃ ca kathaṃ gataḥ | kathaṃ dhyānaprayogeṇa tadā nopaśamaṃ gataḥ || 1 ||

The hunter said: O Lord, how did you attain such a state? How did you not attain peace through the practice of meditation at that time?

शिकारी ने कहा: हे भगवन्, आप ऐसी अवस्था में कैसे पहुंचे? उस समय ध्यान के अभ्यास से कैसे शांति नहीं प्राप्त हुई?

7.140.2

मुनिरुवाच । कल्पान्तेषु विनश्यन्ति नाशैर्नानाविधात्मभिः । जगन्ति भ्रान्तिरूपाणि नभस्याभासरूपिभिः ॥ २ ॥

muniruvāca | kalpānteṣu vinaśyanti nāśairnānāvidhātmabhiḥ | jaganti bhrāntirūpāṇi nabhasyābhāsarūpibhiḥ || 2 ||

The sage said: At the end of the kalpas, the worlds perish with various kinds of destructions, appearing like illusions in the sky.

ऋषि ने कहा: कल्पों के अंत में, विभिन्न प्रकार के विनाशों से संसार नष्ट हो जाते हैं, जो आकाश में भ्रम के समान दिखाई देते हैं।

7.140.3

कदाचित्क्रमशो नाशः कल्पान्ते संप्रवर्तते । अशङ्कितं कदाचिद्रागेकधादिविकारतः ॥ ३ ॥

kadācitkramśo nāśaḥ kalpānte saṃpravartate | aśaṅkitaṃ kadāciddrāgekadhādivikārataḥ || 3 ||

Sometimes, destruction occurs gradually at the end of the kalpas. Sometimes, it happens suddenly due to a single transformation.

कभी-कभी, कल्पों के अंत में विनाश धीरे-धीरे होता है। कभी-कभी, यह अचानक एक ही परिवर्तन के कारण होता है।

7.140.4

तदा द्रागित्येव यदा विकृतं वारि तत्तथा । तेन यावत्सरन्त्याद्यं तावन्नीता जलैः सुराः ॥ ४ ॥

tadā drāgityeva yadā vikṛtaṃ vāri tattathā | tena yāvatsarantyādyaṃ tāvannītā jalaiḥ surāḥ || 4 ||

At that time, when the water becomes impure, it flows in such a way that the gods are carried away by the waters.

उस समय, जब जल अशुद्ध हो जाता है, तब वह ऐसे बहता है कि देवता जल द्वारा बहा लिए जाते हैं।

7.140.5

अन्यच्च विपिनाधीश कालः सर्वंकषो ह्ययम् । यत्र काले ततस्तस्मिंस्त्ववश्यंभावि तत्तथा ॥ ५ ॥

anyacca vipinādhīśa kālaḥ sarvaṃkaṣo hyayam | yatra kāle tatastasmins tvavaśyaṃbhāvi tattathā || 5 ||

O Lord of the forest, time is the destroyer of all. Whatever happens in time is inevitable.

हे वन के स्वामी, समय सबका नाश करने वाला है। समय में जो भी होता है, वह अनिवार्य है।

7.140.6

बलं बुद्धिश्च तेजश्च क्षयकाल उपस्थिते । विपर्यस्यति सर्वत्र सर्वथा महतामपि ॥ ६ ॥

balaṃ buddhiśca tejaśca kṣayakāla upasthite | viparyasyati sarvatra sarvathā mahatāmapi || 6 ||

Strength, wisdom, and radiance all decline when the time of decay approaches; everything turns upside down, even for the great ones.

बल, बुद्धि और तेज सभी क्षय के समय में घटते हैं; सब कुछ उलट-पुलट हो जाता है, चाहे वे महान हों।

7.140.7

अन्यच्च विपिनाधीश मयैतत्तव वर्णितम् । स्वप्नदृष्टं किल स्वप्ने किं न संभवतीह कम् ॥ ७ ॥

anyacca vipinādhīśa mayaitattava varṇitam | svapnadṛṣṭaṃ kila svapne kiṃ na saṃbhavatīha kam || 7 ||

And moreover, O Lord of the forest, I have described this to you; what is seen in a dream, why can't it happen here?

और भी, हे वन के स्वामी, मैंने यह आपको बताया है; सपने में जो देखा जाता है, वह यहाँ क्यों नहीं हो सकता?

7.140.8

व्याध उवाच । असदेतद्यदि विभो स्वप्नसंभ्रममात्रकम् । कथितेन तदैतेन कोऽर्थः कल्याणकोविद ॥ ८ ॥

vyādha uvāca | asadetadyadi vibho svapnasambhramamātrakam | kathitena tadaitena ko'arthaḥ kalyāṇakovida || 8 ||

The hunter said: If this is unreal, O Lord, merely a dream-like illusion, what is the purpose of telling it, O wise one?

शिकारी ने कहा: यदि यह असत्य है, हे प्रभु, केवल एक सपने जैसी भ्रम, तो इसे बताने का क्या प्रयोजन है, हे विद्वान?

7.140.9

मुनिरुवाच । त्वद्बोधनात्मकं कार्यं महदस्त्यत्र बुद्धिमन् । एतद्भ्रमात्मकं वेत्ति भवान्सत्यं तु मे श्रृणु ॥ ९ ॥

muniruvāca | tvadbodhanātmakaṃ kāryaṃ mahadastyatra buddhiman | etadbhramātmakaṃ vetti bhavānsatyaṃ tu me śṛṇu || 9 ||

The sage said: O wise one, there is a great purpose in this act of enlightening you; understand that this is an illusion, but listen to the truth from me.

ऋषि ने कहा: हे बुद्धिमान, इस आपको बोध कराने में एक महान उद्देश्य है; यह एक भ्रम है, लेकिन मेरे से सत्य सुनो।

7.140.10

अनन्तरमहं तस्मिन्मत्तैकार्णवरंहसि । जन्तोरोजः स्थितः स्वप्ने भ्रान्तं भ्रान्तो व्यलोकय ॥ १० ॥

anantaramahaṃ tasminmattaikārṇavaraṃhasi | jantorojaḥ sthitaḥ svapne bhrāntaṃ bhrānto vyalokaya || 10 ||

Immediately after, I saw in that intoxicated ocean of sound, the confused being standing in the dream, confusedly looking around.

तुरंत बाद, मैंने उस मतवाले शब्द के समुद्र में देखा, सपने में खड़े भ्रमित जीव को, भ्रमित होकर चारों ओर देखते हुए।

7.140.11

यावत्सासकलं वारि क्वापि निर्गन्तुमुद्यतम् । विक्षुब्धवज्रवित्रस्तसपक्षाद्रीन्द्रवृन्दवत् ॥ ११ ॥

yāvatsasakalaṃ vāri kvāpi nirgantumudyatam | vikṣubdhvajravitrastasapakṣādrīndravṛndavat || 11 ||

As all the water was about to flow out somewhere, it trembled like a mountain peak struck by a thunderbolt.

जब सारा पानी कहीं बहने को उद्यत हो गया, तो वह वज्र से घबराए पक्षी की तरह काँप उठा।

7.140.13

अथ क्षणेन सलिलं तदशेषेण निर्ययौ । वीच्यग्रस्फुटिताकारैर्देवैस्तारकिताम्बरम् ॥ १३ ॥

atha kṣaṇena salilaṃ tadaśeṣeṇa niryayau | vīcyagrspuṭitākārairdevaistārakitāmbaram || 13 ||

Then, in an instant, all the water flowed out, and the sky was filled with the stars resembling the tips of waves.

फिर, एक क्षण में, सारा पानी बह गया, और आकाश लहरों के अग्रभाग की तरह दिखने वाले तारों से भर गया।

7.140.14

तारागणैश्च पातालगतैर्मणिमयोदरम् । आवर्तेषु परावृत्तैः स्फारमद्रिजरत्तृणैः ॥ १४ ॥

tārāgaṇaiśca pātālagatairmayodayodaram | āvarteṣu parāvṛttaiḥ sphāramadrijarattṛṇaiḥ || 14 ||

With the stars that had descended to the underworld, the gem-filled ocean was filled with whirlpools and shining with mountain-like grass.

जो तारे पाताल तक उतर गए थे, उनसे मणियों से भरा समुद्र भंवरों से भर गया और पर्वत की तरह चमकती घास से चमक उठा।

7.140.15

हेमद्वीपोपमैर्व्याप्तं गीर्वाणपुरमन्दिरैः । भ्रमत्सुराङ्गनालीननलिनीजालमालितम् ॥ १५ ॥

hemadvīpopamairvyāptaṃ gīrvāṇapuramandiraiḥ | bhramatsurāṅganālīnanalinījālamālitam || 15 ||

Filled with golden islands, the city of the gods was adorned with temples, and the wandering celestial nymphs were surrounded by lotus garlands.

सोने के द्वीपों से भरा, देवताओं का नगर मंदिरों से सजा हुआ था, और घूमने वाली अप्सराएँ कमल की मालाओं से घिरी हुई थीं।

7.140.16

मध्योह्यमानकल्पाभ्रनीलशैवालजालकम् । विद्युद्गोरोचनाम्भोदनीलनीरजनिर्भरम् ॥ १६ ॥

madhyohyamānakalpābhra nīlaśaivālajālakam | vidyudgorocanāmbhodanīlanīrajanirbharam || 16 ||

In the middle, there were dark clouds resembling black algae, and the sky was filled with lightning, yellow pigment, and blue water-lilies.

बीच में, काले शैवाल की तरह दिखने वाले काले बादल थे, और आकाश बिजली, पीला रंग, और नीले जलज से भरा हुआ था।

7.140.17

स्फुरत्सीकरनीहारमेघाद्रिकृतदिक्तटम् । उल्लोलद्वीचिसंदिग्धवहत्कल्पद्रुमव्रजम् ॥ १७ ॥

sphuratsīkaranīhārameghādrikṛtadiktaṭam | ulloladvīcisaṃdigdhavahtkalpadrumavrajam || 17 ||

The directions, made by the cloud-like mountains, were shining with the moonlight and the mist, and the groves of wish-fulfilling trees were swaying with the waves.

चांदनी और कुहरे से चमकते हुए बादलों जैसे पर्वतों द्वारा निर्मित दिशाओं को लहराती हुई तरंगों से कल्पवृक्षों के झुंड ले जा रहे थे।

7.140.18

अथैकार्णवखातोऽसावभवच्छुष्ककोटरः । क्वचिद्गलितसह्याद्रि क्वचित्संशीकमन्दरः ॥ १८ ॥

athaikārṇavakhāto'sāvabhavacchuṣkakoṭaraḥ | kvacidgalitasahyādri kvacitsaṃśīkamandaraḥ || 18 ||

Then, from the pit of a single ocean, it became a dry hollow. Sometimes it was melted by the Sahyadri mountains, and sometimes it was suspected to be Mandara mountain.

फिर, एक समुद्र की खाई से, यह एक सूखा खोखला बन गया। कभी-कभी यह सह्याद्रि पर्वतों द्वारा पिघला हुआ था, और कभी-कभी यह मंदरा पर्वत होने का संदेह होता था।

7.140.19

क्वचित्कङ्कनिमग्नेन्दुयमवासवतक्षकः । क्वचित्पङ्कनिमग्नाधःशाखकल्पद्रुमोत्करः ॥ १९ ॥

kvacitkaṅkanimagnenduyamavāsavatakṣakaḥ | kvacitpaṅkanimagnādhḥśākhakalpadrumotkaraḥ || 19 ||

Sometimes it was a serpent named Takshaka, submerged in the Yamuna with the moon. Sometimes it was a cluster of wish-fulfilling trees with branches submerged in the mud.

कभी-कभी यह चंद्रमा के साथ यमुना में डूबा हुआ तक्षक नामक सर्प था। कभी-कभी यह कीचड़ में डूबी हुई शाखाओं वाले कल्पवृक्षों का झुंड था।

7.140.20

क्वचित्कमलवत्कीर्णलोकपालशिरःकरः । क्वचित्पङ्कजविश्रान्तरुधिरह्रदपाटलः ॥ २० ॥

kvacitkamalavatkīrṇalokapālaśiraḥkaraḥ | kvacitpaṅkajaviśrāntarudhirahradapāṭalaḥ || 20 ||

Sometimes it was a lotus-like head of the guardian of the world, filled with lotuses. Sometimes it was a pond of blood, exhausted by lotuses.

कभी-कभी यह कमल के समान लोकपाल का सिर था, जो कमलों से भरा हुआ था। कभी-कभी यह कमलों से थका हुआ रक्त का तालाब था।

7.140.21

क्वचिदाकण्ठनिर्मग्नक्वणद्विद्याधरीगणः । क्वचित्स्वप्नमृतेभाभयाम्योग्रमहिषावृतः ॥ २१ ॥

kvacidākaṇṭhanirmagnakvaṇadvidyādharīgaṇaḥ | kvacitsvapnamṛtebhābhayāmyogramahiṣāvṛtaḥ || 21 ||

Sometimes it was a group of Vidyadharis submerged in the throat, making a sound. Sometimes it was surrounded by fierce buffaloes, fearful without the dream-like radiance.

कभी-कभी यह कंठ में डूबे हुए विद्याधरियों का समूह था, जो ध्वनि कर रहा था। कभी-कभी यह स्वप्न-सदृश प्रकाश के बिना भयानक भैंसों से घिरा हुआ था।

7.140.22

क्वचित्सन्नमहाकायगरुडामरपर्वतः । क्वचिन्मत्तमहासेतुर्यमदण्डेन भूजुषा ॥ २२ ॥

kvcitsannamahākāyagaruḍāmaraparvataḥ | kvacinmattamahāseturyamadaṇḍena bhūjuṣā || 22 ||

Sometimes it is a mountain of immortal eagles with a huge body, sometimes it is a great bridge made by Yama's staff for the enjoyment of the earth.

कभी-कभी यह एक विशाल शरीर वाला अमर गरुड़ पर्वत होता है, कभी-कभी यह यम के दण्ड द्वारा बना एक महान सेतु होता है जो पृथ्वी के उपभोग के लिए है।

7.140.23

क्वचित्प्रमृतवैरिञ्चहंससस्मितपङ्कभूः । क्वचित्पङ्कविनिर्मग्नदेहार्धामरवारणः ॥ २३ ॥

kvcitpramṛtavairiñchahaṃsasasmitapaṅkabhūḥ | kvacitpaṅkavinirmagnadehārdhāmaravāraṇaḥ || 23 ||

Sometimes it is the earth with the smiling face of a swan that has killed Brahma's enemy, sometimes it is an immortal elephant with its body half-submerged in the mud.

कभी-कभी यह ब्रह्मा के शत्रु को मारने वाले हंस के मुस्कुराते चेहरे वाली पृथ्वी होती है, कभी-कभी यह एक अमर हाथी होता है जिसका आधा शरीर कीचड़ में डूबा हुआ है।

7.140.24

एतस्मिन्नन्तरे तत्र सानुं प्राप्याश्रमे श्रमात्। विश्रान्तोस्मि यदा तेन भृशं निद्राजगाम माम्॥ २४॥

etasminnantare tatra sānuṃ prāpyāśrame śramāt | viśrāntosmi yadā tena bhṛśaṃ nidrājagāma mām || 24 ||

In the meantime, having reached that mountain peak in the hermitage due to fatigue, I rested there. Then, due to that, deep sleep overcame me.

इस बीच, थकान के कारण उस आश्रम में उस पर्वत शिखर तक पहुंचकर, मैं वहां विश्राम करने लगा। तब, उसके कारण, मुझे गहरी नींद ने घेर लिया।

7.140.25

ततः सुषुप्तनिद्रान्तस्तया वासनयान्वितः। तं तादृगेव कल्पान्तमपश्यं स्वौजसि स्थितः॥ २५॥

tataḥ suṣuptanidrāntastayā vāsanayānvitaḥ | taṃ tādṛgeva kalpāntamapaśyaṃ svaujasi sthitaḥ || 25 ||

Then, being overcome by deep sleep and influenced by that impression, I saw that very end of the world while standing in my own strength.

तब, गहरी नींद से घिरे हुए और उस संस्कार से प्रभावित होकर, मैंने अपनी शक्ति में खड़े होकर उसी प्रकार के प्रलय को देखा।

7.140.26

दृष्ट्वा तद्विगुणं दुःखं चिरेणात्राहमाकुलः। प्रबुद्धो दृष्टवान्सानुं तमेवास्य हृदि स्थितम्॥ २६॥

dṛṣṭvā taddviguṇaṃ duḥkhaṃ cireṇātrāhamākulaḥ | prabuddho dṛṣṭavānsānuṃ tamevāsya hṛdi sthitam || 26 ||

Seeing that double suffering, I was disturbed for a long time here. Having awakened, I saw that very mountain peak standing in his heart.

उस दुगुने दुःख को देखकर, मैं यहां लंबे समय तक व्याकुल रहा। जागकर, मैंने उसी पर्वत शिखर को उसके हृदय में खड़ा देखा।

7.140.27

अथ तत्र द्वितीयेऽह्नि भास्करोदयसुन्दरम्। सलोकाकाशभूशैलं भुवनं दृष्टवानहम्॥ २७॥

atha tatra dvitīye'hni bhāskarodayasundaram | salokākāśabhūśailaṃ bhuvanaṃ dṛṣṭavān aham || 27 ||

Then, on the second day, I saw the beautiful sunrise and the world with its sky, earth, and mountains.

फिर, दूसरे दिन, मैंने सूर्योदय का सुंदर दृश्य और आकाश, पृथ्वी और पर्वतों सहित संसार देखा।

7.140.28

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः। इति मे चेतसो जातं पत्रादि विटपादिव॥ २८॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ | iti me cetaso jātaṃ patrādi viṭapādiva || 28 ||

The sky, earth, air, space, mountains, rivers, and directions—all these arose in my mind like leaves and branches.

आकाश, पृथ्वी, वायु, आकाश, पर्वत, नदियाँ और दिशाएँ—ये सब मेरे मन में पत्तों और डालियों की तरह उभरे।

7.140.29

ततस्तस्मिंस्तथा दृष्टे भूतले तैः पदार्थकैः। व्यवहारं प्रवृत्तोऽहं किंचिद्विस्मृतधीरितः॥ २९॥

tatastasmiṃstathā dṛṣṭe bhūtale taiḥ padārthakaiḥ | vyavahāraṃ pravṛtto'haṃ kiṃcidvismṛtadhīritaḥ || 29 ||

Then, having seen the earth with those elements, I engaged in activities, somewhat forgetting my intellect.

फिर, उन तत्वों के साथ पृथ्वी को देखने के बाद, मैंने कुछ अपने बुद्धि को भूलकर गतिविधियों में लग गया।

7.140.30

जातस्य मेऽद्य वर्षाणि षोडशैष पिता मम । इयं मातास्पदं चेदमिति मे प्रतिमोदभूत् ॥ ३० ॥

jātasya me'dya varṣāṇi ṣoḍaśaiṣa pitā mama | iyaṃ mātāspadaṃ cedamiti me pratimodabhūt || 30 ||

Today, sixteen years have passed since my birth, this is my father, and this is my mother's abode, thus joy arose in me.

आज, मेरे जन्म के सोलह वर्ष बीत चुके हैं, यह मेरे पिता हैं, और यह मेरी माँ का घर है, इस प्रकार मुझे आनंद हुआ।

7.140.31

अपश्यं ग्रामकं कंचित्कंचिच्च ब्राह्मणाश्रमम् । किंचिद्गेहं तथा कश्चिद्बन्धुः कस्मिंश्चिदाश्रमे ॥ ३१ ॥

apaśyaṃ grāmakaṃ kaṃcitkaṃcicca brāhmaṇāśramam | kiṃcidgehaṃ tathā kaścidvandhuḥ kasmiṃścidāśrame || 31 ||

I saw a certain village, a certain Brahmin's hermitage, a certain house, and a certain relative in a certain hermitage.

मैंने एक गाँव देखा, एक ब्राह्मण का आश्रम देखा, एक घर देखा, और एक आश्रम में एक रिश्तेदार देखा।

7.140.32

अथ मे तिष्ठतः सार्धं बन्धुभिर्ग्राममन्दिरे । अहोरात्रेषु गच्छत्सु जाग्रदादींस्तदेव सत् ॥ ३२ ॥

atha me tiṣṭhataḥ sārdhaṃ bandhubhirgrāmamandire | ahorātreṣu gacchatsu jāgradādīṃstadeva sat || 32 ||

Then, while I was staying with my relatives in the village house, I spent the days and nights awake, doing just that.

तब, जब मैं अपने रिश्तेदारों के साथ गाँव के घर में रह रहा था, मैंने दिन और रात जागते हुए वही किया।

7.140.33

ततः कालवशात्तत्र प्राक्तनी बोधधीर्मम । विस्मृता तादृशाभ्यासादहो तस्येव मत्स्यता ॥ ३३ ॥

tataḥ kālavashāttatra prāktanī bodhadhīrmama | vismṛtā tādṛśābhyāsādaho tasyeva matsyatā || 33 ||

Then, due to the passage of time, my previous understanding was forgotten due to such practice, alas, just like that fish.

तब, समय के बीतने के कारण, मेरी पिछली समझ ऐसी अभ्यास के कारण भूल गई, हाय, उस मछली की तरह।

7.140.34

इत्यहं ग्रामवास्तव्यः संपन्नो ब्राह्मणस्तदा । देहमात्रकबद्धास्थो दूरीकृतविवेकभूः ॥ ३४ ॥

ityahaṃ grāmavāstavyaḥ saṃpanno brāhmaṇastadā | dehamātrakabaddhāstho dūrīkṛtavivekabhūḥ || 34 ||

Thus, I became a villager, a Brahmin at that time, bound only to the body, far removed from the realm of discrimination.

इस प्रकार, मैं एक गाँववासी बन गया, उस समय एक ब्राह्मण, केवल शरीर से बंधा हुआ, विवेक के क्षेत्र से दूर।

7.140.35

शरीरमात्रात्मवपुर्दारमात्रानुरञ्जितः । वासनामात्रसारात्मा धनमात्रैकतत्परः ॥ ३५ ॥

śarīramātrātmavapurdāramātrānurañjitaḥ | vāsanāmātrasārātmā dhanamātraikatatparaḥ || 35 ||

With a body as the self, delighted only in the wife, with desires as the essence, solely devoted to wealth.

शरीर ही आत्मा मानकर, केवल पत्नी में आनंदित, इच्छाओं को ही सार मानकर, केवल धन में ही तत्पर।

7.140.36

जीर्णगोमात्रकधनः संरोपितलतावृतिः । संचिताग्न्यवनिप्राणिरुपार्जितकमण्डलुः ॥ ३६ ॥

jīrṇagomātrakadhanaḥ saṃropitalatāvṛtiḥ | saṃcitāgnyavaniprāṇirupārjitakamaṇḍaluḥ || 36 ||

With wealth consisting of old cows, planting creepers, accumulating firewood, and earning a water pot.

जीर्ण गायों से बने धन के साथ, लताओं को लगाते हुए, लकड़ी इकट्ठी करते हुए, और एक पानी के घड़े कमाते हुए।

7.140.37

चलवृक्षकबद्धास्थो लोकाचाररतः सदा । गृहपार्श्वगतानीलशाद्वलस्थलिकास्थितिः ॥ ३७ ॥

calavṛkṣakabaddhāstho lokācāraratataḥ sadā | gṛhapārśvagatānīlaśādvalasthlikāsthitiḥ || 37 ||

Always engaged in worldly activities, he was bound to the moving tree. He was situated in the shade of the blue-green grass near his house.

हमेशा लोक के आचारों में लगे रहने वाले व्यक्ति ने चलते हुए वृक्ष से बंधे हुए थे। वह अपने घर के पास नीले-हरे घास की छाया में स्थित था।

7.140.38

शाकशाकायतारामरचनानीतवासरः । सरिद्ह्रदनदीतीर्थसरसि स्नानतत्परः ॥ ३८ ॥

śākaśākāyatārāmaracanānītavāsaraḥ | saridhradanadītīrthasarasi snānatatparaḥ || 38 ||

Engaged in the creation of beautiful gardens and ponds, he was always eager to bathe in the holy waters of rivers and lakes.

सुंदर बगीचों और तालाबों के निर्माण में लगे हुए व्यक्ति ने हमेशा नदियों और तालाबों के पवित्र जल में स्नान करने की इच्छा रखी।

7.140.39

गोमयान्नजलाम्ब्वग्निकाष्ठेष्टा कष्टसंचयी । इदं कार्यमिदं नेति पाशाभ्यां विवशीकृतः ॥ ३९ ॥

gomayānnajalāmbvagnikāṣṭhēṣṭā kaṣṭasaṃcayī | idaṃ kāryamidaṃ neti pāśābhyāṃ vivashīkṛtaḥ || 39 ||

He desired cow dung, food, water, firewood, and bricks, and was a collector of hardships. He was helplessly bound by the ropes of 'this should be done, this should not be done.'

वह गोबर, खाना, पानी, लकड़ी और ईंटों की इच्छा रखता था, और कष्टों का संग्रह करने वाला था। वह 'यह करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए' की रस्सियों से बेबस होकर बंधा हुआ था।

7.140.40

इति मे जीवतस्तत्र संवत्सरशतं गतम् । एकदाभ्यागतो दूरात्तापसोऽतिथिरात्मवान् ॥ ४० ॥

iti me jīvatastatra saṃvatsarasataṃ gatam | ekadābhyāgato dūrāttāpso'tithirātmavān || 40 ||

Thus, while I was living there, a hundred years passed. One day, a wise ascetic guest arrived from a distant place.

इस प्रकार, जब मैं वहाँ रह रहा था, सौ वर्ष बीत गए। एक दिन, एक दूर से आया हुआ एक बुद्धिमान तपस्वी अतिथि आया।

7.140.41

पूजितोऽसौ विशश्राम मृद्गृहे स्नानपूर्वकम् । भुक्तवाञ्छयने स्थित्वा रात्रौ वर्णितवान्कथाम् ॥ ४१ ॥

pūjito'sau viśaśrāma mṛdgṛhe snānapūrvakam | bhukta vāñchayane sthitvā rātrau varṇitavānkathām || 41 ||

He was honored and rested in the mud house after bathing. After eating and sitting comfortably, he narrated a story at night.

उसे सम्मानित किया गया और वह मिट्टी के घर में स्नान करने के बाद विश्राम किया। खाने और सुखद बैठने के बाद, उसने रात में एक कहानी सुनाई।

7.140.42

नानादिग्देशशैलोर्वीव्यवहारमनोहरे । कथाप्रसङ्गे कस्मिंश्चिन्नानाविधरसाश्रये ॥ ४२ ॥

nānādigdeśaśailorvīvyavahāramanohare | kathāprasaṅge kasmiṃścinnānāvidharasāśraye || 42 ||

In the delightful interactions of various directions, regions, and mountains, in some narrative contexts that are replete with diverse emotions.

विभिन्न दिशाओं, प्रदेशों और पर्वतों के मनोहर व्यवहारों में, कुछ कथा प्रसंगों में जो विभिन्न प्रकार के रसों से भरे हुए हैं।

7.140.43

सर्वं चिन्मात्रमेवेदमनन्तमविकारि च । जगत्तयेव कचति यथास्थितमपि स्थितम् ॥ ४३ ॥

sarvaṃ cinmātramevedamanantamavikāri ca | jagattayeva kacati yathāsthitamapi sthitam || 43 ||

All this is indeed pure consciousness, infinite and unchanging. The world appears as it is, even though it is stable.

यह सब कुछ वास्तव में शुद्ध चेतना है, अनंत और अविकारी। संसार जैसा है, वैसा ही प्रतीत होता है, भले ही यह स्थिर है।

7.140.44

इत्यहं बोधितस्तेन बोधैकघनतां गतः । स्मृतवांस्तमशेषेण वृत्तान्तं धारणावशात् ॥ ४४ ॥

ityahaṃ bodhitastena bodhaikaghanatāṃ gataḥ | smṛtavāṃstamaśeṣeṇa vṛttāntaṃ dhāraṇāvaśāt || 44 ||

Thus, I was enlightened by him and attained the state of pure consciousness. I remembered the entire story completely due to the power of retention.

इस प्रकार, मैं उससे बोधित हुआ और शुद्ध चेतना की अवस्था को प्राप्त हुआ। धारण शक्ति के कारण मैंने पूरी कहानी को पूर्णतः याद किया।

7.140.46

तदास्यं निर्गमद्वारमथ जानामि नो यदा । विस्तीर्णे भुवने यस्मिन्भूम्यब्ध्यद्रिसरिद्वृते ॥ ४६ ॥

tadāsyaṃ nirgamadvāramatha jānāmi no yadā | vistīrṇe bhuvane yasminbhūmyabdhyadrisaridvṛte || 46 ||

Then I did not know the way out, but later I realized it in the vast world surrounded by earth, ocean, mountains, and rivers.

तब मैं बाहर निकलने का रास्ता नहीं जानता था, लेकिन बाद में मैंने उसे पृथ्वी, समुद्र, पर्वतों और नदियों से घिरे विशाल संसार में जान लिया।

7.140.47

तदा तमत्यजन्नेव देशं बन्धुजनावृतम् । तस्य प्राणं प्रविष्टोऽहं निर्गन्तुं पवनं बहिः ॥ ४७ ॥

tadā tamatyajanneva deśaṃ bandhujanāvṛtam | tasya prāṇaṃ praviṣṭo'haṃ nirgantuṃ pavanaṃ bahiḥ || 47 ||

Then, leaving that place surrounded by relatives, I entered his life breath to go out into the air.

तब, उस रिश्तेदारों से घिरे स्थान को छोड़कर, मैंने उसके प्राण में प्रवेश किया ताकि बाहर हवा में जा सकूँ।

7.140.48

इहस्थस्य विराजोऽस्य बाह्यमाभ्यन्तरं तथा । अन्यजं सर्वमीक्षेऽहमिति निर्णीय तादृशम् ॥ ४८ ॥

ihasthasya virājo'sya bāhyamābhyantaraṃ tathā | anyajaṃ sarvamīkṣe'hamiti nirṇīya tādṛśam || 48 ||

I have determined that everything, both external and internal, belongs to the Virat Purusha, who resides here.

मैंने यह निर्णय लिया है कि यहाँ स्थित विराट् पुरुष का सब कुछ, बाहरी और भीतरी दोनों, है।

7.140.49

स्मृतवानात्मवृत्तान्तं यस्याहमुदरे स्थितः । तं विराडपमाशङ्क्य तस्मान्निर्गन्तुमुद्यतः ॥ ४९ ॥

smṛtavānātmavṛttāntaṃ yasyāhamudare sthitaḥ | taṃ virāḍapamāśaṅkya tasmānnirgantumudyataḥ || 49 ||

Remembering the story of the self, I, who am situated in his stomach, doubted him to be the Virat Purusha and decided to leave from there.

आत्मा की कथा को याद करते हुए, मैं, जो उसके पेट में स्थित हूँ, उसे विराट् पुरुष समझकर वहाँ से निकलने का निर्णय लिया।

7.140.50

पवनस्कन्धमासाद्य प्राप्य तन्मुखकोटरम् । बहिर्वातरथेनाहं निर्गतो दृष्टवान्पुरः ॥ ५० ॥

pavanasakandhamāsādya prāpya tanmukhakoṭaram | bahirvātarathenāhaṃ nirgato dṛṣṭavānpuraḥ || 50 ||

Reaching the wind passage and entering the mouth cavity, I came out with the breath and saw the city.

हवा के मार्ग तक पहुँचकर और मुँह के गुहा में प्रवेश करके, मैं साँस के साथ बाहर निकला और शहर देखा।

7.140.51

यावत्तथैव मद्देहो बद्धपद्मासनः स्थितः । क्वापि मुन्याश्रमः शिष्यैः पालितो गिरिकन्दरे ॥ ५१ ॥

yāvattathaiva maddeho baddhapadmāsanaḥ sthitaḥ | kvāpi munyāśramaḥ śiṣyaiḥ pālito girikandare || 51 ||

Meanwhile, my body remained seated in the lotus position, protected by disciples in a hermitage somewhere in the mountain valley.

इस बीच, मेरा शरीर कमल आसन में बैठा रहा, किसी पहाड़ी घाटी में शिष्यों द्वारा सुरक्षित एक आश्रम में।

7.140.52

पुरो मे तिष्ठतां तेषां मत्संरक्षणकर्मणाम् । मुहूर्तमात्रं च गतः कालश्चान्ते निवासिनाम् ॥ ५२ ॥

puro me tiṣṭhatāṃ teṣāṃ matsaṃrakṣaṇakarmaṇām | muhūrtamātraṃ ca gataḥ kālaścānte nivāsinām || 52 ||

In front of me, they stood engaged in the task of protecting me. Only a moment had passed, and the time for the inhabitants had come to an end.

मेरे सामने, वे मेरी रक्षा के काम में लगे हुए खड़े थे। केवल एक पल बीता था, और निवासियों का समय समाप्त हो गया था।

7.140.53

हृदयं संप्रविष्टोऽसौ यस्याहं स पुमानपि । पृष्ठेनोत्सवलब्धेन शेते तृप्तोऽन्धसा सुखम् ॥ ५३ ॥

hṛdayaṃ saṃpraviṣṭo'sau yasyāhaṃ sa pumānapi | pṛṣṭhenotsavalabdhena śete tṛpto'ndhasā sukham || 53 ||

He who has entered my heart, that man, even though he is a man, lies down happily, satisfied with the joy obtained from the back.

जिसके हृदय में मैं प्रवेश कर गया हूँ, वह पुरुष, भले ही वह एक पुरुष हो, पीठ से प्राप्त आनंद से तृप्त होकर सुख से शयन करता है।

7.140.54

तदाश्चर्यं मया दृष्ट्वा नोक्तं किंच न कस्यचित् । पुनस्तस्यैव हृदयं प्रविष्टः कौतुकादहम् ॥ ५४ ॥

tadāścaryaṃ mayā dṛṣṭvā noktaṃ kiṃca na kasyacit | punastasyaiva hṛdayaṃ praviṣṭaḥ kautukādaham || 54 ||

Seeing that wonder, I did not say anything to anyone. Again, out of curiosity, I entered his heart.

उस आश्चर्य को देखकर, मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। फिर से, कौतुक से, मैंने उसी के हृदय में प्रवेश किया।

7.140.55

प्राप्तोऽस्म्योजःप्रदेशं तं तस्य तस्मिन्हृदन्तरे । अवेक्षितुं स्वबन्धूंस्तान्व्याप्तो वासनया तया ॥ ५५ ॥

prāpto'smyojaḥpradeśaṃ taṃ tasya tasminhṛdantare | avekṣituṃ svabandhūṃstānvyāpto vāsanayā tayā || 55 ||

I reached that place of vitality within his heart to observe my relatives, influenced by that desire.

मैं उसके हृदय के उस जीवन क्षेत्र तक पहुंच गया जहां मैंने अपने रिश्तेदारों को देखने के लिए उस इच्छा से प्रेरित होकर पहुंचा।

7.140.56

यावत्तत्र युगस्यान्तः संप्रवृत्तोऽतिदारुणः । भुवनं तद्विपर्यासमागतं सह संस्थया ॥ ५६ ॥

yāvattatra yugasyāntaḥ saṃpravṛtto'tidāruṇaḥ | bhuvanaṃ tadviparyāsamāgataṃ saha saṃsthayā || 56 ||

As long as that extremely harsh end of the era lasted there, the world underwent a great transformation along with its condition.

जब तक वह अत्यंत कठोर युग का अंत वहां चला, तब तक संपूर्ण सृष्टि अपनी स्थिति के साथ बड़े परिवर्तन से गुजरी।

7.140.57

अन्य एवाचलास्तत्र वसुधान्या च संस्थिता । अन्य एव ककुब्भेदस्तथान्या भुवनस्थितिः ॥ ५७ ॥

anye evācalāstatra vasudhānyā ca saṃsthitā | anye eva kakubbhedastathānyā bhuvanasthitiḥ || 57 ||

There were different mountains and different lands, a different division of directions, and a different state of the world.

वहां अलग-अलग पर्वत और अलग-अलग भूमियां थीं, दिशाओं का अलग विभाजन था, और संसार की अलग स्थिति थी।

7.140.58

ते बन्धवः स च ग्रामः स भूभागः स दिक्तटः । न जाने क्व गतं सर्वं व्यूह्य नीतमिवानिलैः ॥ ५८ ॥

te bandhavaḥ sa ca grāmaḥ sa bhūbhāgaḥ sa diktataḥ | na jāne kva gataṃ sarvaṃ vyūhya nītamivānilaiḥ || 58 ||

Those relatives, that village, that land, that direction—I do not know where everything has gone, as if it has been scattered by the winds.

वे बंधु, वह गाँव, वह भूभाग, वह दिशा—मुझे नहीं पता कि सब कुछ कहाँ चला गया, मानो हवाओं ने बिखेर दिया हो।

7.140.59

तदा पश्यामि भुवनं यावदन्यदवस्थितम् । अपूर्वसंनिवेशं तज्जगदन्यदिवोदितम् ॥ ५९ ॥

tadā paśyāmi bhuvanaṃ yāvadanyadavasthitam | apūrvasaṃniveśaṃ tajjagadanyadivoditam || 59 ||

Then I see the world, as much as it is in a different state, with an unprecedented arrangement, as if another universe has been revealed.

तब मैं देखता हूँ संसार को, जितना भी वह एक अलग अवस्था में है, एक अनोखी व्यवस्था के साथ, मानो कोई दूसरा ब्रह्मांड प्रकट हो गया हो।

7.140.60

तपन्ति द्वादशादित्याः प्रज्वलन्ति दिशो दश । शीताश्यानाम्बुवच्छैलाः प्रवृत्ता गलितुं बलात् ॥ ६० ॥

tapanti dvādaśādityāḥ prajvalanti diśo daśa | śītāśyānāmbuvacchailāḥ pravṛttā galituṃ balāt || 60 ||

Twelve suns are burning, ten directions are blazing, the cold-rayed water-like mountains are melting forcefully.

बारह सूर्य जल रहे हैं, दस दिशाएँ प्रज्वलित हो रही हैं, ठंडे किरणों वाले जल-से पहाड़ बलपूर्वक पिघल रहे हैं।

7.140.61

अद्रावद्रौ दिशिदिशि ज्वलन्ति वनपङ्क्तयः । दग्धाः स्मृतिपदं याताः समस्ता रत्नभूतयः ॥ ६१ ॥

adrāvadrau diśidiśi jvalanti vanapaṅktayaḥ | dagdhāḥ smṛtipadaṃ yātāḥ samastā ratnabhūtayaḥ || 61 ||

Forests are burning in every direction, all precious things have been burned and reduced to the state of memory.

हर दिशा में जंगल जल रहे हैं, सभी कीमती चीजें जलकर स्मृति की अवस्था में चली गई हैं।

7.140.62

सर्व एवाब्धयः शुष्का महावाताः पुरःस्थिताः । अङ्गारराशितां यातं भूमण्डलमशेषतः ॥ ६२ ॥

sarva evābdhayaḥ śuṣkā mahāvātāḥ puraḥsthitāḥ | aṅgārarāśitāṃ yātaṃ bhūmaṇḍalamaśeṣataḥ || 62 ||

All oceans have dried up, great winds are blowing, the entire earth has turned into a heap of embers.

सभी समुद्र सूख गए हैं, महान हवाएँ चल रही हैं, पूरी पृथ्वी अंगारों के ढेर में बदल गई है।

7.140.63

पातालतो भूतलतोऽथ दिग्भ्यो ज्वाला विनिर्गन्तुमनुप्रवृत्ताः । संध्याभ्रवच्चाशु बभूव विश्वं ज्वालामये मण्डलमेकमेव ॥ ६३ ॥

pātālato bhūtalato'tha digbhyo jvālā vinirgantumanupravṛttāḥ| sandhyābhravaccāśu babhūva viśvaṃ jvālāmaye maṇḍalamekameva || 63 ||

From the netherworld, from the earth, and from the directions, flames began to emerge| Instantly, the entire world became a single sphere of flames, like a cloud at dusk

पाताल से, भूतल से, और दिशाओं से, ज्वालाएँ निकलने लगीं| तुरंत ही, संपूर्ण विश्व एक ज्वालामय मण्डल बन गया, जैसे संध्या का बादल

7.140.64

ज्वालामये सद्मनि हेमपद्मकोशे भ्रमद्भृङ्ग इव प्रविष्टः । ततोऽहमाराच्छलभक्रमेण न चाप्तवान्दाहविकारदुःखम् ॥ ६४ ॥

jvālāmaye sadmani hemapadmakośe bhramadbhṛṅga iva praviṣṭaḥ| tato'hamārācchalabhakrameṇa na cāptavāndāhavikāraduḥkham || 64 ||

In the abode of flames, like a bee in a golden lotus, I entered| But by the grace of the sheltering mountain, I did not suffer the pain of burning

ज्वालामय आश्रय में, जैसे भ्रमर सोने के कमल में, मैं प्रविष्ट हुआ| परंतु शरण देने वाले पर्वत के आशीर्वाद से, मैंने जलने का दुःख नहीं भोगा

7.140.65

ज्वालामये साधु महाम्बुवाहे भ्रमाम्यहं विद्युदिवानिलात्मा । ज्वालापरिस्पन्दविलोलवर्ष्मा स्थलाब्जखण्डभ्रमरोपमश्रीः ॥ ६५ ॥

jvālāmaye sādhu mahāmbuvāhe bhramāmyahaṃ vidyudivānilātmā| jvālāparispandavilolavarṣmā sthalābjakhaṇḍabhramaropamaśrīḥ || 65 ||

In the excellent abode of flames, I wander like lightning in the great ocean| My form trembles with the flickering of the flames, resembling a bee hovering over a fragment of a lotus on land

ज्वालामय उत्तम आश्रय में, मैं महासागर में बिजली की तरह भटकता हूँ| मेरा रूप ज्वालाओं के कंपन से काँपता है, जैसे भ्रमर जमीन पर कमल के टुकड़े पर मंडरा रहा हो

Chapter 141

7.141.1

मुनिरुवाच तत्र दंदह्यमानोऽपि नाभवं दुःखभागहम् स्वप्ने स्वप्नोऽयमित्येष जानन्नग्नावपि च्युतः ॥ १ ॥

muniruvāca tatra daṃdahyamāno'pi nābhavaṃ duḥkhabhāgaham svaṃne svapno'yamityeṣa jānannagnāvapi cyutaḥ || 1 ||

The sage said: Even while being burned there, I did not become miserable. Knowing this to be a dream within a dream, I was released even in the fire.

मुनि ने कहा: वहां जलते हुए भी मैं दुःखी नहीं हुआ। जानते हुए कि यह एक स्वप्न है, मैं आग में भी मुक्त हो गया।

7.141.2

ज्वालाजालनवोड्डीतिमण्डलैरखिलैर्नभः अलातचक्रवच्चारु केवलं भ्रान्तवानहम् ॥ २ ॥

jvālājālanavoḍḍītimaṇḍalairakhilairnabhaḥ alātacakravaccāru kevalaṃ bhrāntavānaham || 2 ||

The entire sky was filled with circles of new, blazing flames, beautiful like a spinning firebrand. I was merely bewildered.

पूरा आकाश नये, ज्वलंत ज्वालाओं के चक्रों से भरा हुआ था, जो घूमते अलात चक्र की तरह सुंदर था। मैं केवल भ्रमित था।

7.141.3

तं दवाग्निमहं यावत्तत्त्ववित्त्यादखिन्नधीः विचारयाम्यखिन्नात्मा मारुतस्तावदाययौ ॥ ३ ॥

taṃ davāgnimahaṃ yāvattattvavittyādakhinnadhīḥ vicārayāmyakhinnātmā mārutastāvadāyayau || 3 ||

As long as I, with an untroubled mind, contemplated that forest fire with the knowledge of reality, the wind blew.

जब तक मैं, अशांत मन के साथ, वास्तविकता के ज्ञान से उस जंगल की आग पर विचार करता रहा, तब तक हवा चलती रही।

7.141.4

सीत्कारमतिगम्भीरं दधन्मेघरवोपमम् जगत्पदार्थैरावृत्तैरुह्यमानैः परावृतः ॥ ४ ॥

sītkāramatigambhīraṃ dadhanmegharavopamam jagatpadārthairāvṛttairuhyamānaiḥ parāvṛtaḥ || 4 ||

The extremely deep hissing sound, resembling the roar of clouds, was covered by the worldly elements that were being lifted up.

अत्यंत गहरा सीटी का शब्द, जो बादलों की गर्जना के समान था, उठते हुए संसारिक तत्वों से ढका हुआ था।

7.141.5

बृहद्भिर्घुंघुमावेगैर्वने द्विगुणिताम्बुदः सूर्यैरावृत्तिभिर्व्यूढैर्विमिश्रालातचक्रकः ॥ ५ ॥

bṛhadbhirghuṃghumāvegairvane dviguṇitāmbudaḥ sūryairāvṛttibhirvyūḍhairvimiśrālātacakrakaḥ || 5 ||

In the forest, the large, rumbling clouds, doubled by the sun's rays, were mixed with the spinning firebrand.

जंगल में, बड़े, गर्जना करते हुए बादल, सूर्य की किरणों से दोगुने होकर, घूमते अलात चक्र के साथ मिले हुए थे।

7.141.6

ज्वालासंध्याभ्रनिवहैर्वृहदग्निनदीशतः । शैलद्विगुणभूखण्डदानवामरपत्तनः ॥ ६ ॥

jvālāsaṃdhyābhranivahairvṛhadagninadīśataḥ | śailadviguṇabhūkhaṇḍadānavāmarapattanaḥ || 6 ||

With the clouds of the twilight fire, the great river of fire flows, and the lands of the demons and gods are doubled.

संध्या के अग्नि के बादलों से विशाल अग्नि नदी बहती है, और दैत्यों और देवताओं की भूमि दोगुनी हो जाती है।

7.141.7

भूतैर्द्विगुणपात्रौघो भ्रान्तैरम्बरकुक्षिषु । दग्धादग्धाभिरप्यर्धदग्धाभिरितरेतरम् ॥ ७ ॥

bhūtairdviguṇapātraugho bhrāntairambarakuksiṣu | dagdhādagdhābhirapyardhadagdhābhiritaretaram || 7 ||

With the doubled vessels of beings wandering in the sky, some are half-burnt, and others are completely burnt.

दोगुनी पात्रों वाले प्राणियों के साथ आकाश में भटकते हुए, कुछ अर्ध-दग्ध हैं, और कुछ पूरी तरह से दग्ध हैं।

7.141.8

पतन्तीभिः सुरस्त्रीभिर्द्विगुणाग्निशिखालवः । पतदङ्गारधारौघकणसीकरदन्तुरः ॥ ८ ॥

patantībhiḥ surastrībhirdviguṇāgniśikhālavaḥ | patadaṅgāradhāraughakaṇasīkaradanturaḥ || 8 ||

With the falling celestial women, the doubled flames of fire are fierce, and the falling embers create a harsh shower of sparks.

गिरती हुई देवांगनाओं के साथ, दोगुनी अग्नि की लपटें तीव्र हैं, और गिरते हुए अंगारों से कठोर चिंगारियों की वर्षा होती है।

7.141.9

अलातविद्युतो धुन्वन्पूताङ्गारोग्रमण्डलीः । धूमान्धकारैः स्थगयन्म्लानमूर्ध्वदिशोमुखम् ॥ ९ ॥

alātavidyuto dhunvanpūtāṅgārogramaṇḍalīḥ | dhūmāndhakāraiḥ sthagayanmlānamūrdhvadiśomukham || 9 ||

Shaking the lightning-like flames, purified by intense embers, the fierce circle obscures the dimmed upper directions with smoke and darkness.

बिजली जैसी लपटों को हिलाते हुए, तीव्र अंगारों से शुद्ध किया गया, तीव्र चक्र धुएँ और अंधेरे से मंद ऊपरी दिशाओं को ढक देता है।

7.141.10

भूमेर्व्योम्नो दिङ्मुखेभ्यः समन्ताज्ज्वालासंध्यावारिदा निर्गतास्ते । यैस्तैर्ज्वालाशैलसंपिण्डमात्रं सव्योमौकाः संस्थिता सप्तलोकी ॥ १० ॥

bhūmervyomno diṅmukhebhyaḥ samantājjvālāsaṃdhyāvāridā nirgatāste | yaitairjvālāśailasaṃpiṇḍamātraṃ savyomaukāḥ saṃsthitā saptalokī || 10 ||

From the earth, sky, and all directions, the clouds of the twilight fire have emerged. With these, the entire universe, including the seven worlds, is filled with the mass of flames and mountains.

पृथ्वी, आकाश और सभी दिशाओं से, संध्या के अग्नि के बादल निकले हैं। इनके साथ, सात लोकों सहित पूरा ब्रह्मांड लपटों और पर्वतों के ढेर से भरा हुआ है।

7.141.11

क्वापि प्रोत्फालकीर्णानलकणकपिलप्रोल्लसन्मूर्धजालिः क्वापि प्रोड्डीनकुड्यः कटुरटनपटुर्भस्मसंपिण्डपाण्डुः । क्वापि ज्वालापटालीं परिदधदभितः संपतन्तीं गृहीतां रौद्रः कर्तुं प्रवृत्तो हर इव स तदा मारुतो नृत्यलीलाः ॥ ११ ॥

kvāpi protfālakīrṇānalakaṇakapilaprollasanmūrdhajāliḥ kvāpi proḍḍīnakuḍyaḥ
kaṭuraṭanapaṭurbhasmasaṃpiṇḍapāṇḍuḥ | kvāpi jvālāpaṭālīṃ paradadhadabhitaḥ saṃpatantīṃ gṛhītāṃ
raudraḥ kartuṃ pravṛtto hara iva sa tadā māruto nṛtyalīlāḥ || 11 ||

In some places, the wind dances like Lord Shiva, with its hair standing on end, filled with sparks of fire, and in other places, it is like a broken pot, harsh and skilled in battle, pale with ashes. In some places, it surrounds and seizes the falling flames, fierce in its dance.

कहीं-कहीं, वायु शिव की तरह नृत्य करती है, अपने बाल खड़े करके, आग की चिंगारियों से भरी हुई, और कहीं-कहीं, यह एक टूटे हुए घड़े की तरह है, कठोर और युद्ध में निपुण, राख से सफेद। कहीं-कहीं, यह गिरती हुई लपटों को घेरती है और पकड़ती है, अपने नृत्य में भयंकर।

Chapter 142

7.142.1

मुनिरुवाच । वर्तमाने तदा तस्मिन्कष्टे संभ्रान्तसंभ्रमे । उह्यमानोऽहमत्यन्तं खेदमभ्यागतोऽभवम् ॥ १ ॥

muniruvāca | vartamāne tadā tasminkaṣṭe saṃbhrāntasaṃbhrame | uhyamāno'hamatyantaṃ khedamabhyāgato'bhavam || 1 ||

Muni said: In that time of distress and confusion, I was extremely distressed and overwhelmed.

मुनि ने कहा: उस समय के कष्ट और संभ्रम में, मैं अत्यंत खेद और व्याकुलता से भर गया था।

7.142.2

अचिन्तयं तत्स्वप्नोऽयं परस्य हृदये मम । तदतः परिनिर्वामि दुःखं पश्यामि किं मुधा ॥ २ ॥

acintayaṃ tatsvapno'yaṃ parasya hṛdaye mama | tadataḥ parinirvāmi duḥkhaṃ paśyāmi kiṃ mudhā || 2 ||

I thought, 'This dream is in someone else's heart, so why should I see suffering foolishly?'

मैंने सोचा, 'यह स्वप्न किसी और के हृदय में है, तो मैं मूर्खता से दुःख क्यों देखूँ?'

7.142.3

व्याध उवाच । किंस्वित्स्यात्स्वप्न इत्येव किल संदेहशान्तये । प्रविष्टो हृदयं तस्य किं तं निर्णीतवानसि ॥ ३ ॥

vyādha uvāca | kiṃsvitsyātsvapna ityeva kila saṃdehaśāntaye | praviṣṭo hṛdayaṃ tasya kiṃ taṃ nirṇītavānasi || 3 ||

The hunter said: 'What could it be? This is just a dream, to dispel doubt. Having entered his heart, what have you determined?'

शिकारी ने कहा: 'क्या हो सकता है? यह तो स्वप्न है, संदेह दूर करने के लिए। उसके हृदय में प्रवेश करके, तुमने क्या निर्णय लिया?'

7.142.4

किमेतद्भवतां दृष्टं हृदये क्व महार्णवः । जठरे कल्पवातः किं हृदि कल्पानलः कथम् ॥ ४ ॥

kimetadbhavaṃ dṛṣṭaṃ hṛdaye kva mahārṇavaḥ | jaṭhare kalpavātaḥ kiṃ hṛdi kalpānalaḥ katham || 4 ||

What did you see in the heart? Where is the great ocean? In the stomach, the wind of the universe? How is the fire of the universe in the heart?

आपने हृदय में क्या देखा? महान समुद्र कहाँ है? पेट में ब्रह्मांड की हवा कैसे है? हृदय में ब्रह्मांड की आग कैसे है?

7.142.5

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः । कथं हृदि जगन्नाम कथयेति यथास्थितम् ॥ ५ ॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ | kathaṃ hṛdi jagannāma kathayeti yathāsthitam || 5 ||

How can the sky, earth, air, space, mountains, rivers, and directions be in the heart? Tell me how the universe is in the heart.

आकाश, पृथ्वी, वायु, आकाश, पर्वत, नदियाँ, और दिशाएँ हृदय में कैसे हो सकती हैं? बताओ कि ब्रह्मांड हृदय में कैसे है।

7.142.6

मुनिरुवाच । अकारणत्वात्सर्गादावेवानुत्पादतः स्फुटात् । अज्ञातौ सर्गशब्दार्थावेव न स्तो मनागपि ॥ ६ ॥

muniruvāca | akāraṇatvātsargādāvevānutpādataḥ sphuṭāt | ajñātau sargaśabdārthāveva na sto manāgapi || 6 ||

The sage said: Due to the absence of cause, there is no creation at all. Even in the state of ignorance, the meaning of the word 'creation' does not exist.

मुनि ने कहा: कारण के अभाव से, सृष्टि का कोई उत्पादन नहीं होता। अज्ञान की स्थिति में भी, 'सृष्टि' शब्द का अर्थ नहीं होता।

7.142.7

तच्चैतौ सर्वशब्दार्थौ त्वज्ञातौ परमात्मनि । यतस्तत्पदमज्ञानज्ञानात्मकमनामयम् ॥ ७ ॥

taccaitau sarvaśabdārthau tvajñātau paramātmani | yatastatpadamajñānajñānātmakamanāmayam || 7 ||

All these meanings of words are unknown in the Supreme Self. Therefore, the word 'that' is both knowledge and ignorance, and it is flawless.

ये सभी शब्दों के अर्थ परमात्मा में अज्ञात हैं। इसलिए, 'तत्' शब्द ज्ञान और अज्ञान दोनों है, और यह दोषरहित है।

7.142.8

अतः सुभग सिद्धान्ते त्वत्पक्षे बोधमागते । मौर्ख्यशान्तावनाद्यन्ते पदे परमपावने ॥ ८ ॥

ataḥ subhaga siddhānte tvatpakṣe bodhamāgate | maurkhyashāntāvanādyante pade paramapāvane || 8 ||

Therefore, in the auspicious doctrine, having understood your position, in the word that is the beginningless and endless, the foolishness is calmed, and it is supremely purifying.

इसलिए, शुभ सिद्धान्त में, आपके पक्ष को समझने पर, अनादि और अनन्त शब्द में, मूर्खता शान्त हो जाती है, और यह अत्यन्त पवित्र है।

7.142.9

वच्मीदं मूढसंवित्तौ यदिद तन्न वेद्म्यहम् । वस्त्ववस्तुजमाभातं बोधमात्रमिदं ततम् ॥ ९ ॥

vacmīdaṃ mūḍhasaṃvittau yadida tannavedmyaham | vastvavastujamābhātaṃ bodhamātramidaṃ tatam || 9 ||

I speak this in the consciousness of the fool: whatever it is, I do not know. This is the mere appearance of reality and unreality, and it is pervaded by consciousness.

मैं मूर्ख की चेतना में यह कहता हूँ: जो भी है, मैं नहीं जानता। यह वास्तविकता और अवास्तविकता का सिर्फ प्रतीति है, और यह चेतना से व्याप्त है।

7.142.10

क्व शरीरं क्व हृदयं क्व स्वप्नः क्व जलादि च । क्व बोधो बोधविच्छित्तिः क्व जन्ममरणादि च ॥ १० ॥

kva śarīraṃ kva hṛdayaṃ kva svapnaḥ kva jalādi ca | kva bodho bodhavicchittiḥ kva janmamaraṇādi ca || 10 ||

Where is the body? Where is the heart? Where is the dream? Where is water and so on? Where is consciousness? Where is the fluctuation of consciousness? Where is birth, death, and so on?

शरीर कहाँ है? हृदय कहाँ है? स्वप्न कहाँ है? जल और आदि कहाँ हैं? चेतना कहाँ है? चेतना की विच्छित्ति कहाँ है? जन्म, मरण और आदि कहाँ हैं?

7.142.11

स्वच्छं चिन्मात्रमस्तीह तन्नाम यदपेक्षया । स्थूलमेव खमप्यद्रिरणूनां निकटे यथा ॥ ११ ॥

svacchaṃ cinmātramastīha tannāma yadapekṣayā | sthūlamēva khamapyadriraṇūnāṃ nikaṭē yathā || 11 ||

Here, there is only pure consciousness, which is known by different names depending on the perspective. Just as a mountain appears large from a distance but small when close, the same applies to the subtle and gross aspects of reality.

यहाँ केवल शुद्ध चेतना है, जिसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है परिप्रेक्ष्य के आधार पर। जैसे एक पर्वत दूर से बड़ा दिखता है लेकिन पास से छोटा, वैसे ही सूक्ष्म और स्थूल वास्तविकता के पहलू हैं।

7.142.12

स्वभावात्स चिदाकाशः किंचिच्चेतति चिन्तया । खमेव वपुराकाशं यत्तद्वेत्ति जगत्तया ॥ १२ ॥

svabhāvātsa cidākāśaḥ kiṃciccetati cintayā | khamēva vapurākāśaṃ yattadvetti jagattayā || 12 ||

By its nature, that pure consciousness is the sky of consciousness, which slightly moves due to thought. That which knows the world as the sky of consciousness is the body of space itself.

अपने स्वभाव से, वह शुद्ध चेतना चेतना का आकाश है, जो विचार के कारण थोड़ा सा हिलता है। जो संसार को चेतना के आकाश के रूप में जानता है, वह स्वयं आकाश का शरीर है।

7.142.13

यथा स्वप्ने पुरतया चिदेवाभाति केवला । न तु किंचित्पुराद्येवं जगच्चिन्मात्रमेव खे ॥ १३ ॥

yathā svapnē puratayā cidēvābhāti kēvalā | na tu kiṃcitpurādyēvaṃ jagaccinmātramēva khē || 13 ||

Just as in a dream, only consciousness appears as a city, and there is nothing else before it, so too the world is only consciousness in space.

जैसे स्वप्न में, केवल चेतना ही एक नगर के रूप में प्रकट होती है, और उससे पहले कुछ भी नहीं है, वैसे ही संसार आकाश में केवल चेतना है।

7.142.14

इदं शान्तमनाभातमनन्यन्नैतदात्मनि । चिति दृशौ तमसि खे चक्रकादीव भाति ते ॥ १४ ॥

idaṃ śāntamanābhātamananyannaitadātmani | citi dṛśau tamasi khē cakrakādīva bhāti tē || 14 ||

This peaceful, non-manifest, non-dual reality does not exist in the self. In the consciousness, vision, darkness, and space, it appears like a wheel of fire.

यह शान्त, अव्यक्त, अद्वैत वास्तविकता आत्मा में नहीं है। चेतना, दृष्टि, अंधकार और आकाश में, यह अग्नि के चक्र की तरह प्रकट होता है।

7.142.15

अस्माकं तु न चाभानं न चासन्न च सन्न खम् । अनाकारमनाद्यन्तमेकं चिद्व्योम केवलम् ॥ १५ ॥

asmākaṃ tu na cābhānaṃ na cāsan na ca sanna kham | anākāramanādyantamēkaṃ cidvyoma kēvalam || 15 ||

For us, there is no appearance, no existence, no non-existence, no space. There is only the one, formless, beginningless, endless, pure consciousness.

हमारे लिए, कोई प्रकटन नहीं है, कोई अस्तित्व नहीं है, कोई अनस्तित्व नहीं है, कोई आकाश नहीं है। केवल एक निराकार, अनादि, अनंत, शुद्ध चेतना है।

7.142.16

भात्यकारणकं स्वप्ने शुद्धौ द्रष्टैव केवलः । तेनात्र कारणाभावो न द्रष्टास्ति न दर्शनम् ॥ १६ ॥

bhātyakāraṇakaṃ svapne śuddhau draṣṭaiva kevalaḥ| tenātra kāraṇābhāvo na draṣṭāsti na darśanam || 16 ||

In the pure state of dream, only the seer shines as the cause| Therefore, there is no cause, no seer, and no seeing here || 16 ||

स्वप्न की शुद्ध अवस्था में केवल द्रष्टा ही कारण के रूप में प्रकाशित होता है| इसलिए, यहाँ कोई कारण नहीं है, न द्रष्टा है, और न दर्शन है || १६ ||

7.142.17

शुद्धं किमपि तद्भाति स्वानुभूतमपि स्फुटम्। यदवाच्यमनाद्यन्तमेकं द्वैतैक्यवर्जितम्॥ १७॥

śuddhaṃ kimapi tadbhāti svānubhūtamapi sphuṭam| yadavācyamanādyantamekaṃ dvaitaikyavarjitam || 17 ||

That pure (śuddhaṃ) something (kimapi) shines (bhāti) as self-experienced (svānubhūtam) clearly (sphuṭam)| That which is inexpressible (avācya), without beginning or end (anādyanta), one (ekaṃ), devoid of duality and unity (dvaitaikyavarjitam) || 17 ||

वह शुद्ध (शुद्ध) कुछ (किमपि) स्वयं अनुभव के रूप में (स्वानुभूतम) स्पष्ट रूप से (स्फुटम) प्रकाशित होता है| जो अव्यक्त (अवाच्य), अनादि अनंत (अनाद्यन्त), एक (एकं), द्वैत और एकता से रहित (द्वैतैक्यवर्जितम्) है || १७ ||

7.142.18

एकः कालो यथा कल्पः प्रकाशश्चोभयात्मकः। बीजं वा फलपुष्पान्तं ब्रह्म सर्वात्मकं तथा॥ १८॥

ekaḥ kālo yathā kalpaḥ prakāśaścobhayātmakaḥ| bījaṃ vā phalapuṣpāntaṃ brahma sarvātmakaṃ tathā || 18 ||

Just as one time (ekaḥ kālaḥ) is like an eon (kalpaḥ), and light (prakāśaḥ) is of both natures (ubhayātmakaḥ)| Similarly, the seed (bījaṃ) or the fruit and flower (phalapuṣpāntaṃ) is Brahman, the essence of all (sarvātmakaṃ) || 18 ||

जैसे एक समय (एकः कालः) एक कल्प (कल्पः) के समान है, और प्रकाश (प्रकाशः) दोनों प्रकृतियों का (उभयात्मकः) है| उसी प्रकार, बीज (बीजं) या फल और फूल (फलपुष्पान्तं) ब्रह्म (ब्रह्म) है, सबका सार (सर्वात्मकं) || १८ ||

7.142.19

यदन्यस्य महत्कुड्य तदन्यस्यामलं नभः। दृष्टमेतत्स्थिरस्वप्नसंकल्पभ्रमभूमिषु॥ १९॥

yadanyasya mahatkuḍya tadanyasyāmalaṃ nabhaḥ| dṛṣṭametatsthirasvapnasankalpabhramabhūmiṣu || 19 ||

What is a great wall (mahatkuḍya) for one is a clear sky (amalaṃ nabhaḥ) for another| This is seen in the realms of stable dreams, imaginations, and illusions || 19 ||

जो एक के लिए एक बड़ी दीवार (महत्कुड्य) है, वह दूसरे के लिए एक साफ आकाश (अमलं नभः) है| यह स्थिर स्वप्न, कल्पनाओं, और भ्रमों के क्षेत्रों में देखा जाता है || १९ ||

7.142.20

स्वच्छं तदा तदात्मैकं भाति चिन्मात्र खं यथा। स्वप्ने जागृतिवत्तद्वज्जाग्रत्स्वप्नेऽपि नान्यथा॥ २०॥

svacchaṃ tadā tadātmaikaṃ bhāti cinmātra khaṃ yathā| svapne jāgṛtivattadvajjāgratsvapne'pi nānyathā || 20 ||

Then that pure (svacchaṃ) one (tadā) shines (bhāti) as the self alone (ātmaikaṃ), like the pure sky (cinmātra khaṃ yathā)| In dream (svapne) it is like the waking state (jāgṛtivat), and in the waking state (jāgrat) it is like the dream (svapne), not otherwise || 20 ||

तब वह शुद्ध (स्वच्छं) एक (तदा) आत्मा के रूप में (आत्मैकं) प्रकाशित होता है, जैसे शुद्ध आकाश (चिन्मात्र खं यथा)| स्वप्न (स्वप्ने) में यह जाग्रत अवस्था (जागृतिवत्) के समान है, और जाग्रत अवस्था (जाग्रत्) में यह स्वप्न (स्वप्ने) के समान है, अन्यथा नहीं || २० ||

7.142.21

अदृश्ये पवने यद्वददृश्यं सौरभं स्थितम्। चिन्मात्रेऽप्रतिघे तद्वज्जगदप्रतिघं स्थितम्॥ २१॥

adṛśye pavane yadvadadṛśyaṃ saurabhaṃ sthitam | cinmātre'pratighē tadvajjagadapratighaṃ sthitam || 21 ||

Just as the fragrance resides invisibly in the invisible wind, the world resides invisibly in the pure consciousness which is non-resisting.

जैसे सुगंध अदृश्य पवन में अदृश्य रूप से स्थित है, वैसे ही जगत् अप्रतिघ (अप्रतिरोधी) चिन्मात्र में स्थित है।

7.142.22

समस्तमननत्यागे योऽसि सोऽसि निरामयः । बहिरन्तरनन्तात्मा सुस्थितोऽपि निरन्तरम् ॥ २२ ॥

samastamananatyāgē yo'si so'si nirāmayaḥ | bahirantaranantātmā susthito'pi nirantaram || 22 ||

In the renunciation of all, you are who you are, free from disease. Even though you are established within and without, you are infinite and eternal.

समस्त त्याग में, तुम हो जो हो, निरामय हो। भीतर-बाहर अनंत आत्मा होते हुए भी, तुम निरंतर स्थित हो।

7.142.23

व्याध उवाच । भगवन्प्राक्तनं कर्म केषामिह हि विद्यते । केषां न विद्यते तद्वद्विनापि भवतः कथम् ॥ २३ ॥

vyādha uvāca | bhagavanprāktanaṃ karma keṣāmiha hi vidyatē | keṣāṃ na vidyatē tadvadvināpi bhavataḥ katham || 23 ||

The hunter said: O Lord, who has the past karma and who does not have it? How is it possible without you?

शिकारी ने कहा: हे भगवान्, किसके पास पूर्व कर्म है और किसके पास नहीं है? आपके बिना यह कैसे संभव है?

7.142.24

मुनिरुवाच । सर्गादिषु स्वयं भान्ति ब्रह्माद्या ये स्वयंभुवः । विज्ञप्तिमात्रदेहास्ते न तेषां जन्मकर्मणी ॥ २४ ॥

muniruvāca | sargādiṣu svayaṃ bhānti brahmādyā yē svayaṃbhuvaḥ | vijñaptimātradēhāstē na tēṣāṃ janmakarmaṇī || 24 ||

The sage said: In the beginning of creation, those who are self-born like Brahma and others, their bodies are mere cognitions. They do not have birth or karma.

ऋषि ने कहा: सृष्टि के आरंभ में, जो स्वयंभू हैं जैसे ब्रह्मा आदि, उनके शरीर केवल ज्ञान हैं। उनके पास जन्म या कर्म नहीं है।

7.142.25

तेषामस्ति न संसारो न द्वैतं न च कल्पनाः । विशुद्धज्ञानदेहास्ते सर्वात्मानः सदा स्थिताः ॥ २५ ॥

tēṣāmasti na saṃsāro na dvaitaṃ na ca kalpanāḥ | viśuddhajñānadēhāstē sarvātmānaḥ sadā sthitāḥ || 25 ||

They do not have the cycle of rebirth, nor duality, nor imagination. They are pure consciousness, the self of all, always established.

उनके पास संसार नहीं है, न द्वैत है, न कल्पनाएँ हैं। वे शुद्ध ज्ञान के शरीर हैं, सबके आत्मा हैं, सदा स्थित हैं।

7.142.26

सर्गादौ प्राक्तनं कर्म विद्यते नेह कस्यचित् । सर्गादौ सर्गरूपेण ब्रह्मैवेत्थं विजृम्भते ॥ २६ ॥

sargādau prāktanaṃ karma vidyate neha kasyacit| sargādau sargarūpeṇa brahmaivetthaṃ vijṛmbhate|| 26 ||

At the beginning of creation, there is no past action for anyone| Thus, Brahma alone manifests in the form of creation|| 26 ||

सृष्टि के आरंभ में किसी का भी कोई पूर्व कर्म नहीं होता| इसलिए, ब्रह्मा ही सृष्टि के रूप में प्रकट होता है|| २६ ||

7.142.27

यथा ब्रह्मादयो भान्ति सर्गादौ ब्रह्मरूपिणः । भान्ति जीवास्तथान्येऽपि शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २७ ॥

yathā brahmādayo bhānti sargādau brahmarūpiṇaḥ| bhānti jīvāstathānye'pi śataśo'tha sahasraśaḥ|| 27 ||

Just as Brahma and others shine at the beginning of creation in the form of Brahma| Similarly, other beings also shine in hundreds and thousands|| 27 ||

जैसे ब्रह्मा और अन्य सृष्टि के आरंभ में ब्रह्मा के रूप में चमकते हैं| वैसे ही, अन्य जीव भी सैकड़ों और हजारों में चमकते हैं|| २७ ||

7.142.28

किंतु ये ब्रह्मणोऽन्यत्वं बुध्यन्ते सात्त्विकोद्भवाः। अबोधा ये त्वचिदाख्यं बुद्धा द्वैतमिदं स्वयम्॥ २८॥

kintu ye brahmaṇo'nyatvaṃ budhyante sāttvikodbhavāḥ| abodhā ye tvacidākhyaṃ buddhvā dvaitamidaṃ svayam|| 28 ||

However, those who perceive duality due to their sattvic nature are ignorant| Those who realize the non-dual nature of consciousness perceive this duality themselves|| 28 ||

हालाँकि, जो लोग अपने सात्त्विक स्वभाव के कारण द्वैत को समझते हैं, वे अज्ञानी हैं| जो लोग चेतना के अद्वैत स्वभाव को समझते हैं, वे स्वयं इस द्वैत को समझते हैं|| २८ ||

7.142.29

तेषामुत्तरकालं तत्कर्मभिर्जन्म दृश्यते। स्वयमेव तथा भूतैस्तैरवस्तुत्वमाश्रितम्॥ २९॥

teṣāmuttarakālaṃ tatkarmabhirjanma dṛśyate| svayameva tathā bhūtaistairavastutvamāśritam|| 29 ||

For them, in the future, birth is seen due to their actions| Thus, they themselves take on the reality of those beings|| 29 ||

उनके लिए, भविष्य में, उनके कर्मों के कारण जन्म दिखाई देता है| इस प्रकार, वे स्वयं उन प्राणियों की वास्तविकता को अपना लेते हैं|| २९ ||

7.142.30

यैस्तु न ब्रह्मणोऽन्यत्वं बुद्धं बोधमहात्मनि। निरवद्यास्त एतेऽत्र ब्रह्मविष्णुहरादयः॥ ३०॥

yais tu na brahmaṇo'nyatvaṃ buddhaṃ bodhamahātmani| niravadyās ta ete'tra brahmaviṣṇuharādayaḥ|| 30 ||

Those who do not perceive any difference from Brahma in the great self are flawless| Here, they are Brahma, Vishnu, Shiva, and others|| 30 ||

जो महान आत्मा में ब्रह्मा से कोई भेद नहीं समझते हैं, वे निर्दोष हैं| यहाँ, वे ब्रह्मा, विष्णु, शिव और अन्य हैं|| ३० ||

7.142.31

सर्वात्म संविदोऽच्छत्वं ब्रह्मात्मन्येव संस्थितम्। तत्क्वचिज्जीववद्भानं स्वयमात्मनि पश्यति॥ ३१॥

sarvātma saṃvido'cchatvaṃ brahmātmanyeva saṃsthitam | tatkvacijjīvavadbhānaṃ svayamātmani paśyati || 31 ||

The essence of all consciousness is established in the Supreme Self, Brahman. Sometimes it appears as an individual being, seeing itself in the Self.

सभी चेतनाओं का सार ब्रह्म में स्थित है। कभी-कभी यह एक जीव के रूप में दिखाई देता है, जो अपने आप को आत्मा में देखता है।

7.142.32

यत्र वेत्ति तु जीवत्वं तत्राविद्येति तिष्ठति। तत्र संसृतिनाम्नात्मा धत्ते रूपं तथास्थितम्॥ ३२॥

yatra vetti tu jīvatvaṃ tatrāvidyeti tiṣṭhati | tatra saṃsṛtināmnātmā dhatte rūpaṃ tathāsthitam || 32 ||

Wherever one perceives individuality, there ignorance prevails. In that state, the Self takes on the form of transmigration.

जहाँ कोई व्यक्तित्व को देखता है, वहाँ अज्ञान रहता है। उस अवस्था में, आत्मा पुनर्जन्म के रूप में अवतरित होता है।

7.142.33

स्वयमेव हि कालेन बुद्ध्वा स्वं रूपमात्मनः । स्वयमेव स्वरूपस्थं ब्रह्मैव भवति स्वयम् ॥ ३३ ॥

svayameva hi kālena buddhvā svaṃ rūpamātmanaḥ | svayameva svarūpasthaṃ brahmaiva bhavati svayam || 33 ||

Indeed, over time, by realizing one's own true nature, one becomes established in one's own form, which is Brahman itself.

वास्तव में, समय के साथ, अपनी सच्ची प्रकृति को समझकर, कोई अपने रूप में स्थापित हो जाता है, जो खुद ब्रह्म है।

7.142.34

यथा द्रवत्वादम्ब्वन्तरेति चावर्ततामिव । ब्रह्म चित्त्वात्तथैतीव सर्गतामस्य सर्गकम् ॥ ३४ ॥

yathā dravatvādambvantareticāvartatāmiva | brahma cittvāttathaetīva sargatāmasya sargakam || 34 ||

Just as water flows into a whirlpool due to its liquid nature, similarly, Brahman, due to its conscious nature, flows into creation.

जैसे पानी अपने द्रव स्वभाव के कारण भंवर में बहता है, उसी तरह, ब्रह्म अपने चेतन स्वभाव के कारण सृष्टि में बहता है।

7.142.35

ब्रह्मभानमयं सर्गो न स्वप्नो न च जागरः । कस्य कान्यत्र कर्माणि कीदृशानि कियन्ति वा ॥ ३५ ॥

brahmabhānamayaṃ sargo na svapno na ca jāgaraḥ | kasya kānyatra karmāṇi kīdṛśāni kiyanti vā || 35 ||

Creation is permeated with the essence of Brahman. It is neither a dream nor a waking state. Whose actions are they, of what kind, and how many?

सृष्टि ब्रह्म के सार से भरी हुई है। यह न तो स्वप्न है न ही जाग्रत अवस्था। किनके कर्म हैं, कैसे हैं, और कितने हैं?

7.142.36

वस्तुतः कर्म नास्त्येव नाविद्यास्ति न सर्गधीः । स्वसंवेदनतः सर्वमसदेव प्रवर्तते ॥ ३६ ॥

vastutaḥ karma nāstyeva nāvidyāsti na sargadhīḥ | svasaṃvedanataḥ sarvamasadeva pravartate || 36 ||

In reality, there is no action, no ignorance, no concept of creation. Everything arises from self-awareness as unreal.

वास्तव में, कोई कर्म नहीं है, कोई अज्ञान नहीं है, कोई सृष्टि की कल्पना नहीं है। सब कुछ स्वयं के संवेदन से असत्य के रूप में उत्पन्न होता है।

7.142.37

ब्रह्मैव सर्गो भूतात्मा कर्म जन्मेति कल्पनाः । स्वयं कुर्वदिदं भाति विभुत्वात्कल्पितार्थभाक् ॥ ३७ ॥

brahmaiva sargo bhūtātmā karma janmeti kalpanāḥ | svayaṃ kurvadidaṃ bhāti vibhutvātkalpitārthabhāk || 37 ||

Brahman alone is the creation, the essence of beings, action, birth, and all concepts. It appears to be doing all this due to its all-pervading nature and imagined meanings.

ब्रह्म ही सृष्टि, प्राणियों का आत्मा, कर्म, जन्म और सभी कल्पनाएँ हैं। अपने सर्वव्यापी स्वभाव और कल्पित अर्थों के कारण यह सब कुछ करता हुआ प्रतीत होता है।

7.142.38

न संभवति जीवस्य सर्गादौ कर्म कस्यचित् । पश्चात्स्वकर्म निर्माय भुङ्क्ते कल्पनया स चित् ॥ ३८ ॥

na saṃbhavati jīvasya sargādau karma kasyacit | paścātsvakarma nirmāya bhuṅkte kalpanayā sa cit || 38 ||

No action belongs to the individual soul at the beginning of creation. Later, it experiences its own actions through imagination.

सृष्टि के आरंभ में किसी जीव का कोई कर्म नहीं होता। बाद में, वह अपने कर्मों को कल्पना द्वारा अनुभव करता है।

7.142.39

जलावर्तस्य को देहः कानि कर्माणि चोच्यताम्। यथाम्बुमात्रमावर्तो ब्रह्ममात्रं तथा जगत्॥ ३९॥

jalāvartasya ko dehaḥ kāni karmāṇi cocyatām | yathāmbumātramāvarto brahmamātraṃ tathā jagat || 39 ||

Who is the body of the whirlpool, and what are its actions? Just as a whirlpool is merely water, so is the world merely Brahman.

भंवर का शरीर कौन है और उसके कर्म क्या हैं? जैसे भंवर केवल पानी है, वैसे ही जगत् केवल ब्रह्म है।

7.142.40

यथा स्वप्नेषु दृष्टानां न प्राक्कर्म नृणां भवेत्। आदिसर्गेषु जीवानां तथा चिन्मात्ररूपिणाम्॥ ४०॥

yathā svapneṣu dṛṣṭānāṃ na prākkarma nṛṇāṃ bhavet | ādisargeṣu jīvānāṃ tathā cinmātrarūpiṇām || 40 ||

Just as there is no prior action for beings seen in dreams, so too for beings in the original creation who are of the nature of pure consciousness.

जैसे स्वप्न में देखे गए प्राणियों का कोई पूर्व कर्म नहीं होता, वैसे ही आदि सृष्टि में शुद्ध चेतना स्वरूप प्राणियों का कोई पूर्व कर्म नहीं होता।

7.142.41

सर्गे सर्गतया रूढे भवेत्प्राक्कर्मकल्पना। पश्चाज्जीवा भ्रमन्तीमे कर्मपाशवशीकृताः॥ ४१॥

sarge sargatayā rūḍhe bhavetprākkarma kalpanā | paścājjīvā bhramantīme karmapāśavaśīkṛtāḥ || 41 ||

In the creation, when the creation is established, there arises the concept of previous actions. Later, these living beings wander, bound by the bonds of karma.

सृष्टि में, जब सृष्टि स्थापित होती है, तब पिछले कर्मों की कल्पना उत्पन्न होती है | बाद में, ये जीव कर्म के बंधनों में बँधे हुए भटकते रहते हैं।

7.142.42

सर्ग एव न सर्गोऽयं ब्रह्मेत्थं किल तिष्ठति। यत्र तत्र क्व कर्माणि कानि वा कस्य तानि वा॥ ४२॥

sarga eva na sargo'yaṃ brahmetthaṃ kila tiṣṭhati | yatra tatra kva karmāṇi kāni vā kasya tāni vā || 42 ||

This creation is not really a creation; thus, Brahman exists. Where and what are the actions, and to whom do they belong?

यह सृष्टि वास्तव में सृष्टि नहीं है; इसलिए, ब्रह्म है। कहाँ और कौन से कर्म हैं, और किसके हैं वे?

7.142.43

अपरिज्ञानमात्रं यत्स्वयं वै परमात्मनः। तदेतत्कर्म बन्धाय तत्तज्ज्ञस्योपशाम्यति॥ ४३॥

aparijñānamātraṃ yatsvayaṃ vai paramātmanaḥ | tadetatkarma bandhāya tattajjñasyopaśāmyati || 43 ||

That which is mere ignorance is indeed of the Supreme Self. That action is for bondage, but it ceases for the knower of That.

जो केवल अज्ञान है, वह वास्तव में परमात्मा का है। वह कर्म बंधन के लिए है, लेकिन उसका (परमात्मा का) ज्ञानी के लिए अंत हो जाता है।

7.142.44

यावद्यावत्परिज्ञानं पण्डितस्य प्रवर्तते। तावत्तावत्तदैवास्य कर्म शाम्यति बन्धनम्॥ ४४॥

yāvadyāvatparijñānaṃ paṇḍitasyapravartate | tāvattāvattadaivāsya karma śāmyati bandhanam || 44 ||

As much as the knowledge of the wise person increases, to that extent the bondage of action diminishes.

जितना विद्वान का ज्ञान बढ़ता है, उतना ही कर्म का बंधन कम होता है।

7.142.45

यन्नाम किल नास्त्येव तच्छान्तौ का कदर्थना । परमार्थादृते बन्धः किंचिन्नाम न विद्यते ॥ ४५ ॥

yannāma kila nāstyeva tacchāntau kā kadarthanā | paramārthādṛte bandhaḥ kiṃcinnāma na vidyate || 45 ||

That which has no name indeed does not exist. In peace, what is the point of discussion? Apart from the ultimate reality, there is no bondage whatsoever.

जिसका कोई नाम नहीं है, वह वास्तव में नहीं है। शांति में, चर्चा का क्या मतलब है? परमार्थ के अलावा, कोई बंधन नहीं है।

7.142.46

तावन्माया भवभयकरी पण्डितत्वं न यावत्तत्पाण्डित्यं पतसि न पुनर्येन संसारचक्रे । यत्नं कुर्यादविरतमतः पण्डितत्वेऽमलात्मज्ञानोदारे भयमितरथा नैव वः शान्तिमेति ॥ ४६ ॥

tāvanmāyā bhavabhayakarī paṇḍitatvaṃ na yāvattatpāṇḍityaṃ patasi na punaryena saṃsāracakre | yatnaṃ kuryādaviratamataḥ paṇḍitatve'malātmajñānodāre bhayamitarathā naiva vaḥ śāntimeti || 46 ||

Until one does not attain true knowledge, one remains entangled in the fear of worldly existence. Therefore, one should strive continuously for pure knowledge of the Self. Otherwise, one does not attain peace.

जब तक सच्चे ज्ञान को प्राप्त नहीं होता, तब तक संसार के भय में फँसा रहता है। इसलिए, आत्मज्ञान के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए। अन्यथा, शांति प्राप्त नहीं होती।

Chapter 143

7.143.1

मुनिरुवाच । सर्वेषामेव धर्माणां कर्मणां शर्मणामपि । पण्डितः पुण्डरीकाणां मार्तण्ड इव मण्डनम् ॥ १ ॥

muniruvāca | sarveṣāmeva dharmāṇāṃ karmaṇāṃ śarmaṇāmapi | paṇḍitaḥ puṇḍarīkāṇāṃ mārtaṇḍa iva maṇḍanam || 1 ||

The sage said: Among all duties, actions, and pleasures, the wise one is like the sun that adorns the lotuses.

मुनि ने कहा: सभी धर्मों, कर्मों और सुखों में, विद्वान व्यक्ति कमलों को सूर्य की तरह सुशोभित करता है।

7.143.2

आत्मज्ञानविदो यान्ति यां गतिं गतिकोविदाः । पण्डितास्तत्र शक्रश्रीर्जरत्तृणलवायते ॥ २ ॥

ātmajñānavido yānti yāṃ gatiṃ gatikovidāḥ | paṇḍitāstatra śakraśrīrjarattṛṇalavāyate || 2 ||

Those who know the self attain the ultimate state known by the wise. The wise there are like the glory of Indra, which is as delicate as a blade of grass.

जो आत्मज्ञानी हैं, वे उस गति को प्राप्त होते हैं जिसे ज्ञानी लोग जानते हैं। वहाँ विद्वान लोग इंद्र की शोभा की तरह होते हैं, जो एक तिनके की तरह सूक्ष्म होती है।

7.143.3

पाताले भूतले स्वर्गे सुखमैश्वर्यमेव वा । न तत्पश्यामि यन्नाम पाण्डित्यादतिरिच्यते ॥ ३ ॥

pātāle bhūtale svarge sukhamaiśvaryameva vā | na tatpaśyāmi yannāma pāṇḍityādatiricyate || 3 ||

In the underworld, on earth, or in heaven, I do not see anything that surpasses wisdom in terms of happiness and prosperity.

पाताल, भूतल, या स्वर्ग में, मैं ऐसा कोई नाम नहीं देखता जो सुख और समृद्धि में ज्ञान से बढ़कर हो।

7.143.4

पण्डितस्य यथाभूता वस्तुदृष्टिः प्रसीदति । दृगिवेन्दौ निरम्भोदे सकलामलमण्डले ॥ ४ ॥

paṇḍitasya yathābhūtā vastudṛṣṭiḥ prasīdati | dṛgivendau nirambhode sakalāmalamaṇḍale || 4 ||

The vision of reality as it is, shines forth in the wise one, like the moon in a cloudless sky, free from all impurities.

वास्तविकता का दर्शन विद्वान में प्रकाशित होता है, जैसे बादलों से रहित आकाश में चंद्रमा, सभी दोषों से मुक्त।

7.143.5

इदं दृश्यमविद्यात्म ब्रह्म संपद्यते क्षणात् । बुधस्य बोधात्स्रग्दाम सर्पत्वमिव शाम्यति ॥ ५ ॥

idaṃ dṛśyamavidyātma brahma saṃpadyate kṣaṇāt | budhasya bodhātsragdāma sarpatvamiva śāmyati || 5 ||

This visible world, which is of the nature of ignorance, attains Brahman in an instant through the wisdom of the wise, just as a snake mistaken for a rope is realized.

यह दृश्य जगत, जो अज्ञान की प्रकृति का है, विद्वान के ज्ञान से क्षणभर में ब्रह्म को प्राप्त होता है, जैसे रस्सी को साँप समझने का भ्रम दूर होता है।

7.143.6

यत्स्थितं ब्रह्मणि ब्रह्म कृतास्तेनैव सत्यता । स्वभावैकात्मिकाः संज्ञा देहसर्गक्षयादिकाः ॥ ६ ॥

yatsthitaṃ brahmaṇi brahma kṛtāstenaiava satyatā | svabhāvaikātmikāḥ saṃjñā dehasargakṣayādikāḥ || 6 ||

That which is established in Brahman is Brahman itself, and it is made true by that alone. The names, bodies, creation, and destruction are all of the same nature.

जो ब्रह्म में स्थित है, वह ब्रह्म ही है, और उसी से सत्यता बनती है। नाम, शरीर, सृष्टि और विनाश सभी एक ही स्वभाव के हैं।

7.143.7

सर्गो विद्यत एवायं न यत्र किल किंचन । तस्य धर्माणि कर्माणि न चैवाक्षरमालिका ॥ ७ ॥

sargo vidyata evāyaṃ na yatra kila kiṃcana | tasya dharmāṇi karmāṇi na caivākṣaramālikā || 7 ||

This creation exists, but there is nothing there. Its qualities and actions are not even a syllable.

यह सृष्टि है, लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं है। उसके गुण और कर्म एक अक्षर भी नहीं हैं।

7.143.8

पृथ्व्यादि संभवति चेत्तत्सकारणमस्तु तत् । तदेव यत्र नास्त्येव तत्र किं तस्य कारणम् ॥ ८ ॥

pṛthvyādi saṃbhavati cettatsakāraṇamastu tat | tadeva yatra nāstyeva tatra kiṃ tasya kāraṇam || 8 ||

If the earth and other elements exist, then let that be the cause. But if that does not exist, then what is the cause of that?

अगर पृथ्वी और अन्य तत्व हैं, तो वही कारण हो। लेकिन अगर वह नहीं है, तो उसका कारण क्या है?

7.143.9

ब्रह्मणः प्रतिभातं यत्तदिदं जगदुच्यते । तेनैव कुत एतानि पृथ्व्यादीनि क्व कारणम् ॥ ९ ॥

brahmaṇaḥ pratibhātaṃ yattadidaṃ jagaducyate | tenaiva kuta etāni pṛthvyādīni kva kāraṇam || 9 ||

That which is manifested from Brahman is called this world. Then, where are these elements and their cause?

जो ब्रह्म से प्रकट होता है, वही यह जगत कहलाता है। तो, ये तत्व और उनका कारण कहाँ है?

7.143.10

स्वप्नद्रष्टुर्दृश्यनृणामस्ति काल्पनिकं यथा । न वास्तवं पूर्वकामं जाग्रत्स्वप्ने तथा नृणाम् ॥ १० ॥

svapnadraṣṭurdṛśyanṛṇāmasti kālpanikaṃ yathā | na vāstavaṃ pūrvakāmaṃ jāgratsvapne tathā nṛṇām || 10 ||

Just as the objects seen in a dream are imaginary and not real, similarly, the objects seen in the waking state are also not real.

जैसे स्वप्न में देखे गए वस्तुएँ कल्पना मात्र हैं और वास्तविक नहीं हैं, उसी प्रकार जाग्रत अवस्था में देखी गई वस्तुएँ भी वास्तविक नहीं हैं।

7.143.11

यथा प्राक्कर्म पुंस्त्वे च स्वप्ने पुंसां न विद्यते । इह जाग्रत्स्वप्ननृणां भातानामपि नो तथा ॥ ११ ॥

yathā prākkarma puṃstve ca svapne puṃsāṃ na vidyate | iha jāgratsvapnanṛṇāṃ bhātānāmapi no tathā || 11 ||

Just as past actions and masculinity do not exist in dreams, similarly, the perceptions of those who are awake or dreaming do not exist in the same way.

जैसे पिछले कर्म और पुरुषत्व स्वप्न में नहीं होते, वैसे ही जाग्रत और स्वप्न में दिखने वाली चीजें भी ऐसी नहीं होतीं।

7.143.12

जीवः सर्वेषु सर्गेषु स्वप्नार्थान्निखिलान्मिथः । प्राक्कर्मसत्वं मिथ्यात्म यथावासनमेषु च ॥ १२ ॥

jīvaḥ sarveṣu sargeṣu svapnārthānnikhilānmithaḥ | prākkarmasatvaṃ mithyātma yathāvāsanameṣu ca || 12 ||

The individual soul, in all creations, perceives all dream objects as unreal, just as past actions and truths are perceived according to one's impressions.

जीव, सभी सृष्टियों में, सभी स्वप्न वस्तुओं को असत्य के रूप में देखता है, जैसे पिछले कर्म और सत्य अपनी संस्कारों के अनुसार देखे जाते हैं।

7.143.13

सर्गादावथ देहान्ते भान्ति स्वप्नार्थवन्मिथः । यथासंवेदनं जीवाः सन्तोऽसन्तश्च तेन ते ॥ १३ ॥

sargādāvatha dehānte bhānti svapnārthavanmithaḥ | yathāsaṃvedanaṃ jīvāḥ santō'santaśca tena te || 13 ||

At the beginning of creation and at the end of the body, they appear like dream objects. According to their perception, beings are both real and unreal.

सृष्टि की शुरुआत और शरीर के अंत में, वे स्वप्न वस्तुओं की तरह दिखाई देते हैं। अपनी प्रत्यक्षण के अनुसार, जीव सत्य और असत्य दोनों हैं।

7.143.14

यथासंवेदनं सर्वे भान्ति भावयतस्ततः । ते सन्त्यात्मन्यपि स्वप्ने जाग्रतीवार्थदा मिथः ॥ १४ ॥

yathāsaṃvedanaṃ sarve bhānti bhāvayatastataḥ | te santyātmaniapi svapne jāgratīvārthadā mithaḥ || 14 ||

According to their perception, all beings appear to be real. Even in dreams, they seem to give meaning as if awake.

अपनी प्रत्यक्षण के अनुसार, सभी जीव सत्य प्रतीत होते हैं। स्वप्न में भी, वे जाग्रत की तरह अर्थ देने लगते हैं।

7.143.15

संकल्पसंविदग्रस्थवस्तुनिष्ठतयाऽस्फुटम् । फलं चाप्नोति ते स्वप्ने लोकनिष्ठतयाऽस्फुटः ॥ १५ ॥

saṃkalpasamvidagrasthavastuniṣṭhatayā'sphuṭam | phalaṃ cāpnoti te svapne lokaniṣṭhatayā'sphuṭaḥ || 15 ||

Due to the subtlety of the objects grasped by the perception of resolve, they obtain the result in dreams, which is subtle due to its worldly nature.

संकल्प की प्रत्यक्षण द्वारा ग्रहण की गई वस्तुओं की सूक्ष्मता के कारण, वे स्वप्न में परिणाम प्राप्त करते हैं, जो अपनी सांसारिक प्रकृति के कारण सूक्ष्म होता है।

7.143.16

शुद्धा संवित्स्वभावस्था यत्स्वयं भाति भास्वरा । तस्या भानस्य तस्यास्य जाग्रत्स्वप्नाभिधाःकृताः ॥ १६ ॥

śuddhā saṃvitsvabhāvasthā yatsvayaṃ bhāti bhāsvarā | tasyā bhānasya tasyāsya jāgratsvapnābhidhāḥkṛtāḥ || 16 ||

Pure consciousness, which is self-luminous, is described as the states of waking and dreaming.

शुद्ध चेतना, जो स्वयं प्रकाशमान है, जाग्रत और स्वप्न के रूप में वर्णित है।

7.143.17

सर्गादावथ देहान्ते भातं यद्वेदनं यथा । तत्तथाऽऽमोक्षमेवास्ते तदिदं सर्ग उच्यते ॥ १७ ॥

sargādāvatha dehānte bhātaṃ yadvedanaṃ yathā | tattathā''mokṣamevāste tadidaṃ sarga ucyate || 17 ||

From the beginning of creation to the end of the body, whatever experience is had, that itself is liberation, and this is called creation.

सृष्टि के आरंभ से शरीर के अंत तक, जो भी अनुभव होता है, वही मोक्ष है, और यही सृष्टि कहलाती है।

7.143.18

जाग्रत्स्वप्नार्थसार्थस्य संविदश्च न भिन्नता । अस्त्यप्रतिघरूपायाः प्रकाशालोकयोरिव ॥ १८ ॥

jāgratsvapnārthasārthasya saṃvidaśca na bhinnatā | astyapratigharūpāyāḥ prakāśālokayoriva || 18 ||

There is no difference between the essence of the waking and dreaming states and consciousness. It is like the light and its illumination.

जाग्रत और स्वप्न की सार और चेतना में कोई अंतर नहीं है। यह प्रकाश और उसकी चमक की तरह है।

7.143.19

अग्न्यौष्ण्ययोरिव तथा वातस्पन्दनयोरिव । द्रवाम्भसोरिवाऽऽवीचि वा शैत्यानिलयोरिव ॥ १९ ॥

agnyauṣṇyayoriva tathā vātaspandanayoriva | dravāmbhasorivā''vīci vā śaityānilayoriva || 19 ||

Just as there is no difference between fire and its heat, wind and its movement, water and its fluidity, cold and its chill, similarly, there is no difference between the states of consciousness.

जैसे अग्नि और उसकी गर्मी, वायु और उसकी गति, जल और उसका प्रवाह, शीत और उसकी ठंडक में कोई अंतर नहीं है, वैसे ही चेतना की अवस्थाओं में कोई अंतर नहीं है।

7.143.20

सर्वमप्रतिघं शान्तं जगज्जातमसन्मयम् । इत्थं सन्मयमेवास्ति नास्त्यर्थेन च संयुतम् ॥ २० ॥

sarvamapratighaṃ śāntaṃ jagajjātamasanmayam | itthaṃ sanmayamevāsti nāstyarthena ca saṃyutam || 20 ||

Everything is non-dual, peaceful, and the universe is born from the non-existent. Thus, only the existent exists, not connected with any object.

सब कुछ अद्वैत, शांत और असत् से उत्पन्न है। इस प्रकार, केवल सत् ही है, किसी वस्तु से जुड़ा नहीं।

7.143.21

ब्रह्म प्रोद्भूय मृत्वा च दृश्यानुभवरूपि च । चिन्मात्रमजरं शान्तमेकमेवामलं स्थितम् ॥ २१ ॥

brahma proḍbhūya mṛtvā ca dṛśyānubhavarūpi ca| cinmātramajaraṁ śāntamekamevāmalaṁ sthitam || 21 ||

Brahman, having arisen and died, is the form of perceptible experience, pure consciousness, ageless, peaceful, one, pure, and established.

ब्रह्म, उत्पन्न होकर और मरकर, दृश्य अनुभव का रूप है, शुद्ध चेतना, अजर, शान्त, एक, शुद्ध, और स्थित है।

7.143.22

कार्यकारणतार्थानां या यथा हृदि कल्पिता । ब्रह्मणा पुरुषेणेव नगर्यन्तस्तथैव सा ॥ २२ ॥

kāryakāraṇatārthānāṁ yā yathā hṛdi kalpitā| brahmaṇā puruṣeṇeva nagaryantastathaiva sā || 22 ||

The concept of cause and effect, as imagined in the heart, is not different from Brahman, just as a person's imagined city is not different from the person.

कारण और परिणाम की अवधारणा, जैसे हृदय में कल्पित है, ब्रह्म से अलग नहीं है, जैसे कि एक व्यक्ति की कल्पित नगरी उस व्यक्ति से अलग नहीं है।

7.143.23

ब्रह्मणो हृदि सर्गोऽयं हृदि ते स्वप्नपूर्यथा । कार्यकारणता तत्र तथास्तेऽभिहिता यथा ॥ २३ ॥

brahmaṇo hṛdi sargo'yaṃ hṛdi te svapnapūryathā| kāryakāraṇatā tatra tathāste'bhihitā yathā || 23 ||

This creation in the heart of Brahman is like a dream in your heart. The concept of cause and effect exists there in the same way as it is described.

ब्रह्म के हृदय में यह सृष्टि आपके हृदय में स्वप्न की तरह है। कारण और परिणाम की अवधारणा वहाँ उसी तरह मौजूद है जैसे कि वर्णित है।

7.143.24

संविद्धनोदरे सर्गे कार्यकारणता स्थिता । तथा यथोहिता तेन त्वया वा कल्पनापुरम् ॥ २४ ॥

saṃviddhanodare sarge kāryakāraṇatā sthitā| tathā yathohitā tena tvayā vā kalpanāpuram || 24 ||

In the creation within the womb of consciousness, the concept of cause and effect is established. It is as it is imagined by you or by anyone else.

चेतना के गर्भ में सृष्टि में, कारण और परिणाम की अवधारणा स्थापित है। यह उसी तरह है जैसे आप या कोई और कल्पना करता है।

7.143.25

चिता संकल्परूपिण्या सर्गे संकल्पपत्तने । त्वयैव स्थापिता संस्था कार्यकारणरूपिणी ॥ २५ ॥

citā saṃkalparūpiṇyā sarge saṃkalpapattane| tvayaiva sthāpitā saṃsthā kāryakāraṇarūpiṇī || 25 ||

In the creation, which is the form of imagination, the state of cause and effect is established by you through the act of imagination.

सृष्टि में, जो कल्पना का रूप है, कारण और परिणाम की स्थिति आपके द्वारा कल्पना के कार्य से स्थापित है।

7.143.26

आकाश एव कचनं यच्चित्ते स्वात्मरूपिणी । नियतं संनिवेशत्वात्तदन्तः सर्ग उच्यते ॥ २६ ॥

ākāśa eva kacanaṃ yaccitte svātmarūpiṇī | niyataṃ saṃniveśatvāttadantaḥ sarga ucyate || 26 ||

The sky and the individual consciousness, which is of the nature of the self, is certainly established within; that is called the creation.

आकाश और चित्त, जो स्वयं के रूप में है, निश्चित रूप से अंदर स्थापित है; वह सृष्टि कहलाता है।

7.143.27

या संविद्रव्यवस्थास्ते हृदि संकल्पपत्तने । सैषा स्वभावसंसिद्धिः कार्यकारणतार्थजा ॥ २७ ॥

yā saṃvidravyavasthāste hṛdi saṃkalpapattane | saiṣā svabhāvasaṃsiddhiḥ kāryakāraṇatārthajā || 27 ||

The arrangement of consciousness in the heart, which is the attainment of resolve, is the perfection of one's own nature, born of the meaning of cause and effect.

चेतना की व्यवस्था हृदय में, जो संकल्प की प्राप्ति है, वह अपने स्वभाव की सिद्धि है, जो कारण और परिणाम के अर्थ से उत्पन्न होती है।

7.143.28

प्रथमं यद्यथा भाति चित्त्वमस्ति तथेह तत् । तस्यैव नियतिः कालो देशादीत्यभिधा कृता ॥ २८ ॥

prathamaṃ yadyathā bhāti cittvamasti tatheha tat | tasyaiava niyatiḥ kālo deśādītyabhidhā kṛtā || 28 ||

First, whatever appears as it is, that is the true self. Its limitation is time, place, etc., as it is called.

पहले, जो भी ऐसे ही प्रकट होता है, वह सच्चा स्वयं है। उसकी सीमा समय, स्थान आदि है, जैसा कि कहा जाता है।

7.143.29

या नामाशु यथा भाति चेतनाकाशशून्यता । तया तथा वस्तुतया कार्यकारणताश्रिता ॥ २९ ॥

yā nāmāśu yathā bhāti cetanākāśaśūnyatā | tayā tathā vastutayā kāryakāraṇatāśritā || 29 ||

That which is immediately perceived as the emptiness of the sky of consciousness, by that reality, it is supported by the relationship of cause and effect.

जो तुरंत चेतना के आकाश की शून्यता के रूप में प्रकट होता है, उस वास्तविकता से, वह कारण और परिणाम के संबंध से समर्थित है।

7.143.30

चिच्चमत्कारमात्रेऽस्मिन्सर्गाभे भावरूपिणि । पूर्वं भावाः प्रवर्तन्ते पश्चात्सर्गाभिधा विदः ॥ ३० ॥

ciccāmatkāramātre'smin sargābhe bhāvarūpiṇi | pūrvaṃ bhāvāḥ pravartante paścāt sargābhidhā vidaḥ || 30 ||

In this creation, which is merely the wonder of consciousness, first the feelings arise, then the creation is known to the wise.

इस सृष्टि में, जो केवल चेतना का चमत्कार है, पहले भाव उत्पन्न होते हैं, फिर सृष्टि विद्वानों को ज्ञात होती है।

7.143.31

शून्यतास्त्रिजगद्रूपास्तथा चिद्व्योमनि स्थिताः । अनन्याः पवने सौम्ये स्पन्दसत्ता यथा निजाः ॥ ३१ ॥

śūnyatāstrijagadrūpāstathā cidvyomani sthitāḥ | ananyāḥ pavane saumye spandasattā yathā nijāḥ || 31 ||

The three worlds are forms of emptiness, situated in the sky of consciousness, like the inherent vibratory nature of the gentle wind.

तीनों जगत शून्यता के रूप हैं, चेतना के आकाश में स्थित हैं, जैसे मृदु वायु की स्वाभाविक स्पंदन सत्ता।

7.143.32

व्योम्नि सौषिर्यनैबिड्यं यथा नीलमिति स्थितम् । चिति चेतननैविड्यं तथा सर्ग उपस्थितम् ॥ ३२ ॥

vyomni sauṣiryanainbiḍyaṃ yathā nīlamiti sthitam | citi cetananaiviḍyaṃ tathā sarga upasthitam || 32 ||

Just as the blueness in the sky is an illusion, so too is the creation an illusion in consciousness.

जैसे आकाश में नीलापन एक भ्रम है, वैसे ही चेतना में सृष्टि एक भ्रम है।

7.143.33

आभात एव भातेऽस्मिन्कृच्छ्रात्सर्गे विसर्गता । बुध्यते रज्जुभुजगे रज्जुरूपं यथा पुनः ॥ ३३ ॥

ābhāta eva bhāte'sminkṛcchrātsarge visargatā | budhyate rajjubhujage rajjurūpaṃ yathā punaḥ || 33 ||

In this difficult creation, the appearance is merely an illusion, just as the rope is mistaken for a snake.

इस कठिन सृष्टि में, प्रकटन केवल एक भ्रम है, जैसे रस्सी को साँप समझा जाता है।

7.143.34

मृतः स स्वप्नवत्सर्वः संपश्यति पृथग्जगत् । तच्चान्यदिदमन्यच्च नित्याप्रतिघमम्बरम् ॥ ३४ ॥

mṛtaḥ sa svapnavatsarvaḥ saṃpaśyati pṛthagjagat | taccānyadidamanyacca nityāpratighamambaram || 34 ||

The dead one sees the entire world as a dream, distinct yet non-distinct, eternally non-obstructive like the sky.

मृत व्यक्ति पूरी दुनिया को स्वप्न की तरह देखता है, अलग पर अलग नहीं, आकाश की तरह नित्य अवरोध रहित।

7.143.35

व्याध उवाच । परतः सुखदुःखार्थं देहः संपद्यते कथम् । किमस्य हेतुः के वास्य हेतवः सहकारिणः ॥ ३५ ॥

vyādha uvāca | parataḥ sukhaduḥkhārthaṃ dehaḥ saṃpadyate katham | kimasya hetuḥ ke vāsya hetavaḥ sahakāriṇaḥ || 35 ||

The hunter said: How does the body come into being for the sake of happiness and sorrow? What is its cause, and what are its cooperating causes?

शिकारी ने कहा: सुख और दुःख के लिए शरीर कैसे उत्पन्न होता है? इसका कारण क्या है, और इसके सहयोगी कारण क्या हैं?

7.143.36

कुर्वन्ति धर्माधर्माश्चेत्तेन प्रतिघरूपिणा तदस्याप्रतिघं रूपं कुर्वन्तीत्यसमञ्जसम् ॥ ३६ ॥

kurvanti dharmādharmaścettena pratigharūpiṇā tadasyāpratighaṃ rūpaṃ kurvantītyasamañjasam || 36 ||

If they perform dharma and adharma, then it is illogical to say that they make the form of the self non-resistant.

अगर वे धर्म और अधर्म करते हैं, तो यह असंगत है कि वे आत्मा के रूप को अप्रतिघ करते हैं।

7.143.37

मुनिरुवाच धर्माधर्मौ वासना च कर्मात्मा जीव इत्यपि पर्यायशब्दभारोऽत्र कल्प्यते न तु वास्तवः ॥ ३७ ॥

muniruvāca dharmādharmau vāsanā ca karmātmā jīva ityapi paryāyaśabdabhāro'tra kalpyate na tu vāstavaḥ || 37 ||

The sage said, 'Dharma and adharma, as well as the impressions, the doer, and the living being, are all synonyms used here, but they are not real.'

मुनि ने कहा, 'धर्म और अधर्म, वासनाएँ, कर्मात्मा और जीव, ये सभी यहाँ पर्यायवाची शब्द हैं, लेकिन वे वास्तविक नहीं हैं।'

7.143.38

चित्त्वात्कल्पितचित्त्वेन स्वयं चिन्नभसात्मनि कृतानि नामान्येतानि कश्चिदस्तीति चेतसा ॥ ३८ ॥

cittvātkalpitacittvena svayaṃ cinnabhasātmani kṛtāni nāmānyetāni kaścidastīti cetasā || 38 ||

Due to the imagined consciousness, these names are created in the self, which is the essence of pure consciousness, thinking 'someone exists.'

कल्पित चेतना के कारण, ये नाम स्वयं शुद्ध चेतना के आत्मा में बनाए जाते हैं, सोचते हुए कि 'कोई है।'

7.143.39

संविदात्मा स्वयं चित्त्वाद्देहं वेत्ति खमेव खे मृत्वा सन्तं सन्तमिव संकल्पस्वप्नयोरिव ॥ ३९ ॥

saṃvidātmā svayaṃ cittvādddehaṃ vetti khameva khe mṛtvā santaṃ santamiva saṃkalpasvapnayoriva || 39 ||

The self, which is the essence of consciousness, knows the body from the consciousness itself, like the sky in the sky, and after death, it knows the peaceful one as if in a dream or imagination.

आत्मा, जो चेतना का सार है, स्वयं चेतना से शरीर को जानता है, जैसे आकाश में आकाश, और मृत्यु के बाद, वह शांत को जैसे स्वप्न या कल्पना में जानता है।

7.143.40

स्वयं स्वप्न इवाभाति मृतस्य परलोकधीः तमेव पश्यति चिरं न तत्राप्यस्ति सत्यता ॥ ४० ॥

svayaṃ svapna ivābhāti mṛtasya paralokadhīḥ tameva paśyati ciraṃ na tatrāpyasti satyatā || 40 ||

The thought of the afterlife appears like a dream to the deceased. The deceased sees that for a long time, but there is no reality in it.

मृतक के लिए परलोक की धारणा स्वप्न की तरह प्रतीत होती है। मृतक उसे लंबे समय तक देखता है, लेकिन उसमें कोई सत्यता नहीं है।

7.143.41

मृतं निर्माति चेदन्यः कथं वास्य स्मृतिर्भवेत् कथं वा स्यात्स एवासौ चेतनत्वं तमेव खम् ॥ ४१ ॥

mṛtaṃ nirmāti cedanyaḥ kathaṃ vāsya smṛtirbhavet kathaṃ vā syātsa evāsau cetanatvaṃ tameva kham || 41 ||

If another creates the dead, how can there be memory of it? How can that be the same consciousness? That very space.

अगर कोई और मृतक को बनाता है, तो उसकी स्मृति कैसे हो सकती है? वह चेतना कैसे वही हो सकती है? वही आकाश।

7.143.42

मृतौ न जायते तस्माच्चेतसैव स केवलम् इहायमित्थमित्येव वेत्ति खे वासनात्मकम् ॥ ४२ ॥

mṛtau na jāyate tasmāccetasaiva sa kevalam ihāyamitthamityeva vetti khe vāsanātmakam || 42 ||

In death, it is not born, therefore it is only consciousness. Here, it knows itself as such in the space of desires.

मृत्यु में, यह जन्म नहीं लेता, इसलिए यह केवल चेतना है। यहाँ, यह आकाश में इच्छाओं के रूप में स्वयं को जानता है।

7.143.43

स्वमेव भावमभ्यस्तमास्ते सोऽनुभवंश्चिरम् स्फुटप्रत्ययवांस्त्वत्र सत्यमित्येव वेत्त्यलम् ॥ ४३ ॥

svameva bhāvamabhyastamāste so'nubhavaṃściram sphuṭapratyayavāṃstvatra satyamityeva vettiyalam || 43 ||

It remains in its own practiced state, experiencing for a long time. Here, it clearly perceives the truth.

यह अपनी अभ्यस्त अवस्था में रहता है, लंबे समय तक अनुभव करता है। यहाँ, यह स्पष्ट रूप से सत्य को जानता है।

7.143.44

खात्मा खमेव तत्रैव स्वप्नाभं दृश्यमाहरन् पुनः स्वमरणं वेत्ति पुनर्जन्म पुनर्जगत् ॥ ४४ ॥

khātmā khameva tatraiva svapnābhaṃ dṛśyamāharan punaḥ svamarṇaṃ vetti punarjanma punarjagat || 44 ||

The self, which is space itself, brings the dream-like visible there. Again, it knows its own death, rebirth, and the world.

आत्मा, जो खुद आकाश है, वहाँ स्वप्न-जैसी दृश्य लाता है। फिर, यह अपनी मृत्यु, पुनर्जन्म और संसार को जानता है।

7.143.45

अलीकजालमेवं खे पश्यन्प्रत्येकमास्थितः पश्यत्याचारयत्यत्ति किंचित्कश्चिन्न कस्यचित् ॥ ४५ ॥

alīkajālamevaṃ khe paśyanpratyekamāsthitaḥ paśyatyācārayatyatti kiṃcitkaścinnakasyacit || 45 ||

Thus, seeing the illusion in space, established in each, it sees, practices, and eats something, someone, nothing.

इस प्रकार, आकाश में भ्रम देखते हुए, प्रत्येक में स्थापित, यह कुछ, कोई, कुछ नहीं देखता है, अभ्यास करता है, और खाता है।

7.143.46

इत्येवं जगतां सन्ति कोटीनां कोटिकोटयः । परिज्ञातास्तु ता ब्रह्म केवलं दृश्यमन्यथा ॥ ४६ ॥

ityevam jagatām santi koṭīnām koṭikoṭayaḥ | parijñātāstu tā brahma kevalam dṛśyamanyathā || 46 ||

In this way, there are countless universes | They are all known to Brahma alone, otherwise they are just visible

इस प्रकार असंख्य ब्रह्माण्ड हैं | वे सब केवल ब्रह्मा को ही ज्ञात हैं, अन्यथा वे केवल दृश्य हैं

7.143.47

ताभिर्न कस्यचित्किंचिदावृतं न च सन्ति ताः । तासां च वेत्ति प्रत्येकमिदमेव जगत्त्विति ॥ ४७ ॥

tābhirna kasyacitkiñcidāvṛtam na ca santi tāḥ | tāsām ca vetti pratyekamidameva jagattviti || 47 ||

They do not cover anything of anyone, nor do they exist | Each one knows this very universe

वे किसी के किसी भी भाग को नहीं ढंकते हैं, न ही वे मौजूद हैं | प्रत्येक इस ब्रह्माण्ड को जानता है

7.143.48

भूतानि तासां प्रत्येकं तथैवान्योन्यमास्थिते । सत्यान्येवासत्यदृष्ट्या सत्यदृष्ट्या त्वजं पदम् ॥ ४८ ॥

bhūtāni tāsām pratyekam tathaivānyonyamāsthite | satyānyevāsatyadṛṣṭyā satyadṛṣṭyā tvajaṃ padam || 48 ||

The beings of each universe are situated in each other | They are true in the perception of truth, and false in the perception of falsity

प्रत्येक ब्रह्माण्ड के जीव एक दूसरे में स्थित हैं | वे सत्य के दृष्टिकोण से सत्य हैं, और असत्य के दृष्टिकोण से असत्य हैं

7.143.49

सद्यद्विदितवेद्यस्य तदज्ञस्यासदक्षयम् । असद्यत्संप्रबुद्धस्य तत्सदज्ञस्य सुस्फुटम् ॥ ४९ ॥

sadyadviditavedyasya tadajñasyāsadakṣayam | asadyatsaṃprabuddhasya tatsadajñasya susphuṭam || 49 ||

For the one who knows the knowable, the unknowable is imperishable | For the one who is awakened, the unknowable is clearly knowable

ज्ञातव्य को जानने वाले के लिए, अज्ञात अविनाशी है | जागृत के लिए, अज्ञात स्पष्ट रूप से ज्ञात है

7.143.50

चितेर्यद्यद्यथा भानं तत्तत्सत्यं यथा यतः । सद्रूपाणि समग्राणि भूतानीमान्यतो मिथः ॥ ५० ॥

citeryadyadyathā bhānaṃ tattatsatyaṃ yathā yataḥ | sadrūpāṇi samagrāṇi bhūtānīmānyato mithaḥ || 50 ||

Whatever appears in the consciousness, that is true as it is | All beings are true in their entirety, mutually

चेतना में जो भी प्रकट होता है, वह वैसा ही सत्य है | सभी जीव पूर्णतः सत्य हैं, एक दूसरे से परस्पर

7.143.51

नित्यमन्योन्यसत्यानि तानि तान्येव वाप्यतः । किल संविद्विनिर्णेयं रूपमप्रतिघं यतः ॥ ५१ ॥

nityamanyonyasatyāni tāni tānyeva vāpyataḥ | kila saṃvidvinirṇeyaṃ rūpamapratighaṃ yataḥ || 51 ||

Always, the truths are interdependent and they are the same | Indeed, the form to be determined by consciousness is unobstructed because of that || 51 ||

हमेशा, सत्य परस्पर निर्भर हैं और वे एक ही हैं | वास्तव में, चेतना द्वारा निर्धारित होने वाला रूप अवरोधित नहीं है क्योंकि वह ऐसा है || ५१ ||

7.143.52

संविन्मात्रविनिर्णेयं कान्यता नान्यता कथा । यथासंवेदनं भाते वस्त्वौघे क्व द्वितैकते ॥ ५२ ॥

saṃvinmātravinirṇeyaṃ kānyatā nānyatā kathā | yathāsaṃvedanaṃ bhāte vastvaughe kva dvitaikate || 52 ||

To be determined only by consciousness, there is no otherness or difference in speech | As it is experienced, it appears in the multitude of objects, where is the duality or unity || 52 ||

केवल चेतना द्वारा निर्धारित होने वाला, कोई अन्यता या अंतर वाणी में नहीं है | जैसे कि यह अनुभव किया जाता है, यह वस्तुओं के समूह में प्रकट होता है, द्वैत या एकता कहाँ है || ५२ ||

7.143.53

तदेवेदमिदं ज्ञप्तेस्तदेवेदं भवत्यलम् । तदेवैतत्तदेवेति भवेज्ज्ञप्तेरसत्यतः ॥ ५३ ॥

tadevedamidaṃ jñaptestadevedaṃ bhavatyalam | tadevaitattadeveti bhavejjñapterasatyataḥ || 53 ||

That alone is this, this is known as that | That alone is this, it becomes sufficient | That alone is this, that alone is this, it becomes from the unreality of knowledge || 53 ||

वही यह है, यह वह के रूप में ज्ञात होता है | वही यह है, यह पर्याप्त हो जाता है | वही यह है, वही यह है, यह ज्ञान की असत्यता से होता है || ५३ ||

7.143.54

तच्चेदर्थस्ततो ज्ञप्तेर्नायं तस्याः पृथक् स्थितः । स्थिते ज्ञप्त्यात्मनि त्वर्थे त्वज्ञप्त्यायं ततो व्रजेत् ॥ ५४ ॥

taccetadarthastato jñapter nāyaṃ tasyāḥ pṛthak sthitaḥ | sthite jñaptyātmani tvarthe tvajñaptyāyaṃ tato vrajeta || 54 ||

If that is the meaning, then knowledge is not separate from it | If the meaning is established in the self of knowledge, then it goes to the unknowable || 54 ||

यदि वह अर्थ है, तो ज्ञान उससे अलग नहीं है | यदि अर्थ ज्ञान के आत्मा में स्थापित है, तो यह अज्ञेय में चला जाता है || ५४ ||

7.143.55

ज्ञानं यदेव तज्ज्ञेयं ज्ञेयस्यासंभवात्पृथक् । यथा ज्ञानमतो ज्ञेयं तनोत्यात्मानमात्मना ॥ ५५ ॥

jñānaṃ yadeva tajjñeyaṃ jñeyasyāsaṃbhavātpṛthak | yathā jñānamato jñeyaṃ tanotyātmānamātmanā || 55 ||

Knowledge itself is the knowable, for the knowable does not exist separately | As knowledge, so is the knowable, it extends itself by itself || 55 ||

ज्ञान स्वयं ज्ञेय है, क्योंकि ज्ञेय अलग से नहीं है | जैसे ज्ञान, वैसे ही ज्ञेय, यह स्वयं को स्वयं से विस्तृत करता है || ५५ ||

7.143.56

पश्यन्तोऽपि मिलन्तोऽपि पृथक्सर्गा न किंचन । सत एवासतो ज्ञस्य मूर्खज्ञातांस्तु वेद्मि नो ॥ ५६ ॥

paśyanto'pi milanto'pi pṛthaksargā na kiṃcana | sat evāsato jñasya mūrkhajñātāṃstu vedmi no || 56 ||

Even though they see and meet, they are separate in essence, they do not know anything. I know the fools who consider the real as unreal.

यद्यपि वे देखते हैं और मिलते हैं, फिर भी वे अलग हैं, वे कुछ नहीं जानते | मैं उन मूर्खों को जानता हूँ जो सत्य को असत्य मानते हैं।

7.143.57

एकं प्रबोधतः सर्वे चिन्मात्रं तावदात्मखम् । तदेवानेकसंवित्त्या सहस्रं चिज्जडात्मनाम् ॥ ५७ ॥

ekaṃ prabodhataḥ sarve cinmātraṃ tāvadātmakham | tadevāneka saṃvittyā sahasraṃ cijjaḍātmanām || 57 ||

From the perspective of awakening, all is pure consciousness, the essence of the self. That same consciousness, through manifold awareness, becomes the thousandfold forms of sentient and insentient beings.

जागरण की दृष्टि से, सब कुछ शुद्ध चेतना है, आत्मा का सार | वही चेतना, अनेक चेतनाओं के माध्यम से, सहस्रों चेतन और अचेतन रूपों में बदल जाती है।

7.143.58

एकं तथा च चिन्मात्रं स्वप्ने लक्षात्म तिष्ठति । पुनर्लक्षात्म तत्स्वप्नादेकमास्ते सुषुप्तके ॥ ५८ ॥

ekaṃ tathā ca cinmātraṃ svapne lakṣātma tiṣṭhati | punarlakṣātma tatsvapnādekamāste suṣuptake || 58 ||

Similarly, the one pure consciousness exists as the essence of dreams. Again, from that dream state, it exists as one in deep sleep.

इसी तरह, एक शुद्ध चेतना स्वप्न के रूप में अस्तित्व में है | फिर से, उस स्वप्न अवस्था से, वह गहरी नींद में एक के रूप में अस्तित्व में है।

7.143.60

एकैव संविन्नानात्वं नृलक्षत्वं च गच्छति । शून्यत्वं च तथार्थत्वं स्वप्नसंकल्पयोरिव ॥ ६० ॥

ekaiva saṃvinnānātvaṃ nṛlakṣatvaṃ ca gacchati | śūnyatvaṃ ca tathārthatvaṃ svapnasankalpayoriva || 60 ||

The one consciousness itself assumes various forms, human characteristics, emptiness, and reality, just like in dreams and imaginations.

एक ही चेतना अनेक रूपों, मानवीय गुणों, शून्यता और वास्तविकता का रूप धारण करती है, जैसे कि स्वप्न और कल्पनाओं में।

7.143.61

इदमप्रतिघं सर्वं किल वेदनमात्रकम् । शुद्धं तद्वद्यथा यत्र भाति तत्र तथा भवेत् ॥ ६१ ॥

idamapratighaṃ sarvaṃ kila vedanamātrakam | śuddhaṃ tadvadyathā yatra bhāti tatra tathā bhavet || 61 ||

All this is non-resisting, merely an experience. It is pure where it appears, and it becomes as it appears.

यह सब कुछ अप्रतिरोधी है, केवल एक अनुभव | यह शुद्ध है जहाँ यह प्रकट होता है, और यह जैसा प्रकट होता है, वैसा ही बनता है।

7.143.62

एकैव संवित्सर्गादौ भवत्यग्न्यम्बुखादिकम् । पृथ्व्यादि तावत्सर्गार्थं स्वप्नसंकल्पयोरिव ॥ ६२ ॥

ekaiva saṃvitsargādau bhavatyagnyambukhādikam | pṛthvyādi tāvatsargārthaṃ svapnasankalpayoriva || 62 ||

Only consciousness exists at the beginning of creation, from which elements like fire and water arise, just like in dreams and imaginations.

केवल चेतना ही सृष्टि के आरंभ में होती है, जिससे अग्नि और जल जैसे तत्व उत्पन्न होते हैं, जैसे कि स्वप्न और कल्पना में होता है।

7.143.63

संविदाकाशरूपैव भाति पृथ्व्यादिनामिका । यत्तदेव खमेवेदं जगदित्येव भासते ॥ ६३ ॥

saṃvidākāśarūpaiva bhāti pṛthvyādināmikā | yattadeva khamevedaṃ jagadityeva bhāsate || 63 ||

Consciousness appears as the space itself, named as earth and other elements. That very space is perceived as the world.

चेतना खुद आकाश के रूप में प्रकट होती है, जिसे पृथ्वी और अन्य तत्वों के नाम से जाना जाता है। वही आकाश ही जगत के रूप में दिखाई देता है।

7.143.64

संवित्सप्रतिघं भाति भाति चाप्रतिघं तथा । न वस्तुतस्तु प्रतिघा संवित्सान्ते निवर्तते ॥ ६४ ॥

saṃvitsapratighaṃ bhāti bhāti cāpratighaṃ tathā | na vastutastu pratighā saṃvitsānte nivartate || 64 ||

Consciousness appears with and without resistance. In reality, there is no resistance; consciousness withdraws at the end.

चेतना प्रतिरोध के साथ और बिना प्रकट होती है। वास्तव में, कोई प्रतिरोध नहीं है; चेतना अंत में वापस लौट जाती है।

7.143.65

यासि पूर्वां पश्चिमां च दिशं वेत्सि चिरं विदन् । प्रतिघं नाम ते नास्ति न च सप्रतिघा क्वचित् ॥ ६५ ॥

yāsi pūrvāṃ paścimāṃ ca diśaṃ vetsi ciraṃ vidan | pratighaṃ nāma te nāsti na ca sapratighā kvacit || 65 ||

You go to the east and west, and you know the directions for a long time. There is no resistance for you, nor is there any resistance anywhere.

आप पूर्व और पश्चिम की ओर जाते हैं, और आप दिशाओं को लंबे समय से जानते हैं। आपके लिए कोई प्रतिरोध नहीं है, न ही कहीं भी कोई प्रतिरोध है।

7.143.66

दृष्टं संकल्पितं चार्थं सहाभ्यस्यति यश्चिरम्। सोऽवश्यं तदाप्नोति न चेच्छान्तो निवर्तते ॥ ६६ ॥

dṛṣṭaṃ saṃkalpitam cārthaṃ sahābhyasyati yaściram | so'vaśyaṃ tadāpnoti na ceccchānto nivartate || 66 ||

One who continuously practices what is seen and imagined will surely attain it and will not cease until the desire is fulfilled.

जो देखा और कल्पना की गई वस्तु का लंबे समय तक अभ्यास करता है, वह निश्चित रूप से उसे प्राप्त करेगा और इच्छा पूरी होने तक नहीं रुकेगा।

7.143.67

यासि पूर्वां पश्चिमां च दिशं वेति चिरं विदन् य आस्ते यात्यसौ तत्तामन्यस्त्यक्त्वा तु नेतराम् ॥ ६७ ॥

yāsi pūrvāṃ paścimāṃ ca diśaṃ veti ciraṃ vidan ya āste yātyasau tattāmanyastyaktvā tu netarām || 67 ||

One who goes to the east and west, knowing the directions for a long time, stays there, goes there, leaving the other.

जो पूर्व और पश्चिम दिशाओं को जानता है, उसे लंबे समय तक जानने के बाद वहाँ रहता है, वहाँ जाता है, दूसरे को छोड़कर।

7.143.68

दृष्टः संकल्पितश्चार्थः स्यामित्यचलसंविदः द्वयं भवेद्वयं नश्यत्यन्यस्याचलसंविदः ॥ ६८ ॥

dṛṣṭaḥ saṃkalpitascārthaḥ syāmityacalasaṃvidaḥ dvayaṃ bhavedvayaṃ naśyatyanyasyācalasaṃvidaḥ || 68 ||

The seen and the imagined object, I will be, says the unwavering consciousness. The duality arises and vanishes in the unwavering consciousness of the other.

देखा और कल्पित वस्तु, मैं होऊँगा, अचल चेतना कहती है। द्वैत उत्पन्न होता है और दूसरे की अचल चेतना में विलीन हो जाता है।

7.143.69

दक्षिणादुत्तरां वाशां यामीत्यचलसंविदः द्वयं भवेद्वयं नश्यत्यन्यस्याचलसंविदः ॥ ६९ ॥

dakṣiṇāduttarāṃ vāśāṃ yāmītyacalasaṃvidaḥ dvayaṃ bhaveddvayaṃ naśyatyanyasyācalasaṃvidaḥ || 69 ||

From the south to the north, I will go, says the unwavering consciousness. The duality arises and vanishes in the unwavering consciousness of the other.

दक्षिण से उत्तर तक, मैं जाऊँगा, अचल चेतना कहती है। द्वैत उत्पन्न होता है और दूसरे की अचल चेतना में विलीन हो जाता है।

7.143.70

खे पुरं स्यां भुवि मृगः स्यामित्यचलसंविदः द्वयं भवेद्वयं नश्यत्यन्यदन्यत्तु तज्जगत् ॥ ७० ॥

khe puraṃ syāṃ bhuvi mṛgaḥ syāmityacalasaṃvidaḥ dvayaṃ bhaveddvayaṃ naśyatyanyadanyattu tajjagat || 70 ||

In the sky, I will be a city, on the earth, I will be an animal, says the unwavering consciousness. The duality arises and vanishes in the other, and that is the world.

आकाश में, मैं एक शहर होऊँगा, पृथ्वी पर, मैं एक जानवर होऊँगा, अचल चेतना कहती है। द्वैत उत्पन्न होता है और दूसरे में विलीन हो जाता है, और यह संसार है।

7.143.71

एकं प्रबोधतः सर्वं चिन्मात्रं तावदात्मखम् तदेवानेकसंवित्त्या सहस्रं चिज्जडात्मनाम् ॥ ७१ ॥

ekaṃ prabodhataḥ sarvaṃ cinmātraṃ tāvadātmakham tadevānekasaṃvittyā sahasraṃ cijjadātmanām || 71 ||

From one awakening, all is pure consciousness, that is the self. The same, through manifold consciousness, becomes thousands of sentient and insentient beings.

एक जागरण से, सब कुछ शुद्ध चेतना है, यह आत्मा है। वही, अनेक चेतनाओं के माध्यम से, हजारों चेतन और अचेतन प्राणियों में बदल जाता है।

7.143.72

शरीरमस्त्वप्रतिघमथ सप्रतिघं च वा । स्वप्नात्मकोऽयं संसारो जीवस्येह परत्र च ॥ ७२ ॥

śarīramastvapratighamatha sapratighaṃ ca vā | svapnātmako'yaṃ saṃsāro jīvasyeha paratra ca || 72 ||

This world is like a dream, whether the body is with obstacles or without obstacles, here or there.

यह संसार स्वप्न के समान है, चाहे शरीर बाधाओं से रहित हो या सहित, यहाँ या परलोक में।

7.143.73

एतन्म्लेच्छादिदेशेषु मृतानां दर्शनात्पुनः । स्मृतिपूर्वं च कथनात्प्रत्यक्षमनुभूयते ॥ ७३ ॥

etanmlecchādideśeṣu mṛtānāṃ darśanātpunaḥ | smṛtipūrvaṃ ca kathanātpratyakṣamanubhūyate || 73 ||

This is seen again in the lands of the Mlecchas and others, from the sight of the dead and from their narration with memory.

यह म्लेच्छ आदि देशों में फिर से देखा जाता है, मृतकों के दर्शन से और उनके स्मृति सहित कथन से।

7.143.74

ये मृता भस्मसाज्जाता म्लेच्छदेशेषु ते पुनः । आगत्य कथयित्वार्थं गच्छन्त्यप्रतिघात्मकाः ॥ ७४ ॥

ye mṛtā bhasmasājjātā mlecchadeśeṣu te punaḥ | āgatya kathayitvārthaṃ gacchantyapratighātmakāḥ || 74 ||

Those who are dead and have become ashes in the lands of the Mlecchas, they come again and narrate the matter, then depart without obstacles.

जो मृतक म्लेच्छ देशों में भस्म हो गए हैं, वे फिर से आते हैं और मामला बताकर बाधाओं से रहित होकर चले जाते हैं।

7.143.75

एष चेज्जीवतो धर्मस्तद्देशान्तरगे जने । मृत इत्येव बुद्धेऽर्थे कस्मान्नैव प्रवर्तते ॥ ७५ ॥

eṣa cejjīvato dharmastadddeśāntarage jane | mṛta ityeva buddhe'rthe kasmānnaiva pravartate || 75 ||

If this is the nature of the living in another country, why does it not apply in the case of the dead in the same sense?

यदि यह दूसरे देश में जीवित लोगों का धर्म है, तो मृतकों के मामले में इसी अर्थ में क्यों नहीं लागू होता?

7.143.76

जीवधर्मः सोऽपि संश्चेन्मृतधर्मोऽपि किं न सन् । यादृगनुभवस्त्वस्मिन्समे न्यायद्वये स्थिते ॥ ७६ ॥

jīvadharmaḥ so'pi saṃścenmṛtadharmo'pi kiṃ na san | yādṛganubhavastvasmin same nyāyadvaye sthite || 76 ||

If the nature of the living is also included, why should the nature of the dead not be? As the experience is the same in both principles.

यदि जीवित का धर्म भी शामिल है, तो मृतकों का धर्म क्यों नहीं होना चाहिए? क्योंकि दोनों सिद्धांतों में अनुभव एक ही है।

7.143.77

स्वप्नवज्जगदाभानमित्येवं सत्यखण्डितम् । आर्यानुभवशास्त्राणामनेनास्त्येकवाक्यता ॥ ७७ ॥

svapnavajjagadābhānamityevaṃ satyakhaṇḍitam | āryānubhavaśāstrāṇāmanenāstyekavākyatā || 77 ||

Just as the world appears like a dream, so is the truth broken | Thus, the experiences and scriptures of the noble ones have one meaning

जैसे स्वप्न की तरह जगत का आभास होता है, वैसे ही सत्य टूट जाता है | इस प्रकार आर्यों के अनुभव और शास्त्रों का एक ही अर्थ है

7.143.78

दृष्टिजालं जनौघानां पश्यतामिन्दुमन्दिरे । यादृगप्रतिघं तादृग्जगत्सदसदात्मकम् ॥ ७८ ॥

dṛṣṭijālaṃ janaughānāṃ paśyatāmindumandire | yādṛgapratighaṃ tādṛgjagatsadasadātmakam || 78 ||

The web of vision of the multitude of people seeing in the moon's mansion | Whatever is reflected, the world is of that nature, both real and unreal

लोगों की भीड़ की दृष्टि का जाल चंद्रमंडल में देखने वालों का | जो भी प्रतिबिंबित होता है, जगत उसी प्रकार का होता है, सत् और असत् दोनों

7.143.79

सन्मात्रमात्रानुविधमच्छानुभवमात्रकम् । चिन्मात्रं भानमात्रात्म सर्वार्थात्मार्थवर्जितम् ॥ ७९ ॥

sanmātramātrānuvidhamacchānubhavamātrakam | cinmātraṃ bhānamātrātma sarvārthātmārthavarjitam || 79 ||

Pure existence, following the measure of pure experience | Pure consciousness, the essence of pure appearance, devoid of all meanings and objects

शुद्ध अस्तित्व, शुद्ध अनुभव के मापदंड का अनुसरण करता है | शुद्ध चेतना, शुद्ध प्रकटन का सार, सभी अर्थों और वस्तुओं से रहित

7.143.80

सर्वमप्रतिघं शान्तं जगदेकं चिदम्बरे । अनिङ्गनमनाभासमात्मन्येवात्मनास्यताम् ॥ ८० ॥

sarvamapratighaṃ śāntaṃ jagadekaṃ cidambare | aniṅganamanābhāsamātmanyevātmanāsyatām || 80 ||

Everything is non-reflective, peaceful, the world is one in the sky of consciousness | Non-vibrating, non-appearing, let it rest in the self itself

सब कुछ अप्रतिबिंबित, शांत, जगत एक है चेतना के आकाश में | अकंपन, अप्रकट, आत्मा में ही आत्मा को विश्राम दें

7.143.81

अचला संविदेवास्ते स्थिरं कृत्वा यथा यथा । तथा तथा भवत्याशु किमसत्किं च वापि सत् ॥ ८१ ॥

acalā saṃvidevāste sthiraṃ kṛtvā yathā yathā | tathā tathā bhavatyāśu kimasatkiṃ ca vāpi sat || 81 ||

Steadfast awareness alone exists, making it stable as it is | Thus, it quickly becomes, what is unreal and what is real

अचल चेतना ही है, उसे स्थिर करके जैसा है वैसा ही | इस प्रकार, यह तुरंत बन जाता है, जो असत् है और जो सत् है

7.143.82

शरीराण्यथ कर्माणि दुःखानि च सुखानि च । यथा स्थितान्युपायान्तु यान्तु वा कस्य किं ग्रहः ॥ ८२ ॥

śarīrāṇyatha karmāṇi duḥkhāni ca sukhāni ca | yathā sthitānyupāyāntu yāntu vā kasya kiṃ grahaḥ || 82 ||

Bodies, actions, pains, and pleasures come and go as they are ordained. What is there to grasp?

शरीर, कर्म, दुःख और सुख जैसे नियत हैं, वैसे ही आते हैं और चले जाते हैं। इसमें किसी को क्या पकड़ना है?

7.143.83

इत्थमस्तु सदथान्यथास्तु वा मैव भूद्भवतु कोऽत्र संभ्रमः । मुञ्च फल्गुनि फले फलावहं बुद्धवानसि कृतं परिभ्रमैः ॥ ८३ ॥

itthamastu sadathānyathāstu vā maiva bhūdbhavatu ko'tra saṃbhraamaḥ | muñca phalgune phale phalāvahaṃ buddhvānasi kṛtaṃ paribhramaiḥ || 83 ||

Let it be so or otherwise, let it not be or let it be. What is the confusion here? O Arjuna, let go of the fruit of actions, having understood, you have done enough wandering.

ऐसा हो या और तरीके से हो, न हो या हो। यहाँ क्या भ्रम है? हे अर्जुन, कर्मों के फल को छोड़ दो, समझकर, तुमने पर्याप्त भटकना किया है।

Chapter 144

7.144.1

मुनिरुवाच । सर्वथाभावभावेषु स्वप्नसंवेदनात्मसु । नित्याप्रतिघरूपेषु किं बद्धं किं विमुच्यते ॥ १ ॥

muniruvāca | sarvathābhāvabhāveṣu svapnasamvedanātmasu | nityāpratigharūpeṣu kiṃ badhdhaṃ kiṃ vimucyate || 1 ||

The sage said: In all states of existence and non-existence, which are like dreams and are eternal and unobstructed, what is bound and what is liberated?

मुनि ने कहा: सभी अस्तित्व और अनस्तित्व की दशाओं में, जो स्वप्न के समान हैं और नित्य और अवरोधरहित हैं, क्या बंधा है और क्या मुक्त है?

7.144.2

खे दृष्टिभासां स्फुरणं यादृशं तादृशं जगत् । विपर्यस्यत्यविरतमबोधाल्लक्ष्यते स्थिरम् ॥ २ ॥

khe dṛṣṭibhāsāṃ sphuraṇaṃ yādṛśaṃ tādṛśaṃ jagat | viparyasyatyaviratamabodhāllakṣyate sthiram || 2 ||

Just as the flickering of a mirage in the sky, so is the world. It constantly changes due to ignorance, but it appears to be stable.

जैसे आकाश में मृगतृष्णा का चमकना, वैसे ही संसार है। यह अज्ञान के कारण निरंतर बदलता रहता है, परंतु स्थिर प्रतीत होता है।

7.144.3

यद्यथा पुरसंस्थानं चिरैरेति तदन्यताम् । जगदप्येवमनिशं वार्यावर्तविवर्तवत् ॥ ३ ॥

yadyathā purasaṃsthānaṃ ciraireti tadanyatām | jagadapyevamanisaṃ vāryāvartavivartavat || 3 ||

Just as a city gradually changes over time, so does the world constantly change like the flow of water.

जैसे एक नगर धीरे-धीरे समय के साथ बदलता है, वैसे ही संसार निरंतर जल के प्रवाह के समान बदलता रहता है।

7.144.4

भूम्यम्ब्वम्बरशैलादि भवत्यसदिदं क्षणात् । तस्मिन्नेव क्षणोदन्तैर्युगकल्पाभिधाः कृताः ॥ ४ ॥

bhūmyambvambaraśailādi bhavatyasadidaṃ kṣaṇāt | tasminnēva kṣaṇōdantairyugakalpābhidhāḥ kṛtāḥ || 4 ||

The earth, water, air, and mountains, all these become non-existent in an instant. In that very instant, the designations of yugas and kalpas are made.

भूमि, जल, वायु और पर्वत, ये सभी एक क्षण में अस्तित्वहीन हो जाते हैं। उसी क्षण में युगों और कल्पों के नाम दिए जाते हैं।

7.144.5

जगत्स्वप्न इवाशेषमसदप्यनुभूयते । यन्नास्ति चेत्तन्निःशेषं चिदेवेत्थं कचत्यलम् ॥ ५ ॥

jagatsvapna ivāśeṣamasadapyanubhūyate | yannāsti cet tanniḥśeṣaṃ cidevetthaṃ kacatyālam || 5 ||

The world is like a dream, entirely non-existent, yet it is experienced. If it does not exist, then it is entirely consciousness that shines here.

संसार स्वप्न के समान है, पूरी तरह अस्तित्वहीन, फिर भी यह अनुभव किया जाता है। यदि यह नहीं है, तो यहाँ पूरी तरह चेतना ही चमकती है।

7.144.6

यथेदं नो जगत्तद्वच्छतानां खे शतानि हि। नृणां पश्यन्तु तेषां तु नान्योन्यमनुभूतयः ॥ ६ ॥

yathedaṃ no jagattadvacchatānāṃ khe śatāni hi | nṛṇāṃ paśyantu teṣāṃ tu nānyonyamanubhūtayaḥ || 6 ||

Just as this world is perceived differently by hundreds of people in the sky, so too the experiences of those people are not the same.

जैसे यह जगत आकाश में सैकड़ों लोगों द्वारा अलग-अलग देखा जाता है, वैसे ही उन लोगों के अनुभव एक दूसरे से अलग होते हैं।

7.144.7

सरोब्धिकूपमेकानां दृष्टाः प्रत्येकमास्पदे। न तेऽन्योन्यं विदन्त्यन्यां दृश्यादिनियतिं क्वचित् ॥ ७ ॥

sarobdhikūpamekānāṃ dṛṣṭāḥ pratyekamāspade | na te'nyonyaṃ vidantyanyāṃ dṛśyādiniyatiṃ kvacit || 7 ||

Some see a lake, others an ocean, and still others a well, each in their own place. They do not know each other's perceptions or the limitations of their views.

कुछ लोग एक सरोवर देखते हैं, कुछ समुद्र, और कुछ कुएँ, प्रत्येक अपने स्थान पर। वे एक दूसरे की प्रत्यक्षण या उनकी दृष्टि की सीमाओं को नहीं जानते।

7.144.8

यथा जनशतस्वप्ननगराण्येकमन्दिरे। तथा जगन्ति खे भान्तिखानि नो सन्त्यसन्ति नो ॥ ८ ॥

yathā janśatasvapnanagarāṇyekamandire | tathā jaganti khe bhāntikhāni no santyasanty no || 8 ||

Just as hundreds of people can dream of different cities in one palace, so too the worlds appear and disappear in the sky.

जैसे एक महल में सैकड़ों लोग अलग-अलग शहरों का सपना देख सकते हैं, वैसे ही आकाश में जगत प्रकट होते हैं और अदृश्य हो जाते हैं।

7.144.9

कचन्ति नृशतस्वाप्नपुराण्येकगृहे यथा। न च नाम कचन्त्येवं सन्त्यसन्ति जगन्ति खे ॥ ९ ॥

kacanti nṛśatasvāpnpurāṇyekagṛhe yathā | na ca nāma kacantyevaṃ santyasanty jaganti khe || 9 ||

Just as hundreds of people's dream cities do not actually exist in one house, so too the worlds in the sky do not truly exist.

जैसे एक घर में सैकड़ों लोगों के सपनों के शहर वास्तव में नहीं होते, वैसे ही आकाश में जगत भी वास्तव में नहीं होते।

7.144.10

चिच्चमत्कारमात्रं स्वं स्वात्माङ्गं दृश्यमद्वयम्। सरूपमेव नीरूपं सकारणमकारणम् ॥ १० ॥

ciccāmatkāramātraṃ svaṃ svātmāṅgaṃ dṛśyamadvayam | sarūpameva nīrūpaṃ sakāraṇamakāraṇam || 10 ||

The self is pure consciousness, a wonder, one's own essence, non-dual, formless yet with form, with cause yet without cause.

स्वयं शुद्ध चेतना है, एक आश्चर्य, अपना ही सार, अद्वैत, रूपरहित फिर भी रूपवान, कारणवान फिर भी अकारण।

7.144.11

दधत्याश्चित्स्वभावायाः संस्काराद्यभिधाः कृताः। प्रतिमायाः प्रभाविन्या न संस्कारादयः पृथक् ॥ ११ ॥

dadhatyāścitsvabhāvāyāḥ saṃskārādyabhidhāḥ kṛtāḥ | pratimāyāḥ prabhāvinyā na saṃskārādayaḥ pṛthak || 11 ||

The qualities and attributes are bestowed upon the one who possesses the nature of pure consciousness | The image, which is powerful, does not have separate qualities and attributes

चित् स्वभाव वाले को संस्कार और अभिधा प्रदान की जाती है | प्रतिमा, जो प्रभावशाली है, उसके संस्कार और अभिधा अलग नहीं हैं

7.144.12

अपूर्वत्वात्स्मृतिः स्वप्नः संकल्पार्थानुभूतिषु । स्वमृत्यनुभवाद्यास्तु दृष्टार्थसदृशीषु च ॥ १२ ॥

apūrvatvātsmṛtiḥ svapnaḥ saṃkalpārthānubhūtiṣu | svamṛtyanubhavādyāstu dṛṣṭārthasadṛśīṣu ca || 12 ||

Due to its uniqueness, memory and dreams are experienced in the form of intentions and perceptions | However, experiences such as one's own death are similar to perceived objects

अपनी अनूठी प्रकृति के कारण, स्मृति और स्वप्न इरादों और अनुभूतियों के रूप में अनुभव किए जाते हैं | हालाँकि, अपनी मृत्यु जैसे अनुभव देखे गए वस्तुओं के समान होते हैं

7.144.13

इदं सर्गात्म सर्गादौ प्रतिमेव विजृम्भते । चिद्भामात्मिका स्वच्छा नान्यन्नामोपपद्यते ॥ १३ ॥

idaṃ sargātma sargādau pratimeva vijṛmbhate | cidbhāmātmikā svacchā nānyannāmopapadyate || 13 ||

This creation, which is the essence of creation, manifests as an image | Pure consciousness, which is the essence of luminosity, does not fit any other name

यह सृष्टि, जो सृष्टि का सार है, एक प्रतिमा के रूप में प्रकट होती है | चित् भा, जो प्रकाश का सार है, किसी अन्य नाम में नहीं फिट होता

7.144.14

ब्रह्मैव भाति जगदित्युक्तमुक्त्यानया भवेत् । न च भातं नवं तच्च ब्रह्मैवेदमतः स्थितम् ॥ १४ ॥

brahmaiva bhāti jagadityuktamuktānayā bhavet | na ca bhātaṃ navaṃ tacca brahmaivedamataḥ sthitam || 14 ||

It is said that only Brahman shines as the world | Therefore, nothing new is manifested, and this is Brahman itself

कहा जाता है कि केवल ब्रह्म ही जगत के रूप में चमकता है | इसलिए, कुछ नया प्रकट नहीं होता, और यह ब्रह्म स्वयं है

7.144.15

कारणं कार्यमित्युक्तः स पूर्वः स विशिष्यते । संस्कार इति तेनैष संस्कारः कृतिरुच्यते ॥ १५ ॥

kāraṇaṃ kāryamityuktaḥ sa pūrvaḥ sa viśiṣyate | saṃskāra iti tenaiṣa saṃskāraḥ kṛtirucyate || 15 ||

The cause is said to be the effect, that is the first, that is distinguished | Therefore, this is called a conditioning, which is an action

कारण कहा जाता है कार्य, वह पहला है, वह विशिष्ट है | इसलिए, यह संस्कार कहलाता है, जो एक कृति है

7.144.16

तत्स्वप्नादावपूर्वोऽर्थो दृष्टान्त इति भाति यः । ससंस्कारादिनामोक्तो न बाह्योऽर्थोस्ति चेतसि ॥ १६ ॥

tatsvapnādāvapūrvo'rtho dṛṣṭānta iti bhāti yaḥ | sasaṃskārādināmokto na bāhyo'rthosti cetasi || 16 ||

That which appears in dreams and the like as something novel is called an example. It is said to be due to impressions, etc. There is no external object in the mind.

जो स्वप्न आदि में नया प्रतीत होता है, उसे दृष्टान्त कहते हैं। यह संस्कारों के कारण कहा जाता है, मन में कोई बाह्य वस्तु नहीं होती।

7.144.17

वस्तु दृष्टं न दृष्टं च सच्चास्ते चेतनेव खे । स्वभावाद्भाति स्वात्मापि दृष्टवच्चातिजृम्भते ॥ १७ ॥

vastu dṛṣṭaṃ na dṛṣṭaṃ ca saccāste cetanevakhe | svabhāvādbhāti svātmāpi dṛṣṭavaccātijṛmbhate || 17 ||

The object seen is not seen, and it exists like consciousness in the sky. By its own nature, the self also appears, and it greatly expands like the seen.

देखी गई वस्तु नहीं देखी गई होती है, और वह चेतना की तरह आकाश में मौजूद होती है। अपने स्वभाव से, आत्मा भी प्रकट होती है, और वह देखी गई वस्तु की तरह बहुत फैलती है।

7.144.18

वेदान्तार्थात्मकं पूर्वसर्गाभावं प्रवर्तते । ततो वेद्यव्यवस्था ज्ञैः क्रियते स्वार्थसिद्धये ॥ १८ ॥

vedāntārthātmakaṃ pūrvasargābhāvaṃ pravartate | tato vedyavyavasthā jñaiḥ kriyate svārthasiddhaye || 18 ||

The non-existence of the previous creation is explained by the meaning of Vedanta. From that, the arrangement of the knowable is made by the knowers for the accomplishment of their own purpose.

पूर्व सृष्टि की अनुपस्थिति वेदान्त के अर्थ द्वारा समझाई जाती है। उससे, ज्ञाताओं द्वारा ज्ञेय की व्यवस्था अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए की जाती है।

7.144.19

स्वप्ने तु जाग्रत्संस्कारो यस्तज्जाग्रत्कृतं नवम् । अजाग्रज्जाग्रदाभासं कृतमित्येव तद्विदः ॥ १९ ॥

svapne tu jāgratsaṃskāro yastajjāgratkṛtaṃ navam | ajāgrajjāgradābhāsaṃ kṛtamityeva tadvidaḥ || 19 ||

In dreams, however, the impression of the waking state is that which is newly created in the waking state. The knowers say that it is a reflection of the non-waking in the waking.

स्वप्न में, हालाँकि, जाग्रत अवस्था का संस्कार वह है जो जाग्रत अवस्था में नया बनाया जाता है। ज्ञाता कहते हैं कि यह जाग्रत में अजाग्रत का प्रतिबिम्ब है।

7.144.20

ततो वायाविवास्पन्दाश्चित्ते भावाः स्थिताः स्वतः । ते स्वतः संप्रवर्तन्ते कात्र संस्कारकर्तृता ॥ २० ॥

tato vāyāviva spandāścitte bhāvāḥ sthitāḥ svataḥ | te svataḥ saṃpravartante kātra saṃskārakartṛtā || 20 ||

Then, like the vibrations in the air, the mental states are established by themselves. They spontaneously manifest, where is the agency of impressions?

तब, हवा में कंपनों की तरह, मानसिक अवस्थाएँ स्वयं स्थापित होती हैं। वे स्वतः ही प्रकट होती हैं, संस्कारों की सक्रियता कहाँ है?

7.144.21

एकं तथा च चिन्मात्रं स्वप्ने लक्षात्म तिष्ठति । पुनर्लक्षाद्यतः स्वप्न एकमास्ते सुषुप्तकम् ॥ २१ ॥

ekaṃ tathā ca cinmātraṃ svapne lakṣātma tiṣṭhati | punarlakṣādyataḥ svapna ekamāste suṣuptakam || 21 ||

The pure consciousness, which is one and the same, exists in the form of subtle impressions in dreams. From these impressions, the dream arises, and then it merges back into the state of deep sleep.

एक और वही चिन्मात्र स्वप्न में सूक्ष्म रूप में स्थित है | फिर से इन सूक्ष्म रूपों से स्वप्न उत्पन्न होता है और एक होकर सुषुप्ति में स्थित होता है |

7.144.22

चिद्व्योम्नि स्वप्नसंवित्तिर्या सैव जगदुच्यते । सुषुप्तं प्रलयः प्रोक्तस्तस्मान्न्यायोऽयमेव सन् ॥ २२ ॥

cidvyomni svapnasanvittiryā saiva jagaducyate | suṣuptaṃ pralayaḥ proktastasmānnyāyo'yameva san || 22 ||

The awareness in the dream state is said to be the world. Deep sleep is called dissolution. Therefore, this is the logical conclusion.

स्वप्न अवस्था में चेतना ही जगत कहलाती है | गहरी नींद प्रलय कहलाती है | इसलिए, यही न्याय है |

7.144.23

एकमेव चिदाकाशं साकारत्वमनेककम्। स्वरूपमजहद्धत्ते यत्स्वप्न इव तज्जगत्॥ २३॥

ekameva cidākāśaṃ sākāratvamanekakam | svarūpamajahaddhatte yatsvapna iv tajjagat || 23 ||

The one pure space of consciousness appears as many forms. The world, like a dream, assumes and discards its own nature.

एक शुद्ध चेतना का आकाश अनेक रूपों में प्रकट होता है | जगत, स्वप्न की तरह, अपने स्वरूप को धारण करता और त्यागता है |

7.144.24

एवं चित्परमाण्वन्तर्जगद्भावमिदं स्थितम्। तदनन्यात्म चाभोगि स्वप्नादर्शतलेष्विव॥ २४॥

evaṃ citparamāṇvantarjagadbhāvamidaṃ sthitam | tadananyātma cābhogi svapnādarśataleṣviva || 24 ||

Thus, the world exists within the supreme atom of consciousness. It is non-different from it and enjoys itself, like reflections in a dream or a mirror.

इस प्रकार, जगत चेतना के परमाणु में स्थित है | वह उससे भिन्न नहीं है और स्वयं का आनंद लेता है, जैसे स्वप्न या दर्पण में प्रतिबिंब |

7.144.25

चिद्व्योम संविन्मात्रं यत्परमाणुवदाततम्। अनादिमध्यपर्यन्तं तदेव जगदुच्यते॥ २५॥

cidvyoma saṃvinmātraṃ yatparamāṇuvadātatam | anādimadhyaparyantaṃ tadeva jagaducyate || 25 ||

The space of consciousness, which is pure awareness, is spread out like an atom. It is without beginning, middle, or end, and that itself is called the world.

चेतना का आकाश, जो शुद्ध चेतना है, परमाणु की तरह फैला हुआ है | इसका न आदि है, न मध्य है, न अंत है, और वही जगत कहलाता है |

7.144.26

तस्माद्यत्र चिदाकाशमनन्तं सततं स्थितम्। तत्रास्तीति जगद्भानं तदङ्गानन्यरूपि यत्॥ २६॥

tasmādyatra cidākāśamanantaṃ satataṃ sthitam | tatrāstīti jagadbhānaṃ tadaṅgānanyarūpi yat || 26 ||

Therefore, wherever there is the eternal, infinite space of consciousness, there exists the universe, which is of the nature of that consciousness and nothing else.

इसलिए, जहाँ भी चेतना का अनन्त, नित्य आकाश है, वहीं ब्रह्माण्ड है, जो उस चेतना का ही रूप है और कुछ नहीं।

7.144.27

चिन्मात्र एव भुवनं त्वमहं चिन्मयं जगत्। इति न्यायाज्जगद्याति परमाणूदरेऽप्यजम्॥ २७॥

cinmātra eva bhuvanaṃ tvamahaṃ cinmayam jagat | iti nyāyājjagadyāti paramāṇūdare'pyajam || 27 ||

The universe is purely consciousness, and I am that consciousness. According to this logic, the universe pervades even the smallest particle.

ब्रह्माण्ड पूर्णतः चेतना है, और मैं वही चेतना हूँ। इस तर्क के अनुसार, ब्रह्माण्ड सबसे छोटे कण में भी व्याप्त है।

7.144.28

तस्मादहं पराण्वात्मा समस्तजगदाकृतिः। सर्वत्रैव च तिष्ठामि परमाणूदरेऽपि च॥ २८॥

tasmādahaṃ parāṇvātmā samastajagadākṛtiḥ | sarvatraiva ca tiṣṭhāmi paramāṇūdare'pi ca || 28 ||

Therefore, I am the supreme atomic self, the form of the entire universe. I exist everywhere, even in the smallest particle.

इसलिए, मैं परम अणु आत्मा हूँ, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का रूप। मैं हर जगह मौजूद हूँ, सबसे छोटे कण में भी।

7.144.29

चिन्मात्रपरमाणुः सञ्जगदात्माप्ययं नभः । यत्र तिष्ठाम्यहं तत्र पश्यामि भुवनत्रयम् ॥ २९ ॥

cinmātraparamāṇuḥ sañjagadātmāpyayaṃ nabhaḥ | yatra tiṣṭhāmyahaṃ tatra paśyāmi bhuvanatrayam || 29 ||

I am the supreme atomic particle of pure consciousness, the essence of the universe. Wherever I exist, I see the three worlds.

मैं शुद्ध चेतना का परम अणु हूँ, ब्रह्माण्ड का सार। जहाँ भी मैं हूँ, वहाँ मैं तीनों लोकों को देखता हूँ।

7.144.30

अहं चित्परमाण्वात्मा तेन चित्परमाणुना । एकतामागतो वारि वारिणेव तदीक्षणात् ॥ ३० ॥

ahaṃ citparamāṇvātmā tena citparamāṇunā | ekatāmāgato vāri vāriṇeva tadīkṣaṇāt || 30 ||

I am the supreme atomic self of consciousness. Through that supreme atomic consciousness, I have attained oneness, like water merging with water.

मैं चेतना का परम अणु आत्मा हूँ। उस परम अणु चेतना के द्वारा, मैं एकता को प्राप्त हो गया हूँ, जैसे पानी पानी में मिल जाता है।

7.144.31

तदोजः संप्रविश्याहं स्थितस्तदनुभूतिवत् । अन्तस्थत्रिजगद्रूपो यथाब्जे बीजमङ्कुरे ॥ ३१ ॥

tadojaḥ saṃpraviśyāhaṃ sthitastadanubhūtivat | antasthtrijagadrūpo yathābje bījamaṅkure || 31 ||

Having entered that radiance, I remain there experiencing it | Within, I am the form of the three worlds, like a seed within a lotus

उस तेज में प्रवेश करके मैं उसके अनुभव के समान स्थित हूँ | अंतर में, मैं तीनों जगतों के रूप में हूँ, जैसे कमल में बीज

7.144.32

तत्र मे त्रिजगद्रूपमन्तः कचितमात्मनितथा तन्न तु तद्बाह्ये विद्यते केनचित्क्वचित् ॥ ३२ ॥

tatra me trijagadrūpamantaḥ kacitamātmanitathā tanna tu tadvāhye vidyate kenacitkvacit || 32 ||

There, within me, the form of the three worlds is somewhat perceived in the self, but it is not found anywhere outside.

वहाँ, मेरे अंदर, तीन लोकों का रूप आत्मा में कुछ हद तक दिखाई देता है, लेकिन बाहर कहीं भी नहीं मिलता।

7.144.33

मुनिरुवाच । अकारणक एवायं सर्ग आदौ प्रवर्तते । समस्तकारणाभावाद्यतः सर्गात्मचिन्नभः ॥ ३३ ॥

muniruvāca | akāraṇaka evāyaṃ sarga ādau pravartate | samastakāraṇābhāvādyataḥ sargātmacinnabhaḥ || 33 ||

The sage said | This creation begins without cause at the beginning | Because of the absence of all causes, therefore, the creation is without consciousness

मुनि ने कहा | यह सृष्टि शुरुआत में बिना कारण के प्रारंभ होती है | सभी कारणों की अनुपस्थिति के कारण, इसलिए, सृष्टि चेतना से रहित है

7.144.34

भाति स्वप्ने यदा जन्तोर्जगदानन्दमाततम् । चिदणोरेव तद्भानमात्मनस्तत्पदात्मना ॥ ३४ ॥

bhāti svapne yadā jantorjagadānandamātatam | cidaṇoreva tadbhānamātmanastatpadātmanā || 34 ||

It appears in a dream when the individual experiences the world as blissful | That appearance is of the self, which is the essence of consciousness

जब व्यक्ति स्वप्न में संसार को आनंदमय अनुभव करता है, तब वह प्रकट होता है | वह प्रकटीकरण आत्मा का है, जो चेतना का सार है

7.144.35

व्याध उवाच । अकारणं चेद्दृश्यं तत्कथमेतत्प्रसिध्यति । सकारणं चेद्दृश्यं तत्स्वप्ने सर्गादिधीः कुतः ॥ ३५ ॥

vyādha uvāca | akāraṇaṃ ceddṛśyaṃ tatkathametatprasidhyati | sakāraṇaṃ ceddṛśyaṃ tatsvapne sargādidhīḥ kutaḥ || 35 ||

The hunter said | If the visible is without cause, how does this become established? If the visible is with cause, then where does the idea of creation in a dream come from?

शिकारी ने कहा | यदि दृश्य बिना कारण के है, तो यह कैसे स्थापित होता है? यदि दृश्य कारण से है, तो स्वप्न में सृष्टि की धारणा कहाँ से आती है?

7.144.37

अकारणानां भावानामत्यन्तासंभवादिह क्वचित्सप्रतिघः सर्गो न संभवति कश्चन ॥ ३७ ॥

akāraṇānāṃ bhāvānāmatyantāsaṃbhavādiha kvacitsapratighaḥ sargo na saṃbhavati kaścana || 37 ||

Due to the impossibility of the existence of effects without a cause, no creation with opposition can occur anywhere.

कारण के बिना भावों की अत्यंत असंभवता के कारण, कहीं भी कोई विरोधी सृष्टि नहीं हो सकती।

7.144.38

ब्रह्मेदमित्थमाभाति भास्वरं चित्स्वभावतः सर्गादिशब्दपर्यायमाद्यन्तपरिवर्जितम् ॥ ३८ ॥

brahmedamitthamābhāti bhāsvaraṃ cittasvabhāvataḥ sargādiśabdaparyāyamādyantaparivarjitam || 38 ||

Brahman appears thus, shining by its nature of consciousness, devoid of the terms of creation, etc., and free from beginning and end.

ब्रह्म इस प्रकार प्रकट होता है, चेतना के स्वभाव से चमकता हुआ, सृष्टि आदि शब्दों से रहित, और आदि और अंत से मुक्त।

7.144.39

इत्यकारणके सर्गे कचति ब्रह्मरूपिणि परस्यावथवाभासे नित्यात्मावयवात्मना ॥ ३९ ॥

ityakāraṇake sarve kacati brahmarūpiṇi parasya avathavābhāse nityātmāvayavātmanā || 39 ||

Thus, in the causeless creation, Brahman shines in its own form, in the reflection of the supreme, with the eternal nature of the self.

इस प्रकार, बेकारण सृष्टि में, ब्रह्म अपने स्वरूप में चमकता है, परम के प्रतिबिंब में, आत्मा के नित्य स्वभाव के साथ।

7.144.40

अनानात्वेऽपि नानात्वे ब्रह्मण्यब्रह्मरूपिणि अनाकारेऽपि साकारे कचत्यप्रतिघं प्रति ॥ ४० ॥

anānātve'pi nānātve brahmaṇyabrahmarūpiṇi anākāre'pi sākāre kacatyapratighaṃ prati || 40 ||

Even in the non-diversity, there is diversity in Brahman, which is not in the form of Brahman. Even in the formless, there is form. It shines without opposition.

अविभेद में भी, ब्रह्म में विभेद है, जो ब्रह्म के रूप में नहीं है। निराकार में भी, साकार है। यह विरोध के बिना चमकता है।

7.144.41

तद्ब्रह्मैव निराकारं चिद्रूपत्वात्स्फुरद्वपुः साकारमिव भातात्म भूत्वा स्थावरजंगमम् ॥ ४१ ॥

tadbrahmaiva nirākāraṃ cittarūpatvātsphuradvapuḥ sākāramiva bhātātma bhūtvā sthāvarajaṅgamam || 41 ||

That Brahman alone is formless, due to its nature of consciousness, it appears as if it has form, becoming the self, it becomes the moving and the non-moving.

वह ब्रह्म ही निराकार है, चेतना के स्वभाव के कारण, यह ऐसा लगता है जैसे इसमें आकार है, आत्मा बनकर, यह चल और अचल बन जाता है।

7.144.42

देवर्षिमुनिभारूपं करोति नियतिं क्रमात्। विधींश्च प्रतिषेधांश्च देशकालक्रियादिकान्॥ ४२॥

devarṣimunibhārūpaṃ karoti niyatiṃ kramāt | vidhīṃśca pratiṣedhāṃśca deśakālakriyādikān || 42 ||

The divine sages and seers, in their various forms, create destiny in an orderly manner, including rules and prohibitions related to place, time, and action.

देवर्षि और मुनि अपने विभिन्न रूपों में नियति को क्रमबद्ध ढंग से बनाते हैं, जिसमें स्थान, समय और क्रिया से संबंधित नियम और प्रतिबंध शामिल हैं।

7.144.43

भावाभावग्रहोत्सर्गस्थूलसूक्ष्मचराचराः। अर्था व्यभिचरन्त्येते नियतिर्नाखिलास्ततः॥ ४३॥

bhāvābhāvagrahotsargasthūlasūkṣmacarācarāḥ | arthā vyabhicarantyete niyatirnākhilāstataḥ || 43 ||

The meanings related to existence, non-existence, gross, subtle, moving, and non-moving entities deviate from the complete destiny.

अस्तित्व, अनस्तित्व, स्थूल, सूक्ष्म, चर और अचर वस्तुओं से संबंधित अर्थ पूर्ण नियति से भटक जाते हैं।

7.144.44

ततः प्रभृति भावानां सकारणकतां विना। सैकतादिव तैलानां न संभवति संभवः॥ ४४॥

tataḥ prabhṛti bhāvānāṃ sakāraṇakatāṃ vinā | saikatādiva tailānāṃ na saṃbhavati saṃbhavḥ || 44 ||

From that point onwards, the existence of entities without a cause is not possible, just as oil cannot be produced from sand.

उस बिंदु से आगे, कारण के बिना वस्तुओं का अस्तित्व संभव नहीं है, जैसे रेत से तेल नहीं बन सकता।

7.144.45

नियतिर्नायकश्चैव ब्रह्मतश्चाङ्गमात्मना। स्वाङ्गेन संयमयति करेणेव निजं करम्॥ ४५॥

niyatirnāyakaścaiva brahmatścāṅgamātmanā | svāṅgena saṃyamayati kareṇeva nijaṃ karam || 45 ||

Destiny, the leader, with the self as the limb of Brahman, controls its own actions with its own limb, like a hand controlling its own action.

नियति, नेता, ब्रह्म के अंग के रूप में स्वयं को, अपने अंग से अपनी क्रियाओं को नियंत्रित करता है, जैसे हाथ अपनी क्रिया को नियंत्रित करता है।

7.144.46

अबुद्धिपूर्वं चानिच्छमेवमेव प्रवर्तते। काकतालीयवत्स्पन्दादावर्ता इव वारिणि॥ ४६॥

abuddhipūrvaṃ cānicchamevameva pravartate | kākatālīyavatspandādāvartā iva vāriṇi || 46 ||

It functions spontaneously without prior thought or desire, like the automatic movement of a crow's tail or the whirlpool in water.

यह बिना पूर्व सोच या इच्छा के स्वतः ही काम करता है, जैसे कौए की पूंछ का स्वतः हिलना या पानी में भंवर का घूमना।

7.144.47

संनिवेशो हि नियतिस्तां विना प्रतिघोदयम्। ब्रह्म स्थातुं न शक्नोति तच्च सर्वात्मताक्षयम्॥ ४७॥

saṃniveśo hi niyatistāṃ vinā pratighodayam | brahma sthātuṃ na śaknoti tacca sarvātmatākṣayam || 47 ||

Indeed, the establishment of the universe without destiny is not possible | Brahma cannot exist without it, and that is the eternal essence of all souls

वास्तव में, भाग्य के बिना ब्रह्मांड की स्थापना संभव नहीं है | ब्रह्म उसके बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता, और यह सभी आत्माओं का अनंत सार है

7.144.48

एवं सकारणं सर्वं सर्वदा दृश्यमण्डलम् । यस्य सर्गे यतः कालात्ततः प्रभृति तं प्रति ॥ ४८ ॥

evaṃ sakāraṇaṃ sarvaṃ sarvadā dṛśyamaṇḍalam | yasya sarge yataḥ kālāttataḥ prabhṛti taṃ prati || 48 ||

Thus, everything with a cause is always visible in the realm of perception | From the time of its creation, it is perceived as such

इस प्रकार, सभी कारणवान चीजें हमेशा प्रत्यक्ष जगत में दिखाई देती हैं | उनकी सृष्टि के समय से, वे ऐसे ही दिखाई देती हैं

7.144.49

भात्यकारणकं ब्रह्म सर्गात्माप्यबुधं प्रति । तं प्रत्येव च भात्येष कार्येकारणदृग्भ्रमः ॥ ४९ ॥

bhātyakāraṇakaṃ brahma sargātmāpyabudhaṃ prati | taṃ pratyeva ca bhātyeṣa kāryekāraṇadṛgbhamaḥ || 49 ||

The uncaused Brahma appears as the creator even to the ignorant | To them, this illusion of cause and effect appears

अकारण ब्रह्म अज्ञानी के लिए भी सृष्टिकर्ता के रूप में दिखाई देता है | उनके लिए, यह कारण और परिणाम की भ्रांति दिखाई देती है

7.144.50

काकतालीयवत्सर्गे स्थिते त्वावृत्तिवृत्तिवत् । इदमित्थमिदं नेत्थमितीयं नियतिः स्थिता ॥ ५० ॥

kākatālīyavatsarge sthite tvāvṛttivṛttivat | idamitthamidaṃ netthamitīyaṃ niyatiḥ sthitā || 50 ||

In creation, which is like the game of a crow and a palm fruit, there is repetition and non-repetition | Thus, destiny is established as 'this is so, this is not so'

सृष्टि में, जो कौए और ताड़ के फल के खेल की तरह है, पुनरावृत्ति और अपुनरावृत्ति होती है | इस प्रकार, भाग्य इस तरह स्थापित होता है कि 'यह ऐसा है, यह ऐसा नहीं है'

7.144.51

सकारणत्वं भावानामवश्यंभाविनि क्रमे । जाग्रत्स्वप्नदृशो नेह संभवन्त्यपकारणाः ॥ ५१ ॥

sakāraṇatvaṃ bhāvānāmavaśyaṃbhāvini krame | jāgratsvapnadṛśo neha saṃbhavantyapakāraṇāḥ || 51 ||

The causal nature of beings is inevitable in the sequence | The perceptions in the waking and dream states do not occur without a cause

वस्तुओं की कारणात्मक प्रकृति क्रम में अनिवार्य है | जाग्रत और स्वप्न अवस्थाओं में प्रत्यक्ष दृश्य बिना कारण के नहीं होते

7.144.53

सर्ववस्तुषु कचन्ति सर्वदा युक्तयः स्फटिकशुक्तयो यथा । भावनानुभव एव स स्वयं शक्तिमाञ्जयति जीवितात्मकः ॥ ५३ ॥

sarvavastuṣu kacanti sarvadā yuktayaḥ sphaṭikaśuktayo yathā | bhāvanānubhava eva sa svayaṃ śaktimāñjayati jīvitātmakaḥ || 53 ||

In all things, at all times, the connections are like crystal and oyster shells. That very experience of contemplation is victorious, being the life force.

सभी चीजों में, सभी समय में, संबंध स्फटिक और सीप की तरह होते हैं। वह भावना का अनुभव ही विजयी है, जो जीवन शक्ति है।

Chapter 145

7.145.1

मुनिरुवाच । बहिष्ठैर्बाह्यमेवान्तरन्तस्थैः स्वप्नमिन्द्रियैः । जीवो वेत्ति द्वयस्थातितीव्रसंवेगिभिर्द्वयम् ॥ १ ॥

muniruvāca | bahiṣṭhairbāhyamevāntarantasthaiḥ svapnaindriyaiḥ | jīvo vetti dvayasthātitīvrasaṃvegibhirdvayam || 1 ||

The sage said: The individual soul perceives the external world through the external senses and the internal world through the internal senses, experiencing both with intense agitation.

मुनि ने कहा: जीव बाहरी इंद्रियों द्वारा बाहरी जगत को और अंतर्मुखी इंद्रियों द्वारा स्वप्न को जानता है, दोनों को तीव्र संवेग के साथ अनुभव करता है।

7.145.2

यदेन्द्रियाणि तिष्ठन्ति बाह्यतश्च समाकुलम् । तदा म्लानानुभवनः संकल्पार्थोऽनुभूयते ॥ २ ॥

yadendriyāṇi tiṣṭhanti bāhyataśca samākulam | tadā mlānānubhavanaḥ saṃkalpārtho'nubhūyate || 2 ||

When the senses are directed outward and are agitated, then the individual soul experiences a dull perception, and the object of desire is perceived.

जब इंद्रियाँ बाहर की ओर लगी होती हैं और व्याकुल होती हैं, तब जीव एक मंद अनुभव करता है, और इच्छा का विषय अनुभव किया जाता है।

7.145.3

यदा त्वन्तर्मुखान्येव सन्त्यक्षाणि तदा जगत् । अणुमात्रं स्ववपुषि जीवस्तेनातिवेत्ति तत् ॥ ३ ॥

yadā tvantarmukhānyeva santyakṣāṇi tadā jagat | aṇumātraṃ svavapuṣi jīvastenātivetti tat || 3 ||

When the senses are turned inward and are clear, then the individual soul perceives the entire universe within itself.

जब इंद्रियाँ अंतर्मुखी होती हैं और स्पष्ट होती हैं, तब जीव अपने आप में ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड को अनुभव करता है।

7.145.4

जगप्सप्रतिघं नास्ति किंचिदेव कदाचन । जीवेक्षणानामक्षाणां दृष्टिरप्रतिघा जगत् ॥ ४ ॥

jagapsapratighaṃ nāsti kiṃcideva kadācana | jīvekṣaṇānāmakṣāṇāṃ dṛṣṭirapratighā jagat || 4 ||

There is nothing in the universe that can obstruct the vision of the individual soul. The vision of the individual soul is unobstructed in the universe.

ब्रह्मांड में कुछ भी ऐसा नहीं है जो जीव की दृष्टि को रोक सके। जीव की दृष्टि ब्रह्मांड में अवरुद्ध है।

7.145.5

जीवनेत्राणीन्द्रियाणि यदा बाह्यमयान्यलम् । तदा बाह्यात्मकं वेत्ति चिति जीवो जगद्वपुः ॥ ५ ॥

jīvanetrāṇīndriyāṇi yadā bāhyamayānyalam | tadā bāhyātmakaṃ vetti citi jīvo jagadvapuḥ || 5 ||

When the senses, which are the eyes of the individual soul, are directed outward, then the individual soul perceives the external form of the universe.

जब इंद्रियाँ, जो जीव की आँखें हैं, बाहर की ओर लगी होती हैं, तब जीव ब्रह्मांड के बाहरी रूप को अनुभव करता है।

7.145.6

श्रोत्रं त्वगीक्षणं घ्राणं जिह्वा चेतीहितात्मकः । संघातः प्रोच्यते जीवश्चिद्रूपोऽनिलमूर्तिमान् ॥ ६ ॥

śrotraṃ tvagīkṣaṇaṃ ghrāṇaṃ jihvā cetīhitātmakaḥ | saṃghātaḥ procyate jīvaścidrūpo'nilamūrtimān || 6 ||

The ears, skin, eyes, nose, and tongue are the components of the self. The aggregate is called the living being, which is of the nature of consciousness and has the form of air.

कान, त्वचा, आँखें, नाक और जीभ आत्मा के घटक हैं। यह संघात जीव कहलाता है, जो चेतना के स्वभाव का और वायु के रूप का है।

7.145.7

सर्वत्र सर्वदा जीवः सर्वेन्द्रियमयः स्थितः । चिच्चिद्व्योमाव्ययस्तेन सर्वं सर्वत्र पश्यति ॥ ७ ॥

sarvatra sarvadā jīvaḥ sarvendriyamayaḥ sthitaḥ | ciccidvyomāvyayastena sarvaṃ sarvatra paśyati || 7 ||

The living being is always and everywhere present, composed of all senses. Being eternal and of the nature of consciousness and space, it sees everything everywhere.

जीव हमेशा और हर जगह उपस्थित है, सभी इंद्रियों से बना है। चेतना और अंतरिक्ष के स्वभाव का और अविनाशी होने के कारण, वह हर जगह सब कुछ देखता है।

7.145.8

श्लेष्मात्मना रसेनान्तर्जीव आपूर्यते यदा । तेऽक्षाणुकेऽणुरूपात्मा तदा तत्रैव विन्दति ॥ ८ ॥

śleṣmātmanā rasenāntarjīva āpūryate yadā | te'kṣāṇuke'ṇurūpātmā tadā tatraiva vindati || 8 ||

When the inner being is filled with the essence of phlegm, then the minute self finds itself in that very place.

जब अंतर्जीव श्लेष्मा के रस से भर जाता है, तब अणुरूप आत्मा उसी स्थान पर पाया जाता है।

7.145.9

क्षीरार्णव इवोड्डीनो नभश्चन्द्रोदयान्वितम् । सरांसि फुल्लपद्मानि कह्लारवलितानि च ॥ ९ ॥

kṣīrārṇava ivotuḍḍīno nabhaścandroduyānvitam | sarāṃsi phullapadmāni kahlāravalitāni ca || 9 ||

Like the ocean of milk, the sky is filled with the rising moon. The lakes are full of blooming lotuses, adorned with kahlara flowers.

जैसे दूध का सागर, आकाश चंद्रोदय से भरा हुआ है। तालाब खिले हुए कमलों से भरे हैं, जो कहलार फूलों से सजे हुए हैं।

7.145.10

पुष्पाभ्रप्रतिधानानि परिगीतानि षट्पदैः । वसन्तान्तःपुराण्यन्तरुद्यानान्युदितानि खे ॥ १० ॥

puṣpābhrapratidhānāni parigītāni ṣaṭpadaiḥ | vasantāntaḥpurāṇyantarudyānānyuditāni khe || 10 ||

The gardens are adorned with flowers and clouds, sung by bees. The inner chambers of spring are blooming in the sky.

बगीचे फूलों और बादलों से सजे हुए हैं, जिन्हें भौंरे गा रहे हैं। वसंत के अंतःपुर आकाश में खिले हुए हैं।

7.145.11

उत्सवान्मङ्गलाकीर्णांल्लीलालोलाङ्गनागणान् । भक्ष्यभोज्यान्नपानश्रीपरिपूर्णगृहाजिरान् ॥ ११ ॥

utsavānmangalākīrṇāṃllīlālolāṅganāgāṇān | bhakṣyabhojyānna pānaśrīparipūrṇagṛhājirān || 11 ||

The festival is filled with auspiciousness, and the houses are adorned with playful women, abundant with delicious food and drinks.

उत्सव मंगलमय है और घरों में खेल-खेल में स्त्रियाँ सजी हैं, जो भोजन और पेय से भरपूर हैं।

7.145.12

सपुष्पाः फेनहसनास्तरलातरलेक्षणाः । विलासेनाम्बुधिं यान्ति सरितो मत्तयौवनाः ॥ १२ ॥

sapuṣpāḥ phenahasanāstaralātara lekṣaṇāḥ | vilāsenāmbudhiṃ yānti sarito mattayauvanāḥ || 12 ||

The rivers, adorned with flowers and bubbling with laughter, have trembling eyes and move with grace towards the ocean, intoxicated with youth.

फूलों से सजी और हँसी से भरी नदियाँ, जिनकी आँखें काँप रही हैं, युवावस्था में मत्त होकर समुद्र की ओर विलास से बढ़ती हैं।

7.145.13

हिमवच्छुभ्रशृङ्गाणि सौधानि शिशिराण्यलम् । सुधावधौतभित्तीनि कृतानीन्दुतलैरिव ॥ १३ ॥

himavacchubhraśṛṅgāṇi saudhāni śiśirāṇyalam | sudhāvadhautabhittīni kṛtānīndutalairiva || 13 ||

The snow-capped peaks resemble white palaces, cool and refreshing, with walls washed by nectar, as if made of moonbeams.

बर्फ से ढके पर्वतों के शिखर सफेद महलों के समान लगते हैं, ठंडे और ताज़ा, जिनकी दीवारें अमृत से धुली हुई हैं, मानो चाँदनी से बनी हों।

7.145.14

शिशिरासारहेमन्तप्रावृण्मेघवृतानि च । स्थलानि नीलनलिनीलताशाद्वलवन्ति च ॥ १४ ॥

śiśirāsāraheman taprāvṛṇmeghavṛtāni ca | sthalāni nīlanalinīlatāśādvalavanti ca || 14 ||

The lands are covered with the essence of winter and spring, enveloped by rain clouds, and adorned with blue lotuses and lush forests.

भूमि शीत और वसंत के सार से ढकी है, वर्षा के बादलों से घिरी है, और नीले कमलों और हरी वनस्पतियों से सजी है।

7.145.15

पुष्पप्रकरसंछन्ना विश्रान्तहरिणाध्वगाः । स्निग्धपत्रतरुच्छायाः पुरोपवनभूमिकाः ॥ १५ ॥

puṣpaprakarasaṃchannā viśrāntahariṇādhvagāḥ | snigdhapatratarucchāyāḥ purōpavanabhūmikāḥ || 15 ||

The gardens are covered with heaps of flowers, and the deer are resting. The trees provide cool shade with their glossy leaves.

बगीचे फूलों के ढेर से ढके हैं, और हिरण विश्राम कर रहे हैं। वृक्ष अपने चमकदार पत्तों से ठंडी छाया देते हैं।

7.145.16

कदम्बकुन्दमन्दारमकरन्देन्दुकान्तिभिः । भासमानासनस्थानसंस्थानाः कुसुमस्थलीः ॥ १६ ॥

kadambakundamandāramakarandendukāntibhiḥ | bhāsamānāsanasthānasansthānāḥ kusumasthalīḥ || 16 ||

The flower beds are shining with the moonlight-like glow of the nectar of kadamba, kunda, and mandara flowers.

फूलों की झाड़ियाँ कदम्ब, कुंड और मन्दार फूलों के मधु की चाँदनी जैसी चमक से चमक रही हैं।

7.145.17

नलिनीजालिनीर्नीलाः पुष्पकस्थलधारिणीः । वनावलीर्विलीनाभ्रनिर्मलाकाशकोमलाः ॥ १७ ॥

nalinījālinīr nīlāḥ puṣpakasthaladhāriṇīḥ | vanāvalīr vilīnābhra nirmalākāśakomalāḥ || 17 ||

The lotus ponds are blue, holding flower beds, and the forest edges are soft with the clear sky and dissolved clouds.

कमल के तालाब नीले हैं, फूलों की झाड़ियों को धारण करते हैं, और वन के किनारे स्वच्छ आकाश और घुले हुए बादलों से कोमल हैं।

7.145.18

कदलीकन्दलीकुन्दकदम्बकृतशेखराः । गिरिमालाश्चलच्चारुलीलापल्लवपेलवाः ॥ १८ ॥

kadalīkandali kundakadambakṛtaśekharāḥ | girimālāś calac cārulīlāpallavapelavāḥ || 18 ||

The mountain ranges are adorned with the crowns of kadali, kunda, and kadamba flowers, and are charming with their swaying, playful, tender leaves.

पर्वत श्रृंखलाएँ कदली, कुंड और कदम्ब फूलों के मुकुटों से सजी हैं, और अपने लहराते, खेलने वाले, कोमल पत्तों से मनोहर हैं।

7.145.19

हेलावलितधम्मिल्लमुक्तमालतिकालताः । इव बालाङ्गना नृत्यं तन्वानास्तनुगात्रिकाः ॥ १९ ॥

helāvalitadhammillamuktamālatikālatāḥ | iva bālāṅganā nṛtyaṁ tanvānāstanugātrikāḥ || 19 ||

The young women, with their slender bodies, dance gracefully like the swaying creepers of jasmine and mallika flowers.

युवा स्त्रियाँ, अपने पतले शरीरों के साथ, चमेली और मल्लिका फूलों की लहराती लताओं की तरह मनोहर नृत्य करती हैं।

7.145.20

उत्फुल्लश्वेतनलिनीनिभा नरपतेः सभाः । चारुचामरभृङ्गारवितानकशतावृताः ॥ २० ॥

utphullaśvetanalinīnibhā narapateḥ sabhāḥ | cāru cāmarabhṛṅgāravitānakasatāvṛtāḥ || 20 ||

The king's assembly halls are as beautiful as blooming white lotuses, adorned with hundreds of charming canopies of peacock feathers.

राजा के सभा भवन खिले हुए सफेद कमलों की तरह सुंदर हैं, जिन्हें सौ मनोहर मोर पंखों के छत्रों से सजाया गया है।

7.145.21

वल्लीवलयविन्यासविलासवलिताङ्गिकाःवनमाला विलोलाम्बुप्रणालीकाकलीकलाः ॥ २१ ॥

vallīvalayavinyāsavilāsavalitāṅgikāḥvanamālā vilolāmbupraṇālīkākalīkalāḥ || 21 ||

The women, adorned with garlands of forest flowers, are swaying with the playful movements of their limbs, and their garlands are swinging with the movement of the water currents.

वन की फूलों की मालाओं से सुशोभित स्त्रियाँ, अपने अंगों के क्रीड़ापूर्ण विलास से लहरा रही हैं, और उनकी मालाएँ जलधाराओं के संचलन से डोल रही हैं।

7.145.22

धराभरकरालाङ्गधाराधरधराधराःदिशः सीकरनीहारहारोदरधरा दश ॥ २२ ॥

dharābharakarālāṅgadhārādharadharādharāḥdiśaḥ sīkaranīhārahārodaradharā daśa || 22 ||

The ten directions are terrifying with the burden of the earth, and they are adorned with garlands of water droplets, resembling the waves of the ocean.

धरती के भार से भयानक दिशाएँ, जल की बूँदों की मालाओं से सुशोभित हैं, और समुद्र की लहरों के समान दिखाई देती हैं।

7.145.23

पित्तात्मना रसेनान्तर्जीव आपूर्यते यदाओजोन्तरणुमात्रात्मा तदा तत्रैव विन्दति ॥ २३ ॥

pittātmanā rasenāntarjīva āpūryate yadāojontaraṇumātrātmā tadā tatraiva vindati || 23 ||

When the inner being is filled with the essence of bile, then the subtle self, which is the essence of vitality, finds itself there.

जब अंतर्जीव पित्त के रस से भर जाता है, तब जीवन की सूक्ष्म आत्मा, जो जीवन शक्ति का सार है, वहीं पाई जाती है।

7.145.24

पवनस्पन्दसंशुष्ककिंशुकद्रुमशोभनाःज्वालालीरुज्ज्वलाम्भोजदलपल्लवपेलवाः ॥ २४ ॥

pavanaspandasaṃśuṣkakiṃśukadrumaśobhanāḥjvālālīrujjvalāmbhojadalapallavapelavāḥ || 24 ||

The trees, dried by the gusts of wind, are adorned with beautiful red flowers, and their leaves and buds are shining brightly like flames.

हवा के झोंकों से सूखे हुए वृक्ष, सुंदर लाल फूलों से सुशोभित हैं, और उनके पत्ते और कलियाँ ज्वाला की तरह चमक रही हैं।

7.145.25

संतप्तसिकतासेकसनीहारसरिच्छिराःदावानलशिखाश्यामधूमश्यामलदिङ्मुखाः ॥ २५ ॥

saṃtaptasikatāsekasanīhārasaricchirāḥdāvānalaśikhāśyāmadhūmaśyāmaladiṅmukhāḥ || 25 ||

The scorched sand is moistened by the gentle breeze, and the flames of the forest fire are darkened by the black smoke.

तपाया हुआ रेत हल्की हवा से भीग जाता है, और जंगल की आग की लपटें काले धुएँ से काली हो जाती हैं।

7.145.26

कृशानुकर्कशानर्कांश्चक्रधाराशितत्विषः। दावदाहविषावेशविपरीतरसाकरान् ॥ २६ ॥

kṛśānukarkaśānarkāṃścakradhārāśitatviṣaḥ| dāvadāhaviṣāveśaviparītarasākarān || 26 ||

The thin and harsh rays of the sun, the heat of the sun's disc, the burning of forests, the poisonous effects, the opposite tastes, and the mines.

सूर्य की पतली और कठोर किरणें, सूर्य के मंडल की गर्मी, जंगलों की आग, विषैले प्रभाव, विपरीत स्वाद और खानें।

7.145.27

स्वेदमुष्णीकृताब्धिं वा स्विन्नं त्रैलोक्यमण्डलम्। क्षरत्क्षाराण्यरण्यानि प्रतर्दगहनान्यपि ॥ २७ ॥

svedamuṣṇīkṛtābdhiṃ vā svinnaṃ trailokyamaṇḍalam| kṣaratkṣārāṇyaraṇyāni pratardagahanānyapi || 27 ||

Sweat, the heated ocean, the moistened three worlds, the flowing salts in the forests, and the dense, piercing darkness.

पसीना, गर्म समुद्र, तीनों लोकों का भीगा हुआ मंडल, जंगलों में बहते हुए नमक, और घनी, चुभती हुई अंधेरी।

7.145.28

प्रतरन्मृगतृष्णाम्बुसरत्सारसरूपि च। स्थलान्यदृष्टपूर्वाणि भूतपूर्वतरूणि च ॥ २८ ॥

pratarnamṛgatṛṣṇāmbusaratsārasarūpi ca| sthalānyadṛṣṭapūrvāṇi bhūtapūrvatarūṇi ca || 28 ||

The thirsty deer searching for water, the flowing essence of water, the previously unseen lands, and the ancient trees.

प्यासे हुए हिरण जो पानी खोज रहे हैं, बहती हुई जल की सार, पहले कभी नहीं देखे गए भूमि, और पुराने पेड़।

7.145.29

अध्वगं संभ्रमवशात्तप्तधूलिविधूसरम्। दूरादमृतवद्दृष्टं स्निग्धच्छायाध्वपादपम् ॥ २९ ॥

adhvagaṃ saṃbhramavaśāttaptadhūlividhūsaram| dūrādamṛtavaddṛṣṭaṃ snigdhacchāyādhvapādapam || 29 ||

The traveler, due to confusion, sees the heated dust as amrita from a distance, and the tree on the path with a cool shade.

यात्री, भ्रम के कारण, दूर से गर्म धूल को अमृत की तरह देखता है, और रास्ते में ठंडी छाया वाला पेड़।

7.145.30

ज्वरज्वालितमाकारं भुवनं तप्तमग्निवत्। पांसूपहतदेशानि दिङ्मुखानि च खानि च ॥ ३० ॥

jvarajvālitamākāraṃ bhuvanaṃ taptamagnivat| pāṃsūpahatadeśāni diṅmukhāni ca khāni ca || 30 ||

The world appears as if burning with fever, heated like fire, with regions covered in dust, and with mines facing different directions.

दुनिया ज्वर से जलती हुई दिखाई देती है, आग की तरह गर्म, धूल से ढके हुए क्षेत्रों के साथ, और अलग-अलग दिशाओं में खानों के साथ।

7.145.31

ग्रहग्रामार्णवाद्र्यब्धिवनव्योमाग्निका दिशः। तुहिनाहारहानन्तासंख्याम्बुदघटोद्भटान् ॥ ३१ ॥

grahagrāmārṇavādvyabdhivana vyomāgnikā diśaḥ| tuhināhārahānantāsaṃkhyāmbudaghaṭodbhaṭān || 31 ||

The directions are filled with planets, villages, oceans, clouds, forests, sky, and fire| The countless clouds are filled with snow, water, and are immense

दिशाएँ ग्रहों, गाँवों, समुद्रों, बादलों, वनों, आकाश और अग्नि से भरी हुई हैं| असंख्य बादल बर्फ, पानी और विशाल हैं

7.145.32

शरद्ग्रीष्मवसन्तांश्च तापानातपदायिनः। तृणपत्रलतौघाभ्रराश्यूष्मपिहितावनीः ॥ ३२ ॥

śaradgrīṣmavasantāṃśca tāpānātapadāyinaḥ| tṛṇapatralataughābhra rāśyūṣmapihitāvanīḥ || 32 ||

The seasons of autumn, summer, and spring bring different kinds of heat| The earth is covered with grass, leaves, vines, clouds, and heat

शरद्, ग्रीष्म और वसंत ऋतुएँ अलग-अलग तरह की गर्मी लाती हैं| पृथ्वी घास, पत्तियों, लताओं, बादलों और गर्मी से ढकी हुई है

7.145.33

सौवर्णमम्बरतलं भूतलं दिक्तटानि च। तप्तान्यदभ्रसरसीहिमशैलस्थलानि व ॥ ३३ ॥

sauvarṇamambaratalaṃ bhūtalaṃ diktataāni ca| taptānyadabhrasarasīhimasailasthalāni va || 33 ||

The golden sky, the earth, and the directions with their peaks| The heated lands without clouds, lakes, snow, and mountains

स्वर्णिम आकाश, पृथ्वी, और दिशाओं के शिखर| बादलों, झीलों, बर्फ और पर्वतों के बिना गर्म भूमियाँ

7.145.34

रसानुरिक्ते वातेन जीव आपूर्यते यदा। ओजोन्तरणुमात्रात्मा तदा तत्रैव विन्दते ॥ ३४ ॥

rasānurikte vātena jīva āpūryate yadā| ojonantaraṇumātrātmā tadā tatraiva vindate || 34 ||

When the life force is filled with the wind that permeates the juices| The subtle self, which is the essence of vitality, finds itself there

जब प्राण शक्ति रसों में फैली हवा से भर जाती है| सूक्ष्म आत्मा, जो जीवन शक्ति का सार है, वहाँ अपने आप को पाती है

7.145.35

वातविक्षुब्धसंवित्त्वादपूर्वं वसुधातलम्। अपूर्वा नगरग्रामशैलाब्धिवनमण्डलीः ॥ ३५ ॥

vātavikṣubdhasaṃvittvādapūrvaṃ vasudhātalam| apūrvā nagaragrāmaśailābdhivanamaṇḍalīḥ || 35 ||

Due to the agitation caused by the wind, the earth's surface becomes unprecedented| The unprecedented cities, villages, mountains, oceans, and forests

हवा के कारण उत्पन्न हुई अशांति से पृथ्वी की सतह अनोखी बन जाती है| अनोखे शहर, गाँव, पर्वत, समुद्र और वन

7.145.36

उड्डीयमानमात्मानं शिलाः शैलस्थलानिव । घनघुंघुमसारावानचक्रभ्रमणादि च ॥ ३६ ॥

uḍḍīyamānamātmānaṃ śilāḥ śailasthalāniva | ghanaghuṃghumasārāvānacakrabhramaṇādi ca || 36 ||

The self is lifted up like stones on a mountainous plain | The sound of dense humming, the rotation of the wheel, and so on.

आत्मा पत्थरों की तरह उठाया जाता है पर्वतीय मैदान पर | घने गुंजार की आवाज, पहिये का घूमना, और अन्य।

7.145.37

हयोष्ट्रगरुडाम्भोदहंसयानावरोहणम् । यक्षविद्याधरादीनां गत्यागमनसंचरम् ॥ ३७ ॥

hayoṣṭragaruḍāmbhodahaṃsayānāvarohaṇam | yakṣavidyādharādīnāṃ gatyāgamanasañcaram || 37 ||

The descent from vehicles like horses, camels, eagles, clouds, and swans | The coming and going of Yakshas, Vidyadharas, and others.

घोड़ों, ऊँटों, गरुडों, बादलों, और हंसों जैसे वाहनों से उतरना | यक्षों, विद्याधरों, और अन्य का आना-जाना।

7.145.38

साद्रिद्यूर्वीनदीशानां वनभूग्रामपूर्दिशाम् । कम्पं भयोन्मुखाङ्गानां बुद्बुदानामिवार्णवे ॥ ३८ ॥

sādridyūrvīnadīśānāṃ vanabhūgrāmapūrdiśām | kampaṃ bhayonmukhāṅgānāṃ budbudānāmivārṇave || 38 ||

The trembling of mountains, rivers, forests, lands, villages, cities, and directions | Like the bubbles in the ocean, fearful and trembling.

पर्वतों, नदियों, वनों, भूमियों, गाँवों, शहरों, और दिशाओं का काँपना | समुद्र में बुलबुलों की तरह, भयभीत और काँपते हुए।

7.145.39

अन्धकूपे निपतितं विपुले संकटेऽथवा । अथवा रूढमात्मानं खमाभं पादपं गिरिम् ॥ ३९ ॥

andhakūpe nipatitaṃ vipule saṅkaṭe'thavā | athavā rūḍhamātmānaṃ khamābhaṃ pādapaṃ girim || 39 ||

Falling into a dark well or a great danger | Or being established in the self, like a tree or a mountain in the sky.

एक अंधेरे कुएं में गिरना या एक बड़े खतरे में | या आत्मा में स्थापित होना, जैसे आकाश में एक पेड़ या पर्वत।

7.145.40

वात्पित्तश्लेष्मयुक्तो जीव आपूर्यते यदा । भागैर्वातवशं प्राप्तैरार्तोऽसौ विन्दते तदा ॥ ४० ॥

vātpittashleṣmayukto jīva āpūryate yadā | bhāgairvātavaśaṃ prāptairārto'sau vindate tadā || 40 ||

When the living being is filled with wind, bile, and phlegm | Afflicted by the parts that have come under the influence of wind, it suffers then.

जब जीव हवा, पित्त, और कफ से भरा होता है | हवा के प्रभाव में आए भागों से पीड़ित होकर, वह तब पीड़ा पाता है।

7.145.41

पतन्तीं पार्वतीं वृष्टिं सुशिलावृष्टिसंकटम् । स्फुटाट्टकटकारावभ्रमत्पादपमण्डलम् ॥ ४१ ॥

patantīṃ pārvatīṃ vṛṣṭiṃ suśilāvṛṣṭisaṃkaṭam | sphuṭāṭṭakaṭakārāvabhramatpādapamaṇḍalam || 41 ||

The falling rain, pure and causing distress, the loud noise of the falling drops, the whirling trees.

गिरती हुई पवित्र वर्षा जो दुःख पैदा करती है, गिरते बूँदों की जोरदार आवाज, घूमते हुए पेड़ों का मंडल।

7.145.42

भ्रमद्भिर्वनविन्यासैः संदिग्धाम्भोधरोत्कटम्। सिंहवारणवर्षाभ्रनिरन्तरदिगन्तरम्॥ ४२॥

bhramadbhirvanavinyāsaiḥ saṃdigdhāmbhodharotkaṭam | siṃhavāraṇavarṣābhranirantaradigantaram || 42 ||

With the whirling arrangement of the forest, the doubtful and fierce rain clouds, the continuous roaring of the clouds like lions and elephants.

घूमते हुए जंगल के व्यवस्था के साथ, संदेहास्पद और भयंकर वर्षा के बादल, सिंह और हाथी की तरह बादलों की लगातार गर्जना।

7.145.43

तालीतमालहिंतालमालाज्वलनसंकुलम्। गुहाघुंघुमनिर्ह्रादभांकारघनघर्घरम्॥ ४३॥

tālītamālahiṃtālamālājvalanasankulam | guhāghuṃghumanirhrādabhāṃkāraghanaghargharam || 43 ||

With the blazing garlands of palm, betel, and sandalwood trees, the deep roaring sound of the caves echoing.

ताड़, सुपारी और चंदन के पेड़ों की जलती हुई मालाओं के साथ, गुफाओं की गहरी गर्जना की आवाज गूंज रही है।

7.145.44

मन्द्रमन्दरमन्थानशब्दसंदर्भसुन्दरीम्। दरीं दलनदुर्वारमिथःसंघट्टघट्टिताम्॥ ४४॥

mandramandaramanthānaśabdasandarbhosundarīm | darīṃ dalanadurvāramithaḥsaṃghaṭṭaghaṭṭitām || 44 ||

With the beautiful sound of the churning of the Mandara mountain, the cave is difficult to break, clashing and striking against each other.

मंदर पर्वत के मंथन की सुंदर आवाज के साथ, गुफा तोड़ना मुश्किल है, एक-दूसरे से टकरा रही है और मार रही है।

7.145.45

शृङ्गसंघट्टसदृशाः क्रेंकारोत्करकर्कशाः। नदीर्मुक्तालतापातसस्रग्दामनभस्तलाः॥ ४५॥

śṛṅgasanghaṭṭasadṛśāḥ kreṅkārotkarakarkaśāḥ | nadīrmuktālatāpātasasragdāmanabhastalāḥ || 45 ||

The rivers, with peaks clashing like horns, harsh and fierce, falling like pearl garlands from the sky.

नदियाँ, जिनके शिखर सींगों की तरह टकरा रहे हैं, कठोर और भयंकर, आकाश से मोती की माला की तरह गिर रही हैं।

7.145.46

शिलाशकलपूर्णार्णपूर्णाम्बरमहार्णवम्। वहद्वनघनोद्धातघट्टितब्रह्ममण्डलम्॥ ४६॥

śilāśakalapūrṇārṇapūrṇāmbaramahārṇavam | vahadvanaghanoddhātaghaṭṭitabrahmamaṇḍalam || 46 ||

The vast ocean filled with rocks and stones, carrying the dense forest and the universe shaken by it.

पत्थरों और चट्टानों से भरा हुआ विशाल समुद्र, जो घने जंगल को लेकर चल रहा है और उससे ब्रह्मांड हिल रहा है।

7.145.47

परस्परविनिर्मृष्टदशदर्शनदन्तुरम्। चटत्कटकटारावस्फुटत्कटकटङ्कितम्॥ ४७॥

parasparavinirmṛṣṭadaśadarśanadanturam | caṭatkaṭakaṭārāvasphuṭatkaṭakaṭaṅkitam || 47 ||

Mutually polished, with ten aspects of vision, difficult to see, with the sound of clattering and clanking.

परस्पर चमकाए हुए, दस दृष्टिकोणों से देखने में कठिन, खड़खड़ और खटखटाहट की आवाज के साथ।

7.145.48

खपातपवनाधूतवनवातलतोदयम्। रणदात्मदृषच्चूर्णकर्बुराम्बुजधारिणम्॥ ४८॥

khapātapavanādhūtavanavātalatodayam | raṇadātmadṛṣaccūrṇakarburāmbujadhāriṇam || 48 ||

The wind blowing from the sky, causing the forest to sway, with the sound of battle, and carrying the dust and pollen of lotuses.

आकाश से चलने वाली हवा, जंगल को हिलाती हुई, युद्ध की आवाज के साथ, और कमल की धूल और पराग को लेकर चलती हुई।

7.145.49

प्राग्भटोद्भटभेदोत्थैर्मन्द्रैर्मरमरारवैः। क्रूराक्रन्दैरिवाभाति विराजितजगत्त्रयम्॥ ४९॥

prāgbhato'dbhaṭabhedotthairmandrirmaramarāravaiḥ | krūrākrandairivābhāti virājitajagattrayam || 49 ||

With the sounds of various instruments and the cries of fierce beings, the three worlds appear to shine.

विभिन्न वाद्यों की आवाजों और क्रूर प्राणियों के चीत्कारों के साथ, तीनों लोक चमकते हुए प्रतीत होते हैं।

7.145.50

इति तैः काष्ठपाषाणमृद्युग्वातभटैर्वृतः। परिपीडित एवास्ते यदा जीवो जडीकृतः॥ ५०॥

iti taiḥ kāṣṭhapāṣāṇamṛdyugvātabhaṭairvṛtaḥ | paripīḍita evāste yadā jīvo jaḍīkṛtaḥ || 50 ||

Thus, surrounded by wood, stone, mud, wind, and soldiers, the living being is oppressed and becomes inert.

इस प्रकार, लकड़ी, पत्थर, मिट्टी, हवा और सैनिकों से घिरा हुआ, जीव दबा हुआ और जड़ हो जाता है।

7.145.51

मृदन्तःकीटकणवच्छिलान्तर्गतभेकवत् गर्भस्थापक्वशिशुवत्फलान्तर्गतबीजवत्॥ ५१॥

mṛdantaḥkīṭakaṇavacchilāntargatabhekavat garbhastāpakvaśiśuvatphalāntargatabījavat || 51 ||

Just as a worm is inside a stone, a frog is inside a stone, a ripe child is inside the womb, and a seed is inside a fruit.

जैसे कीड़ा पत्थर के अंदर होता है, मेंढक पत्थर के अंदर होता है, पका हुआ बच्चा गर्भ में होता है, और बीज फल के अंदर होता है।

7.145.52

बीजोदरस्थाङ्कुरवद्द्रव्यपिण्डोदराणुवत् अश्रान्तस्तम्बकोशस्थदारुपुत्रकदेहवत्॥ ५२॥

bījodarasthāṅkuravaddravyapiṇḍodarāṇuvat aśrāntastambakośasthadāruputrakadehavat || 52 ||

Just as a sprout is inside a seed, an atom is inside a lump of matter, and a tree sapling is inside a tender stalk.

जैसे अंकुर बीज के अंदर होता है, परमाणु पदार्थ के ढेर के अंदर होता है, और पेड़ का बच्चा कोमल तने के अंदर होता है।

7.145.53

सौषिर्यासंभवात्प्राणपवनस्पन्दवर्जितः प्रोन्नमत्पर्शुपूरेण शिलापूरेण तर्जितः॥ ५३॥

sauṣiryāsaṃbhavātprāṇapavanaspandavarjitaḥ pronnamatparśupūreṇa śilāpūreṇa tarjitaḥ || 53 ||

Due to the absence of breath, there is no movement of the life force. It is as if struck by an axe or a stone.

साँस के अभाव के कारण, प्राण शक्ति का कोई स्पंदन नहीं होता। यह ऐसा लगता है जैसे किसी कुल्हाड़ी या पत्थर से मारा गया हो।

7.145.54

तदा निविडतेजोन्तरेवानुभवति स्वयम् सुषुप्तं शैलकोशाभमन्धकूपोदरोपमम् ॥ ५४ ॥

tadā niviḍatejonantarevānubhavati svayaṃ suṣuptaṃ śailakośābhamandhakūpodaropamam || 54 ||

Then, one experiences the deep sleep state, which is like a dense darkness, resembling a stone cave or a blind well.

तब, व्यक्ति गहरी नींद की अवस्था का अनुभव करता है, जो घनी अंधेरे की तरह होती है, पत्थर की गुफा या अंधे कुएँ की तरह।

7.145.55

यदा परिणतं यत्नं पुनः सौषिर्यमागतम् पुनर्वेत्ति तदा जीवः स्वप्नं प्राणावबोधितः ॥ ५५ ॥

yadā pariṇataṃ yatnaṃ punaḥ sauṣiryamāgatam punarvetti tadā jīvaḥ svapnaṃ prāṇāvabodhitaḥ || 55 ||

When the effort is complete and breath returns, then the individual, awakened by the life force, experiences the dream state again.

जब प्रयास पूर्ण हो जाता है और साँस वापस आती है, तब प्राण शक्ति से जागृत व्यक्ति फिर से स्वप्न अवस्था का अनुभव करता है।

7.145.56

यदा तस्मिन्प्रदेशेऽन्तर्भागभागान्पतन्ति ते । देहे परिणमन्तोऽन्तस्तदेवात्यद्रिवर्षणम् ॥ ५६ ॥

yadā tasminpradeśe'ntarbhāgabhāgānpatanti te | dehe pariṇamanto'ntastadevātyadrivarṣaṇam || 56 ||

When in that region, the internal parts fall, they transform within the body, and that is the excessive rainfall.

जब उस क्षेत्र में आंतरिक भाग गिरते हैं, वे शरीर के अंदर परिवर्तित होते हैं, और यही अतिवृष्टि है।

7.145.57

बह्वेव वह्निबहुना स्वल्पेनाल्पं प्रपश्यति । वातपित्तादियोगेन बहिरन्तश्च संभ्रमम् ॥ ५७ ॥

bahveva vahnibahunā svalpenālpaṃ prapaśyati | vātapittādiyogena bahirantaśca saṃbhramam || 57 ||

Even with much fire, one sees little with little, due to the combination of wind and bile, there is confusion both outside and inside.

बहुत आग के साथ भी, थोड़े से थोड़ा देखता है, वायु और पित्त के मिश्रण के कारण, बाहर और अंदर दोनों जगह उलझन होती है।

7.145.58

पश्यत्येतद्यथैवान्तरेष जीवो वशीकृतः । वातपित्तादिवलितो बहिर्वेत्त्येवमेति वा ॥ ५८ ॥

paśyatyaetadyathaivāntareṣa jīvo vaśīkṛtaḥ | vātapittādivalito bahirvettyevameti vā || 58 ||

One sees this as if the inner self is subdued, enveloped by wind and bile, and thus perceives externally in this manner.

यह इस प्रकार देखता है जैसे आंतरिक आत्मा वश में है, वायु और पित्त से घिरा हुआ, और इस प्रकार बाहरी रूप से जानता है।

7.145.59

क्षुब्धैरन्तर्बहिश्चैव स्वल्पैः स्वल्पं प्रपश्यति । समैः सममिदं दृश्यं वातपित्तकफादिना ॥ ५९ ॥

kṣubdhairantarbahiścaiva svalpaiḥ svalpaṃ prapaśyati | samaiḥ samamidaṃ dṛśyaṃ vātapittakaphādinā || 59 ||

With agitated internal and external elements, one sees little with little, but with balanced elements, this vision is balanced, influenced by wind, bile, and phlegm.

उत्तेजित आंतरिक और बाहरी तत्वों के साथ, थोड़े से थोड़ा देखता है, लेकिन संतुलित तत्वों के साथ, यह दृष्टि संतुलित होती है, वायु, पित्त और कफ के प्रभाव से।

7.145.60

बहिः पश्यत्ययं जीवः कुपितैरेभिरावृतः । स्पन्दं भूम्यद्रिनभसां ज्वलनं वानलोच्चयैः ॥ ६० ॥

bahiḥ paśyatyaayaṃ jīvaḥ kupitairēbhirāvṛtaḥ | spandaṃ bhūmyadrinabhasāṃ jvalanaṃ vānaloccayaiḥ || 60 ||

This being, enveloped by these agitated elements, sees externally the trembling of the earth, mountains, and sky, and the blazing of fire with its flames.

यह जीव, इन उत्तेजित तत्वों से घिरा हुआ, बाहरी रूप से पृथ्वी, पर्वतों और आकाश की कंपन और अग्नि के ज्वालामुखी को देखता है।

7.145.61

आकाशगमनं चैव चन्द्रोदयहिमाचलान् । गहनं वृक्षशैलानां नभःप्लवनमर्णसाम् ॥ ६१ ॥

ākāśagamanaṃ caiva candrodoyahimācalān | gahanaṃ vṛkṣaśailānāṃ nabhaḥplavanam arṇasām || 61 ||

The act of flying in the sky, the rising of the moon, the snowy mountains, the dense forests and hills, and the swimming in the sky of the rivers.

आकाश में उड़ना, चंद्रमा का उदय, हिमालय, घने वृक्षों और पहाड़ों का घना होना, और नदियों का आकाश में तैरना।

7.145.62

मज्जनोन्मज्जनं वाब्धौ सुरतं सुरसद्मसु । शैलोपवनशुभ्राभ्रपीठविश्रमणोच्चयम् ॥ ६२ ॥

majjannonmajja naṃ vābdhau surataṃ surasadmasu | śailopavanaśubhrābhrapīṭhaviśramaṇoccayam || 62 ||

Diving and emerging in the ocean, union with the divine in heavenly abodes, and the lofty rest on the pure, cloud-like seats in the mountain groves.

समुद्र में डूबना और उभरना, दिव्य निवासों में दिव्य संगम, और पर्वतीय वनों में शुद्ध, बादलों जैसे आसनों पर उच्च विश्राम।

7.145.63

बृहत्क्रकचनिष्पेषं नरकानुभवभ्रमम् । तालीतमालहिंतालमालावलनमम्बरे ॥ ६३ ॥

bṛhatkrakacaniṣpeṣaṃ narakānubhavabhramam | tālītamālahiṃtālamālāvalanamambare || 63 ||

The crushing of large saws, the illusion of experiencing hell, and the garlanding of the sky with the sound of clapping and the fragrance of sandalwood.

बड़ी क्रेनों को कुचलना, नरक का अनुभव करने का भ्रम, और ताली बजाने और चंदन की सुगंध के साथ आकाश को माला पहनाना।

7.145.64

चक्रवृत्तैश्च पतनं झगित्युत्पतनं दिवि । शून्येऽपि जनतावृन्दं स्थलेऽप्यब्धिनिमज्जनम् ॥ ६४ ॥

cakravṛttaīśca patanaṃ jhagityutpata naṃ divi | śūnye'pi janatāvṛndaṃ sthale'pyabdhinimajjanam || 64 ||

Falling from spinning wheels, jumping and flying in the sky, seeing a crowd in emptiness, and diving into the ocean on land.

घूमते हुए पहियों से गिरना, आकाश में उछलना और उड़ना, खाली में भीड़ देखना, और जमीन पर समुद्र में डूबना।

7.145.65

विचित्रं विपरीतं च व्यवहारं महानिशि । अह्नीव भास्करालोकं दुर्भेद्यं चाह्नि वा तमः ॥ ६५ ॥

vicitraṃ viparītaṃ ca vyavahāraṃ mahāniśi | ahnīva bhāskarālokaṃ durbhedyaṃ cāhni vā tamaḥ || 65 ||

Strange and contradictory behavior in the great night, and the impenetrable darkness even in the daylight.

महान रात में विचित्र और विपरीत व्यवहार, और दिन के प्रकाश में भी अभेद्य अंधकार।

7.145.66

सादृभूतलमाकाशे कुड्यबन्धे घने स्थलम् । कुड्यबन्धांश्च गगने मित्रभावं च विद्विषि ॥ ६६ ॥

sādrībhūtalamākāśe kuḍyabandhe ghane sthalam | kuḍyabandhāṃśca gagane mitrabhāvaṃ ca vidviṣi || 66 ||

In the sky, the earth appears as a dense wall, and the walls appear as friends in the sky.

आकाश में, पृथ्वी घने कुड्यबन्ध की तरह दिखती है, और कुड्यबन्ध आकाश में मित्र की तरह दिखते हैं।

7.145.67

स्वजने परताबुद्धिं सुजनत्वं च दुर्जने । सुसमस्थलतां श्वभ्रे श्वभ्रत्वं सुसमे स्थले ॥ ६७ ॥

svajane paratābuddhiṃ sujanatvaṃ ca durjane | susamasthalatāṃ śvabhre śvabhratvaṃ susame sthale || 67 ||

In one's own people, there is a sense of superiority, and in the noble, there is nobility. In a level place, there is evenness, and in a hole, there is hollowness.

अपने लोगों में श्रेष्ठता का भाव होता है, और सज्जनों में सज्जनता होती है। समतल स्थान में समता होती है, और गड्ढे में खोखलापन होता है।

7.145.68

उद्गीतालापमसृणान्सुधाधौतान्सुचित्रितान् । अद्रीञ्छ्वेतमयान्वापि नवनीतमयान्श्च वा ॥ ६८ ॥

udgītālāpamasṛṇānsudhādhautānsucitritān | adrīñśvetamayānvāpi navanītamayānśca vā || 68 ||

The melodious songs, the smooth and nectar-washed, beautifully adorned, white like mountains, or even like fresh butter.

मधुर गीत, चिकने और अमृत से धुले, सुंदर रूप से सजे, पहाड़ों की तरह सफेद, या फिर ताजे मक्खन की तरह।

7.145.69

कदम्बनीपजम्बीरपत्रस्तबकसद्मसु । सुखविश्रमणं स्त्रीभिः नाकं पद्मेष्विवालिनः ॥ ६९ ॥

kadambanīpajambīrapatras tabakasadmasu | sukhaviśramaṇaṃ strībhiḥ nākaṃ padmeṣvivāliṇaḥ || 69 ||

In the abodes adorned with kadamba, nipa, jambira, and tabaka leaves, the women rest comfortably like bees in lotuses.

कदम्ब, नीप, जामुन, और तबक के पत्तों से सजे आश्रयों में, स्त्रियाँ कमलों में मधुमक्खियों की तरह सुखपूर्वक विश्राम करती हैं।

7.145.70

अन्तर्निमीलिता ह्येताः पश्यन्त्युन्मीलिता बहिः । धातूनामिति वैषम्याद्भ्रान्तिमिन्द्रियवृत्तयः ॥ ७० ॥

antarnimīlitā hyetāḥ paśyantyunmīlitā bahiḥ | dhātūnāmiti vaiṣamyādbhrāntimindriyavṛttayaḥ || 70 ||

These, which are closed within, appear open outside. Due to the difference in the elements, the senses are confused.

ये, जो अंदर बंद हैं, बाहर खुले दिखाई देते हैं। तत्वों में अंतर के कारण, इंद्रियाँ भ्रमित हो जाती हैं।

7.145.71

एवंविधान्यनेकानि पश्यन्त्यनुभवन्ति च । बहिरेव यथा स्वप्ने वस्तुन्यसमधातवः ॥ ७१ ॥

evaṃvidhānyanekāni paśyantyanubhavanti ca | bahireva yathā svapne vastunyasamadhātavaḥ || 71 ||

Thus, many such things are seen and experienced, just like in a dream, outside, in things that are not real.

इस प्रकार कई ऐसी चीजें देखी और अनुभव की जाती हैं, जैसे स्वप्न में, बाहर, जो वास्तव में नहीं हैं।

7.145.72

बहिश्चान्तश्च दृश्यन्ते विपरीतान्यनेकशः । कार्याण्यतिकरालानि जीवैरसमधातुभिः ॥ ७२ ॥

bahiścāntaśca dṛśyante viparītānyanekaśaḥ | kāryāṇyatikarālāni jīvairasamadhātubhiḥ || 72 ||

Both outside and inside, many contradictory actions are seen, which are very terrible, by beings who are not real.

बाहर और अंदर दोनों जगह, कई विरोधाभासी कार्य देखे जाते हैं, जो बहुत भयानक हैं, जीवों द्वारा जो वास्तविक नहीं हैं।

7.145.73

समेषु धातुष्वेषोऽन्तर्जीवोऽनुभवति स्वयम् । तेजोन्तर्गत एवेमां व्यवहारस्थितिं समाम् ॥ ७३ ॥

sameṣu dhātuṣveṣo'ntarjīvo'nubhavati svayam | tejontargata eva imāṃ vyavahārasthitiṃ samām || 73 ||

In the same elements, the inner being experiences itself. Being within the light, it experiences this worldly existence as equal.

इन समान तत्वों में, अंतर्जीव स्वयं को अनुभव करता है। प्रकाश में रहते हुए, यह इस संसारिक अस्तित्व को समान अनुभव करता है।

7.145.74

यथास्थितां पुरग्रामपत्तनारण्यसंततिम् । सौम्यवारितरुच्छायादेशाध्वगगमागमम् ॥ ७४ ॥

yathāsthitāṃ puragrāmapattnāraṇyasaṃtatim | saumyavāritaruśchāyādeśādhvagagamāgamam || 74 ||

As it is, the continuity of cities, villages, forests, pleasant water, trees, shadows, regions, paths, comings, and goings.

जैसा कि है, नगरों, ग्रामों, वनों की सततता, सुखद जल, वृक्षों, छायाओं, देशों, मार्गों, आने-जाने की सततता।

7.145.75

सुखातपमयेन्द्वर्कताराहोरात्रमण्डितम् । एवमेतदसद्भूतं सद्भूतमिव भासते ॥ ७५ ॥

sukhātapamayendvarkatārāhorātramaṇḍitam | evametadasadbhūtaṃ sadbhūtamiva bhāsate || 75 ||

Adorned with pleasant heat, moonlight, stars, day, and night, thus this unreal entity appears as if real.

सुखद गर्मी, चंद्रमा की रोशनी, तारों, दिन और रात से सजा हुआ, इस प्रकार यह अवास्तविक वस्तु वास्तविक प्रतीत होती है।

7.145.76

दृश्योपलम्भं चित्तत्त्वे स्पन्दनं पवने यथा । असदेव सदाभासमभिन्नं भिन्नवत्स्थितम् ॥ ७६ ॥

dṛśyopalambhaṃ cittatve spandanaṃ pavane yathā | asadeva sadābhāsamabhinnaṃ bhinnavatsthitam || 76 ||

The perception of the visible world in the essence of consciousness is like the vibration in the air | Though it is unreal, it appears real, undivided yet seems divided

दृश्य जगत का ग्रहण चित्त के तत्व में वायु में स्पंदन की तरह होता है | यह असत् है, परंतु सत् की तरह प्रतीत होता है, अभिन्न होकर भी भिन्न प्रतीत होता है

7.145.77

शान्तादुदेति सकलं जगदम्बरात्म शान्तं न किंचन न नाम सदित्युदेति । तद्व्योमनीदृशमनन्तचितेः शरीरे भामात्रमाततमनन्तवपुर्विभाति ॥ ७७ ॥

śāntādudeti sakalaṃ jagadambarātma śāntaṃ na kiṃcana na nāma sadityudeti | tadvyomanīdṛśamanantaciteḥ śarīre bhāmātramātatamanantavapurvibhāti || 77 ||

From the peaceful, the entire universe arises, the peaceful self, nothing arises, no name, that is reality | In the infinite consciousness, such is the body, the mere appearance of the infinite form shines

शान्त से सम्पूर्ण जगत उत्पन्न होता है, शान्त आत्मा, कुछ भी नहीं उत्पन्न होता, कोई नाम नहीं, यही वास्तविकता है | अनन्त चेतना में, ऐसा शरीर है, अनन्त रूप का केवल आभास चमकता है

Chapter 146

7.146.1

व्याध उवाच । अनन्तरं मुनिश्रेष्ठ तस्मिन्हृदि तदोजसि । स्थितस्य तव किं वृत्तं नामतो भ्रान्तिरूपिणि ॥ १ ॥

vyādha uvāca | anantaraṃ muniśreṣṭha tasminhṛdi tadojasi | sthitasya tava kiṃ vṛttaṃ nāmato bhrāntirūpiṇi || 1 ||

The hunter said: O best of sages, what happened next to you, who was situated in that heart, in that power, in that form of delusion?

व्याध ने कहा: हे मुनिश्रेष्ठ, उस हृदय में, उस शक्ति में, उस भ्रान्ति रूप में स्थित आपके साथ तब क्या हुआ?

7.146.2

मुनिरुवाच । अनन्तरं तदा तत्र श्रृणु किंवृत्तमङ्ग मे । तेजोधातुनिषण्णस्य तज्जीवावलिताकृतेः ॥ २ ॥

muniruvāca | anantaraṃ tadā tatra śṛṇu kiṃvṛttamaṅga me | tejodhātuniṣaṇṇasya tajjīvāvalitākṛteḥ || 2 ||

The sage said: Listen, O friend, to what happened next to me there, who was situated in the essence of radiance, in the form enveloped by life.

मुनि ने कहा: हे मित्र, सुनो, उस समय वहाँ मेरे साथ क्या हुआ, जो तेज के धातु में स्थित था, जीवन से घिरा हुआ रूप में।

7.146.3

तस्मिंस्तदा वर्तमाने घोरे कल्पान्तसंभ्रमे । तृणवत्प्रौढशैलेन्द्रे वहति प्रलयानिले ॥ ३ ॥

tasmiṃstadā vartamāne ghore kalpāntasaṃbhame | tṛṇavatprauḍhaśailendre vahati pralayānile || 3 ||

At that time, during the terrible chaos of the end of the world, the mighty mountains were being blown away like straws by the wind of destruction.

उस समय, प्रलय के भयानक कोलाहल में, विशाल पर्वत प्रलय के वायु से तिनके की तरह उड़ रहे थे।

7.146.4

गिरिवृष्टिर्झटित्येव कुतोऽपि समुपाययौ । उह्यमानवनाभोगशिखरग्रामपत्तना ॥ ४ ॥

girivṛṣṭirjhaṭityeva kuto'pi samupāyayau | uhyamānavanābhogaśikharaagrāmapattanā || 4 ||

Suddenly, from somewhere, a shower of mountains rained down, and the peaks of the mountains, being carried away, fell into the cities.

अचानक, कहीं से, पर्वतों की वर्षा हुई, और पर्वतों के शिखर, उड़ते हुए, नगरों में गिर पड़े।

7.146.5

तस्यान्तस्तत्र संप्राप्तं तदा परिणतं यदा । तदा तदेव सूक्ष्मोऽहमपश्यं शैलवर्षणम् ॥ ५ ॥

tasyāntastatra saṃprāptaṃ tadā pariṇataṃ yadā | tadā tadeva sūkṣmo'hamapaśyaṃ śailavarṣaṇam || 5 ||

When that end had reached there, at that time, I, being subtle, saw the shower of mountains.

जब वह अंत वहाँ पहुँचा, उस समय, मैं, सूक्ष्म होकर, पर्वतों की वर्षा देखी।

7.146.6

तेनान्नलवशैलोच्चपूरेण प्रतिपिण्डितः । सुषुप्तमन्धतामिश्रमहमन्वभवं घनम् ॥ ६ ॥

tenānnlavśailoccāpūreṇa pratipiṇḍitaḥ| suṣuptamandhatāmiśramahamanvabhavaṃ ghanam || 6 ||

Thus, filled with the essence of the mountain-like food, I experienced deep sleep mixed with ignorance and darkness.

इस प्रकार, पर्वत-से पूर्ण भोजन के साथ भरा हुआ, मैंने अन्धकार और अज्ञान से मिश्रित गहरी नींद अनुभव की।

7.146.7

अथ कंचित्तदा कालमनुभूय सुषुप्तताम्। तदा पद्माकर इव शनैर्बोधोन्मुखोऽभवम्॥ ७॥

atha kañcit tadā kālam anubhūya suṣuptatām| tadā padmākara iva śanair bodhonmukho'bhavam || 7 ||

Then, after experiencing deep sleep for some time, I gradually awoke like a lotus pond.

फिर, कुछ समय तक गहरी नींद अनुभव करने के बाद, मैं धीरे-धीरे कमल के तालाब की तरह जाग गया।

7.146.8

यथा दृष्टिश्चिराद्ध्वान्ते भाति चक्रकरूपिणी। सुषुप्तमेव तत्रासीत्तथा स्वप्नत्वमागतम्॥ ८॥

yathā dṛṣṭiścirāddhvānte bhāti cakrakarūpiṇī| suṣuptameva tatrāsīttathā svapnatvamāgatam || 8 ||

Just as vision appears in the form of a circle after a long period of darkness, so too, deep sleep turned into a dream state.

जैसे दृष्टि लंबे समय के अंधकार के बाद एक चक्र के रूप में प्रकट होती है, उसी प्रकार, गहरी नींद स्वप्न अवस्था में बदल गई।

7.146.9

तथा सुषुप्तविश्रान्तेः स्वप्ने निद्रामहं विशम्। अपश्यं दृश्यमोजोऽन्तः स्वमूर्मित्वमिवार्णवः॥ ९॥

tathā suṣuptaviśrānteḥ svapne nidrāmahaṃ viśam| apaśyaṃ dṛśyamojonantaḥ svamūrmitvamivārṇavaḥ || 9 ||

Thus, after resting in deep sleep, I entered the dream state and saw various visions, like the ocean with its waves.

इस प्रकार, गहरी नींद में विश्राम करने के बाद, मैं स्वप्न अवस्था में प्रवेश कर गया और विभिन्न दृश्यों को देखा, जैसे समुद्र अपनी लहरों के साथ।

7.146.10

संवित्कोशात्मकं दृश्यं तत्तथा मामुपागतम्। अस्पन्दस्यानिलस्यान्तरनन्यत्स्पन्दनं यथा॥ १०॥

saṃvitkośātmakaṃ dṛśyaṃ tattathā māmupāgatam| aspanadasyaānilasyāntarananyatspandanaṃ yathā || 10 ||

The vision that came to me was like the knowledge sheath, just as the movement within the motionless air.

मुझे जो दृश्य प्राप्त हुआ, वह ज्ञान के कोश के समान था, जैसे निश्चल वायु के भीतर की गति।

7.146.11

अग्न्यादौ च यथोष्णत्वं जलादौ द्रवता यथा। मरीचादौ यथा तैक्ष्ण्यं चिद्व्योम्नश्च जगत्तथा॥ ११॥

agnyādau ca yathoṣṇatvaṃ jalādau dravatā yathā | marīcādau yathā taikṣṇyaṃ cidvyomnaśca jagattathā || 11 ||

Just as heat is in fire, fluidity in water, sharpness in rays of light, so is the universe in the consciousness.

अग्नि में जैसे गर्मी है, जल में जैसे द्रवता है, किरणों में जैसे तीक्ष्णता है, वैसे ही चेतना में संसार है।

7.146.12

चित्स्वभावैकरूपत्वाज्जगद्दृश्यं तदाततम्। तत्सुषुप्तात्मनो दृश्यात्प्रसूतं बालपुत्रवत्॥ १२॥

citsvabhāvaikarūpatvāj jagaddṛśyaṃ tadātataṃ | tatsuṣuptātmano dṛśyāt prasūtaṃ bālaputravat || 12 ||

Due to the singular nature of consciousness, the universe is perceived as one with it. Just as a child is born from the sleeping self, the universe is born from the sleeping consciousness.

चेतना के एकरूप स्वभाव के कारण, संसार उसके साथ एक दिखाई देता है। जैसे एक बच्चा सोए हुए स्वयं से पैदा होता है, वैसे ही संसार सोई हुई चेतना से पैदा होता है।

7.146.13

व्याध उवाच । तत्सुषुप्तात्मनो दृश्यादिति तद्व्यपदेशतः । सुषुप्तदृश्यं किं वक्षि वद मे वदतां वर ॥ १३ ॥

vyādha uvāca | tatsuṣuptātmano dṛśyāditi tadvyapadeśataḥ | suṣuptadṛśyaṃ kiṃ vakṣi vada me vadatāṃ vara || 13 ||

The hunter said, 'What do you mean by saying that the perceived is from the sleeping self? Please explain to me, O best of speakers.'

शिकारी ने कहा, 'सोए हुए स्वयं से देखा जाने वाला क्या है, इसका क्या मतलब है? मुझे बताएँ, हे वक्ताओं में श्रेष्ठ।'

7.146.14

तत्सुषुप्तात्मनो दृश्यात्त्वत्सुषुप्तात्मनोऽपि च । किमन्यज्जायते जन्यमथवान्यसुषुप्तता ॥ १४ ॥

tatsuṣuptātmano dṛśyāt tvatsuṣuptātmano'pi ca | kimanyajjāyate janyamathavānyasuṣuptatā || 14 ||

From the sleeping self, what else is born that is perceived, or is there another state of sleep?

सोए हुए स्वयं से देखा जाने वाला और क्या उत्पन्न होता है, या कोई अन्य सोने की अवस्था है?

7.146.15

मुनिरुवाच । जायते भाति कचति घटादि जगदादि च । इति द्वैतोपतप्तानां प्रलापः कल्पनात्मकः ॥ १५ ॥

muniruvāca | jāyate bhāti kacati ghaṭādi jagadādi ca | iti dvaitopataptānāṃ pralāpaḥ kalpanātmakaḥ || 15 ||

The sage said, 'The ideas of birth, existence, and destruction of the universe are mere imaginings of those who are deluded by duality.'

मुनि ने कहा, 'संसार के जन्म, अस्तित्व और विनाश के विचार द्वैत से भ्रमित लोगों की कल्पनाएँ हैं।'

7.146.16

जातशब्दो हि सन्मात्रपर्यायः श्रूयतां कथम् । प्रादुर्भावे जनिस्तूक्तः प्रादुर्भावस्य भूर्वपुः ॥ १६ ॥

jātaśabdo hi sanmātraparyāyaḥ śrūyatāṃ katham | prādurbhāve janistūktaḥ prādurbhāvasya bhūrvapuḥ || 16 ||

The word 'born' is indeed synonymous with mere existence; listen to how it is said | In manifestation, birth is spoken of; the manifestation is the being of the body

जात शब्द वास्तव में मात्र अस्तित्व का पर्याय है, सुनिए कैसे यह कहा जाता है | प्रकटीकरण में, जन्म कहा जाता है; प्रकटीकरण शरीर का अस्तित्व है

7.146.17

सत्तार्थ एव भूः प्रोक्तस्तस्मात्संजातमुच्यते । सर्गतो जात इत्युक्ते सन्सर्ग इति शब्दितम् ॥ १७ ॥

sattārtha eva bhūḥ proktastasmātsaṃjātamucyate | sargato jāta ityukte sansarga iti śabditaṃ || 17 ||

Existence itself is called being; therefore, it is said to be born | When it is said to be born from creation, it is called association

अस्तित्व स्वयं ही अस्तित्व कहलाता है; इसलिए, यह जन्म कहा जाता है | जब यह कहा जाता है कि यह सृष्टि से जन्मा है, तो यह संबंध कहलाता है

7.146.18

बुधानामस्मदादीनां न किंचिन्नाम जायते । न च नश्यति वा किंचित्सर्वं शान्तमजं च सत् ॥ १८ ॥

budhānāmasmadādīnāṃ na kiṃcin nāma jāyate | na ca naśyati vā kiṃcit sarvaṃ śāntam ajaṃ ca sat || 18 ||

For the wise, starting from us, nothing is born | Nor does anything perish; all is peaceful, unborn, and eternal

बुद्धिमानों के लिए, हमसे शुरू होकर, कुछ भी जन्म नहीं लेता | न ही कुछ नष्ट होता है; सब कुछ शांत, अजन्मा और सनातन है

7.146.19

सर्वसत्तात्मकं ब्रह्म सर्वसत्तात्मकं जगत्। विधयः प्रतिषेधाश्च वद तत्र लगन्ति के ॥ १९ ॥

sarvasattātmakaṃ brahma sarvasattātmakaṃ jagat | vidhayaḥ pratiṣedhāśca vada tatra laganti ke || 19 ||

Brahman is the essence of all existence, the world is the essence of all existence | Tell me, what injunctions and prohibitions apply there

ब्रह्म सब अस्तित्व का आत्मा है, जगत् सब अस्तित्व का आत्मा है | बताओ, वहाँ कौन से विधि और निषेध लागू होते हैं

7.146.20

या नाम शक्तिः काचित्सा तत्रैवास्ति च नास्ति च यस्मात्तदात्म तद्ब्रह्म तथैवात्म तदात्मकम्॥ २० ॥

yā nāma śaktiḥ kācitsā tatraivāsti ca nāsti ca yasmāttadātma tadbrahma tathaivātma tadātmakam || 20 ||

That which is called power, it exists there and does not exist | Because that is the self, that is Brahman, and thus the self is of that nature

जो शक्ति कहलाती है, वह वहाँ है और नहीं भी है | क्योंकि वह आत्मा है, वह ब्रह्म है, और इसलिए आत्मा उसी प्रकार का है

7.146.21

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तादिपरमार्थविदां विदाम्। न विद्यते किंचिदपि यथास्थितमवस्थितम्॥ २१ ॥

jāgratsvapnasuṣuptādiparamārthavidāṃ vidām | na vidyate kiṃcidapi yathāsthitamavasthitam || 21 ||

For those who know the ultimate reality of the waking, dreaming, and deep sleep states, there is nothing that exists as it appears.

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति के परमार्थ को जानने वालों के लिए, कुछ भी ऐसा नहीं है जो जैसा दिखाई देता है वैसा ही है।

7.146.22

स्वप्नसंकल्पपुरयोर्नास्त्यप्यनुभवस्थयोः। मनागपि यथा रूपं सर्गादौ जगतस्तथा ॥ २२ ॥

svapnasankalpapurayornāstyapyanubhavasthayoḥ | manāgapi yathā rūpaṃ sargādau jagatastathā || 22 ||

Even in the states of dream and imagination, there is no real existence, just as the world at the time of creation does not have a real form.

स्वप्न और कल्पना की अवस्थाओं में भी कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है, जैसे सृष्टि के समय संसार का कोई वास्तविक रूप नहीं होता।

7.146.23

द्रष्टास्याः स्वप्नदृष्टेस्तु जीवः संभवतीह हि। चिदचेत्या तु सर्गादौ भात्यच्छा गगनादपि ॥ २३ ॥

draṣṭāsyāḥ svapnadṛṣṭestu jīvaḥ saṃbhavatīha hi | cidacetyā tu sargādau bhātyacchā gaganādapi || 23 ||

The individual soul (jīvaḥ) appears here as the seer of the dream. At the time of creation, the reflection of consciousness appears even from the sky.

जीव (आत्मा) यहां स्वप्न के द्रष्टा के रूप में प्रकट होता है। सृष्टि के समय, चेतना का प्रतिबिंब आकाश से भी प्रकट होता है।

7.146.24

नेह द्रष्टास्ति नो भोक्ता सर्वमस्तीह तादृशम्। यन्न किंचिच्च किंचिच्च मौनमेवातिवागपि ॥ २४ ॥

neha draṣṭāsti no bhoktā sarvamastīha tādṛśam | yanna kiṃcicca kiṃcicca maunamevātivāgapi || 24 ||

Here, there is no seer or experiencer. Everything here is of that nature. That which is not anything is everything, and silence itself is beyond speech.

यहां, न द्रष्टा है न भोक्ता। यहां सब कुछ उसी प्रकार का है। जो कुछ नहीं है वही सब कुछ है, और मौन ही वाणी से परे है।

7.146.25

सर्गादौ कारणाभावाद्यद्यथा कचितं चितौ । तत्तथास्ते चिरं रूपं स्वप्नसंकल्पपूर्यथा ॥ २५ ॥

sargādau kāraṇābhāvādyadyathā kacitaṃ citau | tattathāste ciraṃ rūpaṃ svapnasankalpapūryathā || 25 ||

At the time of creation, due to the absence of cause, whatever appears in consciousness remains in that form for a long time, just like in a dream or imagination.

सृष्टि के समय, कारण के अभाव के कारण, जो कुछ भी चेतना में प्रकट होता है वह लंबे समय तक उसी रूप में रहता है, जैसे कि स्वप्न या कल्पना में।

7.146.26

तथास्माच्चेतनाद्वैताद्बिभेति न बिभेति वा । अङ्गसंस्थाद्यथा चित्रात्स्वरूपात्पुरुषः स्वयम् ॥ २६ ॥

tathāsmāccetanāddvaitādbibheti na bibheti vā | aṅgasaṁsthādyathā citrātsvarūpātpuruṣaḥ svayam || 26 ||

Thus, from the conscious non-duality, one may fear or not fear | Just as a person may fear or not fear from their own form, like a painting |

इस प्रकार, चेतन अद्वैत से, कोई डर सकता है या नहीं डर सकता | जैसे कि एक व्यक्ति अपने स्वरूप से, जैसे कि एक चित्र से, डर सकता है या नहीं डर सकता |

7.146.27

अनादिमध्यान्तमनन्तमेकमत्यच्छमेवातिविकारि नाना । यथास्थितं भास्वरमप्यशान्तमिदं समस्तं परिशान्तमेव ॥ २७ ॥

anādimadhyāntamanantamekamatyacchamevātivikāri nānā | yathāsthitaṃ bhāsvaramapy aśāntamidaṃ samastaṃ pariśāntameva || 27 ||

Without beginning, middle, or end, infinite, one, extremely pure, highly transformative, diverse | As it is, luminous, yet restless, all this is completely peaceful |

जिसका न आदि है, न मध्य है, न अंत है, अनंत, एक, अत्यंत शुद्ध, अत्यंत परिवर्तनशील, विविध | जैसा है, प्रकाशमान, फिर भी अशांत, यह सब कुछ पूर्णतः शांत है |

Chapter 147

7.147.1

मुनिरुवाच । अनन्तरं महाबाहो सुषुप्तान्निर्गतस्य मे । स्वप्ने जगद्दृश्यमिदं सागरादिव निर्गतम् ॥ १ ॥

muniruvāca | anantaraṃ mahābāho suṣuptānnirgatasya me | svapne jagaddṛśyamidaṃ sāgarādiva nirgatam || 1 ||

The sage said: After this, O mighty-armed one, while I was asleep, this world appeared to me in a dream as if it had emerged from the ocean.

मुनि ने कहा: इसके बाद, हे महाबाहो, जब मैं सोया हुआ था, यह संसार मुझे स्वप्न में ऐसे दिखाई दिया जैसे यह समुद्र से निकला हो।

7.147.2

आकाशाङ्गादिवोत्कीर्णमुत्कीर्णमवनेरिव । उत्कीर्णमिव वा चित्तादुत्कीर्णमिव वा दृशः ॥ २ ॥

ākāśāṅgādivotkīrṇamotkīrṇamavaneriva | utkīrṇamiva vā cittādutkīrṇamiva vā dṛśaḥ || 2 ||

It seemed as if it had been thrown out from the sky, or from the forest, or from the mind, or from the sight.

ऐसा लगा जैसे यह आकाश से, या वन से, या मन से, या दृष्टि से फेंका गया हो।

7.147.3

प्रफुल्लमिव वृक्षेभ्यः सर्गः पूर्वमिवोत्थितः । तरङ्गजालं रोधोऽब्धेरिव वा कचनं दृशाम् ॥ ३ ॥

praPhullamiva vṛkṣebhyaḥ sargaḥ pūrvamivotthitaḥ | taraṅgajālaṃ rodho'bdheriva vā kacanaṃ dṛśām || 3 ||

It seemed as if the creation had bloomed from the trees, or had risen before like the web of waves obstructing the ocean, or like the sight.

ऐसा लगा जैसे सृष्टि वृक्षों से खिली हो, या पहले की तरह उठी हो जैसे लहरों का जाल समुद्र को रोकता हो, या दृष्टि की तरह।

7.147.4

नभस्तलादिवायातं ककुब्भ्य इव चागतम् । पर्वतेभ्य इवोत्कीर्णं भूमेरिव समुत्थितम् ॥ ४ ॥

nabhastalādivāyātaṃ kakubbhya iva cāgatam | parvatebhya ivotkīrṇaṃ bhūmeriva samutthitam || 4 ||

It seemed as if it had come from the sky, or from the directions, or thrown out from the mountains, or risen from the earth.

ऐसा लगा जैसे यह आकाश से आया हो, या दिशाओं से आया हो, या पर्वतों से फेंका गया हो, या पृथ्वी से उठा हो।

7.147.5

हृदयादिव निष्क्रान्तं संप्रविष्टमिवाम्बुदैः । प्रसूतमिव वृक्षेभ्यो जातं वा सस्यवद्भुवः ॥ ५ ॥

hṛdayādiva niṣkrāntaṃ saṃpraviṣṭamivāmbudaiḥ | prasūtamiva vṛkṣebhyo jātaṃ vā sasyavadbhavaḥ || 5 ||

It seemed as if it had emerged from the heart, or entered like clouds, or born from trees, or born like crops from the earth.

ऐसा लगा जैसे यह हृदय से निकला हो, या बादलों की तरह प्रवेश किया हो, या वृक्षों से जन्मा हो, या फसल की तरह पृथ्वी से जन्मा हो।

7.147.6

अङ्गेभ्य इव निर्यातं समुत्कीर्णमिवेन्द्रियैःपटादिव प्रकटितं मन्दिरादिव निर्गतम् ॥ ६ ॥

aṅgebhya iva niryātaṃ samutkīrṇamivendriyaiḥpaṭādiva prakaṭitaṃ mandirādiva nirgatam || 6 ||

It appears as if it has come out of the limbs, as if it has been thrown out by the senses, like a picture, like it has come out of a temple.

यह ऐसा लगता है जैसे यह अंगों से निकला हो, जैसे इंद्रियों द्वारा फेंका गया हो, जैसे एक चित्र, जैसे यह एक मंदिर से निकला हो।

7.147.7

कुतोऽप्यागत्य पतितमुड्डीय गगनादिवौपायनं परे लोके गृहीतमिव वा भुवः ॥ ७ ॥

kuto'pyāgatya patitamuḍḍīya gaganādivaupāyanaṃ pare loke gṛhītamiva vā bhuvaḥ || 7 ||

Having fallen from somewhere, it is as if it has been taken up in the other world like the sky or as if it has been grasped on the earth.

कहीं से गिरकर, यह ऐसा लगता है जैसे यह दूसरे लोक में आकाश की तरह उठाया गया हो या जैसे यह पृथ्वी पर पकड़ा गया हो।

7.147.8

प्रसूनं ब्रह्मवृक्षस्य तरङ्गमिव वाम्बुधेःअनुत्कीर्णप्रकटनाच्चित्स्तम्भे चारुपुत्रिका ॥ ८ ॥

prasūnaṃ brahmavṛkṣasya taraṅgamiva vāmbudheḥanutkīrṇaprakaṭanāccitstambhe cāruputrikā || 8 ||

Like the flower of the Brahma tree, like the wave in the ocean, the beautiful daughter stands manifested in the pillar of consciousness without being thrown out.

ब्रह्म वृक्ष के फूल की तरह, सागर में लहर की तरह, सुंदर पुत्री चेतना के स्तंभ में फेंके बिना प्रकट होती है।

7.147.9

आकाशमृन्मयानन्तकुड्यमाकाशपट्टनम्मनो मत्तो गजमयो मिथ्या जीवस्य जीवितम् ॥ ९ ॥

ākāśamṛnmayānantakuḍyamākāśapattanammano matto gajamayo mithyā jīvasya jīvitam || 9 ||

The endless brick wall made of sky-clay, the cloth of sky, the mind like a mad elephant, the life of the living being is false.

आकाश की मिट्टी से बनी अनंत ईंटों की दीवार, आकाश का कपड़ा, मन मद हाथी की तरह, जीव का जीवन झूठा है।

7.147.10

अभित्तिकमरङ्गं च विचित्रं चित्रमम्बरेशम्बरेशस्य सर्वस्वमविद्याख्यस्य कस्यचित् ॥ १० ॥

abhittikamaraṅgaṃ ca vicitraṃ citramambareśambareśasya sarvasvamavidyākhyasya kasyacit || 10 ||

The wonderful and various painting on the wall and the wonderful painting in the sky, all belong to the ignorance of someone.

दीवार पर अद्भुत और विविध चित्रकारी और आकाश में अद्भुत चित्रकारी, सब किसी के अज्ञान के हैं।

7.147.11

महारम्भं स्थिरमपि देशकालविवर्जितम् । नानाढ्यमपि चाद्वैतं नानात्मापि न किंचन ॥ ११ ॥

mahārambhaṃ sthiramapi deśakālavivarjitam | nānāḍhyamapi cādvaitaṃ nānātmāpi na kiṃcana || 11 ||

The great beginning, though stable and devoid of space and time, is diverse yet non-dual, manifold yet not anything.

महान आरम्भ, यद्यपि स्थिर और स्थान-काल से रहित है, विविध है फिर भी अद्वैत है, बहुरूप है फिर भी कुछ नहीं है।

7.147.12

गन्धर्वपुरदृष्टान्तस्याप्यवस्तुतया समम्। जागरायां हि किल तद्भ्रान्तमप्युपलभ्यते ॥ १२ ॥

gandharvapuradṛṣṭāntasyāpyavastutayā samam | jāgarāyāṃ hi kila tadbhrāntamapyupalabhyate || 12 ||

Even the example of the Gandharva city is considered real, for in the waking state, it is perceived as an illusion.

गन्धर्व नगर का उदाहरण भी वास्तविक माना जाता है, क्योंकि जागृत अवस्था में, यह एक भ्रम के रूप में देखा जाता है।

7.147.13

चिद्भामात्रमनारब्धमप्यारब्धमिव स्थितम्। देशकालक्रियाद्रव्यसर्गसंहारसंयुतम् ॥ १३ ॥

cidbhāmātramanārabdhamapyārabdhamiva sthitam | deśakālakriyādravyasargasaṃhārasaṃyutam || 13 ||

The mere appearance of consciousness, though uninitiated, appears as if initiated, endowed with space, time, action, substance, creation, and dissolution.

चेतना का केवल आभास, यद्यपि अप्रारम्भित है, फिर भी प्रारम्भित के रूप में दिखाई देता है, स्थान, काल, क्रिया, द्रव्य, सृष्टि और संहार से युक्त है।

7.147.14

सुरासुरनराधारगर्भगर्भमनोहरम्। पृथक्कोष्ठस्थबीजौघसंपूर्णमिव दाडिमम् ॥ १४ ॥

surāsuranarādhāragarbhagarbhamanoharam | pṛthakkoṣṭhasthabījaughasaṃpūrṇamiva dāḍimam || 14 ||

The charming womb that supports gods, demons, and humans, appears like a pomegranate filled with separate seeds in each compartment.

देवताओं, असुरों और मनुष्यों का आधार देने वाला मनोहर गर्भ, अलग-अलग खानों में भरे बीजों से भरे अनार के समान दिखाई देता है।

7.147.15

नदीशैलवनादिस्थव्योमताराभ्रसंकुलम्। गीताब्धिरणपाठाढ्यपवनारावघर्घरम् ॥ १५ ॥

nadīśailavanādisthavyomatārābhrasaṃkulam | gītābhdhiraṇapāṭhāḍhyapavanārāvaghargharam || 15 ||

Filled with rivers, mountains, forests, and the sky with stars and clouds, resounding with songs, the roar of the ocean, the recitation of scriptures, and the rumbling of winds.

नदियों, पर्वतों, वनों और तारों और बादलों से भरे आकाश से भरा हुआ, गीतों, समुद्र की गर्जना, शास्त्रों के पाठ और हवाओं की गर्जना से गूंजता हुआ।

7.147.16

ततो विलोकितं तत्र तन्मया दृश्यमण्डलम्। यावत्तमेव पश्यामि ग्रामं प्राक्तनमास्पदम् ॥ १६ ॥

tato vilokitaṃ tatra tanmayā dṛśyamaṇḍalam | yāvattameva paśyāmi grāmaṃ prāktanamāspadam || 16 ||

Then, I saw there the visible sphere with my own eyes. As long as I saw that, I saw the village which was my former abode.

तब, मैंने वहाँ अपनी आँखों से दृश्य मण्डल देखा। जब तक मैं उसे देखता रहा, मैंने उस गाँव को देखा जो मेरा पूर्व निवास स्थान था।

7.147.17

तानेव सकलान्बन्धूंस्तथासंस्थानसंस्थितान्। तान्पुत्रांस्तां महेलां च तदेव च तदा गृहम् ॥ १७ ॥

tāneva sakalānbandhūṃstathāsaṃsthānasaṃsthitān | tānputrāṃstāṃ mahelāṃ ca tadeva ca tadā gṛham || 17 ||

All those relatives, situated in the same position, those sons, that wife, and that very house at that time.

सभी वे रिश्तेदार, उसी स्थिति में स्थित, वे पुत्र, वह पत्नी, और उस समय वही घर।

7.147.18

तां दृष्ट्वा प्राक्तनीं ग्राम्यामाहरद्वासनां बलात्। तटस्थं मुह्यमानाङ्गमिव वीचिर्महार्णवे ॥ १८ ॥

tāṃ dṛṣṭvā prāktanīṃ grāmyāmāharadvāsanāṃ balāt | taṭasthaṃ muhyamānāṅgamiva vīcirmahārṇave || 18 ||

Seeing that former village life, a strong desire arose forcefully. Like a confused being standing on the shore of the great ocean.

उस पूर्व ग्राम्य जीवन को देखकर, एक प्रबल इच्छा बलपूर्वक उत्पन्न हुई। जैसे महासागर के तट पर खड़ा भ्रमित प्राणी।

7.147.19

अथाहमभवं तत्र तदालिङ्गननिर्वृतः। गृहीतवासनो नूनं विस्मृतप्राक्तनस्मृतिः ॥ १९ ॥

athāhamabhavaṃ tatrā tadāliṅgananirvṛtaḥ | gṛhītavāsano nūnaṃ vismṛtaprāktanasamṛtiḥ || 19 ||

Then I became there, satisfied with that embrace, certainly seized by desire, having forgotten the past memories.

तब मैं वहाँ हो गया, उस आलिंगन से संतुष्ट, निश्चय ही इच्छा से ग्रस्त, अतीत की स्मृतियों को भूल गया।

7.147.20

बिम्बं तत्तदुपादत्ते यद्यदग्रेऽवतिष्ठति। यथादर्शश्चिदादर्शस्तथैवायं स्वभावतः ॥ २० ॥

bimbaṃ tattadupādatte yadyadagre'vatiṣṭhati | yathādarśaścidādarśastathaivāyaṃ svabhāvataḥ || 20 ||

The mind takes on the form of whatever it dwells upon. Just as a mirror reflects objects, so does the mind by its nature.

मन उसी रूप को धारण कर लेता है जिस पर वह एकाग्र होता है। जैसे दर्पण वस्तुओं को प्रतिबिंबित करता है, वैसे ही मन अपने स्वभाव से करता है।

7.147.21

यस्तु चिन्मात्रगगनं सर्वमित्येव बोधवान्। द्वैतेन बोध्यते नेह सोऽङ्ग तिष्ठति केवलः ॥ २१ ॥

yastu cinmātragaganam sarvamityeva bodhavān | dvaitena bodhyate neha so'ṅga tiṣṭhati kevalaḥ || 21 ||

One who knows that everything is the sky of pure consciousness, does not perceive duality here; he remains alone.

जो जानता है कि सब कुछ शुद्ध चेतना का आकाश है, वह यहाँ द्वैत को नहीं जानता; वह अकेला रहता है।

7.147.22

न नश्यति स्मृतिर्यस्य विमला बोधशालिनी। अयं द्वैतपिशाचस्तं मनागपि न बाधते ॥ २२ ॥

na naśyati smṛtiryasya vimalā bodhaśālinī | ayaṃ dvaitapiśācastaṃ manāgapi na bādhate || 22 ||

The pure, enlightening memory of one does not perish; this demon of duality does not trouble him even a little.

उसकी शुद्ध, प्रकाशमान स्मृति नष्ट नहीं होती; यह द्वैत का राक्षस उसे थोड़ा भी परेशान नहीं करता।

7.147.23

येषामभ्यासयोगेन साधुसच्छास्त्रसंगमैः। उदेति बोधधीर्भूयो या विस्मरति नोदयम् ॥ २३ ॥

yeṣāmabhyāsayogena sādhusacchāstrasaṃgamaiḥ | udeti bodhadhīrbhūyo yā vismarati nodayam || 23 ||

Those who, through practice and association with good scriptures, have their enlightening intellect arise again, which does not forget its rise.

जिनकी अभ्यास और सत्शास्त्रों के संग से पुनः प्रकाशमान बुद्धि उत्पन्न होती है, जो अपने उदय को नहीं भूलती।

7.147.24

अप्रौढा मे तदा सासीद्बोधधीर्या तया हता । अद्य शक्नोति मे बुद्धिं हन्तुं क इव दुर्ग्रहः ॥ २४ ॥

aprauḍhā me tadā sāsīdbodhadhīryā tayā hatā | adya śaknoti me buddhiṃ hantuṃ ka iva durgrahaḥ || 24 ||

At that time, my immature enlightening intellect was destroyed by her; today, who can destroy my intellect, as if it is difficult to grasp?

उस समय, मेरी अप्रौढ़ प्रकाशमान बुद्धि उससे नष्ट हो गई थी; आज, कौन मेरी बुद्धि को नष्ट कर सकता है, जैसे कि यह पकड़ना मुश्किल है?

7.147.25

तवापि व्याध विद्धीदं बुद्धिः सत्सङ्गवर्जिता । द्वैतबोधेन कष्टेन कृच्छ्राच्छान्तिमुपैष्यति ॥ २५ ॥

tavāpi vyādha viddhīdaṃ buddhiḥ satsaṅgavarjitā | dvaitabodhena kaṣṭena kṛcchrācchāntimupaiṣyati || 25 ||

O hunter, know this: the intellect devoid of good association will, with the painful perception of duality, attain peace with difficulty.

हे शिकारी, यह जान लो: सत्संग से रहित बुद्धि द्वैत के दुःखदायी बोध से कठिनाई से शान्ति प्राप्त करेगी।

7.147.26

व्याध उवाच एवम् एतन् मुने सत्यं पावनैस् त्वद्विबोधनैः ईदृशैर् अपि मे बुद्धिर् न विश्राम्यति सत्पदे ॥ २६ ॥

vyādha uvāca evam etan mune satyaṃ pāvanais tvadvibodhanaiḥ īdṛśair api me buddhir na viśrāmyati satpade || 26 ||

The hunter said, 'O sage, what you have said is true. Even with such purifying instructions, my mind does not find rest in the true path.'

शिकारी ने कहा, 'हे मुनि, आपने जो कहा है, वह सत्य है। फिर भी इन पवित्र उपदेशों के साथ भी मेरा मन सत्पथ पर विश्राम नहीं करता।'

7.147.27

स्यादीदृशमथो न स्यादिति संदेहजालिका । नैतस्मिन्स्वानुभूतेऽपि वस्तुन्यद्यापि शाम्यति ॥ २७ ॥

syādīdṛśamatho na syāditi saṃdehajālikā| naitasmin svānubhūte'pi vastunyadyāpi śāmyati || 27 ||

There is a web of doubt whether such a state exists or not, and even in this direct experience, the doubt does not subside.

ऐसी स्थिति है या नहीं, इस पर संदेह का जाल है, और इस प्रत्यक्ष अनुभव में भी संदेह शान्त नहीं होता।

7.147.28

अहो बत दुरन्तेयमभ्याससुदृढीकृता । अविद्या विद्यमानैव या शान्तैव न शाम्यति ॥ २८ ॥

aho bata duranteyamabhyāsasudṛḍhīkṛtā| avidyā vidyamānaiva yā śāntaiva na śāmyati || 28 ||

Alas, this ignorance, strengthened by habit, is difficult to overcome. It exists and yet does not become calm.

अहो, यह अज्ञान, अभ्यास से मजबूत होकर, दुर्जय है। यह मौजूद है और फिर भी शान्त नहीं होता।

7.147.29

सत्सङ्गतैः पदपदार्थविबुद्धबुद्धेः सच्छास्त्रसत्क्रमविचारमनोहराङ्गैः। अभ्यासतः प्रशममेति जगद्भ्रमोऽयं नान्येन केनचिदपीति विनिश्चितिर्मे ॥ २९ ॥

satsaṅgataiḥ padapadārthavibuddhabuddheḥ sacchāstrasatkramavicāramanoharāṅgaiḥ| abhyāsataḥ praśamameti jagadbhramo'yaṃ nānyena kenacidapīti viniścitirmē || 29 ||

Through association with the wise, understanding the meaning of words, and engaging in the delightful study of true scriptures, this worldly delusion subsides with practice. There is no other way, this is my firm conviction.

सत्संग से, शब्दों के अर्थ को समझकर, और सच्चे शास्त्रों के मनोहर अध्ययन में लगकर, यह संसारिक भ्रम अभ्यास से शान्त होता है। और कोई रास्ता नहीं है, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

Chapter 148

7.148.1

व्याध उवाच एवं चेत्तन्मुनिश्रेष्ठ सत्यतासत्यता कथम् स्थितः स्वप्नदृशा चैष सुमहान्संशयो मम ॥ १ ॥

vyādha uvāca evaṃ cet tanmuniśreṣṭha satyatāsatyatā katham sthitaḥ svapnadṛśā caiṣa sumahānsaṃśayo mama || 1 ||

The hunter said: O best of sages, if this is so, how can the reality and unreality be determined? This great doubt arises in me like a dream.

शिकारी ने कहा: हे मुनिश्रेष्ठ, यदि ऐसा है, तो सत्यता और असत्यता कैसे निश्चित होती है? यह महान संशय मुझे स्वप्न की तरह लगता है।

7.148.2

मुनिरुवाच देशकालक्रियाद्रव्यैर्या संविन्निश्चितोदिता काकतालीयवद्भाति सा सत्यस्वप्ननामिका ॥ २ ॥

muniruvāca deśakālakriyādravyair yā saṃvinniścitoditā kākatālīyavad bhāti sā satyasvapnanāmikā || 2 ||

The sage said: That which is determined by place, time, action, and substance, appears like the crow's palm fruit and is called true dream.

ऋषि ने कहा: जो स्थान, समय, क्रिया और द्रव्य से निश्चित होता है, वह काकतालीय की तरह प्रतीत होता है और सत्य स्वप्न कहलाता है।

7.148.3

मणिमन्त्रौषधिद्रव्यैः क्वचिदव्यभिचारिणी क्वचित्सव्यभिचारा चित्सत्यस्वप्नाभिधा स्मृता ॥ ३ ॥

maṇimantrauṣadhidravyaiḥ kvacidavyabhicāriṇī kvacitsavyabhicārā citsatyasvapnābhidhā smṛtā || 3 ||

Sometimes, through gems, mantras, and herbs, it is unfailing, and sometimes it is failing. Thus, it is remembered as the true dream of consciousness.

कभी-कभी, मणि, मंत्र और औषधि द्वारा, यह अव्यभिचारी होता है, और कभी-कभी यह सव्यभिचारी होता है। इस प्रकार, यह चेतना के सत्य स्वप्न के रूप में स्मरण किया जाता है।

7.148.4

सत्यस्वप्नस्थितिर्लोकेष्वीदृग्रूपा यदा स्थिता तदैषा काकतालीयन्यायादन्या न लभ्यते ॥ ४ ॥

satyasvapnasthitirlokeṣvīdṛgrūpā yadā sthitā tadaiṣā kākatālīyanyāyādanyā na labhyate || 4 ||

When the state of the true dream is established in the worlds in such a form, then it cannot be obtained by any other means than the logic of the crow's palm fruit.

जब सत्य स्वप्न की स्थिति लोकों में ऐसे रूप में स्थापित होती है, तब यह काकतालीय न्याय के अलावा किसी अन्य उपाय से प्राप्त नहीं हो सकती।

7.148.5

यं यं निश्चयमादत्ते संवित्स्वदृढनिश्चया तथा तथा भवत्येषा फलयुक्तस्वभावतः ॥ ५ ॥

yaṃ yaṃ niścayamādatte saṃvitsvadṛḍhaniścayā tathā tathā bhavatyeṣā phalayuktasvabhāvataḥ || 5 ||

Whatever determination consciousness firmly takes, accordingly it becomes, due to its nature endowed with results.

जो-जो निश्चय चेतना दृढ़ता से ग्रहण करती है, वैसा-वैसा यह बनती है, फलों से युक्त स्वभाव के कारण।

7.148.6

तमेव निश्चयं त्वस्या अन्यः प्रतिनिहन्ति चेत्। तत्रासौ निश्चयः प्रौढः स कथं लक्ष्यभाग्भवेत्॥ ६॥

tameva niścayaṃ tvasyā anyaḥ pratinihanti cet | tatrāsau niścayaḥ prauḍhaḥ sa kathaṃ lakṣyabhāgbhavet || 6 ||

If someone else obstructs her resolve, how can that resolve become the target?

अगर कोई और उसके निश्चय को रोकता है, तो वह निश्चय लक्ष्य कैसे बन सकता है?

7.148.7

न बहिर्नान्तरे सन्ति पदार्थाः केचन क्वचित्। संविदेका जगद्रूपैर्यथेच्छति तथा स्थिता॥ ७॥

na bahirnāntare santi padārthāḥ kecana kvacit | saṃvidekā jagadrūpairyathecchati tathā sthitā || 7 ||

There are no objects anywhere, either outside or inside. Consciousness alone exists in the forms of the world as it desires.

न तो बाहर और न ही अंदर कोई पदार्थ है। चेतना ही जगत के रूपों में जैसे चाहती है वैसे स्थित है।

7.148.8

स्वप्नोऽयं सत्य इत्यन्तर्निश्चयेन तथोदिता। तथैवाशु भवत्येषा संशयात्संशयं व्रजेत्॥ ८॥

svapno'yaṃ satya ityantarniścayena tathoditā | tathaivāśu bhavaty eṣā saṃśayātsaṃśayaṃ vrajet || 8 ||

This dream is considered true by internal resolve, and thus it is said. Similarly, it quickly becomes real from doubt to doubt.

यह स्वप्न अंतर्निश्चय से सत्य माना जाता है, और इस प्रकार कहा जाता है। इसी तरह, यह शीघ्र ही संशय से संशय में सत्य बन जाता है।

7.148.9

अन्यतोऽपि फलं प्राप्तं स्वप्नसत्यत्वकल्पनात्। स्वप्नेन सूचितमिदं फलमित्येव वेत्त्ययम्॥ ९॥

anyato'pi phalaṃ prāptaṃ svapnasatyatvakalpanāt | svapnena sūcitamidaṃ phalamityeva vetyayam || 9 ||

Even from another source, the result is obtained by imagining the dream as true. This result is indicated by the dream itself, thus one knows it.

दूसरे स्रोत से भी, स्वप्न को सत्य मानने से फल प्राप्त होता है। यह फल स्वप्न द्वारा ही सूचित होता है, इसलिए इसे जाना जाता है।

7.148.10

सर्व एव निजया जगत्त्रये संविदातिशयिता दृढा अपि। कालतो व्यभिचरन्ति देशतो यत्नतश्च चिरतोऽचिरेण वा॥ १०॥

sarva eva nijayā jagattraye saṃvidātiśayitā dṛḍhā api | kālato vyabhicaranti deśato yatnataśca cirato'ciraeṇa vā || 10 ||

All things in the three worlds, though firmly established by their own consciousness, deviate over time, place, effort, and duration.

तीनों जगत में सभी चीजें, अपनी चेतना से दृढ़तापूर्वक स्थापित होने के बावजूद, समय, स्थान, प्रयास और अवधि के साथ विचलित हो जाती हैं।

7.148.11

सर्गादावेव चिद्व्योम भानमप्रतिघं जगत्। वस्तुसत्तां चिदेवातो यथेष्टं तनुते तनुः॥ ११॥

sargādāveva cidvyoma bhānamapratighaṃ jagat | vastusattāṃ cidevāto yatheṣṭaṃ tanute tanuḥ || 11 ||

In the beginning of creation, the sky of consciousness shines unobstructed in the world. The substance of existence, from consciousness itself, manifests as desired.

सृष्टि के आरंभ में, चेतना का आकाश बाधारहित रूप से जगत में चमकता है | अस्तित्व की वस्तु, चेतना से ही, इच्छानुसार प्रकट होती है।

7.148.12

चिन्मात्रं वर्जयित्वैकं ब्रह्मान्यत्सर्वदाखिलम्। विद्धि सत्यमसत्यं च नियतानियतं स्थितम्॥ १२॥

cinmātraṃ varjayitvaikaṃ brahmānyatsarvadākhilam | viddhi satyamasatyaṃ ca niyatāniyataṃ sthitam || 12 ||

Know that everything other than the pure consciousness of Brahman is both real and unreal, fixed and unfixed.

जान लो कि ब्रह्म की शुद्ध चेतना के अलावा सब कुछ सत्य और असत्य, नियत और अनियत है।

7.148.13

यस्माद्ब्रह्मैव सर्वात्म सदेकमेव नेतरत्। तस्मात्किं नाम तत्सत्यं किमसत्यं च वा भवेत्॥ १३॥

yasmādbrahmaiva sarvātma sadekameva netarat | tasmātkiṃ nāma tatsatyam kimasatyaṃ ca vā bhavet || 13 ||

Since Brahman alone is the self of all, the only reality, and nothing else, what then is real and what is unreal?

क्योंकि ब्रह्म ही सबका आत्मा है, एकमात्र वास्तविकता है, और कुछ नहीं, तो फिर क्या सत्य है और क्या असत्य है?

7.148.14

अतः स्वप्नः क्वचित्सत्यः क्वचिच्चासत्य एव वा। अबुद्धानां प्रबुद्धानां नासद्रूपो न सन्मयः॥ १४॥

ataḥ svapnaḥ kvacitsatyaḥ kvaciccāsatya eva vā | abuddhānāṃ prabuddhānāṃ nāsadrūpo na sanmayaḥ || 14 ||

Therefore, a dream is sometimes real and sometimes unreal. For the ignorant, it is neither real nor unreal, but for the enlightened, it is neither unreal nor real.

इसलिए, स्वप्न कभी सत्य होता है और कभी असत्य। अज्ञानी के लिए यह न तो सत्य है न असत्य, लेकिन ज्ञानी के लिए यह न तो असत्य है न सत्य।

7.148.15

संविद्भ्रान्तिरियं भाति जगन्नाम्नी स्वरूपिणी। स्वयं च भ्रान्तिरस्मीतिवादिनी कात्र निश्चिता॥ १५॥

saṃvidbhrāntiriyam bhāti jagannāmnī svarūpiṇī | svayaṃ ca bhrāntirasmītivādinī kātra niścitā || 15 ||

This delusion of consciousness appears as the world, which is its own form. It itself declares, 'I am delusion,' and is firmly established here.

यह चेतना की भ्रांति जगत के रूप में प्रकट होती है, जो उसका अपना ही रूप है। यह स्वयं कहती है, 'मैं भ्रांति हूँ,' और यहाँ दृढ़तापूर्वक स्थापित है।

7.148.16

चितिरेव चिरायेदं चित्तं चिमचिमायतेयदात्मन्येव सलिलं द्रववत्तदिदं जगत्॥ १६॥

citireva cirāyedaṃ cittaṃ cimacimāyateyadātmanyeva salilaṃ dravavattadidaṃ jagat || 16 ||

Just as water flows, so does this world flow in the self.

जैसे पानी बहता है, वैसे ही यह संसार आत्मा में बहता है।

7.148.17

यथा स्वप्नं समालोक्य सुषुप्तमनुभूयतेतथा जाग्रत्समालोक्य निद्रा समनुभूयते॥ १७॥

yathā svapnaṃ samālokya suṣuptamanubhūyatetathā jāgratsamālokya nidrā samanubhūyate || 17 ||

Just as one experiences deep sleep after seeing a dream, so one experiences sleep after seeing the waking state.

जैसे सपना देखने के बाद गहरी नींद का अनुभव होता है, वैसे ही जाग्रत अवस्था देखने के बाद नींद का अनुभव होता है।

7.148.18

अतस्त्वं जाग्रदेवेदं स्वप्नं विद्धि महामतेस्वप्नं च विद्धि जाग्रत्त्वमेकमेतदजं द्वयम् ॥ १८ ॥

atastvaṃ jāgradevedaṃ svapnaṃ viddhi mahāmatesvapnaṃ ca viddhi jāgrattvamekametadajaṃ dvayam || 18 ||

Therefore, know the waking state as a dream, O wise one, and know the dream as the waking state. This one is unborn and dual.

इसलिए, हे बुद्धिमान, जाग्रत अवस्था को सपना समझो, और सपना को जाग्रत अवस्था समझो। यह एक अजन्मा और द्वैत है।

7.148.19

व्योमैवाचेत्यचिन्मात्रभानमेकमिदं ततम्जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्याः पर्यायरचना इह ॥ १९ ॥

vyomaivācetyacinmātrabhānamekamidaṃ tatamjāgratsvapnasuṣuptyākhyāḥ paryāyaracanā iha || 19 ||

This one, which is pure consciousness, is pervaded by space alone. The states of waking, dreaming, and deep sleep are merely different manifestations here.

यह एक, जो शुद्ध चेतना है, केवल आकाश से व्याप्त है। जाग्रत, सपना और गहरी नींद की अवस्थाएं यहां केवल अलग-अलग रूपांतर हैं।

7.148.20

नेह नामास्ति नियतिर्न चानियतिरस्ति चानियत्यनियती ब्रूहि कीदृशे स्वप्नसंविदि ॥ २० ॥

neha nāmāsti niyatirna cāniyatirasti caniyatyaniyatī brūhi kīdṛśe svapnasaṃvidi || 20 ||

Here, there is no fixed rule, nor is there any unfixed rule. Tell me, what kind of dream consciousness is this, which is neither fixed nor unfixed?

यहां, कोई निश्चित नियम नहीं है, न ही कोई अनिश्चित नियम है। बताओ, यह कैसी सपना चेतना है, जो न तो निश्चित है न ही अनिश्चित?

7.148.21

यावद्भानं किल स्वप्ने तावत्सैव नियन्त्रणा । स एव संविद्भानस्य कुर्यान्नियमनं मुनिः ॥ २१ ॥

yāvadbhānaṃ kila svapne tāvatsaiva niyantraṇā | sa eva saṃvidbhānasya kuryānniyamanaṃ muniḥ || 21 ||

As long as the light of consciousness shines in the dream, so long does the control persist | The sage should control the manifestation of consciousness || 21 ||

जब तक चेतना का प्रकाश स्वप्न में चमकता है, तब तक नियंत्रण बना रहता है | मुनि को चेतना के प्रकटन का नियंत्रण करना चाहिए || २१ ||

7.148.22

स्वच्छन्दं वातलेखायाः स्फुरन्त्याः संविदस्तथा । अकारणकमेवाङ्ग नियतिः केव कीदृशी ॥ २२ ॥

svacchandaṃ vātalekhāyāḥ sphurantyāḥ saṃvidas tathā | akāraṇakamevāṅga niyatiḥ keva kīdṛśī || 22 ||

The spontaneous movement of the wind's writing, thus the consciousness sparkles | What kind of destiny is this, without any cause? || 22 ||

हवा की लेखनी की स्वतःस्फूर्त गति, ऐसे ही चेतना चमकती है | बिना किसी कारण के यह कैसी नियति है? || २२ ||

7.148.23

अथाकारादि यन्नाम कल्प्यते कारणं विदः । तदकारणकं सर्गः स्यादनन्यन्न वै चितेः ॥ २३ ॥

athākārādi yannāma kalpyate kāraṇaṃ vidaḥ | tadakāraṇakaṃ sargaḥ syādananyanna vai citeḥ || 23 ||

Then, the name that is imagined as the cause starting with 'A' | That creation is without cause, not different from consciousness || 23 ||

फिर, जो नाम 'अ' से शुरू होकर कारण के रूप में कल्पित किया जाता है | वह सृष्टि अकारण है, चेतना से भिन्न नहीं है || २३ ||

7.148.24

एतावत्येव नियतिरत्र यन्नाम यद्यथा । यावत्प्रस्फुरितं भानं तत्तथा न तदन्यथा ॥ २४ ॥

etāvatyeva niyatiratra yannāma yadyathā | yāvatprasphuriataṃ bhānaṃ tattathā na tadanyathā || 24 ||

This is the extent of destiny here, whatever name, however it may be | As long as the shining manifests, it is so, not otherwise || 24 ||

यही नियति की सीमा है, जो भी नाम, जैसे भी हो | जब तक चमक प्रकट होती है, वैसा ही है, दूसरे नहीं || २४ ||

7.148.25

कदाचित्सत्यता स्वप्ने कदाचिच्चाप्यसत्यता । अभावान्नियतेरेव काकतालीयमेव तत् ॥ २५ ॥

kadācitsatyatā svapne kadāciccāpyasatyatā | abhāvānniyatereva kākatālīyameva tat || 25 ||

Sometimes truth in dream, sometimes even falsity | Due to the absence of destiny, it is like the crow's tale || 25 ||

कभी स्वप्न में सत्यता, कभी असत्यता भी | नियति के अभाव के कारण, यह कौए की कहानी की तरह है || २५ ||

7.148.26

यत्स्वेनैवात्मना भाति मणिमन्त्रौषधात्मना । यन्नाम नियतं तत्तु जाग्रत्यपि हि दृश्यते ॥ २६ ॥

yatsvenaivātmanā bhāti maṇimantrauṣadhātmanā | yannāma niyataṃ tattu jāgratyapi hi dṛśyate || 26 ||

That which shines by its own nature, like a gem, mantra, or medicine, and whose name is fixed, is seen even in the waking state.

जो अपने स्वभाव से चमकता है, जैसे मणि, मन्त्र या औषधि, और जिसका नाम निश्चित है, वह जाग्रत अवस्था में भी दिखाई देता है।

7.148.27

जाग्रत्स्वप्नश्च चिद्भानमात्रमेवान्यतात्र का । जाग्रति स्वप्ननगरे वेदनात्सदृशात्मकम् ॥ २७ ॥

jāgratsvapnaśca cidbhānamātramevānyatātra kā | jāgrati svapnanagare vedanātsadṛśātmakam || 27 ||

Both the waking and dream states are merely the manifestation of consciousness. In the waking state, the dream city is perceived as similar to the experience.

जाग्रत और स्वप्न दोनों अवस्थाएँ केवल चेतना का प्रकटीकरण हैं। जाग्रत अवस्था में, स्वप्न नगर अनुभव के समान दिखाई देता है।

7.148.28

जाग्रन्न संभवत्येव यज्जाग्रदिति शब्दितम् । स्वप्न एव जगद्रूपं निर्निद्रस्यैव चात्मनः ॥ २८ ॥

jāgrann na saṃbhavatyeva yajjāgraditi śabditaṃ | svapna eva jagadrūpaṃ nirnidrasyaiva cātmanaḥ || 28 ||

What is called the waking state does not truly exist. The world is merely a dream for the self that is ever awake.

जो जाग्रत अवस्था कहलाती है, वह वास्तव में नहीं होती। संसार केवल एक स्वप्न है सदा जाग्रत आत्मा के लिए।

7.148.29

स्वप्नो वा नाम नास्त्येव यः स्वप्न इव शब्दितः । सुप्तासुप्तैकरूपस्य ब्रह्मणो बोधरूपता ॥ २९ ॥

svapno vā nāma nāstyeva yaḥ svapna iva śabditaḥ | suptāsuptaikarūpasya brahmaṇo bodharūpatā || 29 ||

Even the dream state does not truly exist. What is called a dream is merely a name. The nature of Brahman is awareness, whether asleep or awake.

स्वप्न अवस्था भी वास्तव में नहीं होती। जो स्वप्न कहलाता है, वह केवल एक नाम है। ब्रह्म का स्वभाव चेतना है, चाहे सोया हुआ हो या जाग्रत।

7.148.30

जाग्रत्स्वप्नादयो वैते न केचन कदाचन । दृश्यं पश्यति सत्ताशु मृतिभ्रान्तेरनन्तरम् ॥ ३० ॥

jāgratsvapnādayo vaite na kecana kadācana | dṛśyaṃ paśyati sattāśu mṛtibhrānteranantaram || 30 ||

These states of waking, dreaming, etc., do not exist at any time. The seer sees the seen immediately after the illusion of death.

ये जाग्रत, स्वप्न आदि अवस्थाएँ कभी भी नहीं होतीं। देखने वाला मृत्यु के भ्रम के बाद तुरंत देखता है।

7.148.31

यथानवरतं कालमनन्तं सीकरोर्मयः । त एवान्यवदभ्राशावदनन्याः स्फुरन्त्यलम् ॥ ३१ ॥

yathānavarataṃ kālamanantaṃ sīkarormayaḥ| ta evānyavadabhrāśāvadananyāḥ sphurantyalam || 31 ||

Just as the continuous flow of water droplets appears to be a continuous stream, similarly, other manifestations appear to be continuous and endless.

जैसे बूंदों का लगातार प्रवाह एक अनवरत धारा की तरह दिखता है, वैसे ही अन्य सृष्टियाँ भी अनवरत और अनन्त प्रतीत होती हैं।

7.148.32

तथानन्ये परे सर्गाः स्फुरन्त्यस्फुरिता अपि । शिलाकोशान्तलेखावज्जाग्रत्स्वापादि तत्र किम् ॥ ३२ ॥

tathānye pare sargāḥ sphurantyasphuritā api| śilākośāntalekhāvajjāgratsvāpādi tatra kim || 32 ||

Similarly, other higher creations also appear to be manifested, even if they are not. Like the lines on a stone or a wall, what is the reality in the states of wakefulness, dream, etc.?

इसी प्रकार, अन्य उच्च सृष्टियाँ भी प्रकट होती प्रतीत होती हैं, भले ही वे वास्तव में न हों। जैसे पत्थर या दीवार पर रेखाएँ, जाग्रत अवस्था, स्वप्न आदि में वास्तविकता क्या है?

7.148.33

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ततुर्यकवपुः साकारतावर्जितं सर्वाकारमपि व्यतीतकलनं सर्गं शरीरं दधत् । व्याप्तं चिद्वपुषा तथापि सुषिरं शून्येन दृश्यात्मना चिन्मात्रं खमिदं मनागपि नभोमात्रान्न भिन्नं पुनः ॥ ३३ ॥

jāgratsvapnasuṣuptaturyakavapuḥ sākāratāvarjitaṃ sarvākāramapi vyatītakalanaṃ sargaṃ śarīraṃ dadhat| vyāptaṃ cidvapuṣā tathāpi suṣiraṃ śūnyena dṛśyātmanā cinmātraṃ khamidaṃ manāgapi nabhomātrānna bhinnaṃ punaḥ || 33 ||

The body that possesses the states of wakefulness, dream, deep sleep, and the fourth state, devoid of form, yet encompassing all forms, beyond all calculations, is pervaded by consciousness. Although it appears empty, it is filled with the essence of consciousness, and this sky is not different from the mere sky.

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और चतुर्थ अवस्था को धारण करने वाला शरीर, जो रूपरहित है, फिर भी सभी रूपों को समेटे हुए है, सभी गणनाओं से परे है, चेतना से व्याप्त है। भले ही यह खाली प्रतीत होता है, यह चेतना की आत्मा से भरा हुआ है, और यह आकाश केवल आकाश से भिन्न नहीं है।

7.148.34

साकाशानिलवह्निवारिधरणीलोकान्तराम्भोधरं सर्गादावपि कारणाननुभवाच्चित्तात्मकं केवलम् । नाम्ना वर्जितमेव बोधवपुषा संयुक्तमेवान्ततः शुद्धं वेदनमात्रमेव सकलं दृश्यं न वस्त्वन्तरम् ॥ ३४ ॥

sākāśānilavahṇivāridharaṇīlokāntarāmbhodharaṃ sargādāvapi kāraṇānanubhavāccittātmakaṃ kevalam| nāmnā varjitameva bodhavapuṣā saṃyuktamevāntataḥ śuddhaṃ vedanamātrameva sakalaṃ dṛśyaṃ na vastvantaram || 34 ||

Even at the beginning of creation, the universe, including the sky, air, fire, water, earth, and other worlds, is purely consciousness. Devoid of names, it is united with the form of awareness. Pure experience alone is the entire visible reality, and there is no other substance.

सृष्टि के आरंभ में भी, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और अन्य लोकों सहित ब्रह्मांड पूर्ण रूप से चेतना है। नामों से रहित, यह बोध के रूप से जुड़ा हुआ है। शुद्ध अनुभव ही सम्पूर्ण दृश्य वास्तविकता है, और कोई अन्य पदार्थ नहीं है।

Chapter 149

7.149.1

व्याध उवाच । अनन्तरं मुने ब्रूहि तत्तत्त्वं जागतस्य ते । किं वृत्तमुरुवृत्तान्तशतनिर्वाणसंसृतेः ॥ १ ॥

vyādha uvāca | anantaraṃ mune brūhi tattattvaṃ jāgatasya te | kiṃ vṛttamuru vṛttāntaśatanirvāṇasaṃsṛteḥ || 1 ||

The hunter said: O sage, please tell me the truth of the world. What is the great story of liberation and transmigration?

शिकारी ने कहा: हे मुनि, कृपया मुझे संसार का सत्य बताएं। मोक्ष और जन्म-मरण की विशाल कथा क्या है?

7.149.2

मुनिरुवाच । ततः श्रृणु तदा साधो तस्मिंस्तद्धृदयौजसि । अपूर्वं एव वृत्तान्तः को वृत्तो वृत्तसस्पृह ॥ २ ॥

muniruvāca | tataḥ śṛṇu tadā sādho tasmiṃstaddhṛdayaujasi | apūrvaṃ eva vṛttāntaḥ ko vṛtto vṛttasaspṛha || 2 ||

The sage said: Then listen, O virtuous one, to that extraordinary story which took place in that heart's strength. What happened to the one who desired the story?

मुनि ने कहा: तब सुनो, हे साधु, उस हृदय की शक्ति में जो अद्भुत कथा हुई। कथा की इच्छा रखने वाले के साथ क्या हुआ?

7.149.3

तथा मम च तत्रस्थविस्मृतात्मचमत्कृतेः । अभ्यवर्तत वै कालो ऋतुसंवत्सरात्मकः ॥ ३ ॥

tathā mama ca tatrasthavismṛtātmacamatkṛteḥ | abhyavartata vai kālo ṛtusaṃvatsarātmakaḥ || 3 ||

Thus, for me, who was there, forgetful of the self and amazed, time passed in the form of seasons and years.

इस प्रकार, मेरे लिए, जो वहाँ था, आत्मा को भूल गया और आश्चर्यचकित हो गया, समय ऋतुओं और वर्षों के रूप में बीत गया।

7.149.4

कलत्ररञ्जितमतेर्मम वर्षाणि षोडश । तत्र तानि व्यतीतानि गृहस्थाश्रमतोऽमतेः ॥ ४ ॥

kalatrarañjitamatermama varṣāṇi ṣoḍaśa | tatra tāni vyatītāni gṛhasthāśramato'mateḥ || 4 ||

For me, whose mind was delighted by my wife, sixteen years passed in the householder's stage.

मेरे लिए, जिसका मन पत्नी से प्रसन्न था, गृहस्थ आश्रम में सोलह वर्ष बीत गए।

7.149.5

कदाचिच्चाजगामाथ गृहमुग्रतपा मम । मुनिर्मान्यो महाबोधो बुधोऽतिथितया तथा ॥ ५ ॥

kadāciccājagāmātha gṛhamugratapā mama | munirmānyo mahābodho budho'tithitayā tathā || 5 ||

Once, a revered sage of great wisdom, who was performing severe austerities, came to my house as a guest.

एक बार, एक महान ज्ञानी मुनि, जो कठोर तपस्या कर रहे थे, मेरे घर अतिथि के रूप में आए।

7.149.6

सोऽत्र संपूजितस्तुष्टः सुप्तवान्भुक्तवांस्ततः । इदमङ्ग मया पृष्टो विमृश्य जनताक्रमम् ॥ ६ ॥

so'tra saṃpūjitastuṣṭaḥ suptavānbhuktavāṃstataḥ | idamaṅga mayā pṛṣṭo vimṛśya janatākramam || 6 ||

There, he was honored and satisfied, then he slept and ate. After that, he asked this question, considering the behavior of the people.

वहाँ, उसे सम्मानित और संतुष्ट किया गया, फिर उसने सोया और खाया। उसके बाद, उसने लोगों के व्यवहार को सोचते हुए यह प्रश्न पूछा।

7.149.7

भगवन्भूरिबोधोऽसि जानासि जगतो गतीः । यस्माददृष्टक्रोधोऽसि सुखे गृह्णासि नो रतिम् ॥ ७ ॥

bhagavanbhūribodho'si jānāsi jagato gatīḥ | yasmādadṛṣṭakrodho'si sukhe gṛhṇāsi no ratiṃ || 7 ||

O Lord, you are the one with immense knowledge, you know the ways of the world. Since you are not visibly angry, you do not take pleasure in happiness.

हे भगवान, आप अत्यंत ज्ञानी हैं, आप संसार के मार्गों को जानते हैं। क्योंकि आप दृश्य रूप से क्रोधित नहीं हैं, आप सुख में आनंद नहीं लेते।

7.149.8

सुखदुःखान्युपायान्ति कर्मभिः कर्मशालिनाम् । शुभाशुभैः शरत्काले सस्यानीव फलार्थिनाम् ॥ ८ ॥

sukhaduḥkhānyupāyānti karmabhiḥ karmaśālinām | śubhāśubhaiḥ śaratkāle sasyānīva phalārthinām || 8 ||

Happiness and sorrow come through actions to those who perform actions. Like crops seeking fruits in the autumn season, they come through good and bad deeds.

सुख और दुःख कर्मों से उन लोगों को प्राप्त होते हैं जो कर्म करते हैं। जैसे शरद ऋतु में फसलें फलों की तलाश में होती हैं, वैसे ही अच्छे और बुरे कर्मों से वे प्राप्त होते हैं।

7.149.9

सममेवाशुभं कर्म किमिमाः सकलाः प्रजाः । कुर्वन्त्यासां यदा यान्ति दोषाः सर्वादयः समम् ॥ ९ ॥

samamevāśubhaṃ karma kimimāḥ sakalāḥ prajāḥ | kurvantyāsāṃ yadā yānti doṣāḥ sarvādayaḥ samam || 9 ||

Why do all people perform the same sinful actions? When they all commit the same faults, why do they all face the same consequences?

सभी लोग एक ही पाप कर्म क्यों करते हैं? जब वे सभी एक ही दोष करते हैं, तो वे सभी एक ही परिणाम क्यों भुगतते हैं?

7.149.10

दुर्भिक्षावग्रहोत्पातं सर्वादि सममेव किम् । जनजालस्य फलति समाना कस्य दुष्क्रिया ॥ १० ॥

durbhikṣāvagrahotpātaṃ sarvādi samameva kim | janajālasya phalati samānā kasya duṣkriyā || 10 ||

Why do famine, plague, and calamities affect everyone equally? Whose evil deeds cause the same consequences for the entire population?

भुखमरी, महामारी और आपदाएँ सबको समान रूप से क्यों प्रभावित करती हैं? किसके बुरे कर्मों की वजह से सारी जनता पर समान परिणाम आते हैं?

7.149.11

इत्याकर्ण्य समालोक्य स्मयमान इवोन्मनाः । स उवाच वचो वन्द्यममृतस्यन्दसुन्दरम् ॥ ११ ॥

ityākarṇya samālokya smayamāna ivonmanāḥ | sa uvāca vaco vandyamamṛtasyandasundaram || 11 ||

Having heard and observed, he smiled slightly and spoke these venerable words, beautiful like the flow of nectar.

सुनकर और देखकर, वह थोड़ा मुस्कुराया और इन वंदनीय शब्दों को बोला, जो अमृत की धारा के समान सुंदर थे।

7.149.12

अन्यमुनिरुवाच । साधो साधु विविक्तान्तःकरणे यत्तु कारणम् । सद्वासद्वास्य दृश्यस्य कस्माज्जानासि कथ्यताम् ॥ १२ ॥

anyamuniruvāca | sādho sādhu viviktāntaḥkaraṇe yattu kāraṇam | sadvāsadvāsya dṛśyasya kasmājjānāsi kathyatām || 12 ||

Another sage said: O virtuous one, well done! In the pure inner mind, what is the cause? How do you know the reality or unreality of the visible? Please explain.

दूसरे ऋषि ने कहा: हे साधु, बहुत अच्छा! शुद्ध अंतःकरण में, कारण क्या है? दृश्य की सत्यता या असत्यता कैसे जानते हो? कृपया समझाएं।

7.149.13

संस्मरात्मानमखिलं कस्त्वं क्वेह स्थितोऽसि च । क्वाहं वा किमिदं दृश्यं किं सारं किंचिदेव च ॥ १३ ॥

saṃsmarātmānamakhilaṃ kastvaṃ kveha sthito'si ca | kvāhaṃ vā kimidaṃ dṛśyaṃ kiṃ sāraṃ kiṃcid eva ca || 13 ||

Remember your entire self. Who are you? Where are you situated here? Where am I? What is this visible? What is the essence? What is anything at all?

अपने पूरे स्वरूप को याद करो। तुम कौन हो? तुम यहां कहां स्थित हो? मैं कहां हूं? यह दृश्य क्या है? सार क्या है? कुछ भी क्या है?

7.149.14

स्वप्नमात्रमिदं भाति किल कस्मान्न वेत्सि भो । अहं स्वप्ननरो यत्ते त्वं स्वप्नपुरुषोपमः ॥ १४ ॥

svapnamātramidaṃ bhāti kila kasmānnna vetsi bho | ahaṃ svapnanaro yatte tvaṃ svapnapuruṣopamaḥ || 14 ||

Why do you not know that this appears to be merely a dream? O, you are like a dream person to me, a dream man.

इसे केवल एक स्वप्न के रूप में क्यों नहीं जानते? हे, तुम मेरे लिए एक स्वप्न व्यक्ति के समान हो, एक स्वप्न पुरुष।

7.149.15

अनाकारमनाख्येयमनाद्यमपकल्पनम् । इदं चिन्मात्रकाचस्य काचकच्यं जगत्स्थितम् ॥ १५ ॥

anākāramanākhyeyamanādyamapakalpanam | idaṃ cinmātrakācasya kācakacyaṃ jagatsthitam || 15 ||

This is formless, inexpressible, without beginning, and without imagination. This world is a mere reflection in the mirror of pure consciousness.

यह निराकार, अव्यक्त, अनादि, और अकल्पनीय है। यह जगत शुद्ध चेतना के दर्पण में एक प्रतिबिंब मात्र है।

7.149.16

रूपमीदृशमेवास्य चिन्मात्रस्यास्त्यकृत्रिमम् । सर्वगस्य यदेतद्यद्यत्र वेत्यस्ति तत्र तत् ॥ १६ ॥

rūpamīdṛśamevāsya cinmātrasyaastyakṛtrimam | sarvagasya yadetadyadyatra vetyasti tatra tat || 16 ||

This form of the pure consciousness, which is uncreated, belongs to the omnipresent one. Whatever is known to exist anywhere, that exists there.

यह रूप शुद्ध चेतना का है, जो अकृत्रिम है, सर्वव्यापी का है। जो कुछ भी जहाँ भी ज्ञात होता है, वह वहाँ है।

7.149.17

सकारणत्वकलनात्सर्वमस्य सकारणम् । अकारणत्वकलनादस्य सर्वमकारणम् ॥ १७ ॥

sakāraṇatvakalanātsarvamasyasakāraṇam | akāraṇatvakalanādasyasarvamakāraṇam || 17 ||

Due to the calculation of causality, everything of this is with cause. Due to the calculation of non-causality, everything of this is without cause.

कारणत्व की गणना के कारण, इसका सब कुछ कारणवान है। अकारणत्व की गणना के कारण, इसका सब कुछ अकारण है।

7.149.18

आसां प्रजानां त्वस्माकं विराडात्मा स आततः । वयं हृदि स्थिता यस्य स चास्मच्चिद्वशादितः ॥ १८ ॥

āsāṃ prajānāṃ tvasmākaṃ virāḍātmā sa ātataḥ | vayaṃ hṛdi sthitā yasya sa cāsmaccidvaśāditaḥ || 18 ||

The universal soul is indeed the essence of these creatures, of us. We are situated in the heart of that which is under our control of consciousness.

यह विराट् आत्मा इन प्रजाओं का, हमारा आत्मा है। हम उसके हृदय में स्थित हैं, जो हमारे चेतना के अधीन है।

7.149.19

भविष्यत्यपरोऽन्यासां विराडात्मा स एव च । कारणं सुखदुःखानां भावाभावात्मकर्मणाम् ॥ १९ ॥

bhaviṣyatyaparo'nyāsāṃ virāḍātmā sa eva ca | kāraṇaṃ sukhaduḥkhānāṃ bhāvābhāvātmakarmaṇām || 19 ||

Another will be the universal soul, the same. It is the cause of happiness and sorrow, of actions that are existent and non-existent.

दूसरा भी विराट् आत्मा ही होगा। यह सुख और दुःख का कारण है, जो अस्तित्व और अनस्तित्व के कर्मों का कारण है।

7.149.20

विराड्धातुविकारेण विषमस्पन्दनादिना । तदङ्गावयवस्यास्य जनजालस्य वै समम् ॥ २० ॥

virāḍdhātuvikāreṇa viṣamaspanadānādinā | tadaṅgāvayavasyāsya janajālasya vai samam || 20 ||

By the transformation of the elements of the universal soul, through uneven vibrations, the parts and limbs of this network of people are indeed the same.

विराट् आत्मा के तत्वों के परिवर्तन से, असमान स्पंदन के द्वारा, इस जनजाल के अंग और अवयव वास्तव में समान हैं।

7.149.21

दुर्भिक्षावग्रहातीतमायाति शममेति वा । यस्माद्विराजो या सत्ता सा सर्गस्यास्य सर्गता ॥ २१ ॥

durbhikṣāvagrahātītamāyāti śamameti vā | yasmādvirājo yā sattā sā sargasyāsya sargatā || 21 ||

That which overcomes famine and other calamities attains peace or tranquility. The existence that arises from this is the creation of this creation.

जो अकाल और अन्य विपत्तियों से बच जाता है, वह शांति या शांति प्राप्त करता है। जो अस्तित्व इससे उत्पन्न होता है, वह इस सृष्टि की सृष्टि है।

7.149.22

काकतालीयवत्साधो केषुचिद्दुष्टकर्मसु । समं पतति दुःखादि पादपेष्वशनिर्यथा ॥ २२ ॥

kākatālīyavatsādho keṣucidduṣṭakarmasu | samaṃ patati duḥkhādi pādapeṣvaśaniryathā || 22 ||

Just as the crow and the palm fruit fall together, so do misfortune and suffering befall those who perform evil deeds, like lightning striking trees.

जैसे कौआ और ताड़ का फल साथ-साथ गिरते हैं, वैसे ही दुर्भाग्य और दुःख उन पर आते हैं जो बुरे कर्म करते हैं, जैसे बिजली पेड़ों पर गिरती है।

7.149.23

कर्मकल्पनया संवित् स्वकर्मफलभागिनी । कर्मकल्पनयोन्मुक्ता न कर्मफलभागिनी ॥ २३ ॥

karmakalpanayā saṃvit svakarmaphalabhāginī | karmakalpanayonmuktā na karmaphalabhāginī || 23 ||

One who is conscious of the consequences of their actions is a partaker of the fruits of their actions. One who is free from the concept of action is not a partaker of the fruits of their actions.

जो अपने कर्मों के परिणामों के प्रति सचेत है, वह अपने कर्मों के फलों का भागी होता है। जो कर्म की कल्पना से मुक्त है, वह अपने कर्मों के फलों का भागी नहीं होता।

7.149.24

या या यत्र यथोदेति कल्पनाल्पाथवाधिका । सा सा तत्र तथैवास्ते सहेतुकमहेतुकम् ॥ २४ ॥

yā yā yatra yathodeti kalpanālpāthavādhikā | sā sā tatra tathaivāste sahetukamahhetukam || 24 ||

Whatever arises, whether it is a small or great imagination, it remains there in that form, with or without a cause.

जो कुछ भी उत्पन्न होता है, चाहे वह छोटी या बड़ी कल्पना हो, वह वहाँ उसी रूप में रहता है, चाहे कारण हो या न हो।

7.149.25

नास्त्येव स्वप्नमये कारणसहकारि कारणादिपुरे । तस्मात्तदनादि शिवं चेतनमजरं परं ब्रह्म ॥ २५ ॥

nāstyeva svapnamaye kāraṇasahakāri kāraṇādipure | tasmāttadanādi śivaṃ cetanamajaraṃ paraṃ brahma || 25 ||

There is no cause or co-cause in the dream-like world. Therefore, that eternal, conscious, ageless, supreme Brahman is without beginning.

स्वप्न-जैसी दुनिया में कोई कारण या सह-कारण नहीं है। इसलिए, वह अनादि, चेतन, अजर, परम ब्रह्म है।

7.149.26

एष स्वप्नभ्रमो नाम भाति कश्चिदकारणम् । कश्चित्सकारणो भाति शून्यः सदसदात्मकः ॥ २६ ॥

eṣa svapnabhramo nāma bhāti kaścidakāraṇam | kaścitsakāraṇo bhāti śūnyaḥ sadāsadātmakaḥ || 26 ||

This illusion of dreams appears to be without cause, yet it appears to be with cause. It is void, both real and unreal.

यह स्वप्न भ्रम कभी अकारण प्रतीत होता है, कभी सकारण | यह शून्य है, सत् और असत् स्वरूप वाला ||

7.149.27

काकतालीयवद्भान्ति स्वप्नाः सकलसंविदः । ताभ्यस्तुल्योपलम्भत्वान्नान्यज्जगदिदं ततम् ॥ २७ ॥

kākatālīyavadbhānti svapnāḥ sakalasaṃvidaḥ | tābhyastulyopalambhatvānnānyajjagadidaṃ tatam || 27 ||

Like the illusion of a crow's tail, dreams are the perception of the entire consciousness. There is nothing else in this world that is different from them.

कौए की पूँछ के भ्रम की तरह, स्वप्न पूर्ण चेतना के अनुभव हैं | इस जगत में उनसे भिन्न कुछ और नहीं है ||

7.149.28

सकारणतया रूढमिह यत्तत्सकारणम् । अकारणतया रूढमिह यत्तदकारणम् ॥ २८ ॥

sakāraṇatayā rūḍhamiha yattatsakāraṇam | akāraṇatayā rūḍhamiha yattadakāraṇam || 28 ||

That which is established here with cause is with cause. That which is established here without cause is without cause.

जो यहाँ सकारण रूप में स्थापित है, वह सकारण है | जो यहाँ अकारण रूप में स्थापित है, वह अकारण है ||

7.149.29

कार्यकारणमयक्रमोदितं स्वप्न एष चितिभानमात्रकं । जाग्रदाख्यमहतः स्वभावकं तेन शान्तमखिलं परं विदुः ॥ २९ ॥

kāryakāraṇamayakramoditaṃ svapna eṣa citibhānamātrakaṃ | jāgradākhyamahataḥ svabhāvakaṃ tena śāntamakhilaṃ paraṃ viduḥ || 29 ||

This dream, arising from the sequence of cause and effect, is merely the manifestation of consciousness. The waking state is known as the great nature. Therefore, the entire supreme is known to be peaceful.

यह स्वप्न, कारण और परिणाम की क्रम से उत्पन्न, केवल चेतना का अभिव्यक्ति है | जाग्रत अवस्था महान स्वभाव के रूप में जानी जाती है | इसलिए, पूरा परम शांत है ||

7.149.30

सत्यकारणका भावाः के ते श्रृणु महामते । कारणं किं स्वभावानां किमिहाकाशकारणम् ॥ ३० ॥

satyakāraṇakā bhāvāḥ ke te śṛṇu mahāmate | kāraṇaṃ kiṃ svabhāvānāṃ kimihaākāśakāraṇam || 30 ||

Listen, O wise one, what are the true causes of these phenomena? What is the cause of their nature? What is the cause of space here?

सुनो, हे महामति, ये घटनाक्रम के सत्य कारण क्या हैं? उनके स्वभाव का कारण क्या है? यहाँ आकाश का कारण क्या है?

7.149.31

पृथ्व्यादेर्घनपिण्डत्वसर्गादेः किं च कारणम् । किं कारणमविद्यायाः कारणं किं स्वयंभुवः ॥ ३१ ॥

pṛthvyāderghanapiṇḍatvasargādeḥ kiṃ ca kāraṇam | kiṃ kāraṇamavidyāyāḥ kāraṇaṃ kiṃ svayaṃbhuvaḥ || 31 ||

What is the cause of the solidity of the earth and other elements? What is the cause of creation? What is the cause of ignorance? What is the cause of the self-existent one?

पृथ्वी और अन्य तत्वों की घनत्व का क्या कारण है? सृष्टि का क्या कारण है? अज्ञान का क्या कारण है? स्वयंभू का क्या कारण है?

7.149.32

सर्गादौ कारणं किं स्याद्वायूनां तेजसां च किम् । किमपां वेदनामात्ररूपाणां गगनात्मकम् ॥ ३२ ॥

sargādau kāraṇaṃ kiṃ syādvāyūnāṃ tejasāṃ ca kim | kimapāṃ vedanāmātrarūpāṇāṃ gaganātmakam || 32 ||

What is the cause at the beginning of creation? What is the cause of the winds and the fires? What is the cause of the waters, which are merely the form of sensation, and the sky?

सृष्टि के आरंभ में क्या कारण है? वायुओं और अग्नियों का क्या कारण है? जल का, जो केवल संवेदन का रूप है, और आकाश का क्या कारण है?

7.149.33

पिण्डग्रहे देहलाभे मृतानां किं च कारणम् । एवमेव प्रवर्तन्ते सर्गाः प्रथमतोऽखिलाः ॥ ३३ ॥

piṇḍagrahe dehalābhe mṛtānāṃ kiṃ ca kāraṇam | evameva pravartante sargāḥ prathamato'khilāḥ || 33 ||

What is the cause of the dead obtaining a body in the embryo? Thus, all creations begin in this manner.

मृत लोगों के गर्भ में शरीर प्राप्त करने का क्या कारण है? इस प्रकार, सभी सृष्टियाँ आरंभ होती हैं।

7.149.34

एवमेव प्रवर्तन्ते जगत्यावलयन्ति च। चक्रकाणीव नभसि चिरसंप्रेक्षणादृशा॥ ३४॥

evameva pravartante jagatyāvalayanti ca | cakrakāṇīva nabhasi cirasaṃprekṣaṇādṛśā || 34 ||

Thus, they envelop the world and move like the spokes of a wheel in the sky, visible to the long-sighted.

इस प्रकार, वे जगत को आवृत करते हैं और आकाश में पहिये की आरी की तरह चलते हैं, जो दूरदर्शी को दिखाई देते हैं।

7.149.35

एवमेव प्रवृत्तेन सर्गेण ब्रह्मरूपिणा। पश्चात्स्वस्यैव रूपस्य संज्ञाः पृथ्व्यादिकाः कृताः॥ ३५॥

evameva pravṛttena sargeṇa brahmarūpiṇā | paścātsvasyaiva rūpasya saṃjñāḥ pṛthvyādikāḥ kṛtāḥ || 35 ||

Thus, with the creation that has begun in the form of Brahma, the names of its own forms, such as earth, etc., are made.

इस प्रकार, ब्रह्मा के रूप में आरंभ हुई सृष्टि के साथ, अपने रूपों के नाम, जैसे पृथ्वी आदि, बनाए जाते हैं।

7.149.36

वातस्पन्दवदाभान्ति सर्गाः पूर्वं चिदम्बरे। स्वयमेव च कुर्वन्ति देहकारणकल्पनाः॥ ३६॥

vātaspandavadābhānti sargāḥ pūrvaṃ cidambare| svayameva ca kurvanti dehakāraṇakalpanāḥ || 36 ||

Just as the wind moves, the creations appear in the consciousness of the sky| They themselves create the concept of the body and its cause

जैसे हवा चलती है, वैसे ही आकाश की चेतना में सृष्टियाँ प्रकट होती हैं| वे स्वयं ही शरीर और उसके कारण की कल्पना करते हैं

7.149.37

यद्यथा कल्प्यते धत्ते तत्तथा नियतिर्वपुः। कल्पितायाश्चितेर्यस्मादेवमेतन्निजं वपुः॥ ३७॥

yadyathā kalpyate dhatte tattathā niyatirvapuḥ| kalpitāyāściteryasmādevametannijaṃ vapuḥ || 37 ||

Whatever is imagined, that is what the body takes on| Because of the imagined consciousness, this is one's own form

जो कुछ भी कल्पना की जाती है, शरीर उसी को धारण करता है| कल्पित चेतना के कारण, यह अपना ही रूप है

7.149.38

यद्यद्भानात्मकं रूपं प्रथमं चेतितं चिता। स्वतोऽहमेव चित्येव तदद्यापि तथा स्थितम्॥ ३८॥

yadyadbhānātmakaṃ rūpaṃ prathamaṃ cetitaṃ citā| svato'hameva citiyeva tadadyāpi tathā sthitam || 38 ||

Whatever form is first conceived by consciousness, that form remains the same even today| I myself am that consciousness

जो भी रूप पहले चेतना द्वारा सोचा जाता है, वह रूप आज भी वैसा ही है| मैं स्वयं ही वह चेतना हूँ

7.149.39

पुनरन्येन यत्नेन तदुत्कृष्टेन सैव चित्। शक्ता तदन्यथाकर्तुं यत्नेन महता पुनः॥ ३९॥

punaranyena yatnena tadutkṛṣṭena saiva cit| śaktā tadanyathākartuṃ yatnena mahatā punaḥ || 39 ||

Again, with another effort, that superior consciousness is able to change it with great effort

फिर से, एक और प्रयास से, वह उत्कृष्ट चेतना महान प्रयास से उसे बदल सकती है

7.149.40

कल्प्यते कारणं यत्र तत्र कारणसारता। न कल्प्यते विदा यत्र कारणं तदकारणम्॥ ४०॥

kalpyate kāraṇaṃ yatra tatra kāraṇasāratā| na kalpyate vidā yatra kāraṇaṃ tadakāraṇam || 40 ||

Where a cause is imagined, there is the essence of the cause| Where a cause is not imagined by the wise, that is causeless

जहाँ कारण कल्पना की जाती है, वहाँ कारण का सार है| जहाँ बुद्धिमान द्वारा कारण कल्पना नहीं की जाती, वह अकारण है

7.149.41

वात्यावर्तवदाभातमिदं प्रथममाततम्। असदेव यथा भातं तथैवाद्यापि संस्थितम्॥ ४१॥

vātyāvartavadābhātamidaṃ prathamamātatam | asadeva yathā bhātaṃ tathaivādyāpi saṃsthitam || 41 ||

This world appears like a whirlwind, it is unreal, just as it appeared in the beginning, it remains the same even today.

यह संसार वात्यावर्त की तरह प्रतीत होता है, यह असत् है, जैसे यह पहले प्रतीत हुआ था, वैसे ही आज भी यह स्थित है।

7.149.42

संभूय केचन शुभाशुभमात्मकर्म कुर्वन्ति तस्य सदृशं फलमाप्नुवन्ति। संप्राप्नुवन्ति च शिलाशनिवच्च केचिद्दुःखं त्वकारणकमेव सहस्रसंख्याः॥ ४२॥

saṃbhūya kecana śubhāśubhamātmakarma kurvanti tasya sadṛśaṃ phalamāpnuvanti | saṃprāpnuvanti ca śilāśanivaccakecidduḥkhaṃ tvakāraṇakameva sahasrasaṃkhyāḥ || 42 ||

Some people perform good and bad deeds together and reap the fruits accordingly. Others, like stones and thunderbolts, suffer pain without any cause, in thousands.

कुछ लोग अच्छे और बुरे कर्म एक साथ करते हैं और उनके अनुसार फल प्राप्त करते हैं। दूसरे, जैसे पत्थर और बिजली, बिना किसी कारण के हजारों पीड़ा भोगते हैं।

Chapter 150

7.150.1

मुनिरुवाच एवंप्रकारया युक्त्या तेनायं मुनिना तदा तथाहं बोधितो येन गतो विदितवेद्यताम् ॥ १ ॥

muniruvāca evaṃprakārayā yuktyā tenāyaṃ muninā tadā tathāhaṃ bodhito yena gato viditavedyatām || 1 ||

The sage said: By such reasoning, that sage at that time enlightened me, by whom I attained the state of knowing the knowable.

मुनि ने कहा: ऐसे तर्क से, उस मुनि ने उस समय मुझे बोध किया, जिससे मैंने ज्ञेय की जानकारी प्राप्त की।

7.150.2

ततोऽसौ न मया त्यक्तश्चिरप्रार्थनया तया अवसत्तेन तत्रासौ मृतस्यापि तथैव च ॥ २ ॥

tato'sau na mayā tyaktaścirapraārthanayā tayā avasattena tatrāsau mṛtasyāpi tathaiva ca || 2 ||

Therefore, he was not abandoned by me due to his persistent pleading. He remained there, even in death, in the same manner.

इसलिए, मैंने उसकी लगातार प्रार्थना के कारण उसे नहीं छोड़ा। वह वहां रहा, मृत्यु के बाद भी उसी तरह।

7.150.3

येनैतन्मुनिना प्रोक्तमिन्दूदयशुभं वचः सोऽयं पश्य मुनिश्रेष्ठस्तव पार्श्वे व्यवस्थितः ॥ ३ ॥

yenaitanmuninā proktamindūdayaśubhaṃ vacaḥ so'yaṃ paśya muniśreṣṭhas tava pārśve vyavasthitaḥ || 3 ||

See, this best of sages, who spoke these auspicious words at the rise of the moon, is now standing by your side.

देखो, यह श्रेष्ठ मुनि, जिसने चंद्रोदय के समय ये शुभ वचन कहे, अब तुम्हारे पास खड़ा है।

7.150.4

अनेनोक्तमनुक्तेन ममैतन्मोहघातिना दृश्यपूर्वापरज्ञेन यज्ञेनेवात्तमूर्तिना ॥ ४ ॥

anenoktamanuktena mamaetanmohaghātinā dṛśyapūrvāparajñena yajñenevāttamūrtinā || 4 ||

By him, who spoke and did not speak, my delusion was destroyed. He is like a sacrifice, with a form that knows the past and the future.

उसने, जिसने कहा और नहीं कहा, मेरा मोह नष्ट किया। वह एक यज्ञ की तरह है, जिसका रूप भूत और भविष्य को जानता है।

7.150.5

अग्निरुवाच तदाकर्ण्य वचस्तस्य मुनेर्व्याधोऽभवत्तदा प्रत्यक्षः स्वप्नसर्गः किमिति खिन्न इव स्मयात् ॥ ५ ॥

agniruvāca tadākṛṇya vacastasya munervyādho'bhava tttadā pratyakṣaḥ svapnasargaḥ kimiti khinna iva smayāt || 5 ||

Agni said: Having heard the words of that sage, the hunter became visible, as if in a dream, wondering why he was distressed.

अग्नि ने कहा: उस मुनि के शब्दों को सुनकर, व्याध प्रत्यक्ष हो गया, जैसे स्वप्न में, और सोचने लगा कि वह दुःखी क्यों है।

7.150.6

दूरदेशगतैर्दृष्टस्थिरसौदामनीधिया । द्रवत्कनकनिष्यन्दकुट्टिमं व्योम दर्शयन् ॥ ६ ॥

dūradeśagatairdṛṣṭasthirasaudāmanīdhiyā | dravatkanakaniṣyandakuṭṭimaṃ vyoma darśayan || 6 ||

The one who sees the stable and splendid wealth from distant lands, shows the sky dripping with liquid gold.

जो दूर देशों से देखी गई स्थिर और सुंदर सम्पत्ति को देखता है, वह सोने की बूंदों से भरे आकाश को दिखाता है।

7.150.7

यत्स्वप्नकथितस्येयं जाग्रत्प्रत्यक्षतोच्यते । लभ्यतेऽपि च तन्नाम वेद चित्रमिदं मुने ॥ ७ ॥

yatsvapnakathitasyeyaṃ jāgratpratyakṣatocyate | labhyate'pi ca tannāma veda citramidaṃ mune || 7 ||

That which is told in a dream is said to be perceived directly while awake. Even the name is obtained, O sage, know this wonder.

जो स्वप्न में कहा गया है, वह जागृत अवस्था में प्रत्यक्ष रूप से कहा जाता है। उसका नाम भी प्राप्त होता है, हे मुनि, इस चमत्कार को जानो।

7.150.8

कथमेष महान्स्वप्नपुरुषः स मुनीश्वर । जाग्रत्यपि स्थिरीभूतो भूतो बालमतेरिव ॥ ८ ॥

kathameṣa mahānsvapnapuruṣaḥ sa munīśvara | jāgratyapi sthirībhūto bhūto bālamateriva || 8 ||

How is this great dream-person, O lord of sages, stable even while awake, as if he were a child's imagination?

यह महान स्वप्न-पुरुष कैसे, हे मुनियों के स्वामी, जागृत अवस्था में भी स्थिर है, मानो वह किसी बच्चे की कल्पना हो?

7.150.9

एवमाश्चर्यमाख्यानमुच्यतां मे यथाक्रमम् । कुतः कस्य किमेतद्वा परमो हि स विस्मयः ॥ ९ ॥

evamāścaryamākhyānamucyatāṃ me yathākramam | kutaḥ kasya kimetadvā paramo hi sa vismayaḥ || 9 ||

Thus, tell me this wondrous tale in order. From where, of whom, what is this, indeed it is the greatest wonder.

इस प्रकार, मुझे इस आश्चर्यजनक कहानी को क्रम से बताओ। यह कहाँ से, किसका, क्या है, यह वास्तव में सबसे बड़ा आश्चर्य है।

7.150.10

मुनिरुवाच । ततः श्रृणु महाभाग वृत्तं चित्रं किमत्र मे । कथयामि समासेन सहसा मां कुरु त्वराम् ॥ १० ॥

muniruvāca | tataḥ śṛṇu mahābhāga vṛttaṃ citraṃ kimatram me | kathayāmi samāsena sahasā māṃ kuru tvarām || 10 ||

The sage said: Therefore, listen, O fortunate one, to this strange event that happened to me. I will narrate it briefly, make me swift.

मुनि ने कहा: इसलिए, सुनो, हे भाग्यशाली, मुझे जो हुआ यह अजीब घटना। मैं इसे संक्षेप में बताऊंगा, मुझे तेज करो।

7.150.11

अनेनैतत्तदा तत्र वर्णितं बोधनाय मे । बुधोऽहमभवं चाशु महतोऽस्य तया गिरा ॥ ११ ॥

anenaittattadā tatra varṇitaṃ bodhanāya me | budho'hamabhavaṃ cāśu mahato'sya tayā girā || 11 ||

By this, it was described to me for understanding at that time and place | I immediately became wise due to the greatness of that speech

इसके द्वारा उस समय और स्थान पर मेरे बोधन के लिए यह वर्णित किया गया था | मैं उस वाणी के महत्व से तुरंत बुद्धिमान हो गया

7.150.12

तत एतद्गिरा पूर्वः स्वस्वभावः स्मृतो मया । अवदातोऽवदातेन नभसेव तपात्यये ॥ १२ ॥

tata etadgirā pūrvaḥ svasvabhāvaḥ smṛto mayā | avadāto'vadātena nabhasēva tapātyayē || 12 ||

Then, this speech was remembered by me as my own nature | Like the sky during the change of heat

तब, यह वाणी मेरे द्वारा अपने स्वभाव के रूप में याद की गई | जैसे गर्मी में आकाश का बदलाव

7.150.13

अहो नु सोऽहमभवं मुनिरित्युदिताशयम् । अहमासं हृदा स्फीतात्स्नातोऽवस्थितविस्मयात् ॥ १३ ॥

aho nu so'hamabhavaṃ munirityuditāśayam | ahamāsaṃ hṛdā sphītātsnāto'vastitavismayāt || 13 ||

Ah, indeed, I became that sage with a proclaimed intention | I was, with a heart full of pride, standing in astonishment

अहो, निश्चय ही, मैं उस मुनि बन गया जिसका उद्देश्य प्रकट हुआ | मैं गर्व से भरे हृदय के साथ, आश्चर्य में खड़ा था

7.150.14

इमां भोगास्थयावस्थां प्राप्तोऽस्म्यज्ञ इवाध्वगः । धावञ्छ्रमार्तिरम्ब्वर्थी व्यर्थया मृगतृष्णया ॥ १४ ॥

imāṃ bhogāsthayāvasthāṃ prāpto'smyajña ivādhvagaḥ | dhāvañchramārtirambvarthī vyarthayā mṛgatṛṣṇayā || 14 ||

I have attained this state of enjoyment, like an ignorant traveler | Running, tired, seeking water, in vain, like a mirage

मैंने इस भोग की अवस्था को प्राप्त किया है, जैसे एक अज्ञानी यात्री | दौड़ता हुआ, थका हुआ, पानी की तलाश में, व्यर्थ, जैसे मृगतृष्णा

7.150.15

कष्टं दृश्योपलम्भेन भ्रान्तिमात्रात्मना सता । बालो वेतालकेनेव प्राज्ञोऽपि च्छलितो ह्यहो ॥ १५ ॥

kaṣṭaṃ dṛśyopalambhena bhrāntimātrātmanā satā | bālo vetālakeneva prājño'pi cchalito hyaho || 15 ||

It is difficult, being deluded by mere appearances | Even a wise person, like a child, is deceived by the illusion

यह कठिन है, केवल दृश्यों से भ्रमित होने से | एक बुद्धिमान व्यक्ति भी, जैसे एक बच्चा, भ्रम से ठगा जाता है

7.150.16

अहो नु चित्रमेतेन मिथ्याज्ञानेन वल्गता । नीतः सर्वार्थशून्येन पदवीं कामिमामहम् ॥ १६ ॥

aho nu citrametena mithyājñānena valgatā | nītaḥ sarvārthaśūnyena padavīṃ kāmimām aham || 16 ||

Oh, how strange it is that I have been led to this desired state by false knowledge, which is devoid of all meaning.

ओह, कितना अजीब है कि मैं इस इच्छित अवस्था में मिथ्या ज्ञान द्वारा लाया गया हूँ, जो सभी अर्थों से शून्य है।

7.150.17

अथवा यः सोऽहमपि भ्रान्तिमात्रं न सन्मयः । तथापि चित्रशतता यन्नामासद्विडम्ब्यते ॥ १७ ॥

athavā yaḥ so'ham api bhrāntimātraṃ na sanmayaḥ | tathāpi citraśatatā yannāmāsadviḍambyate || 17 ||

Or perhaps I too am merely an illusion, not real. Yet, strangely, this name is being celebrated.

या फिर मैं भी केवल एक भ्रम हूँ, वास्तविक नहीं। फिर भी, अजीब बात है कि यह नाम मनाया जा रहा है।

7.150.18

नाहमस्मि न चैवेयमिदं नायमपि भ्रमः । चित्रं सर्वमिदं मिथ्या सर्वं च सदिव स्थितम् ॥ १८ ॥

nāham asmi na caiveyam idaṃ nāyam api bhramaḥ | citraṃ sarvam idaṃ mithyā sarvaṃ ca sadiva sthitam || 18 ||

I am not, nor is this, nor is this an illusion. Strangely, all this is false, yet it appears as real.

मैं नहीं हूँ, न ही यह है, न ही यह भ्रम है। अजीब बात है कि यह सब झूठ है, फिर भी यह वास्तविक लगता है।

7.150.19

किमिदानीं मया कार्यमिह बन्धभिदान्तरः । विद्यते मेऽङ्कुरश्छेद्यं तत्तावत्संत्यजाम्यहम् ॥ १९ ॥

kim idānīṃ mayā kāryam iha bandhabhidāntaraḥ | vidyate me'ṅkuraśchedyaṃ tattāvat saṃtyajāmy aham || 19 ||

What should I do now in this bondage? There is a sprout to be cut, so I will abandon it now.

अब मुझे इस बंधन में क्या करना चाहिए? यहाँ एक अंकुर है जिसे काटना है, तो मैं इसे अब छोड़ दूँगा।

7.150.20

आस्तामेतदविद्यैषा व्यर्थरूपा किमेतया । भ्रान्त्या भ्रान्तिरसद्रूपा त्यक्तैवैषा मयाधुना ॥ २० ॥

āstāmetad avidyaiṣā vyartharūpā kimetayā | bhrāntyā bhrāntir asadrūpā tyaktaivaiṣā mayādhunā || 20 ||

Let this ignorance, which is useless, be gone. What use is this illusion, which is unreal? I will abandon it now.

यह अज्ञान, जो बेकार है, चला जाए। इस भ्रामक अवस्था से क्या लाभ? जो अवास्तविक है, मैं इसे अब छोड़ दूँगा।

7.150.21

उपदेष्टा मुनिरयमेषोऽत्र भ्रान्तिमात्रकम् । ब्रह्मैवाहमिवाभाति रूपमेतद्दिवाभ्रवत् ॥ २१ ॥

upadeṣṭā munirayameṣo'tra bhrāntimātrakam| brahmaivāhamivābhāti rūpametaddivābhravat || 21 ||

The sage who is the teacher here appears only as an illusion| This form seems like Brahman itself, like a cloud in the sky

यहाँ का उपदेशक मुनि केवल एक भ्रांति के रूप में प्रकट होता है| यह रूप ब्रह्म के समान ही प्रतीत होता है, जैसे आकाश में बादल

7.150.22

तदेवं तावदुदितज्ञानं वक्ष्ये महामुनिम् । इति संचिन्त्य स मुनिस्तत्र प्रोक्त इदं मया ॥ २२ ॥

tadevaṃ tāvaduditajñānaṃ vakṣye mahāmunim| iti saṃcintya sa munistatra prokta idaṃ mayā || 22 ||

Thus, I will now speak the knowledge that has arisen to the great sage| Having thought thus, the sage spoke this to me there

इस प्रकार, मैं अब उस ज्ञान को कहूँगा जो महामुनि के लिए उदित हुआ है| ऐसा सोचकर, वह मुनि ने मुझसे यह कहा वहाँ

7.150.23

मुनिनायक गच्छामि तच्छरीरमिदं निजम् । द्रष्टुं यच्च प्रवृत्तोऽस्मि शरीरं तदपीक्षितुम् ॥ २३ ॥

munināyaka gacchāmi taccharīramidaṃ nijam| draṣṭuṃ yacca pravṛtto'smi śarīraṃ tadapīkṣitum || 23 ||

O leader of sages, I will go to see this body of mine| And I am eager to see that body as well

हे मुनियों के नेता, मैं अपने इस शरीर को देखने जाऊँगा| और मैं उस शरीर को देखने के लिए उत्सुक हूँ

7.150.24

इत्याकर्ण्य स मामाह हसन्मुनिवरस्तदा । कुतस्तौ भवतो देहौ तौ सुदूरतरं गतौ ॥ २४ ॥

ityākarṇya sa māmāha hasanmunivarastadā| kutastau bhavato dehau tau sudūrataraṃ gatau || 24 ||

Having heard this, the great sage laughed and said to me| Where are your two bodies? They have gone very far away

यह सुनकर, महामुनि ने हँसते हुए मुझसे कहा| तुम्हारे दोनों शरीर कहाँ हैं? वे बहुत दूर चले गए हैं

7.150.25

गच्छात्मनैव वा पश्य वृत्तान्तं वृत्तकोविद । पश्य तावद्यथावृत्तं दृष्टान्तं ज्ञास्यसि स्वयम् ॥ २५ ॥

gacchātmanaiva vā paśya vṛttāntaṃ vṛttakovida| paśya tāvadyathāvṛttaṃ dṛṣṭāntaṃ jñāsyasi svayam || 25 ||

Go by yourself and see the events, O knower of events| See how it happened, you will understand the example yourself

स्वयं जाकर घटनाओं को देखो, हे घटनाओं के ज्ञाता| देखो कि कैसे हुआ, तुम स्वयं उदाहरण समझ लोगे

7.150.26

इति संचिन्त्य तं देहं विदं भूसत्तया''स्मिकम्त्यक्त्वा चिदात्मा तत्प्राणात्पवने योजितो मया ॥ २६ ॥

iti saṃcintya taṃ dehaṃ vidaṃ bhūsattayā''smikamtyaktvā cidātmā tatprāṇātpavane yojito mayā || 26 ||

Thus, having contemplated, I abandoned that body which was like a burden of earthly existence, and my conscious self was united with the wind of life breath by me.

इस प्रकार, चिंतन करके, मैंने उस शरीर को छोड़ दिया जो पृथ्वी के अस्तित्व का बोझ था, और मेरा चेतना आत्मा प्राण की हवा से जुड़ गया मेरे द्वारा।

7.150.27

प्राक्तनं देहमालोक्य यावदायाम्यहं मुनेइहैव तावत्स्थातव्यमित्युक्त्वाहं गतोऽनिलम् ॥ २७ ॥

prāktanaṃ dehamālokya yāvadāyāmyahaṃ muneihaiva tāvatsthātavyamityuktvāhaṃ gato'nilam || 27 ||

Having seen the previous body, I said to the sage, 'I will come back soon, so you should stay here until then.' Having said this, I went to the wind.

पिछले शरीर को देखकर, मैंने ऋषि से कहा, 'मैं जल्दी वापस आऊँगा, तो तुम तब तक यहीं रहो।' यह कहकर, मैं हवा की ओर चला गया।

7.150.28

अथ वातरथारूढो गगनं भ्रान्तवानहम्पुष्पामोद इवानन्तं गत्वा च त्वरया चिरम् ॥ २८ ॥

atha vātarathārūḍho gaganaṃ bhrāntavānahampuṣpāmoda ivānantaṃ gatvā ca tvarayā ciram || 28 ||

Then, mounted on the chariot of wind, I wandered in the sky like the fragrance of flowers, going endlessly with speed for a long time.

तब, हवा के रथ पर सवार होकर, मैं फूलों की सुगंध की तरह आकाश में भटकता रहा, तेजी से लंबे समय तक अंतहीन रूप से जाता रहा।

7.150.29

ततश्चिरमपि भ्रान्त्वा यदा गलविलं चलनहं न प्राप्तवांस्तस्य किंचिदस्याशयस्थितः ॥ २९ ॥

tataściramapi bhrāntvā yadā galavilaṃ calanahaṃ na prāptavāṃstasya kiṃcidasyāśayasthitaḥ || 29 ||

Then, even after wandering for a long time, when I moved swiftly, I did not attain anything of that desire which was in my heart.

तब, लंबे समय तक भटकने के बाद भी, जब मैं तेजी से चला, मैंने उस इच्छा को नहीं पाया जो मेरे दिल में थी।

7.150.30

तदा खेदमुपायातः परमं पुनरागतःइदमेव जगज्जालमहमालानमात्मनः ॥ ३० ॥

tadā khedamupāyātaḥ paramaṃ punarāgataḥidameva jagajjālamahamālānamātmanaḥ || 30 ||

Then, overwhelmed by sorrow, I returned to the supreme state. This entire world is indeed a mere illusion of the self.

तब, दुःख से घिर गया, मैं पुनः परम अवस्था में लौट आया। यह सारा जगत वास्तव में आत्मा का एक भ्रम है।

7.150.31

इहेमं लब्धवानग्रे ततो मुनिमनुत्तमम् । पृष्टवानहमेकाग्रस्तत एवमिदं गृहे ॥ ३१ ॥

ihemaṃ labdhvānagre tato munimanuttamam | pṛṣṭavānahamekāgrastata evamidaṃ gṛhe || 31 ||

Having obtained this, I first approached the best of sages and asked him with single-minded focus, and thus he spoke to me in this house.

इसे प्राप्त करने के बाद, मैंने पहले श्रेष्ठ मुनि से एकाग्र होकर पूछा, और उसने इस घर में मुझसे ऐसा कहा।

7.150.32

किमेतद्भगवन्ब्रूहि पूर्वापरविदांवर । त्वं पश्यसि यथावृत्तमुत्तमज्ञानचक्षुषा ॥ ३२ ॥

kimetadbhagavanbrūhi pūrvāparavidāṃvara | tvaṃ paśyasi yathāvṛttamuttamajñānacakṣuṣā || 32 ||

O Lord, please tell me what this is. You are the best among those who know the past and the future. You see everything accurately with the eye of supreme knowledge.

हे भगवन्, कृपया मुझे बताएं कि यह क्या है। आप भूत और भविष्य को जानने वालों में श्रेष्ठ हैं। आप उत्तम ज्ञान की दृष्टि से सब कुछ ठीक से देखते हैं।

7.150.33

यस्य देहं प्रविष्टोऽहं स च मद्वपुरेव च । क्व तावुभौ गतौ देहौ न लब्धौ केन हेतुना ॥ ३३ ॥

yasya dehaṃ praviṣṭo'haṃ sa ca madvapureva ca | kva tāvubhau gatau dehau na labdhau kena hetunā || 33 ||

Into whose body I have entered, and that body is also mine. Where have both bodies gone? Why have they not been found?

जिसके शरीर में मैं प्रवेश कर चुका हूँ, और वह शरीर मेरा भी है। दोनों शरीर कहाँ चले गए? उन्हें क्यों नहीं मिला?

7.150.34

मयातिचिरमाभोगि भ्रान्तं संसारमण्डलम् । स्थावरादाऽऽत्मनः कस्मात्प्राप्तं गलबिलं न तत् ॥ ३४ ॥

mayāticiramābhogi bhrāntaṃ saṃsāramaṇḍalam | sthāvarādā''tmanaḥ kasmātprāptaṃ galabilaṃ na tat || 34 ||

I have wandered for a very long time in the deluded cycle of worldly existence. Why have I not attained the state of liberation from the bondage of the material world?

मैंने बहुत लंबे समय तक भ्रमित संसार चक्र में भटकते हुए बिताया है। मैंने भौतिक दुनिया की बंधन से मुक्ति की स्थिति क्यों नहीं प्राप्त की?

7.150.35

गत्वेति पृष्टः स मुनिः समुवाच महाशयः । जानासि तत्स्वयं कस्मादिति तामरसेक्षण ॥ ३५ ॥

gatveti pṛṣṭaḥ sa muniḥ samuvāca mahāśayaḥ | jānāsi tatsvayaṃ kasmāditi tāmarasekṣaṇa || 35 ||

Having been asked, 'Where have they gone?' that great sage replied, 'You know that yourself. Why do you ask, O lotus-eyed one?'

जब उनसे पूछा गया, 'वे कहाँ चले गए?' तो उस महान ऋषि ने कहा, 'तुम खुद जानते हो। फिर पूछते हो, हे कमलनयनी?'

7.150.36

एतदालोकयसि चेत्स्वयं योगैकसंविदा । तत्पश्यस्येव निःशेषं यथा करतलाम्बुजम् ॥ ३६ ॥

etadālokayasi cet svayaṃ yogai kasamvidā | tatpaśyasyeva niḥśeṣaṃ yathā karatalāmbujam || 36 ||

If you perceive this directly through the singular awareness of yoga, then you will see everything completely, just like a lotus in the palm of your hand.

यदि आप इसे योग की एक संविद से स्वयं देखते हैं, तो आप इसे पूरी तरह से देखेंगे, जैसे हाथ के तल में कमल।

7.150.37

तथापि यदि शुश्रूषा तवास्ति वचसा मम । तदिदं श्रृणु वक्ष्यामि यथावृत्तमखण्डितम् ॥ ३७ ॥

tathāpi yadi śuśrūṣā tavāsti vacasā mama | tadidaṃ śṛṇu vakṣyāmi yathāvṛttamakhṇḍitam || 37 ||

Nevertheless, if you have the desire to listen to my words, then hear this from me, I will tell you the unbroken sequence of events as they occurred.

फिर भी, यदि आपकी मेरे शब्दों को सुनने की इच्छा है, तो यह सुनिए, मैं आपको घटनाओं की अखंड शृंखला बताऊंगा जैसे कि वे घटीं।

7.150.38

तपस्तामरसोष्णांशुः कल्याणकमलाकरः । ज्ञानाब्जस्य हरेर्नाभिर्नास्ति तावदयं भवान् ॥ ३८ ॥

tapastāmarasoṣṇāṃśuḥ kalyāṇakamalākaraḥ | jñānābjasya harernābhirnāsti tāvadayaṃ bhavān || 38 ||

The sun, which is the lotus of auspiciousness, the navel of the lotus of knowledge, does not exist until then, O Lord.

सूर्य, जो कल्याण का कमल है, ज्ञान के कमल का नाभि है, तब तक नहीं होता, हे भगवान।

7.150.39

स त्वं कदाचित्तपसि स्थितः स्वप्नदिदृक्षया । कस्यचिद्धृदयं जन्तोः प्रविष्टः पुष्टसंविदा ॥ ३९ ॥

sa tvaṃ kadācit tapasi sthitaḥ svapnadidṛkṣayā | kasyacid dhṛdayaṃ jantoḥ praviṣṭaḥ puṣṭasamvidā || 39 ||

Once, while engaged in austerities with the desire to see a dream, you entered the heart of some being with a nourished consciousness.

एक बार, स्वप्न देखने की इच्छा से तपस्या में लगे हुए, आप किसी जीव के हृदय में पोषित संविद के साथ प्रवेश कर गए।

7.150.40

यत्त्वं प्रविष्टो हृदयं तत्रेदं भुवनत्रयम् । दृष्टवानसि विस्तीर्णं रोदसी विपुलोदरम् ॥ ४० ॥

yattvaṃ praviṣṭo hṛdayaṃ tatredaṃ bhuvanatrayam | dṛṣṭavānasi vistīrṇaṃ rodasī vipulodaram || 40 ||

When you entered the heart, you saw the three worlds spread out there, vast and expansive.

जब आप हृदय में प्रवेश किया, तो आपने वहाँ तीनों लोकों को विस्तृत और विशाल देखा।

7.150.41

इति त्वयि चिरं व्यग्रे देहस्तस्य तथापि च । स संसुप्ताकृतिर्यत्र स्थितस्तत्र महावने ॥ ४१ ॥

iti tvayi ciraṃ vyagre dehastasya tathāpi ca | sa saṃsuptākṛtiryatra sthitastatra mahāvane || 41 ||

Thus, while you were long engaged, his body remained in that state | He appeared as if asleep where he stood in the great forest

इस प्रकार, जब आप लंबे समय तक व्यस्त थे, उसका शरीर उसी अवस्था में रहा | वह जहाँ खड़ा था, वहाँ वह सोये हुए जैसा दिखाई देता था, उस महान वन में

7.150.42

लग्नोऽग्निर्धूमधूम्राभ्रसाम्बराम्बरडम्बरः । वलद्वलचलालातचक्रसूर्येन्दुमण्डलः ॥ ४२ ॥

lagnō'gnirdhūmadhūmrābhrasāmbarāmbaraḍambaraḥ | valadvacalālātacakrasūryendumaṇḍalaḥ || 42 ||

The fire was kindled, with smoke as dark as clouds, and the sky was covered with a canopy of smoke | The flames were like the rotating discs of the sun and moon

अग्नि जल उठी, धुआँ बादलों के समान काला था, और आकाश धुएँ के आवरण से ढका हुआ था | लपटें सूर्य और चंद्रमा के घूमते चक्रों के समान थीं

7.150.43

दग्धाभ्रभस्मसंपूर्णधूमाभ्रासितकम्बलैः । आनीलाकाशदलपैरिव संछादिताम्बरः ॥ ४३ ॥

dagdhābhra bhasmasaṃpūrṇadhūmābhrāsitakambalaiḥ | ānīlākāśadalapairiva saṃchāditāmbaraḥ || 43 ||

The sky was covered with ashes from the burnt clouds and smoke, resembling dark blue petals | It was as if the sky was shrouded in a dark blue canopy

आकाश जले हुए बादलों और धुएँ की राख से ढका हुआ था, जो नीले पंखुड़ियों जैसा दिखता था | मानो आकाश नीले आवरण से ढका हुआ था

7.150.44

दरीगृहविनिष्क्रान्तसिंहनिर्ह्रादतर्जितैः । स्फुटैश्चटचटास्फोटैर्जडीकृतदिगन्तरः ॥ ४४ ॥

darīgṛhaviniṣkrāntasiṃhanirhrādatarjitaiḥ | sphuṭaiścaṭacaṭāsphoṭairjaḍīkṛtadigantaraḥ || 44 ||

The directions were frozen with the loud roars of lions emerging from their cave-like homes, and the sharp crackling sounds

दिशाएँ अपने गुफा जैसे घरों से निकलने वाले सिंहों के जोरदार गर्जने और तीखी चटचटाहट की आवाजों से जम गई थीं

7.150.45

तालीतमालमालानां गतानामग्निवृक्षताम् । पातैरुत्पातवह्न्यभ्रकवत्करकरैर्घनः ॥ ४५ ॥

tālītamālamālānāṃ gatānāmagṇivṛkṣatām | pātairutpātavahnyabhrakavatkarakarairghanḥ || 45 ||

The dense forest was filled with the falling of tall trees that had turned into firewood, resembling the fall of meteors and thunderclouds

घना वन उन लंबी पेड़ों के गिरने से भरा हुआ था जो लकड़ी बन गई थीं, और यह उल्कापिंडों और गर्जने वाले बादलों के गिरने जैसा लगता था

7.150.47

कणैस्तारागणं कान्तैर्व्योम्नि द्विगुणतां नयन् । वक्षःस्थबालवनितानयनानन्दनन्दनः ॥ ४७ ॥

kaṇaistārāgaṇaṃ kāntairvyomni dviguṇatāṃ nayan | vakṣaḥsthabālavanitānayanānandanandanaḥ || 47 ||

The stars in the sky, which are beautiful, double in number, and the one who delights the eyes of the young maiden on his chest.

आकाश में सुंदर तारों का समूह, जो दोगुना हो जाता है, और जो अपने वक्ष पर स्थित युवती की आँखों को आनंदित करता है।

7.150.48

ज्वालाधमधमाशब्दप्रध्मातगगनोदरः । दरीगृहविनिष्क्रान्तभ्रान्तोन्निद्रवनेचरः ॥ ४८ ॥

jvālādhama-dhama-āśabdapradhmātagaganodaraḥ | darīgṛhaviniṣkrāntabhrāntonnidravanecharaḥ || 48 ||

The sky resounds with the roaring sound of flames, and the forest dwellers, startled from their sleep, emerge from their cave dwellings.

आकाश ज्वालाओं की गर्जना से गूँज उठता है, और वन में रहने वाले जीव, नींद से जागकर, अपने गुफा घरों से बाहर निकलते हैं।

7.150.49

अर्धदग्धद्रवत्सिंहमृगव्याधविहंगमः । क्वथत्सरःसरित्स्रोतोरन्धितोग्रवनेचरः ॥ ४९ ॥

ardhadagdhadravatsiṃhamṛgavyādhavihangamaḥ | kvathatsaraḥsaritsroto-randhitogravanecharaḥ || 49 ||

Half-burnt and fleeing lions, deer, hunters, and birds, and the boiling lake, river, and stream, and the blinded fierce forest dwellers.

आधे जले हुए और भागते हुए सिंह, हिरण, शिकारी, और पक्षी, और उबलता हुआ सरोवर, नदी, और धारा, और अंधे हुए भयानक वन में रहने वाले।

7.150.50

वलज्ज्वालाज्वलद्बालचमरीचारुचञ्चुरः । दह्यमानवनप्राणिमेदोगन्धावृताम्बुदः ॥ ५० ॥

valajjvālājvaladbālacamarīcārucañcuraḥ | dahyamānavanaprāṇimedogandhāvṛtāmbudaḥ || 50 ||

The clouds are covered with the smell of burning fat from the forest animals being burnt by the blazing flames, which have beautiful flickering tongues.

बादल उस चर्बी की गंध से ढके हुए हैं, जो जलते हुए वन जीवों से निकल रही है, जिन्हें चमकती हुई ज्वालाओं की सुंदर लपटें जला रही हैं।

7.150.51

तेन कल्पाग्निकल्पेन वल्गता वनवह्निना । सयुष्मदाश्रमो दग्धः सर्पेणेव प्रसर्पता ॥ ५१ ॥

tena kalpāgnikalpena valgatā vanavahninā | sayuṣmadāśramo dagdhaḥ sarpeṇeva prasarpata || 51 ||

By that forest fire, which spreads like the fire of destruction, the hermitage with its inhabitants is burnt, as if by a creeping serpent.

उस वन अग्नि से, जो प्रलय की अग्नि की तरह फैलती है, आश्रम और उसके निवासी जल जाते हैं, मानो एक रेंगता हुआ साँप से जले हों।

7.150.52

व्याध उवाचतत्र तस्याग्निदाहस्य हेतुः कः प्राकृतो मुनेतद्वनं ते बटुवराः सर्वं नष्टं कथं सह ॥ ५२ ॥

vyādha uvācatatra tasyāgnidāhasya hetuḥ kaḥ prākṛto munetadvanaṃ te baṭuvarāḥ sarvaṃ naṣṭaṃ kathaṃ saha || 52 ||

The hunter said, 'What is the natural cause of this fire that burnt down the forest? O sage, how could all your young disciples perish together?'

शिकारी ने कहा, 'इस आग का क्या स्वाभाविक कारण है जिसने वन को जला दिया? हे मुनि, आपके सभी युवा शिष्य कैसे एक साथ नष्ट हो गए?'

7.150.53

मुनिरुवाचसंकल्पकमनस्पन्दः संकल्पादिक्षयोदयेयथा हेतुर्निरास्पन्दोऽचिराद्धि त्रिजगत्तथा ॥ ५३ ॥

muniruvācasaṃkalpakamanaspandaḥ saṃkalpādikṣayodayeyathā heturnirāspando'cirāddhi trijagattathā || 53 ||

The sage said, 'The mind's fluctuations due to desires lead to the rise and fall of everything. Just as the cause of these fluctuations is removed, the three worlds become steady in no time.'

मुनि ने कहा, 'मन की इच्छाओं से उत्पन्न विचारों के कारण सब कुछ उठता-गिरता रहता है। जैसे ही इन विचारों का कारण दूर हो जाता है, तीनों लोक शीघ्र ही स्थिर हो जाते हैं।'

7.150.54

हृदये च वनान्ते च क्षोभाक्षोभेषु कारणम्यथा स्पन्दोऽचिरात्स्पन्दस्तथा त्रिजगतामिह ॥ ५४ ॥

hṛdaye ca vanānte ca kṣobhākṣobheṣu kāraṇamyathā spando'cirātspandastathā trijagatāmiha || 54 ||

In the heart and at the edge of the forest, in both agitation and calm, the cause of fluctuations is the same. Just as the fluctuations cease quickly, so do the three worlds here.

हृदय और वन के किनारे पर, उथल-पुथल और शांति दोनों में, धड़कनों का कारण वही है। जैसे ही धड़कनें शीघ्र ही शांत हो जाती हैं, वैसे ही यहाँ तीनों लोक भी शांत हो जाते हैं।

7.150.55

धातुः संकल्पनगरं जगत्तत्स्पन्दनं त्विह प्रजोदयक्षयक्षोभवर्षावर्षादिकारणम् ॥ ५५ ॥

dhātuḥ saṃkalpanagaraṃ jagattatspandanaṃ tvihaprajodayakṣayakṣobhavarṣāvarṣādikāraṇam || 55 ||

The elements, the city of thoughts, the world, and its fluctuations are the causes of the rise, fall, agitation, and calm here.

तत्व, विचारों का नगर, जगत्, और उसकी धड़कनें यहाँ उठने-गिरने, उथल-पुथल और शांति के कारण हैं।

7.150.56

ब्रह्मादिमानसोऽप्यस्य सोऽप्यन्यत्र चिदम्बरेइत्यपर्यवसानेयं शान्तैका चिन्नभोगतिः ॥ ५६ ॥

brahmādimānaso'pyasya so'pyanyatra cidambareityaparyavasāneyaṃ śāntaikā cinnabhogatiḥ || 56 ||

Even the minds of Brahma and others are ultimately absorbed in the pure consciousness, which is the ultimate reality. This is the only peaceful and blissful state.

ब्रह्मा और अन्य के मन भी अंततः शुद्ध चेतना में विलीन हो जाते हैं, जो परम सत्य है। यही एकमात्र शांतिपूर्ण और आनंदमय अवस्था है।

7.150.57

चितिनभसि चिन्नभःश्रीः कचतीति निरामया विदुषाम् । मूर्खाणां तु यथैषा यादृग्वा तन्मयीह न सत् ॥ ५७ ॥

citinabhasi cinnabhaḥśrīḥ kacatīti nirāmayā viduṣām | mūrkhāṇāṃ tu yathaiṣā yādṛgvā tanmayīha na sat || 57 ||

In the realm of consciousness, the splendor of consciousness shines, known to the wise as free from disease | But for fools, it is as it is, whatever it may be, it is not real

चेतना के आकाश में, चेतना की शोभा चमकती है, जो विद्वानों के लिए रोगमुक्त ज्ञात है | लेकिन मूर्खों के लिए, यह जैसा है वैसा है, जो भी हो, यह वास्तविक नहीं है

Chapter 151

7.151.1

अन्यमुनिरुवाच । तत्र ते नगरं तानि गृहाणि तरवश्च ते । क्षिप्रेण शुष्कतृणवत्सर्वं भस्मत्वमागतम् ॥ १ ॥

anyamuniruvāca | tatra te nagaraṃ tāni gṛhāṇi taravaśca te | kṣipreṇa śuṣkatṛṇavatsarvaṃ bhasmatvamāgatam ||1||

Anyamuni said, 'There, your cities, houses, and trees have quickly turned into ashes like dry grass.'
अन्यमुनि ने कहा, 'वहाँ, आपके नगर, घर और पेड़ सूखे घास की तरह शीघ्र ही भस्म हो गए हैं।'

7.151.2

तत्रैवं भस्मतां प्राप्ते सुप्ते ते भवतस्तव । तनू तथातिसंतापविदारितमहाशिले ॥ २ ॥

tatraivaṃ bhasmatāṃ prāpte supte te bhavatastava | tanū tathātisantāpavidāritamahāśile ||2||

There, while you were sleeping, your body was severely burned and split like a great stone.
वहाँ, जब आप सो रहे थे, आपका शरीर एक बड़े पत्थर की तरह गहरे संताप से विदीर्ण हो गया था।

7.151.3

स शशाम शनैर्वह्निर्निःशेषीकृतकाननः । परिपीतार्णवोऽगस्त्य इवास्तं समुपाययौ ॥ ३ ॥

sa śaśāma śanairvahniḥ niḥśeṣīkṛtakānanaḥ | paripītārṇavo'gasty iva'stam samupāyayau ||3||

That fire, having consumed the entire forest, gradually subsided like Agastya, who had drunk the ocean, went to rest.
वह अग्नि, जो पूरे वन को जला चुकी थी, धीरे-धीरे शांत हो गई, जैसे अगस्त्य जी ने समुद्र को पी लिया था और विश्राम किया था।

7.151.4

तस्मिन्नस्तं गतेवह्नौ तद्भस्मेद्धं सुशीतलम् । दुधाव कणशो वायुरशेषं पुष्पराशिवत् ॥ ४ ॥

tasminnastam gatevahnaus tadbhaseddhaṃ suśītalam | dudhāva kaṇaśo vāyur aśeṣaṃ puṣparāśivat ||4||

When that fire had subsided, the ashes became very cool. The wind blew them away like a heap of flowers, particle by particle.
जब वह अग्नि शांत हो गई, तो राख बहुत ठंडी हो गई। हवा ने उन्हें फूलों के ढेर की तरह कण-कण उड़ा दिया।

7.151.5

ततो न ज्ञायते नासीत्क्वाश्रमः क्व तनू तथा । क्व पेटकं बहूनां तत्स्वप्नपूर्जाग्रतो यथा ॥ ५ ॥

tato na jñāyate nāsītkvāśramaḥ kva tanū tathā | kva peṭakaṃ bahūnāṃ tatsvapnapūrjāgrato yathā ||5||

Then, nothing could be recognized or known, where the hermitage was, where the body was, or where the boxes of many were, like in a dream or awakening.
तब, कुछ भी पहचाना नहीं जा सका या जाना नहीं जा सका, आश्रम कहाँ था, शरीर कहाँ था, या बहुत से लोगों के पेटके कहाँ थे, जैसे स्वप्न या जागरण में।

7.151.6

अभावमुपयाते ते यदैवं भवतस्तनू। स्वपतस्ते भ्रमवतः संविदेव विजृम्भते ॥ ६ ॥

abhāvamupayāte te yadaivaṃ bhavatastanū | svapataste bhramavataḥ saṃvideva vijṛmbhate || 6 ||

When you reach the state of non-existence, your body becomes such. While you sleep, wandering in illusion, only consciousness awakens.

जब आप अभाव की स्थिति में पहुंचते हैं, तब आपका शरीर ऐसा हो जाता है। जब आप सोते हैं, भ्रम में भटकते हुए, केवल चेतना जागती है।

7.151.7

तस्मात्क तद्गलबिलं विराडात्मा स च क्व ते। दग्धो दग्धस्य सौजस्कः सौजस्कस्यैव देहकः ॥ ७ ॥

tasmātk tadgalabilaṃ virāḍātmā sa ca kva te | dagdho dagdhasya saujaskaḥ saujaskasyaiva dehakaḥ || 7 ||

Therefore, what is that throat, the universal self, and where is it for you? The burnt one's vigor is the body of the vigorous one.

इसलिए, वह गला क्या है, विराट् आत्मा, और वह आपके लिए कहां है? जले हुए का सौजस्क शक्तिशाली का शरीर है।

7.151.8

लब्धवानसि नो तस्माद्धेतोर्देहद्वयं मुने। अनन्ते स्वप्नसंसारजाग्रतीहावतिष्ठसे ॥ ८ ॥

labdhavānasi no tasmāddhetordvayaṃ mune | anante svapnasaṅsārajāgratīhāvatiṣṭhasē || 8 ||

You have obtained the two bodies from that cause, O sage. In the infinite, you exist in the waking state of the dream world.

आपने उस कारण से दो शरीर प्राप्त किए हैं, हे मुनि। अनंत में, आप स्वप्न संसार की जाग्रत अवस्था में रहते हैं।

7.151.9

तदेवं स्वप्न एवायं जाग्रद्भावमुपागतः। सर्वे वयमिह स्वप्नपुरुषास्तव सुव्रत ॥ ९ ॥

tadevaṃ svapna evāyaṃ jāgradbhāvamupāgataḥ | sarve vayamiha svapnapuruṣāstava suvrat || 9 ||

Thus, this dream has reached the state of wakefulness. We are all dream beings here, O virtuous one.

इस प्रकार, यह स्वप्न जाग्रत अवस्था तक पहुंच गया है। हम सभी यहां स्वप्न पुरुष हैं, हे सुव्रत।

7.151.10

अस्माकं त्वं स्वप्ननरस्तव स्वप्ननरा वयम्। अयमेव चिदाकाशः सर्वदात्मात्मनि स्थितः ॥ १० ॥

asmākaṃ tvaṃ svapnanarastava svapnanarā vayaṃ | ayameva cidākāśaḥ sarvadātmātmani sthitaḥ || 10 ||

You are our dream man, and we are your dream men. This is the very space of consciousness, always present in the self.

आप हमारे स्वप्न पुरुष हैं, और हम आपके स्वप्न पुरुष हैं। यह चेतना का स्थान है, जो हमेशा स्वयं में मौजूद है।

7.151.11

ततः प्रभृति संपन्नो भवान्स्वप्ननरो भवन्जाग्रत्प्रत्ययवाञ्जाग्रन्नरो गार्हस्थ्यसुस्थितः ॥ ११ ॥

tataḥ prabhṛti saṃpanno bhavānsvapnanaro bhavanjāgratpratyayavāñjāgrannaro gārhasthyasusthitaḥ || 11 ||

From that time onwards, you have become a man of dreams, a man of waking consciousness, firmly established in household life.

तब से आप स्वप्न के मनुष्य बन गए हैं, जाग्रत चेतना के मनुष्य, गृहस्थ जीवन में दृढ़ता से स्थापित हैं।

7.151.12

एतत्ते कथितं सर्वं यथावृत्तमशेषतः। अनुभूतं सुदृश्यं च ध्यानेनैतच्च पश्यसि ॥ १२ ॥

etattē kathitaṃ sarvaṃ yathāvṛttamaśēṣataḥ| anubhūtaṃ sudṛśyaṃ ca dhyānēnaitaccapasyasi || 12 ||

All this has been told to you as it happened in its entirety| Experienced, clearly visible, and you see this through meditation

यह सब कुछ आपको ठीक ऐसे ही बताया गया है जैसे हुआ था| अनुभव किया गया, स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, और आप ध्यान से इसे देखते हैं

7.151.13

इत्यादिमध्यरहितोऽयमनन्तरूपः संविद्घनः कचति काञ्चनतापवत्खे। तत्फाललोलवपुरात्मनि चिन्मयात्मा सर्गात्मभिर्विकसितैरसितैः सितैश्च ॥ १३ ॥

ityādimadhyarahito'yamanantarūpaḥ saṃviddhanaḥ kacati kāñcanatāpavatkhē| tatphālalolavapurātmani cinmayātmā sargātmabhirvikasitairasitaiḥ sitaiśca || 13 ||

This endless form, devoid of beginning and end, shines like gold in the sky| In the self, which is the essence of consciousness, with a body swaying like a leaf, the self composed of consciousness, blossoms with dark and light creations

यह अनन्त रूप, आदि और अन्त से रहित, आकाश में सोने की तरह चमकता है| चेतना के सार से युक्त आत्मा में, पत्ते की तरह हिलते शरीर वाले, चेतना से बने आत्मा, गहरे और हल्के सृजन के साथ खिलते हैं

Chapter 152

7.152.1

मुनिरुवाच इत्युक्त्वा स मुनिस्तत्र तूष्णीं स्वशयने निशि आसीद्विस्मयतश्चाहमथाऽऽसं प्रोह्यमानवत् ॥ १ ॥

muniruvāca ityuktvā sa munistatra tūṣṇīṃ svaśayane niśi āsīdvismaśyataścāhamathā''āsaṃ prohyamānavat || 1 ||

The sage said this and then remained silent in his bed at night. I was astonished and felt as if I was being called.

मुनि ने यह कहा और फिर रात में अपने बिस्तर पर चुपचाप बैठे रहे। मैं आश्चर्यचकित था और मुझे लगा जैसे मुझे बुलाया जा रहा हो।

7.152.2

ततश्चिरेण कालेन मयोक्तं तस्य सन्मुने एवं स्वप्नो विभो सर्वः सद्रूप इति मे मतिः ॥ २ ॥

tataścireṇa kālena mayoktaṃ tasya sanmune evaṃ svapno vibho sarvaḥ sadrūpa iti me matiḥ || 2 ||

After a long time, I said to that great sage, 'O Lord, all dreams are of the nature of reality, this is my opinion.'

बहुत समय बाद, मैंने उस महान मुनि से कहा, 'हे प्रभु, सभी स्वप्न वास्तविकता के स्वरूप के होते हैं, यह मेरा विचार है।'

7.152.3

अन्यमुनिरुवाच सत्संभवति यत्रान्यत्तत्रेदं सदिति स्मयः युक्तो यत्र त्वेतदेव सत्तालपं तत्र का प्रमा ॥ ३ ॥

anyamuniruvāca satsaṃbhavati yatrānyattatraidaṃ saditi smayaḥ yukto yatra tvetadeva sattālpaṃ tatra kā pramā || 3 ||

Another sage said, 'Where there is existence, there is something else; this is the wonder. Where it is appropriate, there is a little reality; what is the measure there?'

दूसरे मुनि ने कहा, 'जहाँ अस्तित्व है, वहाँ कुछ और भी है; यह आश्चर्य है। जहाँ यह उचित है, वहाँ थोड़ी वास्तविकता है; वहाँ क्या माप है?'

7.152.4

यथा स्वप्नस्तथैवायमादौ सर्गोऽवभासते पृथ्व्यादिरहितोऽप्येष पृथ्व्यादिभिरवस्थितः ॥ ४ ॥

yathā svapnastathaivāyamādau sargo''avabhāsate pṛthvyādirahito''pyeṣa pṛthvyādibhiravasthitaḥ || 4 ||

Just as a dream, so too this creation appears at the beginning. Though devoid of earth and other elements, it is established with earth and other elements.

जैसे एक स्वप्न, वैसे ही यह सृष्टि शुरू में प्रकट होती है। हालाँकि यह पृथ्वी और अन्य तत्वों से रहित है, फिर भी यह पृथ्वी और अन्य तत्वों के साथ स्थापित है।

7.152.5

इत्थमद्यतनात्स्वप्नात्सर्गस्वप्नोऽमलात्मकः श्रृणु पुष्करपत्राक्ष मुने व्याध महागुरो ॥ ५ ॥

itthamadyatanātsvapnātsargasvapno''malātmakaḥ śṛṇu puṣkarapatrākṣa mune vyādha mahāguro || 5 ||

Thus, from the present dream, the dream of creation is pure. Listen, O lotus-eyed sage, O wise hunter, O great teacher.

इस प्रकार, वर्तमान स्वप्न से, सृष्टि का स्वप्न शुद्ध है। सुनो, हे कमलनयन मुनि, हे बुद्धिमान शिकारी, हे महान गुरु।

7.152.6

अद्य दृष्टपदार्थाभ्यां स्वप्नं स्वप्नवतोऽभवत्। सर्गस्वप्नस्तु दृष्टार्थ एवादौ खे विराजते ॥ ६ ॥

adya dṛṣṭapadārthābhyāṃ svapnaṃ svapnavato'bhavat | sargasvapnastu dṛṣṭārtha evādau khe virājate || 6 ||

Today, the dream became like the objects seen in the dream. The dream of creation shines in the sky as the seen object in the beginning.

आज, स्वप्न स्वप्न में देखे गए वस्तुओं के समान हो गया। सृष्टि का स्वप्न शुरुआत में आकाश में देखी गई वस्तु के रूप में चमकता है।

7.152.7

एवं सत्स्वप्न इत्येव संदिग्धमिव वक्षि किंस्फुटमप्यनुभूतं सत्स्वप्नध्यानोद्यमः कथम् ॥ ७ ॥

evaṃ satsvapna ityeva saṃdigdhamiva vakṣi kimsphuṭamapyanubhūtaṃ satsvapnadhyānodyamaḥ katham || 7 ||

Thus, the true dream is indeed doubtful. Tell me, how is the clear experience of the true dream's meditation effort?

इस प्रकार, सत्य सपना वास्तव में संदेहास्पद है। मुझे बताओ, सत्य सपना की ध्यान की स्पष्ट अनुभूति कैसे है?

7.152.8

इदमित्थं यदाभोगि स्फुटं स्वप्नजगन्मुने। सदेवानुभवत्येव तत्र संदिग्धता कथम् ॥ ८ ॥

idamitthaṃ yadābhogi sphuṭaṃ svapnajaganmune | sadevānubhavatyeva tatra saṃdigdhatā katham || 8 ||

O sage, this is clearly experienced as the dream world. How can there be doubt in that which is always experienced as real?

हे मुनि, यह स्पष्ट रूप से स्वप्न जगत के रूप में अनुभव किया जाता है। उसमें जो हमेशा वास्तविक के रूप में अनुभव किया जाता है, वहाँ संदेह कैसे हो सकता है?

7.152.9

अथेवंवादिनस्तस्य वाक्यमाक्षिप्तवानहम्। पृष्टवान्व्याधगुरुता कासौ मे कथ्यतामिति ॥ ९ ॥

athevaṃvādinastasya vākyamākṣiptavānaham | pṛṣṭavānvyādhagurutā kāsau me kathyatāmiti || 9 ||

Thus, I interrupted the words of that speaker and asked, 'Tell me, who is this disease and its severity?'

इस प्रकार, मैंने उस वक्ता के शब्दों को बीच में ही रोक दिया और पूछा, 'मुझे बताओ, यह रोग और इसकी गंभीरता क्या है?'

7.152.10

अन्यमुनिरुवाच। श्रूयतामिदमाख्यानमपरं कथयामि ते। संक्षेपेण महाप्राज्ञ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ १० ॥

anyamuniruvāca | śrūyatāmidamākhyānamaparaṃ kathayāmi te | saṃkṣepeṇa mahāprājña nāstyanto vistarasya me || 10 ||

Another sage said, 'Listen to this other story I will tell you briefly, O wise one, for there is no end to my elaboration.'

दूसरे मुनि ने कहा, 'इस अन्य कहानी को सुनो जो मैं तुम्हें संक्षेप में बताऊँगा, हे महान बुद्धिमान, क्योंकि मेरे विस्तार का कोई अंत नहीं है।'

7.152.11

अस्म्यहं तावदादीर्घतपास्त्वमतिधार्मिकः। श्रुत्वेदं मद्वचः सत्यमिहैव रतिमेष्यसि ॥ ११ ॥

asmayahaṃ tāvadādīrghatapāstvamatidhārmikaḥ | śrutvedaṃ madvacaḥ satyamihaiava ratimeṣyasi || 11 ||

I am indeed a great ascetic and you are very righteous. Hearing this true statement of mine, you will find joy right here.

मैं एक महान तपस्वी हूँ और तुम बहुत धार्मिक हो। मेरे इस सत्य वचन को सुनकर, तुम यहीं आनंद पाओगे।

7.152.12

इहस्थं मामिमं त्वं च न त्यक्ष्यसि सपर्यया । अहं भवद्भिः सहितो निवत्स्यामीति निश्चयः ॥ १२ ॥

ihasthaṃ māmimaṃ tvaṃ ca na tyakṣyasi saparyayā | ahaṃ bhavadbhiḥ sahito nivatsyāmīti niścayaḥ || 12 ||

You will not abandon me here, and I am determined to stay with you all.

तुम मुझे यहाँ नहीं छोड़ोगे, और मैं तुम सबके साथ रहने का निश्चय कर चुका हूँ।

7.152.13

साधो यातेषु वर्षेषु ततः कतिपयेष्विह । सर्वबन्धुविनाशस्ते दुर्भिक्षेण भविष्यति ॥ १३ ॥

sādho yāteṣu varṣeṣu tataḥ katipayeṣviha | sarvabandhuvināśaste durbhikṣeṇa bhaviṣyati || 13 ||

O virtuous one, after a few years from now, all your relatives will perish due to famine.

हे साधु, अबसे कुछ वर्षों के बाद, अकाल के कारण तुम्हारे सभी संबंधी नष्ट हो जाएँगे।

7.152.14

मत्तसीमान्तसामन्तविग्रहेण तदैव च । सर्वो गृहात्तनुप्राणिग्रामकोऽयं विनङ्क्ष्यति ॥ १४ ॥

mattasīmāntasāmantavigraheṇa tadaiva ca | sarvo gṛhāttanuprāṇirgrāmako'yaṃ vinaṅkṣyati || 14 ||

Due to the conflict with neighboring rulers, this entire village will be destroyed at that very moment.

पड़ोसी शासकों के साथ संघर्ष के कारण, उसी समय यह पूरा गाँव नष्ट हो जाएगा।

7.152.16

इहैवैकत्र कस्मिंश्चित्तरुखण्डकजालके । समाचारौ निवत्स्यावः शून्ये चन्द्ररवी यथा ॥ १६ ॥

ihaivaikatra kasmiṃścit tarukhaṇḍakajālake | samācārau nivatsyāvaḥ śūnye candraravī yathā || 16 ||

We will live together in some deserted forest area, just like the moon and the sun in the empty sky.

हम किसी सूने वन क्षेत्र में साथ-साथ रहेंगे, जैसे चाँद और सूरज खाली आकाश में।

7.152.17

उत्पत्स्यते त्वरण्येऽस्मिन्कालेन वनमुत्तमम् । शालतालतालताजालवलिताखिलभूतलम् ॥ १७ ॥

utpatsyate tvaraṇye'smin kālena vanam uttamam | śālatālalatājāla valitākhilabhūtalam || 17 ||

In this forest, over time, the best forest will arise, covered with a network of sal, palm, and vine trees on the entire surface of the earth.

इस वन में, समय के साथ, सर्वोत्तम वन उत्पन्न होगा, जो पूरे पृथ्वी तल पर साल, ताड़ और लताओं के जाल से ढका होगा।

7.152.18

तालीतमालदलताण्डवमण्डिताशं व्याकोशपद्मवनवन्द्यविकासिवृक्षम् । कूजच्चकोरचयचारुलतानिकुञ्जमुद्भासि नन्दनमिवागतमन्तरिक्षात् ॥ १८ ॥

tālītamāladalatāṇḍavamaṇḍitāśaṃ vyākośapadmavana vandya vikāsivṛkṣam |
kūjaccakoracayacārulatānikuñjam udbhāsi nandanam ivāgatam antarikṣāt || 18 ||

The forest will be adorned with dancing tāla and tamāla leaves, blooming lotus flowers, and trees worthy of worship. The charming nests of chakora birds will resound with their cooing, making the forest appear as if the celestial Nandana garden has descended from the sky.

यह वन नृत्य करते ताल और तमाल के पत्तों, खिले हुए कमल फूलों, और पूजनीय पेड़ों से सजा होगा। चकोर पक्षियों के मधुर घोंसले उनके कूजन से गूँजेंगे, जिससे वन ऐसा लगेगा मानो आकाश से दिव्य नंदन वन उतरा हो।

Chapter 153

7.153.1

अन्यमुनिरुवाच । आवयोश्चरतोस्तस्मिन्वने चिरतरं तपः । मृगानुसरणश्रान्तो मृगव्याध उपैष्यति ॥ १ ॥

anyamuniruvāca | āvayoścaratostasminvane cirataraṃ tapaḥ | mṛgānusaraṇaśrānto mṛgavyādha upaiṣyati || 1 ||

Another sage said: While both of you are performing austerities in that forest for a long time, a hunter, exhausted from chasing animals, will come.

एक और मुनि ने कहा: जब आप दोनों उस वन में लंबे समय तक तपस्या कर रहे होंगे, तब एक मृगव्याध, जो मृगों का पीछा करने से थका हुआ होगा, वहाँ आएगा।

7.153.2

तं त्वं स्वभावपुण्याभिः कथाभिर्बोधयिष्यसि । तपस्तत्रैव विपिने स विरक्तश्चरिष्यति ॥ २ ॥

taṃ tvaṃ svabhāvapuṇyābhiḥ kathābhirbodhayiṣyasi | tapastatraiva vipine sa viraktaścariṣyati || 2 ||

You will enlighten him with stories of natural virtues. He will then practice austerities in that very forest, becoming detached.

आप उसे प्राकृतिक गुणों की कथाओं से बोध करेंगे। फिर वह उसी वन में तपस्या करेगा, विरक्त होकर।

7.153.3

ततस्तपस्विचर्याणामात्मज्ञानबुभुत्सया । मध्ये स स्वप्नजिज्ञासुः प्रक्ष्यति स्वप्नसंकथाम् ॥ ३ ॥

tatastapasvicaryāṇāmātmajñānabubhutsayā | madhye sa svapnajijñāsuḥ prakṣyati svapnasankathām || 3 ||

Then, out of curiosity for self-knowledge among the practices of ascetics, he will inquire about the nature of dreams in the middle of his practice.

फिर, तपस्वियों की साधनाओं में आत्मज्ञान की उत्सुकता से, वह अपनी साधना के मध्य में स्वप्न की प्रकृति के बारे में पूछेगा।

7.153.4

कथयिष्यसि तस्मै त्वमात्मज्ञानमखण्डितम् । स्वप्नाख्येन प्रसङ्गेन सोऽतो योग्यो भविष्यति ॥ ४ ॥

kathayiṣyasi tasmai tvamātmajñānamakhṇḍitam | svapnākhyena prasaṅgena so'to yogyo bhaviṣyati || 4 ||

You will narrate to him the unblemished knowledge of the self through the context of dreams. Thus, he will become worthy.

आप उसे स्वप्न के संदर्भ में अखंडित आत्मज्ञान की कथा सुनाएँगे। इस प्रकार, वह योग्य बनेगा।

7.153.5

इत्यनेन प्रकारेण गुरुस्तस्य भविष्यसि । तेन तात मयोक्तोऽसि गिरा व्याधगुरो इति ॥ ५ ॥

ityanena prakāreṇa gurustasya bhaviṣyasi | tena tāta mayokto'si girā vyādhaguro iti || 5 ||

In this manner, you will become his guru. Therefore, O father, you are called by me as the guru of the hunter.

इस प्रकार से, आप उसके गुरु बनेंगे। इसलिए, हे पिता, मैंने आपको शिकारी का गुरु कहा है।

7.153.6

इति ते सर्वमाख्यातं यथायं संसृतिभ्रमः । यथाहं यादृशश्च त्वमिह यत्ते भविष्यति ॥ ६ ॥

iti te sarvamākhyātaṃ yathāyaṃ saṃsṛtibhramaḥ | yathāhaṃ yādṛśaśca tvamiha yatte bhaviṣyati || 6 ||

Thus, everything has been explained to you, how this cycle of transmigration is an illusion, how I am, and what you will become here.

इस प्रकार, आपको सब कुछ बता दिया गया है, कि कैसे यह जन्म-मरण का चक्र भ्रम है, कि मैं कैसा हूँ, और कि आप यहाँ क्या बनेंगे।

7.153.7

इति तेनाहमुक्तः सन्विस्मयाकुलया धिया । तेन सार्धं विमृश्यैतत्परं विस्मयमागतः ॥ ७ ॥

iti tenāhamuktaḥ sanvismayākulayā dhiyā | tena sārdhaṃ vimṛśyaitatparaṃ vismayamāgataḥ || 7 ||

Having been thus spoken to by him, with a mind filled with wonder, I reflected on it with him and attained great amazement.

उसके द्वारा ऐसा कहे जाने पर, आश्चर्य से भरे मन से, मैंने उसके साथ इस पर विचार किया और बड़े आश्चर्य को प्राप्त किया।

7.153.8

अथ रात्र्यां व्यतीतायां स प्रभाते महामुनिः । तथा संपूजितो येन तत्रैव रतिमाप्तवान् ॥ ८ ॥

atha rātryāṃ vyatītāyāṃ sa prabhāte mahāmuniḥ | tathā saṃpūjito yena tatraiva ratimāptavān || 8 ||

Then, after the night had passed, that great sage, having been worshipped in the morning by him, attained delight right there.

फिर, रात बीतने के बाद, वह महामुनि, प्रभात में उसके द्वारा पूजित होकर, वहीं आनंद प्राप्त किया।

7.153.9

अनन्तरं गृहे तस्मिंस्तस्मिन्ग्रामगृहे तथा । स्थितावावां स्थिरमती कृतभावौ परस्परम् ॥ ९ ॥

anantaraṃ gṛhe tasmiṃstasminsgrāmagṛhe tathā | sthitāvāvāṃ sthiramatī kṛtabhāvau parasparam || 9 ||

Subsequently, in that house, in that village house, we both remained with steadfast minds, having made our dispositions towards each other.

तदनंतर, उस घर में, उस गाँव के घर में, हम दोनों स्थिर मन से, एक-दूसरे के प्रति अपने व्यवहार करके, रहे।

7.153.10

ततो वहति कालोऽयमृतुसंवत्सरात्मकः । स्थितोऽहमागतान्भावांस्त्यजन्गृह्णन्गिरिर्यथा ॥ १० ॥

tato vahati kālo'yamṛtusaṃvatsarātmakaḥ | sthito'hamāgatānbhāvāṃstyajangṛhṇangiriryathā || 10 ||

Then, as this time, consisting of seasons and years, passes, I remain, accepting and letting go of the states that come, like a mountain.

फिर, जैसे यह समय, ऋतुओं और वर्षों से बना हुआ, बीतता है, मैं पहाड़ की तरह, आने वाली स्थितियों को स्वीकार करते हुए और छोड़ते हुए, रहता हूँ।

7.153.11

नाभिवाञ्छामि मरणं नाभिवाञ्छामि जीवितम् । यथा स्थितोऽस्मि तिष्ठामि तथैव विगतज्वरम् ॥ ११ ॥

nābhivāñchāmi maraṇaṃ nābhivāñchāmi jīvitam | yathā sthito'smi tiṣṭhāmi tathaiva vigatajvaram || 11 ||

I do not desire death, nor do I desire life. I remain as I am, free from fever.

मैं न मृत्यु चाहता हूँ, न जीवन चाहता हूँ। मैं जैसा हूँ, उसी प्रकार रहता हूँ, ज्वर से मुक्त।

7.153.12

ततो विचारितं तत्र तन्मया दृश्यमण्डलम्। किं कारणमिदं तु स्यात्किमयं वेत्ति चेतसा ॥ १२ ॥

tato vicāritaṃ tatra tanmayā dṛśyamaṇḍalam | kiṃ kāraṇamidaṃ tu syātkimayaṃ vetti cetasā || 12 ||

Then, I contemplated there, that visible universe by me. What could be the cause of this? What does this mind know?

तब, मैंने वहाँ सोचा, उस दृश्य ब्रह्माण्ड को मैंने देखा। इसका कारण क्या हो सकता है? इस मन को क्या पता है?

7.153.13

कोऽयं पदार्थसंघातः किं नामैतस्य कारणम्। अस्त्यस्मिन्स्वप्नसंदर्शे चिद्व्योमैकस्वरूपिणि ॥ १३ ॥

ko'yaṃ padārthasaṃghātaḥ kiṃ nāmaitasya kāraṇam | astyasminn svapnasandarśe cidvyomaikeka svarūpiṇi || 13 ||

Who is this aggregate of elements? What is the cause of this? Is there a dream-like vision in this pure consciousness?

यह तत्वों का समूह कौन है? इसका कारण क्या है? इस शुद्ध चेतना में कोई स्वप्न-जैसी दृष्टि है?

7.153.14

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः। चिन्मात्रनभ एवैते कचन्त्यात्मन्यवस्थितम् ॥ १४ ॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ | cinmātranabha evaite kacantyātmanyavasthitam || 14 ||

The sky, the earth, the air, the space, the mountains, the rivers, the directions—all these are merely pure consciousness established in the self.

आकाश, पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष, पर्वत, नदियाँ, दिशाएँ—ये सभी केवल आत्मा में स्थापित शुद्ध चेतना हैं।

7.153.15

चिच्चन्द्रिकाचतुर्दिक्कमवभासं तनोति यत्। तदिदं जगदाभाति चित्रमप्रतिघात्म खे ॥ १५ ॥

ciccandrikācaturdikkamavabhāsaṃ tanoti yat | tadidaṃ jagadābhāti citramapratighātma khe || 15 ||

That which illuminates the consciousness-moonlight in all directions, that indeed appears as this wonderful universe, unobstructed in the sky.

जो चारों दिशाओं में चेतना-चाँदनी को प्रकाशित करता है, वही यह अद्भुत ब्रह्माण्ड आकाश में अवरुद्ध होकर प्रकट होता है।

7.153.16

नेमेऽद्रयो न चेयं भूर्नेदं खं नायमप्यहम्। चिन्मात्रव्योमकचनमिदमाभाति केवलम् ॥ १६ ॥

neme'drayo na ceyaṃ bhūrnedaṃ khaṃ nāyamapyaham | cinmātravyomakacanamidamābhāti kevalam || 16 ||

There are no mountains, no earth, no sky, nor am I | This appears as mere consciousness-space

यहाँ न पर्वत हैं, न पृथ्वी, न आकाश, न मैं हूँ | यह केवल चेतना-आकाश के रूप में प्रकट होता है

7.153.17

पदार्थजातस्यास्य स्यात्किं नाम बत कारणम्। पिण्डग्रहे हेतुना तु विना कोऽप्यर्थसंभवः ॥ १७ ॥

padārthajātasyāsya syātkim nāma bata kāraṇam | piṇḍagrahe hetunā tu vinā ko'pyarthasaṃbhavaḥ || 17 ||

What could be the cause of this collection of objects? Without a cause, how can any object exist?

इस वस्तुओं के समूह का कारण क्या हो सकता है? कारण के बिना कोई भी वस्तु कैसे अस्तित्व में आ सकती है?

7.153.18

भ्रान्तिमात्रमिदं चेत्स्याद्भ्रान्तेः किं नाम कारणम्। द्रष्टा मन्ता च को भ्रान्तेः कारणं वा क्व कीदृशम्॥ १८॥

bhrāntimātramidaṃ cetsyādbhrānteḥ kiṃ nāma kāraṇam | draṣṭā mantā ca ko bhrānteḥ kāraṇaṃ vā kva kīdṛśam || 18 ||

If this is merely an illusion, what could be the cause of the illusion? Who is the seer and thinker of the illusion, and what kind of cause is it?

यदि यह केवल एक भ्रम है, तो भ्रम का कारण क्या हो सकता है? भ्रम का द्रष्टा और विचारक कौन है, और कारण किस प्रकार का है?

7.153.19

यस्याहमवसं संविन्मात्रकं हृदयौजसि। असौ मया सह गतः किलाशेषेण भस्मसात्॥ १९॥

yasyāhamavasaṃ saṃvinmātrakaṃ hṛdayaujasi | asau mayā saha gataḥ kilāśeṣeṇa bhasmasāt || 19 ||

In whom I abide as pure consciousness in the strength of the heart, he has gone with me, as it were, entirely to ashes.

जिसमें मैं हृदय की शक्ति में शुद्ध चेतना के रूप में निवास करता हूँ, वह मेरे साथ जैसे पूरी तरह से भस्म हो गया है।

7.153.20

तस्मादिदमनाद्यन्तं चिदाभामात्रमम्बरम्। अकर्तृकर्मकरणं रूपं चिद्धनमक्रमम्॥ २०॥

tasmādidamanādyantaṃ cidābhāmātramambaram | akartṛkarmakaraṇaṃ rūpaṃ ciddhanamakramam || 20 ||

Therefore, this is beginningless and endless, mere consciousness-light, the sky, without doer, action, or instrument, the form of consciousness, motionless.

इसलिए, यह अनादि और अनन्त है, केवल चेतना-प्रकाश, आकाश, कर्ता, कर्म या करण के बिना, चेतना का रूप, निश्चल।

7.153.21

इदं चिद्व्योमकचनं घटावटपटादिकम्स्फुटं कुत इवाकारि घटावटपटाद्यतः॥ २१॥

idaṃ cidvyomakacanaṃ ghaṭāvaṭapaṭādikamsphuṭaṃ kuta ivākāri ghaṭāvaṭapaṭādyataḥ || 21 ||

This manifestation of consciousness as the sky, pots, clothes, etc., is clearly seen. From where does this form of pots, clothes, etc., arise?

यह चेतना का आकाश, घड़े, कपड़े आदि के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह घड़े, कपड़े आदि के रूप में कहाँ से उत्पन्न होता है?

7.153.22

नापि चिन्मात्रकचनं चिन्मात्रं व्योम केवलम्तस्य किं कचनं कीदृक कथं कचति किं नभः॥ २२॥

nāpi cinmātrakacanaṃ cinmātraṃ vyoma kevalamtasya kiṃ kacanaṃ kīdṛk kathaṃ kacati kiṃ nabhaḥ || 22 ||

Nor is there any manifestation of pure consciousness as the sky alone. What is its manifestation? How does it manifest? Is it the sky?

न ही शुद्ध चेतना का आकाश के रूप में कोई प्रकटीकरण है। उसका प्रकटीकरण क्या है? वह कैसे प्रकट होता है? क्या यह आकाश है?

7.153.23

अयं फेनश्चिदम्भोधेः किमस्य कचनं नवम्कचत्स्वभाव एवायमनन्तश्चिद्धनः स्थितः॥ २३॥

ayaṃ phenaścidambhodheḥ kimasya kacanaṃ navamkacatsvabhāva evāyamanantaściddhanaḥ sthitaḥ || 23 ||

This foam (manifestation) in the ocean of consciousness, what is its new manifestation? It is its own nature, this infinite wealth of consciousness is established.

यह फेन (प्रकटीकरण) चेतना के सागर में, इसका नया प्रकटीकरण क्या है? यह अपनी ही प्रकृति है, यह अनन्त चेतना का धन स्थापित है।

7.153.24

चिन्मात्रकचनं शुद्धं ब्रह्म बृंहितचिद्धनमिदं जगदिवाभाति क्व दृश्यं द्रष्टृता कुतः ॥ २४ ॥

cinmātrakacanaṃ śuddhaṃ brahma bṛṃhitaciddhanamidaṃ jagadivābhāti kva dṛśyaṃ draṣṭṛtā kutaḥ || 24 ||

The manifestation of pure consciousness is pure Brahman, the expanded wealth of consciousness. This world appears as such. Where is the seen? Where is the seer?

शुद्ध चेतना का प्रकटीकरण शुद्ध ब्रह्म है, विस्तृत चेतना का धन। यह संसार ऐसा ही प्रतीत होता है। दृश्य कहाँ है? द्रष्टा कहाँ है?

7.153.25

आद्यन्तवर्जितममेयमनादिमध्यमेकं विभुं विगतकारणकार्यसत्त्वम्सत्तामयं भुवनशैलदिगन्तनानानानात्मकं किमपि चेतनमेव सर्वम् ॥ २५ ॥

ādyantavarjitamameyamanādimadhyamekaṃ vibhuṃ vigatakāraṇakāryasattvamsattāmayaṃ bhuvanaśailadigantanānā'nānātmakaṃ kimapi cetanameva sarvam || 25 ||

That which is without beginning or end, immeasurable, without cause or effect, existing as pure existence, pervading the entire universe, diverse and varied, is indeed pure consciousness.

जो आदि और अंत से रहित है, अमेय, अनादि, मध्यम, एक, विभु, कारण और कार्य से रहित, शुद्ध अस्तित्व में स्थित, सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त, विविध और विभिन्न, वह शुद्ध चेतना ही है।

Chapter 154

7.154.1

मुनिरुवाच । इति निर्णीय दृश्येऽस्मिन्स्थितोऽस्मि विगतज्वरः । वीतरागो निराशङ्को निर्वाणो निरहंकृतिः ॥ १ ॥

muniruvāca | iti nirṇīya dṛśye'sminsthito'smi vigatajvaraḥ | vītarāgo nirāśaṅko nirvāṇo nirahaṃkṛtiḥ || 1 ||

The sage said: Having thus determined, I am established in this visible world, free from fever, free from passion, free from fear, liberated, and without ego.

मुनि ने कहा: इस प्रकार निर्णय करके, मैं इस दृश्य जगत् में स्थित हूँ, ज्वर से मुक्त, राग से मुक्त, आशंका से मुक्त, निर्वाण प्राप्त, और अहंकार से मुक्त।

7.154.2

निराधारो निराधेयो निर्मानो निरुपाश्रयः । स्वभावस्थः स्वयं शान्तः सर्गात्मा सर्वथोदितः ॥ २ ॥

nirādhāro nirādheyo nirmāno nirupāśrayaḥ | svabhāvasthaḥ svayaṃ śāntaḥ sargātmā sarvathoditaḥ || 2 ||

Without support, without dependence, without pride, without refuge, established in one's own nature, self-peaceful, the essence of creation, manifested in every way.

बिना सहारे, बिना निर्भरता, बिना अभिमान, बिना आश्रय, अपनी प्रकृति में स्थित, स्वयं शान्त, सृष्टि का आत्मा, सभी प्रकार से प्रकट।

7.154.3

यथाप्राप्तस्य कर्तास्मि न कर्तास्मि कदाचन । स्वयमेव हि यो व्योम कर्तृता तस्य कीदृशी ॥ ३ ॥

yathāprāptasya kartāsmi na kartāsmi kadācana | svayameva hi yo vyoma kartṛtā tasya kīdṛśī || 3 ||

I am the doer of what comes naturally, I am never the doer, for the one who is the sky itself, what kind of doership is there?

मैं जो स्वाभाविक रूप से आता है उसका कर्ता हूँ, मैं कभी कर्ता नहीं हूँ, क्योंकि जो आकाश है, उसके लिए कर्तृत्व कैसा है?

7.154.4

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः । इत्येकात्म नभः सर्वं भूतजालैकचिद्वपुः ॥ ४ ॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ | ityekātma nabhaḥ sarvaṃ bhūtajālaikacidvapuḥ || 4 ||

The sky, the earth, the wind, the space, the mountains, the rivers, the directions, all this is one, the sky, the entire web of beings is one consciousness.

आकाश, पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष, पर्वत, नदियाँ, दिशाएँ, यह सब एक है, आकाश, सम्पूर्ण जीवों का जाल एक चेतना है।

7.154.5

शाम्यामि परिनिर्वामि सुखमासे च केवलम् । न विधिप्रतिषेधौ मे न मे बाह्यं न मेऽन्तरम् ॥ ५ ॥

śāmyāmi parinirvāmi sukhamāse ca kevalam | na vidhipratiṣedhau me na me bāhyaṃ na me'ntaram || 5 ||

I am calm, I am completely liberated, I sit in pure bliss, I have no rules or prohibitions, I have no external or internal.

मैं शांत हूँ, मैं पूर्ण रूप से मुक्त हूँ, मैं शुद्ध आनंद में बैठा हूँ, मेरे लिए कोई नियम या प्रतिबंध नहीं है, मेरे लिए कोई बाहरी या अंतर नहीं है।

7.154.6

इति मे तिष्ठत इह यथासंस्थानसंस्थितेः । अद्यायं त्वमनुप्राप्तः काकतालीयवत्पुरः ॥ ६ ॥

iti me tiṣṭhata iha yathāsaṃsthānasaṃsthiteḥ | adyāyaṃ tvamanuprāptaḥ kākatālīyavatpuraḥ || 6 ||

Thus, remain here as you are, in your natural state. Today, you have attained this state, just like the crow and the palm fruit.

इस प्रकार, यहाँ अपनी प्राकृतिक स्थिति में रहो। आज, तुम इस अवस्था को प्राप्त हो गए हो, जैसे कौआ और ताड़ का फल।

7.154.7

इति ते सर्वमाख्यातं यथा स्वप्नो यथा वयम् । यथा जगद्यथा च त्वं यथा दृश्यमिदं तथा ॥ ७ ॥

iti te sarvamākhyātaṃ yathā svapno yathā vayam | yathā jagadyathā ca tvaṃ yathā dṛśyamidaṃ tathā || 7 ||

Thus, everything has been explained to you, just as a dream, just as we are, just as the world is, and just as you are. Everything perceived is like that.

इस प्रकार, तुम्हें सब कुछ बता दिया गया है, जैसे एक सपना, जैसे हम हैं, जैसे संसार है, और जैसे तुम हो। सब कुछ जैसा दिखाई देता है, वैसा ही है।

7.154.8

त्वं च यादृग्दृश्यमिदं यथा दृश्यमिदं पुरः । यथा भावा यथा ब्रह्म यथेमा जनताः पुरः ॥ ८ ॥

tvaṃ ca yādṛgdṛśyamidaṃ yathā dṛśyamidaṃ puraḥ | yathā bhāvā yathā brahma yathemā janatāḥ puraḥ || 8 ||

You are just as this perception is, just as this perception is before you. Just as the feelings are, just as Brahman is, just as these people are before you.

तुम उसी तरह हो जैसे यह अनुभव है, जैसे यह अनुभव तुम्हारे सामने है। जैसे भावनाएँ हैं, जैसे ब्रह्म है, जैसे ये लोग तुम्हारे सामने हैं।

7.154.9

एतद्बुद्ध्वा भवाञ्छान्तो मिथ्या लुब्धक लुब्धक । शान्तैवैवमियं सत्ता चिन्मात्रव्योमरूपिणी ॥ ९ ॥

etadbuddhvā bhavāñchānto mithyā lubdhaka lubdhaka | śāntaivaivaṃiyṃ sattā cinmātravyomarūpiṇī || 9 ||

Understanding this, you will become peaceful, O greedy one, O greedy one, this existence is peaceful, consisting only of pure consciousness.

इसे समझकर, तुम शांत हो जाओगे, हे लालची, हे लालची, यह अस्तित्व शांत है, केवल शुद्ध चेतना से बना है।

7.154.10

लुब्धक उवाच । स्वयमाभाति निर्वाणा नैव वाभाति किंचन । एवं चेत्तदहं त्वं च सर्वे वा विबुधादयः ॥ १० ॥

lubdhaka uvāca | svayamābhāti nirvāṇā naiva vābhāti kiñcana | evaṃ cet tadahaṃ tvaṃ ca sarve vā vibudhādayaḥ || 10 ||

Lubdhaka said: It appears by itself as Nirvana, nothing else appears. If this is so, then I am you, and all are the enlightened ones.

लुब्धक ने कहा: यह स्वयं निर्वाण के रूप में प्रकट होता है, कुछ और नहीं प्रकट होता। यदि ऐसा है, तो मैं तुम हूँ, और सभी ज्ञानी हैं।

7.154.11

मुनिरुवाच । सर्व एव मिथः स्वप्नपुरुषाः सदसन्मयाः । एवमेतदिदं सर्वमन्योन्यं स्वप्नवत्स्थितम् ॥ ११ ॥

muniruvāca | sarva eva mithaḥ svapnapuruṣāḥ sadasanmayāḥ | evametadidaṃ sarvamanyonyaṃ svapnavatsthitam || 11 ||

The sage said: All beings are like dream-persons, both real and unreal. Thus, everything here is situated like a dream in relation to each other.

मुनि ने कहा: सभी प्राणी स्वप्न-पुरुषों के समान हैं, सत् और असत दोनों | इस प्रकार, यह सब कुछ एक-दूसरे के सापेक्ष स्वप्न की तरह स्थित है |

7.154.12

अन्योन्यमात्मनि तथा सदसच्चानुभूयते । दृश्यं येन यथा बुद्धं तथा तेनानुभूयते ॥ १२ ॥

anyonyamātmani tathā sadasaccānubhūyate | dṛśyaṃ yena yathā buddhaṃ tathā tenānubhūyate || 12 ||

Similarly, the real and unreal are experienced in the self. Whatever is seen and understood in a certain way, it is experienced accordingly.

इसी प्रकार, सत् और असत आत्मा में अनुभव किया जाता है | जो कुछ भी देखा और समझा जाता है, वह उसी तरह से अनुभव किया जाता है |

7.154.13

नानैकं वस्त्वतोऽनेकं न सन्नासन्न मध्यगम् । जाग्रति स्वप्ननगरमिव वेदनमात्रकम् ॥ १३ ॥

nānaikaṃ vastvato'nekaṃ na sannāsanna madhyagam | jāgrati svapnanagaramiva vedanamātrakam || 13 ||

It is neither one nor many in reality, neither existent nor non-existent, nor in between. In the waking state, it is like a dream city, merely a perception.

यह न तो एक है और न ही अनेक, न सत् है और न ही असत, न ही बीच में | जाग्रत अवस्था में, यह स्वप्न नगर की तरह है, केवल एक अनुभूति |

7.154.14

अदृष्टपूर्वदूरस्थदृश्यमानपुरोपमम् । इति ते सर्वमाख्यातं बोधितोऽसि निरन्तरम् ॥ १४ ॥

adṛṣṭapūrvadūrasthadṛśyamānapuropamam | iti te sarvamākhyātaṃ bodhito'si nirantaram || 14 ||

Thus, everything has been explained to you continuously. You are enlightened. Whatever is seen and understood is like something previously unseen and distant.

इस प्रकार, सब कुछ आपको लगातार समझाया गया है | आप बोधित हो चुके हैं | जो कुछ भी देखा और समझा जाता है, वह पहले अदृश्य और दूरस्थ की तरह है |

7.154.15

स्वयं प्राज्ञोऽसि जानासि यथेच्छसि तथा कुरु । एवं प्रबोधितस्यापि तव व्याध मते मतिः ॥ १५ ॥

svayaṃ prājño'si jānāsi yathecchasi tathā kuru | evaṃ prabodhitasyāpi tava vyādha mate matiḥ || 15 ||

You yourself are wise and know. Do as you wish. Even after being enlightened, your mind is still inclined towards delusion.

आप स्वयं बुद्धिमान हैं और जानते हैं | जैसा आप चाहते हैं, वैसा ही करें | भले ही आप बोधित हो चुके हैं, आपका मन अभी भी भ्रम की ओर झुका हुआ है |

7.154.16

क्षणं प्रबोधविश्रान्ता न विश्रान्ता परे पदेनाभ्यासेन विना बोध एष याति मनोहृदि ॥ १६ ॥

kṣaṇaṃ prabodhaviśrāntā na viśrāntā pare padenābhyāsena vinā bodha eṣa yāti manohṛdi || 16 ||

Those who are awakened for a moment are not truly at peace. Without practice, this knowledge does not reach the heart.

जो एक क्षण के लिए जागरूक होते हैं, वे वास्तव में शांत नहीं होते। अभ्यास के बिना, यह ज्ञान हृदय तक नहीं पहुंचता।

7.154.17

परां परिणतिं प्राज्ञ दारुणीवाम्बुधारणे ॥ १७ ॥

parāṃ pariṇatiṃ prājña dāruṇīvāmbudhāraṇe || 17 ||

The wise one knows the ultimate transformation like the splitting of a cloud.

बुद्धिमान व्यक्ति अंतिम परिवर्तन को बादल के फटने की तरह जानता है।

7.154.18

अभ्यासाद्बोधविश्रान्तौ गुरुशास्त्रैकसेवनाद्वैताद्वैतदृशोः शान्त्या निर्वाणं चित्तमुच्यते ॥ १८ ॥

abhyāsādbodhaviśrāntau guruśāstraikasevanātdvaitādvaitadṛśoḥ śāntyā nirvāṇaṃ cittamucyate || 18 ||

Through practice, knowledge and peace are attained by serving the guru and scriptures, leading to the tranquility of non-duality, which is called nirvana of the mind.

अभ्यास के द्वारा, ज्ञान और शांति गुरु और शास्त्रों की सेवा से प्राप्त होती है, जो अद्वैत की शांति की ओर ले जाती है, जिसे मन का निर्वाण कहा जाता है।

7.154.19

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाःद्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैगच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ १९ ॥

nirmānamohā jitasaṅgadoṣā adhyātmanityā vinivṛttakāmāḥdvandvairvimuktāḥ
sukhaduḥkhasaṃjñaigacchantyamūḍhāḥ padamavyayaṃ tat || 19 ||

Free from pride and delusion, having conquered the faults of attachment, always devoted to the Self, with desires withdrawn, liberated from dualities, and beyond pleasure and pain, the wise attain the imperishable state.

घमंड और भ्रम से मुक्त, आसक्ति के दोषों को जीतकर, हमेशा आत्मा में लीन, इच्छाओं से विरक्त, द्वंद्वों से मुक्त, और सुख-दुःख से परे, बुद्धिमान लोग अविनाशी स्थिति प्राप्त करते हैं।

Chapter 155

7.155.1

अग्निरुवाच इत्याकर्ण्याथ स व्याधस्तदा तस्मिन्वनान्तरे आसीच्चित्रकृताकार इव विस्मयमन्थरः ॥ १ ॥

agniruvāca ityākarṇyātha sa vyādhas tadā tasminvanāntare āsīccitrakṛtākāra iva vismayamantharaḥ || 1 ||

Agni said, having heard this, then that hunter at that time in that forest appeared like a wonderfully created form, full of amazement.

अग्नि ने कहा, इसे सुनकर, फिर उस शिकारी ने उस समय उस जंगल में एक चमत्कारिक रूप में प्रकट हुआ, आश्चर्य से भरा हुआ।

7.155.2

न विशश्राम चेतोऽस्य स्वाभ्यासेन विना पदे आसीदुद्भ्रान्त इव स प्रोह्यमान इवार्णवे ॥ २ ॥

na viśaśrāma cetorasya svābhyāsena vinā pade āsīdudbhrānta iva sa prohyamāna ivārṇave || 2 ||

His mind did not find rest without the practice of his own path, he appeared disturbed as if being tossed about in the ocean.

उसका मन अपने मार्ग के अभ्यास के बिना विश्राम नहीं पा सका, वह ऐसा लग रहा था जैसे समुद्र में उलट-पुलट कर रहा हो।

7.155.3

आरूढ इव वा चक्रे चक्रेण तपसा हृतः नक्रेणेव समाक्रान्तः पराक्रमविवर्जितः ॥ ३ ॥

ārūḍha iva vā cakre cakreṇa tapasā hṛtaḥ nakreṇeva samākrāntaḥ parākramavivarjitaḥ || 3 ||

He seemed to be mounted on a wheel, carried away by the wheel of penance, overpowered by a crocodile, devoid of valor.

वह एक पहिये पर सवार होने जैसा लग रहा था, तप के पहिये से उठाया गया, एक मगरमच्छ द्वारा पराजित हो गया, साहस से रहित।

7.155.4

किमेतत्स्यादुतान्यत्स्यान्निर्वाणमिति संशयात् नाध्यगच्छदसौ शान्तिं मूर्खो यौवनवानिव ॥ ४ ॥

kimetatsyādutānyatsyānnirvāṇamiti saṃśayāt nādhyagacchadasau śāntiṃ mūrkho yauvanavāniva || 4 ||

Due to doubt whether this would be or something else would be liberation, he did not attain peace, like a foolish youth.

संदेह के कारण कि यह होगा या कुछ और होगा मुक्ति, वह शांति नहीं पा सका, जैसे एक मूर्ख युवक।

7.155.5

अविद्याकृतमेवेदं दृश्यमित्येव चिन्तयन् अविद्या जगदित्येषा नायाति निपुणं हृदि ॥ ५ ॥

avidyākṛtamevedaṃ dṛśyamityeva cintayan avidyā jagadityeṣā nāyāti nipuṇaṃ hṛdi || 5 ||

Thinking that this visible world is indeed created by ignorance, this ignorance is the world, it does not come clearly to the heart.

सोचते हुए कि यह दृश्य जगत वास्तव में अज्ञान द्वारा बना है, यह अज्ञान ही जगत है, यह हृदय में स्पष्ट नहीं आता।

7.155.6

कियदन्तमिदं दृश्यं स्यात्पश्याम्येतदादितः । दूरतोर्ध्वप्रमाणेन तपोलब्धशरीरकः ॥ ६ ॥

kiyadantamidaṃ dṛśyaṃ syātpasyāmyetadāditaḥ | dūrator dhvapramāṇena tapolabdhaśarīrakaḥ || 6 ||

How far does this visible world extend? I see it from the beginning | With the measure of height and distance, having a body obtained through penance

यह दृश्य जगत कितना दूर तक फैला हुआ है? मैं इसे शुरू से देखता हूँ | ऊँचाई और दूरी के माप के साथ, तपस्या से प्राप्त शरीर वाला

7.155.7

भावाभावात्मनो नित्यमस्यान्ते स्थीयते सुखम् । तस्मादाकाशमप्यस्ति यत्र नो तत्र याम्यहम् ॥ ७ ॥

bhāvābhāvātmano nityamasya ante sthīyate sukham | tasmādākāśamapyasti yatra no tatra yāmyaham || 7 ||

The eternal nature of existence and non-existence remains in bliss at the end | Therefore, there is also space where I do not go

अस्तित्व और अनस्तित्व की नित्य प्रकृति अंत में आनंद में रहती है | इसलिए, वहाँ भी स्थान है जहाँ मैं नहीं जाता

7.155.8

इति निर्णीय हृदये मूर्ख एव बभूव सः । गतं तादृशमप्युक्तं विनाभ्यासेन भस्मनि ॥ ८ ॥

iti nirṇīya hṛdaye mūrkha eva babhūva saḥ | gataṃ tādṛśamapyuktaṃ vinābhyāsena bhasmani || 8 ||

Having thus resolved in his heart, he indeed became a fool | Such a state was said to have been reached without practice, turning to ashes

ऐसा निर्णय लेकर हृदय में, वह एक मूर्ख ही बन गया | ऐसी स्थिति कही गई जो अभ्यास के बिना प्राप्त हुई, राख में बदल गई

7.155.9

ततस्ततः प्रभृत्येव तेनैव मुनिभिः सह । लुब्धकत्वं परित्यज्य तपश्चरितुमुद्यतः ॥ ९ ॥

tatastataḥ prabhṛtyeva tenaiva munibhiḥ saha | lubdhakatvaṃ parityajya tapascaritumudyataḥ || 9 ||

From then on, with those very sages, giving up greed, he was eager to perform penance

तब से, उन्हीं ऋषियों के साथ, लोभ को त्यागकर, वह तपस्या करने के लिए उत्सुक था

7.155.10

तस्मिञ्जगति तैर्भावैस्तैः समं निवसन्सदा । बहून्यब्दसहस्राणि चकार सुमहत्तपः ॥ १० ॥

tasmiñjagati tairbhāvais taiḥ samaṃ nivasansadā | bahūnyabdasahasrāṇi cakāra sumahattapaḥ || 10 ||

In that world, always dwelling with those beings, he performed great penance for many thousands of years

उस जगत में, हमेशा उन प्राणियों के साथ रहकर, उसने हजारों वर्षों तक महान तपस्या की

7.155.11

तपः कुर्वन्कदाचित्स पुनः पप्रच्छ तं मुनिम् । कदा स्यादात्मविश्रान्तिर्ममेत्याह मुनिस्ततः ॥ ११ ॥

tapaḥ kurvankadācitsa punaḥ papraccha taṃ munim | kadā syādātmaviśrāntirmametyāha munistataḥ || 11 ||

Once, while performing austerities, he again asked the sage, 'When will I attain self-realization?' The sage then said:

एक बार तपस्या करते हुए उसने फिर से मुनि से पूछा, 'मेरा आत्म-विश्रांति कब होगा?' तब मुनि ने कहा:

7.155.12

मुनिरुवाच । ज्ञानं तदुपदिष्टं ते जीर्णदार्वल्पकाग्निवत् । संस्थितं हृदये किंतु दाह्यमाक्रम्य नोचितम् ॥ १२ ॥

muniruvāca | jñānaṃ tadupadiṣṭaṃ te jīrṇadārv alpakāgnivat | saṃsthitaṃ hṛdaye kiṃtu dāhyamākramya nocitam || 12 ||

The sage said: The knowledge that has been imparted to you is like a small fire in old wood. It resides in your heart, but it is not yet capable of burning.

मुनि ने कहा: जो ज्ञान तुम्हें दिया गया है, वह पुरानी लकड़ी में छोटे आग की तरह है। यह तुम्हारे हृदय में रहता है, पर यह अभी जलाने के लिए सक्षम नहीं है।

7.155.13

नाभ्यासेन विना ज्ञाने शिवे विश्रान्तवानसि । अभ्यासेन तु कालेन भृशं विश्रान्तिमेष्यसि ॥ १३ ॥

nābhyāsena vinā jñāne śive viśrāntavānasi | abhyāsena tu kālena bhṛśaṃ viśrāntimeṣyasi || 13 ||

Without practice, you will not attain peace in knowledge. But with practice over time, you will surely attain great peace.

अभ्यास के बिना, तुम ज्ञान में शांति नहीं पाओगे। लेकिन अभ्यास के साथ, समय के साथ, तुम निश्चित रूप से बड़ी शांति पाओगे।

7.155.14

भविष्यदिदमात्मीयमथाकर्णय निर्णयम् । मम वर्णयतः कर्णभूषणं भूतलाद्भुतम् ॥ १४ ॥

bhaviṣyadidamātmīyamathākaraṇya nirṇayam | mama varṇayataḥ karṇabhūṣaṇaṃ bhūtalādbhutam || 14 ||

Listen to this future account of mine and decide. I will describe an amazing ornament for the ears from the earth.

मेरे इस भविष्य के वर्णन को सुनो और निर्णय करो। मैं पृथ्वी से एक अद्भुत कानों का आभूषण बताऊँगा।

7.155.15

संस्तुतानवबुद्धात्मा ज्ञानसारतयानया । दोलायमानसंवित्त्वं न मूर्खो न च पण्डितः ॥ १५ ॥

saṃstutānavabuddhātmā jñānasāratayānayā | dolāyamānasamvittvaṃ na mūrkho na ca paṇḍitaḥ || 15 ||

Praised by the wise, this essence of knowledge is not understood by fools nor by scholars. It oscillates between ignorance and wisdom.

बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित, यह ज्ञान का सार न तो मूर्खों द्वारा समझा जाता है न ही विद्वानों द्वारा। यह अज्ञान और ज्ञान के बीच झूलता है।

7.155.16

अविद्यारूपमाभोगि किंप्रमाणमिदं जगत्स्यादित्यात्मविकल्पेन तपस्त्वं कर्तुमुद्यतः ॥ १६ ॥

avidyārūpamābhogi kiṃpramāṇamidaṃ jagatsyādityātmavikalpena tapastvaṃ kartumudyataḥ || 16 ||

O enjoyer of the form of ignorance, how can this world be measured? Thus, you are determined to perform austerities with the notion of the self as the sun.

हे अज्ञान रूप के भोगी, यह जगत कैसे मापा जा सकता है? इसलिए, आप सूर्य के रूप में आत्मा के विचार से तपस्या करने के लिए उद्यत हैं।

7.155.17

इत्थं तपस्त्वया घोरं कार्यं युगशतं पृथुपरमेष्ठी ततस्तुष्टस्त्वामुपैष्यति सामरः ॥ १७ ॥

itthaṃ tapastvayā ghoraṃ kāryaṃ yugaśataṃ pṛthuparameṣṭhī tatastuṣṭastvāmupaiṣyati sāmaraḥ || 17 ||

Thus, you should perform this terrible austerity for a hundred yugas. O Pṛthu, the supreme lord, being pleased with that, will come to you along with the immortals.

इसलिए, आपको यह भयानक तपस्या सौ युगों तक करनी चाहिए। हे पृथु, परमेश्वर, इससे प्रसन्न होकर, अमरों के साथ आपके पास आएंगे।

7.155.18

मार्गयिष्यसि तस्य त्वं वरदस्य वरैदमुद्दामदौरात्म्यान्निजं संदेहसंशयम ॥ १८ ॥

mārgayiṣyasi tasya tvaṃ varadasya varaidamuddāmadaurātmyānnijaṃ saṃdehasaṃśayam || 18 ||

You will seek the boon of that boon-giver, and from the arrogance of self-pity, you will dispel your own doubts and uncertainties.

आप उस वरदाता के वर की खोज करेंगे, और आत्म-दया के अभिमान से, आप अपने संदेह और अनिश्चितता को दूर करेंगे।

7.155.19

देवायं दृश्यरूपेऽस्मिन्दृष्टेऽविद्याभ्रमे सतिक्वचिदादर्शवन्नास्ति प्रतिबिम्बमलोज्झितः ॥ १९ ॥

devāyaṃ dṛśyarūpe'smindṛṣṭe'vidyābhrame satikvacidādarśavannāsti pratibimbamalojjhitaḥ || 19 ||

In this visible form, which is seen as the illusion of ignorance, there is no reflection without the mirror of consciousness.

इस दृश्य रूप में, जो अज्ञान के भ्रम के रूप में देखा जाता है, चेतना के दर्पण के बिना कोई प्रतिबिम्ब नहीं है।

7.155.20

चिद्व्योमदर्पणस्यास्य परमाण्वाकृतेरपिअन्तस्थस्यैव वा यत्र तत्रेदं प्रतिबिम्बति ॥ २० ॥

cidvyomadarpaṇasyāsya paramāṇvākṛterapiantasthasyaiva vā yatra tatredaṃ pratibimbati || 20 ||

In the mirror of the sky of consciousness, even in the smallest atom, or in the innermost being, this reflection appears.

चेतना के आकाश के दर्पण में, सबसे छोटे अणु में भी, या अंतर्मन में, यह प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

7.155.21

तस्मात्कियदनन्तं स्यादिदं दृश्यमनर्थकृत्। तस्य पारे कियद्वा स्यादाकाशं दृश्यमेव तत्॥ २१ ॥

tasmātkiyadanantaṃ syādidam dṛśyamanarthakṛt | tasya pāre kiyadvā syādākāśaṃ dṛśyameva tat || 21 ||

Therefore, how much of this visible universe is useless? Beyond that, how much of the visible space exists?

इसलिए, इस दृश्य ब्रह्मांड का कितना हिस्सा बेकार है? उसके पार, कितना दृश्य आकाश है?

7.155.22

एवमर्थमहं ज्ञातुमिमं संप्रार्थये वरम्। श्रृणु देवेश्वराविघ्नं तथैवाशु प्रयच्छ मे ॥ २२ ॥

evamarthamahaṃ jñātumimaṃ saṃprārthaye varam | śṛṇu deveśvarāvighnaṃ tathaivāśu prayaccha me || 22 ||

Thus, I desire to know the meaning of this. I beg for this boon. Listen, O Lord, without obstacles, and grant me this quickly.

इस प्रकार, मैं इसका अर्थ जानना चाहता हूँ। मैं इस वरदान के लिए प्रार्थना करता हूँ। हे देवेश्वर, बाधा के बिना सुनो और मुझे शीघ्र ही यह दो।

7.155.23

इयं स्वच्छन्दमृत्युर्मे नीरोगाऽस्तु तनुश्चिरम्। गारुडेन च वेगेन संयुता व्योमगामिनी ॥ २३ ॥

iyaṃ svacchandamṛtyurmē nīrogā'stu tanuściram | gāruḍena ca vēgēna saṃyutā vyōmagāminī || 23 ||

May my death be at my own will, may my body be free from disease and long-lived. May it be endowed with the speed of Garuda and move through the sky.

मेरी मृत्यु मेरी इच्छा से हो, मेरा शरीर रोगमुक्त और दीर्घायु हो। यह गरुड की गति से युक्त हो और आकाश में चले।

7.155.24

प्रतिनाडीकमेषा तु वृद्धिं गच्छतु योजनम्। क्रमेण जगतो बाह्ये भवत्वाकाशरूपिणी ॥ २४ ॥

pratināḍīkamēṣā tu vṛddhiṃ gacchatu yōjanam | krameṇa jagato bāhyē bhavatvākāśarūpiṇī || 24 ||

May this arrow increase by a yojana every moment. Gradually, may it become the form of space beyond the world.

यह बाण हर पल एक योजन बढ़े। धीरे-धीरे, यह विश्व के पार आकाश का रूप धारण करे।

7.155.25

साकाशस्यास्य दृश्यस्य लभेय परमेश्वर। अन्तमित्थमनन्तस्य परमोऽस्त्विति मे वरः ॥ २५ ॥

sākāśasyāsya dṛśyasya labheya parameśvara | antamitthamanantasya paramo'stviti me varaḥ || 25 ||

O Supreme Lord, may I attain the end of this visible space. May this be my ultimate boon.

हे परमेश्वर, मुझे इस दृश्य आकाश का अंत प्राप्त हो। यह मेरा परम वरदान हो।

7.155.26

इति साधो त्वया प्रोक्ते देवदेवो वरं प्रभुः। एवमस्तु तवेत्युक्त्वा यास्यत्यन्तर्धिमीश्वरः ॥ २६ ॥

iti sādho tvayā prokte devadevo varaṃ prabhuḥ | evamastu tavetyuktvā yāsyatyantardhimīśvaraḥ || 26 ||

Thus, O virtuous one, having been addressed by you, the Lord of the gods, the supreme Lord, will say 'So be it' and will disappear.

इस प्रकार, हे साधु, तुम्हारे द्वारा कहे जाने पर, देवों के देव, प्रभु वर कहेंगे 'ऐसा ही हो' और अन्तर्धान हो जाएँगे।

7.155.27

गते तस्मिन्महादेवे देवैः सह दिवस्पतौ। तपसा ते कृशो देहश्चन्द्रकान्तिर्भविष्यति ॥ २७ ॥

gate tasminmahādeve devaiḥ saha divaspatau | tapasā te kṛśo dehaścandrakāntirbhaviṣyati || 27 ||

When the great Lord departs along with the gods to the lord of the day, by penance, his body will become emaciated and will shine like the moon.

जब महादेव देवों के साथ दिन के स्वामी के पास चले जाएँगे, तब तपस्या से उनका शरीर दुबला हो जाएगा और चन्द्रमा की तरह चमकेगा।

7.155.28

मामापृच्छन्नमस्कृत्य तस्मिन्नेव क्षणे ततः। प्लुतिमेष्यति स व्योम्नि चित्तस्थार्थदिदृक्षया ॥ २८ ॥

māmāpṛcchannamaskṛtya tasminneva kṣaṇe tataḥ | plutimeṣyati sa vyomni cittasthārthadidṛkṣayā || 28 ||

Having asked me with reverence at that very moment, he will then leap into the sky with the desire to see the object of his mind.

उसी क्षण मुझसे प्रश्न करके और प्रणाम करके, वह आकाश में उछलेगा, अपने मन के विषय को देखने की इच्छा से।

7.155.29

द्वितीय इव शीतांशुर्द्वितीय इव भास्करः। द्वितीय इव वौर्वाग्निश्चन्द्रार्कस्पर्धयोत्थितः ॥ २९ ॥

dvitīya iva śītāṃśurdvitīya iva bhāskaraḥ | dvitīya iva vaurvāgniścandrārkaspardhayotthitaḥ || 29 ||

Like a second moon, like a second sun, like a second fire of Varuna, he will rise, rivaling the moon and the sun.

दूसरे चन्द्रमा की तरह, दूसरे सूर्य की तरह, दूसरे वरुण के अग्नि की तरह, वह चन्द्रमा और सूर्य के समान उठेगा।

7.155.30

ततो गरुडवेगेन दृश्यस्य नभसस्तथा । अन्तं प्राप्तुं वहन्वेगाज्जगतः सरितामिव ॥ ३० ॥

tato garuḍavegena dṛśyasya nabhasastathā | antaṃ prāptuṃ vahanvegājjagataḥ saritāmiva || 30 ||

Then, with the speed of Garuda, he will be visible in the sky, carrying the speed to reach the end of the world like rivers.

तब, गरुड की गति से, वह आकाश में दिखाई देगा, दुनिया के अन्त तक पहुँचने की गति को लेकर, नदियों की तरह।

7.155.31

जगतोन्ते ततोऽजस्रं ततो वर्धिष्यते वपुः । कल्पान्तमत्तार्णववन्निष्पाराम्बरपूरणम् ॥ ३१ ॥

jagatonte tato'jasraṃ tato vardhiṣyate vapuḥ | kalpāntamattārṇavavanniṣpārāmbarapūraṇam || 31 ||

At the end of the universe, then continuously, then the body will grow | Like the ocean at the end of the kalpa, filling the sky without limits.

ब्रह्मांड के अंत में, फिर लगातार, फिर शरीर बढ़ेगा | कल्प के अंत में समुद्र की तरह, सीमा रहित आकाश को भरता हुआ।

7.155.32

द्रक्ष्यस्यथ महाव्योन्नि वर्धमानो बृहद्वपुः । सर्गान्निरर्गलाधारनिरन्तगगनक्रमात् ॥ ३२ ॥

drakṣyasyatha mahāvyonni vardhamāno bṛhadvapuḥ | sargān nirargalādhāranirantagaganakramāt || 32 ||

Then you will see the great womb, growing with a vast body | From the creation, with an unobstructed base, endless sky in sequence.

फिर आप महान गर्भ देखेंगे, जो विशाल शरीर के साथ बढ़ रहा है | सृष्टि से, अवरोध रहित आधार, अनंत आकाश की क्रमशः।

7.155.33

परमार्थमहाकाशशून्यतावातचक्रकान् । स्वभावद्रवतोद्देशाच्चिदर्णवतरङ्गकान् ॥ ३३ ॥

paramārthamahākāśaśūnyatāvātacakrakān | svabhāvadravatoddeśāccidarṇavataraṅgakān || 33 ||

The ultimate reality, the great void of space, the wind wheel | From the nature of the flow, the waves of the ocean of consciousness.

परम सत्य, महान अंतरिक्ष की शून्यता, वायु चक्र | प्रवाह के स्वभाव से, चेतना के समुद्र की लहरें।

7.155.34

संविद्धने यथा स्वप्ने पुराद्या भान्ति खात्मकाः । तथा तदा तवैष्यन्ति सर्गवर्गा निरर्गलाः ॥ ३४ ॥

saṃviddhane yathā svapne purādyā bhānti khātmakāḥ | tathā tadā tavaeiṣyanti sargavargā nirargalāḥ || 34 ||

In the state of consciousness, as in a dream, the ancient ones appear as space-like | Similarly, then, the groups of creation will come to you, unobstructed.

चेतना की अवस्था में, जैसे स्वप्न में, प्राचीन अंतरिक्ष के समान प्रकट होते हैं | उसी प्रकार, तब, सृष्टि के समूह आपके पास आएंगे, अवरोध रहित।

7.155.35

विस्फुरन्ति महाव्योम्नि पर्णौघाः क्षुभितानिलैः । तथा सर्गाननन्तांस्त्वं द्रक्ष्यस्यक्षीणनिश्चयः ॥ ३५ ॥

visphuranti mahāvyomni parṇaughāḥ kṣubhitānilaiḥ | tathā sargānanantāṃstvaṃ drakṣyasyakṣīṇaniścayaḥ || 35 ||

They shine in the great sky, clusters of leaves stirred by the agitated wind | Similarly, you will see the endless creations, with unwavering certainty.

वे महान आकाश में चमकते हैं, वायु द्वारा उत्तेजित पत्तों के झुंड | उसी प्रकार, आप अनंत सृष्टियों को अडिग निश्चय के साथ देखेंगे।

7.155.36

सभासत्येक्षणरुचां यथा जालं सदप्यसत् । जगदात्म तथाकाशसंविदां खे सदप्यसत् ॥ ३६ ॥

sabhāsatyekṣaṇarucāṃ yathā jālaṃ sadapyasat| jagadātma tathākāśasaṃvidāṃ khe sadapyasat || 36 ||

Just as the illusory web of perception appears real yet unreal, so too the world and the self appear real yet unreal in the space of consciousness.

जैसे दृष्टि का जाल सत्य और असत्य दोनों लगता है, वैसे ही जगत और आत्मा चेतना के आकाश में सत्य और असत्य दोनों लगते हैं।

7.155.37

सर्वोर्वीजनदृष्टानां लग्नानामिन्दुमण्डले । यादृग्जालं जगत्तादृक्स्थितेऽनन्यत्वमात्मनः ॥ ३७ ॥

sarvorvījanadṛṣṭānāṃ lagnānāmindumaṇḍale| yādṛgjālaṃ jagattādṛksthite'nanyatvamātmanaḥ || 37 ||

Just as the reflection of all objects seen in the moon's orb appears as a web, so too the world appears as a web in the non-dual state of the self.

जैसे चंद्रमंडल में देखे गए सभी वस्तुओं का प्रतिबिंब एक जाल की तरह लगता है, वैसे ही जगत आत्मा की अद्वैत स्थिति में एक जाल की तरह लगता है।

7.155.38

पुनः सर्गः पुनर्व्योम पुनः सर्गः पुनर्नभः । इत्येवं पश्यतस्तेऽत्र दीर्घकालः प्रयास्यति ॥ ३८ ॥

punaḥ sargaḥ punarvyoma punaḥ sargaḥ punarnabhaḥ| ityevaṃ paśyataste'tra dīrghakālaḥ prayāsyati || 38 ||

Again creation, again space, again creation, again sky. Thus, for one who sees in this way, a long time will pass.

फिर से सृष्टि, फिर से आकाश, फिर से सृष्टि, फिर से आकाश। इस प्रकार, जो इस तरह देखता है, उसके लिए एक लंबा समय बीतेगा।

7.155.39

अथ दीर्घेण कालेन प्रस्फुरन्सर्गपर्णके । उद्वेगमेष्यसि व्योम्नि महामहिमनि स्वयम् ॥ ३९ ॥

atha dīrgheṇa kālena prasphuransargaparṇake| udvegameṣyasi vyomni mahāmahimani svayam || 39 ||

Then, after a long time, trembling in the cycle of creation, you will experience agitation in the vast expanse of the sky.

फिर, लंबे समय के बाद, सृष्टि के चक्र में कांपते हुए, आप विशाल आकाश में उद्वेग अनुभव करेंगे।

7.155.40

उद्वेगमेष्यसि ततस्तपसोऽनुभवत्फलम् । निर्देक्ष्यसि तदा देहमनन्ताम्बरपूरकम् ॥ ४० ॥

udvegameṣyasi tatastapaso'nubhavatphalam| nirdekṣyasi tadā dehamanantāmbarapūrakam || 40 ||

Then, experiencing agitation, you will perceive the fruit of your austerity. At that time, you will see the body filled with the infinite sky.

फिर, उद्वेग अनुभव करते हुए, आप अपनी तपस्या का फल देखेंगे। उस समय, आप अनंत आकाश से भरे हुए शरीर को देखेंगे।

7.155.41

किमिदं कुशरीरं मे भारभूतमिव स्थितम् । मेर्वादिभूभृतां लक्षमपि यस्मिंस्तृणायते ॥ ४१ ॥

kimidaṃ kuśarīraṃ me bhārabhūtamiva sthitam | mervādibhūbhṛtāṃ lakṣamapi yasmiṃstṛṇāyate || 41 ||

Why does this weak body of mine seem like a burden? Even the mountains and other earth-bearers rest upon it.

यह मेरा कमजोर शरीर क्यों बोझ जैसा लगता है? यहां तक कि पर्वत और अन्य पृथ्वी धारक भी इस पर विश्राम करते हैं।

7.155.42

देहो ममाप्रमाणोऽयं व्याप्तं व्योम मयाखिलम्पूरयामि खमद्यापि भावि नैवोपगम्यते ॥ ४२ ॥

deho mamāpramāṇo'yaṃ vyāptaṃ vyoma mayākhilampūrayāmi khamadyāpi bhāvi naivopagamyate || 42 ||

This body of mine is immeasurable; I pervade the entire sky and fill it. Yet, even the sky is not attainable.

यह मेरा शरीर अपरिमेय है; मैं पूरे आकाश को व्याप्त करता हूँ और उसे भरता हूँ। फिर भी, आकाश भी प्राप्त नहीं होता।

7.155.43

अविद्या बत घोरेयमनन्ता च प्रमीयते । मीयते न च केनापि ब्रह्मज्ञानं समं विना ॥ ४३ ॥

avidyā bata ghoreyamanantā ca pramīyate | mīyate na ca kenāpi brahmajñānaṃ samaṃ vinā || 43 ||

Indeed, this ignorance is terrible and endless, and it is measured. It cannot be measured by anyone without the knowledge of Brahman.

वास्तव में, यह अज्ञान भयानक और अनंत है, और यह मापा जाता है। ब्रह्मज्ञान के बिना किसी भी व्यक्ति द्वारा यह मापा नहीं जा सकता।

7.155.44

तमिमं संत्यजाम्येव देहमाविवृतान्तरम् । नानेन किंचिदाप्नोमि साधुसच्छास्त्रसंगमम् ॥ ४४ ॥

tamimaṃ saṃtyajāmyeva dehamāvivṛtāntaram | nānena kiṃcidāpnomi sādhusacchāstrasaṃgamam || 44 ||

I will indeed abandon this body, which is devoid of inner knowledge. I do not gain anything good from it, nor the association with good scriptures.

मैं इस शरीर को छोड़ दूंगा, जो आंतरिक ज्ञान से रहित है। मैं इससे कोई अच्छा लाभ नहीं पाता, न ही अच्छे शास्त्रों का संगम।

7.155.45

अनन्तापारपर्यन्तं निरालम्बाम्बरास्पदम् । किं नामेदं शरीरं मे सुदुष्प्रापार्थसंगमम् ॥ ४५ ॥

anantāpāraparyantaṃ nirālambāmbarāspadam | kiṃ nāmedaṃ śarīraṃ me sudurṣprāpārthasaṃgamam || 45 ||

What is this body of mine, which is endless, boundless, and the abode of the sky? It is very difficult to attain the union with the meaning.

यह मेरा शरीर क्या है, जो अनंत, असीम और आकाश का आश्रय है? यह अर्थ के संगम को प्राप्त करना बहुत कठिन है।

7.155.46

इति संचिन्त्य तं देहं धारणां प्राणरेचनीम् । कृत्वा त्यक्ष्यसि संभुक्तात्फलाच्छुष्कं यथा खगः ॥ ४६ ॥

iti saṃcintya taṃ dehaṃ dhāraṇāṃ prāṇarecanīm | kṛtvā tyakṣyasi saṃbhuktātphalācchuṣkaṃ yathā khagaḥ || 46 ||

Thus, having considered this body, holding the breath, you will abandon it like a bird leaves a fruitless tree.

इस प्रकार इस शरीर को सोचकर, प्राण को रोककर, आप इसे छोड़ देंगे जैसे पक्षी फलरहित वृक्ष को छोड़ देता है।

7.155.47

कृत्वा देहपरित्यागं जीवः प्राणसमन्वितः । व्योम्नि स्थास्यति ते तस्मिन्वातात्सूक्ष्मोऽपि वातवत् ॥ ४७ ॥

kṛtvā dehaparityāgaṃ jīvaḥ prāṇasamanvitaḥ | vyomni sthāsyati te tasminvātātsūkṣmo'pi vātavat || 47 ||

Having abandoned the body, the soul, endowed with life-breath, will reside in the sky, subtle like the wind.

शरीर को छोड़ने के बाद, प्राण से युक्त आत्मा आकाश में रहेगी, हवा की तरह सूक्ष्म।

7.155.48

छिन्नपक्षो महामेरुरिव देहः पतिष्यति । तत्र भूलोकशैलादि सर्वं चूर्णीकरिष्यति ॥ ४८ ॥

chinnapakṣo mahāmeruriva dehaḥ patiṣyati | tatra bhūlokasailādi sarvaṃ cūrṇīkariṣyati || 48 ||

The body will fall like Mount Meru with its wings cut off, and there it will pulverize everything, including the mountains of the earth.

शरीर पंख कटे हुए मेरु पर्वत की तरह गिरेगा, और वहाँ यह पृथ्वी के पर्वतों सहित सब कुछ को चूर्ण कर देगा।

7.155.49

शुष्का भगवती देहं तत्तदा भक्षयिष्यति । समातृमण्डला तेन निर्दोषा भूर्भविष्यति ॥ ४९ ॥

śuṣkā bhagavatī dehaṃ tattadā bhakṣayiṣyati | samātṛmaṇḍalā tena nirdoṣā bhūrbhaviṣyati || 49 ||

At that time, the dry goddess will consume the body, and by that, the circle of mothers will become flawless.

उस समय, सूखी देवी शरीर को खा जाएगी, और उससे मातृ मण्डल दोषरहित हो जाएगा।

7.155.50

इत्यात्मोदन्तमखिलं श्रुतवानसि सुव्रत । तपस्तालीवने कृत्वा यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ५० ॥

ityātmoudantamakhilaṃ śrutavānasi suvrata | tapastālīvane kṛtvā yathecchasi tathā kuru || 50 ||

Thus, you have heard the entire account of the self. Having performed penance in the Tali forest, do as you wish.

इस प्रकार, आपने आत्मा का पूरा वर्णन सुना है। ताली वन में तपस्या करके, जैसे आप चाहें वैसा करें।

7.155.51

अहो नु भगवन्दुःखं परिभोक्तव्यमक्षयम् । मया व्यर्थमनर्थाय यदर्थेन दुरर्थितम् ॥ ५१ ॥

aho nu bhagavanduḥkhaṃ paribhoktavyamakṣayam | mayā vyarthamanarthāya yadarthena durarthitam || 51 ||

Alas, O Lord, I have to endure endless suffering! I have acted in vain for a worthless cause, and thus I am in a miserable state.

हाय, हे भगवन्, मुझे अनंत दुःख सहना पड़ रहा है! मैंने व्यर्थ के लिए एक निरर्थक कारण से काम किया है, और इसलिए मैं दुःखी हूँ।

7.155.52

विद्यते किं विभो काचिद्युक्तिः सैषा स्थितिर्वर । अन्यथा भवितव्योऽर्थो यदि नास्ति तदुच्यताम् ॥ ५२ ॥

vidyate kiṃ vibho kācidyuktiḥ saiṣā sthitirvara | anyathā bhavitavyo'rtho yadi nāsti taducyatām || 52 ||

Is there any logic or reason for this situation, O Lord? If there is none, then tell me how things should be otherwise.

क्या इस स्थिति के लिए कोई तर्क या कारण है, हे भगवन्? यदि कोई नहीं है, तो बताएँ कि चीजें कैसे होनी चाहिए।

7.155.53

अवश्यंभवितव्योऽर्थो न कदाचन केनचित् । विधातुमन्यथा शक्यस्तन्न क्षरति यत्नतः ॥ ५३ ॥

avaśyaṃbhavitavyo'rtho na kadācana kenacit | vidhātumanyathā śakyastanna kṣarati yatnataḥ || 53 ||

What must happen will inevitably occur; it cannot be changed by anyone at any time. It is not possible to alter it through any effort.

जो होना है वह अवश्य होगा; इसे किसी भी समय किसी भी व्यक्ति द्वारा नहीं बदला जा सकता। किसी भी प्रयास से इसे बदलना संभव नहीं है।

7.155.54

वामावामशिरःपादविपर्ययविधौ यथा । पुंसो न विद्यते शक्तिस्तथा भाव्यन्यथास्थितौ ॥ ५४ ॥

vāmāvāmaśiraḥpādaviparyayavidhau yathā | puṃso na vidyate śaktistathā bhāvya nyathāsthitau || 54 ||

Just as it is not possible to change the natural positions of the left and right sides, head and feet, similarly, it is not possible to alter the destined state of things.

जैसे बाएँ और दाएँ पक्ष, सिर और पैरों की प्राकृतिक स्थिति को बदलना संभव नहीं है, उसी तरह, चीजों की नियत स्थिति को बदलना संभव नहीं है।

7.155.55

ज्योतिःशास्त्रार्थविज्ञानैरिह भाव्यर्थवेदनम् । भवत्यन्यदपूर्वं तु न किंचन कदाचन ॥ ५५ ॥

jyotiḥśāstrārthavijñānairiha bhāvya arthavedanam | bhavatyan yadapūrvaṃ tu na kiṃcana kadācana || 55 ||

Through the knowledge of astrology and other sciences, one can understand what is destined to happen. However, nothing unprecedented can ever occur.

ज्योतिष और अन्य विज्ञानों के ज्ञान से, यहाँ हम नियत को समझ सकते हैं। फिर भी, कुछ भी अपूर्व कभी नहीं हो सकता।

7.155.56

जयन्ति कर्माणि हि वेदनानि यैः प्राकृतैरद्यतनान्युपेत्य । शरीरदाहैरपि निर्विकारसंविन्नयैर्ब्रह्मतयैव सुप्तम् ॥ ५६ ॥

jayanti karmāṇi hi vedanāni yaiḥ prākṛtairadyatanānyupetya | śarīradāhairapi nirvikārasaṃvinnayairbrahmatayaiva suptam || 56 ||

The actions that cause pain are victorious, by which the natural elements are obtained in the present, even with the burning of the body, they are absorbed in Brahman without any change.

जो कर्म दुःख पैदा करते हैं, वे विजयी होते हैं, जिनसे प्राकृतिक तत्व वर्तमान में प्राप्त होते हैं, शरीर के दाह के साथ भी, वे बिना किसी परिवर्तन के ब्रह्म में लीन हो जाते हैं।

Chapter 156

7.156.1

व्याध उवाच । अनन्तरं हे भगवन्विततताकाशवासिनः । किंभविष्यति मे तत्र देहेऽधःपातिनि क्षितौ ॥ १ ॥

vyādha uvāca | anantaraṃ he bhagavanvitākāśavāsinaḥ | kiṃbhaviṣyati me tatra dehe'dhahpātini kṣitau || 1 ||

The hunter said: O Lord, who resides in the vast sky, what will happen to me after my body falls to the ground?

शिकारी ने कहा: हे भगवन्, जो विशाल आकाश में निवास करते हैं, मेरे शरीर के धरती पर गिरने के बाद मुझे क्या होगा?

7.156.2

मुनिरुवाच । शृणुष्वावहितस्तस्मिन्देहे तव परिक्षते । किं भविष्यति भव्यात्मस्तस्मिन्परमकाम्बरे ॥ २ ॥

muniruvāca | śṛṇuṣvāvahitastasmindehe tava parikṣate | kiṃ bhaviṣyati bhavyātmas tasminparamakāmbare || 2 ||

The sage said: Listen attentively, O noble soul, what will happen to your body, which is about to be destroyed, in that supreme abode?

ऋषि ने कहा: ध्यान से सुनो, हे उत्तम आत्मा, तुम्हारे शरीर का, जो नष्ट होने वाला है, उस परम धाम में क्या होगा?

7.156.3

देहे तस्मिन्परिभ्रष्टे जीवस्तु प्राणसंयुतः । भविष्यत्यम्बरे वातलवो व्याततरूपिणि ॥ ३ ॥

dehe tasminparibhraṣṭe jīvastu prāṇasaṃyutaḥ | bhaviṣyatyambare vātalavo vyātatarūpiṇi || 3 ||

When that body is abandoned, the soul, along with the life force, will exist in the expansive and formless sky.

जब वह शरीर छोड़ दिया जाएगा, तब आत्मा, प्राण के साथ, विशाल और निराकार आकाश में रहेगी।

7.156.4

तस्मिन्वातलवे चेतो दृश्यं हृत्स्थं स्थितं पुरः । स्फारं द्रक्ष्यति भूपीठं भवान्स्वप्ने जगद्यथा ॥ ४ ॥

tasminvātalave ceto dṛśyaṃ hṛtsthaṃ sthitaṃ puraḥ | sphāraṃ drakṣyati bhūpīṭhaṃ bhavānsvapne jagadyathā || 4 ||

In that expansive and formless sky, the consciousness will perceive the visible world situated before it, just as one sees the world in a dream.

उस विशाल और निराकार आकाश में, चेतना अपने सामने स्थित दृश्य जगत् को देखेगी, जैसे कि कोई स्वप्न में जगत् को देखता है।

7.156.5

महत्त्वाच्चित्तवृत्तेस्तु जीवो द्रक्ष्यति ते ततः । राजाहमस्मि भूपीठ इति संकल्पितार्थभाक् ॥ ५ ॥

mahattvāccittavṛttes tu jīvo drakṣyati te tataḥ | rājāhamasmi bhūpīṭha iti saṃkalpitārthabhāk || 5 ||

Due to the greatness of the mental state, the soul will perceive itself as a king on the earth, thinking, 'I am the king.'

मानसिक अवस्था की महानता के कारण, आत्मा अपने आप को पृथ्वी पर राजा के रूप में देखेगी, सोचते हुए, 'मैं राजा हूँ।'

7.156.6

तत्रास्य सहसैवाशु प्रतिभोदेष्यति स्वयम्। अहमस्मि नृपः श्रीमान्सिन्धुर्नाम्नातिमानितः ॥ ६ ॥

tatrāsya sahasaivāśu pratibhodeṣyati svayam | ahamaḥsmi nṛpaḥ śrīmānsindhurnāmnātimānitaḥ || 6 ||

There, he will immediately and spontaneously realize, 'I am the glorious king, Sindhu, highly respected by name.'

वहाँ, वह तुरंत और स्वयं समझेगा, 'मैं प्रसिद्ध राजा सिन्धु हूँ, जो नाम से बहुत सम्मानित है।'

7.156.7

अष्टवर्षाय मे राज्यं गते पितरि काननम्। भुवश्चतुःसमुद्रायाः पित्रा दत्तमुपागतम् ॥ ७ ॥

aṣṭavarṣāya me rājyaṃ gate pitari kānanam | bhuvaścatuḥsamudrāyāḥ pitrā dattamupāgatam || 7 ||

When I was eight years old, my father passed away in the forest, and I inherited the kingdom of the four-ocean-girt earth given by my father.

जब मैं आठ वर्ष का था, मेरे पिता वन में चले गए, और मैंने चार समुद्रों से घिरे भूमंडल के राज्य को पिता द्वारा दिया हुआ प्राप्त किया।

7.156.8

सीमान्ते भूपतिः शत्रुर्विदूरथ इति श्रुतः। विद्यते यः प्रयत्नेन विना नाम न जीयते ॥ ८ ॥

sīmānte bhūpatiḥ śatrurvidūratha iti śrutaḥ | vidyate yaḥ prayatnena vinā nāma na jīyate || 8 ||

At the border, there is a king named Vidūratha, known as the enemy. He cannot be conquered without effort.

सीमा पर, एक राजा है जिसका नाम विदूरथ है, जो शत्रु के रूप में जाना जाता है। उसे प्रयास के बिना नहीं जीता जा सकता।

7.156.9

इदं मे कुर्वतो राज्यं संवत्सरशतं गतम्। अहो भृत्यकलत्रौघैः सह भुक्तं मया सुखम् ॥ ९ ॥

idaṃ me kurvato rājyaṃ saṃvatsarasataṃ gatam | aho bhṛtyakalatraughaiḥ saha bhuktaṃ mayā sukham || 9 ||

While I was ruling the kingdom, a hundred years passed. Ah, I enjoyed happiness with my servants and family.

जब मैं राज्य कर रहा था, सौ वर्ष बीत गए। अह, मैंने अपने सेवकों और परिवार के साथ सुख भोगा।

7.156.10

कष्टमेष प्रवृद्धो मे सीमान्तवसुधाधिपः। अनेन सह संग्रामो दारुणः समुपस्थितः ॥ १० ॥

kaṣṭameṣa pravṛddho me sīmāntavasudhādhipaḥ | anena saha saṃgrāmo dāruṇaḥ samupasthitaḥ || 10 ||

Alas, this border king has grown strong. A terrible battle with him has arisen.

अफसोस, यह सीमा पर राजा बहुत शक्तिशाली हो गया है। उसके साथ एक भयंकर युद्ध उभरा है।

7.156.11

इति चिन्तयतस्तत्र विदूरथमहीभुजा। भविष्यति महद्युद्धं चतुरङ्गबलक्षयि ॥ ११ ॥

iti cintayatastatra vidūrathamahībhujā | bhaviṣyati mahadyuddhaṃ caturāṅgabalakṣayi || 11 ||

While thinking thus, the king Vidūratha will face a great battle that will destroy the fourfold army.

इस प्रकार सोचते हुए, राजा विदूरथ एक महान युद्ध का सामना करेगा जो चारों अंगों की सेना को नष्ट कर देगा।

7.156.12

महता तेन युद्धेन हनिष्यसि विदूरथम्। करवाललतालूनजङ्घं त्वं विरथोऽपि सन्॥ १२॥

mahatā tena yuddhena haniṣyasi vidūratham | karavālalatālūnajaṅghaṃ tvaṃ viratho'pi san || 12 ||

With that great battle, you will kill Vidūratha, even if you are without a chariot, with your sword striking his thighs and calves.

उस महान युद्ध के साथ, आप विदूरथ को मार डालेंगे, भले ही आप रथ के बिना हों, आपकी तलवार उसकी जांघों और पिंडलियों पर पड़ेगी।

7.156.13

चतुःसागरपर्यन्ते भूतले भूपतिस्ततः। भविष्यसि भयाक्रान्तदिक्पालादृतशासनः॥ १३॥

catuḥsāgaraparyante bhūtale bhūpatistataḥ | bhaviṣyasi bhayākrāntadikpālādṛtaśāsanaḥ || 13 ||

Then you will become the ruler of the earth up to the four oceans, with the guardians of the directions obeying your commands out of fear.

तब आप चारों समुद्रों तक की पृथ्वी के शासक बनेंगे, और दिशाओं के रक्षक भय से आपके आदेशों का पालन करेंगे।

7.156.14

स त्वं सिन्धुर्भवन्प्राप्तसकलावनिमण्डलः। पण्डितैर्मन्त्रिभिः सार्धं करिष्यसि कथा इमाः॥ १४॥

sa tvaṃ sindhurbhavanprāptasakalāvanimaṇḍalaḥ | paṇḍitairmantribhiḥ sārdhaṃ kariṣyasi kathā imāḥ || 14 ||

You, having become the ruler of the entire earth, will discuss these matters with wise ministers.

आप, पूरी पृथ्वी के शासक बनकर, बुद्धिमान मंत्रियों के साथ इन मामलों पर चर्चा करेंगे।

7.156.15

मन्त्री वदिष्यति। अत्याश्चर्यमिदं देव यदेवं स विदूरथः। देवेन विजितो युद्धे नीतश्च यमसादनम्॥ १५॥

mantrī vadiṣyati | atyāścaryamidaṃ deva yadevaṃ sa vidūrathaḥ | devena vijito yuddhe nītaśca yamasādanam || 15 ||

The minister will say, 'O Lord, it is truly amazing that Vidūratha was defeated and killed in battle by you and sent to the abode of Yama.'

मंत्री कहेगा, 'हे देव, यह vé आश्चर्यजनक है कि विदूरथ आपके द्वारा युद्ध में पराजित और मारा गया और यम के घर भेज दिया गया।'

7.156.16

त्वं वक्ष्यसि। भोः साधो सधनस्यास्य कल्पान्तार्णवरंहसः। वैरी विदूरथो राजा किमर्थं वद दुःसहः॥ १६॥

tvaṃ vakṣyasi | bhoḥ sādho sadhanasyāsya kalpāntārṇavaraṃhasaḥ | vairī vidūratho rājā kimarthaṃ vada duḥsahaḥ || 16 ||

You will speak | Oh virtuous one, what is the purpose of this ocean of calamity at the end of the world | Why is King Viduratha, the enemy, so difficult to defeat?

तुम बोलोगे | हे साधु, इस कल्पान्त के संकट समुद्र का क्या उद्देश्य है | शत्रु राजा विदूरथ इतना दुःसह क्यों है?

7.156.17

मन्त्री वदिष्यति। लीला नामास्य भार्यास्ति तयातितपसार्जिता। माता सरस्वतीदेवी जगद्धात्री निरञ्जना॥ १७॥

mantrī vadiṣyati | līlā nāmāsya bhāryāsti tayātitapasārjitā | mātā sarasvatīdevī jagaddhātrī nirañjanā || 17 ||

The minister will speak | There is a wife named Lila, who has attained great penance | Mother Saraswati, the creator of the world, is pure and spotless

मंत्री बोलेगा | लीला नाम की एक पत्नी है, जिसने बड़ी तपस्या की है | माँ सरस्वती, जगत की धात्री, निर्मल और निष्पाप है

7.156.18

गृहीतायाः सुतात्वेन सास्या भुवनभाविनी । संसाधयति कार्याणि मोक्षादीन्यपि हेलया ॥ १८ ॥

gṛhītāyāḥ sutātvena sāsyā bhuvanabhāvinī | saṃsādhayati kāryāṇi mokṣādīnyapi helayā || 18 ||

She, who is accepted as a daughter, is the protector of the world | She accomplishes all tasks, including liberation, with ease

जो पुत्री के रूप में स्वीकार की गई है, वह जगत की रक्षिका है | वह सहजता से सभी कार्यों, मोक्ष सहित, को पूरा करती है

7.156.19

वरेण शब्दमात्रेण जगदप्यजगत्क्षणात् । करोति सा भवन्नाशे तस्याः कैव कदर्थना ॥ १९ ॥

vareṇa śabdamātreṇa jagadapyajagatkṣaṇāt | karoti sā bhavannāśe tasyāḥ kaiva kadarthanā || 19 ||

With just a word, she can turn the world into non-existence in an instant | What is the point of her destruction?

केवल एक शब्द से, वह जगत को एक पल में अस्तित्वहीन कर सकती है | उसके विनाश का क्या लाभ?

7.156.20

सिन्धुर्वदिष्यति । त्वया वै युक्तं कथितं यद्येवं तद्विदूरथः । अशक्यो जेतुमाश्चर्य एतस्य समरे वधः ॥ २० ॥

sindhurvadiṣyati | tvayā vai yuktaṃ kathitaṃ yadyevaṃ tadvidūrathaḥ | aśakyo jetumāścarya etasya samare vadhaḥ || 20 ||

Sindhu will speak | What you have said is indeed appropriate | If that is the case, then Viduratha is impossible to defeat | It is amazing that he can be killed in battle

सिन्धु बोलेगा | तुमने जो कहा है वह बिलकुल उचित है | यदि ऐसा है, तो विदूरथ को हराना असंभव है | यह आश्चर्य है कि उसे युद्ध में मारा जा सकता है

7.156.21

तदेवं संप्रसादेन भगवत्या समन्वितः । किमित्यस्मिन्रणे तस्मिञ्जयं राजा न लब्धवान् ॥ २१ ॥

tadevaṃ saṃprasādena bhagavatyā samanvitaḥ | kimityasminraṇe tasmiñjayaṃ rājā na labdhvān || 21 ||

Thus, even with the grace of the divine, why did the king not achieve victory in that battle?

इस प्रकार, भगवान की कृपा से भी, उस युद्ध में राजा विजय क्यों नहीं पा सका?

7.156.22

मन्त्री वदिष्यति । तेन संप्रार्थिता देवी सर्वकालमखेदिना । मोक्षोऽस्तु मम संसारादिति तामरसेक्षण ॥ २२ ॥

mantrī vadiṣyati | tena saṃprārthitā devī sarvakālamakhedinā | mokṣo'stu mama saṃsārāditi tāmarasekṣaṇa || 22 ||

The minister will say: 'By him, the goddess was supplicated tirelessly at all times, saying, 'May I be liberated from the cycle of rebirth.''

मंत्री कहेगा: 'उसने समय के साथ थके बिना देवी को प्रार्थना की, 'मुझे जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिले।'

7.156.23

तया तेन विभो तस्य स एवावन्ध्यसंविदा । संपादितस्तेन तदाश्रित आजौ पराजयः ॥ २३ ॥

tayā tena vibho tasya sa evāvandhyasanvidā | saṃpāditastena tadāśrita ājau parājayaḥ || 23 ||

O Lord, by her, through him, with that very unwavering devotion, that defeat in battle was accomplished by him.

हे प्रभु, उसने, उसके द्वारा, उसी अटल भक्ति से, उस युद्ध में हार को पूरा किया।

7.156.24

सिन्धुर्वदिष्यति । यद्येवं तन्मया देवी सदैवैषा प्रपूज्यते । मोक्षं किमिति मे नैषा ददाति परमेश्वरी ॥ २४ ॥

sindhurvadiṣyati | yadyevaṃ tanmayā devī sadaiveṣā prapūjyate | mokṣaṃ kimiti me naiṣā dadāti parameśvarī || 24 ||

Sindhu will say: 'If this is so, then why does this goddess, who is always worshipped by me, not grant me liberation, O Supreme Goddess?'

सिन्धु कहेगा: 'यदि ऐसा है, तो फिर यह देवी, जिसे मैं हमेशा पूजता हूँ, मुझे मुक्ति क्यों नहीं देती, हे परमेश्वरी?'

7.156.25

मन्त्री वदिष्यति । एषा हि ज्ञप्तिरास्तेऽन्तः सर्वस्य हृदये सदा । संविद्रूपा भगवती सैव प्रोक्ता सरस्वती ॥ २५ ॥

mantrī vadiṣyati | eṣā hi jñaptirāste'ntaḥ sarvasya hṛdaye sadā | saṃvidrūpā bhagavatī saiva proktā sarasvatī || 25 ||

The minister will say: 'Indeed, this awareness always resides within the heart of everyone. The goddess, who is the form of consciousness, is proclaimed as Sarasvati.'

मंत्री कहेगा: 'वास्तव में, यह जागरूकता हमेशा हर किसी के हृदय में रहती है। चेतना के रूप में देवी, सरस्वती कहलाती है।'

7.156.26

येन येन यथात्मीया प्रार्थ्यते स्वयमेव सा । प्रयच्छति तथैवाशु तस्माच्चिदनुभूयते ॥ २६ ॥

yena yena yathātmīyā prārthyate svayameva sā | prayacchati tathaivāśu tasmāccidanubhūyate || 26 ||

Whatever is desired by the self, it is immediately fulfilled by the self. Therefore, it is experienced by consciousness.

जो भी आत्मा द्वारा इच्छित होता है, वह तुरंत आत्मा द्वारा ही पूरा किया जाता है। इसलिए, यह चेतना द्वारा अनुभव किया जाता है।

7.156.27

न प्रार्थितैषा भवता मोक्षार्थमरिमर्दन । प्रार्थितैव त्वया संविदात्मीया शत्रुशान्तये ॥ २७ ॥

na prārthitaiṣā bhavatā mokṣārthamari-mardana | prārthitaiva tvayā saṃvidātmīyā śatru-śāntaye || 27 ||

This was not desired by you for the sake of liberation, O slayer of enemies. It was desired by you for the sake of pacifying the enemy.

यह आपने मुक्ति के लिए नहीं इच्छित किया, हे शत्रुओं के मारने वाले। यह आपने शत्रु को शांत करने के लिए इच्छित किया।

7.156.28

सिन्धुर्वदिष्यति । न प्रार्थिता मया कस्मादनेनैषा सरस्वती । संविच्छुद्धा मया कस्मात्प्रार्थिता नेह मुक्तये ॥ २८ ॥

sindhurvadiṣyati | na prārthitā mayā kasmādanenaiṣā sarasvatī | saṃvicchuddhā mayā kasmātprārthitā neha muktaye || 28 ||

Sindhu will say: Why was this Sarasvati not desired by me? Why was this pure consciousness desired by me, not for liberation here?

सिंधु कहेगा: मैंने इस सरस्वती को क्यों नहीं इच्छित किया? मैंने इस शुद्ध चेतना को यहाँ मुक्ति के लिए क्यों नहीं इच्छित किया?

7.156.29

मदाशयगताप्येषा ज्ञप्तिं दत्त्वा सरस्वती । मन्मोक्षाय किमित्यङ्ग सद्रूपापि न चेष्टते ॥ २९ ॥

madāśayagatāpyeṣā jñaptiṃ dattvā sarasvatī | manmokṣāya kimityaṅga sadrūpāpi na ceṣṭate || 29 ||

Even though Sarasvati, residing in my heart, gave the indication, why does she not act for my liberation, even though she is of the same nature?

यद्यपि सरस्वती, मेरे हृदय में रहते हुए, संकेत देती है, फिर भी वह मेरी मुक्ति के लिए क्यों नहीं कार्य करती, यद्यपि वह उसी स्वरूप की है?

7.156.30

मन्त्री वदिष्यति । अशुभः प्राक्तनोऽभ्यासस्तवास्ति रिपुघातिनः । तेनैषा मुक्तये नत्वा त्वया न प्रार्थिता विभो ॥ ३० ॥

mantrī vadiṣyati | aśubhaḥ prāktano'bhyāsastavāsti ripu-ghātinaḥ | tenaiṣā muktaye natvā tvayā na prārthitā vibho || 30 ||

The minister will say: O slayer of enemies, you have an impure past practice. Therefore, this was not desired by you for liberation.

मंत्री कहेगा: हे शत्रुओं के मारने वाले, आपके पास एक अशुद्ध पिछला अभ्यास है। इसलिए, यह आपने मुक्ति के लिए नहीं इच्छित किया।

7.156.31

यच्चित्तस्तन्मयो जन्तुर्भवतीत्याजगत्स्थितेः आबालमेव संसिद्धं कर्तुं शक्नोति कोऽन्यथा ॥ ३१ ॥

yaccittastanmayo janturbhavatītyājagatsthiteḥ ābālamēva saṃsiddhaṃ kartuṃ śaknoti ko'nyathā || 31 ||

Whatever the mind is focused on, the being becomes that. From childhood, who else can accomplish anything?

जिस पर चित्त लगा है, वही जन्तु हो जाता है। बचपन से ही कोई और कुछ कर सकता है?

7.156.32

यदेव येनामलयामलात्म संवेद्यतेऽभ्यासमयं विदान्तः सर्वोपमर्देन तदेव सोऽङ्ग सदस्त्वसद्वास्तु भवत्यविघ्नम् ॥ ३२ ॥

yadeva yenāmalayāmalātma saṃvedyate'bhyāsamayaṃ vidāntaḥ sarvopamardena tadeva so'ṅga sadastvāsadvāstu bhavatyavighnam || 32 ||

Whatever is experienced by the pure self through practice, that alone is true or false without obstruction.

जो कुछ भी पवित्र आत्मा द्वारा अभ्यास से अनुभव किया जाता है, वही सत्य या असत्य होता है बिना किसी बाधा के।

Chapter 157

7.157.1

अथ सिन्धुर्वदिष्यति आर्यानार्यवपुः कोऽहमभवं विमतिः पुरा यद्वशान्मे कुसंस्कारः प्राक्तनोऽस्ति भवप्रदः ॥ १ ॥

atha sindhurvadiṣyati āryānāryavapuḥ ko'hamabhavaṃ vimatiḥ purā yadvaśānme kusaṃskāraḥ prāktano'sti bhavapradaḥ || 1 ||

Then, the river Sindhu will speak: 'Who was I, the one with a noble or ignoble form, confused in the past? What was the ancient impression that was bestowed upon me?'

तब, सिंधु नदी कहेगी: 'मैं कौन था, जिसका शरीर आर्य या अनार्य था, भूला हुआ पहले? मुझ पर कौन सा पुराना संस्कार था जो मुझे दिया गया था?'

7.157.2

मन्त्री वदिष्यति रहस्यं शृणु भो राजन् सावधानपरः क्षणम् चोदितः संदधासीदम् अद्य मान्द्यविनाशनम् ॥ २ ॥

mantrī vadiṣyatirahasyaṃ śṛṇu bho rājan sāvadhānaparaḥ kṣaṇam coditaḥ saṃdadhāsīdam adya māndyavināśanam || 2 ||

The minister will speak the secret, listen, O king, be attentive for a moment, urged to bind this today for the destruction of dullness.

मंत्री रहस्य बताएगा, सुनो, हे राजा, एक पल के लिए सावधान रहो, आज इसे बाँधने के लिए प्रेरित किया गया है, मंदता के विनाश के लिए।

7.157.3

किमप्य् आद्यन्तरहितम् अस्तीह सदनामयम् स्थितं त्वम् अहम् इति आदिरूपेण ब्रह्म शब्दितम् ॥ ३ ॥

kimapy ādyantarahitam astīha sadanāmayam sthitaṃ tvam aham ity ādirūpeṇa brahma śabditam || 3 ||

Something without beginning or end exists here, established in the form of 'I am you,' denoted by the word Brahman.

यहाँ कुछ ऐसा है जिसका न आदि है न अंत, जो 'मैं तुम हूँ' के रूप में स्थापित है, ब्रह्म शब्द से अभिहित।

7.157.4

तद् ब्रह्म स्वयम् एवाहम् चित् चेतामीति संविदम् जीवताम् इव गत्वास्ते चित्ती भूयात् यजद्वपुः ॥ ४ ॥

tad brahma svayam evāhaṃ cit cetāmīti saṃvidam jīvatām iva gatvāste cittī bhūyāt yajadvapuḥ || 4 ||

That Brahman itself is 'I am consciousness,' knowing this, it becomes like the living beings, and it remains as pure consciousness, devoid of material form.

वह ब्रह्म स्वयं 'मैं चेतना हूँ' है, इसे जानकर, यह जीवों के समान हो जाता है, और यह शुद्ध चेतना के रूप में रहता है, भौतिक रूप से रहित।

7.157.5

चित्तं तु गगनाच्छात्म वपुर् विद्ध्य् आतिवाहिकम् तद् एव वास्ति नेह अन्यद् आदिभौतिकतादिकम् ॥ ५ ॥

cittaṃ tu gaganācchātma vapur viddhy ātivāhikam tad eva vāsti neha anyad ādhibhautikatādikam || 5 ||

The mind is indeed the form of the sky, know it to be transcendental. Only that exists here, nothing else material.

मन वास्तव में आकाश का रूप है, इसे पारलौकिक समझो। यहाँ केवल वही है, कुछ और भौतिक नहीं।

7.157.6

चित्तमेतदनाकारमपि साकारवत्स्थितम्। संकल्पैः परलोकाद्यैः स्वप्नाद्यैरेतदेव सत्॥ ६॥

cittametadanākāramapi sākāravatsthitam | saṃkalpaiḥ paralokādyaiḥ svapnādyairetadeva sat || 6 ||

This mind, though formless, appears to have form | It exists through intentions, other worlds, dreams, etc.

यह मन, यद्यपि निराकार है, फिर भी साकार प्रतीत होता है | यह संकल्पों, परलोकों, स्वप्नों आदि के द्वारा अस्तित्व में है।

7.157.7

अनाकारमपि स्फारं चित्तं जगदिदं विदुः। य एव पवनो नाम स एव स्पन्द्रं यथा॥ ७॥

anākāramapi sphāraṃ cittaṃ jagadidaṃ viduḥ | ya eva pavano nāma sa eva spandanaṃ yathā || 7 ||

Though formless, the mind is expansive | This world is known to be the mind | Just as the wind is known by its movement.

यद्यपि निराकार, मन विस्तृत है | यह जगत् मन ही माना जाता है | जैसे वायु अपने स्पंदन से जानी जाती है।

7.157.8

यथा गगनशून्यत्वे जगच्चित्ते तथेककम्। अत्राप्रतिघरूपेऽस्ति न मनागपि भिन्नता॥ ८॥

yathā gaganśūnyatve jagaccitte tathekakam | atrāpratigharūpe'sti na manāgapi bhinnatā || 8 ||

Just as the sky is empty, so is the world in the mind | In this non-obstructing form, there is no difference at all.

जैसे आकाश शून्य है, वैसे ही जगत् मन में है | इस अवरोधरहित रूप में, कोई अंतर नहीं है।

7.157.9

हृदयस्थं जगज्जालं न किंचित्किंचिदास्थितम्। जगद्विद्धि निराकारं चित्तमेव न वास्तवम्॥ ९॥

hṛdayasthaṃ jagajjālaṃ na kiṃcitkiṃcidāsthitam | jagadviddhi nirākāraṃ cittameva na vāstavam || 9 ||

The web of the world is in the heart, nothing is established | Know the world to be formless, the mind alone is not real.

जगत् का जाल हृदय में है, कुछ भी स्थापित नहीं है | जगत् को निराकार जानो, मन ही वास्तविक नहीं है।

7.157.10

सत्त्वमेव वपुः पूर्वमुदितं ब्रह्मणः पदात्। अयमेव स संपन्नो योऽद्य तामसतामसः॥ १०॥

sattvameva vapuḥ pūrvamuditaṃ brahmaṇaḥ padāt | ayameva sa saṃpanno yo'dya tāmasatāmasaḥ || 10 ||

The essence itself is the form that arose from the state of Brahman | This very one is complete, who is now in the state of darkness.

सत्त्व ही वह रूप है जो ब्रह्म की स्थिति से उत्पन्न हुआ | यही वह है जो पूर्ण है, जो अब अंधकार की स्थिति में है।

7.157.11

सिन्धुर्वक्ष्यति किमुच्यते महाभाग वद तामसतामसः क्रियन्ते पूर्वमेवैताः केन संज्ञाः परे पदे॥ ११॥

sindhurvakṣyati kimucyate mahābhāga vada tāmasatāmasaḥ kriyante pūrvamevaitāḥ kena saṃjñāḥ pare pade || 11 ||

Sindhu will speak. What is said, O fortunate one, tell that darkness. These names are made beforehand by whom in the supreme state.

सिंधु बोलेगा। क्या कहा जाता है, हे महाभाग, वह अंधकार बताओ। ये नाम पहले से ही किसने supreme state में बनाए हैं।

7.157.12

मन्त्री वदिष्यति जन्तोः सावयवस्येह हस्ताद्यवयवा यथा तथा नवयवस्यैवमातिवाहिकतात्मनः ॥ १२ ॥

mantrī vadiṣyati jantoḥ sāvayavasyeha hastādyavayavā yathā tathā navayavasyevamātivāhikatātmanaḥ || 12 ||

The minister will speak. Just as the parts like hands of a being with parts here, so also of the nine-parted Ātivāhika self.

मंत्री बोलेगा। जैसे यहाँ हाथ जैसे अंग एक अंगों वाले जीव के, वैसे ही नौ अंगों वाले आतिवाहिक स्वयं के।

7.157.13

पश्चादात्मनि सैवात्मा नानासंज्ञाः करिष्यति आधिभौतिकतानाम्नि पृथ्व्याद्या आतिवाहिके ॥ १३ ॥

paścādātmani saivātmā nānāsaṃjñāḥ kariṣyati ādhibhautikatānāmni pṛthvyādyā ātivāhike || 13 ||

Afterwards, that very self will make various names in the Ātivāhika, in the material elements like earth, etc.

बाद में, वही स्वयं आतिवाहिक में पृथ्वी जैसे भौतिक तत्वों में विभिन्न नाम बनाएगा।

7.157.14

स्वप्नाभेऽस्मिञ्जगद्भाने संकल्पेनात्मरूपिणा संज्ञात्मनात्मरूपेण स्वयं व्यवहरिष्यति ॥ १४ ॥

svapnābhe'sminjagadbhāne saṃkalpenātmarūpiṇā saṃjñātmanātmarūpeṇa svayaṃ vyavahariṣyati || 14 ||

In this dream-like world appearance, by the resolution of the self-form, by the self-form of names, one will conduct oneself.

इस स्वप्न-जैसे जगत के प्रकटन में, स्वयं-रूप के संकल्प से, नामों के स्वयं-रूप से, स्वयं अपने आप को व्यवहार करेगा।

7.157.15

त्वामातिवाहिकाकारा यत्तत्स्फुरितवान्नवम् जातिर्महातमस्कोऽयमिति तत्राभिधा कृता ॥ १५ ॥

tvāmātivāhikākārā yattatsphuritavānnavam jātirmahātamasko'yamiti tatrābhidhā kṛtā || 15 ||

You, in the form of Ātivāhika, that which has shone forth as the ninth, this is the great darkness, thus the name is given there.

तुम, आतिवाहिक के रूप में, जो नौवें रूप में प्रकट हुआ है, यह महान अंधकार है, इस प्रकार वहाँ नाम दिया गया है।

7.157.16

ब्रह्मणो निर्विकारस्य विकारिण इव प्रभो। जातयो जीवतापत्तौ कलिता विविधाभिधाः ॥ १६ ॥

brahmaṇo nirvikārasya vikāriṇa iva prabho | jātayo jīvatāpattau kalitā vividhābhidhāḥ || 16 ||

O Lord, the unchanging Brahman appears to take on various forms and names when it manifests as the living beings.

हे प्रभो, निर्विकार ब्रह्म जीवों में प्रकट होने पर विविध नाम और रूपों में दिखाई देता है।

7.157.17

प्राथम्येनैव यद्ब्रह्म जीवतामिव गच्छति। तदैव बुद्ध्या भोक्ता तज्जातिः सात्त्विकसात्त्विकी ॥ १७ ॥

prāthamyenaiva yadbrahma jīvatāmiva gacchati | tadaiva buddhyā bhoktā tajjātiḥ sāttvikasāttvikī || 17 ||

When Brahman first appears to take the form of living beings, it is then known through the intellect as the enjoyer, and that form is called sāttvika-sāttvikī.

जब ब्रह्म पहली बार जीवों के रूप में प्रकट होता है, तब यह बुद्धि द्वारा भोक्ता के रूप में जाना जाता है, और उस रूप को सात्त्विक-सात्त्विकी कहा जाता है।

7.157.18

वर्तमाने भवे भव्यगुणैर्युक्ता तु मानद। केवला सात्त्विकी प्रोक्ता जातिर्जातिविदां वरैः ॥ १८ ॥

vartamāne bhave bhavyaguṇairyuktā tu mānada | kevalā sāttvikī proktā jātirjātividāṃ varaiḥ || 18 ||

In the present existence, endowed with future qualities, O respectful one, the form is called purely sāttvika by the best knowers of forms.

वर्तमान अस्तित्व में, भविष्य के गुणों से युक्त, हे आदरणीय, यह रूप रूपों के ज्ञाताओं द्वारा शुद्ध सात्त्विक कहा जाता है।

7.157.19

नवा भवैश्चेद्बहुभिर्भोगमोक्षैकभागिनी। जातिस्तत्प्रोच्यते तज्ज्ञैः सद्भी राजसराजसी ॥ १९ ॥

navā bhavaīścedbahubhirbhogamokṣaikabhāginī | jātistatprocyate tajjñaiḥ sadbhī rājasarājasī || 19 ||

If endowed with many future existences, the form is called rājasarājasī by the wise, as it is a partaker of enjoyment and liberation.

यदि बहुत से भविष्य के अस्तित्वों से युक्त है, तो यह रूप बुद्धिमानों द्वारा राजसराजसी कहा जाता है, क्योंकि यह भोग और मोक्ष का भागी है।

7.157.20

वर्तमाने भवे भव्यगुणैर्मुक्ता तु मानद। केवला राजसी प्रोक्ता जातिः स्वल्पभवे भवेत् ॥ २० ॥

vartamāne bhave bhavyaguṇairmuktā tu mānada | kevalā rājasī proktā jātiḥ svalpabhave bhavet || 20 ||

In the present existence, if freed from future qualities, O respectful one, the form is called purely rājasī by the best knowers of forms, and it exists in a lesser state.

वर्तमान अस्तित्व में, यदि भविष्य के गुणों से मुक्त है, हे आदरणीय, तो यह रूप रूपों के ज्ञाताओं द्वारा शुद्ध राजसी कहा जाता है, और यह एक छोटे अवस्था में अस्तित्व में है।

7.157.21

प्रथमात्यन्तबहुभिर्भवैश्चन्मोक्षगामिनी। जातिस्तत्प्रोच्यते तज्ज्ञैः सद्भिस्तामसतामसी ॥ २१ ॥

prathamātyantabahubhirbhavaiśce'nmokṣagāminī jātistatprocyate tajjñaiḥ sadbhistāmasatāmasī || 21 ||

The first birth, which is deeply entangled in worldly existence and leads not to liberation, is called by the wise as the lowest of the low, the tamasic birth.

पहला जन्म, जो संसार में अत्यधिक उलझा हुआ है और मोक्ष की ओर नहीं ले जाता, उसे ज्ञानीजन तामसिक जन्मों में सबसे निम्न कहते हैं।

7.157.22

सामान्येनैव बहुभिर्जन्मभिर्मोक्षभागिनी केवलां तामसी प्रोक्ता जातिर्जातिविशारदैः ॥ २२ ॥

sāmānyenaiva bahubhirjanmabhirmokṣabhāginī kevalā tāmasī proktā jātirjātiviśāradaiḥ || 22 ||

Generally, only the tamasic birth is said by the experts in birth to be the one that leads to liberation through many births.

सामान्यतः, जन्म के ज्ञाता कहते हैं कि केवल तामस जन्म ही अनेक जन्मों के द्वारा मोक्ष का भागी होता है।

7.157.23

क्रमेणानेन जातीनां विविधा भेदकल्पना तासां तामसतामस्यां जातौ जातोऽसि मानद ॥ २३ ॥

krameṇānena jātīnāṃ vividhā bhedakalpanā tāsāṃ tāmasatāmasyāṃ jātau jāto'si mānada || 23 ||

O Giver of Honor, by this gradual process, the various distinctions of castes and classes are imagined. Born in the darkness of ignorance, you are born into these very distinctions.

हे मानदाता, इस क्रमिक प्रक्रिया से जातियों के विविध भेदों की कल्पना की जाती है। अज्ञान के अंधकार में जन्म लेने से तुम इन भेदों में ही जन्म लेते हो।

7.157.24

बहूनि तव जन्मानि समतीतानि तान्यहम् विविधानि विचित्राणि वीर जानामि नो भवान् ॥ २४ ॥

bahūni tava janmāni samatītāni tānyaham vividhāni vicitrāṇi vīra jānāmi no bhavān || 24 ||

O hero, many are the births of yours that have passed; those various and strange ones I know, not you.

हे वीर, तुम्हारे अनेक जन्म बीत चुके हैं; उन विविध और विचित्र जन्मों को मैं जानता हूँ, तुम नहीं।

7.157.25

विशेषेण त्वनेनैव व्यर्थं कालोऽतिवाहितः महाशवशरीरेण त्वयानन्तखगामिना ॥ २५ ॥

viśeṣeṇa tvanenaiva vyarthaṃ kālo'tivāhitaḥ mahāśavaśarīreṇa tvayānantakhagāminā || 25 ||

Especially by you, who move endlessly like a bird, time has been wasted in vain with this great corpse-like body.

विशेषकर तुमने, जो अनंत पक्षी की तरह विचरण करते हो, इस महाशव शरीर के साथ व्यर्थ ही समय गँवा दिया है।

7.157.26

एवं तामसतामस्या जात्यासि जनितो यदा । तदा दुर्लभमोक्षस्त्वं संसारकुहरादिति ॥ २६ ॥

evaṃ tāmasatāmasyā jātyāsi janito yadā| tadā durlabhamokṣastvaṃ saṃsārakuharāditi|| 26 ||

Thus, when you are born in a lower caste, it is difficult to attain liberation from the cycle of birth and death.

इस प्रकार, जब आप निम्न जाति में जन्म लेते हैं, तो जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति प्राप्त करना कठिन होता है।

7.157.27

सिन्धुर्वदिष्यति । आर्योदाहर केनैषा प्राग्जातिर्जीयतेऽधमा । यावत्तथैव तिष्ठामि स्याच्चेत्तद्वद पावनम् ॥ २७ ॥

sindhurvadiṣyati| āryodāhara kenaiṣā prāgjātirjīyate'dhama| yāvattathaiva tiṣṭhāmi syāccettadvad pāvanam|| 27 ||

The minister will say, 'O noble one, tell me by what means this lower caste is born. As long as I remain in this state, if it is purified, then it will be so.'

मंत्री कहेगा, 'हे आर्य, बताओ कि इस निम्न जाति का जन्म किस प्रकार होता है। जब तक मैं इस स्थिति में रहूँ, यदि यह पवित्र हो जाए, तो ऐसा होगा।'

7.157.28

मन्त्री वदिष्यति । न किंचन महाबुद्धे तदस्तीह जगत्त्रये । यदनुद्वेगिना नाम पौरुषेण न लभ्यते ॥ २८ ॥

mantrī vadiṣyati| na kiṃcana mahābuddhe tadastīha jagattraye| yadanudveginā nāma pauruṣeṇa na labhyate|| 28 ||

The minister will say, 'O great wise one, there is nothing in the three worlds that cannot be achieved by human effort without anxiety.'

मंत्री कहेगा, 'हे महान बुद्धिमान, तीनों लोकों में कोई भी ऐसी चीज नहीं है जो मानवीय प्रयास के द्वारा चिंता के बिना प्राप्त नहीं की जा सकती।'

7.157.29

ह्यस्तनी दुष्क्रियाभ्येति शोभां सत्क्रियया यथा । अद्यैव प्राक्तनीं तस्माद्यत्नात्सत्कार्यवान्भव ॥ २९ ॥

hyastanī duṣkriyābhyeti śobhāṃ satkriyayā yathā| adyaiva prāktanīṃ tasmādyatnātsatkāryavānbhava|| 29 ||

Just as bad deeds bring disgrace, good deeds bring glory. Therefore, from today, strive to be virtuous and perform good deeds.

जैसे बुरे कर्म अपमान लाते हैं, वैसे ही अच्छे कर्म शोभा लाते हैं। इसलिए, आज से ही, सत्कर्म करने के लिए प्रयास करें और पुण्य कर्म करें।

7.157.30

यो यमर्थं प्रार्थयते तदर्थं यतते तथा । सोऽवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते ॥ ३० ॥

yo yamarthaṃ prārthayate tadarthaṃ yatate tathā| so'vaśyaṃ tadavāpnoti na cecchranto nivartate|| 30 ||

Whoever desires something and strives for it accordingly, will surely attain it. One should not give up until exhausted.

जो किसी चीज को चाहता है और उसके लिए प्रयास करता है, वह निश्चित रूप से उसे प्राप्त करेगा। थकान तक नहीं रुकना चाहिए।

7.157.31

ना यथा यतते नित्यं यद्भावयति यन्मयः । यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग्भवति नान्यथा ॥ ३१ ॥

na yathā yatate nityaṃ yadbhāvayati yanmayaḥ | yādṛgicchecca bhavituṃ tādṛgbhavati nānyathā || 31 ||

One does not become what one desires just by striving for it; one becomes exactly what one thinks and feels oneself to be.

वह नहीं बनता जो वह चाहता है केवल प्रयास करके; वह बिलकुल वैसा बनता है जैसा वह सोचता और महसूस करता है।

7.157.32

मुनिरुवाच । एवमुक्तः स तेनाथ सिन्धुरुद्धुरया धिया । तदा तत्र तथा नाम राष्ट्रं त्यक्ष्यत्यशेषतः ॥ ३२ ॥

muniruvāca | evamuktaḥ sa tenātha sindhuruddhurayā dhiyā | tadā tatra tathā nāma rāṣṭraṃ tyakṣyatyāśeṣataḥ || 32 ||

The sage said: Thus addressed by him, Sindhu, with a resolute mind, will then abandon that kingdom completely.

मुनि ने कहा: उसके द्वारा ऐसे कहे जाने पर, सिंधु, दृढ़ मन से, उस राज्य को पूर्णतः त्याग देगा।

7.157.33

गमिष्यति वनं दूरं प्रार्थितोऽपि हि मन्त्रिभिः । नाश्रयिष्यति तद्भूयो राज्यमुच्छिन्नशात्रवम् ॥ ३३ ॥

gamiṣyati vanaṃ dūraṃ prārthito'pi hi mantrabhiḥ | nāśrayiṣyati tadbhūyo rājyamucchinnaśātravam || 33 ||

He will go to a distant forest, even if requested by the ministers. He will not seek that kingdom again, which is free from enemies.

वह एक दूर के वन में जाएगा, चाहे मंत्रियों द्वारा अनुरोध किया जाए। वह फिर से उस राज्य की ओर नहीं देखेगा जो शत्रुओं से मुक्त है।

7.157.34

तिष्ठतः साधुमध्येऽस्य तद्विवेककथावशात् । पुष्पासङ्गादिवामोदो विवेकः समुदेष्यति ॥ ३४ ॥

tiṣṭhataḥ sādhumadhye'sya tadvivekakathāvaśāt | puṣpāsaṅgādivāmodo vivekaḥ samudeṣyati || 34 ||

While he stays among the virtuous, due to the influence of their wise discourse, wisdom will arise in him like the fragrance from flowers.

जब वह साधुओं के बीच रहेगा, उनकी बुद्धिमान बातचीत के प्रभाव से, उसमें बुद्धिमत्ता फूलों की सुगंध की तरह उत्पन्न होगी।

7.157.35

ततः कथमिदं जन्म कुतः संसार आगतः । इत्थं विचारसांतत्यात्स यास्यति विमुक्तताम् ॥ ३५ ॥

tataḥ kathamidaṃ janma kutaḥ saṃsāra āgataḥ | itthaṃ vicārasāṃtatyāt sa yāsyati vimuktatām || 35 ||

Then, reflecting continuously on how this birth and the world came about, he will attain liberation.

फिर, इस जन्म और संसार के उत्पत्ति के बारे में लगातार सोचते हुए, वह मुक्ति प्राप्त करेगा।

7.157.36

नित्यं विचारणपरोऽथ भवन्स सिन्धुः सत्सङ्गमेन पदमाप्स्यति पावनं सः । तद्यत्र पत्रमिव वातविधूयमानं नो वस्तुतां व्रजति काचन नाम लक्ष्मीः ॥ ३६ ॥

nityaṃ vicāraṇaparo'tha bhavans sindhuḥ satsaṅgamena padamāpsyati pāvanaṃ saḥ | tadyatra patramiva vātavidhūyamānaṃ no vastutāṃ vrajati kācana nāma lakṣmīḥ || 36 ||

One who constantly engages in contemplation and becomes like an ocean, through association with the virtuous, will attain the purifying state. There, like a leaf blown by the wind, no wealth named Lakshmi attains reality.

जो निरंतर विचार में लगा रहता है और समुद्र के समान हो जाता है, वह सत्संग से पवित्र पद प्राप्त करेगा। वहाँ, हवा से उड़ते पत्ते की तरह, लक्ष्मी नामक कोई धन वास्तविकता नहीं प्राप्त करता।

Chapter 158

7.158.1

मुनिरुवाचेतत्ते कथितं सर्वं भविष्यद्भूतवत्तवयथेच्छसि तथेदानीं व्याध साधु विधीयताम् ॥ १ ॥

muniruvācaetatte kathitaṃ sarvaṃ bhaviṣyadbhūtavattavayathecchasi tathedānīṃ vyādha sādhu vidhīyatām || 1 ||

The sage said, 'All this has been told to you, O hunter, about the future and the past. Now, if you wish, let it be done well.'

मुनि ने कहा, 'हे व्याध, भूत और भविष्य के बारे में सब कुछ तुम्हें बता दिया गया है। अब अगर तुम चाहो तो अच्छे से करो।'

7.158.2

अग्निरुवाचेति तस्य वचः श्रुत्वा विस्मयाकुलचेतनःक्षीणं स्थित्वा जगामाशु स्नातुं व्याधस्तथा मुनिः ॥ २ ॥

agniruvācaiti tasya vacaḥ śrutvā vismayākulacetanaḥkṣīṇaṃ sthitvā jagāmāśu snātuṃ vyādhastathā muniḥ || 2 ||

Having heard these words of Agni, the hunter, with his mind filled with wonder, stood exhausted and then quickly went to bathe, as did the sage.

अग्नि के इन शब्दों को सुनकर, व्याध का मन आश्चर्य से भर गया। वह थका हुआ खड़ा रहा और फिर शीघ्र ही स्नान करने चला गया, उसी तरह मुनि भी गए।

7.158.3

इति तौ चेरतुस्तत्र तपः शास्त्रविचारणैःअकारणसुहृद्भूतावुभौ व्याधमहामुनी ॥ ३ ॥

iti tau ceratustatra tapaḥ śāstravicāraṇaiḥakāraṇasuhṛdbhūtāvubhau vyādhamahāmunī || 3 ||

Thus, both the hunter and the great sage moved there, engaged in austerities and the study of scriptures, becoming friends without any reason.

इस प्रकार, व्याध और महामुनि दोनों वहाँ तपस्या और शास्त्रों के अध्ययन में लगे रहे, बिना किसी कारण के मित्र बन गए।

7.158.4

अथाल्पेनैव कालेन मुनिर्निर्वाणमाययौदेहं त्यक्त्वाऽपदेशान्ते परे परिणतिं गतः ॥ ४ ॥

athālpenaiva kālena munirnirvāṇamāyayaudehaṃ tyaktvā'padeśānte pare pariṇatiṃ gataḥ || 4 ||

Then, in a short time, the sage attained nirvana, leaving his body at the end of his instruction, and achieved the ultimate transformation.

फिर, थोड़े समय में, मुनि ने निर्वाण प्राप्त किया, अपने शरीर को अपने उपदेश के अंत में छोड़कर, और परम परिणति प्राप्त की।

7.158.5

कालेन बहुनान्येन ततो युगशतात्मनाव्याधस्य कामनां दातुं पद्मजन्मा समाययौ ॥ ५ ॥

kālena bahunānyena tato yugaśatātmanāvyādhasya kāmanāṃ dātuṃ padmajanmā samāyayau || 5 ||

After a long time, spanning many yugas, Padmajanma (Brahma) came to fulfill the desires of the hunter.

बहुत समय बाद, जो कई युगों के बराबर था, पद्मजन्मा (ब्रह्मा) व्याध की इच्छाओं को पूरा करने आया।

7.158.6

व्याधः स्ववासनावेशं निवारयितुमक्षमःजानन्नपि वरं पूर्वं वर्णितं समयाचत ॥ ६ ॥

vyādhaḥ svavāsanāveśaṃ nivārayitumakṣamaḥjānannapi varaṃ pūrvaṃ varṇitaṃ samayācata || 6 ||

The hunter was unable to control his own desires, even though he knew the better path that had been previously described.

शिकारी अपनी वासनाओं को नियंत्रित नहीं कर सका, हालाँकि उसे पहले से ही बेहतर मार्ग का पता था जो पहले वर्णित किया गया था।

7.158.7

ब्रह्मैवमस्त्विति प्रोच्य ययावभिमतां दिशंव्याधस्तपःफलं भोक्तुं खगवद्व्योम पुप्लुवे ॥ ७ ॥

brahmaivamastviti procya yayāvabhimatāṃ diśamvyādhastapaḥphalaṃ bhoktuṃ khagavadvyoma pupluve || 7 ||

Saying 'May it be so,' he went in his desired direction. The hunter, like a bird, soared into the sky to enjoy the fruits of his penance.

'ऐसा ही हो,' कहकर वह अपनी इच्छित दिशा में चला गया। शिकारी ने पक्षी की तरह आकाश में उड़ान भरी ताकि वह अपने तप के फल का आनंद ले सके।

7.158.8

वर्धमानेन देहेन जगत्पारे महानभःवेगादगणितं कालं पूरयामास शैलवत् ॥ ८ ॥

vardhamānena dehena jagatpāre mahānabhaḥvegādagaṇitaṃ kālaṃ pūrayāmāsa śailavat || 8 ||

With his growing body, he reached the other side of the world. With great speed, he filled the immeasurable time like a mountain.

अपने बढ़ते शरीर के साथ, वह दुनिया के दूसरे छोर तक पहुँच गया। बड़ी तेजी से, उसने अपरिमेय समय को एक पर्वत की तरह भर दिया।

7.158.9

महागरुडवेगेन तिर्यगूर्ध्वमधस्तथाव्योम पूरयतस्तस्य कालो बहुतरो ययौ ॥ ९ ॥

mahāgaruḍavegena tiryagūrdhvamadhastathāvyoma pūrayatastasya kālo bahutaro yayau || 9 ||

With the speed of a great eagle, he filled the sky in all directions—upwards, downwards, and sideways. Much time passed in this way.

एक महान गरुड की तरह तेजी से, वह आकाश को सभी दिशाओं में—ऊपर, नीचे और बगल में—भर गया। इस तरह बहुत समय बीत गया।

7.158.10

अथ दीर्घेण कालेन यदा विद्याभ्रमस्य सःअन्तं न समवाप्नोति तत्रोद्वेगमुपाययौ ॥ १० ॥

atha dīrgheṇa kālena yadā vidyābhramasya saḥantaṃ na samavāpnoti tatrodvegamupāyayau || 10 ||

Then, after a long time, when he did not attain the end of his delusion regarding knowledge, he became anxious.

फिर, लंबे समय के बाद, जब उसने ज्ञान के भ्रम का अंत नहीं पाया, तब वह चिंतित हो गया।

7.158.11

उद्वेगादथ बद्धासौ प्राणरेचनधारणाम्प्राणांस्तत्याज नभसि शवीभूतमधोवपुः ॥ ११ ॥

udvegādatha baddhvāsau prāṇarecanadhāraṇāmprāṇāṃstatyāja nabhasi śavībhūtamadhovapuḥ || 11 ||

Then, due to agitation, he restrained his breath and abandoned his life-breath in the sky, becoming a corpse-like form below.

फिर, उद्वेग के कारण, उसने अपनी साँस रोकी और आकाश में अपने प्राणों को छोड़ दिया, नीचे एक शव-सदृश रूप बन गया।

7.158.12

चित्तं प्राणान्वितं व्योम्नि ययौ तत्रैव सिन्धुताम्विदूरथारिरूपां तामखिलावनिपालिनीम्॥ १२ ॥

cittaṃ prāṇānvitaṃ vyomni yayau tatraiva sindhutāmvidūrathārirūpāṃ tāmakhilāvanipālinīm || 12 ||

The mind, accompanied by the life-breath, went to the sky and there assumed the form of the distant enemy, the protector of the entire earth.

मन, प्राणों के साथ, आकाश में गया और वहाँ दूर के शत्रु के रूप में, पूरी पृथ्वी के रक्षक के रूप में अवतरित हुआ।

7.158.13

देहो मेरुशताकारमहाशव इवाभवत्द्वितीयोर्वीनिभो व्योम्नः पपाताशनिवज्रवत्॥ १३ ॥

deho meruśatākāramahāśava ivābhavatdvitīyorvīnibho vyomnaḥ papātāśanivajravat || 13 ||

The body became like a hundred Meru mountains, like a great corpse, and fell from the sky like a thunderbolt.

शरीर सौ मेरु पर्वतों के समान हो गया, जैसे एक महान शव, और आकाश से वज्र की तरह गिरा।

7.158.14

पिधानमिव कस्योर्वीवीथी कस्मिंश्चिदम्बरेकेशोण्ड्रकवदाभाते कस्मिंश्चिज्जागते भ्रमे॥ १४ ॥

pidhānamiva kasyorvīvīthī kasmiṃścidambarekeśoṇḍrakavadābhāte kasmiṃścijjāgate bhrame || 14 ||

Like a covering, the earth-path appeared in some part of the sky, shining like a reddish cloud in some wandering.

जैसे एक आवरण, पृथ्वी-मार्ग आकाश के किसी हिस्से में प्रकट हुआ, किसी भटकने में लाल बादल की तरह चमकता हुआ।

7.158.15

आकारपूरिताशेषवसुधाचलमण्डलःविपश्चिच्छ्रेष्ठ कथितमेतत्ते तन्महाशवम्॥ १५ ॥

ākārapūritāśeṣavasudhācalamaṇḍalaḥvipaścicchreṣṭha kathitametatte tanmahāśavam || 15 ||

The entire earth filled with forms, the circle of mountains, the best of the wise, this has been told to you, that great corpse.

पूरी पृथ्वी रूपों से भरी हुई, पर्वतों का मण्डल, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, यह तुम्हें बताया गया है, वह महान शव।

7.158.16

यस्मिञ्छवं संपतितं जगत्यवनिमण्डलेतदिदं जगदाभातमस्माकं स्वप्नपूर्यथा॥ १६ ॥

yasmiñchavaṃ saṃpatitaṃ jagatyavanimaṇḍaletadidaṃ jagadābhātamasmākaṃ svapnapūryathā || 16 ||

In which the corpse has fallen, this world appears like a dream.

जिसमें शव गिरा है, यह दुनिया सपने की तरह प्रतीत होती है।

7.158.17

तदेतच्छवमास्वाद्य शुष्का पूर्णा महोदरीसंपन्ना चण्डिका देवी रक्ता रक्तान्त्रपूरिता॥ १७ ॥

tadetacchavamāsvādya śuṣkā pūrṇā mahodarīsaṃpannā caṇḍikā devī raktā raktāntrapūritā || 17 ||

By consuming that corpse, the goddess Chandika, who is dry and full, with a large belly, becomes red and filled with blood.

उस शव को खाकर, देवी चण्डिका, जो सूखी और भरी हुई है, बड़े पेट वाली, लाल और खून से भरी हुई हो जाती है।

7.158.18

मेदिनी मेदिनी जाता शवस्यैतस्य मेदसापूरिता'पूर्वरूपेण हिमवद्गिरिरूपिणा ॥ १८ ॥

medinī medinī jātā śavasyaitasya medasāpūritā'pūrvarūpeṇa himavadgirirūpiṇā || 18 ||

The earth, the earth was born from the fat of this corpse, in its previous form, resembling the Himalayan mountain.

पृथ्वी, पृथ्वी इस शव के चर्बी से उत्पन्न हुई, अपने पूर्व रूप में, हिमालय पर्वत के समान।

7.158.19

तदैवैतन्महामेदो मृद्धातुत्वमुपागतम्कालेन वसुधा भूयो भूत्वा मृन्मयतां गता ॥ १९ ॥

tadaivaitanmahāmedo mṛddhātutvamupāgatamkālena vasudhā bhūyo bhūtvā mṛnmayatāṃ gatā || 19 ||

Then this great fat became earthly, and over time, the earth became earthen again.

फिर यह महान चर्बी पृथ्वी के समान हो गई, और समय के साथ, पृथ्वी फिर से मिट्टी के समान हो गई।

7.158.20

भूयः प्रजातानि वनानि भूमौ ग्रामाः कृताः पत्तनसंयुताश्चपातालतः साधुसमुत्थितास्ते शैलाः प्रवृत्ता व्यवहारलक्ष्मीः ॥ २० ॥

bhūyaḥ prajātāni vanāni bhūmau grāmāḥ kṛtāḥ pattanasaṃyutāścapātālataḥ sādhusamutthitāste śailāḥ pravṛttā vyavahāralakṣmīḥ || 20 ||

Again, forests were born on the earth, villages were created with towns, and mountains arose from the underworld, filled with prosperity.

फिर से, जंगल पृथ्वी पर उत्पन्न हुए, गांव शहरों के साथ बनाए गए, और पाताल से पर्वत उठे, समृद्धि से भरे हुए।

Chapter 159

7.159.1

अग्निरुवाच विपश्चिच्छ्रेष्ठ भो साधो त्वं गच्छाभिमतां दिशम् स्थिरं भूमण्डलं भूयः प्रकृतव्यवहारवत् ॥ १ ॥

agniruvāca vipaścicśśreṣṭha bho sādho tvaṃ gacchābhimatāṃ diśam sthiraṃ bhūmaṇḍalaṃ bhūyaḥ prakṛtavyavahāravat || 1 ||

Agni said: O wise one, O virtuous one, you go to the desired direction. May the Earth remain stable, as it is in its natural state.

अग्नि ने कहा: हे विद्वान, हे साधु, तुम अपनी इच्छित दिशा में जाओ। पृथ्वी अपने स्वाभाविक अवस्था में स्थिर रहे।

7.159.2

यज्ञं यष्टुं प्रजौघस्य शक्रः शततमं दिवितत्राहूतोऽस्मि मन्त्रेण गच्छामि गतिकोविद ॥ २ ॥

yajñaṃ yaṣṭuṃ prajaughasya śakraḥ śatatamaṃ divitatrāhūto'smi mantreṇa gacchāmi gatikovida || 2 ||

I, Indra, have been invited by the mantra to perform the hundredth sacrifice for the multitude of people. I go, knowing the path.

मैं, इंद्र, मंत्र द्वारा सौवां यज्ञ करने के लिए बुलाया गया हूँ जनसमूह के लिए। मैं मार्ग जानता हुआ जा रहा हूँ।

7.159.3

भास उवाच इत्युक्त्वा भगवानग्निस्तत्रैवान्तरधीयत गगने निर्मले याति अनलो वैद्युतो यथा ॥ ३ ॥

bhās uvāca ityuktvā bhagavānagnistatraivāntaradhīyata gagane nirmale yāti analo vaidyuto yathā || 3 ||

Bhasa said: Having said this, the lord Agni disappeared right there. He moves in the clear sky like lightning.

भास ने कहा: ऐसा कहकर, भगवान अग्नि वहीं अंतर्ध्यान हो गए। वे साफ आकाश में बिजली की तरह चलते हैं।

7.159.4

तथाहमपि चित्तेन प्राक्तनांश्च स्वयं वहन् पुनः स्वकर्म निर्णेतुं भ्रमनव्योमनि संस्थितः ॥ ४ ॥

tathāhamapi cittena prāktanāṃśca svayaṃ vahan punaḥ svakarma nirṇetuṃ bhramanavyomani saṃsthitaḥ || 4 ||

Similarly, I too, with my mind, carrying my past deeds myself, am situated wandering in the sky to determine my own actions again.

इसी तरह, मैं भी अपने मन से, अपने पिछले कर्मों को स्वयं लेकर, फिर से अपने कर्मों को निर्धारित करने के लिए आकाश में भटकता हुआ स्थित हूं।

7.159.5

भूयोऽपि दृष्टवानस्मि जगन्त्यगणितानि खे नानाचारविचाराणि नानासंस्थानवन्ति च ॥ ५ ॥

bhūyo'pi dṛṣṭavānasmī jagantyagaṇitāni khe nānācāravicārāṇi nānāsaṃsthānavanti ca || 5 ||

Moreover, I have seen countless worlds in the sky, with various customs and thoughts, and diverse arrangements.

इसके अलावा, मैंने आकाश में अनगिनत जगत देखे हैं, जिनमें विभिन्न रीति-रिवाज और विचार हैं, और विभिन्न व्यवस्थाएं हैं।

7.159.6

क्वचिच्छत्रमयाङ्गानि एकीभूतानि भूपतेभान्ति चेतन्ति चोपन्ति हृदयानि हरन्ति च ॥ ६ ॥

kvacicchatramayāṅgāni ekībhūtāni bhūpatebhānti cetanti copanti hṛdayāni haranti ca || 6 ||

Sometimes, beings with bodies made of umbrellas, united as one, O King, appear, move, and rise, and they captivate the hearts.

कभी-कभी, छत्र से बने शरीरों वाले प्राणी, एक होकर, हे राजन्, प्रकट होते हैं, चलते हैं, और उठते हैं, और वे हृदयों को हर लेते हैं।

7.159.7

क्वचिन्मृन्मयदेहानि सर्वभूतानि राघवभान्ति चेतन्ति चोपन्ति पर्वतप्रतिमानि च ॥ ७ ॥

kvacinmṛnmayadehāni sarvabhūtāni rāghavabhānti cetanti copanti parvatapratimāni ca || 7 ||

Sometimes, all beings with bodies made of clay, O Raghava, appear, move, and rise, resembling mountains.

कभी-कभी, सभी मिट्टी से बने शरीरों वाले प्राणी, हे रघुवंशी, प्रकट होते हैं, चलते हैं, और उठते हैं, पर्वतों के समान।

7.159.8

क्वचिद्दारुमयाङ्गानि भान्ति भूतानि कुत्रचित्क्वचित्पाषाणदेहानि सन्ति भूतानि भूरिशः ॥ ८ ॥

kvaciddārumayāṅgāni bhānti bhūtāni kutracitkvacitpāṣāṇadehāni santi bhūtāni bhūriśaḥ || 8 ||

Sometimes, beings with bodies made of wood appear somewhere, and sometimes beings with bodies made of stone exist in abundance.

कभी-कभी, लकड़ी से बने शरीरों वाले प्राणी कहीं प्रकट होते हैं, और कभी-कभी पत्थर से बने शरीरों वाले प्राणी बहुतायत से मौजूद होते हैं।

7.159.9

क्वचिदाजीवमेकत्र स्थितान्युपलदेहवत्वाङ्गमात्रव्यवहाराणि भूतान्यालोकितानि खे ॥ ९ ॥

kvacidājīvamekatra sthitānyupaladehavatvāṃgmātravyavahārāṇi bhūtānyālokitāni khe || 9 ||

Sometimes, beings with bodies made of stones are seen in the sky, appearing as if they are living and moving with only their limbs.

कभी-कभी, पत्थर से बने शरीरों वाले प्राणी आकाश में दिखाई देते हैं, जैसे कि वे जीवित हों और केवल अपने अंगों से चल रहे हों।

7.159.10

इत्यहं सुचिरं कालं पश्यन्नश्यन्मनस्तयाविद्यान्तमपश्यंश्च तत्रोद्विग्नोऽभवं दृशाम् ॥ १० ॥

ityahaṃ suciraṃ kālaṃ paśyannaśyanmanastayāavidyāntamapaśyaṃśca tatrodvigno'bhavaṃ dṛśām || 10 ||

Thus, I saw for a long time, my mind bewildered by ignorance, and then I became anxious.

इस प्रकार, मैंने लंबे समय तक देखा, मेरा मन अज्ञान से भ्रमित हो गया, और फिर मैं चिंतित हो गया।

7.159.11

तपः कर्तुं समुद्युक्तः कस्मिंश्चिन्मोक्षसिद्धये । प्राहेन्द्रो मम चैवेदं मृगयोन्यन्तरं हि खे ॥ ११ ॥

tapaḥ kartuṃ samudyuktaḥ kasmiṃścinmokṣasiddhaye | prāhendro mama caivedaṃ mṛgayonyantaraṃ hi khe || 11 ||

I was engaged in performing penance for the attainment of liberation. Indra then said to me, 'Seek another deer in the sky.'

मैं मोक्ष प्राप्ति के लिए तपस्या करने में लगा हुआ था। तब इन्द्र ने मुझसे कहा, 'आकाश में दूसरे मृग की खोज करो।'

7.159.12

प्रवृत्तः स्वर्गसंमोहे पूर्वाभ्यासवशीकृतः । मन्दारकानने तत्र भ्रमतो वै ममाम्बरे ॥ १२ ॥

pravṛttaḥ svargasaṃmohe pūrvābhyāsavaśīkṛtaḥ | mandārakānane tatra bhramato vai mamāmbare || 12 ||

Engaged in the delusion of heaven, influenced by past habits, I was wandering in the Mandara forest in the sky.

स्वर्ग के मोह में लगा हुआ, पूर्व आदतों से प्रभावित, मैं आकाश में मन्दार वन में भटक रहा था।

7.159.13

तेनेत्युक्ते मया प्रोक्तं देव खिन्नोऽस्मि संसृतेः । मुच्येयं शीघ्रमित्युक्तं श्रुत्वोवाच ततो मम ॥ १३ ॥

tenetyukte mayā proktaṃ deva khinno'smi saṃsṛteḥ | mucyeyaṃ śīghramityuktaṃ śrutvovāca tato mama || 13 ||

When he said this, I replied, 'O Lord, I am distressed by this cycle of rebirth. I wish to be liberated quickly.' Hearing this, he then spoke to me.

जब उन्होंने यह कहा, तब मैंने कहा, 'हे देव, मैं इस जन्म-मरण के चक्र से व्याकुल हूँ। मैं जल्दी से मुक्त होना चाहता हूँ।' यह सुनकर उन्होंने मुझसे कहा।

7.159.14

विशुद्धात्मा त्वरूपोऽहमिति चैव हुताशनात्वरं गृहाणेत्युक्ते स ततोऽन्यं याचितो मया ॥ १४ ॥

viśuddhātmā tvarūpo'hamiti caiva hutāśanātvaraṃ gṛhāṇetyukte sa tato'nyaṃ yācito mayā || 14 ||

Being pure in soul and having a divine form, I am indeed the fire god. Having said 'take it quickly,' he then asked me for another.

आत्मा में शुद्ध और दिव्य रूप धारण करने वाला, मैं वास्तव में अग्नि देव हूँ। 'इसे शीघ्र ले लो' कहने के बाद, उसने मुझसे दूसरा माँगा।

7.159.15

इन्द्र उवाच । तवेयं मृगयोन्यन्तश्चिरं संसरते चितिः । अवश्यं भवितव्योऽर्थ इति दृष्टो मया तव ॥ १५ ॥

indra uvāca | taveyaṃ mṛgayonyantaściraṃ saṃsarate citiḥ | avaśyaṃ bhavitavyo'rtha iti dṛṣṭo mayā tava || 15 ||

Indra said, 'This deer-like consciousness of yours will wander for a long time. It is inevitable, as I have seen it for you.'

इन्द्र ने कहा, 'तुम्हारी यह मृग-सी चेतना लंबे समय तक भटकेगी। यह अनिवार्य है, जैसा कि मैंने तुम्हारे लिए देखा है।'

7.159.16

मृगो भूत्वा महापुण्यां तां सभां समवाप्तवान् । यस्यां तदहतं ज्ञानं मदुक्तं बोधमेष्यति ॥ १६ ॥

mṛgo bhūtvā mahāpuṇyāṃ tāṃ sabhāṃ samavāptavān | yasyāṃ tadahataṃ jñānaṃ maduktaṃ bodhameṣyati || 16 ||

Having become a deer, you will attain that highly meritorious assembly where that knowledge, spoken by me, will awaken.

मृग बनकर, आप उस महान पुण्यमयी सभा को प्राप्त होंगे जहाँ मेरे द्वारा कहा गया वह ज्ञान जागृत होगा।

7.159.17

तदेवं तत्र हरिणो भवार्तस्त्वं भवावनौ । आत्मोदन्तमिदं वन्ध्यं सकलं संस्मरिष्यसि ॥ १७ ॥

tadevaṃ tatra hariṇo bhavārtastvaṃ bhavāvanau | ātmoudantamidaṃ vandhyaṃ sakalaṃ saṃsmariṣyasi || 17 ||

Thus, there, O deer, you who are afflicted by worldly existence, will remember this entire useless effort in the ocean of existence.

इस प्रकार, वहाँ, हे हरिण, आप जो संसार के दुःख से पीड़ित हैं, संपूर्ण व्यर्थ प्रयास को स्मरण करेंगे।

7.159.18

स्वप्नभ्रममिवाशेषसंकल्परचितोपमम्। परलोकानुभूतार्थकथायातार्थसंनिभम्॥ १८॥

svapnabhramamivāśeṣasaṃkalparacitopamam | paralokānubhūtārthakathāyātārthasaṃnibham || 18 ||

Like a dream or an illusion, resembling all that is imagined, similar to the experiences of the afterlife described in stories.

स्वप्न या भ्रम की तरह, सभी कल्पनाओं के समान, परलोक के अनुभवों की कथाओं के समान।

7.159.19

यदा तु मृगतोन्मुक्तः पुरुषस्त्वं भविष्यसि। ज्ञानाग्निदग्धदेहान्ते तदा हृत्स्थं स्फुरिष्यति॥ १९॥

yadā tu mṛgatonmuktaḥ puruṣastvaṃ bhaviṣyasi | jñānāgnidagdhadehānte tadā hṛtsthaṃ sphuriṣyati || 19 ||

When you are liberated from the deer form, you will become a human. At the end of the body burnt by the fire of knowledge, then it will shine in the heart.

जब आप मृग रूप से मुक्त होंगे, तब आप मनुष्य बनेंगे। ज्ञान की अग्नि से जले हुए शरीर के अंत में, तब वह हृदय में चमकेगा।

7.159.20

तेन तां त्वमविद्याख्यां भ्रान्तिं त्यक्त्वा चिरं स्थिताम्। भविष्यसि विनिर्वाणो गतस्पन्द इवानिलः॥ २०॥

tena tāṃ tvamavidyākhyāṃ bhrāntiṃ tyaktvā ciraṃ sthitām | bhaviṣyasi vinirvāṇo gataspanda ivānilaḥ || 20 ||

By that, you will abandon that ignorance called delusion, which has long been established. You will become liberated, like the wind that has ceased to move.

उससे, आप उस भ्रांति को त्याग देंगे जिसे अविद्या कहते हैं, जो लंबे समय से स्थापित है। आप मुक्त होंगे, जैसे वह हवा जो रुक गई है।

7.159.21

इत्युक्ते तेन देवेन तदैव प्रतिभोदभूत् ममायं हरिणोऽस्मीति वनेऽस्मिन्निति निश्चिता॥ २१॥

ityukte tena devena tadaiva pratibhodabhūt mamāyaṃ hariṇo'smīti vane'sminniti niścitā || 21 ||

After being told by that divine being, I immediately realized that I am this deer in this forest.

उस देवता द्वारा कहने पर, मैंने तुरंत समझा कि मैं इस वन में यह हरिण हूँ।

7.159.22

ततः प्रभृति संपन्नस्तत्रैवान्तरकोणके हरिणोऽहं गिरिवरे तृणदूर्वाङ्कुराशनः॥ २२॥

tataḥ prabhṛti saṃpannastatraivāntarakoṇake hariṇo'haṃ girivare tṛṇadūrvāṅkurāśanaḥ || 22 ||

From that moment onwards, I remained there in the inner corner of the great mountain, subsisting on grass, Durva grass, and sprouts.

तब से, मैं उस महान पर्वत के अंदरूनी कोने में रहा, घास, दूर्वा घास और अंकुरों पर निर्भर रहकर।

7.159.23

ततः सीमान्तसामन्तमागतं मृगयार्थिनम् दृष्ट्वाहमेकदा भीतः पलायनपरोऽभवम्॥ २३॥

tataḥ sīmāntasāmantamāgataṃ mṛgayārthinam dṛṣṭvāhamēkadā bhītaḥ palāyanaparo'bhavam || 23 ||

Then one day, seeing a hunter who had come to the border area, I became frightened and fled.

तब एक दिन, एक शिकारी को देखकर जो सीमा क्षेत्र में आया था, मैं डर गया और भाग गया।

7.159.24

ततस्तेन समाक्रम्य गृहं नीत्वा दिनत्रयम् संस्थाप्य तव लीलार्थमिहानीतो रघूद्वह ॥ २४ ॥

tatastena samākramya gṛhaṃ nītvā dinatrayam saṃsthāpya tava līlārthamihānīto raghūdvaha || 24 ||

Then, he captured me and took me to his house, where I stayed for three days. After that, I was brought here for your amusement, O Raghava.

तब, उसने मुझे पकड़ा और मुझे अपने घर ले गया, जहाँ मैं तीन दिन तक रहा। उसके बाद, मुझे आपके मनोरंजन के लिए यहाँ लाया गया, हे रघुवंशी।

7.159.25

एष ते कथितः सर्वं आत्मोदन्तो मयानघ संसारमायाप्रतिमो नानाश्चर्यरसान्वितः ॥ २५ ॥

eṣa te kathitaḥ sarvaṃ ātmoudanto mayānagha saṃsāramāyāpratimo nānāścaryarasānvitaḥ || 25 ||

This is the entire story I have narrated to you, O sinless one, filled with the wonders of the illusory world.

यह पूरी कहानी है जो मैंने आपको सुनाई है, हे निष्पाप, जो मायावी संसार के अनेक आश्चर्यों से भरी हुई है।

7.159.26

अविद्यैवमनन्तेयं शाखाप्रसरशालिनी । आत्मज्ञानादृते नैव केनचिन्नाम शाम्यति ॥ २६ ॥

avidyaivamananteyaṃ śākhāprasaraśālinī | ātmajñānādṛte naiva kenacinnāma śāmyati || 26 ||

This ignorance is endless, like the branches of a tree. Without the knowledge of the self, it cannot be pacified by any means.

यह अज्ञान अनन्त है, जैसे वृक्ष की शाखाएँ फैली हुई हैं | आत्मज्ञान के बिना किसी भी तरह से यह शान्त नहीं होता |

7.159.27

श्रीवाल्मीकिरुवाच । यदा विपश्चिदित्युक्त्वा तत्र तूष्णीं स्थितः क्षणात् । समवोचत्तदा रामस्तमनिन्द्यमतिस्त्विदम् ॥ २७ ॥

śrīvālmīkiruvāca | yadā vipaścidityuktvā tatra tūṣṇīṃ sthitaḥ kṣaṇāt | samavocattadā rāmastamanindyamatistvidam || 27 ||

Sri Valmiki said: When Vipashchit was called, he remained silent for a moment. Then, Rama, who has a flawless mind, spoke these words.

श्री वाल्मीकि ने कहा: जब विपश्चित कहा गया, तो वह एक क्षण के लिए चुप रहा | तब उस समय राम, जिसका मन दोषरहित है, ने यह बात कही |

7.159.28

श्रीराम उवाच । एवं पश्यत्यसंकल्पो योऽन्यसंकल्प आत्मनि । मृगश्चेद्दृश्यतां यातः कथं सर्गे वद प्रभो ॥ २८ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ paśyatyasaṃkalpo yo'nyasaṃkalpa ātmani | mṛgaśceddṛśyatāṃ yātaḥ kathaṃ sarge vada prabho || 28 ||

Sri Rama said: How can one who sees without any intention and has no other intention in the self, go to the visible world? Please explain, O Lord.

श्री राम ने कहा: जो बिना किसी इरादे के देखता है और आत्मा में कोई दूसरा इरादा नहीं रखता, वह दृश्य जगत में कैसे जा सकता है? कृपया बताएँ, हे प्रभु।

7.159.29

विपश्चिदुवाच । महाशवं यत्पतितं यस्मिञ्जगति भूतले । तां भुवं पूर्वमिन्द्रेण यज्ञगर्वेण गच्छता ॥ २९ ॥

vipaścitudvāca | mahāśavaṃ yatpatitaṃ yasmiñjagati bhūtale | tāṃ bhuvaṃ pūrvamindreṇa yajñagarveṇa gacchatā || 29 ||

Vipashchit said: The great arrow that fell on the earth in the world, that land was previously traversed by Indra with the pride of sacrifice.

विपश्चित ने कहा: जो महान बाण धरती पर गिरा, उस भूमि को पहले इंद्र ने यज्ञ के गर्व से पार किया था।

7.159.30

पादेनाभिहतो व्योम्नि दुर्वासा ध्यानसंस्थितः । गतासुरित्यविज्ञानात्तेनासौ कुपितोऽशपत् ॥ ३० ॥

pādenābhihatovyomni durvāsā dhyānasaṃsthitaḥ | gatāsurityavijñānāttenāsau kupito'śapat || 30 ||

Struck by the foot in the sky, Durvasa, who was in meditation, became angry due to ignorance and cursed him.

आकाश में पैर से मारा गया, ध्यान में स्थित दुर्वासा अज्ञान के कारण क्रोधित हो गया और उसे शाप दिया।

7.159.31

शक्र शक्रावनितलं ब्रह्माण्डप्रतिमं शवम् । अचिरेण महाघोरं तव चूर्णीकरिष्यति ॥ ३१ ॥

śakra śakrāvanitalaṃ brahmāṇḍapratimaṃ śavam | acireṇa mahāghoraṃ tava cūrṇīkariṣyati || 31 ||

Indra, the lord of the heavens, will soon turn this universe-like corpse into a terrible dust.

इंद्र, स्वर्ग के स्वामी, शीघ्र ही इस ब्रह्मांड-जैसे शव को भयानक चूर्ण में बदल देंगे।

7.159.32

मामिमं शवबुद्ध्या त्वं यदतिक्रान्तवानतः । शापेन ममतां पृथ्वीं शीघ्रमासादयिष्यसि ॥ ३२ ॥

māmimaṃ śavabuddhyā tvaṃ yadatikrāntavānatataḥ | śāpena mamatāṃ pṛthvīṃ śīghramāsādayiṣyasi || 32 ||

Since you have crossed me, considering me as a corpse, you will soon attain the earth with a curse of attachment.

क्योंकि तुमने मुझे शव समझकर पार कर लिया है, इसलिए तुम शीघ्र ही आसक्ति के शाप के साथ पृथ्वी प्राप्त करोगे।

7.159.33

मृगार्थं तेन मुनिना तथा देवेति सद्यथा । तत्तया कथयाऽऽयातं सदैव विषयं दृशाम् ॥ ३३ ॥

mṛgārthaṃ tena muninā tathā deve iti sadyathā | tattayā kathayā''yātaṃ sadaiva viṣayaṃ dṛśām || 33 ||

Thus, the sage spoke to the deer, 'O god,' and through that story, the subject matter always comes into view.

इस प्रकार, ऋषि ने हिरण से कहा, 'हे देव,' और उस कथा के माध्यम से, विषय हमेशा दृष्टि में आता है।

7.159.34

वस्तुतस्तु न चैकं सन्न द्वितीयं न चाप्यसत् । सा तथा प्रतिभोदेति किं सत्किमथवाप्यसत् ॥ ३४ ॥

vastutastu na caikaṃ sanna dvitīyaṃ na cāpyasat | sā tathā pratibhodeti kiṃ satkimathavāpyasat || 34 ||

In reality, there is neither one nor two, nor is there non-existence. It thus appears, what is real, what is unreal?

वास्तव में, न तो एक है, न दो, न ही असत् है। इस प्रकार प्रतीत होता है, क्या सत् है, क्या असत् है?

7.159.35

अन्यच्च राघवे मां तां युक्तिं त्वमपरां श्रृणु । एतस्मिन्नयसंदर्भे सुस्फुटप्रतिपत्तये ॥ ३५ ॥

anyacca rāghave māṃ tāṃ yuktiṃ tvamaparāṃ śṛṇu | etasminnayasaṃdarbhe susphuṭapratipattaye || 35 ||

O Raghava, listen to another reasoning of mine in this context for clear understanding.

हे रघुवंशी, इस संदर्भ में स्पष्ट समझ के लिए मेरी एक और युक्ति सुनो।

7.159.36

यस्मिन्सर्वं यतः सर्वं यत्सर्वं सर्वतश्च यत् । ब्रह्म तस्मिन्महाभाग किं न संभवतीह हि ॥ ३६ ॥

yasmin sarvaṃ yataḥ sarvaṃ yat sarvaṃ sarvataś ca yat | brahma tasmin mahābhāga kiṃ na saṃbhavatīha hi || 36 ||

In whom everything exists, from whom everything comes, who is everything and everywhere, that is Brahman. O fortunate one, what does not exist in it?

जिसमें सब कुछ है, जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है, जो सब कुछ है और सर्वत्र है, वह ब्रह्म है। हे महाभाग, उसमें क्या नहीं है?

7.159.37

संकल्पजातं नान्योन्यं मिलतीत्युपपद्यते । संकल्पजातमन्योन्यं मिलतीत्युपपद्यते ॥ ३७ ॥

saṃkalpajātaṃ nānyonyaṃ milatītyupapadyate | saṃkalpajātam anyonyaṃ milatītyupapadyate || 37 ||

The products of imagination do not blend with each other. The products of imagination blend with each other.

कल्पना के उत्पाद एक-दूसरे से नहीं मिलते। कल्पना के उत्पाद एक-दूसरे से मिलते हैं।

7.159.38

संकल्पजातमन्योन्यं मिलतीत्यवगम्यते । सर्वात्मनि हि यत्रैव च्छाया तत्रैव चातपः ॥ ३८ ॥

saṃkalpajātam anyonyaṃ milatītyavagamyate | sarvātmani hi yatraiva cchāyā tatraiva cātapaḥ || 38 ||

The products of imagination are understood to blend with each other. Indeed, wherever there is the universal self, there is both shadow and sunlight.

कल्पना के उत्पाद एक-दूसरे से मिलने के रूप में समझे जाते हैं। निश्चित रूप से, जहाँ सर्वात्मा है, वहाँ छाया और धूप दोनों हैं।

7.159.39

न संभवति चेत्तत्तत्कथं सर्वात्मतामियात् । कस्मात्संकल्पनगरं न मिथः श्लिष्यतीति सत् ॥ ३९ ॥

na saṃbhavati cet tat tat kathaṃ sarvātmatām iyāt | kasmāt saṃkalpanagaraṃ na mithaḥ śliṣyatīti sat || 39 ||

If that does not exist, how can it attain universality? Why does the city of imagination not blend with each other?

अगर वह नहीं है, तो वह सर्वात्मता कैसे प्राप्त कर सकता है? कल्पना का नगर एक-दूसरे से क्यों नहीं मिलता?

7.159.40

मिथश्च श्लिष्यतीत्येवमपि सत्सर्वरूपिणि । न तदस्ति न यत्सत्यं न तदस्ति न यन्मृषा ॥ ४० ॥

mithaś ca śliṣyatīty evam api sat sarvarūpiṇi | na tad asti na yat satyaṃ na tad asti na yan mṛṣā || 40 ||

Even if it blends with each other, in the all-pervading truth, that which is true does not exist, nor does that which is false exist.

यदि यह एक-दूसरे से मिलता है, तो भी सर्वव्यापी सत्य में, जो सच है वह नहीं है, और जो झूठ है वह भी नहीं है।

7.159.41

सर्वत्र सर्वथा सर्वं सर्वदा सर्वरूपिणि । अहो नु विषमा माया मनोमोहविधायिनी ॥ ४१ ॥

sarvatra sarvathā sarvaṃ sarvadā sarvarūpiṇi | aho nu viṣamā māyā manomohavidhāyinī || 41 ||

Everywhere, in every way, everything, always, in all forms, oh, indeed, how strange is this illusion, which deludes the mind.

हर जगह, हर तरह से, हर चीज, हमेशा, हर रूप में, ओह, वास्तव में, कितनी अजीब है यह माया, जो मन को मोहित करती है।

7.159.42

विधयः प्रतिषेधाश्च यदेकत्र स्थितिं गताः । ईदृशी ब्रह्मसत्तैषा यदेवात्मानमात्मना ॥ ४२ ॥

vidhayaḥ pratiṣedhāśca yadekatra sthitiṃ gatāḥ | īdṛśī brahmasattaiṣā yadevātmānamātmanā || 42 ||

The injunctions and prohibitions that have taken place in one place, such is the nature of Brahman, which is the self by itself.

जो एक जगह पर विधियाँ और प्रतिबंध हुए हैं, ऐसी ही ब्रह्म की सत्ता है, जो स्वयं अपने आप में आत्मा है।

7.159.43

तया अनादिः सादिश्चेत्यविद्येत्यनुभूयते । न ज्ञप्तिमात्रकचनं यदि स्याद्भुवनत्रयम् ॥ ४३ ॥

tayā anādiḥ sādiścetyavidyetyanubhūyate | na jñaptimātrakacanaṃ yadi syād bhuvanatrayam || 43 ||

By that, it is experienced as beginningless and with a beginning, and as ignorance. If the three worlds were merely a cognition, then there would be no experience.

उसके द्वारा, यह अनादि और सादि के रूप में अनुभव किया जाता है, और अज्ञान के रूप में। अगर तीनों लोक केवल एक ज्ञान होते, तो कोई अनुभव नहीं होता।

7.159.44

तन्महाकल्पनष्टानां सृष्टिः स्यात्कथमञ्जसा । कथमग्नेः कथं वायोः सत्ता भूमेः कथं भवेत् ॥ ४४ ॥

tanmahākalpanāṣṭānāṃ sṛṣṭiḥ syātkathamañjasā | kathamagneḥ kathaṃ vāyoḥ sattā bhūmeḥ kathaṃ bhavet || 44 ||

How can there be creation for those whose great imagination is destroyed? How can there be existence of fire, air, and earth?

उनके लिए जिनकी महान कल्पना नष्ट हो गई है, रचना कैसे हो सकती है? अग्नि, वायु और पृथ्वी का अस्तित्व कैसे हो सकता है?

7.159.45

तस्मात्स्वभावकचनमात्रान्नान्यदृते जगत् । शास्त्राण्यनुभवो लोका आमहाकल्पवादिनाम् ॥ ४५ ॥

tasmātsvabhāvakacanamātrānnānyadṛte jagat | śāstrāṇyanubhavo lokā āmahākalpavādinām || 45 ||

Therefore, the world is nothing but the mere appearance of its own nature. The scriptures, experience, and people are proponents of this great doctrine.

इसलिए, संसार अपनी स्वभाव का मात्र प्रकटीकरण है। शास्त्र, अनुभव, और लोग इस महान सिद्धांत के प्रवक्ता हैं।

7.159.46

येषां प्रमाणं नो सर्वं प्रशस्तैस्तैरलं सताम्। ज्ञप्तिदृष्ट्यानया सर्वं प्रमाणीभवति क्षणात्॥ ४६॥

yeṣāṃ pramāṇaṃ no sarvaṃ praśastais tair alaṃ satām | jñaptidṛṣṭyānayā sarvaṃ pramāṇībhavati kṣaṇāt || 46 ||

For those who do not consider all scriptures as authoritative, this knowledge is sufficient for the wise. By this direct perception, everything becomes authoritative instantly.

जिनके लिए सभी प्रमाण नहीं हैं, उनके लिए यह ज्ञान पर्याप्त है | इस ज्ञप्तिदृष्टि से सब कुछ तुरंत प्रमाण बन जाता है |

7.159.47

नान्यया तनु तेनैवमेव सार विदुर्बुधाः। शुद्धा ज्ञप्तिर्ब्रह्मसत्ता त्वविद्यास्मीति चेतनात्॥ ४७॥

nānyayā tanu tenaivameva sāra vidurbudhāḥ | śuddhā jñaptirbrahmasattā tvavidyāsmīti cetanāt || 47 ||

The wise know that the essence is not attained by any other means except this. Pure knowledge is the reality of Brahman, and it is known through consciousness, not through ignorance.

बुद्धिमान लोग यह जानते हैं कि सार कोई और तरीके से नहीं प्राप्त होता | शुद्ध ज्ञप्ति ब्रह्म की सत्ता है, और यह चेतना से जाना जाता है, अज्ञान से नहीं |

7.159.48

स्फुरतीयं जगद्रूपा वातश्रीः स्पन्दनादिव। न कश्चनेह म्रियते जायते न च कश्चन॥ ४८॥

sphuratīyaṃ jagadrūpā vātaśrīḥ spandanādiva | na kaścaneha mriyate jāyate na ca kaścana || 48 ||

This world appears to be vibrating like the wind. No one here dies, nor is anyone born.

यह जगत वायु की तरह स्पंदन करता हुआ प्रतीत होता है | यहां कोई नहीं मरता है, न ही कोई जन्म लेता है |

7.159.49

मृतोऽहमिदमस्तीति प्रतिभैव चिदात्मिका। मृतिरत्यन्तनाशश्चेत्तत्सा निद्रा सुखोपमा॥ ४९॥

mṛto'hamidamastīti pratibhaiva cidātmikā | mṛtiratyantanāśaścettatsā nidrā sukhopamā || 49 ||

The idea 'I am dead, this exists' is merely a reflection of consciousness. If death means complete annihilation, then it is like sleep, similar to happiness.

यह विचार 'मैं मर गया, यह अस्तित्व में है' केवल चेतना का प्रतिबिंब है | यदि मृत्यु पूर्ण विनाश है, तो यह नींद की तरह है, सुख की तरह |

7.159.50

पुनर्दृश्योपलम्भश्चेन्ननु जीवितमेव तत्। तस्मान्नेहास्ति मरणं तन्नैवेहास्ति जीवितम्॥ ५०॥

punardṛśyopalambhaścennanu jīvitameva tat | tasmānnehaastimaraṇaṃ tannaivehaastijīvitam || 50 ||

If there is again the perception of the visible, then that is indeed life. Therefore, there is no death here, nor is there life.

यदि फिर से दृश्य का उपलब्धि होता है, तो वह जीवन ही है | इसलिए, यहां न तो मृत्यु है, न ही जीवन |

7.159.51

कस्मिंश्चिन्मात्रकचने द्वयं वाप्यस्ति नैव वा। चेतितं द्वयमप्यस्ति नास्ति द्वयमचेतितम्॥ ५१॥

kasmiṃścinmātrakacane dvayaṃ vāpyasti naiva vā | cetitaṃ dvayamapyasti nāsti dvayamacetitam || 51 ||

In some limited sense, duality may or may not exist | Conscious duality exists, unconscious duality does not exist || 51 ||

किसी सीमित अर्थ में, द्वैत हो सकता है या नहीं | चेतन द्वैत है, अचेतन द्वैत नहीं है || ५१ ||

7.159.52

चेतितं चैकमेवास्ति स्वस्त्यनन्तमतश्चितः । चिन्मात्रव्यतिरेकेण किं नाम वद जीवनम् ॥ ५२ ॥

cetitaṃ caikamevāsti svastyānantamataścitaḥ | cinmātravyatirekeṇa kiṃ nāma vada jīvanam || 52 ||

Only conscious existence is eternal and blissful | Beyond pure consciousness, what can be called life? || 52 ||

केवल चेतन अस्तित्व अनंत और आनंदमय है | शुद्ध चेतना से परे, जीवन क्या कहला सकता है? || ५२ ||

7.159.53

अदुःखमक्षयत्वात्तदतो दुःखं क्व कस्यचित् । वाच्यं सवाचकं सर्वं यत्र चिद्व्योममात्रकम् ॥ ५३ ॥

aduḥkhamakṣayatvāttadato duḥkhaṃ kva kasyacit | vācyaṃ savācakaṃ sarvaṃ yatra cidvyomamātrakam || 53 ||

That which is eternal is without sorrow | Where then is sorrow for anyone? | Everything is expressible where there is only the sky of consciousness || 53 ||

जो अक्षय है वह दुःखरहित है | तो फिर किसी के लिए दुःख कहाँ है? | जहाँ केवल चेतना का आकाश है, वहाँ सब कुछ अभिव्यक्त है || ५३ ||

7.159.54

तदन्यत्तदनन्यच्च के ते तत्रैकताद्विते । आवर्तादि यथा तोये शरीरादि तथा परे ॥ ५४ ॥

tadanyattadananyacca ke te tatraikatādvite | āvartādi yathā toye śarīrādi tathā pare || 54 ||

What are the distinctions and non-distinctions in that unity and duality? | Just as there are waves, etc., in water, so are bodies, etc., in the supreme || 54 ||

उस एकता और द्वैत में भेद और अभेद क्या हैं? | जैसे पानी में तरंगें होती हैं, वैसे ही परम में शरीर होते हैं || ५४ ||

7.159.55

तत्सत्तासंनिवेशात्म कारणानन्यखात्म च । चिद्भानमात्रमव्यग्रं खमेवाप्रतिघं जगत् ॥ ५५ ॥

tatsattāsaṃniveśātma kāraṇānanyakhātma ca | cidbhānamātramavyagraṃ khamevāpratighaṃ jagat || 55 ||

The essence of that existence is the abode of the cause, which is not different from it | The world is pure consciousness, undisturbed, like the unobstructed sky || 55 ||

उस अस्तित्व का सार कारण का निवास है, जो उससे भिन्न नहीं है | जगत् शुद्ध चेतना है, अव्यग्र, जैसे अवरुद्ध आकाश || ५५ ||

7.159.56

आश्चर्यं सुघनं व्यग्रं द्रव्यं सप्रतिघं स्थितम्तथेते भूतिभूर्नास्ति वर्तमानानुभूतिभूः ॥ ५६ ॥

āścaryaṃ sughanaṃ vyagraṃ dravyaṃ sapratighaṃ sthitamtathete bhūtibhūrnāsti vartamānānubhūtibhūḥ || 56 ||

The marvelous, dense, active substance, which is with resistance, is not the one who experiences the present. Therefore, it is not the experiencer of the present.

यह आश्चर्यजनक, घना, सक्रिय द्रव्य, जो प्रतिरोध के साथ है, वर्तमान का अनुभव करने वाला नहीं है। इसलिए, यह वर्तमान का अनुभव करने वाला नहीं है।

7.159.57

तत्र भ्रान्त्या पिशाचोऽयं भाति खात्मेति बुध्यताम्यथैतत्खं तथैतत्खमेतत्खमिति खं स्थितम् ॥ ५७ ॥

tatra bhrāntyā piśāco'yaṃ bhāti khātmeti budhyatāmyathaitatkhaṃ tathaitatkhametatkhamiti khaṃ sthitam || 57 ||

There, due to delusion, this demon appears as if it is the sky. One should understand it as 'this is the sky, this is the sky, this is the sky.' Thus, the sky is established.

वहाँ, भ्रम के कारण, यह पिशाच आकाश के रूप में प्रकट होता है। इसे 'यह आकाश है, यह आकाश है, यह आकाश है' के रूप में समझना चाहिए। इस प्रकार, आकाश स्थापित होता है।

7.159.58

तथेतो भूरितो भूतमितोऽन्यदिति खं परम्यैव चिद्भा जगत्सैव नैकतात्र न च द्विता ॥ ५८ ॥

tatheto bhūrito bhūtamito'nyaditi khaṃ paramyaiva cidbhā jagatsaiva naikatātra na ca dvitā || 58 ||

Thus, from the abundance of beings, it is said, 'This is different.' The sky is the supreme consciousness itself. The world is the same; there is no oneness here, nor duality.

इस प्रकार, प्राणियों की अधिकता से, यह कहा जाता है, 'यह अलग है।' आकाश स्वयं परम चेतना है। संसार वही है; यहाँ कोई एकता नहीं है, न ही द्वैत।

7.159.59

न च प्रतिघता काचिन्न चाप्रतिघरूपतासर्वमप्रतिघं दृश्यं यथा भूतार्थदर्शिनः ॥ ५९ ॥

na ca pratighatā kācinna cāpratigharūpatāsarvamapratighaṃ dṛśyaṃ yathā bhūtārthadarśinaḥ || 59 ||

There is no resistance of any kind, nor is there any form without resistance. Everything visible is without resistance, as seen by those who perceive the true nature of things.

यहाँ किसी प्रकार का कोई प्रतिरोध नहीं है, न ही कोई प्रतिरोध रहित रूप है। जो लोग वास्तविक स्वभाव को देखते हैं, उनके लिए सब कुछ दृश्य प्रतिरोध रहित है।

7.159.60

तज्ज्ञतातज्ज्ञते चेह न सती नाप्यसत्स्थितीसत्ये सदसती चैकं काष्ठमौनमतोऽखिलम् ॥ ६० ॥

tajjñatātajjñate ceha na satī nāpyasatsthitīsatye sadasatī caikaṃ kāṣṭhamaunamato'khilam || 60 ||

If the knowledge of that is known here, it is neither existent nor non-existent. In truth, existence and non-existence are one, the whole is silent.

अगर उसका ज्ञान यहाँ ज्ञात है, तो यह न तो अस्तित्व में है न ही अनस्तित्व में। सत्य में, अस्तित्व और अनस्तित्व एक हैं, सारा मौन है।

7.159.61

यद्दृश्यं ब्रह्मतानन्तं तदेव परमं पदम्। इद सर्वं परं ब्रह्ममात्रमित्येव संस्थितम् ॥ ६१ ॥

yaddṛśyaṃ brahmatānantam tadeva paramaṃ padam| id sarvaṃ paraṃ brahmamātramityeva saṃsthitam || 61 ||

That which is perceptible is the infinite Brahman, that alone is the supreme state| All this is established as the supreme Brahman alone

जो दृश्य है, वह अनन्त ब्रह्म है, वही परम पद है| यह सब कुछ परम ब्रह्म के रूप में ही स्थित है || ६१ ||

7.159.62

एवं नामैष चिद्धातुः कचत्येवं यदात्मनि । यस्येदं कचनं व्योम्नो रूपमप्रतिघं जगत् ॥ ६२ ॥

evaṃ nāmaiṣa ciddhātuḥ kacatyevaṃ yadātmani| yasyedaṃ kacanaṃ vyomno rūpamapratighaṃ jagat || 62 ||

Thus, this element of consciousness shines in the self| Whose form is this unobstructed universe, like the sky

इस प्रकार, यह चेतना का तत्व आत्मा में चमकता है| जिसका यह रूप है, आकाश की तरह अप्रतिहत जगत् || ६२ ||

7.159.63

सर्गाद्या मृतजीवानां सर्वत्रैवाङ्गुलेङ्गुले । असंख्याः सन्त्यसंख्यानामदृश्याप्रतिघामिथः ॥ ६३ ॥

sargādyā mṛtajīvānāṃ sarvatraivāṅguleṅgule| asaṃkhyāḥ santyasaṃkhyānāmadṛśyāpratighāmithaḥ || 63 ||

From creation to death, in every part of the body, there are countless beings| They are invisible and unobstructed among the countless

सृष्टि से लेकर मृत्यु तक, शरीर के हर अंग में, असंख्य जीव हैं| वे अदृश्य और अप्रतिहत हैं असंख्यों में || ६३ ||

7.159.64

अन्योन्यं सिद्धलोकास्ते स्वं यत्र प्राप्य संगताः । परस्परं न पश्यन्ति मिथः प्रोता अपि स्थिताः ॥ ६४ ॥

anyonyaṃ siddhalokāste svaṃ yatra prāpya saṅgatāḥ| parasparaṃ na paśyanti mithaḥ protā api sthitāḥ || 64 ||

Those perfected beings, having attained their own state, do not see each other| Even though they are interwoven, they remain established in their own state

वे सिद्ध लोक, जो अपनी अवस्था प्राप्त कर चुके हैं, एक दूसरे को नहीं देखते| भले ही वे आपस में जुड़े हुए हों, वे अपनी अवस्था में ही स्थित रहते हैं || ६४ ||

7.159.65

भवत्याकाश एवैषा दृश्यश्रीर्गगनात्मिका । अनन्यदृष्टा चिद्रूपा स्वप्नवत्स्वात्मद्रष्टृका ॥ ६५ ॥

bhavatyākāśa evaiṣā dṛśyaśrīrgaganātmikā| ananyadṛṣṭā cidrūpā svapnavatsvātmadṛṣṭṛkā || 65 ||

This visible splendor becomes like the sky, of the nature of the sky| Seen as non-dual, of the form of consciousness, like a dream seen by the self

यह दृश्य शोभा आकाश की तरह हो जाती है, आकाश की प्रकृति की| अद्वैत रूप में देखी जाती है, चेतना के रूप में, जैसे स्वप्न आत्मा द्वारा देखा जाता है || ६५ ||

7.159.66

एषा हि संपरिज्ञाता तिष्ठत्यपि यथास्थितम् । भामात्ररूपनिर्वाणा निशान्ताऽप्रतिभाकृतिः ॥ ६६ ॥

eṣā hi saṃparijñātā tiṣṭhatyapi yathāsthitam | bhāmātrarūpanirvāṇā niśāntā'pratibhākṛtiḥ || 66 ||

This is indeed well-known and remains as it is | It is the form of pure light, peaceful, and without any reflection

यह वास्तव में अच्छी तरह से जाना जाता है और जैसा है वैसा ही रहता है | यह शुद्ध प्रकाश का रूप है, शान्त, और किसी भी प्रतिबिम्ब के बिना

7.159.67

शान्ताशेषविशेषात्म यथास्थितमवस्थितम् । सदसद्वा जगज्जालं परिज्ञानेन शाम्यति ॥ ६७ ॥

śāntāśeṣaviśeṣātma yathāsthitamavasthitam | sadasadvā jagajjālaṃ parijñānena śāmyati || 67 ||

The peaceful, all-encompassing self remains as it is | The web of the world, whether real or unreal, is pacified by knowledge

शान्त, सभी विशेषताओं वाला स्वयं जैसा है वैसा ही रहता है | सत्य या असत्य, संसार का जाल ज्ञान से शान्त हो जाता है

7.159.68

यथाब्धिजलबिन्दूनां क्षणविश्लेषसंगमम् । चिदणूनां तथा ब्रह्म वारिधौ स्फुरतां मिथः ॥ ६८ ॥

yathābdhijalabindūnāṃ kṣaṇaviśleṣasaṃgamam | cidaṇūnāṃ tathā brahma vāridhau sphuratāṃ mithaḥ || 68 ||

Just as the drops of ocean water merge and separate in an instant | Similarly, the particles of consciousness in Brahman pulsate together in the ocean

जैसे समुद्र की बूँदें एक क्षण में मिलती और अलग होती हैं | उसी प्रकार, ब्रह्म में चेतना के कण समुद्र में साथ-साथ स्फुरित होते हैं

7.159.69

स्वप्नवद्भाति सर्गश्रीः सर्गादौ चिन्नभोमयी । अतः सर्वमिदं ब्रह्म शान्तमित्युपपद्यते ॥ ६९ ॥

svapnavadbhāti sargaśrīḥ sargādau cinnabhomayī | ataḥ sarvamidaṃ brahma śāntamityupapadyate || 69 ||

The glory of creation appears like a dream | Initially, it is made of the sky of consciousness | Therefore, all this is Brahman, peaceful

सृष्टि की शोभा स्वप्न की तरह प्रकट होती है | पहले, यह चेतना के आकाश से बनी होती है | इसलिए, यह सब ब्रह्म है, शान्त

7.159.70

दृष्टान्यनन्तविभवानि मया जगन्ति भुक्तानि कार्यपरिणामविजृम्भितानि । भ्रान्ता दिशो दश बहूनि युगानि यावज्ज्ञानादृते क्षयमुपैति न दृश्यदोषः ॥ ७० ॥

dṛṣṭānyanantavibhavāni mayā jaganti bhuktāni kāryapariṇāmavijṛmbhitāni | bhrāntā diśo daśa bahūni yugāni yāvajjñānādṛte kṣayamupaiti na dṛśyadoṣaḥ || 70 ||

I have seen countless riches in the world, enjoyed them, and they have arisen from the transformation of actions | The confused directions, many ages, as long as there is no knowledge, do not perish, there is no fault in seeing

मैंने संसार में अनन्त सम्पदाएँ देखी हैं, उन्हें भोगा है, और वे कर्मों के परिणाम से उत्पन्न हुई हैं | भ्रमित दिशाएँ, बहुत से युग, जब तक ज्ञान नहीं है, नष्ट नहीं होते, देखने में कोई दोष नहीं है

Chapter 160

7.160.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । विपश्चिति वदत्येवं तद्वृत्तान्तमवेक्षितुम् । इव लोकान्तरं भानुः पादैर्दूरायतैर्ययौ ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | vipaściti vadatyevaṃ tadvṛttāntamavekṣitum | iva lokāntaraṃ bhānuḥ pādairdūrāyatairyayau || 1 ||

Sri Valmiki said: Thus, having spoken to the wise one, to examine the matter, the sun, as if to another world, went with his long rays.

श्री वाल्मीकि ने कहा: इस प्रकार विपश्चित को बताया, उस वृत्तान्त को देखने के लिए, सूर्य अपने लंबे किरणों से दूसरे लोक की ओर गया।

7.160.2

उदभूत्पूरयन्नाशा दिनपर्यन्तदुन्दुभिः । तुष्टाभिरिव निर्मुक्तो दिग्भिर्जयजयारवः ॥ २ ॥

udabhūtpūrayannāśā dinaparyantadundubhiḥ | tuṣṭābhiriva nirmukto digbhirjayajayāravaḥ || 2 ||

With the rising of the sun, the hopes of the day were fulfilled, and the sound of victory, as if released by the satisfied directions, resounded.

सूर्य उदय होने पर, दिन की आशाएँ पूरी हो गईं, और जय की ध्वनि, मानो संतुष्ट दिशाओं द्वारा छोड़ी गई, गूंज उठी।

7.160.3

विपश्चिति दशरथो गृहदारधनादिकम् । राज्यानुरूपं विभवं प्रोत्तस्थौ कल्पयन्क्रमात् ॥ ३ ॥

vipaściti daśaratho gṛhadāradhanādikam | rājyānurūpaṃ vibhavaṃ prōttasthau kalpayankramāt || 3 ||

The wise Dasaratha, according to the kingdom's needs, gradually arranged the wealth of his household and family.

बुद्धिमान दशरथ ने राज्य के अनुरूप, धीरे-धीरे अपने घर और परिवार के धन का व्यवस्थापन किया।

7.160.4

राजरामवसिष्ठाद्या मिथः कृत्वा विसर्जनम् । यथाक्रमं पूजनं च प्रययुः स्वास्पदानि ते ॥ ४ ॥

rājarāmavasiṣṭhādyā mithaḥ kṛtvā visarjanam | yathākramaṃ pūjanaṃ ca prayayuḥ svāspadāni te || 4 ||

The king, Rama, Vasistha, and others, having mutually performed the farewell, according to the order, worshipped and departed to their respective places.

राजा, राम, वसिष्ठ और अन्य लोग, एक-दूसरे से विदाई करके, क्रम के अनुसार पूजा करके अपने-अपने स्थानों पर चले गए।

7.160.5

स्नात्वा भुक्त्वा निशां नीत्वा प्रभाते पुनरायुः । तेनैव संनिवेशेन सा सभा संस्थिताऽभवत् ॥ ५ ॥

snātvā bhuktvā niśāṃ nītvā prabhāte punarāyayuḥ | tenaiva saṃniveśena sā sabhā saṃsthitā'bhavat || 5 ||

Having bathed, eaten, and spent the night, they returned in the morning. The assembly was established with the same arrangement.

स्नान करके, भोजन करके, और रात बिताकर, वे सुबह लौटे। सभा उसी व्यवस्था से स्थापित हो गई।

7.160.6

क्रमान्मुनिरुवाचाथ तां यथाप्रस्तुतां कथाम् । शशीवामृतमाह्लादमुद्गिरन्मुखदीप्तिभिः ॥ ६ ॥

kramānmuniruvācātha tāṃ yathāprastutāṃ kathām | śaśīvāmṛtamāhlādamudgiranmukhadīptibhiḥ || 6 ||

Then the sage spoke in sequence that story as it was presented | With the radiance of the moon, nectar, and joy, he uttered with the brilliance of his face

तब मुनि ने क्रमानुसार उस कहानी को जैसे प्रस्तुत किया गया था उसी तरह कहा | चाँद की चाँदनी, अमृत और आनंद की तरह अपने मुख की चमक से बोले

7.160.7

राजन्नेयमविद्येयमसत्येव सती स्थिता । नेदृशेनापि यत्नेन निर्णीतैषा विपश्चिता ॥ ७ ॥

rājannayamavidyeayamasatyeva satī sthitā | nedṛśenāpi yatnena nirṇītaiṣā vipaścitā || 7 ||

O King, this ignorance appears to be real though it is unreal | Even with such effort, it cannot be understood by the wise

हे राजन्, यह अज्ञान वास्तव में असत्य है, लेकिन सत्य की तरह प्रतीत होता है | ऐसे प्रयास से भी यह बुद्धिमान द्वारा नहीं समझा जा सकता

7.160.8

अविद्यैवमविज्ञाता चिरानन्तावभासते । परिज्ञाता तु नास्त्येव मृगतृष्णानदी यथा ॥ ८ ॥

avidyeayamavijñātā cirānantāvabhāsate | parijñātā tu nāstyeva mṛgatṛṣṇānadī yathā || 8 ||

Thus, ignorance, when not known, appears to be eternal | But when known, it does not exist, like a mirage river

इस प्रकार, अज्ञान, जब अज्ञात होता है, अनंत प्रतीत होता है | लेकिन जब ज्ञात होता है, तो यह अस्तित्व में नहीं रहता, जैसे मृगतृष्णा नदी

7.160.9

मन्त्रिणस्ते महाबुद्धे भासस्यास्य विपश्चितः । इतिवृत्तं त्वमित्यस्य स्वयमेव हि दृष्टवान् ॥ ९ ॥

mantrisaste mahābuddhe bhāsasyāsya vipaścitaḥ | itivṛttaṃ tvamityasya svayameva hi dṛṣṭavān || 9 ||

O wise ministers, you have seen the essence of this story yourself | You have understood the meaning of 'you are this' by yourself

हे बुद्धिमान मंत्री, आपने इस कहानी की सार को स्वयं देखा है | आपने 'तुम यह हो' का अर्थ स्वयं समझा है

7.160.10

सदृशोऽयमितस्त्वाभिः कथाभिर्ज्ञाततत्पदः । अविद्यायां प्रशान्तायां जीवन्मुक्तो भविष्यति ॥ १० ॥

sadṛśo'yamitastvābhiḥ kathābhirjñātatatpadaḥ | avidyāyāṃ praśāntāyāṃ jīvanmukto bhaviṣyati || 10 ||

This one is similar to you, having known the ultimate truth through stories | When ignorance is calmed, one will become liberated while living

यह आपके समान है, जिसने कहानियों द्वारा परम सत्य को जाना है | जब अज्ञान शांत हो जाता है, तो वह जीवन्मुक्त होगा

7.160.11

अविद्येति धृता संविद्ब्रह्मणात्मनि सत्तया । तद्भ्रमेणासदप्यस्याः सद्रूपमिव लक्ष्यते ॥ ११ ॥

avidyeti dhṛtā saṃvidbrahmaṇātmani sattayā | tadbhraṇāsadapyasyāḥ saddrūpamiva lakṣyate || 11 ||

Ignorance (avidyā) is held in the consciousness (saṃvid) of Brahman (brahmaṇa) in the self (ātmani) by its existence (sattayā). Due to that delusion (tadbhraṇā), even the non-existent (asad) appears as if it has the form of existence (saddrūpamiva).

अज्ञान (अविद्या) ब्रह्म (ब्रह्मणा) की चेतना (संविद) में आत्मा (आत्मनि) में अस्तित्व (सत्तया) के साथ धारण किया जाता है। उस भ्रम (तद्भ्रमेण) के कारण, असत् (असद) भी अस्तित्व के रूप (सद्रूपमिव) में दिखाई देता है।

7.160.12

यदा ब्रह्मात्मिकैवेयमविद्या नेतरात्मिका । तदास्त्येषाऽपरिज्ञाता परिज्ञाता न भिद्यते ॥ १२ ॥

yadā brahmātmikaivaiyamavidyā netarātmikā | tadāstyēṣā'parijñātā parijñātā na bhidyatē || 12 ||

When this ignorance (avidyā) is of the nature of Brahman (brahmātmikā), it is not of another nature (netarātmikā). Then, this ignorance exists (asti) unrecognized (aparijñātā), but when recognized (parijñātā), it does not differ (na bhidyatē).

जब यह अज्ञान (अविद्या) ब्रह्म (ब्रह्मात्मिका) की प्रकृति का होता है, तो यह दूसरी प्रकृति का नहीं होता (नेतरात्मिका)। तब, यह अज्ञान अनजान (अपरिज्ञाता) रहता है, लेकिन जब पहचाना जाता है (परिज्ञाता), तो यह अलग नहीं होता (न भिद्यते)।

7.160.13

अविद्यैवमनन्तेयं नानाप्रसवशालिनी । जडा हृद्या रसमयी मोहमाधवमञ्जरी ॥ १३ ॥

avidyaivamanantēyaṃ nānāprasavaśālinī | jaḍā hṛdyā rasamayī mōhamādhavamañjarī || 13 ||

Thus, this endless ignorance (avidyā) is the source of various creations (nānāprasavaśālinī). It is inert (jaḍā), pleasing to the heart (hṛdyā), full of essence (rasamayī), and a garland of delusion (mōhamādhavamañjarī).

इस प्रकार, यह अनन्त अज्ञान (अविद्या) विभिन्न सृष्टियों का स्रोत (नानाप्रसवशालिनी) है। यह जड़ (जड़ा), हृदयविदारक (हृद्या), सारभरा (रसमयी), और भ्रम की माला (मोहमाधवमञ्जरी) है।

7.160.14

अन्तशून्या ग्रन्थिमती श्लक्ष्णा स्वङ्कुरकण्टका । जडा रसमयी दीर्घा लतेव वनवैणवी ॥ १४ ॥

antaśūnyā granthimatī ślakṣṇā svaṅkurakaṇṭakā | jaḍā rasamayī dīrghā latēva vanavaiṇavī || 14 ||

It is empty within (antaśūnyā), full of knots (granthimatī), smooth (ślakṣṇā), with its own sprouts and thorns (svaṅkurakaṇṭakā). It is inert (jaḍā), full of essence (rasamayī), long (dīrghā), like a creeper in the forest (latēva vanavaiṇavī).

यह अंदर खाली है (अन्तशून्या), गाँठों से भरा हुआ है (ग्रन्थिमती), चिकना है (श्लक्ष्णा), अपने अंकुरों और काँटों के साथ (स्वङ्कुरकण्टका)। यह जड़ है (जड़ा), सारभरा है (रसमयी), लंबा है (दीर्घा), जंगल की लता की तरह (लतेव वनवैणवी)।

7.160.15

फलाशङ्का मुधैवातिनिष्फला चित्तहारिणी । अकालपुष्पमालेव श्रेयसा नाभिनन्दिता ॥ १५ ॥

phalāśaṅkā mudhaivātiniṣphalā cittahāriṇī | akālapuṣpamālēva śrēyasā nābhinanditā || 15 ||

It is feared for its fruit (phalāśaṅkā), but it is utterly fruitless (mudhaivātiniṣphalā) and steals the mind (cittahāriṇī). Like a garland of untimely flowers (akālapuṣpamālēva), it is not appreciated for its goodness (śrēyasā nābhinanditā).

यह अपने फल के लिए डराया जाता है (फलाशङ्का), लेकिन यह बिलकुल निष्फल है (मुधैवातिनिष्फला) और मन को चुराता है (चित्तहारिणी)। यह असमय फूलों की माला की तरह है (अकालपुष्पमालेव), जो अपनी अच्छाई के लिए सराही नहीं जाती (श्रेयसा नाभिनन्दिता)।

7.160.16

न किंचिद्रूपिणी पीना नानाभुवनपूरिणी । भूताकुला निरालोका सुदीर्घेव तमोमयी ॥ १६ ॥

na kiṃcidrūpiṇī pīnā nānābhuvanapūriṇī | bhūtākulā nirālokā sudīrgheva tamomayī || 16 ||

She is not of any form, full, filling various worlds, crowded with beings, devoid of light, very long, and full of darkness.

वह किसी भी रूप की नहीं है, पूर्ण है, विभिन्न लोकों को भरती है, प्राणियों से भरी हुई है, प्रकाशहीन है, बहुत लंबी है और अंधकार से भरी हुई है।

7.160.17

केशोण्ड्रकभ्रान्तिरिव विचित्रग्रन्थिवेष्टना । मिथ्यैव दृश्यमाना खेऽदृश्यमाना न किंचन ॥ १७ ॥

keśoṇḍrakabhrāntiriva vicitragranthiveṣṭanā | mithyaiva dṛśyamānā khe'dṛśyamānā na kiṃcana || 17 ||

Like the illusion of hair seen in the air, it appears varied and knotted, but it is false, seen in the sky, not seen, nothing at all.

जैसे हवा में बालों का भ्रम, यह विविध और गाँठों में बँधा हुआ दिखता है, लेकिन यह झूठा है, आकाश में दिखाई देता है, नहीं दिखाई देता, कुछ भी नहीं।

7.160.18

विचित्रवर्णा विगुणा शून्ये च विततात्मकृतिः । जडस्पन्दोत्पातमयी शक्रचापलतेव खे ॥ १८ ॥

vicitravarṇā viguṇā śūnye ca vitatākṛtiḥ | jaḍaspandotpātamayī śakracāpalateva khe || 18 ||

Of varied colors, defective, and of extended form in emptiness, it is inert, trembling, and appears like Indra's bow in the sky.

विविध रंगों की, दोषपूर्ण, और शून्यता में विस्तृत आकृति वाली, यह जड़, काँपती हुई, और आकाश में इंद्रधनुष की तरह दिखाई देती है।

7.160.19

जडकल्लोलबहुला कलुषोल्लासफेनिला । चक्रावर्ताक्षयमयी प्रावृषीव तरङ्गिणी ॥ १९ ॥

jaḍakallolabahulā kaluṣollāsaphenilā | cakrāvartākṣayamayī prāvṛṣīva taraṅgiṇī || 19 ||

Full of inert waves, abounding with impure foam, it is like a whirlpool, endless, and appears like a stormy river.

जड़ तरंगों से भरी, अशुद्ध फेन से भरपूर, यह एक भंवर की तरह है, अंतहीन, और एक बाढ़ वाली नदी की तरह दिखाई देती है।

7.160.20

अनारतवहच्छून्यजगन्मृगनदीशता । रजोराशिमयी रूक्षा शवभूरिव दुर्भगा ॥ २० ॥

anāratavahacchūnyajaganmṛganadīśatā | rajorāśimayī rūkṣā śavabhūriva durbhagā || 20 ||

The continuous flow of the empty world is like a mirage river, full of dust, harsh, and appears like a miserable corpse.

शून्य संसार का निरंतर प्रवाह एक मृगतृष्णा नदी की तरह है, धूल से भरा हुआ, कठोर, और एक दुःखी शव की तरह दिखाई देता है।

7.160.21

अन्तं प्राप्नोति न यथा चिरं स्वप्नपुरे चरन्जाग्रदाख्ये स्वप्नपुरे तथैवास्मिंश्चिरं चरन् ॥ २१ ॥

antaṃ prāpnoti na yathā ciraṃ svapnapure caranjāgradākhye svapnapure tathaivāsmiṃściraṃ caran || 21 ||

One does not attain the end as if wandering for a long time in the dream city called Jāgradā, likewise, one wanders here for a long time.

एक व्यक्ति जाग्रदा नामक स्वप्न नगर में लंबे समय तक भटकता हुआ अंत नहीं प्राप्त करता, उसी प्रकार यहाँ भी लंबे समय तक भटकता है।

7.160.22

यानि संकल्पजालानि प्रतिष्ठामागतान्यलम्त्यक्तैकदृश्यजालस्थदेहानां दृढचेतसाम् ॥ २२ ॥

yāni saṃkalpajālāni pratiṣṭhāmāgatānyalamtyaktaikadṛśyajālasthadehānāṃ dṛḍhacetasām || 22 ||

Those who have firm minds, having abandoned the single vision of the illusory body, have attained the establishment of the network of resolutions.

जिनके मन दृढ़ हैं, वे भ्रामक शरीर के एकमात्र दृश्य को त्यागकर, संकल्पों के जाल की स्थापना प्राप्त करते हैं।

7.160.23

स्थितानि तानि चिद्व्योम कोशरत्नान्यसंकटम्विमानपुरभूम्यादिरूपेणेत्थं स्थितात्मना ॥ २३ ॥

sthitāni tāni cidvyoma kośaratnānyasaṃkaṭamvimānapurabhūmyādirūpeṇetthaṃ sthitātmanā || 23 ||

Those are established in the space of consciousness, like treasures without obstacles, in the form of celestial cities, lands, etc., here.

वे चेतना के आकाश में स्थापित हैं, बाधाओं के बिना खजाने की तरह, दिव्य नगरों, भूमियों आदि के रूप में, यहाँ।

7.160.24

तान्येव सिद्धसद्मानि व्योम्नि भान्ति परस्परमदृष्टान्यप्यसंख्यानि सूपलब्धान्यसन्त्यपि ॥ २४ ॥

tānyeva siddhasadmāni vyomni bhānti parasparamadṛṣṭānyapyasaṃkhyāni sūpalabdhānyasantyapi || 24 ||

Those very accomplished abodes shine in the sky, mutually visible, though countless and easily attainable, they are not finite.

वे ही सिद्ध निवास आकाश में चमकते हैं, परस्पर दृश्यमान, हालाँकि असंख्य और आसानी से प्राप्य, वे सीमित नहीं हैं।

7.160.25

सुवर्णमणिमाणिक्यमुक्तावनिमयानि चभक्ष्यभोज्यान्नपानाढ्यरसायनसरांसि च ॥ २५ ॥

suvarṇamaṇimāṇikyamuktāvanimayāni cabhakṣyabhojyānnapānāḍhyarasāyanasarāṃsi ca || 25 ||

Made of gold, gems, pearls, and crystals, and full of delicious foods and drinks, elixirs, and essences.

सोने, रत्नों, मोतियों और स्फटिक से बने, और स्वादिष्ट भोजन और पेय, अमृत और सार से भरे हुए।

7.160.26

मधुमद्यदधिक्षीरघृतकुल्याकुलानि च रसायनमयाकारवनितावलितानि च ॥ २६ ॥

madhumadyadadhikṣīraghṛtakulyākulāni ca rasāyanamayākāravaniitāvalitāni ca || 26 ||

The place is filled with honey, wine, curd, milk, ghee, and various elixirs, adorned with beautiful women.

यह स्थान मधु, मद्य, दधि, क्षीर, घृत और विभिन्न रसायनों से भरा है, सुंदर महिलाओं से सजा है।

7.160.27

सर्वर्तुपुष्पफलपल्लवपूरवन्ति लीलाविलोललनाकुलितालयानि संकल्पमात्ररचनेन च सर्वकालं संपन्नसर्वविभवोत्करसंकुलानि ॥ २७ ॥

sarvartupuṣpaphalapallavapūravanti līlāvilolalalanākulitālayāni saṃkalpamātraracanena ca sarvakālaṃ saṃpannasarvavibhavotkarasaṃkulāni || 27 ||

The place is filled with flowers, fruits, and leaves of all seasons, and is adorned with beautiful women engaged in playful activities. It is always full of all kinds of wealth and luxuries, created by mere thought.

यह स्थान सभी ऋतुओं के फूल, फल और पत्तों से भरा है, और खेल में लगी सुंदर महिलाओं से सजा है। यह हमेशा सभी प्रकार के धन और विलासिताओं से भरा है, जो केवल सोच से बनाया जाता है।

7.160.28

सहस्रचन्द्रबिम्बानि शतसूर्याणि कानिचित् सुवर्णामृतवेषाम्बुमयभूतानि कानिचित् ॥ २८ ॥

sahasracandrabimbāni śatasūryāṇi kānicit suvarṇāmṛtaveṣāmbumayabhūtāni kānicit || 28 ||

Some are like a thousand moons, some like a hundred suns, and some are made of gold and nectar.

कुछ हजार चंद्रमाओं के समान हैं, कुछ सौ सूर्यों के समान हैं, और कुछ सोने और अमृत से बने हैं।

7.160.29

स्वेच्छातमःप्रकाशानि नित्यानन्दमयानि च कानिचिन्नीयमानानि तनुतूललघूनि च ॥ २९ ॥

svecchātamaḥprakāśāni nityānandamayāni ca kānicinanīyamānāni tanutūlalaghūni ca || 29 ||

Some are self-luminous, always full of bliss, and some are light as cotton, moving freely.

कुछ स्वयं प्रकाशित हैं, हमेशा आनंद से भरे हैं, और कुछ रुई की तरह हल्के हैं, जो स्वतंत्र रूप से चलते हैं।

7.160.30

क्षणोत्पत्तिविनाशानि कानिचित्कलनावशात् अनन्तस्वन्नपानानि निर्जरामरणानि च ॥ ३० ॥

kṣaṇotpattivināśāni kānicitkalanāvaśāt anantasvannapānāni nirjarāmaraṇāni ca || 30 ||

Some arise and disappear in an instant, some are eternal, and some are free from old age and death.

कुछ एक क्षण में उत्पन्न होते हैं और विनाश हो जाते हैं, कुछ अनंत हैं, और कुछ बुढ़ापे और मृत्यु से मुक्त हैं।

7.160.31

विचित्रसंनिवेशानि विचित्रविभवानि च । सर्वर्तुगुणरम्याणि सर्वकाममयानि च ॥ ३१ ॥

vicitrasaṃniveśāni vicitravibhavāni ca | sarvartuguṇaramyāṇi sarvakāmamayāni ca || 31 ||

Various beautiful arrangements and various luxuries, pleasing in all seasons and fulfilling all desires.

विचित्र संनिवेश और विचित्र विभव, सभी ऋतुओं में रमणीय और सभी कामनाओं को पूरा करने वाले।

7.160.32

तानि संकल्पजालानि किल कल्याणकारतः । स्थिराणां मनसां भित्तिः कथमेवं भवेत्तु सा ॥ ३२ ॥

tāni saṃkalpajālāni kila kalyāṇakārataḥ | sthirāṇāṃ manasāṃ bhittiḥ kathamevaṃ bhavettu sā || 32 ||

These are the networks of resolutions, indeed, for the sake of welfare. How can that be the support of steady minds?

ये संकल्पों के जाल हैं, निश्चित रूप से, कल्याण के लिए। स्थिर मनों के लिए कैसे यह आधार हो सकता है?

7.160.33

नान्यत्किंचन नामेह ब्रह्ममात्रमयात्मनि । संभवत्यङ्ग तेनैतदुच्यतामस्तु किंमयम् ॥ ३३ ॥

nānyatkiñcana nāmeha brahmamātramayātmani | saṃbhavatyanga tenaitaducyatāmastu kiṃmayam || 33 ||

There is nothing else here, only Brahman in the self. Therefore, let this be said to be what?

यहाँ कुछ और नहीं है, केवल ब्रह्म आत्मा में। इसलिए, यह क्या कहा जाए?

7.160.34

सर्गादावेव सर्गादि किंचनापीदमस्ति नो । कारणाभावतस्तेन जगत्किंमयमस्त्विदम् ॥ ३४ ॥

sargādāveva sargādi kiñcanāpīdamasti no | kāraṇābhāvatastena jagatkiṃmayamastvidam || 34 ||

Even at the beginning of creation, there is no cause for this. Therefore, what is this world?

सृष्टि के आरंभ में भी, इसका कोई कारण नहीं है। इसलिए, यह संसार क्या है?

7.160.35

संकल्प्यन्ते निरन्तानि किल तानि यथा यथा । चितौ तथा तथा भान्ति केवात्र वद चित्रता ॥ ३५ ॥

saṃkalpyante nirantāni kila tāni yathā yathā | citau tathā tathā bhānti kevātra vada citratā || 35 ||

They are imagined to be endless, indeed, as they are. In consciousness, they appear just as they are. Tell me, what is the wonder here?

वे अनंत कल्पित किए जाते हैं, निश्चित रूप से, जैसे वे हैं। चेतना में, वे ठीक वैसे ही दिखाई देते हैं जैसे वे हैं। बताओ, यहाँ चमत्कार क्या है?

7.160.36

इदानीमपि हे साधो त्वमप्यन्येऽपि केऽपि वातीव्रसंवेगसंकल्पनगराण्येवमेव खे ॥ ३६ ॥

idānīmapi he sādho tvamapyanye'pi ke'pi vātīvrasaṃvegasaṃkalpanagarāṇyevameva khe || 36 ||

Even now, O virtuous one, you and others, by intense resolve, construct cities in the sky in this manner.

अभी भी, हे साधु, तुम और दूसरे लोग, तीव्र संकल्प से, आकाश में ऐसे ही नगर बनाते हो।

7.160.37

कुर्वन्त्येकरसाभ्यासाद्यदि नाम यदृच्छया । तत्तानीदं वपुस्त्यक्त्वा प्राप्नुवन्त्यचिरेण खे ॥ ३७ ॥

kurvantyekarasābhyāsādyadi nāma yadṛcchayā | tattānīdaṃ vapustyaktvā prāpnuvantyacireṇa khe || 37 ||

Those who practice with single-minded devotion, if by chance, quickly attain that state, leaving this body in the sky.

जो एकाग्रता से अभ्यास करते हैं, यदि यदृच्छया (दैवयोग से), वे शीघ्र ही उस अवस्था को प्राप्त करते हैं, इस शरीर को आकाश में छोड़कर।

7.160.38

यस्त्विदं कल्पितं च द्वे वस्तुनी अनुवर्तते । स्वर्गादिवदवाप्नोति प्राप्नोत्येवैकमेकधीः ॥ ३८ ॥

yastvidam kalpitam ca dve vastunī anuvartate | svargādivadavāpnoti prāpnotyevaikamekadhīḥ || 38 ||

One who follows these two imagined entities attains heaven and the like, but one with a single mind attains only one.

जो इन दो कल्पित वस्तुओं का अनुसरण करता है, वह स्वर्ग और उसके समान को प्राप्त करता है, लेकिन एकाग्र चित्त वाला एक ही को प्राप्त करता है।

7.160.39

सिद्धाः सदा विभान्त्येवं यथान्तःकल्पनावशात् । नरकादीनि दुःखानि तथैवाभान्ति कल्पनात् ॥ ३९ ॥

siddhāḥ sadā vibhāntyevaṃ yathāntaḥkalpanāvaśāt | narakādīni duḥkhāni tathaivābhānti kalpanāt || 39 ||

The accomplished ones always shine according to their inner imagination. Similarly, sufferings like hell also appear due to imagination.

सिद्ध लोग हमेशा अपनी अंतर्कल्पना के अनुसार चमकते हैं। इसी तरह, नरक जैसे दुःख भी कल्पना के कारण प्रकट होते हैं।

7.160.40

यद्यत्संवेद्यते किंचित्तत्तथाप्यनुभूयते । सति वाऽसति देहेऽस्मिन्देह एव मनोमयः ॥ ४० ॥

yadyatsaṃvedyate kiñcit tattathāpyanubhūyate | sati vā'sati dehe'sminddeha eva manomayaḥ || 40 ||

Whatever is perceived is experienced as such. Whether the body exists or not, the body is indeed made of the mind.

जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, वह ऐसे ही अनुभव किया जाता है। चाहे शरीर हो या न हो, शरीर वास्तव में मन से बना है।

7.160.41

जीवस्त्यजति यद्भावे एकां देहमयीं धियम् । तद्भावैकमयीमन्यामाशु तत्रैव पश्यति ॥ ४१ ॥

jīvastyajati yadbhāve ekāṃ dehamayīṃ dhiyam| tadbhāvaikamayīmanyāmāśu tatraiva paśyati || 41 ||

When a living being gives up one body, it immediately sees another body in the same state.

जब एक जीव एक शरीर को त्याग देता है, तो वह तुरंत उसी अवस्था में दूसरे शरीर को देखता है।

7.160.42

शुभा संविच्छुभांल्लोकान्संपश्यत्यशुभाऽशुभान् । खात्मिका खात्मकानेव चिरं वानुभवत्यपि ॥ ४२ ॥

śubhā saṃvicchubhāṃllokānsaṃpaśyatyśubhā'śubhān| khātmikā khātmakāneva ciraṃ vānubhavatyapi || 42 ||

The pure one sees pure worlds and the impure one sees impure worlds. The one with the nature of space sees the nature of space, even for a long time.

शुद्ध व्यक्ति शुद्ध लोकों को देखता है और अशुद्ध व्यक्ति अशुद्ध लोकों को देखता है। आकाश की प्रकृति वाला व्यक्ति आकाश की प्रकृति को देखता है, चाहे लंबे समय तक ही क्यों न हो।

7.160.43

शुद्धा सिद्धपुराण्येव पश्यत्यनुभवत्यपि । चिदशुद्धानि रूपाणि दुःखानि नरकेष्वति ॥ ४३ ॥

śuddhā siddhapurāṇyeva paśyatyānubhavatyapi| cidaśuddhāni rūpāṇi duḥkhāni narakeṣvati || 43 ||

The pure one sees and experiences the perfect ancient beings. They see and experience pure forms of consciousness, even in the sufferings of hell.

शुद्ध व्यक्ति पूर्ण प्राचीन प्राणियों को देखता और अनुभव करता है। वे नरक के दुःखों में भी चेतना के शुद्ध रूपों को देखते और अनुभव करते हैं।

7.160.44

घूर्णत्पाषाणयमलगिरिचक्रकपेषणम्। तत्रान्धकूपपतनं पुनरुद्धारवर्जितम्॥ ४४॥

ghūrṇatpāṣāṇayamalagiricakrakapeṣaṇam| tatrāndhakūpapatanaṃ punaruddhāravarjitam || 44 ||

There is the crushing by revolving stone mountains, falling into dark wells, and being lifted up again without relief.

वहाँ घूमते हुए पत्थर के पहाड़ों द्वारा कुचलना, अंधेरे कुएं में गिरना, और फिर से राहत के बिना उठाया जाना है।

7.160.45

दारुणेनातिशीतेन देहं पाषाणतां गतम्। भूताङ्गारमयानन्तमरुमार्गास्पदं वपुः॥ ४५॥

dāruṇenātiśītena dehaṃ pāṣāṇatāṃ gatam| bhūtāṅgāramayānantamārumārgāspadaṃ vapuḥ || 45 ||

The body becomes as hard as stone due to the extreme cold. It becomes an endless, fiery coal-like form, a resting place on the path of the wind.

शरीर अत्यंत ठंड के कारण पत्थर के समान कठोर हो जाता है। यह एक अंतहीन, अंगारे जैसा रूप बन जाता है, हवा के मार्ग पर एक विश्राम स्थल।

7.160.46

पूताङ्गारमयाम्भोदसरदङ्गारवर्षणम्। तप्तनाराचनिकरपरुषासारदारुणम्॥ ४६॥

pūtāṅgāramayāmbhodasaradaṅgāravarṣaṇam | taptanārācanikaraparuṣāsāradāruṇam || 46 ||

The rain of burning coals and the harsh, fierce arrows, the intense heat and the sharp, piercing weapons.

जलते हुए अंगारों की वर्षा और तीखे, कठोर बाणों का प्रहार, तीव्र गर्मी और तेज़, चुभने वाले हथियारों का प्रयोग।

7.160.47

वहत्पाषाणचक्रासिसरिदाकाशसंचरम्। वक्षोमुक्ताम्बुदाकारकुठाराघातभेदनम्॥ ४७॥

vahatpāṣāṇacakrāsisaridākāśasaṃcaram | vakṣomuktāmbudākārakuṭhārāghātabhedanam || 47 ||

The movement of stones and weapons in the sky, and the splitting of the chest with a thunderbolt-like axe.

पत्थरों और हथियारों की आकाश में गति, और वज्र के समान कुल्हाड़ी से छाती को चीरना।

7.160.48

तप्तायःपरुषाश्लेषच्छमिच्छमितिमज्जनम्। वृहत्कटकटाशब्दशस्त्रयन्त्रनिपीडनम्॥ ४८॥

taptāyaḥparuṣāśleṣacchamicchamitimajjanam | vṛhatkaṭakaṭāśabdaśastrayantranipīḍanam || 48 ||

The harsh embrace of heated iron, the sound of loud clanging, and the oppression of weapons and machines.

गर्म लोहे का कठोर आलिंगन, जोरदार खड़खड़ाहट की आवाज, और हथियारों और मशीनों का दबाव।

7.160.49

चक्रवज्रगदाप्रासशूलासिशरवर्षणम्। शाल्मलीग्रहणं पाशं कुशक्तिशततोदनम्॥ ४९॥

cakravajragadāprāsaśūlāsiśaravarṣaṇam | śālmalīgrahaṇaṃ pāśaṃ kuśaktiśatatodanam || 49 ||

The rain of weapons like the discus, thunderbolt, mace, spear, sword, and arrows, the grasping of the cotton tree, the noose, and the piercing with a hundred sharp lances.

चक्र, वज्र, गदा, प्रास, शूल, असि, और बाणों की वर्षा, रुई के पेड़ को पकड़ना, फंदा, और सौ तीखी भालों से चुभना।

7.160.50

तप्तसैकतसंभारपातपातालमज्जनम्। दीपच्छन्नानलभयं बृहद्वायसचर्वणम्॥ ५०॥

taptasaikatasaṃbhārapātapātālamajjanam | dīpacchannānalabhayaṃ bṛhadvāyasacarvaṇam || 50 ||

The immersion in the pit of heated sand, the fear of fire hidden by lamps, and the pecking by large crows.

गर्म रेत के ढेर में डूबना, दीपकों से छिपे आग का भय, और बड़े कौए द्वारा चोंच मारना।

7.160.51

निर्निर्गमाकृशाङ्गारमहाङ्गारप्रवेशनम्। शरशक्तिगदाप्रासभुशुण्डीचक्रवेधनम्॥ ५१॥

nirnirgamākṛśāṅgāramahāṅgārapraveśanam | śaraśaktigadāprāsabhuśuṇḍīcakravedhanam || 51 ||

The entrance into the great furnace, which is without an exit, and the piercing with arrows, spears, maces, swords, and discs.

जिसका कोई निकास नहीं है, उस महान अंगारे में प्रवेश और तीर, भाले, गदा, तलवार और चक्रों से छेदन।

7.160.52

क्षुत्क्षोभपरुषप्रेतव्रातान्योन्याङ्गचर्वणम्। तालोत्तालातिपरुषशिलातलनिपातनम्॥ ५२॥

kṣutkṣobhaparuṣapretavrātānyonyāṅgacarvaṇam | tālottālātiparuṣaśilātalanipātanam || 52 ||

The mutual devouring of each other's limbs by fierce ghosts, and the falling of extremely harsh stones.

क्रूर भूतों द्वारा एक-दूसरे के अंगों का आपस में चर्वण और अत्यंत कठोर पत्थरों का गिरना।

7.160.53

रुधिरामेध्यपङ्काङ्कपूयनद्यादिसंकटम्। शिलाशस्त्रमयाश्वेभपादपाषाणपेषणम्॥ ५३॥

rudhirāmedhyapaṅkāṅkapūyanadyādisaṅkaṭam | śilāśastramayāśvebhapādapāṣāṇapeṣaṇam || 53 ||

The danger of rivers filled with impure blood and mud, and the crushing of feet with stone weapons and horses.

अशुद्ध रक्त और कीचड़ से भरी नदियों का खतरा, और पत्थर के हथियारों और घोड़ों से पैरों को कुचलना।

7.160.54

श्वभ्राभोलूकलिखितं जनौघमुसलाहतम्। शिरःकरखुरस्कन्धखण्डोत्कगृध्रमण्डलम्॥ ५४॥

śvabhrābhūlūkalikhitam janaughamusalāhatam | śiraḥkarakhurasakandhakhaṇḍotkagṛdhramaṇḍalam || 54 ||

The crowd struck by a pestle, written with the blood of an owl, and the circle of vultures with severed heads, hands, and shoulders.

उल्लू के रक्त से लिखा हुआ, मूसल से मारा हुआ जनसमूह, और कटे हुए सिर, हाथ और कंधों वाले गिद्धों का चक्र।

7.160.55

एतस्मात्कुकृतादेतत्फलमित्येव भावनात्। पश्यत्येवंदेशदृढादविसंवादिविस्तृतः॥ ५५॥

etasmātkukṛtādetatphalamityeva bhāvanāt | paśyatyevaṃdeśadṛḍhādavisamvādivistṛtaḥ || 55 ||

From this evil deed, this is the result, as it is thought. One sees this firmly in this place, spread out without contradiction.

इस बुरे कर्म से यही परिणाम है, जैसा सोचा जाता है। यह स्थान में दृढ़ता से देखा जाता है, विरोध के बिना फैला हुआ।

7.160.56

यन्नाम किंचन कदाचन चेतनं खे भातं न भातमथवा यदपूर्वमेव । तत्कल्पनाद्भवति तन्मयमेव तद्धि तस्माच्चिरं च चलतीति यदृच्छयैव ॥ ५६ ॥

yannāma kiṃcana kadācana cetanaṃ khe bhātaṃ na bhātamathavā yadapūrvameva | tatkalpanādbhavati tanmayameva taddhi tasmācciraṃ ca calatīti yadṛcchayaiva || 56 ||

Whatever name, any, ever, conscious, in the sky, appears, not appears, or is entirely new | That arises from imagination, that is entirely that, because that moves for a long time, indeed, by chance

जो भी नाम, कोई भी, कभी भी, चेतन, आकाश में, दिखाई देता है, नहीं दिखाई देता, या पूरी तरह से नया है | वह कल्पना से उत्पन्न होता है, वह पूरी तरह से वही है, क्योंकि वह लंबे समय तक चलता है, indeed, अपने आप

Chapter 161

7.161.1

श्रीराम उवाच । यन्मुनिव्याधयोरेतद्वृत्तं नानादशाशतम् । अन्यकारणकं किं स्यादेतत्किं वा स्वभावजम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | yanmunivyādhayoretaadvṛttaṃ nānādaśāśatam | anyakāraṇakaṃ kiṃ syādetatkiṃ vā svabhāvajam || 1 ||

Shri Rama said: This varied behavior of the sage and the hunter, is it due to some other cause or is it inherent in their nature?

श्री राम ने कहा: इस मुनि और व्याध के वृत्त में अनेक दशाएँ हैं, यह किसी अन्य कारण से है या स्वभाव से?

7.161.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । ईदृशाः प्रतिभावर्ताः परमात्ममहाम्बुधौ । अनारतं प्रवर्तन्ते स्वतः स्वात्मनि खात्मकाः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | īdṛśāḥ pratibhāvartāḥ paramātmamahāmbudhau | anārataṃ pravartante svataḥ svātmani khātmakāḥ || 2 ||

Shri Vasishta said: Such manifestations of consciousness continuously arise in the great ocean of the Supreme Self, spontaneously from within the Self.

श्री वसिष्ठ ने कहा: ऐसे चेतना के प्रकटीकरण परमात्मा के महान समुद्र में निरंतर उत्पन्न होते हैं, स्वतः ही स्वयं से।

7.161.3

यथा स्पन्दात्मनो वायोरजस्रं स्पन्दलेखिकाः । उद्यन्त्येव सतश्चित्त्वाच्चिद्व्योम्नि प्रतिभायुताः ॥ ३ ॥

yathā spandātmāno vāyorajasraṃ spandalekhikāḥ | udyantyeva sataschittvācchidvyomni pratibhāyutāḥ || 3 ||

Just as the vibrations of the wind continuously arise and manifest in the sky, similarly, the manifestations of consciousness continuously arise in the space of consciousness.

जैसे वायु के स्पंद निरंतर आकाश में उत्पन्न होते हैं, वैसे ही चेतना के प्रकटीकरण चेतना के आकाश में निरंतर उत्पन्न होते हैं।

7.161.4

या यथा स्वाङ्गभूतास्मादुदिता प्रतिभा प्रभा । तावत्सेह तथैवास्ते न हता यावदन्यया ॥ ४ ॥

yā yathā svāṅgabhūtāsmāduditā pratibhā prabhā | tāvatsēha tathaivāstē na hatā yāvadanyayā || 4 ||

Just as the radiance of the sun arises from the sun itself, similarly, the manifestations of consciousness arise from the Self and remain unchanged until they are replaced by another.

जैसे सूर्य की प्रभा सूर्य से ही उत्पन्न होती है, वैसे ही चेतना के प्रकटीकरण स्वयं से उत्पन्न होते हैं और तब तक बदले नहीं रहते जब तक कि किसी दूसरे से बदल न दिए जाएँ।

7.161.5

नानावयववानेक एवेहावयवी यथा । चिद्ब्रह्मैकमिदं व्योम तथैवं प्रतिभात्मकम् ॥ ५ ॥

nānāvayavavāneka evēhāvayavī yathā | chidbrahmaikamidaṃ vyoma tathaivaṃ pratibhātmakam || 5 ||

Just as the universe, which is made up of various parts, is one, similarly, the space of consciousness, which is made up of various manifestations, is one.

जैसे विश्व, जो विभिन्न भागों से बना है, एक है, वैसे ही चेतना का आकाश, जो विभिन्न प्रकटीकरणों से बना है, एक है।

7.161.6

ब्रह्म काश्चित्स्थिराः काश्चिदस्थिराः प्रतिभार्थवत् । देहावस्था इवात्मस्थाः स्थितमात्मनि खात्मनि ॥ ६ ॥

brahma kāścitsthirāḥ kāścidasthirāḥ pratibhārthavat| dehāvasthā ivātmasthāḥ sthitamātmani khātmani || 6 ||

Some aspects of Brahman are stable, some are unstable, like the states of the body| They are situated in the self, in the space of the self

ब्रह्म के कुछ अंश स्थिर हैं, कुछ अस्थिर हैं, जैसे देह की अवस्थाएँ| वे आत्मा में, आत्मा के अंतरिक्ष में स्थित हैं

7.161.7

स्वात्मनि स्वप्नपुरवद्भानं चिति चमत्कृतिः । किं सारं किमसारं वा किं सत्किं वाप्यसद्भवेत् ॥ ७ ॥

svātmani svapnapuravadbhānaṃ citi camatkṛtiḥ| kiṃ sāraṃ kimasāraṃ vā kiṃ satkiṃ vāpyasadbhave || 7 ||

In one's own self, the appearance is like a dream city, in consciousness, it is a wonder| What is essential, what is non-essential, what is real, what is unreal?

अपने आत्मा में, प्रतीति स्वप्न नगर की तरह होती है, चेतना में, यह एक आश्चर्य है| क्या महत्वपूर्ण है, क्या अमहत्वपूर्ण है, क्या सत्य है, क्या असत्य है?

7.161.8

परिज्ञातमिदं यावत्सर्वं चिद्व्योममात्रकम् । दृश्यं जगद्भवद्बुद्धं न सन्नासत्किमुच्यते ॥ ८ ॥

parijñātamidaṃ yāvatsarvaṃ cidvyomamātrakam| dṛśyaṃ jagadbhavadbuddhaṃ na sannāsadkimucyate || 8 ||

All this is known as far as it is the mere space of consciousness| The visible world is understood to be neither real nor unreal| What can be said about it?

यह सब जितना जाना जाता है, उतना ही चेतना का अंतरिक्ष है| दृश्य जगत् समझा जाता है न सत् है न असत्| इसके बारे में क्या कहा जा सकता है?

7.161.9

चिद्व्योममात्रकचनं संसारे सर्वतः शिवे । आस्थानास्थादि किं तज्ज्ञा यथासंस्थानमास्थित ॥ ९ ॥

cidvyomamātrakacanaṃ saṃsāre sarvataḥ śive| āsthānāsthādi kiṃ tajjñā yathāsaṃsthānamāsthita || 9 ||

In the world of transmigration, which is entirely the space of consciousness, everything is auspicious| What is the knowledge of existence and non-existence, situated as it is?

पुनर्जन्म के जगत में, जो पूरी तरह से चेतना का अंतरिक्ष है, सब कुछ कल्याणकारी है| अस्तित्व और अनस्तित्व का ज्ञान क्या है, जैसे यह स्थित है?

7.161.10

समुद्यन्ति स्वतोऽम्भोधेर्वीचिवत्प्रतिभाकृताः । स्वात्मिकाः स्वात्मनो देवात्कार्यकारणदृक्तया ॥ १० ॥

samudyanti svato'mbhodhervīcivatpratibhākṛtāḥ| svātmikāḥ svātmano devātkāryakāraṇadṛktayā || 10 ||

They arise spontaneously from the ocean of the self, like waves, appearing as effects and causes| They are inherent in the self, from the divine self, seen as cause and effect

वे स्वयं आत्मा के समुद्र से उठते हैं, जैसे तरंगें, कार्य और कारण के रूप में प्रतीत होते हुए| वे आत्मा में निहित हैं, दिव्य आत्मा से, कारण और कार्य के रूप में देखे जाते हैं

7.161.11

स्फारं यत्परमं व्योम्नः स्वसंकल्पस्वसर्गवत्। तत्तेनैव जगद्बुद्धं कुतः पृथ्व्यादयोऽत्र के ॥ ११ ॥

sphāraṃ yatparamaṃ vyomnaḥ svasaṃkalpasvasargavat | tattenaiva jagadbuddhaṃ kutaḥ pṛthvyādayo'tra ke || 11 ||

The supreme expansion of space, which is self-willed and self-created, is known as the universe. How can the elements like earth exist here?

जो स्वयं संकल्प और स्वयं सृष्टि वाला परम व्योम है, वह उसी के द्वारा जगत् के रूप में जाना जाता है। यहां पृथ्वी आदि कैसे हो सकते हैं?

7.161.12

भात्येवमयमाभासो नैव भाति च किंचन। ब्रह्मण्येव स्थितं ब्रह्म तदविद्याभिधं स्वतः ॥ १२ ॥

bhātyevamayamābhāso naiva bhāti ca kiñcana | brahmaṇyeva sthitaṃ brahma tadavidyābhidhaṃ svataḥ || 12 ||

Thus, this appearance shines, but nothing really shines. Brahman is established in Brahman itself, and that is called ignorance.

इस प्रकार, यह आभास चमकता है, पर कुछ भी वास्तव में नहीं चमकता। ब्रह्म स्वयं ब्रह्म में स्थित है, और वह अविद्या कहलाता है।

7.161.13

घनता चिद्घनेनेह चिद्व्योमैवाखिलं जगत्। इत्येव परमो बोध एतत्प्रौढिस्तु मुक्तता ॥ १३ ॥

ghanatā ciddhaneneha cidvyomaiavākhilaṃ jagat | ityeva paramo bodha etatprauḍhistu muktatā || 13 ||

Density is consciousness here, and the entire universe is consciousness itself. This is the supreme knowledge, and this maturity is liberation.

घनता यहां चित्त है, और सम्पूर्ण जगत् चित्त स्वयं है। यह परम ज्ञान है, और यह परिपक्वता मुक्ति है।

7.161.14

चिद्व्योमशून्यतारूपमात्रमाभास आततः। इदमप्रतिघं शान्तं जगदित्येव भासते ॥ १४ ॥

cidvyomśūnyatārūpamātramābhāsa ātataḥ | idamapratighaṃ śāntaṃ jagadityeva bhāsate || 14 ||

The appearance of the form of the void of consciousness is spread out. This unobstructed, peaceful world is what shines.

चित्त के शून्य रूप का आभास फैला हुआ है। यह अप्रतिघात, शांत जगत् ही चमकता है।

7.161.15

ध्यायिनः क्षीणदेहस्य ध्याने दृक्त्वे क्षणं स्थिते। चिन्मात्रव्यतिरेकेण शक्तत्वं स्यात्किमुच्यताम् ॥ १५ ॥

dhyāyinaḥ kṣīṇadehasya dhyāne dṛktve kṣaṇaṃ sthite | cinmātravyatirekeṇa śaktatvaṃ syātkimucyatām || 15 ||

When the body of the meditator is exhausted, and the vision is fixed in meditation for a moment, what power can there be apart from pure consciousness?

जब ध्यान करने वाले का शरीर थक जाता है, और ध्यान में दृष्टि एक क्षण के लिए स्थिर हो जाती है, तो शुद्ध चित्त के अलावा कौन सी शक्ति हो सकती है?

7.161.16

चिद्धातुव्योमभागो यो भाति यत्र यथा यथा। तथा तथा स तत्रास्ते यावदित्थं स्वभावतः ॥ १६ ॥

ciddhātuvyomabhāgo yo bhāti yatra yathā yathā | tathā tathā sa tatrāste yāvaditthaṃ svabhāvataḥ || 16 ||

The element of consciousness, which is the space of the self, shines wherever and however it does. It exists there in that very manner as long as it is so by nature.

चिद्धातु व्योम भाग, जो जहाँ और जैसे भी चमकता है, वहीं और उसी तरह से रहता है, जब तक कि यह स्वभाव से ऐसा है।

7.161.17

अविचारवतो दृश्यभ्रान्तिर्गगनमय्यपि । जातितैमिरिकद्वीन्दुदोषवन्नोपशाम्यति ॥ १७ ॥

avicāravato dṛśyabhrāntirgaganamayyapi | jātitaimirikadvīndudōṣavannopaśāmyati || 17 ||

Even for those who do not discriminate, the illusion of the visible world does not cease, just like the defects of timira (eye disease), dvīndu (double vision), and other such ailments do not cease.

जिन्होंने विचार नहीं किया है, उनके लिए भी दृश्य जगत का भ्रम समाप्त नहीं होता, जैसे कि तिमिर (आँख की बीमारी), द्वींदु (दोहरी दृष्टि), और अन्य ऐसे दोष समाप्त नहीं होते।

7.161.18

यदिदं दृश्यते किंचित्तद्ब्रह्मैव निरामयम् । चिदाकाशमनाद्यन्तं तत्कथं किं प्रशाम्यति ॥ १८ ॥

yadidaṃ dṛśyate kiṃcittadbrahmaiva nirāmayam | cidākāśamanādyantaṃ tatkathaṃ kiṃ praśāmyati || 18 ||

Whatever is seen, that is indeed the flawless Brahman. The eternal and infinite space of consciousness, how can it cease?

जो कुछ भी दिखाई देता है, वह निष्कलंक ब्रह्म ही है। चेतना का अनंत और अनादि अंतरिक्ष, वह कैसे समाप्त हो सकता है?

7.161.19

स्वमसन्त्यजतो रूपं स्वच्छसंवेदनात्मकम् । स्वप्नवत्कचनं स्वस्य यन्नाम तदिदं जगत् ॥ १९ ॥

svamasatyajato rūpaṃ svacchasaṃvedanātmakam | svapnavatkacanaṃ svasya yannāma tadidaṃ jagat || 19 ||

For one who does not abandon their true form, which is pure awareness, this world is like a dream, a mere name.

जो अपने सच्चे रूप को नहीं छोड़ता, जो शुद्ध चेतना है, उसके लिए यह जगत स्वप्न की तरह है, एक नाम मात्र।

7.161.20

शास्त्रार्थैस्तीक्ष्णया बुद्ध्या मिथो यन्न विकल्पनैः । कृत्वा सुप्तमिवात्मानं किंचिद्बुद्धेन बोध्यते ॥ २० ॥

śāstrārthaisatīkṣṇayā buddhyā mitho yanna vikalpanaiḥ | kṛtvā suptamivātmānaṃ kiṃcidbuddhena bodhyate || 20 ||

With sharp intellect and the meanings of scriptures, without any doubts, making the self as if asleep, something is understood by the intellect.

तीक्ष्ण बुद्धि और शास्त्रों के अर्थों के साथ, किसी संदेह के बिना, आत्मा को सोया हुआ बनाकर, बुद्धि द्वारा कुछ समझा जाता है।

7.161.21

रूढा येयमविद्येति संविदव्यभिचारिणी । भवतां ननु नास्त्येव सा सरित्स्विव पांसुभूः ॥ २१ ॥

rūḍhā yeyamavidyeti saṃvidavyabhicāriṇī | bhavatāṃ nanu nāstyeva sā saritsviva pāṃsubhūḥ || 21 ||

This well-established ignorance is indeed non-existent, like a mirage in the desert.

यह स्थापित अविद्या वास्तव में नहीं है, जैसे रेगिस्तान में मृगतृष्णा।

7.161.22

यथा स्वप्नेऽवनिर्नास्ति स्वानुभूतापि कुत्रचित् । तथेयं दृश्यता नास्ति स्वानुभूताप्यसन्मयी ॥ २२ ॥

yathā svapne'vanirnāsti svānubhūtāpi kutracit | tatheyaṃ dṛśyatā nāsti svānubhūtāpyasanmayī || 22 ||

Just as the earth does not exist in a dream, even though it is experienced, so too this perceived reality does not exist, even though it is experienced as unreal.

जैसे स्वप्न में पृथ्वी नहीं होती, भले ही वह अनुभव की जाए, उसी प्रकार यह दृश्यता भी नहीं है, भले ही वह असत्य के रूप में अनुभव की जाए।

7.161.23

चिद्व्योममात्रमेवार्थाऽनलवद्भासते यथा । स्वप्ने तथैव जाग्रत्त्वेऽनलं स्वस्यैव लक्ष्यते ॥ २३ ॥

cidvyomamātramevārthā'nalavadbhāsate yathā | svapne tathaiva jāgrattve'nalaṃ svasyaiava lakṣyate || 23 ||

Just as consciousness alone shines like a flame in a dream, so too in the waking state, consciousness alone is perceived as the self.

जैसे स्वप्न में चेतना ही एक ज्योति के रूप में चमकती है, उसी प्रकार जाग्रत अवस्था में भी चेतना ही स्वयं के रूप में देखी जाती है।

7.161.24

इदं जाग्रदयं स्वप्न इति नास्त्येव भिन्नता । सत्ये वस्तुनि निःशेषसमयोर्यानुभूतितः ॥ २४ ॥

idaṃ jāgradayaṃ svapna iti nāstyeva bhinnatā | satye vastuni niḥśeṣasamayoryānubhūtitḥ || 24 ||

There is no difference between the waking state and the dream state in the ultimate reality, as both are experienced without remainder.

जाग्रत और स्वप्न अवस्थाओं में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों ही पूर्णतः अनुभव की जाती हैं।

7.161.25

नैतदेवमिति स्वप्नप्रबोधात्प्रत्ययो यथा । मृत्वामुत्र प्रबुद्धस्य जाग्रति प्रत्ययस्तथा ॥ २५ ॥

naitetadevamiti svapnaprabodhātpratyayo yathā | mṛtvāmutra prabuddhasya jāgrati pratyayastathā || 25 ||

Just as the realization 'This is not real' arises from awakening from a dream, so too the realization in the waking state arises from awakening after death.

जैसे स्वप्न से जागने पर 'यह वास्तविक नहीं है' का ज्ञान होता है, उसी प्रकार मृत्यु के बाद जागने पर जाग्रत अवस्था में भी ज्ञान होता है।

7.161.26

कालमल्पमनल्पं च स्वप्नजाग्रदितीह धीःवर्तमानानुभवनसाम्यात्तुल्ये तयोर्द्वयोः ॥ २६ ॥

kālamalpamanalpaṃ ca svapnajāgraditīha dhīḥvartamānānubhavanasāmyāttulye tayordvayoḥ || 26 ||

The mind experiences both the dream and waking states as similar, whether the time is short or long.

मन दोनों सपना और जागृत अवस्था को समान रूप से अनुभव करता है, चाहे समय छोटा हो या लंबा।

7.161.27

बाह्ये तदेवमित्यादिगुणसाम्यादशेषतःन जाग्रत्स्वप्नयोर्ज्यायानेकोऽपि यमयोरिव ॥ २७ ॥

bāhye tadevamityādiguṇasāmyādaśeṣataḥna jāgratsvapnayorjyāyāneko'pi yamayoriva || 27 ||

Externally, due to the complete similarity of qualities such as 'it is so,' there is no superiority between the waking and dream states, just as there is no difference between the twin gods Yama.

बाहरी तौर पर, 'ऐसा ही है' जैसी गुणों की पूर्ण समानता के कारण, जागृत और सपने की अवस्थाओं में कोई श्रेष्ठता नहीं है, जैसे कि यम जुड़वां देवताओं में कोई अंतर नहीं है।

7.161.28

यदेव जाग्रत्स्वप्नोऽयं यः स्वप्नो जाग्रदेव तत्नैतदेवं किलेत्यस्ति धीः कालेनोभयोरपि ॥ २८ ॥

yadeva jāgratsvapno'yaṃ yaḥ svapno jāgradeva tatnaitadevaṃ kiletyasti dhīḥ kālenobhayorapi || 28 ||

Whatever is experienced in the waking state is like a dream, and whatever is experienced in a dream is like the waking state. This is not so only in terms of time for both states.

जागृत अवस्था में जो कुछ भी अनुभव किया जाता है वह सपने के समान है, और जो कुछ भी सपने में अनुभव किया जाता है वह जागृत अवस्था के समान है। यह केवल समय के संदर्भ में नहीं है दोनों अवस्थाओं के लिए।

7.161.29

आजीवितान्तं स्वप्नानां शतान्यनियतं यथानिर्वाणमहाबोधे तथा जाग्रच्छतान्यपि ॥ २९ ॥

ājīvitāntaṃ svapnānāṃ śatānyaniyataṃ yathāanirvāṇamahābodhe tathā jāgracchatānyapi || 29 ||

Just as countless dreams occur until the end of life, similarly, countless waking states occur in the great awakening of enlightenment.

जैसे जीवन के अंत तक अनगिनत सपने होते हैं, उसी प्रकार, महान जागरण में भी अनगिनत जागृत अवस्थाएँ होती हैं।

7.161.30

उत्पन्नध्वंसिनः स्वप्नाः स्मर्यन्ते बहवो यथातथाएव बुद्धैः स्मर्यन्ते सिद्धैर्जन्मशतान्यपि ॥ ३० ॥

utpannadhvaṃsinaḥ svapnāḥ smaryante bahavo yathātathaiva buddhaiḥ smaryante siddhairjanmaśatānyapi || 30 ||

Just as many dreams that arise and vanish are remembered, similarly, many lifetimes are remembered by the enlightened ones.

जैसे बहुत से सपने उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं और याद किए जाते हैं, उसी प्रकार, बहुत से जन्म भी सिद्धों द्वारा याद किए जाते हैं।

7.161.31

एवं समस्तसाधर्म्ये समस्तानुभवात्मनि । कचति स्वप्नवज्जाग्रज्जाग्रद्वत्स्वप्नवेदनम् ॥ ३१ ॥

evaṃ samastasādharmye samastānubhavātmani | kacati svapnavajjāgratjāgradvatsvapnavedanam || 31 ||

Thus, in the totality of similarity and in the totality of experience, the perception of the waking state appears like a dream, and the dream appears like the waking state.

इस प्रकार, समानता की सम्पूर्णता और अनुभव की सम्पूर्णता में, जाग्रत अवस्था का अनुभव स्वप्न की तरह लगता है, और स्वप्न जाग्रत अवस्था की तरह लगता है।

7.161.32

यथा दृश्यं जगच्चेति नित्यमेकार्थतां गतौ । उभौ शब्दौ तथैवैतज्जाग्रत्स्वप्नात्मकौ स्मृतौ ॥ ३२ ॥

yathā dṛśyaṃ jagacceti nityamekārthatāṃ gatau | ubhau śabdau tathaivaitajjāgratsvapnātmakau smṛtau || 32 ||

Just as the seen world and the word 'world' always have the same meaning, so too the words 'waking' and 'dream' are remembered to have the same essence.

जैसे दृश्य जगत और 'जगत' शब्द हमेशा एक ही अर्थ रखते हैं, वैसे ही 'जाग्रत' और 'स्वप्न' शब्दों को एक ही सार रखने वाले याद किया जाता है।

7.161.33

एवं स्वप्नपुरं स्फारं यथा व्योमैव चिन्मयम् । तथैवेदं जगदतः क्वाविद्या दृश्यते कुतः ॥ ३३ ॥

evaṃ svapnapuraṃ sphāraṃ yathā vyomaiva cinmayam | tathaivedaṃ jagadataḥ kvāvidyā dṛśyate kutaḥ || 33 ||

Just as the expansive dream city is purely consciousness, like the sky, so too is this world. Where then is ignorance seen?

जैसे विस्तृत स्वप्न नगर पूर्णतः चेतना है, आकाश की तरह, वैसे ही यह जगत भी है। तो फिर अज्ञान कहाँ दिखाई देता है?

7.161.34

तदेवाकाशमात्रात्म यद्यविद्येति कथ्यते । तद्यदास्ते तदेवाहं बन्धः स्वकलनात्मकः ॥ ३४ ॥

tadevākāśamātrātma yadyavidyeti kathyate | tadyadāste tadevāhaṃ bandhaḥ svakalanātmakaḥ || 34 ||

That which is said to be ignorance is merely the essence of space. When it exists, it is the bondage of one's own imagination.

जो अज्ञान कहलाता है, वह केवल आकाश का सार है। जब वह अस्तित्व में होता है, तो वह अपनी कल्पना का बंधन है।

7.161.35

तन्मैवं क्रियतामेतदबन्धस्यैव बन्धनम् । कान्यता अमलव्योम्नश्चिन्मयस्य निराकृतेः ॥ ३५ ॥

tanmaivam kriyatāmetadabandhasyaiva bandhanam | kānyatā amalavyomnaścinmayaḥ nirākṛteḥ || 35 ||

Therefore, let this bondage of the unbound be undone. For there is no otherness in the pure, conscious sky.

इसलिए, इस अबंध के बंधन को खोल दिया जाए। क्योंकि शुद्ध, चेतन आकाश में कोई भिन्नता नहीं है।

7.161.36

चिन्मयाकाशकचने क्वास्मिन्किल निराकृतेः । दृश्यनामन्यविद्याख्ये बन्धो मोक्षोऽथवा कुतः ॥ ३६ ॥

cinmayākāśakacane kvāsminkila nirākṛteḥ | dṛśyanāmanyavidyākhye bandho mokṣo'thavā kutaḥ || 36 ||

In the infinite expanse of consciousness, where is the place for the negated? In the realm of the seen, known as ignorance, where is bondage or liberation?

चिन्मय आकाश में, निराकृत का स्थान कहाँ है? दृश्य नाम अविद्या कहलाने वाले क्षेत्र में, बंधन या मोक्ष कहाँ है?

7.161.37

नाविद्या विद्यते नाम बन्धो बन्धो न कस्यचित् । मोक्षो न कस्यचिन्मोक्षश्चास्तिनास्तीति नास्त्यलम् ॥ ३७ ॥

nāvidyā vidyate nāma bandho bandho na kasyacit | mokṣo na kasyacinmokṣaścāstināstīti nāstyalam || 37 ||

There is no ignorance, no bondage for anyone. There is no liberation, no liberation for anyone. It is not, it is not, there is no end to it.

अविद्या नहीं है, बंधन नहीं है किसी के लिए। मोक्ष नहीं है, मोक्ष नहीं है किसी के लिए। यह नहीं है, यह नहीं है, इसका अंत नहीं है।

7.161.38

नास्त्येव विद्याऽविद्या वा चिदेवेयं कचत्यजा । ख एव खाकृतिः स्वप्न इव सर्गस्वदेहिनी ॥ ३८ ॥

nāstyeva vidyā'vidyā vā cideveyaṃ kacatyajā | kha eva khākṛtiḥ svapna iva sargasvadehinī || 38 ||

There is neither knowledge nor ignorance. This is pure consciousness alone, which shines forth. It is like space, formless, like a dream, the creation and the body.

न तो विद्या है और न ही अविद्या। यह शुद्ध चेतना ही है, जो चमकती है। यह आकाश की तरह है, निराकार, स्वप्न की तरह, सृष्टि और शरीर।

7.161.39

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ यन्मध्ये संविदो वपुः । तज्जाग्रत्स्वप्नदृश्यस्य रूपमित्येव निश्चयः ॥ ३९ ॥

deśāddeśāntaraprāptau yanmadhye saṃvido vapuḥ | tajjāgratsvapnadṛśyasya rūpamityeva niścayaḥ || 39 ||

In the transition from one place to another, that which is the form of consciousness in the middle is indeed the form of what is seen in the waking and dream states.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक के परिवर्तन में, जो बीच में चेतना का रूप है, वह जाग्रत और स्वप्न अवस्था में देखे जाने वाले का रूप है।

7.161.40

सबाह्याभ्यन्तरे दृश्ये शान्तनिद्रस्य यद्वपुः । एकस्य निशि तद्रूपं जाग्रत्स्वप्नदृशामिह ॥ ४० ॥

sabāhyābhyantare dṛśye śāntanidrasya yadvapuḥ | ekasya niśi tadrūpaṃ jāgratsvapnadṛśāmiha || 40 ||

In the seen, which is both external and internal, the form of deep sleep is the form of the one in the night, here in the waking and dream states.

दृश्य में, जो बाह्य और आभ्यन्तर दोनों है, सुषुप्ति का रूप रात में एक का रूप है, यहाँ जाग्रत और स्वप्न अवस्था में।

7.161.41

विद्धि तद्रूपमेवेदं भेदवेदनमित्यपि । चित्यन्तमागतः कोऽन्यो नाम स्याद्भेदवेदने ॥ ४१ ॥

viddhi tadrūpamevedaṃ bhedavedanamityapi | cityantamāgataḥ ko'nyo nāma syādbhedavedane || 41 ||

Know this to be the very form of that, even the perception of difference. Who else, by name, could there be in the perception of difference?

इसे उसका ही रूप समझो, भेद की वेदना भी इसी को कहते हैं | भेद की वेदना में और कौन हो सकता है, जिसका नाम हो?

7.161.42

चिद्व्योमैवाभेदबुद्धिश्चिद्व्योमैव च भेदधीः । द्वैताद्वैते चैकमेव तथा शान्तमखण्डितम् ॥ ४२ ॥

cidvyomaivābhedabuddhiścidvyomaiva ca bhedadhīḥ | dvaitādvaitaika meva tathā śāntamakhṇḍitam || 42 ||

The consciousness-sky itself is the thought of non-duality, and the consciousness-sky itself is the thought of difference. In duality and non-duality, there is only one, thus peaceful and undivided.

चेतना-आकाश स्वयं ही अभेद बुद्धि है, और चेतना-आकाश स्वयं ही भेद की बुद्धि है | द्वैत और अद्वैत में एक ही है, इस प्रकार शान्त और अखण्डित |

7.161.43

सदंशो बोधतद्ग्राह्यमय एव यथा तथा । दृष्टा य एव दृश्यं तद्वैतवेदनमेककम् ॥ ४३ ॥

sadaṃśo bodhatadgrāhyamaya eva yathā tathā | dṛṣṭā ya eva dṛśyaṃ taddvaitavedanamekakam || 43 ||

The part of existence is the cognition of the object of cognition itself. As it is, so it is. The seer is indeed the seen, that perception of duality is one.

अस्तित्व का अंश उसके ज्ञान का ज्ञान स्वयं है | जैसा है, वैसा ही है | देखने वाला वही देखा जाता है, वह द्वैत की वेदना एक है |

7.161.44

तद्ब्रह्म खं विदुर्द्वैतमद्वैताद्वैतमेव च । सर्ग एव परं ब्रह्म द्वैतमद्वैतमेव सत् ॥ ४४ ॥

tadbrahma khaṃ vidurdvaitamadvaitādvaitameva ca | sarga eva paraṃ brahma dvaitamadvaitameva sat || 44 ||

That Brahman is known as the sky, duality, non-duality, and even non-duality. Creation itself is the supreme Brahman, duality, and non-duality.

वह ब्रह्म आकाश के रूप में जाना जाता है, द्वैत, अद्वैत, और अद्वैत भी | सृष्टि स्वयं ही परम ब्रह्म है, द्वैत और अद्वैत |

7.161.45

नेति नेति विनिर्णीय सर्वतोऽभिभवत्यपि । पश्चात्त्यक्त्वा चिदाकाशे शिलां कृत्वास्यतामिह ॥ ४५ ॥

neti neti vinirṇīya sarvato'bhibhavatyapi | paścāttyaktvā cidākāśe śilāṃ kṛtvāsyatāmiha || 45 ||

Having determined 'not this, not this,' it prevails everywhere. Afterwards, having abandoned, become a stone in the sky of consciousness here.

नेति नेति निर्णय करके, यह सर्वत्र व्याप्त होता है | फिर, त्याग कर, चेतना के आकाश में यहाँ पत्थर बन जाओ |

7.161.46

यथाक्रमं सुभग यथास्थितस्थिति यथोदयं व्रज पिब भुंक्ष्व भोजय। अभीप्सितं गतमननो निरिङ्गनः सुचिन्मये परमपदोपलो भवान्॥ ४६॥

yathākramam subhaga yathāsthitasthiti yathodayam vraja piba bhuṅkṣva bhojaya | abhīpsitam gatamanano niriṅganaḥ sucinmaye paramapadopalo bhavān || 46 ||

O fortunate one, according to the sequence, remain in your natural state, rise, drink, enjoy, and feed others. Having attained the desired state, with a mind free from attachments, you will merge into the supreme abode of pure consciousness.

हे सौभाग्यशाली, क्रमानुसार, अपनी प्राकृतिक स्थिति में रहो, उठो, पीओ, भोग करो और दूसरों को भोजन कराओ। अपनी इच्छा पूर्ण करके, आसक्तिहीन मन से, तुम शुद्ध चेतना के परम धाम में लीन हो जाओगे।

Chapter 162

7.162.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । चिद्व्योमार्थतयार्थानां यथास्थितमिदं जगत् । सरूपालोकमननमपि चिद्व्योम केवलम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | cidvyomārthatayārthānāṃ yathāsthitamidaṃ jagat | sarūpālokamananamapi cidvyoma kevalam || 1 ||

Shri Vasistha said: This world, as it exists, is the meaning of the essence of the consciousness-space. Even the contemplation of various forms is merely the consciousness-space.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह जगत्, जैसा कि यह है, चेतना-आकाश के अर्थ का अर्थ है। भिन्न-भिन्न रूपों का ध्यान भी केवल चेतना-आकाश ही है।

7.162.2

स्वप्नचित्पुररूपत्वादन्यद्यस्मान्न विद्यते । जगत्तस्मान्नभः शान्तं नेह नानास्ति किंचन ॥ २ ॥

svapnacitpurarūpatvādanyadyasmānna vidyate | jagattasmānnabhaḥ śāntaṃ neha nānāsti kiṃcana || 2 ||

Because there is nothing else other than the dream-like consciousness-city, therefore, this world is peaceful like the sky. There is no diversity here.

क्योंकि स्वप्न-सदृश चेतना-नगर के अतिरिक्त कुछ और नहीं है, इसलिए यह जगत् आकाश की तरह शान्त है। यहाँ कोई विविधता नहीं है।

7.162.3

चिदाभानमनानैव नानेव परिलक्ष्यते । अनात्मैवात्मनात्मानं स्वप्नाकाशपुरेष्विव ॥ ३ ॥

cidābhānamanānaiva nāneva parilakṣyate | anātmaivātmanātmānaṃ svapnākāśapureṣviva || 3 ||

The manifestation of consciousness is seen as non-different and not as diverse. The non-self itself appears as the self in the dream-like consciousness-city.

चेतना का प्रकटीकरण भिन्न नहीं और विविध नहीं दिखाई देता। स्वप्न-सदृश चेतना-नगर में अनात्म स्वयं आत्म की तरह प्रतीत होता है।

7.162.4

सर्गादाविव चिद्व्योम स्वप्नाकाशपुरं जगत् । आभातमेवासत्यं च नूनं सत्यमिव स्थितम् ॥ ४ ॥

sargādāviva cidvyoma svapnākāśapuraṃ jagat | ābhātamevāsatyam ca nūnaṃ satyamiva sthitam || 4 ||

Just as at the beginning of creation, the consciousness-space is like a dream-like consciousness-city, this world appears as unreal but seems to be real.

जैसे सृष्टि के आरंभ में, चेतना-आकाश स्वप्न-सदृश चेतना-नगर की तरह है, इसी प्रकार यह जगत् असत्य प्रतीत होता है लेकिन सत्य की तरह लगता है।

7.162.5

तज्ज्ञाज्ञातो न मूर्खाणामज्ञाज्ञातो न तद्विदाम् । विद्यते सर्गशब्दार्थः सत्यासत्यमयात्मकः ॥ ५ ॥

tajjñājñāto na mūrkhāṇamajñājñāto na tadvidām | vidyate sargashabdārthaḥ satyāsatyamayātmakaḥ || 5 ||

The ignorant do not know that which is known and unknown. The wise do not know that which is unknown and known. The meaning of the word 'creation' is of the nature of both truth and untruth.

मूर्ख वह नहीं जानते जो ज्ञात और अज्ञात है। विद्वान् वह नहीं जानते जो अज्ञात और ज्ञात है। 'सृष्टि' शब्द का अर्थ सत्य और असत्य दोनों का है।

7.162.6

तज्ज्ञाज्ञयोस्तयोरन्तःप्रतिपत्तौ तु यत्स्थितम्। न बोद्धुं न च वक्तुं ते जानीतस्तौ परस्परम्॥ ६॥

tajjñājñayostayorantaḥpratipattau tu yatsthitam | na boddhum na ca vaktum te jānītastau parasparam || 6 ||

When it comes to the understanding of the two, knowledge and ignorance, they are unable to comprehend or express each other.

ज्ञान और अज्ञान के बीच की अंतर्दृष्टि को लेकर, वे दोनों एक दूसरे को समझने या व्यक्त करने में असमर्थ हैं।

7.162.7

स्वबुद्धौ स्वर्गशब्दार्थो मिथोन्तस्तत्किलानयोः। स्थैर्यास्थैर्ये जाग्रतो द्वे अक्षीबक्षीवयोरिव॥ ७॥

svabuddhau svargashabdārtho mithontastatkilānayoḥ | sthairyāsthairye jāgrato dve akṣībakṣīvayoriva || 7 ||

In the realm of self-realization, the meaning of the word 'heaven' is understood differently by the two. In their steadfastness and unsteadiness, they are like the two eyes, one awake and the other asleep.

आत्म-ज्ञान के क्षेत्र में, 'स्वर्ग' शब्द का अर्थ दोनों के लिए अलग-अलग होता है। उनकी स्थिरता और अस्थिरता में, वे दो आँखों की तरह हैं, एक जाग्रत और दूसरी सोई हुई।

7.162.8

द्रवस्थितिमिता यद्वत्सरिद्वारिणि वीचयः। चितौ स्थितिमितास्तद्वच्चेतनात्सर्गवीचयः॥ ८॥

dravasthitimitā yadvatsaridvāriṇi vīcayaḥ | citau sthitimitāstadvaccetanātsargavīcayaḥ || 8 ||

Just as the waves are measured by the flow of water in a river, the fluctuations of consciousness are measured by the flow of thoughts.

जैसे नदी में पानी के प्रवाह से लहरों की माप होती है, वैसे ही चेतना के प्रवाह से विचारों की लहरों की माप होती है।

7.162.9

चिद्रूपं यन्न किंचित्तदिदं किंचिदवस्थितम्। भाति दृश्यमिवादृश्यमपि स्वप्नपुरेष्विव॥ ९॥

cidrūpaṃ yannakiñcittadidaṃ kiñcidavasthitam | bhāti dṛśyamivādṛśyamapi svapnapureṣviva || 9 ||

That which has no form of consciousness appears as something existing, like a dream that seems real but is not.

जो चेतना का रूप नहीं है, वह कुछ मौजूद होने की तरह प्रतीत होता है, जैसे स्वप्न जो वास्तविक लगता है लेकिन नहीं है।

7.162.10

चिच्छायेयं प्रकचति जगदित्यभिशब्दिता। नन्वमूर्तैव मूर्तेव द्रव्यच्छायेव वै तता॥ १०॥

cicchāyeyaṃ prakacati jagadityabhiśabditā | nanvamūrtaiva mūrteva dravyacchāyeva vai tatā || 10 ||

This shadow of consciousness is called the world, it shines forth. Indeed, it is formless, yet it appears as if it has form, like the shadow of a substance.

यह चेतना की छाया जगत् कहलाती है, यह प्रकट होती है। वास्तव में, यह निराकार है, लेकिन यह जैसे रूप वाला प्रतीत होता है, जैसे किसी वस्तु की छाया।

7.162.11

कायमात्रकमेवेदं भ्रान्तिमात्रमसन्मयम्। पिशाचविभ्रमालोकप्रायमायासनं दृढम्॥ ११॥

kāyamātrakamevedaṃ bhrāntimātramasanmayam | piśācavibhramālokaprāyamāyāsanaṃ dṛḍham || 11 ||

This body is merely an illusion, a delusion, and unreal. It is like the perception of a ghost, a firm and troublesome illusion.

यह शरीर केवल एक भ्रम है, एक भ्रांति और असत्य है। यह पिशाच की भ्रांति की तरह है, एक दृढ़ और परेशान करने वाला भ्रम।

7.162.12

मनोराज्यमिवासत्यं लोलं लम्बाम्बुबिन्दुवत्। द्वाभ्यामित्यनुभूतिभ्यां यदसत्तत्र कात्मता॥ १२॥

manorājyamivāsatyam lolaṃ lambāmbubinduvat | dvābhyāmityanubhūtibhyāṃ yadasattatra kātmatā || 12 ||

Like an unreal kingdom of the mind, it is unsteady, like a drop of water hanging from a blade of grass. Through the two experiences, what is unreal there is the self.

मन के एक असत्य राज्य की तरह, यह अस्थिर है, घास की पत्ती से लटके हुए पानी की बूंद की तरह। दो अनुभवों के माध्यम से, जो असत्य है वही स्वयं है।

7.162.13

विदार्यदारुरववत्तरङ्गानिलशब्दवत्। खे शब्दाः पवनस्फोटा भान्त्यर्था वासनोदयाः॥ १३॥

vidāryadāruravavattaraṅgānilśabdavat | khe śabdāḥ pavanasphoṭā bhāntyarthā vāsanodayāḥ || 13 ||

Like the sound of a splitting wood or the sound of the wind and waves, the sounds in the sky are like the bursting of air, appearing as objects due to impressions.

लकड़ी के फटने की आवाज या हवा और लहरों की आवाज की तरह, आकाश में आवाजें हवा के फटने की तरह हैं, जो संस्कारों के कारण वस्तुओं के रूप में प्रकट होती हैं।

7.162.14

सर्गादितः स्वपरिभा कचति स्वप्नशैलवत्। वस्तुतस्तु न शब्दोस्ति नार्थोऽस्ति न च दृश्यता॥ १४॥

sargāditaḥ svaparibhā kacati svapnaśailavat | vastutastu na śabdosthi nārtho'sti na ca dṛśyatā || 14 ||

From the beginning of creation, one's own illusion shines like a dream mountain. In reality, there is no sound, no object, and no visibility.

सृष्टि की शुरुआत से, अपनी भ्रांति स्वप्न के पर्वत की तरह चमकती है। वास्तव में, न आवाज है, न वस्तु है, और न दृश्यता है।

7.162.15

यदिदं चास्ति चाभाति तत्सर्वं परमार्थसत्। अन्यादृक्कारणाभावात्सर्गादावेव नोदितम्॥ १५॥

yadidaṃ cāsti cābhāti tatsarvaṃ paramārthasat | anyādṛkkāraṇābhāvātsargādāveva noditam || 15 ||

Whatever exists and appears here is all the ultimate reality. Due to the absence of any other cause, it is not created from the beginning.

जो कुछ भी यहाँ है और प्रकट होता है, वह सब परम वास्तविकता है। किसी अन्य कारण के अभाव में, यह शुरुआत से ही उत्पन्न नहीं हुआ है।

7.162.16

निरस्तशब्दभेदार्थमनिरस्ताखिलार्थकम्। शाम्यामि परिनिर्वामि व्योमैवास्मीति बुद्ध्यताम्॥ १६॥

nirastashabdabhedārthamanirastākhilārthakam | śāmyāmi parinirvāmi vyomaivāsmīti buddhyatām || 16 ||

I am the sky, free from the distinctions of words, yet encompassing all meanings. I am calm and liberated, realizing that I am the sky.

मैं शब्दों के भेदों से मुक्त हूँ, लेकिन सभी अर्थों को समेटे हुए हूँ। मैं शान्त और मुक्त हूँ, और यह जानता हूँ कि मैं आकाश हूँ।

7.162.17

त्यज्यतामात्मविश्रान्त्या शुद्धबोधैकरूपया । जीवेऽजवं जवीभावस्त्वसदुत्थित आत्मना ॥ १७ ॥

tyajyatāmātmaviśrāntyā śuddhabodhaikarūpayā | jīve'javaṃ javībhāvastvasadutthita ātmanā || 17 ||

Let go of the restlessness of the self through the pure awareness of oneness. In the living being, the state of restlessness arises from the unreal self.

अपने आप को एकरूप शुद्ध बोध के द्वारा विश्राम दें। जीव में, अशान्ति की स्थिति असत्य आत्मा से उत्पन्न होती है।

7.162.18

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः । आत्मात्मना न चेत्त्रातस्तदुपायोऽस्ति नेतरः ॥ १८ ॥

ātmaiva hyātmano bandhurātmaiva ripurātmanaḥ | ātmātmanā na cettrātastadupāyo'sti netaraḥ || 18 ||

The self is indeed the friend of the self, and the self is the enemy of the self. If the self is not protected by the self, there is no other means of protection.

आत्मा ही आत्मा का मित्र है, और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है। यदि आत्मा आत्मा द्वारा सुरक्षित नहीं है, तो कोई अन्य सुरक्षा का उपाय नहीं है।

7.162.19

तर तारुण्यमस्तीदं यावत्ते तावदम्बुधेः । ननु संसारनाम्नोऽस्माद्बुद्ध्या नावा विशुद्धया ॥ १९ ॥

tara tāruṇyamastīdaṃ yāvatte tāvadambudheḥ | nanu saṃsāranāmno'smādbuddhyā nāvā viśuddhayā || 19 ||

This youth is fleeting, as long as you have it, so long you have the ocean. Indeed, from this worldly existence, purify the boat with wisdom.

यह युवावस्था क्षणभंगुर है, जब तक यह है, तब तक तुम्हारे पास समुद्र है। वास्तव में, इस संसारिक अस्तित्व से, बुद्धि से नाव को शुद्ध करो।

7.162.20

अद्यैव कुरु यच्छ्रेयो वृद्धः सन्किं करिष्यसि । स्वगात्राण्यपि भाराय भवन्ति हि विपर्यये ॥ २० ॥

adyaiva kuru yacchreyo vṛddhaḥ saṅkiṃ kariṣyasi | svagātrāṇyapi bhārāya bhavanti hi viparyaye || 20 ||

Do today what is beneficial, for when you are old, what will you do? Even one's own body becomes a burden in adversity.

आज ही वह करो जो हितकारक है, क्योंकि जब तुम बूढ़े हो जाओगे, तब तुम क्या करोगे? विपरीत परिस्थितियों में अपना ही शरीर बोझ बन जाता है।

7.162.21

शैशवं वार्धकं ज्ञेयं तिर्यक्त्वं मृतिरेव च । तारुण्यमेव जीवस्य जीवितं तद्विवेकि चेत् ॥ २१ ॥

śaiśavaṃ vārdhakaṃ jñeyaṃ tirtyaktvaṃ mṛtireva ca | tāruṇyameva jīvasya jīvitaṃ tadviveki cet || 21 ||

Childhood, old age, and death are to be known as transient; youth is the life of the living being, if one is discerning.

बचपन, बुढ़ापा और मृत्यु अस्थायी हैं; युवावस्था जीवन का सार है, यदि कोई विवेकी है।

7.162.22

संसारमिममासाद्य विद्युतसंपातचञ्चलम् । सच्छास्त्रसाधुसंपर्कैः कर्दमात्सारमुद्धरेत् ॥ २२ ॥

saṃsāramimamāsādya vidyutasaṃpātacañcalam | saccāstrasādhusaṃparkaiḥ kardamātsāramuddharet || 22 ||

Having entered this world, which is as fickle as lightning, one should extract the essence from the mud of ignorance through contact with good scriptures and holy people.

इस विद्युत के समान चंचल संसार में प्रवेश करने पर, कोई अच्छे शास्त्रों और साधु लोगों के संपर्क से अज्ञान की मिट्टी से सार निकाले।

7.162.23

अहो बत नराः क्रूरा गतिः कैषां भविष्यति । कुर्वन्ति कर्दमोन्मग्ने नात्मन्यपि निजोदयम् ॥ २३ ॥

aho bata narāḥ krūrā gatiḥ kaiṣāṃ bhaviṣyati | kurvanti kardamounmagne nātmanyapi nijodayam || 23 ||

Alas, how cruel are these people! What will be their fate? They do not even strive for their own upliftment while being immersed in the mud of ignorance.

हाय, ये लोग कितने क्रूर हैं! इनका क्या भविष्य होगा? वे अज्ञान की मिट्टी में डूबे हुए अपने उद्धार के लिए भी प्रयास नहीं करते।

7.162.24

यथा मृन्मयवेतालसभा ग्राम्यस्य भङ्गदा । यथा भूतार्थविज्ञानान्मृन्मय्येव न भङ्गदा ॥ २४ ॥

yathā mṛnmayavetālasabhā grāmyasya bhaṅgadā | yathā bhūtārthavijñānānmṛnmayyeva na bhaṅgadā || 24 ||

Just as a clay demon frightens a villager, but with the knowledge of reality, it is not frightening.

जैसे एक मिट्टी का भूत गाँव के लोगों को डराता है, लेकिन वास्तविकता के ज्ञान से, यह डराने वाला नहीं होता।

7.162.25

तथा ब्रह्ममयी दृश्यलक्ष्मीरज्ञस्य भङ्गदा । यथा भूतार्थविज्ञाने ब्रह्मैवास्ते न भङ्गदा ॥ २५ ॥

tathā brahmamayī dṛśyalakṣmīrajñasya bhaṅgadā | yathā bhūtārthavijñāne brahmaivāste na bhaṅgadā || 25 ||

Similarly, the visible world, which is pervaded by Brahman, is frightening to the ignorant, but with the knowledge of reality, only Brahman remains, not frightening.

इसी तरह, ब्रह्म से व्याप्त दृश्य संसार अज्ञानी के लिए डरावना है, लेकिन वास्तविकता के ज्ञान से, केवल ब्रह्म ही रहता है, जो डराने वाला नहीं होता।

7.162.26

शाम्यत्यशान्तमेवेदं स्थितमेव विलीयते । दृश्यं तत्त्वपरिज्ञानाद्दृश्यमानं न दृश्यते ॥ २६ ॥

śāmyaty aśāntam eve daṃ sthitam eva vilīyate | dṛśyaṃ tattvaparijñānād dṛśyamānaṃ na dṛśyate || 26 ||

The unquiet becomes quiet, the established dissolves; the seen, through the knowledge of reality, is not seen.

अशान्त शान्त हो जाता है, स्थित विलीन हो जाता है; दृश्य तत्त्व के ज्ञान से दृश्यमान नहीं दिखाई देता।

7.162.27

स्फुटानुभवनस्यापि स्वप्नकाले निजे यथा । परिज्ञानादसत्यत्वमेव सत्यपदं गता ॥ २७ ॥

sphuṭānubhavanasya api svapnakāle nije yathā | parijñānād asatyatvam eva satyapadaṃ gatā || 27 ||

Even the clear experience in a dream is known to be unreal upon waking; similarly, the perceived world is known to be unreal upon realizing the truth.

स्वप्न में स्पष्ट अनुभव भी जागने पर असत्य हो जाता है; इसी प्रकार, दृश्य जगत तत्त्व के ज्ञान से असत्य हो जाता है।

7.162.28

तथानुभूयमानापि सर्गसंवेदनाम्बरे । चिन्मये तत्त्वविज्ञानाच्छून्यतैवावशिष्यते ॥ २८ ॥

tathānubhūyamānāpi sargasaṃvedanāmbare | cinmaye tattvavijñānāc chūnyataivāvaśiṣyate || 28 ||

Similarly, even the experienced creation in the realm of perception becomes void through the knowledge of reality.

इसी प्रकार, अनुभव की धारणा के क्षेत्र में सृष्टि का अनुभव भी तत्त्व के ज्ञान से शून्य हो जाता है।

7.162.29

जातिज्वरज्वलितजीवितजङ्गलेषु जीर्णानि वातहरिणाहरणक्रमेण । माद्यन्मनःपवनपातयुतान्यमूनि जित्वेन्द्रियाणि जयमेहि जहीहि जन्म ॥ २९ ॥

jātijvarajvalitajīvitajaṅgaleṣu jīrṇāni vātahariṇāharaṇakrameṇa | mādyanmanaḥpavanapātayutānyamūni jitvendriyāṇi jayamehi jahīhi janma || 29 ||

In the forest of life, burning with the fever of birth, the worn-out senses are carried away by the wind of the mind. Conquer the senses, achieve victory, and abandon birth.

जीवन के जंगल में, जन्म की ज्वर से जलते हुए, थके हुए इंद्रियाँ मन की हवा से उड़ जाती हैं। इंद्रियों पर विजय प्राप्त करो, जीतो, और जन्म को त्याग दो।

Chapter 163

7.163.1

श्रीराम उवाच । विनेन्द्रियजयेनेदं नाज्ञत्वमुपशाम्यति । तदिन्द्रियाणि जीयन्ते कथं कथय मे मुने ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | vinenendriyajayenedaṃ nājñatvamupaśāmyati | tadendriyāṇi jīyante kathaṃ kathaya me mune || 1 ||

Shri Rama said: Without the conquest of the senses, ignorance does not subside. Therefore, O sage, tell me how the senses are conquered.

श्री राम ने कहा: इन्द्रियों की जय के बिना अज्ञान शान्त नहीं होता | तो हे मुने, मुझे बताओ कि इन्द्रियाँ कैसे जीती जाती हैं।

7.163.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । न च प्रभूतभोगेषु न पुंस्त्वे न च जीविते । न चेन्द्रियजयोन्मुक्तौ दीपस्तनुदृशो यथा ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | na ca prabhūtabhogeṣu na puṃstve na ca jīvite | na cendriyajayonmuktau dīpastanudṛśo yathā || 2 ||

Vasistha said: Neither in abundant enjoyments, nor in manhood, nor in life itself, is there liberation without the conquest of the senses, just as a lamp is not visible to the blind.

वसिष्ठ ने कहा: न तो भोगों में, न पुरुषार्थ में, और न ही जीवन में, इन्द्रियों की जय के बिना मुक्ति नहीं है, जैसे अंधे को दीपक दिखाई नहीं देता।

7.163.3

तदिन्द्रियजये युक्तिमिमामविकलां शृणु । सिद्धिमेति स्वयत्नेन सुखेन तनुरेतया ॥ ३ ॥

tadindriyajaye yuktimimāmavikalāṃ śṛṇu | siddhimeti svayatnena sukhena tanuretayā || 3 ||

Therefore, listen to this flawless method for the conquest of the senses. The body attains perfection through one's own effort and with ease through this method.

इसलिए, इन्द्रियों की जय के लिए इस निर्दोष विधि को सुनो। अपने प्रयास और सुख से शरीर इस विधि द्वारा सिद्धि प्राप्त करता है।

7.163.4

चिन्मात्रं पुरुषं विद्धि चेतनाज्जीवनामकम् । यच्चेतति स जीवोऽन्तस्तन्मयो भवति क्षणात् ॥ ४ ॥

cinmātraṃ puruṣaṃ viddhi cetanājjīvanāmakam | yaccheti sa jīvo'ntastanmayo bhavati kṣaṇāt || 4 ||

Know the pure consciousness as the person, known as the living being because of consciousness. That which is conscious is the inner self, and it becomes one with it instantly.

पुरुष को शुद्ध चेतना के रूप में जानो, जो चेतना के कारण जीवन कहलाता है। जो चेतन है, वह आत्मा है, और वह तत्क्षण उसके साथ एक हो जाता है।

7.163.5

संवित्प्रयत्नसंबोधनिशिताङ्कुशकर्षणैः । मनोमतङ्गजं मत्तं जित्वा जयति नान्यथा ॥ ५ ॥

saṃvitprayatnasambodhaniśitāṅkuśakarṣaṇaiḥ | manomataṅgajaṃ mattaṃ jitvā jayati nānyathā || 5 ||

By the sharp goad of the awakening of the effort of consciousness, the intoxicated elephant of the mind is conquered, and thus one attains victory, not otherwise.

चेतना के प्रयास के जागरूक होने की तीक्ष्ण अंकुश से मदमस्त हाथी के समान मन को जीतकर ही विजय प्राप्त होती है, अन्यथा नहीं।

7.163.6

चित्तमिन्द्रियसेनाया नायकं तज्जयाज्जयः । उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मावृतैव भूः ॥ ६ ॥

cittamindriyasenāyā nāyakaṃ tajjayājjayaḥ | upānadgūḍhapādasya nanu carmāvṛtaiva bhūḥ || 6 ||

The mind is the leader of the army of senses; victory over it is the ultimate victory. For one whose feet are covered with shoes, the earth is as if covered with leather.

मन इन्द्रियों की सेना का नायक है; उस पर विजय पाना ही सच्ची विजय है। जिसके पैर जूते से ढंके होते हैं, उसके लिए पृथ्वी चमड़े से ढंकी हुई है।

7.163.7

संविदं संविदाकाशे संरोप्य हृदि तिष्ठतः । स्वयमेव मनः शाम्येन्नीहार इव शारदः ॥ ७ ॥

saṃvidaṃ saṃvidākāśe saṃropya hṛdi tiṣṭhataḥ | svayameva manaḥ śāmyennīhāra iva śāradaḥ || 7 ||

By placing consciousness in the space of consciousness and remaining in the heart, the mind itself becomes calm, like the autumnal mist.

चेतना को चेतना के आकाश में रखकर और हृदय में स्थित रहकर, मन स्वयं शांत हो जाता है, जैसे शरद ऋतु की धुंध।

7.163.8

स्वसंविद्यत्नसंरोधाद्यथा चेतः प्रशाम्यति । न तथाङ्ग तपस्तीर्थविद्यायज्ञक्रियागणैः ॥ ८ ॥

svasaṃvidyatnasamrodhādyathā cetaḥ praśāmyati | na tathāṅga tapastīrthavidyāyajñakriyāgaṇaiḥ || 8 ||

As the mind becomes calm through the effort of self-awareness, it does not become so through austerities, pilgrimages, knowledge, sacrifices, or rituals.

जैसे मन स्व-चेतना के प्रयास से शांत होता है, वैसे तप, तीर्थ, विद्या, यज्ञ या अनुष्ठानों से नहीं होता।

7.163.9

यच्च संवेद्यते किंचित्तत्तत्संविदि संविदा । नूनं विस्मार्यते यत्नाद्भोगानामिति तज्जयः ॥ ९ ॥

yacca saṃvedyate kiṃcittattatsaṃvidi saṃvidā | nūnaṃ vismāryate yatnādbhogānāmiti tajjayaḥ || 9 ||

Whatever is experienced is experienced in consciousness by consciousness. Indeed, it is forgotten due to the effort of enjoyments; that is the victory.

जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, वह चेतना द्वारा चेतना में अनुभव किया जाता है। निश्चय ही, भोगों के प्रयास से यह भूल जाता है; यही विजय है।

7.163.10

स्वसंवेदनयत्नेन विषयामिषतोऽनिशम् । किंचित्संरोधिता संवित्तत्प्राप्तं वैबुधं पदम् ॥ १० ॥

svasaṃvedanayatnena viṣayāmiṣato'niśam | kiṃcitsaṃrodhitā saṃvittatprāptaṃ vaibudhaṃ padam || 10 ||

By the effort of self-awareness, constantly restraining from the bait of sense objects, the consciousness attains the divine state.

स्व-चेतना के प्रयास से, निरंतर इन्द्रियों के विषयों से बचकर, चेतना दिव्य अवस्था प्राप्त करती है।

7.163.11

स्वधर्मव्यवहारेण यदायाति तदेव मे । रोचते नान्यदित्येव पदे वज्रदृढीभव ॥ ११ ॥

svadharmavyavahāreṇa yadāyāti tadeva me| rocate nānyadityeva pade vajradṛḍhībhava || 11 ||

When one follows their own dharma, that alone pleases me; nothing else does. Be firm in that path like a thunderbolt.

जब कोई अपने धर्म का पालन करता है, तब वही मुझे पसंद आता है; और कुछ नहीं। उस मार्ग पर वज्र की तरह दृढ़ रहो।

7.163.12

संवित्प्रवृत्तिमर्थेषु विरुद्धेषु विवर्जयन्। अर्जयञ्छमसंतोषौ यः स्थितः स जितेन्द्रियः ॥ १२ ॥

saṃvitpravṛttimartheṣu viruddheṣu vivarjayan| arjayañchamasantoṣau yaḥ sthitaḥ sa jitendriyaḥ || 12 ||

One who avoids conflicting pursuits in material matters and attains peace and contentment is said to have conquered the senses.

जो भौतिक वस्तुओं में विरोधी प्रवृत्तियों को त्याग देता है और शांति और संतोष प्राप्त करता है, वह इंद्रियों को जीत चुका है।

7.163.13

संविद्रसिकतास्वन्तस्तथा नीरसतासु च। यस्य नोद्वेगमायाति मनस्तस्योपशाम्यति ॥ १३ ॥

saṃvidrasikatāsvantastathā nīrasatāsu ca| yasya nodvegamāyāti manastasyopaśāmyati || 13 ||

One whose mind is not disturbed by the presence or absence of sensory pleasures, their mind becomes calm.

जिसका मन इंद्रिय सुखों की उपस्थिति या अनुपस्थिति से विचलित नहीं होता, उसका मन शांत हो जाता है।

7.163.14

संवित्प्रयत्नसंरोधान्मनः स्वायनमुज्झति। चेतश्चपलतोन्मुक्तं विवेकमनुधावति ॥ १४ ॥

saṃvitprayatnasamrodhānmanaḥ svāyanamujjhati| cetaścapalatonmuktaṃ vivekamanudhāvati || 14 ||

Through the restraint of conscious effort, the mind abandons its own nature and, freed from restlessness, follows discrimination.

चेतना के प्रयास के द्वारा नियंत्रण से, मन अपनी प्रकृति को त्याग देता है और चंचलता से मुक्त होकर विवेक का अनुसरण करता है।

7.163.15

विवेकवानुदारात्मा विजितेन्द्रिय उच्यते। वासनावीचिवेगेन भवाब्धौ न स मुह्यते ॥ १५ ॥

vivekavānudārātmā vijitendriya ucyate| vāsanāvīcivegena bhavābdhau na sa muhyate || 15 ||

One who is endowed with discrimination and has a noble soul is said to have conquered the senses. Such a person is not deluded by the waves of desires in the ocean of existence.

जो विवेक से युक्त है और उदार आत्मा वाला है, वह इंद्रियों को जीत चुका है। ऐसा व्यक्ति अस्तित्व के सागर में इच्छाओं की लहरों से भ्रमित नहीं होता।

7.163.16

साधुसंपर्कसच्छास्त्रसमालोकनतोऽनिशम्। जितेन्द्रियो यथावस्तु जगत्सत्यं प्रपश्यति ॥ १६ ॥

sādhusaṃparkasacchāstrasamālokanato'niśam | jitendriyo yathāvastu jagatsatyaṃ prapaśyati || 16 ||

By constantly associating with the wise and studying pure scriptures, one who has conquered the senses sees the world as it truly is.

सदा साधुओं के संपर्क में रहकर और शुद्ध शास्त्रों का अध्ययन करके, जिसने इन्द्रियों को जीत लिया है, वह जगत को उसके वास्तविक रूप में देखता है।

7.163.17

सत्यावलोकनाच्छान्तिमेति संसारसंभ्रमः। मरावि व जलज्ञानं मिथ्यापतनदुःखदम् ॥ १७ ॥

satyāvalokanācchāntimeti saṃsārasaṃbhramaḥ | marāviva jalajñānaṃ mithyāpatanaduḥkhadam || 17 ||

By realizing the truth, the confusion of worldly existence comes to an end, just as the illusion of water in a mirage leads to suffering from a false fall.

सत्य को देखने से संसार का भ्रम शान्त हो जाता है, जैसे मृगतृष्णा में जल का ज्ञान मिथ्या पतन के दुःख का कारण बनता है।

7.163.18

अचेत्यमेव चिन्मात्रमिदं जगदिति स्थितम्। इत्येव सत्यबोधस्य बन्धमोक्षदृशौ कुतः ॥ १८ ॥

acetyameva cinmātramidaṃ jagaditi sthitam | ityeva satyabodhasya bandhamokṣadṛśau kutaḥ || 18 ||

This world is merely consciousness, non-material. Thus, where is the perception of bondage and liberation in true knowledge?

यह जगत केवल चेतना है, अचेतन नहीं। फिर सत्य बोध में बन्धन और मोक्ष की दृष्टि कहाँ से आती है?

7.163.19

अनाकारं यथा वारि क्षीणं वहति नो पुनः। अकारणं तथा दृश्यं ज्ञानच्छिन्नं न रोहति ॥ १९ ॥

anākāraṃ yathā vāri kṣīṇaṃ vahati no punaḥ | akāraṇaṃ tathā dṛśyaṃ jñānacchinnaṃ na rohati || 19 ||

Just as water, which is formless, does not carry the exhausted form again, similarly, the perceived world, which is without cause, does not grow when severed by knowledge.

जैसे जल, जो निराकार है, खत्म होने के बाद फिर से रूप नहीं धारण करता, वैसे ही ज्ञान से कटे हुए अकारण दृश्य जगत फिर से नहीं बढ़ता।

7.163.20

वेदनं व्योममात्रं त्वमहमित्यादिरूपधृक्। वर्जयित्वैतदन्यत्स्यादहमित्यादिकं जगत् ॥ २० ॥

vedanaṃ vyomamātraṃ tvamahamityādirūpadhṛk | varjayitvaitadanyatsyādahamityādikaṃ jagat || 20 ||

The feeling of 'I' and 'you' is merely space. By abandoning this, the world becomes 'I' and so on.

मैं और तू की भावना केवल आकाश है। इसे छोड़कर, जगत 'मैं' और आगे बन जाता है।

7.163.21

अविद्यामात्रमेवेदमहमित्यादिकं जगत् चिद्व्योम्न्येव स्थितं शान्तं शून्यमात्रशरीरकम् ॥ २१ ॥

avidyāmātramevedamahamityādikaṃ jagat cidvyomnyeva sthitaṃ śāntaṃ śūnyamātraśarīrakam || 21 ||

This entire universe, which is perceived as 'I' and so forth, is merely ignorance. It is situated in the pure consciousness, peaceful and having the form of mere emptiness.

यह सम्पूर्ण जगत, जिसे 'मैं' और आदि के रूप में देखा जाता है, केवल अज्ञान है। यह शान्त और शून्य रूप में चिद्व्योम (परम चेतना) में स्थित है।

7.163.22

इदं चिद्व्योम्नि चिच्छाया जगदित्येव भासते शून्यशून्यैव चिच्चासौ शून्या चेत्येव निश्चयः ॥ २२ ॥

idaṃ cidvyomni cicchāyā jagadityeva bhāsate śūnyaśūnyaiva ciccāsau śūnyā cetyeve niścayaḥ || 22 ||

This universe appears as a shadow of consciousness in the pure consciousness. It is indeed empty of emptiness, and consciousness is certainly empty.

यह जगत चिद्व्योम (परम चेतना) में चेतना की छाया के रूप में प्रकट होता है। यह शून्यता से शून्य है, और चेतना भी शून्य है।

7.163.23

स्वप्नदर्शनदृष्टान्तः केन नामात्र खण्ड्यते असन्मयोऽनुभूतश्च स्वानुभूतोऽप्यसन्मयः ॥ २३ ॥

svapnadarśanadṛṣṭāntaḥ kena nāmātra khaṇḍyate asanmayo'nubhūtaśca svānubhūto'pyasanmayaḥ || 23 ||

The example of dream perception cannot be refuted by mere names. The non-existent is experienced, and even the experience itself is non-existent.

स्वप्न दृष्टि का उदाहरण केवल नामों से खण्डित नहीं किया जा सकता। अस्तित्वहीन अनुभव किया जाता है, और अनुभव भी अस्तित्वहीन है।

7.163.24

सोऽङ्ग संवित्तिमात्रात्मा यद्यद्राज्यं महीयते नकर्तृकर्मकरणं रूपं तद्वज्जगच्चितेः ॥ २४ ॥

so'ṅga saṃvittimātrātmā yadyadrajyaṃ mahīyate nakartṛkarmakaraṇaṃ rūpaṃ tadvajjagaccitēḥ || 24 ||

That which is the essence of pure consciousness, whatever kingdom is considered great, is not the form of the doer, action, or instrument. It is like the form of the world in consciousness.

जो शुद्ध चेतना का सार है, जो भी राज्य महान माना जाता है, वह कर्ता, कर्म या करण का रूप नहीं है। यह चेतना में जगत के रूप के समान है।

7.163.25

अकर्तृकर्मकरणमहं चिद्घनमात्रकम् जगच्चेदमनिर्देश्यं स्वसंवेदनलक्षणम् ॥ २५ ॥

akartṛkarmakaraṇamahaṃ ciddhanamātrakam jagaccedamanirdeśyaṃ svasaṃvedanalakṣaṇam || 25 ||

I am not the doer, action, or instrument. I am the essence of pure consciousness. This world is indescribable, characterized by self-awareness.

मैं कर्ता, कर्म या करण नहीं हूँ। मैं शुद्ध चेतना का सार हूँ। यह जगत अवर्णनीय है, स्वयं के अनुभव से चिह्नित है।

7.163.26

यथा स्वप्नेषु मरणमनुभूतं न विद्यते । मरौ जलेच्छाऽविद्येयं विद्यमाना न विद्यते ॥ २६ ॥

yathā svapneṣu maraṇamanubhūtaṃ na vidyate | marau jalecchā'vidyeyaṃ vidyamānā na vidyate || 26 ||

Just as death experienced in dreams does not exist, the illusion of water in a mirage, though it appears to exist, does not actually exist.

जैसे सपने में अनुभव किया गया मरण वास्तव में नहीं होता, वैसे ही मृगतृष्णा में जल की इच्छा होने पर भी वास्तव में नहीं होती।

7.163.27

चिद्व्योम्ना काचकच्यं स्वं सर्गादौ व्योम्नि चेतितम् । जगदित्येव निर्मूलं काकतालीयवत्स्वयम् ॥ २७ ॥

cidvyomnā kācakacyaṃ svaṃ sargādau vyomni cetitam | jagadityeva nirmūlaṃ kākatālīyavatsvayam || 27 ||

By the sky of consciousness, the reflection of one's own self is perceived in the sky at the beginning of creation. This world is indeed rootless, like the crow's beak.

चेतना के आकाश से, सृष्टि के आरंभ में आकाश में अपने स्वयं की प्रतिबिंब दिखाई देता है। यह जगत वास्तव में बेजड़ है, जैसे कौए की चोंच की तरह।

7.163.28

निर्मूलमेव भातीदमभातमपि भातवत् । तस्माद्यद्भासुरमिदं तत्तदेव पदं विदुः ॥ २८ ॥

nirmūlameva bhātīdamabhātamapi bhātavat | tasmādyadbhāsuramidaṃ tattadeva padaṃ viduḥ || 28 ||

This appears to be rootless, even though it is unreal, it appears real. Therefore, whatever shines here is known as that very state.

यह बेजड़ प्रतीत होता है, भले ही यह अवास्तविक हो, फिर भी यह वास्तविक प्रतीत होता है। इसलिए, जो भी यहाँ चमकता है, उसे उसी अवस्था के रूप में जाना जाता है।

7.163.29

जीवादिकचनं त्वत्र यद्भातीदं तदेव तत् । शून्यतैव भवेद्व्योम वार्येवावर्तवृत्तयः ॥ २९ ॥

jīvādikacanaṃ tvatra yadbhātīdam tadeva tat | śūnyataiva bhavedvyoma vāryevāvartavṛttayaḥ || 29 ||

Whatever appears here as the individual self and so on, that is indeed that. The sky becomes emptiness, just like the whirlpools in water.

जो भी यहाँ जीव (व्यक्ति) और आदि के रूप में प्रतीत होता है, वह वास्तव में वही है। आकाश शून्यता बन जाता है, जैसे पानी में भंवर।

7.163.30

यथावयविनो रूपमेकं सावयवं भवेत्। एकं जीवाद्यवयवं ब्रह्मानवयवं तथा ॥ ३० ॥

yathāvayavino rūpamekaṃ sāvayaṃ bhavet | ekaṃ jīvādyavayavaṃ brahmānavayavaṃ tathā || 30 ||

Just as the form of a composite object is one with parts, so too the individual self is one with parts, and Brahman is without parts.

जैसे एक संयुक्त वस्तु का रूप अपने भागों के साथ एक होता है, वैसे ही जीव (व्यक्ति) भी अपने भागों के साथ एक होता है, और ब्रह्म भागों के बिना होता है।

7.163.31

आभासमात्रं दृश्यात्म चिन्मात्रं शान्तमव्ययम्। स्थितमास्थाः किमेतस्मिन्स्वभावे स्वे विचार्यते ॥ ३१ ॥

ābhāsamātraṃ dṛśyātma cinmātraṃ śāntamavyayam | sthitamāsthāḥ kimetasmin sva bhāve sve vicāryate || 31 ||

The visible world is merely an appearance, while the pure consciousness is peaceful and imperishable. What is there to be considered in this inherent nature?

दृश्य जगत केवल एक आभास है, जबकि शुद्ध चेतना शान्त और अविनाशी है। इस स्वभाव में क्या विचारणीय है?

7.163.32

नाद्यन्तमन्तःकलनाः काश्चित्सन्ति परे पदे। तद्रूपमेवाविद्येयं नाविद्या त्विह विद्यते ॥ ३२ ॥

nādyantamantaḥkalanāḥ kāścitsanti pare pade | tadrūpamevāvidye yaṃ nāvidyā tviha vidyate || 32 ||

There are no beginnings or ends in the supreme state. Ignorance itself is of that form; there is no ignorance here.

परम अवस्था में न तो आदि है न अन्त। अज्ञान स्वयं उसी रूप का है; यहाँ कोई अज्ञान नहीं है।

7.163.33

जीवः स्वप्नाद्विशञ्जाग्रज्जाग्रतः स्वप्नमाविशन्। प्रबुद्धो वास्त्वबुद्धो वाप्येकरूपतया स्थितः ॥ ३३ ॥

jīvaḥ svapnādviśaṅjāgrat jjāgrataḥ svapnamāviśan | prabuddho vāstvabuddho vāpyekarūpatayā sthitaḥ || 33 ||

The individual soul, awakening from sleep, enters the dream state from the waking state. Whether awake or asleep, it remains in the same form.

जीवात्मा, नींद से जाग्रत अवस्था में आकर, जाग्रत अवस्था से स्वप्न अवस्था में प्रवेश करता है। चाहे जाग्रत हो या सोया हुआ, वह एक ही रूप में स्थित रहता है।

7.163.34

स्थिते सुषुप्ततुर्ये द्वे सदा स्वप्नेऽथ जाग्रति। जाग्रत्स्वप्नावेकमेव तुर्यं वेत्ति तु बुद्धधीः ॥ ३४ ॥

sthite suṣuptatur ye dve sadā svapne'tha jāgrati | jāgratsvapnāvekameva turyaṃ vetti tu buddhadhīḥ || 34 ||

In the states of deep sleep and the fourth state, always in dream and then in the waking state, the wise one knows the waking and dream states as one.

सुषुप्ति और तुरीय अवस्था में स्थित, सदा स्वप्न और फिर जाग्रत अवस्था में, बुद्धिमान व्यक्ति जाग्रत और स्वप्न अवस्थाओं को एक ही मानता है।

7.163.35

जाग्रत्स्वप्नः सुषुप्तं च सर्वं तुर्यं प्रबोधिनः । नाविद्या विद्यते तस्य द्वयस्थोऽप्येव सोऽद्वयः ॥ ३५ ॥

jāgratsvapnaḥ suṣuptaṃ ca sarvaṃ turyaṃ prabodhinaḥ | nāvidyā vidyate tasya dvayastho'pyeva so'dvayaḥ || 35 ||

The waking, dream, and deep sleep states are all the fourth state for the awakened one. There is no ignorance for him, even though he is in duality, he is non-dual.

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाएँ जाग्रत के लिए सभी चौथी अवस्था हैं। उसके लिए कोई अज्ञान नहीं है, भले ही वह द्वैत में हो, वह अद्वैत है।

7.163.36

द्वैतमद्वैतमित्येतदहंत्वमिदमित्यपि । निरविद्यस्य कलना कुतः काप्यम्बरं कुतः ॥ ३६ ॥

dvaitamadvaitamityetadahaṃtvamidamityapi | niravidyasya kalanā kutaḥ kāpyambaraṃ kutaḥ || 36 ||

Duality and non-duality, 'I', 'you', and 'this' are all mere imaginations of the ignorant. Where is the covering of ignorance?

द्वैत और अद्वैत, 'मैं', 'तू', और 'यह' सब अज्ञानी की कल्पनाएँ हैं। अज्ञान का आवरण कहाँ है?

7.163.37

द्वैताद्वैतसमुद्भेदैर्वाक्यसंदर्भविभ्रमैः । क्रीडन्त्यबुद्धाः शिशवो बोधवृद्धा हसन्ति तान् ॥ ३७ ॥

dvaitādvaitasamudbhedairvākyasaṃdarbhavibhramaiḥ | krīḍantyabuddhāḥ śiśavo bodhavṛddhā hasanti tān || 37 ||

Those who are ignorant play with the confusions arising from the distinctions of duality and non-duality, and the contexts of statements. The wise laugh at them.

जो लोग अज्ञानी हैं, वे द्वैत और अद्वैत के भेदों से उत्पन्न भ्रमों और वाक्यों के संदर्भों के साथ खेलते हैं। बुद्धिमान लोग उन पर हँसते हैं।

7.163.38

द्वैताद्वैतविवादेहा हृदयाकाशमञ्जरी । विनैतयेह नोदेति प्रबोधाकाशमार्जनम् ॥ ३८ ॥

dvaitādvaitavivādehā hṛdayākāśamañjarī | vinaietayeha nōdeti prabodhākāśamārjanam || 38 ||

The heart, which is the blossom of the sky of consciousness, does not arise without the debates on duality and non-duality.

हृदय, जो चेतना के आकाश का फूल है, द्वैत और अद्वैत के विवादों के बिना उत्पन्न नहीं होता।

7.163.39

सुहृद्भूत्वा विवादेन द्वैताद्वैतविचारणा । कृता हृदयगेहेऽन्तरविद्याभस्ममार्जनी ॥ ३९ ॥

suhṛdbhūtvā vivādena dvaitādvaitavicāraṇā | kṛtā hṛdayagehe'ntaravidyābhasmamārjanī || 39 ||

Becoming a friend through debate, the examination of duality and non-duality is done, which cleanses the ashes of ignorance within the heart.

विवाद के द्वारा मित्र बनकर, द्वैत और अद्वैत की परीक्षा की जाती है, जो हृदय के भीतर अज्ञान की राख को साफ करती है।

7.163.40

तच्चित्तास्तद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च तन्नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ ४० ॥

taccittāstadgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam | kathayantaśca tannityaṃ tuṣyanti ca ramanti ca || 40 ||

Those whose minds are focused on that and whose vital energies are directed towards it, enlighten each other, always speaking about it, and are satisfied and delighted.

जिनके मन उस पर केंद्रित हैं और जिनकी प्राण शक्ति उसी ओर है, वे एक-दूसरे को बोध करते हैं, हमेशा उसके बारे में बात करते हैं, और संतुष्ट और प्रसन्न होते हैं।

7.163.41

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। जायते बुद्धियोगोऽसौ येन ते यान्ति तत्पदम् ॥ ४१ ॥

teṣāṃ satatayuktānāṃ bhajatāṃ prītipūrvakam | jāyate buddhiyogo'sau yena te yānti tatpadam || 41 ||

To those who are constantly devoted and worship with love, there arises that yoga of wisdom by which they attain the supreme state.

जिनके लिए निरंतर भक्ति और प्रेम से पूजा की जाती है, उन्हें वह बुद्धियोग प्राप्त होता है जिससे वे परम पद प्राप्त करते हैं।

7.163.42

किलोपकुरुते यत्नात्तृणमात्रावगोपने। कथं सिध्यत्ययत्नेन त्रैलोक्यगणगोपनम् ॥ ४२ ॥

kilopakurute yatnāttṛṇamātrāvagopane | kathaṃ siddhyatyayatnena trailokyagaṇagopanam || 42 ||

If one struggles to protect even a small blade of grass, how can one protect the entire universe without effort?

अगर कोई एक छोटे से घास के तिनके को बचाने के लिए प्रयास करता है, तो बिना प्रयास के कैसे सारा ब्रह्मांड बचाया जा सकता है?

7.163.43

अध्यात्मव्यसनोन्मुक्तं ततं हृत्स्थाऽधमाऽप्रभु। उपहासास्पदं यस्या जगदप्युत्तमस्थितेः ॥ ४३ ॥

adhyātmavyasanonmuktaṃ tataṃ hṛtsthā'dhama'prabhu | upahāsāspadaṃ yasyā jagadapyuttamasthiteḥ || 43 ||

One who is free from spiritual afflictions, steadfast in the heart, humble, and not seeking power, is a laughingstock to the world, even if situated in the highest position.

जो आध्यात्मिक व्यथाओं से मुक्त है, हृदय में स्थिर है, विनम्र है और शक्ति की इच्छा नहीं रखता, वह दुनिया के लिए हास्यास्पद है, भले ही वह सबसे उच्च स्थान पर हो।

7.163.44

किं नामेदं किल सुखं यद्राज्यादिमनोऽङ्कुरम्। तत्त्वज्ञानैकविश्रान्तौ देवराजपदं तृणम् ॥ ४४ ॥

kiṃ nāmedaṃ kil sukhaṃ yadrājyādimanoṅkuram | tattvajñānaikaviśrāntau devarājapadaṃ tṛṇam || 44 ||

What is this happiness that is like a sprout of desire for kingship and wealth? In the rest of the knowledge of the truth, the position of the king of gods is like a blade of grass.

यह सुख क्या है जो राज्य और धन की इच्छा के समान एक अंकुर है? सत्य के ज्ञान में विश्राम करने पर, देवराज का पद एक घास के तिनके के समान है।

7.163.45

सुप्ताः प्रबुद्धाः पश्यन्ति दृश्यं दृश्ये रता यथा । तथा दृश्येऽरताः शान्ताः सन्तः पश्यन्ति तत्पदम् ॥ ४५ ॥

suptāḥ prabuddhāḥ paśyanti dṛśyaṃ dṛśye ratā yathā | tathā dṛśye'ratāḥ śāntāḥ santaḥ paśyanti tatpadam || 45 ||

Just as those who are awake see the visible world, those who are detached and peaceful see the supreme state.

जैसे जाग्रत लोग दृश्य जगत को देखते हैं, वैसे ही विरक्त और शांत लोग परम पद को देखते हैं।

7.163.46

विना यत्नभरेणेदं न कदाचन सिद्ध्यति । महतोऽभ्यासवृक्षस्य फलं विद्धि परं पदम् ॥ ४६ ॥

vinā yatnabhareṇedaṃ na kadācana siddhyati | mahato'bhyāsavṛkṣasya phalaṃ viddhi paraṃ padam || 46 ||

Without great effort, this cannot be accomplished at any time. Know the fruit of the great tree of practice to be the supreme goal.

बिना बहुत प्रयास के यह कभी भी सिद्ध नहीं होता है | महान अभ्यास के वृक्ष का फल परम पद समझो |

7.163.47

इदं बहूक्तमेतेन किमेतेनेति दुर्मतिः । न ग्राह्यैतावताप्युक्ते नादत्ते नेदमज्ञधीः ॥ ४७ ॥

idaṃ bahūktametena kimetene'ti durbmatiḥ | na grāhyaetāvatāpyukte nādatte nedamajñadhīḥ || 47 ||

This has been said many times, yet the foolish one asks, 'What is this?' It should not be accepted even if it is said so many times; the ignorant one does not understand this.

यह बहुत बार कहा गया है, फिर भी मूर्ख पूछता है, 'यह क्या है?' यह तब भी स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए जब इतनी बार कहा जाता है; अज्ञानी इसे नहीं समझता |

7.163.48

भूयोभूयः परावृत्त्या चिरमास्वाद्यते यदि । श्रूयते कथ्यते चेदं तज्ज्ञेनाज्ञेन भूयते ॥ ४८ ॥

bhūyobhūyaḥ parāvṛttyā ciramāsvādyate yadi | śrūyate kathyate cedaṃ tajjñenājñena bhūyate || 48 ||

If this is repeatedly heard and spoken about with great attention, it is enjoyed for a long time. The wise and the ignorant both benefit from it.

यदि यह बार-बार बहुत ध्यान से सुना और कहा जाता है, तो यह लंबे समय तक आनंदित किया जाता है | ज्ञानी और अज्ञानी दोनों इससे लाभ उठाते हैं |

7.163.49

यस्त्वेकवारमालोक्य दृष्टमित्येव संत्यजेत् । इदं स नाम शास्त्रेभ्यो भस्माप्याप्नोति नाधमः ॥ ४९ ॥

yastvekavāramālokya dṛṣṭamityeva saṃtyajet | idaṃ sa nāma śāstrebhyo bhasmāpyāpnoti nādhamaḥ || 49 ||

One who, after seeing this even once, abandons it thinking it has been seen, that lowest one does not even attain ashes from the scriptures.

जो इसे एक बार देखकर भी यह सोचकर छोड़ देता है कि यह देखा जा चुका है, वह निकृष्टतम व्यक्ति शास्त्रों से राख भी नहीं प्राप्त करता |

7.163.50

इदमुत्तममाख्यानमध्येयं वेदवत्सदा । व्याख्येयं पूजनीयं च पुरुषार्थफलप्रदम् ॥ ५० ॥

idamuttamamākhyānamadhyeyaṃ vedavatsadā | vyākhyeyaṃ pūjanīyaṃ ca puruṣārthaphalapradam || 50 ||

This supreme narrative should always be studied like the Vedas. It should be explained, worshipped, and it bestows the fruit of human goals.

यह उत्तम आख्यान हमेशा वेदों की तरह अध्ययन किया जाना चाहिए | इसे समझाया जाना चाहिए, पूजा की जानी चाहिए, और यह मनुष्य के लक्ष्यों का फल प्रदान करता है |

7.163.51

यदस्मात्प्राप्यते शास्त्रात्तत्तद्वेदादवाप्यते । अस्मिन्ज्ञाते क्रिया ज्ञानं द्वयं याति पवित्रताम् ॥ ५१ ॥

yadasmātprāpyate śāstrāttattadvedādavāpyate | asminjñāte kriyā jñānaṃ dvayaṃ yāti pavitratām || 51 ||

Whatever is obtained from this scripture, that is obtained from the Vedas. When this is known, both action and knowledge attain purity.

जो कुछ इस शास्त्र से प्राप्त होता है, वह वेदों से प्राप्त होता है। इसके ज्ञान से क्रिया और ज्ञान दोनों पवित्र हो जाते हैं।

7.163.52

वेदान्ततर्कसिद्धान्तस्त्वस्मिन्ज्ञाते च बुध्यते । इदमुत्तममाख्यानं व्याख्यातं शास्त्रदृष्टिषु ॥ ५२ ॥

vedāntatarkasiddhāntastvasminjñāte ca budhyate | idamuttamamākhyānaṃ vyākhyātaṃ śāstradṛṣṭiṣu || 52 ||

The doctrine established by Vedanta and logic is understood when this is known. This supreme narrative has been explained in the scriptures.

वेदान्त और तर्क द्वारा सिद्ध सिद्धांत इसके ज्ञान से समझ में आता है। यह उत्तम आख्यान शास्त्रों में व्याख्यायित किया गया है।

7.163.53

कारुण्याद्भवतामेतदहं वच्मि न मायया । भवन्तस्त्ववगच्छन्ति मायामेतद्विचार्यताम् ॥ ५३ ॥

kāruṇyādbhavatāmetadahaṃ vacmi na māyayā | bhavantastvavagacchanti māyāmetadvicāryatām || 53 ||

Out of compassion, I speak this to you, not out of deceit. You should understand this, and consider it carefully.

दया से, मैं यह आपसे कहता हूँ, धोखे से नहीं। आपको इसे समझना चाहिए और इस पर विचार करना चाहिए।

7.163.54

अस्माच्छास्त्रवराद्बोधा जायन्ते ये विचारितात् । लवणैर्व्यञ्जनानीव भान्ति शास्त्रान्तराणि तैः ॥ ५४ ॥

asmācchāstravarādvodhā jāyante ye vicāritāt | lavaṇairvyañjanānīva bhānti śāstrāntarāṇi taiḥ || 54 ||

From this excellent scripture, wise ones are born who, through contemplation, illuminate other scriptures like salt enhances the taste of dishes.

इस उत्तम शास्त्र से विचार करने वाले बुद्धिमान लोग उत्पन्न होते हैं, जो अन्य शास्त्रों को नमक की तरह स्वादिष्ट बनाते हैं।

7.163.55

अनार्यमिदमाख्यानमित्यनादृत्य दृश्यधीः । मा भवंत्वात्महन्तारो भवन्तो भवभागिनः ॥ ५५ ॥

anāryamidamākhyānamityanādṛtya dṛśyadhīḥ | mā bhavantvātmahantāro bhavanto bhavabhāginaḥ || 55 ||

Do not disregard this narrative as non-Aryan, for it is visible wisdom. Do not be self-destructive, for you are partakers of existence.

इस आख्यान को अनार्य मानकर अनदेखा न करें, क्योंकि यह दृश्य बुद्धि है। आत्महन्ता न बनें, क्योंकि आप अस्तित्व के भागी हैं।

7.163.56

तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति । यथा भवन्तो विविचारवन्तस्तथानिशं मा भवताज्ञताप्यै ॥ ५६ ॥

tātasya kūpo'yamiti bruvāṇāḥ kṣāraṃ jalaṃ kāpuruṣāḥ pibanti | yathā bhavanto vivicāravantastathāniśaṃ mā bhavatājñatāptyai || 56 ||

Those who say, 'This well belongs to my father,' drink the salty water, being of low intellect. Just as you are discerning, do not be afflicted by ignorance.

जो कहते हैं, 'यह कुआँ मेरे पिता का है,' वे मूर्ख लोग नमकीन पानी पीते हैं। जैसे आप समझदार हैं, वैसे ही कृपया अज्ञान से पीड़ित न हों।

Chapter 164

7.164.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । जीवाणवो जगत्यन्तश्चिदादित्यांशुमण्डले । यत्र तेऽवयवास्तुल्यास्तेनानवयवात्मता ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | jīvāṇavo jagatyantaścidādityāṃśumaṇḍale | yatra te'vayavāstulyāstenānavayavātmatā || 1 ||

Vasishtha said: The individual souls, being within the universe, are like the rays of the sun of consciousness. Where their parts are equal, there is the state of being without parts.

वसिष्ठ ने कहा: जीवात्माएँ, ब्रह्मांड के अंदर होने के कारण, चेतना के सूर्य की किरणों के समान हैं। जहाँ उनके अंग समान होते हैं, वहाँ अंगहीनता की स्थिति होती है।

7.164.2

सर्वं प्राप्य परं बोधं वस्तु स्वं रूपमुज्झति । पुनस्तदेकवाक्यत्वान्न किंचिद्वापरं भवेत् ॥ २ ॥

sarvaṃ prāpya paraṃ bodhaṃ vastu svaṃ rūpamujjhati | punastadekavākyatvānna kiṃcidvāparaṃ bhavet || 2 ||

Having attained the supreme knowledge, the entity abandons its own form. Again, due to the oneness of that knowledge, nothing else remains.

परम ज्ञान प्राप्त करने के बाद, वस्तु अपना रूप छोड़ देती है। फिर उस ज्ञान की एकता के कारण, कुछ और नहीं रहता।

7.164.3

सर्वास्वेवास्ववस्थासु तत्त्वज्ञविषयं तु तत् । परमेवामलं ब्रह्म नान्यत्किंचित्कदाचन ॥ ३ ॥

sarvāsvevāsvavasthāsu tattvajñaviṣayaṃ tu tat | paramevāmalaṃ brahma nānyatkiṃcitkadācana || 3 ||

In all states, the object of the knower of truth is that alone. It is the supreme, pure Brahman, and nothing else at any time.

सभी अवस्थाओं में, सत्य के ज्ञाता का विषय वही है। वह परम, निर्मल ब्रह्म है, और कभी कुछ और नहीं।

7.164.4

यच्चातत्त्वज्ञविषयं तज्जानाति स एव तत् । वयं तु विद्मो नाहं त्वं नातत्त्वज्ञं न वस्तु तत् ॥ ४ ॥

yaccātattvajñaviṣayaṃ tajjānāti sa eva tat | vayaṃ tu vidmo nāhaṃ tvaṃ nātattvajñaṃ na vastu tat || 4 ||

That which is the object of the knower of truth, he alone knows that. We know neither 'I' nor 'you', nor the knower of truth, nor that entity.

जो सत्य के ज्ञाता का विषय है, वही उसे जानता है। हम न 'मैं' को जानते हैं, न 'तुम' को, न सत्य के ज्ञाता को, न उस वस्तु को।

7.164.5

अयं सोहमयं चाज्ञः सत्योऽयमिति बुद्धयः । संभवन्ति न तत्त्वज्ञे क्व मेरौ मृगतृष्णिका ॥ ५ ॥

ayaṃ so'hamayaṃ cājñaḥ satyo'yamiti buddhayaḥ | saṃbhavanti na tattvajñe kva merau mṛgatṛṣṇikā || 5 ||

The thoughts 'This is I', 'This is ignorant', 'This is true' do not arise in the knower of truth. Where is the mirage in the mountain?

विचार 'यह मैं हूँ', 'यह अज्ञानी है', 'यह सत्य है' सत्य के ज्ञाता में उत्पन्न नहीं होते। पर्वत में मृगतृष्णा कहाँ है?

7.164.6

यथैकद्रव्यनिष्ठे हि चित्तेऽन्यद्रव्यसंविदः। न भवन्ति परे तद्वन्नान्यास्तिष्ठन्ति संविदः ॥ ६ ॥

yathaikadravyanishthe hi chitte'nyadravysamvidah| na bhavanti pare tadvannanyastishtanti samvidah || 6 ||

Just as in the mind that is fixed on one object, there are no perceptions of other objects, similarly, other perceptions do not exist in the supreme consciousness.

जैसे एक वस्तु पर स्थिर चित्त में दूसरी वस्तुओं की संवेदनाएँ नहीं होतीं, वैसे ही परम चेतना में दूसरी संवेदनाएँ नहीं रहतीं।

7.164.7

इदं नासीन्न चोत्पन्नं न चास्ति न भविष्यति। जगद्ब्रह्मैव सद्रूपमिदमित्थमवस्थितम् ॥ ७ ॥

idam nasinna chotpannam na chasti na bhavishyati| jagadbrahmaiva sadrupamidamithamavasthitam || 7 ||

This world was not, nor will it be born, nor does it exist, nor will it exist. The world is indeed the form of Brahman, thus it is established.

यह जगत नहीं था, न ही उत्पन्न हुआ, न ही है, न ही होगा। जगत वास्तव में ब्रह्म का रूप है, इस प्रकार यह स्थापित है।

7.164.8

चिन्नभः काचकच्यं च स्वात्मन्येवावतिष्ठते। जगदित्येव तत्तत्र तज्ज्ञानेनैव चेत्यते ॥ ८ ॥

chinnabhah kachakachyam cha svatmanyevavatishtate| jagadityeva tat tatra tajjnanenaiva chetyate || 8 ||

The reflection of consciousness in the mirror of the mind is established in the self. The world is known through that knowledge alone.

चेतना का प्रतिबिंब मन के दर्पण में आत्मा में ही स्थापित होता है। जगत उसी ज्ञान से जाना जाता है।

7.164.9

स्वप्नेषु कल्पनपुरेषु यथान्यदस्ति चिन्मात्रमच्छगगनं ननु वर्जयित्वा। नो किंचनापि न च रूपमरूपकेषु रूपं तथा जगति संप्रति जाग्रदाख्ये ॥ ९ ॥

svapneshu kalpanapureshu yathanyadasti chinmatramachchagaganam nanu varjayitva| no kinchanaapi na cha rupamarupakeshu rupam tatha jagati samprati jagradakhye || 9 ||

In dreams, in the imaginary cities, there is nothing other than pure consciousness, the clear sky, except for that. There is no form in the formless, and similarly, there is no form in the world that is currently awake.

स्वप्नों में, कल्पना के नगरों में, पूर्ण चेतना, स्वच्छ आकाश के अलावा कुछ भी नहीं है। निराकार में कोई रूप नहीं है, और इसी तरह, जाग्रत अवस्था में जगत में कोई रूप नहीं है।

7.164.10

पूर्वं किलोद्भवति किंचन नाम नेदं तच्चावभाति तदनादि खमेव चित्त्वात्। नो कारणं न सहकारि किलास्ति यत्र तस्मात्स्वयं भवति वस्त्विति केयमुक्तिः ॥ १० ॥

purvam kilodbhavati kinchana nam nedam tachchavabhati tadanadi kham eva chittvat| no karanam na sahakari kilasti yatra tasmatsvayam bhavati vastviti keyamuktih || 10 ||

Previously, something called 'this' does not arise. That which appears is beginningless, space itself, because it is consciousness. There is no cause, no co-factor, where it exists. Therefore, it exists by itself, this is the statement.

पहले, कुछ भी 'यह' कहलाने वाला उत्पन्न नहीं होता। जो प्रकट होता है, वह अनादि है, आकाश स्वयं है, क्योंकि वह चेतना है। जहाँ वह है, वहाँ कोई कारण नहीं है, कोई सहकारी नहीं है। इसलिए, यह अपने आप में अस्तित्व रखता है, यही कथन है।

7.164.11

तस्मात्स्वयं भवति नेह हि कश्चिदादौ ब्रह्मादयोऽज्ञविदिता न च नाम सन्ति। व्योमेदमाततमयं स इतः स्वयंभू रित्यादि चिद्गगनमेव चिता विभाति॥ ११॥

tasmātsvayaṃ bhavati neha hi kaścidādau brahmādayo'jñaviditā na ca nāma santi | vyomedaṃmātatamayaṃ sa itaḥ svayaṃbhū ritvādi cidgaganameva citā vibhāti || 11 ||

Therefore, it exists by itself; indeed, no one knows it at the beginning, nor do Brahma and others know it, nor does it have a name. This space is pervaded by That, which is self-existent. It shines as the pure consciousness in the sky.

इसलिए, यह अपने आप में है; वास्तव में, कोई भी इसे शुरू में नहीं जानता, न ही ब्रह्मा और अन्य इसे जानते हैं, न ही इसका कोई नाम है। यह अंतरिक्ष उससे परिपूर्ण है, जो स्वयंभू है। यह आकाश में शुद्ध चेतना के रूप में चमकता है।

Chapter 165

7.165.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । जाग्रत्स्वप्ने स्वप्न एव जाग्रत्त्वमनुगच्छति । स्वप्नजाग्रति जाग्रत्तु स्वप्नतामुपगच्छति ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | jāgratsvapne svapna eva jāgrattvamanugacchati | svapnajāgrati jāgrattu svapnatāmupagacchati || 1 ||

Vasishtha said: In the waking state, dreams follow the waking state; in the dream state, the waking state takes on the nature of dreams.

वसिष्ठ ने कहा: जाग्रत अवस्था में स्वप्न जाग्रत अवस्था का अनुगमन करता है; स्वप्न अवस्था में जाग्रत अवस्था स्वप्न की तरह हो जाती है।

7.165.2

स्वप्नो जाग्रत्प्रविशति जाग्रत्स्वप्नात्प्रबुध्यते । जाग्रत्स्वप्नं प्रविशति प्रबुद्धः स्वप्नजाग्रतः ॥ २ ॥

svapno jāgratpraviśati jāgratsvapnātprabudhyate | jāgratsvapnaṃ praviśati prabuddhaḥ svapnajāgrataḥ || 2 ||

The dream enters the waking state, and the waking state awakens from the dream. The awakened one enters the dream from the waking state.

स्वप्न जाग्रत अवस्था में प्रवेश करता है, और जाग्रत अवस्था स्वप्न से जागती है। जाग्रत अवस्था से स्वप्न में प्रवेश करने वाला जाग्रत होता है।

7.165.3

जाग्रतस्वप्नवता स्वप्नः स्वप्न इत्यभिधीयते । स्वप्नजाग्रद्वता जाग्रज्जाग्रदित्यभिधीयते ॥ ३ ॥

jāgratsvapnavatā svapnaḥ svapna ityabhidhīyate | svapnajāgradvatā jāgrat jāgradityabhidhīyate || 3 ||

The dream is called a dream because it is like the waking state. The waking state is called the waking state because it is like the dream state.

स्वप्न जाग्रत अवस्था के समान होने के कारण स्वप्न कहलाता है। जाग्रत अवस्था स्वप्न अवस्था के समान होने के कारण जाग्रत कहलाती है।

7.165.4

तज्जाग्रज्जाग्रतीवेह न तु स्वप्नः कदाचन । स्वप्ने स्वप्नो जाग्रदेव न तु जाग्रत्कदाचन ॥ ४ ॥

tajjāgrajjāgratīveha na tu svapnaḥ kadācana | svapne svapno jāgradeva na tu jāgratkadācana || 4 ||

Here, the waking state is indeed the waking state, never a dream. In the dream, the dream is indeed the waking state, never the waking state.

यहाँ, जाग्रत अवस्था वास्तव में जाग्रत अवस्था है, कभी स्वप्न नहीं। स्वप्न में, स्वप्न वास्तव में जाग्रत अवस्था है, कभी जाग्रत अवस्था नहीं।

7.165.5

लघुकालात्मकः स्वप्नः सर्वदैव हि जाग्रति । लघुकालात्मकं जाग्रत्स्वप्नकाले सदैव च ॥ ५ ॥

laghukālātmakaḥ svapnaḥ sarvadaiva hi jāgrati | laghukālātmakaṃ jāgratsvapnakāle sadaiva ca || 5 ||

The dream is always of short duration, yet it is always in the waking state. The waking state is always of short duration in the dream state.

स्वप्न हमेशा छोटे समय का होता है, लेकिन यह हमेशा जाग्रत अवस्था में होता है। जाग्रत अवस्था हमेशा स्वप्न अवस्था में छोटे समय की होती है।

7.165.6

न जाग्रत्स्वप्नयोर्भेदः कश्चनास्ति कदाचन । एकस्यावसरोऽन्यत्र द्वयोरपि न सन्मयः ॥ ६ ॥

na jāgratsvapnayorbhedaḥ kaścanāsti kadācana | ekasyāvasaro'nyatra dvayorapi na sanmayaḥ || 6 ||

There is no difference between the waking and dream states at any time. The opportunity for one is not the reality of the other two.

जाग्रत और स्वप्न अवस्थाओं में कभी भी कोई अन्तर नहीं है। एक का अवसर दूसरे दोनों के लिए वास्तविकता नहीं है।

7.165.7

मृतिप्रबोधसमये जाग्रत्स्वप्नः प्रशाम्यति । स्वप्नानुभवबोधे च शून्य एवातिभास्वरः ॥ ७ ॥

mṛtiprabodhasamaye jāgratsvapnaḥ praśāmyati | svapnānubhavabodhe ca śūnya evātibhāsvaraḥ || 7 ||

At the time of awakening from death, the waking dream subsides. In the awareness of the dream experience, it appears as void.

मृत्यु से जाग्रति के समय, जाग्रत स्वप्न शान्त हो जाता है। स्वप्न अनुभव के बोध में, यह शून्य के रूप में प्रकट होता है।

7.165.8

जीवतः स्वप्नसमये मृतिबोधोदयं विना । परलोकात्मकं जाग्रत्किंचनापि न दृश्यते ॥ ८ ॥

jīvataḥ svapnasamaye mṛtibodhodayaṃ vinā | paralokātmakaṃ jāgratkiṃcanāpi na dṛśyate || 8 ||

In the dream state of a living being, without the arising of the awareness of death, the waking state does not appear as the other world.

जीवित प्राणी की स्वप्न अवस्था में, मृत्यु के बोध के उदय के बिना, जाग्रत अवस्था परलोक के रूप में नहीं दिखाई देती।

7.165.9

स्थिते जीवितबोधेऽस्मिञ्छून्ये नानामयात्मनि । परलोकात्मकः स्वप्नः कश्चनापि न दृश्यते ॥ ९ ॥

sthite jīvitabodhe'smiñchūnye nānāmayātmani | paralokātmakaḥ svapnaḥ kaścanāpi na dṛśyate || 9 ||

When the awareness of life is established in the void, which is diverse in nature, the dream of the other world is not seen.

जब जीवन का बोध शून्य में स्थापित होता है, जो विविध स्वभाव वाला है, तब परलोक का स्वप्न नहीं दिखाई देता।

7.165.10

चिच्चमत्कृतिमात्रात्म यथा स्वप्ने जगत्त्रयम् । हृदि सर्गात्प्रभृत्येव तथैवाभाति जाग्रति ॥ १० ॥

ciccmatkṛtimātrātma yathā svapne jagattrayam | hṛdi sargātprabhṛtyeva tathaivābhāti jāgrati || 10 ||

Just as the three worlds appear in a dream as mere wonder-struck consciousness, so too they appear in the waking state from the creation in the heart.

जैसे तीनों लोक स्वप्न में केवल आश्चर्यचकित चेतना के रूप में प्रकट होते हैं, वैसे ही हृदय में सृष्टि से जाग्रत अवस्था में भी वे प्रकट होते हैं।

7.165.11

सन्त्येवासत्यभूतानि स्फारापि परमार्थतः । नास्त्येवाकारवत्तेयं स्वप्नोर्व्यामिव जाग्रति ॥ ११ ॥

santyevāsatyabhūtāni sphārāpi paramārthataḥ | nāstyevākāravatteyaṃ svapnoryāmiva jāgrati || 11 ||

Even though unreal entities appear to exist in reality, they do not truly exist, just like a dream in the waking state.

यद्यपि असत्य वस्तुएँ वास्तविकता में प्रकट होती हैं, वे वास्तव में नहीं होतीं, जैसे जाग्रत अवस्था में स्वप्न।

7.165.12

नानात्मभासुरमपि स्वप्ने शून्यं यथा जगत् । तथैव जाग्रत्यखिलं व्योमैवेदं चिदात्मकम् ॥ १२ ॥

nānātmabhāsuramapi svapne śūnyaṃ yathā jagat | tathaiva jāgratyakhilaṃ vyomaivedaṃ cidātmakam || 12 ||

Just as the diverse appearances in a dream are ultimately void, so too is the entire waking world ultimately the void of pure consciousness.

जैसे स्वप्न में विविध आभास अंततः शून्य होते हैं, वैसे ही सारी जाग्रत दुनिया अंततः शुद्ध चेतना का शून्य है।

7.165.13

चिद्व्योम्नो हि स्वभावोऽयं यदिदं जगदम्बरे । कचतीत्थमिह स्फारमालोक इव तेजसः ॥ १३ ॥

cidvyomno hi svabhāvo'yaṃ yadidaṃ jagadambare | kacatītthamih sphāramāloka iva tejasaḥ || 13 ||

The nature of pure consciousness is such that this world appears in it like the reflection of light in the sky.

शुद्ध चेतना की प्रकृति ऐसी है कि यह दुनिया उसमें आकाश में प्रकाश की छाया की तरह प्रकट होती है।

7.165.14

चितेश्चमत्कृतिरियं जगन्नाम्नी चकास्त्यलम् । सहजा गगने कुड्ये परमाणौ स्थले जले ॥ १४ ॥

citeścamatkṛtiriyam jagannāmnī cakāsty alam | sahajā gagane kuḍye paramāṇau sthale jale || 14 ||

This wonder of pure consciousness, called the world, shines forth spontaneously in the sky, in a pot, in an atom, and in water.

यह शुद्ध चेतना का आश्चर्य, जिसे दुनिया कहते हैं, आकाश, घड़े, परमाणु और पानी में स्वतः ही चमकता है।

7.165.15

भ्रान्तावसत्यरूपायां स्थितायां सत्यवस्तुवत् । आकाशमात्रदेहायां क इवैनां प्रति ग्रहः ॥ १५ ॥

bhrāntāvasatyarūpāyāṃ sthitāyāṃ satyavastuvat | ākāśamātradehāyāṃ ka iva enāṃ prati grahaḥ || 15 ||

When the unreal form, mistaken as real, is established as merely the sky, what attachment can there be towards it?

जब असत्य रूप, जिसे सत्य समझा जाता है, केवल आकाश के रूप में स्थापित होता है, तो उसके प्रति कौन सा आसक्ति हो सकती है?

7.165.16

ग्रहीतृग्रहणग्राह्यरूपमाशून्यमेव च । सदस्त्वेवासदेवास्तु जगदत्राङ्ग किं ग्रहः ॥ १६ ॥

grahītṛgrahaṇagrāhyarūpamāśūnyameva ca | sadastvevāsadevāstu jagadatrāṅga kiṃ grahaḥ || 16 ||

The form of the perceiver, the perceived, and the perception is indeed empty. What is the grasp of this world, which is both existent and non-existent?

ग्रहीता, ग्रहण और ग्राह्य का रूप निःसार है | यह जगत जो सत् और असत् दोनों है, इसका ग्रहण क्या है?

7.165.17

इत्थमस्त्विदमथान्यथास्तु वा मैव भूद्भवतु कोऽत्र संभ्रमः । कोऽत्र फल्गुनि फले फलग्रहो बुद्धमेव तदलं विकल्पनैः ॥ १७ ॥

itthamastvidamathānyathāstu vā maiva bhūdbhavatu ko'tra saṃbhamaḥ | ko'tra phalguni phale phalagraho buddhameva tadalaṃ vikalpanaiḥ || 17 ||

Whether it exists in this way or in another way, let it be or not be, what is the confusion here? What is the grasp of the result in the insignificant, let the intellect be content with alternatives.

चाहे यह इस तरह हो या किसी और तरह, हो या न हो, यहाँ क्या भ्रम है? अल्प में फल का ग्रहण क्या है? बुद्धि विकल्पों से संतुष्ट हो।

Chapter 166

7.166.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । सार्थकेनात्मशब्देन ख्यातिशब्देन चोज्झिताम् । आत्मख्यातिमिमां विद्धि शिलाजठरनिर्घनाम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sārthakenātmaśabdena khyātiśabdena cojjhitām | ātmakhyātimimāṃ viddhi śilājaṭharanirghanām || 1 ||

Sri Vasistha said: Know this self-awareness, which is indicated by the meaningful word 'self' and devoid of the word 'awareness', to be as solid as a stone.

श्री वसिष्ठ ने कहा: इस आत्म-ख्याति को जानो, जो अर्थपूर्ण आत्मशब्द से इंगित है और ख्यातिशब्द से रहित है, पत्थर की तरह सख्त।

7.166.2

आदिसर्गात्प्रभृत्येव चिद्व्योमैवेत्थमाततम् । कचत्यात्मनि यत्तस्य बुद्धा तेनैव सर्गता ॥ २ ॥

ādisargātprabhṛtyeva cidvyomaive ttamātataṃ | kacatyātmani yattasya buddhā tenaiva sargatā || 2 ||

From the beginning of creation, this consciousness alone is pervaded thus. That which shines in the self, the wise know it as the cause of creation.

सृष्टि के आदि से ही यह चेतना ही इस प्रकार व्याप्त है। जो आत्म में चमकता है, बुद्धिमान लोग उसे ही सृष्टि का कारण मानते हैं।

7.166.3

न वहन्तीह सरितो नेहोन्मज्जनमज्जने । व्योम व्योम्नेव चिद्रूपं कचत्येवमनिङ्गितम् ॥ ३ ॥

na vahantīha sarito nehonmajjana majjane | vyoma vyomnyeva cidrūpaṃ kacatyevamanigitam || 3 ||

Here, the rivers do not flow, nor is there any immersion or emergence. Consciousness shines in the form of space, thus it is clearly indicated.

यहाँ, नदियाँ नहीं बहतीं, न ही कोई डूबना या उभरना है। चेतना आकाश के रूप में चमकती है, इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से इंगित है।

7.166.4

कचनोक्त्या तु रहितां समग्रेणास्तकल्पनाम् । विनोत्तरपदार्थेन त्वात्मख्यातिमिमां विदुः ॥ ४ ॥

kacanoktyā tu rahitāṃ samagreṇāstakalpanām | vinottarapadārthena tvātmakhyātimimāṃ viduḥ || 4 ||

Without the utterance of 'shining', devoid of any imagination, and without any subsequent meaning, know this self-awareness.

चमकने की उक्ति के बिना, कल्पना से रहित, और किसी भी परिणामी अर्थ के बिना, इस आत्म-ख्याति को जानो।

7.166.5

आत्मैवेदं जगत्सर्वं ख्यातिर्यत्र न किंचन । अख्यातो नाम न ख्यात्या कदाचित्ख्यापितः क्वचित् ॥ ५ ॥

ātmaivedaṃ jagatsarvaṃ khyātiryatra na kiṃcana | akhyāto nāma na khyātyā kadācitkhyāpitaḥ kvacit || 5 ||

The self alone is this entire world. Where there is no awareness, the unaware is never known by awareness anywhere.

आत्मा ही यह सम्पूर्ण जगत् है। जहाँ ख्याति नहीं है, वहाँ अख्यात कभी भी ख्याति द्वारा कहीं भी ज्ञात नहीं होता।

7.166.6

ख्यातिरख्यातिरित्यत्र वाचोयुक्तिरवास्तवी । किं तत्र ख्यापनं नाम स्याद्वाप्यख्यापनं च किम् ॥ ६ ॥

khyātirakhyātirityatra vācoyuktiravāstavī | kiṃ tatra khyāpanaṃ nāma syādvāpyakhyāpanaṃ ca kim || 6 ||

The expression 'knowledge and ignorance' is not real. What is called manifestation there, and what is non-manifestation?

ज्ञान और अज्ञान की व्याख्या वास्तविक नहीं है। वहाँ जो प्रकटीकरण कहलाता है, और जो अप्रकटीकरण है?

7.166.7

अख्यातिरन्यथाख्यातिरसत्ख्यातिरितीतरा । दृश्याश्चिन्मात्ररूपस्य भासश्चित्त्वचमत्कृताः ॥ ७ ॥

akhyātiranyathākhyātirasatkhyātiriti itarā | dṛśyāścinmātrarūpasya bhāsaścittvacamatkṛtāḥ || 7 ||

Ignorance, misapprehension, and non-existent knowledge are other forms. The perceptions of the pure consciousness are manifested as the self-luminous.

अज्ञान, भ्रामक ज्ञान, और असत् ज्ञान दूसरे रूप हैं। शुद्ध चेतना की प्रतीतियाँ स्वयंप्रकाश के रूप में प्रकट होती हैं।

7.166.8

यथा यथा यदा ये ये चिन्मात्रव्योमभास्वतः । चिदंशवः कचन्त्यच्छास्तदा ते ते तथा तथा ॥ ८ ॥

yathā yathā yadā ye ye cinmātravyomabhāsvataḥ | cidaṃśavaḥ kacantyacchāstadā te te tathā tathā || 8 ||

As and when the parts of pure consciousness shine forth from the luminous space of consciousness, they manifest accordingly.

जब और जैसे शुद्ध चेतना के अंश चेतना के प्रकाशमान आकाश से प्रकट होते हैं, तब वे उसी तरह प्रकट होते हैं।

7.166.9

आत्मख्यातिरसत्ख्यातिरख्यातिः ख्यातिरन्यथा । इत्येताश्चिच्चमत्कृत्या आत्मख्यातेर्विभूतयः ॥ ९ ॥

ātmakhyātirasatkhyātirakhyātiḥ khyātiranyathā | ityetāściccmatkṛtyā ātmakhyātervibhūtayaḥ || 9 ||

Self-knowledge, non-existent knowledge, ignorance, and misapprehension are the manifestations of the bliss of consciousness. These are the glories of self-knowledge.

आत्मज्ञान, असत् ज्ञान, अज्ञान, और भ्रामक ज्ञान चेतना के आनंद के प्रकटीकरण हैं। ये आत्मज्ञान के विभूतियाँ हैं।

7.166.10

आत्मख्यातिपदस्यार्थ आत्मख्यातिपदोज्झितः । अनाद्यन्तो निरुल्लेखः सोऽयमेकघनः स्थितः ॥ १० ॥

ātmakhyātipadasyārtha ātmakhyātipadodjhitḥ | anādyanto nirullekhaḥ so'yamekaghanaḥ sthitaḥ || 10 ||

The meaning of the term 'self-knowledge' is devoid of the term 'self-knowledge'. It is without beginning or end, without any mark, and it stands as the one dense reality.

आत्मज्ञान शब्द का अर्थ आत्मज्ञान शब्द से रहित है। यह आदि और अंत से रहित है, किसी चिह्न से रहित है, और यह एक घनीभूत वास्तविकता के रूप में स्थित है।

7.166.11

तत्रेदं महदाख्यानं शृणु श्रवणभूषणम् । दूषणं द्वैतदृष्टीनां द्योतनं बोधभास्वतः ॥ ११ ॥

tatredaṃ mahadākhyānaṃ śṛṇu śravaṇabhūṣaṇam | dūṣaṇaṃ dvaitadṛṣṭīnāṃ dyotanaṃ bodhabhāsvataḥ || 11 ||

Listen to this great narrative, which is an ornament to the ears, a blemish to those who see duality, and an illumination of the radiant knowledge.

इस महान आख्यान को सुनो, जो कानों का आभूषण है, द्वैत दृष्टि वालों के लिए दोष है, और चमकीले ज्ञान का प्रकाश है।

7.166.12

अस्ति योजनकोटीनां सहस्राणि प्रमाणतः । आनीलकुड्यकठिना विमला विपुला शिला ॥ १२ ॥

asti yojanakoṭīnāṃ sahasrāṇi pramāṇataḥ | ānīlakuḍyakaṭhinā vimalā vipulā śilā || 12 ||

There exists a vast, pure, and extensive rock, hard as a blue crystal, measuring thousands of yojanas in size.

एक विशाल, शुद्ध और विस्तृत शिला है, जो नीले क्रिस्टल की तरह कठोर है, और जो हजारों योजन की है।

7.166.13

नसंधिबन्धा निबिडा वज्रसारा विसारिणी । अत्यन्तपुष्टकठिनजठराकाशनिर्मला ॥ १३ ॥

nasandhibandhā nibiḍā vajrasārā visāriṇī | atyantapuṣṭakaṭhinajaṭharākāśanirmalā || 13 ||

It is without joints, very dense, with the essence of a diamond, expansive, extremely strong, with a pure inner space.

यह जोड़ों के बिना, बहुत घना, हीरे की तरह सार वाला, विस्तृत, अत्यंत मजबूत, और शुद्ध अंतरिक्ष वाला है।

7.166.14

असंख्यकल्पनिचयमविनाशा घनाङ्गिका । कान्ताङ्गी निर्मलत्वेन व्योमरूपैव लक्ष्यते ॥ १४ ॥

asaṃkhyakalpanicayamavināśā ghanāṅgikā | kāntāṅgī nirmalatvena vyomarūpaiva lakṣyate || 14 ||

It is an innumerable collection of kalpas, indestructible, with dense limbs, beautiful, and pure, appearing as the form of the sky.

यह असंख्य कल्पों का संग्रह है, अविनाशी, घने अंगों वाला, सुंदर, और शुद्ध, आकाश के रूप में दिखाई देता है।

7.166.15

जातिस्तु ज्ञायते तस्या विशिष्टा नैव केनचित् । कथं कुत्र कदा चेति न विज्ञाता सदैव सा ॥ १५ ॥

jātistu jñāyate tasyā viśiṣṭā naiva kenacit | kathaṃ kutra kadā ceti na vijñātā sadaiva sā || 15 ||

Its distinct nature is known, but not by anyone specifically. How, where, and when it is not known, it is always unknown.

इसकी विशिष्ट जाति ज्ञात है, लेकिन किसी के द्वारा नहीं। कैसे, कहाँ, और कब यह नहीं ज्ञात है, यह हमेशा अज्ञात है।

7.166.16

अन्तस्तस्यास्तु हृदये भूतधातुविवर्जिते निबिडानन्तकठिना वज्रसाराऽविनाशिनी ॥ १६ ॥

antastasyāstu hṛdaye bhūtadhātuvivarjite nibiḍānantakaṭhinā vajrasārāvināśinī || 16 ||

In the heart of that (stone), devoid of the elements, there is a very hard, indestructible, and dense essence.

उस (पत्थर) के हृदय में, जो भूतों से रहित है, एक बहुत ही कठोर, अविनाशी और घनी सत्ता है।

7.166.17

लेखामयानि विद्यन्ते स्वाङ्गभूतानि भूरिशः पद्मजालानि शङ्खाश्च गदाश्चक्रादयस्तथा ॥ १७ ॥

lekhāmayāni vidyante svāṅgabhūtāni bhūriśaḥ padmajālāni śaṅkhāśca gadāścakrādayastathā || 17 ||

Many line-like forms are seen as parts of its own body, such as lotus webs, conch shells, maces, and discs.

बहुत सी रेखाओं के रूप उसके शरीर के अंगों के रूप में दिखाई देते हैं, जैसे कमल के जाल, शंख, गदा और चक्र।

7.166.18

खं वायुः सलिलं तेजो वसुधेत्यभिधा कृता नासीत्तत्र स्वलेखानां जीव इत्येव वै तया ॥ १८ ॥

khaṃ vāyuḥ salilaṃ tejo vasudhetiabhidhā kṛtā nāsīttatra svalekhānāṃ jīva ityeva vai tayā || 18 ||

Space, air, water, fire, and earth are named thus, but there is no life in those lines, it is said by her.

आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी इस प्रकार नामित हैं, लेकिन उन रेखाओं में जीवन नहीं है, उसने कहा।

7.166.19

श्रीराम उवाच शिलासौ चेतनं तस्याः कुत इत्युच्यतां मम अचेतना शिला नाम कथं नाम करोति च ॥ १९ ॥

śrīrāma uvāca śilāsau cetanaṃ tasyāḥ kuta ityucyatāṃ mama acetanā śilā nāma kathaṃ nāma karoti ca || 19 ||

Sri Rama said, 'From where does the consciousness of that stone come? Tell me, how can the non-living stone perform actions?'

श्री राम ने कहा, 'उस पत्थर की चेतना कहाँ से आती है? मुझे बताओ, जड़ पत्थर कैसे कार्य कर सकता है?'

7.166.20

श्रीवसिष्ठ उवाच न चेतना न च जडा सा शिला विपुलोज्ज्वला जातिं जानाति कस्तस्याः कस्तत्रान्यश्च विद्यते ॥ २० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca na cetanā na ca jaḍā sā śilā vipulojjvalā jātiṃ jānāti kastasyāḥ kastatrānyaśca vidyate || 20 ||

Sri Vasistha said, 'That stone is neither conscious nor inert; it is vast and radiant. Who knows its origin? Who else is there?'

श्री वसिष्ठ ने कहा, 'वह पत्थर न चेतन है न जड़; यह विशाल और प्रकाशमान है। कौन जानता है उसकी उत्पत्ति? वहाँ कौन और है?'

7.166.21

श्रीराम उवाच । तस्याः पश्यति ता लेखाः कः कथं जठरस्थिताः । कथं वा केन सा भग्ना कदा नामेति मे वद ॥ २१ ॥

śrīrāma uvāca | tasyāḥ paśyati tā lekhāḥ kaḥ kathaṃ jaṭharasthitāḥ | kathaṃ vā kena sā bhagnā kadā nāmeti me vada || 21 ||

Sri Rama said: Who sees those lines within the stomach? How and by whom was she broken? When did this happen? Tell me.

श्रीराम ने कहा: पेट के अंदर उन रेखाओं को कौन देखता है? किसने और कैसे उसे तोड़ा? कब यह हुआ? मुझे बताओ।

7.166.22

श्रीवसिष्ठ उवाच । न भेत्तुं युज्यते सोग्रा न च भेत्ता च विद्यते । तथैवापारपर्यन्तदेहिन्यां सर्वमावृतम् ॥ २२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | na bhettuṃ yujyate sogrā na ca bhettā ca vidyate | tathaivāpāraparyantadehinīyāṃ sarvamāvṛtam || 22 ||

Vasishtha said: It is not possible to break it, nor does a breaker exist. Similarly, everything is enveloped in the embodied being from beginning to end.

वसिष्ठ ने कहा: इसे तोड़ना संभव नहीं है, न ही कोई तोड़ने वाला है। इसी प्रकार, शरीर में सब कुछ आदि से अंत तक आवृत है।

7.166.23

लेखामयानि विद्यन्ते तत्रानन्तानि कोटरे । वृक्षपर्वतजालानि नगराणि पुराणि च ॥ २३ ॥

lekhāmayāni vidyante tatrānantāni koṭare | vṛkṣaparvatajālāni nagarāṇi purāṇi ca || 23 ||

There exist countless forms made of lines, including trees, mountains, networks, cities, and ancient towns.

वहाँ अनगिनत रेखाओं से बने रूप हैं, जिनमें पेड़, पहाड़, जाल, शहर और पुराने नगर शामिल हैं।

7.166.24

तत्र लेखामयाः सन्ति देवदानवनामकाः । सूक्ष्मासूक्ष्मा निराकाराः साकारा इव पुत्रिकाः ॥ २४ ॥

tatra lekhāmayāḥ santi devadānavanāmakāḥ | sūkṣmāsūkṣmā nirākārāḥ sākārā iva putrikāḥ || 24 ||

There exist forms made of lines named after gods and demons, subtle and gross, formless and with form, like dolls.

वहाँ देवताओं और असुरों के नाम पर रेखाओं से बने रूप हैं, सूक्ष्म और स्थूल, निराकार और साकार, गुड़ियों की तरह।

7.166.25

आकाशनाम्नी तत्रास्ति लेखा वैपुल्यशालिनी । उपलेखाश्च सन्त्यस्या मध्ये चन्द्रार्कनामिकाः ॥ २५ ॥

ākāśanāmnī tatrāsti lekhā vaipulyaśālinī | upalekhāśca santyasyā madhye candrārkanāmikāḥ || 25 ||

There exists a line named 'space,' which is vast. Within it, there are sub-lines named after the moon and the sun.

वहाँ एक 'आकाश' नाम की रेखा है, जो विशाल है। उसके अंदर, चंद्रमा और सूर्य के नाम पर उप-रेखाएँ हैं।

7.166.26

श्रीराम उवाच । केन दृष्टा वद ब्रह्मँल्लेखास्तास्तत्र किंविधाः । कथं वा वद दृश्यन्ते निपिण्डोपलकोशगाः ॥ २६ ॥

śrīrāma uvāca | kena dṛṣṭā vada brahmaṃllekhāstāstatra kiṃvidhāḥ | kathaṃ vā vada dṛśyante nipiṇḍopalakośagāḥ || 26 ||

Sri Rama said: By whom were those lines seen? Tell me, O Brahman, what kind were they? How are they seen, contained in the atom, the grain, and the sheath?

श्री राम ने कहा: उन रेखाओं को किसने देखा? हे ब्रह्मन्, बताओ, वे कैसी थीं? वे किस प्रकार दिखाई देती हैं, जो अणु, कण और कोश में समाहित हैं?

7.166.27

श्रीवसिष्ठ उवाच । मया राघव ता दृष्टास्तादृश्यस्तत्र लेखिकाः । तवापीच्छा यदि भवेत्तत्तास्त्वमपि पश्यसि ॥ २७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | mayā rāghava tā dṛṣṭāstādṛśyastatra lekhikāḥ | tavāpīcchā yadi bhavettattāstvamapi paśyasi || 27 ||

Vasishtha said: O Raghava, I have seen those lines there, just as they are. If you also wish, then you too will see them.

वसिष्ठ ने कहा: हे रघुनाथ, मैंने उन रेखाओं को वहाँ देखा है, जैसी वे हैं। यदि आपकी भी इच्छा हो, तो आप भी उन्हें देखेंगे।

7.166.28

श्रीराम उवाच । तादृशी वज्रसारा सा शिला भंक्तुं न युज्यते । तथापि भवता दृष्टा लेखास्तत्कोशगाः कथम् ॥ २८ ॥

śrīrāma uvāca | tādṛśī vajrasārā sā śilā bhaṅktuṃ na yujyate | tathāpi bhavatā dṛṣṭā lekhāstatkośagāḥ katham || 28 ||

Sri Rama said: Such a stone, hard as diamond, cannot be broken. Yet, how were those lines seen by you, contained in the sheath?

श्री राम ने कहा: ऐसी हीरे के समान कठोर शिला को तोड़ा नहीं जा सकता। फिर भी, उन रेखाओं को कोश में समाहित कैसे देखा गया आपने?

7.166.29

श्रीवसिष्ठ उवाच । एतस्या जठरे राम लेखाहं जठरे स्थितः । तेन पश्यामि तत्रस्थो लेखाजालं तदक्षतम् ॥ २९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | etasyā jaṭhare rāma lekhāhaṃ jaṭhare sthitaḥ | tena paśyāmi tatrastho lekhājālaṃ tadakṣatam || 29 ||

Vasishtha said: O Rama, I am situated in the stomach of this stone. Therefore, being situated there, I see the unbroken network of lines.

वसिष्ठ ने कहा: हे राम, मैं इस शिला के पेट में स्थित हूँ। इसलिए, वहाँ स्थित होकर, मैं अखंड रेखाओं के जाल को देखता हूँ।

7.166.30

कोऽसौ शक्तोऽन्यथा भंक्तुं तां शिलामहमन्तरे । तत्सर्वं दृष्टवांस्तस्या अहं तत्रान्तरस्थितः ॥ ३० ॥

ko'sau śakto'nyathā bhaṅktuṃ tāṃ śilāmahamantare | tatsarvaṃ dṛṣṭavāṃstasyā ahaṃ tatrāntarasthitaḥ || 30 ||

Who else is capable of breaking that stone from within? I have seen all of it, being situated within it.

कौन और उस शिला को अंदर से तोड़ने में सक्षम है? मैंने उसका सब कुछ देखा है, उसके अंदर स्थित होकर।

7.166.31

श्रीराम उवाच । कासौ शिलाथ कश्च त्वं वद मे क्वासि संस्थितः । किमेतद्वदसि ब्रूहि किमेतद्दृष्टवानसि ॥ ३१ ॥

śrīrāma uvāca | kāsau śilātha kaśca tvaṃ vada me kvāsi saṃsthitaḥ | kimetadvadasi brūhi kimetaddṛṣṭavānasi || 31 ||

Sri Rama said: Who is this stone, and who are you? Tell me where you are situated. What are you saying, and what have you seen?

श्री राम ने कहा: यह पत्थर कौन है, और तुम कौन हो? मुझे बताओ कि तुम कहाँ स्थित हो। तुम क्या कह रहे हो, और तुमने क्या देखा है?

7.166.32

श्रीवसिष्ठ उवाच । परमात्ममहासत्ता कथितैषा मया तव । अनयैव वचोभंग्या न त्वेषा विपुला शिला ॥ ३२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | paramātmamahāsattā kathitaiṣā mayā tava | anayaiva vacobhaṅgyā na tveṣā vipulā śilā || 32 ||

Sri Vasistha said: This great reality of the Supreme Self has been explained to you by me. By this very speech, this is not a vast stone.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह परमात्मा की महान सत्ता मैंने तुम्हें बताई है। इसी वचन से, यह कोई विशाल पत्थर नहीं है।

7.166.33

परमात्ममहासत्ताशिलाया जठरे वयम् । तच्छिलामांसमेवेमे सौषिर्यपरिवर्जिते ॥ ३३ ॥

paramātmamahāsattāśilāyā jathare vayam | tacchilāmāṃsameveme sauṣiryaparivarjite || 33 ||

We are in the belly of the great stone of the Supreme Self. This stone is devoid of any essence or flavor.

हम परमात्मा की महान सत्ता के पत्थर के पेट में हैं। यह पत्थर किसी भी सार या स्वाद से रहित है।

7.166.34

तच्छिलाङ्गं नभो विद्धि तच्छिलाङ्गं सदागतिः । तच्छिलाङ्गं क्रियाशब्दा वासना कालकल्पना ॥ ३४ ॥

tacchilāṅgaṃ nabho viddhi tacchilāṅgaṃ sadāgatiḥ | tacchilāṅgaṃ kriyāśabdā vāsanā kālakalpanā || 34 ||

Know that the sky, the eternal movement, actions, sounds, desires, and the concept of time are all parts of that stone.

जानो कि आकाश, नित्य गति, क्रियाएँ, शब्द, वासनाएँ और समय की कल्पना सभी उस पत्थर के अंग हैं।

7.166.35

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च । अहंकार इतीदं तत्तच्छिलाङ्गमुदाहृतम् ॥ ३५ ॥

bhūmirāpo'nalo vāyuḥ khaṃ mano buddhireva ca | ahaṃkāra itīdaṃ tattacchilāṅgamudāhṛtam || 35 ||

The earth, water, fire, air, space, mind, intellect, and ego are all parts of that stone.

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार सभी उस पत्थर के अंग हैं।

7.166.36

परमात्ममहासत्ता शिला मांसमिमे वयम् । सर्व एव ततोऽनन्येऽप्यन्ये त्विति च विद्महे ॥ ३६ ॥

paramātmamahāsattā śilā māṃsamime vayam | sarva eva tato'nanye'pyanye tviti ca vidmahe || 36 ||

We are the supreme consciousness, the great being, the stone, the flesh. We know that all are indeed that, and others are different.

हम परम चेतना, महान सत्ता, शिला, मांस हैं। हम जानते हैं कि सब वास्तव में वही हैं, और अन्य अलग हैं।

7.166.37

चिन्मात्रैकात्मिका येयं किलातिमहती शिला । एतस्या व्यतिरेकेण क्व तदस्ति किमुच्यताम् ॥ ३७ ॥

cinmātraikātmikā yeyaṃ kilātimahatī śilā | etasyā vyatirekeṇa kva tadasthi kimucyatām || 37 ||

This great stone is purely consciousness. Without it, what exists? What can be said?

यह महान शिला शुद्ध चेतना है। इसके बिना, क्या है? क्या कहा जा सकता है?

7.166.38

शुद्धं वेदनमेवेदं घटावटपटादिकम् । यथा स्वप्ने तथा भाति जलमूर्मितया यथा ॥ ३८ ॥

śuddhaṃ vedanamevedaṃ ghaṭāvaṭapaṭādikam | yathā svapne tathā bhāti jalamūrmitayā yathā || 38 ||

This pure experience is like a pot, a cloth, etc. It appears like a dream, like an illusion of water.

यह शुद्ध अनुभव घड़े, कपड़े जैसा है। यह स्वप्न की तरह, पानी के भ्रम की तरह दिखता है।

7.166.39

इदं ब्रह्म घनं सर्वं चिन्मात्रघनमाततम् । परमार्थघनं शान्तं सर्वमेकघनं विदुः ॥ ३९ ॥

idaṃ brahma ghanaṃ sarvaṃ cinmātraghanamātatam | paramārthaghanaṃ śāntaṃ sarvamekaghanaṃ viduḥ || 39 ||

This Brahman is dense, all-pervading, purely consciousness, dense with ultimate reality, peaceful, and known as one dense entity.

यह ब्रह्म घना, सर्वव्यापी, शुद्ध चेतना, परम वास्तविकता से घना, शांत, और एक घना वस्तु के रूप में जाना जाता है।

7.166.40

एकं महाचिति शिलोदरमेव सर्वं सौषिर्यवर्जितमपारमनादिमध्यम् । तेनात्मनैव कलिता कलनात्मनेयं सर्गो जगद्भुवनमित्यपि दृश्यनाम्नी ॥ ४० ॥

ekaṃ mahāciti śilodaram eva sarvaṃ sauṣiryavarjitam apāram anādimadhyam | tenātmanaiva kalitā kalanātmaneyaṃ sargo jagadbhuvanam ityapi dṛśyanāmnī || 40 ||

The one great consciousness is the essence of all, devoid of hollowness, boundless, without beginning or end. By itself, it creates the universe, which is called the visible world.

एक महान चेतना सबका सार है, खोखलापन से रहित, असीम, अनादि, अनंत। अपने आप से, यह ब्रह्मांड को बनाता है, जिसे दृश्य जगत कहा जाता है।

Chapter 167

7.167.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । आत्मख्यातिरसत्ख्यातिः ख्यातिरख्यातिरन्यथा । शब्दार्थदृष्टयस्तज्ज्ञं प्रत्येताः शशशृङ्गवत् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ātmakhẏātirasatkhẏātiḥ khyātirakhẏātiranyaṭhā | śabdārthadṛṣṭayastajjñaṃ pratyetāḥ śaśaśṛṅgavat || 1 ||

Vasishtha said: The knowledge of the self, the knowledge of non-existence, the knowledge of something else, and the knowledge of non-knowledge—these perceptions, based on words and meanings, are presented to the knower like the horns of a hare.

वसिष्ठ ने कहा: आत्मा का ज्ञान, असत् का ज्ञान, अन्यथा का ज्ञान, और अज्ञान का ज्ञान—ये शब्दों और अर्थों पर आधारित दृष्टियाँ ज्ञानी के लिए खरगोश के सींगों की तरह प्रस्तुत की जाती हैं।

7.167.2

कदाचनापि नामाङ्ग संभवन्ति न काश्चन । शान्तमव्यपदेश्यात्मा ज्ञ आस्तेऽस्तङ्गतेङ्गनः ॥ २ ॥

kadācanāpi nāmāṅga saṃbhavanti na kāścan | śāntamavyapadeśyātmā jña āste'staṅgateṅganaḥ || 2 ||

At no time do names and forms arise. The peaceful, indescribable self remains in its own nature, free from any movement.

कभी भी नाम और रूप उत्पन्न नहीं होते। शान्त, अवर्णनीय आत्मा अपने स्वभाव में रहती है, किसी भी गति से मुक्त।

7.167.3

एता उद्यन्ति चिन्मात्रादात्मख्यात्यादिका दृशः । तच्च शुद्धतरं व्योम तन्मय्येव च दृश्यते ॥ ३ ॥

etā udyanti cinmātrādātmakhẏātyādikā dṛśaḥ | tacc śuddhataraṃ vyoma tanmayyeva ca dṛśyate || 3 ||

These perceptions arise from pure consciousness, such as the knowledge of the self. That pure space is seen as pervaded by it.

ये प्रत्यय शुद्ध चेतना से उत्पन्न होते हैं, जैसे आत्मा का ज्ञान। वह शुद्ध अंतरिक्ष उससे व्याप्त दिखाई देता है।

7.167.4

अयमात्मा त्वियं ख्यातिरित्यन्तःकलनाभ्रमः । न संभवत्यतश्चैनं शब्दं त्यक्त्वा भवार्थभाक् ॥ ४ ॥

ayamātmā tviyaṃ khyātirityantaḥkalanābhraṃaḥ | na saṃbhavatyataścainaṃ śabdaṃ tyaktvā bhavārthabhāk || 4 ||

The notion that 'this is the self, and this is the perception' is an internal delusion. Therefore, it does not arise, and one should abandon words to partake in the essence of existence.

यह धारणा कि 'यह आत्मा है, और यह प्रत्यय है' एक आंतरिक भ्रम है। इसलिए, यह उत्पन्न नहीं होता, और कोई शब्दों को त्याग देना चाहिए ताकि अस्तित्व के सार में भाग ले सके।

7.167.5

गच्छंस्तिष्ठन्नददपि सर्वे शान्तमतो जगत् । आकाशमौनमेवाच्छमच्छिन्नं वाऽप्रवृत्तिमत् ॥ ५ ॥

gacchaṃstiṣṭhannadadapi sarve śāntamato jagat | ākāśamaunamevācchamacchinnaṃ vā'pravṛttimat || 5 ||

Whether moving, standing, or giving, all are peaceful. Therefore, the world is like the silent sky, uncut or without movement.

चाहे चलते हों, खड़े हों, या देते हों, सभी शांत हैं। इसलिए, संसार मौन आकाश की तरह है, अटूट या गतिहीन।

7.167.6

नानामहाशब्दमपि शिलामौनमवस्थितम् । अनारतं गच्छदपि व्योमवच्छैलवत्स्थितम् ॥ ६ ॥

nānāmahāśabdamapi śilāmaunamavasthitam | anārataṃ gacchadapi vyomavacchailavatsthitam || 6 ||

Even the great sound is established in silence | Even while moving continuously, it remains like the sky |

बड़ा शब्द भी मौन में स्थित है | लगातार चलते हुए भी वह आकाश की तरह स्थिर है |

7.167.7

नानाविधारम्भमपि महाशून्यमनङ्कितम् । पञ्चभूतात्मकमपि खमिवालब्धपञ्चकम् ॥ ७ ॥

nānāvidhārambhamapi mahāśūnyamanankitam | pañcabhūtātmakamapi khamivālabdhapañcakam || 7 ||

Even various activities are marked by great emptiness | Even the five elements are like the sky, having obtained the five |

विविध गतिविधियाँ भी महान शून्यता से चिह्नित हैं | पाँच भूत भी आकाश की तरह हैं, जिनमें पाँच प्राप्त हैं |

7.167.8

पदार्थसंकुलमपि शून्यं संवित्तिमात्रकम् । स्वप्ने महापुरमिव दृष्टमप्यच्छचिन्मयम् ॥ ८ ॥

padārthasaṅkulamapi śūnyaṃ saṃvittimātrakam | svapne mahāpuramiva dṛṣṭamapyacchacinmayam || 8 ||

Even the collection of objects is empty, mere consciousness | Like a great city seen in a dream, it is pure consciousness |

वस्तुओं का समूह भी शून्य है, केवल चेतना | स्वप्न में देखी गई महान नगरी की तरह, यह शुद्ध चेतना है |

7.167.9

सारम्भमप्यनारम्भं संकल्पनगरं यथा । आकाशमात्रं भ्रान्त्यात्म स्वप्नस्त्रीसंगमोपमम् ॥ ९ ॥

sārambhamapyanārambhaṃ saṅkalpanagaraṃ yathā | ākāśamātraṃ bhrāntyātma svapnastrīsaṅgamopamam || 9 ||

Even the beginning is no beginning, like an imagined city | It is merely space, an illusion, like the union with a dream woman |

शुरुआत भी शुरुआत नहीं है, जैसे कल्पना की नगरी | यह केवल आकाश है, एक भ्राम, जैसे स्वप्न में स्त्री का संगम |

7.167.10

अनुभूतमपि व्यर्थं प्रतिबिम्बाङ्गनासमम् । नानानुभवनिर्माणं वस्तु शून्यं तु वस्तुतः ॥ १० ॥

anubhūtamapi vyarthaṃ pratibimbāṅganāsamam | nānānubhavanirmāṇaṃ vastu śūnyaṃ tu vastutaḥ || 10 ||

Even the experienced is useless, like the reflection of a woman | The substance created by various experiences is truly empty |

अनुभव किया हुआ भी व्यर्थ है, जैसे स्त्री का प्रतिबिम्ब | विभिन्न अनुभवों से निर्मित वस्तु वास्तव में शून्य है |

7.167.11

श्रीराम उवाच । जाग्रत्स्वप्नात्मकमिदं मन्ये स्मृत्यैव दृश्यते । सद्रूपबाह्यार्थकृता स्मृतिरेवेह कारणम् ॥ ११ ॥

śrīrāma uvāca | jāgratsvapnātmakamidaṃ manye smṛtyaiva dṛśyate | sadrūpabāhyārthakṛtā smṛtireveha kāraṇam || 11 ||

Shri Rama said: I believe this world of waking and dreaming is perceived through memory alone. Memory, created by external objects, is the cause here.

श्री राम ने कहा: मैं मानता हूँ कि यह जागृत और स्वप्न से बना हुआ जगत स्मृति के द्वारा ही देखा जाता है | बाह्य वस्तुओं से निर्मित स्मृति ही यहाँ कारण है |

7.167.12

श्रीवसिष्ठ उवाच । यत्तच्चित्काचकच्येन काकतालीयवद्वपुः । व्योमात्माऽऽभाति भावानां सत्तामात्रमभित्तिमत् ॥ १२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yattaccitkācakacyena kākatālīyavadvapuḥ | vyomātmā'bhāti bhāvānāṃ sattāmātramabhittimat || 12 ||

Shri Vasishtha said: That which is perceived as the form of the mind, like the reflection of a crow in a mirror, appears as the essence of all beings, merely as a support.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जो मन का रूप है, वह दर्पण में कौए की प्रतिबिम्ब की तरह सभी भावों का सार केवल एक आधार के रूप में दिखाई देता है |

7.167.13

तदेतदविनाशात्म सर्वत्र परमात्मनि । सर्वदा विद्यते शान्ते पयसीव तरङ्गकाः ॥ १३ ॥

tadetadavināśātma sarvatra paramātmani | sarvadā vidyate śānte payasīva taraṅgakāḥ || 13 ||

That which is indestructible exists everywhere in the Supreme Self. It is always present in the tranquil state, like waves in water.

जो अविनाशी है, वह सर्वत्र परमात्मा में विद्यमान है | वह सदा शांत अवस्था में जल में तरंगों की तरह विद्यमान है |

7.167.14

निर्निमित्तं स्वरूपात्म तदेतत्परमात्मनि । सर्वात्मन्यपि निर्वाणे व्योमात्मनि निरात्मनि ॥ १४ ॥

nirnimittaṃ svarūpātma tadetatparamātmani | sarvātmanyapi nirvāṇe vyomātmāni nirātmani || 14 ||

That which is without cause, the essence of the self, exists in the Supreme Self. It is also in the liberated state, in the all-pervading, formless Self.

जो कारण रहित है, आत्मा का स्वरूप, वह परमात्मा में विद्यमान है | वह मुक्त अवस्था में भी है, सर्वव्यापी, निराकार आत्मा में |

7.167.15

यदा यदावभात्यन्तर्येन तेन यथा तथा । सर्वदा न कदाचिद्वा यत्र तत्र न किंचन ॥ १५ ॥

yadā yadāvabhātyantaryena tena yathā tathā | sarvadā na kadācidvā yatra tatra na kiṃcana || 15 ||

Whenever and wherever it appears internally, it is as it is. Always or never, wherever it is, there is nothing.

जब और जहाँ भी यह अंतर्यामी के रूप में प्रकट होता है, वह जैसा है वैसा ही है | सदा या कभी नहीं, जहाँ भी है, वहाँ कुछ नहीं है |

7.167.16

तस्यैव ब्रह्मभानस्य तेनैवं ब्रह्मणात्मना स्वच्छस्यैव स्वभावस्य स्वस्वभावमनुज्झता ॥ १६ ॥

tasyaiva brahma-bhānasya tenaivaṃ brahmaṇātmanā svacchasyaiva svabhāvasya svasvabhāvamanujjhatā || 16 ||

In the same way, the pure nature of Brahman, which is the Self, follows its own nature.

इसी प्रकार, ब्रह्म का शुद्ध स्वभाव, जो आत्मा है, अपने स्वभाव का अनुसरण करता है।

7.167.17

इदं जाग्रदयं स्वप्नः सुषुप्तं तुर्यमित्यपि कृतं नाम स्वयं चित्वाद्ब्रह्म वात्मेति चात्मनि ॥ १७ ॥

idaṃ jāgradayaṃ svapnaḥ suṣuptaṃ turyamityapi kṛtaṃ nāma svayaṃ citvād brahma vātmeti cātmani || 17 ||

This is known as the waking state, dream state, deep sleep, and the fourth state. All these names are given by Brahman itself, which is consciousness and the Self.

यह जाग्रत अवस्था, स्वप्न अवस्था, सुषुप्ति और चौथी अवस्था कहलाता है। ये सभी नाम ब्रह्म द्वारा दिए गए हैं, जो चेतना और आत्मा है।

7.167.18

वस्तुतस्त्वस्ति न स्वप्नो न जाग्रन्न सुषुप्तता न तुर्यं न ततोऽतीतं सर्वं शान्तं परं नभः ॥ १८ ॥

vastutastvasti na svapno na jāgrann na suṣuptatā na turyaṃ na tato'tītaṃ sarvaṃ śāntaṃ paraṃ nabhaḥ || 18 ||

In reality, there is no dream, no waking, no deep sleep, no fourth state, and nothing beyond that. All is peaceful, the supreme sky.

वास्तव में, स्वप्न नहीं है, जाग्रत नहीं है, सुषुप्ति नहीं है, चौथी अवस्था नहीं है, और उससे परे कुछ नहीं है। सब शांत है, परम आकाश है।

7.167.19

अथवा सर्वमेवेदं जाग्रद्रूपं सदैव च सर्वदैव च वा स्वप्नः सुषुप्तं सर्वदैव च ॥ १९ ॥

athavā sarvamevedaṃ jāgradrūpaṃ sadaiva ca sarvadaiva ca vā svapnaḥ suṣuptaṃ sarvadaiva ca || 19 ||

Or, all this is always in the form of waking, always a dream, always deep sleep.

या फिर, सब कुछ हमेशा जाग्रत रूप में है, हमेशा स्वप्न है, हमेशा सुषुप्ति है।

7.167.20

सर्वदैव च वा तुर्यं तदन्तः सर्वदैव वा तदिदं वा न यद्विद्मो वयमाशान्तरूपिणः ॥ २० ॥

sarvadaiva ca vā turyaṃ tadantaḥ sarvadaiva vā tadidaṃ vā na yadvidmo vayamāśāntarūpiṇaḥ || 20 ||

Or, always the fourth state, or always that within, or this, or not what we know, we are of the nature of peace.

या फिर, हमेशा चौथी अवस्था, या हमेशा उसके अंदर, या यह, या जो हम जानते हैं, हम शांति के स्वभाव के हैं।

7.167.21

इदं फेनो न किंचिद्वा बुद्बुदो वा न कश्चन । शून्यताम्भसि चिद्व्योम महार्णवमहोदरे ॥ २१ ॥

idaṃ pheno na kiṃcidvā budbudo vā na kaścana | śūnyatāmbhasi cidvyoma mahārṇavamahodare || 21 ||

This is neither foam nor a bubble, nor is it anything else. It is the void of consciousness in the vast ocean of emptiness.

यह न तो फेन है, न बुदबुदा है, न ही कुछ और है | यह शून्यता का अम्बर है, चेतना का व्योम, महान सागर का महान उदर है ||

7.167.22

यथा संवेद्यते यद्यत्तथा तदनुभूयते । सद्वासद्वा भवत्स्वप्ने व्योम्नीव सदसच्च तत् ॥ २२ ॥

yathā saṃvedyate yadyat tathā tadanubhūyate | sadvāsadvā bhavatsvapne vyomnīva sadasacca tat || 22 ||

Whatever is perceived is experienced as such. In a dream, whether it is real or unreal, it is like the sky, both real and unreal.

जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, वह उसी तरह से अनुभव किया जाता है | स्वप्न में, चाहे वह सत्य हो या असत्य, वह आकाश की तरह है, सत्य और असत्य दोनों |

7.167.23

संवित्कचनमेवेदं यथा भानं विभासते । व्योम व्योमनि चिद्रूपं चिद्रूपे विततात्मनि ॥ २३ ॥

saṃvitkacanamevedaṃ yathā bhānaṃ vibhāsate | vyoma vyomani cidrūpaṃ cidrūpe vitatātmani || 23 ||

This entire universe is like a reflection in consciousness. It shines forth as it appears. The sky in the sky, the form of consciousness in the expanded self.

यह पूरा ब्रह्मांड चेतना में एक प्रतिबिंब की तरह है | यह उसी तरह से चमकता है जैसा कि यह दिखाई देता है | आकाश में आकाश, चेतना का रूप विस्तृत आत्मा में |

7.167.24

संविच्च चिन्नभोमज्जा सैवंरूपैव सर्वदा । नास्तमेति न चोदेति तस्याः स्वाङ्गमिदं जगत् ॥ २४ ॥

saṃvicca cinnabhomajjā saivaṃrūpaiva sarvadā | nāstameti na codeti tasyāḥ svāṅgamidaṃ jagat || 24 ||

Consciousness itself is the essence of all. It is always of the same form. It neither sets nor rises. This world is its own limb.

चेतना स्वयं सबका सार है | यह हमेशा उसी रूप में है | यह न तो अस्त होता है न उदय | यह दुनिया इसका अपना अंग है |

7.167.25

महाप्रलयसर्गाद्या महाप्रलयरात्रयः । तस्या एवावयवतां याताः केशनखादिवत् ॥ २५ ॥

mahāpralayasargādyā mahāpralayarātrayaḥ | tasyā evāvayavatāṃ yātāḥ keśanakhādivat || 25 ||

The great dissolutions and creations are like the nights and days of the great dissolution. They have become parts of it, like hair and nails.

महान प्रलय और सृष्टि महान प्रलय की रात्रियों और दिनों की तरह हैं | वे उसके अंग बन गए हैं, बाल और नाखूनों की तरह |

7.167.26

तस्या भानमभानं तद्भास्वरं जिह्ममेव वा । नान्यत्स्वभाववत्स्पन्द इव वायोर्महाचितेः ॥ २६ ॥

tasyā bhānamabhānaṃ tadbhāsvaraṃ jihmameva vā | nānyatsvabhāvavatspanda iva vāyormahāciteḥ || 26 ||

The manifestation or non-manifestation of that is either luminous or crooked | There is nothing else like the natural pulsation of the great consciousness like the wind

उसका प्रकट या अप्रकट होना प्रकाशमान या टेढ़ा होता है | महाचेतना की प्राकृतिक स्पंदन की तरह वायु की तरह कुछ और नहीं है

7.167.27

तस्मात्किं नाम जाग्रत्स्यात्कः स्वप्नः का सुषुप्तता । किं तुर्यं का स्मृतिः केच्छा तुच्छा एताः कुदृष्टयः ॥ २७ ॥

tasmātkiṃ nāma jāgratsyātkāḥ svapnaḥ kā suṣuptatā | kiṃ turyaṃ kā smṛtiḥ kecchā tucchā etāḥ kudṛṣṭayaḥ || 27 ||

Therefore, what is called the waking state, what is the dream state, what is deep sleep | What is the fourth state, what is memory, what is desire, these are all false perceptions

इसलिए, जाग्रत अवस्था क्या कहलाती है, स्वप्न अवस्था क्या है, सुषुप्ति क्या है | चौथी अवस्था क्या है, स्मृति क्या है, इच्छा क्या है, ये सभी झूठी धारणाएँ हैं

7.167.28

अन्तःसंवेदनं भाति स्वं बाह्यार्थतया यतः । क्व द्वैतं क्व च वार्थश्रीः स्मृतिरेवमतः कुतः ॥ २८ ॥

antaḥsaṃvedanaṃ bhāti svaṃ bāhyārthatayā yataḥ | kva dvaitaṃ kva ca vārthaśrīḥ smṛtirevamataḥ kutaḥ || 28 ||

The inner awareness shines as its own external object | Where is duality, where is the wealth of objects, from where does memory arise

अंतःसंवेदन अपने बाहरी वस्तु के रूप में चमकता है | द्वैत कहाँ है, वस्तुओं की समृद्धि कहाँ है, स्मृति कहाँ से उत्पन्न होती है

7.167.29

तदिदं भाति निर्भित्ति तत्स्वभानं यदात्मना । भानोर्नभसि भारूपमेव भूतविवर्जितम् ॥ २९ ॥

tadidaṃ bhāti nirbhitti tatsvabhānaṃ yadātmanā | bhānornabhasi bhārūpameva bhūtavivarjitam || 29 ||

This shines without any support, that self-luminous which is by the self | The form of light in the sky is devoid of elements

यह किसी आधार के बिना चमकता है, वह स्वयंप्रकाश जो आत्मा द्वारा है | आकाश में प्रकाश का रूप तत्वों से रहित है

7.167.30

सद्रूपो यदि बाह्योऽर्थो विद्यते तत्तदुत्थिता । स्मृतिः कारणतामेतु नामाद्यजगतः स्थितेः ॥ ३० ॥

sadrūpo yadi bāhyo'rtho vidyate tattadutthitā | smṛtiḥ kāraṇatāmetu nāmādyajagataḥ sthiteḥ || 30 ||

If the external object is of the nature of existence, then memory arises from that | Memory would be the cause of the existence of the world beginning with names

यदि बाहरी वस्तु अस्तित्व की प्रकृति की है, तो स्मृति उससे उत्पन्न होती है | स्मृति नाम से शुरू होने वाले संसार की स्थिति का कारण होगी

7.167.31

किंतु नास्त्येष बाह्योऽर्थो भूतानामत्यसंभवात्पञ्चानामादिसर्गादौ कारणानामभावतः ॥ ३१ ॥

kiṃtu nāstyeṣa bāhyo'rtho bhūtānāmatyasaṃbhavātpañcānāmādisargādau kāraṇānāmabhāvataḥ || 31 ||

However, there is no external object due to the impossibility of the existence of the five elements from the beginning, due to the absence of causes.

किंतु, पांच तत्वों के आदि सृजन की असंभावना के कारण बाह्य वस्तु नहीं है, कारणों की अनुपस्थिति के कारण।

7.167.32

शशशृङ्गं यथा नास्ति यथा नास्ति खपादपःयथा वन्ध्यासुतो नास्ति यथा नास्त्यसितः शशी ॥ ३२ ॥

śaśaśṛṅgaṃ yathā nāsti yathā nāsti khapādapaḥyathā vandhyāsuto nāsti yathā nāstyasitaḥ śaśī || 32 ||

Just as the horns of a hare do not exist, just as a sky-flower does not exist, just as the son of a barren woman does not exist, just as the dark moon does not exist.

जैसे खरगोश के सींग नहीं होते, जैसे आकाश का फूल नहीं होता, जैसे बंझ औरत का बेटा नहीं होता, जैसे काला चांद नहीं होता।

7.167.33

तथाऽज्ञप्रतिभातोऽर्थो जगदाद्यहमादिकःअप्रेक्षितोऽस्ति नास्त्येव प्रेक्षितः सन्न कश्चन ॥ ३३ ॥

tathā'jñapratibhāto'rtho jagadādyahamādikaḥaprekṣito'sti nāstyeva prekṣitaḥ sanna kaścana || 33 ||

Similarly, the object that appears due to ignorance, such as the world, the self, etc., exists as long as it is not examined; when examined, it does not exist at all.

इसी तरह, अज्ञान के कारण प्रतीत होने वाली वस्तु, जैसे जगत, आत्मा आदि, जब तक उसे देखा नहीं जाता तब तक अस्तित्व में है; जब देखा जाता है तब वह बिलकुल अस्तित्व में नहीं है।

7.167.34

यथास्तीदं महाकारं न किंचिदूपमेव वातत्त्वज्ञविषयं राम तथास्तीदमखण्डितम् ॥ ३४ ॥

yathāstīdaṃ mahākāraṃ na kiṃcidūpameva vātattvajñaviṣayaṃ rāma tathāstīdamakhaṇḍitam || 34 ||

Just as this great illusion does not resemble anything, O Rama, it is the subject of the knower of truth; similarly, this is unbroken.

जैसे यह महान भ्रम किसी चीज के समान नहीं है, हे राम, यह सत्य ज्ञानी का विषय है; इसी तरह, यह अखंडित है।

7.167.35

संविद्धननबोमज्जा यथोदेति यदा यदानित्योदितोपचारेण कल्पितास्तमयोदया ॥ ३५ ॥

saṃviddhananabhomajjā yathodeti yadā yadānityoditopacāreṇa kalpitāstamayodayā || 35 ||

Just as the wave arises from the ocean of consciousness, whenever it arises, it is imagined to rise and set through the metaphor of constant arising.

जैसे लहर चेतना के समुद्र से उठती है, जब भी वह उठती है, वह निरंतर उदय की उपमा द्वारा उदय और अस्त की कल्पना करती है।

7.167.36

मुधा व्योम्नेव पृथ्व्यादितया वेत्ति तदा तदा । स्वस्यैव तस्य भानस्य धत्ते पृथ्व्यादिकल्पनाम् ॥ ३६ ॥

mudhā vyomnyeva pṛthvyāditayā vetti tadā tadā | svasyeva tasya bhānasya dhatte pṛthvyādikalpanām || 36 ||

When one mistakenly perceives the earth and other elements as separate from the sky, it is then that one attributes the concept of earth and other elements to that very radiance.

जब कोई आकाश से अलग पृथ्वी और अन्य तत्वों को गलती से समझता है, तब उसी चमक को पृथ्वी और अन्य तत्वों के रूप में मानता है।

7.167.37

स्वमेव भानमाकाशमात्रमेव महाचितिः । पृथ्व्यादिव्यपदेशेन पश्चाद्व्यपदिशत्यजा ॥ ३७ ॥

svameva bhānamākāśamātrameva mahācitiḥ | pṛthvyādivyapadeśena paścādvyapadiśatyajā || 37 ||

The great consciousness itself is merely the radiance of the sky. Later, it designates the earth and other elements through verbal expressions.

महान चेतना स्वयं ही आकाश की चमक है। बाद में, यह शब्दों के माध्यम से पृथ्वी और अन्य तत्वों को निर्दिष्ट करती है।

7.167.38

आकाश एव पृथ्वीयमिति धत्ते स्वसंविदम्। मनोराज्यपुरं बाल इव चिन्मात्रमव्ययम्॥ ३८॥

ākāśa eva pṛthvīyamiti dhatte svasaṃvidam | manorājyapuraṃ bāla iva cinmātramavyayam || 38 ||

The sky itself is perceived as the earth, thus holding its own awareness. Like a child's imaginary kingdom, it is purely consciousness and indestructible.

आकाश स्वयं ही पृथ्वी के रूप में देखा जाता है, इस प्रकार अपनी चेतना को रखता है। एक बच्चे की कल्पना की राजधानी की तरह, यह केवल चेतना और अविनाशी है।

7.167.39

किं भानं किमभानं स्यात्तस्येति न विकल्प्यते। स्पन्दास्पन्दस्वभावं तद्विद्धि वातमिवाम्बरे॥ ३९॥

kiṃ bhānaṃ kimabhānaṃ syāttasya iti na vikalpyate | spandāspandasvabhāvaṃ tadviddhi vātamivāmbare || 39 ||

What is manifest and what is not manifest of that, it is not to be distinguished. Know that to be of the nature of motion and stillness, like the wind in the sky.

उसका क्या प्रकट है और क्या अप्रकट है, यह अलग नहीं किया जा सकता। उसे गति और स्थिरता के स्वभाव के रूप में जानो, जैसे आकाश में हवा।

7.167.40

यथा भाति चिदाकाशं तथेदमवभासते। व्योम व्योम्नेव नीरूपं नेदं पृथ्व्यादि सत्क्वचित्॥ ४०॥

yathā bhāti cidākāśaṃ tathedamavabhāsate | vyoma vyomnyeva nīrūpaṃ nedam pṛthvyādi sakvacit || 40 ||

Just as the sky of consciousness appears, so does this world shine. The sky is formless in the sky itself; this is not the earth or any other element.

जैसे चेतना का आकाश प्रकट होता है, वैसे ही यह संसार चमकता है। आकाश स्वयं आकाश में निराकार है; यह पृथ्वी या कोई अन्य तत्व नहीं है।

7.167.41

यथा भाति चिदाकाशरूपत्वाद्भातमप्यलम्न सन्नासदिति किंचित्तन्न किंचिच्च किंचन॥ ४१॥

yathā bhāti cidākāśarūpatvādbhātamapyalamna sannāsaditi kiṃcittanna kiṃcicca kiṃcana || 41 ||

Just as the consciousness-space shines, so does everything else shine. There is nothing that is or is not; everything is neither this nor that.

जैसे चेतना-आकाश चमकता है, वैसे ही सब कुछ चमकता है। कुछ भी नहीं है या नहीं है; सब कुछ न तो यह है न वह।

7.167.42

इदमित्थमनित्थं च सद्वाऽसद्वा यथास्थितम्लोकपर्यायवृत्तान्तं प्राज्ञो जानाति नेतरः॥ ४२॥

idamitthamanitthaṃ ca sadvā'sadvā yathāsthitamlokaparyāyavṛttāntaṃ prājño jānāti netaraḥ || 42 ||

The wise person knows the worldly cycle as it is, whether it is real or unreal, this or that.

बुद्धिमान व्यक्ति संसार के चक्र को जैसा है, वैसा ही जानता है, चाहे वह वास्तविक हो या अवास्तविक, यह हो या वह।

7.167.43

स एव हृदयाकाशे कचन्त्या दृश्यसंविदाबाह्यं ब्रह्माण्डमित्थं च सद्वाऽसद्वा यथास्थितम्॥ ४३॥

sa eva hṛdayākāśe kacantyā dṛśyasaṃvidābāhyaṃ brahmāṇḍamitthaṃ ca sadvā'sadvā yathāsthitam || 43 ||

That very consciousness-space in the heart, with the perception of the seen, perceives the external universe as it is, whether real or unreal.

वही चेतना-आकाश हृदय में, दृश्य की संवेदना के साथ, बाह्य ब्रह्मांड को जैसा है, वैसा ही देखता है, चाहे वह वास्तविक हो या अवास्तविक।

7.167.44

किमत्र बाह्यं किं वान्तः किं दृश्यं कास्य दृश्यताशिवं शान्तमशान्तं च सर्वमोमिति शाम्यताम् ॥ ४४ ॥

kimatra bāhyaṃ kiṃ vāntaḥ kiṃ dṛśyaṃ kāsya dṛśyatāśivaṃ śāntamaśāntaṃ ca sarvamomiti śāmyatām || 44 ||

What is external here, what is internal, what is seen, whose is the vision, peaceful or not peaceful, let all be peaceful.

यहाँ क्या बाहरी है, क्या अंदरूनी है, क्या दृश्य है, किसकी दृष्टि है, शांत है या अशांत, सब कुछ शांत हो जाए।

7.167.45

नो वाच्यवाचकदृशा रहितो विचारः संपद्यते स च विकल्पमयेन सिद्धिश्च संभवति तेन विना न काचिद्दीपं विना निशि यथा नयनोपलम्भः ॥ ४५ ॥

no vācyavācakadṛśā rahito vicāraḥ saṃpadyate sa ca vikalpamayena siddhiśca saṃbhavati tena vinā na kāci ddīpaṃ vinā niśi yathā nayanopalambhaḥ || 45 ||

Without the vision of the expressible and the inexpressible, no thought arises. That thought, arising from imagination, achieves success. Without it, nothing is perceived, just as the eye cannot see in the night without a lamp.

बिना व्यक्त और अव्यक्त की दृष्टि के, कोई विचार नहीं उत्पन्न होता। वह विचार, कल्पना से उत्पन्न होकर, सिद्धि प्राप्त करता है। बिना उसके, कुछ भी दिखाई नहीं देता, जैसे रात में बिना दीपक के आँख कुछ नहीं देख सकती।

7.167.46

तस्मादपास्य परयाऽमलया धियान्तःसंकल्पकल्पनमनल्पविकल्पजालम्। कृत्वा मनः सकलशास्त्रमहार्थनिष्ठमुड्डीय गच्छ पदमुत्तममेकनिष्ठः ॥ ४६ ॥

tasmād apāsya parayā'malayā dhiyāntaḥsaṅkalpakalpanam analpavikalpajālam | kṛtvā manaḥ sakalaśāstramahārthanisthaṃ uḍḍīya gaccha padam uttamamekanisthaḥ || 46 ||

Therefore, having abandoned all mental constructs and the intricate web of thoughts, make the mind steadfast in the supreme essence of all scriptures and rise to the highest state, being devoted to the One.

इसलिए, सभी मानसिक संकल्पों और विचारों के जाल को त्याग कर, मन को सभी शास्त्रों के महान अर्थ में स्थिर करें और एक निष्ठा से उत्तम पद पर पहुँचें।

Chapter 168

7.168.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । अबुद्धिपूर्वमेवागो यथा शाखाविचित्रताम् । करोत्येवमजश्चित्राः सर्गाभासः ख एव खम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | abuddhipūrvamevāgo yathā śākhāvicitratām | karotyevamajaścitrāḥ sargābhāsaḥ kha eva kham || 1 ||

Sri Vasistha said: Just as a creeper, without any intelligence, produces various branches, similarly, the unintelligent self creates various illusory manifestations in the sky.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जैसे एक लता, बिना किसी बुद्धि के, विभिन्न शाखाएँ उत्पन्न करती है, वैसे ही, अज्ञानी आत्मा आकाश में विभिन्न भ्रामक रूपों की सृष्टि करता है।

7.168.2

यथा करोत्यबुद्ध्यादिरावर्तादि पयोनिधिः । तथा करोति खे स्वात्मा सर्वेशः सर्ववेदनाः ॥ २ ॥

yathā karotyabuddhyādirāvartādi payonidhiḥ | tathā karoti khe svātmā sarveśaḥ sarvavedanāḥ || 2 ||

Just as the ocean, without any intelligence, produces waves and whirlpools, similarly, the all-knowing self creates various manifestations in the sky.

जैसे समुद्र, बिना किसी बुद्धि के, तरंगें और भंवर उत्पन्न करता है, वैसे ही, सर्वज्ञ आत्मा आकाश में विभिन्न रूपों की सृष्टि करता है।

7.168.3

तासां स्वसंविदामेव ततः स कुरुते स्वयम् । मनो बुद्धिरहंकार इत्याद्या विविधाभिधाः ॥ ३ ॥

tāsāṃ svasaṃvidāmeva tataḥ sa kurute svayam | mano buddhirahaṃkāra ityādyā vivavidhābhidhāḥ || 3 ||

From the self-awareness of these manifestations, the self creates various forms such as mind, intellect, and ego.

इन रचनाओं की स्व-चेतना से, आत्मा मन, बुद्धि, और अहंकार जैसे विभिन्न रूपों की सृष्टि करता है।

7.168.4

अबुद्धिपूर्वमारम्भो दृश्यरूपः स्वतश्चितेः । संकल्प्यमानो बुद्ध्यादिस्तरङ्गादिर्यथाम्बुधेः ॥ ४ ॥

abuddhipūrvamārambho dṛśyarūpaḥ svataściteḥ | saṃkalpyamāno buddhyādistaraṅgādiryathāmbudheḥ || 4 ||

The beginning of creation, which is perceptible, arises spontaneously from the self, just as waves arise from the ocean.

सृष्टि की शुरुआत, जो दृश्यमान है, स्वयं से आत्मा से उत्पन्न होती है, जैसे तरंगें समुद्र से उत्पन्न होती हैं।

7.168.5

चिन्मात्रात्संप्रवर्तन्ते मनोबुद्ध्यादयस्तथा । आवर्तकणकल्लोलवीचयो वारिधेर्यथा ॥ ५ ॥

cinmātrātsaṃpravartante manobuddhyādayastathā | āvartakaṇakallolavīcayo vāridheryathā || 5 ||

From pure consciousness, forms such as mind and intellect arise, just as whirlpools and waves arise from water.

शुद्ध चेतना से, मन और बुद्धि जैसे रूप उत्पन्न होते हैं, जैसे भंवर और तरंगें पानी से उत्पन्न होती हैं।

7.168.6

भित्तिमात्रं यथा चित्रजगदालोकमात्रकम्। चिति चिद्व्योममात्रात्म तथैवाभासमात्रकम्॥ ६॥

bhittimātraṃ yathā citrajagadālokamātrakam | citi cidvyomamātrātma tathaivābhāsamātrakam || 6 ||

Just as a painting is merely a reflection on a wall, similarly, the manifested universe is merely a reflection in the pure consciousness.

जैसे एक चित्र केवल एक दीवार पर प्रतिबिंब है, उसी प्रकार, प्रकट ब्रह्मांड केवल शुद्ध चेतना में प्रतिबिंब है।

7.168.7

अबुद्धिपूर्वमारम्भो नियत्या संनिवेशवान्। यथा संपद्यते वृत्ते तथा सर्गात्मकश्चिति॥ ७॥

abuddhipūrvamārambho niyatyā saṃniveśavān | yathā saṃpadyate vṛtte tathā sargātmakaściti || 7 ||

The beginning of action without prior thought is ordained by destiny. Just as it happens in the course of events, so does the creation manifest in consciousness.

बिना पूर्व सोच के कार्य की शुरुआत भाग्य द्वारा निर्धारित होती है। जैसे घटनाओं के दौरान होता है, वैसे ही सृष्टि चेतना में प्रकट होती है।

7.168.8

तरौ गुलुच्छकादीनां यथान्यः कुरुतेऽभिधाः। तथा चिद्वृक्षपुष्पादिपृथ्व्यादिविहिताभिधम्॥ ८॥

tarau gulucchakādīnāṃ yathānyaḥ kurute'bhidhāḥ | tathā cidvṛkṣapuṣpādipṛthvyādivihitābhidham || 8 ||

Just as different names are given to various parts of a tree, similarly, different names are given to the various manifestations of consciousness.

जैसे विभिन्न पेड़ के भागों को अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, उसी प्रकार, चेतना के विभिन्न रूपों को अलग-अलग नाम दिए जाते हैं।

7.168.9

अनन्यत्पुष्पपत्रादि यथा नाम महातरोः। तथैवानन्यदेवेदं चिद्व्योम्नः परमात्मनः॥ ९॥

ananyatpuṣpapatrādi yathā nāma mahātaroḥ | tathaivānanyadevedaṃ cidvyomnaḥ paramātmanaḥ || 9 ||

Just as the various parts of a great tree, such as flowers and leaves, are not different from the tree itself, similarly, the various manifestations of the supreme consciousness are not different from the supreme consciousness itself.

जैसे एक महान पेड़ के विभिन्न भाग, जैसे फूल और पत्तियाँ, पेड़ से अलग नहीं होते, उसी प्रकार, परम चेतना के विभिन्न रूप परम चेतना से अलग नहीं होते।

7.168.10

तरावववयवेप्वन्यः करोति विविधाभिधाः। चिद्व्योमात्मनि सर्वेषु भूत्वान्य इव खात्मसु॥ १०॥

tarāvavayavepyanyaḥ karoti vividhābhidhāḥ | cidvyomātmani sarveṣu bhūtvānya iva khātmasu || 10 ||

Just as different names are given to the various parts of a tree, similarly, different names are given to the various manifestations of the supreme consciousness, appearing as if they are different entities.

जैसे एक पेड़ के विभिन्न भागों को अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, उसी प्रकार, परम चेतना के विभिन्न रूपों को अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, जो अलग-अलग सत्ताओं के रूप में प्रतीत होते हैं।

7.168.11

चित्तरोः पल्लवाः सर्गाश्चित्त्वादेव न सन्त्यलम् । कार्यकारणवद्भाति स एव स्वप्नवत्स्वयम् ॥ ११ ॥

cittaroḥ pallavāḥ sargāścittvādeva na santyalam | kāryakāraṇavadbhāti sa eva svapnavatsvayam || 11 ||

The manifestations of the mind are not real, they appear as cause and effect, just like a dream.

मन की सृष्टियाँ वास्तविक नहीं हैं, वे कारण और परिणाम के रूप में प्रकट होती हैं, जैसे कि एक स्वप्न।

7.168.12

वक्षि चेत्कथमेतस्माद्व्यर्थं तदनुभूयते । सर्गाद्यमुत्र स्वप्नादिष्वेषु कोऽपह्नवं भजेत् ॥ १२ ॥

vakṣi cet kathametasmādvyarthaṃ tadanubhūyate | sargādyamutra svapnādiṣveṣu ko'pahnavam bhajet || 12 ||

If it is asked how this is useless, then it is experienced in the creation and in dreams. Who would deny this?

यदि पूछा जाए कि यह कैसे व्यर्थ है, तो यह सृष्टि और स्वप्नों में अनुभव किया जाता है। इसे कौन नकारेगा?

7.168.13

तरावाकारवत्येषा कल्पना रचिता यथा । चितेराकाशमात्रायास्तथैषा कल्पना कृता ॥ १३ ॥

tarāvākāravatyēṣā kalpanā racitā yathā | citerākāśamātrāyāstathaiṣā kalpanā kṛtā || 13 ||

Just as the imagination of a star-like form is created, so is this imagination made from the mere space of consciousness.

जैसे तारे के रूप की कल्पना की जाती है, वैसे ही यह कल्पना चेतना के मात्र आकाश से बनाई जाती है।

7.168.14

यथा गन्धादयः पुष्पे गगने शून्यतादयः । यथा स्पन्दादयो वायौ तथा बुद्ध्यादयः परे ॥ १४ ॥

yathā gandhādayaḥ puṣpe gagane śūnyatādayaḥ | yathā spandādayo vāyau tathā buddhyādayaḥ pare || 14 ||

Just as scent and other qualities are in a flower, emptiness and other qualities are in the sky, and vibrations and other qualities are in the wind, so are intelligence and other qualities in the supreme.

जैसे सुगंध और अन्य गुण फूल में होते हैं, शून्यता और अन्य गुण आकाश में होते हैं, और स्पंदन और अन्य गुण वायु में होते हैं, वैसे ही बुद्धि और अन्य गुण परम में होते हैं।

7.168.15

यथा गन्धादयः पुष्पे गगने शून्यतादयः । यथा स्पन्दादयो वायौ तथेमाः सृष्टयश्चिति ॥ १५ ॥

yathā gandhādayaḥ puṣpe gagane śūnyatādayaḥ | yathā spandādayo vāyau tathā imāḥ sṛṣṭayaściti || 15 ||

Just as scent and other qualities are in a flower, emptiness and other qualities are in the sky, and vibrations and other qualities are in the wind, so are these creations in consciousness.

जैसे सुगंध और अन्य गुण फूल में होते हैं, शून्यता और अन्य गुण आकाश में होते हैं, और स्पंदन और अन्य गुण वायु में होते हैं, वैसे ही ये सृष्टियाँ चेतना में हैं।

7.168.16

यथा खानिलपुष्पाणां शून्यतास्पन्दगन्धदृक् । शून्यरूपानुभूता च तथा सर्गस्थितिश्चिति ॥ १६ ॥

yathā khānilapuṣpāṇāṃ śūnyatāspandagandhadṛk | śūnyarūpānubhūtā ca tathā sargasthitiściti || 16 ||

Just as the emptiness, motion, and fragrance of flowers are perceived, so too is the creation, maintenance, and dissolution of the universe experienced as empty in nature.

ठीक वैसे ही जैसे फूलों की शून्यता, गति और गंध को देखा जाता है, वैसे ही ब्रह्मांड की उत्पत्ति, स्थिति और लय को शून्य स्वरूप में अनुभव किया जाता है।

7.168.17

न पृथक् शून्यता व्योम्नो न पृथग्द्रवताम्भसः । न पृथक् कुसुमाद्गन्धो नानिलात्स्पन्दन पृथक् ॥ १७ ॥

na pṛthak śūnyatā vyomno na pṛthagdravatāmbhasaḥ | na pṛthak kusumādgandho nānilātspandana pṛthak || 17 ||

There is no emptiness separate from space, no fluidity separate from water, no fragrance separate from flowers, and no motion separate from wind.

शून्यता आकाश से अलग नहीं है, द्रवता जल से अलग नहीं है, गंध फूलों से अलग नहीं है, और गति वायु से अलग नहीं है।

7.168.18

अग्नेर्न पृथगुष्णत्वं पृथक् शैत्यं च नो हिमात् । चिद्व्योमैकात्मनः स्वच्छान्न जगत्पृथगीश्वरात् ॥ १८ ॥

agnerna pṛthaguṣṇatvaṃ pṛthak śaityaṃ ca no himāt | cidvyomaikātmanaḥ svacchānn jagatpṛthagīśvarāt || 18 ||

There is no heat separate from fire, no cold separate from ice, and the pure consciousness of the universe is not separate from the Supreme Lord.

अग्नि से अलग उष्णता नहीं है, बर्फ से अलग शीतलता नहीं है, और ब्रह्मांड की शुद्ध चेतना परमेश्वर से अलग नहीं है।

7.168.19

सर्गादावेव यद्व्योम्नि स्वप्नाद्धृदि च दृश्यते । अकारणं तच्चिद्व्योम्नः कथमन्यद्भवेत्किल ॥ १९ ॥

sargādāveva yadvyomni svapnāddhṛdi ca dṛśyate | akāraṇaṃ taccidvyomnaḥ kathamanyadbhavetkila || 19 ||

Whatever is seen in the sky at the beginning of creation or in the heart during a dream, how can that be different from the pure consciousness of the universe, which is without cause?

जो कुछ भी सृष्टि के आरंभ में आकाश में या स्वप्न में हृदय में दिखाई देता है, वह कैसे कारणरहित ब्रह्मांड की शुद्ध चेतना से अलग हो सकता है?

7.168.20

स्वप्न एवात्र दृष्टान्तो नित्यदृष्टो विचार्यताम् । चिन्मात्रव्यतिरेकेण सारं किं तत्र कथ्यताम् ॥ २० ॥

svapna evātra dṛṣṭānto nityadṛṣṭo vicāryatām | cinmātravyatirekeṇa sāraṃ kiṃ tatra kathyatām || 20 ||

Here, the example of a dream is always seen and should be considered. What essence can be spoken of there, apart from pure consciousness?

यहाँ, स्वप्न का उदाहरण हमेशा देखा जाता है और इस पर विचार किया जाना चाहिए। शुद्ध चेतना के अलावा वहाँ किस सार की बात की जा सकती है?

7.168.21

तदिदं बुद्धिसंस्कारदृश्यमित्यादिका स्मृतिः । न संभवति यत्तत्त्वं कथयेदं कथं भवेत् ॥ २१ ॥

tadidaṃ buddhisanskāradṛśyamityādikā smṛtiḥ | na saṃbhavati yattattvaṃ kathayedaṃ kathaṃ bhavet || 21 ||

This memory, which is a mental impression, does not exist in reality. How can it be described?

यह स्मृति, जो एक मानसिक संस्कार है, वास्तविकता में नहीं होती। इसे कैसे वर्णित किया जाए?

7.168.22

यत्तत्र दृष्टं तदिह स्मृतिकाले भवेद्यदि । नानुभूयेत तत्तत्र कैवैकस्य द्विधा स्थितिः ॥ २२ ॥

yattatra dṛṣṭaṃ tadihi smṛtikāle bhavedyadi | nānubhūyeta tattatra kaivekasya dvidhā sthitiḥ || 22 ||

If what is seen there is remembered here, it would not be experienced there. How can one be in two places at once?

अगर जो वहाँ देखा गया है, वह यहाँ स्मृति के समय याद आता है, तो वह वहाँ अनुभव नहीं किया जाएगा। एक व्यक्ति कैसे एक साथ दो जगहों पर हो सकता है?

7.168.23

तस्मादावर्तवृत्त्येदं काकतालीयवज्जगत् । चिति यद्भाति तत्रैषा पश्चात्स्वप्नादिकल्पना ॥ २३ ॥

tasmādāvartavṛttyedaṃ kākatālīyavajjagat | citi yadbhāti tatraiṣā paścātsvapnādikalpanā || 23 ||

Therefore, this world, like the movement of a crow's tail, is a mere illusion. Whatever appears in consciousness is a later imagination, like a dream.

इसलिए, यह संसार, कौए की पूँछ की तरह घूमने वाला, एक भ्रम मात्र है। चेतना में जो भी प्रकट होता है, वह एक बाद की कल्पना है, जैसे स्वप्न।

7.168.24

अबुद्धिपूर्वं संपन्ने सर्गे वीच्यादयो यथा । संनिवेशः स्थितिः पश्चात्स्वयं संपद्यते तथा ॥ २४ ॥

abuddhipūrvaṃ saṃpanne sarve vīcyādayo yathā | sanniveśaḥ sthitiḥ paścātsvayaṃ saṃpadyate tathā || 24 ||

Just as in a creation that occurs without prior thought, the arrangement and stability of waves, etc., arise spontaneously later.

जैसे किसी रचना में जो पहले से सोच के बिना होती है, लहरों आदि का व्यवस्थापन और स्थिरता बाद में स्वतः ही आती है।

7.168.25

जातमेव न तज्जातं जातं यत्कारणं विना । यतोऽजातं तदेवाद्य तत्समं संस्थितं तथा ॥ २५ ॥

jātameva na tajjātaṃ jātaṃ yatkāraṇaṃ vinā | yato'jātaṃ tadevādya tatsamaṃ saṃsthitaṃ tathā || 25 ||

That which is born is not truly born if it is born without a cause. That which is unborn is the same as the primordial state, and it remains thus.

जो जन्म लेता है, वह वास्तव में जन्म नहीं लेता अगर वह कारण के बिना जन्म लेता है। जो अजन्मा है, वह आदि अवस्था के समान है, और वह ऐसे ही बना रहता है।

7.168.26

अबुद्धिपूर्वं संजाता रत्नादीनां यथार्चिषः । सत्तैव संनिवेशेन तथैवासां जगद्दृशाम् ॥ २६ ॥

abuddhipūrvaṃ saṃjātā ratnādīnāṃ yathārciṣaḥ| sattaiva saṃniveśena tathaivāsāṃ jagaddṛśām || 26 ||

Just as gems and other things are produced without intelligence, similarly, the worldly perceptions are established by mere existence.

जैसे रत्न और अन्य चीजें बुद्धि के बिना उत्पन्न होती हैं, वैसे ही सत्ता के द्वारा संसार की दृष्टियाँ स्थापित होती हैं।

7.168.27

यथाकथंचिदेवेदमादौ संपद्यते जगत् पश्चाद्गृह्णाति नियतिमावर्तोऽब्धाविवात्मनि ॥ २७ ॥

yathākathaṃcidevedamādau saṃpadyate jagat paścādgṛhṇāti niyatimāvarto'bdhāvivātmani || 27 ||

Somehow, in the beginning, this world comes into being. Later, it takes on a fixed order, like a whirlpool in the ocean of the Self.

किसी तरह आरंभ में यह जगत उत्पन्न होता है। बाद में यह एक निश्चित क्रम ग्रहण कर लेता है, जैसे आत्मा के सागर में भँवर।

7.168.28

चिद्व्योम्नि स्वप्नजालानि चिज्जगन्त्यपकारणम् । प्रवर्तन्ते निवर्तन्ते शून्यशून्यात्मकान्यपि ॥ २८ ॥

cidvyomni svapnajālāni cijjagantyapakāraṇam| pravartante nivartante śūnyaśūnyātmakānyapi || 28 ||

In the sky of consciousness, dream-like illusions of the conscious world arise and disappear without any cause, even though they are essentially void.

चेतना के आकाश में, चेतना की दुनिया के सपने जैसे भ्रम बिना किसी कारण के उत्पन्न होते हैं और विलुप्त हो जाते हैं, भले ही वे मूल रूप से शून्य हों।

7.168.29

यावत्सर्वमथान्योन्यं याति कारणतां चिरम् । तेषां शून्यात्मका एव पदार्था ईश्वरादयः ॥ २९ ॥

yāvatsarvamathānyonyaṃ yāti kāraṇatāṃ ciram| teṣāṃ śūnyātmakā eva padārthā īśvarādayaḥ || 29 ||

As long as everything mutually becomes a cause for a long time, those entities, including God, are essentially void.

जब तक सब कुछ परस्पर लंबे समय तक कारण बनता है, तब तक वे वस्तुएँ, जिनमें ईश्वर भी शामिल है, मूल रूप से शून्य होती हैं।

7.168.30

जायते शून्यमेवेदं शून्यमेव च वर्धते । ननु शून्यतयात्यन्तं शून्यमेव विनश्यति ॥ ३० ॥

jāyate śūnyamevedaṃ śūnyameva ca vardhate| nanu śūnyatayātyantaṃ śūnyameva vinaśyati || 30 ||

This void itself is born, and this void itself grows. Indeed, ultimately, this void itself perishes.

यह शून्य स्वयं उत्पन्न होता है, और यह शून्य स्वयं बढ़ता है। निश्चय ही, अंततः, यह शून्य स्वयं नष्ट हो जाता है।

7.168.31

शून्यं कचत्यशून्याभं दृष्टान्तं स्वप्नमत्र यः । अपह्नुतेऽनुभूतं स पशुभर्तृकुकं कुधीः ॥ ३१ ॥

śūnyaṃ kacaty aśūnyābhaṃ dṛṣṭāntaṃ svapnamatra yaḥ| apahṇute'nubhūtaṃ sa paśubhartṛkukaṃ kudhīḥ || 31 ||

That which is empty appears as non-empty, this example is like a dream| Whoever denies this experience is a foolish animal-like person

जो शून्य है वह अशून्य के रूप में दिखाई देता है, यह स्वप्न का उदाहरण है| जो इस अनुभव को नकारता है, वह मूर्ख पशु के समान है

7.168.32

असदेवेदमाभाति भ्रान्तिमात्रं सुकृत्रिमम् । चिच्चमत्कारमात्रात्म ज्ञे सन्मात्रकृत्रिमम् ॥ ३२ ॥

asadevedamābhāti bhrāntimātraṃ sukṛtrimam| ciccmatkāramātrātma jñe sanmātrakṛtrimam || 32 ||

This appears as non-existent, merely an illusion, well-created| The self is pure consciousness, the wonder of mere existence, known as the mere creation of truth

यह असत् के रूप में दिखाई देता है, केवल भ्रम, अच्छी तरह से बनाया गया| आत्मा शुद्ध चेतना है, अस्तित्व का आश्चर्य, ज्ञान सत्य का केवल सृजन है

7.168.33

अयं चिरस्थसंकल्पः सर्गप्रलयविभ्रमः। ज्ञानं स्वभावकचनमज्ञानं भ्रान्तिजृम्भणम्॥ ३३॥

ayaṃ cirasthasaṃkalpaḥ sargapralayavibhramaḥ| jñānaṃ svabhāvakacanam ajñānaṃ bhrāntijṛmbhaṇam || 33 ||

This long-held resolve is the delusion of creation and dissolution| Knowledge is the natural state, ignorance is the manifestation of delusion

यह लंबे समय से रखा गया संकल्प सृष्टि और प्रलय का भ्रम है| ज्ञान स्वाभाविक अवस्था है, अज्ञान भ्रम का प्रकटीकरण है

7.168.34

झटित्युदेति ब्रह्मात्म दृश्यं दृष्टमकारणम्। खे सुषुप्तादिव स्वप्नः पश्चान्नियतिमृच्छति॥ ३४॥

jhaṭityudeti brahmātma dṛśyaṃ dṛṣṭamakāraṇam| khe suṣuptādiva svapnaḥ paścānniyatimṛcchati || 34 ||

Suddenly, the Brahman-self arises, the seen is seen without cause| Like a dream from deep sleep, it later attains its destiny

अचानक, ब्रह्म-आत्मा उभरता है, देखा जाता है बिना कारण| गहरी नींद से स्वप्न की तरह, बाद में वह अपने गंतव्य को प्राप्त होता है

7.168.35

काकतालीयवच्चित्त्वाच्चिति दृश्यं प्रकाशते। स्वयमेव स्वभावस्थमावर्तादि यथाम्बुधौ॥ ३५॥

kākatālīyavaccittvācciti dṛśyaṃ prakāśate| svayameva svabhāvasthamāvartādi yathāmbudhau || 35 ||

Like the kākatālīya, consciousness shines by itself, the seen is illuminated| Naturally, it remains in its own state, like whirlpools in the ocean

काकतालीय की तरह, चेतना स्वयं चमकती है, देखा जाता है प्रकाशित| स्वाभाविक रूप से, वह अपनी ही अवस्था में रहता है, समुद्र में भंवरों की तरह

7.168.36

ईदृशो नाम चिद्धातुरयमाकाशमात्रकः। यदित्थं नाम कचति जगद्रूपेण चिद्वपुः॥ ३६॥

īdṛśo nāma ciddhāturayamākāśamātrakaḥ | yadittthaṃ nāma kacati jagadrūpeṇa cidvapuḥ || 36 ||

This is called the essence of consciousness, which is merely space. If it is so, then the form of the universe is the body of consciousness.

यह चिद्धातु कहलाता है, जो केवल आकाश है। यदि ऐसा है, तो ब्रह्माण्ड का रूप चिद्वपु है।

7.168.37

तेन चिद्रूपिणा पश्चादृश्येनात्मनि कल्पिताः। संज्ञाः स्मृत्यादिपृथ्व्यादिबुद्ध्यादिकलनात्मिकाः॥ ३७॥

tena cidrūpiṇā paścāddṛśyenātmani kalpitāḥ | saṃjñāḥ smṛtyādipṛthvyādibuddhyādikalanātmikāḥ || 37 ||

By that form of consciousness, afterwards, the perceptions, memories, elements, and intellect are imagined in the self.

उस चेतना रूप से, बाद में, संज्ञाएँ, स्मृति, पृथ्वी आदि तत्व, और बुद्धि आत्मा में कल्पित होते हैं।

7.168.38

श्रीराम उवाच । एवं स्थिते हे भगवन्बुद्धिसंस्कारतः स्मृतिः । इति किं प्राप्यते ब्रूहि संबुद्धा यदि न स्मृतिः ॥ ३८ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ sthite he bhagavanbuddhisamskārataḥ smṛtiḥ | iti kiṃ prāpyate brūhi saṃbuddhā yadi na smṛtiḥ || 38 ||

Sri Rama said: In this situation, O Lord, what is achieved by the memory arising from the impressions of the intellect? Please tell me, O wise one, if there is no memory.

श्रीराम ने कहा: इस स्थिति में, हे भगवान्, बुद्धि के संस्कार से उत्पन्न स्मृति से क्या प्राप्त होता है? हे संबुद्ध, यदि स्मृति नहीं है, तो क्या प्राप्त होता है, कृपया बताएँ।

7.168.39

श्रीवसिष्ठ उवाच । श्रृणु राम भिनद्म्येनं प्रश्नं सिंह इवेभकम् । अभेदं स्थापयाम्येकमालोकमिव भास्करः ॥ ३९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | śṛṇu rāma bhinadmyenaṃ praśnaṃ siṃha ivebhakam | abhedaṃ sthāpayāmyekamālokamiva bhāskaraḥ || 39 ||

Sri Vasistha said: Listen, O Rama, I will shatter this question like a lion shatters a mouse. I will establish the non-duality like the sun establishes light.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: सुनो, हे राम, मैं इस प्रश्न को सिंह के समान चूहे को चीरते हुए तोड़ूंगा। मैं अद्वैत को सूर्य के समान प्रकाश की तरह स्थापित करूंगा।

7.168.40

विद्यते जगदात्मेदं दृश्यं चिन्मात्रकोटरे । अनुत्कीर्णा यथा वृक्षे वनस्था शालभञ्जिका ॥ ४० ॥

vidyate jagadātmedaṃ dṛśyaṃ cinmātrakoṭare | anutkīrṇā yathā vṛkṣe vanasthā śālabhañjikā || 40 ||

This visible universe exists in the pure consciousness, like a forest-dwelling woodpecker that is not carved out of a tree.

यह दृश्य ब्रह्माण्ड शुद्ध चेतना में विद्यमान है, जैसे वन में रहने वाली शालभञ्जिका किसी वृक्ष से निकाली गई नहीं है।

7.168.41

उद्धरेद्वृक्षतस्तक्षा कदाचिच्छालभञ्जिकाम् । अद्वितीयाच्चितिस्तम्भादुत्कीर्णां कः करोति ताम् ॥ ४१ ॥

uddharedvṛkṣatastakṣā kadācicchālabhañjikām | advitīyāccitisstambhādutkīrṇāṃ kaḥ karoti tām || 41 ||

Who can extract the splinter from the wood, or who can carve out the unique pillar of the pyre?

कौन लकड़ी से टहनी निकाल सकता है, या कौन अद्वितीय चिता के स्तंभ को उकेर सकता है?

7.168.42

स्तम्भे जडेन सा व्यक्तिमनुत्कीर्णेह गच्छति । चिति त्वन्तर्गता चित्त्वादेवात्मन्येव भात्यलम् ॥ ४२ ॥

stambhe jaḍena sā vyaktimanutkīrṇeha gacchati | citi tvantargatā cittvādevātmanyeva bhātyalam || 42 ||

In the inert pillar, she manifests without being carved out. The pyre, being internal, shines only in the self.

जड़ स्तंभ में, वह उकेरे बिना ही प्रकट होती है। चिता, आंतरिक होने के कारण, केवल आत्मा में ही चमकती है।

7.168.43

भासमाना त्वनुत्कीर्णदेहैवापि च खात्मिका । स्वरूपादच्युता चैव चिन्मात्रादात्मनि स्थिता ॥ ४३ ॥

bhāsamānā tvannotkīrṇadehaivāpi ca khātmikā | svarūpādacyutā caiva cinmātrādātmanyi sthitā || 43 ||

Shining, even in the uncarved body, she is of the nature of space. Unmoved from her own form, she is established in the self, which is pure consciousness.

चमकती हुई, उकेरे हुए शरीर में भी, वह आकाश की प्रकृति की है। अपने स्वरूप से अचल, वह शुद्ध चेतना के आत्मा में स्थित है।

7.168.44

सर्गादौ सर्गकलनाः करोति कलनावती । सा चित्स्वभावतः स्वप्ने खात्मन्यद्योदितामिव ॥ ४४ ॥

sargādau sargakalanāḥ karoti kalanāvatī | sā citsvabhāvataḥ svapne khātmanyadyoditāmiva || 44 ||

At the beginning of creation, she creates the divisions of creation. She, of the nature of consciousness, appears in a dream-like state in the self.

सृष्टि के आरंभ में, वह सृष्टि के विभाजन करती है। वह, चेतना की प्रकृति की, आत्मा में स्वप्न-जैसी अवस्था में प्रकट होती है।

7.168.45

आकाश एव हृदये परमाकाशरूपिणी । संकल्पयति चिच्छालभञ्जिकाः स्वात्मनात्मनि ॥ ४५ ॥

ākāśa eva hṛdaye paramākāśarūpiṇī | saṃkalpayati cicchālabhañjikāḥ svātmanātmani || 45 ||

In the heart, which is the supreme space, she imagines the splinters of consciousness in her own self.

हृदय में, जो परम आकाश है, वह अपने आत्मा में चेतना की टहनियाँ कल्पना करती है।

7.168.46

इयं ब्रह्मकला सेह चिन्मात्रकलना त्वियम् । इयं चितिरियं जीवस्त्वहंकारस्त्वसाविति ॥ ४६ ॥

iyam brahmakalā seha cinmātrakalanā tv iyam | iyam citir iyam jīvas tv ahaṃkāras tv asāv iti || 46 ||

This is the art of Brahman, the pure consciousness. This is the consciousness, the individual soul, and the ego.

यह ब्रह्म की कला है, पूर्ण चेतना की कला है। यह चेतना है, यह जीव है, और यह अहंकार है।

7.168.47

इयं बुद्धिरियं चित्तमयं काल इदं नभः । अयं सोऽहं क्रिया चेयमिदं तन्मात्रपञ्चकम् ॥ ४७ ॥

iyam buddhir iyam cittam ayam kāla idam nabhaḥ | ayam so'ham kriyā ceyam idam tanmātrapañcakam || 47 ||

This is the intellect, this is the mind, this is time, this is the sky. This is the 'I am,' the action, and this is the set of five elements.

यह बुद्धि है, यह चित्त है, यह काल है, यह आकाश है। यह 'मैं हूँ' है, क्रिया है, और यह पाँच तन्मात्राओं का समूह है।

7.168.48

इन्द्रियाणामिदं वृन्दं पुर्यष्टकमिदं स्मृतम् । इहातिवाहिको देहस्तथायं चाधिभौतिकः ॥ ४८ ॥

indriyāṇām idam vṛndam puryaṣṭakam idam smṛtam | ihātivāhiko dehas tathāyam cādhibhautikaḥ || 48 ||

This is the group of senses, this is the set of eight elements of the body. This is the transient body, and this is the material body.

यह इन्द्रियों का समूह है, यह शरीर के आठ तत्वों का समूह है। यह अस्थायी शरीर है, और यह भौतिक शरीर है।

7.168.49

ब्रह्माहं शंकरश्चाहमुपेन्द्रोऽहमहं रविः । इदं बाह्यमिदं चान्तरयं सर्ग इदं जगत् ॥ ४९ ॥

brahmāham śaṃkaras cāham upendro'ham aham raviḥ | idam bāhyam idam cāntar ayam sarga idam jagat || 49 ||

I am Brahma, I am Shankara, I am Upendra, I am the sun. This is external, this is internal, this is the creation, this is the universe.

मैं ब्रह्मा हूँ, मैं शंकर हूँ, मैं उपेन्द्र हूँ, मैं सूर्य हूँ। यह बाह्य है, यह आंतरिक है, यह सृष्टि है, यह जगत् है।

7.168.50

इत्यादिकलनाजालं चिद्व्योमैवातिनिर्मलम् । तस्मात्क्वैते पदार्थौघाः क्व स्मृतिः क्व द्वयैकते ॥ ५० ॥

ityādikalanājālam cidvyom aivātinirmalam | tasmātkv aite padārthaughāḥ kva smṛtiḥ kva dvayaikate || 50 ||

Thus, the network of various arts is the pure consciousness, extremely pure. Therefore, where are these objects, where is the memory, where is the duality?

इस प्रकार, विभिन्न कलाओं का जाल पूर्ण चेतना है, अत्यंत पवित्र। इसलिए, ये पदार्थ कहाँ हैं, स्मृति कहाँ है, द्वैत कहाँ है?

7.168.51

अकारणकमेवेति जगदाभोगिखण्डकः । सर्गादौ स्वप्नवद्भाति खे खात्मैव विकारिवत् ॥ ५१ ॥

akāraṇakameveti jagadābhogikhṇḍakaḥ| sargādau svapnavadbhāti khe khātmaiva vikārivat || 51 ||

The universe, which is without a cause, appears like a dream at the beginning of creation, and in the sky, it appears as if it is a modification of the self.

यह जगत, जो कि बिना कारण के है, सृष्टि के आरंभ में स्वप्न की तरह प्रतीत होता है, और आकाश में, यह स्वयं के विकार की तरह प्रतीत होता है।

7.168.52

व्योम्न्येव कचति व्योम चिन्मये चिन्मयं हि यत् । बुद्धं तदेव तेनैव जगद्बोधात्क्व तज्जगत् ॥ ५२ ॥

vyomnyeva kacati vyoma cinmaye cinmayaṃ hi yat| buddhaṃ tadeva tenaiva jagadvodhātkva tajjagat || 52 ||

In the sky itself, the sky shines as pure consciousness. That which is known as pure consciousness is indeed the same. How can that world, which is known through consciousness, be different from it?

आकाश में ही, आकाश शुद्ध चेतना के रूप में चमकता है। जो शुद्ध चेतना के रूप में जाना जाता है, वह वास्तव में वही है। चेतना द्वारा जाना जाने वाला वह जगत उससे अलग कैसे हो सकता है?

7.168.53

क्व स्मृतिः क्व च वा स्वप्नः क्व कालाः कलनाश्च काः । चिदाभानमिदं भाति शान्तं शून्यमिवाम्बरे ॥ ५३ ॥

kva smṛtiḥ kva ca vā svapnaḥ kva kālāḥ kalanāśca kāḥ| cidābhānamidaṃ bhāti śāntaṃ śūnyamivāmbare || 53 ||

Where is memory, where is dream, where are times and measurements? This appears as a reflection of consciousness, peaceful, like emptiness in the sky.

स्मृति कहाँ है, स्वप्न कहाँ है, समय और माप कहाँ हैं? यह चेतना का प्रतिबिंब प्रतीत होता है, शांत, आकाश में शून्य की तरह।

7.168.54

यदन्तश्चिद्धनस्यास्ति तद्बहिर्भूततां गतम् । वस्तुतस्तु न तद्बाह्यं नान्तः सन्मात्रकादृते ॥ ५४ ॥

yadantaściddhanasyāsti tadvahirbhūtatāṃ gatam| vastutastu na tadbāhyaṃ nāntaḥ sanmātrakādṛte || 54 ||

That which exists within the treasure of consciousness becomes external. In reality, it is neither external nor internal, except for the mere existence.

जो चेतना के खजाने में है, वह बाहरी हो जाता है। वास्तव में, वह न तो बाहरी है न ही अंदरूनी, केवल अस्तित्व के अलावा।

7.168.55

निरस्तावयवाच्छान्तादनाख्याद्यत्प्रवर्तते । अकारणं भवेद्भूतं तदन्धाः कथमन्यथा ॥ ५५ ॥

nirastāvayavācchāntādanākhyādyatpravartate| akāraṇaṃ bhavedbhūtaṃ tadandhāḥ kathamanyathā || 55 ||

That which arises from the peaceful, partless, and nameless becomes causeless. How else can the blind understand it?

जो शांत, अवयवरहित, और नामहीन से उत्पन्न होता है, वह अकारण हो जाता है। अन्यथा अंधे कैसे समझ सकते हैं?

7.168.56

तस्माद्यादृक्परं ब्रह्म तादृग्दृश्यमिदं परम् । यदेव चिन्नभः स्वप्ने तदेव स्वप्नपत्तनम् ॥ ५६ ॥

tasmādyādṛkparaṃ brahma tādṛgdṛśyamidaṃ param | yadeva cinnabhaḥ svapne tadeva svapnapattanam || 56 ||

Therefore, whatever is the nature of the supreme Brahman, that is the nature of this supreme visible world. Whatever is seen in a dream, that is the dream itself.

इसलिए, जो भी परम ब्रह्म का स्वरूप है, वही इस परम दृश्य जगत का स्वरूप है। जो भी स्वप्न में दिखाई देता है, वही स्वप्न है।

7.168.57

न किंचित्किंचनापीदं दृश्यमस्ति मनागपि । क्व रजः पूर्णजलधौ क्व दृश्यं परमाम्बरे ॥ ५७ ॥

na kiṃcitkiṃcanāpīdaṃ dṛśyamasti manāgapi | kva rajaḥ pūrṇajaladhau kva dṛśyaṃ paramāmbare || 57 ||

There is nothing visible in this world that is not permeated by the mind. Where is the dust in the full ocean, where is the visible in the supreme sky?

इस जगत में कुछ भी ऐसा दृश्य नहीं है जो मन से भिन्न हो। पूर्ण समुद्र में धूल कहाँ है, परम आकाश में दृश्य कहाँ है?

7.168.58

तच्चेदं भाति वा किंचित्तच्चिन्मात्रमचेत्यकम् । अकचत्त्वेव संशान्तमात्मनीत्थमवस्थितम् ॥ ५८ ॥

taccedaṃ bhāti vā kiṃcit taccinmātramacetyakam | akacattveva saṃśāntamātmanītthamavasthitam || 58 ||

That which appears to be anything is only pure consciousness. It is non-material and is established in the self as tranquil.

जो भी कुछ दिखाई देता है, वह केवल शुद्ध चेतना है। यह अमूर्त है और आत्मा में शांत रूप से स्थित है।

7.168.59

पूर्णाद्वै ब्रह्मणः पूर्णमप्यनुद्धतमुद्धृतम् । इवेदं भाति भारूपमाभानं परमात्मकम् ॥ ५९ ॥

pūrṇādvaibrahmaṇaḥ pūrṇamapyanuddhatamuddhṛtam | ivedaṃ bhāti bhārūpamābhānaṃ paramātmakam || 59 ||

From the fullness of Brahman, the fullness is manifested, even though it is not lifted. Thus, this appears as the form of light, the supreme self.

ब्रह्म की पूर्णता से पूर्णता ही प्रकट होती है, भले ही वह उठाई न गई हो। इसलिए, यह प्रकाश के रूप में दिखाई देता है, परमात्मा के रूप में।

7.168.60

इत्थं मयि प्रकथयत्यनुभूयभानमप्युच्चकैर्बत जनस्य विमूढतान्तः । स्वप्ने जगद्वपुषि जाग्रदिति प्रतीतिं नाद्यापि यत्त्यजति नाम विदन्नपि द्राक् ॥ ६० ॥

itthaṃ mayi prakathayaty anubhūyabhānam apy uccakairbata janasya vimūḍhatāntaḥ | svapne jagadvapuṣi jāgraditi pratītiṃ nādyāpi yattyajati nāma vidannapi drāk || 60 ||

Thus, even after explaining the experience, the delusion of the people does not go away. Even the wise do not give up the notion that the world in the dream is real.

इस प्रकार, भले ही अनुभव की व्याख्या की जाए, लोगों की भ्रांति दूर नहीं होती। बुद्धिमान भी स्वप्न में जगत को वास्तविक मानने की धारणा को नहीं छोड़ते।

Chapter 169

7.169.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । न सुखाय सुखं यस्य दुःखं दुःखाय यस्य नो । अन्तर्मुखमतेर्नित्यं स मुक्त इति कथ्यते ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | na sukhāya sukhaṃ yasya duḥkhaṃ duḥkhāya yasya no | antarmukhamaternityaṃ sa mukta iti kathyate || 1 ||

Shri Vasishtha said: One who does not seek happiness for the sake of happiness nor sorrow for the sake of sorrow, and whose mind is always turned inward, is said to be liberated.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जिसके लिए सुख सुख के लिए नहीं है और दुःख दुःख के लिए नहीं है, और जिसका मन हमेशा अंतर्मुखी है, वह मुक्त कहलाता है।

7.169.2

यस्य न स्फुरति प्रज्ञा चिद्व्योमन्यचलस्थितेः । प्रसृतेष्विव भोगेषु स मुक्त इति कथ्यते ॥ २ ॥

yasya na sphurati prajñā cidvyomanyacalasthiteḥ | prasṛteṣviva bhogeṣu sa mukta iti kathyate || 2 ||

One whose wisdom does not waver, being steadfast in the expanse of consciousness, even while enjoying worldly pleasures, is said to be liberated.

जिसकी बुद्धि चेतना के विस्तार में स्थिर रहती है और भोगों में भी डोलती नहीं, वह मुक्त कहलाता है।

7.169.3

चिन्मात्रात्मनि विश्रान्तं यस्य चित्तमचञ्चलम् । तत्रैव रतिमायातं स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ ३ ॥

cinmātrātmani viśrāntaṃ yasya cittamacañcalam | tatraiva ratimāyātaṃ sa jīvanmukta ucyate || 3 ||

One whose mind is steadfast and rests in the pure consciousness of the self, and who finds delight in that alone, is said to be liberated while living.

जिसका मन शुद्ध चेतना में स्थिर है और उसी में आनंद लेता है, वह जीवनमुक्त कहलाता है।

7.169.4

परमात्मनि विश्रान्तं यस्य व्यावृत्त्य नो मनः । रमतेऽस्मिन्पुनर्दृश्ये स जीवन्मुक्त उच्यते ॥ ४ ॥

paramātmani viśrāntaṃ yasya vyāvṛttya no manaḥ | ramate'sminpunardṛśye sa jīvanmukta ucyate || 4 ||

One whose mind is not distracted and rests in the Supreme Self, and who finds delight in this visible world, is said to be liberated while living.

जिसका मन परमात्मा में स्थिर है और इस दृश्य जगत में आनंद लेता है, वह जीवनमुक्त कहलाता है।

7.169.5

श्रीराम उवाच । न सुखाय सुखं यस्य दुःखं दुखाय यस्य नो । जडमेव मुने मन्ये मानवं तमचेतनम् ॥ ५ ॥

śrīrāma uvāca | na sukhāya sukhaṃ yasya duḥkhaṃ dukhāya yasya no | jaḍameva mune manye mānavaṃ tamacetanam || 5 ||

Shri Rama said: I consider that person to be inert and lifeless who does not seek happiness for the sake of happiness nor sorrow for the sake of sorrow.

श्री राम ने कहा: मैं उस व्यक्ति को जड़ और बेजान मानता हूँ जो सुख सुख के लिए नहीं चाहता और दुःख दुःख के लिए नहीं चाहता।

7.169.6

श्रीवसिष्ठ उवाच । चिद्व्योमैकान्तनिष्ठत्वात्प्रयत्नेन विना सुखम् । न वेत्ति शुद्धबोधात्मा यः स विश्रान्त उच्यते ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | cidvyomaiakāntaniṣṭhatvātprayatnena vinā sukham | na vetti śuddhabodhātmā yaḥ sa viśrānta ucyate || 6 ||

Sri Vasistha said: One who, being established in the pure consciousness of the self, experiences bliss without effort, is said to be at peace.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: जो आत्मा के शुद्ध बोध में स्थित होकर, प्रयास के बिना सुख का अनुभव करता है, वह शांत कहलाता है।

7.169.7

सर्व एव परिक्षीणाः संदेहा यस्य वस्तुतः । सर्वार्थेषु विवेकेन स विश्रान्तः परे पदे ॥ ७ ॥

sarva eva parikṣīṇāḥ saṃdehā yasya vastutaḥ | sarvārtheṣu vivekena sa viśrāntaḥ pare pade || 7 ||

One whose all doubts are completely removed and who discerns all things with discrimination is at peace in the supreme state.

जिसके सभी संदेह पूर्ण रूप से दूर हो गए हैं और जो सब कुछ विवेक से समझता है, वह परम अवस्था में शांत है।

7.169.8

यस्य कस्मिंश्चिदप्यर्थे क्वचिद्रसिकतास्ति नो । व्यवहारवतोऽप्यन्तः स विश्रान्त उदाहृतः ॥ ८ ॥

yasya kasmiṃścidapyarthe kvacidrasikatāsti no | vyavahāravato'pyantaḥ sa viśrānta udāhṛtaḥ || 8 ||

One who has no attachment to any object, even in worldly affairs, is said to be at peace.

जिसका किसी भी वस्तु से कोई आसक्ति नहीं है, चाहे वह संसारिक मामले हों, वह शांत कहलाता है।

7.169.9

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः । यथाप्राप्तं विहरतः स विश्रान्त इति स्मृतः ॥ ९ ॥

yasya sarve samārambhāḥ kāmasaṃkalpavarjitāḥ | yathāprāptaṃ viharataḥ sa viśrānta iti smṛtaḥ || 9 ||

One whose all endeavors are free from desires and resolutions, and who lives as things come, is said to be at peace.

जिसके सभी प्रयास इच्छाओं और संकल्पों से मुक्त हैं, और जो जैसे चीजें आती हैं उसी प्रकार जीता है, वह शांत कहलाता है।

7.169.10

अविश्रामे निरालम्बे दीर्घे संसारवर्त्मनि । चित्त्वादात्मनि विश्रान्तिः प्राप्ता येन जयत्यसौ ॥ १० ॥

aviśrāme nirālambe dīrghe saṃsāravartmani | cittvādātmani viśrāntiḥ prāptā yena jayatyasau || 10 ||

In the endless, supportless path of the world, one who finds rest in the pure consciousness of the self is victorious.

अंतहीन, असहारा संसार के मार्ग में, जो आत्मा के शुद्ध बोध में विश्राम पाता है, वह विजयी है।

7.169.11

धावित्वा ये चिरं कालं प्राप्तविश्रान्तयः स्थिताः । ते सुप्ता इव लक्ष्यन्ते व्यवहारपरा अपि ॥ ११ ॥

dhāvitvā ye ciraṃ kālaṃ prāptaviśrāntayaḥ sthitāḥ | te suptā iva lakṣyante vyavahāraparā api || 11 ||

Those who have been running for a long time and have become exhausted stand as if asleep, even though they are engaged in worldly activities.

जो लोग लंबे समय तक दौड़ते रहे हैं और थक गए हैं, वे सोए हुए की तरह दिखते हैं, भले ही वे व्यवहार में लगे हुए हों।

7.169.12

ते हि चेत्यचिदाभासनभस्याभान्ति भामयाः । भास्करा उदिता नित्यं नेह तिष्ठन्ति ते क्वचित् ॥ १२ ॥

te hi cetya cidābhāsanabhasyābhānti bhāmayāḥ | bhāskarā uditā nityaṃ neha tiṣṭhanti te kvacit || 12 ||

Those who are the essence of consciousness and the reflection of the self do not remain here permanently, even though they are like the rising sun.

जो चेतना के सार और आत्मा के प्रतिबिंब हैं, वे यहाँ स्थायी रूप से नहीं रहते, भले ही वे उगते सूर्य की तरह हों।

7.169.13

सदेहा व्यवहारस्था अपि सुप्ता इवोत्तमाः । प्रक्षीणा इव लक्ष्यन्ते जडाभा न तु ते जडाः ॥ १३ ॥

sadehā vyavahārasthā api suptā ivottamāḥ | prakṣīṇā iva lakṣyante jaḍābhā na tu te jaḍāḥ || 13 ||

Even those who are embodied and engaged in worldly activities appear as if asleep and weak, but they are not actually inert.

भले ही वे शरीर धारी हों और व्यवहार में लगे हुए हों, वे सोए हुए और कमजोर की तरह दिखते हैं, लेकिन वे वास्तव में जड़ नहीं हैं।

7.169.14

सुप्ता इवेह शय्यासु ये स्वप्ननगरे स्थिताः । सुप्ता इति त उच्यन्ते न तु ते जडतां गताः ॥ १४ ॥

suptā iveha śayyāsu ye svapnanagare sthitāḥ | suptā iti ta ucyante na tu te jaḍatāṃ gatāḥ || 14 ||

Those who are in the dream city, lying on beds as if asleep, are called asleep, but they have not become inert.

जो स्वप्न नगर में हैं, पलंगों पर सोए हुए की तरह, उन्हें सोया हुआ कहा जाता है, लेकिन वे जड़ नहीं हुए हैं।

7.169.15

दीर्घाध्वपरिविश्रान्तो विश्रान्तो न ददाति यः । वाक्यं स सुखमौनस्थः प्रोच्यते न जडाकृतिः ॥ १५ ॥

dīrghādhvapariviśrānto viśrānto na dadāti yaḥ | vākyaṃ sa sukhamounasthaḥ procyate na jaḍākṛtiḥ || 15 ||

One who is exhausted from a long journey and does not speak a word is called a silent one, not inert.

जो लंबी यात्रा से थक गया है और एक शब्द नहीं बोलता, उसे मौनी कहा जाता है, जड़ नहीं।

7.169.16

या निशा सर्वभूतानामविद्यास्तमयात्मिका । परो बोधः परा शान्तिस्तत्रासौ सममास्थितः ॥ १६ ॥

yā niśā sarvabhūtānāmavidyāstamayātmikā | paro bodhaḥ parā śāntistatrāsau samamāsthitaḥ || 16 ||

This ignorance is the night for all beings, in which the self is immersed in the darkness of ignorance. Beyond this, there is supreme knowledge and supreme peace, where the self is established in equanimity.

यह अज्ञान सभी प्राणियों के लिए रात है, जिसमें आत्मा अज्ञान के अंधकार में डूबी हुई है। इसके पार परम ज्ञान और परम शांति है, जहाँ आत्मा समता में स्थित है।

7.169.17

यस्मिञ्जाग्रति भूतानि दृश्येऽस्मिन्दुःखदायिनि । तत्रासौ सततं सुप्तस्तन्न पश्यत्यसौ सुखी ॥ १७ ॥

yasmiñjāgrati bhūtāni dṛśye'sminduḥkhadāyini | tatrāsau satataṃ suptastanna paśyatyasau sukhī || 17 ||

In this waking state, where all beings are seen and which causes suffering, the self is always asleep and does not see the happiness.

इस जागृत अवस्था में, जहाँ सभी प्राणी दिखाई देते हैं और जो दुःख पैदा करती है, आत्मा हमेशा सोई हुई है और सुख नहीं देखती।

7.169.18

यः कर्मौघमनादृत्य स्वात्मन्येवावतिष्ठते । स आत्माराम इत्युक्तो न जडोऽसौ रघूद्वह ॥ १८ ॥

yaḥ karmaughamanādṛtya svātmanyevāvatiṣṭhate | sa ātmārāma ityukto na jaḍo'sau raghūdvaha || 18 ||

One who, disregarding the flood of actions, remains established in the self, is called self-delighted and is not inert, O Raghava.

जो कर्मों की बाढ़ को अनदेखा करके आत्मा में ही स्थित रहता है, वह आत्माराम कहलाता है और जड़ नहीं है, हे रघुवंशी।

7.169.19

दुःखादतिगतः सोऽस्मात्प्राप्तः पारं भवाम्बुधेः । तिष्ठत्यनुभवन्भव्यो विश्रान्तिसुखमात्मनि ॥ १९ ॥

duḥkhādatigataḥ so'smātprāptaḥ pāraṃ bhavāmbudheḥ | tiṣṭhatyanubhavanbhavyo viśrāntisukhamātmani || 19 ||

Having transcended this suffering, one attains the other shore of the ocean of existence and experiences the bliss of rest in the self.

इस दुःख से ऊपर उठकर, वह अस्तित्व के समुद्र के पार पहुँच जाता है और आत्मा में विश्राम के सुख का अनुभव करता है।

7.169.20

दीर्घाध्वनि परिश्रान्तो विषयैश्चतुरैश्चिरम् । भोगभावातुरः क्रूरैः प्रोत्थितः पथि डामरैः ॥ २० ॥

dīrghādhvani pariśrānto viṣayaiścaturaiścram | bhogabhāvāturaḥ krūraiḥ prothitaḥ pathi ḍāmaraiḥ || 20 ||

Exhausted on the long journey, tired of the four enjoyments for a long time, afflicted by the cruel state of enjoyment, he has arisen on the path of the self.

लंबे सफर पर थक गया, चार विषयों से लंबे समय तक थका हुआ, भोग की क्रूर अवस्था से पीड़ित, वह आत्मा के पथ पर उठ खड़ा हुआ है।

7.169.21

जरातुषाराशनिभिर्भूयोभूयो जडीकृतः । जन्मजङ्गलसारङ्गो व्यर्थव्यग्रविहारवान् ॥ २१ ॥

jarātuṣārāśanibhirbhūyobhūyo jaḍīkṛtaḥ | janmajaṅgalasāraṅgo vyarthavyagravihāravān || 21 ||

Repeatedly made dull by old age, cold, and lightning, the deer of the forest of birth engages in futile, restless activities.

बार-बार बुढ़ापे, ठंड और बिजली से मूर्ख बनाया गया, जन्म के जंगल का हिरण व्यर्थ और बेचैन व्यवहार करता है।

7.169.22

परमात्मपरिक्रान्तो दुःखकण्टकसंकटे । सुदुष्प्रापसुखच्छाये पान्थः संसारवर्त्मनि ॥ २२ ॥

paramātmaparikrānto duḥkhakaṇṭakasaṅkaṭe | sudurprāpasukhacchāye pānthaḥ saṃsāravartmani || 22 ||

The traveler on the path of worldly existence, having abandoned the Supreme Self, is in the midst of the thorns of sorrow and difficulties, and the shade of hard-to-attain happiness.

संसार के मार्ग पर यात्री, परमात्मा को छोड़कर, दुःख और कठिनाइयों के कांटों के बीच है, और दुर्लभ सुख की छाया में है।

7.169.23

दुष्कृतैः कृतपाथेयो लुठन्क्षीणः पदे पदे । अर्थानर्थमयैर्मार्गैः संकटैर्विवशीकृतः ॥ २३ ॥

duṣkṛtaiḥ kṛtapātheyo luṭhankṣīṇaḥ pade pade | arthānarthamayairmārgaiḥ saṅkaṭairvivashīkṛtaḥ || 23 ||

Made to drink the cup of sins, rolling and exhausted at every step, he is rendered helpless by paths full of meaningless pursuits and difficulties.

पापों का प्याला पीने के लिए मजबूर किया गया, हर कदम पर लुढ़कता और थका हुआ, वह व्यर्थ प्रयासों और कठिनाइयों से भरे मार्गों से बेबस हो गया है।

7.169.24

संसारजलधेः पारं प्राप्य भूतविवर्जितम्। अशय्योऽतिप्रमाबुद्धः स शेते सुखमात्मवान्॥ २४॥

saṃsārajaladheḥ pāraṃ prāpya bhūtavivarjitam | aśayyo'tipramābuddhaḥ sa śete sukhamātmavān || 24 ||

Having reached the other shore of the ocean of worldly existence, devoid of beings, he, with supreme wisdom, sleeps happily, self-possessed.

संसार के सागर के पार पहुंचकर, जीवों से रहित, वह परम बुद्धि से सुखपूर्वक सोता है, आत्मसंयमित।

7.169.25

अपसर्पं निरस्तेहमस्वप्नमसुषुप्तकम्। प्रबुद्धमबहिर्निद्रं हा शेते सुखमात्मवान्॥ २५॥

apasarpaṃ nirastehamasvapnamasuṣuptakam | prabuddhamabahirnidraṃ hā śete sukhamātmavān || 25 ||

Having abandoned the ego, dreamless, and not deeply asleep, he is awakened, not outwardly asleep, and sleeps happily, self-possessed.

अहंकार को छोड़कर, स्वप्नरहित, और गहरी नींद से रहित, वह जाग्रत है, बाहरी नींद से रहित, और सुखपूर्वक सोता है, आत्मसंयमित।

7.169.26

जात्यश्ववदिहाजातिरश्नन्गच्छन्श्वसन्वदन्। लोकमध्ये महारण्ये हा शेते सुखमात्मवान्॥ २६॥

jātyaśvavadihājātiraśnangacchanśvasanvadan | lokamadhye mahāraṇye hā śete sukhamātmavān || 26 ||

Just as a horse, born in this world, eats, moves, and breathes, so does the self-realized person sleep peacefully in the midst of the world, which is like a great forest.

जैसे घोड़ा, इस दुनिया में पैदा होकर, खाता है, चलता है, और साँस लेता है, वैसे ही आत्मज्ञानी व्यक्ति दुनिया के बीच, जो एक बड़ा जंगल है, सुख से सोता है।

7.169.27

अपूर्वैव घना निद्रा कापि सा तत्त्वदर्शिनाम्। या न शाम्यति कल्पाभ्रारवैर्नाङ्गविकर्तनैः॥ २७॥

apūrvaiva ghanā nidrā kāpi sā tattvadarśinām | yā na śāmyati kalpābhraravairnāṅgavikartanaiḥ || 27 ||

The profound sleep of those who see the truth is unique and deep. It is not disturbed by the roars of the clouds of the aeons or by the dismemberment of the body.

सत्य को देखने वालों की गहरी नींद अनोखी और गहरी होती है। यह युगों के बादलों की गर्जना या शरीर के विखंडन से विचलित नहीं होती।

7.169.28

अपूर्वैव घना निद्रा कापि सा तत्त्वदर्शिनाम्। प्रबुद्धानामपि हि या निमीलयति दृग्दृशौ॥ २८॥

apūrvaiva ghanā nidrā kāpi sā tattvadarśinām | prabuddhānāmapi hi yā nimīlayati dṛgdṛśau || 28 ||

The profound sleep of those who see the truth is unique and deep. It even closes the eyes of those who are awake.

सत्य को देखने वालों की गहरी नींद अनोखी और गहरी होती है। यह जागरूक लोगों की आँखें भी बंद कर देती है।

7.169.29

अनिमीलितनेत्रस्य यस्य विश्वं प्रलीयते। स क्षीवः परमार्थेन हा शेते सुखमात्मवान्॥ २९॥

animīlitanetrasya yasya viśvaṃ pralīyate | sa kṣīvaḥ paramārthena hā śete sukhamātmavān || 29 ||

For the one whose eyes are not closed and for whom the universe dissolves, that person sleeps peacefully in the ultimate reality.

जिसकी आँखें बंद नहीं होतीं और जिसके लिए ब्रह्मांड विलीन हो जाता है, वह व्यक्ति परम सत्य में सुख से सोता है।

7.169.30

विनिगीर्य जगत्सर्वं परमां पूर्णतां गतः । आतृप्तेरमृतं पीत्वा हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३० ॥

vinigīrya jagatsarvaṃ paramāṃ pūrṇatāṃ gataḥ | ātṛpteramṛtaṃ pītvā hā śete sukhamātmavān || 30 ||

Having swallowed the entire world and attained the ultimate fullness, having drunk the nectar of satisfaction, that self-realized person sleeps peacefully.

सारे संसार को निगल कर और परम पूर्णता प्राप्त करके, संतुष्टि के अमृत को पीकर, वह आत्मज्ञानी व्यक्ति सुख से सोता है।

7.169.31

निरानन्दमहानन्दी सुखमद्वैतमक्षयम् । निरालोकमहालोको हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३१ ॥

nirānandamahānandī sukhamadvaitamakṣayam | nirālokamahāloko hā śete sukhamātmavān || 31 ||

The one who is blissful without joy, who experiences the eternal, non-dual bliss, who is the great light without light, that self-realized one sleeps happily.

जो आनंद के बिना भी आनंदमय है, जो अद्वैत और अक्षय सुख का अनुभव करता है, जो प्रकाश के बिना भी महान प्रकाश है, वह आत्मज्ञानी सुखपूर्वक सोता है।

7.169.32

लोभान्धकारोपरमो लोकलम्पटतां गतः । अघनत्वघनाभोगो हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३२ ॥

lobhāndhakāroparamo lokalampaṭatāṃ gataḥ | aghanatvaghanābhogo hā śete sukhamātmavān || 32 ||

The one who has overcome the darkness of greed and has attained the state of being a wanderer in the world, that self-realized one sleeps happily, experiencing the dense bliss of sinlessness.

जो लोभ के अंधकार को पार कर चुका है और लोक में भटकने वाला बन गया है, वह आत्मज्ञानी पापरहित घनीभूत आनंद का अनुभव करते हुए सुखपूर्वक सोता है।

7.169.33

अनन्तदुःखमाशान्तमशान्तं जनतास्थितौ । अबहिर्मुखमत्योगि हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३३ ॥

anantaduḥkhamāśāntamaśāntaṃ janatāsthitau | abahirmukhamatyogi hā śete sukhamātmavān || 33 ||

The one who has calmed the endless sorrows and is established in the state of peace among people, that self-realized one sleeps happily, with their focus turned inward.

जो अनंत दुःखों को शांत कर चुका है और लोगों में शांति की अवस्था में स्थित है, वह आत्मज्ञानी अपना ध्यान अंतर्मुखी करके सुखपूर्वक सोता है।

7.169.34

अणीयसामणीयांसं स्थविष्ठं च स्थवीयसाम् । कृत्वात्मानं नभःशय्यं हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३४ ॥

aṇīyasāmaṇīyāṃsaṃ sthaviṣṭhaṃ ca sthavīyasām | kṛtvātmānaṃ nabhaḥśayyaṃ hā śete sukhamātmavān || 34 ||

The one who has made themselves the smallest of the small and the greatest of the great, making the sky their bed, that self-realized one sleeps happily.

जो अपने आप को सबसे छोटा और सबसे बड़ा बना लेता है और आकाश को अपना बिस्तर बना लेता है, वह आत्मज्ञानी सुखपूर्वक सोता है।

7.169.35

परमाणौ परमाणौ जगत्कोटिशतान्यपि । अणौ स्थूले दधद्देहे हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३५ ॥

paramāṇau paramāṇau jagatkoṭiśatānyapi | aṇau sthūle dadhaddehe hā śete sukhamātmavān || 35 ||

The one who contains countless worlds in the smallest particle and the largest form, that self-realized one sleeps happily in the body.

जो सबसे छोटे कण और सबसे बड़े रूप में असंख्य संसारों को समेटे हुए है, वह आत्मज्ञानी शरीर में सुखपूर्वक सोता है।

7.169.36

कुर्वन्संहारसर्गौघानकुर्वंश्च कथंचन । परमालोकशय्यायां हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३६ ॥

kurvansaṃhārasargaughānakurvaṃśca kathaṃcana | paramālokaśayyāyāṃ hā śete sukhamātmavān || 36 ||

The self, without creating or destroying the universe in any way, sleeps peacefully in the supreme abode.

आत्मा, सृष्टि का निर्माण या विनाश किसी भी तरीके से न करते हुए, परम आलोक शय्या पर सुख से सोता है।

7.169.37

संसारनिचयस्वप्नं परिज्ञाय सुषुप्तताम् । नयन्प्रकटदिग्दीर्घां हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३७ ॥

saṃsāranicayasvapnaṃ parijñāya suṣuptatām | nayanprakaṭadigdīrghāṃ hā śete sukhamātmavān || 37 ||

Understanding the worldly existence as a dream, the self attains a state of deep sleep and sleeps peacefully, experiencing the vast, manifest directions.

संसार के अस्तित्व को स्वप्न के रूप में समझकर, आत्मा गहरी नींद की अवस्था को प्राप्त करता है और विशाल, प्रकट दिशाओं का अनुभव करते हुए सुख से सोता है।

7.169.38

सर्वेषां जगदर्थानां सत्तासामान्यतां गतः । आकाशादधिको व्यापी हा शेतेसुखमात्मवान् ॥ ३८ ॥

sarveṣāṃ jagadarthānāṃ sattāsāmānyatāṃ gataḥ | ākāśādadhiko vyāpī hā śetesukhamātmavān || 38 ||

Having attained the common essence of the existence of all worldly objects, the self, which is more pervasive than space, sleeps peacefully.

सभी संसारिक वस्तुओं के अस्तित्व की सामान्य सत्ता को प्राप्त करने के बाद, आकाश से अधिक व्यापक आत्मा सुख से सोता है।

7.169.39

अच्छाच्छमम्बरं कृत्वा जगदप्यम्बरीकृतम् । शान्तशब्दपरश्वासं हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ३९ ॥

acchācchamambaraṃ kṛtvā jagadapyambarīkṛtam | śāntaśabdaparaśvāsaṃ hā śete sukhamātmavān || 39 ||

Making the pure sky and also making the world like the sky, the self sleeps peacefully with tranquil breaths and sounds.

शुद्ध आकाश को बनाकर और संसार को भी आकाश के समान बनाकर, आत्मा शांत श्वास और ध्वनि के साथ सुख से सोता है।

7.169.40

इदमस्मज्जगत्पश्यन्स्वयमाकाशकोणके । विशदाकाशकोशात्मा हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ४० ॥

idamasmadjagatpaśyansvayamākāśakoṇake | viśadākāśakośātmā hā śete sukhamātmavān || 40 ||

Seeing this world as part of oneself in the corner of the sky, the self, which is the pure essence of space, sleeps peacefully.

इस संसार को आकाश के कोण में अपना हिस्सा समझकर, आत्मा, जो शुद्ध आकाश का सार है, सुख से सोता है।

7.169.41

यथा प्रवाहसंप्राप्तव्यवहारमनोरमे । तृण्यास्तरणविश्रान्तो हा शेते सुखमात्मवान् ॥ ४१ ॥

yathā pravāhasaṃprāptavyavahāramanorame | tṛṇyāstaraṇaviśrānto hā śete sukhamātmavān || 41 ||

Just as one who is engaged in worldly affairs and finds comfort in resting on a bed of grass, so too the self-realized person rests in bliss.

जैसे कोई व्यक्ति जो व्यवहार में लगा हुआ है, घास के बिछौने पर विश्राम करता है, वैसे ही आत्मज्ञानी पुरुष सुख में विश्राम करता है।

7.169.42

परमेण स्वयत्नेन परिज्ञानात्स्वरूपिणा । स्वप्नसंदर्शनेनैव जीवन् खमिव खेन खे ॥ ४२ ॥

parameṇa svayatnena parijñānātsvarūpiṇā | svapnasandarśanenaiva jīvan khamiva khena khe || 42 ||

By supreme effort and by the knowledge of one's true nature, one experiences life as if in a dream, moving freely in the sky.

परम प्रयास और अपने वास्तविक स्वरूप के ज्ञान से, जीवन का अनुभव स्वप्न की तरह होता है, जैसे आकाश में स्वतंत्र रूप से चलता है।

7.169.43

ज्ञानेनाकाशकल्पेन धर्मान् गगनसंनिभान् । ज्ञेन यत्नेन संबुद्धः परमाम्बरतां गतः ॥ ४३ ॥

jñānenākāśakalpena dharmān gaganasannibhān | jñena yatnena saṃbuddhaḥ paramāmbaratāṃ gataḥ || 43 ||

By the knowledge that is like the sky, one realizes the duties that are like the sky, and by effort, one becomes enlightened and attains the supreme state.

आकाश के समान ज्ञान से, आकाश के समान कर्तव्यों को समझता है, और प्रयास से, बुद्धिमान होकर परम अवस्था को प्राप्त करता है।

7.169.44

प्रबुद्धः सुप्तः सुप्तोपि प्रबुद्धो रमतेनिशम्सुषुप्तोभूत्ततो जाग्रत्स्वप्नार्थसुहृदा सह ॥ ४४ ॥

prabuddhaḥ suptaḥ suptopi prabuddho ramateniśamsuṣuptobhūttato jāgratsvapnārthasuhṛdā saha || 44 ||

The awakened one, even while sleeping, remains awakened and enjoys bliss continuously. From the state of deep sleep, he awakens to the reality of dreams and waking states with his dear friends.

जाग्रत व्यक्ति, even सोते हुए भी, जाग्रत रहता है और निरंतर आनंद लेता है। गहरी नींद की अवस्था से, वह सपनों और जाग्रत अवस्था की वास्तविकता को अपने प्रिय मित्रों के साथ जानता है।

7.169.45

जन्मान्तरैकसहवाससमाशयेन चित्रानुवृत्तिमधुरेण चिरंतनेन । मित्रेण सार्धमखिलानि दिनानि नीत्वा विश्रान्तिमेष्यति पदे परमे चिरं सः ॥ ४५ ॥

janmāntaraikasahavāsasamāśayena citrānuvṛttimadhureṇa ciraṃtanena | mitreṇa sārdhamakhilāni dināni nītvā viśrāntimeṣyati pade parame ciraṃ saḥ || 45 ||

By the long-held desire for companionship in a single lifetime, with the sweet and varied experiences, having spent all days with a friend, one will attain eternal rest in the supreme state.

एक जन्म में साथ रहने की लंबी इच्छा से, मधुर और विविध अनुभवों के साथ, एक मित्र के साथ सभी दिन बिताकर, वह परम अवस्था में चिरस्थायी विश्राम प्राप्त करेगा।

Chapter 170

7.170.1

श्रीराम उवाच । ब्रह्मन्कोऽस्य सुहृद्ब्रूहि येनासौ रमते सह । रमणं किंस्वभावं स्यादुत रत्यात्म वास्य तत् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | brahmannko'sya suhṛdbrahmi yenāsau ramate saha | ramaṇaṃ kiṃsvabhāvaṃ syāduta ratyātma vāsya tat || 1 ||

Sri Rama said: O Brahman, tell me who is his true friend with whom he enjoys? What is the nature of enjoyment, or is it the essence of pleasure?

श्री राम ने कहा: हे ब्रह्मन्, बताओ कि कौन उसका सच्चा मित्र है जिसके साथ वह आनंद लेता है? आनंद का स्वभाव क्या है, या यह आनंद का सार है?

7.170.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्वप्रवाहेहितं नाम स्वप्रायेहितनाम च । स्वकर्म नाम चास्यास्ते मित्रमेकमकृत्रिमम् ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | svapravāhehitaṃ nāma svaprāyehitanaṃ ca | svakarma nāma cāsyāste mitramekamakṛtrimam || 2 ||

Vasishtha said: The true friend is one who is beneficial in the natural flow of life, beneficial in one's own efforts, and beneficial in one's own actions. This is the one true, genuine friend.

वसिष्ठ ने कहा: सच्चा मित्र वह है जो जीवन के प्राकृतिक प्रवाह में, अपने प्रयासों में, और अपने कर्मों में लाभदायक होता है। यह एकमात्र सच्चा, वास्तविक मित्र है।

7.170.3

पितृवद्विहिताश्वासं दारा इव नियन्त्रणम् । संकटेषु दुरन्तेषु नित्यमव्यभिचारि च ॥ ३ ॥

pitṛvadvihitāśvāsaṃ dārā iva niyantraṇam | saṃkaṭeṣu duranteṣu nityamavyabhicāri ca || 3 ||

Like a father, it provides reassurance; like a wife, it controls. In difficult and insurmountable situations, it is always steadfast and unfailing.

पिता की तरह, यह आश्वासन देता है; पत्नी की तरह, यह नियंत्रण करता है। कठिन और अजेय स्थितियों में, यह हमेशा दृढ़ और अटूट रहता है।

7.170.4

अशङ्कितोपचरणं सुसंपादितनिर्वृति । कोपेष्वकोपनतया वितीर्णावर्जनामृतम् ॥ ४ ॥

aśaṅkitopacaraṇaṃ susaṃpāditanirvṛti | kopeṣvakopanatayā vitīrṇāvarjanāmṛtam || 4 ||

It serves without fear, accomplishes contentment, remains calm in anger, and offers the nectar of acceptance.

यह भय के बिना सेवा करता है, संतोष प्राप्त करता है, क्रोध में शांत रहता है, और स्वीकार का अमृत प्रदान करता है।

7.170.5

दुर्गदुर्गमदुर्वारदोषोद्धरणतत्परम् । सर्वविश्वासरत्नानां कोश आशैशवोषितम् ॥ ५ ॥

durgadurgamadurvāradoṣoddharaṇatatparam | sarvaviśvāsaratnānāṃ kośa āśaiśavoṣitam || 5 ||

It is dedicated to removing the faults that are difficult, inaccessible, and hard to overcome. It is the treasury of all trustworthy gems, nurtured with affection.

यह उन दोषों को दूर करने में समर्पित है जो कठिन, अभिगम्य और दुर्जेय हैं। यह सभी विश्वसनीय रत्नों का भंडार है, जो स्नेह से पाला जाता है।

7.170.6

सहपांसुकृताक्रीडमाबाल्यादेव संगतम्विनिवारितदुश्चेष्टं पितृवद्रक्षणोन्मुखम् ॥ ६ ॥

sahapāṃsukṛtākrīḍamābālyādeva saṃgatamvinivāritaduścesṭaṃ pitṛvadrakṣaṇonmukham || 6 ||

From childhood, he has been playing with dust and sand, avoiding bad behavior, and always looking towards his father with respect.

बचपन से ही वह धूल और रेत के साथ खेलता रहा है, बुरे व्यवहार से बचता रहा है, और हमेशा अपने पिता की ओर सम्मान से देखता रहा है।

7.170.7

वह्नेरिवौष्ण्यं सौगन्ध्यं कुसुमस्येव सर्वदाविनाभावि विमलं रवेरिव च वासरम् ॥ ७ ॥

vahnerivauṣṇyaṃ saugandhyaṃ kusumasyeva sarvadāavinābhāvi vimalaṃ raveriva ca vāsaram || 7 ||

Like the heat of fire, the fragrance of flowers is always present and pure like the sun's rays during the day.

अग्नि की तरह गर्मी, फूलों की सुगंध हमेशा मौजूद रहती है और दिन के दौरान सूर्य की किरणों की तरह पवित्र होती है।

7.170.8

लालनैकरतं नित्ये पालनैकपरायणम्सर्वसंकटसंघट्टरक्षणैकसमुद्यतम् ॥ ८ ॥

lālanaikarataṃ nitye pālanaikaparāyaṇamsarvasaṃkaṭasaṃghaṭṭarakṣaṇaikasamudyatam || 8 ||

Always engaged in nurturing, solely devoted to protection, and always ready to safeguard from all difficulties.

हमेशा पालन-पोषण में लगा हुआ, सिर्फ सुरक्षा में तल्लीन, और हर कठिनाई से बचाने के लिए हमेशा तैयार।

7.170.9

हेम्नोऽग्निरिव देहस्य सर्वावस्थस्य शुद्धिदमिदं हेयमुपादेयमिति दर्शनतत्परम् ॥ ९ ॥

hemno'gniriva dehasya sarvāvasthasya śuddhidamidaṃ heyamupādeyamiti darśanatatparam || 9 ||

Like the fire of gold, this purifies the body in all states, distinguishing between what is to be accepted and what is to be rejected, according to this view.

सोने की अग्नि की तरह, यह शरीर को हर अवस्था में शुद्ध करता है, और इस दृष्टिकोण के अनुसार यह ग्रहण करने योग्य और त्यागने योग्य के बीच अंतर करता है।

7.170.10

आह्लादकमनिन्द्याभिः कथाभिरिव नागरम्सच्चेष्टामणिमाणिक्यभाण्डसंभारमन्दिरम् ॥ १० ॥

āhlādakamanindyābhiḥ kathābhiriva nāgaramsacceṣṭāmaṇimāṇikyabhāṇḍasaṃbhāramandiram || 10 ||

Like delightful and flawless stories, the city is adorned with true actions, gems, and jeweled vessels.

जैसे आनंददायक और निर्दोष कहानियाँ, शहर सच्चे कार्यों, रत्नों, और रत्नजड़ित भांडों से सजा हुआ है।

7.170.11

सूर्यस्तम इवाजस्रमप्रदर्शयदप्रियम् । अनुरक्ता महेलेव प्रियमेवाप्रदर्शयत् ॥ ११ ॥

sūryastama ivājasramapradarśayadapriyam| anuraktā maheleva priyamevāpradarśayat|| 11 ||

The sun always shows its displeasure, but the beloved always shows affection.

सूर्य हमेशा अपना अप्रिय दिखाता है, पर प्रियतमा हमेशा अपना प्रेम दिखाती है।

7.170.12

जनं प्रियंवदं कुर्वत्प्रियमेव समाचरत्। पेशलं मधुरं स्निग्धमक्षुब्धमुदिताशयम्॥ १२॥

janaṃ priyaṃvadaṃ kurvatpriyameva samācarat| peśalaṃ madhuraṃ snigdhamakṣubdhamuditāśayam|| 12 ||

One should always speak kindly and act with affection, being gentle, sweet, affectionate, calm, and cheerful.

एक को हमेशा मधुर बोलना चाहिए और प्रेम से काम करना चाहिए, कोमल, मीठा, स्नेही, शांत और प्रसन्न होना चाहिए।

7.170.13

लोकोपचारकं पूज्यं स्मितपूर्वाभिभाषणम्। कामोपशान्तं सद्रूपं परमार्थैककारणम्॥ १३॥

lokopacārakaṃ pūjyaṃ smitapūrvābhibhāṣaṇam| kāmopaśāntaṃ sadrūpaṃ paramārthaikakāraṇam|| 13 ||

One should be respectful, speak with a smile, be free from desires, have a noble character, and be focused on the ultimate truth.

एक को सम्मानजनक, मुस्कुराहट के साथ बोलना चाहिए, इच्छाओं से मुक्त, उत्तम चरित्र वाला और परम सत्य पर केंद्रित होना चाहिए।

7.170.14

रणेऽज्ञानसमुद्भूते पूर्वं प्रहरणोद्यतम्। अपूर्वनर्मनिर्माणलीलाललनलालकम्॥ १४॥

raṇe'jñānasamudbhūte pūrvaṃ praharaṇodyatam| apūrvnarmanirmāṇalīlālalanalālakam|| 14 ||

In the battle born of ignorance, one should first be ready to strike, but also be playful, charming, and delightful.

अज्ञान से उत्पन्न युद्ध में, एक को पहले मारने के लिए तैयार होना चाहिए, लेकिन खेलने वाला, मोहक और आनंददायक भी होना चाहिए।

7.170.15

पालकं शीलसाराणां दाराणां च कुलस्य च। आधिव्याधिपरीतस्य चेतसोऽमृतमौषधम्॥ १५॥

pālakaṃ śīlasārāṇāṃ dārāṇāṃ ca kulasya ca| ādhivyādhiparītasya cetaso'mṛtamauṣadham|| 15 ||

One should be the protector of virtues, family, and home, and the nectar-like medicine for the mind afflicted by sorrow and disease.

एक को गुणों, परिवार और घर का रक्षक होना चाहिए, और दुःख और रोग से पीड़ित मन के लिए अमृत के समान औषध होना चाहिए।

7.170.16

विशेषविद्यावैदग्ध्यवादवन्द्यविनोदनम्। समानकुलशीलत्वाद्विधाभाव इव स्थितम्॥ १६॥

viśeṣavidyāvaidagdhyavādavaṇḍyavinodanam | samānakulaśīlatvāddvidhābhāva iva sthitam || 16 ||

Due to the similarity in family background and character, it appears as if there are two aspects of the same entity, characterized by exceptional knowledge, skill in debate, praiseworthiness, and entertainment.

कुल और शील की समानता के कारण, ऐसा लगता है कि दो भाव एक ही वस्तु के हैं, जो विशेष ज्ञान, वाद-विवाद में दक्षता, प्रशंसनीयता और मनोरंजन से युक्त हैं।

7.170.17

अनुरक्तान्नृपान्साधून्वदान्यान्कारयत्सदा। यज्ञदानतपस्तीर्थन्यायार्थप्रेरणोन्मुखम्॥ १७॥

anuraktānnṛpānsādhūnvadānyānkārayatsadā | yajñadānatapastīrthanyāyārthapreranoṇmukham || 17 ||

He always makes the devoted kings, virtuous people, and generous ones perform sacrifices, charity, austerities, pilgrimages, justice, and meaningful actions.

वह हमेशा अनुरक्त राजाओं, साधुओं और उदार लोगों को यज्ञ, दान, तपस्या, तीर्थयात्रा, न्याय और अर्थपूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

7.170.18

पुत्रदारद्विजातिस्त्रीभृत्यबन्धुजनैः सह । शुभभोजनपानार्हमुत्तमश्लाघ्यसंगति ॥ १८ ॥

putradāradvijātistrībhṛtyabandhujanaiḥ saha | śubhabhojanapānārhamuttamaślāghyasaṃgati || 18 ||

Along with sons, wives, Brahmins, women, servants, and relatives, he is worthy of auspicious food and drink, and is associated with the most praiseworthy.

अपने पुत्रों, पत्नियों, ब्राह्मणों, स्त्रियों, सेवकों और रिश्तेदारों के साथ, वह शुभ भोजन और पान के योग्य है, और सबसे प्रशंसनीय से जुड़ा हुआ है।

7.170.19

भोगादिबद्धतृष्णत्वं दुःखदं विनिवारयत् । सुस्निग्धसंकथोदारं समाश्वासोत्तमास्पदम् ॥ १९ ॥

bhogādibaddhatṛṣṇatvaṃ duḥkhadaṃ vinivārayat | susnigdhasaṃkathodāraṃ samāśvāsottamāspadam || 19 ||

He removes the sorrow-causing attachment to worldly pleasures and provides excellent consolation through his affectionate and generous conversation.

वह दुःख पैदा करने वाली भोगों में आसक्ति को दूर करता है और अपनी स्नेहपूर्ण और उदार बातचीत से उत्तम सांत्वना प्रदान करता है।

7.170.20

ईदृशेनात्ममित्रेण स कलत्रेण संयुतः । स्वकर्मनाम्ना रमते स्वभावेनैव नेरितः ॥ २० ॥

īdṛśenātmamitreṇa sa kalatreṇa saṃyutaḥ | svakarmanāmnā ramate svabhāvenaiva neritaḥ || 20 ||

United with such a self-friend and spouse, he enjoys his own actions and name, driven by his very nature, not by any external force.

ऐसे आत्ममित्र और पत्नी के साथ जुड़कर, वह अपने कर्म और नाम का आनंद लेता है, किसी बाहरी प्रेरणा के बिना, केवल अपने स्वभाव से प्रेरित होकर।

7.170.21

श्रीराम उवाच । कलत्रमस्य मित्रस्य तदीयस्य मुनीश्वर । किं तत्किंरूपमेव स्यात्समासेनेव मे वद ॥ २१ ॥

śrīrāma uvāca | kalatramasya mitrasya tadīyasya munīśvara | kiṃ tatkiṃrūpameva syātsamāseneva me vada || 21 ||

Shri Ram said: O great sage, what is the form of the wife of this friend of mine? Please tell me briefly.

श्रीराम ने कहा: हे मुनिश्रेष्ठ, मेरे इस मित्र की पत्नी का रूप क्या है? कृपया मुझे संक्षेप में बताएँ।

7.170.22

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्नानदानतपोध्याननामानोऽस्य महामते । सन्ति पुत्रा महात्मानः स्वनुरक्ताखिलप्रजाः ॥ २२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | snānadānatapodhyānanāmāno'sya mahāmate | santi putrā mahātmānaḥ svanuraktākhilaprajāḥ || 22 ||

Shri Vasishta said: O great sage, he has sons who are great souls, devoted to bathing, charity, penance, meditation, and chanting his name. They are beloved by all people.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: हे महामते, उसके पुत्र हैं जो महात्मा हैं, स्नान, दान, तप, ध्यान और उसके नाम का जाप करने में तत्पर हैं। वे सभी लोगों के प्रिय हैं।

7.170.23

चन्द्रलेखेव लोकस्य दृष्ट्यैवाह्लाददायिनी । अविनाभाविनी भार्या मुदितास्यानुरागिणी ॥ २३ ॥

candralekheva lokasya dṛṣṭyaiāhlādadāyinī | avinābhāvinī bhāryā muditāsyānurāgiṇī || 23 ||

Like the moonlight, she is a delight to the world just by her sight. She is an inseparable wife, always joyful and full of affection.

चन्द्रलेखा की तरह, वह दृष्टि से ही लोक को आह्लादित करती है। वह अविनाभाविनी पत्नी है, सदा प्रसन्न और अनुरागपूर्ण है।

7.170.24

करुणाकारणाकीर्णधना हृदयहारिणी । आनन्दजननी चास्य वयस्याऽव्यभिचारिणी ॥ २४ ॥

karuṇākāraṇākīrṇadhanā hṛdayahāriṇī | ānandajananī cāsya vayasyā'vyabhicāriṇī || 24 ||

She is endowed with compassion, captivating the heart. She is a source of joy and a faithful friend, never deviating from her duties.

वह करुणा से भरी हुई है, हृदय को हर लेती है। वह आनन्द की जननी है और एक विश्वासपात्र मित्र है, जो कभी अपने कर्तव्यों से विचलित नहीं होती।

7.170.25

समतास्य मता नित्यमास्ते हृदयवल्लभा । प्रतीहारी पुरः प्रह्वा संमुखं सुखदायिनी ॥ २५ ॥

samatāsya matā nityamāste hṛdayavallabhā | pratīhārī puraḥ prahvā saṃmukhaṃ sukhadāyinī || 25 ||

She is always considered equal to him, dear to the heart. She is a gatekeeper, humble in front, and brings happiness when faced.

वह हमेशा उसके समान मानी जाती है, हृदय की प्रिय है। वह द्वारपाल है, सामने विनम्र है और सामने आने पर खुशी देती है।

7.170.26

धैर्ये धर्मे च धीः साधो नित्यमाधीयते च यासास्य धीरस्य धुर्यस्य पुरो धन्यस्य धावति ॥ २६ ॥

dhairye dharme ca dhīḥ sādho nityamādhīyate ca yāsāsya dhīrasya dhuryasya puro dhanyasya dhāvati || 26 ||

The wise and brave one always meditates on courage and righteousness. The glory of this wise and brave one, who is blessed, shines forth.

बुद्धिमान और साहसी व्यक्ति हमेशा धैर्य और धर्म पर ध्यान करता है। इस बुद्धिमान और साहसी व्यक्ति की कीर्ति, जो धन्य है, चमकती है।

7.170.27

अस्य सन्ना समं स्कन्धे सर्वदैव महौजसःविषयारिजये राज्ञो मैत्री मन्त्रप्रदायिनी ॥ २७ ॥

asya sannā samaṃ skandhe sarvadaiva mahaujasaḥviṣayārijaye rājño maitrī mantrapradāyinī || 27 ||

This one, who is always powerful and equal to the shoulder, gives friendly advice to the king in conquering the enemy's territory.

यह व्यक्ति, जो हमेशा शक्तिशाली और कंधे के बराबर है, राजा को शत्रु के क्षेत्र को जीतने में मित्रतापूर्ण सलाह देता है।

7.170.28

कार्याणामार्यमर्यादाचार्या चातुर्यशालिनीसर्वेषामस्य मान्यस्य सत्यता स्वार्थदायिनी ॥ २८ ॥

kāryāṇāmāryamaryādācāryā cāturyaśālinīsarveṣāmasya mānyasya satyatā svārthadāyinī || 28 ||

This respected one, who is skilled in the duties of noble boundaries and cleverness, is the truth and the giver of self-interest to all.

यह सम्मानित व्यक्ति, जो उत्तम कर्तव्यों और चतुराई में कुशल है, सभी के लिए सत्य और स्वार्थ देने वाला है।

7.170.29

इत्येवंपरिवारेण मित्रेण सह मन्त्रिणास्वकर्मणा व्यवहरन्न हृष्यति न कुप्यति ॥ २९ ॥

ityevaṃparivāreṇa mitreṇa saha mantriṇāsvakarmaṇā vyavaharanna hṛṣyati na kupyati || 29 ||

Thus, with such companions and advisors, performing one's own duties, one does not rejoice nor get angry.

इस प्रकार, ऐसे साथियों और सलाहकारों के साथ, अपने कर्तव्यों को करते हुए, वह न खुश होता है न गुस्सा होता है।

7.170.30

स यथास्थितमेवास्ते विनिर्वाणमना मुनिःचित्रार्पित इवाजस्रं लोके व्यवहरन्नपि ॥ ३० ॥

sa yathāsthitamevāste vinirvāṇamanā muniḥcitrārpita ivājasraṃ loke vyavaharannapi || 30 ||

That sage, with a mind free from desires, remains as he is, engaged in the world as if painted with various colors.

वह मुनि, जिसका मन इच्छाओं से मुक्त है, जैसा है वैसा ही रहता है, दुनिया में विभिन्न रंगों से रंगा हुआ सा लगता है।

7.170.31

वस्तुशून्येषु वादेषु मूकः शैलमयो यथा । निष्प्रयोजनशब्देषु परं बाधिर्यमागतः ॥ ३१ ॥

vastuśūnyeṣu vādeṣu mūkaḥ śailamayo yathā | niṣprayojanaśabdeṣu paraṃ bādhiryamāgataḥ || 31 ||

In arguments that are devoid of substance, he is like a stone statue, mute | In useless words, he has attained the ultimate deafness

जब बातचीत में कोई वस्तु नहीं होती, तो वह पत्थर की मूर्ति की तरह मूक हो जाता है | जब बेकार की बातें होती हैं, तो वह पूरी तरह से बहरा हो जाता है

7.170.32

लोकाचारविरुद्धेषु शवं सकलकर्मसु । आर्याचारविचारेषु वासुकिर्वा बृहस्पतिः ॥ ३२ ॥

lokācāraviruddeṣu śavaṃ sakalakarmasu | āryācāravicāreṣu vāsukirvā bṛhaspatiḥ || 32 ||

In actions that are contrary to worldly customs, he is like a corpse | In the consideration of noble conduct, he is like Vasuki or Brihaspati

जब काम लोकाचार के विरुद्ध होते हैं, तो वह शव की तरह होता है | जब आर्य आचार का विचार होता है, तो वह वासुकि या बृहस्पति की तरह होता है

7.170.33

प्रवृत्तवाक्पुण्यकथो जिह्मानां प्रतिभानवान् । निमेषेणैव निर्णेता वक्ताशु बहु वस्तुनः ॥ ३३ ॥

pravṛttavākpuṇyakatho jihmānāṃ pratibhānavān | nimeṣeṇaiva nirṇetā vaktāśu bahu vastunaḥ || 33 ||

He is a speaker of virtuous words, devoid of crookedness, endowed with intelligence | He decides quickly and speaks much about various things

वह पुण्य की बातें करने वाला है, टेढ़ेपन से रहित, बुद्धिमान | वह तुरंत निर्णय लेता है और अनेक विषयों पर बहुत बोलता है

7.170.34

समदृष्टिरुदारात्मा वदान्यः संविभागवान् । पेशलस्निग्धमधुरः सुन्दरः पुण्यकीर्तनः ॥ ३४ ॥

samadṛṣṭirudārātmā vadānyaḥ saṃvibhāgavān | peśalasnigdhamadhuraḥ sundaraḥ puṇyakīrtanaḥ || 34 ||

He has an equal vision, a noble soul, is generous and shares equally | He is eloquent, affectionate, sweet-spoken, beautiful, and of virtuous fame

वह समान दृष्टि रखता है, उदार आत्मा है, उदार है और समान रूप से बाँटता है | वह वाक्पटु, स्नेही, मधुरभाषी, सुंदर और पुण्य कीर्ति वाला है

7.170.35

स्वभाव एषैव भवेत्प्रबुद्धधियां प्रयत्नेन तु नेदृशास्ते । भवन्ति नेन्द्वर्कहुताशनाद्याः क्वचित्परप्रेरणया प्रकाशाः ॥ ३५ ॥

svabhāva eṣaiva bhavetprabuddhadhiyāṃ prayatnena tu nedṛśāste | bhavanti nendvarkahutāśanādyāḥ kvacitparaprēraṇayā prakāśāḥ || 35 ||

This nature is inherent in the wise | But such are not attained by effort | They do not become luminous like the sun, moon, or fire | Sometimes they shine by the inspiration of others

यह स्वभाव बुद्धिमानों में स्वाभाविक रूप से होता है | लेकिन ऐसा प्रयास से नहीं होता | वे सूर्य, चंद्रमा या अग्नि की तरह प्रकाशमान नहीं होते | कभी-कभी वे दूसरों के प्रेरणा से चमकते हैं

Chapter 171

7.171.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । संविदाकाशकचनमिदं भाति जगत्तया । वस्तुतो न जगन्नाभा न शून्यं न च संविदः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | saṃvidākāśakacanamidaṃ bhāti jagattayā | vastuto na jagan nābhā na śūnyaṃ na ca saṃvidaḥ || 1 ||

Sri Vasistha said: This universe appears as a reflection in the space of consciousness. In reality, it is neither the universe nor emptiness nor consciousness.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह ब्रह्मांड चेतना के आकाश में एक प्रतिबिंब के रूप में प्रकट होता है। वास्तव में, यह न तो ब्रह्मांड है, न शून्यता है, और न ही चेतना है।

7.171.2

यदिदं भाति चिद्व्योम जगदाख्यं न तत्ततः । आकाशादिव शून्यत्वमन्यदन्यदपि स्थितम् ॥ २ ॥

yadidaṃ bhāti cidvyoma jagadākhyaṃ na tattataḥ | ākāśādiva śūnyatvamanyadanyadapi sthitam || 2 ||

That which appears as the universe in the space of consciousness is not actually that. Just like space, it is empty, and yet it exists in various forms.

जो चेतना के आकाश में ब्रह्मांड के रूप में प्रकट होता है, वह वास्तव में वह नहीं है। जैसे आकाश, यह शून्य है, और फिर भी यह विभिन्न रूपों में मौजूद है।

7.171.3

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ मध्ये यत्संविदो वपुः । तद्दृश्यमिति भातीदं दृश्यमन्यन्न विद्यते ॥ ३ ॥

deśāddeśāntaraprāptau madhye yatsaṃvido vapuḥ | taddṛśyamiti bhātīdaṃ dṛśyamanyanna vidyate || 3 ||

In the transition from one place to another, the form of consciousness in between is perceived as the visible. There is no other visible reality.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक के संक्रमण में, बीच में चेतना का रूप दृश्य के रूप में दिखाई देता है। कोई और दृश्य वास्तविकता नहीं है।

7.171.4

महाप्रलयसंपत्तावादिसर्गः पुनः किल । परस्मात्कारणाभावे कुतो दृश्यस्य संभवः ॥ ४ ॥

mahāpralayasaṃpattāvādisargaḥ punaḥ kila | parasmaātkāraṇābhāve kuto dṛśyasya saṃbhavaḥ || 4 ||

At the time of the great dissolution, the primordial creation occurs again. In the absence of the supreme cause, how can the visible arise?

महाप्रलय के समय, आदिम सृष्टि फिर से होती है। परम कारण के अभाव में, दृश्य कैसे उत्पन्न हो सकता है?

7.171.5

तदाणुमात्रमपि हि दृश्यबीजं न विद्यते । किल यस्मादिदं चक्रं पुनर्मूर्तं प्रवर्तते ॥ ५ ॥

tadāṇumātramapi hi dṛśyabījaṃ na vidyate | kila yasmādidam cakraṃ punarmūrtaṃ pravartate || 5 ||

Indeed, not even a particle of the seed of the visible exists. Yet, this cycle manifests again in a tangible form.

वास्तव में, दृश्य का बीज एक कण भी नहीं मौजूद है। फिर भी, यह चक्र फिर से एक स्पष्ट रूप में प्रकट होता है।

7.171.6

उत्पन्नमेव नैवातो मूर्तं दृश्यमिदं जगत्। वन्ध्यापुत्र इवात्यन्तमतोऽस्त्येव न दृश्यधीः ॥ ६ ॥

utpannameva naivāto mūrtaṃ dṛśyamidaṃ jagat | vandhyāputra ivātyantamato'styeva na dṛśyadhīḥ || 6 ||

This visible world is not produced from anything, just as a barren woman's son does not exist.

यह दृश्य जगत किसी से उत्पन्न नहीं है, जैसे वन्ध्या का पुत्र नहीं होता।

7.171.7

यच्चेदं किंचिदाभाति दृश्यमित्यभितः स्थितम्। तच्चिन्मात्रं खमेवाच्छं परमेव पदं विदुः ॥ ७ ॥

yaccedaṃ kiṃcidadābhāti dṛśyamityabhitaḥ sthitam | taccinmātraṃ khamevācchaṃ paramaiva padaṃ viduḥ || 7 ||

Whatever appears as the visible world is merely pure consciousness, like the clear sky, and is known as the supreme state.

जो कुछ भी दृश्य जगत के रूप में प्रकट होता है, वह केवल शुद्ध चेतना है, जैसे निर्मल आकाश, और उसे परम पद कहा जाता है।

7.171.8

यथा सुषुप्तात्स्वप्नत्वं गच्छद्यात्यनवस्थितिम्। चिन्मात्रमजहत्स्वच्छं निजं रूपमनामयम् ॥ ८ ॥

yathā suṣuptātsvapnatvaṃ gacchadyātyanavasthitim | cinmātramajahatsvacchaṃ nijaṃ rūpamanāmayam || 8 ||

Just as one goes from deep sleep to the dream state without stability, pure consciousness does not abandon its own pure, flawless form.

जैसे गहरी नींद से सपने की अवस्था में जाते समय कोई स्थिरता नहीं होती, उसी प्रकार शुद्ध चेतना अपने शुद्ध, दोषरहित रूप को नहीं छोड़ती।

7.171.9

सर्गस्यादौ तथैवेदमात्मैव स्वात्मनात्मनि। व्योमात्मैव चिदाभासं दृश्यमित्यवभासते ॥ ९ ॥

sargasyādau tathaivedamātmaiva svātmanātmani | vyomātmaiva cidābhāsaṃ dṛśyamityavabhāsate || 9 ||

At the beginning of creation, the self itself, in its own self, appears as the reflection of consciousness, like the sky.

सृष्टि के आरंभ में, आत्मा ही अपने आप में चेतना का प्रतिबिंब बनकर प्रकट होती है, जैसे आकाश।

7.171.10

यथा पुरतया भाति मनः संकल्पमन्थरम्। तथा दृश्यमिवाभाति सर्गादौ चिन्नभः परम् ॥ १० ॥

yathā puratayā bhāti manaḥ saṃkalpamantharam | tathā dṛśyamivābhāti sargādau cinnabhaḥ param || 10 ||

Just as the mind appears as a city due to its thoughts, so does the visible world appear as the supreme reflection of consciousness at the beginning of creation.

जैसे मन अपने विचारों के कारण एक नगर के रूप में प्रकट होता है, उसी प्रकार सृष्टि के आरंभ में दृश्य जगत परम चेतना का प्रतिबिंब बनकर प्रकट होता है।

7.171.11

यथात्मन्यनिलः स्पन्दश्चक्रावर्तवदीहते। सर्गादौ चिन्नभः स्थित्वा दृश्यमित्येव तिष्ठति ॥ ११ ॥

yathātmanyanilaḥ spandaścakrāvartavadīhate | sargādau cinnabhaḥ sthitvā dṛśyamityeva tiṣṭhati || 11 ||

Just as the wind moves within the self, appearing like a whirlpool, so too does the conscious sky, existing from the beginning of creation, remain as the visible.

जैसे हवा आत्मा में चक्कर की तरह चलती है, वैसे ही चेतन आकाश, सृष्टि के आरंभ से विद्यमान रहता है, दृश्य के रूप में स्थित है।

7.171.12

अतो ज्ञातमनाभातमेव दृश्यं जगत्त्रयम्। ब्रह्मैवेदं परं भाति स्वात्मनीत्थमवस्थितम्॥ १२॥

ato jñātamanābhātameva dṛśyaṃ jagattrayam | brahmaivedaṃ paraṃ bhāti svātmanīttthamavasthitam || 12 ||

Therefore, the three worlds are known to be without a beginning and are visible. This supreme Brahman alone shines, established in its own self.

इसलिए, तीनों लोक अनादि हैं और दृश्य हैं। यह परम ब्रह्म अपने आप में स्थित है, जो चमकता है।

7.171.13

नास्त्येव मूर्तं पृथ्व्यादि किंचनापि कदाचन। अस्तु मूर्तममूर्तं वा ब्रह्मैवेदं विराजते॥ १३॥

nāstyeva mūrtaṃ pṛthvyādi kiñcanāpi kadācana | astu mūrtamamūrtaṃ vā brahmaivedaṃ virājate || 13 ||

There is indeed no material form of earth, etc., at any time. Whether it be material or immaterial, Brahman alone shines.

किसी भी समय पृथ्वी आदि का कोई मूर्त रूप नहीं है। चाहे यह मूर्त हो या अमूर्त, ब्रह्म ही चमकता है।

7.171.14

प्रबोधकाले स्वप्नाद्रिर्यथा व्योमैव निर्वपुः। तथेदं शान्तचिन्मात्रं खं प्रवोधे जगत्त्रयम्॥ १४॥

prabodhakāle svapnādriryathā vyomaiva nirvapuḥ | tathedaṃ śāntacinmātraṃ khaṃ pravodhe jagattrayam || 14 ||

Just as a dream mountain is only the sky at the time of awakening, so too is this tranquil pure consciousness the sky at the time of awakening of the three worlds.

जैसे जागने के समय स्वप्न का पहाड़ केवल आकाश होता है, वैसे ही जागने के समय यह शांत चेतन मात्र आकाश है तीनों लोकों का।

7.171.15

प्रबुद्धानां परं ब्रह्म निर्विभागमिदं जगत्। धीमन्तोऽपि न तद्विद्मो यदिदं त्वप्रबोधनम्॥ १५॥

prabuddhānāṃ paraṃ brahma nirvibhāgamidaṃ jagat | dhīmanto'pi na tadvidmo yadidaṃ tvaprabodhanam || 15 ||

For the awakened, the supreme Brahman is this undivided world. Even the wise do not know this if it is without awakening.

जाग्रतों के लिए, यह अविभाजित जगत् परम ब्रह्म है। यह ज्ञान होने पर भी नहीं जाना जाता अगर यह अज्ञान है।

7.171.16

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ यन्मध्ये संविदो वपुः। स्वस्वभावो हि भूतानां तत्पदं परमात्मकम्॥ १६॥

deśāddeśāntaraprāptau yanmadhye saṃvido vapuḥ | svasvabhāvo hi bhūtānāṃ tatpadaṃ paramātmakam || 16 ||

In the transition from one place to another, the form of consciousness in the middle is the supreme state, which is the inherent nature of all beings.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा में, बीच में चेतना का रूप परम अवस्था है, जो सभी प्राणियों का स्वभाव है।

7.171.17

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ यन्मध्ये संविदो वपुः। एतत्तत्परमाकाशमत्र सर्वं प्रतिष्ठितम्॥ १७॥

deśāddeśāntaraprāptau yanmadhye saṃvido vapuḥ | etattatparamākāśamatra sarvaṃ pratiṣṭhitam || 17 ||

In the transition from one place to another, the form of consciousness in the middle is the supreme space where everything is established.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा में, बीच में चेतना का रूप परम आकाश है जहाँ सब कुछ स्थापित है।

7.171.18

याद्दगेतत्पदं तादृगिदं सदसदात्मकम् । येनार्थपञ्चकादन्यत्किंचनापि न विद्यते ॥ १८ ॥

yādṛgetatpadaṃ tādṛgidaṃ sadasadātmakam | yenārthapañcakādanyatkiṃcanāpi na vidyate || 18 ||

Whatever is the nature of this state, it is both real and unreal. There is nothing else beyond the five elements.

जो भी इस अवस्था का स्वभाव है, वह सत् और असत् दोनों है। पाँच तत्वों से परे कुछ भी नहीं है।

7.171.19

रूपालोकमनस्कारा एतदेव पदं विदुः । एते ते द्रवतावर्ताः पदस्यास्य महाम्भसः ॥ १९ ॥

rūpālokamanaskārā etadeva padaṃ viduḥ | ete te dravatāvartāḥ padasyāsya mahāmbhasaḥ || 19 ||

Forms, perceptions, and mental impressions are known as this state. These are the whirlpools of this great ocean of the state.

रूप, अलोक, और मनस्कार इस अवस्था के रूप में जाने जाते हैं। ये इस महान आकाश के भंवर हैं।

7.171.20

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ यन्मध्ये संविदो वपुः । एतस्याव्यतिरेकेण जगत्ता नास्ति काचन ॥ २० ॥

deśāddeśāntaraprāptau yanmadhye saṃvido vapuḥ | etasyāvyatirekeṇa jagattā nāsti kācana || 20 ||

In the transition from one place to another, the form of consciousness in the middle is such that there is no world without it.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा में, बीच में चेतना का रूप ऐसा है कि इसके बिना कोई संसार नहीं है।

7.171.21

रागद्वेषादयो भावा भावाभावदृशस्तथा । एतद्रूपममुञ्चन्त एतस्यावयवाः स्थिताः ॥ २१ ॥

rāgadveṣādayo bhāvā bhāvābhāvadṛśastathā | etadrūpamamuñcanta etasyāvayavāḥ sthitāḥ || 21 ||

Emotions such as attachment and aversion, as well as the perception of existence and non-existence, are all manifestations of the self. These are the components that constitute the self.

राग-द्वेष आदि भाव और भाव की अनुपस्थिति का दर्शन भी आत्मा के रूप में है| ये सब आत्मा के अवयव हैं जो स्थित हैं|

7.171.22

त्यक्त्वा पूर्वापरे कोट्यौ मध्ये यत्संविदो वपुः । स स्वभावः परो ज्ञेयो जगत्पयसि संज्ञितः ॥ २२ ॥

tyaktvā pūrvāpare koṭyau madhye yatsaṃvido vapuḥ | sa svabhāvaḥ paro jñeyo jagatpayasi saṃjñitaḥ || 22 ||

Abandoning the dualities of past and future, the form of consciousness in the present is to be known as the supreme nature, designated as the essence of the world.

भूत और भविष्य की द्वैतता को छोड़कर, वर्तमान में चेतना का रूप परम स्वभाव के रूप में जाना जाना चाहिए, जिसे जगत का सार कहा जाता है|

7.171.23

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ विद्धि मध्यमसंविदः । जगदित्यपरं नाम स्वरूपादच्युतात्मनः ॥ २३ ॥

deśāddeśāntaraprāptau viddhi madhyamasanvidaḥ | jagadityaparaṃ nāma svarūpādacyutātmanaḥ || 23 ||

Understand that the attainment of one place from another is the consciousness of the middle. The world is called by another name, the eternal nature of the self.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचना मध्य की चेतना है| जगत को दूसरे नाम से कहा जाता है, आत्मा की अच्युत स्वरूप|

7.171.24

आदिसर्गात्प्रभृत्येव दृश्यमुत्पन्नमेव नो। यन्नाम तदिहास्तीति मायाशम्बरडम्बरः॥ २४॥

ādisargātprabhṛtyeva dṛśyamutpannameva no | yannāma tadihāstīti māyāśambaraḍambaraḥ || 24 ||

From the beginning of creation, the visible has not truly arisen. That which has a name exists here, it is the illusion of the world.

सृष्टि के आरंभ से ही, दृश्य वास्तव में उत्पन्न नहीं हुआ है| जिसका नाम है वह यहाँ है, यह जगत का मायाजाल है|

7.171.25

कष्टं नास्त्येव यद्दृश्यं तदप्यस्तीति संस्थितम्। यदप्यस्ति परं ब्रह्म कष्टं नास्तीति तत्स्थितम्॥ २५॥

kaṣṭaṃ nāstyeva yaddṛśyaṃ tadapyastīti saṃsthitam | yadapyasti paraṃ brahma kaṣṭaṃ nāstīti tatsthitam || 25 ||

There is no difficulty in what is visible, for that too exists. Even if the supreme Brahman exists, there is no difficulty.

दृश्य में कोई कठिनाई नहीं है, क्योंकि वह भी अस्तित्व में है| यदि परब्रह्म भी अस्तित्व में है, तो भी कोई कठिनाई नहीं है|

7.171.26

अब्रह्मण्यं क्व गच्छामि विपरीतमतो जगत् असदृश्यं सदित्युक्तं ब्रह्मैवं नावगम्यते॥ २६॥

abrahmaṇyaṃ kv gacchāmi viparītamato jagat asadṛśyaṃ sadityuktaṃ brahmaivaṃ nāvagamyate || 26 ||

Where shall I go, for the world is the opposite of Brahman? The unreal is seen as real; thus, Brahman is not understood.

मैं कहाँ जाऊँ, क्योंकि यह जगत् ब्रह्मण्य का विपरीत है? असदृश्य को सद् कहा जाता है; इसलिए ब्रह्म समझ में नहीं आता।

7.171.27

न चोत्पन्नं न चाभाति दृश्यं किंचन कुत्रचित् यदिदं भाति तद्ब्रह्म व्योमैव कचति स्वयम्॥ २७॥

na cotpannaṃ na cābhāti dṛśyaṃ kiñcana kutracit yadidaṃ bhāti tadbrahma vyomaiva kacati svayam || 27 ||

Neither is it born nor does it shine; nothing is seen anywhere. That which shines is Brahman; the sky itself shines by itself.

न तो यह उत्पन्न है न ही यह चमकता है; कहीं कुछ भी नहीं दिखाई देता। जो चमकता है वह ब्रह्म है; आकाश स्वयं चमकता है।

7.171.28

यथा मणिः प्रकचति स्वभासाऽव्यतिरिक्तया आत्मनोऽनन्यया सृष्ट्या चिद्व्योम कचितं तथा॥ २८॥

yathā maṇiḥ prakacati svabhāsā'vyatiriktyā ātmano'nanyayā sṛṣṭyā cidvyoma kacitaṃ tathā || 28 ||

Just as a gem shines with its own light, without any other cause, so too the conscious sky shines with its own creation, without any other cause.

जैसे मणि अपनी स्वभासा से चमकती है, किसी अन्य कारण के बिना, वैसे ही चिद्व्योम अपनी सृष्टि से चमकता है, किसी अन्य कारण के बिना।

7.171.29

तस्मिन्नेव पदे शान्ते तपत्येष दिवाकरः तस्यैवावयवश्चैव न नामान्योऽस्ति भास्करः॥ २९॥

tasminneva pade śānte tapatyēṣa divākaraḥ tasyaiavāvayavaścaiva na nāmānyo'sti bhāskaraḥ || 29 ||

In that very peaceful state, the sun shines. It is a part of that very state; there is no other sun.

उसी शान्त पद में, सूर्य चमकता है। वह उसी पद का एक अवयव है; कोई अन्य सूर्य नहीं है।

7.171.30

स्थितोऽपि तत्र न तपत्यर्को न च निशाकरः प्रकाशयति देवोऽसावर्कं नार्कस्तमीश्वरम् ॥ ३० ॥

sthito'pi tatra na tapatyarko na ca niśākaraḥ prakāśayati devo'sāvararkaṃ nārkastamīśvaram || 30 ||

Even though present there, the sun does not shine, nor does the moon. That divine being illuminates, not the sun or the moon.

वहाँ स्थित होने पर भी, सूर्य नहीं चमकता है, न ही चन्द्रमा। वह दिव्य प्राणी प्रकाशित करता है, न कि सूर्य या चन्द्रमा।

7.171.31

तस्य भासा विभातीदं तदहो दृश्यमण्डलम् । सर्वचन्द्रार्कवह्नीनां पदार्थानां स दीपकः ॥ ३१ ॥

tasya bhāsā vibhātīdaṃ tadaho dṛśyamaṇḍalam| sarvacandrārkavahnīnāṃ padārthānāṃ sa dīpakaḥ|| 31 ||

His radiance illuminates this visible universe| He is the illuminator of all objects, including the moon, sun, and fire

उसकी चमक इस दृश्य ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करती है| वह चंद्रमा, सूर्य और अग्नि सहित सभी पदार्थों का प्रकाशक है

7.171.32

स साकारो निराकार इति शब्दार्थकल्पना । खपुष्पवदसद्रूपा न संभवति तद्विदाम् ॥ ३२ ॥

sa sākāro nirākāra iti śabdārthakalpanā| khapuṣpavadasadrūpā na saṃbhavati tadvidām|| 32 ||

He is both with form and without form| Such a conceptual distinction is like a flower in the sky, it does not exist for the wise

वह रूप और अरूप दोनों है| ऐसा शब्दार्थ कल्पना आकाश में फूल की तरह है, जो ज्ञानी के लिए नहीं होता

7.171.33

साङ्गभूतो यथैकोऽणुर्भाति जीवार्कतेजसि । न भान्ति भान्ति वा तत्र तथा सूर्यादयोऽणवः ॥ ३३ ॥

sāṅgabhūto yathaikō'ṇurbhāti jīvārkatejasi| na bhānti bhānti vā tatra tathā sūryādayō'ṇavaḥ|| 33 ||

Just as a single atom shines with the light of life and the sun| Similarly, the atoms of the sun and other celestial bodies may or may not shine there

जैसे एक अणु जीवन और सूर्य के प्रकाश से चमकता है| उसी तरह, सूर्य और अन्य खगोलीय पिंडों के अणु वहाँ चमक सकते हैं या नहीं

7.171.34

चिन्मात्राकाशरत्नस्य सृष्टयोऽर्कादिसंयुताः । या भासस्ताः कथं तस्माद्व्यतिरिक्ताः स्युरुच्यताम् ॥ ३४ ॥

cinmātrākāśaratnasya sṛṣṭayō'rkādisaṃyutāḥ| yā bhāsastāḥ kathaṃ tasmādvyatiriktāḥ syurucyatām|| 34 ||

The creations of the jewel of the sky of pure consciousness are endowed with the sun and other celestial bodies| How can those radiances be said to be different from it

शुद्ध चेतना के आकाश के रत्न की सृष्टियाँ सूर्य और अन्य खगोलीय पिंडों से युक्त हैं| उन चमकों को उससे अलग कैसे कहा जा सकता है

7.171.35

चिन्मात्रेणापि रहितं शून्यत्वेनापि वर्जितम् । पदं सर्वात्मरिक्तं तत्सर्वार्थैश्च समन्वितम् ॥ ३५ ॥

cinmātreṇāpi rahitaṃ śūnyatvenāpi varjitam| padaṃ sarvātmariktam tatsarvārthaiśca samanvitam|| 35 ||

Even without pure consciousness and devoid of emptiness| That state is devoid of all souls and endowed with all meanings

शुद्ध चेतना के बिना और शून्यता से भी रहित| वह स्थिति सभी आत्माओं से रहित है और सभी अर्थों से युक्त है

7.171.36

पृथ्व्यादीन्यपि सन्त्येव तत्र सन्ति न कानिचित्। जीवन्तोऽपि न विद्यन्ते जीवास्तत्र च केचन ॥ ३६ ॥

pṛthvyādīnyapi santyeva tatra santi na kānicit | jīvanto'pi na vidyante jīvāstatra ca kecana || 36 ||

Even though the elements such as earth exist, they do not exist there. Even though beings exist, no beings exist there.

यद्यपि पृथ्वी आदि तत्व हैं, लेकिन वहाँ वे नहीं हैं। यद्यपि जीव हैं, लेकिन वहाँ कोई जीव नहीं हैं।

7.171.37

अत्यजन्तो द्वयस्थौल्यं तत्रैते परमाणवः। स्वरूपमत्यजद्वैतमैक्यं वात्र न किंचन ॥ ३७ ॥

atyajanto dvayasthaulyaṃ tatraite paramāṇavaḥ | svarūpamatyajaddvaitamaikyaṃ vātra na kiṃcana || 37 ||

Abandoning the gross duality, these atoms exist there. The self abandons duality and unity, nothing exists there.

द्वैत की स्थूलता को त्यागकर, ये परमाणु वहाँ हैं। स्वयं द्वैत और एकता को त्याग देता है, वहाँ कुछ भी नहीं है।

7.171.38

किंचिदत्र न किंचिद्वै न किंचिच्च न किंचन। किंचिन्न किंचिदित्येषा कलनात्रातिदूरगा ॥ ३८ ॥

kiṃcidatra na kiṃcidvai na kiṃcicca na kiṃcana | kiṃcinnakiṃcidityeṣā kalanātrātidūragā || 38 ||

Something is there, yet nothing is there. This is the distant calculation.

कुछ है, फिर भी कुछ नहीं है। यह दूर की गणना है।

7.171.39

एका निरन्तरानन्ता नित्यमत्याततात्मना। चिन्मात्रव्योमसत्तैव जगन्नाम्नात्मनि स्थिता ॥ ३९ ॥

ekā nirantarānantā nityamatyātatātmanā | cinmātravyomasattaiava jagannāmnātmani sthitā || 39 ||

The one, continuous, infinite, eternal, and transcendent self is the pure consciousness that pervades the universe.

एक, निरंतर, अनंत, नित्य, और अतीत आत्मा वह शुद्ध चेतना है जो ब्रह्मांड में व्याप्त है।

7.171.40

एकं चेत्यं त्यक्तवत्या अप्राप्तायाश्चितोऽपरम्। यद्रूपं जगतो रूपमस्य नानात्मनोऽपि तत् ॥ ४० ॥

ekaṃ cetyaṃ tyaktavatyā aprāptāyāścito'param | yadrūpaṃ jagato rūpamasya nānātmano'pi tat || 40 ||

The one consciousness, having abandoned the other, is the form of the universe, even though it has many forms.

एक चेतना, दूसरे को त्यागकर, ब्रह्मांड का रूप है, यद्यपि इसके कई रूप हैं।

7.171.41

नानेवेदमनानैव चिद्व्योमैवेदमाततम्। भूतपञ्चकरूपेण स्वप्ने चितिरिव स्थितम् ॥ ४१ ॥

nānevedam anānaiva cidvyom aivedam ātatam | bhūtapañcakena svapne citiriva sthitam || 41 ||

This is neither non-existent nor existent; it is pervaded by consciousness alone. It exists in the form of the five elements, like a painting in a dream.

यह न तो असत् है और न ही सत्; यह चेतना से ही व्याप्त है। यह पाँच भूतों के रूप में स्वप्न में चित्र की तरह स्थित है।

7.171.42

सुषुप्ताद्विशतः स्वप्नं सुषुप्तस्थैव चिद्यथा । यथा स्थितैव स्वप्नत्वमेत्येवं सर्गतामिमाम् ॥ ४२ ॥

suṣuptādviśataḥ svapnaṃ suṣuptasthaiva cidyathā | yathā sthitaiva svapnatvametyevam sargatāmimām || 42 ||

Just as one enters a dream from deep sleep, remaining in the state of deep sleep, and the dream appears to be real, similarly, this creation appears to be real.

जैसे कोई गहरी नींद से स्वप्न में प्रवेश करता है, गहरी नींद की अवस्था में रहते हुए, और स्वप्न वास्तविक लगता है, उसी तरह यह सृष्टि भी वास्तविक लगती है।

7.171.43

यादृक्सुषुप्तं स्वप्नस्तु तादृगेव तथैव च । जाग्रत्तुर्यं तथैवेदमतो व्योमसमं जगत् ॥ ४३ ॥

yādṛksuṣuptaṃ svapnastu tādṛgeva tathaiva ca | jāgratturyaṃ tathaive damato vyomasamaṃ jagat || 43 ||

Just as a dream is like deep sleep, so too is the waking state like the fourth state (turiya). Therefore, this world is like the sky.

जैसे स्वप्न गहरी नींद की तरह होता है, उसी तरह जाग्रत अवस्था चतुर्थ अवस्था (तुरीय) की तरह होती है। इसलिए, यह संसार आकाश की तरह है।

7.171.44

जाग्रत्स्वप्नः सुषुप्तं च तुर्यमेवाखिलं स्थितम् । तत्त्वविद्गोत्रमूढस्तु यद्वै वेत्ति न वेद्मि तत् ॥ ४४ ॥

jāgratsvapnaḥ suṣuptaṃ ca turyamevākhilaṃ sthitam | tattvavidgotramūḍhas tu yadvai vetti na vedmi tat || 44 ||

The waking state, dream state, and deep sleep state are all established in the fourth state (turiya). One who knows the truth is indeed wise, but one who does not know, I do not consider wise.

जाग्रत अवस्था, स्वप्न अवस्था और गहरी नींद की अवस्था सभी चतुर्थ अवस्था (तुरीय) में स्थित हैं। जो सत्य को जानता है, वह वास्तव में बुद्धिमान है, लेकिन जो नहीं जानता, उसे मैं बुद्धिमान नहीं मानता।

7.171.45

जडानामजडानां यः सर्वार्थानामनारतम् । दुर्लक्ष्यपरिणामोऽन्तर्मनोबुद्ध्यादिवर्जितः ॥ ४५ ॥

jaḍānāmajaḍānāṃ yaḥ sarvārthānāmanāratam | durlakṣyapariṇāmo'ntarm anobuddhyādivarjitaḥ || 45 ||

That which is the essence of both the insentient and the sentient, the eternal cause of all things, the imperceptible transformation within, devoid of mind and intellect.

जो जड़ और चेतन दोनों का सार है, सभी वस्तुओं का अनंत कारण है, अंतर में अग्राह्य परिवर्तन है, मन और बुद्धि से रहित है।

7.171.46

सुशुद्धायाश्चितो रूपं पदार्थास्तन्मयाश्च ते । ते वसन्ति न सद्रूपास्तदेव हि तथा स्थितम् ॥ ४६ ॥

suśuddhāyāścito rūpaṃ padārthāstanmayāśca te| te vasanti na sadrūpāstadeva hi tathā sthitam || 46 ||

The form of the pure consciousness and the objects are of that nature. They do not exist in their true form; only that exists in that way.

शुद्ध चेतना का रूप और पदार्थ उसी प्रकार के होते हैं। वे अपने सच्चे रूप में नहीं रहते; केवल वही उसी प्रकार से स्थित है।

7.171.47

परिणामादिशब्दार्थदृशामत इहानघ । उपदेशार्थमुक्तीनां गन्धोऽप्येवं न विद्यते ॥ ४७ ॥

pariṇāmādiśabdārthadṛśāmata ihānagha| upadeśārthamuktīnāṃ gandho'pyevaṃ na vidyate || 47 ||

O sinless one, the meaning of words like transformation does not exist here for the sake of instruction. Even the scent does not exist in this way.

हे निष्पाप, परिवर्तन जैसे शब्दों का अर्थ यहां उपदेश के लिए नहीं है। यहां तक कि गंध भी ऐसे नहीं है।

7.171.48

आदिसर्गात्प्रभृत्येव महासत्तात्मनात्मनि । चिन्मात्रपरमाकाशं स्थितमेकं महात्मनः ॥ ४८ ॥

ādisargātprabhṛtyeva mahāsattātmanātmani| cinmātraparamākāśaṃ sthitamekaṃ mahātmanaḥ || 48 ||

From the beginning of creation, the supreme consciousness, which is the pure space of consciousness, exists alone in the great self.

सृष्टि के आरंभ से ही, जो परम चेतना है, वह चेतना का शुद्ध आकाश महान आत्मा में अकेला स्थित है।

7.171.49

प्रपूर्णैकात्मनि प्रख्या सा सर्वव्यापिनी चितिः । स्थिता तयात्मन्येवान्तर्जगदित्यभिधाः कृताः ॥ ४९ ॥

prapūrṇaikātmani prakhyā sā sarvavyāpinī citiḥ| sthitā tayātmanyevāntarjagadityabhidhāḥ kṛtāḥ || 49 ||

In the complete and single self, that consciousness is known as all-pervading. Established in that self, the inner world is called by various names.

पूर्ण और एकमात्र आत्मा में, वह चेतना सर्वव्यापी कहलाती है। उस आत्मा में स्थित, अंतर्जगत को विभिन्न नामों से जाना जाता है।

7.171.50

परिज्ञाते यथा स्वप्ने स्वाङ्गीकारात्सुखं सुखम् । अनङ्गीकारतो दुःखं सदुःखं भवति क्षणात् ॥ ५० ॥

parijñāte yathā svapne svāṅgīkārātsukhaṃ sukham| anaṅgīkārato duḥkhaṃ saduḥkhaṃ bhavati kṣaṇāt || 50 ||

Just as in a dream, happiness comes from acceptance and unhappiness from non-acceptance. True unhappiness arises instantly from non-acceptance.

जैसे स्वप्न में, स्वीकार से सुख और अस्वीकार से दुःख होता है। अस्वीकार से सच्चा दुःख तुरंत उत्पन्न होता है।

7.171.51

गच्छतस्तिष्ठतश्चैव जाग्रतः स्वपतस्तथा । नित्यमेकं समाधानं स्थितं शान्तस्य तद्विदः ॥ ५१ ॥

gacchataḥtiṣṭhataścaiva jāgrataḥ svapatastathā | nityamekaṃ samādhānaṃ sthitaṃ śāntasya tadvidaḥ || 51 ||

Whether moving or standing, awake or asleep, the wise person who is calm always maintains a single state of concentration.

चलते हुए या खड़े होकर, जागरूक होकर या सोते हुए, शान्त व्यक्ति के लिए एक निरंतर समाधान स्थित है।

7.171.52

भेदेऽप्यभेदनिष्ठस्य दुःखेऽपि हि सुखस्थितेः । सतोऽप्येवासतो ज्ञस्य किमन्यदवशिष्यते ॥ ५२ ॥

bhede'pyabhedaniṣṭhasya duḥkhe'pi hi sukhasthiteḥ | sato'pyevāsato jñasya kimanyadavaśiṣyate || 52 ||

Even in the midst of differences and suffering, the one who is established in non-duality and happiness, whether existing or non-existing, what else remains?

भेद और दुःख के मध्य भी, अभेद और सुख में स्थित व्यक्ति के लिए, चाहे वह है या नहीं, फिर क्या शेष रहता है?

7.171.53

न संत्यजति नादत्ते किंचिद्व्यवहरन्नपि । हृदयेन बहिःकार्येऽकार्यं एवावतिष्ठते ॥ ५३ ॥

na saṃtyajati nādatte kiṃcidvyavaharannapi | hṛdayena bahiḥkārye'kāryaṃ evāvatiṣṭhate || 53 ||

He does not abandon nor accept anything, even while engaging in worldly activities. He remains in the heart, considering all external actions as non-actions.

वह न त्यागता है न ग्रहण करता है, संसार के व्यवहार में भी। वह हृदय में रहता है, सभी बाह्य कार्यों को अकार्य मानकर।

7.171.54

यथा हिमस्य शीतत्वं वह्नेरौष्ण्यं तथेदृशः । स्वभावोऽस्य भवेन्नित्यं न त्वाहार्यो गुणोऽस्य सः ॥ ५४ ॥

yathā himasya śītatvaṃ vahnerauṣṇyaṃ tathaedṛśaḥ | svabhāvo'sya bhavennityaṃ na tvāhāryo guṇo'sya saḥ || 54 ||

Just as coldness is inherent in ice and heat in fire, so too is the nature of the wise person always the same, not something that can be acquired.

जैसे ठंडक बर्फ में है और गर्मी आग में है, वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति का स्वभाव हमेशा एक ही है, यह कोई आहार नहीं है जिसे प्राप्त किया जा सके।

7.171.55

यस्य त्वेष स्वभावः स्यान्न नाम न स तत्त्ववित् । एतदेवाज्ञताचिह्नं यदिच्छा प्रकृतेतरा ॥ ५५ ॥

yasya tveṣa svabhāvaḥ syānna nāma na sa tattvavit | etadevājñatācihnaṃ yadicchā prakṛtetarā || 55 ||

The one whose nature is not like this is not a knower of the truth. This is the sign of ignorance: desire for something other than the natural.

जिसका स्वभाव ऐसा नहीं है, वह सत्य का ज्ञानी नहीं है। यह अज्ञान का लक्षण है: प्रकृति से भिन्न इच्छा।

7.171.56

आश्वस्तान्तःकरणः क्षीणविकल्पः स्वरूपसारमयः । परमशमामृततृप्तस्तिष्ठति विद्वान्निरावरणः ॥ ५६ ॥

āśvastāntaḥkaraṇaḥ kṣīṇavikalpaḥ svarūpasāramayaḥ | paramaśamāmṛtatṛptastiṣṭhati vidvānnirāvaraṇaḥ || 56 ||

The wise one, with a calm mind and devoid of doubts, abides in the essence of their true nature, fully satisfied with the supreme bliss of peace, free from all obstructions.

विद्वान् शांत मन और संदेहरहित होकर, अपने सच्चे स्वरूप के सार में निवास करता है, पूर्ण रूप से शांति के परम आनंद से तृप्त, सभी बाधाओं से मुक्त।

Chapter 172

7.172.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं पृथ्व्यादिरहितः खमेवाद्यः प्रजापतिः । मनोमात्रमहं मन्ये संकल्पविटपी यथा ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ pṛthvyādirahitaḥ khamevādyaḥ prajāpatiḥ | manomātramahaṃ manye saṃkalpaviṭapī yathā || 1 ||

Śrīvasiṣṭha said: Thus, devoid of earth and other elements, the first creator is only space. I consider the mind to be mere thought, like a wish-fulfilling tree.

श्रीवसिष्ठ ने कहा: इस प्रकार, पृथ्वी और अन्य तत्वों से रहित, प्रथम सृष्टिकर्ता केवल आकाश है। मैं मन को केवल विचार मानता हूँ, जैसे एक इच्छा-पूर्ण वृक्ष।

7.172.2

मन इत्यभिधानेन पश्चादास्था प्रकल्पिता । वार्यावर्तविवर्तेन प्रोत्थायावर्तता यथा ॥ २ ॥

mana ityabhidhānena paścādāsthā prakalpitā | vāryāvartavivarten protthāyāvartatā yathā || 2 ||

The mind, designated as such, is later established through imagination. It arises and dissolves like a whirlpool in water.

मन, जिसे इस प्रकार कहा जाता है, बाद में कल्पना द्वारा स्थापित होता है। यह जल में भँवर की तरह उत्पन्न होता है और विलीन होता है।

7.172.3

सत्तामात्रात्मनस्तस्य कुतो बुद्ध्यादयः किल । अविद्यमाने पृथ्व्यादौ खस्यानन्तस्य किं रजः ॥ ३ ॥

sattāmātrātmanastasya kuto buddhyādayaḥ kila | avidyamāne pṛthvyādau khasyānantasya kiṃ rajaḥ || 3 ||

How can there be intellect and other faculties in that which is mere existence? In the absence of earth and other elements, what is the dust of the infinite space?

उस में जो केवल अस्तित्व है, बुद्धि और अन्य शक्तियाँ कैसे हो सकती हैं? पृथ्वी और अन्य तत्वों की अनुपस्थिति में, अनन्त आकाश का धूल क्या है?

7.172.4

न तस्य देहचित्तादि नेन्द्रियाणि न वासनाः । सदप्येतत्सदा तस्य न किंचिदपि विद्यते ॥ ४ ॥

na tasya dehacittādi nendriyāṇi na vāsanāḥ | sadapyetatsadā tasya na kiṃcidapi vidyate || 4 ||

That has no body, mind, senses, or desires. Even though it exists, nothing exists for it.

उसका कोई शरीर, मन, इंद्रियाँ या वासनाएँ नहीं हैं। हालाँकि वह है, फिर भी उसके लिए कुछ भी नहीं है।

7.172.5

प्राक्तनस्य प्रजेशस्य मुक्तत्वात्कथमेव च । भूयः संभवति प्राज्ञ न स्मृतिर्न च संभवः ॥ ५ ॥

prāktanasy prajeśasya muktatvātkathameva ca | bhūyaḥ saṃbhavati prājña na smṛtirna ca saṃbhavāḥ || 5 ||

How can the ancient lord of creation, being liberated, be born again? There is no memory or rebirth for the wise.

प्राचीन सृष्टिकर्ता के लिए, जो मुक्त है, फिर से जन्म कैसे हो सकता है? ज्ञानी के लिए न स्मृति है न पुनर्जन्म।

7.172.6

न भवत्येव मुक्तानां स्मृतिर्देहोदयः पुनः । न देशकालावर्तत्वमावर्तानां सतामिव ॥ ६ ॥

na bhavatyeva muktānāṃ smṛtirdehodayāḥ punaḥ | na deśakālāvartatvamāvartānāṃ satāmiva || 6 ||

The liberated ones do not have the memory of the body's rise again | They do not have the recurrence of time and place like the bound ones

मुक्त पुरुषों को शरीर के उदय की स्मृति फिर से नहीं होती | वे बंधे हुए लोगों की तरह देश और काल के आवर्तन को नहीं पाते

7.172.7

यदि वापि भवेत्किंचित्स्मृत्या देहादि तस्य तत् । तदपृथ्व्यादिभिः शान्तं संकल्पनगरं तनु ॥ ७ ॥

yadi vāpi bhavetkiñcit smṛtyā dehādi tasya tat | tadapṛthvyādibhiḥ śāntaṃ saṃkalpanagaraṃ tanu || 7 ||

Even if something arises from memory, such as the body, it is peaceful and like a city of imagination, devoid of earthly elements

यदि कुछ भी स्मृति से उत्पन्न होता है, जैसे शरीर, तो वह शांत और कल्पना के नगर की तरह होता है, जो पृथ्वी आदि तत्वों से रहित है

7.172.8

यथा संकल्पशैलस्य दृश्यमानमपि स्फुटम् । पृथ्व्यादिरहितं रूपं तद्विराड्वपुषस्तथा ॥ ८ ॥

yathā saṃkalpaśailasya dṛśyamānamapi sphuṭam | pṛthvyādirahitaṃ rūpaṃ tadvirāḍvapuṣastathā || 8 ||

Just as the form of an imagined mountain, though clearly visible, is devoid of earthly elements, so is the form of the cosmic body

जैसे कल्पना के पर्वत का रूप, aunque स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, पृथ्वी आदि तत्वों से रहित है, वैसे ही ब्रह्मांडीय शरीर का रूप है

7.172.9

स्मृतिश्च संभवत्येव न कदाचन काचन । एषा लौकिकबुद्ध्या या सा सद्बुद्ध्या न विद्यते ॥ ९ ॥

smṛtiśca saṃbhavatyeva na kadācana kācana | eṣā laukikabuddhyā yā sā sadbuddhyā na vidyate || 9 ||

Memory does indeed arise, but it is never real | That which is perceived by worldly intellect does not exist in true intellect

स्मृति अवश्य उत्पन्न होती है, लेकिन वह कभी वास्तविक नहीं होती | जो लौकिक बुद्धि से देखा जाता है, वह सत्य बुद्धि में नहीं होता

7.172.10

श्रीराम उवाच । कथं न संभवत्येषां स्मृतिः स्मृतिमतां वर । स्मृतेश्चासंभवे कस्माद्गुणो गुणगणाकर ॥ १० ॥

śrīrāma uvāca | kathaṃ na saṃbhavatyēṣāṃ smṛtiḥ smṛtimatāṃ vara | smṛteścāsaṃbhave kasmādguṇo guṇagaṇākara || 10 ||

Shri Rama said: How does memory not arise for these, O best among the wise? If memory does not arise, what is the quality of the ocean of qualities?

श्री राम ने कहा: इनके लिए स्मृति कैसे नहीं उत्पन्न होती, हे ज्ञानियों में श्रेष्ठ? यदि स्मृति नहीं उत्पन्न होती, तो गुणों के समुद्र का गुण क्या है?

7.172.11

श्रीवसिष्ठ उवाच । दृश्ये हि संभवत्येषा कार्यकारणतात्मनि । तद्भावाभावसंपन्ना न तु संभवति स्मृतिः ॥ ११ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | dṛśye hi saṃbhavaty eṣā kāryakāraṇatātmani | tadbhāvābhāvasaṃpannā na tu saṃbhavati smṛtiḥ || 11 ||

Śrīvasiṣṭha said: In the realm of the visible, this causality exists | Endowed with existence and non-existence, memory does not arise || 11 ||

श्रीवसिष्ठ ने कहा: दृश्य में यह कारण-कार्य भाव है | उसके अस्तित्व और अनस्तित्व से संपन्न होने पर स्मृति नहीं होती || ११ ||

7.172.12

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं दृश्यं किंचिन्न विद्यते । यत्र तत्र कथं कीदृक् कुतः स्यात्संभवः स्मृतेः ॥ १२ ॥

ābrahma stambaparyantaṃ dṛśyaṃ kiṃcinna vidyate | yatra tatra kathaṃ kīdṛk kutaḥ syātsaṃbavaḥ smṛteḥ || 12 ||

From Brahma to the grass, nothing visible exists | How and in what manner can memory arise there? || 12 ||

ब्रह्म से लेकर घास तक, दृश्य कुछ भी नहीं है | वहाँ किस तरह और किस प्रकार से स्मृति उत्पन्न हो सकती है? || १२ ||

7.172.13

भूत्वा भावे हि दृश्यस्य स्मरणं स्मृतिरुच्यते । दृश्यमेव न यत्रास्ति तत्रैताः कलनाः कुतः ॥ १३ ॥

bhūtvā bhāve hi dṛśyasya smaraṇaṃ smṛtirucyate | dṛśyameva na yatrāsti tatraitāḥ kalanāḥ kutaḥ || 13 ||

When the visible becomes an object of thought, it is called memory | Where there is no visible, how can there be such calculations? || 13 ||

जब दृश्य एक विचार वस्तु बन जाता है, तो उसे स्मृति कहते हैं | जहाँ दृश्य नहीं है, वहाँ ऐसे गणनाएँ कैसे हो सकती हैं? || १३ ||

7.172.14

अत्यन्ताभाव एवास्य दृश्यस्य किल सर्वदा । सर्वं ब्रह्मेति सत्यार्थास्तत्स्मृतेः कलनाः कुतः ॥ १४ ॥

atyantābhāva evāsya dṛśyasya kila sarvadā | sarvaṃ brahmeti satyārthāstatsmṛteḥ kalanāḥ kutaḥ || 14 ||

The visible is always in a state of absolute non-existence | Since everything is Brahman, how can there be calculations of memory? || 14 ||

दृश्य हमेशा पूर्ण अस्तित्वहीनता में है | सब कुछ ब्रह्म है, ऐसी स्थिति में स्मृति की गणनाएँ कैसे हो सकती हैं? || १४ ||

7.172.15

स्मृतिर्न संभवत्येव तस्मादाद्या प्रजापतेः । आकारवत्त्वमेवास्य शुद्धज्ञानात्मनः कुतः ॥ १५ ॥

smṛtirna saṃbhavatyeva tasmādādyā prajāpateḥ | ākāravattvamevāsya śuddhajñānātmanaḥ kutaḥ || 15 ||

Memory does not arise, therefore it is the first creation of Prajāpati | How can there be a form for pure consciousness? || 15 ||

स्मृति नहीं उत्पन्न होती, इसलिए यह प्रजापति की पहली सृष्टि है | शुद्ध चेतना के लिए कैसे कोई आकार हो सकता है? || १५ ||

7.172.16

स्मर्तव्यं भाववशतः स्मृतिर्नास्त्येव लौकिकी । स्मृत्यर्थस्त्वन्यदीयोऽस्ति सत्यात्मा त्वमिमं श्रृणु ॥ १६ ॥

smartavyaṃ bhāvavaśataḥ smṛtirnāstyeva laukikī | smṛtyarthastvanyadīyo'sti satyātmā tvamimaṃ śṛṇu || 16 ||

It is to be remembered that there is no worldly memory due to the influence of emotions | The purpose of memory is something else, O true self, listen to this || 16 ||

याद रखना चाहिए कि भावनाओं के प्रभाव के कारण कोई लौकिक स्मृति नहीं है | स्मृति का उद्देश्य कुछ और है, हे सत्य आत्मा, इसे सुनो || १६ ||

7.172.17

भूतस्यान्तः पदार्थस्य स्मरणं स्मृतिरुच्यते । पदार्थस्तु न चैवास्ति न भूतो न भविष्यति ॥ १७ ॥

bhūtasyāntaḥ padārthasya smaraṇaṃ smṛtirucyate | padārthastu na caivāsti na bhūto na bhaviṣyati || 17 ||

The remembrance of the inner essence of the past is called memory | But the essence does not exist, nor has it existed, nor will it exist || 17 ||

भूतकाल के अन्तर्निहित पदार्थ की स्मृति को स्मृति कहते हैं | परन्तु पदार्थ न तो है, न ही था, न ही होगा || १७ ||

7.172.18

एवं हि खल्विदं ब्रह्म परमेवाचलं यतः । अनादिमध्यपर्यन्तं कुतः स्मृत्यादयस्ततः ॥ १८ ॥

evaṃ hi khalvidam brahma paramēvācalaṃ yataḥ | anādimadhyaparyantaṃ kutaḥ smṛtyādayastataḥ || 18 ||

Thus indeed, this Brahman is the supreme and immovable | Since it is without beginning, middle, or end, how can memory and other things arise from it || 18 ||

इस प्रकार वास्तव में, यह ब्रह्म परम और अचल है | क्योंकि यह आदि, मध्य और अन्त से रहित है, स्मृति और अन्य चीजें इससे कैसे उत्पन्न हो सकती हैं || १८ ||

7.172.19

सर्वात्मत्वमपदार्थात्म चिद्व्योमकचनं तु यत् । व्यवहारेऽप्यलं शान्तं स्मृत्या तच्छब्दितं मया ॥ १९ ॥

sarvātmatvamapadārthātma cidvyomakacaṇaṃ tu yat | vyavahāre'pyalaṃ śāntaṃ smṛtyā tacchabditaṃ mayā || 19 ||

That which is the essence of all selves, without any object, the peaceful expanse of consciousness | Even in worldly transactions, it is sufficient and tranquil, described by me through memory || 19 ||

जो सभी आत्माओं का सार है, किसी भी वस्तु से रहित, चेतना का शान्त विस्तार | लौकिक व्यवहारों में भी यह पर्याप्त और शान्त है, मैंने स्मृति के द्वारा इसका वर्णन किया है || १९ ||

7.172.20

तदेतत्स्मरणं नाम स्वभावकचनं हि तत् । तेनाभ्यस्तोऽथ बाह्यार्थः सादृश्यादवभासते ॥ २० ॥

tadetatsmaraṇaṃ nāma svabhāvakacaṇaṃ hi tat | tenābhyasto'tha bāhyārthaḥ sādṛśyādavabhāsate || 20 ||

That is called remembrance, which is indeed the vibration of one's own nature | By that, the external object is illuminated due to similarity || 20 ||

वह स्मृति कहलाती है, जो वास्तव में अपनी प्रकृति की कंपन है | उसके द्वारा, बाह्य वस्तु समानता के कारण प्रकाशित होती है || २० ||

7.172.21

यद्यत्संवेद्यते किंचित्तत्स्वभावं स्वभावयत् तेनावभासते योऽर्थस्तस्य स्मृत्यभिधा कृता ॥ २१ ॥

yadyatsaṃvedyate kiṃcittatsvabhāvaṃ svabhāvayat tenāvabhāsate yo'rthas tasya smṛtyabhidhā kṛtā || 21 ||

Whatever is perceived, it becomes its own nature. That which is illuminated by it, is called memory.

जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, वह अपनी ही प्रकृति बन जाता है। जिसके द्वारा यह प्रकाशित होता है, उसे स्मृति कहा जाता है।

7.172.22

अविद्यमानं भातीव यथा दृश्यं तथा स्थितिः भातैवाविद्यमानैव मृगतृष्णा यथोद्यता ॥ २२ ॥

avidyamānaṃ bhātīva yathā dṛśyaṃ tathā sthitiḥ bhātaivāvidyamānaiva mṛgatṛṣṇā yathodyatā || 22 ||

Just as an illusion appears to be real, so is the state of existence. The illusion itself is non-existent, like a mirage.

जैसे एक भ्रम वास्तविक लगता है, वैसे ही अस्तित्व की स्थिति है। भ्रम स्वयं अवास्तविक है, जैसे एक मृगतृष्णा।

7.172.23

सर्वात्मनि स्थिताः सत्ये याः कचन्ति सुसंविदः ता एवाभ्यासरूढार्थाः सादृश्यात्स्मृतयः स्मृताः ॥ २३ ॥

sarvātmani sthitāḥ satye yāḥ kacanti susaṃvidaḥ tā evābhāsarūḍhārthāḥ sādṛśyātsmṛtayaḥ smṛtāḥ || 23 ||

In the true self, all good perceptions that exist are considered memories due to their similarity to practiced meanings.

सत्य आत्मा में, जो सभी अच्छे अनुभव मौजूद हैं, वे अपनी समानता के कारण अभ्यास किए गए अर्थों के समान स्मृतियाँ माने जाते हैं।

7.172.24

काकतालीयवद्भान्ति सर्वात्मनि सुसंविदः स्वाङ्गभूताः स्वतः स्वस्थास्ता एव स्मृतयः कृताः ॥ २४ ॥

kākatālīyavadbhānti sarvātmani susaṃvidaḥ svāṅgabhūtāḥ svataḥ svasthāstā eva smṛtayaḥ kṛtāḥ || 24 ||

Like the crow and the palm fruit, good perceptions appear in the universal self, inherent, self-existent, and stable. These are considered memories.

कौए और ताड़ के फल की तरह, अच्छे अनुभव सर्वात्मा में प्रकट होते हैं, अंतर्निहित, स्वयं अस्तित्व में, और स्थिर। ये स्मृतियाँ माने जाते हैं।

7.172.25

यद्यत्कचति सद्रूपं स्वाङ्गं सर्वात्मनः स्वतः तदभ्यस्तार्थसादृश्यात्स्मृतिरित्युच्यते बुधैः ॥ २५ ॥

yadyatkacati sadrūpaṃ svāṅgaṃ sarvātmanaḥ svataḥ tadabhyastārthasādṛśyātsmṛtirityucyate budhaiḥ || 25 ||

Whatever shines in the form of truth, as a part of the universal self, is called memory by the wise due to its similarity to practiced meanings.

जो कुछ भी सत्य के रूप में चमकता है, सर्वात्मा का एक हिस्सा है, उसे बुद्धिमानों द्वारा अपनी समानता के कारण अभ्यास किए गए अर्थों के समान स्मृति कहा जाता है।

7.172.26

हेतौ लब्धेऽप्यलब्धे वा पवनस्पन्दवद्विदः। ता एवाभ्यासरूढार्थाः सादृश्यात्स्मृतयः कृताः॥ २६ ॥

hetau labdhe'pyalabdhe vā pavanaspandavadvidaḥ| tā evābhyāsarūḍhārthāḥ sādṛśyātsmṛtayaḥ kṛtāḥ|| 26 ||

Whether the cause is found or not, the wise know it to be like the movement of the wind. Those very meanings, established through practice, are made similar to memories.

हेतु प्राप्त हो या न हो, विद्वान् उसे पवन के स्पन्दन के समान जानते हैं। वे ही अभ्यास से स्थापित अर्थ, स्मृतियों के समान बनाए जाते हैं।

7.172.27

काकतालीयवद्भान्ति यास्ताः स्मृत्यभिधाः कृताः। यथा तवैतेऽवयवाः कचन्ति न कचन्ति च ॥ २७ ॥

kākatālīyavadbhānti yāstāḥ smṛtyabhidhāḥ kṛtāḥ| yathā tavaite'vayavāḥ kacanti na kacanti ca|| 27 ||

Those memories that appear like the illusion of a crow and a palm tree are made. Just as these parts of yours move and do not move.

वे स्मृतियाँ जो कौए और ताड़ के भ्रम के समान प्रतीत होती हैं, वे बनाई जाती हैं। जैसे ये आपके अवयव चलते हैं और नहीं चलते हैं।

7.172.28

स्थिता एवात्मनि तथा सर्वाः सर्वात्मिका विदः। मिथ्याज्ञानमया यद्वदर्था घटपटादयः॥ २८ ॥

sthitā evātmani tathā sarvāḥ sarvātmikā vidaḥ| mithyājñānamayā yadvadarthā ghaṭapaṭādayaḥ|| 28 ||

Thus, all are established in the self, known as all-pervading. Just as objects like pots and clothes are made of false knowledge.

इस प्रकार, सभी आत्मा में स्थित हैं, जिन्हें सर्वव्यापी कहा जाता है। जैसे घड़े और कपड़े जैसे वस्तुएँ मिथ्या ज्ञान से बनी हैं।

7.172.29

तद्वत्स्मृतिपदार्थस्य किं भ्रमस्य विचार्यते । दृश्यस्यासंभवाज्ज्ञस्य स्मृतिर्नास्त्येव तत्त्वतः ॥ २९ ॥

tadvatsmṛtipadārthasya kiṃ bhramasya vicāryate| dṛśyasyāsaṃbhavājjñasya smṛtirnāstveva tattvataḥ|| 29 ||

Why should the illusion of the object of memory be considered? For the wise, there is no memory of the perceivable due to its impossibility in reality.

स्मृति के पदार्थ के भ्रम का क्या विचार किया जाए? दृश्य के असंभव होने के कारण, विद्वान् के लिए वास्तविकता में स्मृति नहीं होती।

7.172.30

स तथैकघनत्वाच्च चिद्व्योमत्वाज्जगत्स्थितेः । यथास्थितमिदं दृश्यमस्त्येवाज्ञस्य संप्रति ॥ ३० ॥

sa tathaikaghanatvācca cidvyomatvājjagatsthiteḥ| yathāsthitamidaṃ dṛśyamastyevājñasya saṃprati|| 30 ||

That is thus, due to its singular density and the nature of consciousness as the sky. This perceivable exists as it is, even for the ignorant, at present.

वह इस प्रकार है, अपने एकघनत्व और चेतना के आकाश स्वरूप के कारण। यह दृश्य वर्तमान में अज्ञानी के लिए भी जैसा है वैसा ही अस्तित्व में है।

7.172.31

न मोक्षोपायकथनं न च जानामि तत्स्थितिम् । संदेहादिव जिज्ञासुस्तावन्मोक्षकथोच्यते ॥ ३१ ॥

na mokṣopāyakathanaṃ na ca jānāmi tatsthitim | sandehādiva jijñāsustāvanmokṣakathocyate || 31 ||

I do not know the means to liberation, nor do I understand its state | Out of doubt, as if desiring to know, the story of liberation is told || 31 ||

मैं मोक्ष के उपाय नहीं जानता, न ही उसकी स्थिति समझता हूँ | संदेह से, जैसे जानने की इच्छा हो, मोक्ष की कथा कही जाती है || ३१ ||

7.172.32

यावदृश्यं स्मृतिश्चैव संस्मृतिश्चास्य शाम्यति । अविद्यायास्तु मौर्ख्यस्य विमोहस्यात्यसंभवात् ॥ ३२ ॥

yāvaddṛśyaṃ smṛtiścaiva saṃsmṛtiścāsya śāmyati | avidyāyāstu maurkhyasya vimohasyātyasaṃbhavāt || 32 ||

As long as the visible and memory are remembered, it is calmed | Due to the great occurrence of ignorance, foolishness, and delusion || 32 ||

जब तक दृश्य और स्मृति याद रहती है, यह शांत होता है | अज्ञान, मूर्खता और भ्रम के बहुत होने के कारण || ३२ ||

7.172.33

अज्ञस्थो निश्चयोऽस्माकं न कदाचन गोचरः । यच्च यद्विषये नास्ति तन्नैवानुभवत्यसौ ॥ ३३ ॥

ajñastho niścayo'smākaṃ na kadācana gocaraḥ | yacca yadviṣaye nāsti tannaivānubhavatyasau || 33 ||

Our certainty is not in the realm of the ignorant | Whatever does not exist in any subject, that is not experienced by him || 33 ||

हमारा निश्चय अज्ञानी के क्षेत्र में नहीं है | जो किसी भी विषय में नहीं है, वह उसे अनुभव नहीं होता || ३३ ||

7.172.34

रजन्यनुभवो भानोर्भवत्यङ्ग कथं वद । भातं वस्तुस्वरूपात्म चिन्मात्रे किंचिदेव यत् ॥ ३४ ॥

rajanyanubhavo bhānorbhavatyanga kathaṃ vada | bhātaṃ vastusvarūpātma cinmātre kiṃcideva yat || 34 ||

How can the experience of night occur in the sun? Tell me | Whatever appears is the essence of the object, in pure consciousness, even a little || 34 ||

सूर्य में रात का अनुभव कैसे हो सकता है? बताओ | जो भी प्रकट होता है, वह वस्तु का स्वरूप है, शुद्ध चेतना में, थोड़ा भी || ३४ ||

7.172.35

तदभ्यस्तार्थसादृश्यात्तत्संस्कार इति स्मृतम्। आत्मस्वभावभूतानामपि चिद्व्योमरूपिणाम्॥ ३५॥

tadabhyastārthasādṛśyāttatsaṃskāra iti smṛtam | ātmasvabhāvabhūtānāmapi cidvyomarūpiṇām || 35 ||

That is remembered due to the similarity of the intended meaning | Even of those who are by nature self-existent, in the form of the sky of consciousness || 35 ||

वह उसके अर्थ की समानता के कारण याद किया जाता है | Even of those who are by nature self-existent, in the form of the sky of consciousness || ३५ ||

7.172.36

सर्वेषां परिकल्प्यानामाभासेऽप्यनवस्थितेः। एवं न संभवत्येव जगत्किंचित्कदाचन। ॥ ३६॥

sarveṣāṃ parikalpyānāmābhāse'pyanavasthiteḥ| evaṃ na saṃbhavatyeva jagatkiṃcitkadācana| || 36 ||

Even in the appearance of all imagined things, the world does not exist at all.

सभी कल्पित वस्तुओं के प्रकट होने पर भी, जगत कभी भी कुछ भी नहीं होता।

7.172.37

दृष्टं मृगतृषेवाम्बु न तु तत्परमार्थतः। यदा त्वयं तदा स्वप्ने सर्गादौ चावभासते। ॥ ३७॥

dṛṣṭaṃ mṛgatṛṣevāmbu na tu tatparamārthataḥ| yadā tvayaṃ tadā svapne sargādau cāvabhāsate| || 37 ||

Just as the mirage water is seen but not real, similarly, this world appears in a dream or at the beginning of creation.

जैसे मृगतृष्णा में पानी दिखता है पर वास्तव में नहीं होता, वैसे ही यह संसार स्वप्न में या सृष्टि के आरंभ में प्रकट होता है।

7.172.38

चिद्व्योमैव परं सर्गपर्यायं स्वात्मनि स्थितम्। चिद्व्योमैवेत्थमाभातं न च्युतं सत्स्वरूपतः। ॥ ३८॥

cidvyomaiava paraṃ sargaparyāyaṃ svātmani sthitam| cidvyomaive tthamābhātaṃ na cyutaṃ satsvarūpataḥ| || 38 ||

The supreme consciousness itself is the various forms of creation situated in the self. This consciousness appears thus, not deviating from its true nature.

परम चेतना स्वयं ही सृष्टि के विभिन्न रूपों को आत्मा में स्थित करती है। यह चेतना इस प्रकार प्रकट होती है, अपने सच्चे स्वरूप से विचलित नहीं होती।

7.172.39

आत्मनात्मनि रूपं वा सद्रूपमिव संस्थितम्। सर्गादावेव कचिते मिथ्या कचदपि स्थितम्। ॥ ३९॥

ātmanātmani rūpaṃ vā saddrūpamiva saṃsthitam| sargādāveva kacite mithyā kacadapi sthitam| || 39 ||

The form of the self in the self appears as if it is real, but it is false from the very beginning of creation.

आत्मा का रूप आत्मा में ऐसे स्थित है जैसे वह सत्य हो, पर वह सृष्टि के आरंभ से ही मिथ्या है।

7.172.40

अतः कुतः क्वचिन्नाम हेयादेयादिभासनम्। नेदमाकारवत्किंचिन्नापि स्मृत्यात्मकं क्वचित्। ॥ ४०॥

ataḥ kutaḥ kvacinnāma heyaādeyādibhāsanam| nedamākāravatkiṃcinnāpi smṛtyātmakaṃ kvacit| || 40 ||

Therefore, where does the appearance of acceptance and rejection come from? This is not something with form, nor is it something remembered.

इसलिए, स्वीकार और अस्वीकार का प्रकट होना कहाँ से आता है? यह कोई रूप वाली चीज नहीं है, न ही यह कोई याद की चीज है।

7.172.41

कारणाभावतो भाति स्वरूपं परमात्मनः। आकारवत्त्वे यद्दुःखं भवेत्स्मृत्यां तदेव च ॥ ४१ ॥

kāraṇābhāvato bhāti svarūpaṃ paramātmanaḥ| ākāravattve yaddhuḥkhaṃ bhavetsmṛtyāṃ tadeva ca || 41 ||

Due to the absence of cause, the true nature of the Supreme Self shines| In the form, if there is suffering, it is only in memory

कारण के अभाव में, परमात्मा का स्वरूप प्रकट होता है| आकार में जो दुःख है, वह स्मृति में ही है

7.172.42

द्वयमेतदसत्तस्माद्बन्धो नाम न विद्यते। चिद्व्योम्नि भूतव्योमाभे शून्य एव यथास्थितम् ॥ ४२ ॥

dvayametadasattasmādbandho nāma na vidyate| cidvyomni bhūtavyomābhe śūnya eva yathāsthitam || 42 ||

This duality is unreal, therefore there is no bondage| In the consciousness-space, which is the space of all beings, it is empty as it is

यह द्वैत असत्य है, इसलिए कोई बंधन नहीं है| चेतना-आकाश में, जो सभी प्राणियों का आकाश है, यह जैसा है वैसा ही खाली है

7.172.43

स्थितं स्वरूपमजहद्भुवनार्काचलादिकम्। यथास्थितोग्रदिक्कालं जगत्त्वं रूपमत्यजत् ॥ ४३ ॥

sthitaṃ svarūpamajahadbhuvanārkācalādikam| yathāsthitogradikkālaṃ jagattvaṃ rūpamatyajat || 43 ||

The true nature remains unaffected by the world, sun, mountains, etc.| As it is, the form of the world is abandoned in time

स्वरूप भुवन, सूर्य, पर्वत आदि से अप्रभावित रहता है| जैसा है, समय में जगत का रूप त्याग दिया जाता है

7.172.44

स्वमेवात्यजतो रूपं चिद्व्योम्न उदरे स्थितम्। स्वानुभूत्येकमात्रात्म प्रमातृस्वाप्नपत्तनम् ॥ ४४ ॥

svamevātyajato rūpaṃ cidvyomna udare sthitam| svānubhūtyekamātrātma pramātṛsvāpapattanam || 44 ||

Even its own form is abandoned in the space of consciousness| The self, experienced as one, is the realization of the dreamer

अपना ही रूप चेतना के आकाश में त्याग दिया जाता है| स्वयं को एक के रूप में अनुभव किया जाता है, जो स्वप्नद्रष्टा की पहचान है

7.172.45

अपृथ्व्यादि कुतस्तत्र किल पृथ्व्यादयो वद। तद्भाति केवलं शान्तं चिदाकाशं तथात्मनि ॥ ४५ ॥

apṛthvyādi kutastatra kila pṛthvyādayo vada| tadbhāti kevalaṃ śāntaṃ cidākāśaṃ tathātmani || 45 ||

If not from the elements, then from where do the elements arise? Tell me| That alone shines, peaceful, the space of consciousness in the self

अगर तत्वों से नहीं, तो तत्व कहाँ से उत्पन्न होते हैं? मुझे बताओ| वही चमकता है, शांत, चेतना का आकाश आत्मा में

7.172.46

सर्वादौ स्वप्नकाले च पृथ्व्यादेः संभवः कुतः। उद्भूयेव जगद्रूपाद्ब्रह्मसत्तात्मनात्मनि ॥ ४६ ॥

sarvādau svapnakāle ca pṛthvyādeḥ saṃbhavaḥ kutaḥ | udbhūyeva jagadrūpādbrahmassattātmanātmani || 46 ||

In the beginning and during dreams, from where does the creation of the earth and other elements arise? It arises from the very form of the universe, which is the essence of Brahman.

शुरुआत में और सपने के समय में, पृथ्वी और अन्य तत्वों की उत्पत्ति कहाँ से होती है? यह ब्रह्म के स्वरूप से ही उत्पन्न होती है, जो कि ब्रह्माण्ड का स्वरूप है।

7.172.47

करोति पृथ्व्याद्यभिधाः पश्चात्सत्यार्थदा इव । न स्मृत्यात्म न साकारं पृथ्व्यादीनामसंभवात् । न भ्रान्तिर्न विवर्तादि जगद्ब्रह्मात्म केवलम् ॥ ४७ ॥

karoti pṛthvyādyabhidhāḥ paścātsatyārthadā iva | na smṛtyātma na sākāraṃ pṛthvyādīnāmasaṃbhavaāt | na bhrāntirna vivartādi jagadbrahmātma kevalam || 47 ||

It creates the designations of the earth and other elements, which later appear as if they are real. There is no memory, no form, no illusion, no transformation; the world is solely the essence of Brahman.

यह पृथ्वी और अन्य तत्वों की पहचान बनाता है, जो बाद में वास्तविक प्रतीत होती है। न तो स्मृति है, न रूप है, न भ्रम है, न परिवर्तन है; संसार केवल ब्रह्म का सार है।

7.172.48

ब्रह्मेदमाकचति चारुजगत्स्वरूपं तच्चैकमेव कचनाकचनात्मनिष्ठम् । दृश्याभमप्यमलमेव नभः प्रशान्तं नित्योदितं प्रलयसर्गमयोदयात्म ॥ ४८ ॥

brahmedamākacati cārujagatsvarūpaṃ taccaiakameva kacanākacanātmaniṣṭham | dṛśyābhamapyamalameva nabhaḥ praśāntaṃ nityoditaṃ pralayasargamayodayātma || 48 ||

Brahman manifests this beautiful universe, which is one and the same, existing in both manifested and unmanifested forms. The pure, tranquil sky, though appearing as visible, is eternal and arises from the cycle of creation and dissolution.

ब्रह्म इस सुंदर ब्रह्मांड को प्रकट करता है, जो एक ही है, प्रकट और अप्रकट दोनों रूपों में मौजूद है। शुद्ध, शांत आकाश, जो दृश्य प्रतीत होता है, सनातन है और सृष्टि और प्रलय के चक्र से उत्पन्न होता है।

Chapter 173

7.173.1

श्रीराम उवाच । सर्वानुभवरूपस्य तथा सर्वात्मनोऽप्ययम् । अनन्तस्यात्मतत्त्वस्य देहेऽपि किमहंग्रहः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | sarvānubhavarūpasya tathā sarvātmano'pyayam | anantasyātmatattvasya dehe'pi kimahaṃgrahaḥ || 1 ||

Shri Rama said: For the one who is the form of all experiences and the self of all, what is the attachment to the body even for the infinite self?

श्री राम ने कहा: जो सभी अनुभवों का रूप है और सभी आत्माओं का स्वरूप है, उस अनंत आत्मा के लिए शरीर में भी आत्मा का ग्रहण क्या है?

7.173.2

चितः पाषाणकाष्ठत्वं स्वप्नादिषु कथं भवेत् । इदं पाषाणकाष्ठादि कथं नास्त्यस्ति वा कथम् ॥ २ ॥

citaḥ pāṣāṇakāṣṭhatvaṃ svapnādiṣu kathaṃ bhavet | idaṃ pāṣāṇakāṣṭhādi kathaṃ nāstyasti vā katham || 2 ||

How can the consciousness become a stone or wood in dreams? How can this stone or wood be non-existent or existent?

चेतना स्वप्नों में पत्थर या लकड़ी कैसे हो सकती है? यह पत्थर या लकड़ी अस्तित्वहीन या अस्तित्ववान कैसे हो सकती है?

7.173.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । शरीरिणो यथा हस्ते हस्ततायां यथाग्रहः । सर्वात्मनस्तथा देहे देहतायां तथाग्रहः ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | śarīriṇo yathā haste hastatāyāṃ yathāgrahaḥ | sarvātmanastathā dehe dehatāyāṃ tathāgrahaḥ || 3 ||

Shri Vasistha said: Just as a person identifies with their hand as a hand, similarly, the universal self identifies with the body as a body.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जैसे एक व्यक्ति अपने हाथ को हाथ के रूप में पहचानता है, उसी तरह, सार्वभौमिक आत्मा शरीर को शरीर के रूप में पहचानती है।

7.173.4

पादपस्य यथा पत्रे पत्रतायां यथाग्रहः । सर्वात्मनस्तथा वृक्षे वृक्षतायां तथाग्रहः ॥ ४ ॥

pādapasya yathā patre patratāyāṃ yathāgrahaḥ | sarvātmanastathā vṛkṣe vṛkṣatāyāṃ tathāgrahaḥ || 4 ||

Just as a tree identifies with its leaf as a leaf, similarly, the universal self identifies with the tree as a tree.

जैसे एक पेड़ अपने पत्ते को पत्ता के रूप में पहचानता है, उसी तरह, सार्वभौमिक आत्मा पेड़ को पेड़ के रूप में पहचानती है।

7.173.5

आकाशस्य यथा शून्ये शून्यतायां यथाग्रहः । सर्वात्मनस्तथा द्रव्ये द्रव्यतायां तथाग्रहः ॥ ५ ॥

ākāśasya yathā śūnye śūnyatāyāṃ yathāgrahaḥ | sarvātmanastathā dravye dravyatāyāṃ tathāgrahaḥ || 5 ||

Just as space identifies with emptiness as emptiness, similarly, the universal self identifies with substance as substance.

जैसे आकाश शून्यता को शून्यता के रूप में पहचानता है, उसी तरह, सार्वभौमिक आत्मा पदार्थ को पदार्थ के रूप में पहचानती है।

7.173.6

स्वप्नोचितः स्वप्नपुरे रूपतायां यथाग्रहः। सर्वात्मनस्तथा स्वप्नजाग्रदादौ तथाग्रहः ॥ ६ ॥

svapnocitaḥ svapnapure rūpatāyāṃ yathāgrahaḥ| sarvātmanastathā svapnajāgradādau tathāgrahaḥ || 6 ||

Just as in a dream, the dream city appears appropriate, similarly, the Self perceives the dream and waking states as appropriate.

जैसे स्वप्न में स्वप्न नगर उपयुक्त प्रतीत होता है, वैसे ही आत्मा स्वप्न और जाग्रत अवस्थाओं को उपयुक्त समझता है।

7.173.7

यथागेन्द्रे दृषद्वृक्षवार्यादौ स तथाग्रहः। तथा सर्वात्मनोऽगेन्द्रपुरतायां तथाग्रहः ॥ ७ ॥

yathāgendre dṛṣadvṛkṣavāryādau sa tathāgrahaḥ| tathā sarvātmano'gendrapuratāyāṃ tathāgrahaḥ || 7 ||

Just as in Indra's world, the perception of a crystal tree and other objects is appropriate, similarly, the Self perceives the world of Indra as appropriate.

जैसे इन्द्र के लोक में, स्फटिक वृक्ष और अन्य वस्तुओं का ग्रहण उपयुक्त होता है, वैसे ही आत्मा इन्द्र के लोक को उपयुक्त समझता है।

7.173.8

शरीरस्य यथा केशनखादिषु यथाग्रहः। सर्वात्मनस्तथा काष्ठदृषदादौ तथाग्रहः ॥ ८ ॥

śarīrasya yathā keśanakhādiṣu yathāgrahaḥ| sarvātmanastathā kāṣṭhadṛṣadādau tathāgrahaḥ || 8 ||

Just as the body perceives hair, nails, and other parts as appropriate, similarly, the Self perceives wood, crystal, and other objects as appropriate.

जैसे शरीर बाल, नाखून और अन्य अंगों को उपयुक्त मानता है, वैसे ही आत्मा लकड़ी, स्फटिक और अन्य वस्तुओं को उपयुक्त मानता है।

7.173.9

चित एव यथा स्वप्ने भवेत्काष्ठोपलादिता। चिदाकाशस्य सर्गादौ तथैवावयवादिता ॥ ९ ॥

cit eva yathā svapne bhavetkāṣṭhoplāditā| cidākāśasya sargādau tathaivāvayavāditā || 9 ||

Just as in a dream, consciousness itself appears as wood, stone, etc., similarly, in the creation of the consciousness-space, there are parts and other elements.

जैसे स्वप्न में, चेतना स्वयं लकड़ी, पत्थर आदि के रूप में प्रकट होती है, वैसे ही चेतना-आकाश के सृजन में अवयव और अन्य तत्व होते हैं।

7.173.10

चेतनाचेतनात्मैकं पुरुषस्य यथा वपुः। नखकेशजलाकाशधर्ममाकारभासुरम् ॥ १० ॥

cetanācetanātmaikaṃ puruṣasya yathā vapuḥ| nakhakeśajalākāśadharmamākārabhāsuram || 10 ||

Just as the body of a person is a combination of consciousness and non-consciousness, appearing with the qualities of nails, hair, space, etc.

जैसे किसी व्यक्ति का शरीर चेतना और अचेतना का मिश्रण है, नाखून, बाल, आकाश आदि के गुणों के साथ प्रकट होता है।

7.173.11

चेतनाचेतनात्मैकं तथा सर्वात्मनो वपुः। जङ्गमं स्थावरमयं किंतु नित्यमनाकृति ॥ ११ ॥

cetanācetanātmaikaṃ tathā sarvātmano vapuḥ | jaṅgamaṃ sthāvaramayaṃ kintu nityamanākṛti || 11 ||

The conscious and the unconscious are one, as is the body of all beings. This moving and unmoving universe is eternal and formless.

चेतन और अचेतन एक हैं, और सभी जीवों का शरीर भी एक है। यह चलायमान और अचल ब्रह्मांड अनंत और निराकार है।

7.173.12

यथास्थितं शाम्यतीदं सम्यग्ज्ञानवतो जगत् । स्वप्ने स्वप्नपरिज्ञातुर्यथा दृष्टार्थसंभ्रमः ॥ १२ ॥

yathāsthitaṃ śāmyatīdaṃ samyagjñānavato jagat | svapne svapnaparijñāturyathā dṛṣṭārthasaṃbhamaḥ || 12 ||

This world becomes calm and stable for those who have true knowledge, just as the confusion of dream objects vanishes upon waking.

यह जगत उनके लिए शांत और स्थिर हो जाता है जिनके पास सच्चा ज्ञान है, जैसे स्वप्न के वस्तुओं का भ्रम जागने पर विलीन हो जाता है।

7.173.13

चिन्मात्राकाशमेवेदं न द्रष्टास्ति न दृश्यता । इति मौनमलं स्वप्नद्रष्टुर्यत्सा प्रबुद्धता ॥ १३ ॥

cinmātrākāśamevedaṃ na draṣṭāsti na dṛśyatā | iti maunamalaṃ svapnadraṣṭuryatsā prabuddhatā || 13 ||

This is pure consciousness, the sky of awareness. There is no seer, nor anything seen. Thus, the silence is pure, and this is the awakening of the dreamer.

यह शुद्ध चेतना है, चेतना का आकाश। यहाँ न देखने वाला है, न देखा जाने वाला। इस प्रकार, मौन शुद्ध है, और यह स्वप्नदर्शी का जागरण है।

7.173.14

कल्पकोटिसहस्राणि सर्गा आयान्ति यान्ति च । त एवान्ये च चिद्व्योम्नि जलावर्ता इवार्णवे ॥ १४ ॥

kalpakoṭisahasrāṇi sargā āyānti yānti ca | ta evānye ca cidvyomni jalāvartā ivārṇave || 14 ||

Countless creations come and go, those and others, in the sky of consciousness, like whirlpools in the ocean.

अनगिनत सृष्टियाँ आती हैं और चली जाती हैं, वे और अन्य, चेतना के आकाश में, जैसे समुद्र में भँवर।

7.173.15

करोत्यब्धौ यथोर्म्यादौ नाना कचकचं वपुः । चित्करोति तथा संज्ञाः सर्गाद्याश्चेतने निजे ॥ १५ ॥

karotyabdhau yathormyādau nānā kacakaçaṃ vapuḥ | citkaroti tathā saṃjñāḥ sargādyāścetane nije || 15 ||

Just as the ocean creates various forms of waves, consciousness creates various names and forms in its own awareness.

जैसे समुद्र विभिन्न प्रकार की लहरों के रूप बनाता है, वैसे ही चेतना अपनी चेतना में विभिन्न नाम और रूप बनाती है।

7.173.16

यथास्थितमिदं विश्वं ब्रह्मैवानामयं सदा । तत्त्वज्ञं प्रत्यतत्त्वज्ञजनतानिश्चयादृते ॥ १६ ॥

yathāsthitamidaṃ viśvaṃ brahmaivānāmayaṃ sadā | tattvajñaṃ pratyatattvajñajanatāniścayādṛte || 16 ||

This universe is always pure Brahman as it is | Without the certainty of the knowledge of the knower of the truth

यह विश्व हमेशा शुद्ध ब्रह्म के रूप में है | सत्य के ज्ञाता के ज्ञान के निश्चय के बिना

7.173.17

नाहं तरङ्गः सलिलमहमित्येव युक्तितः । बुद्धं येन तरङ्गेन कुतस्तस्य तरङ्गता ॥ १७ ॥

nāhaṃ taraṅgaḥ salilamahamityeva yuktitaḥ | buddhaṃ yena taraṅgena kutastasya taraṅgatā || 17 ||

I am not the wave, I am the water, this is logical | If the wave is understood, then where is its waveness

मैं तरंग नहीं हूँ, मैं पानी हूँ, यह तर्कसंगत है | यदि तरंग समझ में आ जाती है, तो उसकी तरंगता कहाँ है

7.173.18

ब्रह्मणोऽस्य तरङ्गत्वमिवाभानं यतस्ततः । तरङ्गत्वातरङ्गत्वे ब्राहयौ शक्ती स्थितिं गते ॥ १८ ॥

brahmaṇo'sya taraṅgatvamivābhānaṃ yatastataḥ | taraṅgatvātaraṅgatve brahayau śaktī sthitiṃ gate || 18 ||

The wave-like appearance of this Brahman is from that | In the wave-ness and non-wave-ness, the power of Brahman is established

इस ब्रह्म की तरंग-जैसी अभिव्यक्ति उससे है | तरंगता और अतरंगता में, ब्रह्म की शक्ति स्थापित है

7.173.19

चिद्व्योम्नोऽत्यजतो रूपं स्वप्नवद्व्यस्तवेदनम् । तदिदं हि मनो राम ब्रह्मेत्युक्तः पितामहः ॥ १९ ॥

cidvyomno'tyajato rūpaṃ svapnavadvyastavedanam | tadidaṃ hi mano rāma brahmetyuktaḥ pitāmahaḥ || 19 ||

From the pure consciousness, the form is abandoned, like a dream experience | This indeed is the mind, O Rama, as said by the grandfather Brahma

शुद्ध चेतना से, रूप त्याग दिया जाता है, जैसे स्वप्न का अनुभव | यह वास्तव में मन है, हे राम, जैसा कि पितामह ब्रह्मा ने कहा है

7.173.20

एवमाद्यः प्रजानाथो निराकारो निरामयः । चिन्मात्ररूपसंकल्पपुरवत्कारणोज्झितः ॥ २० ॥

evamādyaḥ prajānātho nirākāro nirāmayaḥ | cinmātrarūpasankalpapuravatkāraṇojjhitaḥ || 20 ||

Thus, the primordial lord of creatures is formless, flawless | Free from the cause of the city of mere conscious will

इस प्रकार, प्राणियों का आदिम स्वामी निराकार और निर्दोष है | केवल चेतना की इच्छा के कारण के नगर से मुक्त

7.173.21

येनाङ्गदत्वं नास्तीति बुद्धं हेमाङ्गदेन वै । अङ्गदत्वं कुतस्तस्य तस्य शुद्धैव हेमता ॥ २१ ॥

yenāṅgadatvaṃ nāstīti buddhaṃ hemāṅgadena vai | aṅgadatvaṃ kutastasya tasya śuddhaiva hemata || 21 ||

By which it is understood that there is no ring-ness, indeed by the golden ring | How can there be ring-ness in that which is purely gold?

जिससे यह समझा जाता है कि अंगूठीपन नहीं है, वास्तव में सोने की अंगूठी से | उसमें अंगूठीपन कैसे हो सकता है जो पूरी तरह से सोना है?

7.173.22

अजे संकल्पमात्रात्म चिन्मात्रव्योमदेहिनि । अहं त्वं जगदित्यादि यद्विभातं तदेव तत ॥ २२ ॥

aje saṅkalpamātrātma cinmātravyomadehini | ahaṃ tvaṃ jagadityādi yadvibhātaṃ tadeva tat || 22 ||

In the unborn, which is the essence of mere thought, in the body of the sky of pure consciousness | 'I', 'you', 'world', etc., whatever appears, that is indeed that.

अजन्मे, जो केवल विचार का सार है, शुद्ध चेतना के आकाश के शरीर में | 'मैं', 'तुम', 'जगत', आदि, जो कुछ भी प्रकट होता है, वही वास्तव में वह है।

7.173.23

चिच्चमत्कृतयो भान्ति याश्चिद्व्योमनि शून्यताः । एतास्ताः सर्गसंहारस्थितिसंरम्भसंविदः ॥ २३ ॥

ciccmatkṛtayo bhānti yāścidvyomani śūnyatāḥ | etāstāḥ sargasaṃhārasthitisanrambhasaṃvidaḥ || 23 ||

The marvels of consciousness shine in the sky of consciousness as emptiness | These are the awarenesses of creation, dissolution, stability, and expansion.

चेतना के आश्चर्य चेतना के आकाश में शून्यता के रूप में चमकते हैं | ये सृजन, विनाश, स्थिरता और विस्तार की चेतनाएँ हैं।

7.173.24

अच्छं चिन्मात्रनभसः कचनं स्वयमेव तत् । स्वप्नाभं चित्ततामात्रं स एष प्रपितामहः ॥ २४ ॥

acchaṃ cinmātranabhasaḥ kacanaṃ svayameva tat | svapnābhaṃ cittatāmātraṃ sa eṣa prapitāmahaḥ || 24 ||

The pure sky of mere consciousness is itself that, without any doubt | It is like a dream, merely a thought, that is this ancestor.

शुद्ध चेतना का आकाश स्वयं वही है, बिना किसी संदेह के | यह स्वप्न की तरह है, केवल एक विचार, यही है यह पूर्वज।

7.173.25

यथा तरङ्गस्तेनैव रूपेणान्येन वाऽनिशम् । स्फुरत्येवमनाद्यन्तः सर्गप्रलयविभ्रमः ॥ २५ ॥

yathā taraṅgastenaiava rūpeṇānyena vā'niśam | sphuratyevamanādyantaḥ sargapralayavibhramaḥ || 25 ||

Just as a wave constantly shimmers with the same or another form | Similarly, the endless confusion of creation and dissolution shimmers.

जैसे एक लहर निरंतर उसी या किसी अन्य रूप में चमकती है | इसी तरह, सृजन और विनाश का अनंत भ्रम चमकता है।

7.173.26

चिद्व्योम्नः कचनं कान्तं यद्विराडिति शब्दितम् । भवेत्संकल्पपुरवत्तस्य कुर्यान्मनोऽपि वै ॥ २६ ॥

cidvyomnaḥ kacanaṃ kāntaṃ yadvirāḍiti śabditam | bhavetsaṃkalpapuravattasya kuryānmano'pi vai || 26 ||

The beautiful form of consciousness, known as Virat, becomes like a city of thoughts; even the mind creates it.

चेतना का सुंदर रूप, जिसे विराट् कहा जाता है, विचारों के नगर की तरह हो जाता है; मन भी इसे रचता है।

7.173.27

सर्गः स्वप्नः स्वप्न एव जाग्रद्देहः स एव च । घनं सुषुप्तं तैमिर्याद्यथा संवेदनं भवेत् ॥ २७ ॥

sargaḥ svapnaḥ svapna eva jāgradddehaḥ sa eva ca | ghanaṃ suṣuptaṃ taimiryādyathā saṃvedanaṃ bhavet || 27 ||

Creation is like a dream, and the waking body is also a dream. Dense ignorance is like deep sleep, and consciousness arises from it.

सृष्टि एक स्वप्न की तरह है, और जाग्रत शरीर भी एक स्वप्न है। घनी अज्ञान गहरी नींद की तरह है, और चेतना उससे उत्पन्न होती है।

7.173.28

तस्य कल्पान्तरजनी शिरोरुहतयोदिता । प्रकाशतमसी कालक्रियाख्याः स्वाङ्गसंधयः ॥ २८ ॥

tasya kalpāntarajanī śiroruhatayoditā | prakāśatamasī kālakriyākhyāḥ svāṅgasandhayaḥ || 28 ||

The different states of that consciousness are like the phases of the moon, manifesting as light and darkness, and are known as the actions of time.

उस चेतना की विभिन्न अवस्थाएँ चंद्रमा के चरणों की तरह हैं, जो प्रकाश और अंधकार के रूप में प्रकट होती हैं, और समय की क्रियाएँ कहलाती हैं।

7.173.29

तस्याग्निरास्यं द्यौर्मूर्धा खं नाभिश्चरणौ क्षितिः । चन्द्रार्कौ दृगू दिशौ श्रोत्रे कल्पनेति विजृम्भिता ॥ २९ ॥

tasyāgnirāsyaṃ dyaurmūrdhā khaṃ nābhiścaraṇau kṣitiḥ | candrārkau dṛgū diśau śrotre kalpaneti vijṛmbhitā || 29 ||

Of that consciousness, fire is the mouth, the sky is the head, the air is the navel, the earth is the feet, the moon and sun are the eyes, the directions are the ears, and all this is created by imagination.

उस चेतना के लिए, अग्नि मुख है, आकाश सिर है, वायु नाभि है, पृथ्वी पैर हैं, चंद्रमा और सूर्य आँखें हैं, दिशाएँ कान हैं, और यह सब कल्पना द्वारा रचा गया है।

7.173.30

एवं सम्यग्दृश्यमानो व्योमात्मा विततात्मकृतिः । अस्मत्संकल्पशैलाभो विराड् स्वप्नाकृतिस्थितः ॥ ३० ॥

evaṃ samyagdṛśyamāno vyomātmā vitatākṛtiḥ | asmatsaṃkalpaśailābho virāḍ svapnākṛtisthitaḥ || 30 ||

Thus, when rightly perceived, the self of space is of an expanded form, a mountain of our thoughts, Virat, situated in the form of a dream.

इस प्रकार, जब सही ढंग से देखा जाता है, तो आकाश का स्वयं विस्तृत रूप का होता है, हमारे विचारों का एक पर्वत, विराट्, स्वप्न के रूप में स्थित है।

7.173.31

यच्च चेतच्चिदाकाशे स्वयं कचकचायते तदेतज्जगदित्येवं तेनात्मैवानुभूयते ॥ ३१ ॥

yacca cetacchidākāśe svayaṃ kacakacāyate tadetajjagadityevaṃ tenātmaivānubhūyate || 31 ||

Whatever shines in the space of consciousness, it is this world itself. By this, the self is experienced.

जो चेतना के आकाश में स्वयं चमकता है, वह यह संसार ही है। इससे आत्मा ही अनुभव किया जाता है।

7.173.32

विराडात्मैवमाकाशं भाति चिन्मयमाततम् स्वभावस्वप्ननगरं नगनागमयात्मकम् ॥ ३२ ॥

virāḍātmaivamākāśaṃ bhāti chinmayamātatam sva-bhāvasvapnanagaraṃ nagana-nāgamayātmakam || 32 ||

The cosmic self thus appears as the sky, full of consciousness, natural like a dream city, made of cities and serpents.

विश्व आत्मा इस प्रकार आकाश के रूप में प्रकट होता है, चेतना से भरा हुआ, स्वाभाविक रूप से स्वप्न नगर के समान, नगरों और सर्पों से बना हुआ।

7.173.33

अनुभवितैवानुभवं सत्यं स्वात्मानमप्यसन्तमिव अनुभवतीयत्त्वेन स्वप्ननटः स्वप्नदेशमिव ॥ ३३ ॥

anubhavitai-vānubhavaṃ satyaṃ svātmānamapyasantamiva anubhavatīyattvena svapnanaṭaḥ svapnadeśamiva || 33 ||

The experiencer experiences the experience as true, even the non-existent self, like a dream actor experiencing a dream place.

अनुभव करने वाला अनुभव को सत्य के रूप में अनुभव करता है, भले ही वह असत् आत्मा ही क्यों न हो, जैसे स्वप्न अभिनेता स्वप्न स्थान को अनुभव करता है।

7.173.34

वेदान्तार्हतसांख्यसौगतगुरुत्र्यक्षादिसूक्ता दृशो ब्रह्मैव स्फुरितं तथात्मकलया स्तादात्मनित्यं यतः तेषां
चात्मावेदोऽनुरूपमखिलं स्वर्गं फलं तद्भवत्यस्य ब्रह्मण ईदृगेव महिमा सर्वात्म यत्तद्वपुः ॥ ३४ ॥

vedāntārhatasāṃkhyasaugatagurutryakṣādisūktā dṛśo brahmaiva sphuri-taṃ tathātmakalayā stādātmanityaṃ yataḥ teṣāṃ cātmāvedo'nurūpamakhilaṃ svargaṃ phalaṃ tadbhava-tyasya brahmaṇa īdṛgeva mahimā sarvātma yattadvapuḥ || 34 ||

The views of Vedanta, Jainism, Samkhya, Buddhism, and other schools all describe Brahman as the ultimate reality. By the self-realization of Brahman, the appropriate heavenly result is attained. Such is the glory of Brahman, the universal self.

वेदान्त, जैन, सांख्य, बौद्ध और अन्य दर्शनों की विचारधाराएँ ब्रह्म को परम सत्य के रूप में वर्णित करती हैं। ब्रह्म के आत्म-ज्ञान से उपयुक्त स्वर्गीय फल प्राप्त होता है। ब्रह्म की यही महिमा है, जो सर्वव्यापी आत्मा है।

Chapter 174

7.174.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । सर्गादौ स्वप्नसंवित्त्या चिदेवाभाति केवला । जगदित्यवभासेव ब्रह्मैवातो जगत्त्रयम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sargādau svapnasanvittyā cidevābhāti kevalā | jagadityavabhāseva brahmaivāto jagattrayam || 1 ||

Vasishtha said: At the beginning of creation, only pure consciousness appears as if in a dream. The world appears as a mere reflection, and indeed, Brahman alone is the three worlds.

वसिष्ठ ने कहा: सृष्टि के आरंभ में, केवल शुद्ध चेतना स्वप्न की तरह प्रकट होती है। जगत एक अभास की तरह प्रतीत होता है, और वास्तव में, ब्रह्म ही तीनों लोक हैं।

7.174.2

सर्गास्तरङ्गा ब्रह्माब्धेस्तेषु संवेदनं द्रवः । सर्गान्तरं सुखाद्यात्म द्वैतैक्यादीतरत्कुतः ॥ २ ॥

sargāstarangā brahmābdhestesu sanvedanaṃ dravaḥ | sargāntaraṃ sukhādyātma dvaitaikyādītaratkutaḥ || 2 ||

Creations are like waves in the ocean of Brahman, and the experience within them is fluid. The diversity within creation, such as happiness and duality, arises from the unity of Brahman.

सृष्टियाँ ब्रह्म के समुद्र में तरंगों की तरह हैं, और उनमें अनुभव प्रवाहमान है। सृष्टि में विविधता, जैसे सुख और द्वैत, ब्रह्म की एकता से उत्पन्न होती है।

7.174.3

यथा स्वप्नसुषुप्तात्म निद्रारूपकमेव खम् । दृश्यादृश्यांशमेकात्मरूपं चिन्नभसस्तथा ॥ ३ ॥

yathā svapnasuṣuptātma nidrārūpakameva kham | dṛśyādṛśyāṃśamekātmarūpaṃ cinnabhasastathā || 3 ||

Just as the dreaming and deep sleep states are forms of sleep, so too the seen and unseen aspects are of the same nature as consciousness.

जैसे स्वप्न और सुषुप्ति नींद के रूप हैं, वैसे ही दृश्य और अदृश्य पहलू चेतना के समान स्वभाव के हैं।

7.174.4

जाग्रति स्वप्ननगरं यादृक्तादृगिदं जगत् । परिज्ञातं भवेदत्र कथमास्था विवेकिनः ॥ ४ ॥

jāgrati svapnanagaraṃ yādṛktādṛgidaṃ jagat | parijñātaṃ bhavedatra kathamāsthā vivekinaḥ || 4 ||

In the waking state, the world appears just like a dream city. How can a discerning person have faith in this perceived world?

जाग्रत अवस्था में, जगत एक स्वप्न नगर की तरह प्रतीत होता है। एक विवेकी व्यक्ति इस दृश्य जगत पर कैसे विश्वास कर सकता है?

7.174.5

सर्गादौ सर्गसंवित्तेर्यथाभूतार्थवेदनात् । जाग्रति स्वाप्ननगरं यादृशं तादृशं जगत् ॥ ५ ॥

sargādau sargasaṃvittiryathābhūtārthavedanāt | jāgrati svāpnanagaraṃ yādṛśaṃ tādṛśaṃ jagat || 5 ||

At the beginning of creation, the true nature of reality is perceived through the consciousness of creation. In the waking state, the world appears just like a dream city.

सृष्टि के आरंभ में, वास्तविकता का सच्चा स्वरूप सृष्टि की चेतना द्वारा जाना जाता है। जाग्रत अवस्था में, जगत एक स्वप्न नगर की तरह प्रतीत होता है।

7.174.6

जाग्रति स्वप्ननगरवासना विविधा यथा सत्या अपि न सत्यास्ता जाग्रत्यो वासनास्तथा ॥ ६ ॥

jāgrati svapnanagaravāsanā vividhā yathā satyā api na satyāstā jāgratyo vāsanāstathā || 6 ||

Just as various desires in the waking state are real but not real, so are desires in the dream state.

जैसे जागृत अवस्था में विविध वासनाएँ सत्य होती हैं परंतु सत्य नहीं होतीं, वैसे ही स्वप्न में वासनाएँ भी ऐसी ही होती हैं।

7.174.7

अन्यथोपप्रपद्येह कल्प्यते यदि कारणम् तत्किं नेदीयसी नात्र भ्रान्तता कल्प्यते तथा ॥ ७ ॥

anyathopaprapadyeha kalpyate yadi kāraṇam tatkiṃ nedīyasī nātra bhrāntatā kalpyate tathā || 7 ||

If a cause is imagined differently, what is the use of that? Here, delusion is not imagined in that way.

यदि कोई कारण अलग तरीके से कल्पित किया जाता है, तो उसका क्या उपयोग है? यहाँ, भ्रांति उस तरीके से नहीं कल्पित की जाती है।

7.174.8

स्वानुभूयत एवेयं भ्रान्तिः स्वप्नजगत्स्विव कारणं त्वनुमासाध्यं क्वानुमाऽनुभवाधिका ॥ ८ ॥

svānubhūyata eveyaṃ bhrāntiḥ svapnajagatsviva kāraṇaṃ tv anumāsādhyaṃ kvānumā'nubhavādhikā || 8 ||

This delusion is experienced by oneself, just like the dream world. The cause, however, is to be inferred, not experienced more than inference.

यह भ्रांति स्वयं अनुभव की जाती है, जैसे स्वप्न जगत। कारण तो अनुमान से सिद्ध होता है, अनुभव से अधिक नहीं।

7.174.9

दृष्टमप्यस्ति यन्नेशे न चात्मनि विचारितम् अन्यथानुपपत्त्यान्तर्भ्रान्त्यात्म स्वप्नशैलवत् ॥ ९ ॥

dṛṣṭamapyasti yanneśe na cātmani vicāritam anyathānupapattyāntarbhrāntyātma svapnaśailavat || 9 ||

That which is seen but not examined in the self, due to the lack of other explanations, is like a dream mountain, delusional in nature.

जो देखा जाता है परंतु आत्मा में विचार नहीं किया जाता, अन्य व्याख्याओं की कमी के कारण, वह स्वप्न में पर्वत की तरह भ्रामक स्वभाव का होता है।

7.174.10

निर्विकल्पं परं जाड्यं सविकल्पं तु संसृतिः ध्यानं तेन समाधानं न संभवंति किंचन ॥ १० ॥

nirvikalpaṃ paraṃ jāḍyaṃ savikalpaṃ tu saṃsṛtiḥ dhyānaṃ tena samādhānaṃ na saṃbhavanti kiṃcana || 10 ||

The highest ignorance is without distinctions, while the worldly existence is with distinctions. Meditation and concentration do not arise from that.

सर्वोच्च अज्ञान विभेद रहित है, जबकि संसार विभेद सहित है। ध्यान और एकाग्रता उससे उत्पन्न नहीं होते।

7.174.11

सचेत्यं संसृतिर्ध्यानमचेत्यं तूपलस्थिति । मोक्षो नोपलवद्भानं न विकल्पात्मकं ततः ॥ ११ ॥

sacetyaṃ saṃsṛtirdhyānamacetyaṃ tūpalasthiti | mokṣo nopalavadbhānaṃ na vikalpātmakaṃ tataḥ || 11 ||

Consciousness is the cycle of existence, meditation is the state of consciousness, liberation is not the state of a pot, nor is it of the nature of alternatives.

चेतना अस्तित्व का चक्र है, ध्यान चेतना की अवस्था है, मोक्ष एक घड़े की अवस्था नहीं है, न ही वह विकल्पों की प्रकृति का है।

7.174.12

न च नामोपलाभेन निर्विकल्पसमाधिना । अन्यदासाद्यते किंचिल्लभ्यते किं स्वनिद्रया ॥ १२ ॥

na ca nāmopalābhena nirvikalpasamādhinā | anyadāsādyate kiṃcil labhyate kiṃ svanidrayā || 12 ||

Neither by obtaining a name nor by the meditation without alternatives, something else is attained, what is obtained by one's own sleep?

न तो नाम प्राप्त करके और न ही विकल्परहित समाधि से कुछ और प्राप्त होता है, अपनी नींद से क्या प्राप्त होता है?

7.174.13

तस्मात्सम्यक्परिज्ञानाद्भ्रान्तिमात्रं विवेकिनः । सर्गात्यन्तासंभवतो यो जीवन्मुक्ततोदयः ॥ १३ ॥

tasmātsamayakparijñānādbhrāntimātraṃ vivekinaḥ | sargātyantāsaṃbhavato yo jīvanmuktatodayaḥ || 13 ||

Therefore, from the correct knowledge, the delusion of the discerning one is only from the impossibility of complete creation, which is the rise of liberation in life.

इसलिए, सही ज्ञान से, विवेकी का भ्रम केवल पूर्ण सृष्टि की असंभावना से है, जो जीवन में मुक्ति का उदय है।

7.174.14

निर्विकल्पं समाधानं तदनन्तमिहोच्यते । यथास्थितमविक्षुब्धमासनं सर्वभासनम् ॥ १४ ॥

nirvikalpaṃ samādhānaṃ tadanantamihocyate | yathāsthitamavikṣubdhamāsanaṃ sarvabhāsanam || 14 ||

The meditation without alternatives is said to be endless here, as it is, undisturbed, the seat of all illumination.

विकल्परहित समाधि यहाँ अनंत कही जाती है, जैसे की है, अविचलित, सभी प्रकाश की सीट।

7.174.15

तदनन्तसुषुप्ताख्यं तत्तुरीयमिति स्मृतम् । तन्निर्वाणमिति प्रोक्तं तन्मोक्ष इति शब्दितम् ॥ १५ ॥

tadanantasuṣuptākhyaṃ tatturīyamiti smṛtam | tannirvāṇamiti proktaṃ tanmokṣa iti śabditam || 15 ||

That endless deep sleep is known as the fourth state, it is called nirvāṇa, that is called liberation.

वह अनंत गहरी नींद चौथी अवस्था के रूप में जानी जाती है, वह निर्वाण कहलाती है, वह मोक्ष कहलाती है।

7.174.16

सम्यग्बोधैकघनता यासौ ध्यानमिति स्मृतम् । दृश्यात्यन्तासंभवात्म बोधमाहुः परं पदम् ॥ १६ ॥

samyagbodhaikaghanatā yāsau dhyānamiti smṛtam | dṛśyātyantāsaṃbhavātma bodhamāhuḥ paraṃ padam || 16 ||

That which is the pure essence of perfect awareness is known as meditation. The supreme state is said to be the realization of the self, which is beyond all perceptions.

जो पूर्ण बोध का सार है, उसे ध्यान कहते हैं। जो सभी दृश्यों से परे है, उस आत्मबोध को परम पद कहते हैं।

7.174.17

तच्च नोपलवज्जाड्यं न सुषुप्तोपमं भवेत् । न निर्विकल्पं न च वा सविकल्पं न वाऽप्यसत् ॥ १७ ॥

tacca nopalavajjāḍyaṃ na suṣuptopamaṃ bhavet | na nirvikalpaṃ na ca vā savikalpaṃ na vā'pyasat || 17 ||

That supreme state is neither dullness nor like deep sleep. It is neither without thoughts nor with thoughts, nor is it non-existent.

वह परम पद न तो जड़ता है और न ही गहरी नींद के समान है। वह न तो निर्विकल्प है और न ही सविकल्प, न ही असत् है।

7.174.18

दृश्यात्यन्तासंभवात्म तदेवाद्यं हि वेदनम्। तत्सर्वं तन्न किंचिच्च तद्वदेवाङ्ग वेत्ति तत्॥ १८॥

dṛśyātyantāsaṃbhavātma tadevādyaṃ hi vedaanam | tatsarvaṃ tanna kiṃcicca tadvadevāṅga vetti tat || 18 ||

That which is beyond all perceptions is the first knowledge. That is everything and yet nothing. That alone knows itself.

जो सभी दृश्यों से परे है, वही प्रथम ज्ञान है। वही सब कुछ है और फिर भी कुछ नहीं है। वही अपने आप को जानता है।

7.174.19

सम्यक्प्रबोधान्निर्वाणं परं तत्समुदाहृतम्। यथास्थितमिदं विश्वं तत्रालं प्रलयं गतम्॥ १९॥

samyakprabodhānnirvāṇaṃ paraṃ tatsamudāhṛtam | yathāsthitamidaṃ viśvaṃ tatrālaṃ pralayaṃ gatam || 19 ||

From perfect awakening comes the supreme liberation. This world, as it is, has dissolved into that.

पूर्ण बोध से परम मुक्ति होती है। यह संसार, जैसा है, उसमें विलीन हो गया है।

7.174.20

न तत्र नानाऽनाना न न च किंचिन्न किंचन। समस्तसदसद्भावसीमान्तः स उदाहृतः॥ २०॥

na tatra nānā'nānā na na ca kiṃcinna kiṃcana | samastasadasadbhāvasīmāntaḥ sa udāhṛtaḥ || 20 ||

There is neither diversity nor non-diversity, neither something nor nothing. It is the boundary of all existence and non-existence.

वहाँ न तो विविधता है और न ही अविविधता, न तो कुछ है और न ही कुछ नहीं है। वह सब अस्तित्व और अनस्तित्व की सीमा है।

7.174.21

अत्यन्तासंभवं दृश्यं यद्वै निर्वाणमासितम्। शुद्धबोधोदयं शान्तं तद्विद्धि परमं पदम्॥ २१॥

atyantāsaṃbhavaṃ dṛśyaṃ yadvai nirvāṇamāsitam | śuddhabodhodayam śāntaṃ tadviddhi paramaṃ padam || 21 ||

That which is seen as utterly impossible, that is indeed Nirvana. Know that to be the supreme state, which is the peaceful arising of pure awareness.

जो अत्यंत असंभव दिखाई देता है, वही निर्वाण है। उसे परम पद समझो, जो शुद्ध बोध का शांत उदय है।

7.174.22

स च संप्राप्यते शुद्धो बोधो ध्यानमनुत्तमम्। शास्त्रात्पदपदार्थज्ञबोधिनोत्पन्नबुद्धिना॥ २२॥

sa ca saṃprāpyate śuddho bodho dhyānamanuttamam | śāstrātpadapadārthajñabodhinotpannabuddhinā || 22 ||

That pure awareness is attained through supreme meditation, arising from the understanding of the meaning of words and scriptures.

वह शुद्ध बोध उत्तम ध्यान से प्राप्त होता है, जो शब्दों और शास्त्रों के अर्थ को समझने से उत्पन्न होता है।

7.174.23

मोक्षोपायाभिधं शास्त्रमिदं वाचयतानिशम्। बुद्ध्युपायेन शुद्धेन पुंसा नान्येन केनचित्॥ २३॥

mokṣopāyābhidhaṃ śāstramidaṃ vācayatāniśam | buddhyupāyena śuddhena puṃsā nānyena kenacit || 23 ||

This scripture, which teaches the means to liberation, should be studied constantly with pure intellect, and not by any other means.

यह शास्त्र, जो मोक्ष के उपाय बताता है, शुद्ध बुद्धि से निरंतर पढ़ा जाना चाहिए, और किसी अन्य उपाय से नहीं।

7.174.24

न तीर्थेन न दानेन न स्नानेन न विद्यया । न ध्यानेन न योगेन न तपोभिर्न चाध्वरैः ॥ २४ ॥

na tīrtheṇa na dānena na snānena na vidyayā | na dhyānena na yogena na tapobhirna cādhvaraiḥ || 24 ||

Not by pilgrimage, not by charity, not by bathing, not by knowledge, not by meditation, not by yoga, not by austerities, nor by rituals.

न तीर्थ से, न दान से, न स्नान से, न विद्या से, न ध्यान से, न योग से, न तप से, न यज्ञों से।

7.174.25

भ्रान्तिमात्रं किलेदं सदसत्सदिव लक्ष्यते । व्योमैव जगदाकारं स्वप्नोऽनिद्रे चिदम्बरे ॥ २५ ॥

bhrāntimātraṃ kiledaṃ sadasatsadiva lakṣyate | vyomaiva jagadākāraṃ svapno'nidre cidambare || 25 ||

This is merely an illusion, appearing as both real and unreal. The world is like the sky, a dream in the waking state of pure consciousness.

यह केवल एक भ्रम है, जो सत् और असत् दोनों के रूप में दिखाई देता है। यह संसार आकाश के समान है, जाग्रत अवस्था में शुद्ध चेतना का स्वप्न।

7.174.26

न शाम्यति तपस्तीर्थैर्भ्रान्तिर्नाम कदाचन । तपस्तीर्थादिना स्वर्गाः प्राप्यन्ते न तु मुक्तता ॥ २६ ॥

na śāmyati tapastīrthairbhāntirnāma kadācana | tapastīrthādinā svargāḥ prāpyante na tu muktatā || 26 ||

Delusion is never removed by penance and pilgrimages | By penance and pilgrimages, heavens are attained, but not liberation

भ्रांति कभी तप और तीर्थों से शांत नहीं होती | तप और तीर्थों से स्वर्ग प्राप्त होता है, परंतु मुक्ति नहीं

7.174.27

भ्रांतिः शाम्यति शास्त्रार्थात्सम्यग्बुद्ध्यावलोकितात् । आत्मज्ञानमयान्मोक्षोपायादेवेह नान्यतः ॥ २७ ॥

bhrāntiḥ śāmyati śāstrārthātsamayagbuddhyāvalokitāt | ātmajñānamayānmokṣopāyādeveha nānyataḥ || 27 ||

Delusion is pacified by the correct understanding of the meaning of the scriptures | Liberation is attained only through the means of self-knowledge, not otherwise

भ्रांति शास्त्रों के अर्थ को सही बुद्धि से देखने से शांत होती है | मुक्ति केवल आत्मज्ञान के साधन से ही प्राप्त होती है, अन्यथा नहीं

7.174.28

आलोककारिणात्यर्थं शास्त्रार्थेनैव शाम्यति । अमलेनाखिला भ्रान्तिः प्रकाशेनैव तामसी ॥ २८ ॥

ālokakāriṇātyarthaṃ śāstrārtheneva śāmyati | amalenaikhilā bhrāntiḥ prakāśenaiva tāmasī || 28 ||

Delusion is completely pacified by the illuminating meaning of the scriptures | All delusion is pacified by the pure light

भ्रांति शास्त्रों के प्रकाशमान अर्थ से पूरी तरह शांत होती है | सभी भ्रांति शुद्ध प्रकाश से शांत होती है

7.174.29

सर्गसंहारसंस्थानां भासो भान्ति चिदम्बरे । स्पन्दनानीव मरुति द्रवत्वानीव वारिणि ॥ २९ ॥

sargasaṃhārasaṃsthānāṃ bhāso bhānti cidambare | spandanānīva maruti dravatvānīva vāriṇi || 29 ||

The manifestations of creation, dissolution, and sustenance shine in the sky of consciousness | Like the vibrations in the wind and the fluidity in water

सृष्टि, संहार और स्थिति की छवि चिदाकाश में चमकती है | जैसे हवा में कंपन और पानी में प्रवाह

7.174.30

द्रव्यस्य हृद्येव चमत्कृतिर्निजा नभस्वतः स्पन्द इवानिशं यथा । यथा स्थिता सृष्टिरियं तथास्तिता लयं नभस्यन्तरनन्यरूपिणी ॥ ३० ॥

dravyasya hṛdyeva camatkṛtirnijā nabhasvataḥ spanda ivāniśaṃ yathā | yathā sthitā sṛṣṭiriyam tathāstitā layaṃ nabhasyantarananyarūpiṇī || 30 ||

The inherent splendor of substance is like the heart, as the constant vibration of the sky | As this creation is established, so it remains, dissolving into the sky, having no other form

पदार्थ की अपनी चमत्कारिता हृदय के समान है, जैसे आकाश का निरंतर स्पंदन | जैसे यह सृष्टि स्थापित है, वैसे ही यह बनी रहती है, आकाश में विलीन होती हुई, किसी अन्य रूप में नहीं

Chapter 175

7.175.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्वप्नाभमाद्यं चिद्व्योम कारणं देहसंविदाम् । दृश्यान्यताऽसंभवतश्चिद्व्योम्नस्तत्कुतो वपुः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | svapnābhādyaṃ cidvyoma kāraṇaṃ dehasaṃvidām |
dṛśyānyatā'saṃbhavataścidvyomnastatkuto vapuḥ || 1 ||

Vasishtha said: The primary cause of bodily consciousness is the space of consciousness, which is like a dream. Since there is no other reality, how can there be a body in the space of consciousness?

वसिष्ठ ने कहा: शरीर की चेतना का प्राथमिक कारण स्वप्न के समान चेतना का आकाश है। क्योंकि कोई अन्य वास्तविकता नहीं है, तो चेतना के आकाश में शरीर कैसे हो सकता है?

7.175.2

सर्गादौ स्वप्नसवित्तिरूपं सर्वं विनानघ । न सर्गो न परो लोको दृश्यमानोऽपि सिद्ध्यति ॥ २ ॥

sargādau svapnasavittirūpaṃ sarvaṃ vinānagh | na sargo na paro loko dṛśyamāno'pi siddhyati || 2 ||

At the beginning of creation, everything is in the form of dream-like consciousness, O sinless one. Neither creation nor the other world exists, even though it appears to be so.

सृष्टि के आरंभ में, सब कुछ स्वप्न-जैसी चेतना के रूप में है, हे निष्पाप। न तो सृष्टि है न ही दूसरा लोक, भले ही ऐसा प्रतीत होता हो।

7.175.3

असदेवानुभूरित्थमेवेदं भासते जगत् । स्वप्नाङ्गनासङ्ग इव शान्तं चिद्व्योम केवलम् ॥ ३ ॥

asadevānubhūritthamevedaṃ bhāsate jagat | svapnāṅganāsaṅga iva śāntaṃ cidvyoma kevalam || 3 ||

Thus, this world appears to be unreal, just like the experience of a dream. The space of consciousness is peaceful and alone, like the detachment from a dream.

इस प्रकार, यह जगत अवास्तविक प्रतीत होता है, जैसे स्वप्न का अनुभव। चेतना का आकाश शांत और अकेला है, जैसे स्वप्न से अलगाव।

7.175.4

एवंनामास्ति चिद्धातुरनादिनिधनोऽमलः । शून्यात्मैवाच्छरूपोऽपि जगदित्यवभाति यः ॥ ४ ॥

evannāmāsti ciddhāturanādinidhano'malaḥ | śūnyātmaivāccharūpo'pi jagadityavabhāti yaḥ || 4 ||

Thus, there is a name for the eternal and pure element of consciousness, which is beginningless and endless. It appears as the world, even though it is essentially void and pure.

इस प्रकार, चेतना के अनादि और अनंत शुद्ध तत्व का एक नाम है, जो अनादि और अनंत है। यह जगत के रूप में प्रतीत होता है, भले ही यह मूल रूप से शून्य और शुद्ध है।

7.175.5

मलस्त्वेषोऽपरिज्ञातः परिज्ञातः परं भवेत् । कुतः किल परे व्योमन्यनादिनिधने मलः ॥ ५ ॥

malastveṣo'parijñātaḥ parijñātaḥ paraṃ bhavet | kutaḥ kila pare vyomanyanādinidhane malaḥ || 5 ||

This impurity, when not recognized, becomes supreme. But how can there be impurity in the eternal and endless space of consciousness?

यह अशुद्धि, जब पहचानी नहीं जाती, परम बन जाती है। लेकिन अनादि और अनंत चेतना के आकाश में अशुद्धि कैसे हो सकती है?

7.175.6

यदेतद्वेदनं शुद्धं तदेव स्वप्नपत्तनम् । जगत्तदेव सर्गादौ पृथ्व्यादेः संभवः कुतः ॥ ६ ॥

yadetadvendaṃ śuddhaṃ tadeva svapnapattanam| jagattadeva sargādau pṛthvyādeḥ saṃbhavaḥ kutaḥ|| 6 ||

That which is pure experience is the same as the dream state. The world is that same experience at the beginning of creation. How does the origin of the earth and other elements occur?

जो यह शुद्ध अनुभव है, वही स्वप्न की अवस्था है| जगत वही अनुभव है जो सृष्टि के आदि में होता है| पृथ्वी आदि का उत्पत्ति कैसे होती है?

7.175.7

चिद्व्योमात्मावभासस्य नभसः सर्गरूपिणी । कृता पृथ्व्यादिकलना मनोबुद्ध्यादिता तथा ॥ ७ ॥

cidvyomātmāvabhāsasya nabhasaḥ sargarūpiṇī| kṛtā pṛthvyādikalanā manobuddhyāditā tathā|| 7 ||

The reflection of the self in the sky of consciousness creates the form of creation. Thus, the calculation of the earth and other elements, as well as the mind and intellect, is made.

चिद्व्योम में आत्मा के प्रतिबिंब से सृष्टि का रूप बनता है| इस प्रकार, पृथ्वी आदि की गणना और मन और बुद्धि की भी की जाती है।

7.175.8

वार्यावर्त इवाभाति पवनस्पन्दवच्च यत् । अबुद्धिपूर्वं चिद्व्योम्नि जगद्भानमभित्तिमत् ॥ ८ ॥

vāryāvart iva ābhāti pavanaspaṇḍavacca yat| abuddhipūrvaṃ cidvyomni jagadbhānamabhittimat|| 8 ||

The world appears like a whirlpool in the sky of consciousness, without prior intellect, just as the wind moves.

जगत चिद्व्योम में एक भंवर की तरह प्रकट होता है, बिना किसी पूर्व बुद्धि के, जैसे हवा चलती है।

7.175.9

पश्चात्तस्यैव तेनैव स्वयमैश्वर्यशंसिना । कृतं बुद्ध्यादिपृथ्व्यादिकल्पनं सदसन्मयम् ॥ ९ ॥

paścāttasyeva tenaiva svayamaiśvaryaśaṃsinā| kṛtaṃ buddhyādipṛthvyādikalpanaṃ sadasanmayam|| 9 ||

Afterwards, by that very self, which is the praise of its own sovereignty, the conception of the intellect and the earth and other elements is made, both real and unreal.

बाद में, उसी आत्मा द्वारा, जो अपने सार्वभौमिकता की प्रशंसा करता है, बुद्धि और पृथ्वी आदि की कल्पना की जाती है, जो सत् और असत् दोनों है।

7.175.10

स्वयमेव कचत्यच्छाच्छा येयं स्वा महाचितिः । सर्गाभिधानमस्यैव नभ एवेह नेतरत् ॥ १० ॥

svayameva kacatyacchācchā yeyaṃ svā mahācitiḥ| sargābhidhānamasyeva nabha evaiha netarat|| 10 ||

This very great consciousness itself shines brilliantly. The name of creation is only this, not anything else.

यह महाचिति स्वयं ही चमकती है। सृष्टि का नाम यही है, कुछ और नहीं।

7.175.11

न च किंचन नामाङ्ग कचत्यच्छैव सा स्मृता । चिन्मात्रैकैककलनं ततमेवात्मनात्मनि ॥ ११ ॥

na ca kiṃcana nāmāṅga kacatyacchai va sā smṛtā | cinmātraikai kakala naṃ tatamevātmanātmani || 11 ||

There is nothing that is not pure consciousness; it is remembered as the ultimate reality | The individual self is a mere reflection of the supreme self

कुछ भी ऐसा नहीं है जो शुद्ध चेतना नहीं है; यह परम वास्तविकता के रूप में याद किया जाता है | व्यक्तिगत आत्मा परम आत्मा का एक साधारण प्रतिबिंब है

7.175.12

चिदाकाशश्चिदाकाशे तदिदं स्वमलं वपुः । चित्तं दृश्यमिवाभाति यथा स्वप्ने तथा स्थितम् ॥ १२ ॥

cidākāśaścidākāśe tadidaṃ svamalaṃ vapuḥ | cittaṃ dṛśyamivābhāti yathā svapne tathā sthitam || 12 ||

The space of consciousness is within the space of consciousness; this body is pure | The mind appears as if it is seen, just as in a dream it is situated

चेतना का आकाश चेतना के आकाश में है; यह शरीर शुद्ध है | मन ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह दिखाई देता है, जैसे स्वप्न में यह स्थित है

7.175.13

अन्यथानुपपत्त्यार्थकारणाभावतः स्वतः । सर्गादावेव स्वात्मैव दृश्यं चिद्व्योम पश्यति ॥ १३ ॥

anyathānupapattyārthakāraṇābhāvataḥ svataḥ | sargādāveva svātmaiva dṛśyaṃ cidvyoma paśyati || 13 ||

Due to the lack of any other cause, from the beginning of creation, the self sees the visible as the space of consciousness

किसी अन्य कारण के अभाव के कारण, सृष्टि के आरंभ से, आत्मा दृश्य को चेतना के आकाश के रूप में देखती है

7.175.14

स्वप्नवत्तच्च निर्धर्म मनागपि न भिद्यते । तस्माच्चिद्व्योम चिद्व्योम शून्यत्वं गगनादिवत् ॥ १४ ॥

svapnavattaccana nirdharma manāgapi na bhidyate | tasmāccidvyoma cidvyoma śūnyatvaṃ gaganādivat || 14 ||

Like a dream, it is without attributes, and even without effort, it does not differ | Therefore, the space of consciousness is the space of consciousness, emptiness like the sky

स्वप्न की तरह, यह गुणों से रहित है, और प्रयास के बिना भी, यह भिन्न नहीं है | इसलिए, चेतना का आकाश चेतना का आकाश है, आकाश की तरह शून्यता

7.175.15

यदैव तत्परं ब्रह्म सर्वरूपविवर्जितम् । तदेवैकं तथारूपमेवं सर्वतया स्थितम् ॥ १५ ॥

yadaiva tatparaṃ brahma sarvarūpavivarjitam | tadevaikaṃ tathārūpamevaṃ sarvatayā sthitam || 15 ||

When that supreme Brahman is devoid of all forms, then it alone is in that form, thus it is established in all ways

जब वह परम ब्रह्म सभी रूपों से रहित होता है, तब वही उस रूप में होता है, इस प्रकार यह सभी तरीकों से स्थापित होता है

7.175.16

स्वप्नेऽनुभूयते चैतत्स्वप्नो ह्यात्मैव भासते । नानाबोधमनानैव ब्रह्मैवामलमेव तत् ॥ १६ ॥

svapne'nubhūyate caitatsvapno hyātmaiva bhāsate | nānābodhamanānaiva brahmaivāmalameva tat || 16 ||

In a dream, this is experienced, the dream itself shines as the self | Various perceptions and thoughts are indeed the pure Brahman.

स्वप्न में यह अनुभव किया जाता है, स्वप्न स्वयं ही आत्मा के रूप में चमकता है | विभिन्न बोध और विचार वास्तव में शुद्ध ब्रह्म हैं।

7.175.17

ब्रह्मैवात्मनि चिद्भावाज्जीवत्वमिव कल्पयत् । रूपमत्यजदेवाच्छं मनस्तामिव गच्छति ॥ १७ ॥

brahmaivātmani cidbhāvājjīvatvamiva kalpayat | rūpamatyajadevācchaṃ manastāmiva gacchati || 17 ||

Brahman itself, due to the consciousness in the self, imagines life | The mind, having abandoned its form, goes to that state.

ब्रह्म स्वयं, आत्मा में चेतना के कारण, जीवन की कल्पना करता है | मन, अपने रूप को त्यागकर, उस अवस्था में चला जाता है।

7.175.18

इदं सर्वं तनोतीव तच्च खात्मकमेव खम्। भवतीव जगद्रूपं विकारीवाविकार्यपि ॥ १८ ॥

idaṃ sarvaṃ tanotīva taccakhātmakameva kham | bhavatīva jagadrūpaṃ vikārīvāvikhāryapi || 18 ||

This entire universe seems to expand, and that is indeed the nature of space | It appears to take the form of the world, both changing and unchanging.

यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड फैलता हुआ प्रतीत होता है, और वह वास्तव में अंतरिक्ष की प्रकृति है | यह विश्व के रूप में प्रतीत होता है, परिवर्तनशील और अपरिवर्तनशील दोनों।

7.175.19

मन एव स्वयं ब्रह्मा स सर्गस्य हृदि स्थितः। करोत्यविरतं सर्वमजस्रं संहरत्यपि ॥ १९ ॥

mana eva svayaṃ brahmā sa sargasya hṛdi sthitaḥ | karotyaviratam sarvamajasraṃ saṃharatyapi || 19 ||

The mind itself is Brahman, situated in the heart of creation | It continuously creates everything and also dissolves it all.

मन स्वयं ही ब्रह्म है, सृष्टि के हृदय में स्थित | यह निरंतर सब कुछ रचता है और सब कुछ को विलीन भी करता है।

7.175.20

पृथ्व्यादिरहितो यस्मिन्मनोहृद्यङ्गवर्जिते। अन्यद्वा त्रिजगद्भाति यथा स्वप्ने निराकृति ॥ २० ॥

pṛthvyādirahito yasminmanohṛdyaṅgavarjite | anyadvā trijagadbhāti yathā svapne nirākṛti || 20 ||

In that which is devoid of earth and other elements, without the organs of the heart and mind | Another three worlds appear, just like formless in a dream.

उसमें जो पृथ्वी और अन्य तत्वों से रहित है, हृदय और मन के अंगों से वंचित | दूसरे तीन लोक प्रकट होते हैं, जैसे स्वप्न में निराकार।

7.175.21

देहरूपजगद्रूपैरहमेकमनाकृति। मनस्तिष्ठाम्यनन्तात्म बोधाबोधं पराभवम् ॥ २१ ॥

deharūpajagadrūpairahamekamanākṛti | manastiṣṭhāmyanantātma bodhābodhaṃ parābhavam || 21 ||

I am the one formless reality, distinct from the body and the world | I abide in the mind, the infinite self, beyond knowledge and ignorance

मैं एक निराकार वास्तविकता हूँ, शरीर और संसार से भिन्न | मैं मन में निवास करता हूँ, अनन्त आत्मा, ज्ञान और अज्ञान से परे

7.175.22

नेह पृथ्व्यादि नो देहो न चैवान्यास्ति दृश्यता। जगत्तया केवलं खं मनः कचकचायते ॥ २२ ॥

neha pṛthvyādi no deho na caivānyāsti dṛśyatā | jagattayā kevalaṃ khaṃ manaḥ kacakacāyate || 22 ||

There is no earth, no body, nor any other visible thing | The world is merely space, the mind flickers

यहाँ न पृथ्वी है, न शरीर है, न ही कोई दृश्य चीज है | संसार केवल आकाश है, मन चमकता है

7.175.23

विचार्यदृष्ट्यैतदपि न किंचिदपि विद्यते। केवलं भाति चिन्मात्रमात्मनात्मनि निर्घनम् ॥ २३ ॥

vicāryadṛṣṭyaitadapi na kiñcidapi vidyate | kevalaṃ bhāti cinmātramātmanātmani nirghanaṃ || 23 ||

Even with discriminative vision, nothing exists | Only pure consciousness shines, non-dual in the self

विवेकी दृष्टि से भी, कुछ भी नहीं है | केवल शुद्ध चेतना चमकती है, अद्वैत आत्मा में

7.175.24

यतो वाचो निवर्तन्ते तूष्णींभावोऽवशिष्यते । व्यवहार्यपि खात्मैव तद्वत्तिष्ठति मूकवत् ॥ २४ ॥

yato vāco nivartante tūṣṇīṃbhāvo'vaśiṣyate | vyavahāryapi khātmaiva tadvattiṣṭhati mūkavat || 24 ||

From where words turn back, silence remains | Even in worldly affairs, the self remains silent

जहाँ से शब्द वापस आते हैं, मौन बना रहता है | दुनियावी मामलों में भी, आत्मा चुप रहता है

7.175.25

अनन्तापारपर्यन्ता चिन्मात्रपरमेष्टका । तूष्णीं भूत्वा भवत्येष प्रबुद्धः पुरुषोत्तमः ॥ २५ ॥

anantāpāraparyantā cinmātraparamēṣṭakā | tūṣṇīṃ bhūtvā bhavatyēṣa prabuddhaḥ puruṣōttamaḥ || 25 ||

Boundless and infinite, pure consciousness is the supreme reality | Becoming silent, one becomes the awakened supreme being

अनंत और अपार, शुद्ध चेतना परम सत्य है | मौन होकर, वह जागृत परम पुरुष बन जाता है

7.175.26

अबुद्धिपूर्वं द्रवतो यथावर्तादयोऽम्भसि । क्रियन्ते ब्रह्मणा तद्वच्चित्तबुद्ध्यादयो जडाः ॥ २६ ॥

abuddhipūrvaṃ dravato yathāvartādayo'mbhasi | kriyante brahmaṇā tadvacchittabuddhyādayo jaḍāḥ || 26 ||

Just as whirlpools and waves are created in water by the wind without any intention, so too are the mind, intellect, and other insentient entities created by Brahman.

जैसे वायु के द्वारा पानी में भंवर और तरंगें बिना किसी इच्छा के उत्पन्न होती हैं, वैसे ही ब्रह्म के द्वारा मन, बुद्धि और अन्य जड़ पदार्थ उत्पन्न होते हैं।

7.175.27

अबुद्धिपूर्वं वातेन क्रियते स्पन्दनं यथा । अनन्यदेवं बुद्ध्यादि क्रियते परमात्मना ॥ २७ ॥

abuddhipūrvaṃ vātena kriyate spandanaṃ yathā | ananyadevaṃ buddhyādi kriyate paramātmanā || 27 ||

Just as the vibration is created by the wind without any intention, so too are the intellect and other entities created by the Supreme Self.

जैसे वायु द्वारा कंपन बिना किसी इच्छा के उत्पन्न होता है, वैसे ही परमात्मा द्वारा बुद्धि और अन्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं।

7.175.28

अनन्यदात्मनो वायोर्यथा स्पन्दनमव्ययम् । अनन्यदात्मनस्तद्वच्चिन्मात्रं परमात्मनः ॥ २८ ॥

ananyadātmano vāyoryathā spandanamavyayam | ananyadātmanastadvacchinmātraṃ paramātmanaḥ || 28 ||

Just as the vibration of the wind is inseparable from the wind itself, so too is the pure consciousness inseparable from the Supreme Self.

जैसे वायु का कंपन वायु से अलग नहीं होता, वैसे ही परमात्मा की शुद्ध चेतना परमात्मा से अलग नहीं होती।

7.175.29

चिद्व्योम ब्रह्मचिन्मात्रमात्मा चिति महानिति । परमात्मेति पर्याया ज्ञेया ज्ञानवतां वर ॥ २९ ॥

cidvyoma brahmacinmātramātmā citi mahāniti | paramātmā iti paryāyā jñeyā jñānavatāṃ vara || 29 ||

The terms 'consciousness-space,' 'Brahman,' 'pure consciousness,' 'Self,' 'great,' and 'Supreme Self' are synonymous and should be understood by the wise.

चित्-व्योम, ब्रह्म, शुद्ध चेतना, आत्मा, महान्, और परमात्मा ये सब शब्द एक ही अर्थ के हैं और ज्ञानी लोगों को इन्हें समझना चाहिए।

7.175.30

ब्रह्मोन्मेषनिमेषात्म स्पन्दास्पन्दात्म वातवत्। निमेषो यादृगेवास्य समुन्मेषस्तथा जगत्॥ ३०॥

brahmōnmeṣanimēṣātma spandāspandātma vātavat | nimēṣo yādṛgēvāsya samunmeṣastathā jagat || 30 ||

Brahman is the essence of both opening and closing, like the vibration and stillness of the wind. Just as the closing of the eyes is, so is the opening of the eyes in the world.

ब्रह्म खुलने और बंद होने का सार है, जैसे वायु का कंपन और स्थिरता। जैसे आँखों का बंद होना है, वैसे ही आँखों का खुलना इस जगत में है।

7.175.31

दृश्यमस्य समुन्मेषो दृश्याभावो निमेषणम्। एकमेतन्निराकारं तद्द्वयोरप्युपक्षयात्॥ ३१॥

dṛśyamasy samunmeṣo dṛśyābhāvo nimeṣaṇam | ekametannirākāraṃ taddvayorapyupakṣayāt || 31 ||

The manifestation of the visible is the opening of the eyes, and the absence of the visible is the closing of the eyes. This one is formless, due to the destruction of both.

दृश्य का उद्भव आँखों का खुलना है, और दृश्य का अभाव आँखों का बंद होना है। यह एक निराकार है, दोनों के नाश के कारण।

7.175.32

निमेषोन्मेषयोरेकरूपमेव परं मतम्। अतोऽस्ति दृश्यं नास्तीति सदसच्च सदा चितिः॥ ३२॥

nimeṣonmeṣayorekarūpameva paraṃ matam | ato'sti dṛśyaṃ nāstīti sadasacca sadā citiḥ || 32 ||

The nature of both the closing and opening of the eyes is considered the same ultimate reality. Therefore, the visible exists and does not exist, both real and unreal, always in consciousness.

आँखों के बंद होने और खुलने की प्रकृति एक ही परम वास्तविकता मानी जाती है। इसलिए, दृश्य है और नहीं है, दोनों सत्य और असत्य, हमेशा चेतना में।

7.175.33

निमेषो नान्य उन्मेषान्नोन्मेषोऽपि निमेषतः। ब्रह्मणः सर्गवपुषो निमेषोन्मेषरूपिणः॥ ३३॥

nimeṣo nānya unmeṣānnonaunmeṣo'pi nimeṣataḥ | brahmaṇaḥ sargavapuṣo nimeṣonmeṣarūpiṇaḥ || 33 ||

The closing of the eyes is not different from the opening, and the opening is not different from the closing. Brahman, the creator of the universe, is of the nature of both closing and opening.

आँखों का बंद होना खुलने से भिन्न नहीं है, और खुलना भी बंद होने से भिन्न नहीं है। ब्रह्म, विश्व का स्रष्टा, दोनों बंद और खुलने की प्रकृति का है।

7.175.34

तद्यथास्थितमेवेदं विद्धि शान्तमशेषतः। अजातमजरं व्योम सौम्यं समसमं जगत्॥ ३४॥

tadyathāsthitamevedaṃ viddhi śāntamaśeṣataḥ | ajātamajaraṃ vyoma saumyaṃ samasamaṃ jagat || 34 ||

Know this to be as it is, completely peaceful, unborn, ageless, the sky, gentle, and the world is equal and calm.

इसे जैसा है वैसा ही जानो, पूरी तरह शांत, अजन्मा, अजर, आकाश, सौम्य, और समान और शांत विश्व।

7.175.35

चिदचित्यात्मकं व्योम रूपं कचकचायते। चिन्नाम तदिदं भाति जगदित्येव तद्वपुः॥ ३५॥

cidacityātmakaṃ vyoma rūpaṃ kacakacāyate | cinnāma tadidaṃ bhāti jagadityeva tadvapuḥ || 35 ||

The sky, which is of the nature of consciousness and non-consciousness, shines brightly. This world, known as consciousness, appears as such.

जो चेतना और अचेतना की प्रकृति का आकाश है, वह चमकता है। यह चेतना के रूप में जाना जाने वाला विश्व ऐसा ही प्रकट होता है।

7.175.36

न नश्यति न चोत्पन्नं दृश्यं नाप्यनुभूयतेस्वयं चमत्करोत्यन्तः केवलं केवलैव चित् ॥ ३६ ॥

na naśyati na cotpannaṃ dṛśyaṃ nāpyanubhūyatesvayaṃ camatkarotyantaḥ kevalaṃ kevalaiva cit || 36 ||

It does not perish, nor is it born; the seen is not experienced. It marvels within itself, solely, solely consciousness.

यह नष्ट नहीं होता, न ही जन्म लेता है; दृश्य अनुभव नहीं किया जाता। यह अपने आप में चमत्कार करता है, केवल, केवल चेतना।

7.175.37

महाचिद्व्योममणिभा दृश्यनाम्नी निजाकरातनन्यान्येव भातापि भानुभास इवोष्णता ॥ ३७ ॥

mahācidvyomamaṇibhā dṛśyanāmnī nijākarātananyānyeva bhātāpi bhānubhāsa ivoṣṇatā || 37 ||

The great sky of consciousness appears as the seen, named by itself, as if the heat of the sun. All else is just a reflection of its own form.

चेतना का महान आकाश दृश्य के रूप में प्रकट होता है, जो अपने आप को नामित करता है, मानो सूर्य की गर्मी। सभी कुछ उसके अपने रूप का प्रतिबिंब है।

7.175.38

सुषुप्तं स्वप्नवद्भाति भाति ब्रह्मैव सर्गवत्सर्वमेकं शिवं शान्तं नानेवापि स्थितं स्फुरत् ॥ ३८ ॥

suṣuptaṃ svapnavadbhāti bhāti brahmaiva sargavatsarvamekaṃ śivaṃ śāntaṃ nānevāpi sthitaṃ sphurat || 38 ||

In deep sleep, it appears as a dream. It shines as Brahman, the creator of all, one, auspicious, peaceful, not many, yet it appears to be many.

गहरी नींद में, यह स्वप्न के रूप में प्रकट होता है। यह ब्रह्म के रूप में चमकता है, सभी का स्रष्टा, एक, शुभ, शांत, अनेक नहीं, फिर भी यह अनेक प्रकट होता है।

7.175.39

यद्यत्संवेद्यते यादृक्सद्वाऽसद्वा यथा यदातथानुभूयते तादृक्तत्सदस्त्वसदस्तु वा ॥ ३९ ॥

yadyatsaṃvedyate yādṛksadvā'sadvā yathā yadātathānubhūyate tādṛktatsadastvasadastu vā || 39 ||

Whatever is experienced, whether real or unreal, is experienced as such. It is real or unreal, as it is experienced.

जो भी अनुभव किया जाता है, चाहे वास्तविक हो या अवास्तविक, वह ऐसा ही अनुभव किया जाता है। यह वास्तविक है या अवास्तविक, जैसा यह अनुभव किया जाता है।

7.175.40

अन्यथानुपपत्त्या चेत्कारणं परिकल्प्यतेतत्स्वप्नाभो जगद्भावादन्यथा नोपपद्यते ॥ ४० ॥

anyathānupapattyā cetkāraṇaṃ parikalpyatetatsvapnābho jagadbhāvādanyathā nopapadyate || 40 ||

If it is otherwise inconceivable, then a cause should be imagined. This world appears like a dream, otherwise it is not conceivable.

यदि यह अन्यथा असंभव है, तो एक कारण कल्पित किया जाना चाहिए। यह संसार स्वप्न के समान प्रकट होता है, अन्यथा यह असंभव है।

7.175.41

प्रमातीतात्पराद्विश्वमनन्यदुदितं यतः । प्रमातीतमिदं चैव किंचिन्नाभ्युदितं ततः ॥ ४१ ॥

pramātītātpāradviśvamananyaduditaṃ yataḥ | pramātītamidaṃ caiva kiṃcinnaabhyuditaṃ tataḥ || 41 ||

From the Supreme Knower, the universe arises, and nothing else. This universe, being known, does not arise from anything else.

परम ज्ञाता से यह विश्व उत्पन्न होता है, और कुछ नहीं। यह विश्व, ज्ञात होने पर, किसी और से उत्पन्न नहीं होता।

7.175.42

यस्य यद्रसिकं चित्तं तत्तथा तस्य गच्छति । ब्रह्मैकरसिकं तेन मनस्तत्तां समश्नुते ॥ ४२ ॥

yasya yadrasikaṃ cittaṃ tattathā tasya gacchati | brahmaikarasikaṃ tena manastattāṃ samaśnute || 42 ||

Whatever the mind is attached to, it goes towards that. Therefore, the mind that is attached to Brahman alone attains that state.

जिसका मन जिसमें आसक्त होता है, वह उसी की ओर जाता है। इसलिए, जो मन ब्रह्म में ही आसक्त होता है, वह उसी अवस्था को प्राप्त होता है।

7.175.43

यच्चित्तो यद्गतप्राणो जनो भवति सर्वदा । तत्तेन वस्त्विति ज्ञातं जानाति तदसौ स्फुटम् ॥ ४३ ॥

yaccitto yadgataprāṇo jano bhavati sarvadā | tattena vastviti jñātaṃ jānāti tadasau sphuṭam || 43 ||

Whatever the mind and life force are focused on, a person becomes that. Thus, one clearly knows that reality.

जिस पर मन और प्राण केंद्रित होते हैं, व्यक्ति वही बन जाता है। इस प्रकार, वह वास्तविकता को स्पष्ट रूप से जानता है।

7.175.44

ब्रह्मैकरसिकं यत्स्यान्मनस्तत्तद्भवेत्क्षणात् । यस्य यद्रसिकं चेतो बुद्धं तेन तदेव सत् ॥ ४४ ॥

brahmaikarasikaṃ yatsyānmanastattadbhavedkṣaṇāt | yasya yadrasikaṃ ceto buddhaṃ tena tadeva sat || 44 ||

If the mind becomes focused on Brahman alone, it becomes that in an instant. Whatever the mind is attached to, that becomes its reality.

अगर मन ब्रह्म पर ही केंद्रित हो जाता है, तो वह तुरंत वही बन जाता है। जिस पर मन आसक्त होता है, वही उसकी वास्तविकता बन जाती है।

7.175.45

विश्रान्तं यस्य वै चित्तं जन्तोस्तत्परमार्थसत् । व्यवहृत्यै करोत्यन्यत्सदाचारादतद्रसम् ॥ ४५ ॥

viśrāntaṃ yasya vai cittaṃ jantostatparamārthasat | vyavahṛtyai karotyanyatsadācārādatadrāsam || 45 ||

Whose mind is at rest, that is the ultimate reality for the living being. For worldly interactions, one should act according to that essence.

जिसका मन विश्राम में है, वही जीव के लिए परमार्थ सत्य है। संसारिक व्यवहार के लिए, उसे उसी सार के अनुसार कार्य करना चाहिए।

7.175.46

द्वित्वैकत्वादिकलना नेह काचन विद्यते । सत्तामात्रं च दृगियमितश्चेदलमीक्ष्यते ॥ ४६ ॥

dvitvaikatvādikalanā neha kācana vidyate | sattāmātraṃ ca dṛgiyamitascēdalamīkṣyatē || 46 ||

There is no calculation of duality or unity here | If only existence is seen, then that is enough || 46 ||

यहाँ द्वैत या एकता का कोई गणना नहीं है | यदि केवल अस्तित्व देखा जाता है, तो यह पर्याप्त है || ४६ ||

7.175.47

अदृश्यदृश्यसदसन्मूर्तामूर्तदृशामिह । नैवास्ति न च नास्त्येव कर्ता भोक्ताऽथवा क्वचित् ॥ ४७ ॥

adṛśyadṛśyasadasanmūrtāmūrtadṛśāmiha | naivāsti na ca nāstyēva kartā bhoktā'thavā kvacit || 47 ||

Here, for the seers of the unseen, seen, existent, non-existent, embodied, and disembodied | There is no doer or enjoyer anywhere || 47 ||

यहाँ, अदृश्य, दृश्य, सत, असत, मूर्त, और अमूर्त के दर्शकों के लिए | कहीं भी कर्ता या भोक्ता नहीं है || ४७ ||

7.175.48

इदमित्थमनाद्यन्तं जगत्पर्यायमात्मनि । ब्रह्मैकघनमाशान्तं स्थितं स्थाणुरिवाध्वनि ॥ ४८ ॥

idamitthamanādyantaṃ jagatparyāyamātmani | brahmaikaghanamāśāntaṃ sthitaṃ sthāṇurivādhvani || 48 ||

This world, which is beginningless and endless, is a manifestation of the self | Brahman, the sole, dense, and tranquil, stands like a pillar on the path || 48 ||

यह जगत, जो अनादि और अनंत है, आत्मा का परिणाम है | ब्रह्म, जो एकमात्र, घना, और शांत है, मार्ग पर स्तंभ की तरह खड़ा है || ४८ ||

7.175.49

यदेव ब्रह्म बुद्ध्यादि तदेवैतन्निरञ्जनम् । यदेव गगनं शान्तं शून्यं विद्धि तदेव तत् ॥ ४९ ॥

yadeva brahma buddhyādi tadevaitannirañjanam | yadeva gaganaṃ śāntaṃ śūnyaṃ viddhi tadeva tat || 49 ||

That which is Brahman, beginning with intelligence, is this very pure one | That which is the tranquil sky, know that to be void || 49 ||

जो ब्रह्म है, बुद्धि से शुरू होता है, वही यह शुद्ध है | जो शांत आकाश है, उसे शून्य समझो || ४९ ||

7.175.50

केशोण्ड्रकादयो व्योम्नि यथा सदसदात्मकाः । द्वितामिवागता भान्ति परे बुद्ध्यादयस्तथा ॥ ५० ॥

keśoṇḍrakādayo vyomni yathā sadasadātmakāḥ | dvitāmivāgatā bhānti pare buddhyādayastathā || 50 ||

Just as hair, nails, etc., in the sky appear as if they have duality, being existent and non-existent | Similarly, the higher intelligence, etc., appear to have duality || 50 ||

जैसे बाल, नाखून आदि आकाश में द्वैत के रूप में प्रकट होते हैं, सत और असत होने के कारण | इसी तरह, उच्च बुद्धि आदि द्वैत के रूप में प्रकट होती है || ५० ||

7.175.51

तथा बुद्ध्यादि देहादि वेदनादि परापरे । अनेकान्यप्यनन्यानि शून्यत्वानि यथाम्बरे ॥ ५१ ॥

tathā buddhyādi dehādi vedanādi parāpare | anekānyapyananyāni śūnyatvāni yathāmbare || 51 ||

Thus, the intellect, body, senses, and other dualities are many and yet not different, like the emptiness of the sky.

इस प्रकार, बुद्धि, शरीर, इंद्रियां और अन्य द्वैत बहुत हैं और फिर भी अलग नहीं हैं, जैसे आकाश की शून्यता।

7.175.52

सुषुप्ताद्विशतः स्वप्नमेकनिद्रात्मनो यथा । सर्गस्थस्यापि न द्वित्वं नैकत्वं ब्रह्मणस्तथा ॥ ५२ ॥

suṣuptādviśataḥ svapnamekanidrātmano yathā | sargasthasyāpi na dvitvaṃ naikatvaṃ brahmaṇastathā || 52 ||

Just as in deep sleep, the dream state arises from the one self, similarly, in the state of creation, there is neither duality nor singularity in Brahman.

जैसे गहरी नींद में, स्वप्न अवस्था एक आत्मा से उत्पन्न होती है, उसी प्रकार, सृष्टि की अवस्था में, ब्रह्म में न तो द्वैत है न ही एकता।

7.175.53

एवमेव कचत्यच्छा छायेयं स्वा महाचितेः । न च किंचन नामाङ्ग कचत्यच्छैवमास्थिता ॥ ५३ ॥

evameva kacatyacchā chāyeyaṃ svā mahāciteḥ | na ca kiṃcana nāmāṅga kacatyacchai evamāsthitā || 53 ||

In this way, the reflection of the great consciousness appears, but nothing, not even a name or form, truly exists in this state.

इस प्रकार, महान चेतना की छाया प्रकट होती है, लेकिन इस अवस्था में कुछ भी, न तो नाम न ही रूप, वास्तव में मौजूद है।

7.175.54

चिद्व्योम्नि हि चिदाकाशमेव स्वममलं वपुः । चेत्यं दृश्यमिवाभाति स्वप्नेष्विव यथास्थितम् ॥ ५४ ॥

cidvyomni hi cidākāśameva svamamalaṃ vapuḥ | cetyaṃ dṛśyamivābhāti svapneṣviva yathāsthitam || 54 ||

In the pure space of consciousness, the pure consciousness itself appears as the perceivable form, just as in dreams.

चेतना के शुद्ध आकाश में, शुद्ध चेतना स्वयं ही दृश्य रूप में प्रकट होती है, जैसे स्वप्न में।

7.175.55

अन्यथानुपपत्त्यार्थकारणाभावतः स्वतः । चिद्व्योमात्मानमेवादौ दृश्यमित्येव पश्यति ॥ ५५ ॥

anyathānupapattyārthakāraṇābhāvataḥ svataḥ | cidvyomātmānamevādau dṛśyamityeva paśyati || 55 ||

Otherwise, due to the lack of cause and effect, one sees the perceivable as the pure space of consciousness itself from the beginning.

अन्यथा, कारण और परिणाम की कमी के कारण, शुरू से ही दृश्य को शुद्ध चेतना के आकाश के रूप में देखा जाता है।

7.175.56

सर्गादावेव खात्मैव दृश्यं भाति निराकृति । संभ्रमः स्वप्नसंकल्पमिथ्याज्ञानेष्विवाभितः ॥ ५६ ॥

sargādāveva khātmaiva dṛśyaṃ bhāti nirākṛti | saṃbhramaḥ svapnasankalpamithyājñāneṣvivābhitaḥ || 56 ||

In the beginning of creation, only the self is perceived, devoid of form | The confusion is like that in dreams, imagination, and false knowledge

सृष्टि के आरंभ में, केवल आत्मा ही दिखाई देता है, रूप से रहित | यह भ्रम स्वप्न, कल्पना और झूठे ज्ञान की तरह है

7.175.57

स्वप्नवत्तच्च निर्धर्म मनागपि न भिद्यते । विकार्यपि सधर्मापि चिद्व्योम्नो वस्तुनो मलात् ॥ ५७ ॥

svapnavattacca nirdharma manāgapi na bhidyate | vikāryapi sadharmāpi cidvyomno vastuno malāt || 57 ||

Like a dream, it is without attributes and does not differ even slightly | Even in modifications, it has the same nature as the conscious sky of reality

स्वप्न की तरह, यह गुणों से रहित है और थोड़ा भी अलग नहीं है | परिवर्तनों में भी, यह वास्तविकता के चेतन आकाश की तरह ही है

7.175.58

तत्स्वप्ननगराकारं सधर्माप्यसधर्मकम् । शिवादनन्यमेवेत्थं स्थितमेव निरन्तरम् ॥ ५८ ॥

tatsvapnanagarākāraṃ sadharmāpyasadharmakam | śivādananyamevetthaṃ sthitameva nirantaram || 58 ||

That dream-like city form, having the same nature, yet different | It is indeed non-different from Shiva, thus it remains uninterruptedly

वह स्वप्न-जैसा नगर रूप, उसी प्रकार का, फिर भी अलग | यह शिव से अभिन्न है, इसलिए यह निरंतर बना रहता है

7.175.59

दृश्यं स्वप्नाद्रिवत्स्वच्छं मनागपि न भिद्यते । तस्माच्चिद्व्योमचिद्व्योम्नः शून्यत्वं गगनादिव ॥ ५९ ॥

dṛśyaṃ svapnādrivatsvacchaṃ manāgapi na bhidyate | tasmāccidvyomacidvyomnaḥ śūnyatvaṃ gaganādiva || 59 ||

The perceived, like a dream or a mountain, is pure and does not differ even slightly | Therefore, the emptiness of the conscious sky is like the sky

दृश्यमान, स्वप्न या पर्वत की तरह, शुद्ध है और थोड़ा भी अलग नहीं है | इसलिए, चेतन आकाश की शून्यता आकाश की तरह है

7.175.60

यदेव तत्परं ब्रह्म सर्वरूपविवर्जितम् । तदेवेदं तथाभूतमेव सर्गतया स्थितम् ॥ ६० ॥

yadeva tatparaṃ brahma sarvarūpavivarjitam | tadevedaṃ tathābhūtameva sargatayā sthitam || 60 ||

That which is the supreme Brahman, devoid of all forms | That itself is this, thus it exists in the form of creation

जो परम ब्रह्म है, सभी रूपों से रहित | वही यह है, इसलिए यह सृष्टि के रूप में विद्यमान है

7.175.61

स्वप्नेऽनुभूयते चैतत्स्वप्ने ह्यात्मैव भासते । पुरादित्वेन न तु सत्पुरादिरचितं तदा ॥ ६१ ॥

svapne'nubhūyate caitatsvapne hyātmaiva bhāsate | purāditvena na tu satpurādiracitaṃ tadā || 61 ||

In a dream, this experience is had; in a dream, indeed, the self alone shines. It is not that the ancient city is created then.

स्वप्न में यह अनुभव होता है; स्वप्न में, वास्तव में, आत्मा ही चमकती है। यह नहीं कि पुराना शहर तब बनाया जाता है।

7.175.62

स्वप्ने च प्रत्यभिज्ञायाः संस्कारस्य स्मृतेस्तथा । न सत्ता तदिदं दृष्टमित्यर्थस्यात्यसंभवात् ॥ ६२ ॥

svapne ca pratyabhijñāyāḥ saṃskārasya smṛtes tathā | na sattā tad idaṃ dṛṣṭam ity arthasyātyasaṃbhavāt || 62 ||

In a dream, there is recognition, memory, and impression. There is no reality in this, as it is seen, due to the impossibility of its meaning.

स्वप्न में, पहचान, स्मृति और संस्कार होता है। इसमें कोई वास्तविकता नहीं है, जैसा कि देखा जाता है, इसके अर्थ की असंभवता के कारण।

7.175.63

तस्मादेतत्त्रयं त्यक्त्वा यद्भानं ब्रह्मसंविदः । तस्य दृष्टार्थसादृश्यान्मूढैः स्मृत्यादितोहिता ॥ ६३ ॥

tasmādetattrayaṃ tyaktvā yadbhānaṃ brahmasaṃvidaḥ | tasya dṛṣṭārthasādṛśyān mūḍhaiḥ smṛtyāditohitā || 63 ||

Therefore, leaving aside this triad, the appearance of Brahman-consciousness is seen by the wise due to its similarity to the seen object, remembered, etc.

इसलिए, इस त्रय को छोड़कर, ब्रह्म-चेतना की उपस्थिति बुद्धिमानों द्वारा देखी जाती है, देखे गए वस्तु की समानता के कारण, याद की गई, आदि।

7.175.64

यथा यत्रैव लहरी वारिण्येति पुनः पुनः । तत्रैवैति तथा तद्वदनन्या खे परे जगत् ॥ ६४ ॥

yathā yatraiva laharī vāriṇyeti punaḥ punaḥ | tatraiva iti tathā tadvad ananyā khe pare jagat || 64 ||

Just as a wave always returns to the water, so too the non-dual in the supreme space always returns to the world.

जैसे एक लहर हमेशा पानी में वापस आती है, वैसे ही परम अवकाश में अद्वैत हमेशा जगत में वापस आता है।

7.175.65

विधयः प्रतिषेधाश्च सर्व एव सदैव च । विभक्ताश्च विमिश्राश्च परे सन्ति न सन्ति च ॥ ६५ ॥

vidhayaḥ pratiṣedhāśca sarva eva sadaiva ca | vibhaktāśca vimiśrāśva pare santi na santi ca || 65 ||

All injunctions and prohibitions always exist, both distinct and mixed, in the supreme, they exist and do not exist.

सभी विधि और प्रतिषेध हमेशा मौजूद रहते हैं, अलग और मिश्रित, परम में, वे मौजूद हैं और नहीं भी हैं।

7.175.67

भ्रान्तस्य भ्रमणं भूमेर्न भूर्भ्रान्तैव वा गणैः । न शाम्यति ज्ञातुरपि तथाभ्यासं विनात्र दृक् ॥ ६७ ॥

bhrāntasya bhramaṇaṃ bhūmerna bhūrbhrāntaiva vā gaṇaiḥ | na śāmyati jñāturapi tathābhyāsaṃ vinātra dṛk || 67 ||

The delusion of the deluded person does not cease merely by knowing the truth; it only ceases through practice.

भ्रमित व्यक्ति का भ्रम सिर्फ सत्य को जान लेने से नहीं दूर होता, बल्कि अभ्यास से ही दूर होता है।

7.175.68

शास्त्रस्यास्य तु यन्नाम वादनं तद्विनापरः । अभ्यासो दृश्यसंशान्त्यै न भूतो न भविष्यति ॥ ६८ ॥

śāstrasyāsya tu yannāma vādanaṃ tadvināparaḥ | abhyāso dṛśyasaṃśāntyai na bhūto na bhaviṣyati || 68 ||

The name of this scripture is 'Vadana.' Without it, there is no other practice for the pacification of the visible world; it has not been and will not be.

इस शास्त्र का नाम 'वादन' है। इसके बिना, दृश्य जगत की शांति के लिए कोई अन्य अभ्यास नहीं है; ऐसा न हुआ है और न होगा।

7.175.69

न जीवन्न मृतं चित्तं रोधमायाति संसृतेः । अविनाभाविदेहत्वाद्बोधात्त्वेतन्न पश्यति ॥ ६९ ॥

na jīvanna mṛtaṃ cittaṃ rodhamāyāti saṃsṛteḥ | avinābhāvidehatvādbodhāttvetannapaśyati || 69 ||

The mind, neither alive nor dead, does not attain cessation in the cycle of existence. Due to its inseparable association with the body, it does not perceive the truth.

मन, जो न जीवित है न मृत, अस्तित्व के चक्र में विराम नहीं पाता। शरीर से अभिन्न संबंध के कारण, यह सत्य को नहीं देख पाता।

7.175.70

सर्वदैवाविनाभावि चित्तं दृश्यशरीरयोः । इह चामुत्र चैतस्य बोधान्ते शाम्यतः स्वयम् ॥ ७० ॥

sarvadaivāvinābhāvi cittaṃ dṛśyaśarīrayoḥ | iha cāmutra caitasya bodhānte śāmyataḥ svayam || 70 ||

The mind, always inseparable from the visible body, both here and hereafter, attains peace by itself at the end of knowledge.

मन, जो हमेशा दृश्य शरीर से अभिन्न है, यहाँ और परलोक में, ज्ञान के अंत में स्वयं शांति प्राप्त करता है।

7.175.71

चित्तदृश्यशरीराणि त्रीणि शाम्यन्ति बोधतः । पवनस्पन्दसैन्यानि कारणाभावतो यथा ॥ ७१ ॥

cittadṛśyaśarīrāṇi trīṇi śāmyanti bodhataḥ | pavanaspaṇḍasainyāni kāraṇābhāvato yathā || 71 ||

The mind, the visible, and the body—these three become calm through knowledge, just as the movements of the wind cease due to the absence of cause.

मन, दृश्य, और शरीर—ये तीनों ज्ञान से शांत हो जाते हैं, जैसे वायु के स्पंदन कारण के अभाव में रुक जाते हैं।

7.175.72

कारणं मौर्ख्यमेवास्य तच्चास्मादेव शास्त्रतः । किंचित्संस्कृतबुद्धीनां वाचितादेव शाम्यति ॥ ७२ ॥

kāraṇaṃ maurkhyamevāsya taccāsmādeva śāstrataḥ | kiṃcitsaṃskṛtabuddhīnāṃ vācitādeva śāmyati || 72 ||

The cause of this is foolishness, and that is understood from the scriptures. The wise, who are well-versed in the scriptures, can pacify it through reasoning.

इसका कारण मूर्खता है, और यह शास्त्रों से समझा जाता है। शास्त्रों में पारंगत बुद्धिमान लोग तर्क से इसे शांत कर सकते हैं।

7.175.73

अबुद्धमुत्तरग्रन्थात्पूर्वं पूर्वं हि बुध्यते । ग्रन्थं पदपदार्थज्ञः खेदवान्न निवर्तते ॥ ७३ ॥

abuddhamuttaragranthātpūrvaṃ pūrvaṃ hi budhyate | granthaṃ padapadārthajñaḥ khedavānna nivartate || 73 ||

The ignorant understand the latter part of the scripture first, but one who knows the meaning of every word does not tire and does not turn away.

अज्ञानी पहले शास्त्र के अंतिम भाग को समझते हैं, लेकिन जो हर शब्द के अर्थ को जानता है, वह थकता नहीं और पीछे नहीं हटता।

7.175.74

उपायमिदमेवातो विद्धि शास्त्रं भ्रमक्षये । अनन्यसाधारणतां गतमित्यनुभूयते ॥ ७४ ॥

upāyamidamevāto viddhi śāstraṃ bhramakṣaye | ananyasādhāraṇatāṃ gatamityanubhūyate || 74 ||

Know this scripture as the means to the end of delusion. It is experienced as having no equal.

इस शास्त्र को भ्रम के अंत का साधन समझो। यह अनुभव किया जाता है कि इसका कोई समान नहीं है।

7.175.75

तस्मादस्मान्महाशास्त्राद्यथाशक्ति विचारयेत् । भागौ द्वौ भागमेकं वा तेन दुःखक्षयो भवेत् ॥ ७५ ॥

tasmādasmānmahāśāstrādyathāśakti vicārayet | bhāgau dvau bhāgamekaṃ vā tena duḥkhakṣayo bhavet || 75 ||

Therefore, one should ponder over this great scripture according to one's ability. By understanding even a part or two parts, one can attain the end of suffering.

इसलिए, अपनी शक्ति के अनुसार इस महान शास्त्र पर विचार करें। एक या दो भागों को समझकर भी दुःख का अंत हो सकता है।

7.175.76

आरुषेयमिदमिति प्रमादाच्चेन्न रोचते । तदन्यदात्मविज्ञानशास्त्रं किंचिद्विचारयेत् ॥ ७६ ॥

āruṣeyamidamiti pramādāccennaroce | tadanyadātmavijñānaśāstraṃ kiṃcidvicārayet || 76 ||

If this scripture does not appeal due to negligence, then one should ponder over some other scripture of self-knowledge.

यदि इस शास्त्र को लापरवाही से पसंद नहीं आता है, तो किसी अन्य आत्मज्ञान शास्त्र पर विचार करें।

7.175.77

अनर्थेनाविचारेण वयः कुर्यान्न भस्मसात् । बोधेन ज्ञानसारेण दृश्यं कर्तव्यमात्मसात् ॥ ७७ ॥

anarthenāvicāreṇa vayaḥ kuryānna bhasmasāt | bodhena jñānasāreṇa dṛśyaṃ kartavyamātmasāt || 77 ||

One should not waste life with meaningless thoughts; with the essence of knowledge, one should perceive reality from within oneself.

अनर्थक विचारों से जीवन नष्ट नहीं करना चाहिए; ज्ञान के सार से, आपको अपने आप से वास्तविकता को देखना चाहिए।

7.175.78

आयुषः क्षण एकोऽपि सर्वरत्नैर्न लभ्यते । नीयते तद्वृथा येन प्रमादः सुमहानहो ॥ ७८ ॥

āyuṣaḥ kṣaṇa eko'pi sarvaratnairna labhyate | nīyate tadvṛthā yena pramādaḥ sumahānaho || 78 ||

Even a single moment of life is not attainable with all the riches; it is a great negligence to waste it.

जीवन का एक भी क्षण सभी धन-सम्पदा से नहीं मिलता; उसे व्यर्थ करना एक बड़ी लापरवाही है।

7.175.79

अनुभूतमपि च नो सदृशमिदं द्रष्टृसहितमपि स्वप्ननिजमरणबान्धवरोदनमिव सदिव कचिदपि ॥ ७९ ॥

anubhūtamapi ca no sadṛśyamidaṃ draṣṭṛsahitamapi svapnanijamaraṇabāndhavarodanamiva sadiva kacitamapi || 79 ||

Even what is experienced does not resemble this. Even when witnessed, it is like the weeping over relatives in a dream—real while it lasts, yet ultimately unreal.

जो अनुभव किया जाता है, वह भी इस जैसा नहीं है। देखा भी जाए, तो यह स्वप्न में रिश्तेदारों के लिए रोने जैसा है—जितना देर रहता है उतना वास्तविक लगता है, परंतु अंततः असत्य है।

Chapter 176

7.176.1

श्रीराम उवाच । जगन्ति सन्त्यसंख्यानि भविष्यन्ति गतानि च । तत्कथाभिः कथं ब्रह्मन्प्रबोधयसि मामिमम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | jaganti santyasaṅkhyāni bhaviṣyanti gatāni ca | tatkathābhiḥ kathaṃ brahmannprabodhayasi māmimam || 1 ||

Shri Rama said: There are countless worlds that have existed and will exist. How do you, O Brahman, awaken me with these stories?

श्री राम ने कहा: अनगिनत जगत हैं जो हुए हैं और होंगे। हे ब्रह्मन्, आप मुझे इन कथाओं से कैसे जगाते हैं?

7.176.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । जगत्स्वप्नेषु शब्दार्थसंबन्धोऽवगतस्त्वया । न नाम न च लोकेन व्यर्थं तत्कथनं ततः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | jagatsvapneṣu śabdārthasaṃbandho'vagatastvayā | na nāma na ca lokeṇa vyarthaṃ tatkathanaṃ tataḥ || 2 ||

Vasistha said: You have understood the relationship between words and meanings in the dreams of the world. Therefore, it is not useless to speak of them.

वसिष्ठ ने कहा: आपने जगत के स्वप्नों में शब्द और अर्थ के संबंध को समझ लिया है। इसलिए, उनके बारे में बात करना व्यर्थ नहीं है।

7.176.3

या कथावगतात्मभ्यां शब्दार्थाभ्यां निगद्यते । बुध्यते सेतरा नान्तः सैवेह व्यवहारिणी ॥ ३ ॥

yā kathāvagatātmabhyāṃ śabdārthābhyāṃ nigadyate | budhyate setarā nāntaḥ saiveha vyavahāriṇī || 3 ||

The story that is understood through words and meanings is comprehended by others, and it is the same that is practiced here.

जो कथा शब्द और अर्थ से समझी जाती है, वह दूसरों द्वारा समझी जाती है, और यही यहाँ प्रयोग में लाई जाती है।

7.176.4

यदा विदितवेद्यः संस्त्रिकालामलदर्शनः । भविष्यसि तदा तानि प्रत्यक्षेणैव भोत्स्यसे ॥ ४ ॥

yadā viditavedyaḥ saṃstrikālāmaladarśanaḥ | bhaviṣyasi tadā tāni pratyakṣeṇaiva bhotsyase || 4 ||

When you become the knower of the known, with a pure vision of the three times, then you will directly perceive those worlds.

जब आप ज्ञाता बनेंगे, तीनों कालों के शुद्ध दर्शन के साथ, तब आप उन जगतों को सीधे देखेंगे।

7.176.5

स्वप्ने चिन्मात्रमेवाद्यं स्वयं भाति जगत्तया । यथा तथैव सर्गादौ नात्रान्यदुपपद्यते ॥ ५ ॥

svapne cinmātramevādyaṃ svayaṃ bhāti jagattayā | yathā tathaiva sargādau nātrānyadupapadyate || 5 ||

In a dream, pure consciousness alone appears as the world. Similarly, in the beginning of creation, nothing else is possible.

स्वप्न में, शुद्ध चेतना ही जगत के रूप में प्रकट होती है। इसी प्रकार, सृष्टि के आरंभ में और कुछ संभव नहीं है।

7.176.6

अणावणावसंख्यानि तेन सन्ति जगन्ति खे । तेषां तान्व्यवहारौघान्संख्यातुं क इव क्षमः ॥ ६ ॥

aṇāvaṇāvasaṃkhyāni tena santi jaganti khe | teṣāṃ tānvyavahāraughānsaṃkhyātuṃ ka iva kṣamaḥ || 6 ||

There are countless beings in the sky | Who is capable of counting their transactions?

आकाश में असंख्य प्राणी हैं | उनके व्यवहारों को गिनने में कौन सक्षम है?

7.176.7

अत्रैव मे पुरा प्रोक्तं मत्पित्रा पद्मजन्मना । पद्मरेणुमताख्यानं श्रृणु तत्कथयामि ते ॥ ७ ॥

atraiva me purā proktaṃ matpitrā padmajanmanā | padmareṇumatākhyānaṃ śṛṇu tatkathayāmi te || 7 ||

Here, long ago, my father, the lotus-born, told me | Listen, I will narrate to you the story of the lotus dust.

यहाँ, पहले, मेरे पिता, कमल से उत्पन्न, ने मुझे बताया | सुनो, मैं तुम्हें कमल के धूल की कथा सुनाता हूँ।

7.176.8

पुरा पृष्टो मया ब्रह्मा जगज्जालमिदं कियत् । क्व वा भातीति वद मे ब्रह्मोवाच ततः स माम् ॥ ८ ॥

purā pṛṣṭo mayā brahmā jagajjālamidaṃ kiyat | kva vā bhātīti vad me brahmovāca tataḥ sa mām || 8 ||

Long ago, I asked Brahma, 'How vast is this universe? Where does it appear?' Then Brahma spoke to me.

पहले, मैंने ब्रह्मा से पूछा, 'यह ब्रह्मांड कितना विशाल है? यह कहाँ दिखाई देता है?' तब ब्रह्मा ने मुझसे कहा।

7.176.9

श्रीब्रह्मोवाच । ब्रह्मैवेदं मुने सर्वं जगदित्यवभासते । सतामनन्तं सत्त्वेन जगत्त्वेनासतामपि ॥ ९ ॥

śrībrahmovāca | brahmaivedaṃ mune sarvaṃ jagadityavabhāsate | satāmanantaṃ sattvena jagattvenāsatāmapi || 9 ||

Sri Brahma said: O sage, this entire universe appears as Brahman | It is infinite for the real, and also for the unreal due to its nature.

श्री ब्रह्मा ने कहा: हे मुनि, यह पूरा ब्रह्मांड ब्रह्म के रूप में दिखाई देता है | यह सत्य के लिए अनंत है, और असत्य के लिए भी अपने स्वभाव के कारण।

7.176.10

शुभं ममेदमाख्यानं श्रृणु श्रवणभूषणम् । ब्रह्माण्डपिण्ड इत्युक्तं ब्रह्माण्डाख्यानमेव च ॥ १० ॥

śubhaṃ mamedamākhyānaṃ śṛṇu śravaṇabhūṣaṇam | brahmāṇḍapiṇḍa ityuktaṃ brahmāṇḍākhyānameva ca || 10 ||

Listen to this auspicious narrative of mine, which is an ornament to the ears | It is called the story of the Brahmanda, the cosmic egg.

मेरी यह शुभ कथा सुनो, जो कानों का आभूषण है | इसे ब्रह्मांड पिंड कहा जाता है, ब्रह्मांड की कथा ही है।

7.176.11

अस्ति खे खादनन्यात्मा चिद्व्योमपरमाणुकः । शून्यरूपमिवाकाशे शुद्धः स्पन्द इवानिले ॥ ११ ॥

asti khe khādananyātmā cidvyomaparamāṇukaḥ | śūnyarūpamivākāśe śuddhaḥ spanda ivānile || 11 ||

There exists in the sky, the self, which is different from the material body, the supreme particle of consciousness-sky, like the form of void in space, pure like the vibration in the air.

आकाश में एक ऐसा आत्मा है जो भौतिक शरीर से अलग है, चेतना-आकाश का परम अणु, आकाश में शून्य रूप की तरह, हवा में स्पंदन की तरह शुद्ध है।

7.176.12

सोऽपश्यदात्मना स्वप्न इव जीवत्वमात्मनि । शून्यरूपमिवाकाशं पवनः स्पन्दनं यथा ॥ १२ ॥

so'paśyadātmanā svapna iva jīvatvamātmani | śūnyarūpamivākāśaṃ pavanaḥ spandanaṃ yathā || 12 ||

He saw the individuality in the self like a dream, like the form of void in space, like the vibration of the air.

उसने आत्मा में जीवत्व को स्वप्न की तरह देखा, आकाश में शून्य रूप की तरह, हवा के स्पंदन की तरह।

7.176.13

आकाशरूपमजहदेव जीवस्ततः स्वयम् । अपश्यदहमित्येव रूपमाकाशरूपकम् ॥ १३ ॥

ākāśarūpamajahadeva jīvas tataḥ svayam | apaśyadahamityeva rūpamākāśarūpakam || 13 ||

The individual then abandoned the form of space and perceived himself as 'I am' in the form of space.

फिर जीव ने आकाश के रूप को त्याग दिया और आकाश के रूप में अपने आप को 'मैं हूँ' के रूप में देखा।

7.176.14

अहंकारस्त्वहंबुद्धिरित्येवापश्यदात्मनि । एकनिश्चयनिर्माणमयी मायानुरूपिणी ॥ १४ ॥

ahaṃkārastvahaṃbuddhirityevāpaśyadātmani | ekaniśśayanirmāṇamayī māyānurūpiṇī || 14 ||

He then saw in the self the ego as 'I am' and the intellect as a single determination, which is the illusion of Maya.

फिर उसने आत्मा में अहंकार को 'मैं हूँ' के रूप में और बुद्धि को एक निश्चय के रूप में देखा, जो माया का भ्रम है।

7.176.15

बुद्धिर्मनोहमित्येवं स्वप्ने पश्यदसन्मयम् । नमयन्त्यात्मनात्मानमविकल्पं विकल्पनैः ॥ १५ ॥

buddhirmanohamityevaṃ svapne paśyadasanmayam | namayantyātmanātmānamavikalpaṃ vikalpanaiḥ || 15 ||

The intellect, thinking 'I am the mind,' sees the unreal in dreams, and through the mind, it creates the self without alternatives.

बुद्धि, सोचती है 'मैं मन हूँ,' स्वप्न में असत्य देखती है, और मन के द्वारा, वह बिना किसी विकल्प के आत्मा को बनाती है।

7.176.16

अपश्यत्तन्मनः स्वप्ने देहे पञ्चेन्द्रियं ततः । अनाकारं घनाकारं स्वप्नाद्रित्वमिवाज्ञधीः ॥ १६ ॥

apashyattanmanaḥ svapne dehe pañcendriyaṃ tataḥ | anākāraṃ ghanākāraṃ svapnādritvamivājñadhīḥ || 16 ||

He saw the mind in a dream, in the body with five senses, then formless, yet dense, like a mountain in a dream, ignorant.

उसने स्वप्न में मन को देखा, शरीर में पांच इन्द्रियों के साथ, फिर निराकार, घनाकार, स्वप्न में पर्वत की तरह, अज्ञानी।

7.176.17

ददर्श स मनोदेहो वपुस्त्रिभुवनात्मकम्। स्वात्मा स्वात्मैव निर्भित्ति भित्तिभासुरमाततम्॥ १७॥

dadarśa sa manodeho vapustribhuvanātmakam | svātmā svātmaiva nirbhitti bhittibhāsuramātatam || 17 ||

That mental body saw the form that is the essence of the three worlds. The self itself is the reflection, the wall, and the support.

वह मानसिक शरीर तीनों लोकों के सार के रूप को देखा। स्वयं आत्मा ही प्रतिबिंब, दीवार और आधार है।

7.176.18

अनेकभूतकलितं नानावयवरजङ्गमम्। कलनाकालकलितं कल्पितान्योन्यसंगमम्॥ १८॥

anekabhūtakalitaṃ nānāvayavarajaṅgamam | kalanākālakalitaṃ kalpitānyonyasaṃgamam || 18 ||

Composed of various elements, with diverse parts and moving, affected by the passage of time, and imagined mutual union.

विभिन्न तत्वों से बना हुआ, विविध अंगों और चलने वाला, समय के प्रवाह से प्रभावित, और कल्पित परस्पर संगम।

7.176.19

स्वप्ने प्रत्येकमेवात्र पश्यत्यादर्शबिम्बितम्। इव त्रैलोक्यनगरं नवरङ्गमनोहरम्॥ १९॥

svapne pratyekamevātra paśyatyādarśabimbitam | iva trailokyanagaraṃ navaraṅgamanoharam || 19 ||

In a dream, each one sees here as if reflected in a mirror, like the charming city of the three worlds with nine divisions.

स्वप्न में, प्रत्येक यहाँ दर्पण में प्रतिबिंबित हुआ देखता है, जैसे तीनों लोकों का नौ भागों वाला मोहक नगर।

7.176.20

अथ प्रत्येकमत्रापि नवरङ्गमनोहरम्। त्रिजगद्वेत्ति हृदये स्वादर्श इव बिम्बितम्॥ २०॥

atha pratyekamatrāpi navaraṅgamanoharam | trijagadvetti hṛdaye svādarśa iva bimbitam || 20 ||

Then, each one here also knows the charming city of nine divisions in the heart, as if reflected in a mirror.

फिर, प्रत्येक यहाँ भी हृदय में नौ भागों वाले मोहक नगर को जानता है, जैसे दर्पण में प्रतिबिंबित हुआ।

7.176.21

परमाणोः परमाणोरिति सन्ति तनूदरे। अतनूनि जगन्त्युच्चैर्धनानीव च तान्यपि॥ २१॥

paramāṇoḥ paramāṇoriti santi tanūdare | atanūni jagantyuccairdhanānīva ca tānyapi || 21 ||

There are smaller particles within the smallest particles, and even those smaller particles are like wealth in the universe.

परमाणु के भीतर और परमाणु हैं, और वे और छोटे परमाणु भी धन की तरह हैं।

7.176.22

अविद्येयमनन्तेयमविद्यात्वेन चेतिता। ब्रह्मत्वेन परिज्ञाता भवति ब्रह्म निर्मलम्॥ २२॥

avidye yamananteyamavidyātvena cetitā | brahmatvena parijñātā bhavati brahma nirmalam || 22 ||

This ignorance is considered infinite due to ignorance itself. When recognized as Brahman, it becomes pure Brahman.

यह अज्ञान अज्ञान के कारण अनन्त माना जाता है। जब ब्रह्म के रूप में पहचाना जाता है, तो यह शुद्ध ब्रह्म बन जाता है।

7.176.23

एवं द्रष्टापि यः स्वप्नजालं दृष्टे न किंचन। कोऽत्र द्रष्टा कुतो दृश्यं क्व द्वैतं क्व च कारणम्॥ २३॥

evaṃ draṣṭāpi yaḥ svapnajālaṃ dṛṣṭe na kiṃcana | ko'tra draṣṭā kuto dṛśyaṃ kva dvaitaṃ kva ca kāraṇam || 23 ||

Similarly, the seer who sees the dream as nothing, who is the seer here, where is the seen, where is duality, and where is the cause?

इसी प्रकार, जो द्रष्टा स्वप्न को कुछ नहीं देखता, यहाँ द्रष्टा कौन है, दृश्य कहाँ है, द्वैत कहाँ है, और कारण कहाँ है?

7.176.24

सर्वं निःशान्तमाभातं खात्म निर्भित्ति केवलम्। ब्रह्मात्मनि स्थिते स्वच्छमाद्यन्तपरिवर्जितम्॥ २४॥

sarvaṃ niḥśāntamābhātaṃ khātma nirbhitti kevalam | brahmātmani sthite svacchamādyantaparivarjitam || 24 ||

Everything appears as calm, void, and without any support, pure and devoid of beginning and end when established in Brahman.

सब कुछ शान्त, शून्य, और किसी भी आधार के बिना प्रतीत होता है, पूर्ण और आदि और अन्त से रहित होता है जब ब्रह्म में स्थापित होता है।

7.176.25

ब्रह्माण्डलक्षनिचयाः परमात्मनीति नित्यं स्थिता निपुणमन्यवदप्यनन्ये। वारिण्यवारितविसारितरङ्गवेगाल्लोलं स्थिताम्बुपरमाणुचया यथैते॥ २५॥

brahmāṇḍalakṣanicayāḥ paramātmanīti nityaṃ sthitā nipuṇamanyavadapyananye | vāriṇyavāritavisāritaraṅgavegāllolaṃ sthitāmbuparamāṇucayā yathaita || 25 ||

The multitudes of universes are eternally established in the Supreme Self, distinct yet not different, like the waves in the ocean that are distinct yet part of the same water.

ब्रह्मांडों की बहुताएँ परमात्मा में नित्य रूप से स्थापित हैं, अलग हैं लेकिन अलग नहीं हैं, जैसे समुद्र की लहरें अलग हैं लेकिन उसी पानी का हिस्सा हैं।

Chapter 177

7.177.1

श्रीराम उवाच । अकारणकमेवेदं जगद्ब्रह्म परात्पदात् । यदि प्रवर्तते नाम स्वप्नसंकल्पनादिवत् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | akāraṇakamevedaṃ jagadbrahma parātpadāt | yadi pravartate nāma svapnasankalpanādivat || 1 ||

Shri Rama said: This world, which is Brahman, arises without a cause from the supreme state, just like a dream or an imagination.

श्री राम ने कहा: यह जगत, जो ब्रह्म है, अकारण से परम अवस्था से उत्पन्न होता है, जैसे स्वप्न या कल्पना की तरह।

7.177.2

तदकारणतः सिद्धेः संभवेऽन्यदकारणम् । कथं न जायते वस्तु क्वचित्किंचित्कदाचन ॥ २ ॥

tadakāraṇataḥ siddheḥ saṃbhave'nyadakāraṇam | kathaṃ na jāyate vastu kvacitkiṃcitkadācana || 2 ||

If something can arise without a cause, then why does not any other thing arise without a cause at any time or place?

यदि कोई चीज अकारण से उत्पन्न हो सकती है, तो फिर कोई भी दूसरी चीज किसी भी समय या स्थान पर अकारण से क्यों नहीं उत्पन्न होती?

7.177.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । यद्यथा कल्पितं येन स संपश्यति तत्तथा । कल्पनैवान्यथा न स्यात्तादृक्कारणविच्युतेः ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yadyathā kalpitaṃ yena sa saṃpaśyati tattathā | kalpanai vānyathā na syāttādṛkkāraṇavicyuteḥ || 3 ||

Vasishtha said: Whatever is imagined by someone, that person sees it exactly as imagined. Imagination itself would not be otherwise, as it is not devoid of such a cause.

वसिष्ठ ने कहा: जो भी किसी द्वारा कल्पित किया जाता है, उस व्यक्ति द्वारा वह उसी तरह देखा जाता है। कल्पना स्वयं किसी और तरह से नहीं हो सकती, क्योंकि वह ऐसे कारण से रहित नहीं है।

7.177.4

यथेदं कल्पितं दृश्यं मनसा येन तत्तथा । वेत्त्यसौ यादृगन्येन कल्पितं वेत्त्यसौ तथा ॥ ४ ॥

yathedaṃ kalpitaṃ dṛśyaṃ manasā yena tattathā | vetyasau yādṛganyena kalpitaṃ vetyasau tathā || 4 ||

As this visible world is imagined by the mind of someone, that person knows it exactly so. Whatever is imagined by anyone, that person knows it exactly so.

जैसे यह दृश्य जगत किसी के मन द्वारा कल्पित किया जाता है, उस व्यक्ति द्वारा वह उसी तरह जाना जाता है। जो भी किसी द्वारा कल्पित किया जाता है, उस व्यक्ति द्वारा वह उसी तरह जाना जाता है।

7.177.5

कल्पनाकल्पनात्मैकं तच्च ब्रह्म स्वभावतः । कल्पनात्मेदृशं जन्तुर्यथा केशनखादिमान् ॥ ५ ॥

kalpanākalpanātmekaṃ tacca brahma svabhāvataḥ | kalpanātmedṛśaṃ janturyathā keśanakhādimān || 5 ||

That which is the essence of imagination and the imagined is Brahman by nature. Just as a being has hair, nails, etc., it is of the nature of imagination.

जो कल्पना और कल्पित का सार है, वह स्वभाव से ब्रह्म है। जैसे एक जीव बाल, नाखून आदि से युक्त होता है, वैसे ही वह कल्पना के स्वभाव का होता है।

7.177.6

अकारणपदार्थत्वं सकारणपदार्थता । ब्रह्मणि द्वयमप्यस्ति सर्वशक्त्यात्म तद्यतः ॥ ६ ॥

akāraṇapadārthatvaṃ sakāraṇapadārthatā | brahmaṇi dvayamapyasti sarvaśaktyātma tadyataḥ || 6 ||

Brahman possesses both the qualities of being without cause and with cause, because it is the essence of all powers.

ब्रह्म में अकारण और सकारण दोनों पदार्थताएँ हैं, क्योंकि वह सभी शक्तियों का आत्मा है।

7.177.7

यतः स्याद्ब्रह्मणस्त्वन्यत्क्वचित्किंचित्कदाचन । तत्कारणविकल्पेन संयोगस्तस्य युज्यते ॥ ७ ॥

yataḥ syādbrahmaṇastvanaytkvacitkiṃcitkadācana | tatkāraṇavikalpena saṃyogastasya yujyate || 7 ||

Whatever exists apart from Brahman, at any time or place, can be understood through the concept of causal variation.

ब्रह्म के अलावा जो भी कभी कहीं भी हो, वह कारण विकल्प के सिद्धांत से समझा जा सकता है।

7.177.8

यत्र सर्वमनाद्यन्तं नानानानात्म भासते । ब्रह्मैव शान्तमेकात्म तत्र किं कस्य कारणम् ॥ ८ ॥

yatra sarvamanādyantaṃ nānānānātma bhāsate | brahmaiva śāntamekātma tatra kiṃ kasya kāraṇam || 8 ||

Where everything, from beginning to end, appears as diverse and manifold, there Brahman alone is the peaceful, single essence. What then is the cause of anything?

जहाँ सब कुछ, शुरुआत से अंत तक, विविध और बहुरूपी दिखाई देता है, वहाँ ब्रह्म ही शांत, एकमात्र आत्मा है। फिर किसी चीज का कारण क्या है?

7.177.9

नेह प्रवर्तते किंचिन्न च नाम निवर्तते । स्थितमेकमनाद्यन्तं ब्रह्मेव ब्रह्म खात्मकम् ॥ ९ ॥

neha pravartate kiṃcinna ca nāma nivartate | sthitamekamanādyantaṃ brahmeva brahma khātmakam || 9 ||

Nothing here begins or ends, nor does it change. Brahman alone remains, eternal and unchanging, the essence of Brahman itself.

यहाँ कुछ भी न शुरू होता है न खत्म। न ही कुछ बदलता है। ब्रह्म ही अकेला बना रहता है, अनंत और अपरिवर्तनीय, ब्रह्म का ही आत्मा।

7.177.10

किं कस्य कारणं केन किमर्थं भवतु क्व वा । किं कस्य कारणं केन किमर्थं मास्तु वा क्वचित् ॥ १० ॥

kiṃ kasya kāraṇaṃ kena kimarthaṃ bhavatu kvā vā | kiṃ kasya kāraṇaṃ kena kimarthaṃ māstu vā kvacit || 10 ||

What is the cause of anything, by whom, for what purpose, where? What is the cause of anything, by whom, for what purpose, should it not be anywhere?

किसी चीज का कारण क्या है, किसके द्वारा, किस उद्देश्य से, कहाँ? किसी चीज का कारण क्या है, किसके द्वारा, किस उद्देश्य से, कहीं नहीं होना चाहिए?

7.177.11

नेह शून्यं न वा शून्यं न सन्नासन्न मध्यता । विद्यते न महाशून्ये न नेति न न नेति च ॥ ११ ॥

neha śūnyaṃ na vā śūnyaṃ na sannāsanna madhyatā | vidyate na mahāśūnye na neti na na neti ca || 11 ||

Here, it is neither void nor non-void, neither real nor unreal, nor a middle state | It does not exist in the great void, neither this nor that nor not this nor not that

यहाँ, यह न शून्य है न अशून्य, न सत् है न असत्, न मध्य अवस्था है | यह महाशून्य में नहीं है, न यह है न वह है न यह नहीं है न वह नहीं है

7.177.12

इदं न किंचित्किंचिद्वा यन्नामास्त्यथ नास्ति वा । सर्वं ब्रह्मैव तद्विद्धि यत्तथैवातथैव तत् ॥ १२ ॥

idaṃ na kiṃcitkiṃcidvā yannāmāstyatha nāsti vā | sarvaṃ brahmaiva tadviddhi yattathaivātathaiva tat || 12 ||

This is neither something nor nothing, whether it has a name or not | Know that all this is Brahman, which is both thus and not thus

यह न कुछ है न कुछ नहीं, चाहे इसका नाम हो या न हो | जान लो कि यह सब ब्रह्म ही है, जो ऐसा है और ऐसा नहीं है

7.177.13

श्रीराम उवाच । अतज्ज्ञविषये ब्रह्मन्कार्ये कारणसंभवे । किमकारणतात्म स्यात्कथं वेति वद प्रभो ॥ १३ ॥

śrīrāma uvāca | atajjñaviṣaye brahmannkārye kāraṇasaṃbhave | kimakāraṇatātma syātkathaṃ veti vada prabho || 13 ||

Sri Rama said: In the realm of the unknowable, O Brahman, in the cause and effect, what is the nature of the uncaused? How is it so? Please tell me, O Lord.

श्री राम ने कहा: अज्ञेय के क्षेत्र में, हे ब्रह्मन्, कारण और परिणाम में, अकारण का स्वभाव क्या है? यह कैसे है? हे प्रभो, मुझे बताओ।

7.177.14

श्रीवसिष्ठ उवाच । अतज्ज्ञो नाम नास्त्येव तावत्तज्ज्ञजनं प्रति । असतो व्योमवृक्षस्य विचारः कीदृशस्ततः ॥ १४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | atajjño nāma nāstyeva tāvattajjñajanaṃ prati | asato vyomavṛkṣasya vicāraḥ kīdṛśastataḥ || 14 ||

Sri Vasistha said: The unknowable, by name, does not exist at all, as far as the knower of the knowable is concerned | What kind of inquiry is there about the non-existent sky-flower?

श्री वसिष्ठ ने कहा: अज्ञेय, नाम से, बिलकुल नहीं है, जितना ज्ञेय के ज्ञाता के लिए | असत् आकाश-पुष्प के बारे में कैसा विचार है?

7.177.15

एकबोधमयाः शान्तविज्ञानघनरूपिणः । तज्ज्ञास्तेषामसद्रूपे कथमर्थे विचारणा ॥ १५ ॥

ekabodhamayāḥ śāntavijñānaghanarūpiṇaḥ | tajjñāsteṣāmasadrūpe kathamarthe vicāraṇā || 15 ||

Those who are of the nature of single awareness, peaceful, and of the form of condensed knowledge | How can there be inquiry into non-existent matters for them?

जो एक चेतना के स्वभाव वाले हैं, शांत, और घनीभूत ज्ञान के रूप में हैं | उनके लिए असत् विषयों में विचार कैसे हो सकता है?

7.177.16

अतज्ज्ञत्वं च बोधेऽन्तरवभाति तदङ्गता । गते स्वप्नसुषुप्तेऽन्तरिव निद्रात्म केवलम् ॥ १६ ॥

atajjñatvaṃ ca bodhe'ntaravabhāti tadaṅgatā | gate svapnasuṣupte'ntariva nidrātma kevalam || 16 ||

Ignorance appears within consciousness, and its nature is like sleep. When dreaming and deep sleep are gone, only the pure self remains.

अज्ञान चेतना के भीतर प्रकट होता है, और उसका स्वभाव नींद की तरह होता है। जब स्वप्न और गहरी नींद चली जाती है, तो केवल शुद्ध आत्मा शेष रहती है।

7.177.17

तथाप्यभ्युपगम्यापि मूर्खनिश्चय उच्यते । मयेदमणु सर्वात्म यस्माद्ब्रह्म निरामयम् ॥ १७ ॥

tathāpyabhyupagamyāpi mūrkhanisśaya ucyate | mayedamaṇu sarvātma yasmād brahma nirāmayam || 17 ||

Even though it is accepted, it is said to be a foolish conclusion. Because Brahman, which is the self of all, is flawless.

यद्यपि यह स्वीकार किया जाता है, फिर भी यह मूर्खतापूर्ण निष्कर्ष कहा जाता है। क्योंकि ब्रह्म, जो सबका आत्मा है, दोषरहित है।

7.177.18

सन्त्यकारणका एव सन्ति कारणजास्तथा । भावाः संविद्यथा यस्मात्कल्प्यते लभ्यते तथा ॥ १८ ॥

santyakāraṇakā eva santi kāraṇajāstathā | bhāvāḥ saṃvidyathā yasmāt kalpyate labhyate tathā || 18 ||

There are both causeless and caused phenomena. Just as phenomena are conceived in consciousness, they are also experienced.

कारणरहित और कारणवश दोनों प्रकार के घटनाक्रम होते हैं। जैसे घटनाक्रम चेतना में कल्पित होते हैं, वैसे ही वे अनुभव किए जाते हैं।

7.177.19

सर्वकारणसंशान्तौ सर्वानुभवशालिनाम् । सर्गस्य कारणं नास्ति तेन सर्गस्त्वकारणः ॥ १९ ॥

sarvakāraṇasaṃśāntau sarvānubhavaśālinām | sargasya kāraṇaṃ nāsti tena sargastvakāraṇaḥ || 19 ||

In the tranquility of all causes, for those who are endowed with all experiences, there is no cause for creation. Therefore, creation is causeless.

सभी कारणों की शांति में, जो सभी अनुभवों से सम्पन्न हैं, उनके लिए सृष्टि का कोई कारण नहीं है। इसलिए, सृष्टि अकारण है।

7.177.20

हृदयंगमतात्यक्तमीश्वरादि प्रकल्प्यते । यदत्र किंचिद्दुःस्वादु व्यर्थं वाग्जालमेव तत् ॥ २० ॥

hṛdayaṃgamatātyaktamīśvarādi prakalpyate | yadatra kiṃciddusvādu vyarthaṃ vāgjālameva tat || 20 ||

That which is beyond the reach of the heart and mind is conceived as God and so on. Whatever is unpleasant or useless here is merely a web of words.

जो हृदय और मन की पहुंच से परे है, वह ईश्वर और इसी तरह कल्पित है। जो कुछ भी यहां अप्रिय या व्यर्थ है, वह केवल शब्दों का जाल है।

7.177.21

अन्यथानुपपत्त्यैव स्वप्नाभाकलनादृते । स्थूलाकारात्मिका काचिन्नास्ति दृश्यस्य दृश्यता ॥ २१ ॥

anyathānupapattyaiva svapnābhākalanādṛte | sthūlākārātmikā kācinnāsti dṛśyasya dṛśyatā || 21 ||

Due to the impossibility of any other explanation, except for the reflection in a dream, there is no gross form of the seen.

किसी अन्य व्याख्या की असंभावना के कारण, स्वप्न में प्रतिबिंब के अलावा, दृश्य का कोई स्थूल रूप नहीं है।

7.177.22

स्वप्नपृथ्व्याद्यनुभवे किमबुद्धस्य कारणम् । चित्स्वभावादृते ब्रूहि स्वप्नार्थो नाम कीदृशः ॥ २२ ॥

svapnapṛthvyādyanubhave kimabuddhasya kāraṇam | cittasvabhāvādṛte brūhi svapnārtho nāma kīdṛśaḥ || 22 ||

In the experience of dream-earth and so on, what is the cause of the unenlightened? Tell me, except for the nature of consciousness, what kind of dream-object is it?

स्वप्न-पृथ्वी आदि के अनुभव में, अज्ञानी का कारण क्या है? चेतना के स्वभाव के अलावा, बताओ, स्वप्न-वस्तु कैसी है?

7.177.23

स्वप्नार्थो ह्यपरिज्ञातो महामोहभरप्रदः । परिज्ञातो न मोहाय यथा सर्गास्तथैव च ॥ २३ ॥

svapnārtho hyaparijñāto mahāmohabharapradaḥ | parijñāto na mohāya yathā sargāstathaiva ca || 23 ||

The dream-object, indeed, when not fully known, causes great delusion. When fully known, it does not cause delusion, just as creations do not.

स्वप्न-वस्तु, indeed, जब पूरी तरह से ज्ञात नहीं होती, तो महान भ्रम उत्पन्न करती है। जब पूरी तरह से ज्ञात हो जाती है, तो भ्रम नहीं उत्पन्न करती, जैसे सृष्टियाँ नहीं करतीं।

7.177.24

शुष्कतर्कहठावेशाद्यद्वाप्यनुभवोज्झितम् । कल्प्यते कारणं किंचित्सा मौर्ख्याभिनिवेशिता ॥ २४ ॥

śuṣkatarkahaṭhāveśādyadvāpyanubhavojjhitam | kalpyate kāraṇaṃ kiñcit sā maurkhyābhiniveśitā || 24 ||

Due to the influence of dry logic and stubbornness, whatever experience is abandoned, some cause is imagined. That is obstinacy due to foolishness.

शुष्क तर्क और हठ के प्रभाव से, जो भी अनुभव छोड़ दिया जाता है, कोई कारण कल्पित किया जाता है। यह मूर्खता के कारण हठधर्मिता है।

7.177.25

अग्नेरौष्ण्यमपां शैत्यं प्राकाश्यं सर्वतेजसाम् । स्वभावो वाखिलार्थानां किमबुद्धस्य कारणम् ॥ २५ ॥

agnerauṣṇyamapāṃ śaityaṃ prākāśyaṃ sarvatejasām | svabhāvo vākhilārthānāṃ kimabuddhasya kāraṇam || 25 ||

The heat of fire, the coldness of water, the luminosity of all radiant objects—what is the cause of the unenlightened for all these natural qualities?

अग्नि का ऊष्मा, जल की शीतलता, सभी चमकीली वस्तुओं की प्रकाशिता—अज्ञानी के लिए इन सभी प्राकृतिक गुणों का कारण क्या है?

7.177.26

किं ध्यातृशतलब्धस्य ध्येयस्यैकस्य कारणम् । किं च गन्धर्वनगरे पुरे भित्तिषु कारणम् ॥ २६ ॥

kiṃ dhyātṛśatalabdhasya dhyeyasyaiakasya kāraṇam | kiṃ ca gandharvanagare pure bhittiṣu kāraṇam || 26 ||

What is the cause of the single object of meditation obtained by hundreds of meditators? And what is the cause of the paintings in the city of Gandharvas?

सौ ध्याताओं द्वारा प्राप्त एक ध्येय का कारण क्या है? और गन्धर्व नगर की चित्रकारी का कारण क्या है?

7.177.27

धर्माद्यमुत्रामूर्तत्वान्मूर्ते देहे न कारणम् । देहस्य कारणं किं स्यात्तत्र सर्गादिभोगिनः ॥ २७ ॥

dharmādyamutrāmūrtatvānmūrte dehe na kāraṇam | dehasya kāraṇaṃ kiṃ syāttatra sargādibhoginaḥ || 27 ||

Dharma and other virtues are not the cause of the embodied form, as they are formless. What then is the cause of the body for those who experience creation and other activities?

धर्म और अन्य गुण निराकार हैं, इसलिए वे शरीर के कारण नहीं हैं। फिर सृष्टि और अन्य गतिविधियों का अनुभव करने वाले शरीर का कारण क्या है?

7.177.28

भित्त्यभित्त्यादिरूपाणां ज्ञानस्य ज्ञानवादिनः । किं कारणमनन्तानामुत्पन्नध्वंसिनां मुहुः ॥ २८ ॥

bhittyabhittyādirūpāṇāṃ jñānasya jñānavādinaḥ | kiṃ kāraṇamanantānāmutpannadhvaṃsināṃ muhuḥ || 28 ||

What is the cause of the knowledge of the forms such as walls and non-walls, for those who advocate knowledge, which arises and perishes repeatedly?

दीवारों और अन्य रूपों के ज्ञान का कारण क्या है, जो बार-बार उत्पन्न और नष्ट होता है, ज्ञान के प्रवक्ताओं के लिए?

7.177.29

स्वभावस्य स्वभावोऽसौ किल कारणमित्यपि । यदुच्यते स्वभावस्य सा पर्यायोक्तिकल्पना ॥ २९ ॥

svabhāvasya svabhāvo'sau kila kāraṇamityapi | yaducyate svabhāvasya sā paryāyoktikalpanā || 29 ||

It is said that the nature of a thing is its own cause. This is merely a figurative expression of the nature itself.

कहा जाता है कि किसी वस्तु का स्वभाव ही उसका कारण है। यह तो बस स्वभाव का एक रूपक व्यक्तिकरण है।

7.177.30

तस्मादकारणा भ्रान्तिर्भावा भान्ति च कारणम् । अज्ञे ज्ञे त्वखिलं कार्यं कारणाद्भवति स्थितम् ॥ ३० ॥

tasmādakāraṇā bhrāntirbhāvā bhānti ca kāraṇam | ajñe jñe tvakhilaṃ kāryaṃ kāraṇādbhavati sthitam || 30 ||

Therefore, the illusion of causelessness arises, and all things appear to have a cause. In both the ignorant and the wise, all actions arise from a cause.

इसलिए, कारणहीनता का भ्रम उत्पन्न होता है, और सभी चीजें कारणवान प्रतीत होती हैं। अज्ञानी और ज्ञानी दोनों में, सभी कार्य कारण से उत्पन्न होते हैं।

7.177.31

यद्वत्स्वप्नपरिज्ञानात्स्वप्ने द्रव्यापहारिभिः । न दुःखाकरणं तद्वज्जीवितं तत्त्वदर्शनात् ॥ ३१ ॥

yadvatsvapnapariñānātsvapne dravyāpahāribhiḥ | na duḥkhākaraṇaṃ tadvajjīvitaṃ tattvadarśanāt || 31 ||

Just as the knowledge of a dream prevents the suffering caused by the theft of objects in the dream, similarly, the knowledge of the truth prevents the suffering of life.

जैसे स्वप्न का ज्ञान स्वप्न में द्रव्य चोरी के दुःख को रोकता है, वैसे ही तत्त्व का ज्ञान जीवन के दुःख को रोकता है।

7.177.32

सर्गादावेव नोत्पन्नं दृश्यं चिद्गगनं त्विदम् । स्वरूपं स्वप्नवद्भाति नान्यदत्रोपपद्यते ॥ ३२ ॥

sargādāveva notpannaṃ dṛśyaṃ cidgaganaṃ tvidam | svarūpaṃ svapnavadbhāti nānyadatropapadyate || 32 ||

This visible universe, which is the sky of consciousness, was not created at the beginning of creation. It appears like a dream, and nothing else is appropriate here.

यह दृश्य ब्रह्मांड, जो चेतना का आकाश है, सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न नहीं हुआ था। यह स्वप्न की तरह प्रतीत होता है, और यहाँ कुछ और उपयुक्त नहीं है।

7.177.33

अन्या न काचित्कलना दृश्यते सोपपत्तिका । अस्मान्न्यायादृते कस्माद्ब्रह्मैवैषानुभूतिभूः ॥ ३३ ॥

anyā na kācitkalanā dṛśyate sopapattikā | asmānnyāyādṛte kasmādbrahmaiva eṣānubhūtibhūḥ || 33 ||

No other logical explanation is seen that is so appropriate. Apart from this logic, from what else can Brahman be the basis of this experience?

कोई और तर्कसंगत व्याख्या नहीं दिखती जो इतनी उपयुक्त हो। इस तर्क के अलावा, किसी और से ब्रह्म इस अनुभूति का आधार कैसे हो सकता है?

7.177.34

ऊर्म्यावर्तद्रवत्वादि शुद्धे जलघने यथा । तथेदं सर्गपर्यायं ब्रह्मणि ब्रह्म भासते ॥ ३४ ॥

ūrmyāvartadravatvādi śuddhe jalaghane yathā | tathedaṃ sargaparyāyaṃ brahmaṇi brahma bhāsate || 34 ||

Just as waves, whirlpools, and liquidity appear in pure, dense water, similarly, the various forms of creation appear in Brahman.

जैसे लहरें, भंवर और द्रवता शुद्ध, घने जल में प्रकट होती हैं, वैसे ही सृष्टि के विभिन्न रूप ब्रह्म में प्रकट होते हैं।

7.177.35

स्पन्दावर्तविवर्तादि निर्मले पवने यथा । तथायं ब्रह्मपवने सर्गस्पन्दोऽवभासते ॥ ३५ ॥

spandāvartavivartādi nirmale pavane yathā | tathāyaṃ brahmapavane sargaspando'vabhāsate || 35 ||

Just as vibrations, whirlpools, and transformations appear in pure air, similarly, the vibrations of creation appear in the pure air of Brahman.

जैसे कंपन, भंवर और परिवर्तन शुद्ध वायु में प्रकट होते हैं, वैसे ही सृष्टि के कंपन शुद्ध ब्रह्म वायु में प्रकट होते हैं।

7.177.36

यथानन्तत्वसौषिर्यशून्यत्वादि महाम्बरे । स सन्नासन्नबोधात्म तथा सर्गः परापरः ॥ ३६ ॥

yathānantatvasauṣiryaśūnyatvādi mahāmbare | sa sannāsannabodhātma tathā sargaḥ parāparaḥ || 36 ||

Just as the infinite, subtle, and empty nature exists in the great sky, similarly, the creation is both transcendent and immanent, embodying the essence of existence and non-existence.

जैसे अनन्त, सूक्ष्म और शून्य स्वभाव महान आकाश में है, उसी प्रकार सृष्टि परा और अपरा दोनों है, अस्तित्व और अनस्तित्व का सार है।

7.177.37

एषु निद्रादिकेष्वेते सूपलब्धा अपि स्फुटम् । भावा असन्मया एवमेतेऽनन्यात्मका यतः ॥ ३७ ॥

eṣu nidrādikeṣvetē sūpalabdhā api sphuṭam | bhāvā asanmayā evametē'nanyātmakā yataḥ || 37 ||

In these states such as sleep, these experiences are clearly perceptible, yet they are non-existent. Therefore, they are not different from the self.

इन अवस्थाओं में जैसे निद्रा, ये अनुभव स्पष्ट रूप से प्राप्त होते हैं, परन्तु ये अनस्तित्व हैं। इसलिए, ये आत्मा से अलग नहीं हैं।

7.177.38

सर्गप्रलयसंस्थानान्येवमात्मनि चिद्घने । सौम्ये स्वप्नसुषुप्ताभा शुद्धे निद्राघने यथा ॥ ३८ ॥

sargapralayasaṃsthānānyevamātmni ciddhane | saumye svapnasuṣuptābhā śuddhe nidrāghane yathā || 38 ||

The states of creation, dissolution, and preservation are thus in the pure, conscious self, just as dream and deep sleep states are in the pure, dense sleep.

सृष्टि, प्रलय और संस्थान की अवस्थाएँ इस प्रकार शुद्ध, चेतन आत्मा में हैं, जैसे स्वप्न और सुषुप्ति की अवस्थाएँ शुद्ध, घने निद्रा में हैं।

7.177.39

स्वप्नात्स्वप्नान्तराण्यास्ते निद्रायां मानवो यथा । सर्गात्सर्गान्तरान्मास्ते स्वसत्तायामजस्तथा ॥ ३९ ॥

svapnātsvapnāntarāṇyāste nidrāyāṃ mānavo yathā | sargātsargāntarānmāste svasattāyāmajastathā || 39 ||

Just as a person experiences various dreams within a dream, similarly, from one creation to another, the self remains unchanged.

जैसे एक व्यक्ति एक स्वप्न में अन्य स्वप्नों का अनुभव करता है, उसी प्रकार, एक सृष्टि से दूसरी सृष्टि तक, आत्मा अपरिवर्तित रहता है।

7.177.40

पृथ्व्यादिरहितोऽप्येष ब्रह्माकाशो निरामयः । अतद्वांस्तद्वदाभाति यथा स्वप्नानुभूतिषु ॥ ४० ॥

pṛthvyādirahito'pyeṣa brahmākāśo nirāmayaḥ | atadvāṃstadvadābhāti yathā svapnānubhūtiṣu || 40 ||

Though devoid of earth and other elements, this Brahman, the infinite space, is free from defects. It appears as if it is not itself, just like in dream experiences.

भूमि और अन्य तत्वों से रहित होने के बावजूद, यह ब्रह्माकाश, अनंत अंतरिक्ष, दोष से मुक्त है। यह ऐसा लगता है जैसे यह स्वयं नहीं है, जैसे स्वप्न अनुभवों में होता है।

7.177.41

स्थिता यथास्यां पश्यन्त्यां शब्दा घटपटादयः । जाताजाताः स्थिताः सर्गास्तथानन्ये महाचिति ॥ ४१ ॥

sthitā yathāsyāṃ paśyantyāṃ śabdā ghaṭapaṭādayaḥ | jātājātāḥ sthitāḥ sargāstathānanye mahāciti || 41 ||

Just as sounds like 'ghaṭa' and 'paṭa' are perceived by the Pashyanti, similarly, the created and uncreated worlds exist in the great consciousness.

जैसे शब्द घट और पट पश्यन्ती द्वारा देखे जाते हैं, उसी प्रकार उत्पन्न और अनुत्पन्न सृष्टियाँ महाचिति में स्थित हैं।

7.177.42

पश्यन्त्यामेव पश्यन्ती यथा भाति तथैव च । यथा शब्दास्तथा सर्गाश्चितैव चिति चिन्मयाः ॥ ४२ ॥

paśyantyāmeva paśyantī yathā bhāti tathaiva ca | yathā śabdāstathā sargāścitaiava citi cinmayāḥ || 42 ||

Just as the Pashyanti appears in the Pashyanti, so do the sounds and the worlds appear in the consciousness, which is pure consciousness itself.

जैसे पश्यन्ती पश्यन्ती में ही प्रतीत होती है, उसी प्रकार शब्द और सृष्टियाँ चिति में प्रतीत होती हैं, जो खुद चिन्मय है।

7.177.43

किं शास्त्रकं तत्रकथाविचारैर्निर्वासनं जीवितमेव मोक्षः । सर्गे त्वसत्येवमकारणत्वात्सत्येव नास्त्येव न नाम काचित् ॥ ४३ ॥

kiṃ śāstrakaṃ tatrakathāvicārairnirvāsanaṃ jīvitameva mokṣaḥ | sarge tvasyevaṃakāraṇatvātsatyeva nāstyeva na nāma kācit || 43 ||

What is the use of scriptures and discussions? Liberation is simply the removal of ignorance. In the creation, there is no cause, no truth, no name, nothing at all.

शास्त्रों और विचारों का क्या लाभ? मोक्ष तो बस अज्ञान का निवारण है। सृष्टि में कोई कारण नहीं, कोई सत्य नहीं, कोई नाम नहीं, कुछ भी नहीं।

7.177.44

एषा च सिद्धेह हि वासनेति सा बोधसत्तैव निरन्तरैका । नानात्वनानारहितैव भाति स्वप्ने चिदेवेह पुरादिरूपा ॥ ४४ ॥

eṣā ca siddheha hi vāsaneti sā bodhasattaiava nirantaraikā | nānātvanānārahitaiva bhāti svapne cideveha purādirūpā || 44 ||

This is indeed the realization of the true nature of consciousness, which is eternal and uninterrupted. It appears as various forms in dreams, but in reality, it is pure consciousness itself.

यह वास्तव में चेतना की सच्ची प्रकृति का बोध है, जो अनंत और अखंड है। यह स्वप्नों में विभिन्न रूपों में प्रतीत होता है, लेकिन वास्तव में यह शुद्ध चेतना ही है।

Chapter 178

7.178.1

श्रीराम उवाच । पदार्था द्विविधाः सन्ति मूर्तामूर्ता जगत्त्रये । यत्र सप्रतिघाः केचित्केचिदप्रतिघा अपि ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | padārthā dvividhāḥ santi mūrtāmūrtā jagattraye | yatra sapratighāḥ kecitkecidapratighā api || 1 ||

Shri Rama said: There are two kinds of entities in the three worlds, tangible and intangible. Some of them have resistance, while others do not.

श्री राम ने कहा: तीनों लोकों में दो प्रकार के पदार्थ हैं, मूर्त और अमूर्त | कुछ प्रतिघातक हैं, कुछ अप्रतिघातक हैं |

7.178.2

तानिहाप्रतिघानाहुर्नान्योन्यं वेल्लयन्ति ये । तांश्च सप्रतिघानाहुरन्योन्यं वेल्लयन्ति ये ॥ २ ॥

tānihāpratighānāhurnānyonyaṃ vellayanti ye | tāṃśca sapratighānāhuranyonyaṃ vellayanti ye || 2 ||

Those are called non-resistant which do not interact with each other. Those are called resistant which interact with each other.

जो एक-दूसरे से इंटरैक्ट नहीं करते, उन्हें अप्रतिघातक कहते हैं। जो एक-दूसरे से इंटरैक्ट करते हैं, उन्हें प्रतिघातक कहते हैं।

7.178.3

इह सप्रतिघानां तु दृष्टमन्योन्यवेल्लनम् । न त्वप्रतिघरूपाणां केषांचिदपि किंचन ॥ ३ ॥

iha sapratighānāṃ tu dṛṣṭamanyonyavellanaṃ | na tvapratigharūpāṇāṃ keṣāṃcidapi kiṃcana || 3 ||

Here, the interaction of resistant entities with each other is observed. However, there is no such interaction observed among non-resistant entities.

यहाँ, प्रतिघातक पदार्थों का एक-दूसरे से इंटरैक्ट करना देखा जाता है। हालाँकि, अप्रतिघातक पदार्थों में ऐसा कोई इंटरैक्ट नहीं देखा जाता।

7.178.4

तत्र संवेदनं नाम यदिदं चन्द्रमण्डले । इतः पतत्यप्रतिघं तत्सर्वेणानुभूयते ॥ ४ ॥

tatra saṃvedanaṃ nāma yadidaṃ candramaṇḍale | itaḥ patatyapratighaṃ tatsarveṇānubhūyate || 4 ||

There, the sensation called perception is that which falls from the moon's sphere. That non-resistant entity is experienced by all.

वहाँ, जो संवेदन कहलाता है, वह चंद्रमंडल से गिरता है। वह अप्रतिघातक पदार्थ सभी द्वारा अनुभव किया जाता है।

7.178.5

अर्धप्रबुद्धसंकल्पविकल्पाद्वैतकल्पितम् । वदाम्यभ्युपगम्येदं न तु बोधदशास्थितम् ॥ ५ ॥

ardhaprabuddhasaṃkalpavikalpādvaitakalpitam | vadāmyabhyupagamyedaṃ na tu bodhadashāsthitam || 5 ||

I explain this as imagined from the duality of half-awakened resolve and doubt, but not as established in the state of enlightenment.

मैं इसे अर्ध-जागृत संकल्प और विकल्प की द्वैत कल्पना से समझाता हूँ, परन्तु बोध की दशा में स्थित नहीं।

7.178.6

कः प्राणमारुतः क्षोभं जनयत्याशयस्थितः । प्रवेशनिर्गममयं कथं वा वद मे प्रभो ॥ ६ ॥

kaḥ prāṇamārutaḥ kṣobhaṃ janayatyāśayasthitaḥ | praveśanirgamamayaṃ kathaṃ vā vada me prabho || 6 ||

Which vital air, residing in the heart, causes agitation? How does it enter and exit? Please tell me, O Lord.

कौन सा प्राण वायु, हृदय में रहकर, क्षोभ उत्पन्न करता है? यह कैसे अंदर आता और बाहर जाता है? हे प्रभो, मुझे बताओ।

7.178.7

कथमप्रतिघं नाम वेदनं प्रतिघात्मकम् । इमं देहं चालयति भारं भारहरो यथा ॥ ७ ॥

kathamapratighaṃ nāma vedaṇaṃ pratighātmakam | imaṃ dehaṃ cālayati bhāraṃ bhāraharo yathā || 7 ||

How does the unresisting sensation, which is of the nature of resistance, move this body, like a burden-bearer carrying a load?

कैसे अप्रतिघ (अप्रतिरोधी) नाम वेदन (संवेदन), जो प्रतिघात्मक (प्रतिरोधी) है, इस देह को चलाता है, जैसे भारहर (भार वाहक) भार को ले जाता है?

7.178.8

यदि सप्रतिघं वस्तु वेल्लत्यप्रतिघात्मकम् । कथं संवित्तिमात्रेण पुंसः शैलो न वल्गति ॥ ८ ॥

yadi sapratighaṃ vastu vellatyapratighātmakam | kathaṃ saṃvittimātreṇa puṃsaḥ śailo na valgati || 8 ||

If a resisting object moves due to an unresisting force, how does a mountain not move by mere consciousness of a person?

यदि एक प्रतिरोधी वस्तु अप्रतिरोधी बल से चलती है, तो कैसे एक पर्वत केवल एक व्यक्ति की चेतना से नहीं हिलता?

7.178.9

श्रीवसिष्ठ उवाच । विकासमथ संकोचमत्र नाली हृदि स्थिता । यदा याति तदा प्राणश्छेदैरायाति याति च ॥ ९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | vikāsamatha saṃkocamatra nālī hṛdi sthitā | yadā yāti tadā prāṇaśchedairāyāti yāti ca || 9 ||

Vasishtha said: The tube situated in the heart expands and contracts. When it moves, the vital air, through its divisions, comes and goes.

वसिष्ठ ने कहा: हृदय में स्थित नाली फैलती और सिकुड़ती है। जब यह चलती है, तब प्राण वायु, अपने विभाजनों द्वारा, आती और जाती है।

7.178.10

बाह्योपस्करभस्त्रायां यथाकाशास्पदात्मकः । वायुर्यात्यपि चायाति तथात्र स्पन्दनं हृदि ॥ १० ॥

bāhyopaskarabhastrāyāṃ yathākāśāspadātmakaḥ | vāyuryātyapi cāyāti tathātra spandanaṃ hṛdi || 10 ||

Just as the air in a bellows, which is of the nature of space, comes and goes, so does the pulsation in the heart.

जैसे धातु के फूँकने वाले यंत्र में आकाश स्वभाव की वायु आती और जाती है, वैसे ही हृदय में स्पंदन होता है।

7.178.11

श्रीराम उवाच । बहिर्भस्त्रामयस्कारः संकोचनविकासनैः । योजयत्यान्तरं नाडीं कश्चालयति चालकः ॥ ११ ॥

śrīrāma uvāca | bahirbhastrāmayaskāraḥ saṃkocanavikāsanaiḥ | yojayatyāntaraṃ nāḍīṃ kaścālayati cālakaḥ || 11 ||

Sri Rama said: The external air, through contraction and expansion, connects the inner tube; who moves it, the mover?

श्री राम ने कहा: बाहरी वायु, संकोचन और विकासन के द्वारा, अंतर्नाड़ी को जोड़ती है; कौन उसे चलाता है, चालक?

7.178.12

शतं कथं भवेदेकं कथमेकं शतं भवेत् । कथं स चेतना एते काष्ठलोष्टोपलादयः ॥ १२ ॥

śataṃ kathaṃ bhavedekaṃ kathamekaṃ śataṃ bhavet | kathaṃ sa cetanā ete kāṣṭhaloṣṭopalādayaḥ || 12 ||

How can one become a hundred, and how can a hundred become one? How can these inert objects like wood, clod, and stone have consciousness?

एक कैसे सौ हो सकता है, और सौ कैसे एक हो सकता है? लकड़ी, मिट्टी और पत्थर जैसे इन जड़ वस्तुओं में चेतना कैसे हो सकती है?

7.178.13

कस्मान्न स्थावरं वस्तु प्रस्पन्द्यपि चमत्कृतम् । वस्तु जङ्गममेवेह स्पन्दि मात्रेव किं वद ॥ १३ ॥

kasmānn na sthāvaraṃ vastu praspandyapi camatkṛtam | vastu jaṅgamameveha spandi mātreva kiṃ vad || 13 ||

Why is an inert object not wonderful even though it vibrates? Here, even a moving object is only vibrating; what do you say?

एक जड़ वस्तु कैसे आश्चर्यजनक नहीं है भले ही वह कंपित हो? यहाँ, एक चल वस्तु भी केवल कंपित होती है; आप क्या कहते हैं?

7.178.14

श्रीवसिष्ठ उवाच । अन्तःसंवेदनं नाम चालयत्यान्त्रवेष्टनम् । बहिर्भस्त्रामयस्कार इव लोकेऽनुचेष्टनम् ॥ १४ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | antaḥsaṃvedanaṃ nāma cālayatyāntraveṣṭanam | bahirbhastrāmayaskāra iv loke'nuceṣṭanam || 14 ||

Sri Vasistha said: The inner awareness, named consciousness, moves the bodily mechanism, just as the external air moves the bellows in the world.

श्री वसिष्ठ ने कहा: अंतर्ज्ञान, जिसे चेतना कहते हैं, शरीर के तंत्र को चलाती है, जैसे बाहरी वायु धमनियों को चलाती है।

7.178.15

श्रीराम उवाच । वाय्वन्त्रादिशरीरस्थं सर्वं सप्रतिघं मुने । कथमप्रतिघा संविच्चालयेदिति मे वद ॥ १५ ॥

śrīrāma uvāca | vāyvantrādiśarīrasthaṃ sarvaṃ sapratighaṃ mune | kathamapratighā saṃviccālayediti me vad || 15 ||

Sri Rama said: O Sage, how can the immaterial consciousness move the material body, which is full of resistance? Please explain this to me.

श्री राम ने कहा: हे मुनि, निराकार चेतना प्रतिरोध से भरे शरीर को कैसे चला सकती है? कृपया मुझे यह समझाएँ।

7.178.16

संविदप्रतिघाकारा यदि सप्रतिघात्मकम् । चालयेदचलिष्यत्तद्दूरमम्भो यदिच्छया ॥ १६ ॥

saṃvidapratighākārā yadi sapratighātmakam | cālayedacaliṣyattaddūramambho yadicchayā || 16 ||

If the form of consciousness is endowed with resistance, then it can move the immovable water by its will.

यदि चेतना का रूप प्रतिरोध से युक्त हो, तो वह अपनी इच्छा से अचल पानी को चला सकता है।

7.178.17

सप्रतिघाप्रतिघयोर्मिथो यदि पदार्थयोः । वेल्लनं स्यात्तदिच्छैव कर्तृकर्मेन्द्रियैः क्व किम् ॥ १७ ॥

sapratighāpratighayormitho yadi padārthayoḥ | vellanaṃ syāttadicchaiva kartṛkarmeṃdriyaiḥ kva kim || 17 ||

If there is a conflict between two objects with resistance, then the movement will be according to the will of the doer and the instrument. What is the use of the senses?

यदि दो प्रतिरोध वाले पदार्थों में संघर्ष हो, तो गति कर्ता और उपकरण की इच्छा के अनुसार होगी। इंद्रियों का उपयोग क्या है?

7.178.18

सप्रतिघाप्रतिघयोः श्लेषो नास्ति बहिर्यथा । तथैवान्तरहं मन्ये शेषं कथय मे मुने ॥ १८ ॥

sapratighāpratighayoḥ śleṣo nāsti bahiryathā | tathaivāntarahaṃ manye śeṣaṃ kathaya me mune || 18 ||

Just as there is no union between two objects with resistance externally, so too there is no union internally. Tell me the rest, O sage.

जैसे दो प्रतिरोध वाले पदार्थों में बाहरी रूप से कोई संयोग नहीं होता, उसी प्रकार आंतरिक रूप से भी कोई संयोग नहीं होता। हे मुनि, मुझे बाकी का वर्णन करें।

7.178.19

अन्तः स्वयं योगिना वा यथैतदनुभूयते । अमूर्तस्यैव मूर्तेन वेल्लनं तद्वदाशु मे ॥ १९ ॥

antaḥ svayaṃ yoginā vā yathaitadanubhūyate | amūrtasyaiva mūrteṇa vellanaṃ tadvadāśu me || 19 ||

Whether internally or by a yogi, how this is experienced, tell me quickly how the formless is moved by the form.

चाहे आंतरिक रूप से या योगी द्वारा, यह कैसे अनुभव किया जाता है, मुझे जल्दी बताएं कि निराकार को साकार द्वारा कैसे चलाया जाता है।

7.178.20

श्रीवसिष्ठ उवाच । सर्वसंदेहवृक्षाणां मूलकाषमिदं वचः । सर्वैकतानुभूत्यर्थं श्रृणु श्रवणभूषणम् ॥ २० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | sarvasaṃdehavṛkṣāṇāṃ mūlakāṣamidaṃ vacaḥ | sarvaikatānubhūtyarthaṃ śṛṇu śravaṇabhūṣaṇam || 20 ||

Vasishtha said: This speech is the axe that cuts the root of all trees of doubt. Listen to this ornament of hearing for the experience of universal oneness.

वसिष्ठ ने कहा: यह वचन सभी संदेह वृक्षों की जड़ काटने वाली कुल्हाड़ी है। सर्व एकता के अनुभव के लिए यह श्रवण का आभूषण सुनें।

7.178.21

नेह किंचिन्न नामास्ति वस्तु सप्रतिघं क्वचित् । सर्वदा सर्वमेवेदं शान्तमप्रतिघं ततम् ॥ २१ ॥

neha kiṃcinn nāmāsti vastu sapratighaṃ kvacit | sarvadā sarvamevedaṃ śāntamapratighaṃ tatam || 21 ||

There is nothing here that is obstructive. Always, everything is calm and unobstructed.

यहाँ कोई भी वस्तु नहीं है जो प्रतिघाती हो | हमेशा सब कुछ शान्त और अप्रतिघाती है |

7.178.22

शुद्धं संविन्मयं सर्वं शान्तमप्रतिघात्मकम् । पदार्थजातं पृथ्व्यादि स्वप्नसंकल्पयोरिव ॥ २२ ॥

śuddhaṃ saṃvinmayaṃ sarvaṃ śāntamapratighātmakam | padārthajātaṃ pṛthvyādi svapnasankalpayoriva || 22 ||

Everything is pure, made of consciousness, calm, and non-obstructive. The entirety of objects, starting from the earth, is like a dream or imagination.

सब कुछ शुद्ध, चेतना से बना, शान्त और अप्रतिघाती है | पृथ्वी से शुरू होने वाले सम्पूर्ण पदार्थों का स्वरूप स्वप्न या कल्पना के समान है |

7.178.23

आदावन्ते च नास्तीदं कारणाभावतोऽखिलम् । भ्रान्त्यात्मा वर्तमानापि भाति चित्स्वप्नगा यथा ॥ २३ ॥

ādāvante ca nāstīdaṃ kāraṇābhāvato'khilam | bhrāntyātmā vartamānāpi bhāti cittasvapnagā yathā || 23 ||

In the beginning and in the end, nothing exists due to the absence of cause. Even while existing, it appears like a dream due to delusion.

आदि और अन्त में, किसी भी कारण की अनुपस्थिति के कारण कुछ भी नहीं है | भ्रम के कारण, यह स्वप्न की तरह प्रतीत होता है, भले ही यह मौजूद हो |

7.178.24

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः । महता कारणौघेन बोधमप्रतिघं विदुः ॥ २४ ॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ | mahatā kāraṇaughaena bodhamapratighaṃ viduḥ || 24 ||

The sky, earth, wind, space, mountains, rivers, and directions are known to be non-obstructive knowledge due to the great multitude of causes.

आकाश, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, पर्वत, नदियाँ और दिशाएँ महान कारणों के समूह के कारण अप्रतिघाती ज्ञान के रूप में जानी जाती हैं |

7.178.25

अन्तःकरणभूतादि मृत्काष्ठदृषदादि वा । सर्वं शून्यमशून्यं च चेतनं विद्धि नेतरत् ॥ २५ ॥

antaḥkaraṇabhūtādi mṛtkāṣṭhadṛṣadādi vā | sarvaṃ śūnyamaśūnyaṃ ca cetanaṃ viddhi netarat || 25 ||

Know that everything, whether it is the inner organs, clay, wood, stones, or anything else, is both empty and non-empty, and is consciousness.

जान लो कि सब कुछ, चाहे वह अन्तःकरण, मिट्टी, लकड़ी, पत्थर या कुछ और हो, शून्य और अशून्य दोनों है, और चेतना है |

7.178.26

तत्रैवमैन्दवाख्यानं शृणु श्रवणभूषणम् । मया च पूर्वमुक्तं तत्किंचान्यदभिवर्ण्यते ॥ २६ ॥

tatraivamaindavākhyānaṃ śṛṇu śravaṇabhūṣaṇam | mayā ca pūrvamuktaṃ tatkiñcānyadabhivarṇyate || 26 ||

Listen to this story of Indra, which is an ornament to the ears. I have told you this before; what else can be described?

इस इन्द्र की कथा को सुनो, जो कानों का आभूषण है। मैंने इसे पहले भी बताया है, फिर क्या और बताया जा सकता है?

7.178.27

तथापि वर्तमानोक्तप्रश्नबोधाय तच्छृणु । यथेदं सर्वमन्द्यादि चिदित्येव तु भोत्स्यते ॥ २७ ॥

tathāpi vartamānoktapraśnabodhāya tacchṛṇu | yathedaṃ sarvamandyādi cidityeva tu bhotsyate || 27 ||

Nevertheless, listen to this for the understanding of the present question. Thus, everything from the beginning will be known as consciousness alone.

फिर भी, इस वर्तमान प्रश्न की समझ के लिए यह सुनो। इस प्रकार, सब कुछ शुरुआत से ही चेतना के रूप में जाना जाएगा।

7.178.28

कस्मिंश्चित्प्राक्तनेनैव जगज्जालेऽभवद्द्विजः । तपोवेदक्रियाधारो ब्रह्मन्निन्दुरिति स्मृतः ॥ २८ ॥

kasmiṃścitprāktanenaineva jagajjāle'bhvaddvijaḥ | tapovedakriyādhāro brahmanninduriti smṛtaḥ || 28 ||

In some ancient time, in the web of the world, there was a Brahmin named Indu, who was the support of austerity, Vedas, and rituals.

किसी प्राचीन काल में, संसार के जाल में, एक ब्राह्मण थे जिनका नाम इन्दु था, जो तपस्या, वेदों और क्रियाओं के आधार थे।

7.178.29

दश तस्याभवन्पुत्रा जगतो दिक्तटा इव । महाशया महात्मानो महतामास्पदं सताम् ॥ २९ ॥

daśa tasyābhvanputrā jagato diktaṭā iva | mahāśayā mahātmāno mahatāmāspadaṃ satām || 29 ||

He had ten sons, who were like the directions of the world, great-minded, great-souled, and the abode of the great and virtuous.

उनके दस पुत्र थे, जो संसार के दिशाओं के समान थे, महान मन और महान आत्मा वाले, और महान और सत्कार्य के आधार थे।

7.178.30

स तेषां कालवशतः पिताऽन्तर्धिमुपाययौ । दशानां भगवान् रुद्र एकादश इव क्षये ॥ ३० ॥

sa teṣāṃ kālavaśataḥ pitā'ntardhimupāyayau | daśānāṃ bhagavān rudra ekādaśa iva kṣaye || 30 ||

Due to the influence of time, their father attained disappearance. Lord Rudra, the eleventh, remained in the destruction of the ten.

समय के प्रभाव से, उनके पिता अन्तर्धान को प्राप्त हुए। दस के विनाश में, भगवान रुद्र, ग्यारहवें, बने रहे।

7.178.31

तस्यानुगमनं चक्रे भार्या वैधव्यभीतिभिः । अनुरक्ता दिनस्येव संध्या ताराविलोचना ॥ ३१ ॥

tasyānugamanaṃ cakre bhāryā vaidhavyabhītibhiḥ | anuraktā dinasyeva saṃdhyā tārāvilocanā || 31 ||

His wife, fearing widowhood, followed him, attached like the twilight to the day, with star-like eyes.

उसकी पत्नी, विधवा होने के भय से, उसका अनुगमन किया, दिन की तरह संध्या से अनुरक्त, तारों की तरह आँखों वाली।

7.178.32

तयोस्ते तनया दुःखकलिता विपिनं गताः । कृतौर्ध्वदेहिकास्त्यक्त्वा व्यवहारं समाधये ॥ ३२ ॥

tayoste tanayā duḥkhakalitā vipinaṃ gatāḥ | kṛtauurdhvadehikāstyaktvā vyavahāraṃ samādhaye || 32 ||

Their children, distressed, went to the forest, having performed the last rites, abandoning worldly affairs.

उनके बच्चे, दुःख से व्याकुल, वन में गए, अंतिम संस्कार करके, संसारिक व्यवहार को छोड़कर।

7.178.33

धारणानां समस्तानां का स्यादुत्तमसिद्धिदा । धारणा यन्मयाः सन्तः स्याम सर्वेश्वरा वयम् ॥ ३३ ॥

dhāraṇānāṃ samastānāṃ kā syāduttamasiddhidā | dhāraṇā yanmayāḥ santaḥ syāma sarveśvarā vayaṃ || 33 ||

Which among all meditations grants the highest perfection? The meditation by which we become the lords of all.

सभी धारणाओं में से कौन सी धारणा उत्तम सिद्धि देती है? वह धारणा जिससे हम सबके स्वामी बन जाएँ।

7.178.34

इति ते तत्र संचिन्त्य बद्धपद्मासना दश । इदं संचिन्तयामासुर्निर्विघ्ने कन्दरोदरे ॥ ३४ ॥

iti te tatra saṃcintya baddhapadmāsanā daśa | idaṃ saṃcintayāmāsur nirvighne kandarodare || 34 ||

Thus, they contemplated there, sitting in the lotus position, and meditated on this in the unobstructed cave.

इस प्रकार, वे वहाँ विचार करते हुए, पद्मासन लगाकर बैठे और उस बाधारहित गुफा में इस पर ध्यान किया।

7.178.35

पद्मजाधिष्ठिताशेषजगद्धारणया स्थिताः । भवामः पद्मजोपेतं जगद्रूपमविघ्नतः ॥ ३५ ॥

padmajādhiṣṭhitāśeṣajagaddhāraṇayā sthitāḥ | bhavāmaḥ padmajopetaṃ jagadrūpamavighnataḥ || 35 ||

We are established by the support of the lotus-born one, holding the entire universe, and we become the form of the universe without obstacles.

हम कमल से उत्पन्न के समर्थन से स्थापित हैं, सम्पूर्ण ब्रह्मांड को धारण करते हुए, और हम बाधारहित रूप से ब्रह्मांड का रूप बन जाते हैं।

7.178.36

इति संचिन्त्य सब्रह्मजगद्धारणया चिरम् । निमीलितदृशस्तस्थुस्ते चित्ररचिता इव ॥ ३६ ॥

iti saṃcintya sabrahmajagaddhāraṇayā ciram | nimīlitadṛśastasthuste citraracitā iva || 36 ||

Thus, contemplating the entire universe as Brahman, they remained for a long time with their eyes closed, as if painted in a picture.

इस प्रकार, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ब्रह्म के रूप में सोचकर, वे लम्बे समय तक आँखें बंद किए चित्र की तरह खड़े रहे।

7.178.37

अथैतद्धारणाबद्धचित्तास्ते तावदच्युताः । आसन्मासान्दशाष्टौ च यावत्ते तत्र देहकाः ॥ ३७ ॥

athaitaddhāraṇābaddhacittāste tāvadacyutāḥ | āsanmāsāndaśāṣṭau ca yāvatte tatra dehakāḥ || 37 ||

Then, with their minds fixed in that contemplation, they remained immovable for eight months, until their bodies were there.

तब, उस धारणा में मन लगाकर, वे आठ महीने तक अचल रहे, जब तक कि उनके शरीर वहाँ थे।

7.178.38

शुष्काः कंकालतां याताः क्रव्यादैश्चर्विताङ्गकाः । नाशमभ्याययुस्तत्र च्छायाभागा इवातपैः ॥ ३८ ॥

śuṣkāḥ kaṅkālatāṃ yātāḥ kravyādaiścarvitāṅgakāḥ | nāśamabhyāyayustatra cchāyābhāgā ivātapaiḥ || 38 ||

Dried up, they became skeletons, their limbs eaten by scavengers, they perished there like shadows under the sun.

सूखकर, वे कंकाल बन गए, उनके अंग भक्षकों द्वारा खा लिए गए, वे वहाँ सूर्य की धूप में छाया की तरह नष्ट हो गए।

7.178.39

अहं ब्रह्मा जगच्चेदं सर्गोऽयं भुवनान्वितः । इति संपश्यतां तेषां दीर्घकालोऽभ्यवर्तत ॥ ३९ ॥

ahaṃ brahmā jagaccedaṃ sargo'yaṃ bhuvanānvitaḥ | iti saṃpaśyatāṃ teṣāṃ dīrghakālo'bhyavartata || 39 ||

Thinking, 'I am Brahman, and this is the universe, this creation is endowed with worlds,' a long time passed for them.

सोचते हुए, 'मैं ब्रह्म हूँ, और यह ब्रह्माण्ड है, यह सृष्टि लोकों से युक्त है,' उनके लिए एक लंबा समय बीत गया।

7.178.40

तानि चित्तान्यदेहानि दशैकध्यानतस्ततः । संपन्नानि जगन्त्येव दश देहानि वै पृथक् ॥ ४० ॥

tāni cittānyadehāni daśaikadhyānatastataḥ | saṃpannāni jagantyeva daśa dehāni vai pṛthak || 40 ||

Those disembodied minds, through single-pointed meditation, became complete and manifested as ten separate bodies in the world.

वे देहरहित मन, एकाग्र ध्यान द्वारा, पूर्ण होकर दुनिया में दस अलग-अलग शरीरों के रूप में प्रकट हुए।

7.178.41

इति तेषां चिदिच्छा सा संपन्ना सकलं जगत्। अत्यन्तस्वच्छरूपैव स्थिता चाकारवर्जिता ॥ ४१ ॥

iti teṣāṃ cidicchā sā saṃpannā sakalaṃ jagat | atyantasvaccharūpaiva sthitā cākāravarjitā || 41 ||

Thus, their desire for consciousness is fulfilled, the entire world is pure and formless.

इस प्रकार, उनकी चेतना की इच्छा पूर्ण होती है, सम्पूर्ण जगत् अत्यंत शुद्ध और निराकार है।

7.178.42

संविन्मयत्वाज्जगतां तेषां भूम्यचलादि तत्। सर्वं चिदात्मकं विद्धि नौ चेदन्यत्किमुच्यताम् ॥ ४२ ॥

saṃvinmayatvājjagatāṃ teṣāṃ bhūmyacalādi tat | sarvaṃ cidātmakaṃ viddhi nau cedanyatkimucyatām || 42 ||

Due to the nature of pure consciousness, their world, including the earth and mountains, is all consciousness. If not, what else can be said?

शुद्ध चेतना की प्रकृति के कारण, उनका जगत्, जिसमें पृथ्वी और पर्वत शामिल हैं, सब चेतना है। यदि ऐसा नहीं है, तो और क्या कहा जा सकता है?

7.178.43

किल यत्त्रिजगज्जालं तेषां किमात्म तत्तथा। संविदाकाशशून्यत्वमात्रमेवेतरन्न तत् ॥ ४३ ॥

kila yatrtrijagajjālaṃ teṣāṃ kimātma tattathā | saṃvidākāśaśūnyatvamātramevetaranna tat || 43 ||

Indeed, the web of the three worlds is their self. It is merely the emptiness of the consciousness-space, nothing else.

वास्तव में, तीनों जगतों का जाल उनका स्वयं है। यह केवल चेतना-आकाश की शून्यता है, और कुछ नहीं।

7.178.44

विद्यते न यथा किंचित्तरङ्गः सलिलादृते। संवित्तत्त्वादृते तद्वद्विद्यते चलनादिकम् ॥ ४४ ॥

vidyate na yathā kiṃcit tarangaḥ salilādṛte | saṃvittattvādṛte tadvad vidyate calanādikam || 44 ||

Just as a wave does not exist without water, similarly, motion and other phenomena do not exist without the principle of consciousness.

जैसे एक तरंग बिना पानी के नहीं होती, उसी प्रकार, गति और अन्य घटनाएँ बिना चेतना के सिद्धांत के नहीं होतीं।

7.178.45

ऐन्दवानि यथैतानि चिन्मयानि जगन्ति खे। तथा चिन्मयमेतेषु काष्ठलोष्टोपलाद्यपि ॥ ४५ ॥

aindavāni yathaitāni cinmayāni jaganti khe | tathā cinmayameteṣu kāṣṭhaloṣṭopalādyapi || 45 ||

Just as these celestial beings are full of consciousness in the sky, similarly, even in these objects like wood, clod, and stone, there is consciousness.

जैसे ये आकाशीय प्राणी आकाश में चेतना से भरे हैं, उसी प्रकार, लकड़ी, मिट्टी और पत्थर जैसी चीजों में भी चेतना है।

7.178.46

यथैवैन्दवसंकल्पास्ते जगत्त्वमुपागताः। तथैवाब्जजसंकल्पो जगत्त्वमयमागतः ॥ ४६ ॥

yathaiva-indava-saṅkalpās-te jagat-tvam-upāgatāḥ | tathaiva-abja-ja-saṅkalpo jagat-tvam-ayam-āgataḥ || 46 ||

Just as the resolutions of the moon have come to this world, so too has the resolution of the lotus-born come to this world.

चाँद के संकल्प जैसे इस जगत में आए हैं, वैसे ही कमल से उत्पन्न संकल्प भी इस जगत में आया है।

7.178.47

तस्मादिहेमे गिरयो वसुधा पादपा घनाः । महाभूतानि सर्वं च चिन्मात्रमयमाततम् ॥ ४७ ॥

tasmād-iheme girayo vasudhā pādapā ghanāḥ | mahābhūtāni sarvaṃ ca cinmātramayam-ātatam || 47 ||

Therefore, all these mountains, the earth, the trees, the dense forests, the great elements, and everything else are pervaded by pure consciousness.

इसलिए, ये सभी पर्वत, पृथ्वी, पेड़, घने जंगल, महाभूत, और सब कुछ शुद्ध चेतना से व्याप्त हैं।

7.178.48

चिद्वृक्षाश्चिन्मही चिद्द्यौश्चिदाकाशं चिदद्रयः । नाचित्क्वचित्संभवति तेष्वैन्दवजगत्स्विव ॥ ४८ ॥

cidvṛkṣāścinmahī ciddyaścidākāśaṃ cidadrayaḥ | nācitkvacitsaṃbhavati teṣva-indava-jagatsv-iva || 48 ||

The trees are consciousness, the earth is consciousness, the sky is consciousness, the space is consciousness, and the mountains are consciousness. Nothing exists without consciousness, just as nothing exists without the moon's influence in the world.

पेड़ चेतना हैं, पृथ्वी चेतना है, आकाश चेतना है, अंतरिक्ष चेतना है, और पर्वत चेतना हैं। चेतना के बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं है, जैसे कि चन्द्रमा के प्रभाव के बिना जगत में कुछ भी नहीं है।

7.178.49

चिन्मात्रखकुलालेन स्वदेहचलचक्रके । स्वशरीरमृदा सर्गः कुतोयं क्रियतेऽनिशम् ॥ ४९ ॥

cinmātrakhakulālena svadehacalacakrake | svaśarīramṛdā sargaḥ kutoyam kriyate'niśam || 49 ||

By the potter of pure consciousness, in the wheel of his own body, creation is constantly made from the clay of his own body. From where does this creation come?

शुद्ध चेतना के कुम्हार द्वारा, अपने शरीर के चक्र में, अपने शरीर की मिट्टी से सृष्टि निरंतर होती रहती है। यह सृष्टि कहाँ से आती है?

7.178.50

संकल्पनिर्मिते सर्गे दृषदश्चेन्न चेतनाः । तदत्र लोष्टशैलादि किमेतदिति कथ्यताम् ॥ ५० ॥

saṃkalpanirmitesarge dṛṣadaścennacaetanāḥ | tadatra loṣṭaśailādi kimetaditi kathyatām || 50 ||

In the creation made by the resolution, if stones are not conscious, then what is this? Please explain the nature of clods, stones, and other such things.

संकल्प द्वारा बनाई गई सृष्टि में, यदि पत्थर चेतन नहीं हैं, तो यह क्या है? कृपया लोष्ट (मिट्टी के ढेले), शैल (पत्थर), और अन्य ऐसी चीजों की प्रकृति समझाएँ।

7.178.51

कलनस्मृतिसंस्कारा दधत्यर्थं च नोदरे । प्राडवृष्टं कल्पनादीनामन्यैवार्थकुलावताम् ॥ ५१ ॥

kalanasmṛtisaṃskārā dadhatyarthaṃ ca nodare | prāḍavṛṣṭaṃ kalpanādīnāmanyai-vārthakulāvatām || 51 ||

The impressions of time, memory, and conditioning hold the meaning within, not outside. The rain of imagination and other such things is different from the meaning of the family of the self.

समय, स्मृति और संस्कार के संस्कार अर्थ को अंदर रखते हैं, बाहर नहीं। कल्पना और अन्य ऐसी चीजों की वर्षा स्वयं के परिवार के अर्थ से अलग है।

7.178.52

तद्धाम संविदो धाम्नि मणिराशौ मणिर्यथा। सर्वात्मनि तथा चित्ते कश्चिदर्थ उदेत्यलम्॥ ५२॥

taddhāma saṃvido dhāmni maṇirāśau maṇiryathā | sarvātmani tathā citte kaścidartha udetyalam || 52 ||

The abode of that is in the abode of consciousness, like a gem in a gemstone. Thus, in the universal self, some meaning arises effortlessly.

उसका निवास चेतना के निवास में है, जैसे एक रत्न एक रत्न में। इस प्रकार, सार्वभौमिक आत्मा में, कुछ अर्थ बिना किसी प्रयास के उत्पन्न होता है।

7.178.53

अकार्यकरणस्यार्थो न भिन्नो ब्रह्मणः क्वचित्। स्वभाव इति तेनेदं सर्वं ब्रह्मेति निश्चयः॥ ५३॥

akāryakaraṇasyārtho na bhinnobrahmaṇaḥ kvacit | svabhāva iti tenedaṃ sarvaṃ brahmeti niścayaḥ || 53 ||

The meaning of non-action is not different from Brahman anywhere. By nature, therefore, all this is Brahman, this is the conclusion.

क्रिया के अभाव का अर्थ ब्रह्म से कहीं भी अलग नहीं है। स्वभाव से, इसलिए, यह सब ब्रह्म है, यह निश्चय है।

7.178.54

यथा प्रवृत्तं चिद्वारि वहत्यावर्ततेऽवनौ। स्वयत्नेनातितीव्रेण परात्मीयात्मना विना॥ ५४॥

yathā pravṛttaṃ cidvāri vahatyāvartate'vanau | svayatnenātitīvreṇa parātmīyātmanā vinā || 54 ||

As it flows in the stream of consciousness, it flows and returns without the supreme self, with intense self-effort.

जैसे यह चेतना के प्रवाह में बहता है, यह परमात्मा के बिना, अत्यधिक स्वयं के प्रयास से बहता है और लौटता है।

7.178.55

पद्मलीला जगदिव प्रकचन्ति जगन्ति यत्। चिन्मात्राद्ब्रह्मणः स्वस्मादन्यानि न मनागपि॥ ५५॥

padmalīlā jagadiva prakacanti jaganti yat | cinmātrādbrahmaṇaḥ svasmādanyāni na manāgapi || 55 ||

The play of the lotus, as it were, the worlds bloom, because from pure consciousness, Brahman, nothing else arises, not even a little.

कमल की लीला, जैसे विश्व खिलते हैं, क्योंकि शुद्ध चेतना से, ब्रह्म से, कुछ भी दूसरा नहीं उत्पन्न होता, न तो थोड़ा सा भी।

7.178.56

अजातमनिरुद्धं च सन्मात्रं ब्रह्म खात्मकम्। शान्तं सदसतोर्मध्यं चिद्भामात्रमिदं जगत्॥ ५६॥

ajātamaniruddhaṃ ca sanmātraṃ brahma khātmakam | śāntaṃ sadasator madhyam cidbhāmātram idam jagat || 56 ||

The unborn and undestroyed, the mere existence, Brahman, which is the essence of space, peaceful, between existence and non-existence, this world is merely the light of consciousness.

अजन्मा और अविनाशी, केवल अस्तित्व, ब्रह्म, जो आकाश का सार है, शान्त, अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच, यह जगत केवल चेतना का प्रकाश है।

7.178.57

यत्संविन्मयमद्वयादि संकल्पजगति स्थितम् । तदसंविन्मयमिति वक्ताऽज्ञो ज्ञैर्विहस्यते ॥ ५७ ॥

yatsaṃvinmayamadvyādi saṃkalpajagati sthitam | tadasaṃvinmayamiti vaktā'jñō jñairvihasyatē || 57 ||

That which is full of consciousness, non-dual, and situated in the world of imagination, if one says it is without consciousness, that ignorant speaker is ridiculed by the wise.

जो चेतना से भरा हुआ, अद्वैत, और कल्पना की दुनिया में स्थित है, अगर कोई कहता है कि यह चेतना से रहित है, तो वह अज्ञानी वक्ता बुद्धिमानों द्वारा उपहास का पात्र बनता है।

7.178.58

जगन्त्यात्मेव संकल्पमयान्येतानि वेत्ति खे । खात्मकानि तथेदं च ब्रह्म संकल्पजं जगत् ॥ ५८ ॥

jagantyātmēva saṃkalpamayānyētāni vētti khē | khātmakāni tathēdam ca brahma saṃkalpajaṃ jagat || 58 ||

The self knows all these things in the world to be made of imagination, and likewise, this Brahman, the essence of space, is the world born of imagination.

आत्मा इस जगत में सभी चीजों को कल्पना से बना हुआ जानता है, और इसी प्रकार, यह ब्रह्म, आकाश का सार, कल्पना से उत्पन्न जगत है।

7.178.59

यावद्यावदियं दृष्टिः शीघ्रं शीघ्रं विलोक्यते । तावत्तावदिदं दुःखं शीघ्रं शीघ्रं विलीयते ॥ ५९ ॥

yāvadyāvadiyaṃ dṛṣṭiḥ śīghraṃ śīghraṃ vilokyatē | tāvattāvadidam duḥkhaṃ śīghraṃ śīghraṃ vilīyatē || 59 ||

As long as this vision is quickly and quickly seen, so long does this suffering quickly and quickly dissolve.

जब तक यह दृष्टि शीघ्रता से देखी जाती है, तब तक यह दुःख शीघ्रता से घुलता जाता है।

7.178.60

यावद्यावदियं दृष्टिः प्रेक्ष्यते न चिराच्चिता । तावत्तावदिदं दुःखं भवेत्प्रतिघनं घनम् ॥ ६० ॥

yāvadyāvadiyaṃ dṛṣṭiḥ prēkṣyatē na cirāccitā | tāvattāvadidam duḥkhaṃ bhavētpratighanaṃ ghanam || 60 ||

As long as this vision is not seen for a long time, so long does this suffering become dense and dense.

जब तक यह दृष्टि लंबे समय तक नहीं देखी जाती, तब तक यह दुःख घना और घना होता जाता है।

7.178.61

दीर्घदुष्कृतमूढानामिमां दृष्टिमपश्यताम् । संसृतिर्वज्रसारेयं न कदाचित्प्रशाम्यति ॥ ६१ ॥

dīrghaduṣkṛtamūḍhānāmimāṃ dṛṣṭimapaśyatām| saṃsṛtirvajrasāreyam na kadācitpraśāmyati || 61 ||

Those who have committed grave sins and are deluded, seeing this world, their cycle of rebirth is as hard as a diamond and never ceases.

जो लोग बड़े पाप कर चुके हैं और मूढ़ हैं, उनके लिए इस दृष्टि को देखना उनकी संसृति को हीरे के समान कठोर बना देता है और कभी शान्त नहीं होता।

7.178.62

नेहाकृतिर्न च भवाभवजन्मनाशाः सत्ता न चैव न च नाम तथास्त्यसत्ता। शान्तं परं कचति केवलमात्मनीत्थं ब्रह्माथवा कचनमप्यलमत्र नास्ति ॥ ६२ ॥

nehākṛtirna ca bhavābhavajanmanāśāḥ sattā na caiva na ca nāma tathāstyasattā| śāntaṃ paraṃ kacati kevalamātmanītthaṃ brahmāthavā kacanamapyalamatra nāsti || 62 ||

There is no form, no existence or non-existence, no birth or death, no reality or unreality, no name. Only the supreme peace, the self, exists here. There is nothing else but Brahman.

यहाँ न कोई आकृति है, न कोई अस्तित्व या अनस्तित्व, न जन्म या मृत्यु, न वास्तविकता या अवास्तविकता, न नाम। केवल परम शान्ति, आत्मा, यहाँ है। ब्रह्म के अलावा कुछ भी नहीं है।

7.178.63

आद्यन्तवर्जितमलभ्यलताग्रमूलनिर्माणमूलपरिवेशमशेषमच्छम्। अन्तस्थनिर्गगनसर्गकपुत्रकौघं नित्ये स्थितं ननु घनं गतजन्मनाशम् ॥ ६३ ॥

ādyantavarjitamalabhyalatāgramūlanirmāṇamūlapariveśamaśeṣamaccham|
antasthanirgaganasargakaputrakaughaṃ nitye sthitaṃ nanu ghanaṃ gatajanmanāśam || 63 ||

That which is devoid of beginning and end, unattainable, the root and cause of all creation, all-pervading, pure, internal, and external space, the multitude of created beings, eternally exists, dense, beyond birth and death.

जो आदि और अंत से रहित है, अप्राप्य, सभी सृष्टि का मूल और कारण, सर्वव्यापी, शुद्ध, आंतरिक और बाह्य अंतरिक्ष, सृष्टि के जीवों का समूह, नित्य रूप से स्थित, घना, जन्म और मृत्यु से परे है।

7.178.64

सन्मात्रमन्तरहिताखिलहस्तजातं पर्यन्तहीनगणनाङ्गममुक्तरूपम्। आत्माम्बरात्मकमहं त्विदमेव सर्वं सुस्तम्भरूपमजमौनमलं विकल्पैः ॥ ६४ ॥

sanmātramantarahitākhilahastajātaṃ paryantahīnagaṇanāṅgamamuktarūpam| ātmāmbarātmakamahaṃ tvidameva sarvaṃ sustambharūpamajamaunaṃ alaṃ vikalpaiḥ || 64 ||

That which is pure existence, devoid of internal divisions, the source of all creation, beyond all limits and calculations, free from form, the essence of the self, I am that, this is all, self-supporting, unborn, silent, sufficient in itself, beyond all distinctions.

जो शुद्ध अस्तित्व है, आंतरिक विभाजनों से रहित, सभी सृष्टि का स्रोत, सभी सीमाओं और गणनाओं से परे, रूप से मुक्त, आत्मा का सार, मैं वह हूँ, यही सब कुछ है, स्वयं समर्थित, अजन्मा, मौन, स्वयं में पर्याप्त, सभी भेदों से परे।

Chapter 179

7.179.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं चिन्मात्रमेवैकं शुद्धं सत्त्वं जगत्त्रयम् । संभवन्तीह भूतानि नाज्ञबुद्धानि कानिचित् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ cinmātramevaikaṃ śuddhaṃ sattvaṃ jagattrayam | saṃbhavantīha bhūtāni nājñabuddhāni kānicit || 1 ||

Thus spoke Shri Vasishtha: Only pure consciousness exists as the three worlds. All beings arise here, none are unenlightened.

श्री वसिष्ठ ने कहा: केवल शुद्ध चेतना ही तीनों लोकों के रूप में विद्यमान है। यहाँ सभी प्राणी उत्पन्न होते हैं, कोई भी अज्ञानी नहीं है।

7.179.2

तस्मात्कुतः शरीरादि वस्तु सप्रतिघं कुतः । यदिदं दृश्यते किंचित्तदप्रतिघमाततम् ॥ २ ॥

tasmātkutaḥ śarīrādi vastu sapratighaṃ kutaḥ | yadidaṃ dṛśyate kiṃcit tadapratighamātatam || 2 ||

Therefore, from where does the body and other objects with resistance come? Whatever is seen here is non-resistant and eternal.

इसलिए, शरीर और अन्य प्रतिरोधी वस्तुएँ कहाँ से आती हैं? जो कुछ भी यहाँ दिखाई देता है, वह प्रतिरोधरहित और सनातन है।

7.179.3

स्थितं चिद्व्योम चिद्व्योम्निशान्ते शान्तं समं स्थितम् । स्थितमाकाशमाकाशे ज्ञप्तिर्ज्ञप्तौ विजृम्भते ॥ ३ ॥

sthitaṃ cidvyoma cidvyomniśānte śāntaṃ samaṃ sthitam | sthitamākāśamākāśe jñaptirjñaptau vijṛmbhate || 3 ||

Consciousness is established in the peaceful sky of consciousness, calm and equal. Space is established in space, perception in perception.

चेतना चेतना के शांत आकाश में स्थित है, शांत और समान। आकाश आकाश में स्थित है, ज्ञान ज्ञान में।

7.179.4

सर्वं संविन्मयं शान्तं सत्स्वप्न इव जाग्रति । स्थितमप्रतिघाकारं क्वासौ सप्रतिघा स्थितिः ॥ ४ ॥

sarvaṃ saṃvinmayaṃ śāntaṃ satsvapna iva jāgrati | sthitamapratighākāraṃ kvāsau sapratighā sthitiḥ || 4 ||

Everything is calm and made of pure awareness, like a true dream in the waking state. It is established in a non-resistant form, where is that resistant existence?

सब कुछ शांत और शुद्ध चेतना से बना है, जैसे जाग्रत अवस्था में एक सच्चा स्वप्न। यह एक प्रतिरोधरहित रूप में स्थित है, वह प्रतिरोधी अस्तित्व कहाँ है?

7.179.5

क्व देहावयवाः क्वान्त्रवेष्टनी क्वास्थिपञ्जरम् । व्योमेवाप्रतिघं विद्धि देहं सप्रतिघोपमम् ॥ ५ ॥

kva dehāvayavāḥ kvāntraveṣṭanī kvāsthipañjaram | vyomevāpratighaṃ viddhi dehaṃ sapratighopamam || 5 ||

Where are the body parts, where is the intestinal covering, where is the skeleton? Know the body to be like the non-resistant sky.

शरीर के अंग कहाँ हैं, आंत्र का आवरण कहाँ है, कंकाल कहाँ है? शरीर को प्रतिरोधरहित आकाश के समान समझो।

7.179.6

संवित्करौ शिरः संवित्संविदिन्द्रियवृन्दकम्। शान्तमप्रतिघं सर्वं न सप्रतिघमस्ति हि ॥ ६ ॥

saṃvitkarau śiraḥ saṃvitsaṃvidindriyavṛndakam| śāntamapratighaṃ sarvaṃ na sapratighamasti hi || 6 ||

Consciousness is the head and the senses are its branches| It is peaceful and non-resistant, and there is nothing that is not non-resistant

चेतना सिर है और इंद्रियाँ उसकी शाखाएँ हैं| यह शांत और अविरोधी है, और कुछ भी ऐसा नहीं है जो अविरोधी नहीं है

7.179.7

ब्रह्मव्योम्नः स्वप्नरूपस्वभावत्वाज्जगत्स्थितेः। इदं सर्वं संभवति सहेतुकमहेतुकम् ॥ ७ ॥

brahmavyomnaḥ svapnarūpasvabhāvatvājjagatsthiteḥ| idaṃ sarvaṃ saṃbhavati sahetukamahētukam || 7 ||

From the nature of the dream-like Brahman, the world exists| All this arises with or without cause

स्वप्न-जैसे ब्रह्म की प्रकृति से संसार अस्तित्व में है| यह सब कारण के साथ या बिना कारण के उत्पन्न होता है

7.179.8

न कारणं विना कार्यं भवतीत्युपपद्यते। यद्यथा येन निर्णीतं तत्तथा तेन लक्ष्यते ॥ ८ ॥

na kāraṇaṃ vinā kāryaṃ bhavatītyupapadyate| yadyathā yena nirṇītaṃ tattathā tena lakṣyate || 8 ||

It is not possible for an effect to exist without a cause| Whatever is determined in a certain way by something, it is perceived in that way by that

कारण के बिना कार्य का अस्तित्व संभव नहीं है| जो किसी तरह से किसी द्वारा निर्धारित होता है, वह उसी तरह से उसी द्वारा देखा जाता है

7.179.9

कारणेन विना कार्यं सद्वदित्युपपद्यते। यथाभावितमेवार्थं संविदाप्नोत्यसंशयम् ॥ ९ ॥

kāraṇena vinā kāryaṃ sadvadityupapadyate| yathābhāvitamevārthaṃ saṃvidāpnotyasaṃśayam || 9 ||

Without a cause, the effect is understood to be real| The meaning is certainly attained by consciousness as it is imagined

कारण के बिना, कार्य को वास्तविक समझा जाता है| अर्थ चेतना द्वारा उसी तरह से निश्चित रूप से प्राप्त होता है जैसे कि कल्पना की जाती है

7.179.10

यथा संभवति स्वप्ने सर्वं सर्वत्र सर्वथा। चिन्मयत्वात्तथा जाग्रत्यस्ति सर्वात्मरूपता ॥ १० ॥

yathā saṃbhavati svapne sarvaṃ sarvatra sarvathā| cinmayatvāttathā jāgratyasti sarvātmārūpatā || 10 ||

Just as everything arises in a dream in every way and everywhere| Similarly, in the waking state, there is the nature of the self in everything due to consciousness

जैसे स्वप्न में सब कुछ हर तरह से और हर जगह उत्पन्न होता है| उसी तरह, जाग्रत अवस्था में, चेतना के कारण सब कुछ में स्वयं की प्रकृति होती है

7.179.11

सर्वात्मनि ब्रह्मपदे नानानानात्मनि स्थिता। अस्त्यकारणकार्याणां सत्ता कारणजापि च ॥ ११ ॥

sarvātmani brahmapade nānānānātmani sthitā | astyakāraṇakāryāṇāṃ sattā kāraṇajāpi ca || 11 ||

All beings reside in the supreme Brahman, the ultimate reality. The existence of effects is due to causes, and the effects themselves become causes.

सभी आत्माएँ परम ब्रह्म में निवास करती हैं, जो परम वास्तविकता है। कारणों के कारण प्रभावों का अस्तित्व है, और प्रभाव स्वयं कारण बन जाते हैं।

7.179.12

एकः सहस्रं भवति यथा ह्येते किलैन्दवाः । प्रयाता भूतलक्षत्वं संकल्पजगतां गणैः ॥ १२ ॥

ekaḥ sahasraṃ bhavati yathā hyete kilaindavāḥ | prayātā bhūtalakṣatvaṃ saṃkalpajagatāṃ gaṇaiḥ || 12 ||

Just as one becomes a thousand, so do these particles of dust move towards the earth, driven by the collective will of the imagined worlds.

जैसे एक हजार बन जाता है, वैसे ही ये धूल के कण पृथ्वी की ओर बढ़ते हैं, कल्पित जगतों की सामूहिक इच्छा से प्रेरित।

7.179.13

सहस्रमेकं भवति संविदां च तथा हि यत् । सायुज्ये चक्रपाण्यादेः सर्गैरेकं भवेद्वपुः ॥ १३ ॥

sahasramekaṃ bhavati saṃvidāṃ ca tathā hi yat | sāyujye cakrapāṇyādeḥ sargairekaṃ bhavedvapuḥ || 13 ||

A thousand becomes one in the realm of consciousness, and thus it is. In the union with the divine, the various creations become one form.

हजार चेतना के क्षेत्र में एक बन जाता है, और ऐसा ही है। दिव्य संगम में, विभिन्न सृष्टियाँ एक रूप बन जाती हैं।

7.179.14

एक एव भवत्यब्धिः स्रवन्तीनां शतैरपि । एक एव भवेत्काल ऋतुसंवत्सरोत्करैः ॥ १४ ॥

eka eva bhavatyabdhiḥ sravantīnāṃ śatairapi | eka eva bhavetkāla ṛtusaṃvatsarotkaraiḥ || 14 ||

The ocean becomes one even with hundreds of flowing rivers. Time becomes one with the seasons and years.

समुद्र सैकड़ों बहती नदियों के साथ भी एक बन जाता है। समय ऋतुओं और वर्षों के साथ एक बन जाता है।

7.179.15

संविदाकाश एवायं देहः स्वप्न इवोदितः । स्वप्नाद्रिवन्निराकारः स्वानुभूतिस्फुटोऽपि च ॥ १५ ॥

saṃvidākāśa evāyaṃ dehaḥ svapna ivoditaḥ | svapnādrinnirākāraḥ svānubhūtisphuṭo'pi ca || 15 ||

This body is like a dream manifested in the space of consciousness. It is formless like a mountain in a dream, yet clearly experienced.

यह शरीर चेतना के आकाश में स्वप्न की तरह प्रकट होता है। यह स्वप्न के पर्वत की तरह निराकार है, फिर भी स्पष्ट रूप से अनुभव किया जाता है।

7.179.16

संवित्तिरेवानुभवात्सैवाननुभवात्मिका । द्रष्टृदृश्यदृशा भाति चिद्व्योमैकमतो जगत् ॥ १६ ॥

saṃvittirevānubhavātsaivānanubhavātmikā | draṣṭṛdṛśyadṛśā bhāti cidvyomaikamato jagat || 16 ||

Consciousness alone is experienced as the self and the non-self | The seer, the seen, and the seeing appear as one in the sky of consciousness || 16 ||

चेतना ही स्वयं और अन्य के रूप में अनुभव की जाती है | द्रष्टा, दृश्य, और दृश्य चेतना के आकाश में एक के रूप में दिखाई देते हैं || 16 ||

7.179.17

वेदनावेदनात्मैकं निद्रास्वप्नसुषुप्तवत् । वातस्पन्दाविवाभिन्नौ चिद्व्योमैकमतो जगत् ॥ १७ ॥

vedanāvedanātmaikaṃ nidrāsvapnasuṣuptavat | vātaspandāvivābhinnau cidvyomaikamato jagat || 17 ||

The experience of sensation and non-sensation is one, like sleep, dream, and deep sleep | The movements of wind and vibrations are indistinguishable in the sky of consciousness || 17 ||

संवेदन और असंवेदन का अनुभव एक है, जैसे निद्रा, स्वप्न, और सुषुप्ति | वायु की गति और स्पंदन चेतना के आकाश में अलग नहीं हैं || 17 ||

7.179.18

द्रष्टा दृश्यं दर्शनं च चिद्भानं परमार्थखम्। शून्यस्वप्न इवाभाति चिद्व्योमैकमतो जगत्॥ १८॥

draṣṭā dṛśyaṃ darśanaṃ ca cidbhānaṃ paramārthakhama | śūnyasvapna ivābhāti cidvyomaiakamato jagat || 18 ||

The seer, the seen, and the seeing are the manifestation of consciousness, the ultimate reality | Like an empty dream, it appears as one in the sky of consciousness || 18 ||

द्रष्टा, दृश्य, और दृश्य चेतना के विकास हैं, परम वास्तविकता | जैसे खाली स्वप्न, यह चेतना के आकाश में एक के रूप में दिखाई देता है || 18 ||

7.179.19

जगत्त्वमसदेवेशे भ्रान्त्या प्रथमसर्गतः। स्वप्ने भयमिवाशेषं परिज्ञातं प्रशाम्यति॥ १९॥

jagattvamasadeveśe bhrāntyā prathamasargataḥ | svapne bhayamivāśeṣaṃ parijñātaṃ praśāmyati || 19 ||

The world is unreal, O Lord, due to the initial delusion of creation | Like fear in a dream, it is known and then it subsides || 19 ||

जगत् असत्य है, हे ईश्वर, सृष्टि के प्रारंभिक भ्रम के कारण | स्वप्न में भय की तरह, यह जाना जाता है और फिर शांत हो जाता है || 19 ||

7.179.20

एकस्याः संविदः स्वप्ने यथा भानमनेकधा। नानापदार्थरूपेण सर्गादौ गगने तथा॥ २०॥

ekasyāḥ saṃvidaḥ svapne yathā bhānamanekadhā | nānāpadārtharūpeṇa sargādau gagane tathā || 20 ||

Just as the appearance of one consciousness in a dream is manifold | Similarly, in the beginning of creation, various objects appear in the sky || 20 ||

जैसे एक चेतना का स्वप्न में अनेक रूपों में प्रकट होता है | इसी तरह, सृष्टि के आरंभ में, विभिन्न वस्तुएँ आकाश में प्रकट होती हैं || 20 ||

7.179.21

बहुदीपे गृहे च्छाया बह्वयो भान्त्येकवद्यथा। सर्वशक्तेस्तथैवैका भाति शक्तिरनेकधा॥ २१॥

bahudīpe gṛhe cchāyā bahvayo bhāntyekavadyathā | sarvaśaktes tathaivaiakā bhāti śaktiranekadhā || 21 ||

Just as many lamps in a house cast many shadows but appear as one, similarly, the supreme power appears as one but manifests in many forms.

जैसे घर में बहुत से दीपक बहुत सी छायाएँ डालते हैं लेकिन एक ही प्रकार दिखाई देते हैं, वैसे ही सर्वशक्ति एक ही दिखाई देती है लेकिन अनेक रूपों में प्रकट होती है।

7.179.22

यत्सीकरस्फुरणमम्बुनिधौ शिवाख्ये व्योम्नीव वृक्षनिकरस्फुरणं स सर्गः। व्योम्येष वृक्षनिकरो व्यतिरिक्तरूपो ब्रह्माम्बुधौ न तु मनागपि सर्गबिन्दुः॥ २२॥

yatsīkarasphuraṇamambunidhau śivākhye vyomnīva vṛkṣanikarasphuraṇaṃ sa sargaḥ | vyomnyeṣa vṛkṣanikaro vyatiriktarūpo brahmāmbudhau na tu manāgapi sargabinduḥ || 22 ||

The creation is like the sparkling of seeds in the ocean named Shiva, similar to the sparkling of a cluster of trees in the sky. In the sky, this cluster of trees appears distinct, but in the ocean of Brahman, not even a speck of creation exists.

सृष्टि शिव नामक समुद्र में बीजों की चमक के समान है, जैसे आकाश में वृक्षों के समूह की चमक। आकाश में यह वृक्षों का समूह अलग दिखाई देता है, लेकिन ब्रह्म समुद्र में सृष्टि का एक कण भी नहीं है।

Chapter 180

7.180.1

श्रीराम उवाच । इमं मे संशयं छिन्धि भगवन्भास्करं तमः । भुवनस्येव भावानां सम्यग्रूपानुभूतये ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | imaṃ me saṃśayaṃ chindhi bhagavanbhāskaraṃ tamaḥ | bhuvanasyaiva bhāvānāṃ samyagrūpānubhūtaye || 1 ||

Shri Ram said, 'O Lord, please dispel my doubt, like the sun dispels the darkness of the world, for the proper understanding of the true nature of things.'

श्री राम ने कहा, 'हे भगवान्, मेरे संशय को दूर करें, जैसे सूर्य दुनिया के अंधेरे को दूर करता है, ताकि मैं सभी चीजों के सही स्वरूप को समझ सकूँ।'

7.180.2

कदाचिदहमेकाग्रो विद्यागेहे विपश्चिताम् । संसदि स्थितवान्यावत्तापसः कश्चिदागतः ॥ २ ॥

kadācidahamekāgro vidyāgehe vipaścitām | saṃsadi sthitavānyāvattāpasaḥ kaścidāgataḥ || 2 ||

Once, I was sitting alone in the hall of knowledge among the wise, when a certain ascetic arrived.

एक बार, मैं विद्वानों के बीच ज्ञान के भवन में अकेला बैठा था, तभी एक तपस्वी आया।

7.180.3

विद्वान्द्विजवरः श्रीमान्विदेहजनमण्डलात् । महातपाः कान्तियुतो दुर्वासा इव दुःसहः ॥ ३ ॥

vidvāndvijavaraḥ śrīmānvidēhajanamaṇḍalāt | mahātapāḥ kāntiyuto durvāsā iva duḥsahaḥ || 3 ||

The wise and eminent Brahmin, resplendent, from the land of Videha, a great ascetic, radiant and formidable like Durvasa.

विद्वान् और श्रेष्ठ ब्राह्मण, तेजस्वी, विदेह देश से, एक महान तपस्वी, तेजोमय और दुर्वासा की तरह भयंकर।

7.180.4

स प्रविश्याभिवाद्याशु सभामाभास्वरद्युतिम् । उपविश्यासने तिष्ठन्नस्माभिरभिवादितः ॥ ४ ॥

sa praviśyābhivādyāśu sabhāmābhāsvradyutim | upaviśyāsane tiṣṭhannasmābhirabhivāditaḥ || 4 ||

He entered and quickly greeted the assembly, which was radiant with splendor. He sat on a seat and was greeted by us.

वह अंदर आया और तुरंत सभा को प्रणाम किया, जो तेजस्वी थी। वह एक आसन पर बैठा और हमने उसे प्रणाम किया।

7.180.5

वेदान्तसांख्यसिद्धान्तवादान्संहृत्य सत्तमम् । सुखोपविष्टं विश्रान्तं तमहं पृष्टवानिदम् ॥ ५ ॥

vedāntasāṃkhyasiddhāntavādānsaṃhṛtya sattamam | sukhopaviṣṭaṃ viśrāntaṃ tamahaṃ pṛṣṭavānidam || 5 ||

After the discussions on Vedanta, Sankhya, and other philosophies were concluded, I asked him, who was comfortably seated and relaxed.

वेदांत, सांख्य और अन्य दर्शनों पर चर्चा समाप्त होने के बाद, मैंने उससे पूछा, जो सुखपूर्वक बैठा और विश्राम कर रहा था।

7.180.7

ब्राह्मण उवाच । एवमेतन्महाभाग सुमहायत्नवानहम् । यदर्थमागतोऽस्मीह तस्याकर्णय निर्णयम् ॥ ७ ॥

brāhmaṇa uvāca | evametanmahābhāga sumahāyatnavānaham | yadarthamāgato'smīha tasyākarṇaya nirṇayam || 7 ||

The Brahmin said: O greatly fortunate one, I have made a great effort for the purpose for which I have come here; listen to its resolution.

ब्राह्मण ने कहा: हे महाभाग्यवान, मैंने जिस उद्देश्य के लिए यहाँ आया हूँ, उसके लिए मैंने बहुत प्रयास किया है; उसके निर्णय को सुनो।

7.180.8

वैदेहो नाम देशोऽस्ति सर्वसौभाग्यसंयुतः । स्वर्गस्याम्बरसंस्थस्य प्रतिबिम्वमिवावनौ ॥ ८ ॥

vaideho nāma deśo'sti sarvasaubhāgyasaṃyutaḥ | svargasyāmbarasaṃsthasya pratibimbamivāvanau || 8 ||

There is a country named Videha, endowed with all prosperity, like a reflection of heaven on earth.

विदेह नाम का एक देश है, जो सभी प्रकार के सौभाग्य से युक्त है, मानो स्वर्ग का प्रतिबिम्ब पृथ्वी पर।

7.180.9

तत्राहं ब्राह्मणो जातः प्राप्तविद्यश्च संस्थितः । कुन्दावदातदन्तत्वात्कुन्ददन्त इति श्रुतः ॥ ९ ॥

tatrāhaṃ brāhmaṇo jātaḥ prāptavidyaśca saṃsthitaḥ | kundāvadātadantatvātkundadanta iti śrutaḥ || 9 ||

There I was born as a Brahmin, having attained knowledge and established. Due to my teeth being like jasmine flowers, I am known as Kundadanta.

वहाँ मैं एक ब्राह्मण के रूप में जन्मा, ज्ञान प्राप्त कर चुका और स्थापित हुआ। मेरे दाँतों के चूने के फूलों की तरह होने के कारण, मुझे कुन्ददन्त के नाम से जाना जाता है।

7.180.10

अथाहं जातवैराग्यः प्रविहर्तुं प्रवृत्तवान् । देवद्विजमुनीन्द्राणां संभ्रमाच्छ्रमशान्तये ॥ १० ॥

athāhaṃ jātavairāgyaḥ pravihartuṃ pravṛttavān | devadvijamunīndrāṇāṃ saṃbhramācchramaśāntaye || 10 ||

Then, having developed dispassion, I set out to wander for the relief of the fatigue of the gods, sages, and great saints.

तब, वैराग्य प्राप्त करने के बाद, मैं देवताओं, ऋषियों और महान संतों की थकान को शांत करने के लिए भटकने निकला।

7.180.11

श्रीपर्वतमखण्डेहं कदाचित्प्राप्तवानहम् । तत्रावसं चिरं कालं मृदु दीर्घं तपश्चरन् ॥ ११ ॥

śrīparvatamakhṇḍehaṃ kadācitprāptavānaham | tatrāvasaṃ ciraṃ kālaṃ mṛdu dīrghaṃ tapascaran || 11 ||

Once, I reached the beautiful mountain range and stayed there for a long time, performing mild and prolonged penance.

एक बार, मैं सुंदर पर्वत श्रृंखला तक पहुंचा और वहाँ लंबे समय तक रहा, मधुर और लंबी तपस्या करते हुए।

7.180.12

तत्रास्त्यरण्यं विदितं मुक्तं तृणवनादिभिः । त्यक्ततेजस्तमोभ्रादिभूमाविव नभस्तलम् ॥ १२ ॥

tatrāstyaraṇyaṃ viditaṃ muktam tṛṇavanādibhiḥ| tyaktatejastamobhrādibhūmāviva nabhastalam || 12 ||

There is a well-known forest, free from grass and other things, like the sky devoid of light, darkness, and clouds.

वहाँ एक विख्यात वन है, जो घास और अन्य चीजों से मुक्त है, जैसे आकाश जो प्रकाश, अंधेरे और बादलों से रहित है।

7.180.13

तत्रास्ति मध्ये विटपी लघुः पेलवपल्लवः। स्थित एषोऽम्बरे शून्ये मन्दरश्मिरिवांशुमान्॥ १३ ॥

tatrāsti madhye viṭapī laghuḥ pelavapallavaḥ| sthita eṣo'mbare śūnye mandaraśmirivāṃśumān || 13 ||

In the middle of that place, there is a small tree with tender leaves, standing in the empty sky like the sun with weak rays.

उस स्थान के मध्य में, एक छोटा वृक्ष है जिसके कोमल पत्ते हैं, जो खाली आकाश में मंद किरणों वाले सूर्य की तरह खड़ा है।

7.180.14

लम्बते तस्य शाखायां पुरुषः पावनाकृतिः। भानुर्भानाविव रश्मिगृहीतो ग्रथिताकृतिः॥ १४ ॥

lambate tasya śākhāyāṃ puruṣaḥ pāvanākṛtiḥ| bhānurbhānāviva raśmigṛhīto grathitākṛtiḥ || 14 ||

Hanging from its branch is a man with a purifying form, like the sun caught in its own rays, with a bound form.

उसकी शाखा से लटका हुआ एक पुरुष है जिसका पवित्र रूप है, जैसे सूर्य अपनी ही किरणों में फँसा हुआ, बंधे हुए रूप में।

7.180.15

मौञ्जदामनिबद्धोर्ध्वपादो नित्यमवाक्शिराः। अष्ठीलत्वं दधदिव महाष्ठीलस्य शाल्मलेः॥ १५ ॥

mauñjadāmanibaddhordhvapādo nityamavākśirāḥ| aṣṭhīlatvaṃ dadhadiva mahāṣṭhīlasya śālmaler || 15 ||

With his feet bound upwards by a sacred thread, always with his head down, he appears like the great immovable silk-cotton tree.

अपने पैरों को पवित्र धागे से ऊपर की ओर बाँधे हुए, हमेशा सिर नीचे किये हुए, वह महान अचल सेमल के वृक्ष की तरह दिखाई देता है।

7.180.16

दृष्टः प्राप्तेन तं देशं स कदाचिन्मया पुमान्। विचारितो निकटतो वक्षःस्थाञ्जलिसंपुटः॥ १६ ॥

dṛṣṭaḥ prāptena taṃ deśaṃ sa kadācinmayā pumān| vicārito nikaṭato vakṣaḥsthāñjalisaṃpuṭaḥ || 16 ||

Once, I saw a man who had reached that place, with his hands folded in reverence near his chest, deeply contemplating.

एक बार, मैंने उस स्थान तक पहुँचे हुए एक पुरुष को देखा, जिसके हाथ वक्ष के पास जुड़े हुए थे, गहरी विचार-विमर्श में लीन।

7.180.17

यावज्जीवत्यसौ विप्रो निःश्वसित्यहताकृतिः। शीतवातातपस्पर्शान्सर्वान्वेत्ति च कालजान्॥ १७ ॥

yāvajjīvatyasau vipro niḥśvasityahatākṛtiḥ | śītavātātapaspṛśānsarvānvetti ca kālajān || 17 ||

As long as this Brahmin lives, he breathes with a distorted form | He experiences all the sensations of cold, wind, and heat, and knows the passage of time.

जब तक यह ब्राह्मण जीवित है, वह विकृत रूप में साँस लेता है | वह ठंड, हवा और गर्मी के सभी स्पर्शों को अनुभव करता है और समय को जानता है।

7.180.18

अनन्तरमसावेको नोपचर्य मया बहून्। दिवसातपखेदेन विश्रम्भे पातितः शनैः॥ १८ ॥

anantaramasāveko nopacarya mayā bahūn | divasātapakhedena viśrambhe pātitaḥ śanaiḥ || 18 ||

Immediately afterwards, he, not being served by me for many days | Gradually fell into exhaustion due to the heat of the day.

तुरंत बाद, वह, मेरे द्वारा कई दिनों तक सेवा न किए जाने के कारण | धीरे-धीरे दिन की गर्मी के कारण थकान में गिर गया।

7.180.19

पृष्टश्च कोऽसि भगवन्किमर्थं दारुणं तपः । करोषीदं विशालाक्ष लक्ष्यालक्ष्यात्मजीवितः ॥ १९ ॥

pṛṣṭaśca ko'si bhagavan kimarthaṃ dāruṇaṃ tapaḥ | karoṣīdaṃ viśālākṣa lakṣyālakṣyātmajīvitaḥ || 19 ||

He was asked, 'Who are you, O revered one? For what purpose do you perform this severe penance | O large-eyed one, living a life that is both visible and invisible?'

उससे पूछा गया, 'तुम कौन हो, हे भगवन्? किस उद्देश्य से तुम इस कठोर तपस्या को करते हो | हे विशाल नेत्रों वाले, जो दृश्य और अदृश्य जीवन जीते हो?'

7.180.20

अथ तेनोक्तमर्थस्ते क इवानेन तापस । अर्थे नातिविचित्रा हि भवन्तीच्छाः शरीरिणाम् ॥ २० ॥

atha tenoktamarthaste ka ivānena tāpasa | arthe nātivicitrā hi bhavantīcchāḥ śarīriṇām || 20 ||

Then he was told, 'What is the purpose of this ascetic? | The desires of embodied beings are not very extraordinary.'

तब उसे कहा गया, 'इस तपस्वी का क्या उद्देश्य है? | शरीरधारियों की इच्छाएँ बहुत असामान्य नहीं होतीं।'

7.180.21

इत्युक्तवान्प्रयत्नेन सोऽनुबन्धेन वै मया । यदा पृष्टस्तदा तेन ममोक्तमिदमुत्तरम् ॥ २१ ॥

ityuktavānprayatnena so'nubandhena vai mayā | yadā pṛṣṭastadā tena mamoktamidamuttaram || 21 ||

Thus, he spoke with effort and with a sense of continuity by me | When he was asked, then he gave me this reply.

इस प्रकार, उसने प्रयास से और मेरे द्वारा लगातार बोला | जब उससे पूछा गया, तब उसने मुझे यह उत्तर दिया।

7.180.22

मथुरायामहं जातो वृद्धिं यातः पितुगृहे । बाल्ययौवनयोर्मध्ये स्थितः पदपदार्थवित् ॥ २२ ॥

mathurāyāmahaṃ jāto vṛddhiṃ yātaḥ pitugṛhe | bālyayauvanayormadhye sthitaḥ padapadārthavit || 22 ||

I was born in Mathura and grew up in my father's house. In the middle of childhood and youth, I became knowledgeable about the meaning of words.

मैं मथुरा में पैदा हुआ और अपने पिता के घर में बड़ा हुआ। बचपन और युवावस्था के बीच में, मैं शब्दों के अर्थ को समझने लगा।

7.180.23

समग्रसुखसंभारकोशो भवति भूमिपः । इत्यहं श्रुतवांस्तत्र भोगार्थी नवयौवनः ॥ २३ ॥

samagrasukhasaṃbhārakośo bhavati bhūmipaḥ | ityahaṃ śrutavāṃstatra bhogārthī navayauvanaḥ || 23 ||

A king becomes a treasure of complete happiness. Thus, I heard there, desiring enjoyment in new youth.

एक राजा पूर्ण सुख का खजाना बन जाता है। इस प्रकार, मैंने वहाँ सुना, नए युवावस्था में भोग की इच्छा करते हुए।

7.180.24

अथ सप्तमहाद्वीपविस्तीर्णाया भुवः पतिः । स्यामित्यहमुदारात्मा परिबिम्बितवांश्चिरम् ॥ २४ ॥

atha saptamahādvīpavistīrṇāyā bhuvaḥ patiḥ | syāmityahamudārātmā paribimbitavāṃściram || 24 ||

Then, I, the generous one, thought, 'May I become the lord of the earth, which is spread out in seven great continents.' I contemplated this for a long time.

तब, मैं, उदार आत्मा, सोचा, 'मैं सात महाद्वीपों में फैली पृथ्वी का स्वामी बनूँ।' मैंने इस पर लंबे समय तक विचार किया।

7.180.25

इत्यर्थेन समागत्य देशमित्थमहं स्थितः । अत्र द्वादश वर्षाणि समतीतानि मानद ॥ २५ ॥

ityarthena samāgatya deśamitthamahaṃ sthitaḥ | atra dvādaśa varṣāṇi samatītāni mānada || 25 ||

Thus, with this purpose, I came to this place and have been staying here. Here, twelve years have passed, O respectful one.

इस प्रकार, इस उद्देश्य से, मैं इस स्थान पर आया और यहाँ रहा हूँ। यहाँ, बारह वर्ष बीत गए हैं, हे आदरणीय।

7.180.26

तदकारणमित्र त्वं गच्छेष्टं देशमाशुगः । अहं चाभिमतप्राप्तेरित्थमेव दृढस्थितिः ॥ २६ ॥

tadakāraṇamitra tvaṃ gaccheṣṭaṃ deśamāśugaḥ | ahaṃ cābhimata prāpteritthameva dṛḍhasthitiḥ || 26 ||

Therefore, O friend, you go to that desired place quickly. I will remain here firmly for the attainment of my desire.

इसलिए, हे मित्र, तुम उस इच्छित स्थान पर शीघ्र जाओ। मैं अपनी इच्छा की प्राप्ति के लिए यहाँ दृढ़ता से रहूँगा।

7.180.27

इति तेनाऽहमुक्तः संस्तमित्थं प्रोक्तवाञ्छृणु । आश्चर्यश्रवणे चेतः खेदमेति न धीमतः ॥ २७ ॥

iti tena'hamuktaḥ saṃstamitthaṃ proktavāñchṛṇu | āścaryaśravaṇe cetaḥ khedameti na dhīmataḥ || 27 ||

Thus, I was instructed by him to listen to this | The mind of the wise does not become distressed upon hearing something wonderful

इस प्रकार, मैंने उनसे यह सुना | अद्भुत सुनने पर बुद्धिमान का मन दुःखी नहीं होता

7.180.28

साधो यावत्त्वया प्राप्तो न नामाभिमतो वरः । त्वद्रक्षापरिचर्यार्थमिह तावदहं स्थितः ॥ २८ ॥

sādho yāvattvayā prāpto na nāmābhimato varaḥ | tvadrakṣāparicaryārthamih tāvadahaṃ sthitaḥ || 28 ||

O virtuous one, until you achieve the desired boon | I am here to protect and serve you

हे साधु, जब तक तुम वांछित वर नहीं प्राप्त कर लेते | मैं तुम्हारी रक्षा और सेवा के लिए यहाँ हूँ

7.180.29

मयेत्युक्ते स पाषाणमौनवानभवच्छमी । निमीलितेक्षणः क्षीणरूपस्त्वकलनो बहिः ॥ २९ ॥

mayetyukte sa pāṣāṇamau navānabhavacchamī | nimīlitekṣaṇaḥ kṣīṇarūpastvakalano bahiḥ || 29 ||

When I said this, he became silent like a stone | With closed eyes, weakened form, and motionless outside

जब मैंने यह कहा, तो वह पत्थर की तरह मौन हो गया | बंद आँखों, कमजोर शरीर, और बाहर से निश्चल

7.180.30

तथाहं पुरतस्तस्य काष्ठमौनवतोऽवसम् । षण्मासान्विगतोद्वेगं वेगान्कालकृतान्सहन् ॥ ३० ॥

tathāhaṃ puratastasya kāṣṭhamau navato'vasam | ṣaṇmāsānvigatodvegaṃ vegānkālakṛtānsahan || 30 ||

Thus, I remained silent like a log in front of him | Enduring the anxieties and the passage of time for six months

इस प्रकार, मैं उसके सामने लकड़ी की तरह मौन बैठा रहा | छह महीने तक चिंताओं और समय के बीतने को सहता हुआ

7.180.31

अर्कबिम्बाद्विनिष्क्म्य तत्प्रदेशान्तरे स्थितम्। एकदा दृष्टवानस्मि पुरुषं भानुभास्वरम्॥ ३१॥

arkabimbādvinisḥkamya tatpradeśāntare sthitam | ekadā dṛṣṭavānasmipuruṣaṃ bhānubhāsvaram || 31 ||

Once, coming out from the sun's orb, I saw a man standing in another region | Radiant like the sun

एक बार, सूर्य के मंडल से बाहर आकर, मैंने एक दूसरे क्षेत्र में खड़े एक व्यक्ति को देखा | सूर्य की तरह चमकते हुए

7.180.32

स तेन पूज्यते यावन्मनसा कर्मणा मया। उवाच तावद्वचनममृतस्यन्दसुन्दरम्॥ ३२॥

sa tena pūjyate yāvanmanasā karmaṇā mayā| uvāca tāvadvacanamamṛtasyandasundaram || 32 ||

He is worshipped by me with mind and deeds to that extent| He spoke these sweet words like nectar

मैंने मन और कर्म से उसकी उतनी ही पूजा की| उसने अमृत के समान मधुर वचन कहे

7.180.33

शाखाप्रलम्बनपर हे ब्रह्मन्दीर्घतापस। तपः संहर संहारि गृहाणाभिमतं वरम्॥ ३३॥

śākhāpralambanapara he brahmandīrghatāpasa| tapaḥ saṃhara saṃhāri gṛhāṇābhimataṃ varam || 33 ||

O one engaged in the penance of hanging from a branch, O ascetic of long austerities| Abandon your penance, O destroyer, accept the desired boon

हे शाखा से लटकने वाले तपस्वी, हे लंबे तप करने वाले ब्रह्मन्| अपना तप छोड़ो, हे संहारक, अपनी इच्छा का वर ग्रहण करो

7.180.34

सप्ताब्धिद्वीपवलया पालयिष्यसि मेदिनीम्। सप्तवर्षसहस्राणि देहेनानेन धर्मतः॥ ३४॥

saptābddhadvīpavalayā pālayiṣyasi medinīm| saptavarṣasahasrāṇi dehenānena dharmataḥ || 34 ||

You will protect the Earth with its seven oceans and seven islands| For seven thousand years with this body, righteously

तुम सात समुद्रों और सात द्वीपों वाली पृथ्वी की रक्षा करोगे| इस शरीर से सात हजार वर्षों तक, धर्मानुसार

7.180.35

एवं समीहितं दत्त्वा स द्वितीयो दिवाकरः। गन्तुमस्तमथार्काब्धिमविशत्प्रोदितो यतः॥ ३५॥

evaṃ samīhitaṃ dattvā sa dvitīyo divākaraḥ| gantumastamathārkābdhimaviśatprodito yataḥ || 35 ||

Having thus granted the desired boon, that second sun| Entered the western ocean, urged to set

इस प्रकार अभीष्ट वर देकर, वह दूसरा सूर्य| अस्त होने के लिए प्रेरित होकर पश्चिमी समुद्र में प्रवेश किया

7.180.36

तस्मिन्याते मया प्रोक्तं तस्य शाखातपस्विनः। श्रुतदृष्टानुभूताग्र्यवरदस्य विवेकिनः॥ ३६॥

tasminyāte mayā proktaṃ tasya śākhātapasvinaḥ| śrutadṛṣṭānubhūtāgryavaradasya vivekinaḥ || 36 ||

When he had gone, I spoke to that sage engaged in branch penance| Who was wise, having heard, seen, and experienced the best boons

जब वह चला गया, मैंने उस शाखा तपस्वी को कहा| जो सुना, देखा, और अनुभव किया था, बुद्धिमान था

7.180.37

संप्राप्ताभिमतं ब्रह्मंस्तरुशाखावलम्बनम्। तपस्त्यक्त्वा यथाप्राप्तं व्यवहारं समाचर ॥ ३७ ॥

saṃprāptābhimataṃ brahmaṃstaruśākhāvalambanam| tapastyaktvā yathāprāptaṃ vyavahāraṃ samācara|| 37||

O Brahmin, having achieved your desired goal of hanging from a tree branch, abandon your penance and conduct your affairs as they come.

हे ब्राह्मण, वृक्ष की शाखा से लटकने की अपनी इच्छा पूरी होने पर, तपस्या को छोड़कर जैसे भी हो, अपने काम करो।

7.180.38

एवमङ्गीकृतवतः पादौ तस्य मया ततः। मुक्तौ विटपिनस्तस्मादालानात्कालभाविव ॥ ३८ ॥

evamaṅgīkṛtavataḥ pādau tasya mayā tataḥ| muktau viṭapinastasmādālānātkālabhāviva|| 38||

Thus, having agreed, I released his feet from the tree branch, as if it were a matter of time.

इस प्रकार, सहमत होने पर, मैंने उसके पैर वृक्ष की शाखा से छुड़ा दिए, जैसे यह समय की बात हो।

7.180.39

स्नातः पवित्रहस्तोऽसौ चक्रे जप्त्वाघमर्षणम्। फलेन पुण्यलब्धेन विटपाद्व्रतपारणम् ॥ ३९ ॥

snātaḥ pavitrahasto'sau cakre japtvāghamarṣaṇam| phalena puṇyalabdhena viṭapādvratapāraṇam|| 39||

Having bathed and with pure hands, he performed the Aghamarshana chant and completed his vow with the fruit obtained from his meritorious deed.

स्नान करके और पवित्र हाथों से, उसने अघमर्षण जप किया और अपने पुण्य के फल से अपना व्रत पूरा किया।

7.180.40

तत्पुण्यवशतः प्राप्तैः स्वादुभिस्तैस्तरोः फलैः। समाश्वस्तावसंक्षुब्धावावां तत्र दिनत्रयम् ॥ ४० ॥

tatpuṇyavaśataḥ prāptaiḥ svādubhistais taroḥ phalaiḥ| samāśvastāvasaṃkṣubdhāvāvāṃ tatra dinatrayam|| 40||

Due to the merit of those sweet fruits of the tree, we both rested there peacefully for three days without any disturbance.

उस वृक्ष के मीठे फलों के पुण्य के कारण, हम दोनों वहाँ तीन दिन तक बिना किसी विघ्न के शांति से रहे।

7.180.41

सप्तद्वीपसमुद्रमुद्रितदिश भोक्तुं समग्रां महीं विप्रः पादपलम्बितेन वपुषा तप्त्वोर्ध्वपादस्तपः। संप्राप्याभिमतं वरं दिनकृतो विश्वस्य चाह्नां त्रयं सार्धं मत्सुहृदा स्वमेवसदनं गन्तुं प्रवृत्तोऽभवत् ॥ ४१ ॥

saptadvīpasamudramudritadiśa bhoktuṃ samagrāṃ mahīṃ viprah pādapalambitena vapuṣā tapto'rdhvapādastapaḥ| saṃprāpyābhimataṃ varaṃ dinakṛto viśvasya cāhnāṃ trayaṃ sārdhaṃ matsuhṛdā svamevasadanaṃ gantuṃ pravṛtto'bhavat|| 41||

The Brahmin, having performed penance with his body hanging from a tree, desired to enjoy the entire earth with its seven continents and oceans. Having achieved his desired boon, he spent three days with his friend and then set out to return to his own abode.

ब्राह्मण ने वृक्ष से लटके हुए शरीर से तपस्या की और सात द्वीपों और समुद्रों से युक्त पूरी पृथ्वी का भोग करने की इच्छा की। अपनी इच्छित वरदान प्राप्त करने के बाद, उसने अपने मित्र के साथ तीन दिन बिताए और फिर अपने घर लौटने के लिए निकल पड़ा।

Chapter 181

7.181.1

कुन्ददन्त उवाच । आवासमन्तरे गन्तुं प्रवृत्तौ मुदिताकृती । मथुरानगरीं चन्द्रसूर्याविन्द्रपुरीमिव ॥ १ ॥

kundadanta uvāca | āvāsamantare gantuṃ pravṛttau muditākṛtī | mathurānagarīṃ candrasūryāvindrapurīmiva || 1 ||

Kundadanta said: With a joyful demeanor, they set out to go to another dwelling, as if to the city of Mathura, which is like the city of the moon, sun, and Indra.

कुन्ददन्त ने कहा: प्रसन्न मुद्रा में, वे दूसरे निवास की ओर चल पड़े, जैसे चन्द्र, सूर्य और इन्द्र की नगरी मथुरा की ओर।

7.181.2

प्राप्य रोधाभिधं ग्रामं विश्रम्याम्रवणाचले । उषितौ द्वे दिने तस्मिन्सालीसे नगरे सुखम् ॥ २ ॥

prāpya rodhābhidhaṃ grāmaṃ viśramyāmravaṇācale | uṣitau dve dine tasmin sālīse nagare sukham || 2 ||

Reaching a village named Rodha, they rested on the Amravana mountain. They stayed there for two days in the city of Sali, enjoying comfort.

रोधा नामक गाँव पहुँचकर, वे अम्रवण पर्वत पर विश्राम किया। वे साली नगर में दो दिन तक सुख से रहे।

7.181.3

स्निग्धद्रुमवनच्छायरणन्मृगविहंगमाः । स्थूलशाद्वलशाखाग्रप्रोतावश्यायमौक्तिकाः ॥ ३ ॥

snigdhadrumavanaśchāyarṇanmṛgavihangamāḥ | sthūlaśādvalaśākhāgraprotāvaśyāyamauktikāḥ || 3 ||

They enjoyed the shade of the lush forests, the playful deer and birds, the thick grass, and the beautiful ornaments hanging from the tips of the branches.

उन्होंने घने वनों की छाया, खेलते हुए हिरण और पक्षी, घनी घास और पेड़ों की डालों के सिरे पर लटकते सुन्दर आभूषणों का आनंद लिया।

7.181.4

नदीतीरलतोन्मुक्तपुष्पप्रकरपाण्डुराः । तरत्तरङ्गझांकारगायनानन्दिताध्वगाः ॥ ४ ॥

nadītīralatonmuktapuṣpaprakarapāṇḍurāḥ | tarattaraṅgajhāṅkāragāyanānanditādhvagāḥ || 4 ||

They enjoyed the white clusters of flowers released by the riverbank vines, and the joyful singing of the waves, which delighted the travelers.

उन्होंने नदी के किनारे की लताओं से छूटे सफेद फूलों के झुंड और लहरों के गाने का आनंद लिया, जो यात्रियों को आनंदित करता था।

7.181.5

भृङ्गाङ्गनाजनमनोहरहारिगीतलीलाविलोलकलकण्ठविहंगमङ्गपुष्पाम्बुवाहशतचन्द्रनभोवितानं
राजीवरेणुकणकीर्णदिगन्तरालम् ॥ ५ ॥

bhṛṅgāṅganājanamanoharahārigītalīlāvilolakalakaṇṭhavihaṃgamaṅgapuṣpāmbuvāhaśatacandranabhovitānaṃ rājīvareṇukaṇakīrṇadigantarālam || 5 ||

The charming sound of bees, the delightful songs of birds, the swaying flowers and water carriers, the sky adorned with countless moons, and the directions filled with pollen dust.

भौंरों की मनोहर ध्वनि, पक्षियों के मधुर गीत, लहराते फूल और पानी के वाहक, अनगिनत चाँद से सजा आकाश, और पराग धूल से भरी दिशाएँ।

7.181.6

जङ्गलाद्रिपुरग्रामश्वभ्रानूपस्थलावनीः । समुल्लङ्घ्य दिने तस्मिन्सरित्स्रोतः सरांसि च ॥ ६ ॥

jaṅgalādripuragrāmaśvabhrānūpasthalaāvanīḥ | samullaṅghya dine tasmin saritsrotaḥ sarāṃsi ca || 6 ||

Crossing the forests, mountains, cities, villages, caves, marshy lands, and plains, they spent the day by the rivers and lakes.

जंगल, पहाड़, नगर, गाँव, गुफाएँ, दलदली भूमि और मैदानों को पार करते हुए, उन्होंने नदियों और झीलों के पास दिन बिताया।

7.181.7

नीतवन्तौ निशामावां कदलीकानने घने । तुषारशिशिरे श्रान्तौ कदलीदलतल्पके ॥ ७ ॥

nītavantau niśāmāvāṃ kadalīkānane ghane | tuṣāraśiśire śrāntau kadalīdalatalpake || 7 ||

Wise and skilled, we spent the night in the dense banana grove, exhausted by the cold dew, resting on the banana leaf bed.

बुद्धिमान और कुशल, हमने घने केले के बगीचे में रात बिताई, ठंडे ओस से थके हुए, केले के पत्तों पर आराम किया।

7.181.8

प्राप्तावावां तृतीयेऽह्नि षण्डषण्डकमण्डितम् । जङ्गलं जनविच्छेदविभक्तं खमिवाकृतम् ॥ ८ ॥

prāptāvāvāṃ tṛtīye'hni ṣaṇḍaṣaṇḍakamaṇḍitam | jaṅgalaṃ janavicchedavibhaktaṃ khamivākṛtam || 8 ||

We reached on the third day a forest adorned with many peaks, divided by the absence of people, as if it were the sky itself.

हम तीसरे दिन एक ऐसे जंगल में पहुंचे जो कई चोटियों से सुशोभित था, जनसंख्या के अभाव से विभाजित, मानो आकाश ही हो।

7.181.9

तत्र स प्रकृतं मार्ग परित्यज्य वनान्तरम् । प्रविशन्समुवाचेदमकार्यकरणं वचः ॥ ९ ॥

tatra sa prakṛtaṃ mārga parityajya vanāntaram | praviśansamuvācedamakāryakaraṇaṃ vacaḥ || 9 ||

There, leaving the usual path, he entered another part of the forest and spoke these inappropriate words.

वहां, अपना सामान्य मार्ग छोड़कर, उसने जंगल के दूसरे हिस्से में प्रवेश किया और ये अनुचित शब्द कहे।

7.181.10

गच्छावोऽत्राश्रभे गौर्या मुनिमण्डलमण्डिते । भ्रातरो मे स्थिताः सप्त वनेष्वेवमिवार्थिनः ॥ १० ॥

gacchāvo'trāśrabe gaurī munimaṇḍalamaṇḍite | bhrātaro me sthitāḥ sapta vaneṣvevamivārthinaḥ || 10 ||

Let us go to the shelter of Gauri, adorned with the assembly of sages. My seven brothers are staying in the forests, seeking in this manner.

चलो, संतों की सभा से सुशोभित गौरी की शरण में चलते हैं। मेरे सात भाई इस तरह ढूंढते हुए जंगलों में रहते हैं।

7.181.11

भ्रातरोऽष्टौ वयमिमे जातानेकतया तया । एकसंविन्मया जाता एकसंकल्पनिश्चयाः ॥ ११ ॥

bhrātaro'ṣṭau vayamime jātānekatayā tayā | ekasaṃvinmayā jātā ekasaṃkalpaniścayāḥ || 11 ||

We eight brothers were born from the same mother, with one mind and one resolve.

हम आठ भाई एक ही मां से उत्पन्न हुए हैं, एक ही मन और एक ही संकल्प के साथ।

7.181.12

तेन तेऽप्यत्र तपसे स्वनिश्चयसमाश्रयाः । स्थिता आगत्य विविधैस्तपोभिः क्षपितैनसः ॥ १२ ॥

tena te'pyatra tapase svaniścayasamāśrayāḥ | sthitā āgatya vividhais tapobhiḥ kṣapitainasaḥ || 12 ||

Therefore, you too, resorting to your own firm resolve, should engage in austerities here. Having come and staying, they have destroyed their sins through various austerities.

इसलिए, आप भी अपने दृढ़ संकल्प पर भरोसा करके यहाँ तपस्या करें। आकर और रहकर, उन्होंने विभिन्न तपस्याओं द्वारा अपने पापों को नष्ट कर दिया है।

7.181.13

तैः सार्धं भ्रातृभिः पूर्वमागत्याहमिहावसम् । षण्मासानाश्रमे गौर्यास्तेन दृष्टो मयैष सः ॥ १३ ॥

taiḥ sārdhaṃ bhrātṛbhiḥ pūrvamāgatyaahamihaāvasam | ṣaṇmāsānāśrame gauryāsten dṛṣṭo mayaiṣa saḥ || 13 ||

Along with them, my brothers, I came here earlier and stayed for six months in the hermitage of Gauri. There, I saw him.

उनके साथ, मेरे भाइयों के साथ, मैं पहले यहाँ आया और गौरी के आश्रम में छह महीने रहा। वहाँ मैंने उसे देखा।

7.181.14

पुष्पखण्डतरुच्छायासुप्तमुग्धमृगार्भकः । पर्णोटजाग्रविश्रान्तशुकोद्ग्राहितशास्त्रदृक् ॥ १४ ॥

puṣpakhaṇḍatarucchāyāsuptamugdhamṛgārbhakaḥ | parṇoṭajāgraviśrāntaśukodgrāhitaśāstradṛk || 14 ||

Sleeping in the shade of a tree laden with flower clusters, a charming young deer, resting on a bed of leaves, with eyes wide open like a parrot, grasping the scriptures.

फूलों के ढेर से लदे वृक्ष की छाया में सोया हुआ, मोहक युवा हिरण, पत्तों के बिस्तर पर विश्राम करते हुए, तोते की तरह खुली आँखों वाला, शास्त्रों को ग्रहण करता हुआ।

7.181.15

तद्ब्रह्मलोकसंकाशमेहि मुन्याश्रमं श्रिये । गच्छावोऽच्छतरं तत्र चेतः पुण्यैर्भविष्यति ॥ १५ ॥

tadbrahmalokasaṃkāśamehi munyāśramaṃ śriye | gacchāvo'cchataraṃ tatra cetaḥ puṇyairbhaviṣyati || 15 ||

Go to that hermitage of the sage, which resembles Brahmaloka, for prosperity. There, our minds will become purer with virtuous deeds.

उस ऋषि के आश्रम की ओर जाओ, जो ब्रह्मलोक के समान है, समृद्धि के लिए। वहाँ, हमारे मन पुण्य कर्मों से शुद्ध होंगे।

7.181.16

विदुषामपि धीराणामपि तत्त्वविदामपित्वरते हि मनः पुंसामलंबुद्धिविलोकने ॥ १६ ॥

viduṣāmapi dhīrāṇāmapi tattvavidāmapitvarate hi manaḥ puṃsāmalaṃbuddhivilokane || 16 ||

Even the wise and the knowers of truth are engaged in the contemplation of the mind, which is the essence of the intellect.

बुद्धिमान और सत्य के ज्ञाता भी मन की सोच में लगे हुए हैं, जो बुद्धि का सार है।

7.181.17

तेनेत्युक्ते च तावावां प्राप्तो मुन्याश्रमं च तम् । यावत्तत्र महारण्ये पश्यावश्चान्तरूपिणम् ॥ १७ ॥

tenetyukte ca tāvāvāṃ prāpto munyāśramaṃ ca tam | yāvattatra mahāraṇye paśyāvaścāntarūpiṇam || 17 ||

Having said this, we both reached the hermitage of the sage. As long as we were in that great forest, we saw a being with a different form.

इस प्रकार कहकर, हम दोनों उस ऋषि के आश्रम तक पहुंचे। जब तक हम उस महान वन में थे, हमने एक अलग रूप वाले प्राणी को देखा।

7.181.18

न वृक्षं नोटजं किंचिन्न गुल्मं न च मानवम्। न मुनिं नार्भकं नान्यन्न वेदिं न च वा द्विजम्॥ १८॥

na vṛkṣaṃ noṭajaṃ kiṃcinna gulmaṃ na ca mānavam | na muniṃ nārbhakaṃ nānyanna vediṃ na ca vā dvijam || 18 ||

There was no tree, no shrub, no human, no sage, no child, nothing else, no altar, nor any Brahmin.

वहां न तो कोई पेड़ था, न झाड़ी, न मनुष्य, न ऋषि, न बच्चा, न कुछ और, न वेदी, न ही कोई ब्राह्मण।

7.181.19

केवलं शून्यमेवाति तदरण्यमनन्तकम्। तापोपतप्तमभितो भूमौ स्थितमिवाम्बरम्॥ १९॥

kevalaṃ śūnyamevāti tadaraṇyamanantakam | tāpopataptamabhito bhūmau sthitamivāmbaram || 19 ||

That endless forest was utterly empty, scorched by heat all around, as if the sky were standing on the earth.

वह अनन्त वन completly खाली था, चारों ओर तप से झुलसा हुआ, मानो आकाश धरती पर खड़ा हो।

7.181.20

हा कष्टं किमिदं जातमिति तस्मिन्वदत्यथ। आवाभ्यां सुचिरं भ्रान्त्वा दृष्ट एकत्र वृक्षकः॥ २०॥

hā kaṣṭaṃ kimidaṃ jātamiti tasminvadatyatha | āvābhyāṃ suciraṃ bhrāntvā dṛṣṭa ekatra vṛkṣakaḥ || 20 ||

Alas, what misfortune has befallen us? Saying this, after wandering for a long time, we both saw a tree standing alone.

हाय, हम पर क्या दुर्भाग्य आ पड़ा? ऐसा कहकर, लंबे समय तक भटकने के बाद, हम दोनों ने एक अकेला पेड़ देखा।

7.181.21

स्निग्धच्छविर्घनच्छायः शीतलोऽम्बुधरोपमः। तले तस्य समाधाने संस्थितो वृद्धतापसः॥ २१॥

snigdhacchavirghanacchāyaḥ śītalo'mbudharopamaḥ | tale tasya samādhāne saṃsthito vṛddhatāpasaḥ || 21 ||

The tree was glossy and had dense shade, cool like a cloud. At its base, in deep meditation, sat an old ascetic.

वह पेड़ चिकना और घनी छाया वाला था, बादल की तरह ठंडा। उसके नीचे, गहरी ध्यान में, एक वृद्ध तापस बैठा था।

7.181.22

आवामग्रे मुनेस्तस्य च्छायायां शाद्वलस्थले। उपविष्टौ चिरं यावन्नासौ ध्यानान्निवर्तसे॥ २२॥

āvāmagre munes tasya cchāyāyāṃ śādvalasthale | upaviṣṭau ciraṃ yāvannāsau dhyānān nivartase || 22 ||

We sat in front of the sage in the shade of a grassy spot for a long time until he emerged from his meditation.

हम लोग मुनि के सामने घास के स्थान पर छाया में लंबे समय तक बैठे रहे जब तक कि वे ध्यान से नहीं उठे।

7.181.23

ततश्चिरेण कालेन मयोद्वेगेन चापलात्। उक्तं मुने प्रबुध्यस्व ध्यानादित्युच्चकैर्वचः॥ २३॥

tataścireṇa kālena mayodvegena cāpalāt | uktaṃ mune prabudhyasva dhyānādityuccakairvacaḥ || 23 ||

After a long time, due to my restlessness and impatience, I spoke loudly to the sage, 'Wake up from your meditation.'

लंबे समय के बाद, मेरी बेचैनी और उतावली के कारण, मैंने मुनि से जोर से कहा, 'ध्यान से उठिए।'

7.181.24

शब्देनोच्चैर्मदीयेन संप्रबुद्धोऽभवन्मुनिः । सिंहोऽम्बुदरवेणेव जृम्भां कृत्वाभ्युवाच च ॥ २४ ॥

śabdenoccairmadīyena saṃprabuddho'bhavanmuniḥ | siṃho'mbudaraveṇeva jṛmbhāṃ kṛtvābhyuvāca ca || 24 ||

With my loud voice, the sage woke up as if a lion awakened by the sound of thunder, yawning and then spoke.

मेरी जोर से आवाज से मुनि जाग गए, जैसे बिजली की गर्जन से जागा हुआ शेर, जम्हाई लेकर फिर बोले।

7.181.25

कौ भवन्ताविमौ साधू क्वासौ गौर्याश्रमो गतः । केन वाहमिहानीतः कालोऽयं कश्च वर्तते ॥ २५ ॥

kau bhavantāvimau sādhū kvāsau gaur yāśramo gataḥ | kena vāhamihānītaḥ kālo'yaṃ kaśca vartate || 25 ||

Who are you two virtuous ones? Where has that Gauri's ashram gone? By whom have I been brought here? What time is it now?

तुम दोनों साधु कौन हो? वह गौरी का आश्रम कहाँ चला गया? मुझे किसने यहाँ लाया है? यह कौन सा समय है?

7.181.26

तेनेत्युक्ते मयाप्युक्तं भगवन्विद्धि ईदृशम् । न किंचिदावां बुद्धोऽपि कस्माज्जानासि न स्वयम् ॥ २६ ॥

tenetyukte mayāpyuktaṃ bhagavanviddhi īdṛśam | na kiṃcidāvāṃ buddho'pi kasmājjānāsi na svayam || 26 ||

When he said that, I replied, 'O Lord, know this: We do not know anything. How do you not know this yourself?'

जब उन्होंने यह कहा, तो मैंने कहा, 'हे भगवान, यह जान लीजिए: हम कुछ नहीं जानते। आप स्वयं कैसे नहीं जानते?'

7.181.27

इति श्रुत्वा स भगवान्पुनर्ध्यानमयोऽभवत् । ददर्शोदन्तमखिलमस्माकं स्वात्मनस्तथा ॥ २७ ॥

iti śrutvā sa bhagavānpunardhyānamayo'bhavat | dadarśodantamakhilamasmākaṃ svātmanastathā || 27 ||

Having heard this, the Lord became absorbed in meditation again | He saw everything, including our own selves, in that state || 27 ||

इसे सुनकर, भगवान फिर से ध्यान में लीन हो गए | उन्होंने अपने स्वयं को और हमारे स्वयं को भी देखा || 27 ||

7.181.28

मुहूर्तमात्रेणोवाच प्रबुध्य ध्यानतो मुनिः । श्रूयतामिदमाश्चर्यमार्यौ हि कार्यवेदिनौ ॥ २८ ॥

muhūrtamātreṇovāca prabudhya dhyānato muniḥ | śrūyatāmidamāścaryamāryau hi kāryavedinau || 28 ||

After a moment, the sage, awakening from meditation, spoke | Listen to this wonderful thing, O noble ones who know the task || 28 ||

एक क्षण के बाद, मुनि ध्यान से जागकर बोले | सुनो यह अद्भुत बात, हे कार्य जानने वाले आर्य || 28 ||

7.181.29

यमिमे पश्यथः साधू कदम्बतरुपुत्रकम् । मदास्पदमरण्यान्या धम्मिल्लमिव पुष्पितम् ॥ २९ ॥

yamime paśyathaḥ sādhū kadambataruputrakam | madāspadamaraṇyānyā dhammillamiva puṣpitam || 29 ||

See this virtuous one, the son of the Kadamba tree | Like a blossoming Dhammilla in the wilderness, a delightful abode || 29 ||

इस साधु को देखो, कदम्ब वृक्ष के पुत्र को | जैसे जंगल में खिला हुआ धम्मिल्ल, एक आनन्ददायक निवास || 29 ||

7.181.30

केनापि कारणेनास्मिन्सती वागीश्वरी सती । अवसद्दशवर्षाणि समस्तर्तुनिषेविता ॥ ३० ॥

kenāpi kāraṇenāsminsatī vāgīśvarī satī | avasaddaśavarṣāṇi samastartuniṣevitā || 30 ||

For some reason, the goddess of speech, Saraswati, resided here for ten years, worshipped in all seasons || 30 ||

किसी कारण से, वाणी की देवी, सरस्वती, यहाँ दस वर्षों तक निवास करती रही, सभी ऋतुओं में पूजी जाती रही || 30 ||

7.181.33

मन्दारकुन्दमकरन्दसुगन्धिताशं संसूच्छ्वसत्कुसुमराशिशशाङ्कनिष्ठम् ।
संतानकस्तवकहासविकासकान्तमामोदिमारुतसमस्तलताङ्गनौघम् ॥ ३३ ॥

mandārakundamakarandasugandhitāśaṃ saṃsūcchvasatkusumarāśiśaśāṅkaniṣṭham |
saṃtānakastavakahāsavikāsakāntamāmodimārutasamastalatāṅganaugham || 33 ||

Fragrant with the scent of Mandara and Kunda flowers, adorned with blossoms kissed by the moonlight, delightful with the laughter of blooming buds, and filled with the fragrant breeze that enchants all the creepers || 33 ||

मन्दार और कुन्द फूलों की सुगन्ध से सुवासित, चन्द्रमा की किरणों से चूमे गये फूलों से सज्जित, खिले हुए फूलों की हँसी से मोहक, और सुगन्धित हवा से भरी हुई जो सभी लताओं को मोहित करती है || 33 ||

7.181.34

पुष्पाकरस्य नगरं नवगीतभृङ्गं भृङ्गाङ्गनाकुसुमखण्डकमण्डपाढ्यम् ।
चन्द्रांशुजालपरिकोमलपुष्पदोलादोलायमानसुरसिद्धवधूसमूहम् ॥ ३४ ॥

puṣpākarasya nagaraṃ navagītabhṛṅgaṃ bhṛṅgāṅganākusumakhaṇḍakamaṇḍapāḍhyam |
candrāṃśujālaparikomalapuṣpadolādolāyamānasurasiddhavadhūsamūham || 34 ||

The city of Pushpakara is adorned with new melodies of bees, with pavilions filled with the flowers of bee-maidens, and swaying with the gentle breeze of moonlight, surrounded by a gathering of celestial and accomplished maidens.

पुष्पाकर का नगर नए गीतों के भृंगों से सजा है, भृंग-अंगनाओं के फूलों से भरे मंडपों से सुशोभित है, और चंद्रमा की किरणों की कोमल हवा से डोलता है, देवी-सिद्ध वधुओं के समूह से घिरा हुआ है।

7.181.35

हारीतहंसशुककोकिलकोककाकचक्राह्वभासकलविङ्ककुलाकुलाङ्गम् ।
भेरुण्डकुक्कुटकपिञ्जलहेमचूडराढामयूरबककल्पितकेलिरम्यम् ॥ ३५ ॥

hārītahaṃsśukakokilakokakākacakrāhvabhāsakalaviṅkakulākulāṅgam |
bheruṇḍakukkuṭakapiñjalahēmacūḍarāḍhāmayūrabakakalpitakēliramyaṃ || 35 ||

The city is filled with the sounds of various birds like peacocks, swans, parrots, cuckoos, crows, and other birds, creating a delightful atmosphere with their playful activities.

नगर हारीत हंस, शुक, कोकिल, कोक, काक, चक्राह्व, भास, कलविंक आदि पक्षियों से भरा है, जो अपनी खेल-कूद से एक मनमोहक वातावरण बनाते हैं।

7.181.36

गन्धर्वयक्षसुरसिद्धकिरीटघृष्टपादाजकर्णिककदम्वसरस्वतीकम्। वातायनं
कनककोमलचम्पकौघताराम्बराम्बुधरपूरगृहीतगन्धम्॥ ३६॥

gandharvayakṣasurasiddhakirīṭaghṛṣṭapādājakarṇikakadambasarasvatīkam | vātāyanaṃ
kanakakomalacampakaughatārāmbarāmbudharapūragṛhītagandham || 36 ||

The city is adorned with the fragrance of flowers like jasmine and champak, carried by the gentle breeze, and is filled with the presence of celestial beings like Gandharvas, Yakshas, and Siddhas, who have come to enjoy the beauty of the city.

नगर चंपा और जास्मिन जैसे फूलों की सुगंध से सुशोभित है, जो हल्की हवा के साथ फैलती है, और गंधर्व, यक्ष, और सिद्ध जैसे देवी-देवताओं से भरा हुआ है, जो नगर की सुंदरता का आनंद लेने आए हैं।

7.181.37

मन्दानिलस्खलितपल्लववालवल्लीविन्यासगुप्तदिवसाधिपरश्मिशीतम्। पीतं
कदम्बकरवीरकनालिकेरतालीतमालकुलपुष्पपरागपूरैः॥ ३७॥

mandānilaskhalitapallavavālavallīvinyāsaguptadivasādhiparaśmiśītam | pītaṃ
kadambakaravīrakanālikeratālītamālakulapuṣpaparāgapūraiḥ || 37 ||

The city is cooled by the gentle breeze that scatters the tender leaves and creepers, hiding the sun's rays. It is adorned with the fragrance of various flowers like kadamba, karavira, kana, ikerata, tali, and mala, creating a delightful atmosphere.

नगर मंद हवा से ठंडा है, जो नरम पत्तियों और लताओं को बिखेरती है, सूर्य की किरणों को छिपाती है। यह कदंब, करवीर, कना, इकेरता, ताली, और माला जैसे विभिन्न फूलों की सुगंध से सुशोभित है, जो एक मनमोहक वातावरण बनाते हैं।

7.181.38

कह्लारकीर्णकुमुदोत्पलपद्मखण्डवल्गच्चकोरबककोककदम्बहंसम्।
तालीसगुग्गुलकचन्दनपारिभद्रभद्रद्रुमोदरविहारिविचित्रशक्ति॥ ३८॥

kahlārakīrṇakumudotpalapadmakhaṇḍavalgaccakorabakakokakadambahaṃsam |
tālīsaguggulakacandanapāribhadrabhadradrumodaravihārivicitraśakti || 38 ||

The city is adorned with various flowers like kahlara, kumuda, utpala, padma, and khanda, and is filled with the sounds of birds like chakora, baka, koka, and hamsa. The city is also fragrant with the scent of tali, saguggula, chandana, paribhadra, and bhadra trees, creating a delightful and vibrant atmosphere.

नगर कह्लार, कुमुद, उत्पल, पद्म, और खंड जैसे विभिन्न फूलों से सुशोभित है, और चकोर, बक, कोक, और हंस जैसे पक्षियों की आवाजों से भरा हुआ है। नगर ताली, सगुग्गुल, चंदन, पारिभद्र, और भद्र पेड़ों की सुगंध से भी भरा हुआ है, जो एक मनमोहक और रंगीन वातावरण बनाते हैं।

7.181.39

तस्मिन्वने चिरमुवास हरार्धदेहा केनापि कारणवशेन चिराय गौरी । भूत्वा प्रसन्नशशिबिम्बमुखी कदम्बवागीश्वरी शशिकलेव शिवस्य मूर्ध्नि ॥ ३९ ॥

tasminvane ciramuvāsa harārdhadēhā kēnāpi kāraṇavaśēna cirāya gaurī | bhūtvā prasannaśaśibimbamukhī kadambavāgīśvarī śaśikalēva śivasya mūrdhni || 39 ||

In that forest, the half-body of Hara, Gauri, resided for a long time due to some reason. Having become Gauri, with a face like the pleasing moon, the goddess of speech like Kadamba, she remained on Shiva's head like the moon.

उस वन में, हर के आधे शरीर की गौरी किसी कारण से लंबे समय तक रहीं| गौरी बनकर, प्रसन्न चंद्रमा के समान मुखवाली, कदम्ब के समान वागीश्वरी, वह शिव के मस्तक पर चंद्रमा के समान रहीं || 39 ||

Chapter 182

7.182.1

तस्मिनेव कदम्बेऽस्मिन्वर्षाणि स्वेच्छया दशस्थित्वा गौरी जगामाथ हरवामार्धमन्दिरम् ॥ १ ॥

tasmineva kadambe'sminvarṣāṇi svecchayā daśasthitvā gaurī jagāmātha haravāmārdhamandiram || 1 ||

In that very Kadamba forest, Gauri lived for ten years as she pleased, and then she went to the half-temple of Hara and Vama.

उसी कदम्ब वन में, गौरी ने अपनी इच्छा से दस वर्ष बिताए, और फिर वह हर और वामा के आधे मन्दिर में गई।

7.182.2

तत्स्पर्शामृतसिक्तोऽयं कदम्बतरुपुत्रकः । उत्सङ्ग इव चासीनो न यात्येव पुराणताम् ॥ २ ॥

tatsparśāmṛtasikto'yaṃ kadambataruputrakaḥ | utsaṅga iva cāsīno na yātyeva purāṇatām || 2 ||

This young kadamba tree, sprinkled with the nectar of her touch, remains like a lap and does not age.

इस छोटे कदम्ब वृक्ष को, जो उसके स्पर्श के अमृत से सिंचित है, गोद की तरह रहता है और बूढ़ा नहीं होता।

7.182.3

ततो गौर्या प्रयातायां तद्वनं तादृशं महत् । सामान्यवनतां यातं जनवृन्दोपजीवितम् ॥ ३ ॥

tato gaurīyā prayātāyāṃ tadvanaṃ tādṛśaṃ mahat | sāmānyavanatāṃ yātaṃ janavṛndopajīvitam || 3 ||

After Gauri left, that great and extraordinary forest became ordinary, sustained by the people.

गौरी के जाने के बाद, वह महान और असामान्य वन सामान्य हो गया, जो लोगों द्वारा संरक्षित था।

7.182.4

मालवो नाम देशोऽस्ति तत्राहं पृथिवीपतिः । कदाचित्त्यक्तराज्यश्रीर्मुनीनामाश्रमान्भ्रमन् ॥ ४ ॥

mālavo nāma deśo'sti tatrāhaṃ pṛthivīpatiḥ | kadācittyaktarājyaśrīrmunīnāmāśramānbhraman || 4 ||

There is a country named Malava. There, I was the king, but once I renounced my royal glory and wandered in the hermitages of sages.

मालवा नाम का एक देश है। वहाँ, मैं राजा था, लेकिन एक बार मैंने अपनी राजकीय शोभा त्याग दी और ऋषियों के आश्रमों में भटकता रहा।

7.182.5

इमं देशमनुप्राप्त इह चाश्रमवासिमिः । पूजितोऽस्य कदम्बस्य ध्याननिष्ठस्तले स्थितः ॥ ५ ॥

imaṃ deśam anuprāpta iha cāśramavāsimiḥ | pūjito'sya kadambasya dhyānaniṣṭhastale sthitaḥ || 5 ||

Having reached this country, I, the dweller of the hermitage, worshipped this kadamba tree and remained at its base, absorbed in meditation.

इस देश में पहुँचकर, मैं, आश्रम का निवासी, इस कदम्ब वृक्ष की पूजा की और उसके तल पर ध्यानमग्न रहा।

7.182.6

केनचित्त्वथ कालेन भ्रातृभिः सप्तभिः सहभवानभ्यागतः पूर्वं तपोर्थमिममाश्रमम् ॥ ६ ॥

kenacittvatha kālena bhrātṛbhiḥ saptabhiḥ sahabhavānabhyāgataḥ pūrvaṃ taporthamimamāśramam || 6 ||

At some point in time, along with his seven brothers, he came to this hermitage for the purpose of penance.

किसी समय में, अपने सात भाइयों के साथ, वह तपस्या के लिए इस आश्रम में आया।

7.182.7

तपस्विनोऽष्टाविह ते तथा नाम तदाऽवसन्यथा तपस्विनोऽन्ये ते तेषां मान्यास्तपस्विनः ॥ ७ ॥

tapasvino'ṣṭāviha te tathā nāma tadā'vasanyathā tapasvino'nye te teṣāṃ mānyāstapasvinaḥ || 7 ||

There were eight ascetics here, known by such names, and others who were also ascetics, respected among them.

यहाँ आठ तपस्वी थे, जिनके ऐसे नाम थे, और अन्य भी तपस्वी थे, जो उनमें से सम्मानित थे।

7.182.8

कालेनानन्तरमसावेकः श्रीपर्वतं गतःस्वामिनं कार्तिकेयं च द्वितीयस्तपसे गतः ॥ ८ ॥

kālenānantaramasāvekaḥ śrīparvataṃ gataḥsvāminaṃ kārtikeyaṃ ca dvitīyastapase gataḥ || 8 ||

After some time, one of them went to Shriparvata, and the second one went to Kartikeya for penance.

कुछ समय बाद, उनमें से एक श्रीपर्वत गया, और दूसरा कार्तिकेय के लिए तपस्या के लिए गया।

7.182.9

वाराणसीं तृतीयस्तु चतुर्थोऽगाद्धिमाचलमिहैव ते परे धीराश्चत्वारोऽन्ये परं तपन् ॥ ९ ॥

vārāṇasīṃ tṛtīyastu caturtho'gāddhimācalamihaiva te pare dhīrāścatvāro'nye paraṃ tapan || 9 ||

The third went to Varanasi, the fourth to Himachal. Here, the other four wise ones were engaged in severe penance.

तीसरा वाराणसी गया, चौथा हिमाचल गया। यहाँ, अन्य चार बुद्धिमान लोग कठोर तपस्या में लगे हुए थे।

7.182.10

सर्वेषामेव चैतेषां प्रत्येकं त्वेतदीप्सितम्यथा समस्तद्वीपाया भुवोऽस्याः स्यां महीपतिः ॥ १० ॥

sarveṣāmeva caiteṣāṃ pratyekaṃ tvetadīpsitamyathā samastadvīpāyā bhuvo'syāḥ syāṃ mahīpatiḥ || 10 ||

Each one of them desired to be the lord of the entire earth.

उनमें से प्रत्येक ने पूरी पृथ्वी का स्वामी बनने की इच्छा की।

7.182.11

अथ संपादितं तेषां सर्वेषामेतदीप्सितम्। तपस्तुष्टाभिरिष्टाभिर्देवताभिर्वरवरैः ॥ ११ ॥

atha saṃpāditaṃ teṣāṃ sarveṣāmetadīpsitam | tapastuṣṭābhiriṣṭābhirdevatābhirvararvaraiḥ || 11 ||

Then, their desired goal was achieved through penance, pleasing the gods, and receiving excellent boons.

तब उनके द्वारा तपस्या करके, देवताओं को प्रसन्न करके और उत्तम वरदान प्राप्त करके उनकी इच्छा पूर्ण हुई।

7.182.12

तपतस्ते ततो याता भ्रातरः सदनं निजम्। भूमौ धर्मयुगं भुक्त्वा वेधा ब्रह्मपुरीमिव ॥ १२ ॥

tapataste tato yātā bhrātaraḥ sadanaṃ nijam | bhūmau dharmayugaṃ bhuktvā vedhā brahmapurīmiva || 12 ||

After performing penance, they returned to their own abode, having enjoyed the righteous age on earth, like Brahma returning to his city.

तपस्या करने के बाद, वे अपने निवास पर लौटे, पृथ्वी पर धर्मयुग का आनंद लेने के बाद, जैसे ब्रह्मा अपने नगर में लौटते हैं।

7.182.13

तैर्भवद्भ्रातृभिर्भव्य वरदानविधौ तदा । इदं वरोद्यता यत्नात्प्रार्थिताः स्वेष्टदेवताः ॥ १३ ॥

tairbhavadbhrātṛbhirbhavya varadānavidhau tadā | idaṃ varodyatā yatnātprārthitāḥ sveṣṭadevatāḥ || 13 ||

At that time, they, the noble brothers, were eagerly requested by their desired deities for the bestowal of boons.

उस समय, उन श्रेष्ठ भाइयों ने वरदान के लिए अपनी इच्छित देवताओं से उत्सुकता से प्रार्थना की।

7.182.14

देव्यस्माकमिमे सर्वे सप्तद्वीपेश्वरस्थितौ । सत्याः प्रकृतयः सन्तु सर्व आश्रमवासिनः ॥ १४ ॥

devyasmākamime sarve saptadvīpeśvarasthitau | satyāḥ prakṛtayaḥ santu sarva āśramavāsinaḥ || 14 ||

O Goddess, may all these, situated in the seven continents, be truthful and natural, and may all the inhabitants of the ashrams be so.

हे देवी, ये सभी सात द्वीपों में स्थित हों, सत्य और प्राकृतिक हों, और सभी आश्रमवासी भी ऐसे ही हों।

7.182.15

तमिष्टदेवतासार्थमुररीकृत्य सादरम् । तेषामस्त्वेवमित्युक्त्वा जगामान्तर्द्धिमीश्वरी ॥ १५ ॥

tamiṣṭadevatāsārthamurarīkṛtya sādaram | teṣāmastvevamityuktvā jagāmāntarddhimīśvarī || 15 ||

Having respectfully invoked their desired deities, the Goddess said, 'May it be so,' and then disappeared.

अपनी इच्छित देवताओं को सम्मानपूर्वक आह्वान करके, देवी ने कहा, 'ऐसा ही हो,' और फिर अंतर्ध्यान हो गई।

7.182.16

ते ततः सदनं यातास्तेषामाश्रमवासिनः । सर्व एव गताः पश्चादेक एवास्मि नो गतः ॥ १६ ॥

te tataḥ sadanaṃ yātāsteṣāmāśramavāsinaḥ | sarva eva gatāḥ paścādeka evāsmi no gataḥ || 16 ||

Then they went to their homes, all the dwellers of the hermitage | I alone have not gone, remaining behind

तब वे अपने घरों को चले गए, सभी आश्रम के निवासी | मैं अकेला नहीं गया, पीछे रह गया

7.182.17

अहं केवलमेकान्ते ध्यानैकगतमानसः । वागीश्वरीकदम्बस्य तले तिष्ठामि शैलवत् ॥ १७ ॥

ahaṃ kevalamekānte dhyānaikagatamānasaḥ | vāgīśvarīkadambasya tale tiṣṭhāmi śailavat || 17 ||

I am alone in solitude, my mind focused solely on meditation | I stand under the Vāgīśvarī Kadamba tree like a mountain

मैं एकांत में अकेला हूँ, मेरा मन केवल ध्यान पर केंद्रित है | मैं वागीश्वरी कदम्ब के तले पर्वत की तरह खड़ा हूँ

7.182.18

अथ काले वहत्यस्मिन्नृतुसंवत्सरात्मनि । इदं सर्वं वनं छिन्नं जनैः पर्यन्तवासिभिः ॥ १८ ॥

atha kāle vahatyasminnṛtusaṃvatsarātmani | idaṃ sarvaṃ vanaṃ channaṃ janaiḥ paryantavāsibhiḥ || 18 ||

Then, in the course of time, this entire forest was cut down by the people living around it

तब, समय के साथ, यह सारा वन आसपास के लोगों द्वारा कटा गया

7.182.19

इदं कदम्बमम्लानं जनताः पूजयन्त्यलम् । वागीश्वरीगृहमिति मां चैवैकसमाधिगम् ॥ १९ ॥

idaṃ kadambamamlānaṃ janatāḥ pūjayantyalam | vāgīśvarīgṛhamiti māṃ caivaikasamādhigam || 19 ||

This Kadamba tree is worshipped by people, calling it the abode of Vāgīśvarī | I am the one who has attained the highest state of meditation

यह कदम्ब वृक्ष लोगों द्वारा पूजा किया जाता है, इसे वागीश्वरी का आश्रय कहते हैं | मैं एकमात्र समाधि की स्थिति को प्राप्त हूँ

7.182.20

अथैनं देशमायातौ भवन्तौ दीर्घतापसौ । एतत्तत्कथितं सर्वं ध्यानदृष्टं मयाखिलम् ॥ २० ॥

athainaṃ deśamāyātau bhavantau dīrghatāpasau | etattatkathitaṃ sarvaṃ dhyānadṛṣṭaṃ mayākhilam || 20 ||

Then you both came to this place, O great ascetics | I have told you all this as seen in meditation

तब आप दोनों इस स्थान पर आए, हे महातपस्वी | मैंने आपको सब कुछ ध्यान में देखा हुआ बताया है

7.182.21

तस्मादुत्थाय हे साधू गच्छतं गृहमागतौ । तत्र ते भ्रातरः सर्वे संगता दारबन्धुभिः ॥ २१ ॥

tasmādutthāya he sādhū gacchatam gṛhamāgatau | tatra te bhrātaraḥ sarve saṃgatā dārabandhubhiḥ || 21 ||

Therefore, arise, O virtuous ones, and go to your homes| There, all your brothers have gathered with their families

इसलिए, उठो, हे साधुओं, और अपने घरों को जाओ| वहाँ, तुम्हारे सभी भाई अपने परिवारों के साथ एकत्र हैं

7.182.22

अष्टानां भवतां भव्यं सदने स्वे भविष्यति । महात्मनां ब्रह्मलोके वसूनामिव संगमः ॥ २२ ॥

aṣṭānāṃ bhavatāṃ bhavyaṃ sadane sve bhaviṣyati | mahātmanāṃ brahmaloke vasūnāmiva saṃgamaḥ || 22 ||

The residence of the eight of you will be splendid in your own abode| It will be like the meeting of the Vasus in the Brahmaloka

आप आठों का निवास अपने घर में शानदार होगा| यह वसुओं के ब्रह्मलोक में मिलने जैसा होगा

7.182.23

इत्युक्ते तेन स मया पृष्टः परमतापसः । संदेहादिदमाश्चर्यमार्यास्तद्वर्णयाम्यहम् ॥ २३ ॥

ityukte tena sa mayā pṛṣṭaḥ paramatāpasaḥ | saṃdehādidamāścaryamāryāstadvṛṇayāmyaham || 23 ||

Having been told this by him, I asked that great ascetic out of doubt| O noble ones, I will now describe this wonder to you

उसने यह कहने के बाद, मैंने संदेह से उस महान तपस्वी से पूछा| हे आर्यो, मैं अब आपको इस आश्चर्य का वर्णन करूँगा

7.182.24

एकैव सप्तद्वीपास्ति भगवन्भूरियं किल । तुल्यकालं भवन्त्यष्टौ सप्तद्वीपेश्वराः कथम् ॥ २४ ॥

ekaiva saptadvīpāsti bhagavanbhūriyaṃ kila | tulyakālaṃ bhavantyaṣṭau saptadvīpeśvarāḥ katham || 24 ||

O Lord, there is only one earth with seven continents| How can there be eight rulers of the seven continents at the same time?

हे भगवान, सात महाद्वीपों वाली यह पृथ्वी एक ही है| सात महाद्वीपों के आठ शासक एक साथ कैसे हो सकते हैं?

7.182.25

कदम्बतापस उवाच । असमञ्जसमेतावदेव नो यावदुच्यते । इदमन्यदसंबद्धतरं संश्रूयतां मम ॥ २५ ॥

kadambatāpasa uvāca | asamañjasametāvadeva no yāvaducyate | idamanyadasaṃbaddhataraṃ saṃśrūyatāṃ mama || 25 ||

Kadamba the ascetic said| This much is indeed inappropriate as it is being said| Listen to this other even more unrelated matter of mine

कदम्ब तपस्वी ने कहा| जितना कहा जा रहा है उतना ही यह अनुचित है| मेरे इस और अधिक असंबंधित मामले को सुनो

7.182.26

एतेऽष्टौ भ्रातरस्तत्र तापसा देहसंक्षये । सप्तद्वीपेश्वराः सर्वे भविष्यन्ति गृहोदरे ॥ २६ ॥

ete'ṣṭau bhrātarastatra tāpasā dehasaṃkṣaye | saptadvīpeśvarāḥ sarve bhaviṣyanti gṛhodare || 26 ||

These eight brothers, who are ascetics, will become the rulers of the seven islands when their bodies perish.

ये आठ भाई, जो तपस्वी हैं, सात द्वीपों के राजा बनेंगे जब उनके शरीर का अंत होगा।

7.182.27

अष्टौ ह्येते महीपीठेष्वेतेष्वेतेषु सद्मसु । सप्तद्वीपेश्वरा भूपा भविष्यन्तीह मे शृणु ॥ २७ ॥

aṣṭau hyete mahīpīṭheṣvetesveṣvetesu sadmasu | saptadvīpeśvarā bhūpā bhaviṣyantīha me śṛṇu || 27 ||

Listen to me, these eight will become kings of the seven islands in these royal seats.

मेरे सुनो, ये आठ इन राजसिंहासनों पर सात द्वीपों के राजा बनेंगे।

7.182.28

अस्त्येतेषां किलाष्टानां भार्याष्टकमनिन्दितम् । दिगन्तराणां नियतं ताराष्टकमिवोज्ज्वलम् ॥ २८ ॥

astyeteṣāṃ kilāṣṭānāṃ bhāryāṣṭakamaninditam | digantarāṇāṃ niyataṃ tārāṣṭakamivojjvalam || 28 ||

These eight brothers have eight unblemished wives, who are as radiant as the eight stars in the eight directions.

इन आठ भाइयों की आठ निष्पाप पत्नियाँ हैं, जो आठ दिशाओं के आठ तारों की तरह उज्ज्वल हैं।

7.182.29

तद्भार्याष्टकमेतेषु यातेषु तपसे चिरम् । बभूव दुःखितं स्त्रीणां यद्वियोगोऽहिदुःसहः ॥ २९ ॥

tadbhāryāṣṭakameteṣu yāteṣu tapase ciram | babhūva duḥkhitaṃ strīṇāṃ yadviyogo'ahiduḥsahaḥ || 29 ||

When these eight wives went away for a long penance, the women became very sad due to the unbearable separation.

जब ये आठ पत्नियाँ लंबे समय तक तपस्या के लिए चली गईं, तो स्त्रियों को असहनीय वियोग के कारण बहुत दुःख हुआ।

7.182.30

दुःखिताः प्रत्यये तेषां चक्रुस्ता दारुणं तपः । शतचान्द्रायणं तासां तुष्टाभूत्तेन पार्वती ॥ ३० ॥

duḥkhitāḥ pratyaye teṣāṃ cakrustā dāruṇaṃ tapaḥ | śatacāndrāyaṇaṃ tāsāṃ tuṣṭābhūttena pārvatī || 30 ||

Saddened by their separation, those women performed severe penance. Pleased with their hundred Chandrayana fasts, Parvati became satisfied.

वियोग से दुःखी होकर, वे स्त्रियाँ कठोर तपस्या की। उनके सौ चांद्रायण व्रतों से प्रसन्न होकर, पार्वती ने संतुष्टि प्राप्त की।

7.182.31

अदृश्योवाच सा तासां वचोऽन्तःपुरमन्दिरे । देवी सपर्यावसरे प्रत्येकं पृथगीश्वरी ॥ ३१ ॥

adṛśyovāca sā tāsāṃ vaco'ntaḥpuramandire | devī saparyāvasare pratyekaṃ pṛthagīśvarī || 31 ||

The invisible one spoke these words in the inner palace to those goddesses, each one individually, during the time of worship.

अदृश्य ने अन्तःपुर के मंदिर में उन देवियों से पूजा के अवसर पर प्रत्येक को अलग-अलग कहा।

7.182.32

देव्युवाच । भर्त्रर्थमथ चात्मार्थे गृह्यतां बालिके वरः । चिरं क्लिष्टासि तपसा निदाघेनेव मञ्जरी ॥ ३२ ॥

devyuvāca | bhartṛarthamatha cātmārthe gṛhyatāṃ bālike varaḥ | ciraṃ kliṣṭāsi tapasā nidāghaeneva mañjarī || 32 ||

The goddess said, 'For the sake of your husband and for your own sake, accept this boon, O maiden. You have long been afflicted by austerities, like a flower bud in the scorching heat.'

देवी ने कहा, 'अपने पति के लिए और अपने लिए, हे कन्या, इस वरदान को स्वीकार करो। तुम तपस्या से दीर्घकाल तक पीड़ित रही हो, जैसे गर्मी में एक फूल का बटन।'

7.182.33

इत्याकर्ण्य वचो देव्या दत्तपुष्पा चिरंटिका । स्ववासनानुसारेण कुर्वाणैवेश्वरीस्तवम् ॥ ३३ ॥

ityākarṇya vaco devyā dattapuṣpā ciraṃṭikā | svavāsanānusāreṇa kurvāṇaiveśvarīstavam || 33 ||

Having heard the words of the goddess, Dattapushpa, also known as Chirantika, began to perform the praise of the goddess according to her own inclination.

देवी के शब्दों को सुनकर, दत्तपुष्पा, जिसे चिरंटिका भी कहा जाता है, अपनी इच्छा के अनुसार देवी की स्तुति करने लगी।

7.182.34

आनन्दमन्थरोवाच वचनं मृदुभाषिणी । आकाशसंस्थितां देवीं मयूरीवाभ्रमालिकाम् ॥ ३४ ॥

ānandamantharovāca vacanaṃ mṛdubhāṣiṇī | ākāśasaṃsthitāṃ devīṃ mayūrīvābhramālikām || 34 ||

The soft-spoken Anandamanthara spoke these words to the goddess who was situated in the sky, like a peacock in a garland of clouds.

मृदुभाषिणी आनन्दमन्थरा ने आकाश में स्थित देवी से, जो बादलों की माला में मोर की तरह थी, ये शब्द कहे।

7.182.35

चिरंटिकोवाच । देवि देवाधिदेवेन यथा ते प्रेम शंभुना । भर्त्रा मम तथा प्रेम स भर्तास्तु ममामरः ॥ ३५ ॥

ciraṃṭikovāca | devi devādhidevena yathā te prema śaṃbhuṇā | bhartṛā mama tathā prema sa bhartāstu mamāmaraḥ || 35 ||

Chirantika said, 'O Goddess, just as you have love for Shambhu, the god of gods, may my husband have the same love for me, and may he be immortal.'

चिरंटिका ने कहा, 'हे देवी, जैसे आपका शंभु, देवों के देव के लिए प्रेम है, वैसे ही मेरा पति मुझसे प्रेम करे और वह अमर हो।'

7.182.36

देव्युवाच । आसृष्टेर्नियतेर्दार्ढ्यादमरत्वं न लभ्यते । तपोदानैरतोऽन्यं त्वं वरं वरय सुव्रते ॥ ३६ ॥

devyuvāca | āsṛṣṭerniyaterdārḍhyādamaratvaṃ na labhyate | tapodānairato'nyaṃ tvaṃ varaṃ varaya suvrate || 36 ||

The Goddess said: By the firmness of your devotion and discipline, immortality cannot be attained. Therefore, ask for another boon, O virtuous one.

देवी ने कहा: आपकी भक्ति और अनुशासन की दृढ़ता से अमरत्व नहीं मिल सकता. इसलिए, हे सुव्रते, दूसरा वरदान माँगो.

7.182.37

चिरंटिकोवाच । अलभ्यमेतन्मे देवि तन्मद्भर्तुर्गृहान्तरात् । मृतस्य मा विनिर्यातु जीवो बाह्यमपि क्षणात् ॥ ३७ ॥

ciranṭikovāca | alabhyametanme devi tanmadbharturgṛhāntarāt | mṛtasya mā viniryātu jīvo bāhyamapi kṣaṇāt || 37 ||

Chirantika said: This is unattainable for me, O Goddess. May my husband's soul not leave the house even for a moment after death.

चिरंटिका ने कहा: हे देवी, यह मेरे लिए अप्राप्य है. मेरे पति की आत्मा मृत्यु के बाद भी घर से एक क्षण के लिए भी न निकले.

7.182.38

देहपातश्च मे भर्तुर्यदा स्यादात्ममन्दिरे । तदेतदस्त्विति वरो दीयतामम्बिके मम ॥ ३८ ॥

dehapātaśca me bharturyadā syādātmamandire | tadetadastviti varo dīyatāmambike mama || 38 ||

And when my husband's body falls in his own abode, may this boon be granted to me, O Mother.

और जब मेरे पति का शरीर उनके अपने घर में गिरे, तब यह वरदान मुझे दिया जाए, हे माँ.

7.182.39

देव्युवाच । एवमस्तु सुते त्वं च पत्यौ लोकान्तरास्थिते । भविष्यसि प्रिया भार्या देहान्ते नात्र संशयः ॥ ३९ ॥

devyuvāca | evamastu sute tvaṃ ca patyau lokāntarāsthite | bhaviṣyasi priyā bhāryā dehānte nātra saṃśayaḥ || 39 ||

The Goddess said: So be it, O daughter. You will be the beloved wife of your husband in the other world after the end of your body, there is no doubt about it.

देवी ने कहा: ऐसा ही हो, हे पुत्री. तुम अपने पति की प्रिय पत्नी बनोगी दूसरे लोक में शरीर के अंत के बाद, इसमें कोई संदेह नहीं है.

7.182.40

इत्युक्त्वा विररामासौ गौर्या गीर्गगनोदरे । मेघमालाध्वनिरिव निरवद्यसमुद्यता ॥ ४० ॥

ityuktvā virarāmāsau gauryā gīrgaganodare | meghamālādhvaniriva niravadyasamudyatā || 40 ||

Having said this, she stopped speaking, like the sound of a cloud in the sky, flawless and uplifting.

यह कहकर, वह बोलना बंद कर दिया, जैसे आकाश में बादल की आवाज, निर्दोष और उत्साहित.

7.182.41

देव्यां गतायां भर्तारस्तासां कालेन केनचित् । ते ककुब्भ्यः समाजग्मुः सर्वे प्राप्तमहावराः ॥ ४१ ॥

devyāṃ gatāyāṃ bhartārastāsāṃ kālena kenacit | te kakubbhyaḥ samājagmuḥ sarve prāptamahāvarāḥ || 41 ||

When the goddesses had gone, their husbands, after some time, all came to the Kakubhas, having attained great boons.

जब देवियाँ चली गईं, तब उनके पतियों ने कुछ समय बाद सभी ककुब्भों के पास आए, जिन्होंने महान वरदान प्राप्त किए थे।

7.182.42

अद्यायमपि संयातु भार्याया निकटं पतिः । भ्रातॄणां बान्धवानां च भवत्वन्योन्यसंगमः ॥ ४२ ॥

adyāyamapi saṃyātu bhāryāyā nikaṭaṃ patiḥ | bhrātṝṇāṃ bāndhavānāṃ ca bhavatvanyonyasaṃgamaḥ || 42 ||

Even today, let the husband go near his wife. Let there be a union among brothers and relatives.

आज भी, पति अपनी पत्नी के पास जाए। भाई-बंधुओं में परस्पर मिलन हो।

7.182.43

इदमन्यदथेतेषामसमञ्जसमाकुलम् । शृणु किंवृत्तमाश्चर्यमार्यकार्योपरोधकम् ॥ ४३ ॥

idamanyadatheteṣāmasamañjasamākulam | śṛṇu kiṃvṛttamāścaryamāryakāryoparodhakam || 43 ||

Listen to this other strange and confusing matter of theirs, which is astonishing and obstructs the noble deeds.

इनके इस अन्य असमंजस और आकुल मामले को सुनो, जो आश्चर्यजनक है और आर्य कार्यों को रोकता है।

7.182.44

तप्यतां तप एतेषां पितरौ तौ वधूयुतौ । तीर्थमुन्याश्रमश्रेणीं द्रष्टुं दुःखान्वितौ गतौ ॥ ४४ ॥

tapyatāṃ tapa eteṣāṃ pitarau tau vadhūyutau | tīrthamunyāśramaśreṇīṃ draṣṭuṃ duḥkhānvitau gatau || 44 ||

Their parents, along with their daughters-in-law, went to see the series of holy places and hermitages, afflicted with sorrow.

उनके पिता, उनकी बहुओं के साथ, दुःख से भरे हुए, पवित्र स्थानों और आश्रमों की श्रृंखला देखने गए।

7.182.45

शरीरनैरपेक्ष्येण पुत्राणां हितकाम्यया । गन्तुं कलापग्रामं तं यत्नवन्तौ बभूवतुः ॥ ४५ ॥

śarīranairapekṣyeṇa putrāṇāṃ hitakāmyayā | gantuṃ kalāpagrāmaṃ taṃ yatnavantau babhūvatuḥ || 45 ||

With disregard for their bodies and with a desire for the welfare of their sons, they eagerly went to the village of Kalāpa.

अपने शरीर की उपेक्षा करते हुए और अपने पुत्रों के हित की इच्छा से, वे उत्सुकता से कलापग्राम गए।

7.182.46

तौ प्रयातौ मुनिग्राम मार्गे ददृशतुः सितम् । पुरुषं कपिलं ह्रस्वं भस्माङ्गं चोर्ध्वमूर्धजम् ॥ ४६ ॥

tau prayātau munigrāma mārge dadṛśatuḥ sitam | puruṣaṃ kapilaṃ hrasvaṃ bhasmāṅgaṃ cordhvamūrdhajam || 46 ||

They proceeded on the path to the sage's village and saw a white, short, ash-smeared man with matted hair.

वे ऋषि के गाँव की ओर चले और उन्होंने एक सफेद, छोटे, भस्म से लिपे हुए और जटाधारी व्यक्ति को देखा।

7.182.47

धूलीलवमनादृत्य तं जरत्पान्थशङ्कया । यदा तौ जग्मतुस्तेन स उवाचान्वितः क्रुधा ॥ ४७ ॥

dhūlīlavamanādṛtya taṃ jaratpānthaśaṅkayā | yadā tau jagmatustena sa uvācānvitaḥ krudhā || 47 ||

Ignoring him as a mere dust-covered traveler, when they passed by him, he spoke angrily.

उसे एक धूल से लिपे हुए यात्री के रूप में नजरअंदाज करते हुए, जब वे उसके पास से गुजरे, तो उसने क्रोध में कहा।

7.182.48

सवधूक महामूर्ख तीर्थार्थी दारसंयुतः । मां दुर्वाससमुल्लङ्घ्य गच्छस्यविहितानतिः ॥ ४८ ॥

savadhūka mahāmūrkha tīrthārthī dārasaṃyutaḥ | māṃ durvāsasamullaṅghya gacchasyavihitānatiḥ || 48 ||

O fool, accompanied by your wife, you are going to the pilgrimage, disregarding me, Durvasa, who is not to be disrespected.

हे मूर्ख, अपनी पत्नी के साथ, तुम तीर्थयात्रा पर जा रहे हो, मुझे दुर्वासा को अनादर करके, जिसका अनादर नहीं किया जा सकता।

7.182.49

वधूनां ते सुतानां च गच्छतस्तपसार्जिताः । विपरीता भविष्यन्ति लब्धा अपि महावराः ॥ ४९ ॥

vadhūnāṃ te sutānāṃ ca gacchatastapasārjitāḥ | viparītā bhaviṣyanti labdhā api mahāvarāḥ || 49 ||

The boons obtained by your wives and sons through austerities will be reversed, even if they are great.

तुम्हारी पत्नियों और पुत्रों द्वारा तपस्या से प्राप्त वरदान उलट जाएँगे, भले ही वे महान हों।

7.182.50

इत्युक्तवन्तं तं यावत्सदारोऽथ वधूयुतः । सन्मानं कुरुते तावन्मुनिरन्तर्धिमाययो ॥ ५० ॥

ityuktavantaṃ taṃ yāvatsadāro'tha vadhūyutaḥ | sanmānaṃ kurute tāvanmunirantardhimāyayo || 50 ||

As soon as the sage spoke these words, the traveler, along with his wife, paid respect to him, but by then the sage had already disappeared.

जैसे ही ऋषि ने ये शब्द कहे, यात्री और उसकी पत्नी ने उसका सम्मान किया, लेकिन तब तक ऋषि अदृश्य हो चुका था।

7.182.51

अथ तौ पितरौ तेषां सवधूकौ सुदुःखितौ कृशीभूतौ दीनमुखौ निराशौ गृहमागतौ ॥ ५१ ॥

atha tau pitarao teṣāṃ savadhūkau suduḥkhitau kṛśībhūtau dīnamukhau nirāśau gṛhamāgatau || 51 ||

Then those parents, along with their daughters-in-law, feeling very sorrowful, emaciated, with sad faces, and hopeless, returned home.

तब उन पिताओं ने, अपनी पुत्रवधुओं के साथ, अत्यंत दुःखी, दुर्बल, दीन मुख से और निराश होकर, घर लौट आए।

7.182.52

अतो वदाम्यहं तेषां नैकं नामासमञ्जसम् असमञ्जसलक्षाणि गण्डे स्फोटाः स्फुटा इव ॥ ५२ ॥

ato vadāmyahaṃ teṣāṃ naikaṃ nāmāsamñjasaṃ asamñjasalakṣāṇi gaṇḍe sphoṭāḥ sphuṭā iva || 52 ||

Therefore, I will tell you their names, which are not very appropriate. They are like blisters on the cheeks, clearly visible.

इसलिए, मैं उनके नाम बताऊँगा, जो बहुत उपयुक्त नहीं हैं। वे गालों पर फोड़े की तरह हैं, जो स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

7.182.53

चिद्व्योमसंकल्पमहापुरेऽस्मिन्नित्थं विचित्राण्यसमञ्जसानि निःशून्यरूपेऽपि हि संभवन्ति दृश्ये यथा व्योमनि दृश्यजृम्भाः ॥ ५३ ॥

cidvyomasaṃkalpamahāpure'sminnitthaṃ vicitraṇyasamñjasāni niḥśūnyarūpe'pi hi saṃbhavanti dṛśye yathā vyomani dṛśyajṛmbhāḥ || 53 ||

In this great city of the resolve of the sky of consciousness, such strange and inappropriate things happen, even in the form of emptiness, just as illusions appear in the sky.

इस चेतना के आकाश के संकल्प के महानगर में, ऐसे विचित्र और अनुपयुक्त चीजें होती हैं, जो शून्य रूप में भी होती हैं, जैसे आकाश में भ्रम दिखाई देते हैं।

Chapter 183

7.183.1

कुन्ददन्त उवाच । ततः पृष्टो मया तत्र स गौर्याश्रमतापसः । तापसंशुष्कदर्भाग्रजराजर्जरमूर्धजः ॥ १ ॥

kundadanta uvāca | tataḥ pṛṣṭo mayā tatra sa gaurīyāśramatāpasaḥ |
tāpasaṃśuṣkadarbhāgrajarājarjaramūrdhajaḥ || 1 ||

Kundadanta said: Then, I asked him there, that ascetic of the Gauri ashram, whose hair was dried like the tips of darbha grass, and who was old and feeble.

कुंददंत ने कहा: तब मैंने उस गौरी आश्रम के तापस से पूछा, जिसके बाल दर्भ की सूखी नोक के समान थे और जो बूढ़ा और कमजोर था।

7.183.2

एकैव सप्तद्वीपास्ति वसुधा यत्र तत्र ते । सप्तद्वीपेश्वरा अष्टौ भवन्ति कथमुत्तमाः ॥ २ ॥

ekaiva saptadvīpāsti vasudhā yatra tatra te | saptadvīpeśvarā aṣṭau bhavanti kathamuttamāḥ || 2 ||

There is only one earth with seven continents. How can there be eight supreme rulers of the seven continents?

एक ही वसुधा है जिसमें सात द्वीप हैं। सात द्वीपों के आठ शासक कैसे उत्तम हो सकते हैं?

7.183.3

यस्य जीवस्य सदनान्नास्ति निर्गमनं बहिः । स करोति कथं सप्तद्वीपेशत्वेन दिग्जयम् ॥ ३ ॥

yasya jīvasya sadanānnāsti nirgamanaṃ bahiḥ | sa karoti kathaṃ saptadvīpeśatvena digjayam || 3 ||

How can one who cannot leave his abode conquer the seven continents?

जिसके निवास से बाहर निकलना नहीं है, वह सात द्वीपों को कैसे जीत सकता है?

7.183.4

यैर्वरा वरदैर्दत्ताः शापस्ते तद्विरुद्धताम्कथं गच्छन्ति गच्छन्ति कथं छाया हि तापताम् ॥ ४ ॥

yairvarā varadairdattāḥ śāpaste tadviruddhatāmkathaṃ gacchanti gacchanti kathaṃ chāyā hi tāpatām || 4 ||

How can those who have been granted boons by the boon-givers suffer curses that are contrary to those boons? How can a shadow cause heat?

जिन्हें वरदान देने वालों ने वरदान दिए हैं, वे उन वरदानों के विपरीत शापों से कैसे पीड़ित हो सकते हैं? छाया कैसे गर्मी पैदा कर सकती है?

7.183.5

मिथोऽशक्यां कथं धर्मौ स्थितिमेकत्र गच्छतः । आधार एवाधेयत्वं करोति कथमात्मनि ॥ ५ ॥

mitho'śakyāṃ kathaṃ dharmau sthitimekatra gacchataḥ | ādhāra evādheyatvaṃ karoti kathamātmani || 5 ||

How can two contradictory principles coexist in one place? How can the support itself become the supported?

दो विरोधी सिद्धांत एक स्थान पर कैसे रह सकते हैं? समर्थन स्वयं समर्थित कैसे हो सकता है?

7.183.6

गौर्याश्रमतापस उवाच । संपश्यसि किमेतेषां भो साधो शृण्वनन्तरम् । अष्टमेऽस्मिन्सुसंप्राप्ते तं प्रदेशं सबान्धवम् ॥ ६ ॥

gauryāśramatāpasa uvāca | saṃpaśyasi kimetēṣāṃ bho sādho śṛṇvanantaram | aṣṭame'smin susaṃprāpte taṃ pradeśaṃ sabāndhavam || 6 ||

Gauri's ascetic said: Do you see, O virtuous one, what will happen to them next? Having reached the eighth stage, they will attain that place along with their relatives.

गौरी के तपस्वी ने कहा: क्या आप देखते हैं, हे साधु, इनका अगला क्या होगा? आठवें चरण में पहुंचकर, वे अपने रिश्तेदारों के साथ उस स्थान को प्राप्त होंगे।

7.183.7

इतो भवन्तौ तं देशमासाद्य सुखसंस्थितौ । स्वबन्धुसुखसंस्थानौ कंचित्कालं भविष्यतः ॥ ७ ॥

ito bhavantau taṃ deśamāsādya sukhasaṃsthitau | svabandhusukhasaṃsthānau kaṃcitkālaṃ bhaviṣyataḥ || 7 ||

From here, you two will reach that place and be happily situated. Along with your relatives, you will be happily situated for some time.

यहां से, आप दोनों उस स्थान तक पहुंचेंगे और सुखपूर्वक स्थित होंगे। अपने रिश्तेदारों के साथ, आप कुछ समय तक सुखपूर्वक स्थित होंगे।

7.183.8

ततस्तेऽष्टौ मरिष्यन्ति भ्रातरः क्रमशो गृहे । बन्धवोऽथ करिष्यन्ति तेषां देहांस्तदग्निसात ॥ ८ ॥

tataste'ṣṭau mariṣyanti bhrātaraḥ kramśo gṛhe | bandhavo'tha kariṣyanti teṣāṃ dehāṃstadagniṣāt || 8 ||

Then, those eight brothers will die one by one in the house. The relatives will then perform their cremation rites.

तब, वे आठ भाई घर में एक-एक करके मरेंगे। फिर रिश्तेदार उनके अंतिम संस्कार करेंगे।

7.183.9

तेषां ते संविदाकाशाः पृथक्पृथगवस्थिताः । मुहूर्तमात्रं स्थास्यन्ति सुषुप्तस्था जडा इव ॥ ९ ॥

teṣāṃ te saṃvidākāśāḥ pṛthakpṛthagavasthitāḥ | muhūrtamātraṃ sthāsyanti suṣuptasthā jadā iva || 9 ||

Their consciousness will be separate and distinct. They will remain in a state of deep sleep, as if inert, for a short while.

उनकी चेतना अलग-अलग और भिन्न होगी। वे कुछ समय के लिए गहरी नींद की स्थिति में, जड़ की तरह रहेंगे।

7.183.10

एतस्मिन्नन्तरे तेषां तानि कर्माणि धर्मतः । एकत्र संघटिष्यन्ति वरशापात्मकानि खे ॥ १० ॥

etasminnantare teṣāṃ tāni karmāṇi dharmataḥ | ekatra saṃghaṭiṣyanti varaśāpātmakāni khe || 10 ||

In the meantime, their actions, according to dharma, will come together as one in the form of blessings and curses in the sky.

इस बीच, उनके कर्म, धर्म के अनुसार, आकाश में आशीर्वाद और शाप के रूप में एक साथ आएंगे।

7.183.11

कर्माणि तान्यधिष्ठातृदेवरूपाणि पेटकम् । वरशापशरीराणि करिष्यन्ति पृथक् पृथक् ॥ ११ ॥

karmāṇi tānyadhiṣṭhātṛdevarūpāṇi peṭakam | varaśāpaśarīrāṇi kariṣyanti pṛthak pṛthak || 11 ||

Those actions, presided over by the gods in various forms, will be performed separately by the bodies of blessings and curses.

वे कर्म, जिनकी अधिष्ठात्री देवताएँ हैं, वर और शाप के शरीरों द्वारा अलग-अलग किए जाएँगे।

7.183.12

वरास्तेऽत्र गमिष्यन्ति सुभगाः पद्मपाणयः । ब्रह्मदण्डायुधाश्चन्द्रधवलाङ्गाश्चतुर्भुजाः ॥ १२ ॥

varāste'tra gamiṣyanti subhagāḥ padmapāṇayaḥ | brahmadaṇḍāyudhāścandradhavalāṅgāścaturbhujāḥ || 12 ||

The blessings will go there, auspicious, holding lotuses in their hands, armed with the staff of Brahma, having bodies white like the moon, and four-armed.

वर (आशीर्वाद) वहाँ जाएँगे, शुभ (मंगलमय), हाथों में कमल लिए, ब्रह्मा के दण्ड से सुसज्जित, चाँद के समान श्वेत शरीर वाले, और चार भुजाओं वाले।

7.183.13

शापास्तत्र भविष्यन्ति त्रिनेत्राः शूलपाणयः । भीषणाः कृष्णमेघाभा द्विभुजा भ्रुकुटीमुखाः ॥ १३ ॥

śāpāstatra bhaviṣyanti trinetrāḥ śūlapāṇayaḥ | bhīṣaṇāḥ kṛṣṇameghābhā dvibhujā bhrakuṭīmukhāḥ || 13 ||

The curses will be there, three-eyed, holding tridents, terrible, dark like black clouds, two-armed, and with frowning faces.

शाप (अभिशाप) वहाँ होंगे, तीन नेत्रों वाले, त्रिशूल हाथों में लिए, भयानक, काले बादलों के समान काले, दो भुजाओं वाले, और भौंहें सिकोड़े हुए मुख वाले।

7.183.14

वरा वदिष्यन्ति । सुदूरं गम्यतां शापाः कालोऽस्माकमुपागतः । क्रतूनामिव तन्नाम कः समर्थोऽतिवर्तितुम् ॥ १४ ॥

varā vadiṣyanti | sudūraṃ gamyatāṃ śāpāḥ kālo'smākamupāgataḥ | kratūnāmiva tannāma kaḥ samartho'tivartitum || 14 ||

The blessings will say: 'Go far away, curses, our time has come. Who is capable of transgressing that, like the name of the rituals?'

आशीर्वाद कहेंगे: 'दूर चले जाओ, शाप, हमारा समय आ गया है। कौन इसे उल्लंघन कर सकता है, जैसे यज्ञों का नाम?'

7.183.15

वरा वदिष्यन्ति । कृता भवन्तो मुनिना वयं दिनकृता कृताः । मुनीनां चाधिको देवो भगवन्तं पुरा यतः ॥ १५ ॥

varā vadiṣyanti | kṛtā bhavanto muninā vayaṃ dinakṛtā kṛtāḥ | munīnāṃ cādhiko devo bhagavantaṃ purā yataḥ || 15 ||

The blessings will say: 'You were created by the sage, we were created by the day. The god is superior to the sages, hence the Lord from ancient times.'

आशीर्वाद कहेंगे: 'तुम ऋषि द्वारा बनाए गए हो, हम दिन द्वारा बनाए गए हैं। ऋषियों से देवता श्रेष्ठ है, इसलिए प्राचीन काल से भगवान्।'

7.183.17

प्रवदत्सु वरेष्वेवं शापाः कुद्धधियो वरान् । विवस्वता कृता यूयं वयं रुद्रांशतः कृताः ॥ १७ ॥

pravadatsu vareṣvevaṃ śāpāḥ kuddhadhiyo varān | vivasvatā kṛtā yūyaṃ vayaṃ rudrāṃśataḥ kṛtāḥ || 17 ||

While the boons were being granted in this manner, the curses, with their minds enraged, cursed the boons. You were created by Vivasvat, and we were created from the parts of Rudra.

जब ये वरदान इस प्रकार से दिए जा रहे थे, तब क्रोधित मन वाले शाप ने वरदानों को शाप दिया। तुम विवस्वत द्वारा बनाए गए हो, और हम रुद्र के अंश से बनाए गए हैं।

7.183.18

देवानामधिको रुद्रो रुद्रांशप्रभवो मुनिः । इत्युक्त्वा प्रोद्यता तेषां चक्रुः शृङ्गाण्यगा इव ॥ १८ ॥

devānāmadhiko rudro rudrāṃśaprabhavo muniḥ | ityuktvā prodytā teṣāṃ cakruḥ śṛṅgāṇyagā iva || 18 ||

Rudra is superior among the gods, and the sage is born from the parts of Rudra. Having said this, they raised their horns like mountains.

रुद्र देवताओं में श्रेष्ठ है, और मुनि रुद्र के अंश से उत्पन्न है। ऐसा कहकर, उन्होंने पहाड़ों की तरह अपने सींग उठा दिए।

7.183.19

शापेषूद्यतशृङ्गेषु वरा इदमरातिषु । विहसन्तः प्रवक्ष्यन्ति प्रमेयीकृतनिश्चयम् ॥ १९ ॥

śāpeṣūdyataśṛṅgeṣu varā idamarātiṣu | vihasantaḥ pravakṣyanti prameyīkṛtaniścayam || 19 ||

In the curses with raised horns, the boons, laughing at their enemies, will declare their firm resolution.

उठाए हुए सींगों वाले शापों में, वरदान अपने शत्रुओं पर हँसते हुए, अपने दृढ़ निश्चय की घोषणा करेंगे।

7.183.20

हे शापाः पापतां त्यक्त्वा कार्यस्यान्तो विचार्यताम् । यत्कार्यं कलहस्यान्ते तदेवादौ विचार्यताम् ॥ २० ॥

he śāpāḥ pāpatāṃ tyaktvā kāryasyānto vicāryatām | yatkāryaṃ kalahasyānte tadevādau vicāryatām || 20 ||

O curses, abandoning sinfulness, let the end of the task be considered. Whatever task is at the end of the conflict, let that be considered at the beginning.

हे शाप, पाप को त्यागकर, कार्य का अंत सोचा जाए। जो कार्य कलह के अंत में है, उसे शुरू में ही सोचा जाए।

7.183.21

पितामहपुरीं गत्वा कलहान्ते विनिर्णयः । कर्तव्योऽस्माभिरेतत्किमादौ नेह विधीयते ॥ २१ ॥

pitāmahapurīṃ gatvā kalahānte vinirṇayaḥ | kartavyo'smābhiretatkimādau neha vidhīyate || 21 ||

Having gone to the city of the grandfather, the decision at the end of the conflict should be made by us. What is this that is not done at the beginning here?

पितामह की नगरी में जाकर, कलह के अंत में निर्णय हमें करना चाहिए। यह क्या है जो यहाँ शुरू में नहीं किया जाता?

7.183.22

शापैर्वरोक्तमाकर्ण्य बाढमित्युररीकृतम् । को न गृह्णाति मूढोऽपि वाक्यं युक्तिसमन्वितम् ॥ २२ ॥

śāpairvaroktamākarṇya bāḍhamityurarīkṛtam | ko na gṛhṇāti mū'ḍho'pi vākyaṃ yuktisamanvitam || 22 ||

Having heard the words of the boons and curses, who would not accept them, even a fool, if they are logical?

शापों और वरों के कथन को सुनकर, कौन नहीं स्वीकार करेगा, चाहे वह मूर्ख ही क्यों न हो, यदि वे तर्कसंगत हैं?

7.183.23

ततः शापा वरैः सार्ध यास्यन्ति ब्रह्मणः पुरम् । महानुभावा हि गतिः सदा संदेहनाशने ॥ २३ ॥

tataḥ śāpā varaiḥ sārdha yāsyanti brahmaṇaḥ puram | mahānubhāvā hi gatiḥ sadā saṃdehanāśane || 23 ||

Then, the curses along with the boons will go to the abode of Brahma. Indeed, the path of the great ones is always in dispelling doubts.

तब, शाप और वर मिलकर ब्रह्मा के धाम की ओर जाएँगे। निश्चय ही, महानुभावों का मार्ग हमेशा संदेह निवारण में होता है।

7.183.24

प्रणामपूर्वं तत्सर्वं यथावृत्तं परस्परम्। ब्रह्मणे कथयिष्यन्ति श्रुत्वा तेषां स वक्ष्यति ॥ २४ ॥

praṇāmapūrvaṃ tatsarvaṃ yathāvṛttaṃ parasparam | brahmaṇe kathayiṣyanti śrutvā teṣāṃ sa vakṣyati || 24 ||

After bowing, they will narrate all that happened to Brahma. Having heard them, he will speak.

प्रणाम करके, वे ब्रह्मा को सब कुछ बताएँगे जो हुआ था। उनकी बात सुनकर, वह कहेगा।

7.183.25

ब्रह्मोवाचवरशापाधिपा भो भो येऽन्तःसारा जयन्ति तेकेऽन्तःसारा इति मिथो नूनमन्विष्यतां स्वयम् ॥ २५ ॥

brahmovācavaraśāpādhipā bho bho ye'ntaḥsārā jayanti teke'ntaḥsārā iti mitho nūnamanviṣyatāṃ svayam || 25 ||

Brahma said: O lords of the boons and curses, those who are truly wise will indeed conquer. Let them search within themselves to find the true essence.

ब्रह्मा ने कहा: हे वर और शापों के स्वामी, जो वास्तव में बुद्धिमान हैं, वे विजय प्राप्त करेंगे। वे स्वयं में अन्तःसार की खोज करें।

7.183.26

इति श्रुत्वा प्रविष्टास्ते सारतां समवेक्षितुम्। वराणां हृदयं शापाः शापानां हृदयं वराः ॥ २६ ॥

iti śrutvā praviṣṭāste sāratāṃ samavekṣitum | varāṇāṃ hṛdayaṃ śāpāḥ śāpānāṃ hṛdayaṃ varāḥ || 26 ||

Having heard this, they entered to examine the essence. The essence of boons is curses, and the essence of curses is boons.

यह सुनकर, वे सारता की जाँच करने के लिए अंदर गए। वरों का हृदय शाप हैं, और शापों का हृदय वर हैं।

7.183.27

ते परस्परमन्विष्य स्वयं हृदयसारताम्। ज्ञात्वा च समवायेन प्रवक्ष्यन्ति पितामहम् ॥ २७ ॥

te parasparamanviṣya svayaṃ hṛdayasāratām | jñātvā ca samavāyena pravakṣyanti pitāmaham || 27 ||

They, having mutually investigated and realized the essence of their hearts, will together inform the grandfather.

वे परस्पर अन्वेषण करके और अपने हृदय की सारता को जानकर, एक साथ पितामह को बताएँगे।

7.183.28

शापा वक्ष्यन्ति। जिताः प्रजानाथ वयं नान्तःसारा वयं यतः। अन्तःसारा वरा एव वज्रस्तम्भा इवाचलाः ॥ २८ ॥

śāpā vakṣyanti | jitāḥ prajānātha vayaṃ nāntaḥsārā vayaṃ yataḥ | antaḥsārā varā eva vajrastambhā ivācalāḥ || 28 ||

They will speak curses. We are conquered, O Lord of the people, because we are not of inner essence. Those of inner essence are indeed the best, like immovable mountains.

वे शाप देंगे। हे प्रजानाथ, हम पराजित हैं, क्योंकि हम अन्तःसार नहीं हैं। अन्तःसार वाले ही सबसे श्रेष्ठ हैं, जैसे अचल पर्वत।

7.183.29

वयं किलेमे भगवन्वराः शापाश्च सर्वदा। ननु संविन्मया एव देहोऽन्योऽस्माकमस्ति नो ॥ २९ ॥

vayaṃ kileme bhagavanvarāḥ śāpāśca sarvadā | nanu saṃvinmayā eva deho'nyo'smākamasti no || 29 ||

We are indeed the best, O Lord, and curses always. But indeed, our other body is only consciousness.

हम ही श्रेष्ठ हैं, हे भगवन्, और शाप हमेशा। परन्तु हमारा दूसरा शरीर तो चेतना ही है।

7.183.30

वरदस्य हि या संविद्वरो दत्त इति स्थिता । सैवार्थिनि मया लब्धो वरोऽयमिति तिष्ठति ॥ ३० ॥

varadasya hi yā saṃvidvaro datta iti sthitā | saivārthini mayā labdho varo'yamiti tiṣṭhati || 30 ||

Indeed, the boon given by the boon-giver is established as such. That very boon is obtained by the seeker, and it stands as this boon.

वास्तव में, वरदाता द्वारा दिया गया वर ऐसा ही स्थापित है। वही वर आर्थी द्वारा प्राप्त होता है, और वह इस वर के रूप में स्थित है।

7.183.31

विज्ञप्तिमात्रकचनं देहं सैव फलं ततः । पश्यत्यनुभवत्यत्ति देशकालशतभ्रमैः ॥ ३१ ॥

vijñaptimātrakacanaṃ dehaṃ saiva phalaṃ tataḥ | paśyaty anubhavaty atti deśakālaśatabhramaiḥ || 31 ||

The body is merely a perception. That very perception is the result. It sees, experiences, and transcends the illusions of hundreds of times and places.

शरीर केवल एक विज्ञप्ति है। वही विज्ञप्ति फल है। यह सौ स्थानों और समयों के भ्रम को देखता, अनुभव करता और पार करता है।

7.183.32

वरदात्मा गृहीतत्वाच्चित्कालान्तरसंभृता । यदा तदान्तःसारासौ दुर्जया न तु शापजा ॥ ३२ ॥

varadātmā gṛhītatvāccitkālāntarasaṃbhṛtā | yadā tadāntaḥsārāsau durjayā na tu śāpajā || 32 ||

When the essence of the boon is grasped through the passage of time, it becomes indomitable, not merely a curse.

जब वरदान का सार समय के साथ ग्रहण किया जाता है, तो वह अजेय हो जाता है, केवल शाप नहीं।

7.183.33

वरप्रदानं वरदैर्वरदानां वरार्थिभिः । यदा सुचिरमभ्यस्तं वराणां सारता तदा ॥ ३३ ॥

varapradānaṃ varadairvaradānāṃ varārthibhiḥ | yadā suciramabhyastaṃ varāṇāṃ sāratā tadā || 33 ||

When the bestowal of boons is practiced diligently by those who seek boons, the essence of the boons is realized.

जब वरदान की प्रथा वरदान की इच्छा रखने वालों द्वारा निष्ठापूर्वक अभ्यास की जाती है, तो वरदान का सार प्राप्त होता है।

7.183.34

यदेव सुचिरं संविदभ्यस्यति तदेव सा । सारमेवाशु भवति भवत्याशु च तन्मयी ॥ ३४ ॥

yadeva suciraṃ saṃvidabhyasyati tadeva sā | sāramevāśu bhavati bhavatyāśu ca tanmayī || 34 ||

Whatever is practiced with awareness for a long time becomes the essence itself, and it quickly becomes one with it.

जो भी चेतना के साथ लंबे समय तक अभ्यास किया जाता है, वही सार बन जाता है, और वह तुरंत उससे एक हो जाता है।

7.183.35

शुद्धानामतिशुद्धैव संविज्जयति संविदाम् । अशुद्धानां त्वशुद्धैव कालात्साम्यं न विद्यते ॥ ३५ ॥

śuddhānāmatiśuddhaiva saṃvijjayati saṃvidām | aśuddhānāṃ tvaśuddhaiva kālātsāmyaṃ na vidyate || 35 ||

The pure become even more pure through awareness, while the impure remain impure over time.

शुद्ध लोग चेतना के द्वारा और भी शुद्ध हो जाते हैं, जबकि अशुद्ध लोग समय के साथ अशुद्ध ही रहते हैं।

7.183.36

क्षणांशेनापि यो ज्येष्ठो न्यायस्तेनावपूर्यते नार्थे न्यायान्तरं किंचित्कर्तुमुत्सहते मदम्॥ ३६॥

kṣaṇāṃśenāpi yo jyeṣṭho nyāyastenāvapūryate nārthe nyāyāntaraṃ kiṃcitkartumutsahate madam || 36 ||

Even in the smallest fraction of time, the elder is fulfilled by justice. Intoxicated with pride, he does not dare to adopt any other means for his purpose.

थोड़े से समय में भी जो श्रेष्ठ है, वह न्याय से पूर्ण हो जाता है। अहंकार के नशे में वह अपने उद्देश्य के लिए कोई अन्य उपाय अपनाने का साहस नहीं करता।

7.183.37

समेनोभयकोटिस्थं मिश्रं वस्तु भवेत्समम्। वरशापविलासेन क्षीरमिश्रं यथा पयः॥ ३७॥

samena ubhayakoṭisthaṃ miśraṃ vastu bhavetsamam | varaśāpavilāsena kṣīramiśraṃ yathā payaḥ || 37 ||

By being equal on both sides, the mixed substance becomes uniform | Just as milk mixed with water by the play of boon and curse

दोनों ओर से बराबर होने से मिश्रित वस्तु समान हो जाती है | जैसे वर और शाप के खेल से दूध पानी में मिल जाता है

7.183.38

समाभ्यां वरशापाभ्यामथवा चिद्विरूपताम्। स्वयमेवानुभवति स्वप्नेष्विव पुरात्मिका॥ ३८॥

samābhyāṃ varaśāpābhyāmathavā ciddvirūpatām | svayamevānubhavati svapneṣviva purātmikā || 38 ||

By being equal through boons and curses, or by the dual nature of consciousness | One experiences it oneself, just like in dreams

वर और शाप के द्वारा बराबर होने से, या चेतना की द्वैत प्रकृति से | व्यक्ति स्वयं ही इसे अनुभव करता है, जैसे सपनों में

7.183.39

शिक्षितं त्वत्त एवेति यत्तदेव तव प्रभो। पुनः प्रतीपं पठितं शीघ्रं यामो नमोऽस्तु ते॥ ३९॥

śikṣitaṃ tvatta eveti yattadeva tava prabho | punaḥ pratīpaṃ paṭhitaṃ śīghraṃ yāmo namo'stu te || 39 ||

What has been learned from you, O Lord, is indeed yours | I will quickly recite it again, may you be praised

जो आपसे सीखा गया है, हे प्रभु, वह वास्तव में आपका ही है | मैं इसे फिर से शीघ्र ही पढ़ूंगा, आपकी स्तुति हो

7.183.40

इत्युक्त्वा स स्वयंशापः क्वापि शापगणो ययौ। प्रशान्ते तिमिरे दृष्टे व्योम्नि केशोण्ड्रकं यथा॥ ४०॥

ityuktvā sa svayaṃśāpaḥ kvāpi śāpagaṇo yayau | praśānte timire dṛṣṭe vyomni keśoṇḍrakaṃ yathā || 40 ||

Having said this, that self-cursed one went somewhere, the group of curses | Like a comet seen in the sky when the darkness is dispelled

ऐसा कहकर, वह स्वयं शापग्रस्त कहीं चला गया, शापों का समूह | जैसे अंधेरा दूर होने पर आकाश में दिखने वाला धूमकेतु

7.183.41

अथान्यो वरपूगोऽत्र गृहनिर्गमरोधकः। स्थानिस्थानमिवादेशः समानार्थोऽभ्यपूरयत्॥ ४१॥

athānyo varapūgo'tra gṛhanirgamarodhakaḥ | sthānistānamivādeśaḥ samānārtho'bhyapūrayat || 41 ||

Then another group of boons, obstructing the exit from the house | Like an order from one place to another, filled with the same meaning

फिर एक और वरों का समूह, घर से निकलने में बाधा डालता है | जैसे एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर आदेश, समान अर्थ से भरा हुआ

7.183.43

सप्तद्वीपेश्वरानेतानिमे द्वीपेषु सद्मसु । कारयन्ति वरा वर्या वीरा दिग्विजयं रणे ॥ ४३ ॥

saptadvīpeśvarānetānime dvīpeṣu sadmasu | kārayanti varā varyā vīrā digvijayaṃ raṇe || 43 ||

These best of the lords of the seven islands, residing in their abodes in the islands, perform the conquest of the directions in battle.

ये सात द्वीपों के श्रेष्ठ स्वामी, अपने निवास स्थानों में रहकर, युद्ध में दिग्विजय करते हैं।

7.183.44

तदेवमनिवार्येऽस्मिन्विरोधे विबुधेश्वर । यदनुष्ठेयमस्माभिस्तदादिश शिवाय नः ॥ ४४ ॥

tadevamanivārye'sminvirodhe vibudheśvara | yadanuṣṭheyamasmābhistadādiśa śivāya naḥ || 44 ||

O lord of the gods, in this inevitable conflict, instruct us on what we should do for our welfare.

हे देवताओं के स्वामी, इस अनिवार्य विरोध में, हमें अपने कल्याण के लिए जो करना चाहिए, वह हमें बताएँ।

7.183.45

ब्रह्मोवाच । सप्तद्वीपेश्वरवरा गृहरोधवराश्च हे । कामः संपन्न एवेह भवतां भवतामपि ॥ ४५ ॥

brahmovāca | saptadvīpeśvaravarā gṛharodhavarāśca he | kāmaḥ saṃpanna eveha bhavatāṃ bhavatāmapi || 45 ||

Brahma said: O best of the lords of the seven islands, O best of the householders, your desires are fulfilled here.

ब्रह्मा ने कहा: हे सात द्वीपों के श्रेष्ठ स्वामी, हे श्रेष्ठ गृहस्थ, तुम्हारी इच्छाएँ यहाँ पूर्ण हो गई हैं।

7.183.46

व्रजतैतदपेक्षत्वं यावन्नेष्टावपि क्षणात् । चिरं चिराय सदने सप्तद्वीपेश्वराः स्थिताः ॥ ४६ ॥

vrajataitadapekṣatvaṃ yāvanneṣṭāvapi kṣaṇāt | ciraṃ cirāya sadane saptadvīpeśvarāḥ sthitāḥ || 46 ||

Go, without expecting anything, until the desired moment comes. The lords of the seven islands will remain in their abodes for a long time.

जाओ, किसी अपेक्षा के बिना, जब तक अभीष्ट समय नहीं आता। सात द्वीपों के स्वामी अपने निवास स्थानों में लंबे समय तक रहेंगे।

7.183.47

समनन्तरमेवैते देहपातात्स्वसद्मसु । सप्तद्वीपेश्वराः सर्वे संपन्नाः परमं वराः ॥ ४७ ॥

samanantaramevaite dehapātātsvasadmasu | saptadvīpeśvarāḥ sarve saṃpannāḥ paramaṃ varāḥ || 47 ||

Immediately after leaving their bodies, all the lords of the seven islands attained the supreme state in their abodes.

तुरंत शरीर छोड़ने के बाद, सभी सात द्वीपों के स्वामी अपने निवास स्थानों में परम अवस्था को प्राप्त हुए।

7.183.48

सर्वे वरा वदिष्यन्तिकुतो भूमण्डलान्यष्टौ सप्तद्वीपानि भूतयःएकमेवेह भूपीठं श्रुतं दृष्टं च नेतरत् ॥ ४८ ॥

sarve varā vadiṣyantikuto bhūmaṇḍalānyaṣṭau saptadvīpāni bhūtayaḥekameveha bhūpīṭhaṃ śrutaṃ dṛṣṭaṃ ca netarat || 48 ||

All the best will say from where the eight earth globes and the seven islands are elements. Here, only one earth seat is heard and seen, not otherwise.

सभी श्रेष्ठ लोग कहेंगे कि आठ पृथ्वी गोलों और सात द्वीपों के तत्व कहाँ से हैं। यहाँ, केवल एक पृथ्वी आसन सुना और देखा गया है, अन्यथा नहीं।

7.183.49

कथं चैतानि तिष्ठन्ति कस्मिंश्चिद्गृहकोशकेपद्माक्षकोशके सूक्ष्मे कथं भान्ति मतंगजाः ॥ ४९ ॥

kathaṃ caitāni tiṣṭhanti kasmiṃścidgṛhakośakepadmākṣakośake sūkṣme kathaṃ bhānti mataṃgajāḥ || 49 ||

How do these exist in any house treasure chest or in the subtle lotus-eyed treasure chest? How do the elephants shine?

ये किस तरह किसी घर के खजाने या सूक्ष्म कमल-नयन खजाने में रहते हैं? हाथी किस तरह चमकते हैं?

7.183.50

ब्रह्मोवाचयुक्तं युष्माभिरस्माभिः सर्वं व्योमात्मकं जगत्स्थितं चित्परमाण्वन्तरन्तःस्वप्नोऽनुभूयते ॥ ५० ॥

brahmovācayuktaṃ yuṣmābhirasmābhiḥ sarvaṃ vyomātmakaṃ jagatsthitaṃ citparamāṇvantarantaḥsvapno'nubhūyate || 50 ||

Brahma's words, spoken by you and us, the entire universe is pervaded by the sky, the supreme consciousness is experienced as a dream within the atom.

ब्रह्मा के शब्द, आप और हम द्वारा कहे गए, पूरा ब्रह्मांड आकाश से व्याप्त है, परम चेतना परमाणु के भीतर स्वप्न के रूप में अनुभव की जाती है।

7.183.51

भाति यत्परमस्याणोरन्तस्थस्वगृहोदरेस्फुरितं तत्किमाश्चर्य कः स्मयः प्रकृतेः क्रमे ॥ ५१ ॥

bhāti yatparamasyāṇorantasthasvagṛhodaresphuritaṃ tatkimāścarya kaḥ smayaḥ prakṛteḥ krame || 51 ||

What is the wonder, what is the surprise, when the supreme Self, which is present in the inner space of the heart, shines forth?

आश्चर्य क्या है, चमत्कार क्या है, जब परम आत्मा, जो हृदय के अन्तरिक्ष में उपस्थित है, प्रकट होता है?

7.183.52

मृतेरनन्तरं भाति यथास्थितमिदं जगत्शून्यास्मैव घनाकारं तस्मिन्नेव क्षणे चितः ॥ ५२ ॥

mṛteranantaraṃ bhāti yathāsthitamidaṃ jagatśūnyāsmaiva ghanākāraṃ tasminneva kṣaṇe citaḥ || 52 ||

Immediately after death, the world appears as it is, empty yet dense, in that very moment of consciousness.

मृत्यु के तुरंत बाद, जगत् जैसा है, वैसा ही प्रकट होता है, शून्य और घनाकार, उसी क्षण में चेतना है।

7.183.53

अणावपि जगन्माति यत्र तत्र गृहोदरे । सप्तद्वीपा वसुमती कचतीति किमद्भुतम् ॥ ५३ ॥

aṇāvapi jagannmāti yatra tatra gṛhodare | saptadvīpā vasumatī kacatīti kimadbhutam || 53 ||

Even in the smallest particle, the entire universe exists. What is so astonishing about the earth, with its seven continents, being contained within the womb of the house?

चाहे कितना ही छोटा कण हो, उसमें भी सारा ब्रह्माण्ड है। घर के गर्भ में सात द्वीपों वाली धरती रहना क्या आश्चर्य की बात है?

7.183.54

यद्भातीदं च चित्तत्त्वं जगत्त्वं न जगत्क्वचित् । चिन्मात्रमेव तद्भाति शून्यत्वेन यथाम्बरम् ॥ ५४ ॥

yadbhātīdaṃ ca cittattvaṃ jagattvaṃ na jagatkvacit | cinmātrameva tadbhāti śūnyatvena yathāmbaram || 54 ||

That which appears as the essence of consciousness is not the world anywhere. It shines as pure consciousness alone, like the sky in its emptiness.

जो चेतना का सार प्रतीत होता है, वह कहीं भी संसार नहीं है। वह शून्यता में आकाश की तरह केवल शुद्ध चेतना के रूप में चमकता है।

7.183.55

इति ते ब्रह्मणा प्रोक्ता वरदेन वरास्ततः । तानाधिभौतिकभ्रान्तिमयान्संत्यज्य देहकान् ॥ ५५ ॥

iti te brahmaṇā proktā varadeṇa varāstataḥ | tānādhibhautikabhrāntimayānsaṃtyajya dehakān || 55 ||

Thus, these boons were spoken to you by Brahma, the bestower of boons. Abandoning those bodies filled with material delusions,

इस प्रकार, ये वरदान ब्रह्मा द्वारा, वरदाता से, आपको कहे गए। भौतिक भ्रांतियों से भरे उन शरीरों को छोड़कर,

7.183.56

प्रणम्याजं समं जग्मुरातिवाहिकदेहिनः । सप्तद्वीपे च देवानां गृहकोशान्कचज्जनान् ॥ ५६ ॥

praṇamyājaṃ samaṃ jagmurātivāhikadehināḥ | saptadvīpe ca devānāṃ gṛhakośānkacajjanān || 56 ||

After bowing down to Aja, they went together, those who had transcendent bodies, to the seven continents of the gods, to the treasures of the house, to the people of the earth.

अज को प्रणाम करके, वे साथ-साथ चले गए, जिनके शरीर पारलौकिक थे, देवताओं के सात द्वीपों में, घर के खजानों में, धरती के लोगों में।

7.183.57

यावत्ते तत्र संपन्नाः सप्तद्वीपाधिनायकाः । अष्टावपीष्टापुष्टानां दिनाष्टकमहीभुजाम् ॥ ५७ ॥

yāvatte tatra saṃpannāḥ saptadvīpādhināyakāḥ | aṣṭāvapīṣṭāpuṣṭānāṃ dināṣṭakamahībhujām || 57 ||

As long as they were established there, the lords of the seven continents, the eight who were desired and nourished, the rulers of the earth for eight days.

जब तक वे वहाँ स्थापित थे, सात द्वीपों के अधिनायक, जो आठ थे और इच्छित और पोषित थे, आठ दिनों के पृथ्वी के शासक।

7.183.58

ते परस्परमज्ञाता अज्ञाश्चान्योन्यबन्धवः । अन्योन्यभूमण्डलगा अन्योन्याभिमते हिताः ॥ ५८ ॥

te parasparamajñātā ajñāścānyonyabandhavaḥ | anyonyabhūmaṇḍalagā anyonyābhimate hitāḥ || 58 ||

They are unknown to each other and are relatives of each other | They are on different continents and are beneficial to each other's desires

वे एक दूसरे को अज्ञात हैं और एक दूसरे के बन्धु हैं | वे अलग-अलग भूमण्डलों पर हैं और एक दूसरे की इच्छाओं के लिए हितकारी हैं

7.183.59

तेषां कश्चिद्गृहस्यान्तरेव तारुण्यसुन्दरः । उज्जयिन्यां महापुर्यां राजधान्यां सुखे स्थितः ॥ ५९ ॥

teṣāṃ kaścidgṛhasyāntareva tāruṇyasundaraḥ | ujjayinyāṃ mahāpuryāṃ rājadhānyāṃ sukhe sthitaḥ || 59 ||

Among them, someone is beautifully youthful inside the house | He is happily situated in the great city of Ujjayini, the capital

उनमें से कोई घर के अन्दर यौवन से सुन्दर है | वह महान नगर उज्जयिनी, राजधानी में सुख से स्थित है

7.183.60

शाकद्वीपास्पदः कश्चिन्नागलोकजिगीषया । विचरत्यब्धिजठरे सर्वदिग्विजयोद्यतः ॥ ६० ॥

śākadvīpāspadaḥ kaścinnāgalokajigīṣayā | vicaratyabdhijaṭhare sarvadigvijayodyataḥ || 60 ||

Someone from the continent of Śākadvīpa, with the desire to conquer the world of the serpents | He wanders in the ocean's belly, ready to conquer all directions

शाकद्वीप के किसी व्यक्ति ने नागलोक को जीतने की इच्छा से | वह समुद्र के पेट में घूमता है, सभी दिशाओं को जीतने के लिए तैयार

7.183.61

कुशद्वीपराजधान्यां निराधिः सकलप्रजाः । कृतदिग्विजयः कश्चित्सुप्तः कान्तावलम्बितः ॥ ६१ ॥

kuśadvīparājadhānyāṃ nirādhiḥ sakalaprajāḥ | kṛtadigvijayaḥ kaścitsuptaḥ kāntāvalambitaḥ || 61 ||

In the capital of Kuśadvīpa, free from all troubles, all the people | Someone who has conquered all directions is asleep, embraced by his beloved

कुशद्वीप की राजधानी में, सभी पीड़ाओं से मुक्त, सभी प्रजा | कोई जो सभी दिशाओं को जीत चुका है, सोया हुआ है, अपनी प्रियतमा के आलिंगन में

7.183.62

शाल्मलिद्वीपशैलेन्द्रशिरःपुर्याः सरोवरे । जललीलारतः कश्चित्सहविद्याधरीगणैः ॥ ६२ ॥

śālmalidvīpaśailendraśiraḥpuryāḥ sarovare | jalalīlārataḥ kaścitsahavidyādharīgaṇaiḥ || 62 ||

In the lake of the city on the peak of the mountain of Śālmalidvīpa | Someone is engaged in water sports with the group of Vidyādharīs

शाल्मलिद्वीप के पर्वत के शिखर पर नगर के सरोवर में | कोई विद्याधरी समूह के साथ जलक्रीड़ा में लगा हुआ है

7.183.63

क्रौञ्चद्वीपे हेमपुरे सप्तद्वीपविवर्धिते । प्रवृत्तो वाजिमेधेन कश्चिद्यष्टुं दिनाष्टकम् ॥ ६३ ॥

krauñcadvīpe hemapure saptadvīpavivardhitē | pravṛtto vājimēdhēna kaścidyaṣṭuṃ dināṣṭakam || 63 ||

In the golden city of Krauncha Island, which is expanded by seven islands, someone is engaged in performing the Ashvamedha sacrifice for eight days.

क्रौंच द्वीप के स्वर्ण नगर में, जो सात द्वीपों से विस्तृत है, कोई आठ दिनों तक अश्वमेध यज्ञ करने में लगा हुआ है।

7.183.64

उद्यतः शाल्मलिद्वीपे कश्चिद्वीपान्तचारिणा । योद्धुमुद्धृतदिग्दन्तिदन्ताकृष्टकुलाचलः ॥ ६४ ॥

udyataḥ śālmalidvīpē kaściddvīpāntacāriṇā | yoddhumuddhṛtadigdantidantākṛṣṭakulācalaḥ || 64 ||

In the Shalmali Island, someone is ready to fight with the island's inhabitants, having uprooted mountains with his tusks.

शाल्मली द्वीप में, कोई द्वीप के निवासियों से लड़ने के लिए तैयार है, जिसने अपने दाँतों से पर्वतों को उखाड़ दिया है।

7.183.65

गोमेदद्वीपकः कश्चित्पुष्करद्वीपराट् सुताम् । समानेतुं वशाद्याति कषत्सेनोऽष्टमोऽभवत् ॥ ६५ ॥

gomēdadvīpakaḥ kaścippuskara dvīparāṭ sutām | samānētuṃ vaśādyāti kaṣatsēno'ṣṭamō'bhavat || 65 ||

Someone from Gomedha Island goes to Pushkara Island to bring the daughter of the king under his control, becoming the eighth warrior.

गोमेद द्वीप का कोई व्यक्ति पुष्कर द्वीप के राजा की बेटी को अपने वश में करने के लिए जाता है, और आठवां योद्धा बन जाता है।

7.183.66

पुष्करद्वीपकः कश्चिल्लोकालोकाद्रिभूभुजः । दूतेन सह निर्यातो धनभूमिदिदृक्षया ॥ ६६ ॥

puṣkaradvīpakaḥ kaścillokālokādrbhūbhujāḥ | dūtēna saha niryātō dhanabhūmididṛkṣayā || 66 ||

Someone from Pushkara Island, the ruler of the Lokāloka mountain, goes out with a messenger to see the land of wealth.

पुष्कर द्वीप का कोई व्यक्ति, लोकालोक पर्वत का शासक, एक दूत के साथ धन की भूमि देखने के लिए निकलता है।

7.183.67

प्रत्येकमित्थमेतेषां द्वीपद्वीपाधिनाथताम्। कुर्वतां स्वगृहाकाशे दृष्ट्वा स्वप्रतिभोचिताम्॥ ६७॥

pratyēkamitthamētēṣāṃ dvīpadvīpādhināthatām | kurvatāṃ svagṛhākāśē dṛṣṭvā svapratibhōcitām || 67 ||

Thus, each of these island rulers, seeing their respective abilities, establish their sovereignty over the islands in their own domains.

इस प्रकार, इन सभी द्वीप शासकों में से प्रत्येक, अपनी-अपनी क्षमता देखकर, अपने डोमेन में द्वीपों पर अपना सार्वभौम अधिकार स्थापित करता है।

7.183.68

त्यक्ताभिमानिकाकारा द्विविधा वरास्ततः। तत्संविद्भिर्गृहेष्वन्तरेकतां खानि खैरिव॥ ६८॥

tyaktābhimānikākārā dvividhā varāstatastatsaṃvidbhirgṛheṣvantarekatāṃ khāni khairiva|| 68 ||

Those who have abandoned pride and are of two kinds, the best, will then, with their knowledge, enter the houses like the diggers of wells.

जो अभिमान त्याग चुके हैं और दो प्रकार के हैं, वे श्रेष्ठ, अपने ज्ञान के साथ, खुदाई करने वालों की तरह घरों में प्रवेश करेंगे।

7.183.69

यास्यन्ति ते भविष्यन्ति संप्राप्ताभिमताश्चिरम्। सप्तद्वीपेश्वरास्तुष्टा नन्वष्टावपि तुष्टिमत्॥ ६९॥

yāsyanti te bhaviṣyanti saṃprāptābhimatāściram| saptadvīpeśvarāstuṣṭā nanvaṣṭāvapi tuṣṭimat|| 69 ||

They will go and will be in the future, having achieved their desires for a long time. The lords of the seven continents will be satisfied, and even the eight will be content.

वे जाएँगे और भविष्य में होंगे, लंबे समय तक अपनी इच्छाओं को प्राप्त करने के बाद। सात द्वीपों के स्वामी संतुष्ट होंगे, और आठवें को भी संतोष मिलेगा।

7.183.70

इत्येते प्रविकसितोदितक्रियार्थाः प्राप्स्यन्ति प्रविततबुद्ध्यस्तपोभिः। अन्तर्यत्स्फुरति विदस्तदेव बाह्ये नाप्तं कैस्तदुचितकर्मभिः किलेति॥ ७०॥

ityete pravikasitoditakriyārthāḥ prāpsyanti pravitatabuddhayastapobhiḥ| antaryatsphurati vidastadeva bāhye nāptaṃ kais taducitakarmabhiḥ kileti|| 70 ||

Thus, these who have blossomed and declared their actions will attain, with their expanded intellect through austerities. The wise see that the same thing shines within and without, not obtained by any proper actions, indeed.

इस प्रकार, ये जो खिले हुए और अपने कार्यों को घोषित कर चुके हैं, वे तपस्या द्वारा अपने विस्तृत बुद्धि के साथ प्राप्त करेंगे। विद्वान देखते हैं कि वही चीज अंदर और बाहर चमकती है, किसी उचित कर्म से नहीं प्राप्त होती, वास्तव में।

Chapter 184

7.184.1

कुन्ददन्त उवाच । इत्युक्तवानसौ पृष्टः कदम्बतलतापसः । सप्तद्वीपा भुवोऽष्टौ ताः कथं भाता गृहेष्विति ॥ १ ॥

kundadanta uvāca | ityuktavānasau pṛṣṭaḥ kadambatalatāpasaḥ | saptadvīpā bhuvo'ṣṭau tāḥ kathaṃ bhātā gṛheṣviti || 1 ||

Kundadanta said: Having been asked thus, the ascetic of the Kadamba forest said: How do the eight continents of the earth appear in the houses?

कुन्ददन्त ने कहा: इस प्रकार पूछे जाने पर, कदम्ब वन के तपस्वी ने कहा: पृथ्वी के आठ द्वीप घरों में कैसे दिखाई देते हैं?

7.184.2

कदम्बतापस उवाच । चिद्धातुरीदृगेवायं यदेष व्योमरूप्यपि । सर्वगो यत्र यत्रास्ते तत्र तत्रात्मनि स्वयम् ॥ २ ॥

kadambatāpasa uvāca | ciddhāturīdṛgevāyaṃ yadeṣa vyomarūpyapi | sarvago yatra yatrāste tatra tatrātmani svayam || 2 ||

The ascetic of the Kadamba forest said: This universe, which appears as the form of the sky, is indeed the form of pure consciousness. Wherever it exists, it is there in the self.

कदम्ब वन के तपस्वी ने कहा: यह ब्रह्माण्ड, जो आकाश के रूप में दिखाई देता है, वास्तव में शुद्ध चेतना का रूप है। जहाँ भी यह है, वहाँ यह स्वयं आत्मा में है।

7.184.3

आत्मानमित्थं त्रैलोक्यरूपेणान्येन वा निजम् । परिपश्यति रूपं स्वमत्यजन्नेव खात्मकम् ॥ ३ ॥

ātmānamitthaṃ trailokyarūpeṇānyena vā nijam | paripaśyati rūpaṃ svamatyajanneva khātmakam || 3 ||

Thus, the self perceives its own form, which is the form of the three worlds or any other form, by abandoning the form of the sky.

इस प्रकार, आत्मा अपने रूप को, जो तीनों लोकों का रूप है या कोई अन्य रूप, आकाश के रूप को त्यागकर देखता है।

7.184.4

कुन्ददन्त उवाच । एकस्मिन्विमले शान्ते शिवे परमकारणे । कथं स्वभावसंसिद्धा नानाता वास्तवी स्थिता ॥ ४ ॥

kundadanta uvāca | ekasminvimale śānte śive paramakāraṇe | kathaṃ svabhāvasaṃsiddhā nānātā vāstavī sthitā || 4 ||

Kundadanta said: How can the diverse nature, which is inherently perfect, exist in the one, pure, peaceful, auspicious, supreme cause?

कुन्ददन्त ने कहा: विविध स्वभाव, जो स्वयं पूर्ण है, एक, शुद्ध, शांत, शुभ, परम कारण में कैसे स्थित हो सकता है?

7.184.5

कदम्बतापस उवाच । सर्वं शान्तं चिदाकाशे नानास्तीह न किंचन । दृश्यमानमपि स्फारमावर्तात्मा यथाम्भसि ॥ ५ ॥

kadambatāpasa uvāca | sarvaṃ śāntaṃ cidākāśe nānāstīha na kiṃcana | dṛśyamānamapi sphāramāvartātmā yathāmbhasi || 5 ||

The ascetic of the Kadamba forest said: Everything is peaceful in the space of consciousness. There is no diversity here, nothing at all. Even what appears to be diverse is like the whirlpool in water.

कदम्ब वन के तपस्वी ने कहा: चेतना के आकाश में सब कुछ शांत है। यहाँ कोई विविधता नहीं है, कुछ भी नहीं। जो भी विविध दिखाई देता है, वह पानी में भंवर की तरह है।

7.184.6

असत्स्वेषु पदार्थेषु पदार्था इति भान्ति यत्। चित्वं स्वप्नसुषुप्तात्म तत्तस्याच्छं निजं वपुः ॥ ६ ॥

asatsveshu padartheshu padartha iti bhanti yat | chitvam svapnasushuptatma tattasyachcham nijam vapuh || 6 ||

In the realm of unreal objects, objects appear to be real. That which is the essence of consciousness in the dreaming and deep sleep states is the true form of that.

असत् पदार्थों में, पदार्थ वास्तविक प्रतीत होते हैं। जो स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था में चेतना का सार है, वही उसका वास्तविक रूप है।

7.184.7

सस्पन्दोऽपि हि निःस्पन्दः पर्वतोऽपि न पर्वतः। यथा स्वप्नेषु चिद्भावः स्वभावोऽर्थगतस्तथा ॥ ७ ॥

saspandoapi hi nihspandah parvatoapi na parvatah | yatha svapneshu chidbhavah svabhavoarthagatastatha || 7 ||

Even that which moves is motionless, and a mountain is not a mountain. Just as the state of consciousness in dreams, the inherent nature of objects is the same.

जो चलता है वह भी अचल है, और पर्वत पर्वत नहीं है। जैसे स्वप्न में चेतना की अवस्था, वैसे ही पदार्थों का स्वभाव है।

7.184.8

न स्वभावा न चैवार्थाः सन्ति सर्वात्मकोचिते। सर्गादौ कचितं रूपं यद्यथा तत्तथा स्थितम् ॥ ८ ॥

na svabhavah na chaivarthah santi sarvatmakochite | sargadau kachitam rupam yadyatha tattatha sthitam || 8 ||

There are no inherent natures or objects in the all-encompassing consciousness. Whatever form appears at the beginning of creation, it exists as it is.

सर्वव्यापी चेतना में कोई स्वभाव या पदार्थ नहीं हैं। सृष्टि के आरंभ में जो भी रूप प्रकट होता है, वह वैसे ही स्थित है।

7.184.9

न च नाम परं रूपं कचनाकचनात्मकम्। द्रव्यात्मा चिच्च चिद्व्योम स्थितमित्थं हि केवलम् ॥ ९ ॥

na cha nam param rupam kachanakachanatmakam | dravyatma chichcha chidvyoma sthitamittham hi kevalam || 9 ||

And there is no ultimate form that is both existent and non-existent. The essence of substance and consciousness is thus established as the only reality.

और न ही कोई अंतिम रूप है जो सत् और असत् दोनों है। पदार्थ और चेतना का सार इस प्रकार एकमात्र वास्तविकता के रूप में स्थापित है।

7.184.10

एकैव चिद्यथा स्वप्ने सेनायां जनलक्षताम्। गतेवाच्छैव कचति तथैवास्याः पदार्थता ॥ १० ॥

ekaiva chidyatha svapne senayam janalakshatam | gatevachchhaiva kachati tathaivasyah padarthata || 10 ||

Just as a single consciousness in a dream can manifest an army of countless people, so too the nature of objects appears in the same way.

जैसे स्वप्न में एक चेतना असंख्य लोगों की सेना का रूप धारण कर सकती है, वैसे ही पदार्थों की प्रकृति भी ऐसे ही प्रकट होती है।

7.184.11

यत्स्वतः स्वात्मनि स्वच्छे चित्वं कचकचायते। तत्तेनैव तदाकारं जगदित्यनुभूयते ॥ ११ ॥

yatsvataḥ svātmani svacche citkhaṃ kacakacāyate | tattenaiva tadākāraṃ jagadityanubhūyate || 11 ||

That which shines by itself in the pure self-luminous consciousness, that same consciousness is experienced as the world in its form.

जो स्वयं शुद्ध आत्मा में चेतना के रूप में चमकता है, वही चेतना उसी रूप में जगत के रूप में अनुभव की जाती है।

7.184.12

असत्यपि यथा वह्नावुष्णसंविद्धि भासते । संविन्मात्रात्मके व्योम्नि तथार्थः स्वस्वभासकः ॥ १२ ॥

asatyapi yathā vahnāvuṣṇasaṃviddhi bhāsate | saṃvinmātrātmake vyomni tathārthaḥ svasvabhāsakaḥ || 12 ||

Just as heat is perceived in fire, even though it is not real, similarly, in the sky of pure consciousness, the object is self-luminous.

जैसे आग में गर्मी दिखाई देती है, भले ही वह वास्तविक न हो, उसी प्रकार, शुद्ध चेतना के आकाश में, वस्तु स्वयंप्रकाश होती है।

7.184.13

असत्यपि यथा स्तम्भे स्वप्ने खे स्तम्भता विदः । तथेदमस्या नानात्वमनन्यदपि चान्यवत् ॥ १३ ॥

asatyapi yathā stambhe svapne khe stambhatā vidaḥ | tathedamasya nānātvamananyadapi cānyavat || 13 ||

Just as the perception of a pillar in a dream or in the sky is unreal, similarly, the diversity of this world is perceived as different, even though it is not different.

जैसे स्वप्न में या आकाश में स्तंभ की प्रत्यक्षण अवास्तविक होती है, उसी प्रकार, इस जगत की विविधता भिन्न दिखाई देती है, भले ही वह भिन्न न हो।

7.184.14

आदिसर्गे पदार्थत्वं तत्स्वभावाच्छमेव च । चिद्व्योम्ना यद्यथा बुद्धं तत्तथाद्यापि विन्दते ॥ १४ ॥

ādisarge padārthatvaṃ tatsvabhāvācchameva ca | cidvyomnā yadyathā buddhaṃ tattathādyāpi vindate || 14 ||

In the beginning of creation, the nature of objects is peaceful due to their inherent nature. Whatever is understood by the sky of consciousness is found to be the same even now.

सृष्टि के आरंभ में, वस्तुओं का स्वभाव उनके अपने स्वभाव के कारण शांत होता है। चेतना के आकाश द्वारा जो कुछ भी समझा जाता है, वह आज भी उसी रूप में पाया जाता है।

7.184.16

परमार्थाम्बराम्भोधावापः सर्गपरंपरा । परमार्थमहाकाशे शून्यता सर्गसंविदः ॥ १६ ॥

paramārthāmbarāmbhodhāvāpaḥ sargaparaṃparā | paramārthamahākāśe śūnyatā sargasaṃvidaḥ || 16 ||

In the ocean of the ultimate reality, the waters of creation flow in succession. In the great sky of the ultimate reality, there is the emptiness of the consciousness of creation.

परम वास्तविकता के समुद्र में, सृष्टि के जल क्रमशः बहते हैं। परम वास्तविकता के महान आकाश में, सृष्टि की चेतना की शून्यता है।

7.184.17

परमार्थश्च सर्गश्च पर्यायौ तरुवृक्षवत् । बोधादेतदबोधात्तु द्वैतं दुःखाय केवलम् ॥ १७ ॥

paramārthaśca sargaśca paryāyau taruvṛkṣavat | bodhādetadabodhāttu dvaitaṃ duḥkhāya kevalam || 17 ||

The ultimate reality and creation are synonymous, like a tree and a plant. From knowledge, this ignorance leads only to duality and suffering.

परमार्थ और सृष्टि परस्पर समानार्थक हैं, जैसे पेड़ और वृक्ष. ज्ञान से यह अज्ञान केवल द्वैत और दुःख की ओर ले जाता है.

7.184.18

परमार्थो जगच्चेदमेकमित्येव निश्चयः । अध्यात्मशास्त्रबोधेन भवेप्सैषा हि मुक्तता ॥ १८ ॥

paramārtho jagaccēdamēkamityēva niścayaḥ | adhyātmaśāstrabodhēna bhavēpsaiṣā hi muktatā || 18 ||

The ultimate reality is indeed this entire universe. This is the certain conclusion. Through the knowledge of spiritual scriptures, one attains liberation.

परमार्थ यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड ही है. यह निश्चित निष्कर्ष है. आध्यात्मिक शास्त्रों के ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होती है.

7.184.19

संकल्पस्य वपुर्ब्रह्म संकल्पकचिदाकृतेः । तदेव जगतो रूपं तस्माद्ब्रह्मात्मकं जगत् ॥ १९ ॥

saṃkalpasya vapurbrahma saṃkalpakacidākṛteḥ | tadeva jagato rūpaṃ tasmādbramhātmakaṃ jagat || 19 ||

The form of the universe is the result of the will of Brahman. Therefore, the universe is of the nature of Brahman.

ब्रह्म की इच्छा का रूप ही ब्रह्मांड का रूप है. इसलिए, ब्रह्मांड ब्रह्म के स्वभाव का है.

7.184.20

यतो वाचो निवर्तन्ते न निवर्तन्त एव वा । विधयः प्रतिषेधाश्च भावाभावदृशस्तथा ॥ २० ॥

yato vāco nivartante na nivartanta eva vā | vidhayaḥ pratiṣedhāśca bhāvābhāvadṛśastathā || 20 ||

From where words return, they do not return at all. Similarly, injunctions, prohibitions, and views of existence and non-existence.

जहाँ से शब्द लौटते हैं, वे वास्तव में लौटते नहीं हैं. इसी तरह, आज्ञाएँ, प्रतिबंध, और अस्तित्व और अनस्तित्व के दृष्टिकोण.

7.184.21

अमौनमौनं जीवात्म यत्पाषाणवदासनम् । यत्सदेवासदाभासं तद्ब्रह्माभिधमुच्यते ॥ २१ ॥

amauṇamauṇaṃ jīvātma yatpāṣāṇavadāsanam | yatsadevāsadābhāsaṃ tadbrahmābhidhamucyate || 21 ||

The individual soul, which is silent and motionless like a stone, and which appears as both real and unreal, is called Brahman.

जीवात्मा, जो मौन और पत्थर की तरह अचल है, और जो सत्य और असत्य दोनों के रूप में प्रकट होता है, उसे ब्रह्म कहा जाता है.

7.184.22

सर्वस्मिन्नेकसुघने ब्रह्मण्येव निरामये । का प्रवृत्तिर्निवृत्तिः का भावाभावादिवस्तुनः ॥ २२ ॥

sarvasminnekaśughane brahmaṇyeva nirāmaye | kā pravṛttirnivṛttiḥ kā bhāvābhāvādivastunaḥ || 22 ||

In the one, flawless Brahman, which is free from all impurities, what is the cause of activity and inactivity, and what is the nature of existence and non-existence?

एक निर्दोष ब्रह्म में, जो सभी दोषों से मुक्त है, क्या कारण है गतिविधि और अक्रियता का, और क्या है अस्तित्व और अनस्तित्व का स्वरूप?

7.184.23

एकस्यामेव निद्रायां सुषुप्तस्वप्नविभ्रमाः । यदा भान्त्यविचित्रायां चित्रा इव निरन्तराः ॥ २३ ॥

ekasyāmeva nidrāyāṃ suṣuptasvapnavibhramāḥ | yadā bhāntyavicitrāyāṃ citrā iva nirantarāḥ || 23 ||

In the state of deep sleep, which is uniform and without variety, dreams and illusions appear as varied and continuous.

गहरी नींद की अवस्था में, जो एकरूप और विविधता से रहित है, स्वप्न और भ्रम विविध और निरंतर प्रतीत होते हैं।

7.184.24

एतस्यां चित्खसत्तायां तथा मूलकसर्गकाः । बहवो भान्त्यचित्रायां चित्रा इव निरन्तराः ॥ २४ ॥

etasyāṃ citkhastattāyāṃ tathā mūlakasargakāḥ | bahavo bhāntyacitrāyāṃ citrā iva nirantarāḥ || 24 ||

In the state of pure consciousness, the various primary creations appear as varied and continuous.

शुद्ध चेतना की अवस्था में, विविध मूल सृष्टियाँ विविध और निरंतर प्रतीत होती हैं।

7.184.25

द्रव्ये द्रव्यान्तरं श्लिष्टं यत्कार्यान्तरमाक्षिपेत् । तद्वदन्तस्तथाभूतचित्सारं स्फुरणं मिथः ॥ २५ ॥

dravye dravyāntaraṃ śliṣṭaṃ yatkāryāntaramākṣipet | tadvadantaḥ tathābhūtacitsāraṃ sphuraṇaṃ mithaḥ || 25 ||

Just as one substance is intertwined with another, leading to various effects, similarly, the essence of consciousness manifests in various forms.

जैसे एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से जुड़ा होता है, जिससे विभिन्न परिणाम होते हैं, उसी प्रकार, चेतना का सार विभिन्न रूपों में प्रकट होता है।

7.184.26

सर्वे पदार्थाश्चित्सारमात्रमप्रतिघाः सदा । यथा भान्ति तथा भान्ति चिन्मात्रैकात्मतावशात् ॥ २६ ॥

sarve padārthāścitsāramātramapratighāḥ sadā | yathā bhānti tathā bhānti cinmātraikātmatāvaśāt || 26 ||

All objects are merely the essence of consciousness, always non-obstructive. They appear as they do due to the nature of pure consciousness.

सभी पदार्थ केवल चेतना के सार हैं, हमेशा अवरोध रहित। वे शुद्ध चेतना के स्वभाव के कारण ऐसे प्रतीत होते हैं।

7.184.27

चिन्मात्रैकात्मसारत्वाद्यथा संवेदनं स्थिताः । निःस्पन्दा निर्मनस्काराः स्फुरन्ति द्रव्यशक्तयः ॥ २७ ॥

cinmātraikātmasāratvādyathā saṃvedanaṃ sthitāḥ| niḥspandā nirmanaskārāḥ sphuranti dravyaśaktayaḥ || 27 ||

Due to the essence of pure consciousness, as awareness is established, the powers of substances shine, free from vibrations and mental modifications.

चिन्मात्र के आत्मसार के कारण, जैसे संवेदन स्थित होता है, वैसे ही निःस्पन्द और निर्मनस्कार द्रव्यशक्तियाँ स्फुरित होती हैं।

7.184.28

अविद्यमानमेवेदं दृश्यतेऽथानुभूयते । जगत्स्वप्न इवाशेषं सरुद्रोपेन्द्रपद्मजम् ॥ २८ ॥

avidyamānamevedaṃ dṛśyate'thānubhūyate| jagatsvapna ivāśeṣaṃ sarudropendrapadmajam || 28 ||

This non-existent world is seen and experienced like a dream, including all beings from Rudra to Indra and Brahma.

यह अविद्यमान (असत्य) जगत् स्वप्न की तरह दिखाई देता है और अनुभव किया जाता है, जिसमें रुद्र से लेकर इन्द्र और ब्रह्मा तक सभी शामिल हैं।

7.184.29

विचित्राः खलु दृश्यन्ते चिज्जले स्पन्दरीतयः । हर्षामर्षविषादोत्थजङ्गमस्थावरात्मनि ॥ २९ ॥

vicitrāḥ khalu dṛśyante cijjale spandarītayaḥ| harṣāmarṣaviṣādottha jaṅgamastāvarātmani || 29 ||

Various vibrations are seen in the ocean of consciousness, arising from joy, anger, sorrow, and manifesting in moving and non-moving beings.

चेतना के सागर में विविध स्पन्दन (कम्पन) दिखाई देते हैं, जो हर्ष, अमर्ष, विषाद से उत्पन्न होते हैं और चर और अचर प्राणियों में प्रकट होते हैं।

7.184.30

स्वभाववाताधूतस्य जगज्जालचमत्कृतेः। हा चिन्मरीचिपांश्वभ्रनीहारस्य विसारिता ॥ ३० ॥

svabhāvavātādhūtasya jagajjālacamatkṛteḥ| hā cinmarīcipāṃśvabhranīhārasya visāritā || 30 ||

Alas, the wonder of the world's illusion, blown by the wind of nature, is spread like the mist of consciousness, a mirage, and a cloud.

हाय, प्रकृति के हवा से उड़ाये गए जगत् के जाल का चमत्कार, चेतना की धुंध, मृगतृष्णा, और बादल की तरह फैला हुआ है।

7.184.31

यथा केशोण्ड्रकं व्योम्नि भाति व्यामलचक्षुषः। तथैवेयं जगद्भान्तिर्भात्यनात्मविदोऽम्बरे ॥ ३१ ॥

yathā keśoṇḍrakaṃ vyomni bhāti vyāmalacakṣuṣaḥ| tathaiveyaṃ jagadbhāntirbhātyanātmavido'mbare || 31 ||

Just as a hair floating in the sky appears to those with impure vision, so does this world appear to those who do not know the self, in the sky.

जैसे आकाश में एक बाल तैरता हुआ दिखाई देता है अशुद्ध दृष्टि वालों को, वैसे ही यह जगत् आत्मा को न जानने वालों को आकाश में दिखाई देता है।

7.184.32

यावत्संकल्पितं तावद्यथा संकल्पितं तथा। यथा संकल्पनगरं कचतीदं जगत्तथा ॥ ३२ ॥

yāvatsaṅkalpitaṃ tāvadyathā saṅkalpitaṃ tathā | yathā saṅkalpanagaraṃ kacatīdaṃ jagattathā || 32 ||

Whatever is conceived, that is how it manifests. Just as the city of imagination, so does this world function.

जो संकल्पित होता है, वह उसी तरह से प्रकट होता है। जिस तरह से संकल्पनगर है, उसी तरह से यह जगत् चलता है।

7.184.33

संकल्पनगरे यावत्संकल्पसकला स्थितिः। भवत्येवाप्यसद्रूपा सतीवानुभवे स्थिता ॥ ३३ ॥

saṅkalpanagare yāvatsaṅkalpasakalā sthitiḥ | bhavatyevāpyasadrūpā satīvānubhave sthitā || 33 ||

In the city of imagination, there is a state of complete imagination. It exists even in the form of non-existence, appearing real in experience.

संकल्पनगर में, संकल्प की पूर्ण स्थिति होती है। यह असत् रूप में भी होता है, अनुभव में सत् प्रतीत होता है।

7.184.34

प्रवहत्येव नियतिर्नियतार्थप्रदायिनी। स्थावरं जङ्गमं चैव तिष्ठत्येव यथाक्रमम् ॥ ३४ ॥

pravahatyeva niyatirniyatārthapradāyinī | sthāvaraṃ jaṅgamaṃ caiva tiṣṭhatyeva yathākramam || 34 ||

Destiny flows, bestowing determined results. Both the immovable and the movable exist according to their order.

नियति प्रवाहित होती है, निश्चित परिणाम देती है। स्थावर और जंगम दोनों अपने क्रम के अनुसार स्थित हैं।

7.184.35

जायते जङ्गमं जीवात्स्थावरं स्थावरादपि। नियत्याधो वहत्यम्बु गच्छत्यूर्ध्वमथानलः ॥ ३५ ॥

jāyate jaṅgamaṃ jīvātsthāvaraṃ sthāvarādapi | niyatyādho vahatyambu gacchatyūrdhvamathānalaḥ || 35 ||

The movable is born from the living, and the immovable from the immovable. Water flows downwards due to destiny, and fire moves upwards.

जंगम जीव से उत्पन्न होता है, और स्थावर स्थावर से उत्पन्न होता है। नियति के कारण जल नीचे बहता है, और अग्नि ऊपर जाता है।

7.184.36

वहन्ति देहयन्त्राणि ज्योतींषि प्रतपन्ति च । वायवो नित्यगतयः स्थिताः शैलादयः स्थिराः ॥ ३६ ॥

vahanti dehayantrāṇi jyotīṃṣi pratapanti ca | vāyavo nityagatayaḥ sthitāḥ śailādayaḥ sthirāḥ || 36 ||

The bodies carry, the luminaries shine, the winds constantly move, and the mountains and others are stable.

देह वहन करते हैं, ज्योतियाँ प्रकाशित होती हैं, वायु निरंतर चलती है, और पर्वत आदि स्थिर हैं।

7.184.37

ज्योतिर्मयं विवृत्तं तु धारासाराम्बरीकृतम् । युगसंवत्सराद्यात्म कालचक्रं प्रवर्तते ॥ ३७ ॥

jyotirmayaṃ vivṛttaṃ tu dhārāsārāmbarīkṛtam | yugasaṃvatsarādyātma kālacakraṃ pravartate || 37 ||

The luminous, expanded universe, adorned with the essence of streams, sets in motion the wheel of time, which encompasses eras and years.

प्रकाशमय, विस्तृत ब्रह्मांड, धाराओं के सार से सजा हुआ, युगों और वर्षों के आत्मा वाले कालचक्र को चलाता है।

7.184.38

भूतलैकान्तराब्ध्यद्रिसंनिवेशः स्थितायते । भावाभावग्रहोत्सर्गद्रव्यशक्तिश्च तिष्ठति ॥ ३८ ॥

bhūtalaiakāntarābdhyadrisaṃniveśaḥ sthitāyate | bhāvābhāvagrahotsargadravyaśaktiśca tiṣṭhati || 38 ||

The arrangement of the earth, oceans, and mountains remains stable. The power of elements, which includes the creation and destruction of beings, also remains.

पृथ्वी, समुद्र और पर्वतों का व्यवस्थापन स्थिर रहता है। जीवों के उत्पादन और विनाश की शक्ति सहित तत्वों की शक्ति भी बनी रहती है।

7.184.39

कुन्ददन्त उवाचप्राग्दृष्टं स्मृतिमायाति तत्स्वसंकल्पनान्यतःभाति प्रथमसर्गे तु कस्य प्राग्दृष्टभासनम् ॥ ३९ ॥

kundadanta uvācaprāgdṛṣṭaṃ smṛtimāyāti tatsvasaṃkalpanānyataḥbhāti prathamasarge tu kasya prāgdṛṣṭabhāsanam || 39 ||

Kundadanta said: Memory arises from previous perception. It appears according to one's own conception. In the first creation, whose preconceived notion is it?

कुन्ददन्त ने कहा: स्मृति पूर्व दृष्टि से उत्पन्न होती है। यह अपनी संकल्पना के अनुसार प्रकट होती है। प्रथम सृजन में, किसका पूर्व दृष्टि भासन है?

7.184.40

तापस उवाच । अपूर्वं दृश्यते सर्वं स्वप्ने स्वमरणं यथा । प्राग्दृष्टं दृष्टमित्येव तत्रैवाभ्यासतः स्मृतिः ॥ ४० ॥

tāpasa uvāca | apūrvaṃ dṛśyate sarvaṃ svapne svamaraṇaṃ yathā | prāgdṛṣṭaṃ dṛṣṭamityeva tatraivābhyāsataḥ smṛtiḥ || 40 ||

The ascetic said: Everything appears new, like one's own death in a dream. That which is seen before is remembered only through practice.

तापस ने कहा: सब कुछ नया प्रतीत होता है, जैसे स्वप्न में अपनी मृत्यु। जो पहले देखा गया है, वह केवल अभ्यास से याद आता है।

7.184.41

चित्त्वाच्चिद्व्योम्नि कचति जगत्संकल्पपत्तनम्। न सन्नासदिदं तस्माद्भाताभातं यतः स्वतः ॥ ४१ ॥

cittvāccidvyomni kacati jagatsaṃkalpapattanam | na sannāsadidaṃ tasmādbhātābhātaṃ yataḥ svataḥ || 41 ||

Consciousness shines in the space of pure awareness, manifesting the world through its resolutions. Therefore, this is neither existent nor non-existent; it appears and disappears by itself.

चेतना शुद्ध चेतना के आकाश में चमकती है, अपनी संकल्पनाओं के माध्यम से जगत को प्रकट करती है। इसलिए, यह न तो अस्तित्व में है न ही अनस्तित्व में; यह स्वयं प्रकट होता है और अदृश्य हो जाता है।

7.184.42

चित्प्रसादेन संकल्पस्वप्नाद्यद्यानुभूयते। शुद्धं चिद्व्योम संकल्पपुरं मा स्मर्यतां कथम् ॥ ४२ ॥

citprasādena saṃkalpasvapnādyadyānubhūyate | śuddhaṃ cidvyoma saṃkalpapuraṃ mā smaryatāṃ katham || 42 ||

By the grace of consciousness, whatever is experienced in the form of thoughts and dreams, that pure consciousness-space, the city of thoughts, should not be forgotten.

चित् के प्रसाद से जो कुछ भी संकल्प और स्वप्न के रूप में अनुभव होता है, उस शुद्ध चित् व्योम, संकल्प पुर को कभी न भूलना चाहिए।

7.184.43

हर्षामर्षविनिर्मुक्तैर्दुःखेन च सुखेन च। प्रकृतेनैव मार्गेण ज्ञैश्चक्रैरिव गम्यते ॥ ४३ ॥

harṣāmarṣavinirmuktairduḥkhena ca sukhena ca | prakṛtenaiva mārgeṇa jñaiścakrairiva gamyate || 43 ||

Free from joy and sorrow, through pain and pleasure, one travels the natural path, like the wise ones who move through the wheel of life.

हर्ष और अमर्ष से मुक्त होकर, दुःख और सुख से, प्राकृतिक मार्ग से ही चलते हैं, जैसे ज्ञानी लोग जीवन के चक्र में चलते हैं।

7.184.44

निद्राव्यपगमे स्वप्ननगरे यादृशं स्मृतौ। चिद्व्योमात्म परं विद्धि तादृशं त्रिजगद्भ्रमम् ॥ ४४ ॥

nidrāvyapagame svapnanagare yādṛśaṃ smṛtau | cidvyomātma paraṃ viddhi tādṛśaṃ trijagadbhramam || 44 ||

Upon waking from sleep, whatever is remembered in the dream city, know that the supreme self of consciousness-space is like that, the illusion of the three worlds.

निद्रा से उठने पर, स्वप्न नगर में जो कुछ भी याद आता है, उसे चित् व्योम आत्मा के रूप में जानें, जो तीनों जगतों का भ्रम है।

7.184.45

संविदाभासमात्रं यज्जगदित्यभिशब्दितम्। तत्संविद्व्योम संशान्तं केवलं विद्धि नेतरत् ॥ ४५ ॥

saṃvidābhāsamātraṃ yajjagadityabhiśabditam | tatsaṃvidvyoma saṃśāntaṃ kevalaṃ viddhi netarat || 45 ||

Whatever is called the world, it is merely a reflection of consciousness. Know that it is the peaceful consciousness-space alone, and nothing else.

जो कुछ भी जगत कहलाता है, वह चित् का मात्र प्रतिबिंब है। जानें कि यह शान्त चित् व्योम ही है, और कुछ नहीं।

7.184.46

यस्मिन्सर्वं यतः सर्वं यत्सर्वं सर्वतश्च यत् । सर्वं सर्वतया सर्वं तत्सर्वं सर्वदा स्थितम् ॥ ४६ ॥

yasmin sarvaṃ yataḥ sarvaṃ yat sarvaṃ sarvataśca yat | sarvaṃ sarvatayā sarvaṃ tat sarvaṃ sarvadā sthitam || 46 ||

In which all is, from which all is, which is all, and which is all in all ways, that is all, always present.

जिसमें सब कुछ है, जिससे सब कुछ है, जो सब कुछ है, और जो सब कुछ है, वह सब कुछ है, हमेशा विद्यमान है।

7.184.47

यथेयं संसृतिर्ब्राह्मी भवतो यद्भविष्यति । यथा भानं च दृश्यस्य तदेतत्कथितं मया ॥ ४७ ॥

yatheyaṃ saṃsṛtirbrāhmī bhavato yadbhaviṣyati | yathā bhānaṃ ca dṛśyasya tadetatkathitaṃ mayā || 47 ||

As this Brahmic cycle of existence will be for you, so has it been explained to me by the seer.

जैसे यह ब्रह्मी संसृति आपके लिए होगी, वैसे ही यह दृश्य का प्रकाश है, यह मुझे बताया गया है।

7.184.48

उत्तिष्ठतं व्रजतमास्पदमद्धि पद्मं भृङ्गाविवाभिमतमाशु विधीयतां स्वम् । तिष्ठामि दुःखमलमस्तसमाधिसंस्थं भूयः समाधिमहमङ्ग चिरं विशामि ॥ ४८ ॥

uttiṭṣṭhaṃ vrajatamāspadamahni padmaṃ bhṛṅgāvivābhimatamāśu vidhīyatāṃ svam | tiṣṭhāmi duḥkhamalamastasamādhisansthaṃ bhūyaḥ samādhimahamaṅga ciraṃ viśāmi || 48 ||

Arise and go to your abode, O bee, quickly fulfill your desire like a bee to a lotus. I remain in the bliss of samadhi, free from sorrow, and I will enter into deep meditation again for a long time.

उठो और अपने निवास पर जाओ, हे भृंग, शीघ्र ही अपनी इच्छा पूरी करो जैसे भृंग कमल की ओर। मैं दुःख से मुक्त समाधि के आनंद में रहता हूँ, और मैं फिर से लंबे समय तक गहरी ध्यान में प्रवेश करूँगा।

Chapter 185

7.185.1

कुन्ददन्त उवाच । जरन्मुनिरपीत्युक्त्वा ध्यानमीलितलोचनः । आसीदस्पन्दितप्राणमनाश्चित्र इवार्पितः ॥ १ ॥

kundadanta uvāca | jaranmunirapītyuktvā dhyānamīlitalocanaḥ | āsīdasapnditaprāṇamanāścitra ivārpiḥ || 1 ||

Kundadanta said: After saying 'Jaranmuni,' with eyes closed in meditation, he remained with unmoving breath, as if his mind was absorbed in a painting.

कुन्ददन्त ने कहा: 'जरन्मुनि' कहकर, ध्यान में मग्न आँखों के साथ, वह अचल प्राण के साथ बैठा रहा, मानो उसका मन चित्र में डूबा हुआ हो।

7.185.2

आवाभ्यां प्रणयोदारैः प्रार्थितोऽपि पुनःपुनः । वाक्यैः संसारमविदन्न वचो दत्तवान्पुनः ॥ २ ॥

āvābhyāṃ praṇayodāraiḥ prārthito'pi punaḥpunaḥ | vākyaiḥ saṃsāramavidann na vaco dattavānpunaḥ || 2 ||

Even though he was repeatedly requested with affectionate words by both of them, he did not speak again, knowing the worldly affairs.

यद्यपि दोनों ने बार-बार स्नेहपूर्ण शब्दों से अनुरोध किया, फिर भी वह संसार के मामलों को जानते हुए फिर से कुछ नहीं बोला।

7.185.3

आवां प्रदेशतस्तस्माच्चलित्वा मन्दमुत्सुकौ । दिनैः कतिपयैः प्राप्तौ गृहं मुदितबान्धवम् ॥ ३ ॥

āvāṃ pradeśatastasmāccalitvā mandamutsukau | dinaiḥ katipayaiḥ prāptau gṛhaṃ muditabāndhavam || 3 ||

Both of them, moving slowly from that place with enthusiasm, reached home after a few days, where their relatives were delighted.

दोनों उस स्थान से धीरे-धीरे उत्सुकता के साथ चले और कुछ दिनों के बाद घर पहुँचे, जहाँ उनके रिश्तेदार खुश थे।

7.185.4

अथ तत्रोत्सवं कृत्वा कथाः प्रोच्य चिरंतनीः । स्थितास्तावद्वयं यावत्सप्तापि भ्रातरोऽथ ते ॥ ४ ॥

atha tatrotavaṃ kṛtvā kathāḥ procya ciraṃtanīḥ | sthitāstāvadvayaṃ yāvatsaptāpi bhrātaro'tha te || 4 ||

Then, having celebrated a festival there and narrated ancient stories, they stayed there until the seven brothers also reached there.

फिर, वहाँ एक उत्सव मनाकर और पुरानी कहानियाँ सुनाकर, वे तब तक वहाँ रहे जब तक सात भाइयों ने भी वहाँ नहीं पहुँच गए।

7.185.5

क्रमेण विलयं प्राप्ताः प्रलयेष्वर्णवा इव । मुक्तोऽसौ मे सखैवैक एकार्णव इवाष्टकः ॥ ५ ॥

krameṇa vilayaṃ prāptāḥ pralayeṣvarṇavā iva | mukto'sau me sakhaivaika ekārṇava ivāṣṭakaḥ || 5 ||

Gradually, they attained dissolution in the great deluge like the syllables in the dissolution of the universe. He alone, my friend, was liberated like an octopus in the ocean.

धीरे-धीरे, वे महाप्रलय में विलीन हो गए, जैसे अक्षर ब्रह्मांड के विलय में होते हैं। मेरा एकमात्र मित्र मुक्त हो गया, जैसे समुद्र में एक ऑक्टोपस।

7.185.6

ततः कालेन सोऽप्यस्तं दिनान्तेऽर्क इवागतः । अहं दुःखपरीतात्मा परं वैधुर्यमागतः ॥ ६ ॥

tataḥ kālena so'pyastaṃ dinānte'rka ivāgataḥ | ahaṃ duḥkhaparītātmā paraṃ vaidhuryamāgataḥ || 6 ||

Then, over time, he too set like the sun at the end of the day | I, with a heart filled with sorrow, attained supreme widowhood

फिर, समय के साथ, वह भी दिन के अंत में सूर्य की तरह अस्त हो गया | मैं, दुःख से भरे हृदय के साथ, परम वैधव्य को प्राप्त हुआ

7.185.7

ततोऽहं दुःखितो भूयः कदम्बतरुतापसम् । गतो दुःखोपघाताय तज्ज्ञानं प्रष्टुमादृतः ॥ ७ ॥

tato'haṃ duḥkhito bhūyaḥ kadambatarutāpasam | gato duḥkhopaghātāya tajjñānaṃ praṣṭumādṛtaḥ || 7 ||

Then, I, being more sorrowful, went to the ascetic under the Kadamba tree | To dispel my sorrow, I eagerly asked for his knowledge

फिर, मैं, और अधिक दुःखी होकर, कदम्ब वृक्ष के नीचे तपस्वी के पास गया | अपने दुःख को दूर करने के लिए, मैंने उसके ज्ञान के लिए उत्सुकता से पूछा

7.185.8

तत्र मासत्रयेणासौ समाधिविरतोऽभवत् । प्रणतेन मया पृष्टः सन्निदं प्रोक्तवानथ ॥ ८ ॥

tatra māsatreyeṇāsau samādhivirato'bhava | praṇaten mayā pṛṣṭaḥ sannidaṃ proktavānatha || 8 ||

There, after three months, he came out of his meditation | When I bowed and asked him, he spoke to me

वहाँ, तीन महीनों के बाद, वह अपने ध्यान से बाहर आया | जब मैंने उसे प्रणाम किया और पूछा, तो उसने मुझसे बात की

7.185.9

कदम्बतापस उवाच । अहं समाधिविरतः स्थातुं शक्नोमि न क्षणम् । समाधिमेव प्रविशाम्यहमाशु कृतत्वरः ॥ ९ ॥

kadambatāpas uvāca | ahaṃ samādhiviratataḥ sthātuṃ śaknomi na kṣaṇam | samādhimeva praviśāmyahamāśu kṛtatvaraḥ || 9 ||

The ascetic under the Kadamba tree said: 'I cannot stay out of meditation for even a moment | I will quickly enter meditation again'

कदम्ब वृक्ष के नीचे तपस्वी ने कहा: 'मैं ध्यान से बाहर एक पल के लिए भी नहीं रह सकता | मैं फिर से जल्दी ध्यान में प्रवेश करूंगा'

7.185.10

परमार्थोपदेशस्ते नाभ्यासेन विनानघ । लगत्यत्र परां युक्तिमिमां शृणु ततः कुरु ॥ १० ॥

paramārthopadeśaste nābhyāsena vinānagha | lagatyatra parāṃ yuktimimāṃ śṛṇu tataḥ kuru || 10 ||

O sinless one, the highest spiritual instruction is not possible without practice | Listen to this supreme logic here, then do it

हे निष्पाप, परम आध्यात्मिक उपदेश अभ्यास के बिना संभव नहीं है | यहाँ इस परम तर्क को सुनो, फिर इसे करो

7.185.11

अयोध्यानाम पूरस्ति तत्रास्ति वसुधाधिपः । नाम्ना दशरथस्तस्य पुत्रो राम इति श्रुतः ॥ ११ ॥

ayodhyānām pūrasti tatrāsti vasudhādhipaḥ | nāmnā daśarathastasya putro rāma iti śrutaḥ || 11 ||

In the city of Ayodhya, there is a king named Dasharatha. His son is known as Rama.

अयोध्या नामक नगर में वसुधाधिप दशरथ हैं। उनके पुत्र का नाम राम है।

7.185.12

सकाशं तत्र गच्छ त्वं तस्मै कुलगुरुः किल । वसिष्ठाख्यो मुनिश्रेष्ठः कथयिष्यति संसदि ॥ १२ ॥

sakāśaṃ tatra gaccha tvaṃ tasmai kulaguruḥ kila | vasiṣṭhākhyo muniśreṣṭhaḥ kathayiṣyati saṃsadi || 12 ||

Go to that place, where the family priest, the great sage Vasistha, will narrate the divine story in the assembly.

वहाँ जाओ, जहाँ कुलगुरु महर्षि वसिष्ठ सभा में दिव्य कथा कहेंगे।

7.185.13

मोक्षोपायकथां दिव्यां तां श्रुत्वा सुचिरं द्विज । विश्रान्तिमेष्यसि परे पदेऽहमिव पावने ॥ १३ ॥

mokṣopāyakathāṃ divyāṃ tāṃ śrutvā suciraṃ dvija | viśrāntim eṣyasi pare pade'hamiva pāvane || 13 ||

O Brahmin, by listening to this divine story of the means to liberation, you will attain peace in the supreme, purifying abode.

हे ब्राह्मण, मोक्ष के उपाय की इस दिव्य कथा को सुनकर तुम शुद्ध परम पद में शांति पाओगे।

7.185.14

इत्युक्त्वा स समाधानरसायनमहार्णवम् । विवेशाहमिमं देशं त्वत्सकाशमुपागतः ॥ १४ ॥

ityuktvā sa samādhānrasāyanamahārṇavam | viveśāhamimaṃ deśaṃ tvatsakāśamupāgataḥ || 14 ||

Having said this, he entered the great ocean of the elixir of tranquility, and thus I have come to your presence.

ऐसा कहकर, वह शांति के रसायन के महासागर में प्रवेश कर गया, और इस प्रकार मैं आपके पास आया हूँ।

7.185.16

श्रीराम उवाच । स कुन्ददन्त इत्यादिकथाकथनकोविदः । स्थितस्ततःप्रभृत्येव मत्समीपगतः सदा ॥ १६ ॥

śrīrāma uvāca | sa kundadanta ityādikathākathanakovidaḥ | sthitastataḥprabhṛtyeva matsamīpagataḥ sadā || 16 ||

Shri Rama said, 'That Kundadanta, who is skilled in narrating various stories, has been with me since then.'

श्री राम ने कहा, 'वह कुंददंत, जो विविध कथाओं का कथन करने में कुशल है, तब से सदा मेरे साथ है।'

7.185.17

स एष कुन्ददन्ताख्यो द्विजः पार्श्वे समास्थितः । श्रुतवान्सहितामेतां मोक्षोपायाभिधामिह ॥ १७ ॥

sa eṣa kundadantākhyo dvijaḥ pārśve samāsthitaḥ | śrutavānsahitāmetāṃ mokṣopāyābhidhāmiha || 17 ||

This brahmin named Kundadanta is standing by my side. He has heard this discourse on the means of liberation.

यह कुन्ददन्त नामक ब्राह्मण मेरे पास खड़ा है। उसने इस मोक्ष के उपाय की बात सुनी है।

7.185.18

स एष कुन्ददन्ताख्यो मम पार्श्वगतो द्विज । अद्य निःसंशयो जातो न वेति परिपृच्छ्यताम् ॥ १८ ॥

sa eṣa kundadantākhyo mama pārśvagato dvija | adya niḥsaṃśayo jāto na veti paripṛcchyatām || 18 ||

This brahmin named Kundadanta is by my side. Today, he has become free from doubts. There is no need to ask him.

यह कुन्ददन्त नामक ब्राह्मण मेरे पास है। आज, उसके सभी संदेह दूर हो गए हैं। उससे पूछने की आवश्यकता नहीं है।

7.185.19

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इत्युक्ते राघवेणाथ प्रोवाच वदतांवरः । स वसिष्ठो मुनिश्रेष्ठः कुन्ददन्तं विलोकयन् ॥ १९ ॥

śrīvālmīkiruvāca | ityukte rāghaveṇātha provāca vadatāṃvaraḥ | sa vasiṣṭho muniśreṣṭhaḥ kundadantaṃ vilokayan || 19 ||

Valmiki said: Having heard this from Raghava, the best among speakers, Vasistha, the foremost sage, looking at Kundadanta, spoke.

वाल्मीकि ने कहा: रघुवंशी से यह सुनकर, वक्ताओं में श्रेष्ठ वसिष्ठ, मुनियों में सर्वश्रेष्ठ, कुन्ददन्त की ओर देखकर बोले।

7.185.20

श्रीवसिष्ठ उवाच । कुन्ददन्त द्विजवर कथ्यतां किं त्वयानघ । बुद्धं श्रुतवता ज्ञेयं मदुक्तं मोक्षदं परम् ॥ २० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kundadanta dvijavara kathyatāṃ kiṃ tvayānagha | buddhaṃ śrutavatā jñeyaṃ maduktaṃ mokṣadaṃ param || 20 ||

Vasistha said: O Kundadanta, the best among brahmins, tell me what you have understood from what you have heard. My words are the supreme means to liberation.

वसिष्ठ ने कहा: हे कुन्ददन्त, ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, बताओ कि तुमने जो सुना है उससे क्या समझा है। मेरे शब्द मोक्ष के परम उपाय हैं।

7.185.21

कुन्ददन्त उवाच । सर्वसंशयविच्छेदि चेत एव जयाय मे । सर्वसंशयविच्छेदो ज्ञातं ज्ञेयमखण्डितम् ॥ २१ ॥

kundadanta uvāca | sarvasaṃśayavicchedi cet ēva jayāya mē | sarvasaṃśayavicchēdo jñātaṃ jñēyamakhaṇḍitam || 21 ||

Kundadanta said: If the mind itself is the destroyer of all doubts, then the destruction of all doubts is known and should be known as flawless.

कुन्ददन्त ने कहा: यदि मन ही सभी संदेहों का नाश करने वाला है, तो सभी संदेहों का नाश जाना जाता है और इसे दोषरहित जानना चाहिए।

7.185.22

ज्ञातं ज्ञातव्यममलं दृष्टं द्रष्टव्यमक्षतम् । प्राप्तं प्राप्तव्यमखिलं विश्रान्तोऽस्मि परे पदे ॥ २२ ॥

jñātaṃ jñātavyamamalaṃ dṛṣṭaṃ draṣṭavyamakṣatam | prāptaṃ prāptavyamakhilaṃ viśrānto'smi pare pade || 22 ||

I have known what is to be known, seen what is to be seen, and attained what is to be attained. I am at peace in the supreme state.

मैंने जाना है जो जानना था, देखा है जो देखना था, और प्राप्त किया है जो प्राप्त करना था। मैं परम अवस्था में शांत हूँ।

7.185.23

बुद्धेयं त्वदिदं सर्वं परमार्थधनं घनम् । अनन्येनात्मनो व्योम्नि जगद्रूपेण जृम्भितम् ॥ २३ ॥

buddheyaṃ tvadidaṃ sarvaṃ paramārthadhanaṃ ghanam | ananyenātmano vyomni jagadrūpeṇa jṛmbhitam || 23 ||

This entire universe is the manifestation of your consciousness, the dense treasure of ultimate reality. It expands in the infinite space of the self, taking the form of the world.

यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड आपकी चेतना का प्रकटीकरण है, परम सत्य का घना धन। यह आत्मा के अनंत आकाश में फैलता है, जगत के रूप में।

7.185.24

सर्वात्मकतया सर्वरूपिणः सर्वगात्मनः । सर्वं सर्वेण सर्वत्र सर्वदा संभवत्यलम् ॥ २४ ॥

sarvātmakatayā sarvarūpiṇaḥ sarvagātmanaḥ | sarvaṃ sarveṇa sarvatra sarvadā saṃbhavatyalam || 24 ||

By the nature of being the self of all, the one who takes all forms and pervades everywhere, everything exists everywhere and always.

सबके आत्मा होने के कारण, जो सभी रूपों को धारण करता है और सर्वव्यापी है, सब कुछ हर जगह और हमेशा मौजूद है।

7.185.25

संभवन्ति जगन्त्यन्तः सिद्धार्थकणकोटरे । न संभवन्ति च यथा ज्ञातमेतदशेषतः ॥ २५ ॥

saṃbhavanti jagantyantaḥ siddhārthakaṇakoṭare | na saṃbhavanti ca yathā jñātametadaśeṣataḥ || 25 ||

All things arise within the treasure of accomplished meanings, but they do not arise as they are known completely.

सभी चीजें सिद्ध अर्थों के खजाने में उत्पन्न होती हैं, लेकिन वे पूरी तरह से जाने जाने के रूप में उत्पन्न नहीं होतीं।

7.185.26

गृहेऽन्तः संभवत्येव सप्तद्वीपा वसुंधरा । गेहं च शून्यमेवास्ते सत्यमेतदसंशयम् ॥ २६ ॥

gṛhe'ntaḥ saṃbhavatyeva saptadvīpā vasuṃdharā | gehaṃ ca śūnyamevāste satyametadasaṃśayam || 26 ||

Within the home, the seven continents of the earth indeed arise. And the home itself is truly empty, this is the undoubted truth.

घर के भीतर, पृथ्वी के सात महाद्वीप उत्पन्न होते हैं। और घर खुद वास्तव में खाली है, यह निस्संदेह सत्य है।

7.185.27

यद्यद्यदा वस्तु यथोदितात्म भातीह भूतैरनुभूयते च । तत्तत्तदा सर्वघनस्तथास्ते ब्रह्मेत्थमाद्यन्तविमुक्तमस्ति ॥ २७ ॥

yadyadyadā vastu yathoditātma bhātīha bhūtairanubhūyate ca | tattattadā sarvaghanastathāste brahmetthamādyantavimuktamasti || 27 ||

Whatever object is perceived as it is described, and is experienced by beings, that object exists in its entirety as Brahman, which is free from beginning and end.

जो भी वस्तु जैसी बताई गई है वैसी ही दिखाई देती है और प्राणियों द्वारा अनुभव की जाती है, वह वस्तु उस समय पूर्ण रूप से ब्रह्म के रूप में स्थित होती है, जो आदि और अंत से मुक्त है।

Chapter 186

7.186.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । कुन्ददन्ते वदत्येवं वसिष्ठो भगवान्मुनिः । उवाचेदमनिन्द्यात्मा परमार्थोचितं वचः ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | kundadante vadatyevaṃ vasiṣṭho bhagavānmuniḥ | uvācedamaniṇdyātmā paramārthocitaṃ vacaḥ || 1 ||

Sri Valmiki said: Thus spoke Kundadanta, and the venerable sage Vasistha, whose self is pure, spoke these words appropriate to the ultimate truth.

श्री वाल्मीकि ने कहा: कुंददंते ने ऐसा कहा, और पवित्र आत्मा वशिष्ठ मुनि ने परमार्थ के अनुकूल ये शब्द कहे।

7.186.2

श्रीवसिष्ठ उवाच । बत विज्ञानविश्रान्तिरस्य जाता महात्मनः । करामलकवद्विश्वं ब्रह्मेति परिपश्यति ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bata vijñānaviśrāntirasya jātā mahātmanaḥ | karāmalakavadvīśvaṃ brahmeti paripaśyati || 2 ||

Sri Vasistha said: Indeed, the great soul has attained the rest in knowledge and sees the world as Brahman, like a gooseberry in the palm.

श्री वशिष्ठ ने कहा: वास्तव में, महात्मा ने ज्ञान में विश्राम पाया है और वह विश्व को हाथ के अमलक (आँवला) की तरह ब्रह्म के रूप में देखता है।

7.186.3

किलेदं भ्रान्तिमात्रात्म विश्वं ब्रह्मेति भात्यजम् । भ्रान्तिर्ब्रह्मैव च ब्रह्म शान्तमेकमनामयम् ॥ ३ ॥

kiledaṃ bhrāntimātrātma viśvaṃ brahmeti bhātyajam | bhrāntirbrahmaiva ca brahma śāntamekamanāmayam || 3 ||

This world, which is merely an illusion, appears as Brahman. The illusion itself is Brahman, the peaceful, one, and flawless Brahman.

यह विश्व, जो केवल भ्रांति है, ब्रह्म के रूप में प्रकट होता है। भ्रांति स्वयं ही ब्रह्म है, शांत, एक, और निर्दोष ब्रह्म।

7.186.4

यद्यथा येन यत्रास्ति यादृग्यावद्यदा यतः । तत्तथा तेन तत्रास्ति तादृग्तावत्तदा ततः ॥ ४ ॥

yadyathā yena yatrāsti yādṛgyāvadyadā yataḥ | tattathā tena tatrāsti tādṛgtāvattadā tataḥ || 4 ||

Whatever exists in whatever form, wherever, in whatever manner, to whatever extent, and whenever, it exists in that form, in that manner, to that extent, and at that time.

जो कुछ भी किसी भी रूप में, कहीं भी, किसी भी तरीके से, किसी भी हद तक, और किसी भी समय पर है, वह उसी रूप में, उसी तरीके से, उसी हद तक, और उसी समय पर है।

7.186.5

शिवं शान्तमजं मौनममौनमजरं ततम् । सुशून्याशून्यमभवमनादिनिधनं ध्रुवम् ॥ ५ ॥

śivaṃ śāntamajaṃ maunamamaunamajaraṃ tatam | suśūnyāśūnyamabhavamanādinidhanaṃ dhruvam || 5 ||

Brahman is auspicious, peaceful, unborn, silent, non-silent, ageless, pervading, perfectly void, not void, non-existent, without beginning or end, and eternal.

ब्रह्म कल्याणकारी, शांत, अजन्मा, मौन, अमौन, अजर, व्यापक, पूर्ण रूप से शून्य, शून्य नहीं, अस्तित्वहीन, अनादि, अनंत, और नित्य है।

7.186.6

यस्या यस्यास्त्ववस्थायाः क्रियते संविदा भरः । सा सा सहस्रशाखत्वमेति सेकैर्यथा लता ॥ ६ ॥

yasyā yasyāstvavasthāyāḥ kriyate saṃvidā bharaḥ | sā sā sahasraśākhatvameti sekairyathā latā || 6 ||

Whatever state is experienced through awareness, that state expands like a vine with a thousand branches.

जो भी अवस्था चेतना के द्वारा अनुभव की जाती है, वह अवस्था हजारों शाखाओं वाली लता की तरह फैलती है।

7.186.7

परो ब्रह्माण्डमेवाणुश्चिद्व्योम्नोन्तःस्थितो यतः । परमाणुरेव ब्रह्माण्डमन्तःस्थितजगद्यतः ॥ ७ ॥

paro brahmāṇḍamevāṇuścidvyomnontaḥsthito yataḥ | paramāṇureva brahmāṇḍamantaḥsthita jagadyataḥ || 7 ||

The supreme is the atom within the cosmic space of consciousness, and the atom is the cosmos containing the universe within.

परम ब्रह्माण्ड के अंतर्गत चेतना के आकाश में अणु है, और अणु ही ब्रह्माण्ड है जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्थित है।

7.186.8

तस्माच्चिदाकाशमनादिमध्यमखण्डितं सौम्यमिदं समस्तम् । निर्वाणमस्तंगतजातिबन्धो यथास्थितं तिष्ठ निरामयात्मा ॥ ८ ॥

tasmāccidākāśamanādimadhyamakhaṇḍitaṃ saumyamidaṃ samastam | nirvāṇamastaṃgatajātibandho yathāsthitaṃ tiṣṭha nirāmayātmā || 8 ||

Therefore, this entire peaceful space of consciousness is beginningless, endless, and indivisible. Remain as you are, free from the bonds of caste and liberated from all afflictions.

इसलिए, यह पूरा शांत चेतना आकाश अनादि, अनंत और अखंड है। जैसे भी आप हैं, जाति के बंधनों से मुक्त और सभी कष्टों से मुक्त होकर रहें।

7.186.9

स्वयं दृश्यं स्वयं द्रष्टृ स्वयं चित्त्वं स्वयं जडम् । स्वयं किंचिन्न किंचिच्च ब्रह्मात्मन्येव संस्थितम् ॥ ९ ॥

svayaṃ dṛśyaṃ svayaṃ draṣṭṛ svayaṃ cittvaṃ svayaṃ jaḍam | svayaṃ kiṃcinna kiṃcicca brahmātmanyeva saṃsthitam || 9 ||

The self is the seer, the seen, consciousness, and the inert. It is everything and nothing, all established in the Brahman-self.

स्वयं ही देखने वाला, देखा जाने वाला, चेतना, और जड़ है। यह सब कुछ और कुछ नहीं है, सब ब्रह्म-आत्मा में ही स्थित है।

7.186.10

यथा यत्र जगत्येतत्स्वयं ब्रह्म खमात्मनि । स्वरूपमजहच्छान्तं यत्र संपद्यते तथा ॥ १० ॥

yathā yatra jagatyetatsvayaṃ brahma khamātmani | svarūpamajahacchāntaṃ yatra saṃpadyate tathā || 10 ||

Just as in this world, the self is Brahman in the space of the self, it does not give up its peaceful nature wherever it is realized.

जैसे इस जगत में, आत्मा आत्मा के आकाश में ब्रह्म है, वह अपनी शांत प्रकृति को जहाँ भी साकार होता है वहाँ नहीं छोड़ता।

7.186.11

ब्रह्म दृश्यमिति द्वैतं न कदाचिद्यथास्थितम् । एकत्वमेतयोर्विद्धि शून्यत्वाकाशयोरिव ॥ ११ ॥

brahma dṛśyamiti dvaitaṃ na kadācidyathāsthitam | ekatvame tayorvid dhi śūnyatvākāśayoriva || 11 ||

Brahman is perceived as duality, which is never truly existent. Know the oneness of these two, like the void and space.

ब्रह्म द्वैत के रूप में देखा जाता है, जो कभी भी वास्तव में नहीं होता। इन दोनों की एकता को जानो, जैसे शून्य और आकाश की तरह।

7.186.12

दृश्यमेव परं ब्रह्म परं ब्रह्मैव दृश्यता । एतन्न शान्तं नाऽशान्तं नानाकारं न चाकृतिः ॥ १२ ॥

dṛśyameva paraṃ brahma paraṃ brahmaiva dṛśyatā | etanna śāntaṃ nā'śāntaṃ nānākāraṃ na cākṛtiḥ || 12 ||

The perceived is indeed the supreme Brahman, and the supreme Brahman is indeed the perceived. This is neither peaceful nor restless, neither manifold nor formless.

देखा जाने वाला परम ब्रह्म है, और परम ब्रह्म देखा जाने वाला है। यह न शान्त है न अशान्त, न अनेक रूपों में है न निराकार है।

7.186.13

यादृग्प्रबोधे स्वप्नादिस्तादृग्देहो निराकृतिः । संविन्मात्रात्मा प्रतिघः स्वानुभूतोऽप्यसन्मयः ॥ १३ ॥

yādṛgprabodhe svapnādistādṛgdeho nirākṛtiḥ | saṃvinmātrātmā pratighaḥ svānubhūto'pyasanmayaḥ || 13 ||

Just as in the state of awakening, the dream body is formless, so too the Self, which is pure consciousness, is formless, even though it is experienced as having form.

जैसे जाग्रत अवस्था में स्वप्न शरीर निराकार है, वैसे ही स्वयं जो शुद्ध चेतना है, निराकार है, भले ही इसे रूप वाला अनुभव किया जाता है।

7.186.14

संविन्मयो यथा जन्तुर्निद्रात्मास्ते जडोभवत् । जडीभूता तथैषास्ते संवित्स्थावरनामिका ॥ १४ ॥

saṃvinmayo yathā janturnidrātmāste jaḍobhavat | jaḍībhūtā tathaiṣāste saṃvits thāvaranāmikā || 14 ||

Just as a living being becomes inert in the state of deep sleep, so too does this consciousness become inert in the state of deep sleep.

जैसे जीव गहरी नींद में जड़ हो जाता है, वैसे ही यह चेतना गहरी नींद में जड़ हो जाती है।

7.186.15

स्थावरत्वाज्जडाच्चित्त्वं जङ्गमात्म प्रयाति चित् । जीवः सुषुप्तात्मा स्वप्नं जाग्रच्चैव जगच्छतैः ॥ १५ ॥

sthāvaratvājjaḍācchittvaṃ jaṅgamātma prayāti cit | jīvaḥ suṣuptātmā svapnaṃ jāgraccaiva jagacchataiḥ || 15 ||

From the state of inertness, consciousness moves to the state of mobility. The living being, which is in the state of deep sleep, experiences dreams and waking states.

जड़ता की अवस्था से चेतना गतिशीलता की अवस्था में चली जाती है। जीव, जो गहरी नींद की अवस्था में है, स्वप्न और जाग्रत अवस्था का अनुभव करता है।

7.186.16

आमोक्षमेषा जीवस्य भुव्यम्भस्यनिलेऽनले । खे खात्मभिर्जगल्लक्षैः स्वप्नाभैर्भासते स्थितिः ॥ १६ ॥

āmokṣameṣā jīvasya bhuvyambhasyanile'nale | khe khātmabhirjagallakṣaiḥ svapnābhairbhāsate sthitiḥ || 16 ||

The liberation of the living being is reflected in the earth, water, air, fire, and space through the various elements, just as in a dream.

जीव की मुक्ति पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश में विभिन्न तत्वों द्वारा प्रतिबिंबित होती है, जैसे कि स्वप्न में होता है।

7.186.17

चिच्चिनोति तथा जाड्यं नरो निद्रास्थितिर्यथा । चिनोति जडतां चित्त्वं न नाम जडतावशात् ॥ १७ ॥

ciccinoti tathā jāḍyaṃ naro nidrāsthitiryathā | cinoti jaḍatāṃ cittvaṃ na nāma jaḍatāvaśāt || 17 ||

Just as a person overcomes sleep, consciousness overcomes inertia. Consciousness is not overcome by inertia.

जैसे कि एक व्यक्ति नींद को जीतता है, चेतना जड़ता को जीतती है। चेतना जड़ता से नहीं जीती जाती।

7.186.18

चिता वेदनवेत्तारं स्थावरं क्रियते वपुः । चिता वेदनवेत्तारं जङ्गमं क्रियते वपुः ॥ १८ ॥

citā vedanavettāraṃ sthāvaraṃ kriyate vapuḥ | citā vedanavettāraṃ jaṅgamaṃ kriyate vapuḥ || 18 ||

Consciousness perceives the immovable and the movable bodies as the knower of sensations.

चेतना स्थावर और जंगम शरीरों को संवेदनाओं के ज्ञाता के रूप में देखती है।

7.186.19

यथा पुंसो नखाः पादावेकमेव शरीरकम् । तथैकमेवाप्रतिघं चितः स्थावरजङ्गमम् ॥ १९ ॥

yathā puṃso nakhāḥ pādāvekameva śarīrakam | tathaikamevāpratighaṃ citḥ sthāvarajaṅgamam || 19 ||

Just as the nails and feet are part of the same body, so too is consciousness the same in both immovable and movable forms.

जैसे नाखून और पैर एक ही शरीर का हिस्सा हैं, वैसे ही चेतना स्थावर और जंगम दोनों रूपों में एक ही है।

7.186.20

आदिसर्गे स्वप्न इव यत्प्रथामागतं स्थितम् । चितो रूपं जगदिति तत्तथैवान्त उच्यते ॥ २० ॥

ādisarge svapna iva yatprathāmāgataṃ sthitam | citō rūpaṃ jagaditi tattathaivānta ucyate || 20 ||

In the beginning of creation, what appeared first was like a dream. The form of consciousness is called the universe, and it is said to be the same in the end.

सृष्टि के आरंभ में, जो पहले प्रकट हुआ, वह स्वप्न की तरह था। चेतना का रूप विश्व कहलाता है, और यह कहा जाता है कि अंत में भी वही है।

7.186.21

तच्चैवाप्रतिघं शान्तं यथास्थितमवस्थितम् । न प्रथामागतं किंचिन्नासीदप्रथितं हितम् ॥ २१ ॥

taccaivāpratighaṃ śāntaṃ yathāsthitamavasthitam | na prathāmāgataṃ kiṃcin nāsīdaprathitaṃ hitam || 21 ||

That is indeed unopposed, peaceful, as it is, established | Nothing has come into existence, nothing unmanifested is beneficial || 21 ||

वह वास्तव में अप्रतिहत, शान्त, जैसा है, स्थित है | कुछ भी अस्तित्व में नहीं आया, कुछ भी अप्रकट लाभकारी नहीं है || २१ ||

7.186.22

अयमादिरयं चान्तः सर्गस्येत्यवभासते । चितः सुघननिद्रायाः सुषुप्तस्वप्नकोष्ठतः ॥ २२ ॥

ayamādirayaṃ cāntaḥ sargasyetyavabhāsate | citaḥ sughananidrāyāḥ suṣuptasvapnakoṣṭhatḥ || 22 ||

This is the beginning and the end of creation, it appears | From the deep sleep of consciousness, from the dream state || 22 ||

यह सृष्टि का आदि और अंत है, यह प्रकट होता है | चेतना की गहरी नींद से, स्वप्न अवस्था से || २२ ||

7.186.23

स्थित एको ह्यनाद्यन्तः परमार्थघनो यतः । प्रलयस्थितिसर्गाणां न नामाप्यस्ति मां प्रति ॥ २३ ॥

sthita eko hyanādyantaḥ paramārthaghano yataḥ | pralayasthitisargāṇāṃ na nāmāpyasti māṃ prati || 23 ||

Established as one, indeed without beginning or end, dense with ultimate reality | There is no name even for dissolution, stability, and creation with respect to me || 23 ||

एक के रूप में स्थित, वास्तव में आदि और अंत से रहित, परम वास्तविकता से घना | मेरे लिए प्रलय, स्थिति और सृष्टि का कोई नाम भी नहीं है || २३ ||

7.186.24

प्रलयस्थितिसर्गादि दृश्यमानं न विद्यते । एतन्न चात्मनश्चान्यच्चित्रे चित्रवधूर्यथा ॥ २४ ॥

pralayasthitisargādi dṛśyamānaṃ na vidyate | etan na cātmanaścānyac citre citravadhūryathā || 24 ||

Dissolution, stability, creation, etc., are not seen | This is not different from the self, like a picture in a painting || 24 ||

प्रलय, स्थिति, सृष्टि आदि दिखाई नहीं देते | यह आत्मा से अलग नहीं है, जैसे चित्र में चित्रवधू || २४ ||

7.186.25

कर्तव्यचित्रसेनास्माद्यथा चित्रान्न भिद्यते । नानाऽनानैव प्रतिघा चित्तत्त्वे सर्गता तथा ॥ २५ ॥

kartavyacitrasenāsmād yathā citrān na bhidyate | nānā'nānaiva pratighā cittattve sargatā tathā || 25 ||

Just as the picture does not differ from the painting, similarly, the various manifestations in the reality of consciousness are not different || 25 ||

जैसे चित्र चित्र से अलग नहीं होता, वैसे ही, चेतना की वास्तविकता में विभिन्न प्रकटन अलग नहीं हैं || २५ ||

7.186.26

विभागहीनयाप्येष भागश्चिद्धननिद्रयासुषुप्तान्मुष्यते मोक्ष इति स्वप्नस्तु चित्तकम् ॥ २६ ॥

vibhāgahīnayāpyeṣa bhāgaściddhananidrayāsuṣuptānmuṣyate mokṣa iti svapnastu cittakam || 26 ||

Even without division, this part, due to the sleep of consciousness and wealth, is liberated from deep sleep; this dream is indeed the form of the mind.

विभाजन के बिना भी, यह भाग, चेतना और धन की निद्रा के कारण, गहरी नींद से मुक्त होता है; यह स्वप्न वास्तव में मन का रूप है।

7.186.27

प्रलयोऽयमियं सृष्टिरयं स्वप्नो घनस्त्वयम्भासोऽप्रतिघरूपस्य चित्सहस्ररुचेरिति ॥ २७ ॥

pralayo'yamiyaṃ sṛṣṭirayaṃ svapno ghanastvayambhāso'pratigharūpasya citsahasraruceriti || 27 ||

This dissolution is this creation, this dream is dense, this reflection is without resistance, of the form of the thousand-rayed consciousness.

यह प्रलय यह सृष्टि है, यह स्वप्न घना है, यह प्रतिबिंब प्रतिरोध के बिना है, सहस्र किरणों वाली चेतना का रूप है।

7.186.28

चिन्निद्रायाः स्वप्नमयो भागश्चित्तमुदाहृतम्तदेव मुच्यते भूतं जीवो देवासुरादिदृक् ॥ २८ ॥

cinnidrāyāḥ svapnamayo bhāgaścittamudāhṛtamtadeva mucyate bhūtaṃ jīvo devāsurādidṛk || 28 ||

The part of the dream of the sleep of consciousness is said to be the mind; that very thing is liberated, the living being who sees gods, demons, etc.

चेतना की निद्रा का स्वप्न भाग मन कहलाता है; वही चीज मुक्त होती है, जीव जो देवताओं, असुरों, आदि को देखता है।

7.186.29

एष एव परिज्ञातः सुषुप्तिर्भवति स्वयम्यदा तदा मोक्ष इति प्रोच्यते मोक्षकाङ्क्षिभिः ॥ २९ ॥

eṣa eva parijñātaḥ suṣuptirbhavati svayamyadā tadā mokṣa iti procyate mokṣakāṅkṣibhiḥ || 29 ||

This very one, when known, becomes deep sleep; then it is called liberation by those who desire liberation.

यही एक, जब ज्ञात होता है, गहरी नींद बन जाता है; तब इसे मुक्ति कहा जाता है मुक्ति की इच्छा रखने वालों द्वारा।

7.186.30

श्रीराम उवाच चित्तं देवासुराद्यात्म चिन्निद्रा स्वात्मदर्शनम्कियत्प्रमाणं भगवन्कथमस्योदरे जगत् ॥ ३० ॥

śrīrāma uvācacittaṃ devāsurādyātma cinnidrā svātmadarśanamkiyatpramāṇaṃ bhagavankathamasyodare jagat || 30 ||

Sri Rama said: The mind, the self of gods, demons, etc., the sleep of consciousness, the vision of the self—how extensive is it, O Lord? How does the universe exist within it?

श्री राम ने कहा: मन, देवताओं, असुरों, आदि का आत्मा, चेतना की निद्रा, आत्मा का दर्शन—इसका परिमाण कितना है, हे भगवन्? इसके अंदर ब्रह्मांड कैसे अस्तित्व में है?

7.186.31

श्रीवसिष्ठ उवाच । विद्धि चित्तं नरं देवमसुरं स्थावरं स्त्रियम् । नागं नगं पिशाचादि खगकीटादिराक्षसम् ॥ ३१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | viddhi cittaṃ naraṃ devamasureṃ sthāvaraṃ striyaṃ | nāgaṃ nagaṃ piśācādi khagakīṭādirākṣasam || 31 ||

Sri Vasistha said: Know that the mind is the human, the god, the demon, the immovable, the woman, the serpent, the mountain, the ghost, the bird, the insect, and the demon.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जानो कि मन ही मनुष्य, देवता, असुर, स्थावर, स्त्री, नाग, पर्वत, पिशाच, पक्षी, कीट और राक्षस है।

7.186.32

प्रमाणं तस्य चानन्तं विद्धि तद्यत्र रेणुताम् । आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगद्याति सहस्रशः ॥ ३२ ॥

pramāṇaṃ tasya cānantam viddhi tadyatra reṇutām | ābrahmastambaparyantam jagadyāti sahasraśaḥ || 32 ||

Know that the extent of the mind is infinite, where it becomes as minute as a particle of dust. It pervades the universe from Brahma to a blade of grass, thousands of times over.

जानो कि मन की सीमा अनंत है, जहाँ यह धूल के एक कण के समान सूक्ष्म हो जाता है। यह ब्रह्मा से लेकर एक तिनके तक सहस्रों बार व्याप्त है।

7.186.33

यदेतदादित्यपथादूर्ध्वं संयाति वेदनम् । एतच्चित्तं भूतमेतदपर्यन्तामलाकृति ॥ ३३ ॥

yadetadādityapathādūrdhvaṃ saṃyāti vedanam | etaccittaṃ bhūtametadaparyantāmalākṛti || 33 ||

That which rises above the path of the sun and experiences, this is the mind. This being is of pure form, without end.

जो सूर्य के मार्ग से ऊपर उठता है और अनुभव करता है, यह मन है। यह व्यक्ति शुद्ध रूप का है, जिसका कोई अंत नहीं है।

7.186.34

एतदुग्रं चितो रूपमस्यान्तर्भुवनर्द्धयः । यदायान्ति तदा सर्गश्चित्तादागत उच्यते ॥ ३४ ॥

etadugraṃ cito rūpamasya antarbhuvarddhayaḥ | yadāyānti tadā sargaścittādāgata ucyate || 34 ||

This fierce form of the mind, its inner worlds grow. When they come, then creation is said to have arisen from the mind.

यह भयानक रूप मन का है, इसके अंतर्भूमि बढ़ती हैं। जब वे आती हैं, तब सृष्टि कही जाती है कि मन से उत्पन्न हुई है।

7.186.35

चित्तमेव विदुर्जीवं तदाद्यन्तविवर्जितम्। खं घटेष्विव देहेषु चास्ते नास्ते तदिच्छया ॥ ३५ ॥

cittameva vidurjīvaṃ tadādyantavivarjitam | khaṃ ghaṭeṣviva deheṣu cāste nāste tadicchayā || 35 ||

The mind alone is known as the living being, devoid of beginning and end. Like space in pots, it exists or does not exist in bodies by its own will.

मन ही जीव के रूप में जाना जाता है, जिसका कोई आदि या अंत नहीं है। घड़ों में आकाश की तरह, यह शरीरों में अपनी इच्छा से मौजूद होता है या नहीं होता।

7.186.36

निम्नोन्नतान्भुवो भागान् गृह्णाति च जहाति च। सरित्प्रवाहोऽङ्ग यथा शरीराणि तथा मनः ॥ ३६ ॥

nimnonnatānbhuvo bhāgān gṛhṇāti ca jahāti ca | saritpravāho'ṅga yathā śarīrāṇi tathā manaḥ || 36 ||

Just as a river takes and leaves the high and low parts of the earth, so does the mind take and leave bodies.

जैसे नदी पृथ्वी के ऊँचे-नीचे भागों को लेती और छोड़ती है, वैसे ही मन शरीरों को लेता और छोड़ता है।

7.186.37

अस्य त्वात्मपरिज्ञानादेष देहादिसंभ्रमः। शाम्यत्याश्ववबोधेन मरुवाःप्रत्ययो यथा ॥ ३७ ॥

asya tvātmapariñānādeṣa dehādisaṃbhraṃaḥ | śāmyatyāśvavabodhena maruvāḥpratyayo yathā || 37 ||

This confusion about the body and other things is calmed by the knowledge of the self, just as the illusion of a mirage is dispelled by the knowledge of water.

यह शरीर और अन्य चीजों का भ्रम आत्मज्ञान से शांत हो जाता है, जैसे पानी के ज्ञान से मृगतृष्णा का भ्रम दूर हो जाता है।

7.186.38

जगत्यन्तरणुर्यत्र तत्प्रमाणं हि चेतसः। सदेव च पुमांस्तस्मात्पुंसामन्तःस्थितं जगत् ॥ ३८ ॥

jagatyantaraṇuryatra tatpramāṇaṃ hi cetasaḥ | sadeva ca pumāṃstasmātpumsāmantaḥsthitaṃ jagat || 38 ||

The measure of the mind is that which is subtler than the world. Therefore, the world is always within the self.

मन का माप वह है जो संसार से सूक्ष्म है। इसलिए, संसार हमेशा आत्मा के भीतर है।

7.186.39

यावत्किंचिदिदं दृश्यं तच्चित्तं स्वप्नभूष्विव। तदेव च पुमांस्तस्मात्को भेदो जगदात्मनोः ॥ ३९ ॥

yāvatkiṃcididaṃ dṛśyaṃ taccittaṃ svapnabhūṣviva | tadeva ca pumāṃstasmātko bhedo jagadātmanoḥ || 39 ||

Whatever is seen here is the mind, just like an ornament in a dream. Therefore, what is the difference between the world and the self?

जो कुछ भी यहाँ दिखाई देता है, वह मन है, जैसे स्वप्न में एक आभूषण। इसलिए, संसार और आत्मा में क्या अंतर है?

7.186.40

चिदेवायं पदार्थौघो नास्त्यन्यस्मिन्पदार्थता। व्यतिरिक्ता स्वप्न इव हेम्नीव कटकादिता ॥ ४० ॥

cidevāyaṃ padārthaugho nāstyanyasmipnadārthatā | vyatiriktā svapna iva hemnīva kaṭakāditā || 40 ||

This collection of objects is consciousness itself. There is no objectivity apart from it, just as there is no separate existence of a bracelet apart from gold in a dream.

यह वस्तुओं का समूह चेतना स्वयं है। इसके अलावा कोई वस्तुता नहीं है, जैसे स्वप्न में सोने से अलग कंगन की कोई अलग अस्तित्व नहीं है।

7.186.41

यथैकदेशे सर्वत्र स्फुरन्त्यापोऽम्बुधौ पृथक् । ब्रह्मण्यनन्या नित्यस्थाश्चितो दृश्यात्मिकास्तथा ॥ ४१ ॥

yathaikadeśe sarvatra sphurantyāpo'mbudhau pṛthak | brahmaṇyananyā nityasthāścito dṛśyātmikāstathā || 41 ||

Just as water in the ocean appears distinct in one place but is everywhere, so too the eternal consciousness, which is non-different from Brahman, appears as the perceptible world.

जैसे समुद्र में पानी एक जगह अलग दिखता है लेकिन सर्वत्र है, वैसे ही ब्रह्म से भिन्न न होने वाली नित्य चेतना दृश्य जगत के रूप में प्रकट होती है।

7.186.42

यथा द्रवत्वमम्भोधावापो जठरकोशगाः । स्फुरन्त्येवं विदोऽनन्याः पदार्थौघास्तथापरे ॥ ४२ ॥

yathā dravatvamambhodhāvāpo jaṭharakośagāḥ | sphurantyevaṃ vidonananyāḥ padārthaughāstathāpare || 42 ||

Just as the liquidity of water in the ocean is the same as the water in a stomach, so too the wise see the non-different essence of all objects.

जैसे समुद्र में पानी की द्रवता पेट में पानी की द्रवता के समान है, वैसे ही विद्वान लोग सभी पदार्थों की अभिन्न सत्ता को देखते हैं।

7.186.43

यथास्थितजगच्छालभञ्जिकाकाशरूपधृक् । चित्स्तम्भोयमपस्पन्दः स्थित आद्यन्तवर्जितः ॥ ४३ ॥

yathāsthitajagacchālabhañjikākāśarūpadhṛk | cittstambhoyamapaspandaḥ sthita ādyantavarjitaḥ || 43 ||

Just as the sky is the unchanging support of the ever-changing world, so too the eternal consciousness is the unchanging support of all things, devoid of beginning and end.

जैसे आकाश बदलते जगत का अपरिवर्तनशील आधार है, वैसे ही नित्य चेतना सभी चीजों का अपरिवर्तनशील आधार है, जिसका न आदि है न अंत।

7.186.44

यथास्थितमिदं विश्वं संविद्व्योम्नि व्यवस्थितम् । स्वरूपमत्यजच्छान्तं स्वप्नभूमाविवाखिलम् ॥ ४४ ॥

yathāsthitamidaṃ viśvaṃ saṃvidvyomni vyavasthitam | svarūpamatyajaścchāntaṃ svapnabhūmāvivākhilam || 44 ||

Just as this world is established in the sky of consciousness, so too it appears peaceful, having abandoned its own nature, like everything in a dream.

जैसे यह जगत चेतना के आकाश में स्थापित है, वैसे ही यह शांत प्रतीत होता है, अपनी प्रकृति को त्याग कर, जैसे सपने में सभी चीजें।

7.186.45

समता सत्यता सत्ता चैकता निर्विकारिता । आधाराधेयतान्योन्यं चैतयोर्विश्वसंविदोः ॥ ४५ ॥

samatā satyatā sattā caikatā nirvikāritā | ādhārādheyatānyonyaṃ caitayorviśvasaṃvidoḥ || 45 ||

Equality, truth, existence, unity, and unchangeability are the mutual support and dependence of consciousness and the world.

समता, सत्यता, सत्ता, एकता और अपरिवर्तनशीलता चेतना और जगत के आपसी आधार और निर्भरता हैं।

7.186.46

स्वप्नसंकल्पसंसारवरशापदृशामिह । सरोब्धिसरिदम्बूनामिवान्यत्वं न वाथवा ॥ ४६ ॥

svapnasankalpasamsāravaraśāpadṛśāmiha | sarobdhisaridambūnāmivānyatvaṃ na vāthavā || 46 ||

In this world, the perceptions of dreams, intentions, worldly existence, boons, and curses are like the waves of the ocean and rivers; they are not different or they are different.

इस संसार में, स्वप्न, संकल्प, संसार, वर और शाप की दृष्टि समुद्र और नदियों की लहरों की तरह है; वे अलग नहीं हैं या वे अलग हैं।

7.186.47

श्रीराम उवाचवरशापार्थसंवित्तौ कार्यकारणता कथमुपादानं विना कार्यं नास्त्येव किल कथ्यताम् ॥ ४७ ॥

śrīrāma uvācavaraśāpārthasaṃvittau kāryakāraṇatā kathamupādānaṃ vinā kāryaṃ nāstyeva kila kathyatām || 47 ||

Sri Rama said: How can there be a cause and effect relationship without a material cause? It is said that there is no effect without a cause.

श्रीराम ने कहा: कारण और परिणाम का संबंध बिना माध्यमिक कारण के कैसे हो सकता है? कहा जाता है कि कारण के बिना परिणाम नहीं होता।

7.186.48

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्ववदातचिदाकाशकचनं जगदुच्यते । स्फुरणे पयसामब्धावावर्तचलनं यथा ॥ ४८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | svavadātacidākāśakacanaṃ jagaducyate | sphuraṇe payasāmabdhāvāvartacalanaṃ yathā || 48 ||

Sri Vasistha said: The world is said to be like a reflection in the space of consciousness. Just as the waves move in the ocean of water, so do the phenomena in the space of consciousness.

श्री वसिष्ठ ने कहा: संसार चेतना के आकाश में प्रतिबिंब की तरह कहा जाता है। जैसे लहरें जल के समुद्र में चलती हैं, वैसे ही चेतना के आकाश में घटनाएँ होती हैं।

7.186.49

ध्वनन्तोऽब्धिजलानीव भान्ति भावाश्चिदात्मकाः । संकल्पादीनि नामानि तेषामाहुर्मनीषिणः ॥ ४९ ॥

dhvananto'bdhijalānīva bhānti bhāvāścidātmakāḥ | saṃkalpādīni nāmāni teṣāmāhurmanīṣiṇaḥ || 49 ||

Just as the sounds of the ocean waves are heard, so do the phenomena in the space of consciousness appear. The wise call these phenomena by names such as intentions and so forth.

जैसे समुद्र की लहरों की ध्वनि सुनाई देती है, वैसे ही चेतना के आकाश में घटनाएँ प्रकट होती हैं। विद्वान लोग इन घटनाओं को संकल्प आदि नामों से पुकारते हैं।

7.186.50

कालेनाभ्यासयोगेन विचारेण समेन च । जातेर्वा सात्त्विकत्वेन सात्त्विकेनामलात्मना ॥ ५० ॥

kālenābhyāsayogena vicāreṇa samena ca | jātervā sāttvikatvena sāttvikenāmalātmanā || 50 ||

Through the practice of time, meditation, balanced inquiry, and by the purity of a sattvic nature, one attains a pure self.

समय, अभ्यास, योग, संतुलित विचार और सात्त्विक प्रकृति की शुद्धता के द्वारा, एक शुद्ध आत्मा प्राप्त होती है।

7.186.51

सम्यग्ज्ञानवतो ज्ञस्य यथा भूऽतार्थदर्शिनः। बुद्धिर्भवति चिन्मात्ररूपा द्वैतैक्यवर्जिता ॥ ५१ ॥

samyagjñānavato jñasya yathā bhū'tārthadarśinaḥ| buddhirbhavati cinmātrarūpā dvaitaikyavarjitā || 51 ||

The intellect of one who is endowed with true knowledge and sees the reality as it is, becomes of the nature of pure consciousness, devoid of duality and unity.

जिसके पास सच्चे ज्ञान की प्राप्ति है और जो वास्तविकता को ठीक से देखता है, उसकी बुद्धि शुद्ध चेतना के रूप में होती है, जो द्वैत और एकता से रहित है।

7.186.52

निरावरणविज्ञानमयी चिद्ब्रह्मरूपिणी। संवित्प्रकाशमात्रैकदेहादेहविवर्जिता ॥ ५२ ॥

nirāvaraṇavijñānamayī cidbrahmarūpiṇī| saṃvitprakāśamātraikadehādehavivarjitā || 52 ||

Free from all obstructions, consisting of pure knowledge, in the form of pure consciousness, Brahman, consisting solely of the light of awareness, devoid of body and non-body.

सभी बाधाओं से मुक्त, शुद्ध ज्ञान से युक्त, शुद्ध चेतना के रूप में, ब्रह्म, जो केवल चेतना के प्रकाश से युक्त है, शरीर और अशरीर से रहित।

7.186.53

सोऽयं पश्यत्यशेषेण यावत्संकल्पमात्रकम्। स्वमात्मकचनं शान्तमनन्यत्परमार्थतः ॥ ५३ ॥

so'yaṃ paśyatyayeṣeṇa yāvatsaṃkalpamātrakam| svamātmakacaṃ śāntamananyatparamārthataḥ || 53 ||

He sees everything completely, as far as it is merely a thought construct, his own self, peaceful, non-dual in the ultimate reality.

वह सब कुछ पूर्णतः देखता है, जब तक यह केवल एक विचार निर्माण है, अपने आप को, शांत, अद्वैत परम वास्तविकता में।

7.186.54

अस्या इदं हि संकल्पमात्रमेवाखिलं जगत्। यथा संकल्पनगरं यथा स्वप्नमहापुरम् ॥ ५४ ॥

asyā idaṃ hi saṃkalpamātramevākhilaṃ jagat| yathā saṃkalpanagaraṃ yathā svapnamahāpuraṃ || 54 ||

Indeed, this entire world is merely a thought construct of hers, just like a city of imagination, just like a great city in a dream.

वास्तव में, यह सम्पूर्ण जगत उसका केवल एक विचार निर्माण है, जैसे कल्पना का एक नगर, जैसे स्वप्न में एक महान नगर।

7.186.55

आत्मा स्वसंकल्पवरः स्ववदातो यथा यथा। यद्यथा संकल्पयति तथा भवति तस्य तत् ॥ ५५ ॥

ātmā svasaṃkalpavaraḥ svavadāto yathā yathā| yadyathā saṃkalpayati tathā bhavati tasya tat || 55 ||

The self, the supreme master of its own will, according to its own will, whatever it wills, that becomes so for it.

आत्मा, अपनी इच्छा का परम स्वामी, अपनी इच्छा के अनुसार, जो भी वह चाहता है, वह उसके लिए वैसा ही हो जाता है।

7.186.56

संकल्पनगरे बालः शिलाप्रोड्डयनं यथा सत्यं वेत्त्यनुभूयाशु स्वविधेयनियन्त्रणम् ॥ ५६ ॥

saṃkalpanagare bālaḥ śilāproddḍayanaṃ yathā satyaṃ vettiyanubhūyāśu svavidheyaninyantraṇam || 56 ||

In the city of imagination, a child, like a stone, quickly realizes the truth and experiences the control of his duties.

कल्पना के नगर में, एक बालक, पत्थर की तरह, शीघ्र ही सत्य को जानता है और अपने कर्तव्यों के नियंत्रण का अनुभव करता है।

7.186.57

स्वसंकल्पात्मभूतेऽस्मिन्परमात्मा जगत्त्रये वरशापादिकं सत्यं वेत्त्यनन्यत्तथात्मनः ॥ ५७ ॥

svasaṃkalpātmabhūte'smiṃparamātmā jagattraye varaśāpādikaṃ satyaṃ vettiyananyattathātmanaḥ || 57 ||

In this universe, which is the embodiment of one's own resolve, the Supreme Self knows the truth of blessings and curses, and nothing else.

इस ब्रह्माण्ड में, जो अपने संकल्प का स्वरूप है, परमात्मा वर और शाप के सत्य को जानता है, और कुछ नहीं।

7.186.58

स्वसंकल्पपुरे तैलं यथा सिद्ध्यति सैकतात् कल्पनात्सर्गसंकल्पैर्वरादीह तथात्मनः ॥ ५८ ॥

svasaṃkalpapure tailaṃ yathā siddhyati saikatāt kalpanātsargasaṃkalpairvarādīha tathātmanaḥ || 58 ||

In the city of one's own resolve, oil is produced from sand through imagination, just as blessings and other creations are realized here.

अपने संकल्प के नगर में, कल्पना से रेत से तेल बनता है, जैसे यहाँ वर और अन्य सृष्टियाँ साकार होती हैं।

7.186.59

अनिरावरणज्ञप्तेर्यतः शान्ता न भेदधीः ततः संकल्पनाद्वैताद्वराद्यस्य न सिद्ध्यति ॥ ५९ ॥

anirāvaraṇajñapteryataḥ śāntā na bhedadhīḥ tataḥ saṃkalpanādvaitādvarādyasya na siddhyati || 59 ||

Due to the unobstructed knowledge, there is no distinction of thought, and thus, from the non-dual imagination, blessings and other creations do not manifest.

अवरुद्ध ज्ञान के कारण, विचार का कोई भेद नहीं होता, और इसलिए, अद्वैत कल्पना से वर और अन्य सृष्टियाँ साकार नहीं होतीं।

7.186.60

या यथा कलना रूढा तावत्साद्यापि संस्थिता न परावर्तिता यावद्यत्नात्कल्पनयान्यया ॥ ६० ॥

yā yathā kalanā rūḍhā tāvatsādyāpi saṃsthitā na parāvartitā yāvadyatnātkalpanayānyayā || 60 ||

Whatever imagination is established, it remains so until it is replaced by another imagination through effort.

जो कल्पना स्थापित होती है, वह तब तक बनी रहती है जब तक कि प्रयास से दूसरी कल्पना द्वारा इसे बदल नहीं दिया जाता।

7.186.61

ब्रह्मण्यवयवोन्मुक्ते द्वितैकत्वे तथा स्थिरे। यथा सावयवे तत्त्वे विचित्रावयवक्रमः ॥ ६१ ॥

brahmaṇyavayavonmukte dvitaikatve tathā sthire | yathā sāvayave tattve vicitrāvayavakramaḥ || 61 ||

In the liberated state of Brahman's parts, in the duality and unity, and in the stable state, just as in the reality with parts, there is a varied sequence of parts.

ब्रह्म के अवयवों की मुक्त अवस्था में, द्वैत और एकत्व में, और स्थिर अवस्था में, जैसे अवयवों वाली वास्तविकता में, अवयवों का विचित्र क्रम होता है।

7.186.62

श्रीराम उवाच । अनिरावरणाज्ञानात्केवलं धर्मचारिणः । शापादीन्संप्रयच्छन्ति यथा ब्रह्मंस्तथा वद ॥ ६२ ॥

śrīrāma uvāca | anirāvaraṇājñānātkevalaṃ dharmacāriṇaḥ | śāpādīnsaṃprayacchanti yathā brahmaṃstathā vada || 62 ||

Sri Rama said: Due to ignorance without obstruction, those who follow only dharma give curses and other things. Explain how this is similar to Brahman.

श्री राम ने कहा: बाधा रहित अज्ञान के कारण, जो लोग केवल धर्म का पालन करते हैं, वे शाप और अन्य चीजें देते हैं। यह ब्रह्म के समान कैसे है, यह बताओ।

7.186.63

श्रीवसिष्ठ उवाच । संकल्पयति यन्नाम सर्गादौ ब्रह्म ब्रह्मणि । तत्तदेवानुभवति यस्मात्तत्रास्ति नेतरत् ॥ ६३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | saṃkalpayati yannāma sargādau brahma brahmaṇi | tattadevānubhavati yasmāttatrāsti netarat || 63 ||

Sri Vasistha said: Whatever name Brahman conceives at the beginning of creation, that alone is experienced there, because nothing else exists there.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जो नाम ब्रह्म सृष्टि के आरंभ में सोचता है, वही वहाँ अनुभव किया जाता है, क्योंकि वहाँ और कुछ नहीं है।

7.186.64

ब्रह्म वेत्ति यदात्मानं स ब्रह्मायं प्रजापतिः । स च नो ब्रह्मणो भिन्नं द्रवत्वमिव वारिणः ॥ ६४ ॥

brahma vetti yadātmānaṃ sa brahmāyaṃ prajāpatiḥ | sa ca no brahmaṇo bhinnam dravatvamiva vāriṇaḥ || 64 ||

When Brahman knows itself, it is the creator Brahma. It is not different from Brahman, just as liquidity is not different from water.

जब ब्रह्म अपने आप को जानता है, तब वह सृष्टिकर्ता ब्रह्मा है। वह ब्रह्म से भिन्न नहीं है, जैसे द्रवत्व पानी से भिन्न नहीं है।

7.186.65

संकल्पयति यन्नाम प्रथमोऽसौ प्रजापतिः । तत्तदेवाशु भवति तस्येदं कल्पनं जगत् ॥ ६५ ॥

saṃkalpayati yannāma prathamo'sau prajāpatiḥ | tattadevāśu bhavati tasyedam kalpanaṃ jagat || 65 ||

Whatever name the first creator, Prajapati, conceives, that alone quickly becomes. This world is his creation.

जो नाम प्रथम सृष्टिकर्ता, प्रजापति, सोचता है, वही शीघ्र ही हो जाता है। यह संसार उसकी कल्पना है।

7.186.66

निराधारं निरालम्बं व्योमात्म व्योम्नि भासते दुर्दृष्टेरिव केशोण्ड्रं दृष्टमुक्तावलीव च ॥ ६६ ॥

nirādhāraṃ nirālambaṃ vyomātma vyomni bhāsate durdṛṣṭeriva keśoṇḍraṃ dṛṣṭamuktāvalīva ca || 66 ||

The self-luminous, unsupported, and unattached Self shines in the sky like a hair's tip that is difficult to see and like a visible pearl necklace.

स्वयं प्रकाशित, असहाय, और अनासक्त आत्मा आकाश में ऐसे चमकता है जैसे एक बाल का अग्रभाग जो देखने में कठिन होता है और जैसे एक दिखाई देने वाली मोती की माला।

7.186.67

संकल्पिताः प्रजास्तेन धर्मो दानं तपो गुणाः वेदाः शास्त्राणि भूतानि पञ्च ज्ञानोपदेशनाः ॥ ६७ ॥

saṃkalpitāḥ prajāsten dharmo dānaṃ tapo guṇāḥ vedāḥ śāstrāṇi bhūtāni pañca jñānopadeśanāḥ || 67 ||

By the Self, the created beings, dharma, charity, austerity, qualities, the Vedas, scriptures, elements, and the five kinds of knowledge are all imagined.

आत्मा द्वारा, सृष्ट प्राणी, धर्म, दान, तप, गुण, वेद, शास्त्र, तत्व, और पाँच प्रकार के ज्ञान सभी कल्पित हैं।

7.186.68

तपस्विनोऽथ वादैश्च यद्ब्रूयुरविलम्बितम् यद्यद्वेदविदस्तत्स्यादिति तेनाथ कल्पितम् ॥ ६८ ॥

tapasvino'tha vādaiśca yadbrūyuravilambitam yadyadvadavidastatsyāditi tenātha kalpitam || 68 ||

The ascetics, through their discourses, say without delay that whatever is known by the knowers of the Vedas, that is imagined by the Self.

तपस्वी, अपने वादों द्वारा, बिना देरी के कहते हैं कि वेद ज्ञानी जो भी जानते हैं, वह आत्मा द्वारा कल्पित है।

7.186.69

इदं चिद्ब्रह्मच्छिद्रं खं वायुश्चेष्टाग्निरुष्णता द्रवोऽम्भः कठिनं भूमिरिति तेनाथ कल्पिताः ॥ ६९ ॥

idaṃ cidbrahmaśchidraṃ khaṃ vāyuśceṣṭāgniruṣṇatā dravo'mbhaḥ kaṭhinaṃ bhūmiriti tenātha kalpitāḥ || 69 ||

This consciousness, the Brahman, is the opening, the sky, the wind, the fire, the heat, the liquid, the water, the solid, and the earth, all of which are imagined by the Self.

यह चेतना, ब्रह्म, छिद्र, आकाश, वायु, अग्नि, उष्णता, द्रव, जल, कठिन, और भूमि है, जो सभी आत्मा द्वारा कल्पित हैं।

7.186.70

चिद्धातुरीदृशो वासौ यद्यत्खात्मापि चेतति तत्तथानुभवत्याशु त्वमहं स इवाखिलम् ॥ ७० ॥

ciddhāturīdṛśo vāsau yadyatkhātmāpi cetati tattathānubhavatyāśu tvamahaṃ sa ivākhilam || 70 ||

The Self, which is the essence of consciousness, experiences whatever it thinks immediately. It is the same as 'I' and 'you' and everything else.

चेतना का सार, आत्मा, जो कुछ भी सोचता है, उसे तुरंत अनुभव करता है। यह 'मैं' और 'तुम' और सब कुछ के समान है।

7.186.71

यद्यथा वेत्ति चिद्व्योम तत्तथा तद्भवत्यलम् । स्वप्ने त्वमहमादीव सदात्माप्यसदात्मकम् ॥ ७१ ॥

yadyathā vetti cidvyoma tattathā tadbhavatyalaṃ | svapne tvamahamādīva sadātmāpyasadātmakam || 71 ||

Whatever the consciousness knows, that indeed becomes real | In dreams, you and I are eternal, yet also non-eternal || 71 ||

जो कुछ भी चेतना जानती है, वही वास्तविक होता है | स्वप्न में, तुम और मैं सनातन हैं, फिर भी असनातन भी हैं || ७१ ||

7.186.72

शिलानृतं यथा सत्यं संकल्पनगरे तथा । जगत्संकल्पनगरे सत्यं ब्रह्मण ईप्सितम् ॥ ७२ ॥

śilānṛtaṃ yathā satyaṃ saṃkalpanagare tathā | jagatsaṃkalpanagare satyaṃ brahmaṇa īpsitam || 72 ||

Just as a stone is true in an imagined city, so is the world true in the imagined city of Brahman || 72 ||

जैसे एक पत्थर कल्पना में नगर में सत्य है, वैसे ही ब्रह्म की कल्पना में नगर में जगत सत्य है || ७२ ||

7.186.73

चित्स्वभावेन शुद्धेन यद्बुद्धं यच्च यादृशम्। तदशुद्धोऽन्यथा कर्तुं न शक्तः कीटको यथा ॥ ७३ ॥

citsvabhāvena śuddhena yadbuddhaṃ yacca yādṛśam | tadaśuddho'nyathā kartuṃ na śaktaḥ kīṭako yathā || 73 ||

Whatever is known by the pure nature of consciousness, that cannot be made impure by any other means, just as a worm cannot change its nature || 73 ||

चेतना के शुद्ध स्वभाव से जो कुछ भी जाना जाता है, वह किसी भी अन्य तरीके से अशुद्ध नहीं किया जा सकता, जैसे कीट अपने स्वभाव को नहीं बदल सकता || ७३ ||

7.186.74

अभ्यस्तं बहुलं संवित्पश्यतीतरदल्पकम्। स्वप्ने जाग्रत्स्वरूपे च वर्तमानेऽखिलं च सत् ॥ ७४ ॥

abhyastaṃ bahulaṃ saṃvitpaśyatītaradalpakam | svapne jāgratsvarūpe ca vartamāne'khilaṃ ca sat || 74 ||

The one who sees the abundant consciousness sees the other as insignificant | In dreams and in the waking state, everything exists || 74 ||

जो व्यक्ति विपुल चेतना को देखता है, वह दूसरे को अप्रधान देखता है | स्वप्न और जाग्रत अवस्था में, सब कुछ मौजूद है || ७४ ||

7.186.75

सदा चिद्व्योम चिद्व्योम्नि कचदेकमिदं निजम्। द्रष्टृदृश्यात्मकं रूपं पश्यदाभाति नेतरत् ॥ ७५ ॥

sadā cidvyoma cidvyomni kacadekamidaṃ nijam | draṣṭṛdṛśyātmakaṃ rūpaṃ paśyadābhāti netarat || 75 ||

Always in the consciousness, this one unique form shines as the nature of the seer and the seen || 75 ||

हमेशा चेतना में, यह एक अनूठा रूप देखने वाले और देखे जाने वाले के स्वभाव के रूप में चमकता है || ७५ ||

7.186.76

एकं द्रष्टा च दृश्यं च चिन्नभः सर्वगं यतः। तस्माद्यथेष्टं यद्यत्र दृष्टं तत्तत्र सत्सदा ॥ ७६ ॥

ekaṃ draṣṭā ca dṛśyaṃ ca cinnaBhaḥ sarvagaṃ yataḥ | tasmādyatheṣṭaṃ yadyatra dṛṣṭaṃ tattatra satsadā || 76 ||

The seer and the seen are one, pervading all, because of which whatever is seen anywhere is always there.

देखने वाला और देखा जाने वाला एक हैं, सर्वव्यापी, इसलिए जो भी कहीं देखा जाता है वह हमेशा वहीं है।

7.186.77

वाय्वङ्गस्पन्दनवज्जलाङ्गद्रवभाववत्। यथा ब्रह्मणि ब्रह्मत्वं तथाजस्याङ्गं जगत् ॥ ७७ ॥

vāyvaṅgaspandanavajjalāṅgadravabhāvavat | yathā brahmaṇi brahmatvaṃ tathājasyaṅgaṃ jagat || 77 ||

Just as the nature of water is in its waves, so is the nature of Brahman in the universe.

जैसे जल की प्रकृति उसके तरंगों में है, वैसे ही ब्रह्म की प्रकृति ब्रह्माण्ड में है।

7.186.78

ब्रह्मैवाहं विराडात्मा विराडात्मवपुर्जगत्। भेदो न ब्रह्मजगतोः शून्यत्वाम्बरयोरिव ॥ ७८ ॥

brahmaivāhaṃ virāḍātmā virāḍātmavapurjagat | bhedo na brahmajagatoḥ śūnyatvāmbarayoriva || 78 ||

I am Brahman, the soul of the universe, and the universe is the body of Brahman. There is no difference between Brahman and the universe, just as there is no difference between space and emptiness.

मैं ब्रह्म हूँ, ब्रह्माण्ड की आत्मा, और ब्रह्माण्ड ब्रह्म का शरीर है। ब्रह्म और ब्रह्माण्ड में कोई भेद नहीं है, जैसे कि आकाश और शून्यता में कोई भेद नहीं है।

7.186.79

यथा प्रपाते पयसो विचित्राः कणपङ्कतयः। विचित्रदेशकालान्ता निपतन्त्युत्पतन्ति च ॥ ७९ ॥

yathā prapāte payaso vicitrāḥ kaṇapaṅkatayaḥ | vicitradeśakālāntā nipatantyutpatanti ca || 79 ||

Just as various particles of water fall and rise in a waterfall, so do various beings appear and disappear in different places and times.

जैसे जलप्रपात में जल के विभिन्न कण उठते और गिरते हैं, वैसे ही विभिन्न जीव अलग-अलग स्थान और समय में प्रकट होते और अप्रकट होते हैं।

7.186.80

निपत्त्यैवैकयाऽऽकल्पं मनोबुद्ध्यादिवर्जिताः। आत्मन्येवात्मनो भान्ति तथा या ब्रह्मसंविदः ॥ ८० ॥

nipattyaivaikeyā'kālpam manobuddhyādivarjitāḥ | ātmanyevātmāno bhānti tathā yā brahmasaṃvidāḥ || 80 ||

Those who have fallen into the eternal state, devoid of mind and intellect, shine in their own self, just as the knowledge of Brahman.

जो मन और बुद्धि से रहित होकर सनातन अवस्था में पड़े हैं, वे अपने आत्मा में ही चमकते हैं, जैसे कि ब्रह्म की ज्ञान है।

7.186.81

ताभिः स्वयं स्वदेहेषु बुद्ध्यादिपरिकल्पनाः। कृत्वोररीकृता सर्गश्रीरद्भिर्द्रवता यथा ॥ ८१ ॥

tābhiḥ svayaṃ svadeheṣu buddhyādiparikalpanāḥ| kṛtvorarīkṛtā sargaśrīradbhirdravatā yathā || 81 ||

By themselves, they create the illusion of intellect and other faculties in their own bodies, just as water flows in rivers.

अपने आप ही अपने शरीरों में बुद्धि आदि की कल्पनाएँ करते हैं, जैसे नदियों में पानी बहता है।

7.186.82

तदेवं जगदित्यऽस्ति दुर्बोधेन मम त्विदम्। अकारणकमद्वैतमजातं कर्म केवलम् ॥ ८२ ॥

tadevaṃ jagadityasti durbodhena mama tvidam| akāraṇakamadvaitamajātaṃ karma kevalam || 82 ||

Thus, the world exists, difficult to comprehend by me. It is causeless, non-dual, unborn, and merely action.

इस प्रकार, जगत है, जो मेरे लिए दुर्बोध है। यह अकारण, अद्वैत, अजात और केवल कर्म है।

7.186.83

अस्तस्थितिः शरीरेऽस्मिन्यादृग्रूपानुभूयते। उपलादौ जडा सत्ता तादृशी परमात्मनः ॥ ८३ ॥

astasthitiḥ śarīreasminyādṛgrūpānubhūyate| upalādau jaḍā sattā tādṛśī paramātmanaḥ || 83 ||

The existence of the body is experienced in various forms. The inert existence of a stone and other such things is similar to that of the Supreme Self.

शरीर की अस्तित्व को विभिन्न रूपों में अनुभव किया जाता है। पत्थर आदि की जड़ सत्ता परमात्मा की सत्ता के समान है।

7.186.84

यथैकस्यां सुनिद्रायां सुषुप्तस्वप्नकौ स्थितौ । तथैते सर्गसंहारभासौ ब्रह्मणि संस्थिते ॥ ८४ ॥

yathaikasyāṃ sunidrāyāṃ suṣuptasvapnakau sthitau| tathaite sargasaṃhārabhāsau brahmaṇi saṃsthite || 84 ||

Just as deep sleep and dream states exist in one sleep, so do the illusions of creation and dissolution exist in Brahman.

जैसे एक निद्रा में सुषुप्ति और स्वप्न अवस्थाएँ होती हैं, वैसे ही सृष्टि और संहार के भ्रम ब्रह्म में होते हैं।

7.186.85

सुषुप्तस्वप्नयोर्भातः प्रकाशतमसी यथा । एकस्यामेव निद्रायां सर्गासर्गौ तथा परे ॥ ८५ ॥

suṣuptasvapnayorbātaḥ prakāśatamasī yathā| ekasyāmeva nidrāyāṃ sargāsargau tathā pare || 85 ||

Just as the states of deep sleep and dream are manifestations of light and darkness, so are creation and dissolution in the ultimate reality.

जैसे सुषुप्ति और स्वप्न की अवस्थाएँ प्रकाश और अंधकार के प्रकटीकरण हैं, वैसे ही सृष्टि और संहार परम वास्तविकता में हैं।

7.186.86

यथा नरोऽनुभवति निद्रायां दृषदः स्थितिम् । परमात्मानुभवति तथैतज्जडसंस्थितिम् ॥ ८६ ॥

yathā naro'nubhavati nidrāyāṃ dṛṣadaḥ sthitim | paramātmānubhavati tathaitajjaḍasaṃsthitim || 86 ||

Just as a person experiences the state of stones in sleep, similarly, the Supreme Soul experiences this state of inertia.

जैसे एक व्यक्ति नींद में पत्थरों की स्थिति अनुभव करता है, उसी तरह, परमात्मा इस जड़ता की स्थिति अनुभव करता है।

7.186.87

अङ्गुष्ठस्याथवाङ्गुल्या वाताद्यस्पर्शने सति । योऽन्यचित्तस्यानुभवो दृषदादौ स आत्मनः ॥ ८७ ॥

aṅguṣṭhasyāthavāṅgulayā vātādyasparśane sati | yo'nyacittasyānubhavo dṛṣadādau sa ātmanaḥ || 87 ||

Just as the touch of wind or other elements on the thumb or finger is experienced by another's mind, so is the experience of the self in the stone, etc.

जैसे अंगूठे या उंगली पर हवा या अन्य तत्वों का स्पर्श दूसरे के मन द्वारा अनुभव किया जाता है, उसी तरह पत्थर में आत्मा का अनुभव होता है।

7.186.88

व्योमोपलजलादीनां यथा देहानुभूतयः । तथास्माकमचित्तानामद्य नानानुभूतयः ॥ ८८ ॥

vyomopalajalādīnāṃ yathā dehānubhūtayaḥ | tathāsmākamacittānāmadya nānānubhūtayaḥ || 88 ||

Just as the experiences of the body are like those of sky, stone, and water, so are the various experiences of the non-conscious today.

जैसे आकाश, पत्थर और जल के अनुभव शरीर के अनुभव की तरह होते हैं, उसी तरह आज अचेतन के विभिन्न अनुभव होते हैं।

7.186.89

काले कल्पेषु भान्त्येता यथाहोरात्रसंविदः । तथासंख्याः परे भान्ति सर्गसंहारसंविदः ॥ ८९ ॥

kāle kalpeṣu bhāntyetā yathāhorātrasaṃvidaḥ | tathāsaṃkhyāḥ pare bhānti sargasaṃhārasaṃvidaḥ || 89 ||

Just as the perceptions of day and night are known in time, so are the countless perceptions of creation and dissolution.

जैसे दिन और रात के बोध समय में ज्ञात होते हैं, उसी तरह सृष्टि और प्रलय के अनगिनत बोध भी ज्ञात होते हैं।

7.186.90

आलोकरूपमननानुभवैषणेच्छामुक्तात्मनि स्फुरति वारिघने स्वभावात् । आवर्तवीचिवलयादि यथा तथायं शान्ते परे स्फुरति संहृतिसर्गपूगः ॥ ९० ॥

ālokarūpamananānubhavaiṣaṇecchāmuktātmani sphurati vārighane svabhāvāt | āvartavīcivalayādi yathā tathāyaṃ śānte pare sphurati saṃhṛtisargapūgaḥ || 90 ||

Just as the reflection of light, thought, experience, desire, and liberation appear in the self, so do the cycles of creation and dissolution appear in the supreme tranquility.

जैसे प्रकाश, विचार, अनुभव, इच्छा और मुक्ति का प्रतिबिंब आत्मा में प्रकट होता है, उसी तरह सृष्टि और प्रलय के चक्र परम शांति में प्रकट होते हैं।

Chapter 187

7.187.1

श्रीराम उवाच । विचित्राणामसंख्यानां भावानां नियतिः कुतः । कथं स्वभावो भावानामेकरूपः स्थितोऽचलः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | vicitrāṇāmasaṃkhyānāṃ bhāvānāṃ niyatiḥ kutaḥ | kathaṃ svabhāvo bhāvānāmekarūpaḥ sthito'calaḥ || 1 ||

Shri Rama said: What is the cause of the fixed nature of the countless and varied phenomena? How does the inherent nature of phenomena remain unchanged and constant?

श्री राम ने कहा: असंख्य और विचित्र भावों की नियति क्या है? भावों के स्वभाव का एकरूप और अचल होना कैसे है?

7.187.2

सत्स्वसंख्येषु देवेषु सूर्य एवोग्रभाः कथम् । दीर्घत्वमथ ह्रस्वत्वं दिवसानां तु किंकृतम् ॥ २ ॥

satsvasaṃkhyeṣu deveṣu sūrya evograbhāḥ katham | dīrghatvamatha hrasvatvaṃ divasānāṃ tu kiṃkṛtam || 2 ||

Among the countless gods, why is the Sun alone fierce? What causes the days to be long or short?

असंख्य देवताओं में, सूर्य ही क्यों उग्र है? दिनों की लंबाई और छोटाई का कारण क्या है?

7.187.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । काकतालीयवद्भानं यत्परे नियतं स्वतः । यथास्थितं यथारूपं स्थिते तज्जगदुच्यते ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kākatālīyavadbhānaṃ yatpare niyataṃ svataḥ | yathāsthitaṃ yathārūpaṃ sthite tajjagaducyate || 3 ||

Vasishtha said: Just as the reflection in a mirror is inherently fixed, so too is the world, as it is, in its true form, considered to be fixed.

वसिष्ठ ने कहा: जैसे दर्पण में प्रतिबिंब स्वतः ही नियत होता है, वैसे ही यह जगत्, जैसा है, अपने स्वरूप में, नियत माना जाता है।

7.187.4

सर्वशक्तेर्यथा यद्यद्भाति तत्तत्तथैव सत् । संविन्सारतया यायात्कथं भातमभाततताम् ॥ ४ ॥

sarvaśakteryathā yadyadbhāti tattattathaiva sat | saṃvinsāratayā yāyātkathaṃ bhātamabhātatām || 4 ||

Just as everything that appears in the all-powerful consciousness is real, so too does it move in the flow of consciousness. How can that which appears be unreal?

जैसे सब कुछ जो सर्वशक्तिमान चेतना में प्रकट होता है, वह वास्तविक है, वैसे ही वह चेतना के प्रवाह में चलता है। जो प्रकट होता है, वह कैसे अवास्तविक हो सकता है?

7.187.5

यथा स्थितं यथा भाति चित्त्वाद्ब्रह्म चिराय यत् । तस्य भानमभानाभं नियत्यभिधमेव तत् ॥ ५ ॥

yathā sthitaṃ yathā bhāti cittvādbrahma cirāya yat | tasya bhānamabhānābhaṃ niyatyabhidameva tat || 5 ||

Just as Brahman, which is eternal consciousness, is as it is and appears as it is, its manifestation is neither real nor unreal, but is called destiny.

जैसे ब्रह्म, जो अनंत चेतना है, जैसा है और जैसा प्रकट होता है, उसका प्रकटीकरण न तो वास्तविक है न अवास्तविक, बल्कि उसे नियति कहा जाता है।

7.187.6

इदमित्थमिदं चेत्थं स्वयं ब्रह्मेति भाति यत्। तन्नियत्यभिधं प्रोक्तं सर्गसंहाररूपधृक् ॥ ६ ॥

idamitthamidaṃ cetthaṃ svayaṃ brahmeti bhāti yat | tanniya tyabhidhaṃ proktaṃ sargasaṃhārarūpadhṛk || 6 ||

This is such, and that is such, it appears as Brahman itself | That is said to be the abode of destiny, the form of creation and destruction

यह ऐसा है, और वह ऐसा है, यह ब्रह्म स्वयं प्रकट होता है | वह नियति का आश्रय कहा जाता है, सृष्टि और संहार का रूप

7.187.7

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ताख्यं यत्स्वतः कचनं चिति। तत्ततोऽनन्यदेकाच्छं द्रवत्वमिव वारिणि ॥ ७ ॥

jāgratsvapnasuṣuptākhyaṃ yatsvataḥ kacanaṃ citi | tattato'nanyadekācchaṃ dravatvamiva vāriṇi || 7 ||

That which is known as the waking, dreaming, and deep sleep states, which is inherently conscious | That is non-different from it, like the fluidity in water

जो जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्त अवस्थाओं के रूप में जाना जाता है, जो स्वयं चेतन है | वह उससे भिन्न नहीं है, जैसे पानी में द्रवता

7.187.8

यथा शून्यत्वमाकाशे कर्पूरे सौरभं यथा। यथौष्ण्यमातपे नान्यज्जाग्रदादि तथा चिति ॥ ८ ॥

yathā śūnyatvamākāśe karpūre saurabhaṃ yathā | yathauṣṇyamātape nānyajjāgradādi tathā citi || 8 ||

Just as emptiness is in space, fragrance is in camphor, and heat is in the sun | Similarly, the states of waking, etc., are not different in consciousness

जैसे शून्यता आकाश में है, सुगंध कर्पूर में है, और गर्मी सूर्य में है | उसी प्रकार, जाग्रत आदि अवस्थाएँ चेतना में भिन्न नहीं हैं

7.187.9

सर्गप्रलयनाम्न्येकप्रवाहानन्यसत्तया। चिन्मात्रगगनात्मैकब्रह्मात्मन्येव संस्थितम् ॥ ९ ॥

sargapralayanāmnyekapravāhānan yasattayā | cinmātragaganātmaikabrahmātmanyeva saṃsthitam || 9 ||

The one continuous flow of creation and dissolution, being non-different in existence | Is established in the single essence of Brahman, which is pure consciousness

सृष्टि और प्रलय का एक अविच्छिन्न प्रवाह, जो अस्तित्व में भिन्न नहीं है | ब्रह्म के एकमात्र स्वरूप में स्थापित है, जो शुद्ध चेतना है

7.187.10

सर्गोऽयमिति तद्बुद्धं क्षणं यत्कचनं चितः। कल्पोऽयमिति तद्बुद्धं क्षणं तत्कचनं चितः ॥ १० ॥

sargo'yamiti tadbuddhaṃ kṣaṇaṃ yatkacanaṃ citiḥ | kalpo'yamiti tadbuddhaṃ kṣaṇaṃ tatkacanaṃ citiḥ || 10 ||

This creation is known as such in an instant, whatever is from consciousness | This aeon is known as such in an instant, whatever is from consciousness

यह सृष्टि एक क्षण में ऐसे जानी जाती है, जो चेतना से है | यह कल्प एक क्षण में ऐसे जाना जाता है, जो चेतना से है

7.187.11

तत्कालस्तत्क्रिया तत्त्वं देशद्रव्योदयादि तत्। यत्स्वप्न इव चिन्मात्रकचनं स्वस्वभावतः ॥ ११ ॥

tatkālastatkriyā tattvaṃ deśadravyodayādi tat | yatsvapna iva cinmātrakacanaṃ svasvabhāvataḥ || 11 ||

That time, that action, that essence, that place, substance, and arising, etc., are like a dream, merely a reflection of consciousness by their very nature.

वह समय, वह क्रिया, वह तत्त्व, वह स्थान, पदार्थ और उदय आदि, स्वप्न की तरह, चेतना का केवल प्रतिबिम्ब अपने स्वभाव से हैं।

7.187.12

रूपालोकमनस्कारदेशकालक्रियादि तत्। चित्त्वं कचति चिद्व्योम्नि यन्नामानाकृति स्वतः ॥ १२ ॥

rūpālokamanaskāradeśakālakriyādi tat | cittvaṃ kacati cidvyomni yannāmānākṛti svataḥ || 12 ||

Form, perception, mental impressions, place, time, and actions, etc., are that. Consciousness shines in the expanse of consciousness, which is nameless and formless by itself.

रूप, अलोक, मनस्कार, स्थान, काल, और क्रिया आदि, वही है। चेतना चेतना के विस्तार में चमकती है, जो स्वयं नामहीन और रूपहीन है।

7.187.13

यद्यथा कचितं कालं यत्किंचित्कल्पितं तथा। तेनैवेयं हि नियतिरित्यप्याकाशरूपकम् ॥ १३ ॥

yadyathā kacitaṃ kālaṃ yatkiñcitkalpitaṃ tathā | tenaiveyaṃ hi niyatiritypākāśarūpakam || 13 ||

Whatever is imagined in whatever way at any time, by that very imagination, this indeed is the determination, thus it is like the form of space.

जो कुछ भी किसी भी तरह से किसी भी समय में कल्पित किया जाता है, उसी कल्पना से यह नियति है, इस प्रकार यह आकाश के रूप की तरह है।

7.187.14

आकल्पाख्यं निमेषं यत्कचनं चैकरूपकम्। स्वाभाविकाः स्वभावं तं प्राहुः प्रसृतबुद्धयः ॥ १४ ॥

ākalpākhyam nimeṣaṃ yatkacanaṃ caikarūpakam | svābhāvikāḥ svabhāvaṃ taṃ prāhuḥ prasṛtabuddhayaḥ || 14 ||

That which is called imagination is a moment, whatever it may be, of a single form. The wise proclaim that nature to be natural.

जो कल्पना कहलाती है, वह एक क्षण है, चाहे वह कुछ भी हो, एक ही रूप का। बुद्धिमान लोग उस स्वभाव को स्वाभाविक बताते हैं।

7.187.15

एकस्य संविन्मात्रस्य पदार्थशतता तथा। यथेदं संविदंशस्य रूपं स्वं स्वमनुज्झतः ॥ १५ ॥

ekasya saṃvinmātrasya padārthśatatā tathā | yathedaṃ saṃvidaṃśasya rūpaṃ svaṃ svamanujjhataḥ || 15 ||

Thus, the multitude of objects are of the one pure consciousness, as this portion of consciousness assumes its own form.

इस प्रकार, वस्तुओं की बहुलता एक शुद्ध चेतना की है, जैसे कि यह चेतना का अंश अपना रूप धारण करता है।

7.187.16

संविन्मये संविदो याः कचन्तीव परे तथा। ताभिस्तेषां स्वदेहानां यासां सा कलना कृता ॥ १६ ॥

saṃvinmaye saṃvido yāḥ kacantīva pare tathā | tābhisteṣāṃ svadehānāṃ yāsāṃ sā kalanā kṛtā || 16 ||

In the realm of consciousness, the consciousnesses that seem to move are similarly measured by those who have made the calculation of their own bodies.

चेतना के रूप में, जो चेतनाएँ चलती-फिरती प्रतीत होती हैं, वे उनके द्वारा उसी तरह मापी जाती हैं जिन्होंने अपने शरीरों की गणना की है।

7.187.17

चिदुर्वी सलिलं तेजः स्पन्दः शून्यत्वमेव च। प्रत्येकमाकरस्त्वेषां तानि स्वप्न इवाम्बरम् ॥ १७ ॥

cidurvī salilaṃ tejaḥ spandaḥ śūnyatvameva ca | pratyekamākarastveṣāṃ tāni svapna ivāmbaram || 17 ||

The flow of consciousness, water, fire, vibration, and emptiness each have their own repository, like a dream in the sky.

चेतना का प्रवाह, जल, अग्नि, स्पंदन, और शून्यता प्रत्येक का अपना भंडार है, जैसे आकाश में स्वप्न।

7.187.18

तत्र सप्रतिघस्यास्य कठिनस्याकरो महान्। भूपीठं जनताधारो राजव्राजेव राजते ॥ १८ ॥

tatra sapratighasyāsya kaṭhinasyākaro mahān | bhūpīṭhaṃ janatādhāro rājavrājeva rājate || 18 ||

There, the great repository of the hard and resistant is the earth, the support of people, shining like a royal throne.

वहाँ, कठोर और प्रतिरोधी का महान भंडार पृथ्वी है, जो लोगों का आधार है, और एक राजसी सिंहासन की तरह चमकती है।

7.187.19

अपामब्धिः प्रधानानां तेजसामेष भास्करः। स्पन्दस्य पवनो व्योम शून्यताया जगद्गतम् ॥ १९ ॥

apāmabdhiḥ pradhānānāṃ tejasāmeṣa bhāskaraḥ | spandasya pavano vyoma śūnyatāyā jagadgatam || 19 ||

The ocean is the repository of the principal waters, the sun of the radiances, the wind of vibration, and the sky of emptiness.

समुद्र मुख्य जलों का भंडार है, सूर्य चमकों का, वायु स्पंदन का, और आकाश शून्यता का।

7.187.20

पञ्चानामिति भूतानामाकरत्वेन संविदः। पञ्च तान्युचिता ब्राह्म्यः प्रश्नः किं भास्करं प्रति ॥ २० ॥

pañcānāmiti bhūtānāmākaratvena saṃvidaḥ | pañca tānyucitā brāhmyaḥ praśnaḥ kiṃ bhāskaraṃ prati || 20 ||

Thus, the five elements are the repositories of consciousness. The five are appropriate for the divine, the question is, what is the sun?

इस प्रकार, पाँच भूत चेतना के भंडार हैं। ये पाँच दिव्य के लिए उपयुक्त हैं, प्रश्न है, सूर्य क्या है?

7.187.21

बुधा संविच्चिदित्युक्ता सर्वगा सर्वरूपिणी। सर्वत्र स्वमहिम्नैषा सर्वेणैवानुभूयते ॥ २१ ॥

budhā saṃvicchidityuktā sarvagā sarvarūpiṇī | sarvatra svamahimnaiṣā sarveṇaivānubhūyate || 21 ||

The wise one, known as the consciousness, is omnipresent and omniform. Everywhere, by her own greatness, she is experienced by all.

बुद्धिमान चेतना कहलाती है, जो सर्वव्यापी और सर्वरूपी है | सर्वत्र अपने महिमा से यह सभी द्वारा अनुभव की जाती है |

7.187.22

ब्रह्मात्मा ब्रह्मबालोऽयं स्वसंवित्स्फुरणामिमाम्। व्योमात्मक्षौमभूनाम्नीं स्फारयत्यम्बराकृतिः ॥ २२ ॥

brahmātmā brahmabālo'yaṃ svasaṃvitsphuraṇāmimām | vyomātmakṣaumabhūnāmnīṃ sphārayatyambarākṛtiḥ || 22 ||

The self, which is the essence of Brahman, this child of Brahman, manifests this consciousness. The one who is the form of the sky, manifests the one named 'Kshauma' and 'Bhumi' in the form of the sky.

ब्रह्म का आत्मा, ब्रह्म का बालक, इस चेतना को प्रकट करता है | आकाश के रूप में, यह 'क्षौम' और 'भूमि' नामक को आकाश के रूप में प्रकट करता है |

7.187.23

सा यदैतत्तथैतच्च चिरमत्त्यजसंविदा । तदा तदङ्गस्यार्कादेर्नाऽतो नोत्पादि चञ्चलम् ॥ २३ ॥

sā yadaitetattathaicitacca ciramattyajasaṃvidā | tadā tadaṅgasyārkādernā'to notpādi cañcalam || 23 ||

When this consciousness is firmly established in its own awareness, then the parts of the sun, etc., do not arise or become unstable.

जब यह चेतना अपनी स्वयं की चेतना में स्थिर हो जाती है, तब सूर्य के अंगों आदि का उत्पन्न होना या अस्थिर होना नहीं होता।

7.187.24

संकल्पपूर्वमशकजालवद्विष्ण्यचक्रकम् । आवर्तवर्तिना भाति चिद्व्योमेदं च दृश्यवत् ॥ २४ ॥

saṃkalpapūrvamaśakajālavaddhiṣṇyacakrakam | āvartavartinā bhāti cidvyomedam ca dṛśyavat || 24 ||

The universe, which is the result of the will and the network of desires, appears to be revolving like a wheel. It appears to be visible in the sky of consciousness.

यह ब्रह्मांड, जो इच्छा और आकांक्षाओं के जाल का परिणाम है, एक चक्र की तरह घूमता हुआ प्रतीत होता है। यह चेतना के आकाश में दृश्य प्रतीत होता है।

7.187.25

तत्र प्रभास्वराः केचित्केचिदप्यल्पभास्वराः । केचिच्चाभास्वरा भाताः पदार्थाश्चित्ररूपिणः ॥ २५ ॥

tatra prabhāsvarāḥ kecitkecidapyalpabhāsvarāḥ | keciccābhāsvarā bhātāḥ padārthāścitrarūpiṇaḥ || 25 ||

There, some are very bright, some are less bright, and some are not bright at all. The elements appear in various forms.

वहाँ, कुछ बहुत चमकीले हैं, कुछ कम चमकीले हैं, और कुछ बिल्कुल चमकीले नहीं हैं। तत्व विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं।

7.187.26

पदार्थजातं त्वेतावन्न जातं न च दृश्यते । ज्ञस्याजातमिदं भाति खमात्मा स्वप्नदृश्यवत् ॥ २६ ॥

padārthajātaṃ tvetāvanna jātaṃ na ca dṛśyate | jñasyājātamidaṃ bhāti khamātmā svapnadṛśyavat || 26 ||

The entirety of material objects has not been created and is not seen. This uncreated appears to the knower like the self in a dream.

पदार्थों का समूह उत्पन्न नहीं हुआ है और दिखाई भी नहीं देता है। यह अजन्मा ज्ञाता को स्वप्न में दिखने वाले आत्मा की तरह प्रतीत होता है।

7.187.27

चिन्मात्रमात्मा सर्वेशः सर्व एवातिदृश्यवत् । नश्यतीव विदेहे स्वे न च भाति न नश्यति ॥ २७ ॥

cinmātramātmā sarveśaḥ sarva evātidṛśyavat | naśyatīva videhe sve na ca bhāti na naśyati || 27 ||

The self, which is pure consciousness, is the lord of all and is highly perceptible. It seems to perish in its own bodiless form, but it neither appears nor perishes.

जो शुद्ध चेतना है, वह आत्मा सबका स्वामी है और बहुत ही स्पष्ट है। यह अपने निराकार रूप में नष्ट होने का भ्रम पैदा करता है, लेकिन न तो यह दिखाई देता है और न ही नष्ट होता है।

7.187.28

स्वप्नदर्शनवद्भाति यच्चिद्व्योम चिदम्बरे । चिद्व्योमत्वादृते रूपं तदस्य जगतः कुतः ॥ २८ ॥

svapnadarśanavadbhāti yaccidvyoma cidambare | cidvyomatvādṛte rūpaṃ tadasya jagataḥ kutaḥ || 28 ||

That which appears like a dream vision is the consciousness-space in the sky of consciousness. Without the nature of consciousness-space, how can there be a form of this world?

जो स्वप्न की दृष्टि की तरह दिखाई देता है, वह चेतना-आकाश चेतना के आकाश में है। चेतना-आकाश के स्वभाव के बिना, इस जगत का रूप कैसे हो सकता है?

7.187.29

यद्यथा स्फुरितं तस्य यावत्सत्तं स्फुरद्वपुः । तत्स्वभावनियत्याख्यैः शब्दैरिह निगद्यते ॥ २९ ॥

yadyathā sphuriṭaṃ tasya yāvatsattaṃ sphuradvapuḥ | tatsvabhāvaniyatyākhyaiḥ śabdaihiha nigadyate || 29 ||

Whatever appears in whatever way, as long as it exists, it is described here by words indicating its natural necessity.

जो कुछ भी जैसे भी प्रकट होता है, जब तक वह मौजूद है, यहाँ उसकी प्राकृतिक आवश्यकता को दर्शाने वाले शब्दों द्वारा वर्णित किया जाता है।

7.187.30

गगनाङ्गस्य सत्तान्तः शब्दतन्मात्रकल्पया । कुसूलबीजाङ्कुरवत्तिष्ठत्याशान्तरूपिणी ॥ ३० ॥

gaganāṅgasya sattāntaḥ śabdatanmātrakalpayā | kusūlabījāṅkuravattitiṣṭhatyāśāntarūpiṇī || 30 ||

The inner essence of the sky, by the mere sound of the word, remains like a seed in the husk, appearing in various forms.

आकाश की अंतर्निहित सत्ता, शब्द के मात्र रूप से, बीज की तरह छिलके में रहती है, विभिन्न रूपों में प्रकट होती है।

7.187.31

संपद्यते तत इदमितीयं रचनेहया कृता सा मुग्धबोधाय मूर्खैर्विरचिता मुधा ॥ ३१ ॥

saṃpadyate tat idamitiyāṃ racanehayā kṛtā sā mugdhabodhāya mūrkhairviracitā mudhā || 31 ||

This is created by the ignorant for the ignorant, foolishly composed.

यह मूर्खों द्वारा मूर्खों के लिए मूर्खतापूर्वक बनाया गया है।

7.187.32

नास्तमेतीह नोदेति तत्कदाचन किंचन शिलाजठरवच्छान्तमिदं नित्यं सदप्यसत् ॥ ३२ ॥

nāstametīha noudeti tatkadācana kiṃcana śilājaṭharavacchāntamidaṃ nityaṃ sadapyasat || 32 ||

It neither sets nor rises, ever peaceful like a stone, this eternal, both real and unreal.

यह न तो अस्त होता है न उदय होता है, पत्थर की तरह शांत, यह नित्य, सत् और असत् दोनों है।

7.187.33

यथावयविनो नान्तः सदैवावयवाणवः नास्तं यान्ति न चोद्यन्ति जगन्त्यात्मपदे तथा ॥ ३३ ॥

yathāvayavino nāntaḥ sadaivāvayavāṇavaḥ nāstaṃ yānti na codyanti jagantyātmapade tathā || 33 ||

Just as the parts of a whole do not have an end, the parts of the universe do not set or rise in the state of the Self.

जैसे पूर्ण के अंग का कोई अंत नहीं होता, वैसे ही ब्रह्मांड के अंग आत्मा की स्थिति में न तो अस्त होते हैं न उदय।

7.187.34

ब्रह्म व्योम्नि जगद्व्योम व्योम व्योम्नीव विद्यते तत्कथं किल संशुद्धमस्तमायात्युदेति वा ॥ ३४ ॥

brahma vyomni jagadvyoma vyoma vyomnīva vidyate tatkathaṃ kila saṃśuddhamastamāyātyudeti vā || 34 ||

Brahman is in the sky, the universe is in the sky, the sky is in the sky. How can that pure one set or rise?

ब्रह्म आकाश में है, ब्रह्मांड आकाश में है, आकाश आकाश में है। वह शुद्ध कैसे अस्त हो सकता है या उदय हो सकता है?

7.187.35

तस्यानन्तप्रकाशात्मरूपस्याततचिन्मणेः सत्तामात्रात्मकचनं यदजस्रं स्वभावतः ॥ ३५ ॥

tasyānantaprakāśātmārūpasya ātata cinmaṇeḥ sattāmātrātmaka canaṃ yadajasraṃ svabhāvataḥ || 35 ||

That which is of the nature of infinite light, of the form of the extended consciousness, whose essence is mere existence, is eternal by nature.

जो अनंत प्रकाश की प्रकृति का है, विस्तृत चेतना के रूप में है, जिसका सार मात्र अस्तित्व है, वह स्वभाव से नित्य है।

7.187.36

तदात्मना स्वयं किंचिच्चेत्यतामिव गच्छति । अगृहीतात्मकं संविदूहामर्शनसूचकम् ॥ ३६ ॥

tadātmanā svayaṃ kiṃciccetyatāmiva gacchati | agṛhītātmakaṃ saṃvidūhāmarśanasūcakam || 36 ||

Then, by itself, it seems to move towards some consciousness, indicating the reflection of the ungrasped self.

तब, अपने आप से, यह कुछ चेतना की ओर बढ़ता है, जो अग्रहीत आत्मा के प्रतिबिंब की ओर इशारा करता है।

7.187.37

भाविनामार्थकलनैः किंचिदूहितरूपकम् । आकाशादणु शुद्धं च सर्वस्मिन्भाविबोधनम् ॥ ३७ ॥

bhāvināmārthakalanaiḥ kiṃcidūhitrūpakam | ākāśādaṇu śuddhaṃ ca sarvasminbhāvibodhanam || 37 ||

With the calculations of future meanings, it is somewhat metaphorical, pure like the sky and space, and enlightens all future beings.

भविष्य के अर्थों की गणनाओं के साथ, यह कुछ रूपक है, आकाश और अणु की तरह शुद्ध है, और सभी भविष्य के जीवों को प्रकाशित करता है।

7.187.38

ततः सा परमा सत्ता सती तच्चेतनोन्मुखी । चिन्नामयोग्या भवति किंचिल्लभ्यतया तया ॥ ३८ ॥

tataḥ sā paramā sattā satī taccetanonmukhī | cinnāmayogyā bhavati kiṃcillabhyatayā tayā || 38 ||

Then, that supreme existence, being conscious, becomes suitable for the name of consciousness due to its attainability.

तब, वह परम अस्तित्व, चेतन होकर, अपनी प्राप्यता के कारण चेतना के नाम के लिए उपयुक्त हो जाता है।

7.187.39

घनसंवेदनात्पश्चाद्भाविजीवादिनामिका । सा भवत्यात्मकलना यद्भवन्ती परं पदम् ॥ ३९ ॥

ghanasaṃvedanātpścādbhāvijīvādināmikā | sā bhavatyātmakalanā yadbhavantī paraṃ padam || 39 ||

After the dense realization, it becomes the calculation of the self, which is the supreme state of future beings.

घनी संवेदना के बाद, यह आत्मा की गणना बन जाता है, जो भविष्य के जीवों की परम अवस्था है।

7.187.40

गर्भीकृत्य स्थिताऽनाख्या चिदाकाशापिधानताम्। संप्रति त्वतिशुद्धस्य पदस्यानन्यरूपिणी ॥ ४० ॥

garbhīkṛtya sthitā'nākhyā cidākāśāpidhānatām | saṃprati tvatiśuddhasya padasyānan'yarūpiṇī || 40 ||

Having absorbed, it remains unnamed, covering the space of consciousness, now being the form of the extremely pure state.

अपने में समाहित करके, यह अनाम रहता है, चेतना के आकाश को ढंकता है, अब अति शुद्ध अवस्था का रूप है।

7.187.41

स्वतैकभावनामात्रसारसंसरणोन्मुखी। तदा विनाभावकृता अनुतिष्ठन्ति तामिमाः ॥ ४१ ॥

svataikabhāvanāmātrasārasaṃsaraṇonmukhī | tadā vinābhāvakṛtā anutiṣṭhanti tāmimāḥ || 41 ||

When one is inclined towards the essence of self-realization, then without the creation of duality, they attain that state.

जब कोई आत्म-साक्षात्कार के सार की ओर प्रवृत्त होता है, तब द्वैत के निर्माण के बिना, वे उस अवस्था को प्राप्त करते हैं।

7.187.42

शून्यरूपा स्वसत्तैका शब्दादिगुणगर्भिणी। चिद्भावनाभिसंपन्ना भविष्यदभिधार्थता ॥ ४२ ॥

śūnyarūpā svasattaiakā śabdādiguṇagarbhiṇī | cidbhāvanābhisaṃpannā bhaviṣyadabhidhārthatā || 42 ||

The void form, which is the sole existence, contains the qualities of sound, etc., and is endowed with the contemplation of consciousness, indicating the future meaning.

शून्य रूप, जो एकमात्र अस्तित्व है, शब्द आदि गुणों से भरा हुआ है, और चेतना की भावना से संपन्न है, भविष्य के अर्थ को दर्शाता है।

7.187.43

अहंतोदेति तदनु सह वै कालसत्तया। भविष्यदभिधार्थे ते बीजं मुख्यं जगत्स्थितेः ॥ ४३ ॥

ahaṃtodeti tadanu saha vai kālasattayā | bhaviṣyadabhidhārthe te bījaṃ mukhyaṃ jagatsthiteḥ || 43 ||

The sense of 'I' arises along with the existence of time, and in the future meaning, it is the primary seed of the world's existence.

'मैं' का अहंकार समय के अस्तित्व के साथ उत्पन्न होता है, और भविष्य के अर्थ में, यह संसार के अस्तित्व का मुख्य बीज है।

7.187.44

चितिशक्तेः परायास्तु स्वसंवेदनमात्रकम्। जगज्जालमसद्रूपं चेतनात्सदिव स्थितम् ॥ ४४ ॥

citiśakteḥ parāyāstu svasaṃvedanamātrakam | jagajjālamasadrūpaṃ cetanātsadiva sthitam || 44 ||

The supreme power of consciousness is merely self-awareness. The worldly illusion, which is unreal, appears real due to consciousness.

चेतना की परम शक्ति केवल स्व-संवेदन है। यह असत्य संसार चेतना के कारण सत्य प्रतीत होता है।

7.187.45

एवंप्रायात्मिका सा चिद्बीजं संकल्पशाखिनः। अहंतां भावयत्यन्तः सैवेह भवति क्षणात् ॥ ४५ ॥

evaṃprāyātmikā sā cidbījaṃ saṃkalpaśākhinaḥ | ahaṃtāṃ bhāvayatyantaḥ saiveha bhavati kṣaṇāt || 45 ||

Thus, the self-natured seed of consciousness, which has the branches of resolve, internally contemplates the sense of 'I' and immediately becomes that.

इस प्रकार, चेतना का आत्म-स्वभाव बीज, जिसमें संकल्प की शाखाएँ हैं, अंतर्मुखी रूप से 'मैं' का भाव करता है और तुरंत उसी के रूप में हो जाता है।

7.187.46

जीवाभिधाना सैषाद्य भावाभावप्लवभ्रमैः । भ्रमत्यात्मपदे वीचिरूपैर्वारीव वारिणि ॥ ४६ ॥

jīvābhidhānā saiṣādya bhāvābhāvaplavabhramaiḥ | bhramatyātmapade vīcirūpairvārīva vāriṇi || 46 ||

This is called the life of the soul, which is constantly fluctuating due to the illusions of existence and non-existence, like waves in water.

यह आत्मा की जीवन-शैली कहलाती है, जो अस्तित्व और अनस्तित्व के भ्रम के कारण लगातार डोलती रहती है, जैसे पानी में लहरें।

7.187.47

चिदेवंभावनवती व्योमतन्मात्रभावनाम् । स्वतो घनीभूय शनैः खतन्मात्रं प्रचेतति ॥ ४७ ॥

cidevaṃbhāvanavatī vyomatanmātrabhāvanām | svato ghanībhūya śanaiḥ khatanmātraṃ pracetati || 47 ||

Thus, the consciousness, which is the essence of the self, gradually becomes dense and perceives the subtle elements of space.

इस प्रकार, चेतना, जो आत्मा का सार है, धीरे-धीरे घनीभूत होकर आकाश के सूक्ष्म तत्वों को ग्रहण करती है।

7.187.48

भाविनामार्थरूपं तद्बीजं शब्दौघशाखिनः । पदवाक्यप्रमाणाढ्यवेदार्थादिविकारि च ॥ ४८ ॥

bhāvināmārtharūpaṃ tadbījaṃ śabdaughaśākhinaḥ | padavākyapramāṇāḍhyavedārthādivikāri ca || 48 ||

That is the seed of the meaning of future things, which is the branch of the sound cluster, and it transforms into the meanings of words, sentences, and the Vedas.

वह भविष्य के अर्थ का बीज है, जो ध्वनि समूह की शाखा है, और यह शब्दों, वाक्यों और वेदों के अर्थों में परिवर्तित होता है।

7.187.49

तस्मादुदेष्यत्यखिला जगच्छ्रीः शब्दतत्त्वतः । शब्दौघनिर्मितार्थौघपरिणामविसारिणी ॥ ४९ ॥

tasmādudēṣyatyakhilā jagacchrīḥ śabdatattvataḥ | śabdaughanirmiārthaughapariṇāmavisāriṇī || 49 ||

Therefore, the entire glory of the world arises from the essence of sound, which spreads through the transformation of the cluster of meanings created by the sound cluster.

इसलिए, पूरी दुनिया की शोभा ध्वनि के सार से उत्पन्न होती है, जो ध्वनि समूह द्वारा निर्मित अर्थ समूह के परिवर्तन से फैलती है।

7.187.50

चिदेवंव्यवसाया सा जीवशब्देन कथ्यते । भाविशब्दार्थजालेन बीजं भूतौघशाखिनः ॥ ५० ॥

cidevaṃvyavasāyā sā jīvaśabdena kathyate | bhāviśabdārthajālena bījaṃ bhūtaughaśākhinaḥ || 50 ||

Thus, that consciousness is called by the word 'life,' and it is the seed of the network of meanings of future words, which is the branch of the elements.

इस प्रकार, वह चेतना 'जीवन' शब्द से कहलाती है, और यह भविष्य के शब्दों के अर्थ जाल का बीज है, जो तत्वों की शाखा है।

7.187.51

चतुर्दशविधं भूतजातमावलिताम्बरम् । जगज्जठरकर्णौघं तस्मात्संप्रसरिष्यति ॥ ५१ ॥

caturdaśavidhaṃ bhūtajātamāvalitāmbaram | jagajjaṭhakarṇaughaṃ tasmātsaṃprasariṣyati || 51 ||

The fourteen types of beings, enveloped by the sky, will spread out from the universe's womb.

चौदह प्रकार के जीवों को आकाश से घिरा हुआ है, जो ब्रह्माण्ड की कुक्षि से फैलेगा।

7.187.52

असंप्राप्ताभिधाचारा जीवत्वाच्चेतनेन चित्। काकतालीयवत्स्पन्दचिन्मात्रं चेतति स्वयम्॥ ५२॥

asaṃprāptābhidhācārā jīvatvāc cetanena cit | kākatālīyavat spandacinmātraṃ cetati svayam || 52 ||

Without attaining the state of being alive, consciousness itself, like a crow's movement, perceives only pure consciousness.

जीवित होने की अवस्था प्राप्त किए बिना, चेतना स्वयं ही काक के स्पंदन की तरह शुद्ध चेतना को ही अनुभव करती है।

7.187.53

पवनस्कन्धरूपस्य बीजं त्वक्स्पर्शशाखिनः। सर्वभूतक्रियास्पन्दस्तस्मात्संप्रसरिष्यति॥ ५३॥

pavanas skandharūpasya bījaṃ tvak sparśaśākhinaḥ | sarvabhūtakriyāspandas tasmātsaṃprasariṣyati || 53 ||

The seed of the form of the air element, which has the touch of the skin as its branch, will spread out from the vibration of all beings' actions.

वायु तत्व के रूप का बीज, जिसकी शाखा त्वचा का स्पर्श है, सभी जीवों के क्रिया स्पंदन से फैलेगा।

7.187.54

तत्र यच्चिद्विलासस्य प्रकाशानुभवो भवेत्। रूपतन्मात्रकं तद्वद्भविष्यदभिधार्थदम्॥ ५४॥

tatra yac cidvilāsasya prakāśānubhavo bhavet | rūpatanmātrakaṃ tadvad bhaviṣyad abhidhārthadam || 54 ||

There, the experience of the manifestation of consciousness will become the subtle form of that very thing, fulfilling the purpose of expression.

वहाँ, चेतना के विलास का प्रकाश अनुभव उसी वस्तु का सूक्ष्म रूप बन जाएगा, जो अभिव्यक्ति के उद्देश्य को पूरा करेगा।

7.187.55

प्रकाशचेतनं तेजो न तेजोऽन्यकृतं भवेत्। स्पर्शसंवेदनं स्पर्शो नेतरस्पर्शसंभवः॥ ५५॥

prakāśacetanaṃ tejo na tejo'nyakṛtaṃ bhavet | sparśasaṃvedanaṃ sparśo netarasparśasaṃbhavaḥ || 55 ||

The radiant consciousness is light, not created by another. The sensation of touch is touch itself, not arising from another touch.

प्रकाशमय चेतना प्रकाश है, जो दूसरे से उत्पन्न नहीं है। स्पर्श का अनुभव स्पर्श ही है, जो दूसरे स्पर्श से उत्पन्न नहीं है।

7.187.56

शब्दसंवेदनं शब्दः स्वत एवानुभूयते। खं खेनेव स्वयं कोशे नान्यच्छब्दकृदस्ति हि॥ ५६॥

śabdasanvedanaṃ śabdaḥ svata evānubhūyate | khaṃ kheneva svayaṃ kośe nānyacchabdakṛdasti hi || 56 ||

The perception of sound is experienced as sound itself | Just as space is perceived by space itself in the sky, there is no other sound-maker

ध्वनि का अनुभव स्वयं ध्वनि के रूप में होता है | जैसे आकाश आकाश में ही आकाश के रूप में अनुभव किया जाता है, वैसे ही कोई अन्य ध्वनि-निर्माता नहीं है

7.187.57

किल तस्यामवस्थायां कोऽपरः शब्दकृद्भवेत्। यथा तथा तदाद्यापि द्वैतैक्यस्यात्यसंभवात्॥ ५७॥

kila tasyāmavasthāyāṃ ko'paraḥ śabdakṛdbhavet | yathā tathā tadādyāpi dvaitaikyasyātyasaṃbhavāt || 57 ||

In that state, who else could be the sound-maker? As it is, even the primary cause is impossible due to the impossibility of duality and unity

उस अवस्था में, कौन दूसरा ध्वनि-निर्माता हो सकता है? जैसा है, वैसा ही है, प्राथमिक कारण भी द्वैत और एकता की असंभवता के कारण असंभव है

7.187.58

एवं हि रसतन्मात्रं गन्धतन्मात्रमेव च । असत्यमेव सदिव स्वप्नाभमिव चेत्यते ॥ ५८ ॥

evaṃ hi rasatanmātraṃ gandhatanmātrameva ca | asatyameva sadiva svapnābhmiva cetyate || 58 ||

Thus, indeed, the subtle essence of taste and the subtle essence of smell are unreal, like reality in a dream

इस प्रकार, वास्तव में, स्वाद की सूक्ष्म सत्ता और गंध की सूक्ष्म सत्ता असत्य है, जैसे स्वप्न में वास्तविकता

7.187.59

तेजः सूर्यादिजृम्भाभिर्बीजमालोकशाखिनः । तस्मादूपविभेदेन संसारः प्रसरिष्यति ॥ ५९ ॥

tejaḥ sūryādijṛmbhābhirbījamālokśākhinaḥ | tasmādrūpavibhedena saṃsāraḥ prasaripyati || 59 ||

Light, with the illusions starting from the sun, is the seed of the branches of light | Therefore, the world spreads out due to the differentiation of forms

प्रकाश, सूर्य से शुरू होने वाली भ्रामक छवियों के साथ, प्रकाश की शाखाओं का बीज है | इसलिए, रूपों के भेद के कारण संसार फैलता है

7.187.60

भविष्यदभिधस्याथ खतः स्वत इवासतः । स्वदनं तस्य संघस्य रसतन्मात्रमुच्यते ॥ ६० ॥

bhaviṣyadabhidhasyātha khataḥ svata ivāsataḥ | svadanaṃ tasya saṃghasya rasatanmātramucyate || 60 ||

Then, the future is said to be like space, non-existent by itself | The enjoyment of that collection is called the subtle essence of taste

फिर, भविष्य आकाश की तरह, स्वयं असत्य कहा जाता है | उस संग्रह का आनंद स्वाद की सूक्ष्म सत्ता कहलाता है

7.187.61

भविष्यद्रूपसंकल्पनामासौ सकलो गणः । संकल्पात्माथ तन्मात्रं गन्धाद्यमनुचेतति ॥ ६१ ॥

bhaviṣyadrūpasankalpanāmāsau sakalo gaṇaḥ | saṅkalpātmātha tanmātraṃ gandhādyamanucetati || 61 ||

This entire group is the future form of imagination | From the intention, then the subtle elements such as smell are inferred || 61 ||

यह सम्पूर्ण समूह भविष्य के रूप की कल्पना है | संकल्प से, फिर गंध आदि सूक्ष्म तत्वों का अनुमान लगाया जाता है || ६१ ||

7.187.62

भाविभूगोलकत्वेन बीजमाकृतिशाखिनः । सर्वाधारात्मनस्तस्मात्संसारः प्रसरिष्यति ॥ ६२ ॥

bhāvibhūgolakatvena bījamākṛtiśākhinaḥ | sarvādhārātmanastasmātsaṃsāraḥ prasariṣyati || 62 ||

Due to the nature of the future globe, the seed of the form of the branches | From that, the all-supporting self, the world will expand || 62 ||

भविष्य के ग्लोब के स्वभाव के कारण, शाखाओं के रूप का बीज | उससे, सबका आधार आत्मा, संसार फैलेगा || ६२ ||

7.187.63

अजात एव संजातस्तन्मात्राणां गणस्त्विति । अनाकारोऽपि साकारः संपन्नः कल्पनावशात् ॥ ६३ ॥

ajāta eva saṃjātastanmātrāṇāṃ gaṇastviti | anākāro'pi sākāraḥ saṃpannaḥ kalpanāvaśāt || 63 ||

Even though unborn, it is born, this group of subtle elements | Although formless, it is endowed with form due to imagination || 63 ||

हालाँकि अजन्मा, यह जन्मा है, यह सूक्ष्म तत्वों का समूह | हालाँकि निराकार, यह कल्पना के कारण रूप से सम्पन्न है || ६३ ||

7.187.64

एष तन्मात्रकगणः काकतालीयवत्स्वयम्। रूपं येन प्रदेशेन वेत्त्यक्षीति तदुच्यते ॥ ६४ ॥

eṣa tanmātrakagaṇaḥ kākatālīyavatsvayam | rūpaṃ yena pradeśena vettīkṣīti taducyate || 64 ||

This group of subtle elements, like the crow's eye, by itself | The form by which it knows the region is called the eye || 64 ||

यह सूक्ष्म तत्वों का समूह, कौए की आँख की तरह, स्वयं | जिस रूप से यह क्षेत्र को जानता है उसे आँख कहते हैं || ६४ ||

7.187.65

शब्दं येन प्रदेशेन वेत्ति श्रोत्रं तदुच्यते। स्पर्शं येन प्रदेशेन वेत्ति तत्तु त्वगिन्द्रियम् ॥ ६५ ॥

śabdaṃ yena pradeśena vetti śrotraṃ taducyate | sparśaṃ yena pradeśena vetti tattu tvagindriyam || 65 ||

The region by which it knows sound is called the ear | The region by which it knows touch is called the skin || 65 ||

जिस क्षेत्र से यह ध्वनि को जानता है उसे कान कहते हैं | जिस क्षेत्र से यह स्पर्श को जानता है उसे त्वचा कहते हैं || ६५ ||

7.187.66

रसं येन प्रदेशेन वेत्ति तद्रसनेन्द्रियम्। गन्धं येन प्रदेशेन वेत्ति घ्राणेन्द्रियं तु तत् ॥ ६६ ॥

rasaṃ yena pradeśena vetti tadrasanendriyam | gandhaṃ yena pradeśena vetti ghrāṇendriyaṃ tu tat || 66 ||

The organ that perceives taste is the tongue, and the organ that perceives smell is the nose.

जो इंद्रिय स्वाद को जानती है वह जिह्वा है, और जो इंद्रिय गंध को जानती है वह नाक है।

7.187.67

दिक्कालभेदाज्जीवोऽयं नियतामाकृतिं गतः। सर्वेणाङ्गेन नो सर्वं वेत्त्यसर्वात्मतावशात् ॥ ६७ ॥

dikkālabhedājjīvo'yaṃ niyatāmākṛtiṃ gataḥ | sarveṇāṅgena no sarvaṃ vetti asarvātmatāvaśāt || 67 ||

Due to the differences in direction and time, this living being has attained a limited form. It does not perceive everything with every part of its body due to its non-omnipresent nature.

दिशा और समय के भेद से यह जीव एक नियत आकृति को प्राप्त हुआ है। अपने सर्वांग से सब कुछ नहीं जानता है, क्योंकि यह सर्वव्यापी नहीं है।

7.187.68

इति कलनमनन्तमात्मनोन्तर्गतमनुमेयमनन्यदात्मभूतम्। न तदुदयमुपैति नास्तमेति स्थितमुपलोदरवद्धनं सुमौनम् ॥ ६८ ॥

iti kalanamanantamātmanontargatamanumeyamananyadātmabhūtam | na tadudayamupaiti nāstameti sthitamupalodaravaddhanaṃ sumaunam || 68 ||

Thus, the infinite, measurable, and inferable self that is within the self is not different from the self. It does not rise or set, it remains steady like the water in a lake, and it is very calm.

इस प्रकार, अनंत, मापनीय, और अनुमेय आत्मा जो आत्मा के अंदर है, आत्मा से भिन्न नहीं है। वह न उदय होता है न अस्त होता है, वह तालाब के पानी की तरह स्थिर रहता है, और बहुत शांत है।

Chapter 188

7.188.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । आदिमत्त्वमिदं प्रोक्तमेतस्य कलनस्य यत् । परस्मादद्वितीयं तत्त्वद्बोधाय न वास्तवम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ādimattvamidaṃ proktametasya kalanasya yat | parasmādadvitīyaṃ tattvadbodhāya na vāstavam || 1 ||

Shri Vasistha said: This is the primordial nature of this vibration, which is not real for the realization of the supreme non-dual truth.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह इस कंपन की आदिम प्रकृति है, जो परम अद्वैत सत्य के बोध के लिए वास्तविक नहीं है।

7.188.2

एवंविधं तत्कलनमात्मनोऽङ्गमकृत्रिमम् । चेत्योन्मुखचिदाभासं जीवशब्देन कथ्यते ॥ २ ॥

evaṃvidhaṃ tatkalanamātmano'ṅgamakṛtrimam | cetyonmukhacidābhāsaṃ jīvaśabdena kathyate || 2 ||

Such is this vibration, a natural part of the self, appearing as consciousness turned towards the object, and it is called by the word 'jiva'.

ऐसा ही यह कंपन है, आत्मा का एक स्वाभाविक अंग, जो चेतना के रूप में वस्तु की ओर मुड़ा हुआ दिखाई देता है, और इसे 'जीव' शब्द से कहा जाता है।

7.188.3

कलनस्यास्य नामानि बहूनि रघुनन्दन । श्रृणु तानि विचित्राणि चेत्योन्मुखचिदात्मनः ॥ ३ ॥

kalanasya asya nāmāni bahūni raghunandana | śṛṇu tāni vicitrāṇi cetyonmukhacidātmanaḥ || 3 ||

O Raghunandana, listen to the many and varied names of this vibration, which is the consciousness turned towards the object.

हे रघुनन्दन, इस कंपन के बहुत से और विविध नाम सुनो, जो वस्तु की ओर मुड़ी हुई चेतना है।

7.188.4

जीवनाच्चेतनाज्जीवो जीव इत्येव कथ्यते । चेत्योन्मुखतया चित्तं चिदित्येव निगद्यते ॥ ४ ॥

jīvanāccetanājjīvo jīva ityeva kathyate | cetyonmukhatayā cittaṃ cid ityeva nigadyate || 4 ||

From life and consciousness, it is called 'jiva'. Due to its nature of being turned towards the object, the mind is called 'cit'.

जीवन और चेतना से, इसे 'जीव' कहा जाता है। वस्तु की ओर मुड़े होने की प्रकृति के कारण, मन को 'चित' कहा जाता है।

7.188.5

इदमित्थमिति स्पष्टबोधाद्बुद्धिरिहोच्यते । कल्पनान्मननज्ञत्वान्मन इत्यभिधीयते ॥ ५ ॥

idamitthamiti spaṣṭabodhādbuddhirihocyate | kalpanānmananajñatvānmana ityabhidhīyate || 5 ||

Here, the intellect is called 'buddhi' due to the clear understanding of 'this is that'. Due to the ability to imagine and think, it is called 'mana'.

यहाँ, 'यह वह है' के स्पष्ट बोध के कारण बुद्धि को 'बुद्धि' कहा जाता है। कल्पना और सोचने की क्षमता के कारण इसे 'मन' कहा जाता है।

7.188.6

अस्मीति प्रत्ययादन्तरहंकारश्च कथ्यते । चेतनाढ्यमृतं चित्तमिति शास्त्रविचारिभिः ॥ ६ ॥

asmīti pratyayādantarahaṃkāraśca kathyate | cetanāḍhyamṛtaṃ cittamiti śāstravicāribhiḥ || 6 ||

From the notion of 'I am,' the ego is spoken of as the inner self | The mind is said to be the essence of consciousness by those who study the scriptures

मैं हूँ इस भावना से अहंकार अंतरहंकार कहा जाता है | चेतना का सार मन कहा जाता है शास्त्रों के विचारकों द्वारा

7.188.7

प्रौढसंकल्पजालात्स पुर्यष्टकमिति स्मृतम् । संसृतेः प्रकृतत्वेन प्राथम्यात्प्रकृतिः स्मृता ॥ ७ ॥

prauḍasaṃkalpajālātsa puryaṣṭakamiti smṛtam | saṃsṛteḥ prakṛtatvena prāthamyātprakṛtiḥ smṛtā || 7 ||

From the network of mature resolutions, it is remembered as the eightfold city | From the primacy of the nature of transmigration, nature is remembered

परिपक्व संकल्पों के जाल से, यह अष्टक नगर के रूप में याद किया जाता है | पुनर्जन्म की प्रकृति के प्राथमिकता से, प्रकृति याद की जाती है

7.188.8

बोधादविद्यमानत्वादविद्येत्युच्यते बुधैः । इत्यादिकलनस्यास्य नामानि कथितानि ते ॥ ८ ॥

bodhādavidyamānatvādavidyetyucyate budhaiḥ | ityādikalanasya asya nāmāni kathitāni te || 8 ||

From the non-existence of awareness, it is called ignorance by the wise | Thus, the names of this and other calculations are told to you

बोध की अनुपस्थिति से, इसे बुद्धिमानों द्वारा अज्ञान कहा जाता है | इस प्रकार, इस और अन्य गणनाओं के नाम आपको बताए जाते हैं

7.188.9

एतत्कलनमाद्यन्तमनाकारमनामयम् । आतिवाहिकदेहोक्त्या समुदाह्रियते बुधैः ॥ ९ ॥

etatkalanamādyantamanākāramanāmayam | ātivāhikadehoktyā samudāhriyate budhaiḥ || 9 ||

This calculation, from beginning to end, is formless and nameless | It is explained by the wise as the transmigratory body

यह गणना, शुरुआत से अंत तक, निराकार और नामहीन है | इसे बुद्धिमानों द्वारा पुनर्जन्म के शरीर के रूप में समझा जाता है

7.188.10

इत्येवं स्वप्नसंकल्पपुरवत्त्रिजगद्भ्रमः । भात्यर्थकार्यप्यवपुः शून्यमप्रतिघात्मकम् ॥ १० ॥

ityevaṃ svapnasaṁkalpapuravattrijagadbhramaḥ | bhātyarthakāryapyavapuḥ śūnyamapratighātmakam || 10 ||

Thus, the delusion of the three worlds, like a dream or an imaginary city, appears as a form devoid of purpose and empty

इस प्रकार, तीनों लोकों का भ्रम, स्वप्न या कल्पित नगर की तरह, एक उद्देश्यहीन और शून्य रूप में प्रकट होता है

7.188.11

इत्यातिवाहिकः प्रोक्तो देहो देहभृतां वर । चिन्नभश्चित्तदेहोऽसौ शून्य आकाशतोपि च ॥ ११ ॥

ityātivāhikaḥ prokto deho dehabhṛtāṃ vara | cinnabhaścittadeho'sau śūnya ākāśatopi ca || 11 ||

Thus, the body is said to be transient for the best of embodied beings. It is like a reflection of consciousness, a mental body, empty like space.

इस प्रकार, शरीर श्रेष्ठ शरीरधारियों के लिए अतिवाहिक कहा जाता है। यह चेतना का प्रतिबिम्ब है, एक मानसिक शरीर, आकाश की तरह शून्य।

7.188.12

नास्तमेति न चोदेति जगत्यामोक्षसंविदः । चतुर्दशविधस्यैका भूतसर्गस्य चित्तभूः ॥ १२ ॥

nāstameti na codeti jagatyāmokṣasaṃvidaḥ | caturdaśavidhasyaiakā bhūtasargasya cittabhūḥ || 12 ||

It neither sets nor rises, it is the awareness of liberation in the world. It is the mental ground of one of the fourteen types of elemental creation.

यह न तो अस्त होता है न उदय होता है, यह जगत में मोक्ष की संविद है। यह चौदह प्रकार की भूतसर्ग में से एक का मानसिक आधार है।

7.188.13

अत्र संसारलक्षाणि भविष्यन्ति भवन्ति च । भूतानि च फलानीव यथा कालव्यवस्थया ॥ १३ ॥

atra saṃsāralakṣāṇi bhaviṣyanti bhavanti ca | bhūtāni ca phalānīva yathā kālavyavasthayā || 13 ||

Here, the characteristics of the world will be and are, and beings will be like fruits according to the arrangement of time.

यहाँ, संसार के लक्षण होंगे और हैं, और प्राणी समय की व्यवस्था के अनुसार फलों की तरह होंगे।

7.188.14

एष चित्तमयो देहो जगन्त्यन्तर्बहिस्त्वपि । प्रतिबिम्बमिवादर्शः शून्य एव नभो यथा ॥ १४ ॥

eṣa cittamayo deho jagantyantarbahistvapi | pratibimbamivādarśaḥ śūnya eva nabho yathā || 14 ||

This mental body exists both within and outside the world, like a reflection in a mirror, empty like the sky.

यह मानसिक शरीर जगत के भीतर और बाहर दोनों में है, दर्पण में प्रतिबिम्ब की तरह, आकाश की तरह शून्य।

7.188.15

महाकल्पस्य पर्यन्ते सर्वनाशे स्थिरे स्थिते । महाशून्यपदे प्रौढे ब्रह्मात्मनि निरामये ॥ १५ ॥

mahākalpasya paryante sarvanāśe sthire sthitē | mahāśūnyapadē prauḍhē brahmātmani nirāmayē || 15 ||

At the end of the great aeon, when all is destroyed and stable, in the mature state of great emptiness, in the flawless Brahman-self.

महाकल्प के अंत में, जब सब कुछ नष्ट हो जाता है और स्थिर होता है, महाशून्य की परिपक्व अवस्था में, दोषरहित ब्रह्मात्मा में।

7.188.16

स्वतश्चितिघनोऽचित्त्वाच्चिद्भानमिदमात्मनः । आतिवाहिकदेहाभं क्रमेणानेन चेतति ॥ १६ ॥

svataścitighanō'cittvāccidbhānamidamātmanaḥ | ātivāhikadēhābhaṃ kramaṇānēna cētati || 16 ||

From itself, the self-luminous consciousness, due to its unmanifest nature, appears as the transmigratory body, and through this process, it becomes aware.

स्वयं से ही चेतना का घन है, जो अचेतन है, इस प्रकार यह आत्मा का चेतन भान है | यह आतिवाहिक देह के रूप में क्रमशः इस प्रकार चेतता है || 16 ||

7.188.17

स आतिवाहिको देहस्तदालोकप्रवर्तितः । कैश्चिद्ब्रह्मेति कथितः स्मृतः कैश्चिद्विराडिति ॥ १७ ॥

sa ātivāhikō dēhas tadālōkapravartitaḥ | kaiścidbrahmeti kathitaḥ smṛtaḥ kaiścidvirāḍiti || 17 ||

That transmigratory body, set in motion by that light, is called Brahman by some, and Virat by others.

वह आतिवाहिक देह, जो उस प्रकाश से प्रवर्तित है, कुछ लोगों द्वारा ब्रह्म कहा जाता है, और कुछ लोगों द्वारा विराट कहा जाता है || 17 ||

7.188.18

कश्चित्सनातनाभिख्यः कश्चिन्नारायणाभिधः । कश्चिदीश इति ख्यातः कश्चिदुक्तः प्रजापतिः ॥ १८ ॥

kaścitsanātanābhiakhyāḥ kaścinnārāyaṇābidhaḥ | kaścidīśa iti khyātaḥ kaściduktaḥ prajāpatiḥ || 18 ||

Some call it Sanatana, some call it Narayana, some call it Ish, and some call it Prajapati.

कुछ लोग इसे सनातन कहते हैं, कुछ लोग इसे नारायण कहते हैं, कुछ लोग इसे ईश कहते हैं, और कुछ लोग इसे प्रजापति कहते हैं || 18 ||

7.188.19

काकतालीयवद्भाताः पञ्च स्वेन्द्रियसंविदः । यत्र यत्र यथा तेषां स्थितास्तत्र तथा स्थिताः ॥ १९ ॥

kākatālīyavadbhātāḥ pañca svendriyasaṃvidaḥ | yatra yatra yathā teṣāṃ sthitāstatra tathā sthitāḥ || 19 ||

The five sense perceptions appear like the fingers of a hand, and wherever they are placed, they remain there.

पांच इन्द्रिय संवेदनाएँ हाथ की उंगलियों के समान प्रकट होती हैं, और जहां भी वे स्थित होती हैं, वहीं वे रहती हैं || 19 ||

7.188.20

एवमत्यन्तविवते संपन्ने दृश्यविभ्रमे । न किंचिदपि संपन्नं सर्वशून्यं ततं यतः ॥ २० ॥

ēvamatyantavitata ē saṃpannē dṛśyavibhramē | na kiṃcidapi saṃpannaṃ sarvaśūnyaṃ tataṃ yataḥ || 20 ||

Thus, in this completely spread out illusion of the visible world, nothing is accomplished, as everything is pervaded by emptiness.

इस प्रकार, इस पूर्ण रूप से फैली हुई दृश्य विभ्रम में, कुछ भी प्राप्त नहीं होता, क्योंकि सब कुछ शून्यता से व्याप्त है || 20 ||

7.188.21

अनादिमत्परं ब्रह्म न सद्यन्नासदुच्यते । तदेवेदमनाद्यन्तं तथास्थितमवेदनम् ॥ २१ ॥

anādimatparaṃ brahma na sadyannāsaducyate | tadevedamanādyantaṃ tathāsthitamavedanam || 21 ||

The supreme Brahman, which is without beginning, is not said to be existent or non-existent. It is eternal, unchanging, and beyond comprehension.

अनादि परम ब्रह्म न सत् है न असत् कहा जाता है | वही यह अनादि और अनन्त है, ऐसे ही स्थित है और अज्ञेय है ||

7.188.22

आतिवाहिकदेहस्य तस्यानुभवतः स्वयम् । याति व्यसनिनः स्वप्नः कान्तेव परिपुष्टताम् ॥ २२ ॥

ātivāhikadehasya tasyānubhavataḥ svayam | yāti vyasaninaḥ svapnaḥ kānteva paripuṣṭatām || 22 ||

The transmigratory body, experiencing itself, attains fulfillment like a dream of the afflicted.

परिवर्तनशील शरीर, स्वयं को अनुभव करता हुआ, पीड़ित के स्वप्न की तरह पूर्णता प्राप्त करता है।

7.188.23

शून्योऽप्यनाकृतिरपि घटाकारोऽनुभूयते । स्वप्नसंकल्पयोः स्वस्य देहस्य जगतो यथा ॥ २३ ॥

śūnyo'pyanākṛtirapi ghaṭākāro'nubhūyate | svapnasankalpayoḥ svasya dehasya jagato yathā || 23 ||

Even the void, which has no form, is experienced as having the form of a pot. Similarly, the body and the world are experienced in dreams and imaginations.

शून्य, जिसकी कोई आकृति नहीं है, घड़े की आकृति में अनुभव किया जाता है। इसी प्रकार, शरीर और जगत् स्वप्न और कल्पना में अनुभव किए जाते हैं।

7.188.24

भवत्यर्थकरोऽत्युच्चैस्तच्चित्खस्वप्नवस्तुवत्। आकाशात्मक एवोग्रः पदार्थ इव भासते॥ २४॥

bhavatyarthakaro'tyuccaistaccitkhasvapnavastuvat | ākāśātmaka evograḥ padārtha iva bhāsate || 24 ||

It becomes meaningful and very high, like a dream object in the space of consciousness. The fierce element of space itself appears like an object.

यह अर्थपूर्ण और बहुत ऊँचा बन जाता है, जैसे चेतना के आकाश में स्वप्न का वस्तु। आकाश का उग्र तत्व स्वयं एक वस्तु की तरह प्रकट होता है।

7.188.25

आतिवाहिकदेहोऽसौ स्वतोऽनुभवति क्रमात्। अनाकारोपि शून्योपि स्वप्नाभोऽसन्नपि स्थितः॥ २५॥

ātivāhikadeho'sau svato'nubhavati kramāt | anākāro'pi śūnyo'pi svapnābho'sannapi sthitaḥ || 25 ||

That transmigratory body experiences itself spontaneously in sequence. Even though it is formless and void, it exists like a dream, though it is non-existent.

वह परिवर्तनशील शरीर स्वयं को स्वतः ही क्रम से अनुभव करता है। यद्यपि यह आकारहीन और शून्य है, यह स्वप्न की तरह अस्तित्व में है, हालाँकि यह अस्तित्वहीन है।

7.188.26

चेतत्यस्थिगणः स्थूलं कराद्यवयवावलिम्। त्रिकलोमशिरास्नायुसंनिवेशतया स्थितम्॥ २६॥

cetatyasthigaṇaḥ sthūlaṃ karādyavayavāvalim | trikalomashirāsnāyusaṃniveśatayā sthitam || 26 ||

The collection of bones perceives the gross body with its parts such as hands, etc., situated in the arrangement of three types of hair, veins, and nerves.

अस्थियों का समूह हाथ आदि अवयवों के साथ स्थूल शरीर को ग्रहण करता है, जो तीन प्रकार के बालों, नसों और स्नायुओं के व्यवस्था में स्थित है।

7.188.27

जन्मकर्मेहितस्थानं परिणामवयःस्थितम्। देशकालक्रमाभोगभावार्थायोद्भवभ्रमम्॥ २७॥

janmakarmehitasthānaṃ pariṇāmavayaḥsthitam | deśakālakramābhogabhāvārthāyodbhavabhramam || 27 ||

The place of birth, actions, and benefits is situated in the transformation of age. The illusion of the arising of the meaning of the experience of place, time, and sequence.

जन्म, कर्म और लाभ का स्थान आयु के परिवर्तन में स्थित है। स्थान, समय और क्रम के अनुभव के अर्थ के उदय का भ्रम।

7.188.28

जरामरणमाधानदशदिङ्मण्डलक्रमम्। ज्ञानज्ञेयज्ञातृभावमादिमध्यान्तवेदनम्॥ २८॥

jarāmaraṇamādhānadaśadiṅmaṇḍalakramam | jñānajñeyajñātṛbhāvamādimadhyāntavedanam || 28 ||

The sequence of the ten directions of old age and death, the knowledge, the knowable, and the knower, the experience of the beginning, middle, and end.

बुढ़ापे और मृत्यु के दस दिशाओं की क्रम, ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता, आदि, मध्य और अंत के अनुभव।

7.188.29

क्षितिजलगगनदिवाकरजनताव्यवहारनगरशिखरात्मा । स्वाधाराधेयमयं पश्यति वपुषः पुरातनः पुरुषः ॥ २९ ॥

kṣitijalagaganadivākarajanatāvyavahāranagaraśikharātmā | svādhārādheyamayaṃ paśyati vapuṣaḥ purātanaḥ puruṣaḥ || 29 ||

The ancient Purusha sees the body as the support and the supported, consisting of earth, water, sky, sun, people, transactions, and the city's peak.

पुरातन पुरुष शरीर को आधार और आधेय के रूप में देखता है, जो पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, लोगों, व्यवहारों और नगर के शिखर से बना है।

Chapter 189

7.189.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । आतिवाहिकदेहोऽसौ तस्याद्यस्य प्रजापतेः । काकतालीयवच्चित्त्वाद्यद्यथेत्यादि चेतति ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ātivāhikadeho'sau tasyādyasya prajāpateḥ | kākatālīyavaccittvādyadyathetyādi cetati || 1 ||

Vasishtha said: This transcendental body of the first Prajapati, due to its mind being like a crow on a palm tree, thinks 'as it is' and so on.

वसिष्ठ ने कहा: यह परात्परिक शरीर प्रथम प्रजापति का है, जिसके मन का स्वभाव कौए के ताड़ पर बैठने जैसा है, वह 'जैसा है' वगैरह सोचता है।

7.189.2

तत्तथा स्थितिमायाति चिरं संवित्स्वभावतः । बत विश्वमिदं भातमत्रासत्ये कुतः स्मयः ॥ २ ॥

tattathā sthitimāyāti ciraṃ saṃvitsvabhāvataḥ | bata viśvamidaṃ bhātamatrāsatyekutaḥ smayaḥ || 2 ||

Thus, it attains that state for a long time due to the nature of consciousness. Oh, how wonderful! This universe appears in this unreal state, where is the wonder?

इस प्रकार, यह चेतना के स्वभाव के कारण उस अवस्था को लंबे समय तक प्राप्त करता है। ओह, कितना आश्चर्य! यह ब्रह्मांड इस असत्य अवस्था में प्रकट होता है, आश्चर्य कहाँ है?

7.189.3

द्रष्टाऽसत्यमसत्यं दृगसत्यं दर्शनं ततम् । सत्यमेवाथवा सर्वं ब्रह्मैवात्मतया तया ॥ ३ ॥

draṣṭā'satyamasatyaṃ dṛgasatyaṃ darśanaṃ tatam | satyamevāthavā sarvaṃ brahmaivātmatayā tayā || 3 ||

The seer is unreal, the unreal is real, the vision is pervaded by reality. Indeed, everything is truly the Brahman, which is the self.

द्रष्टा असत्य है, असत्य सत्य है, दृष्टि वास्तविकता से व्याप्त है। वास्तव में, सब कुछ ब्रह्म ही है, जो आत्मा है।

7.189.4

श्रीराम उवाच । इत्यातिवाहिकालोकः स तस्याद्यप्रजापतेः । कठिनत्वं कथं यातः कथं स्वप्नस्य सत्यता ॥ ४ ॥

śrīrāma uvāca | ityātivāhikālokaḥ sa tasyādyaprajāpateḥ | kaṭhinatvaṃ kathaṃ yātaḥ kathaṃ svapnasya satyatā || 4 ||

Rama said: Thus, the transcendental world of the first Prajapati, how did it become hard? How is the reality of the dream?

राम ने कहा: इस प्रकार, प्रथम प्रजापति का परात्परिक जगत, कैसे यह कठिन हो गया? सपने की सत्यता कैसे है?

7.189.5

श्रीवसिष्ठ उवाच । आतिवाहिक आलोकः स्वत एवानुभूयते । सदानवरतं तेन स एवाभाति पुष्टवत् ॥ ५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ātivāhika ālokaḥ svata evānubhūyate | sadānavarataṃ tena sa evābhāti puṣṭavat || 5 ||

Vasishtha said: The transcendental light is experienced by itself. Always and forever, it shines brightly.

वसिष्ठ ने कहा: परात्परिक प्रकाश स्वयं अनुभव किया जाता है। हमेशा और सदा के लिए, यह चमकता रहता है।

7.189.6

यथा स्वप्नस्य पुष्टत्वं चिरानुभवनोचितम्। अतिसत्यमिवाभाति स्वातिवाहिकता तथा ॥ ६ ॥

yathā svapnasya puṣṭatvaṃ cirānubhavanocitam| atisatyamivābhāti svātivāhikatā tathā || 6 ||

Just as the vividness of a dream seems very real due to prolonged experience, so too does the transient nature of the physical body appear to be real.

जैसे सपने की पूर्णता चिरकालिक अनुभव के कारण अत्यन्त सत्य प्रतीत होती है, उसी प्रकार शरीर की अस्थायी प्रकृति भी सत्य प्रतीत होती है।

7.189.7

आतिवाहिकदेहस्य चिरस्यानुभवोदये। आधिभौतिकताबुद्धिरुदेति मृगवारिवत् ॥ ७ ॥

ātivāhikadehasya cirasyānubhavodaye| ādhibhautikatābuddhirudeti mṛgavārivat || 7 ||

When the physical body is experienced for a long time, the mind perceives it as material reality, just as a mirage appears as water.

जब शरीर का चिरकालिक अनुभव होता है, तो मन उसे भौतिक वास्तविकता के रूप में ग्रहण करता है, जैसे मृगतृष्णा पानी के रूप में दिखाई देती है।

7.189.8

जगत्स्वप्नभ्रमाभासं मृगतृष्णाम्बुवत्स्थितम्। असदेवेदमाभाति सत्यप्रत्ययकार्यपि ॥ ८ ॥

jagatsvapnabhramābhāsaṃ mṛgatṛṣṇāmbuvatsthitam| asadevedamābhāti satyapratyayakāryapi || 8 ||

The world appears as an illusion, like a dream or a mirage, even though it seems real.

संसार एक सपने या मृगतृष्णा के समान भ्रम के रूप में प्रतीत होता है, भले ही यह सत्य प्रतीत होता है।

7.189.9

आतिवाहिकरूपाणामाधिभौतिकता स्वयम्। असती सत्यवद्दूरमर्वाग्दर्शिभिरर्थिता ॥ ९ ॥

ātivāhikarūpāṇāmādhibhautikatā svayam| asatī satyavaddūramarvāgdarśibhirarthitā || 9 ||

The material reality of transient forms is itself unreal, perceived as real only by those who are deluded.

अस्थायी रूपों की भौतिक वास्तविकता स्वयं असत्य है, जो केवल भ्रमित लोगों द्वारा सत्य के रूप में देखी जाती है।

7.189.10

अयं सोहमिदं तन्म इमा गिरिनभोदिशः। इति मिथ्याभ्रमो भाति भास्वरस्वप्नशैलवत् ॥ १० ॥

ayaṃ sohamidaṃ tanm imā girinabhodiśaḥ| iti mithyābhrmo bhāti bhāsvrasvapnaśailavat || 10 ||

This is me, this is mine, these are my possessions—such is the false illusion that appears like a vivid dream or a mirage.

यह मैं हूँ, यह मेरा है, ये मेरी सम्पत्तियाँ हैं—ऐसा झूठा भ्रम एक सपने या मृगतृष्णा के समान प्रतीत होता है।

7.189.11

आतिवाहिकदेहोऽसौ स्रष्टुराद्यस्य भावितः। आधिभौतिकतां चैतत्पिण्डाकारं प्रपश्यति ॥ ११ ॥

ātivāhikadeho'sau sraṣṭurādyasya bhāvitaḥ | ādhibhautikatāṃ caitatpiṇḍākāraṃ prapaśyati || 11 ||

This transcendental body is imagined by the first creator. It perceives this as having a material form.

यह पारलौकिक शरीर पहले सृष्टिकर्ता द्वारा कल्पित है | यह इसे भौतिक रूप में देखता है |

7.189.12

चिन्नभश्चेतनं त्यक्त्वा ब्रह्माहमिति पश्यति। अयं देहोऽयमाधार इति बघ्नाति भावनाम्॥ १२॥

cinnabhaścetanaṃ tyaktvā brahmāhamiti paśyati | ayaṃ deho'yamādhāra iti baghnāti bhāvanām || 12 ||

Giving up the conscious mind, one sees 'I am Brahman.' This body is the support, thus one destroys the notion.

चेतन मन को छोड़कर, एक 'मैं ब्रह्म हूँ' कहकर देखता है | यह शरीर आधार है, इसलिए एक धारणा को नष्ट करता है |

7.189.13

असत्ये सत्यबुद्ध्यैव बद्धो भवति भावनात्। बहुशो भावयत्यन्तर्नानात्वमनुधावति॥ १३॥

asatye satyabuddhyeva baddho bhavati bhāvanāt | bahuśo bhāvayantyantarnānātvamanudhāvati || 13 ||

One becomes bound by considering the unreal as real due to imagination. One repeatedly imagines various things and pursues diversity.

असत्य को सत्य समझकर कल्पना से एक बंधन में आ जाता है | एक बार बार अलग-अलग चीजों की कल्पना करता है और विविधता का पीछा करता है |

7.189.14

शब्दान्करोति संकेतं संज्ञाश्च स्पन्दनानि च। ओमित्युक्ते ततो वेदाञ्छब्दराशीन्प्रगायति॥ १४॥

śabdānkaroti saṃketaṃ saṃjñāśca spandanāni ca | omitiukte tato vedāñchabdarāśīnpragāyati || 14 ||

One creates symbols from words, names, and movements. When 'Om' is said, then one sings the collection of Vedic sounds.

एक शब्दों, नामों और गतिविधियों से प्रतीक बनाता है | जब 'ओम्' कहा जाता है, तब एक वैदिक ध्वनियों के संग्रह को गाता है |

7.189.15

तैरेव कल्पयत्याशु व्यवहारमितस्ततः। मनो ह्यसौ कल्पयति यच्चेतति तदेव हि॥ १५॥

taireva kalpayatyāśu vyavahāramitastataḥ | mano hyasau kalpayati yaccetati tadeva hi || 15 ||

With those very symbols, one quickly creates transactions. Indeed, the mind creates whatever it thinks.

उन्हीं प्रतीकों से, एक तुरंत व्यवहार बनाता है | वास्तव में, मन जो सोचता है वही बनाता है |

7.189.16

यो हि यन्मय एवासौ स न पश्यति तत्कथम्। असत्यैव जगद्भ्रान्तिरेवं प्रौढिमुपागता॥ १६॥

yo hi yanmaya evāsau sa na paśyati tatkatham | asatyaiava jagadbhrāntirevaṃ prauḍhimupāgatā || 16 ||

He who is indeed of the nature of Brahman does not see it, how is it so? The world is indeed an illusion, thus it has attained maturity.

जो वास्तव में ब्रह्म स्वरूप है, वह उसे नहीं देखता, ऐसा कैसे होता है? यह संसार वास्तव में एक भ्रांति है, इस प्रकार यह परिपक्वता प्राप्त हुई है।

7.189.17

आब्रह्मणो मुधा भाति चिरस्वप्नेन्द्रजालवत्। इत्यातिवाहिकस्येयमाधिभौतिकतोचिता॥ १७॥

ābrahmaṇo mudhā bhāti cirasvapnendrajālavat | ityātivāhikasyeyamādhibhautikatocitā || 17 ||

From Brahman, it appears as if in ignorance, like a long dream or magic. Thus, this transmigratory existence is suitable for the material world.

ब्रह्म से, यह अज्ञान में प्रतीत होता है, जैसे एक लंबा स्वप्न या जादू। इस प्रकार, यह पुनर्जन्म का अस्तित्व भौतिक जगत के लिए उपयुक्त है।

7.189.18

आधिभौतिकता नास्ति काचित्किंचिदपि क्वचित् । आतिवाहिकतैवैनामभ्यासाद्याति भावनाम् ॥ १८ ॥

ādhibhautikatā nāsti kācitkiñcidapi kvacit | ātivāhikataivainmāmabhyāsādyāti bhāvanām || 18 ||

There is no materiality whatsoever anywhere. It is only due to the habit of transmigratory existence that it appears so.

कहीं भी कोई भौतिकता नहीं है। यह केवल पुनर्जन्म के अस्तित्व के अभ्यास के कारण ऐसा प्रतीत होता है।

7.189.19

मूलादेवैवमायातो मिथ्यानुभवनात्मकः । मोहो ब्रह्मण एवायमित्यस्त्येष महात्मनाम् ॥ १९ ॥

mūlādevaivamāyāto mithyānubhavanātmakaḥ | moho brahmaṇa evāyamityastyēṣa mahātmanām || 19 ||

From the root of ignorance, this delusion arises, which is of the nature of false experience. This delusion of Brahman is indeed the essence of great souls.

अज्ञान की जड़ से, यह भ्रांति उत्पन्न होती है, जो झूठे अनुभव की प्रकृति की है। यह ब्रह्म की भ्रांति महात्माओं का सार है।

7.189.20

एवमित्थं दशा राम पिण्डबन्धः क्व विद्यते । भ्रान्तिरेवेदमखिलं ब्रह्मैवाभातमेव वा ॥ २० ॥

evamitthaṃ daśā rāma piṇḍabandhaḥ kva vidyate | bhrāntirevedamakhilaṃ brahmaivābhātameva vā || 20 ||

Thus, O Rama, where is the bondage of the body? All this is indeed an illusion, or it is Brahman itself that appears.

इस प्रकार, हे राम, शरीर का बंधन कहां है? यह सब कुछ वास्तव में एक भ्रांति है, या यह ब्रह्म ही है जो प्रतीत होता है।

7.189.21

न शाश्वतादन्यदिहास्ति कारणान्न कारणं तत्खलु कार्यतां विना । न कार्यताकारणतादिसंभवोऽस्त्यनामये तत्किमपीदमाततम् ॥ २१ ॥

na śāśvatādanyadihāsti kāraṇānna kāraṇaṃ tatkhalu kāryatāṃ vinā | na kāryatākāraṇatādisaṃbhavo'styānāmaye tatkimapīdamātatam || 21 ||

There is nothing here other than the eternal cause | That cause does not exist without the effect | There is no possibility of the effect and cause in the flawless | What is this then?

यहाँ सनातन कारण के अलावा कुछ नहीं है | वह कारण कार्य के बिना नहीं है | दोषरहित में कार्य और कारण की संभावना नहीं है | तो यह क्या है?

Chapter 190

7.190.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । ज्ञानस्य ज्ञेयतापत्तिर्बन्ध इत्यभिधीयते । तस्यैव ज्ञेयताशान्तिर्मोक्ष इत्यभिधीयते ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | jñānasya jñeyatāpattirbandha ityabhidhīyate | tasyaiva jñeyatāśāntirmokṣa ityabhidhīyate || 1 ||

Vasishtha said: The perception of knowledge as an object is called bondage. The cessation of that perception is called liberation.

वसिष्ठ ने कहा: ज्ञान को ज्ञेय मानना बंधन कहलाता है। उसी ज्ञेयता का शांत होना मोक्ष कहलाता है।

7.190.2

श्रीराम उवाच । ज्ञानस्य ज्ञेयताशान्तिः कथं ब्रह्मन्प्रवर्तते । सा रूढा बन्धताबुद्धिः कथं वात्र निवर्तते ॥ २ ॥

śrīrāma uvāca | jñānasya jñeyatāśāntiḥ kathaṃ brahmanpravartate | sā rūḍhā bandhatābuddhiḥ kathaṃ vātra nivartate || 2 ||

Rama said: How does the cessation of the perception of knowledge as an object occur, O Brahman? How does that firmly established notion of bondage cease?

राम ने कहा: ज्ञान की ज्ञेयता का शांत होना कैसे होता है, हे ब्रह्मन्? वह दृढ़ बंधन की बुद्धि कैसे यहाँ समाप्त होती है?

7.190.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । सम्यग्ज्ञानेन बोधेन मन्दबुद्धिर्निवर्तते । निराकारा निजा शान्ता मुक्तिरेवं प्रवर्तते ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | samyagjñānena bodhena mandabuddhirnivartate | nirākārā nijā śāntā muktirevaṃ pravartate || 3 ||

Vasishtha said: Through right knowledge and awareness, the dull intellect is removed. Thus, formless, one's own, and peaceful liberation occurs.

वसिष्ठ ने कहा: सही ज्ञान और बोध से मंद बुद्धि दूर हो जाती है। इस प्रकार, निराकार, अपनी, और शांत मुक्ति होती है।

7.190.4

श्रीराम उवाच । बोधः केवलतारूपः सम्यग्ज्ञानं किमुच्यते । येन बन्धादयं जन्तुरशेषेण विमुच्यते ॥ ४ ॥

śrīrāma uvāca | bodhaḥ kevalatārūpaḥ samyagjñānaṃ kimucyate | yena bandhādayaṃ janturśeṣeṇa vimucyate || 4 ||

Rama said: What is called right knowledge, which is of the nature of pure awareness, by which this being is completely liberated from bondage?

राम ने कहा: शुद्ध बोध की प्रकृति वाला सही ज्ञान क्या कहलाता है, जिससे यह जीव बंधन से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है?

7.190.5

श्रीवसिष्ठ उवाच । ज्ञानस्य ज्ञेयता नास्ति केवलं ज्ञानमव्ययम् । अवाच्यमितिबोधोन्तः सम्यग्ज्ञानमितिस्मृतम् ॥ ५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | jñānasya jñeyatā nāsti kevalaṃ jñānamavyayam | avācyamitibodhontaḥ samyagjñānamitisṃṛtam || 5 ||

Vasishtha said: Knowledge has no objectivity; it is pure and imperishable. This inner awareness is called right knowledge.

वसिष्ठ ने कहा: ज्ञान की कोई ज्ञेयता नहीं है; यह शुद्ध और अविनाशी है। यह अंतर्निहित बोध सही ज्ञान कहलाता है।

7.190.6

श्रीराम उवाच । ज्ञानस्य ज्ञेयता भिन्ना त्वन्तः केति मुने वद । उत्पाद्यो ज्ञानशब्दश्च भावे वा करणेऽथ किम् ॥ ६ ॥

śrīrāma uvāca | jñānasya jñeyatā bhinnā tvantaḥ keti mune vada | utpādyo jñānaśabdaśca bhāve vā karaṇe'tha kim || 6 ||

Sri Rama said: O sage, how is the knowability of knowledge different from the knowledge itself? Is the word 'knowledge' used to denote a state or an instrument?

श्री राम ने कहा: हे मुनि, ज्ञान की ज्ञेयता ज्ञान से कैसे भिन्न है? 'ज्ञान' शब्द किस भाव या करण के लिए उपयोग किया जाता है?

7.190.7

श्रीवसिष्ठ उवाच । बोधमात्रं भवेज्ज्ञानं भावसाधनमात्रकम् । न ज्ञानज्ञेययोर्भेदः पवनस्पन्दयोरिव ॥ ७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bodhamātraṃ bhavejjñānaṃ bhāvasādhanamātrakam | na jñānajñeyayorbhedaḥ pavanaspanadayoriva || 7 ||

Vasishtha said: Knowledge is merely awareness, a means to achieve a state. There is no difference between knowledge and the known, just as there is no difference between the wind and its vibration.

वसिष्ठ ने कहा: ज्ञान केवल बोध है, एक भाव को प्राप्त करने का साधन। ज्ञान और ज्ञेय में कोई अंतर नहीं है, जैसे हवा और उसकी कंपन में कोई अंतर नहीं है।

7.190.8

श्रीराम उवाच । एवं चेत्तत्कथमयं ज्ञानज्ञेयादिविभ्रमः । सिद्धः शशविषाणाभो भविष्यद्भूतभव्यशः ॥ ८ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ cet tat kathamayaṃ jñānajñeyādivibhramaḥ | siddhaḥ śaśaviṣāṇābho bhaviṣyadbhūtabhavyaśaḥ || 8 ||

Sri Rama said: If this is so, then how did this illusion of knowledge and the known arise? It is like the horns of a hare, something that will be, has been, and is being.

श्री राम ने कहा: यदि ऐसा है, तो यह ज्ञान और ज्ञेय का भ्रम कैसे उत्पन्न हुआ? यह खरगोश के सींग की तरह है, जो होगा, हुआ है, और हो रहा है।

7.190.9

श्रीवसिष्ठ उवाच । बाह्यार्थभ्रान्तितो ज्ञेया भ्रमबुद्धिरिहोदिता । बाह्यश्चाभ्यन्तरश्चार्थो न संभवति कश्चन ॥ ९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bāhyārthabhrāntito jñeyā bhramabuddhirihoditā | bāhyaścābhyantaraścārtho na saṃbhavati kaścana || 9 ||

Vasishtha said: The deluded mind perceives external objects as real. However, there is no such thing as an external or internal object.

वसिष्ठ ने कहा: भ्रांत मन बाह्य वस्तुओं को वास्तविक मानता है। हालाँकि, बाह्य या आंतरिक कोई वस्तु नहीं है।

7.190.10

श्रीराम उवाच । योऽयं प्रत्यक्षदृश्योऽर्थो मुने त्वमहमादिकः । भूतादिरनुभूतात्मा स कथं नास्ति मे वद ॥ १० ॥

śrīrāma uvāca | yo'yaṃ pratyakṣadṛśyo'rtho mune tvamahamādikaḥ | bhūtādiranubhūtātmā sa kathaṃ nāsti me vada || 10 ||

Sri Rama said: O sage, this object that is directly perceived, which includes you, me, and everything else, how can it not exist? Please explain this to me.

श्री राम ने कहा: हे मुनि, यह वस्तु जो प्रत्यक्ष दिखाई देती है, जिसमें आप, मैं, और सब कुछ शामिल है, यह कैसे नहीं हो सकती? कृपया मुझे यह समझाएँ।

7.190.11

श्रीवसिष्ठ उवाच । आदिसर्गविधावेव विराडात्मादिकोऽनघ । जातो न कश्चिदेवार्थो ज्ञेयस्यातो न संभवः ॥ ११ ॥

śrīvashiṣṭha uvāca | ādisargavidhāveva virāḍātmādiko'nagha | jāto na kaścidevārtho jñeyasyāto na saṃbhavaḥ || 11 ||

Sri Vasistha said: In the beginning of creation, O sinless one, even the Virat Atman and others are born, but there is no purpose for anything to be known, hence there is no existence.

श्री वसिष्ठ ने कहा: सृष्टि के आदि में, हे निष्पाप, विराट् आत्मा और अन्य भी उत्पन्न होते हैं, परंतु किसी भी चीज़ को जानने का कोई उद्देश्य नहीं है, इसलिए कोई अस्तित्व नहीं है।

7.190.12

श्रीराम उवाच । भविष्यद्भूतभव्यस्था जगद्दृष्टिरियं मुने । नित्यानुभूयमानापि न जातेति किमुच्यते ॥ १२ ॥

śrīrāma uvāca | bhaviṣyadbhūtabhavyasthā jagaddṛṣṭiriyam mune | nityānubhūyamānāpi na jāteti kimucyate || 12 ||

Sri Rama said: O sage, this world-vision which includes the past, present, and future, is constantly experienced, yet why is it said that it is not born?

श्री राम ने कहा: हे मुनि, यह जगत् दृष्टि जो भूत, वर्तमान और भविष्य को शामिल करती है, निरंतर अनुभव की जाती है, फिर भी क्यों कहा जाता है कि यह उत्पन्न नहीं है?

7.190.13

श्रीवसिष्ठ उवाच । स्वप्नार्थमृगतृष्णाम्बुद्वीन्दुसंकल्पितार्थवत् । मिथ्या जगदहंत्वं च भाति केशोण्ड्रकं यथा ॥ १३ ॥

śrīvashiṣṭha uvāca | svapnārthamṛgatṛṣṇāmbudvīndusaṃkalpitārthavat | mithyā jagadahantvaṃ ca bhāti keśoṇḍrakaṃ yathā || 13 ||

Sri Vasistha said: Like a dream, a mirage, or a bubble, the world and the sense of 'I' appear to be false, just like a reflection in a mirror.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जैसे स्वप्न, मृगतृष्णा, या बुलबुला, वैसे ही जगत् और 'मैं' का अहं भी झूठा प्रतीत होता है, जैसे दर्पण में प्रतिबिंब।

7.190.14

श्रीराम उवाच । अहं त्वमयमित्यादिजगज्जठरमप्यलम् । कथं न जातं भगवन्सर्गादावनुभूतिमत् ॥ १४ ॥

śrīrāma uvāca | ahaṃ tvamayamityādijagajjaṭharamapyalam | kathaṃ na jātaṃ bhagavansargādāvanubhūtimat || 14 ||

Sri Rama said: O Lord, how can it be that the world, which includes 'I', 'you', 'this', and so on, is not born, even though it is experienced from the beginning of creation?

श्री राम ने कहा: हे भगवन्, कैसे हो सकता है कि जगत्, जिसमें 'मैं', 'तुम', 'यह', आदि शामिल है, सृष्टि के आदि से अनुभव किया जाता है, फिर भी उत्पन्न नहीं है?

7.190.15

श्रीवसिष्ठ उवाच । कारणाज्जायते कार्यं नान्यथेत्येव निश्चयः । सर्वोपशान्तौ जगतामुत्पत्तौ नास्ति कारणम् ॥ १५ ॥

śrīvashiṣṭha uvāca | kāraṇājjāyate kāryaṃ nānyathetyeva niścayaḥ | sarvopaśāntau jagatāmutpattau nāsti kāraṇam || 15 ||

Sri Vasistha said: It is certain that an effect arises from a cause, and not otherwise. In the ultimate tranquility of all, there is no cause for the creation of the world.

श्री वसिष्ठ ने कहा: यह निश्चित है कि एक कारण से एक परिणाम उत्पन्न होता है, और किसी अन्य तरीके से नहीं। सब की अंतिम शांति में, जगत् के उत्पन्न होने का कोई कारण नहीं है।

7.190.16

श्रीराम उवाच । महाप्रलयसंपत्तौ शिष्टं यदजमव्ययम् । तत्कथं नाम सर्गस्य न भवेत्कारणं मुने ॥ १६ ॥

śrīrāma uvāca | mahāpralayasaṃpattau śiṣṭaṃ yadajamavyayam | tatkathaṃ nāma sargasya na bhavetkāraṇaṃ mune || 16 ||

Sri Rama said: During the great dissolution, that which remains unborn and imperishable, how can it not be the cause of creation, O sage?

श्री राम ने कहा: महाप्रलय के समय, जो अजन्मा और अविनाशी है, वह सृष्टि का कारण कैसे नहीं हो सकता, हे मुनि?

7.190.17

श्रीवसिष्ठ उवाच । यदस्ति कारणे कार्यं तत्तस्मात्संप्रवर्तते । न त्वसज्जायते राम न घटाज्जायते पटः ॥ १७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yadasti kāraṇe kāryaṃ tattasmātsaṃpravartate | na tvasajjāyate rāma na ghaṭājjāyate paṭaḥ || 17 ||

Sri Vasistha said: That which exists as the effect in the cause, it arises from that. But the non-existent does not arise, O Rama, just as a cloth does not arise from a pot.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जो कारण में कार्य के रूप में है, वह उससे उत्पन्न होता है। लेकिन असत् उत्पन्न नहीं होता, हे राम, जैसे घड़े से कपड़ा नहीं उत्पन्न होता।

7.190.18

श्रीराम उवाच । जगत्सूक्ष्मेण रूपेण महाप्रलय आगते । आस्ते ब्रह्मणि तत्तस्मात्पुनरेव प्रवर्तते ॥ १८ ॥

śrīrāma uvāca | jagatsūkṣmeṇa rūpeṇa mahāpralaya āgate | āste brahmaṇi tattasmātpunareva pravartate || 18 ||

Sri Rama said: When the great dissolution comes, the universe exists in a subtle form in Brahman, and from that it arises again.

श्री राम ने कहा: जब महाप्रलय आता है, तो ब्रह्म में सूक्ष्म रूप में जगत रहता है, और उससे फिर से उत्पन्न होता है।

7.190.19

श्रीवसिष्ठ उवाच । महाप्रलयपर्यन्ते केन सर्गास्तितानघ । अनुभूता महाबुद्धे तत्रस्था सा च कीदृशी ॥ १९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | mahāpralayaparyante kena sargāstitānagha | anubhūtā mahābuddhe tatrasthā sā ca kīdṛśī || 19 ||

Sri Vasistha said: O sinless one, by what means do creations exist up to the great dissolution? O wise one, what is the nature of the experience that exists there?

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे निष्पाप, महाप्रलय तक सृष्टियाँ किस प्रकार से रहती हैं? हे महाबुद्धिमान, वहाँ जो अनुभव है, उसका स्वरूप कैसा है?

7.190.20

श्रीराम उवाच । ज्ञप्त्यात्मिका श्रीस्तत्रस्था तादृशेरनुभूयते । व्योमात्मिका तु न भवेन्न सत्तामसदेति हि ॥ २० ॥

śrīrāma uvāca | jñaptyātmikā śrīstatrastā tādṛśeranubhūyate | vyomātmikā tu na bhavenna sattāmasadeti hi || 20 ||

Sri Rama said: The glory that exists there is of the nature of consciousness and is experienced as such. However, that which is of the nature of space does not exist, for it is neither being nor non-being.

श्री राम ने कहा: वहाँ जो श्री है, वह चेतना की प्रकृति की है और ऐसे ही अनुभव की जाती है। लेकिन जो आकाश की प्रकृति का है, वह नहीं होता, क्योंकि वह न तो सत् है न ही असत्।

7.190.21

श्रीवसिष्ठ उवाचएवं चेत्तन्महाबाहो ज्ञप्तिरेव जगत्त्रयम्विशुद्धज्ञानदेहस्य कुतो मरणजन्मनी ॥ २१ ॥

śrīvasiṣṭha uvācaevaṃ cettanmahābāho jñaptireva jagattrayamviśuddhajñānadehasya kuto maraṇajanmanī || 21 ||

Vasishtha said: If this is so, O mighty-armed one, then the knowledge of the three worlds is indeed the body of pure knowledge. How can there be birth and death?

वसिष्ठ ने कहा: यदि ऐसा है, हे महाबाहो, तो तीनों लोकों का ज्ञान वास्तव में शुद्ध ज्ञान का शरीर है। फिर जन्म और मृत्यु कैसे हो सकती है?

7.190.22

श्रीराम उवाचतदेवमादितो नास्ति सर्गस्तदियमागताकुतः कथमिव भ्रान्तिरिति मे भगवन्वद ॥ २२ ॥

śrīrāma uvācatadevamādito nāsti sargastadiyamāgatākutaḥ kathamiva bhrāntiriti me bhagavanvada || 22 ||

Rama said: O Lord, if there is no creation from the beginning, how did this delusion arise? Please explain this to me.

राम ने कहा: हे भगवन्, यदि शुरुआत से ही कोई सृष्टि नहीं है, तो यह भ्रांति कैसे उत्पन्न हुई? कृपया मुझे यह समझाएं।

7.190.23

श्रीवसिष्ठ उवाचकार्यकारणताभावाद्भावाभावौ स्त एव नो इदं च चेत्यते यद्यत्स्वात्मा चेतति चेतितम् ॥ २३ ॥

śrīvasiṣṭha uvācakāryakāraṇatābhāvādbhāvābhāvau sta eva noidaṃ ca cetyate yadyatsvātmā cetati cetitam || 23 ||

Vasishtha said: Due to the absence of cause and effect, both existence and non-existence are the same. This is perceived by the self, which is the perceiver.

वसिष्ठ ने कहा: कारण और परिणाम के अभाव के कारण, अस्तित्व और अनस्तित्व एक ही हैं। यह आत्मा द्वारा देखा जाता है, जो द्रष्टा है।

7.190.24

श्रीराम उवाचचेतिता चेतति यन्त्रं द्रष्टा दृश्यत्वमीश्वरःकथमेति कथं वह्निं दहेत्काष्ठं कदा किल ॥ २४ ॥

śrīrāma uvācacetitā cetati yantraṃ draṣṭā dṛśyatvamīśvaraḥkathameti kathaṃ vahniṃ dahetkāṣṭhaṃ kadā kila || 24 ||

Rama said: How can the perceiver, who is the Lord, be the object of perception? How can fire burn wood?

राम ने कहा: द्रष्टा, जो ईश्वर है, कैसे दृश्य हो सकता है? आग कैसे लकड़ी को जला सकती है?

7.190.25

श्रीवसिष्ठ उवाचद्रष्टा न याति दृश्यत्वं दृश्यस्यासम्भवादतःद्रष्टैव केवलो भाति सर्वात्मैकघनाकृतिः ॥ २५ ॥

śrīvasiṣṭha uvācadraṣṭā na yāti dṛśyatvaṃ dṛśyasyāsaṃbhavādataḥdraṣṭaiva kevalo bhāti sarvātmaikaghanākṛtiḥ || 25 ||

Vasishtha said: The seer does not become the object of perception because the object of perception is non-existent. Only the seer shines alone, being the essence of all selves.

वसिष्ठ ने कहा: द्रष्टा दृश्य नहीं बनता क्योंकि दृश्य अस्तित्वहीन है। केवल द्रष्टा ही चमकता है, जो सभी आत्माओं का सार है।

7.190.26

श्रीराम उवाच । चिन्मात्रं तदनाद्यन्तं चेत्यं चेतयते तदा । तदिदं जगदाभानं कुतः स्याच्चेत्यसंभवः ॥ २६ ॥

śrīrāma uvāca | cinmātraṃ tadanādyantaṃ cetyaṃ cetayate tadā | tadidaṃ jagadābhānaṃ kutaḥ syāccetyasaṃbhavaḥ || 26 ||

Shri Rama said: That which is pure consciousness, without beginning or end, perceives the perceivable. How can this world appear without the perceivable?

श्री राम ने कहा: जो शुद्ध चेतना है, जिसका न आदि है न अंत, वह जानने योग्य को जानता है। बिना जानने योग्य के यह जगत कैसे प्रकट हो सकता है?

7.190.27

श्रीवसिष्ठ उवाच । चेत्यं हि कारणाभावान्न संभवति किंचन । चेत्याभावाच्चेतनस्य मुक्तताऽवाच्यता सदा ॥ २७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | cetyaṃ hi kāraṇābhāvānna saṃbhavaṭi kiṃcana | cetyābhāvāccetanasya muktatā'vācyatā sadā || 27 ||

Shri Vasistha said: Indeed, the perceivable does not exist without a cause. Due to the absence of the perceivable, the freedom of consciousness is always indescribable.

श्री वसिष्ठ ने कहा: निश्चय ही, जानने योग्य बिना कारण के नहीं होता। जानने योग्य के अभाव से चेतना की मुक्ति सदा अवर्णनीय है।

7.190.28

श्रीराम उवाच । एवं चेत्तदहन्तादि चेत्यं कथमिदं कुतः । कथं जगद्वेदनं च कथं स्पन्दादिवेदनम् ॥ २८ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ cet tadahantādi cetyaṃ kathamidaṃ kutaḥ | kathaṃ jagadvedanaṃ ca kathaṃ spandādivedanam || 28 ||

Shri Rama said: If that is the case, how and from where does this perceivable, such as the ego, arise? How is the knowledge of the world and the perception of movement possible?

श्री राम ने कहा: यदि ऐसा है, तो यह जानने योग्य, जैसे अहंकार, कैसे और कहाँ से उत्पन्न होता है? जगत का ज्ञान और गति की अनुभूति कैसे संभव है?

7.190.29

श्रीवसिष्ठ उवाच । कारणासंभवादादावेवोत्पन्नं न किंचन । कुतश्चेत्यमतः शान्तं सर्वं सर्गस्तु विभ्रमः ॥ २९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kāraṇāsaṃbhavaādādāvevotpannaṃ na kiṃcana | kutaścetyamataḥ śāntaṃ sarvaṃ sargastu vibhramaḥ || 29 ||

Shri Vasistha said: Due to the non-existence of the cause, nothing is produced in the beginning. Therefore, from where is the perceivable? All creation is merely an illusion.

श्री वसिष्ठ ने कहा: कारण के अभाव से आदि में कुछ भी उत्पन्न नहीं होता। तो फिर जानने योग्य कहाँ से है? सारा सृजन मात्र एक भ्रम है।

7.190.30

श्रीराम उवाच । अत्र मे विगतोल्लेखे निश्चेत्यचलनादिके । सकृद्विभाते विमले विभ्रमः कस्य कीदृशः ॥ ३० ॥

śrīrāma uvāca | atra me vigatollekhe niścetyacalanādike | sakṛdvibhāte vimale vibhramaḥ kasya kīdṛśaḥ || 30 ||

Shri Rama said: In this state of pure, motionless, and unblemished consciousness, where there is no trace of the perceivable, how can there be any illusion?

श्री राम ने कहा: इस अवस्था में जहाँ शुद्ध, निश्चल और निर्मल चेतना है, जहाँ जानने योग्य का कोई चिह्न नहीं है, वहाँ भ्रम कैसे हो सकता है?

7.190.31

श्रीवसिष्ठ उवाच । कारणाभावतो राम नास्त्येव खलु विभ्रमः । सर्वं त्वमहमित्यादि शान्तमेकमनामयम् ॥ ३१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kāraṇābhāvato rāma nāstyeva khalu vibhramaḥ | sarvaṃ tvamahamityādi śāntamekamanāmayam || 31 ||

Vasishtha said: O Rama, due to the absence of cause, there is indeed no delusion. Everything is peaceful, one, and free from disease, beginning with 'I am you'.

वसिष्ठ ने कहा: हे राम, कारण के अभाव से वास्तव में कोई भ्रम नहीं है | सब कुछ शान्त, एक और रोगमुक्त है, 'मैं तुम हूँ' से शुरू होकर |

7.190.32

श्रीराम उवाच । ब्रह्मन्भ्रममिवापन्नः प्रष्टुं जानामि नाधिकम् । नात्यन्तं च प्रबुद्धोऽस्मि पृच्छामि किमिहाधुना ॥ ३२ ॥

śrīrāma uvāca | brahmanbharamamivāpannaḥ praṣṭuṃ jānāmi nādhikam | nātyantaṃ ca prabuddho'smi pṛcchāmi kimihādhunā || 32 ||

Rama said: O Brahman, I seem to have fallen into delusion, I do not know much to ask. I am not fully awakened, what should I ask now?

राम ने कहा: हे ब्रह्मन, मुझे लगता है कि मैं भ्रम में फँस गया हूँ, मैं पूछने के लिए बहुत कुछ नहीं जानता | मैं पूरी तरह से जागृत नहीं हूँ, अब मुझे क्या पूछना चाहिए?

7.190.33

श्रीवसिष्ठ उवाच । कारणस्यैव निकषं पृच्छ माऽऽकारणक्षयात् । परे स्वभावेऽनिर्वाच्ये स्वयं विश्रान्तिमैष्यसि ॥ ३३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kāraṇasyeva nikaṣaṃ pṛccha mā'ākāraṇakṣayāt | pare svabhāve'nirvācye svayaṃ viśrāntimaiṣyasi || 33 ||

Vasishtha said: Ask about the root of the cause itself, do not be destroyed by the lack of cause. In the supreme, inexpressible nature, you will find rest yourself.

वसिष्ठ ने कहा: कारण की जड़ के बारे में पूछो, कारण के अभाव से नष्ट न हो | परम, अनिर्वचनीय स्वभाव में, तुम स्वयं विश्राम पाओगे |

7.190.34

श्रीराम उवाच । मन्येऽहं कारणाभावात्पूर्वमेव न सर्गता । उदिता तेन कस्यायं चेत्यचेतनविभ्रमः ॥ ३४ ॥

śrīrāma uvāca | manye'haṃ kāraṇābhāvātpūrvameva na sargatā | uditā tena kasyāyaṃ cetya cetanavibhramaḥ || 34 ||

Rama said: I think that due to the absence of cause, there was no creation before. From that, whose is this delusion of the conscious and the unconscious?

राम ने कहा: मैं सोचता हूँ कि कारण के अभाव से पहले सृष्टि नहीं थी | उससे, यह चेतन और अचेतन का भ्रम किसका है?

7.190.35

श्रीवसिष्ठ उवाच । अकारणत्वात्सर्वत्र शान्तत्वाद्भ्रान्तिरस्ति नो । अनभ्यासवशादेव न विश्राम्यति केवलम् ॥ ३५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | akāraṇatvātsarvatra śāntatvādbhrāntirasti no | anabhyāsavaśādeva na viśrāmyati kevalam || 35 ||

Vasishtha said: Due to the absence of cause everywhere, there is peace, hence there is no delusion. Only due to lack of practice, it does not rest.

वसिष्ठ ने कहा: कारण के अभाव से सर्वत्र शान्ति है, इसलिए कोई भ्रम नहीं है | केवल अभ्यास के अभाव से ही यह विश्राम नहीं करता |

7.190.36

श्रीराम उवाच । कुतो भवेदनभ्यासो भवेदभ्यसनं कुतः । कुतोऽभ्यासात्मिका भ्रान्तिरेषा पुनरुपस्थिता ॥ ३६ ॥

śrīrāma uvāca | kuto bhavedanabhyāso bhavedabhyasanaṃ kutaḥ | kuto'bhyāsātmikā bhrāntireṣā punarupasthitā || 36 ||

Sri Rama said: From where does non-practice arise, and from where does practice arise? From where does this delusion, which is of the nature of practice, arise again?

श्री राम ने कहा: अभ्यास नहीं करने से क्या होता है, और अभ्यास करने से क्या होता है? इस अभ्यास स्वभाव की भ्रांति फिर से कहाँ से उत्पन्न होती है?

7.190.37

श्रीवसिष्ठ उवाच । अनन्तत्वादनन्तस्य भ्रान्तिर्नास्ति च संप्रति । अभ्यासभ्रान्तिरखिलं महाचिद्धनमक्षतम् ॥ ३७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | anantatvādanantasya bhrāntirnāsti ca saṃprati | abhyāsabhrāntirakhilaṃ mahāciddhanamakṣatam || 37 ||

Sri Vasistha said: Due to the infinite nature of the infinite, there is no delusion at present. The delusion of practice encompasses the entire unharmed great treasure of consciousness.

श्री वसिष्ठ ने कहा: अनंत के अनंत स्वभाव के कारण, वर्तमान में कोई भ्रांति नहीं है। अभ्यास की भ्रांति पूरे अक्षत महान चेतना के खजाने को घेरे हुए है।

7.190.38

श्रीराम उवाच । उपदेश्योपदेशादावनया शब्दसंपदा । किमन्यद्वद मे ब्रह्मन्सर्वस्मिञ्छान्ततां गते ॥ ३८ ॥

śrīrāma uvāca | upadeśyopadeśādāvanayā śabdasampadā | kimanyadvad me brahman sarvasmiñchāntatāṃ gate || 38 ||

Sri Rama said: O Brahman, by the grace of the initial instruction and the wealth of words, what else is there to say when everything has attained peace?

श्री राम ने कहा: हे ब्रह्मन, प्रारंभिक उपदेश और शब्दों की समृद्धि के अनुग्रह से, जब सब कुछ शांति प्राप्त कर लेता है, तो और क्या कहना बाकी है?

7.190.39

श्रीवसिष्ठ उवाच । उपदेश्योपदेशात्म ब्रह्म ब्रह्मणि संस्थितम् । बोधात्मनि न मोक्षोऽस्ति न बन्धोऽस्तीति निश्चयः ॥ ३९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | upadeśyopadeśātma brahma brahmaṇi saṃsthitam | bodhātmani na mokṣo'sti na bandho'stīti niścayaḥ || 39 ||

Sri Vasistha said: The essence of the instruction is Brahman, which is established in Brahman. In the self-aware consciousness, there is neither liberation nor bondage, this is the certainty.

श्री वसिष्ठ ने कहा: उपदेश का सार ब्रह्म है, जो ब्रह्म में स्थित है। स्वयं-जागरूक चेतना में न तो मोक्ष है न बंधन, यह निश्चय है।

7.190.40

श्रीराम उवाच । देशकालक्रियाद्रव्यभेदवेदनचेतसाम् । सर्वस्यासंभवे सर्वसत्ता कथमुपस्थिता ॥ ४० ॥

śrīrāma uvāca | deśakālakriyādravyabhedavedanacetasām | sarvasyāsaṃbhave sarvasattā kathamupasthitā || 40 ||

Sri Rama said: When there is no distinction of place, time, action, substance, perception, and consciousness, how does the existence of all things arise?

श्री राम ने कहा: जब स्थान, समय, क्रिया, पदार्थ, अनुभूति और चेतना का कोई भेद नहीं है, तो सब कुछ की सत्ता कैसे उत्पन्न होती है?

7.190.41

श्रीवसिष्ठ उवाच । देशकालक्रियाद्रव्यभेदवेदनचेतसाम् । अज्ञानमात्रादितरा सत्ता नान्यास्ति नो पुरा ॥ ४१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | deśakālakriyādravyabhedavedanacetasām | ajñānamātrāditārā sattā nānyāsti no purā || 41 ||

Śrī Vasistha said: There is no other existence except ignorance of the differences in place, time, action, substance, knowledge, and consciousness.

श्री वसिष्ठ ने कहा: स्थान, काल, क्रिया, द्रव्य, ज्ञान और चेतना के भेदों के अज्ञान के अलावा कोई अन्य सत्ता नहीं है।

7.190.42

श्रीराम उवाच । बोध्यबोधकतापत्तेरभावाद्बोधता कथम् । द्वैतैक्यासंभवे ब्रह्मत्कारणासंभवे सति ॥ ४२ ॥

śrīrāma uvāca | bodhyabodhakatāpatterabhāvādbodhatā katham | dvaitaikyāsaṃbhave brahmatkāraṇāsaṃbhave sati || 42 ||

Śrī Rāma said: How can there be knowledge when there is no existence of the knower and the known? When duality and unity are impossible, and the cause of Brahman is non-existent.

श्री राम ने कहा: ज्ञाता और ज्ञेय के अभाव में ज्ञान कैसे हो सकता है? जब द्वैत और एकता असंभव हैं, और ब्रह्म का कारण असंभव है।

7.190.43

श्रीवसिष्ठ उवाच । बोधेन बोधतामेति बोधशब्दस्तु बोध्यताम् । भवद्विषयमेवायमुचितो नास्मदादिषु ॥ ४३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | bodhena bodhatāmeti bodhaśabdastu bodhyatām | bhavadviṣayamevāyamucito nāsmadādiṣu || 43 ||

Śrī Vasistha said: Knowledge attains the state of knowledge, and the word 'knowledge' is appropriate for the known. It is not suitable for us.

श्री वसिष्ठ ने कहा: ज्ञान ज्ञान की अवस्था को प्राप्त करता है, और 'ज्ञान' शब्द ज्ञेय के लिए उपयुक्त है। यह हमारे लिए उपयुक्त नहीं है।

7.190.44

श्रीराम उवाच । बोध एव यदाहंत्वमेति बोधान्यता तदा । कुत एषा परेऽनन्ते नासावतिजलेऽमले ॥ ४४ ॥

śrīrāma uvāca | bodha eva yadāhaṃtvameti bodhānyatā tadā | kuta eṣā pare'nante nāsāvatijale'male || 44 ||

Śrī Rāma said: When knowledge itself becomes 'I' and 'you', then there is a difference in knowledge. How can this be in the infinite, pure, and boundless?

श्री राम ने कहा: जब ज्ञान ही 'मैं' और 'तुम' बन जाता है, तब ज्ञान में भेद होता है। यह अनंत, शुद्ध और असीम में कैसे हो सकता है?

7.190.45

श्रीवसिष्ठ उवाच । यत्तद्बोधस्य बोधत्वं तदेवाहंत्वमुच्यते । द्वित्वमत्रानिलस्पन्दद्दृशोरिव निगद्यते ॥ ४५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yattadvodhasya bodhatvaṃ tadevāhaṃtvamucyate | dvitvamatrānilaspandadṛśoriva nigadyate || 45 ||

Śrī Vasistha said: That which is the nature of knowledge is called 'I'. Duality is described here as the vibration of the wind, like the vision of the seer.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जो ज्ञान की प्रकृति है, वह 'मैं' कहलाता है। यहाँ द्वैत वायु के स्पंदन के समान, दृष्टि के रूप में वर्णित किया जाता है।

7.190.46

श्रीराम उवाच । सौम्याब्ध्यन्तस्तरङ्गादिर्यथादत्ते यथास्थितम् । तथा स्वरूपमात्रात्म बोध्यं बोधोऽवबुद्धवान् ॥ ४६ ॥

śrīrāma uvāca | saumyābdhyantastaraṅgādiryathādatte yathāsthitam | tathā svarūpamātrātma bodhyaṃ bodho'vabuddhavān || 46 ||

Sri Rama said: Just as the calm ocean takes on the form of waves and other things as they are, similarly, the self-awareness of the pure self should be understood as it is.

श्री राम ने कहा: जैसे शान्त समुद्र तरंगों और अन्य चीजों का रूप लेता है वैसे ही, शुद्ध आत्मा की स्वयं की जागरूकता को जैसा है वैसा ही समझना चाहिए।

7.190.47

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं चेत्तत्कथं कः स्याद्दोषो द्वित्वादिदोषतः । अनन्ते स्थित एकस्मिञ्छान्ते पूर्णे परे पदे ॥ ४७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ cet tat kathaṃ kaḥ syād doṣo dvitvādidōṣataḥ | anante sthita ekasmiñchānte pūrṇe pare pade || 47 ||

Sri Vasistha said: If it is so, then how can there be any fault arising from duality and other defects in the infinite, tranquil, complete, and supreme state?

श्री वसिष्ठ ने कहा: यदि ऐसा है, तो अनन्त, शान्त, पूर्ण और परम अवस्था में द्वैत और अन्य दोषों से कोई दोष कैसे हो सकता है?

7.190.48

श्रीराम उवाच । कोऽत्र कल्पयिताहंत्वं भुङ्क्ते भोक्ता च कश्च वा । यन्मूलं यज्जगद्भ्रान्तिरनन्ता प्रविजृम्भते ॥ ४८ ॥

śrīrāma uvāca | ko'tra kalpayitāhaṃtvaṃ bhuṅkte bhoktā ca kaśca vā | yanmūlaṃ yajjagadbhrāntiranantā pravijṛmbhate || 48 ||

Sri Rama said: Who is the creator of the ego here? Who enjoys and who is the enjoyer? From what root does the endless delusion of the world arise?

श्री राम ने कहा: यहाँ अहंकार का सृजनकर्ता कौन है? कौन भोग करता है और कौन भोगी है? इस दुनिया की अनंत भ्रांति का मूल क्या है?

7.190.49

श्रीवसिष्ठ उवाचज्ञेयसत्तावबोधे हि बन्धनं सच्च नास्त्यलम्ज्ञप्तेः सर्वार्थरूपत्वाद्बन्धभोक्षावतः कुतः ॥ ४९ ॥

śrīvasiṣṭha uvācajñeyasattāvabodhe hi bandhanaṃ sacca nāstyalamjñapteḥ sarvārtharūpatvādvandhabhokṣāvataḥ kutaḥ || 49 ||

Sri Vasistha said: In the realization of the true nature of the self, there is no bondage or truth. How can there be enjoyment of duality when the self is the form of all things?

श्री वसिष्ठ ने कहा: आत्मा के सच्चे स्वरूप के ज्ञान में न बंधन है न सत्य। जब आत्मा सब कुछ का रूप है, तो द्वैत का भोग कैसे हो सकता है?

7.190.50

श्रीराम उवाच । ज्ञप्तेर्बाह्यार्थता दीपान्नीलादीव प्रवर्तते । बाह्यस्त्वर्थोऽस्ति सद्रूपो ननु दृष्टोपलम्भनः ॥ ५० ॥

śrīrāma uvāca | jñapterbāhyārthatā dīpānnīlādīva pravartate | bāhyastvarto'sti sadrūpo nanu dṛṣṭopalambhaṇaḥ || 50 ||

Sri Rama said: The external reality of knowledge arises like the blue color from a lamp. But is there not an external object that is perceived?

श्री राम ने कहा: ज्ञान की बाह्य वास्तविकता दीपक से नीले रंग की तरह उत्पन्न होती है। लेकिन क्या कोई बाह्य वस्तु नहीं है जो देखी जाती है?

7.190.51

श्रीवसिष्ठ उवाच । अकारणस्य कार्यस्य बाह्यस्यार्थस्य सत्यता । येयं सा भ्रान्तिमात्रात्मरूपिणी नेतराङ्गिका ॥ ५१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | akāraṇasya kāryasya bāhyasyārthasya satyatā | yeyaṃ sā bhrāntimātrātmariṇī netarāṅgikā || 51 ||

Vasishtha said: The reality of the external object, which is the effect without a cause, is merely an illusion and nothing else.

वसिष्ठ ने कहा: जो कारण के बिना कार्य है, उस बाह्य वस्तु की सत्यता केवल भ्रांति मात्र है, और कुछ नहीं।

7.190.52

श्रीराम उवाच । स्वप्नः सत्योऽस्त्वसत्यो वा दुःखं तावत्प्रयच्छति । तथैवेयं जगद्भ्रान्तिः क उपायोऽत्र कथ्यताम् ॥ ५२ ॥

śrīrāma uvāca | svapnaḥ satyo'stvasatyo vā duḥkhaṃ tāvatprayacchati | tathaiveyaṃ jagadbhrāntiḥ ka upāyo'tra kathyatām || 52 ||

Rama said: Whether a dream is true or false, it causes suffering. Similarly, this worldly illusion causes suffering. What is the remedy for this?

राम ने कहा: चाहे स्वप्न सत्य हो या असत्य, यह दुःख देता है। इसी प्रकार, यह जगत् भ्रांति भी दुःख देती है। इसका क्या उपाय है?

7.190.53

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं तावद्यथा स्वप्नस्तथेयं चेज्जगत्स्थितिः । तत्पिण्डग्रहतार्थानां सर्वैव भ्रान्तितोदिता ॥ ५३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ tāvadyathā svapnastatheyaṃ cejjagatssthitiḥ | tatpiṇḍagrahatārthānāṃ sarvaiva bhrāntitoditā || 53 ||

Vasishtha said: Just as a dream is an illusion, so is the existence of the world. All objects perceived in the world are born out of illusion.

वसिष्ठ ने कहा: जैसे स्वप्न भ्रांति है, वैसे ही यह जगत् की स्थिति भी भ्रांति है। जगत् में जो भी वस्तुएँ दिखाई देती हैं, वे सब भ्रांति से उत्पन्न हैं।

7.190.54

श्रीराम उवाच । किमेतावति संपन्ने संपन्नं भवति प्रियम् । कथं च शाम्यत्यर्थानां स्वप्नादौ पिण्डरूपता ॥ ५४ ॥

śrīrāma uvāca | kimetāvati saṃpanne saṃpannaṃ bhavati priyam | kathaṃ ca śāmyatyarthānāṃ svapnādau piṇḍarūpatā || 54 ||

Rama said: What is achieved by this? Does it become dear? How does the objectivity of things in dreams and the world cease?

राम ने कहा: इससे क्या प्राप्त होता है? क्या यह प्रिय हो जाता है? स्वप्न और जगत् में वस्तुओं की पिण्डरूपता कैसे शांत होती है?

7.190.55

श्रीवसिष्ठ उवाच । पूर्वापरपरामर्शात्पिण्डतार्थेषु शाम्यति । स्वप्नेऽप्येवं स्थिते स्थूला भावना विनिवर्तते ॥ ५५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | pūrvāparaparāmarśātpīṇḍatārtheṣu śāmyati | svapne'pyevaṃ sthite sthūlā bhāvanā vinivartate || 55 ||

Vasishtha said: By reflecting on the past and future, the objectivity of things ceases. Even in dreams, when such reflection is established, the gross perception dissolves.

वसिष्ठ ने कहा: भूत और भविष्य पर विचार करने से वस्तुओं की पिण्डरूपता शांत हो जाती है। स्वप्न में भी, जब ऐसा विचार स्थापित होता है, तो स्थूल भावना विलीन हो जाती है।

7.190.57

श्रीवसिष्ठ उवाच । उद्धृस्तमसदाभासमुत्पन्ननगरोपमम् । वर्षप्रोन्मृष्टचित्राभं जगत्पश्यत्यवासनः ॥ ५७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | uddhṛstamasadābhāsamutpannanagaropamam | varṣapronmṛṣṭacitrābhaṃ jagatpaśyatyavāsanaḥ || 57 ||

Vasishtha said: One who is free from desires sees the world as an illusory reflection, like a city appearing in the sky, or a painting washed away by the rains.

वसिष्ठ ने कहा: जो व्यक्ति वासना मुक्त है, वह संसार को एक मिथ्या प्रतिबिम्ब के रूप में देखता है, जैसे आकाश में उठती हुई नगरी या बारिश से धुली हुई चित्रकारी।

7.190.58

श्रीराम उवाच । ततः किं तस्य भवति वासनातानवे स्थिते । पिण्डग्रहे गतेऽर्थानां स्वप्नोपमजगत्स्थितेः ॥ ५८ ॥

śrīrāma uvāca | tataḥ kiṃ tasya bhavati vāsanātānave sthite | piṇḍagrahe gate'rthānāṃ svapnopamajagatsthiteḥ || 58 ||

Rama asked: Then what happens to that person when the desires are firmly established, when the body is gone, and the world appears like a dream?

राम ने पूछा: फिर उस व्यक्ति के साथ क्या होता है जब वासनाएँ दृढ़ता से स्थित हो जाती हैं, शरीर चला जाता है, और संसार स्वप्न के समान दिखाई देता है?

7.190.59

श्रीवसिष्ठ उवाच । संकल्परूपजगतः क्रमात्सापि विलीयते । वासना तस्य तेनाशु स निर्वाति विवासनः ॥ ५९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | saṃkalparūpajagataḥ kramātsāpi vilīyate | vāsanā tasya tenāśu sa nirvāti vivāsanaḥ || 59 ||

Vasishtha said: The world, which is a form of imagination, gradually dissolves. With the dissolution of desires, one becomes free from desires.

वसिष्ठ ने कहा: संसार, जो कल्पना का रूप है, धीरे-धीरे विलीन हो जाता है। वासनाओं के विलय के साथ, व्यक्ति वासना मुक्त हो जाता है।

7.190.60

श्रीराम उवाच । अनेकजन्मसंरूढा शाखा प्रसवशालिनी । भवबन्धकरी घोरा कथं शाम्यति वासना ॥ ६० ॥

śrīrāma uvāca | anekajanmasaṃrūḍhā śākhā prasavaśālinī | bhavabandhakarī ghorā kathaṃ śāmyati vāsanā || 60 ||

Rama asked: How does the terrible desire, which has been firmly rooted through many births, which is productive and causes bondage, become pacified?

राम ने पूछा: कैसे वह भयानक वासना, जो अनेक जन्मों से दृढ़ता से जड़ पकड़ चुकी है, जो उत्पादक है और बंधन का कारण है, शांत होती है?

7.190.61

श्रीवसिष्ठ उवाच । यथाभूतार्थविज्ञानाद्भ्रान्तिमात्रात्मनि स्थिते । पिण्डग्रहवियुक्तेऽस्मिन्दृश्यचक्रे क्रमात्क्षयः ॥ ६१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yathābhūtārthavijñānādbhrāntimātrātmani sthite | piṇḍagrahaviyukte'smin dṛśyacakre kramātkṣayaḥ || 61 ||

Vasishtha said: When one knows the true nature of things and understands that delusion is the essence of the self, then the body is released from its grasp, and gradually the visible world diminishes.

वसिष्ठ ने कहा: जब कोई वास्तविकता को जान लेता है और समझ लेता है कि भ्रम ही आत्मा का सार है, तब शरीर अपनी पकड़ से मुक्त हो जाता है, और धीरे-धीरे दृश्य संसार घटता जाता है।

7.190.62

श्रीराम उवाच । पिण्डग्रहविमुक्तेऽस्मिन्दृश्यचक्रे क्रमान्मुने । संपद्यते किमपरं कथं शान्तिः प्रजायते ॥ ६२ ॥

śrīrāma uvāca | piṇḍagrahavimukte'smin dṛśyacakre kramān mune | saṃpadyate kim aparaṃ kathaṃ śāntiḥ prajāyate || 62 ||

Sri Rama said: When the body is freed from the grasp of the senses, what else happens, O sage? How does peace arise?

श्री राम ने कहा: जब शरीर इन्द्रियों के आग्रह से मुक्त हो जाता है, तब और क्या होता है, हे मुनि? शान्ति कैसे उत्पन्न होती है?

7.190.63

श्रीवसिष्ठ उवाच । पिण्डग्रहभ्रमे शान्ते चित्तमात्रात्मतां गते । निरोधगौरवोन्मुक्ते जगत्यास्थोपशाम्यति ॥ ६३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | piṇḍagrahabhrame śānte cittamātrātmatāṃ gate | nirodhagauravonmukte jagatyāsthopaśāmyati || 63 ||

Vasistha said: When the delusion of the body is calmed and the mind attains its true nature, freed from the heaviness of restraint, one finds peace in the world.

वसिष्ठ ने कहा: जब शरीर का भ्रम शान्त हो जाता है और मन अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त होता है, रोक की भारीपन से मुक्त होकर, व्यक्ति जगत में शान्ति पाता है।

7.190.64

श्रीराम उवाच । बालसंकल्परूपेऽस्मिन्स्थिते जगति भासुरे । कथमास्थोपशमनं तादृग्दुःखाय किं नरः ॥ ६४ ॥

śrīrāma uvāca | bālasaṃkalparūpe'smin sthite jagati bhāsure | kathamāsthopaśamanaṃ tādṛg duḥkhāya kiṃ naraḥ || 64 ||

Sri Rama said: When the world is established in the form of childish desires, how can there be peace? What kind of person experiences such suffering?

श्री राम ने कहा: जब जगत बालसुलभ इच्छाओं के रूप में स्थित होता है, तब शान्ति कैसे हो सकती है? ऐसे दुःख कौन सा व्यक्ति भोगता है?

7.190.65

श्रीवसिष्ठ उवाच । संकल्पमात्रसंपन्ने नष्टे दुःखं कथं भवेत् । संकल्पचित्तमात्रं यत्तत्तावत्प्रविचार्यताम् ॥ ६५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | saṃkalpamātrasaṃpanne naṣṭe duḥkhaṃ kathaṃ bhavet | saṃkalpacittamātraṃ yat tat tāvat pravicāryatām || 65 ||

Vasistha said: When desires are completely fulfilled, how can there be suffering? Let us examine the mind that is full of desires.

वसिष्ठ ने कहा: जब इच्छाएँ पूरी तरह से पूर्ण हो जाती हैं, तब दुःख कैसे हो सकता है? इच्छाओं से भरे मन का विचार करें।

7.190.66

श्रीराम उवाच । कीदृशं भगवंश्चित्तं कथं तत्प्रविचार्यते । किं च संपद्यते ब्रूहि तस्मिन्सम्यग्विचारिते ॥ ६६ ॥

śrīrāma uvāca | kīdṛśaṃ bhagavaṃś cittaṃ kathaṃ tat pravicāryate | kiṃ ca saṃpadyate brūhi tasmin samyag vicārite || 66 ||

Sri Rama said: O Lord, what kind of mind is it? How is it to be examined? And what happens when it is properly examined? Please tell me.

श्री राम ने कहा: हे भगवन्, मन कैसा होता है? उसे कैसे विचारा जाए? और जब उसे ठीक से विचारा जाता है, तब क्या होता है? मुझे बताएँ।

7.190.67

श्रीवसिष्ठ उवाच । चितश्चेत्योन्मुखत्वं यत्तच्चित्तमिति कथ्यते । विचार एष एवास्य वासनानेन शाम्यति ॥ ६७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | citaścetyonmukhatvaṃ yattaccittamiti kathyate | vicāra eṣa evāsya vāsanānena śāmyati || 67 ||

Vasishtha said: The tendency of consciousness towards objects is called the mind. This very inquiry calms its impressions.

वसिष्ठ ने कहा: चेतना की वस्तुओं की ओर उन्मुखता को मन कहते हैं। यही विचार इसकी वासनाओं को शांत करता है।

7.190.68

श्रीराम उवाच । कियन्नाम भवेद्ब्रह्मन्न चेत्योन्मुखता चितेः । चित्तस्याचित्ततोदेति कथं निर्वाणकारिणी ॥ ६८ ॥

śrīrāma uvāca | kiyan nāma bhaved vahmanna cetyonmukhatā citeḥ | cittasya acittatodeti kathaṃ nirvāṇakāriṇī || 68 ||

Rama said: O revered one, what is this tendency of consciousness towards objects? How does the mind, which is essentially non-conscious, lead to liberation?

राम ने कहा: हे पूज्य, चेतना की वस्तुओं की ओर उन्मुखता क्या है? मन, जो कि अचेतन है, कैसे मुक्ति का कारण बनता है?

7.190.69

श्रीवसिष्ठ उवाच । चेत्यं न संभवत्येव चित्किं चेतयते कुतः । चेत्यासंभवतश्चित्तसत्ता नास्ति ततश्चिरम् ॥ ६९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | cetyaṃ na saṃbhavatyeva cit kiṃ cetayate kutaḥ | cetyāsaṃbhavataścittasattā nāsti tataściram || 69 ||

Vasishtha said: The object does not exist at all. How can consciousness perceive what does not exist? Therefore, the existence of the mind is not real.

वसिष्ठ ने कहा: वस्तु वास्तव में अस्तित्व में नहीं है। चेतना उसे कैसे जान सकती है जो अस्तित्व में नहीं है? इसलिए, मन का अस्तित्व वास्तविक नहीं है।

7.190.70

श्रीराम उवाच । कथं न संभवत्येतच्चेत्यं यदनुभूयते । अपह्नवश्चानुभवे क्रियते कथमीदृशः ॥ ७० ॥

śrīrāma uvāca | kathaṃ na saṃbhavatyetaccetyaṃ yadanubhūyate | apahnavaścānubhave kriyate kathamīdṛśaḥ || 70 ||

Rama said: How can the object, which is experienced, not exist? How is such a denial made in experience?

राम ने कहा: वह वस्तु जो अनुभव की जाती है, कैसे अस्तित्व में नहीं हो सकती? अनुभव में ऐसा नकार कैसे किया जाता है?

7.190.71

श्रीवसिष्ठ उवाच । यादृक्स्यादज्ञविषयं जगत्तस्य न सत्यता । यादृक्च तज्ज्ञविषयं तदनाख्यं यदद्वयम् ॥ ७१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yādṛksyādajñaviṣayaṃ jagattasya na satyatā | yādṛkva tajjñaviṣayaṃ tadanākhyaṃ yadadvayam || 71 ||

Vasishtha said: Whatever is perceived by the ignorant is not real. Whatever is known by the wise is inexpressible and non-dual.

वसिष्ठ ने कहा: जो कुछ भी अज्ञानी द्वारा देखा जाता है, वह वास्तविक नहीं है। जो कुछ भी ज्ञानी द्वारा जाना जाता है, वह अनिर्वचनीय और अद्वैत है।

7.190.72

श्रीराम उवाच । त्रिजगत्कीदृगज्ञानां कथं तस्य न सत्यता । तज्ज्ञानां तु जगद्यादृक्तद्वक्तुं किं न युज्यते ॥ ७२ ॥

śrīrāma uvāca | trijagatkīdṛgajñānāṃ kathaṃ tasya na satyatā | tajjñānāṃ tu jagadyādṛktadvaktuṃ kiṃ na yujyate || 72 ||

Shri Rama said: How is it that the knowledge of the three worlds is not true? Why is it not appropriate to describe the world as it is known?

श्री राम ने कहा: तीनों जगतों के ज्ञान की सत्यता कैसे नहीं है? जैसा ज्ञान है, उस जगत को वैसा ही बताना क्यों उचित नहीं है?

7.190.73

श्रीवसिष्ठ उवाच । आद्यन्तद्वैतमज्ञानां तज्ज्ञानां तन्न विद्यते । जगच्च नो संभवति नित्यानुत्पन्नमादितः ॥ ७३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ādyantadvaitamajñānāṃ tajjñānāṃ tanna vidyate | jagaccano saṃbhavati nityānutpannamāditaḥ || 73 ||

Shri Vasistha said: The knowledge of the duality of beginning and end does not exist. The world does not arise, it is eternally unborn from the beginning.

श्री वसिष्ठ ने कहा: आदि और अंत के द्वैत ज्ञान का अस्तित्व नहीं है। जगत उत्पन्न नहीं होता, यह आदि से ही नित्य अजन्मा है।

7.190.74

श्रीराम उवाच । आदितो यदनुत्पन्नं न संभवति कर्हिचित् । असद्रूपमनाभासं कथं तदनुभूयते ॥ ७४ ॥

śrīrāma uvāca | ādito yadanutpannaṃ na saṃbhavati karhicit | asadrūpamanābhāsaṃ kathaṃ tadanubhūyate || 74 ||

Shri Rama said: If something is unborn from the beginning, it does not arise at any time. How is that which is of the nature of non-existence and without appearance experienced?

श्री राम ने कहा: यदि कोई चीज आदि से ही अजन्मा है, तो वह कभी भी उत्पन्न नहीं होती। असत् स्वरूप और अनाभास कैसे अनुभव किया जाता है?

7.190.75

श्रीवसिष्ठ उवाच । असदेव सदाभासमनुत्पन्नमकारणम् । जाग्रत्स्वप्नवदुद्भूतमर्थकृच्चानुभूयते ॥ ७५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | asadeva sadābhāsam anutpannaṃ akāraṇam | jāgratsvapnavadudbhūtam arthakṛccānubhūyate || 75 ||

Shri Vasistha said: That which is non-existent appears as existent, unborn, and without cause. It arises like a dream in the waking state and is experienced as real.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जो असत् है, वह सत् के रूप में प्रकट होता है, अजन्मा और अकारण है। वह जाग्रत् स्वप्न की तरह उत्पन्न होता है और वास्तविक के रूप में अनुभव किया जाता है।

7.190.76

श्रीराम उवाच । स्वप्नादौ कल्पनादौ च यदृश्यमनुभूयते । तज्जाग्रद्रूपसंस्कारादनुष्ठानानुभूतितः ॥ ७६ ॥

śrīrāma uvāca | svapnādau kalpanādau ca yaddṛśyamanubhūyate | tajjāgradrūpasanskārādanuṣṭhānānubhūtitḥ || 76 ||

Shri Rama said: Whatever is seen and experienced in dreams and imaginations is due to the impressions of the waking state and the continuity of experience.

श्री राम ने कहा: स्वप्न और कल्पना में जो कुछ भी देखा और अनुभव किया जाता है, वह जाग्रत् अवस्था के संस्कारों और अनुभव की निरंतरता के कारण है।

7.190.77

श्रीवसिष्ठ उवाच । किं जाग्रद्रूपमाहोस्विदन्यत्स्वप्नेऽनुभूयते । संकल्पे च मनोराज्ये इति मे वद राघव ॥ ७७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kiṃ jāgradrūpamāhosvidanyatsvapne'nubhūyate | saṃkalpe ca manorājye iti me vada rāghava || 77 ||

Vasishtha said: Is the waking state different from what is experienced in dreams and imaginings? Tell me, Raghava.

वसिष्ठ ने कहा: क्या जाग्रत अवस्था स्वप्न और कल्पना से अलग है? हे रघुनाथ, मुझे बताओ।

7.190.78

श्रीराम उवाच । स्वप्नेषु कल्पनाद्येषु जाग्रदेवावभासते । संस्कारात्मतया नित्यं मनोराज्यभ्रमेषु च ॥ ७८ ॥

śrīrāma uvāca | svapneṣu kalpanādyeṣu jāgradevāvabhāsate | saṃskārātmataayā nityaṃ manorājyabhrameṣu ca || 78 ||

Rama said: In dreams and imaginings, the waking state itself appears due to the impressions of the mind.

राम ने कहा: स्वप्न और कल्पना में, जाग्रत अवस्था ही मन की संस्कारों के कारण प्रकट होती है।

7.190.79

श्रीवसिष्ठ उवाच । तदेव जाग्रत्संस्कारात्स्वप्नश्चेदवभासते । तत्स्वप्ने लुठितं गेहं कथं प्रातरवाप्यते ॥ ७९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tadeva jāgratsaṃskārātsvapnaścedavabhāsate | tatsvapne luṭhitaṃ gehaṃ kathaṃ prātaravāpyate || 79 ||

Vasishtha said: If the dream itself appears due to the impressions of the waking state, how does the house seen in the dream reappear in the morning?

वसिष्ठ ने कहा: यदि स्वप्न जाग्रत अवस्था के संस्कारों के कारण प्रकट होता है, तो स्वप्न में देखा गया घर सुबह कैसे दिखाई देता है?

7.190.80

श्रीराम उवाच । न जाग्रद्राजते स्वप्ने तद्ब्रह्मान्यत्ततदेव हि । बुद्धमेतत्कथं त्वन्यदपूर्वमिव भासते ॥ ८० ॥

śrīrāma uvāca | na jāgradrājate svapne tadbrahmānyattadeva hi | buddhametatkathaṃ tvanyadapūrvamiva bhāsate || 80 ||

Rama said: The waking state does not shine in the dream. That Brahman is indeed different from that. How does this known thing appear as something new?

राम ने कहा: जाग्रत अवस्था स्वप्न में चमकती नहीं है। वह ब्रह्म उससे अलग है। यह ज्ञात चीज नई कैसे दिखाई देती है?

7.190.81

श्रीवसिष्ठ उवाच । नानुभूतोऽनुभूतश्च चेतस्यर्थोऽवभासते । सर्गाद्यन्तादिमध्येषु स्वभ्यस्तस्त्विति भासते ॥ ८१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | nānubhūto'nubhūtaśca cetasyartho'vabhāsate | sargādyantādimadhyeṣu svabhyastastviti bhāsate || 81 ||

Vasishtha said: The unperceived and the perceived both appear as objects of the mind. In creation, end, beginning, and middle, it is practiced by itself, thus it appears.

वसिष्ठ ने कहा: अनुभूत और अनुभूत दोनों मन के विषय के रूप में प्रकट होते हैं। सृष्टि, अंत, आदि और मध्य में, यह स्वयं अभ्यास करता है, इसलिए यह प्रकट होता है।

7.190.82

श्रीराम उवाच । एवं स्वप्नात्मकं भाति जगदित्येव बुद्धवान् । ग्रहवत्स्वप्नयक्षोऽयं कथं ब्रह्मंश्चिकित्स्यते ॥ ८२ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ svapnātmakaṃ bhāti jagadityeva buddhvān | grahavatsvapnayakṣo'yaṃ kathaṃ brahmaṃścikitsyate || 82 ||

Sri Rama said: Thus, this world appears to be dream-like to the enlightened one. How can this dream-like illusion, which is like a planet, be treated as Brahman?

श्री राम ने कहा: इस प्रकार, यह जगत ज्ञानी को स्वप्न-सदृश प्रतीत होता है | यह ग्रह-सदृश स्वप्न कैसे ब्रह्म के रूप में चिकित्सित किया जाएगा?

7.190.83

श्रीवसिष्ठ उवाच । योऽयं संसरणस्वप्नः स किंकारणको भवेत् । कार्यान्न कारणं भिन्नमिति दृष्टं विचारय ॥ ८३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yo'yaṃ saṃsaraṇasvapnaḥ sa kiṃkāraṇako bhavet | kāryānna kāraṇaṃ bhinnamiti dṛṣṭaṃ vicāraya || 83 ||

Sri Vasistha said: What is the cause of this dream of transmigration? It is seen that the effect is not different from the cause. Reflect on this.

श्री वसिष्ठ ने कहा: इस संसार स्वप्न का कारण क्या है? यह देखा गया है कि कार्य कारण से भिन्न नहीं है | इस पर विचार करो |

7.190.84

श्रीराम उवाच । चित्तं स्वप्नोपलम्भानां हेतुस्तस्मात्तदेव ते । विश्वं चाद्यन्तरहितमनासारमनामयम् ॥ ८४ ॥

śrīrāma uvāca | cittaṃ svapnopalambhānāṃ hetustasmāttadeva te | viśvaṃ cādyantarahitamanāsāramanāmayam || 84 ||

Sri Rama said: The mind is the cause of dream experiences. Therefore, that mind itself is the universe, which is devoid of beginning and end, essence, and disease.

श्री राम ने कहा: मन स्वप्न अनुभवों का कारण है | इसलिए, वही मन ही ब्रह्मांड है, जो आदि और अंत से रहित, सार और रोग से मुक्त है |

7.190.85

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं चित्तं महाबुद्धे महाचिद्धनमेव तत् । तथास्थितं न स्वप्नादि किंचनास्तीतरात्मकम् ॥ ८५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ cittaṃ mahābuddhe mahāciddhanameva tat | tathāsthitaṃ na svapnādi kiṃcanāstītarātmakam || 85 ||

Sri Vasistha said: Thus, O great wise one, the mind is indeed the great treasure of consciousness. Established thus, there is nothing else like dreams or anything else.

श्री वसिष्ठ ने कहा: इस प्रकार, हे महान ज्ञानी, मन वास्तव में चेतना का महान खजाना है | इस प्रकार स्थित, स्वप्न या कुछ और नहीं है |

7.190.86

श्रीराम उवाच । अवयवावयविनोर्यथा भिन्नस्तथा स हि । तत्रानवयवे ब्रह्मण्येकता जगदादिना ॥ ८६ ॥

śrīrāma uvāca | avayavāvayavinoryathā bhinnastathā sa hi | tatrānavaye brahmaṇyekatā jagadādinā || 86 ||

Sri Rama said: Just as the part and the whole are distinct, so is it with Brahman, which is one without parts, the origin of the universe.

श्री राम ने कहा: जैसे अंश और समूह अलग-अलग होते हैं, वैसे ही ब्रह्म है, जो अंशों से रहित, ब्रह्मांड का आदि है |

7.190.87

श्रीवसिष्ठ उवाच । एवं न संभवत्येव नित्यानुत्पन्नमादितः । जगत्तेनाजरं शान्तमजं सर्वमवेधितम् ॥ ८७ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | evaṃ na saṃbhavatyeva nityānutpannamāditaḥ | jagattēnājaraṃ śāntamajaṃ sarvamavēdhitam || 87 ||

Vasishtha said: Thus, the world, which is eternally unborn from the beginning, does not exist at all. Therefore, it is unchanging, peaceful, unborn, and known to all.

वसिष्ठ ने कहा: इस प्रकार, जगत् जो आदि से ही नित्य अनुत्पन्न है, वह वास्तव में नहीं है| इसलिए वह अपरिवर्तनशील, शान्त, अजन्मा और सभी को ज्ञात है|

7.190.88

श्रीराम उवाच । काकतालीयवन्मन्ये सर्गाद्यन्तादयो भ्रमाः । भ्रान्तिद्रष्टृत्वभोक्तृत्वसहिताः परमे पदे ॥ ८८ ॥

śrīrāma uvāca | kākatālīyavatmanye sargādyantādayaḥ bhramāḥ | bhrāntidraṣṭṛtvabhoktṛtvasahitāḥ parame pade || 88 ||

Rama said: I consider the creation, existence, and destruction of the world to be illusions, like the illusion of a crow and a palm fruit. These illusions are accompanied by the false notions of being the seer and the enjoyer in the supreme state.

राम ने कहा: मैं जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश को कौए और ताड़ के फल के भ्रम की तरह भ्रम मानता हूँ| ये भ्रम द्रष्टा और भोक्ता की भ्रान्तियों से युक्त हैं परम पद में|

7.190.89

श्रीवसिष्ठ उवाच । या व्यापारवती रसाद्रसविदां काचित्कवीनां नवा दृष्टिर्या परिनिष्ठितार्थविषयोन्मेषा च वैपश्चिती । ते द्वे अप्यवलम्ब्य विश्वमखिलं निर्वर्णितं निर्वृतं यावद्दृष्टिदृशो न सन्ति कलिता नौ शून्यता नो भ्रमः ॥ ८९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yā vyāpāravatī rasādrasavidāṃ kācitkavīnāṃ navā dṛṣṭiryā pariniṣṭhitārthaviṣayonmēṣā ca vaipascitī | tē dvē apyavalambya viśvamakhilaṃ nirvarṇitaṃ nirvṛtaṃ yāvaddṛṣṭidṛśo na santi kalitā nau śūnyatā no bhramaḥ || 89 ||

Vasishtha said: The poetic vision that is full of activity and the discriminating insight that is firmly established in the ultimate reality are both necessary for describing the entire universe as content and peaceful. As long as these two visions are not disturbed, there is neither emptiness nor illusion.

वसिष्ठ ने कहा: काव्यात्मक दृष्टि जो गतिविधियों से भरी है और विवेकपूर्ण अन्तर्दृष्टि जो परम सत्य में स्थिर है, दोनों आवश्यक हैं सम्पूर्ण विश्व को सन्तुष्ट और शान्त के रूप में वर्णित करने के लिए| जब तक ये दो दृष्टियाँ विक्षुब्ध नहीं होतीं, तब तक न तो शून्यता है न ही भ्रम|

Chapter 191

7.191.1

श्रीराम उवाच । एवं चेत्तन्मुनिश्रेष्ठ परमार्थमयं जगत् । सर्वदा सर्वभावात्मा नोदेति न च शाम्यति ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ cet tanmuniśreṣṭha paramārthamayaṃ jagat | sarvadā sarvabhāvātmā nōdēti na ca śāmyati || 1 ||

Shri Rama said: If it is so, O best of sages, this world is of the nature of the highest truth. It always exists in all forms, neither arises nor ceases.

श्री राम ने कहा: यदि ऐसा है, हे मुनिश्रेष्ठ, यह जगत परमार्थ की प्रकृति का है। यह हमेशा सभी रूपों में विद्यमान रहता है, न उत्पन्न होता है न विलीन होता है।

7.191.2

भ्रान्तिरेवेयमाभाति जगदाभासरूपिणी । भ्रान्तिरेवापि वा नैव ब्रह्मसत्तैव केवला ॥ २ ॥

bhrāntireveyaṃ ābhāti jagadābhāsarūpiṇī | bhrāntirevāpi vā naiva brahmasattaiva kevalā || 2 ||

This world appears as a mere illusion, a reflection. It is indeed an illusion, or perhaps not even that, but only the pure existence of Brahman.

यह जगत एक भ्रान्ति, एक प्रतिबिंब के रूप में प्रकट होता है। यह वास्तव में एक भ्रान्ति है, या शायद उससे भी कम, केवल ब्रह्म का शुद्ध अस्तित्व।

7.191.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । काकतालीयवद्ब्रह्म यद्भातीवात्मनात्मनि । स तेनैवात्मनात्मैव जगदित्यवबुध्यते ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | kākatālīyavadbrahma yadbhātīvātmanātmani | sa tenaivātmanātmaiva jagadityavabudhyate || 3 ||

Vasistha said: Just as a crow sees a palm fruit as a reflection, similarly, Brahman appears as the self within the self. By that very self, it is realized as the world.

वसिष्ठ ने कहा: जैसे कौआ ताड़ के फल को प्रतिबिंब के रूप में देखता है, उसी प्रकार, ब्रह्म आत्मा में आत्मा के रूप में प्रकट होता है। उसी आत्मा से, यह जगत के रूप में जाना जाता है।

7.191.4

श्रीराम उवाच । कथं तपत्यहोऽदिक्कं सर्गस्यादौ परत्र च । कथं भित्त्या विना भाति वद दीपप्रभा मुने ॥ ४ ॥

śrīrāma uvāca | kathaṃ tapatyaho'dikkaṃ sargasyādau paratra ca | kathaṃ bhittyā vinā bhāti vada dīpaprabhā mune || 4 ||

Shri Rama said: How does the sun shine at the beginning of creation and in the hereafter? How does the light of a lamp appear without a wall? Tell me, O sage.

श्री राम ने कहा: सृष्टि के आरंभ में और परलोक में सूर्य कैसे चमकता है? दीवार के बिना दीपक की प्रभा कैसे प्रकट होती है? हे मुनि, मुझे बताओ।

7.191.5

श्रीवसिष्ठ उवाच । इत्थंरूपमिदं भाति चितिरूपप्रभाप्रभा । पश्य सैवात्मनाऽऽस्ते यत्प्रकाशादिभिरेव च ॥ ५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | itthaṃrūpamidaṃ bhāti citirūpaprabhāprabhā | paśya saivātmanā'āste yatprakāśādibhireva ca || 5 ||

Vasistha said: This appears in such a form, the light of consciousness. See, it exists by itself, by the very means of illumination and so on.

वसिष्ठ ने कहा: यह ऐसे रूप में प्रकट होता है, चेतना की प्रभा। देखो, यह स्वयं ही अस्तित्व में है, प्रकाश आदि के माध्यम से।

7.191.6

भित्तौ प्रकाशो भातीव तत्कुड्यं भासनं च तत् दृश्यस्यासंभवादादौ वक्ता द्रष्टा प्रदृश्यताम् ॥ ६ ॥

bhittau prakāśo bhātīva tatkuḍyaṃ bhāsanaṃ ca tat dṛśyasyāsaṃbhavādādau vaktā draṣṭā pradṛśyatām || 6 ||

Light shines on the wall, and the wall itself is the illuminator. Initially, the seer and the speaker are to be seen, as the seen does not exist.

प्रकाश दीवार पर चमकता है, और दीवार खुद ही चमकाने वाला है। शुरू में, देखने वाला और बोलने वाला देखे जाने चाहिए, क्योंकि देखा जाने वाला मौजूद नहीं है।

7.191.7

तस्माद्द्रष्टास्ति नो दृश्यं नैवास्तीदमनामयम् चित्प्रभैवात्मना भित्तिर्भवत्याभासनं तथा ॥ ७ ॥

tasmāddraṣṭāsti no dṛśyaṃ naivāstīdamanāmayam cittaprabhaivātmanā bhittirbhavatyābhāsanaṃ tathā || 7 ||

Therefore, the seer exists, not the seen. This is not without flaw. The wall becomes the illuminator by the self-luminous consciousness.

इसलिए, देखने वाला मौजूद है, देखा जाने वाला नहीं। यह दोष रहित नहीं है। दीवार स्वयं प्रकाशित चेतना से चमकाने वाला बन जाता है।

7.191.8

द्रष्टृदृश्यात्मिकैकैव स्वात्मनैव विराजते स्वप्नादिषु यथेहाद्य द्रष्टृदृश्यात्मिका सती ॥ ८ ॥

draṣṭṛdṛśyātmikaikaiava svātmanaiva virājate svapnādiṣu yathehādya draṣṭṛdṛśyātmikā satī || 8 ||

The seer and the seen are one and the same, shining by their own self. In dreams and such, they are both the seer and the seen.

देखने वाला और देखा जाने वाला एक ही हैं, अपने स्वयं से चमकते हुए। स्वप्नों में और ऐसे में, वे दोनों देखने वाले और देखे जाने वाले हैं।

7.191.9

चिद्भात्येव हि सर्गादौ कचन्ती भाति सर्गवत् भासनीयं च भानं च रूपं यत्र स्वयंप्रभा ॥ ९ ॥

cidbhātyeva hi sargādau kacantī bhāti sargavat bhāsanīyaṃ ca bhānaṃ ca rūpaṃ yatra svayaṃprabhā || 9 ||

Consciousness alone shines at the beginning of creation, illuminating like the creation itself. It is the illuminator and the illuminated, the form where it is self-luminous.

चेतना ही सृष्टि के शुरू में चमकती है, सृष्टि के समान चमकती हुई। यह चमकाने वाला और चमका जाने वाला है, जहाँ यह स्वयं प्रकाशित है।

7.191.10

एकैव चित्त्रयं भूत्वा सर्गादौ भाति सर्गवत् एष एव स्वभावोऽस्या यदेवं भाति भासुरा ॥ १० ॥

ekaiva cittrtrayaṃ bhūtvā sargādau bhāti sargavat eṣa eva svabhāvo'syā yadevaṃ bhāti bhāsurā || 10 ||

Being one, consciousness appears as three at the beginning of creation, shining like the creation itself. This is its very nature, that it shines thus, luminous.

एक होकर, चेतना सृष्टि के शुरू में तीन रूपों में प्रकट होती है, सृष्टि के समान चमकती हुई। यह इसका स्वभाव है कि यह इस प्रकार चमकती है, प्रकाशित।

7.191.11

एतत्तु स्वप्नसंकल्पनगरेष्वनुभूयतेइत्थं नाम तपत्येषा चिद्दीप्तिः प्रथमोदिता ॥ ११ ॥

etattu svapnasaṃkalpanagareṣvanubhūyateitthaṃ nāma tapatyeṣā ciddīptiḥ prathamoditā || 11 ||

This is experienced in the cities of dream and imagination. This is called the first dawn of the light of consciousness.

यह स्वप्न और कल्पना के नगरों में अनुभव किया जाता है। यह चेतना के प्रकाश का पहला उदय कहलाता है।

7.191.12

नभस्येव नभोरूपा यदिदं भासते जगतनाद्यन्तमिदं तस्याः सर्गाः सर्गात्मभासनम् ॥ १२ ॥

nabhasyeva nabhorūpā yadidaṃ bhāsate jagatanādyantamidaṃ tasyāḥ sargāḥ sargātmabhāsanam || 12 ||

Like the sky, the world appears as the form of the sky. This, without beginning or end, is the creation and the manifestation of the self.

आकाश की तरह, यह जगत आकाश के रूप में प्रकट होता है। यह, जिसका न आदि है न अंत, आत्मा की सृष्टि और प्रकटीकरण है।

7.191.13

स्वभावभूतमस्माकं त्विदं भाति महात्मनाम्भास्यभासकसंवित्तिर्नश्यति प्रतिभामिता ॥ १३ ॥

svabhāvabhūtamasmākaṃ tvidaṃ bhāti mahātmanāmbhāsyabhāsakasaṃvittirnaśyati pratibhāmitā || 13 ||

Our own nature appears as the great self. The consciousness that illuminates the illuminator does not perish, it is self-evident.

हमारा अपना स्वभाव महान आत्मा के रूप में प्रकट होता है। जो चेतना प्रकाशक को प्रकाशित करती है, वह नष्ट नहीं होती, वह स्वयं प्रकट है।

7.191.14

तदा तु नाम सर्गादौ नासीद्भास्यो न भासकःमिथ्याज्ञानवशादेव स्थाणौ पुंस्प्रत्ययो यथा ॥ १४ ॥

tadā tu nāma sargādau nāsīdbhāsyo na bhāsakaḥmithyājñānavaśādeva sthāṇau puṃspratyayo yathā || 14 ||

Then, at the beginning of creation, there was neither the illuminated nor the illuminator. Due to false knowledge, there was a notion of duality, like the notion of a man.

तब, सृष्टि के आरंभ में, न प्रकाशित था न प्रकाशक। मिथ्या ज्ञान के कारण, द्वैत का विचार था, जैसे पुरुष का विचार।

7.191.15

तथात्मनि द्विताभानाच्चित्ते द्वैतविभासनम्सर्गादौ न च भास्योऽस्ति न च वा नास्ति भासकः ॥ १५ ॥

tathātmani dvitābhānāccitte dvaitavibhāsanamsargādau na ca bhāsyosti na ca vā nāsti bhāsakaḥ || 15 ||

Similarly, in the self, due to the appearance of duality in the mind, at the beginning of creation, there is neither the illuminated nor the illuminator.

इसी प्रकार, आत्मा में, मन में द्वैत के प्रकट होने के कारण, सृष्टि के आरंभ में, न प्रकाशित है न प्रकाशक।

7.191.16

कारणाभावतोद्वैतं चिद्व्योमाभाति केवलम् । किं नाम कारणं ब्रूहि सर्गादौ चिति वस्तुतः ॥ १६ ॥

kāraṇābhāvatodvaitaṃ cidvyomābhāti kevalam | kiṃ nāma kāraṇaṃ brūhi sargādau citi vastutaḥ || 16 ||

Due to the absence of a cause, only the non-dual consciousness shines | What is the cause, tell me, in reality, at the beginning of creation?

कारण के अभाव में, केवल अद्वैत चेतना चमकती है | सृष्टि के आरंभ में, वास्तव में कारण क्या है, बताओ?

7.191.17

अभावादर्थदृष्टीनां चिदेवेत्थं प्रकाशते । जगद्भानमिदं यत्तन्न जाग्रन्न सुषुप्तकम् ॥ १७ ॥

abhāvādarthadṛṣṭīnāṃ cidevetthaṃ prakāśate | jagadbhānamidaṃ yattanna jāgranna suṣuptakam || 17 ||

Due to the absence of objects, consciousness alone shines thus | This appearance of the world is neither waking nor deep sleep

वस्तुओं के अभाव में, केवल चेतना ऐसे चमकती है | यह जगत का दिखावा न जाग्रत है न गहरी नींद

7.191.18

न स्वप्नोसंभवादृश्यं केवलं ब्रह्म भासते । चिन्मात्रव्योमसर्गादावित्थं कचकचायते ॥ १८ ॥

na svapnosambhavāddṛśyaṃ kevalaṃ brahma bhāsate | cinmātravyomasargādāvitthaṃ kacakacāyate || 18 ||

Due to the impossibility of a dream, the seen is not real; only Brahman shines | Thus, in the beginning of the creation of the space of pure consciousness, it shines

स्वप्न की असंभावना के कारण, दृश्य वास्तविक नहीं है; केवल ब्रह्म चमकता है | इस प्रकार, शुद्ध चेतना के अंतरिक्ष की सृष्टि के आरंभ में, यह चमकता है

7.191.19

यत्स्वमेव वपुर्वेत्ति जगदित्यजगन्मयम् । चिन्मात्रव्योमसर्गादावित्थं भाति विकासनम् ॥ १९ ॥

yatsvameva vapurvetti jagadityajaganmayam | cinmātravyomasargādāvitthaṃ bhāti vikāsanam || 19 ||

That which knows its own form as the world, which is non-worldly | Thus, in the beginning of the creation of the space of pure consciousness, it shines as expansion

जो अपने रूप को जगत के रूप में जानता है, जो अजगत है | इस प्रकार, शुद्ध चेतना के अंतरिक्ष की सृष्टि के आरंभ में, यह विकास के रूप में चमकता है

7.191.20

यदिदं जगदित्येव शून्यत्वाम्बरयोरिव ॥ २० ॥

yadidaṃ jagadityeva śūnyatvāmbarayoriva || 20 ||

That which is this world is indeed like emptiness and space

जो यह जगत है, वह वास्तव में शून्यता और अंतरिक्ष के समान है

7.191.21

बुद्ध्वा च यावत्स्वनुभूतियुक्तं स्थातव्यमेतेन विकल्पमुक्तम् । पाषाणमौनं कुजनेन तूक्तं न ग्राह्यमज्ञेन हि भुक्तमुक्तम् ॥ २१ ॥

buddhvā ca yāvatsvanubhūtiyuktaṃ sthātavyametena vikalpamuktam | pāṣāṇamaunaṃ kujanena tūktaṃ na grāhyamajñena hi bhukta muktam || 21 ||

Having understood, one should remain in the state of self-realization as much as possible | This alternative has been stated | Silence like a stone has been advised by the wicked | It should not be accepted by the ignorant, for it has been said to be enjoyed

समझकर, आपको अपनी आत्म-अनुभूति की स्थिति में जितना हो सके रहना चाहिए | यह विकल्प कहा गया है | पत्थर की तरह मौन दुष्ट द्वारा सलाह दी गई है | यह अज्ञानी द्वारा नहीं ग्रहण किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भोगा जाना कहा गया है

Chapter 192

7.192.1

श्रीराम उवाच । अहो नु सुचिरं कालं संभ्रान्ता वयमन्तरे । अपरिज्ञातमात्रेण संसारपरमाम्बरे ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | aho nu suciraṃ kālaṃ saṃbhrāntā vayamantare | aparijñātamātreṇa saṃsāraparamāmbare || 1 ||

Sri Rama said: Alas, for a very long time, we have been bewildered in this vast expanse of the world, which is unknown.

श्री राम ने कहा: अहो, बहुत लंबे समय तक, हम इस अज्ञात विशाल संसार में भटकते रहे हैं।

7.192.2

बुद्धे यावदियं नाम जगद्भ्रान्तिर्न किंचन । न चाभून्न च वास्तीयं न च नाम भविष्यति ॥ २ ॥

budhe yāvadiyaṃ nāma jagadbhrāntirna kiṃcana | na cābhūnna ca vāstīyaṃ na ca nāma bhaviṣyati || 2 ||

In the intellect, as long as this world is considered an illusion, it is nothing. It neither existed in the past, nor does it exist now, nor will it exist in the future.

बुद्धि में, जब तक यह संसार भ्रांति माना जाता है, यह कुछ नहीं है। यह न तो भूतकाल में था, न ही वर्तमान में है, और न ही भविष्य में होगा।

7.192.3

सर्वं शान्तं निरालम्बं विज्ञानं केवलं स्थितम् । अनन्तं चिद्घनं व्योम नीरागमपकल्पनम् ॥ ३ ॥

sarvaṃ śāntaṃ nirālambaṃ vijñānaṃ kevalaṃ sthitam | anantaṃ ciddhanaṃ vyoma nīrāgamapakalpanam || 3 ||

Everything is peaceful, without support, pure consciousness alone exists. It is infinite, the wealth of consciousness, the sky, beyond imagination.

सब कुछ शांत है, बिना आधार के, केवल चेतना ही विद्यमान है। यह अनंत है, चेतना का धन, आकाश, कल्पना से परे है।

7.192.4

परमाकाशमेवेदमपरिज्ञातमात्रकम् । संसारतामिवास्माकं गतं चित्रमहो नु भोः ॥ ४ ॥

paramākāśamevedamaparijñātamātrakam | saṃsāratāmivāsmākaṃ gataṃ citramaho nu bhoḥ || 4 ||

This is indeed the supreme sky, only unknown. It has strangely become our worldly existence. Alas, how wonderful!

यह वास्तव में परम आकाश है, केवल अज्ञात। यह अजीब तरीके से हमारे संसार का रूप ले चुका है। अहो, कितना अद्भुत!

7.192.5

इत्थं द्वैतमिदं भातमिमे लोका इमेऽद्रयः । परमाकाशमित्यच्छमेवानच्छमिव स्थितम् ॥ ५ ॥

itthaṃ dvaitamidaṃ bhātamime lokā ime'drayaḥ | paramākāśamityacchamevānacchamiva sthitam || 5 ||

Thus, this duality appears as these worlds and these mountains. The supreme sky is said to be unsupported, as if unsupported.

इस प्रकार, यह द्वैत इन लोकों और इन पर्वतों के रूप में प्रकट होता है। परम आकाश को बिना आधार के, जैसे बिना आधार के, कहा जाता है।

7.192.6

सर्गादौ परलोकादौ स्वप्नादौ कल्पनादिके । चिदेव चेत्यवद्भाति कुतोऽन्या किल दृश्यधीः ॥ ६ ॥

sargādau paralokādau svapnādau kalpanādike | cideva cetyavadbhāti kuto'nyā kila dṛśyadhīḥ || 6 ||

In creation, in the afterworld, in dreams, and in imagination, only consciousness appears as the object of perception; how can there be any other perception of the seen?

सृष्टि में, परलोक में, स्वप्न में और कल्पना में, केवल चेतना ही दृश्य के रूप में प्रकट होती है; दृश्य की किसी अन्य धारणा कैसे हो सकती है?

7.192.7

स्वर्गे वा नरके वापि स्थितोऽस्मीति मतिर्यदि । तत्तस्या नरकस्यान्तो दृश्यं संविन्मयात्मकम् ॥ ७ ॥

svarge vā narake vāpi sthito'smīti matiryadi | tattasyā narakasyānto dṛśyaṃ saṃvinmayātmakam || 7 ||

If one thinks, 'I am in heaven or in hell,' then that is the end of that hell; the seen is of the nature of consciousness.

यदि कोई सोचता है, 'मैं स्वर्ग में हूँ या नरक में,' तो उसका नरक समाप्त हो जाता है; दृश्य चेतना के स्वभाव का है।

7.192.8

नेदं दृश्यं न च द्रष्टा न सर्गो न जगन्न चित् । न जाग्रत्स्वप्नसिद्धादि किमपीदं तदप्यसत् ॥ ८ ॥

nedaṃ dṛśyaṃ na ca draṣṭā na sargo na jagann na cit | na jāgratsvapnasiddhādi kimapīdaṃ tadapyasat || 8 ||

This is not the seen, nor the seer, nor creation, nor the world, nor consciousness; nor is it anything established in the waking or dream states; all this is also unreal.

यह न दृश्य है, न द्रष्टा, न सृष्टि, न जगत्, न चेतना; न ही यह जाग्रत् या स्वप्न अवस्था में स्थापित कोई भी चीज है; यह सब कुछ असत् है।

7.192.9

कुतोऽस्याः संभवो भ्रान्तेरिति चेद्दृश्यते मुने । तदेतदपि नो युक्तं भ्रान्त्यभावानुभूतितः ॥ ९ ॥

kuto'syāḥ saṃbhavo bhrānteriti ceddṛśyate mune | tadetadapi no yuktaṃ bhrāntyabhāvānubhūtitḥ || 9 ||

If it is said, 'How can there be the occurrence of delusion?' O sage, then this too is not appropriate, due to the experience of the absence of delusion.

यदि कहा जाता है, 'भ्रांति का होना कैसे हो सकता है?' हे मुनि, तो यह भी उचित नहीं है, भ्रांति के अभाव के अनुभव के कारण।

7.192.10

भ्रान्तिर्न संभवत्येव निर्विकारे ज्ञतापदे । यत्त्विदं भ्रान्तिताज्ञानं तत्तदेवेतरन्न तत् ॥ १० ॥

bhrāntirna saṃbhavatyeva nirvikāre jñatāpade | yattvidaṃ bhrāntitājñānaṃ tattadevetaranna tat || 10 ||

Delusion cannot indeed occur in the unchanging knower. That which is known as delusion is indeed that itself, not something else.

भ्रांति निश्चय ही अपरिवर्तनशील ज्ञाता में नहीं हो सकती। जो भ्रांति के रूप में जाना जाता है, वह वही है, कोई और नहीं।

7.192.11

निरन्तरे निराद्यन्ते व्योम्नि शैलोदरेऽथवा । कुतोऽन्यताकल्पकं स्याज्ज्ञपदे चाविकारिणि ॥ ११ ॥

nirantare nirādyante vyomni śailodare'thavā | kuto'nyatākalpakaṃ syājjñapade cāvikāriṇi || 11 ||

In the endless sky or in the depths of mountains, how can there be any change in the unchanging principle of knowledge?

अनन्त आकाश या पर्वतों के गर्भ में, ज्ञान के अपरिवर्तनशील सिद्धांत में किस प्रकार कोई परिवर्तन हो सकता है?

7.192.12

मिथ्यैवानुभवो भ्रान्तेः स्वप्ने स्वमरणोपमः । यदनालोकनं नाम शाम्यतीदं विलोकनात् ॥ १२ ॥

mithyaivānubhavo bhrānteḥ svapne svamarṇopamaḥ | yadanālokanaṃ nāma śāmyatīdaṃ vilokanāt || 12 ||

The experience of illusion is false, like dreaming of one's own death. That which is not seen is pacified by seeing.

भ्रम का अनुभव मिथ्या है, जैसे स्वप्न में अपनी मृत्यु देखना। जो नहीं देखा जाता, वह देखने से शांत हो जाता है।

7.192.13

मृगतृष्णाम्बुगन्धर्वनगरद्वीन्दुविभ्रमः । तथाऽविद्याभ्रमश्चायं विचारान्नोपलभ्यते ॥ १३ ॥

mṛgatṛṣṇāmbugandharvanagaradvīnduvibhramaḥ | tathā'vidyābhraṃścāyaṃ vicārānnaopalabhyate || 13 ||

The illusion of a mirage, water in the desert, a celestial city, and a double moon, as well as the delusion of ignorance, are not perceived through inquiry.

मृगतृष्णा, मरुभूमि में पानी, दिव्य नगर, और द्वितीय चंद्रमा का भ्रम, साथ ही अज्ञान का भ्रम, विचार से नहीं देखा जाता।

7.192.14

बालवेतालवद्भ्रान्तिर्न विद्या जाग्रगापि हि । अविचारेण संरूढा विचारेणोपशाम्यति ॥ १४ ॥

bālavetālavadbhrāntirna vidyā jāgragāpi hi | avicāreṇa saṃrūḍhā vicāreṇopaśāmyati || 14 ||

The delusion, like that of a child possessed by a ghost, is not knowledge, even in the waking state. Established without inquiry, it is pacified by inquiry.

बच्चे के समान भूत से ग्रस्त भ्रम, जाग्रत अवस्था में भी ज्ञान नहीं है। विचार के बिना स्थापित, यह विचार से शांत हो जाता है।

7.192.15

कुत आसीदिति मुने नात्र प्रश्नो विराजते । सत एव विचारेण लाभो भवति नासतः ॥ १५ ॥

kuta āsīditi mune nātra praśno virājate | sat eva vicāreṇa lābho bhavati nāsataḥ || 15 ||

O sage, the question 'How did it come to be?' does not shine here. The gain comes from the inquiry into what exists, not from what does not exist.

हे मुनि, यहाँ 'यह कैसे हुआ?' प्रश्न चमकता नहीं है। लाभ उससे होता है जो है, न कि उससे जो नहीं है।

7.192.16

प्रामाणिकविचारेण प्रेक्षितं यन्न लभ्यते । तदेतदसदेवादि तत्तर्ह्यनुभवो भ्रमः ॥ १६ ॥

prāmāṇikavicāreṇa prekṣitaṃ yanna labhyate | tadetadasadevādi tattarhyanubhavo bhramaḥ || 16 ||

Whatever is not perceived through valid reasoning is indeed non-existent from the beginning; therefore, that experience is an illusion.

जो कुछ भी प्रामाणिक विचार से नहीं दिखाई देता, वह आदि से ही असत् है; इसलिए, उस अनुभव को भ्रम कहा जाता है।

7.192.17

यन्नास्तीति परिच्छिन्नं प्रमाणैः सुविचारितम् । खपुष्पशशशृङ्गाभं तत्कथं लभ्यते सतः ॥ १७ ॥

yannāstīti paricchinnnaṃ pramāṇaiḥ suvicāritam | khapuṣpaśaśaśṛṅgābhaṃ tatkathaṃ labhyate sataḥ || 17 ||

That which is determined to be non-existent through careful consideration of evidence, how can it be obtained as real, like the horns of a hare or flowers in the sky?

जो कुछ भी प्रमाणों के सुविचार से असत् पाया जाता है, वह खपुष्प (आकाश के फूल) या शशशृंग (खरगोश के सींग) की तरह वास्तविक कैसे प्राप्त हो सकता है?

7.192.18

सर्वतः प्रेक्ष्यमाणोऽपि यः कुतश्चिन्न लभ्यते । तस्य स्यात्कीदृशी सत्ता वन्ध्यातनयरूपिणः ॥ १८ ॥

sarvataḥ prekṣyamāṇo'pi yaḥ kutaścinna labhyate | tasya syātkīdṛśī sattā vandhyātanayarūpiṇaḥ || 18 ||

Even if something is seen everywhere, if it cannot be obtained from anywhere, what kind of existence does it have, like the son of a barren woman?

यदि कोई चीज़ हर जगह दिखाई देती है, लेकिन कहीं से भी प्राप्त नहीं होती, तो उसकी कैसी अस्तित्व है, जैसे वंध्या का पुत्र?

7.192.19

भ्रान्तिर्न संभवत्येव तस्मात्काचित्कदाचन । निरावरणविज्ञानघनमेवेदमाततम् ॥ १९ ॥

bhrāntirna saṃbhavatyeva tasmātkācitkadācana | nirāvaraṇavijñānaghanamevedamātatam || 19 ||

Therefore, delusion never arises at any time; this is indeed the dense, unobstructed knowledge.

इसलिए, भ्रम कभी भी उत्पन्न नहीं होता; यह वास्तव में घनीभूत, अवरोधरहित ज्ञान है।

7.192.20

यत्किंचिज्जगदद्यात्र भातीदं परमेव तत् । परं परे परापूर्णे पूर्णमेवावतिष्ठते ॥ २० ॥

yatkiṃcijjagadadyātra bhātīdaṃ parameva tat | paraṃ pare parāpūrṇe pūrṇamevāvatiṣṭhate || 20 ||

Whatever exists in this world appears as the Supreme; the Supreme, being fully complete, abides in the fully complete.

जो कुछ भी इस जगत में है, वह परम के रूप में प्रकट होता है; परम, जो पूर्णतः पूर्ण है, पूर्ण में ही निवास करता है।

7.192.21

न भातं न च नाभातमिह किंचित्कदाचन । इदमित्थं स्थितं स्वच्छं शान्तमेव जगद्वपुः ॥ २१ ॥

na bhātaṃ na ca nābhātamiha kiṃcitkadācana | idamitthaṃ sthitaṃ svacchaṃ śāntameva jagadvapuḥ || 21 ||

Neither there is appearance nor non-appearance here ever | This world is thus established, pure, and peaceful || 21 ||

यहाँ कभी भी न प्रकट होता है न अप्रकट | यह जगत् इस प्रकार स्थित है, स्वच्छ और शान्त || २१ ||

7.192.22

अजममरमहार्यमार्यजुष्टं परमविकारि निरामयं समन्तात् । पदमहमुदितं ततं हि शुद्धं निरहमनेकमथाद्वयं विकासि ॥ २२ ॥

ajamamaramahāryamāryajuṣṭaṃ paramavikāri nirāmayaṃ samantāt | padamahamuditaṃ tataṃ hi śuddhaṃ nirahamanekamathādvayaṃ vikāsi || 22 ||

The unborn, immortal, supreme, noble, praised by the noble, supremely transforming, free from disease, all-pervading | The self-arisen, pervading, pure, non-ego, non-dual, blossoming || 22 ||

अजन्मा, अमर, परम, आर्य, आर्यों द्वारा प्रशंसित, परम परिवर्तनशील, रोगमुक्त, सर्वव्यापी | स्वयं उत्पन्न, व्यापक, शुद्ध, अहंकार रहित, अद्वैत, विकसित || २२ ||

Chapter 193

7.193.1

श्रीराम उवाच । अनादिमध्यपर्यन्तं न देवा नर्षयो विदुः । यत्पदं तदिदं भाति क्व जगत्क्व च दृश्यता ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | anādimadhyaparyantaṃ na devā narṣayo viduḥ | yatpadaṃ tadidaṃ bhāti kva jagatkva ca dṛśyatā || 1 ||

Shri Rama said: Neither the gods nor the sages know the beginning, middle, or end of that which is eternal. That eternal reality is what shines here. Where is the world, and where is the perception of it?

श्री राम ने कहा: न तो देवता और न ही ऋषि अनादि, मध्य और अन्त को जानते हैं। जो अनन्त है, वही यहाँ चमकता है। दुनिया कहाँ है और उसकी दृश्यता कहाँ है?

7.193.2

द्वैताद्वैतसमुद्भेदवाक्यसंदेहविभ्रमैः । अलमस्माकमाशान्तमाद्यं रूपमनामयम् ॥ २ ॥

dvaitādvaitasamudbhedavākyasaṃdehavibhramaiḥ | alamasmākamāśāntamādyaṃ rūpamanāmayam || 2 ||

Doubts and confusions arising from the discussions on duality and non-duality are futile. Our ultimate goal is the primordial, flawless form that is eternal peace.

द्वैत और अद्वैत के विचारों से उत्पन्न संदेह और भ्रम व्यर्थ हैं। हमारा अंतिम लक्ष्य आदिम, दोषरहित शांति का रूप है।

7.193.3

व्योमनि व्योमभावानां प्रशान्तं यादृगासितम् । तादृक्चिद्व्योमनि स्फारत्रिजगद्व्योमभासनम् ॥ ३ ॥

vyomani vyomabhāvānāṃ praśāntaṃ yādṛgāsitam | tādṛkcidvyomani sphāratrijagadvyomabhāsanam || 3 ||

In the vast expanse of the sky, there is a state of tranquility as it is. Similarly, in the vast expanse of consciousness, the three worlds shine forth.

आकाश के विशाल विस्तार में, एक शांति की स्थिति है जैसी की है। इसी तरह, चेतना के विशाल विस्तार में, तीनों लोक चमकते हैं।

7.193.4

यथा व्योमनि व्योमत्वं दृषत्त्वं दृषदि स्थितम् । जलत्वं च जलस्यान्तर्जगत्त्वं चिद्घने तथा ॥ ४ ॥

yathā vyomani vyomatvaṃ dṛṣattvaṃ dṛṣadi sthitam | jalatvaṃ ca jalasyāntarjagattvaṃ ciddhane tathā || 4 ||

Just as the nature of the sky is inherent in the sky, and the nature of the seer is inherent in the seer, similarly, the nature of water is inherent in water, and the nature of the world is inherent in consciousness.

जैसे आकाश का स्वभाव आकाश में है, और देखने वाले का स्वभाव देखने वाले में है, इसी तरह, पानी का स्वभाव पानी में है, और दुनिया का स्वभाव चेतना में है।

7.193.5

साहंतादिजगद्दृश्यमाशाकाशविसार्यपि । महाचिदुदरं विद्धि खं शान्तं शून्यतोदितम् ॥ ५ ॥

sāhaṃtādijagaddṛśyamāśākāśavisāryapi | mahācidadaram viddhi khaṃ śāntaṃ śūnyatoditam || 5 ||

Know that the entire visible world, including the ego and other elements, expanded in the vast space of consciousness, is the great abode of consciousness, which is tranquil and described as emptiness.

जान लो कि पूरा दृश्य जगत, जिसमें अहंकार और अन्य तत्व शामिल हैं, चेतना के विशाल आकाश में फैला हुआ है, यह महान चेतना का निवास है, जो शांत और शून्यता के रूप में वर्णित है।

7.193.6

जीवस्यास्मिन्विमूढस्य परेऽपरिमितोदये । प्रस्फुरंश्चापि संसारपिशाच उपशाम्यति ॥ ६ ॥

jīvasyāsminvimūḍhasya pare'parimitodaye | prasphuraṃścāpi saṃsārapiśāca upaśāmyati || 6 ||

In the supreme, unlimited dawn, the deluded individual's worldly ghosts are pacified.

परम, अपरिमित उदय में, भ्रमित जीव के संसार के भूत शांत हो जाते हैं।

7.193.7

भेदोपलब्धिर्गलति व्यवहारवतोऽप्यलम् । जडस्येवाजडस्यैव वीचेरिव जलोदरे ॥ ७ ॥

bhedopalabdhirgalati vyavahāravato'pyalam | jaḍasyevājaḍasyeva vīceriva jalodare || 7 ||

The perception of difference disappears, even in worldly transactions, like the insentient and sentient in the ocean's womb.

भेद की उपलब्धि लुप्त हो जाती है, चाहे व्यवहार हो, जैसे जड़ और चेतन समुद्र के गर्भ में।

7.193.8

क्वाप्यज्ञानरवौ याते प्रतापाद्याकरे भृशम् । संसारसत्तादिवसो यात्यस्तं स निशागमः ॥ ८ ॥

kvāpyajñānaravau yāte pratāpādyākare bhṛśam | saṃsārasattādivaso yātyastaṃ sa niśāgamaḥ || 8 ||

When the roar of ignorance ceases in the intense light of knowledge, the night of worldly existence comes to an end.

जब अज्ञान का शोर ज्ञान के तीव्र प्रकाश में समाप्त हो जाता है, तब संसार की रात समाप्त हो जाती है।

7.193.9

भावाभावेषु कार्येषु जरामरणजन्मसु । ज्ञ आजवं जवीभावे तिष्ठन्नपि न तिष्ठति ॥ ९ ॥

bhāvābhāveṣu kāryeṣu jarāmaraṇajanmasu | jñā ājavam javībhāve tiṣṭhannapi na tiṣṭhati || 9 ||

In the affairs of existence and non-existence, old age, death, and birth, the wise one, though standing, does not stand.

अस्तित्व और अनस्तित्व के कार्यों में, जरा, मरण और जन्म में, ज्ञानी, खड़ा होने पर भी, खड़ा नहीं रहता।

7.193.10

नाविद्यास्ति ह न भ्रान्तिर्न दुःखं न सुखोदयः । विद्याऽविद्या सुखं दुःखमिति ब्रह्मैव निर्मलम् ॥ १० ॥

nāvidyāsti ha na bhrāntirna duḥkhaṃ na sukhodayāḥ | vidyā'vidyā sukhaṃ duḥkhamiti brahmaiva nirmalam || 10 ||

There is no ignorance, no delusion, no sorrow, no happiness. Knowledge, ignorance, happiness, and sorrow—all are the pure Brahman.

न अविद्या है, न भ्रांति है, न दुःख है, न सुख है। ज्ञान, अज्ञान, सुख, दुःख—सब शुद्ध ब्रह्म है।

7.193.11

परिज्ञातं सदेतत्तु यावद्ब्रह्मैव निर्मलम्। अपरिज्ञातमस्माकमब्रह्मात्म न विद्यते ॥ ११ ॥

parijñātaṃ sade tattu yāvadbrahmaiva nirmalam | aparijñātamasmākamabrahmaātma na vidyate || 11 ||

That which is known is the pure Brahman | That which is not known to us is not the non-Brahman self || 11 ||

जो ज्ञात है वह शुद्ध ब्रह्म है | जो हमारे लिए अज्ञात है वह अब्रह्म आत्मा नहीं है || ११ ||

7.193.12

प्रबुद्धोऽस्मि प्रशान्ता मे सर्वा एव कुदृष्टयः। शान्तं समं सोहमिदं खं पश्यामि जगत्त्रयम्॥ १२ ॥

prabuddho'smi praśāntā me sarvā eva kudṛṣṭayaḥ | śāntaṃ samaṃ sohamidaṃ khaṃ paśyāmi jagattrayam || 12 ||

I am awakened, all my wrong perceptions are calmed | I see this peaceful and equal sky as the three worlds || 12 ||

मैं जाग्रत हूँ, मेरी सभी गलत धारणाएँ शान्त हो गई हैं | मैं इस शान्त और समान आकाश को तीनों लोकों के रूप में देखता हूँ || १२ ||

7.193.13

सम्यग्ज्ञातं यावदिदं जगद्ब्रह्मैव केवलम्। अज्ञातात्माभवद्ब्रह्म ज्ञातात्मन्यधुना स्थितम्॥ १३ ॥

samyagjñātaṃ yāvadidaṃ jagadbrahmaiva kevalam | ajñātātmābhavadbrahma jñātātmanyadhunā sthitam || 13 ||

As much as this world is rightly known, it is only Brahman | The unknown self has now become the known Brahman || 13 ||

जितना यह जगत ठीक से ज्ञात है, उतना ही यह केवल ब्रह्म है | अज्ञात आत्मा अब ज्ञात ब्रह्म बन गया है || १३ ||

7.193.14

ज्ञाताज्ञातमनिर्भासं ब्रह्मैकमजरं तथा। शून्यत्वैकत्वनीलत्वरूपमेकं नभो यथा ॥ १४ ॥

jñātājñātamanirbhāsaṃ brahmaikamajaraṃ tathā | śūnyatvaikatvanīlatvarūpamekaṃ nabho yathā || 14 ||

The known and unknown, without manifestation, is the one eternal Brahman | Like the sky, it is one in emptiness, oneness, and blueness || 14 ||

ज्ञात और अज्ञात, अप्रकट, एक अजर ब्रह्म है | आकाश की तरह, यह शून्यता, एकता और नीलता में एक है || १४ ||

7.193.15

निर्वाणमासे गतशङ्कमासे निरीहमासे सुसुखेऽहमासे। यथास्थितं नित्यमनन्तमासे तदेवमासे न कथं समासे ॥ १५ ॥

nirvāṇamāse gataśaṅkamāse nirīhamāse susukhe'hamāse | yathāsthitaṃ nityamanantamāse tadevamāse na kathaṃ samāse || 15 ||

I am in Nirvana, free from doubts, free from desires, in great bliss | I am as I am, eternal and infinite, thus I am, not otherwise || 15 ||

मैं निर्वाण में हूँ, संदेह से मुक्त, इच्छा से मुक्त, महान सुख में | मैं जैसा हूँ, नित्य और अनन्त हूँ, ऐसा ही हूँ, किसी और तरह नहीं || १५ ||

7.193.16

सर्वं सदैवाहमनन्तमेकं न किंचिदेवाप्यथवातिशान्तः। सर्वं न किंचिच्च सदेकमस्मि न चास्मि चेतीयमहो नु शान्तिः ॥ १६ ॥

sarvaṃ sadaivāhamanantamekaṃ na kiṃcidevāpyathavātiśāntaḥ | sarvaṃ na kiṃcicca sadekamasmī na cāsmi cetīyamaho nu śāntiḥ || 16 ||

I am always the eternal, infinite one, not anything else, or very peaceful. I am everything and nothing, the eternal one, I am not, or this is wonderful peace.

मैं हमेशा अनन्त, एक हूँ, कुछ नहीं हूँ, या बहुत शांत हूँ | मैं सब कुछ और कुछ नहीं हूँ, एक सत्य हूँ, मैं नहीं हूँ, या यह अद्भुत शांति है ||

7.193.17

अधिगतमधिगम्यं प्राप्तमप्राप्तमन्यैगतमिदमलमस्तं वस्तुजातं समस्तम् । उदितमुदितबोधं तादृशं यत्र भूयोऽस्तमयसमुदयानां नाम नामापि नास्ति ॥ १७ ॥

adhigatamadhigamyaṃ prāptamaprāptamanyai gatamidamalamastaṃ vastujātaṃ samastam |
uditamuditabodhaṃ tādṛśaṃ yatra bhūyo'stamayasamudayānāṃ nāma nāmāpi nāsti || 17 ||

That which is attained, unattainable, obtained, unobtained, gone elsewhere, this is insignificant, the whole of existence. That which is risen, risen knowledge, such that there is no more setting or rising, not even the name of setting or rising.

जो प्राप्त है, अप्राप्य है, प्राप्त है, अप्राप्त है, कहीं और गया है, यह अप्रधान है, सम्पूर्ण अस्तित्व | जो उदित है, उदित ज्ञान है, ऐसा कि अब अस्तमय या उदय नहीं है, न तो अस्तमय या उदय का नाम ही है |

Chapter 194

7.194.1

श्रीराम उवाच सर्वात्मसर्वभावेषु येन येन यदा यदा यथा भाति स्वयंबोधस्तथानुभवति स्वयम ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca sarvātmasarvabhāveṣu yena yena yadā yadā yathā bhāti svayaṃbodhastathānubhavati svayam || 1 ||

Shri Rama said: In all beings and in all states, the self-knowledge shines in various ways at various times. Accordingly, one experiences it.

श्री राम ने कहा: सभी आत्माओं और सभी भावों में, स्वयंबोध अलग-अलग तरीकों से अलग-अलग समय पर चमकता है। इसी प्रकार, एक व्यक्ति इसे अनुभव करता है।

7.194.2

स्वभाव एव तिष्ठन्ति सर्गाः संमिलिता अपि अत्रापि स्वीकृता एव नानारत्नांशवो यथा ॥ २ ॥

svabhāva eva tiṣṭhanti sargāḥ saṃmilitā api atrāpi svīkṛtā eva nānāratnāṃśavo yathā || 2 ||

The creations remain in their own nature, even when they are merged. Here too, they are accepted as various parts of gems.

सृष्टियाँ अपने स्वभाव में रहती हैं, भले ही वे एक हो जाएँ। यहाँ भी, वे विभिन्न रत्नों के अंशों के रूप में स्वीकार किए जाते हैं।

7.194.3

अत्र दृष्टमदृष्टं च मिथो विशति गच्छति जगद्रश्मिघनं रत्नं नानारत्नघनं यथा ॥ ३ ॥

atra dṛṣṭamadṛṣṭaṃ ca mitho viśati gacchati jagadraśmighanaṃ ratnaṃ nānāratnaghanaṃ yathā || 3 ||

Here, the seen and the unseen intermingle and move like the rays of the world and gems, like various gems.

यहाँ, दृश्य और अदृश्य एक-दूसरे में मिल जाते हैं और चलते हैं, जैसे विश्व की किरणें और रत्न, विभिन्न रत्नों की तरह।

7.194.4

दीपानामिव सर्गाणां बहूनां ज्वलतां परम केषांचिदस्त्यनुभवो मिथः केषांचिदेव नो ॥ ४ ॥

dīpānāmiva sargāṇāṃ bahūnāṃ jvalatāṃ param keṣāṃcidastyanubhavo mithaḥ keṣāṃcideva no || 4 ||

Like the lamps, among the many shining creations, some have mutual experience, while others do not.

दीपों की तरह, बहुत सी चमकती सृष्टियों में से, कुछ के पास परस्पर अनुभव होता है, जबकि कुछ के पास नहीं होता।

7.194.5

अप्स्वप्स्विव रसोऽम्भोधावावर्तरमणावनौ सर्गेऽस्ति प्रत्यणुं तस्मिन्नापि सर्गास्तथा क्रमः ॥ ५ ॥

apsvapsviva raso'mbhodhāvāvartaramaṇāvanau sarge'sti pratyaṇuṃ tasminnāpi sargāstathā kramaḥ || 5 ||

Like the taste in the waters of the ocean, in creation, there is a sequence in every atom, and in that too, there are creations.

समुद्र के जल में स्वाद की तरह, सृष्टि में हर अणु में एक क्रम है, और उसमें भी सृष्टियाँ हैं।

7.194.6

सर्वत्र सर्वतो नित्यं चिद्धनस्याम्बुवेदनम् संख्यातुं केन शक्यन्ते सर्गाधारपरम्पराः ॥ ६ ॥

sarvatra sarvato nityaṃ ciddhanasyāmbuvedanam saṃkhyātuṃ kena śakyante sargādhāraparamparāḥ || 6 ||

Everywhere, always, the experience of the conscious being is like water; how can the series of creations and their supports be counted?

सर्वत्र, सर्वदा, चेतन प्राणी का अनुभव जल के समान है; सृष्टि और उसके आधारों की परम्परा कैसे गिनी जा सकती है?

7.194.7

यथावयविता भिन्ना नैवावयविनः क्वचित् शब्दभेदादृते भिन्ना न तथा सर्गता परे ॥ ७ ॥

yathāvayavitā bhinnā naivāvayavinaḥ kvacit śabdabhedādṛte bhinnā na tathā sargatā pare || 7 ||

Just as parts are different, but not the whole; similarly, the creation is not different due to the difference in words.

जैसे भाग भिन्न होते हैं, पर समूह नहीं; उसी प्रकार, शब्दों के भेद के कारण सृष्टि भिन्न नहीं होती।

7.194.8

एकस्यानन्तरूपस्य कारणाभावतः स्वयम् नोदेति न च यात्यस्तं जगदादिः स्वभावतः ॥ ८ ॥

ekasyānantarūpasya kāraṇābhāvataḥ svayam nodeti na ca yātyastaṃ jagadādiḥ svabhāvataḥ || 8 ||

The one with infinite forms, due to the lack of cause, does not arise by itself nor does it perish; the universe is eternal by nature.

अनंत रूपों वाले एक के, कारण की अनुपस्थिति के कारण, स्वयं उदय नहीं होता न ही अस्त होता है; ब्रह्मांड स्वभाव से नित्य है।

7.194.9

तपन्ती ज्ञप्तिरेवेयमकण्डज्ञेयतामिमाम् करोत्यकर्तृरूपैव समालोकमिवार्कभाः ॥ ९ ॥

tapantī jñaptireveyamakhaṇḍajñeyatāmimām karotyakartṛrūpaiva samālokamivārkabhāḥ || 9 ||

This knowledge shines, making the indivisible knowledge apparent, like the sun's rays, without being the doer.

यह ज्ञान चमकता है, अविभाज्य ज्ञान को स्पष्ट करता है, सूर्य की किरणों की तरह, कर्ता न होते हुए।

7.194.10

वैतृष्ण्यात्सर्वभावानां समाप्त्यैवाक्षयं स्वयम् संपद्यते समाधानं यत्तन्निर्वाणमुच्यते ॥ १० ॥

vaitṛṣṇyātsarvabhāvānāṃ samāptyaivākṣayaṃ svayam saṃpadyate samādhānaṃ yattannirvāṇamucyate || 10 ||

From the absence of desire for all beings, the ultimate state of peace is attained by itself, which is called Nirvana.

सभी भावों से वैराग्य के कारण, स्वयं अक्षय समाप्ति प्राप्त होती है, जिसे निर्वाण कहते हैं।

7.194.11

न बुद्ध्या बुद्ध्यते बोधो बोधाबुद्धेर्न बोध्यते न बुद्ध्यते वा तेनापि बोध्यो बोधः कथं भवेत ॥ ११ ॥

na buddhyā buddhyate bodho bodhābuddherna bodhyate na buddhyate vā tenāpi bodhyo bodhaḥ kathaṃ bhavet || 11 ||

The intellect cannot grasp enlightenment, nor can enlightenment be grasped by the intellect. How can enlightenment be understood even by that?

बुद्धि से बोध नहीं समझा जा सकता, न ही बोध बुद्धि से समझा जा सकता है। फिर भी, बोध कैसे समझा जा सकता है?

7.194.12

प्रबुद्ध एव सुप्ताभः स्वयंबोधो विबुध्यते देशकालाद्यभावेऽपि मध्याह्नेऽर्कातपो यथा ॥ १२ ॥

prabuddha eva suptābhaḥ svayaṃbodho vibudhyate deśakālādyabhāve'pi madhyāhne'rkātapo yathā || 12 ||

Even the awakened one, appearing as if asleep, awakens to self-realization. Just as the midday sun shines even without place and time.

प्रबुद्ध, जो सोया हुआ प्रतीत होता है, स्वयं को जागृत करता है। जैसे दोपहर का सूर्य स्थान और समय के बिना भी चमकता है।

7.194.13

सर्वकर्मवितृष्णानां शान्तेच्छानां प्रबोधतः सतामनिच्छतामेव निर्वाणं संप्रवर्तते ॥ १३ ॥

sarvakarmavitṛṣṇānāṃ śāntecchānāṃ prabodhataḥ satāmanicchatāmeva nirvāṇaṃ saṃpravartate || 13 ||

For those who are free from all desires for action and have a peaceful mind, enlightenment arises. For the virtuous who do not desire, nirvana manifests.

जिनकी सभी कर्मों से इच्छा समाप्त हो गई है और जिनका मन शांत है, उनके लिए प्रबोध उत्पन्न होता है। जिनकी कोई इच्छा नहीं है, उन सत्पुरुषों के लिए निर्वाण प्रकट होता है।

7.194.14

प्रबुद्धबोधो ध्यानस्थः स्वभावे केवले स्थितः न किंचिदपि गृह्णाति न किंचिदपि चोज्झति ॥ १४ ॥

prabuddhabodho dhyānasthaḥ svabhāve kevale sthitaḥ na kiṃcidapi gṛhṇāti na kiṃcidapi cojjhati || 14 ||

The awakened one, established in meditation and abiding in the pure nature, neither grasps anything nor rejects anything.

प्रबुद्ध, ध्यान में स्थित और शुद्ध स्वभाव में स्थित, न तो कुछ ग्रहण करता है न ही कुछ त्यागता है।

7.194.15

यो यथास्थित एवास्ते पश्यन्दीप इवाक्रियः अमनोमानमननो मनोमननवानपि ॥ १५ ॥

yo yathāsthita evāste paśyandīpa ivākriyaḥ amanomānamanano manomananavānapi || 15 ||

One who remains as they are, like a lamp that illuminates without action, beyond the mind, yet possessing the mind.

जो अपनी स्थिति में रहता है, जैसे दीपक जो क्रिया के बिना प्रकाशित करता है, मन से परे है, फिर भी मन का स्वामी है।

7.194.16

व्युत्थाने विश्वरूपाख्यमन्यत्र ब्रह्मसंज्ञितम् सर्गासर्गात्म चिन्मात्रं सत्यं सर्वत्र भासते ॥ १६ ॥

vyutthāne viśvarūpākhyamanyatra brahmasaṃjñitam sargāsargātma cinmātraṃ satyaṃ sarvatra bhāsate || 16 ||

In the waking state, the universe is known as Viśvarūpa; elsewhere, it is known as Brahman. The true essence of creation and dissolution is pure consciousness, which shines everywhere.

जाग्रत अवस्था में, विश्व को विश्वरूप कहा जाता है; अन्यथा, यह ब्रह्म कहलाता है। सृष्टि और प्रलय का सच्चा स्वरूप शुद्ध चेतना है, जो हर जगह चमकता है।

7.194.17

अभिन्नबोधसद्रूपस्वरूपानुभवे स्थितः व्युत्थितः सन्निरुद्धश्च यः पश्यति स शाम्यति ॥ १७ ॥

abhinnabodhasadrūpasvarūpānubhave sthitaḥ vyutthitaḥ sanniruddhaśca yaḥ paśyati sa śāmyati || 17 ||

One who remains established in the experience of the true nature of non-dual awareness, whether in the waking state, dream state, or deep sleep, attains peace.

जो अभिन्न बोध के सदृश स्वरूप के अनुभव में स्थित रहता है, चाहे वह जाग्रत अवस्था में हो, स्वप्न अवस्था में हो, या सुषुप्ति में हो, वह शान्ति प्राप्त करता है।

7.194.18

जगत्पदार्थसार्थानां बोधमात्रैकनिष्ठताम् विना नास्त्यपरा सत्ता व्योम्नः शून्येतरा यथा ॥ १८ ॥

jagatpadārthasārthānāṃ bodhamātraikaniṣṭhatām vinā nāstyaparā sattā vyomnaḥ śūnyetarā yathā || 18 ||

Without the sole devotion to pure awareness, there is no other existence for the objects of the world, just as there is nothing other than emptiness in the sky.

शुद्ध बोध की एकमात्र निष्ठा के बिना, विश्व के पदार्थों के लिए कोई अन्य अस्तित्व नहीं है, जैसे आकाश में शून्यता के अलावा कुछ नहीं है।

7.194.19

शिष्यते स्फीतबोधानां केवलानन्तबोधता सापि स्वपरिणामेन परेणायात्यवाच्यताम् ॥ १९ ॥

śiṣyate sphītabodhānāṃ kevalānantabodhatā sāpi svapariṇāmena pareṇāyātyavācyatām || 19 ||

The infinite awareness of the enlightened ones is taught. Even that, through its own transformation, attains indescribability in the supreme state.

प्रबुद्धों की अनन्त बोध शिक्षा दी जाती है। उसका अपना परिणाम होने पर, वह परम अवस्था में अवर्णनीय हो जाती है।

7.194.20

तद्विश्रान्तौ परा सत्ता शिष्यते वा न शिष्यते या काप्यत्यन्तशान्तानां न वाग्गोचरमेति सा ॥ २० ॥

tadviśrāntau parā sattā śiṣyate vā na śiṣyate yā kāpyatyantaśāntānāṃ na vāggocarameti sā || 20 ||

In that ultimate rest, the supreme existence is taught or not taught. That which is the ultimate peace of the completely peaceful ones does not come within the range of speech.

उस अन्तिम विश्राम में, परम अस्तित्व शिक्षा दी जाती है या नहीं दी जाती। जो पूर्ण शान्त लोगों की अन्तिम शान्ति है, वह वाणी की पहुंच से बाहर है।

7.194.21

या समस्य पराकाष्ठा सैव बोधस्य सन्मयी सर्गस्तन्मय एवातः सकलं शान्तमव्ययम् ॥ २१ ॥

yā samasya parākāṣṭhā saiva bodhasya sanmayī sargastanmaya evātaḥ sakalaṃ śāntamavyayam || 21 ||

That which is the ultimate reality, the very essence of consciousness, is the source of all creation. Everything is peaceful and eternal.

जो परम सत्य है, चेतना का सार है, वही सब सृष्टि का स्रोत है। सब कुछ शांत और अव्यय है।

7.194.22

निर्वाणाय वितृष्णाय स्वच्छशीतलसंविदे स्पृहयन्ति सदा सत्तां ब्रह्मविष्णुहरा अपि ॥ २२ ॥

nirvāṇāya vitṛṣṇāya svacchaśītalasaṃvide spṛhayanti sadā sattāṃ brahmaviṣṇuharā api || 22 ||

Even the gods Brahma, Vishnu, and Shiva aspire for the pure, cool, and tranquil state of Nirvana, which is free from desires.

ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी निर्वाण की पूर्ण, शीतल और शांत अवस्था की इच्छा करते हैं, जो इच्छाओं से मुक्त है।

7.194.23

सर्वार्थात्मैव सर्वत्र सर्वदा सर्वथोदितम् चेतनं शुद्धमेवास्ति नाशो नास्योपपद्यते ॥ २३ ॥

sarvārthātmaiva sarvatra sarvadā sarvathoditam cetanaṃ śuddhamevāsti nāśo nāsyopapadyate || 23 ||

The pure consciousness, which is the essence of all things, is present everywhere and at all times. It cannot be destroyed or diminished.

जो पूर्ण चेतना है, वह सब कुछ का सार है, सब जगह और सब समय में उपस्थित है। इसका नाश या कमी नहीं हो सकती।

7.194.24

अत्यन्ततप्तः संसारो निर्वाणमतिशीतलम् अतिशीतलमेवास्ति तप्तस्त्वेव न विद्यते ॥ २४ ॥

atyantataptaḥ saṃsāro nirvāṇamatiśītalam atiśītalamevāsti taptastveva na vidyate || 24 ||

The world is extremely heated, but Nirvana is extremely cool. Only the coolness of Nirvana exists; the heat of the world does not.

संसार अत्यंत गर्म है, पर निर्वाण अत्यंत शीतल है। केवल निर्वाण की शीतलता है; संसार की गर्मी नहीं है।

7.194.25

संचेतन्ति शिलान्तस्था यथालं शालभञ्जिकाः अनुत्कीर्णास्तथा ब्रह्म चेततीदमखण्डितम् ॥ २५ ॥

saṃcetanti śilāntasthā yathālaṃ śālabhañjikāḥ anutkīrṇāstathā brahma cetatīdamakhaṇḍitam || 25 ||

Just as the rice grains within the husk are aware of their own existence, so too is Brahman, the unbroken consciousness, aware of its own existence.

जैसे चावल के भूसे में चावल के दाने अपने अस्तित्व को जानते हैं, वैसे ही ब्रह्म, अखंडित चेतना, अपने अस्तित्व को जानता है।

7.194.26

यथा चेतति सौम्याम्बुकोशस्थं वीचिमण्डलम् तथा चेतति कोशस्य महाचिच्चेत्यमव्ययम् ॥ २६ ॥

yathā cetati saumyāmbukośasthaṃ vīcimaṇḍalam tathā cetati kośasya mahāciccetyamavyayam || 26 ||

Just as the mind perceives the circle of waves in the calm ocean, similarly, it perceives the imperishable great consciousness within the sheath.

जैसे मन शांत समुद्र में लहरों के चक्र को देखता है, वैसे ही यह अविनाशी महाचेतना को कोश में देखता है।

7.194.27

अविभक्तो विभागस्थैरिव शान्तैरनन्तकैः परमार्थाम्बराभोगैस्त्वबोधात्मत्वमन्थरैः ॥ २७ ॥

avibhakto vibhāgasthairiva śāntairanantakaiḥ paramārthāmbarābhogaistvabodhātmatvamantharaiḥ || 27 ||

Undivided, it is as if divided by the peaceful and infinite enjoyments of the ultimate reality, which are the essence of self-awareness.

अविभाजित, यह शांत और अनंत परमार्थ के आनंदों द्वारा विभाजित होने के समान है, जो आत्म-चेतना का सार हैं।

7.194.28

यैर्यैरथास्व आत्मान्तर्भावितश्चेतितश्चिरम् भोगमोक्षप्रभेदेषु तेषां तेषां तथोदितः ॥ २८ ॥

yairyairyathāsva ātmāntarbhāvitaścetitaściram bhogamokṣaprabhedeṣu teṣāṃ teṣāṃ tathoditaḥ || 28 ||

By whichever means the self is perceived as internalized and conscious for a long time, in the distinctions of enjoyment and liberation, it is thus described for each of them.

जिन-जिन साधनों से आत्मा अंतर्भावित और चेतन के रूप में लंबे समय तक देखी जाती है, भोग और मोक्ष के भेदों में, उन-उन के लिए वह ऐसे ही वर्णित है।

7.194.29

मृते वाप्यमृते बन्धौ स्वप्ने स्वप्नविबोधिनः न यथोदेति सत्याख्या तथा दृश्येषु तद्विदः ॥ २९ ॥

mṛte vāpyamṛte bandhau svapne svapnavibodhinaḥ na yathodeti satyākhyā tathā dṛśyeṣu tadvidaḥ || 29 ||

Whether in death or in bondage, in dream or in awakening from dream, the truth does not appear as it is known to the knowers of that truth in the visible world.

चाहे मृत्यु हो या बंधन, स्वप्न हो या स्वप्न से जागरण, सत्य वहाँ ऐसे नहीं प्रकट होता जैसे उस सत्य के ज्ञाताओं को दृश्य जगत में ज्ञात होता है।

7.194.30

यदिदं किल दृश्यादि तच्छान्तमखिलं शिवम् भावितेऽवगतेऽष्यन्तीरति भ्रान्तेः क उद्भवः ॥ ३० ॥

yadidaṃ kila dṛśyādi tacchāntamakhilaṃ śivam bhāvite'vagate'ṣyantīrati bhrānteḥ ka udbhavaḥ || 30 ||

Whatever is seen here is indeed peaceful and entirely auspicious. When it is contemplated and understood, there is no arising of delusion.

जो कुछ भी यहाँ दिखाई देता है, वह शांत और पूर्णतः कल्याणकारी है। जब यह ध्यान और समझ में आता है, तो भ्रम का उदय नहीं होता।

7.194.31

सर्वथा देहसंख्येषु वैतृष्ण्यमुपजायते सम्यग्बोधे सति स्वप्न इवापि स्वार्थकादिषु ॥ ३१ ॥

sarvathā dehasaṃkhyeṣu vaitṛṣṇyamupajāyate samyagbodhe sati svapna ivāpi svārthakādiṣu || 31 ||

In all bodily conditions, dispassion arises when there is true knowledge, just like a dream.

सभी शरीर की स्थितियों में, जब सच्चा ज्ञान होता है, तब वैराग्य उत्पन्न होता है, मानो स्वप्न हो।

7.194.32

वैतृष्णावृद्धेते बोधो बोधाद्वैतृष्ण्यवर्धनम् परस्परेण प्रकटे एते कुड्यप्रकाशवत् ॥ ३२ ॥

vaitṛṣṇāvṛdhete bodho bodhādvaitṛṣṇyavardhanam parasparеṇa prakaṭe ete kuḍyaprakāśavat || 32 ||

Dispassion grows with knowledge, and knowledge increases with dispassion. They manifest mutually, like the light and the wall.

वैराग्य ज्ञान के साथ बढ़ता है, और ज्ञान वैराग्य के साथ बढ़ता है। वे परस्पर एक दूसरे को प्रकट करते हैं, जैसे दीवार और प्रकाश।

7.194.33

येन बोधेन वैतृष्ण्यं धनदारसुतादि वा स्वनूनमपि संपन्नं जाड्यं तत्संस्थितं तथा ॥ ३३ ॥

yena bodhena vaitṛṣṇyaṃ dhanadārasutādi vā svanūnamapi saṃpannaṃ jāḍyaṃ tatsaṃsthitaṃ tathā || 33 ||

By the knowledge that brings dispassion, even the attainment of wealth, wife, children, etc., is considered dull.

ज्ञान जो वैराग्य लाता है, उसके द्वारा धन, पत्नी, बच्चे आदि की प्राप्ति भी मूर्खतापूर्ण मानी जाती है।

7.194.34

एतावदेव बोधस्य बोधत्वं यद्वितृष्णता पाण्डित्यं नाम तन्मौर्ख्य यत्र नास्ति वितृष्णता ॥ ३४ ॥

etāvadeva bodhasya bodhatvaṃ yadvitṛṣṇatā pāṇḍityaṃ nāma tanmaurkhya yatra nāsti vitṛṣṇatā || 34 ||

The essence of knowledge is dispassion. What is called scholarship is foolishness where there is no dispassion.

ज्ञान की सार वैराग्य है। जहाँ वैराग्य नहीं है, वहाँ विद्वता कहलाने वाली चीज मूर्खता है।

7.194.35

न तु वैतृष्ण्यवोधाड्यौ न परस्परवर्धितौ असत्यावेव तौ नाम नष्टौ चित्रहुताशवत् ॥ ३५ ॥

na tu vaitṛṣṇyavodhāḍhyau na parasparavardhitau asatyāveva tau nāma naṣṭau citrahutāśavat || 35 ||

Dispassion and knowledge are not two separate entities, nor do they increase each other. They are merely names, and they perish like the sacrificial fire and its smoke.

वैराग्य और ज्ञान दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं, न ही वे एक दूसरे को बढ़ाते हैं। वे केवल नाम हैं, और वे यज्ञ की अग्नि और उसके धुएँ की तरह नष्ट हो जाते हैं।

7.194.36

परमा बोधवैतृष्ण्यसंपत्तिर्मोक्ष उच्यते तत्रानन्ते पदे शान्ते वसता च नशोच्यते ॥ ३६ ॥

paramā bodhavaitṛṣṇyasaṃpattirmokṣa ucyate tatrānante pade śānte vasatā ca naśocyate || 36 ||

The ultimate attainment of knowledge and freedom from desire is called liberation. One who abides in that infinite, peaceful state is not to be grieved for.

परम ज्ञान और वैराग्य की प्राप्ति को मोक्ष कहते हैं। जो उस अनन्त, शान्त पद में निवास करता है, उसके लिए शोक नहीं करना चाहिए।

7.194.37

गतं गम्यं कृतं कायं दृष्टं दृश्यमशेषतः यावत्सर्वे शिवं शान्तमेकमाद्यमनामयम ॥ ३७ ॥

gataṃ gamyaṃ kṛtaṃ kāyaṃ dṛṣṭaṃ dṛśyamaśeṣataḥ yāvatsarve śivaṃ śāntamekamādyamanāmayam || 37 ||

That which has been attained, that which is to be attained, that which has been done, that which is to be done, that which has been seen, and that which is to be seen—all these are the one, eternal, peaceful, and blissful Śiva.

जो प्राप्त हुआ है, जो प्राप्त होना है, जो किया हुआ है, जो करना है, जो देखा हुआ है, और जो देखना है—ये सभी एक, अनादि, शान्त, और आनंदमय शिव हैं।

7.194.38

आत्मारामस्य शान्तस्य वैतृष्ण्यस्यानहकृतेः असंकल्प एव भवति स्थितिः स्वस्यैव निर्मला ॥ ३८ ॥

ātmārāmasya śāntasya vaitṛṣṇyasyānahakṛteḥ asaṃkalpaiva bhavati sthitiḥ svasyeva nirmalā || 38 ||

For the one who delights in the Self, who is peaceful, free from desire, and without ego, the natural state is pure and free from any mental constructs.

जो आत्मा में आनंद लेता है, जो शान्त है, वैराग्य से युक्त है, और अहंकार से मुक्त है, उसकी स्वाभाविक अवस्था शुद्ध और मानसिक निर्माणों से मुक्त होती है।

7.194.39

सहस्रेभ्यः सहस्रेभ्यः कश्चिदुत्थाय वीर्यवान् भिनत्ति वासनाजालं पञ्जरं केसरी यथा ॥ ३९ ॥

sahasrebhyaḥ sahasrebhyaḥ kaścidutthāya vīryavān bhinatti vāsanājālaṃ pañjaraṃ kesarī yathā || 39 ||

Out of thousands, one heroic individual rises and breaks the web of desires, like a lion breaking out of a cage.

हजारों में से एक वीर व्यक्ति उठता है और इच्छाओं के जाल को तोड़ देता है, जैसे सिंह पिंजड़े से बाहर निकलता है।

7.194.40

प्राप्तज्योतिर्बोधशुद्धिः परमन्तःप्रकाशवान् नीहारः शरदीवाशु स्वयमेवोपशाम्यति ॥ ४० ॥

prāptajyotirbodhaśuddhiḥ paramantaḥprakāśavān nīhāraḥ śaradīvāśu svayamevopaśāmyati || 40 ||

Having attained the light of knowledge and purity of understanding, one who is illuminated from within, like the autumn mist, quickly dissipates on its own.

ज्ञान के प्रकाश और समझ की शुद्धता प्राप्त करने वाला, जो अंतर से प्रकाशित है, वह शरद ऋतु की धुंध की तरह, अपने आप शीघ्र ही विलीन हो जाता है।

7.194.41

ज्ञातज्ञेयस्त्वसंकल्पः संकल्पातिशयाशयः अवासनो व्यवहृतौ वातवत्स्पन्दते न वा ॥ ४१ ॥

jñātajñeyastvasaṃkalpaḥ saṃkalpātiśayāśayaḥ avāsano vyavahṛtau vātavatspandate na vā || 41 ||

The knower and the known are mere mental constructs; the mind, with its excessive desires, fluctuates in its activities like the wind, or it does not.

ज्ञाता और ज्ञेय मात्र मानसिक निर्माण हैं; मन, अपनी अतिशय इच्छाओं के साथ, हवा की तरह अपनी गतिविधियों में झूमता है, या नहीं झूमता।

7.194.42

आसीद्धीरान्मनस्कारैर्भ्रान्तिमात्रैकनिश्चयात् यः सर्वत्र खवद्भावस्तदवासनमासितम् ॥ ४२ ॥

āsīddhīrānmanaskārairbhrāntimātraikaniścayāt yaḥ sarvatra khavadbhāvastadavāsanamāsitam || 42 ||

Due to the firm conviction of mere delusion arising from mental impressions, there is a sense of existence everywhere; that is called avāsana.

मानसिक संस्कारों से उत्पन्न मात्र भ्रांति के दृढ़ विश्वास के कारण, हर जगह अस्तित्व का एहसास होता है; यह अवासन कहलाता है।

7.194.43

निर्वासने भाव उदारसत्त्वे ब्रह्माखिलं दृश्यमिति प्रबुद्धे स्थिरैकनिर्वाणमतावनन्तो मोक्षाभिधानः प्रशमोऽभ्युदेति ॥ ४३ ॥

nirvāsane bhāva udārasattve brahmākhilaṃ dṛśyamiti prabuddhe sthiraikanirvāṇamatāvananto mokṣābhidhānaḥ praśamo'bhyudeti || 43 ||

In the absence of avāsana, with a noble disposition, everything is seen as Brahman; in the awakened one, there is a steady and unwavering state of nirvāṇa, which is the ultimate liberation and tranquility.

अवासन की अनुपस्थिति में, उदार स्वभाव के साथ, सब कुछ ब्रह्म के रूप में दिखाई देता है; जाग्रत व्यक्ति में, एक स्थिर और अटल निर्वाण की स्थिति होती है, जो परम मुक्ति और शांति है।

Chapter 195

7.195.1

श्रीवसिष्ठ उवाच अहो नु संप्रबुद्धोऽसि राघवाघविघातिनी वागियं तव संपन्ना प्रबुद्धेष्ववहासिनी ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca aho nu saṃprabuddho'si rāghavāghavighātinī vāgiyaṃ tava saṃpannā prabuddheṣvavahāsinī || 1 ||

Śrī Vasiṣṭha said: Ah, you are truly awakened, O slayer of Rāghava's enemies! Your speech is perfect and causes laughter among the awakened.

श्री वसिष्ठ ने कहा: अहो, तुम सचमुच जागृत हो, हे राघव के शत्रुओं की हत्यारे! तुम्हारी वाणी पूर्ण है और जागृतों में हास्य उत्पन्न करती है।

7.195.2

विभातीवासदेवदमसंकल्पेन शाम्यति एतच्छान्तिस्तु निर्वाणमित्येव परमार्थता ॥ २ ॥

vibhātīvāsadevedamasaṃkalpena śāmyati etacchāntistu nirvāṇamityeva paramārthatā || 2 ||

This shines as the abode of the divine and is pacified without any conceptualization. This peace is indeed the ultimate truth of Nirvana.

यह दिव्य निवास के रूप में चमकता है और किसी भी कल्पना के बिना शांत होता है। यह शांति वास्तव में निर्वाण की परम सत्यता है।

7.195.3

कल्पनाकल्पने रूपं परस्यैवेतरस्य नो स्पन्दनास्पन्दने वायोर्यथा नात्रैकताद्विते ॥ ३ ॥

kalpanākalpane rūpaṃ parasyaivetarasya no spandanāspandane vāyoryathā nātraikatādvite || 3 ||

The form of conceptualization and non-conceptualization belongs to the Supreme alone, not to anything else. Like the movement and stillness of the wind, there is no duality here.

कल्पना और अकल्पना का रूप केवल परमात्मा का है, किसी और का नहीं। हवा की गति और स्थिरता की तरह, यहाँ कोई द्वैत नहीं है।

7.195.4

प्रबुद्धस्यैव या पुंसः शिलाजटहरवत्स्थितिः शान्तौ व्यवहृतौ वापि सामला मुक्ततोच्यते ॥ ४ ॥

prabuddhasyaiva yā puṃsaḥ śilājaṭharavatsthitiḥ śāntau vyavahṛtau vāpi sāmalā muktatocyate || 4 ||

The state of the awakened person, which is like a stone or a piece of wood, whether in peace or in activity, is said to be pure liberation.

जागृत व्यक्ति की अवस्था, जो पत्थर या लकड़ी के समान होती है, चाहे शांति में हो या गतिविधि में, वह शुद्ध मुक्ति कहलाती है।

7.195.5

वयमस्मिन्पदे स्थित्वा राघवाघविघातिनि शान्तत्वे व्यवहारे च सममित्थमवस्थिताः ॥ ५ ॥

vayamasminpade sthitvā rāghavāghavighātini śāntatve vyavahāre ca samamitthamavasthitāḥ || 5 ||

We, abiding in this state, O slayer of Rāghava's enemies, are equally established in peace and activity.

हम, इस अवस्था में रहते हुए, हे राघव के शत्रुओं की हत्यारे, शांति और गतिविधि में समान रूप से स्थित हैं।

7.195.6

अस्मिन्नेव पदे नित्यं ब्रह्मविष्णुहरादयः तिष्ठन्ति व्यवहारस्था अपि शान्ता ज्ञरूपिणः ॥ ६ ॥

asminneva pade nityaṃ brahmaviṣṇuharādayaḥ tiṣṭhanti vyavahārasthā api śāntā jñarūpiṇaḥ || 6 ||

In this very state, Brahma, Vishnu, Shiva, and others always abide, engaged in worldly activities, yet peaceful and in the form of knowledge.

इसी पद में ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि सदा विराजमान रहते हैं, व्यवहार में लगे हुए भी शांत और ज्ञान रूप में।

7.195.7

शैलोदरस्थितिमतां प्रबुद्धानामनामयमस्माकं पदमेवं तदालभ्यैतदिहोष्यताम ॥ ७ ॥

śailodarasthitimatāṃ prabuddhānāmanāmayamasmākaṃ padamevaṃ tadālabhyaitadihoṣyatām || 7 ||

May we attain that state of the enlightened ones, which is free from disease and situated in the heart of the mountain, and may it be realized here.

हम उस रोगमुक्त और पर्वत के हृदय में स्थित प्रबुद्धों की अवस्था को प्राप्त करें, और यह यहाँ साकार हो।

7.195.8

श्रीराम उवाच ब्रह्मण्येवमसद्रूपमनुत्पन्नमभासुरमनारम्भमनाकारमेवेदं भासते जगत् ॥ ८ ॥

śrīrāma uvāca brahmaṇyevamasadrūpamanutpannamabhāsuramanārambhamanākārameveda ṃ bhāsate jagat || 8 ||

Sri Rama said: This world appears as if it is unreal, unborn, non-luminous, without beginning, and without form in Brahman.

श्री राम ने कहा: यह जगत ब्रह्म में ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह असत्य, अजन्मा, अप्रकाशमान, अनादि और निराकार है।

7.195.9

मृगतृष्णाम्बुसदृशं तरङ्गावर्तिवारिवत् रुचकादीव कनके स्वप्नसंकल्पशैलवत् ॥ ९ ॥

mṛgatṛṣṇāmbusadṛśaṃ taraṅgāvartivārivat rucakādīva kanake svapnasaṃkalpaśailavat || 9 ||

This world is like the mirage water, like the whirlpool in the water, like the beauty in gold, and like the mountain in a dream.

यह जगत मृगतृष्णा के जल के समान, जल में भँवर के समान, स्वर्ण में सौंदर्य के समान, और स्वप्न में पर्वत के समान है।

7.195.10

श्रीवसिष्ठ उवाच बुद्धवानसि चेद्राम तत्स्वबोधविवृद्धये कुरु संशयविच्छेदं पृच्छतः प्रच्छकस्य मे ॥ १० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca buddhavānasi cedrāma tatsvabodhavivṛddhaye kuru saṃśayavicchedaṃ pṛcchataḥ pracchakasya me || 10 ||

Sri Vasistha said: O Rama, if you are wise, then for the growth of your self-knowledge, remove the doubts of the one who is asking questions.

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे राम, यदि तुम बुद्धिमान हो, तो अपने आत्मज्ञान के विकास के लिए, प्रश्न पूछने वाले के संदेहों को दूर करो।

7.195.11

इत्थं नित्यानुभूतोऽपि शिरस्थोऽप्यतिभासुरः जगदाख्योऽयमाभासः कथं नाम न विद्यते ॥ ११ ॥

itthaṃ nityānubhūto'pi śirastho'pyatibhāsuraḥ jagadākhyo'yamābhāsaḥ kathaṃ nāma na vidyate || 11 ||

Even though this world-appearance is constantly experienced and is very brilliant, how can it be said not to exist?

यह जगत् का आभास निरंतर अनुभव किया जाता है और बहुत चमकीला है, फिर भी इसे असत् कैसे कहा जा सकता है?

7.195.12

श्रीराम उवाच पूर्वमेवदमुत्पन्नं न किंचन कदाचन तेन वन्ध्यासुतस्यास्य न सत्ता कल्पनादृते ॥ १२ ॥

śrīrāma uvāca pūrvamevedamutpannaṃ na kiṃcana kadācana tena vandhyāsutasyāsya na sattā kalpanādṛte || 12 ||

Sri Rama said: This was already born in the past, nothing ever. Therefore, this barren woman's son has no existence except in imagination.

श्री राम ने कहा: यह पहले ही उत्पन्न हो चुका था, कभी कुछ नहीं। इसलिए, इस बंझ के पुत्र का कोई अस्तित्व नहीं है, कल्पना के अलावा।

7.195.13

किमिवास्या जगद्भ्रान्तेः कारणं प्रोत्थिता यतः न कारणं विना कार्यं किंचित्संभवति क्वचित् ॥ १३ ॥

kimivāsyā jagadbhrānteḥ kāraṇaṃ protthitā yataḥ na kāraṇaṃ vinā kāryaṃ kiṃcitsaṃbhavati kvacit || 13 ||

What is the cause of this world-delusion that has arisen? For without a cause, no effect can come into being anywhere.

इस जगत् के भ्रम का कारण क्या है जो उत्पन्न हुआ है? क्योंकि कारण के बिना कोई परिणाम कहीं भी नहीं हो सकता।

7.195.14

न चाविकारमजरं सविकारं क्षयादृते कारणं क्वचिदेवेह किंचिद्भवितुमर्हति ॥ १४ ॥

na cāvikāramajaraṃ savikāraṃ kṣayādṛte kāraṇaṃ kvacideveha kiṃcitsaṃbhavati kvacit || 14 ||

Nothing that is changeless and eternal can have a cause, except for decay. No cause can bring anything into being anywhere.

जो परिवर्तनरहित और अजर है, उसका कोई कारण नहीं हो सकता, क्षय के अलावा। कोई कारण कहीं भी किसी चीज को होने में सक्षम नहीं है।

7.195.15

ब्रह्मैवेदमनाख्यात्म कारणं प्रविजृम्भते तत्क्व कस्य कथं नाम जगच्छब्दार्थसंविदः ॥ १५ ॥

brahmaivedamanākhyātma kāraṇaṃ pravijṛmbhate tatkva kasya kathaṃ nāma jagacchabdārthasaṃvidaḥ || 15 ||

Brahman alone is the uncaused cause that manifests. Then, how can the world, which is the meaning of the word, be known?

ब्रह्म ही अकारण कारण है जो प्रकट होता है। फिर, शब्द का अर्थ जो जगत् है, वह कैसे ज्ञात हो सकता है?

7.195.16

तदनाख्ये पदे शान्ते चिरात्प्रथमचेतनम् कञ्चित्काललवं तिष्ठत्यातिवाहिकदेहभृत् ॥ १६ ॥

tadanākhye pade śānte cirātprathamacetanam kaṃcitkālalavaṃ tiṣṭhatyātivāhikadehabhṛt || 16 ||

In that state of tranquility, the being remains for a short while, having regained consciousness after a long time, bearing an extremely swift body.

उस शान्त अवस्था में, जीव लंबे समय के बाद चेतना प्राप्त करने के बाद थोड़े समय के लिए रहता है, एक अत्यंत तीव्र शरीर धारण करते हुए।

7.195.17

क्षणे वत्सरसंवित्तिं स्वप्ने त्वमिव चेतति काकतालीयवत्तत्र चन्द्रार्कादींश्च पश्यति ॥ १७ ॥

kṣaṇe vatsarasaṃvittiṃ svapne tvamiva cetati kākatālīyavattatra candrārkādīṃśca paśyati || 17 ||

In an instant, one experiences the awareness of a year, as if in a dream, one thinks 'it is me,' and there, like the crow and the palm tree, one sees the moon, sun, and other celestial bodies.

एक क्षण में, एक वर्ष की चेतना अनुभव करता है, जैसे स्वप्न में, एक सोचता है 'यह मैं हूँ,' और वहाँ, कौए और ताड़ की तरह, एक चंद्रमा, सूर्य और अन्य खगोलीय पिंडों को देखता है।

7.195.18

संकल्पैकात्मनस्तस्य देशकालक्रियान्वितम् अत्यन्तमेव व्योम्न्येव भुवनं भासते स्वयम् ॥ १८ ॥

saṃkalpaikātmanastasya deśakālakriyānvitam atyantameva vyomnyeva bhuvanaṃ bhāsate svayam || 18 ||

For that being whose essence is a single resolve, the world shines forth in the vast sky, endowed with space, time, and action, extremely so.

उस जीव के लिए जिसका सार एक एकमात्र संकल्प है, विश्व अंतरिक्ष में चमकता है, स्थान, समय और क्रिया से युक्त, अत्यंत ही।

7.195.19

तस्मिन्मिथ्योपसंपन्ने स मिथ्यापुरुषस्ततः मिथ्यैव तत्समाचारं कुर्वन्विपरिवर्तते ॥ १९ ॥

tasminmithyopasaṃpanne sa mithyāpuruṣastataḥ mithyaiva tatsamācāraṃ kurvanviparivartate || 19 ||

In that illusory state, that illusory person then acts in an illusory manner, behaving falsely and undergoing transformation.

उस भ्रामक अवस्था में, वह भ्रामक व्यक्ति फिर भ्रामक तरीके से कार्य करता है, झूठे तरीके से व्यवहार करते हुए और परिवर्तन के दौर से गुजरता है।

7.195.20

अधस्तादूर्ध्वमायाति पुनरूर्ध्वाद्व्रजत्यधः कल्पितानन्तसंभारपदार्थानर्थसंभ्रमः ॥ २० ॥

adhastādūrdhvamāyāti punarūrdhvādbrajatyadhaḥ kalpitānantasaṃbhārapadārthānarthasaṃbhramaḥ || 20 ||

It goes downwards from above and again goes upwards from below, a confusion of imagined infinite objects.

यह ऊपर से नीचे जाता है और फिर नीचे से ऊपर जाता है, कल्पित अनंत वस्तुओं का भ्रम।

7.195.21

काकतालीयवत्तस्य संकल्पस्य भवेद्यदि यद्यथा तत्तथाद्यापि सुस्थिरामात्तवान्स्थितिम् ॥ २१ ॥

kākatālīyavattasya saṃkalpasya bhavedyadi yadyathā tattathādyāpi susthirāmāttavānsthitim || 21 ||

If the imagination of the crow and the palm fruit were to be true, then it would remain steadfast as it is even now.

अगर कौए और ताड़ के फल की कल्पना सच होती, तो वह अभी भी उसी तरह स्थिर रहती।

7.195.22

शिला वन्ध्यासुतमुखे व्योमचूर्णेन रञ्जनम् करोतीत्यादिवदिदं मिथ्या जगदुपस्थितम् ॥ २२ ॥

śilā vandhyāsutamukhe vyomacūrṇena rañjanam karotītyādivadidaṃ mithyā jagadupasthitam || 22 ||

Just as a barren woman's son is an illusion, so is this world an illusion.

जैसे एक वंध्या महिला का बेटा एक भ्रम है, वैसे ही यह दुनिया एक भ्रम है।

7.195.23

सत्यमेवेदमथवा मिथ्यात्वं तु कुतः किल न मिथ्यात्वं न सत्यत्वं किमपीदमजं ततम् ॥ २३ ॥

satyamevedamathavā mithyātvaṃ tu kutaḥ kila na mithyātvaṃ na satyatvaṃ kimapīdamajaṃ tatam || 23 ||

Is this real or is it an illusion? From where does the illusion come? It is neither an illusion nor real; it is something beyond both.

यह वास्तविक है या भ्रम है? भ्रम कहाँ से आता है? यह न तो भ्रम है न ही वास्तविक है; यह दोनों से परे कुछ है।

7.195.24

आकाशकोशवत्स्वच्छं शिलाजटहरवद्धनम् पाषाणमौनवच्चेदं शान्तमेवाक्षयं जगत् ॥ २४ ॥

ākāśakośavatsvacchaṃ śilājaṭharavaddhanam pāṣāṇamaunavaccedaṃ śāntamevākṣayaṃ jagat || 24 ||

Like the clear sky, like the wealth hidden in a stone, like the silence of a stone, this world is peaceful and eternal.

जैसे स्वच्छ आकाश, जैसे पत्थर में छिपा धन, जैसे पत्थर की खामोशी, वैसे ही यह दुनिया शांत और अक्षय है।

7.195.25

चिन्मात्रसर्वसंकल्पे विराडात्मातिवाहिके देहे संवेदनं व्योम जगदित्यवभासते ॥ २५ ॥

cinmātrasarvasaṃkalpe virāḍātmātivāhike dehe saṃvedanaṃ vyoma jagadityavabhāsate || 25 ||

In the pure consciousness that encompasses all imaginations, the cosmic self that transcends the body, the awareness is like the sky, and the world appears as such.

पूर्ण चेतना में, जो सभी कल्पनाओं को समेटे हुए है, विराट् आत्मा जो शरीर से परे है, चेतना आकाश की तरह है, और दुनिया ऐसी दिखाई देती है।

7.195.26

एवं ब्रह्म महाकाशमेवेदं क्व जगत्कथा शान्तं समसमाभोगमेकमाद्यन्तवर्जितम ॥ २६ ॥

evaṃ brahma mahākāśamevedaṃ kva jagatkathā śāntaṃ samasamābhogamekamādyantavarjitam || 26 ||

Thus, this universe is indeed the vast Brahman, the supreme space. Where is the world's story? It is peaceful, equal, and uniform enjoyment, one without beginning or end.

इस प्रकार, यह ब्रह्मांड वास्तव में विशाल ब्रह्म है, परम आकाश। दुनिया की कहानी कहाँ है? यह शांत, समान और एकरूप आनंद है, जिसका न आदि है न अंत।

7.195.27

यथा पयसि वीचीनामुन्मज्जननिमज्जनैः न जलान्यत्वमेवं हि भावाभावैः परैः परे ॥ २७ ॥

yathā payasi vīcīnāmunmajjananimajjanaiḥ na jalānyatvamevaṃ hi bhāvābhāvaiḥ paraiḥ pare || 27 ||

Just as waves arise and subside in water, they do not become different from water. Similarly, entities and non-entities do not become different from the supreme reality.

जैसे पानी में लहरें उठती और गिरती हैं, वे पानी से अलग नहीं होतीं। इसी प्रकार, वस्तुएँ और अवस्तुएँ परम वास्तविकता से अलग नहीं होतीं।

7.195.28

परावरविदः केचिदेतस्मिन्परमे पदे शुद्धे परिणमन्त्यन्तर्वारिबिन्दुरिवाम्भसि ॥ २८ ॥

parāvaravidaḥ kecidetasminparame pade śuddhe pariṇamantyantarvāribindurivāmbhasi || 28 ||

Some knowers of the higher and lower truths transform into this pure supreme state, like a water droplet merging into water.

कुछ ऊँची और नीची सत्यों के ज्ञाता इस शुद्ध परम अवस्था में परिवर्तित हो जाते हैं, जैसे एक पानी की बूँद पानी में मिल जाती है।

7.195.29

परेऽपरमिदं भाति परस्यैव परात्मकम् संभवन्त्यमले शान्ते न जगन्ति न तत्क्रियाः ॥ २९ ॥

pare'paramidaṃ bhāti parasyeva parātmakam saṃbhavantyamale śānte na jaganti na tatkriyāḥ || 29 ||

This appears as the supreme and the non-supreme, the very nature of the supreme itself. They exist in the pure and peaceful state, neither moving nor performing actions.

यह परम और अपरम के रूप में प्रकट होता है, जो परम का ही स्वभाव है। वे शुद्ध और शांत अवस्था में होते हैं, न तो चलते हैं न ही कार्य करते हैं।

7.195.30

स्वप्ने स्वप्न इति ज्ञाते दृश्ये ब्रह्मतयापि च मृगाम्बुनि परत्वेन को भावयति भावनाम् ॥ ३० ॥

svapne svapna iti jñāte dṛśye brahmatayāpi ca mṛgāmbuni paratvena ko bhāvayati bhāvanām || 30 ||

When it is known that a dream is a dream, and the visible world is also Brahman, who can contemplate the illusion of a mirage?

जब यह ज्ञात हो जाता है कि स्वप्न स्वप्न है, और दृश्य जगत भी ब्रह्म है, तो कौन मृगतृष्णा की भ्रांति पर ध्यान कर सकता है?

7.195.31

परमार्थचमत्कारमन्तःस्थानुभवं विना अन्यस्यान्यं न जानाति सीधुस्वादुमिव द्विजः ॥ ३१ ॥

paramārthacamatkāramantaḥsthānubhavaṃ vinā anyasyānyaṃ na jānāti sīdhusvādumiva dvijaḥ || 31 ||

Without the inner experience of the ultimate wonder, one does not know the other, just as a bird does not taste the nectar.

बिना परम चमत्कार के अनुभव के, एक दूसरे को नहीं जानता, जैसे पक्षी मधु का स्वाद नहीं लेता।

7.195.32

निर्वाय निज आत्मायं परिवृत्यावलोकितः चेत्योन्मुखत्वमुत्सृज्य संतिष्ठेच्छान्त आत्मनि ॥ ३२ ॥

nirvāya nija ātmāyaṃ parivṛtyāvalokitaḥ cetyonmukhatvamutsṛjya saṃtiṣṭhecchānta ātmani || 32 ||

Having turned away from all distractions and having seen one's own self, one should abandon the outward-looking tendency and remain established in the peaceful self.

सभी विचलनों से दूर होकर और अपने आत्मा को देखकर, एक को बाहरी दृष्टि को छोड़ देना चाहिए और शांत आत्मा में स्थित रहना चाहिए।

7.195.33

श्रीवसिष्ठ उवाच दृश्यं बीजाङ्कुर इव स्थितं ब्रह्मणि कारणे इति सर्गादिसद्भावः कस्मान्नेहोपपद्यते ॥ ३३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca dṛśyaṃ bījāṅkura iva sthitaṃ brahmaṇi kāraṇe iti sargādisadbhāvaḥ kasmānnehopapadyate || 33 ||

Vasishtha said: The seen is situated like a seed and sprout in the causal Brahman. Why does the reality of creation and so forth not fit here?

वसिष्ठ ने कहा: दृश्य बीज और अंकुर की तरह कारण ब्रह्म में स्थित है। सृष्टि की वास्तविकता यहाँ क्यों नहीं बैठती?

7.195.34

श्रीराम उवाच बीजेऽङ्कुरोऽङ्कुरतया संश्रितो नोपलब्ध्यते बीजोदरे तु या सत्ता बीजमेव हि सा भवेत् ॥ ३४ ॥

śrīrāma uvāca bīje'ṅkuro'ṅkuratayā saṃśrito nopalabhyate bījodare tu yā sattā bījameva hi sā bhavet || 34 ||

Rama said: The sprout is not perceived as a sprout when it is dependent on the seed. The existence that is in the seed is indeed the seed itself.

राम ने कहा: जब अंकुर बीज पर निर्भर होता है, तो अंकुर के रूप में नहीं देखा जाता। बीज में जो अस्तित्व है, वह बीज ही है।

7.195.35

ब्रह्मणोऽन्तर्जगत्तैवं जगत्तैवोपलब्ध्यते अस्ति चेत्तद्भवेन्नित्यं सा ब्रह्मैवाविकारि तत् ॥ ३५ ॥

brahmaṇo'ntarjagattaivaṃ jagattaivopalabhyate asti cettadbhavennityaṃ sā brahmaivāvikāri tat || 35 ||

The world is perceived as being within Brahman. If it exists, then it is eternal and is Brahman itself, unchanging.

जगत ब्रह्म के अंदर देखा जाता है। यदि यह अस्तित्व में है, तो यह नित्य है और ब्रह्म ही है, अपरिवर्तनीय।

7.195.36

अविकारादनाकाराद्विकार्याकृतिभासुरम् उदेतीति किलास्माभिर्नैव दृष्टं न च श्रुतम् ॥ ३६ ॥

avikārādanākārādvikāryākṛtibhāsuram udetīti kilāsmābhirnaiva dṛṣṭaṃ na ca śrutam || 36 ||

From the unchanging, formless, the changing form appears, it is said, but this has not been seen or heard by us.

अविकारी, निराकार से विकारी आकार उदित होता है, यह कहा जाता है, लेकिन हमने यह न देखा है न सुना है।

7.195.37

अनाकृतावाकृतिमन्न चैतत्स्थातुमर्हति परमाणौ न चैवान्तरिव संभान्ति मेरवः ॥ ३७ ॥

anākṛtāvākṛtimanna caitatsthātumarhati paramāṇau na caivāntariva saṃbhānti meravaḥ || 37 ||

The uncreated form does not deserve to stay in the supreme atom, nor do the mountains appear within it.

अनाकृत आकार परमाणु में रहने के लिए योग्य नहीं है, न ही पहाड़ इसमें दिखाई देते हैं।

7.195.38

समुद्गके रत्नमिव जगद्ब्रह्मणि तिष्ठति महाकारं निराकार इत्युन्मत्तवचो भवेत् ॥ ३८ ॥

samudgake ratnamiva jagadbrahmaṇi tiṣṭhati mahākāraṃ nirākāra ityunmattavaco bhavet || 38 ||

Like a jewel in the ocean, the world exists in Brahman, the formless, this is the talk of the insane.

समुद्र में रत्न की तरह, जगत ब्रह्म में स्थित है, निराकार, यह पागलों की बात है।

7.195.39

शान्तं परं च साकारस्याधार इति राजते न वक्तुं राजते क्वेव साकारस्याविनाशिता ॥ ३९ ॥

śāntaṃ paraṃ ca sākārasyādhāra iti rājate na vaktuṃ rājate kveva sākārasyāvināśitā || 39 ||

The peaceful and supreme is the support of the formed, it is said to shine, not to be spoken of, where is the indestructibility of the formed?

शांत और परम साकार का आधार है, यह कहा जाता है कि चमकता है, नहीं कहा जाता है, साकार का अविनाशित्व कहां है?

7.195.40

बोध एवायमाकार इति कल्पनयापि धीः अपूर्वैः स्वप्नवद्रूढैः संसारैर्नोपलभ्यते ॥ ४० ॥

bodha evāyamākāra iti kalpanayāpi dhīḥ apūrvaiḥ svapnavadrūḍhaiḥ saṃsārairnopalabhyate || 40 ||

This form is indeed awareness, even by imagination, the intellect is not perceived by the unprecedented, dream-like worlds.

यह आकार बोध है, इस प्रकार कल्पना से भी, बुद्धि अपूर्व, स्वप्न के समान संसारों द्वारा अनुभव नहीं की जाती।

7.195.41

अपूर्व एव स्वप्नोऽयं यद्वै सर्गोऽनुभूयते स्वप्नः किलानुभूतार्थः स्वभ्यस्त इव दृश्यते ॥ ४१ ॥

apūrva eva svapno'yaṃ yadvai sargo'nubhūyate svapnaḥ kilānubhūtārthaḥ svabhyasta iva dṛśyate || 41 ||

This dream is indeed unprecedented, for creation is experienced in it. A dream is perceived as if it is experienced by oneself.

यह स्वप्न वास्तव में अनोखा है, क्योंकि सृष्टि इसमें अनुभव की जाती है। स्वप्न ऐसा दिखाई देता है जैसे कि यह स्वयं द्वारा अनुभव किया गया हो।

7.195.42

यदेव जाग्रत्तत्स्वप्न इति नात्रोपपद्यते स्वप्ने प्रदग्धः पुरुषः कथं प्रातर्विलोक्यते ॥ ४२ ॥

yadeva jāgrattatsvapna iti nātropapadyate svapne pradagdhaḥ puruṣaḥ kathaṃ prātarvilokyate || 42 ||

What is experienced in the waking state is not the same as in the dream. How can a person burnt in a dream be seen in the morning?

जाग्रत अवस्था में जो अनुभव किया जाता है, वह स्वप्न में नहीं होता। स्वप्न में जला हुआ व्यक्ति सुबह कैसे दिखाई दे सकता है?

7.195.43

अशरीरस्य न स्वप्न इत्येतदपि नोचितम् संभवन्ति पिशाचाद्याः तेषां च स्वप्नवत्स्थितिः ॥ ४३ ॥

aśarīrasya na svapna ityetadapi nocitam saṃbhavanti piśācādyāḥ teṣāṃ ca svapnavatsthitiḥ || 43 ||

It is not appropriate to say that the bodiless do not dream. Ghosts and other such beings exist, and they have a dream-like existence.

यह उचित नहीं है कि कहा जाए कि शरीरहीन प्राणी स्वप्न नहीं देखते। भूत-प्रेत और ऐसे अन्य प्राणी होते हैं, और उनका अस्तित्व स्वप्न-जैसा होता है।

7.195.44

तस्मात्स्वप्नवदाभासः संविदात्मनि संस्थितः सर्गादिनानाकृतिना परमात्मा निराकृतिः ॥ ४४ ॥

tasmātsvapnavadābhāsaḥ saṃvidātmani saṃsthitaḥ sargādinānākṛtinā paramātmā nirākṛtiḥ || 44 ||

Therefore, the dream-like appearance is established in the self-aware consciousness. The Supreme Self is formless, manifesting in various forms from creation onwards.

इसलिए, स्वप्न-जैसी अभिव्यक्ति स्वयं-चेतना में स्थापित है। परमात्मा निराकार है, जो सृष्टि से आगे विभिन्न रूपों में प्रकट होता है।

7.195.45

स्वप्ने चिदेव शैलादिरूपेणात्मनि तिष्ठति ब्रह्मात्माखिलमुक्तोऽसावन्येनासौ कृतो यदि ॥ ४५ ॥

svapne cideva śailādirūpeṇātmani tiṣṭhati brahmātmākhilamukto'sāvanyenāsau kṛto yadi || 45 ||

In the dream, consciousness itself exists in the form of mountains and other objects in the self. That Brahman, the liberated self, is not created by another if it is so.

स्वप्न में, चेतना स्वयं पर्वतों और अन्य वस्तुओं के रूप में आत्मा में विद्यमान है। वह ब्रह्म, मुक्त आत्मा, अगर ऐसा है, तो दूसरे द्वारा नहीं बनाया गया है।

7.195.46

नेहास्तित्वं न नास्तित्वमुपलब्धेऽनुभूयते नैवानुभवितृत्वं च न चानुभवनक्रमः ॥ ४६ ॥

nehāstitvaṃ na nāstitvamupalabdhe'nubhūyate naivānubhavitṛtvaṃ ca na cānubhavanakramaḥ || 46 ||

There is neither existence nor non-existence perceived in experience, nor is there an experiencer or a sequence of experiencing.

अनुभव में न तो अस्तित्व है न ही अनस्तित्व, न ही कोई अनुभवकर्ता है और न ही अनुभव का कोई क्रम है।

7.195.47

किमपीदमनाख्येयं बुद्धेनैवानुभूयते स्वसंवेदनसंवेद्यं सत्तासत्ताविजृम्भितम् ॥ ४७ ॥

kimapīdamanākhyeyaṃ buddhenaivānubhūyate svasaṃvedanasaṃvedyaṃ sattāsattāvijṛmbhitam || 47 ||

Whatever this is, it is indescribable and is experienced only by the intellect. It is known through self-awareness and is manifested as both existence and non-existence.

यह जो भी है, वह अवर्णनीय है और केवल बुद्धि द्वारा ही अनुभव किया जाता है। यह स्वयं-ज्ञान द्वारा जाना जाता है और अस्तित्व और अनस्तित्व दोनों के रूप में प्रकट होता है।

7.195.48

अभावरूपिणो भावा अभावा भावरुपिणः सर्वदा सर्वथा सर्वे भान्ति भासुरतां गताः ॥ ४८ ॥

abhāvarūpiṇo bhāvā abhāvā bhāvarupiṇaḥ sarvadā sarvathā sarve bhānti bhāsuratāṃ gatāḥ || 48 ||

Entities that appear as non-existence are actually existent, and non-existence appears as existent. Always and in every way, all things shine with radiance.

जो अस्तित्व के रूप में प्रकट होते हैं, वे वास्तव में अनस्तित्व हैं, और अनस्तित्व अस्तित्व के रूप में प्रकट होता है। हमेशा और हर तरह से, सभी चीजें चमकदार होती हैं।

7.195.49

बृंहति ब्रह्मणि ब्रह्म व्योम व्योमनि वर्धते न चोपपद्यते किंचिद्ब्रह्म व्योम्नि विबृंहणम् ॥ ४९ ॥

bṛṃhati brahmaṇi brahma vyoma vyomani vardhate na copapadyate kiṃcidbrahma vyomni vibṛṃhaṇam || 49 ||

Brahman expands in Brahman, space expands in space. Nothing is inappropriate; Brahman does not expand in space.

ब्रह्म ब्रह्म में विस्तृत होता है, आकाश आकाश में विस्तृत होता है। कुछ भी अनुपयुक्त नहीं है; ब्रह्म आकाश में विस्तृत नहीं होता।

7.195.50

द्रष्टृदृश्यदृगात्मायमहं सर्गादिविभ्रमः शान्तश्चिद्व्योमविस्तारो न कुड्याद्युपपद्यते ॥ ५० ॥

draṣṭṛdṛśyadṛgātmāyamahaṃ sargādivibhramaḥ śāntaścidvyomavistāro na kuḍyādyupapadyate || 50 ||

I am the self that is the seer, the seen, and the act of seeing. I am the peaceful expansion of the consciousness-space, not confined to walls or any other limitations.

मैं वह आत्मा हूँ जो द्रष्टा, दृश्य और दृग है। मैं शान्त चेतना-आकाश का विस्तार हूँ, दीवारों या किसी अन्य सीमा से परिबद्ध नहीं।

7.195.52

पूर्णं हि परमं शान्तमिदं सर्वमक्षण्डितमनिङ्गनमनाभासमनाद्यन्तमचेतितम ॥ ५२ ॥

pūrṇaṃ hi paramaṃ śāntamidaṃ sarvamakhaṇḍitamanāṅganamanābhāsamanaādyantamacetitam || 52 ||

This entire universe is indeed complete, supremely peaceful, undivided, without any defects, without any reflection, without beginning or end, and without consciousness.

यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड वास्तव में पूर्ण, परम शांतिपूर्ण, अखंडित, किसी दोष से रहित, किसी प्रतिबिंब से रहित, आदि और अंत से रहित, और चेतना से रहित है।

7.195.53

यथा न सन्न कुड्यादि स्वसंकल्पनपत्तनम तथैवायं जगदिति शान्तमेकमनामयम ॥ ५३ ॥

yathā na sanna kuḍyādi svasaṃkalpanapattanam tathaivāyaṃ jagaditi śāntamekamanāmayam || 53 ||

Just as a wall or a pot does not exist without the conceptualization of the mind, so too this world is peaceful and free from duality.

जैसे एक दीवार या पात्र मन की कल्पना के बिना नहीं होता, उसी प्रकार यह जगत शांत और द्वैत से मुक्त है।

7.195.54

या संविदन्तः स्फुरति सैवोपायाति वाक्यताम यद्बीजं लीनमवनौ तद्यात्यङ्कुरतां किल ॥ ५४ ॥

yā saṃvidantaḥ sphurati saivopāyāti vākyatām yadbījaṃ līnamavanau tadyātyaṅkuratāṃ kila || 54 ||

That awareness which shines within is the means to attain the state of speech. The seed that is dissolved in the self sprouts into a seedling.

जो चेतना अंतर में चमकती है, वही वाणी की अवस्था को प्राप्त करने का साधन है। जो बीज आत्मा में विलीन है, वह अंकुरित होता है।

7.195.55

शुद्धज्ञानामयैकात्मा द्वैतैक्यपरिवर्जितः मनागपि न जानामि द्वैतैक्यकलनाकलाम ॥ ५५ ॥

śuddhajñānāmayaikātmā dvaitaikyaparivarjitaḥ manāgapi na jānāmi dvaitaikyakalanākalām || 55 ||

I do not know even a little bit of the duality and unity, being the pure consciousness, devoid of duality and unity.

मैं द्वैत और एकता के बारे में थोड़ा भी नहीं जानता, शुद्ध चेतना के रूप में, द्वैत और एकता से रहित।

7.195.56

सर्वे तूष्णींमया एव जीवन्मुक्ता इमे जनाः संशान्तसर्वसंरम्भाः खे खभाव इव स्थिताः ॥ ५६ ॥

sarve tūṣṇīṃmayā eva jīvanmuktā ime janāḥ saṃśāntasarvasaṃrambhāḥ khe khabhāva iva sthitāḥ || 56 ||

All these people are liberated while living, silent, with all agitations pacified, abiding in the sky like the ether.

ये सभी लोग जीवनमुक्त हैं, मौन, सभी उत्तेजनाओं से शांत, आकाश में आकाश की तरह स्थित।

7.195.57

जगत्स्पर्शमहारम्भमपि तूष्णीमिदं स्थितम् चित्रं भित्ताविव कृतं मनोराज्य इवोदितम् ॥ ५७ ॥

jagatsparśamahārambhamapi tūṣṇīmidaṃ sthitam citraṃ bhittāviva kṛtaṃ manorājya ivoditam || 57 ||

Even the great endeavor of touching the world remains silent, as if it were a painting on a wall or a dream-like kingdom that has arisen.

जगत् को स्पर्श करने का महान प्रयास भी मौन रहता है, मानो यह किसी दीवार पर चित्र बना हो या कोई स्वप्न-सा राज्य उत्पन्न हो गया हो।

7.195.58

शैलादिवोत्कीर्णसमं कथायामिव वर्णितम् शम्बरेणेव रचितं व्योम्नि स्वप्न इवोदितम् ॥ ५८ ॥

śailādivotkīrṇasamaṃ kathāyāmiva varṇitam śambareṇeva racitaṃ vyomni svapna ivoditam || 58 ||

It is described as if it were a story, like a mountain or something elevated, created by Shambara, arisen in the sky like a dream.

यह मानो किसी कहानी की तरह वर्णित है, जैसे कोई पर्वत या उच्च वस्तु, शम्बर द्वारा बनाया गया हो, आकाश में स्वप्न की तरह उत्पन्न हो गया हो।

7.195.59

किल स्वप्नवदेवेदं सर्गादावेव भाति यत् अभित्तिकं निष्प्रतिघं जगत्केवास्य सत्यता ॥ ५९ ॥

kila svapnavadevedaṃ sargādāveva bhāti yat abhittikaṃ niṣpratighaṃ jagatkevāsya satyatā || 59 ||

Indeed, this world appears like a dream from the very beginning of creation, without any obstruction, like a painting on a wall. What is its reality?

वास्तव में, यह संसार सृष्टि के आरम्भ से ही स्वप्न की तरह प्रतीत होता है, बिना किसी बाधा के, जैसे किसी दीवार पर चित्र। इसकी सत्यता क्या है?

7.195.60

जगद्बुद्धाविदं सत्यं परिज्ञानवतो मृषा ब्रह्मात्मक इदं ब्रह्म शान्ते शान्तं पराम्बरम् ॥ ६० ॥

jagadbuddhāvidaṃ satyaṃ parijñānavato mṛṣā brahmātmaka idaṃ brahma śānte śāntaṃ parāmbaram || 60 ||

This world, when understood with true knowledge, is false; this Brahman, which is the essence of Brahman, is tranquil in tranquility, the supreme support.

यह संसार, जब सच्चे ज्ञान से समझा जाता है, झूठा है; यह ब्रह्म, जो ब्रह्म का सार है, शान्ति में शान्त है, परम आधार है।

7.195.61

सर्व एव इमे भावाः सह स्थावरजङ्गमाः अस्मदादय आकाशं जगज्ज्ञविषयं तथा ॥ ६१ ॥

sarva eva ime bhāvāḥ saha sthāvarajaṅgamāḥ asmadādaya ākāśaṃ jagajjñaviṣayaṃ tathā || 61 ||

All these entities, along with the immovable and movable, from us to the sky, are the subject of the knowledge of the world.

ये सभी वस्तुएँ, चर और अचर सहित, हमसे लेकर आकाश तक, संसार के ज्ञान का विषय हैं।

7.195.62

क्षमहं क्षं भवांश्चित्क्षं जगत्क्षं क्षं क्षमेव च चिदाकाशैकतामेत्य भजैकाकाशरूपताम ॥ ६२ ॥

khamahaṃ khaṃ bhavāṃścitkhaṃ jagatkhaṃ khaṃ khameva ca cidākāśaikatāmetya bhajaikākāśarūpatām || 62 ||

I am the sky, the beings are the sky, the world is the sky, the sky itself is the sky. Attaining the singularity of the sky of consciousness, enjoy the form of the single sky.

मैं आकाश हूँ, प्राणी आकाश हैं, जगत आकाश है, आकाश ही आकाश है। चेतना के आकाश की एकता प्राप्त करके, एक आकाश के रूप का आनंद लो।

7.195.63

ज्ञानेनाकाशकल्पेन सर्वात्म गगनोपमम ज्ञेयाभिन्नेन संबोधात्तं वन्दे द्विपदां वरम ॥ ६३ ॥

jñānenākāśakalpena sarvātma gaganopamam jñeyābhinnena saṃbodhāttaṃ vande dvipadāṃ varam || 63 ||

With the knowledge that is like the sky, the self of all is like the sky. Through the realization of the non-different knowable, I salute the best among the bipeds.

आकाश जैसे ज्ञान के साथ, सभी का आत्मा आकाश जैसा है। अभिन्न ज्ञेय की समझ से, मैं द्विपदों में श्रेष्ठ को प्रणाम करता हूँ।

7.195.64

चिद्रूपत्वादुदेतीदं जगत्तत्रैव लीयते अकारणकमेवान्तः परं व्योमैव निर्मलम ॥ ६४ ॥

cidrūpatvādudetīdaṃ jagattatraiva līyate akāraṇakamevāntaḥ paraṃ vyomaiva nirmalam || 64 ||

Due to the nature of consciousness, this world arises and dissolves right there. The causeless, inner, supreme sky is pure.

चेतना की प्रकृति के कारण, यह जगत उत्पन्न होता है और वहीं विलीन हो जाता है। कारणरहित, अंतर्मुखी, परम आकाश शुद्ध है।

7.195.65

एतत्सर्वपदातीतं सर्वंशास्त्रकलातिगम पदमासाद्य निर्द्वन्द्वं त्वमाकाशात्मकोऽभवः ॥ ६५ ॥

etatsarvapadātītaṃ sarvaṃśāstrakalātigam padamāsādya nirdvandvaṃ tvamākāśātmako'bhavaḥ || 65 ||

This is beyond all words and all scriptures. Attaining that state, free from duality, you become the self of the sky.

यह सभी शब्दों और सभी शास्त्रों से परे है। उस अवस्था को प्राप्त करके, द्वंद्व से मुक्त, आप आकाश के स्वयं बन जाते हैं।

7.195.66

अहं जगच्च नो पादपाण्यादि न घटादि च सर्वमाकाशमाकाशमेवाच्छ सूक्ष्यचिद्भवेत ॥ ६६ ॥

ahaṃ jagacca no pādapāṇyādi na ghaṭādi ca sarvamākāśamākāśamevāccha sūkṣyacidbhavet || 66 ||

I and the world are not feet, hands, etc., nor pots, etc. Everything is the sky, the sky itself is subtle and conscious.

मैं और जगत पैर, हाथ आदि नहीं हैं, न ही घड़े आदि हैं। सब कुछ आकाश है, आकाश ही सूक्ष्म और चेतन है।

7.195.67

सर्वापह्नव एवायं मया यो दर्शितस्तव स निन्द्यो वादिनां वादेष्वात्मज्ञानेषु राजते ॥ ६७ ॥

sarvāpahnava evāyaṃ mayā yo darśitastava sa nindyo vādināṃ vādeṣvātmajñāneṣu rājate || 67 ||

This complete denial, which I have shown to you, is to be condemned in debates by debaters; it shines in the knowledge of the self.

यह सर्वापह्नव, जो मैंने आपको दिखाया है, वादी विवादों में निन्दनीय है; यह आत्मज्ञान में चमकता है।

7.195.68

काष्ठमौनात्मको वादे न सर्वापह्नवो यदा क्रियते तेन वादेषु नात्मज्ञानं प्रसीदति ॥ ६८ ॥

kāṣṭhamauṇātmako vāde na sarvāpahnavo yadā kriyate tena vādeṣu nātmajñānaṃ prasīdati || 68 ||

When a debate is not a complete denial, but is of a wooden or silent nature, then in such debates, self-knowledge does not shine.

जब कोई विवाद सर्वापह्नव नहीं होता, बल्कि लकड़ी या मौन स्वभाव का होता है, तो ऐसे विवादों में आत्मज्ञान नहीं चमकता।

7.195.69

प्रत्यक्षादिप्रमाणानां यदगम्यमचिह्नितम् स्वानुभूतिभवं ब्रह्म वादेस्तल्लभ्यते कथम् ॥ ६९ ॥

pratyakṣādipramāṇānāṃ yadagamyamacihnitam svānubhūtibhavaṃ brahma vādaistallabhyate katham || 69 ||

How can that Brahman, which is not attainable by direct perception and other means of knowledge, which is without characteristics, and which is realized through personal experience, be obtained through debates?

वह ब्रह्म, जो प्रत्यक्ष और अन्य प्रमाणों से अगम्य है, जो चिह्नहीन है, और जो स्वानुभूति से प्राप्त होता है, विवादों से कैसे प्राप्त हो सकता है?

7.195.70

सर्वागमार्थसमतीतमचिह्नमच्छमाकाशमेकमजमाद्यमनामरूपम् शुद्धं चिदात्मकमिहास्त्यनुभूतिमात्रं शान्ताभिधानकलनं मलशङ्क्यालम् ॥ ७० ॥

sarvāgamārthasamatītamacihnamacchamākāśamekamajamādyamanāmarūpaṃ śuddhaṃ cidātmakamihāstyānubhūtimātraṃ śāntābhidhānakalanaṃ malaśaṅkayālam || 70 ||

That which is beyond all scriptures, without characteristics, pure space, one, unborn, without beginning, without name and form, pure, of the nature of consciousness, here is only experience, peaceful, beyond impurities.

जो सभी शास्त्रों से परे है, चिह्नहीन है, शुद्ध आकाश है, एक है, अजन्मा है, अनादि है, नाम और रूप से रहित है, शुद्ध है, चेतना के स्वभाव का है, यहाँ केवल अनुभूति है, शान्त, दोषों से परे है।

Chapter 196

7.196.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच एवमुक्त्वा महाबुद्धे रामो राजीवलोचनः मुहूर्तमात्रं विश्रम्य तूष्णीं स्थित्वा परे पदे ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca evamuktvā mahābuddhe rāmo rājīvalocanaḥ muhūrtamātraṃ viśramya tūṣṇīṃ sthitvā pare pade || 1 ||

Sri Valmiki said: Having spoken thus, the wise Rama, with lotus-like eyes, rested for a moment and then remained silent, absorbed in the supreme state.

श्री वाल्मीकि ने कहा: ऐसा कहकर, बुद्धिमान राम, जिनकी आँखें कमल के समान थीं, एक क्षण के लिए विश्राम किया और फिर मौन होकर परम अवस्था में स्थित हो गए।

7.196.2

परमां तृप्तिमापन्नो विश्रान्तः परमात्मनि मुनिं पुनरपृच्छत्तं जानन्नपि हि लीलया ॥ २ ॥

paramāṃ tṛptimāpanno viśrāntaḥ paramātmani muniṃ punarapṛcchat taṃ jānannapi hi līlayā || 2 ||

Having attained supreme satisfaction and rested in the Supreme Self, Rama, although knowing, playfully asked the sage again.

परम संतुष्टि प्राप्त करके और परमात्मा में विश्राम करके, राम, जानते हुए भी, लीला से फिर से मुनि से पूछा।

7.196.3

श्रीराम उवाच भगवन्संशयाम्भोदशरत्काल मुनीश्वर इदानीं संशयोऽयं मे जातो मनसि पेलवः ॥ ३ ॥

śrīrāma uvāca bhagavansaṃśayāmbhodaśaratkāla munīśvara idānīṃ saṃśayo'yaṃ me jāto manasi pelavaḥ || 3 ||

Sri Rama said: O Lord, ocean of doubts, O great sage, now a small doubt has arisen in my mind.

श्री राम ने कहा: हे भगवान, संदेहों के समुद्र, हे मुनीश्वर, अब मेरे मन में एक छोटा सा संदेह उत्पन्न हो गया है।

7.196.4

एवमेतन्महाज्ञानं संसारार्णवतारणम् समस्तमेव वाग्जालं समतीत्यावतिष्ठते ॥ ४ ॥

evametanmahājñānaṃ saṃsārārṇavatāraṇam samastameva vāgjālaṃ samatītyāvatiṣṭhate || 4 ||

Thus, this great knowledge is the means to cross the ocean of worldly existence. It transcends all verbal entanglements and remains established.

इस प्रकार, यह महान ज्ञान संसार के समुद्र को पार करने का साधन है। यह सभी शब्दों के जाल को पार करके स्थिर रहता है।

7.196.5

यदिदं किल सद्ब्रह्म स्वसंविन्मात्रनिश्चयम्तदवाच्यं किल गिरां महतामपि मानद ॥ ५ ॥

yadidaṃ kila sadbrahma svasaṃvinmātraniścayamtadavācyaṃ kila girāṃ mahatāmapi mānada || 5 ||

That which is indeed the true Brahman, the certainty of one's own consciousness, is indeed inexpressible even by the great ones, O respectful one.

जो वास्तव में सत्य ब्रह्म है, अपनी चेतना का निश्चय, वह वास्तव में महान लोगों के द्वारा भी अव्यक्त है, हे आदरणीय।

7.196.6

एवं स्थिते परं ज्ञेयं सर्वसंकल्पनोज्झितम् स्वसंवित्तुर्यतन्मात्रलभ्यं दुर्गमतां गतम् ॥ ६ ॥

evaṃ sthite paraṃ jñeyaṃ sarvasaṃkalpanojjhitam svasaṃvitturyatanmātralabhyaṃ durgamatāṃ gatam || 6 ||

Thus, the ultimate knowledge to be known is devoid of all concepts, attainable only through the direct experience of one's own consciousness, and has reached a state that is difficult to comprehend.

इस प्रकार, जानने योग्य परम ज्ञान सभी संकल्पों से रहित है, जो केवल अपने स्वयं के चेतना के अनुभव से प्राप्त होता है, और जो समझने में कठिन है।

7.196.7

प्रतियोगिव्यवच्छेदसंख्याभेदैषिणां किल कथं शास्त्रपदैस्तुच्छैः सविकल्पैरवाप्यते ॥ ७ ॥

pratiyogivyavacchedasaṃkhyābhedaiṣiṇāṃ kila kathaṃ śāstrapadaistucchaiḥ savikalpairavāpyate || 7 ||

How can those who desire distinctions based on the separation of opposites and numerical differences be satisfied by the trivial and conceptual words of the scriptures?

विरोधी व्यवच्छेद और संख्या भेद चाहने वालों को शास्त्र के तुच्छ और सविकल्प शब्दों से कैसे संतुष्ट किया जा सकता है?

7.196.8

विकल्पसारशब्दाद्यैर्ज्ञान शास्त्रैर्न लभ्यते तत्किमर्थमनर्थाय गुरुशास्त्रादि कल्पितम् ॥ ८ ॥

vikalpasāraśabdādyairjñāna śāstrairna labhyate tatkimarthamanarthāya guruśāstrādi kalpitam || 8 ||

Knowledge cannot be attained through scriptures that are based on conceptual words and essences. What then is the purpose of the scriptures and teachings created by the guru?

ज्ञान विकल्प सार शब्दों और शास्त्रों से प्राप्त नहीं होता। तो फिर गुरु और शास्त्रों द्वारा कल्पित शिक्षाओं का क्या उद्देश्य है?

7.196.9

गुरुशास्त्रादिविज्ञाने कारणं वास्त्यकारणम् तदत्र निश्चयं ब्रह्मन्ब्रूहि मे वदतां वर ॥ ९ ॥

guruśāstrādivijñāne kāraṇaṃ vāstyakāraṇam tadatra niścayaṃ brahmanbrūhi me vadatāṃ vara || 9 ||

In the knowledge imparted by the guru and scriptures, is there a cause or no cause? Please tell me the certainty about this, O best of speakers, O Brahman.

गुरु और शास्त्रों द्वारा दिए गए ज्ञान में, कारण है या नहीं? हे वक्ताओं में श्रेष्ठ, हे ब्रह्मन्, कृपया मुझे इसके बारे में निश्चय बताएं।

7.196.10

श्रीवसिष्ठ उवाच एवमेतन्महाबाहो न शास्त्रं ज्ञानकारणम् नानाशब्दमयं शास्त्रमनाम च परं पदम् ॥ १० ॥

śrīvasiṣṭha uvāca evametanmahābāho na śāstraṃ jñānakāraṇam nānāśabdamayaṃ śāstramanāma ca paraṃ padam || 10 ||

Vasishtha said: Indeed, O mighty-armed one, the scripture is not the cause of knowledge. The scripture, which is full of various words, is not the supreme state.

वसिष्ठ ने कहा: निश्चय ही, हे महाबाहो, शास्त्र ज्ञान का कारण नहीं है। विभिन्न शब्दों से भरा शास्त्र परम पद नहीं है।

7.196.11

तथापि राघवश्रेष्ठ यथैतद्धेतुतां गतम् शास्त्राद्युत्तमबोधस्य तत्समासेन मे शृणु ॥ ११ ॥

tathāpi rāghavaśreṣṭha yathaitaddhetutāṃ gatam śāstrādyuttamabodhasya tatsamāsena me śṛṇu || 11 ||

Nevertheless, O best of the Raghus, listen to the essence of the supreme knowledge of the scriptures, as it has been logically explained.

फिर भी, हे रघुवंश श्रेष्ठ, शास्त्रों के उत्तम ज्ञान का सार सुनो, जैसे यह तर्कसंगत है।

7.196.12

सन्ति क्वचिद्वैवधिकाः कीरकाश्चिरदुर्भगाः दुःखेनाभ्यागताः शोषं ग्रीष्मेणेव जरद्द्रुमाः ॥ १२ ॥

santi kvacidvaivadhikāḥ kīrakāściradurbhagāḥ duḥkhenābhyāgatāḥ śoṣaṃ grīṣmeṇeva jaraddrumāḥ || 12 ||

There are some who, due to their misfortune, are always in disagreement and suffer like old trees withering in the summer heat.

कुछ ऐसे लोग हैं जो अपने दुर्भाग्य के कारण हमेशा विवाद में रहते हैं और गर्मी की धूप में सूखते हुए बूढ़े पेड़ों की तरह दुःख भोगते हैं।

7.196.13

सन्ति क्वचिद्वैवधिकाः कीरकाश्चिरदुर्भगाः दुःखेनाभ्यागताः शोषं ग्रीष्मेणेव जरद्द्रुमाः ॥ १३ ॥

dāridryeṇa durantena kanthāsaṃsthānakāriṇā dīnānanāśayāḥ padmā nirgateneva vāriṇā || 13 ||

Due to extreme poverty, they are reduced to a pitiable state, like lotuses with drooping faces due to lack of water.

अत्यधिक गरीबी के कारण, वे दयनीय स्थिति में आ जाते हैं, जैसे पानी की कमी के कारण मुरझाए हुए कमलों की तरह।

7.196.14

दौर्गत्यपरितप्तास्ते जीवितार्थमचिन्तयन् जठरस्य कया युक्त्या वयं कुर्मः प्रपूरणम् ॥ १४ ॥

daurgatyaparitaptāste jīvitārthamacintayan jaṭharasya kayā yuktyā vayaṃ kurmaḥ prapūraṇam || 14 ||

Afflicted by misfortune, they think only of sustaining life, wondering how to fill their stomachs.

दुर्भाग्य से पीड़ित होकर, वे केवल जीवन को बनाए रखने के बारे में सोचते हैं, यह सोचते हुए कि पेट को कैसे भरा जाए।

7.196.15

इति संचिन्त्य विधिना दिनान्तेन दिनं प्रति दारुभारेण जीवामो विक्रीतेनेति संस्थिताः ॥ १५ ॥

iti saṃcintya vidhinā dināntena dinaṃ prati dārubhāreṇa jīvāmo vikrīteneti saṃsthitāḥ || 15 ||

Thus, thinking in this manner, we live day by day, selling wood, and this is our condition.

इस प्रकार सोचकर, हम दिन-प्रतिदिन लकड़ी बेचकर जीवन निर्वाह करते हैं, और यही हमारी स्थिति है।

7.196.16

इति संचिन्त्य ते जग्मुर्दार्वर्थं विपिनान्तरम् ययैवाजीव्यते युक्त्या सैवापदि विराजते ॥ १६ ॥

iti saṃcintya te jagmurdārvarthaṃ vipināntaram yayaivājīvyate yuktyā saivāpadi virājate || 16 ||

Thinking thus, they went to the forest to collect wood. The same means by which one lives, that same means sustains one in times of adversity.

इस तरह सोचकर वे वन में लकड़ी लेने गए। जिस युक्ति से जीवन चलता है, वही युक्ति संकट में भी सहारा देती है।

7.196.17

इति ते प्रत्यहं गत्वा काननं भवचारिणः दारूण्यानीय विक्रीय चक्रुर्देहस्य धारणम् ॥ १७ ॥

iti te pratyahaṃ gatvā kānanaṃ bhavacāriṇaḥ dārūṇyānīya vikrīya cakrurdehasya dhāraṇam || 17 ||

Thus, every day they went to the forest and, bringing back wood, sold it to sustain their bodies.

इस प्रकार, हर दिन वे वन में गए और लकड़ी लेकर वापस आए, उसे बेचकर अपने शरीर का भरण-पोषण किया।

7.196.18

यत्प्रयान्ति वनान्तं ते तस्मिन्सन्त्यखिलानि हि गुप्तागुप्तानि रत्नानि दारूणि कनकानि च ॥ १८ ॥

yatprayānti vanāntaṃ te tasminsantyakhilāni hi guptāguptāni ratnāni dārūṇi kanakāni ca || 18 ||

When they go to the edge of the forest, there are all kinds of hidden and visible treasures, wood, and gold.

जब वे वन के किनारे तक जाते हैं, तो वहाँ सभी प्रकार के छिपे और प्रकट खजाने, लकड़ी और सोना होता है।

7.196.19

तेषां भारभृतां मध्यात्केचित्कतिपयैर्वनात् जातरूपाणि रत्नानि तानि संप्राप्नुवन्ति हि ॥ १९ ॥

teṣāṃ bhārabhṛtāṃ madhyātkecitkatipayairvanāt jātarūpāṇi ratnāni tāni saṃprāpnuvanti hi || 19 ||

Among those who carry the burden, some obtain a few pieces of gold and gems from the forest.

उन भार वाहकों में से कुछ लोग वन से कुछ सोने और रत्नों को प्राप्त करते हैं।

7.196.20

केचिच्चन्दनदारूणि केचित्पुष्पाणि मानद केचित्फलानि विक्रीय जीवन्ति चिरकीरकाः ॥ २० ॥

keciccandanadārūṇi kecitpuṣpāṇi mānada kecitphalāni vikrīya jīvanti cirakīrakāḥ || 20 ||

Some sell sandalwood, some sell flowers, and some sell fruits to live for a long time.

कुछ लोग चन्दन की लकड़ी, कुछ फूल और कुछ फल बेचकर लंबे समय तक जीवन निर्वाह करते हैं।

7.196.21

केचित्सर्वमनासाद्य दुर्दारूण्येव दुर्धियः नीत्वा विक्रीय जीवन्ति वनवीथ्युपजीविनः ॥ २१ ॥

kecitsarvamanāsādya durdārūṇyeva durdhiyaḥ nītvā vikrīya jīvanti vanavīthyupajīvinaḥ || 21 ||

Some, unable to obtain all their desires, bring and sell even hard-to-get items, and thus they live by the forest paths.

कुछ लोग अपनी सभी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते हैं, वे दुर्लभ वस्तुओं को लेकर और बेचकर वन मार्गों पर जीवन यापन करते हैं।

7.196.22

दार्वर्थमुद्यताः सर्वे ते संप्राप्य महावनम् केचित्प्राप्य स्थिताः सर्वे झटित्येवं गतज्वरम् ॥ २२ ॥

dārvarthamudyatāḥ sarve te saṃprāpya mahāvanam kecitprāpya sthitāḥ sarve jhaṭityevaṃ gatajvaram || 22 ||

All those who set out for the purpose of wood, having reached the great forest, some having obtained it, all remain there, their fever gone instantly.

जो लोग लकड़ी के लिए निकले थे, वे सभी महान वन तक पहुंचे, कुछ लोगों ने उसे प्राप्त किया, और सभी तत्काल बुखार दूर होने पर वहीं रहे।

7.196.23

इति यावदजस्रं ते सेवन्ते तन्महावनम् प्रदेशात्तावदेकस्मात्प्राप्तश्चिन्तामणिर्मणिः ॥ २३ ॥

iti yāvadajasraṃ te sevante tanmahāvanam pradeśāttāvadekasmātprāptaścintāmaṇirmaṇiḥ || 23 ||

Thus, as long as they continuously serve that great forest, from a certain place, they obtain the wish-fulfilling gem.

इस प्रकार, जब तक वे निरंतर उस महान वन की सेवा करते हैं, एक निश्चित स्थान से, वे इच्छा-पूर्ति मणि प्राप्त करते हैं।

7.196.24

तस्माच्चिन्तामणेः प्राप्ताः समग्रा विभवश्रियः परमं सुखमायातास्तत्र ते संस्थिताः सुखम् ॥ २४ ॥

tasmāccintāmaṇeḥ prāptāḥ samagrā vibhavaśriyaḥ paramaṃ sukhamāyātāstatra te saṃsthitāḥ sukham || 24 ||

From that wish-fulfilling gem, they obtain complete wealth and prosperity, and attain the highest happiness, remaining there happily.

उस इच्छा-पूर्ति मणि से, वे पूर्ण धन-सम्पदा प्राप्त करते हैं, और परम सुख प्राप्त करते हुए वहाँ सुखपूर्वक रहते हैं।

7.196.25

दार्वर्थमुद्यताः सन्तः प्राप्य सर्वार्थदं मणिम् सुखं तिष्ठन्ति निर्द्वन्द्वा दिवि देववरा इव ॥ २५ ॥

dārvarthamudyatāḥ santaḥ prāpya sarvārthadaṃ maṇim sukhaṃ tiṣṭhanti nirdvandvā divi devavarā iva || 25 ||

Those who set out for the purpose of wood, having obtained the wish-fulfilling gem that grants all desires, remain happily without duality, like the best of gods in heaven.

जो लोग लकड़ी के लिए निकले थे, वे सभी इच्छाओं को पूरा करने वाली मणि प्राप्त करके, द्वंद्व से मुक्त होकर सुखपूर्वक रहते हैं, जैसे स्वर्ग में देवताओं के सर्वश्रेष्ठ।

7.196.26

सर्वार्थसारपरिपूर्णतया तया ते काष्ठोद्यमाधिगतसन्मणयो महान्तः तिष्ठन्ति शान्तभयमोहविषाददुःखमानन्दमन्थरधियः समतामुपेताः ॥ २६ ॥

sarvārthasāraparipūrṇatayā tayā te kāṣṭhodyamādhigatasanmaṇayo mahāntaḥ tiṣṭhanti śāntabhayamohaviṣādaduḥkhamānandamantharadhiyaḥ samatāmupetāḥ || 26 ||

Through the fullness of the essence of all things, by you, those who have attained true respect through their efforts stand firm, free from fear, delusion, sorrow, and pain, with joy within their hearts, having attained equanimity.

सभी वस्तुओं के सार की पूर्णता से, आपके द्वारा, जिन्होंने अपने प्रयासों से सच्चा सम्मान प्राप्त किया है, वे महान लोग डर, मोह, विषाद, दुःख से मुक्त होकर, हृदय में आनन्द लेकर, समता प्राप्त कर स्थिर खड़े हैं।

Chapter 197

7.197.1

श्रीराम उवाच तथा कुरु मुनिश्रेष्ठ यथा वैवधिकक्रमम् असंदेहमिमं सम्यगवगच्छामि मानद ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca tathā kuru muniśreṣṭha yathā vaivadhikakramam asaṃdehamimaṃ samyagavagacchāmi mānada || 1 ||

Sri Rama said: O best of sages, please explain to me the process of discrimination so that I may understand it clearly without any doubt.

श्री राम ने कहा: हे मुनिश्रेष्ठ, कृपया मुझे विवेक की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से समझाएं ताकि मैं इसे बिना किसी संदेह के समझ सकूं।

7.197.2

श्रीवसिष्ठ उवाच ये ते वैवधिका राम ते एते मानवा भुवि तेषां दारिद्र्यदुःखं यत्तदज्ञानं महातपः ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca ye te vaivadhikā rāma te ete mānavā bhuvi teṣāṃ dāridryaduḥkhaṃ yattadajñānaṃ mahātapaḥ || 2 ||

Vasistha said: O Rama, those who are discriminative are indeed humans on earth. Their poverty and suffering are due to great ignorance.

वसिष्ठ ने कहा: हे राम, जो विवेकशील हैं, वे ही पृथ्वी पर मनुष्य हैं। उनकी दरिद्रता और दुःख महान अज्ञान के कारण है।

7.197.3

यत्तन्महावनं प्रोक्तं गुरुशास्त्रक्रमादि तत् यदुद्यतास्ते ग्रासार्थं जना भोगार्थिनो हि ते ॥ ३ ॥

yattanmahāvanaṃ proktaṃ guruśāstrakramādi tat yadudyatāste grāsārthaṃ janā bhogārthino hi te || 3 ||

That which is called the great forest is taught by the sequence of the scriptures of the guru. Those who are eager for enjoyment are indeed ready for consumption.

जो महान वन कहलाता है, वह गुरु के शास्त्रों के क्रम से बताया जाता है। जो लोग भोग के लिए उत्सुक हैं, वे ही ग्रास के लिए तैयार हैं।

7.197.4

भोगौघाः सिद्धिमायान्तु मम निष्कृपणो जनः अनपेक्षितकार्यार्थः शास्त्रादौ संप्रवर्तते ॥ ४ ॥

bhogaughāḥ siddhimāyāntu mama niṣkṛpaṇo janaḥ anapekṣitakāryārthaḥ śāstrādau saṃpravartate || 4 ||

May the waves of enjoyment come to an end for my miserly people. One who is indifferent to the purpose of action engages in scriptures and other activities.

मेरे कृपण लोगों के लिए भोग की लहरें समाप्त हों। जो कार्य के उद्देश्य से उदासीन है, वह शास्त्रों और अन्य गतिविधियों में लगा हुआ है।

7.197.5

भोगार्थं संप्रवृत्तोऽपि प्राप्नोत्यभ्यासतः क्रमात् जन्तुश्चिन्तितमेवाद्यपदं परवशोऽपि सन् ॥ ५ ॥

bhogārthaṃ saṃpravṛtto'pi prāpnotyabhyāsataḥ kramāt jantuścintitamevādyapadaṃ paravaśo'pi san || 5 ||

Even though one is engaged in the pursuit of enjoyment, through practice and gradually, one attains the original state of thought, even while being under the control of others.

भले ही कोई भोग की प्राप्ति में लगा हो, फिर भी अभ्यास और क्रमशः, वह विचार की मूल अवस्था को प्राप्त करता है, भले ही वह दूसरों के नियंत्रण में हो।

7.197.6

दारवर्थमुद्यतो भावी यथा संप्राप्नवान्मणिम् भोगार्थमात्तशास्त्रोऽयं तथाप्नोति जनः पदम् ॥ ६ ॥

dārvarthamudyato bhāvī yathā saṃprāptavānmaṇim bhogārthamāttaśāstro'yaṃ tathāpnoti janaḥ padam || 6 ||

Just as one who is eager to attain a wife achieves the jewel, similarly, one who is attached to the scriptures for enjoyment attains that position.

जैसे कोई पत्नी प्राप्त करने के लिए उत्सुक व्यक्ति मणि प्राप्त करता है, वैसे ही भोग के लिए शास्त्रों से आसक्त व्यक्ति उस पद को प्राप्त करता है।

7.197.7

किं स्याच्छास्त्रविचाराभ्यामिति संदेहलीलयाकश्चित्प्रवर्तते पश्चादाप्नोति पदमुत्तमम् ॥ ७ ॥

kiṃ syācchāstravicārābhyāmiti saṃdehalīlayākaścitpravartate paścādāpnoti padamuttamam || 7 ||

Some people, due to doubt and playfulness, do not engage in the study of scriptures, but later they attain the highest state.

कुछ लोग संदेह और खेल के कारण शास्त्रों का अध्ययन नहीं करते, लेकिन बाद में वे उत्तम पद प्राप्त करते हैं।

7.197.8

अदृष्टोत्तमतत्त्वार्थः शास्त्रादौ संप्रवर्तते संदेहेनार्थभोगार्थं जनः प्राप्नोति तत्पदम् ॥ ८ ॥

adṛṣṭottamatattvārthaḥ śāstrādau saṃpravartate saṃdehenārthabhogārthaṃ janaḥ prāpnoti tatpadam || 8 ||

The supreme truth, which is unseen, is revealed through the scriptures. With doubt for the sake of enjoyment, people attain that position.

अदृश्य उत्तम तत्त्व शास्त्रों द्वारा प्रकट होता है। भोग के लिए संदेह के साथ, लोग उस पद को प्राप्त करते हैं।

7.197.9

अन्यथा संप्रवर्तन्ते शास्त्रैर्वासनया जनाः अन्यदासादयन्त्याद्यं मणिं वैवधिका इव ॥ ९ ॥

anyathā saṃpravartante śāstrairvāsanayā janāḥ anyadāsādayantyādyaṃ maṇiṃ vaivadhikā iva || 9 ||

Others proceed differently with the scriptures due to their desires. They attain something else instead of the original jewel, like those who are divided.

दूसरे लोग अपनी इच्छाओं के कारण शास्त्रों के साथ अलग तरीके से आगे बढ़ते हैं। वे मूल मणि के बजाय कुछ और प्राप्त करते हैं, जैसे विभाजित लोग।

7.197.10

परोपकारेऽविरतं स्वभावेन प्रवर्तते यः स साधुरिति प्रोक्तः प्रमाणं त्वस्य चेष्टितम् ॥ १० ॥

paropakāre'virataṃ svabhāvena pravartate yaḥ sa sādhuriti proktaḥ pramāṇaṃ tvasya ceṣṭitam || 10 ||

One who continuously engages in the welfare of others by nature is called a noble person. This is the evidence of their actions.

जो व्यक्ति स्वभाव से दूसरों के कल्याण में निरंतर लगा रहता है, उसे साधु कहा जाता है। यह उनके कार्यों का प्रमाण है।

7.197.11

साध्वाचारवशाल्लोको भोगसंप्राप्तिशङ्कया संदेहश्चाप्यतत्त्वज्ञः शास्त्रादौ संप्रवर्तते ॥ ११ ॥

sādhvācāravaśālloko bhogasaṃprāptiśaṅkayā saṃdehaścāpyatattvajñaḥ śāstrādau saṃpravartate || 11 ||

People, influenced by good conduct, doubt the attainment of worldly pleasures. Due to ignorance of the truth, doubts arise from scriptures and other sources.

लोग सदाचार के प्रभाव में आकर भोग की प्राप्ति पर संदेह करते हैं। सत्य के ज्ञान के अभाव में, शास्त्रों और अन्य स्रोतों से संदेह उत्पन्न होते हैं।

7.197.12

भोगार्थं संप्रवृत्तोऽसौ भोगमोक्षावुभावपि तस्मात्प्राप्नोति दार्वर्थी वनाच्चिन्तामणिं यथा ॥ १२ ॥

bhogārthaṃ saṃpravṛtto'sau bhogamokṣāvubhāvapi tasmātprāpnoti dārvarthī vanāccintāmaṇiṃ yathā || 12 ||

One who strives for worldly pleasures attains both worldly pleasures and liberation. Therefore, one who seeks wealth obtains the wish-fulfilling gem from the forest, just like that.

जो भोग के लिए प्रयास करता है, वह भोग और मोक्ष दोनों को प्राप्त करता है। इसलिए, जो धन की इच्छा रखता है, वह वन से चिंतामणि प्राप्त करता है, ठीक उसी तरह।

7.197.13

केचिच्चन्दनदारूणि केचिच्चिन्तामणिं मणिम् केचित्सामान्यरत्नानि प्राप्नुवन्ति यथा वनात् ॥ १३ ॥

keciccandanadārūṇi keciccintāmaṇiṃ maṇim kecitsāmānyaratnāni prāpnuvanti yathā vanāt || 13 ||

Some obtain sandalwood trees, some obtain the wish-fulfilling gem, and some obtain ordinary jewels from the forest, just like that.

कुछ लोग चंदन के पेड़ प्राप्त करते हैं, कुछ चिंतामणि प्राप्त करते हैं, और कुछ सामान्य रत्न वन से प्राप्त करते हैं, ठीक उसी तरह।

7.197.14

केचित्कामं केचिदर्थं केचिद्धर्मत्रयं तु वा केचिन्मोक्षमशेषं च लभन्ते शास्त्रतस्तथा ॥ १४ ॥

kecikkāmaṃ kecidarthaṃ keciddharmatrayaṃ tu vā kecinmokṣamaśeṣaṃ ca labhante śāstratastathā || 14 ||

Some attain desires, some attain wealth, some attain the threefold dharma, and some attain complete liberation, all according to the scriptures.

कुछ लोग इच्छाओं को प्राप्त करते हैं, कुछ धन को प्राप्त करते हैं, कुछ तीनों धर्मों को प्राप्त करते हैं, और कुछ पूर्ण मोक्ष को प्राप्त करते हैं, सभी शास्त्रों के अनुसार।

7.197.15

वर्गत्रयोपदेशो हि शास्त्रादिष्वस्ति राघव ब्रह्मप्राप्तिस्त्ववाच्यत्वान्नास्ति तच्छासनेष्वपि ॥ १५ ॥

vargatrayopadeśo hi śāstrādiṣvasti rāghava brahmaprāptistvavācyatvānnāsti tacchāsaneṣvapi || 15 ||

O Raghava, the teachings of the threefold path are indeed found in the scriptures. However, the attainment of Brahman is inexpressible, and it is not found even in the scriptures.

हे राघव, तीनों मार्गों की शिक्षाएँ शास्त्रों में वास्तव में पाई जाती हैं। हालाँकि, ब्रह्म की प्राप्ति अव्यक्त है, और यह शास्त्रों में भी नहीं पाई जाती।

7.197.16

केवलं सर्ववाक्यार्थैर्ध्वन्यमानावगम्यते कालश्रीः प्रसवेनेव स्वयं स्वानुभवेन सा ॥ १६ ॥

kevalaṃ sarvavākyārthairdhvanyamānāvagamyate kālaśrīḥ prasaveneva svayaṃ svānubhavena sā || 16 ||

The divine grace is understood only through the essence of all statements, just as the beauty of time is perceived through one's own experience.

दिव्य कृपा केवल सभी वाक्यों के अर्थ से ही समझी जाती है, जैसे समय की शोभा अपने अनुभव से ही देखी जाती है।

7.197.17

सर्वार्थातिगतं शास्त्रे विद्यते ब्रह्मवेदनम् सर्वगातिगतं स्वच्छं लावण्यमिव योषिति ॥ १७ ॥

sarvārthātigataṃ śāstre vidyate brahmavedanam sarvagātigataṃ svacchaṃ lāvaṇyamiva yoṣiti || 17 ||

In the scriptures, the knowledge of Brahman is beyond all purposes, just as the pure beauty of a woman is beyond all movements.

शास्त्रों में, ब्रह्म का ज्ञान सभी उद्देश्यों से परे है, जैसे एक स्त्री की शुद्ध सुंदरता सभी गतिविधियों से परे है।

7.197.18

न शास्त्रान्न गुरोर्वाक्यान्न दानान्नेश्वरार्चनात् एष सर्वपदातीतो बोधः संप्राप्यते परः ॥ १८ ॥

na śāstrānna gurorvākyānna dānānneśvarārcanāt eṣa sarvapadātīto bodhaḥ saṃprāpyate paraḥ || 18 ||

This supreme knowledge is not attained from scriptures, nor from the words of the guru, nor from charity, nor from the worship of God. It is attained beyond all these.

यह परम ज्ञान शास्त्रों से, गुरु के वचनों से, दान से, या ईश्वर की पूजा से नहीं प्राप्त होता। यह इन सभी से परे प्राप्त होता है।

7.197.20

शास्त्रादभ्यासयोगेन चित्तं यातं विशुद्धताम् अनिच्छदेवमेवाशु पदं पश्यति पावनम् ॥ २० ॥

śāstrādabhyāsayogena cittaṃ yātaṃ viśuddhatām anicchadevamevāśu padaṃ paśyati pāvanam || 20 ||

Through the practice of scriptures, the mind attains purity. Without desire, one quickly sees the purifying state.

शास्त्रों के अभ्यास से, मन शुद्धता को प्राप्त होता है। बिना इच्छा के, वह शीघ्र ही पवित्र अवस्था को देखता है।

7.197.21

एतच्छास्त्रादविद्यायाः सात्त्विको भाग उच्यते तामसः सात्त्विकेनास्याभागेनायाति संक्षयम् ॥ २१ ॥

etacchāstrādavidyāyāḥ sāttviko bhāga ucyate tāmasaḥ sāttvikenāsyābhāgenāyāti saṃkṣayam || 21 ||

This part of ignorance from the scriptures is called sattvic. The tamasic part is destroyed by the sattvic part.

शास्त्रों से इस अज्ञान का सात्त्विक भाग कहलाता है। तामसिक भाग सात्त्विक भाग से नष्ट हो जाता है।

7.197.22

नूनं मलं प्रधानेन क्षालवच्छास्त्ररूपिणा पुरुषः शुद्धतामेति परमां वस्तुशक्तितः ॥ २२ ॥

nūnaṃ malaṃ pradhānena kṣālavacchāstrarūpiṇā puruṣaḥ śuddhatāmeti paramāṃ vastuśaktitaḥ || 22 ||

Now, the impurity is washed away by the principal means of the scripture, and the individual attains the highest purity through the power of reality.

अब, मल प्रधान शास्त्र के द्वारा धोया जाता है, और पुरुष वस्तु की शक्ति से परम शुद्धता प्राप्त करता है।

7.197.23

अनिच्छयोरेव यथा सप्तसप्तिसमुद्रयोः प्रागदृश्यं तृतीयत्वं स्वभाववशतः स्वतः ॥ २३ ॥

anicchayoreva yathā saptasaptisamudrayoḥ prāgadṛśyaṃ tṛtīyatvaṃ svabhāvavaśataḥ svataḥ || 23 ||

Just as the third nature is inherently visible before the seven seas and seven oceans, so too is the inherent nature of the non-desirous.

जैसे सात समुद्रों और सात सागरों से पहले तीसरी प्रकृति स्वाभाविक रूप से दृश्यमान होती है, वैसे ही अनिच्छुकों की स्वाभाविक प्रकृति होती है।

7.197.24

स्वसंनिधानमात्रेण विदितप्रतिभासनम् सदसन्मयमाभोगि प्रतिबिम्बं प्रवर्तते ॥ २४ ॥

svasaṃnidhānamātreṇa viditapratibhāsanam sadasanmayamābhogi pratibimbaṃ pravartate || 24 ||

By mere proximity, the reflection becomes known, experiencing both existence and non-existence, the reflected image manifests.

केवल निकटता से, प्रतिबिम्ब ज्ञात होता है, अस्तित्व और अनस्तित्व दोनों का अनुभव करते हुए, प्रतिबिम्ब प्रकट होता है।

7.197.25

मुमुक्षुशास्त्रयोरेवं मिथः संबन्धमात्रतः सर्वसंवित्पदातीतमात्मज्ञानं प्रवर्तते ॥ २५ ॥

mumukṣuśāstrayorevaṃ mithaḥ saṃbandhamātrataḥ sarvasaṃvitpadātītamātmajñānaṃ pravartate || 25 ||

Thus, from the mere connection between the seeker and the scripture, the knowledge of the self, which transcends all consciousness, manifests.

इस प्रकार, मुमुक्षु और शास्त्र के बीच केवल संबंध से, सभी चेतना से परे आत्मज्ञान प्रकट होता है।

7.197.26

अनयोः प्रेक्षणाद्देहे विवेको जायते यथा तथा स्वभावतः शास्त्रविवेकाज्ज्ञेयवेदनम् ॥ २६ ॥

anayoḥ prekṣaṇāddehe viveko jāyate yathā tathā svabhāvataḥ śāstravivekājjñeyavedanam || 26 ||

Just as discernment arises in the body from the observation of these two, so too, from the discernment of the scripture, the knowledge of the knowable arises naturally.

जैसे इन दोनों के अवलोकन से देह में विवेक उत्पन्न होता है, वैसे ही, शास्त्र के विवेक से ज्ञेय का ज्ञान स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है।

7.197.27

लोष्टेन लोष्टं सलिले क्षालयन्बालको यथा क्षयेण लोष्टयोर्हस्तनैर्मल्यं लभते परम ॥ २७ ॥

loṣṭena loṣṭaṃ salile kṣālayanbālako yathā kṣayeṇa loṣṭayorhastanairmalyaṃ labhate param || 27 ||

Just as a child, by rubbing one mud clod against another in water, eventually cleans both hands, similarly, by rubbing the impurities of the mind through the practice of scriptural teachings, one attains the highest purity.

जैसे एक बच्चा पानी में एक मिट्टी के टुकड़े को दूसरे मिट्टी के टुकड़े से रगड़कर अपने हाथ साफ करता है, उसी प्रकार शास्त्रों के विकल्पों से मन की विकल्पनाओं को रगड़कर स्वयं के विचार से परम शुद्धता प्राप्त करता है।

7.197.28

तथा शास्त्रविकल्पौघैर्विकल्पांश्चेतनाद्बुधः क्षालयन्स्वविचारेण परमां याति शुद्धताम् ॥ २८ ॥

tathā śāstravikalpaughairvikalpāṃścetanādbudhaḥ kṣālayansvavicāreṇa paramāṃ yāti śuddhatām || 28 ||

Similarly, by the multitude of scriptural teachings, the wise one, by rubbing away the mental impurities through self-inquiry, attains the highest purity.

उसी प्रकार, शास्त्रीय विकल्पों के समूह से, बुद्धिमान व्यक्ति स्वयं के विचार से मानसिक विकल्पनाओं को रगड़कर परम शुद्धता प्राप्त करता है।

7.197.29

महावाक्यार्थनिष्यन्दं स्वात्मज्ञानमवाप्यते शास्त्रादेरिक्षुरसतः स्वाद्विव स्वानुभूतितः ॥ २९ ॥

mahāvākyārthaniṣyandaṃ svātmajñānamavāpyate śāstrāderikṣurasataḥ svādviva svānubhūtitaḥ || 29 ||

The knowledge of the self is attained by the outpouring of the meaning of the great sayings, just as the sweetness of sugarcane is experienced directly.

स्वयं के ज्ञान को महावाक्यों के अर्थ के निष्यन्दन से प्राप्त किया जाता है, जैसे ईख की मिठास सीधे अनुभव की जाती है।

7.197.30

प्रभाभित्योः समासङ्गाद्यथा''लोको''नुभूयते श्रुतश्रुतवतोः सङ्गादात्मज्ञानं तथा भवेत् ॥ ३० ॥

prabhābhityoḥ samāsaṅgādyathā''loko''nubhūyate śrutaśrutavatoḥ saṅgādātmajñānaṃ tathā bhavet || 30 ||

Just as the world is experienced through the contact of light and sight, similarly, self-knowledge is attained through the contact of the heard and the hearer.

जैसे प्रकाश और दृष्टि के संपर्क से संसार का अनुभव होता है, उसी प्रकार सुने हुए और सुनने वाले के संपर्क से आत्मज्ञान प्राप्त होता है।

7.197.31

त्रिवर्गमात्रसिद्ध्यै यन्न मोक्षाय च तच्छ्रुतम् विपुलश्रुतचर्चासु तुच्छमश्रुतमेव तत् ॥ ३१ ॥

trivargamātrasiddhyai yanna mokṣāya ca tacchrutam vipulaśrutacarcāsu tucchamaśrutameva tat || 31 ||

That which is heard only for the attainment of the three worldly goals and not for liberation is considered insignificant even in extensive scriptural discussions.

जो केवल तीन लोकिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सुना जाता है और मुक्ति के लिए नहीं, वह विस्तृत शास्त्रीय चर्चाओं में भी तुच्छ माना जाता है।

7.197.32

तच्छ्रुतं यत्किल ज्ञप्त्यै सा ज्ञप्तिः समता यया तत्साम्यं यत्र सौषुप्ती स्थितिर्जाग्रति जायते ॥ ३२ ॥

tacchrutaṃ yatkila jñaptyai sā jñaptiḥ samatā yayā tatsāmyaṃ yatra sauṣuptī sthitirjāgrati jāyate || 32 ||

Whatever is heard for the purpose of knowledge, that knowledge is equality. Where there is equality, deep sleep arises, and from that state, wakefulness is born.

जो कुछ भी ज्ञान के लिए सुना जाता है, वह ज्ञान समता है। जहाँ समता है, वहाँ गहरी नींद उत्पन्न होती है, और उस अवस्था से जागरूकता उत्पन्न होती है।

7.197.33

एवं हि सर्वमेतत्तच्छास्त्रादेः समवाप्यते तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शास्त्राद्यभ्यासमाहरेत् ॥ ३३ ॥

evaṃ hi sarvametattacchāstrādeḥ samavāpyate tasmātsarvaprayatnena śāstrādyabhyāsamāharet || 33 ||

Thus, all this is attained from the scriptures and other sources. Therefore, one should strive with all effort to practice the scriptures and other sources.

इस प्रकार, यह सब कुछ शास्त्रों और अन्य स्रोतों से प्राप्त होता है। इसलिए, एक को पूरे प्रयास से शास्त्रों और अन्य स्रोतों का अभ्यास करना चाहिए।

7.197.34

शास्त्रार्थभावनवशेन गिरा गुरूणां सत्सङ्गमेन नियमेन शमेन राम तत्प्राप्यते सकलविश्वपदादतीतं सर्वेश्वरं परममाद्यमनादिशर्म ॥ ३४ ॥

śāstrārthabhāvanavaśena girā gurūṇāṃ satsaṅgamena niyamena śamena rāma tatprāpyate sakalaviśvapadādatītaṃ sarveśvaraṃ paramamādyamanādiśarma || 34 ||

By the power of contemplating the meaning of the scriptures, through the words of the gurus, by good company, through discipline and tranquility, O Rama, that which is beyond the entire universe, the supreme Lord, the primordial bliss, is attained.

शास्त्रों के अर्थ पर चिंतन करने की शक्ति से, गुरुओं के शब्दों द्वारा, सत्संग से, अनुशासन और शांति से, हे राम, वह प्राप्त होता है जो सम्पूर्ण विश्व से परे है, परमेश्वर, आदिम आनंद।

Chapter 198

7.198.1

श्रीवसिष्ठ उवाच भूयो निपुणबोधाय श्रुणु किंचिद्रघूद्वह पुनःपुनर्यत्कथितं तदज्ञेऽप्यवतिष्ठते ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca bhūyo nipuṇabodhāya śrṛṇu kiṃcidraghūdvaha punaḥpunaryatkathitaṃ tadajñe'pyavatiṣṭhate || 1 ||

Sri Vasistha said: Listen, O Raghava, to something more for your clear understanding, which has been repeatedly said but still remains unknown to the ignorant.

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे रघुनाथ, तुम्हारे स्पष्ट बोध के लिए कुछ और सुनो, जो बार-बार कहा गया है लेकिन अज्ञानियों के लिए अभी भी अज्ञात है।

7.198.2

राघव प्रथमं प्रोक्तं स्थितिप्रकरणं मया येनेदमित्थमुत्पन्नमिति विज्ञायते जगत् ॥ २ ॥

rāghava prathamaṃ proktaṃ sthitiprakaraṇaṃ mayā yenedamitthamutpannamiti vijñāyate jagat || 2 ||

O Raghava, first I have explained the topic of stability, by which this world is known to have arisen in this manner.

हे रघुनाथ, पहले मैंने स्थिति का विषय समझाया है, जिससे यह जगत इस प्रकार उत्पन्न हुआ है, यह ज्ञात होता है।

7.198.3

ततो जगति जातेन परोपशमशालिना भवितव्यमिति प्रोक्तं मयोपशमयुक्तिभिः ॥ ३ ॥

tato jagati jātena paropaśamaśālinā bhavitavyamiti proktaṃ mayopaśamayuktibhiḥ || 3 ||

Therefore, it has been said by me with reasons for tranquility that one should become endowed with the highest tranquility when the world has arisen.

इसलिए, जब जगत उत्पन्न हो जाता है, तो मैंने शांति के कारणों से कहा है कि कोई भी उच्चतम शांति से युक्त होना चाहिए।

7.198.4

उपशान्तिप्रकरणे प्रोक्तैरुपशमक्रमैः परमोपशमं गत्वा वस्तव्यमिह विज्वरम् ॥ ४ ॥

upaśāntiprakaraṇe proktairupaśamakramaiḥ paramopaśamaṃ gatvā vastavyamiha vijvaram || 4 ||

In the topic of tranquility, having attained the highest tranquility through the steps of tranquility that have been explained, one should dwell here free from afflictions.

शांति के विषय में, जिन शांति के चरणों को समझाया गया है, उनके द्वारा उच्चतम शांति प्राप्त करके, कोई यहां कष्टों से मुक्त होकर रहना चाहिए।

7.198.5

प्राप्तप्राप्येण तज्ज्ञेन यथा संसारदृष्टिषु विहर्तव्यं हि नः किंचित्स्वल्पं श्रोतव्यमस्ति ते ॥ ५ ॥

prāptaprāpyeṇa tajjñena yathā saṃsāradṛṣṭiṣu vihartavyaṃ hi naḥ kiṃcitsvalpaṃ śrotavyamasti te || 5 ||

Having attained what is to be attained and knowing that, one should behave accordingly in the views of the world. There is something small that should be heard by you.

जो प्राप्त करना है उसे प्राप्त करके और उसे जानकर, कोई संसार की दृष्टियों में उसी प्रकार व्यवहार करना चाहिए। तुम्हारे लिए कुछ छोटा सुनना है।

7.198.6

जन्म संप्राप्य जगति बाल्य एव जगत्स्थितिम् यथाभूतामिमां बुद्ध्वा वस्तव्यमिह विज्वरम् ॥ ६ ॥

janma saṃprāpya jagati bālya eva jagatsthitim yathābhūtāmimāṃ buddhvā vastavyamiha vijvaram || 6 ||

Having obtained birth in this world, one should understand the true nature of the world from childhood itself and live here without anxiety.

जन्म लेकर इस जगत में, बचपन से ही जगत की यथार्थ स्थिति को समझकर यहाँ चिंता रहित रहना चाहिए।

7.198.7

सर्वसौहार्दजननीं सर्वस्याश्वासकारिणीम् समतामलमाश्रित्य विहर्तव्यमिहानघ ॥ ७ ॥

sarvasauhārdajananīṃ sarvasyāśvāsakāriṇīm samatāmalamāśritya vihartavyamihānagha || 7 ||

One should enjoy life here, taking refuge in the pure equality that is the mother of all affection and the giver of assurance to all, O sinless one.

हे निष्पाप, सभी स्नेह की माता और सभी को आश्वासन देने वाली शुद्ध समता का आश्रय लेकर यहाँ जीवन का आनंद लेना चाहिए।

7.198.8

सर्वसंपत्तिसुभगं सर्वसौभाग्यवर्धनम् समतासुलतायास्तु फलं भवति पावनम् ॥ ८ ॥

sarvasaṃpattisubhagaṃ sarvasaubhāgyavardhanam samatāsulatāyāstu phalaṃ bhavati pāvanam || 8 ||

The fruit of pure equality is auspicious, increasing all prosperity and good fortune, and is purifying.

शुद्ध समता का फल शुभ, सभी समृद्धि और भाग्य को बढ़ाने वाला और पवित्र होता है।

7.198.9

समतासुभगेहानां कुर्वतां प्रकृतं क्रमम् सर्वैवयं जगल्लक्ष्मीर्भृत्यतामेति राघव ॥ ९ ॥

samatāsubhagehānāṃ kurvatāṃ prakṛtaṃ kramam sarvaiveyaṃ jagallakṣmīrbhṛtyatāmeti rāghava || 9 ||

O Raghava, for those who maintain the natural order with the beauty of equality, all this worldly prosperity comes to serve them.

हे रघुनाथ, जो समता के सौंदर्य से प्राकृतिक क्रम को बनाए रखते हैं, उनके लिए यह सारी दुनिया की समृद्धि सेवा करती है।

7.198.10

न तदासाद्यते राज्यान्न कान्ताजनसंगमात् अनपायि सुखं सारं समत्वाद्यदवाप्यते ॥ १० ॥

na tadāsādyate rājyānna kāntājanasaṃgamāt anapāyi sukhaṃ sāraṃ samatvādyadavāpyate || 10 ||

That eternal happiness, which is the essence, is not obtained from kingship or from the company of beloved ones. It is attained from equality.

वह अनंत सुख, जो सार है, राज्य से या प्रियजनों के संग से नहीं प्राप्त होता। यह समता से प्राप्त होता है।

7.198.11

द्वन्द्वोपशमसीमान्तं संरम्भज्वरनाशनम् सर्वदुःखातपाम्भोदं समत्वं विद्धि राघव ॥ ११ ॥

dvandvopaśamasīmāntaṃ saṃrambhajvaranāśanam sarvaduḥkhātapāmbhodaṃ samatvaṃ viddhi rāghava || 11 ||

O Raghava, know equanimity to be the end of the cessation of dualities, the destroyer of the fever of anger, and the ocean that removes all sorrows.

हे रघुवंशी, समता को द्वंद्वों के शांत होने का अंत, क्रोध के ज्वर का नाशक और सभी दुःखों को दूर करने वाला समुद्र जानो।

7.198.12

मित्रीभूताखिलरिपुर्यथाभूतार्थदर्शनः दुर्लभो जगतां मध्ये साम्यामृतमयो जनः ॥ १२ ॥

mitrībhūtākhilaripuryathābhūtārthadarśanaḥ durlabho jagatāṃ madhye sāmyāmṛtamayo janaḥ || 12 ||

A person who sees all enemies as friends and perceives the reality as it is, is rare in the world and is filled with the nectar of equanimity.

जो व्यक्ति सभी शत्रुओं को मित्र की तरह देखता है और वास्तविकता को जैसा है वैसा ही देखता है, वह दुर्लभ है और समता के अमृत से भरा हुआ है।

7.198.13

प्रबुद्धस्य स्वचित्तेन्दोर्निष्यन्दममृताधिकम् साम्यमास्वाद्य जीवन्ति सर्वे वै जनकादयः ॥ १३ ॥

prabuddhasya svacittendorniṣyandamamṛtādhikam sāmyamāsvādya jīvanti sarve vai janakādayaḥ || 13 ||

All enlightened beings like Janaka live by experiencing the nectar of equanimity, which flows from their own awakened minds.

जनक जैसे सभी जागृत व्यक्ति अपने जागृत मन से बहने वाले समता के अमृत का अनुभव करके जीते हैं।

7.198.14

साम्यमभ्यस्यतो जन्तोः स्वदोषोऽपि गुणायते दुःखं सुखायते नित्यं मरणं जीवितायते ॥ १४ ॥

sāmyamabhyasyato jantoḥ svadoṣo'pi guṇāyate duḥkhaṃ sukhāyate nityaṃ maraṇaṃ jīvitāyate || 14 ||

For a person who practices equanimity, even their own faults become virtues, sorrow becomes happiness, and death becomes life.

जो व्यक्ति समता का अभ्यास करता है, उसके लिए उसके अपने दोष भी गुण बन जाते हैं, दुःख सुख बन जाता है, और मृत्यु जीवन बन जाती है।

7.198.15

साम्यसौन्दर्यसुभगं वनिता मुदितादिकाः आलिङ्गन्ति महात्मानं नित्यं व्यसनिता इव ॥ १५ ॥

sāmyasaundaryasubhagaṃ vanitā muditādikāḥ āliṅganti mahātmānaṃ nityaṃ vyasanitā iva || 15 ||

Women who are beautiful with the grace of equanimity, joyful, and always in distress, embrace the great souls as if they are always in distress.

जो स्त्रियाँ समता के सौंदर्य से सुशोभित हैं, आनंदित हैं, और हमेशा दुःखी हैं, वे महात्माओं को ऐसे आलिंगन करती हैं जैसे वे हमेशा दुःखी हों।

7.198.16

समः समुदितो नित्यं समोऽनुदितधीः सदा न काश्चिदिह ताः सन्ति याः समस्य हि नर्धयः ॥ १६ ॥

samaḥ samudito nityaṃ samo'nuditadhīḥ sadā na kāścidiha tāḥ santi yāḥ samasya hi nardhayaḥ || 16 ||

One who is always equanimous and joyful, with a mind that is never disturbed, does not have any enemies in this world.

जो हमेशा समभाव और आनंदित रहता है, जिसका मन कभी विचलित नहीं होता, उसके कोई शत्रु इस दुनिया में नहीं होते।

7.198.17

सर्वकार्यसमं साधुं प्रकृतव्यवहारिणम् चिन्तामणिमिवोदारं प्रवाञ्छन्ति नरामराः ॥ १७ ॥

sarvakāryasamaṃ sādhuṃ prakṛtavyavahāriṇam cintāmaṇimivodāraṃ pravāñchanti narāmarāḥ || 17 ||

Good people who are equanimous in all actions and behave naturally are sought after like the wish-fulfilling gem.

जो सभी कार्यों में समभाव रखते हैं और स्वाभाविक रूप से व्यवहार करते हैं, ऐसे सज्जन पुरुषों की खोज होती है, जैसे चिंतामणि की होती है।

7.198.18

सम्यक्कारिणमुद्दाममुदितं समचेतसम् न दहन्त्यग्नयो राम नापः सिञ्चन्ति मानवम् ॥ १८ ॥

samyakkāriṇamuddāmamuditaṃ samacetasam na dahantyagnayo rāma nāpaḥ siñcanti mānavam || 18 ||

O Rama, the fires do not burn and the waters do not wet the person who is righteous, noble, joyful, and has an equanimous mind.

हे राम, जो व्यक्ति धर्मात्मा, उदार, आनंदित और समभाव मन वाला होता है, उसे आग नहीं जलाती और पानी नहीं भिगोता।

7.198.19

यद्यथा तत्तथा येन क्रियते दृश्यते तथा आनन्दोद्वेगमुक्तेन कस्तं तोलयितुं क्षमः ॥ १९ ॥

yadyathā tattathā yena kriyate dṛśyate tathā ānandodvegamuktena kastaṃ tolayituṃ kṣamaḥ || 19 ||

Whatever happens, happens as it is meant to be. It is seen as it is. Who is capable of weighing one who is free from joy and sorrow?

जो कुछ भी होता है, वह उसी तरह से होता है जैसे उसे होना चाहिए। वह उसी तरह से देखा जाता है। जो आनंद और दुःख से मुक्त है, उसे कौन तौल सकता है?

7.198.20

मित्राणि बन्धुरिपवो राजानो व्यवहारिणः सम्यक्कारिणि तत्त्वज्ञे विश्वसन्ति महाधियः ॥ २० ॥

mitrāṇi bandhuripavo rājāno vyavahāriṇaḥ samyakkāriṇi tattvajñe viśvasanti mahādhiyaḥ || 20 ||

Friends, relatives, enemies, and kings who are engaged in worldly affairs trust the wise and righteous person.

दोस्त, रिश्तेदार, दुश्मन और राजा जो दुनियावी मामलों में लगे हुए हैं, बुद्धिमान और धर्मात्मा व्यक्ति पर भरोसा करते हैं।

7.198.21

नानिष्टात्प्रपलायन्ते नेष्टादायान्ति तुष्टताम् प्रकृतक्रमसंप्राप्तास्तत्त्वज्ञाः समदर्शिनः ॥ २१ ॥

nāniṣṭātprapalāyante neṣṭādāyānti tuṣṭatām prakṛtakramasaṃprāptāstattvajñāḥ samadarśinaḥ || 21 ||

Those who have realized the truth do not flee from adversity nor rush towards pleasure. They remain equanimous, accepting whatever comes naturally.

जो लोग सत्य को जानते हैं, वे दुःख से भागते नहीं हैं और न ही सुख की ओर दौड़ते हैं। वे प्राकृतिक क्रम से जो भी आता है, उसे स्वीकार करते हुए समभाव से रहते हैं।

7.198.22

त्यक्त्वा सर्वानुपादेयान्राम भावाननिन्दितान् समतायामदुःखायां दधाना वृत्तिमुत्तमाम् ॥ २२ ॥

tyaktvā sarvānupādeyānrāma bhāvānaninditān samatāyāmaduḥkhāyāṃ dadhānā vṛttimuttamām || 22 ||

O Rama, having abandoned all blameless desires, they maintain the highest conduct in equanimity and absence of sorrow.

हे राम, सभी निंदारहित भावों को त्यागकर, वे समभाव और दुःख की अनुपस्थिति में उत्तम आचरण बनाए रखते हैं।

7.198.23

विहसन्ति जगज्जालं जीवयन्ति निरामयाः पूज्यन्ते विबुधैः सर्वैः समतामुदिताशयाः ॥ २३ ॥

vihasanti jagajjālaṃ jīvayanti nirāmayāḥ pūjyante vibudhaiḥ sarvaiḥ samatāmuditāśayāḥ || 23 ||

They enjoy the world without attachment, enliven others without affliction, and are revered by all wise beings with a mind of equanimity.

वे आसक्ति के बिना संसार का आनंद लेते हैं, कष्ट के बिना दूसरों को जीवंत बनाते हैं, और समभाव के मन से सभी बुद्धिमान प्राणियों द्वारा सम्मानित होते हैं।

7.198.24

प्रकृतक्रमसंप्राप्तं मुखेन्दौ कोपमेव यः समाशयो धारयति स्यात्सौम्यामृतवज्जनः ॥ २४ ॥

prakṛtakramasaṃprāptaṃ mukhendau kopameva yaḥ samāśayo dhārayati syātsaumyāmṛtavajjanaḥ || 24 ||

One who maintains equanimity even when faced with anger from the moon and the sun, such a person is as soothing as nectar.

जो चंद्रमा और सूर्य से क्रोध का सामना करके भी समभाव बनाए रखता है, ऐसा व्यक्ति अमृत के समान शांतिदायक होता है।

7.198.25

यत्करोति यदश्नाति यदाक्रामति निन्दति समदृष्टिस्तदस्येयं स्तौति नित्यं जनावलिः ॥ २५ ॥

yatkaroti yadaśnāti yadākrāmati nindati samadṛṣṭistadasyeyaṃ stauti nityaṃ janāvaliḥ || 25 ||

Whatever one does, eats, moves, or criticizes, with equanimity, that is praised by people always.

जो कुछ भी करता है, खाता है, चलता है, या निंदा करता है, समभाव से, वह हमेशा लोगों द्वारा प्रशंसित होता है।

7.198.26

यच्छुभं वाशुभं यच्च यच्चिरेण यदद्य वा समदृष्टिकृतं सम्यगभिनन्दति तज्जनः ॥ २६ ॥

yacchubhaṃ vāśubhaṃ yacca yaccireṇa yadadya vā samadṛṣṭikṛtaṃ samyagabhinandati tajjanaḥ || 26 ||

Whatever is good or bad, whatever has happened in the past or is happening now, a person who sees all with equanimity and rejoices in it is a wise person.

जो भी अच्छा या बुरा है, जो भी पहले हुआ है या अभी हो रहा है, जो व्यक्ति सबको समान दृष्टि से देखता है और उसमें आनंद लेता है, वह बुद्धिमान व्यक्ति है।

7.198.27

सुखदुःखेषु भीमेषु संततेषु महत्स्वपि मनागपि न वैरस्यं प्रयान्ति समदृष्टयः ॥ २७ ॥

sukhaduḥkheṣu bhīmeṣu saṃtateṣu mahatsvapi manāgapi na vairasyaṃ prayānti samadṛṣṭayaḥ || 27 ||

Those who have equanimity do not harbor enmity even in great happiness, sorrow, fear, or continuous difficulties.

जो लोग समता रखते हैं, वे बड़े सुख, दुःख, भय या लगातार कठिनाइयों में भी द्वेष नहीं रखते।

7.198.28

शिबिर्भूपः कपोताय मांसमङ्गविकर्तनम् ददौ मुदितया बुद्ध्या समदृष्टितयानया ॥ २८ ॥

śibirbhūpaḥ kapotāya māṃsamaṅgavikartanam dadau muditayā buddhyā samadṛṣṭitayānayā || 28 ||

King Shibi gave his own flesh to a dove with a joyful mind and with equanimity.

राजा शिबि ने एक कबूतर को अपने मांस का टुकड़ा दिया, जिसमें उनका मन प्रसन्न था और उनमें समता थी।

7.198.29

प्राणेभ्योऽपि प्रियतमां कान्तामग्रे विकालिताम् दृष्ट्वाप्यङ्ग महीपालो न ममोह समाशयः ॥ २९ ॥

prāṇebhyo'pi priyatamāṃ kāntāmagre vikālitām dṛṣṭvāpyaṅga mahīpālo na mumoha samāśayaḥ || 29 ||

Even after seeing his beloved wife, who was dearer than life, lying dead before him, the king did not lose his composure.

अपनी प्रिय पत्नी को, जो उनके प्राणों से भी प्यारी थी, मृत अवस्था में देखकर भी राजा ने अपना संयम नहीं खोया।

7.198.30

मनोरथशतप्राप्तं तनयं समया धिया राक्षसाय त्रिगर्तेशो ददौ स्वपणहारितम् ॥ ३० ॥

manorathaśataprāptaṃ tanayaṃ samayā dhiyā rākṣasāya trigarteśo dadau svapaṇahāritam || 30 ||

The king of Trigarta, with a calm mind, gave his son, who was the fulfillment of a hundred desires, to a demon.

त्रिगर्त के राजा ने, शांत मन से, अपने बेटे को, जो सौ इच्छाओं की पूर्ति था, एक राक्षस को दे दिया।

7.198.31

नगर्यां दह्यमानायां भूषितायां तथोत्सवे सम एव महीपालो जनको भूभृतां वर ॥ ३१ ॥

nagaryāṃ dahyamānāyāṃ bhūṣitāyāṃ tathotsave sama eva mahīpālo janako bhūbhṛtāṃ vara || 31 ||

In the city that was burning and decorated during the festival, King Janaka, the best among the rulers of the earth, was equally present.

जलती और सजी हुई नगरी में उत्सव के समय, राजा जनक, पृथ्वी के शासकों में श्रेष्ठ, समान रूप से उपस्थित थे।

7.198.33

कुण्डप्रकरनिर्भासं यज्ञे पाण्डुमिवाचलम् जहौ जरत्तृणमिव सौवीरः समया धिया ॥ ३३ ॥

kundaprakaranirbhāsaṃ yajñe pāṇḍumivācalam jahau jarattṛṇamiva sauvīraḥ samayā dhiyā || 33 ||

In the sacrifice, Sauvīra abandoned the shining Kunda fortress, which looked like a pale mountain, as if it were old grass, with a resolute mind.

यज्ञ में, सौवीर ने एक प्रतिज्ञा के साथ मन से, पुराने घास की तरह, चमकते हुए कुण्ड किले को छोड़ दिया, जो एक फीके पर्वत की तरह दिखाई देता था।

7.198.34

समयैव धिया नित्यं निजमभ्याहरन्क्रमम् मातङ्गः कुण्डपो नाम प्राप वैमानिकस्थितिम् ॥ ३४ ॥

samayaiva dhiyā nityaṃ nijamabhyāharankramam mātaṅgaḥ kuṇḍapo nāma prāpa vaimānikasthitim || 34 ||

With a resolute mind always, Mātaṅga, named Kuṇḍapa, gradually spoke his own words and attained the celestial position.

एक प्रतिज्ञा के साथ मन से हमेशा, मातंग, जिसका नाम कुण्डप था, धीरे-धीरे अपने शब्द बोला और दिव्य स्थिति प्राप्त की।

7.198.35

सर्वभूतक्षयकरीं साम्याभ्यासेन भूरिणा तत्याज राक्षसीं वृत्तिं कदम्बवनराक्षसः ॥ ३५ ॥

sarvabhūtakṣayakarīṃ sāmyābhyāsena bhūriṇā tatyāja rākṣasīṃ vṛttiṃ kadambavanarākṣasaḥ || 35 ||

The demon of the Kadamba forest, through the abundant practice of equanimity, abandoned the demonic nature that causes the destruction of all beings.

कदम्ब वन का राक्षस, समता के अभ्यास से विपुलता से, सभी प्राणियों के विनाश करने वाली राक्षसी प्रवृत्ति को छोड़ दिया।

7.198.36

बालचन्द्राभिजातोऽपि समबुद्धितया जडः गुडमोदकवन्न्यायप्राप्तमग्निमभक्षयत् ॥ ३६ ॥

bālacandrābhijāto'pi samabuddhitayā jaḍaḥ guḍamodakavannyāyaprāptamagnimabhakṣayat || 36 ||

Although born with the beauty of a young moon, he was dull due to his equanimity and, following the logic of sweet balls, he consumed the fire he obtained.

यद्यपि उसका जन्म एक नवचंद्र की सुंदरता के साथ हुआ था, फिर भी उसकी समता के कारण वह मूर्ख था और, लड्डू की तर्क का अनुसरण करते हुए, उसने प्राप्त अग्नि को खा लिया।

7.198.37

समबुद्धितया क्रूरव्यवहारपरोऽपि सन् धर्मव्याधस्तनुं त्यक्त्वा जगाम परमं पदम ॥ ३७ ॥

samabuddhitayā krūravyavahāraparo'pi san dharmavyādhastanuṃ tyaktvā jagāma paramaṃ padam || 37 ||

Even though he was engaged in cruel deeds, with equanimity, Dharmavyadha, having abandoned his body, attained the supreme state.

भले ही उसने क्रूर कार्य किए, लेकिन समभाव से धर्मव्याध ने अपने शरीर को छोड़कर परम पद प्राप्त किया।

7.198.38

नन्दनोद्यानसंस्थोऽपि पुरुषोऽपि कपर्दनः लुलुभे न सुरस्त्रीषु नूनं प्रणयिनीष्वपि ॥ ३८ ॥

nandanodyānasaṃstho'pi puruṣo'pi kapardanaḥ lulubhe na surastrīṣu nūnaṃ praṇayinīṣvapi || 38 ||

Even though he was in the Nandana garden, and even though he was a man with matted hair, he did not lust after the celestial women, even though they were loving.

भले ही वह नंदन उद्यान में था और जटाओं वाला पुरुष था, फिर भी वह सुंदर और प्रेमी देवांगनाओं पर मोहित नहीं हुआ।

7.198.39

न्यायतः परिविक्रीतं साल्वराट समदर्शनः स्वमेव विचकर्ताशु शिरः पद्मदलं यथा ॥ ३९ ॥

nyāyataḥ parivikrītaṃ sālvarāṭ samadarśanaḥ svameva vicakartāśu śiraḥ padmadalaṃ yathā || 39 ||

Righteously, having sold himself, King Shalva, with equanimity, immediately cut off his own head like a lotus petal.

न्यायपूर्वक, अपने आप को बेचने के बाद, राजा शाल्व, समभाव से, तुरंत अपना सिर कमल के पत्ते की तरह काट लिया।

7.198.40

ऋषयो मुनयश्चैव ये सिद्धाः सुरपूजिताः समदृष्टितयोद्विग्ना न ते तासु व्रतर्द्धिषु ॥ ४० ॥

ṛṣayo munayaścaiva ye siddhāḥ surapūjitāḥ samadṛṣṭitayodvignā na te tāsu vratarddhiṣu || 40 ||

The sages and saints, who are accomplished and worshipped by the gods, are not disturbed by those who are engaged in severe austerities with equanimity.

ऋषि और मुनि, जो सिद्ध और देवताओं द्वारा पूजित हैं, समभाव से कठोर तपस्या करने वालों से विचलित नहीं होते।

7.198.41

राजानः प्राकृताश्चैव धर्मव्याधादयोऽपरे समदृष्टिपदाभ्यासान्महतां पूज्यतां गताः ॥ ४१ ॥

rājānaḥ prākṛtāścaiva dharmavyādhādayo'pare samadṛṣṭipadābhyāsānmahatāṃ pūjyatāṃ gatāḥ || 41 ||

Ordinary kings and others like Dharmavyadha, through the practice of equanimity, have attained the revered status of the great.

सामान्य राजा और दूसरे जैसे धर्मव्याध, समभाव के अभ्यास से, महान की पूज्य स्थिति प्राप्त कर चुके हैं।

7.198.42

इहामुत्र च सिद्ध्यर्थे पुरुषार्थप्रवृत्तये समदृष्टितया नित्यं विचरन्ति सुबुद्धयः ॥ ४२ ॥

ihāmutra ca siddhyarthe puruṣārthapravṛttaye samadṛṣṭitayā nityaṃ vicaranti subuddhayaḥ || 42 ||

The wise, with equanimity, always move forward for the attainment of goals in this world and the next.

सुबुद्ध लोग समान दृष्टि से इस लोक और परलोक के पुरुषार्थों के लिए निरंतर आगे बढ़ते हैं।

7.198.43

अभिवाञ्छेन्न मरणमभिवाञ्छेन्न जीवितम् यथाप्राप्तसमाचारो विचरेदविहिंसकः ॥ ४३ ॥

abhivāñchenna maraṇamabhivāñchenna jīvitam yathāprāptasamācāro vicaredavihiṃsakaḥ || 43 ||

One should neither desire death nor life, but should live according to the circumstances that come one's way, without causing harm.

कोई न मरण की इच्छा करे और न जीवन की, बल्कि जो परिस्थितियाँ आएँ उसके अनुसार जीवन जीए, बिना किसी को हानि पहुँचाए।

7.198.44

समकलितगुणागुणैकभावः समसुखदुःखपरावरो विलासी प्रविचरति समावमानमानः प्रकृतवरव्यवहारपूतमूर्तिः ॥ ४४ ॥

samakalitaguṇāguṇaikabhāvaḥ samasukhaduḥkhaparāvaro vilāsī pravicarati samāvamānamānaḥ prakṛtavaravyavahārapūtamūrtiḥ || 44 ||

One who is balanced in qualities and defects, experiencing pleasure and pain equally, moves freely, neither honoring nor disrespecting, with a pure nature.

जो गुणों और दोषों में समान है, सुख-दुःख को बराबर अनुभव करता है, वह स्वतंत्र रूप से चलता है, न सम्मान करता है न अपमान, स्वाभाविक रूप से शुद्ध है।

Chapter 199

7.199.1

श्रीराम उवाच नित्यं ज्ञानैकनिष्ठत्वादात्मारामतया तथा मुक्तैः कर्मपरित्यागः कस्मान्न क्रियते मुने ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca nityaṃ jñānaikaniṣṭhatvādātmārāmatayā tathā muktaiḥ karmaparityāgaḥ kasmānna kriyate mune || 1 ||

Śrī Rāma said: O Sage, why do the liberated ones, who are always devoted to the single pursuit of knowledge and are content in the Self, not renounce actions?

श्री राम ने कहा: हे मुनि, जो लोग ज्ञान के एकमात्र निष्ठावान हैं और आत्मा में आनंदित हैं, वे मुक्त लोग कर्मों का परित्याग क्यों नहीं करते?

7.199.2

श्रीवसिष्ठ उवाच हेयोपादेयदृष्टी द्वे यस्य क्षीणे हि तस्य वै क्रियात्यागेन कोऽर्थः स्यात्क्रियासंश्रयणेन वा ॥ २ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca heyopādeyadṛṣṭī dve yasya kṣīṇe hi tasya vai kriyātyāgena ko'rthaḥ syātkriyāsaṃśrayaṇena vā || 2 ||

Vasiṣṭha said: O Rāma, when the dual vision of acceptance and rejection is destroyed, what is the purpose of renouncing actions or engaging in them?

वसिष्ठ ने कहा: हे राम, जब स्वीकार और अस्वीकार की द्वैत दृष्टि नष्ट हो जाती है, तो कर्मों का त्याग करने या उनमें लगे रहने का क्या प्रयोजन है?

7.199.3

न तदस्तीह यत्त्याज्यं ज्ञस्योद्वेगकरं भवेत् न वास्ति यदुपादेयं तज्ज्ञसंश्रयतां गतम् ॥ ३ ॥

na tadastīha yattyājyaṃ jñasyodvegakaraṃ bhavet na vāsti yadupādeyaṃ tajjñasaṃśreyatāṃ gatam || 3 ||

There is nothing in this world that should be renounced by the wise, as it causes distress. Nor is there anything that should be accepted, as it has already been accepted by the wise.

इस जगत में कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे ज्ञानी पुरुष को त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह उद्वेग उत्पन्न करती है। न ही कोई ऐसी चीज है जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि वह पहले ही ज्ञानी पुरुषों द्वारा स्वीकार की जा चुकी है।

7.199.4

ज्ञस्य नार्थः कर्मत्यागैर्नार्थः कर्मसमाश्रयैः तेन स्थितं यथा यद्यत्तत्तथैव करोत्यसौ ॥ ४ ॥

jñasya nārthaḥ karmatyāgairnārthaḥ karmasamāśrayaiḥ tena sthitaṃ yathā yadyattattathaiva karotyasau || 4 ||

For the wise, there is no purpose in renouncing actions or in engaging in them. Therefore, whatever is established as it is, he does accordingly.

ज्ञानी पुरुष के लिए, कर्मों का त्याग करने में या उनमें लगे रहने में कोई प्रयोजन नहीं है। इसलिए, जो कुछ भी स्थित है, वह उसी तरह से करता है।

7.199.5

यावदायुरियं राम निश्चितं स्पन्दते तनुः तद्यथाप्राप्तमव्यग्रं स्पन्दतामपरेण किम् ॥ ५ ॥

yāvadāyuriyaṃ rāma niścitaṃ spandate tanuḥ tadyathāprāptamavyagraṃ spandatāmapareṇa kim || 5 ||

O Rāma, as long as this body is alive, let it function as it has naturally received, without any effort. What else is there to do?

हे राम, जब तक यह शरीर जीवित है, यह जैसे प्राप्त है, उसी तरह से बिना किसी प्रयास के काम करे। और क्या करना है?

7.199.6

अन्यथान्यत्र चेत्कार्या क्रिया त्यक्त्वा निजं क्रमम् । समाने हि क्रियास्पन्दे को दोषः सत्क्रमे किल ॥ ६ ॥

anyathānyatra cetkāryā kriyā tyaktvā nijaṃ kramam| samāne hi kriyāspande ko doṣaḥ satkrame kila || 6 ||

If one abandons their own duties and performs actions inappropriately, there is no fault if the actions are performed in the right order.

यदि कोई अपने कर्तव्यों को छोड़कर अनुचित कार्य करता है, तो यदि कार्य सही क्रम में किए जाते हैं, तो कोई दोष नहीं है।

7.199.7

समया स्वच्छया बुद्ध्या सततं निर्विकारया । यथा यत्क्रियते राम तददोषाय सर्वदा ॥ ७ ॥

samayā svacchayā buddhyā satataṃ nirvikārayā| yathā yatkriyate rāma tadadoṣāya sarvadā || 7 ||

With a pure and unwavering mind, whatever is done, O Rama, is always faultless.

एक शुद्ध और अविकारी मन से, जो भी किया जाता है, हे राम, वह हमेशा दोषरहित होता है।

7.199.8

इह मह्यां महाबाहो बहवो बहुदृष्टयः । बहुधा बहुदोषेषु विहरन्ति विचक्षणाः ॥ ८ ॥

iha mahyāṃ mahābāho bahavo bahudṛṣṭayaḥ| bahudhā bahudoṣeṣu viharanti vicakṣaṇāḥ || 8 ||

O mighty-armed one, in this world, many wise people with various views enjoy themselves in various faults.

हे महाबाहो, इस दुनिया में, कई बुद्धिमान लोग विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ विभिन्न दोषों में आनंद लेते हैं।

7.199.9

गतसङ्गतया बुद्ध्या विहरन्ति यथास्थितेः । गृहस्थारम्भिणः केचिज्जीवन्मुक्ताः स्थिता भुवि ॥ ९ ॥

gatasaṅgatayā buddhyā viharanti yathāsthiteḥ| gṛhasthārambhiṇaḥ kecijjīvanmuktāḥ sthitā bhuvi || 9 ||

With a mind free from attachments, some householders who have embarked on their duties live liberated in this world.

आसक्ति से मुक्त मन से, कुछ गृहस्थ जो अपने कर्तव्यों में लगे हुए हैं, इस दुनिया में मुक्त रूप से रहते हैं।

7.199.10

तज्ज्ञा राजर्षयश्चान्ये वीतरागा भवादृशाः । असंसक्तधियो राज्यं कुर्वन्ति विगतज्वराः ॥ १० ॥

tajjñā rājarṣayaścānye vītarāgā bhavādṛśāḥ| asaṃsaktadhiyo rājyaṃ kurvanti vigatajvarāḥ || 10 ||

Other wise kings, free from passion and similar to you, with unattached minds, perform their royal duties without feverishness.

अन्य बुद्धिमान राजर्षि, जो आपके जैसे हैं और वासना से मुक्त हैं, आसक्ति से मुक्त मन से अपने राजकीय कर्तव्यों को ज्वर के बिना करते हैं।

7.199.11

केचित्प्रकृतवेदार्थव्यवहारानुसारिणः यज्ञशिष्टाशिनो नित्यमग्निहोत्रे व्यवस्थिताः ॥ ११ ॥

kecitprakṛtavedārthavyavahārānusāriṇaḥ yajñaśiṣṭāśino nityamagnihotre vyavasthitāḥ || 11 ||

Some follow the natural duties prescribed by the Vedas, always engaged in the performance of Agnihotra with the remnants of sacrifices.

कुछ लोग वेदों द्वारा निर्धारित प्राकृतिक कर्तव्यों का अनुसरण करते हैं, हमेशा यज्ञ के अवशेषों से अग्निहोत्र में लगे रहते हैं।

7.199.12

केचिच्चतुर्षु वर्णेषु ध्यानदेवार्चनादिकाम् स्वक्रियामनुतिष्ठन्तः स्थिता विविधयेहया ॥ १२ ॥

keciccaturṣu varṇeṣu dhyānadevārcanādikām svakriyāmanutiṣṭhantaḥ sthitā vividhayehayā || 12 ||

Some in the four varnas engage in meditation and worship of deities, performing their duties with various desires.

कुछ लोग चार वर्णों में ध्यान और देवताओं की पूजा में लगे हुए हैं, विभिन्न इच्छाओं के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए।

7.199.13

केचित्सर्वपरित्यागमन्तः कृत्वा महाशयाः सर्वकर्मपरा नित्यं तज्ज्ञा एवाज्ञवत्स्थिताः ॥ १३ ॥

kecitsarvaparityāgamantaḥ kṛtvā mahāśayāḥ sarvakarmaparā nityaṃ tajjñā evājñavatsthitāḥ || 13 ||

Some, having renounced everything internally, are great souls always engaged in all actions, knowing that knowledge.

कुछ लोग, सब कुछ आंतरिक रूप से त्याग कर, महान आत्माएँ हैं जो हमेशा सभी कर्मों में लगे रहते हैं, उस ज्ञान को जानते हुए।

7.199.14

स्वप्नेऽप्यदृष्टलोकासु मुग्धमुग्धमृगासु च वनावनीषु शून्यासु केचिद्ध्यानपरायणाः ॥ १४ ॥

svapne'pyadṛṣṭalokāsu mugdhamugdhamṛgāsu ca vanāvanīṣu śūnyāsu keciddhyānaparāyaṇāḥ || 14 ||

Some are devoted to meditation even in dreams, in unseen worlds, in innocent deer, in forests and deserts.

कुछ लोग ध्यान में लीन रहते हैं, Even in dreams, in unseen worlds, in innocent deer, in forests and deserts.

7.199.15

पुण्यवद्भिः सदा जुष्टे पुण्योपचयकारिणि शमशालिसमाचारे केचिदायतने स्थिताः ॥ १५ ॥

puṇyavadbhiḥ sadā juṣṭe puṇyopacayakāriṇi śamaśālisamācāre kecidāyatane sthitāḥ || 15 ||

Some are situated in the abode of virtuous conduct, always engaged in meritorious deeds that accumulate virtue.

कुछ लोग पुण्य कर्मों में हमेशा लगे रहते हैं, जो पुण्य का संचय करते हैं, शांतिपूर्ण और शिष्ट आचरण में स्थित हैं।

7.199.16

रागद्वेषप्रहाणार्थं त्यक्त्वा देशं समाशयाः केचिदन्यत्र देशे च पदमालम्ब्य संस्थिताः ॥ १६ ॥

rāgadveṣaprahāṇārthaṃ tyaktvā deśaṃ samāśayāḥ kecidanyatra deśe ca padamālambya saṃsthitāḥ || 16 ||

For the purpose of removing attachment and hatred, some, having abandoned their country with determination, are established in another country, having taken refuge in the path.

राग और द्वेष को दूर करने के लिए, कुछ लोग अपने देश को छोड़कर दृढ़ संकल्प से दूसरे देश में बस गए हैं, मार्ग का आश्रय लेकर।

7.199.17

वनाद्वनं पुराद्ग्रामं स्थानात्स्थानं गिरेर्गिरिम् भ्रमन्तः संस्थिताः केचित्संसारोच्छित्तये बुधाः ॥ १७ ॥

vanādvanaṃ purādgrāmaṃ sthānātsthānaṃ girergirim bhramantaḥ saṃsthitāḥ kecitsaṃsārocchittaye budhāḥ || 17 ||

Wandering from forest to forest, from city to village, from place to place, from mountain to mountain, some wise individuals are established for the purpose of cutting off the cycle of worldly existence.

वन से वन, पुर से ग्राम, स्थान से स्थान, गिरि से गिरि भटकते हुए, कुछ बुद्धिमान व्यक्ति संसार के चक्र को काटने के लिए स्थित हैं।

7.199.18

वाराणस्यां महापुर्यां प्रयागे चैव पावने श्रीपर्वते सिद्धपुरे बदर्याश्रमके तथा ॥ १८ ॥

vārāṇasyāṃ mahāpuryāṃ prayāge caiva pāvane śrīparvate siddhapure badaryāśramake tathā || 18 ||

In the great city of Varanasi, in the holy Prayag, on the sacred mountain Sri Parvata, in the abode of the accomplished, and in the hermitage of Badari, and so forth.

वाराणसी के महानगर में, पवित्र प्रयाग में, पावन श्री पर्वत पर, सिद्धों के निवास स्थान में, और बदरी के आश्रम में, और इसी तरह।

7.199.19

शालग्रामे महापुण्ये कलापग्रामकोटरे मथुरायां च पुण्यायां तथा कालञ्जरे गिरौ ॥ १९ ॥

śālagrāme mahāpuṇye kalāpagrāmakoṭare mathurāyāṃ ca puṇyāyāṃ tathā kālañjare girau || 19 ||

In the greatly holy Shalagrama, in the secluded village of Kalapa, in the sacred city of Mathura, and on the mountain Kalañjara.

महान पवित्र शालग्राम में, कलाप ग्राम के एकांत स्थान में, पावन मथुरा नगर में, और कालञ्जर पर्वत पर।

7.199.20

महेन्द्रवनगुल्मेषु गन्धमादनसानुषु दर्दुराचलवप्रेषु सह्यकाचलभूमिषु ॥ २० ॥

mahendravanagulmeṣu gandhamādanasānuṣu dardurācalavapreṣu sahyakācalabhūmiṣu || 20 ||

In the forests of Mahendra, in the peaks of Gandhamadana, in the valleys of Dardura, and in the lands of Sahyakacala.

महेन्द्र के वनों में, गन्धमादन की चोटियों पर, दर्दुर की घाटियों में, और सह्यकाचल की भूमि पर।

7.199.21

विन्ध्यशैलस्य कच्छेषु मलयस्योदरेषु च कैलासवनजालेषु ऋक्षवत्कुहरेषु च ॥ २१ ॥

vindhyaśailasya kaccheṣu malayasyodareṣu ca kailāsavanajāleṣu ṛkṣavatkuhareṣu ca || 21 ||

In the valleys of the Vindhya mountains, in the interior of the Malaya mountains, in the forests of Kailasa, and in the caves inhabited by bears.

विन्ध्य पर्वत की घाटियों में, मलय पर्वत के भीतर, कैलास के वनों में और भालू निवास करने वाली गुफाओं में।

7.199.22

एतेष्वन्येषु चान्येषु वनेष्वायतनेषु च तपस्विनस्तथा राम बहवो बहुदृष्टयः ॥ २२ ॥

eteṣvanyeṣu cānyeṣu vaneṣvāyataneṣu ca tapasvinastathā rāma bahavo bahudṛṣṭayaḥ || 22 ||

In these and other forests and hermitages, there are many ascetics with diverse views, O Rama.

इन और अन्य वनों और आश्रमों में, हे राम, बहुत से विविध दृष्टिकोण वाले तपस्वी हैं।

7.199.23

केचित्त्यक्तनिजाचाराः केचिच्च क्रमसंस्थिताः केचित्प्रबुद्धमतयो नित्यमुन्मत्तचेष्टिताः ॥ २३ ॥

kecittyaktanijācārāḥ kecicca kramasaṃsthitāḥ kecitprabuddhamatayo nityamunmattaceṣṭitāḥ || 23 ||

Some have abandoned their own practices, some follow a systematic approach, some are enlightened, and some always behave like madmen.

कुछ अपनी साधनाओं को त्याग चुके हैं, कुछ एक व्यवस्थित प्रणाली का अनुसरण करते हैं, कुछ बुद्धिमान हैं, और कुछ हमेशा पागलों की तरह व्यवहार करते हैं।

7.199.24

केचित्स्वदेशरहिताः केचित्त्यक्तनिजास्पदाः एकस्थानरताः केचिद्भ्रमन्तः केचिदास्थिताः ॥ २४ ॥

kecitsvadeśarahitāḥ kecittyaktanijāspadāḥ ekasthānaratāḥ kecidbhramantaḥ kecidāsthitāḥ || 24 ||

Some have left their native lands, some have abandoned their homes, some are devoted to staying in one place, some wander, and some remain stationary.

कुछ अपने स्वदेश को छोड़ चुके हैं, कुछ ने अपने घर को छोड़ दिया है, कुछ एक स्थान पर रहने में लगे हुए हैं, कुछ भटकते रहते हैं, और कुछ स्थिर रहते हैं।

7.199.25

एतेषां महतां मध्ये नभस्तलनिवासिनाम् पातालनिरतानां च दैत्यादीनां महामते ॥ २५ ॥

eteṣāṃ mahatāṃ madhye nabhastalanivāsinām pātālaniratānāṃ ca daityādīnāṃ mahāmate || 25 ||

Among these great beings, O wise one, are those who dwell in the sky, those who reside in the underworld, and demons.

इन महान प्राणियों में, हे महामते, आकाश में रहने वाले, पाताल में निवास करने वाले, और दैत्य शामिल हैं।

7.199.26

विज्ञातलोकपर्यायाः सम्यग्दर्शननिर्मलाः केचित्प्रबुद्धमतयो दृष्टदृश्यपरावराः ॥ २६ ॥

vijñātalokaparyāyāḥ samyagdarśananirmalāḥ kecitprabuddhamatayo dṛṣṭadṛśyaparāvarāḥ || 26 ||

Some, with awakened minds, are pure in right vision, understanding the seen and the seer, and are beyond the cycle of worldly existence.

कुछ लोग जागृत मन से सही दृष्टि से पवित्र हैं, देखे गए और देखने वाले को समझते हैं, और संसार के चक्र से परे हैं।

7.199.27

अप्रबुद्धधियः केचिद्दोलान्दोलितचेतसः निवृत्ताः पापकाचारात्सुजनानुगताः स्थिताः ॥ २७ ॥

aprabuddhadhiyaḥ keciddolāndolitacetasaḥ nivṛttāḥ pāpakācārātsujanānugatāḥ sthitāḥ || 27 ||

Some, with unawakened minds, are swayed by doubts, have given up sinful conduct, and are steadfast in the company of the virtuous.

कुछ लोग जिनके मन जागृत नहीं हैं, संदेहों से घिरे हुए हैं, पाप कर्मों से दूर हैं, और सज्जनों के साथ स्थिर हैं।

7.199.28

अर्धप्रबुद्धमतयः केचिज्ज्ञानावलेपतः परित्यक्तक्रियाचारा उभयभ्रष्टता गताः ॥ २८ ॥

ardhaprabuddhamatayaḥ kecijjñānāvalepataḥ parityaktakriyācārā ubhayabhraṣṭatā gatāḥ || 28 ||

Some, with half-awakened minds, are smeared with a little knowledge, have abandoned righteous conduct, and have fallen into a state of dual confusion.

कुछ लोग आधे जागृत मन वाले हैं, थोड़े ज्ञान से लिपटे हुए हैं, धर्माचरण को छोड़ चुके हैं, और दोहरी उलझन की स्थिति में पड़ गए हैं।

7.199.29

इत्थमस्मिञ्जनानीके जन्मसंतरणार्थिनः बहवः संस्थिता राम बहुधा बहुदृष्टयः ॥ २९ ॥

itthamasmiñjanānīke janmasaṃtaraṇārthinaḥ bahavaḥ saṃsthitā rāma bahudhā bahudṛṣṭayaḥ || 29 ||

Thus, in this multitude of people, many are striving for liberation from the cycle of birth and death, with various views and beliefs.

इस प्रकार, इस जनसमूह में, बहुत से लोग जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं, विभिन्न दृष्टिकोण और विश्वास के साथ।

7.199.30

संसारोत्तरणे तत्र न हेतुर्वनवासिता नापि स्वदेशवासित्वं न च कष्टतपःक्रियाः ॥ ३० ॥

saṃsārottaraṇe tatra na heturvanavāsitā nāpi svadeśavāsitvaṃ na ca kaṣṭatapaḥkriyāḥ || 30 ||

In the liberation from the worldly cycle, neither living in the forest, nor staying in one's own country, nor performing severe austerities is the cause.

संसार के चक्र से मुक्ति में, न तो वन में रहना, न ही अपने देश में रहना, न ही कठोर तपस्या करना कारण है।

7.199.31

न क्रियायाः परित्यागो न क्रियायाः समाश्रयः। नाचारेषु समारम्भविचित्रफलपालयः ॥ ३१ ॥

na kriyāyāḥ parityāgo na kriyāyāḥ samāśrayaḥ| nācāreṣu samārambhavicitraphalapālayaḥ || 31 ||

Neither renounce action nor cling to it| Do not engage in various activities for their fruits

न कर्म का त्याग करें न उसका आश्रय लें| विविध कर्मों में फल की आशा से न लगें

7.199.32

स्वभावः कारणं नाम संसारोत्तरणं प्रति। असंसक्तं मनो यस्य स तीर्णो भवसागरात् ॥ ३२ ॥

svabhāvaḥ kāraṇaṃ nāma saṃsārottaraṇaṃ prati| asaṃsaktaṃ mano yasya sa tīrṇo bhavasāgarāt || 32 ||

One's nature is the cause for liberation from the world| Whose mind is unattached, he has crossed the ocean of existence

अपना स्वभाव ही संसार से उबरने का कारण है| जिसका मन असक्त है, वह भवसागर से पार है

7.199.33

शुभाशुभाः क्रिया नित्यं कुर्वन्परिहरन्नपि। पुनरेति न संसारमसंसक्तमना मुनिः ॥ ३३ ॥

śubhāśubhāḥ kriyā nityaṃ kurvanpariharannapi| punareti na saṃsāramasaṃsaktamanā muniḥ || 33 ||

Always performing good and bad deeds, avoiding or not, the sage with an unattached mind does not return to the world

नित्य शुभ और अशुभ कर्म करते हुए, टालते हुए या न टालते हुए, असक्त मन वाला मुनि संसार में फिर नहीं आता

7.199.34

शुभाशुभाः क्रिया नित्यमकुर्वन्नपि दुर्मतिः। निमज्जत्येव संसारे परित्यक्तमनाः शठः ॥ ३४ ॥

śubhāśubhāḥ kriyā nityamakurvannapi durmatiḥ| nimajjatyeva saṃsāre parityaktamanāḥ śaṭhaḥ || 34 ||

Even if not performing good and bad deeds always, the evil-minded one with a forsaken mind sinks in the world

चाहे शुभ और अशुभ कर्म न करे, दुर्मति परित्यक्त मन वाला शठ संसार में डूब जाता है

7.199.35

मक्षिकेवान्तःसारज्ञा दुःखादुःखप्रदायिनी। न निवारयितुं शक्या न च मारयितुं मतिः ॥ ३५ ॥

makṣikevāntaḥsārajñā duḥkhāduḥkhapradāyinī| na nivārayituṃ śakyā na ca mārayituṃ matiḥ || 35 ||

Like a bee knowing the essence within, giving pain upon pain, the mind cannot be restrained nor killed

मधुमक्खी की तरह अंतःसार जानने वाली, दुःख देने वाली, मन को न रोका जा सकता है न मारा जा सकता है

7.199.36

काकतालीययोगेन कदाचित्स्वस्य चेतसः प्रवृत्तिर्जायते सिध्यै स्वयमात्मावलोकने ॥ ३६ ॥

kākatālīyayogena kadācitsvasya cetasaḥ pravṛttirjāyate sidhyai svayamātmāvalokane || 36 ||

By the practice of kākatālīya yoga, sometimes the mind becomes inclined towards the realization of the self.

काकतालीय योग के अभ्यास से कभी-कभी मन स्वयं आत्मा के दर्शन की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

7.199.37

अवलोकनतो लब्ध्वा तत्त्वं नैर्मल्यमागतम् चेतो भवति निर्द्वन्द्वमसंसक्तमनामयम् ॥ ३७ ॥

avalokanato labdhvā tattvaṃ nairmalyamāgatam ceto bhavati nirdvandvamasaṃsaktamanāmayam || 37 ||

By attaining the realization of the self, the mind becomes pure, free from duality, unattached, and free from afflictions.

आत्म-दर्शन को प्राप्त करने से मन शुद्ध हो जाता है, द्वैत से मुक्त, अनासक्त और क्लेशों से मुक्त हो जाता है।

7.199.38

अचित्तत्वं प्रयातेन सत्त्वरूपेण चेतसा समो भूत्वा सुखं तिष्ठ पराकाशांशरूपभृत् ॥ ३८ ॥

acittatvaṃ prayātena sattvarūpeṇa cetasā samo bhūtvā sukhaṃ tiṣṭha parākāśāṃśarūpabhṛt || 38 ||

Striving for the state of no-mind, with a mind of pure essence, become one with it and dwell in bliss, O bearer of the form of the supreme light.

अचित्तत्व की ओर प्रयास करते हुए, शुद्ध स्वरूप के मन से, उसके साथ एक हो जाओ और आनंद में रहो, हे परम प्रकाश के रूप धारी।

7.199.39

अधिगतपरमार्थस्त्यक्तरागादिदोषः सममतिरुदितात्मा त्वं महात्मा महात्मन् रघुतनय विशोकस्तिष्ठ निःशङ्कमेको जननमरणमुक्तं पावनं तत्पदं त्वम् ॥ ३९ ॥

adhigataparamārthastyaktarāgādidoṣaḥ samamatiruditātmā tvaṃ mahātmā mahātman raghutanaya viśokastiṣṭha niḥśaṅkameko jananamaraṇamuktaṃ pāvanaṃ tatpadaṃ tvam || 39 ||

Having attained the ultimate truth, free from desires and other faults, with an equanimous mind and a revealed self, you are the great soul, O Raghunatha. Dwell without sorrow and fear, alone, liberated from birth and death, and purified by that state.

परमार्थ को प्राप्त करके, इच्छाओं और अन्य दोषों से मुक्त, समतापूर्ण मन और प्रकट आत्मा के साथ, तुम महान आत्मा हो, हे रघुनाथ। शोक और भय से मुक्त, अकेले, जन्म और मृत्यु से मुक्त, और उस स्थिति से पवित्र होकर रहो।

7.199.40

प्रकृतिमलविकारोपादिबोधादिरूपं जगति विमलरूपे नास्ति किंचित्क्वचिच्च स्फुटमकृतकमस्ति ब्रह्म चिद्धाम तच्च स्वयमहमिति मत्वा तिष्ठ निःशङ्कमेकः ॥ ४० ॥

prakṛtimalavikāropādhibodhādirūpaṃ jagati vimalarūpe nāsti kiṃcitkvacicca sphuṭamakṛtakamasti brahma ciddhāma tacca svayamahamiti matvā tiṣṭha niḥśaṅkamekaḥ || 40 ||

In this world, there is nothing pure in the form of knowledge arising from the impurities of nature. Only the clear, uncreated Brahman, the abode of consciousness, exists. Realizing 'I am that Brahman,' dwell without fear, alone.

इस जगत में, प्रकृति के मल से उत्पन्न ज्ञान के रूप में कुछ भी शुद्ध नहीं है। केवल स्पष्ट, अकृत्रिम ब्रह्म, चेतना का धाम, अस्तित्व में है। 'मैं वह ब्रह्म हूँ' कहकर, भय से मुक्त, अकेले रहो।

7.199.41

अधिकवचनगम्यं नान्यदस्त्यङ्ग किंचित्तव शुभमुपदेश्यं ज्ञानसंबोधनाय उदितमखिलमाद्यं ज्ञानसारं समग्रं विदितसकलवेद्यो राघव त्वं हि जातः ॥ ४१ ॥

adhikavacanagamyaṃ nānyadastyaṅga kiṃcittava śubhamupadeśyaṃ jñānasaṃbodhanāya uditamakhilamādyaṃ jñānasāraṃ samagraṃ viditasakalavedyo rāghava tvaṃ hi jātaḥ || 41 ||

There is no other higher teaching than this, O Raghava, which is beneficial for the awakening of knowledge. You are born with the complete essence of knowledge, knowing all that is to be known.

इससे बढ़कर कोई और शुभ उपदेश नहीं है, हे रघुवंशी! जो ज्ञान के बोध के लिए उदित है। तुम सम्पूर्ण ज्ञान के सार के साथ जन्मे हो, जो सब कुछ जानते हो।

7.199.42

श्रीवाल्मीकिरुवाच इत्युक्त्वा मुनिनायको व्यपगताशेषैषणे राघवे सर्वस्मिंश्च सभाजने स्थितवति ध्यानैकतानोपमे प्राप्ते ब्रह्मपदं धिया धवलया तूष्णीमभूत्षट्पदः कृत्वेवारणितं सरोजपटले पातुं प्रवृत्तो रसम् ॥ ४२ ॥

śrīvālmīkiruvāca ityuktvā munināyako vyapagatāśeṣaiṣaṇe rāghave sarvasmiṃśca sabhājane sthitavati dhyānaikatānopame prāpte brahmapadaṃ dhiyā dhavalayā tūṣṇīmabhūtṣaṭpadaḥ kṛtvevāraṇitaṃ sarojapaṭale pātuṃ pravṛtto rasam || 42 ||

Sri Valmiki said: Having spoken thus, the chief of sages, free from all desires, with Raghava and all the assembly standing in deep meditation, became silent, having attained the state of Brahman with a pure mind. He then proceeded to drink the nectar, having made the lotus petals tremble.

श्री वाल्मीकि ने कहा: ऐसा कहकर, मुनियों के नेता, जो सभी इच्छाओं से मुक्त थे, रघुवंशी और सभी सभासदों के गहरी ध्यान में खड़े होने पर, शुद्ध मन से ब्रह्म पद प्राप्त करके मौन हो गए। फिर उन्होंने कमल के पंखुड़ियों को काँपाकर अमृत पीना शुरू किया।

Chapter 200

7.200.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । निर्वाणवाक्यसंदर्भसमाप्तौ मुनिनायके । पाश्चात्यवाक्यविरतिं कुर्वति क्रमपालिताम् ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | nirvāṇavākyasaṃdarbhasamāptau munināyake | pāścātyavākyaviratiṃ kurvati kramapālitām || 1 ||

Sri Valmiki said: At the conclusion of the discourse on liberation, the leader of the sages, following the prescribed order, ceases to speak.

श्री वाल्मीकि ने कहा: मुक्ति के वचनों के संदर्भ की समाप्ति पर, मुनियों के नेता, नियमित क्रम का पालन करते हुए, बोलना बंद कर देते हैं।

7.200.2

निर्विकल्पसमाधानसमतां समुपागते । शान्तस्वच्छमनोवृत्तौ सर्वस्मिंश्च सभाजने ॥ २ ॥

nirvikalpasamādhānasamatāṃ samupāgate | śāntasvacchamanovṛttau sarvasmiṃśca sabhājane || 2 ||

Having attained the state of unwavering meditation, with a calm and pure mind, everyone in the assembly is absorbed in it.

निर्विकल्प समाधि की समता प्राप्त करने पर, शांत और शुद्ध मन से, सभा में सभी उसमें तल्लीन हैं।

7.200.3

सत्त्वकोटिमुपारूढे परां पावनतां गते । संवित्तत्त्वे समग्रस्य जनस्य श्रुतशालिनः ॥ ३ ॥

sattvakoṭimupārūḍhe parāṃ pāvanatāṃ gate | saṃvittattve samagrasya janasya śrutaśāliṇaḥ || 3 ||

Having ascended to the highest level of purity, the essence of consciousness is attained by the entire assembly of learned people.

शुद्धता के उच्चतम स्तर पर पहुंचने पर, चेतना का तत्त्व पूरी सभा के विद्वानों द्वारा प्राप्त किया जाता है।

7.200.4

झटित्येवाम्बरहृता पूर्वमुक्तधियां मुखात् । सिद्धानां साधुवादेन व्योमकोटरवासिनाम् ॥ ४ ॥

jhaṭityevāmbarahṛtā pūrvamuktadhiyāṃ mukhāt | siddhānāṃ sādhuvādena vyomakoṭaravāsinām || 4 ||

Immediately, the words previously spoken are taken away from the mouth, and the accomplished ones residing in the sky praise with 'Sadhu' (well done).

तुरंत, पहले कहे गए वचन मुंह से ले लिए जाते हैं, और आकाश में रहने वाले सिद्ध पुरुष 'साधु' (शाबाश) कहकर प्रशंसा करते हैं।

7.200.5

तथा सभास्थितानां च मुनीनां भावितात्मनाम् । गाधेयप्रमुखानां च साधुवादगिरोच्चया ॥ ५ ॥

tathā sabhāsthitānāṃ ca munīnāṃ bhāvitātmanām | gādheyapramukhānāṃ ca sādhuvādagiroccayā || 5 ||

Similarly, the sages present in the assembly, with their minds purified, led by Gadhi and others, praise with 'Sadhu' (well done).

इसी प्रकार, सभा में उपस्थित मुनियों, जिनके मन शुद्ध हैं, गधि आदि के नेतृत्व में, 'साधु' (शाबाश) कहकर प्रशंसा करते हैं।

7.200.6

कोलाहलः समुदभूद्भूरिपूरितदिंमुखः । मधुरः पवनात्तानां कीचकानामिवारवः ॥ ६ ॥

kolāhalaḥ samudabhūdbhūripūritadiṃmukhaḥ | madhuraḥ pavanāttānāṃ kīcakānāmivāravaḥ || 6 ||

A great tumult arose, filling the sky, as sweet as the sound of peacocks in the wind.

एक भारी शोर उठा, जो आकाश को भर गया, जैसे हवा में मोरों की मीठी आवाज।

7.200.7

सिद्धानां साधुवादेन सह वै सहसा ततः । देवदुन्दुभयो नेदुः प्रतिश्रुत्पूरिताचलाः ॥ ७ ॥

siddhānāṃ sādhuvādena saha vai sahasā tataḥ | devadundubhayo neduḥ pratiśrutpūritācalāḥ || 7 ||

Suddenly, along with the praise of the accomplished ones, the divine drums resounded, filling the mountains with their echoes.

अचानक, सिद्धों की प्रशंसा के साथ, दिव्य ढोल बजे, जिनकी गूँज पहाड़ों को भर गई।

7.200.8

देवदुन्दुभिभिः सार्धं तुषारासारसुन्दरी । दिग्भ्यः स्थगितदिक्चक्रा पुष्पवृष्टिः पपात ह ॥ ८ ॥

devadundubhibhiḥ sārdhaṃ tuṣārāsārasundarī | digbhyaḥ sthagitadikcakrā puṣpavṛṣṭiḥ papāta ha || 8 ||

Along with the divine drums, a beautiful shower of flowers fell from all directions, as if the directions themselves were stunned.

दिव्य ढोलों के साथ, सभी दिशाओं से एक सुंदर फूलों की वर्षा हुई, जैसे दिशाएँ खुद चकित हो गई हों।

7.200.9

पुष्पौघपूरितस्थानः शब्दापूरितकन्दरः । रजःसंरञ्जिताकाशो गन्धरञ्जितमारुतः ॥ ९ ॥

puṣpaughapūritasthānaḥ śabdāpūritakandaraḥ | rajaḥsaṃrañjitākāśo gandharañjitamārutaḥ || 9 ||

The place was filled with a shower of flowers, the caves were filled with sound, the sky was colored with dust, and the wind was fragrant.

स्थान फूलों की वर्षा से भरा हुआ था, गुफाएँ शोर से भरी हुई थीं, आकाश धूल से रंगा हुआ था, और हवा सुगंधित थी।

7.200.10

स साधुवादशब्दस्य देवतूर्यरवस्य च । कुसुमासारघोषस्य समवायो रराज ह ॥ १० ॥

sa sādhuvādaśabdasya devatūryaravasya ca | kusumāsāraghoṣasya samavāyo rarāja ha || 10 ||

The combination of the sound of praise, the divine drums, and the shower of flowers shone brilliantly.

प्रशंसा की आवाज, दिव्य ढोलों की आवाज, और फूलों की वर्षा का मिश्रण चमक उठा।

7.200.11

उन्मुखाखिलसभ्याक्षिरश्मिश्यामलितान्तरः । उत्कर्णमृगमातङ्गहयपक्षिपशुश्रुतः ॥ ११ ॥

unmukhākhilasabhyākṣiraśmiśyāmalitāntaraḥ| utkarṇamṛgamātaṅgahayapakṣipaśuśrutaḥ || 11 ||

With all the assembled people looking on, their eyes darkened with curiosity, and with the sounds of various animals and birds filling the air.

सभी सभ्य लोगों की आँखें उन्मुख थीं, उनके अंदर काले प्रकाश से भरे हुए थे, और विभिन्न पशुओं और पक्षियों की आवाजें वातावरण में भरी हुई थीं।

7.200.12

सविस्मयभयोन्नेत्रबालकान्ताजनेक्षितःविस्मयस्मेरवदनराजलोकावलोकितः ॥ १२ ॥

savismayabhayonnetrabālakāntājanekṣitaḥvismayasmeravadanarājalokāvalokitaḥ || 12 ||

With eyes filled with wonder and fear, he looked at the children and their mothers. With a face full of wonder and smiles, he looked at the royal people. || 12 ||

सविस्मय (आश्चर्य से) भयोन्नेत्र (डर से भरी) बालक (बच्चों) आन्ताजन (माताओं) एक्षितः (देखा) विस्मय (आश्चर्य) स्मेर (मुस्कान) वदन (चेहरा) राजलोक (राजाओं के लोगों) अवलोकितः (देखा) || 12 ||

7.200.13

कुसुमासारसारेण शब्दशोभातिशायिना । संरम्भेण जगामाशु रोदोरन्ध्रमपूर्वताम् ॥ १३ ॥

kusumāsārasāreṇa śabdaśobhātiśāyinā| saṃrambheṇa jagāmāśu rodorandhramapūrvatām || 13 ||

With the essence of flowers and the resounding beauty of sound, he quickly went to the unprecedented cave of the sky with anger.

फूलों की सार और ध्वनि की अतिशय शोभा के साथ, वह क्रोध से तुरंत आकाश की अनोखी गुफा में गया।

7.200.14

पुष्पवर्षसुधाधौतं रटद्भूतसुघुंघुमम् । समतां सदनेनागात् ध्मातशङ्खशतेन खम् ॥ १४ ॥

puṣpavarṣasudhādhautaṃ raṭadbhūtasughuṃghumam| samatāṃ sadanenāgāt dhmātaśaṅkhaśatena kham || 14 ||

The sky, washed with the nectar of flower showers and resounding with the humming of bees, attained equilibrium with the sound of a hundred conches.

फूलों की वर्षा के अमृत से धोया हुआ और भौंरों की गूंज से भरा हुआ आकाश, सौ शंखों की ध्वनि के साथ संतुलन प्राप्त कर गया।

7.200.15

भुवनं भूरिभांकारभासुरं सुरचारणैः । वृतं मत्तोत्सवं रेजे समं कुसुममण्डितम् ॥ १५ ॥

bhuvanaṃ bhūribhāṃkārabhāsuraṃ suracāraṇaiḥ| vṛtaṃ mattotsavaṃ reje samaṃ kusumamaṇḍitam || 15 ||

The world, resplendent with abundant light, surrounded by celestial beings, shone with intoxicated celebration, adorned with flowers.

प्रकाश से भरपूर चमकदार जगत्, देवताओं से घिरा हुआ, फूलों से सजा हुआ, मतवाले उत्सव के साथ चमक रहा था।

7.200.16

शनैर्दुन्दुभिसिद्धौघवाक्यपुष्पभरः समम्प्रययौ रोदसीरन्ध्रे वेलाचलमिवाम्बुधौ ॥ १६ ॥

śanairdundubhisiddhaughavākyapuṣpabharaḥ samamprayayau rodasīrandhre velācalamivāmbudhau || 16 ||

Slowly, the words of the accomplished ones, like a shower of flowers, spread evenly across the earth and sky, like clouds covering the horizon.

धीरे-धीरे, सिद्धों के वचन, फूलों की वर्षा के समान, धरती और आकाश में समान रूप से फैल गए, मानो बादल क्षितिज को ढके हुए हों।

7.200.17

तस्मिन्विबुधसंरम्भे क्षणेन समये गतेवाक्यानीमानि सिद्धानामभिव्यक्तिमुपाययुः ॥ १७ ॥

tasminvibudhasaṃrambhe kṣaṇena samaye gatevākyānīmāni siddhānāmabhivyaktimupāyayuḥ || 17 ||

In that assembly of the wise, in an instant, these words of the accomplished ones manifested their meaning.

उस विद्वानों की सभा में, एक क्षण में, ये सिद्धों के वचन अपने अर्थ को प्रकट करने लगे।

7.200.18

सिद्धा ऊचुःआकल्पं सिद्धसङ्घेषु मोक्षोपायाः सहस्रशःव्याख्याताश्च श्रुताश्चालमीदृशास्तु न केचन ॥ १८ ॥

siddhā ūcuḥākalpaṃ siddhasaṅgheṣu mokṣopāyāḥ sahasraśaḥvyākhyātāśca śrutāścālamīdṛśāstu na kecana || 18 ||

The accomplished ones said: In the assemblies of the accomplished, thousands of means of liberation have been explained and heard, but none like these.

सिद्धों ने कहा: सिद्धों की सभाओं में, हजारों मोक्ष के उपाय समझाए और सुने गए हैं, लेकिन इनके जैसे कोई नहीं।

7.200.19

तिर्यञ्चो वनिता वाला व्यालाश्चानेन निर्वृतिम्मुनेर्वाक्यविलासेन यान्ति नास्त्यत्र संशयः ॥ १९ ॥

tiryañco vanitā vālā vyālāścānena nirvṛtimmunervākyavilāsena yānti nāstyatra saṃśayaḥ || 19 ||

Even animals, women, children, and serpents attain satisfaction through the playful words of the sage. There is no doubt about this.

यहाँ तक कि पशु, महिलाएँ, बच्चे, और सर्प भी ऋषि के खेल-खेल में वचनों से संतुष्टि प्राप्त करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

7.200.20

दृष्टान्तैर्हेतुभिर्युक्त्या यथा रामोऽवबोधितःतथा चारुन्धती साक्षात्सम्बोधयति वा न वा ॥ २० ॥

dṛṣṭāntairhetubhiryuktyā yathā rāmo'vabodhitaḥtathā cārundhatī sākṣātsaṃbodhayati vā na vā || 20 ||

Just as Rama was enlightened through examples, reasons, and logic, so too does Arundhati directly enlighten, or perhaps not.

जैसे राम उदाहरणों, कारणों, और तर्क से जागृत हुए, वैसे ही अरुन्धती सीधे जागृत करती है, या शायद नहीं।

7.200.21

अनेन मोक्षोपायेन तिर्यञ्चोऽपि गतामयाः । स्थिता मुक्ता भविष्यन्ति के नाम भुवि नो नराः ॥ २१ ॥

anena mokṣopāyena tiryañco'pi gatāmayāḥ | sthitā muktā bhaviṣyanti ke nāma bhuvi no narāḥ || 21 ||

By this means of liberation, even animals, freed from disease, will remain liberated. Who then, on earth, will not be liberated?

इस मोक्ष के उपाय से, यहाँ तक कि पशु भी, रोगमुक्त होकर, मुक्त रहेंगे। फिर पृथ्वी पर कौन मुक्त नहीं होगा?

7.200.22

श्रवणाञ्जलिभिः पीत्वा ज्ञानामृतमिदं वयम् । परां पूर्णनवीभूतसिद्धयः श्रियमागताः ॥ २२ ॥

śravaṇāñjalibhiḥ pītvā jñānāmṛtamidaṃ vayaṃ | parāṃ pūrṇanavībhūtasiddhayaḥ śriyamāgatāḥ || 22 ||

Having drunk this nectar of knowledge with our ears as cups, we have attained the highest, complete, and ever-new accomplishments.

इस ज्ञान के अमृत को कानों से पीकर, हमने उच्चतम, पूर्ण और नवीन सिद्धियाँ प्राप्त की हैं।

7.200.23

इति शृण्वन्सभां लोको विस्मयोत्फुल्ललोचनः । कुसुमासारसंपूर्णां राजीवानां ददर्श ताम् ॥ २३ ॥

iti śṛṇvan sabhāṃ loko vismayotphullalocanaḥ | kusumāsārasaṃpūrṇāṃ rājīvānāṃ dadarśa tām || 23 ||

Thus, listening to the assembly, the people with eyes wide open in wonder, saw that hall filled with the essence of flowers, like a lotus pond.

इस प्रकार, सभा को सुनते हुए, लोगों की आँखें आश्चर्य से फैली हुई थीं, और उन्होंने उस फूलों की सार से भरी सभा को कमल के तालाब की तरह देखा।

7.200.24

मन्दारादिमहापुष्पच्छन्नच्छादनसंचयाम् । पारिभद्रलतागुच्छनीरन्ध्राजिरभूमिकाम् ॥ २४ ॥

mandārādimahāpuṣpacchannacchādanasañcayām | pāribhadralatāguccanīrandhrājirabhūmikām || 24 ||

Covered with a collection of large flowers like Mandara, with a canopy of Pariyatra vine clusters, and a base adorned with Nira flower garlands.

मंदार जैसे बड़े फूलों से ढकी हुई, पारियात्र लताओं के गुच्छों से छाई हुई, और नीर फूलों की मालाओं से सजी हुई आधार वाली।

7.200.25

पारिजातप्रसूनाढ्यमहीतलविराजिताम् । संतानकमहाम्भोदव्याप्तसभ्यशिरःकराम् ॥ २५ ॥

pārijātaprasūnāḍhyamahītalavirājitām | saṃtānakamahāmbhodavyāptasabhyashiraḥkarām || 25 ||

Adorned with an abundance of Parijata flowers on the ground, with the heads of the assembly members covered with large cloud-like clusters of flowers.

पारिजात फूलों से भरी हुई जमीन से सुशोभित, और सभा के सदस्यों के सिर बड़े बादल जैसे फूलों के गुच्छों से ढके हुए।

7.200.26

मौलिरत्नविटंकाग्रविश्रान्तहरिचन्दनाम् । वारिपूरप्रलम्बाभ्रवदालम्बिवितानकाम् ॥ २६ ॥

mauliratnaviṭaṅkāgraviśrāntaharicandanām | vāripūrapralambābhra vadālambivitānakām || 26 ||

The assembly hall was adorned with a canopy that was supported by pillars made of precious gems and was as expansive as a cloud laden with rain.

सभा कक्ष में रत्नों के स्तंभों पर टिका हुआ एक विशाल छत्र था, जो वर्षा से भरे बादल के समान फैला हुआ था।

7.200.27

इति पश्यन्सभां लोकः साधुवादेन भूरिणा । तत्कालोचितवाक्येन तेन तेन तथोद्यतः ॥ २७ ॥

iti paśyansabhāṃ lokaḥ sādhu vādena bhūriṇā | tatkālocitavākyena tena tena tathodyataḥ || 27 ||

Seeing the assembly hall in this manner, the people praised it with words of approval and appropriate remarks.

सभा कक्ष को ऐसे देखकर, लोगों ने सराहना की और उचित शब्दों में प्रशंसा की।

7.200.28

वसिष्ठं पूजयामास सर्वेन्द्रियगणानतः । कुसुमाञ्जलिमिश्रेण प्रणामसहितेन च ॥ २८ ॥

vasiṣṭhaṃ pūjayāmāsa sarvendriyagaṇānataḥ | kusumāñjalimiśreṇa praṇāmasahitena ca || 28 ||

The king worshipped Vasistha with all his senses bowed down, offering flowers and prostrating before him.

राजा ने सभी इंद्रियों को झुकाकर वसिष्ठ की पूजा की, फूलों की अञ्जलि और प्रणाम के साथ।

7.200.29

नृपप्रणाममालासु किंचिच्छान्तासु तास्वथ । मुनिमापूजयन्नाह सार्घ्यपात्रकरो नृपः ॥ २९ ॥

nṛpapraṇāmamālāsu kiñcicchāntāsu tāsvatha | munimāpūjayannāha sārghyapātrakaro nṛpaḥ || 29 ||

When the garlands of the king's prostrations had somewhat subsided, the king, holding the arghya vessel, worshipped the sage and spoke.

जब राजा के प्रणाम की मालाएँ कुछ शांत हो गईं, तब राजा ने अर्घ्य पात्र लेकर मुनि की पूजा की और कहा।

7.200.30

दशरथ उवाच । क्षयातिशयमुक्तेन परमेणात्मवस्तुना । परान्तः पूर्णतोत्पन्ना बोधेनारुन्धतीपते ॥ ३० ॥

daśaratha uvāca | kṣayātiśayamuktena parameṇātmavastunā | parāntaḥ pūrṇatotpannā bodhenārundhatīpate || 30 ||

Dasharatha said: O husband of Arundhati, with the supreme knowledge of the self, which is beyond decay and is fully realized, you have attained the highest state.

दशरथ ने कहा: हे अरुंधती के पति, अविनाशी और पूर्ण रूप से प्राप्त आत्मज्ञान के साथ, आपने उच्चतम अवस्था प्राप्त की है।

7.200.31

न तदस्ति महीपीठे दित्य देवेषु वापि च । महत्किंचिद्यदप्राप्तं तव पूज्यस्य पूजनम् ॥ ३१ ॥

na tadasti mahīpīṭhe ditya deveṣu vāpi ca | mahatkiñcidyadaprāptaṃ tava pūjyasya pūjanam || 31 ||

There is nothing great on this earth or among the gods that is not attained by your worship.

इस पृथ्वी पर या देवताओं में कोई महान चीज नहीं है जो आपकी पूजा से प्राप्त न हो।

7.200.32

तथाप्यात्मक्रमं ब्रह्मन्निमं नेतुमवन्ध्यताम् । अहं वच्मि यथाप्राप्तं न कोपं कर्तुमर्हसि ॥ ३२ ॥

tathāpyātmakramaṃ brahmannimaṃ netumavandhyatām | ahaṃ vacmi yathāprāptaṃ na kopaṃ kartumarhasi || 32 ||

Nevertheless, O Brahman, I will explain this sequence of the self as best as I can. You should not be angry.

फिर भी, हे ब्रह्मन, मैं इस आत्मा के क्रम को अपनी सीमा के अनुसार समझाने की कोशिश करूंगा। आपको क्रोध नहीं करना चाहिए।

7.200.33

आत्मना सकलत्रेण लोकद्वयशुभेन च । राज्येनाखिलभृत्येन भवन्तं पूजयाम्यहम् ॥ ३३ ॥

ātmanā sakalatreṇa lokadvayaśubhena ca | rājyenākhilabhṛtyena bhavantaṃ pūjayāmyaham || 33 ||

With my entire self, with the auspiciousness of both worlds, and with the kingdom and all its subjects, I worship you.

अपने पूरे आत्मा से, दोनों लोकों के शुभ से, और राज्य और उसके सभी प्रजाजनों के साथ, मैं आपकी पूजा करता हूं।

7.200.34

एतत्सर्वं तव विभो स्वायत्तं स्व इवाश्रमः । नियोजय यथादेशं यथाभिमतयेच्छया ॥ ३४ ॥

etatsarvaṃ tava vibho svāyattaṃ sva ivāśramaḥ | niyojaya yathādeśaṃ yathābhimatayecchayā || 34 ||

All this, O Lord, is under your control, like your own hermitage. Dispose of it according to your wish and desire.

यह सब, हे प्रभु, आपके नियंत्रण में है, जैसे आपका अपना आश्रम। इसे अपनी इच्छा और अभिलाषा के अनुसार व्यवस्थित करें।

7.200.35

श्रीवसिष्ठ उवाच । प्रणाममात्रसंतुष्टा ब्राह्मणा भूपते वयम् । प्रणामेनैव तुष्यामः स एव भवता कृतः ॥ ३५ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | praṇāmamātrasantuṣṭā brāhmaṇā bhūpate vayam | praṇāmenaiva tuṣyāmaḥ sa eva bhavatā kṛtaḥ || 35 ||

Sri Vasistha said: O King, we Brahmins are satisfied with mere salutation. We are pleased with salutation alone, and that is what you have done.

श्री वसिष्ठ ने कहा: हे राजन, हम ब्राह्मण केवल प्रणाम से संतुष्ट हैं। हम केवल प्रणाम से ही प्रसन्न होते हैं, और यही आपने किया है।

7.200.36

पातुं त्वमेव जानासि राज्यं भाति तवैव च । भवत्वेतत्तवैवेह ब्राह्मणाः क्व महीभृतः ॥ ३६ ॥

pātuṃ tvameva jānāsi rājyaṃ bhāti tavaiva ca | bhavattvettavaiveha brāhmaṇāḥ kva mahībhṛtaḥ || 36 ||

You alone know how to protect, and this kingdom shines because of you alone. May this kingdom be yours alone here. Where are the Brahmins, the rulers of the earth?

आप ही जानते हैं कि कैसे सुरक्षा करनी है, और यह राज्य आपके कारण ही चमकता है। यह राज्य यहाँ आपका ही हो। ब्राह्मण और पृथ्वी के शासक कहाँ हैं?

7.200.37

दशरथ उवाच । कियन्मात्रं तु राज्यं स्यादिति लज्जामहे मुने । प्रकर्षेणात्र तेनेश यथा जानासि तत्कुरु ॥ ३७ ॥

daśaratha uvāca | kiyanmātraṃ tu rājyaṃ syāditi lajjāmahe mune | prakarṣeṇātra teneśa yathā jānāsi tatkuru || 37 ||

Dasharatha said: How much of the kingdom should be there? We are ashamed, O sage. Therefore, O lord, do as you know best.

दशरथ ने कहा: राज्य कितना होना चाहिए? हे मुनि, हमें शर्म आती है। इसलिए, हे ईश्वर, जैसा आप जानते हैं, वैसा ही करें।

7.200.38

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इत्युक्तवति भूपाले रामः पुष्पाञ्जलिं ददत् । उवाच प्रणतो वाक्यं पुरस्तस्य महागुरोः ॥ ३८ ॥

śrīvālmīkiruvāca | ityuktavati bhūpāle rāmaḥ puṣpāñjaliṃ dadat | uvāca praṇato vākyaṃ purastasya mahāguroḥ || 38 ||

Valmiki said: Having thus spoken, the king, Rama offered a handful of flowers and spoke humbly to the great teacher.

वाल्मीकि ने कहा: ऐसा कहकर, राजा राम ने एक मुट्ठी भर फूल अर्पित किए और महान गुरु से विनम्रतापूर्वक बात की।

7.200.39

निरुत्तरीकृतमहाराज ब्रह्मन्प्रणौमि ते । प्रणाममात्रसारोऽहं रामः पादाविमौ प्रभो ॥ ३९ ॥

niruttarīkṛtamahārāja brahmanpraṇaumite | praṇāmamātrasāro'haṃ rāmaḥ pādāvimau prabho || 39 ||

O great king, rendered speechless, I bow to you, O Brahmin. I am the essence of prostration, Rama, at your feet, O lord.

हे महाराज, मैं निरुत्तर हो गया हूँ, मैं आपको प्रणाम करता हूँ, हे ब्राह्मण। मैं प्रणाम का सार हूँ, राम, आपके चरणों में, हे प्रभु।

7.200.40

इत्युक्त्वा पादयोस्तस्य शिरोवन्दनपूर्वकम् । तत्याजाञ्जलिपुष्पाणि हिमानीव वनं गिरेः ॥ ४० ॥

ityuktvā pādayostasya śirovandanapūrvakam | tatyājāñjalipuṣpāṇi himānīva vanaṃ gireḥ || 40 ||

Having said this, he bowed his head to his feet and offered the flowers from his folded hands, like snow falling on a mountain forest.

ऐसा कहकर, उसने अपने चरणों पर सिर झुकाया और हाथ जोड़कर फूल अर्पित किए, जैसे बर्फ पहाड़ी जंगल पर गिरती है।

7.200.41

आनन्दबाष्पसंपूर्णनयनो नयकोविदः । गुरुं परमया भक्त्या प्रणनाम पुनःपुनः ॥ ४१ ॥

ānandabāṣpasampūrṇanayano nayakovidaḥ | guruṃ paramayā bhaktyā praṇanāma punaḥpunaḥ || 41 ||

With eyes filled with tears of joy, the wise leader repeatedly bowed to the guru with supreme devotion.

आनंद के आँसू से भरी आँखों वाले बुद्धिमान नेता ने परम भक्ति से गुरु को बार-बार प्रणाम किया।

7.200.42

शत्रुघ्नो लक्ष्मणश्चैव तथान्ये तत्समाश्च ये । निकटस्थास्तथैवाशु ते प्रणेमुर्मुनीश्वरम् ॥ ४२ ॥

śatrughno lakṣmaṇaścaiva tathānye tatsamāśca ye | nikaṭasthāstathaivāśu te praṇemurmuneśvaram || 42 ||

Shatrughna and Lakshmana, along with others equal to them, who were nearby, quickly bowed to the great sage.

शत्रुघ्न और लक्ष्मण, तथा उनके समान अन्य लोग, जो निकट थे, शीघ्र ही महान ऋषि को प्रणाम किया।

7.200.43

दूरप्रणामैर्दूरस्थाः पुष्पाञ्जलिसमीरणैः । राजानो राजपुत्राश्च प्रणेमुर्मुनयश्च तम् ॥ ४३ ॥

dūrapraṇāmairdūrasthāḥ puṣpāñjalisamīraṇaiḥ | rājāno rājaputrāśca praṇemurmunaśca tam || 43 ||

Those who were far away bowed from a distance with flower offerings, including kings, princes, and sages.

जो दूर थे, उन्होंने फूलों की अञ्जलि लेकर दूर से प्रणाम किया, जिनमें राजा, राजकुमार और ऋषि शामिल थे।

7.200.44

अस्मिन्नवसरे तत्र कुसुमाञ्जलिवर्षणैः । हिमैरिव हिमाद्रीन्द्रो मुनिरन्तर्धिमाययौ ॥ ४४ ॥

asminnavasare tatra kusumāñjalivarṣaṇaiḥ | himairiva himādrīndro munirantardhimāyayau || 44 ||

At that moment, with a shower of flower offerings, the sage disappeared like the king of snowy mountains with snow.

उस समय, फूलों की अञ्जलि की वर्षा के साथ, ऋषि बर्फ से ढके पर्वतराज की तरह अंतर्ध्यान हो गए।

7.200.45

अथ शान्ते सभाक्षोमे प्रणामनिवहे तथा । संस्मरञ्छासनं किंचित्सत्ये कृष्णसिताशयम् ॥ ४५ ॥

atha śānte sabhākṣome praṇāmanivahē tathā | saṃsmarañchāsanaṃ kiñcitsatyē kṛṣṇasitāśayam || 45 ||

Then, when the assembly's commotion subsided and the flow of bows ended, remembering a certain command, he spoke the truth with a calm mind.

तब, जब सभा का शोर शांत हो गया और प्रणाम का प्रवाह समाप्त हो गया, एक आदेश याद करके, उसने शांत मन से सत्य कहा।

7.200.46

मुनिः कुसुमराशिं तं बाहुभ्यां प्रविचाल्य सः । मुखं संदर्शयामास सिताभ्रादिव चन्द्रमाः ॥ ४६ ॥

muniḥ kusumarāśiṃ taṃ bāhubhyāṃ pravicālya saḥ | mukhaṃ saṃdarśayāmāsa sitābhrādiva candramāḥ || 46 ||

The sage, having gently moved aside the heap of flowers with his arms, revealed his face like the moon emerging from white clouds.

मुनि ने अपने हाथों से फूलों के ढेर को धीरे से हटाया और सफेद बादलों से निकले चंद्रमा की तरह अपना चेहरा दिखाया।

7.200.47

शान्ते सिद्धवचोराशौ तथा दुन्दुभिनिःस्वने । नभःकुसुमवर्षे च सभाकलकले तथा ॥ ४७ ॥

śānte siddhavacorāśau tathā dundubhinisvane | nabhaḥkusumavarṣe ca sabhākalakale tathā || 47 ||

When the words of the accomplished sage were completed, there was the sound of drums, a shower of flowers from the sky, and a joyful murmur in the assembly.

जब सिद्ध मुनि के वचन समाप्त हुए, तब दुन्दुभि की ध्वनि, आकाश से फूलों की वर्षा और सभा में हर्ष की ध्वनि हुई।

7.200.48

प्रणामानन्तरं तस्मिन्रामाद्यैः स्वसभाजने । शान्तवात इवाम्भोदे जने सौम्यत्वमागते ॥ ४८ ॥

praṇāmānantaraṃ tasminrāmādyaiḥ svasabhājane | śāntavāta ivāmbhode jane saumyatvamāgate || 48 ||

After bowing down to him, Rama and others in their own assembly became calm like a cloud without wind, and the people became gentle.

उन्हें प्रणाम करने के बाद, राम और अन्य अपनी सभा में हवा रहित बादल की तरह शांत हो गए, और लोग सौम्य हो गए।

7.200.49

आकर्णयन्साधुवादं विश्वामित्रं मृदुस्वनम्। उवाचेदमनिन्द्यात्मा वसिष्ठो मुनिनायकः ॥ ४९ ॥

ākarṇayansādhuvādaṃ viśvāmitraṃ mṛdusvanam | uvācedamanindyātmā vasiṣṭho munināyakaḥ || 49 ||

Hearing the gentle words of praise from Vishvamitra, the faultless Vasistha, the leader of the sages, spoke these words.

विश्वामित्र के कोमल प्रशंसा वचन सुनकर, निर्दोष वसिष्ठ, मुनियों के नेता, ने ये वचन कहे।

7.200.50

मुने गाधिकुलाम्भोज वामदेव निमे क्रतो। भरद्वाज पुलस्त्यात्रे घृष्टे नारद शाण्डिले ॥ ५० ॥

mune gādhikulāmbhoja vāmadeva nime kratō | bharadvāja pulastyātre ghṛṣṭe nārada śāṇḍile || 50 ||

O sage, born in the lineage of Gadhi, Vamadeva, Nimi, Kratu, Bharadvaja, Pulastya, Atri, Ghrishti, Narada, and Sandila.

हे मुनि, गाधि, वामदेव, निमि, क्रतु, भरद्वाज, पुलस्त्य, अत्रि, घृष्टि, नारद और शाण्डिल कुल में उत्पन्न।

7.200.51

हे भासभृगुभारण्डवत्सवात्स्यायनादयः। मुनयस्तुच्छमेतन्नु भवद्भिर्मद्वचः श्रुतम् ॥ ५१ ॥

he bhāsabhṛgubhāraṇḍavatsavātsyāyanādayaḥ | munayastucchametannu bhavadbhirmadvacaḥ śrutam || 51 ||

O sages like Bhāsa, Bhṛgu, Bhāraṇḍa, Vatsa, Vātsyāyana, and others, have you heard my words which are insignificant?

हे भास, भृगु, भारण्ड, वत्स, वात्स्यायन आदि मुनियो, क्या आपने मेरे इस तुच्छ वचन को सुना है?

7.200.52

यदत्रानुचितं किंचित्तदनुग्रहतोऽधुना। दुरर्थं विगतार्थं वा भवन्तः कथयन्तु मे ॥ ५२ ॥

yadatrānucitaṃ kiṃcittadanugrahatoadhunā | durarthaṃ vigatārthaṃ vā bhavantaḥ kathayantu me || 52 ||

If there is anything inappropriate here, please tell me now out of kindness, whether it is harmful or meaningless.

यदि यहाँ कुछ अनुचित है, तो कृपा करके अब बताएँ, चाहे वह हानिकारक हो या निरर्थक।

7.200.53

सभ्या ऊचुः। वसिष्ठवचने ब्रह्मन्परमार्थैकशालिनि। दुरर्थो भवतीत्यद्य नवैव खलु गीः श्रुता ॥ ५३ ॥

sabhyā ūcuḥ | vasiṣṭhavacane brahmanparamārthaikśālini | durartho bhavatītyadya naiva khalu gīḥ śrutā || 53 ||

The assembly said: O Brahman, in the words of Vasistha, which are the abode of the supreme truth, there is no harmful meaning today, indeed we have not heard such.

सभा ने कहा: हे ब्रह्मन्, वसिष्ठ के वचनों में, जो परमार्थ के एकमात्र निवास स्थान हैं, आज कोई हानिकारक अर्थ नहीं है, हमने ऐसा कुछ नहीं सुना।

7.200.54

यत्संभृतमनन्तेन जन्मदोषेण नो मलम्। तत्प्रमृष्टं त्वयेहाद्य हेम्नामिव हविर्भुजा ॥ ५४ ॥

yatsaṃbhṛtamanantena janmadoṣeṇa no malam | tatpramṛṣṭaṃ tvayeha adya hemnāmiva havirbhujā || 54 ||

The impurity that has accumulated in us due to the endless faults of birth has been cleansed by you today, like the purification of gold by the fire.

जो दोष हमारे अनंत जन्मों के कारण हममें एकत्रित हुआ है, वह आज आपके द्वारा शुद्ध किया गया है, जैसे अग्नि द्वारा सोने का शुद्धिकरण।

7.200.55

ब्रह्मबृंहितया वाचा विभो विकसिता वयम्। कुमुदानीन्दुदीप्त्येव परमामृतशीतया ॥ ५५ ॥

brahmabṛṃhitayā vācā vibho vikasitā vayam | kumudānīndudīptyeva paramāmṛtaśītayā || 55 ||

O Lord, we have blossomed by your words which are filled with the essence of Brahman, like the lotus blooms by the cool moonlight which is the supreme nectar.

हे प्रभो, हम आपके ब्रह्म से भरपूर शब्दों से खिले हैं, जैसे कमल परम अमृत की ठंडी चाँदनी से खिलता है।

7.200.56

सर्वसत्त्वमहाबोधदायिनं मुनिनायकम्। भवन्तमेकान्तगुरुं प्रणमाम इमे वयम् ॥ ५६ ॥

sarvasattvamahābodhadāyinaṃ munināyakam | bhavantamekāntaguruṃ praṇamāma ime vayam || 56 ||

We bow down to you, the supreme teacher, the leader of sages, who grants great enlightenment to all beings.

हम आपको नमस्कार करते हैं, जो सभी प्राणियों को महान बोध प्रदान करने वाले, मुनियों के नायक, एकमात्र गुरु हैं।

7.200.57

श्रीवाल्मीकिरुवाच। इत्युक्त्वा मुनिनाथाय नमस्त इति ते पुनः। वदन्त एकशब्देन तारेणाब्दरवौजसा ॥ ५७ ॥

śrīvālmīkiruvāca | ityuktvā munināthāya namasta iti te punaḥ | vadanta ekaśabdena tāreṇābdaravaujasā || 57 ||

Sri Valmiki said: Having said this, they again bowed to the lord of sages, saying 'Salutations' in one voice, with a sound like thunder.

श्री वाल्मीकि ने कहा: यह कहकर, वे पुनः मुनियों के स्वामी को नमस्कार करते हुए, 'नमस्ते' एक स्वर में कहा, जिसकी आवाज मेघ की गर्जना की तरह थी।

7.200.58

अर्वाक्पुष्पाञ्जलिव्रातैः खात्सिद्धैः सममुज्झितैः। वसिष्ठं पूरयामासुर्हिमैरब्दा इवाचलम् ॥ ५८ ॥

arvākpuṣpāñjalivrātaiḥ khātsiddhaiḥ samamujjhitaiḥ | vasiṣṭhaṃ pūrayāmāsurhimairabdā ivācalam || 58 ||

With their hands full of flowers and offerings, the sages, who were perfected and free from attachments, filled Vasistha with joy, like clouds filling a mountain with snow.

हाथों में फूलों और अंजलियों से भरे हुए, सिद्ध और आसक्तिहीन मुनियों ने वसिष्ठ को आनंद से भर दिया, जैसे बादल पहाड़ को बर्फ से भर देते हैं।

7.200.59

इत्थं दशरथं भूपं शशंसुश्चाथ राघवम्। माधवं चतुरात्मानं राघवोदन्तकोविदाः ॥ ५९ ॥

itthaṃ daśarathaṃ bhūpaṃ śaśaṃsuścātha rāghavam | mādhavaṃ caturātmānaṃ rāghavodantakovidāḥ || 59 ||

Thus, they praised King Dasharatha and then Rama, the wise and skilled in the knowledge of Raghuvamsha.

इस प्रकार, उन्होंने राजा दशरथ की प्रशंसा की और फिर राम की, जो रघुवंश के ज्ञान में कुशल और बुद्धिमान थे।

7.200.60

सिद्धा ऊचुः । नमाम चतुरात्मानं नारायणमिवापरम् । रामं सभ्रातरं जीवन्मुक्तं राजकुमारकम् ॥ ६० ॥

siddhā ūcuḥ | namāma caturātmānaṃ nārāyaṇamivāparam | rāmaṃ sabhrātaraṃ jīvanmuktaṃ rājakumārakam || 60 ||

The siddhas said: We bow to the wise Rama, who is like another Narayana, liberated while living, along with his brothers, the prince.

सिद्ध ने कहा: हम बुद्धिमान राम को नमस्कार करते हैं, जो दूसरे नारायण के समान, जीवनमुक्त, अपने भाइयों के साथ, राजकुमार हैं।

7.200.61

तथैव व्योमगाः सिद्धाः शशंसुस्तं जनं पुनःतथैव सभ्यास्तांस्तत्र समानर्चुर्घनस्तवम् ॥ ६१ ॥

tathaiva vyomagāḥ siddhāḥ śaśaṃsustaṃ janaṃ punaḥtathaiva sabhyāstāṃstatra samānarcurghanastavam || 61 ||

Similarly, the celestial beings and the perfected ones praised that person again. Similarly, the assembled ones there praised him with a loud hymn.

इसी प्रकार, आकाश के निवासी और सिद्ध पुरुषों ने उस व्यक्ति की प्रशंसा फिर की। इसी प्रकार, वहाँ एकत्रित लोगों ने उसकी उच्च स्तुति की।

7.200.62

मुनिसेनाधिपं भूपं भास्करं भूरितेजसम्वसिष्ठं सुप्रवादाढ्यं विश्वामित्रं तपोनिधिम् ॥ ६२ ॥

munisenādhipaṃ bhūpaṃ bhāskaraṃ bhūritejasamvasiṣṭhaṃ supravādāḍhyaṃ viśvāmitraṃ taponidhim || 62 ||

The leader of the sage army, the king, the sun, the one with great brilliance, Vasiṣṭha, the one with excellent speech, Viśvāmitra, the treasure of penance.

ऋषि सेना के नेता, राजा, सूर्य, महान तेजस्वी, वसिष्ठ, उत्तम वक्ता, विश्वामित्र, तप का भंडार।

7.200.63

एषामेव प्रभावेन ज्ञानयुक्तिं परामिमांश्रुतवन्तो वयं सर्वे भ्रान्तिसंरम्भनाशिनीम् ॥ ६३ ॥

eṣāmeva prabhāvena jñānayuktiṃ parāmimāmśrutavanto vayaṃ sarve bhrāntisaṃrambhanāśinīm || 63 ||

By the influence of these, we have heard this supreme knowledge and logic, which destroys delusion and anger.

इनके प्रभाव से, हमने इस उत्तम ज्ञान और तर्क को सुना है, जो भ्रम और क्रोध को नष्ट करता है।

7.200.64

श्रीवाल्मीकिरुवाचैत्युक्त्वा गगनात्सिद्धा भूयः पुष्पाणि चिक्षिपुःसभायामथ तूष्णीं च तस्थुर्मुदितचेतसः ॥ ६४ ॥

śrīvālmīkiruvācaityuktvā gaganātsiddhā bhūyaḥ puṣpāṇi cikṣipuḥsabhāyāmatha tūṣṇīṃ ca tasthurmuditacetasaḥ || 64 ||

Having said this, the perfected ones from the sky showered flowers again in the assembly and then stood silently with joyful hearts.

यह कहकर, आकाश से सिद्ध पुरुषों ने फिर से फूलों की वर्षा की सभा में और फिर चुपचाप खड़े हो गए प्रसन्न हृदय से।

7.200.66

नभश्चरा धरणिचरा मुनीश्वरा महर्षयो विबुधगणा द्विजा नृपाःपूजयन्निति जनमोजसैव ते गिरोच्चया सह कुसुमार्घ्यदानया ॥ ६६ ॥

nabhaścarā dharaṇicarā munīśvarā maharṣayo vibudhagaṇā dvijā nṛpāḥapūjayanniti janamojasaiva te giroccayā saha kusumārghyadānayā || 66 ||

The celestial beings, the earthly beings, the great sages, the hosts of gods, the twice-born, and the kings worship you with joy, with hymns of praise and offerings of flowers and water.

आकाश के चारों ओर चलने वाले, पृथ्वी पर चलने वाले, महान ऋषि, देवताओं के समूह, द्विज, और राजा आपकी पूजा करते हैं, आनंद से, स्तुति गीतों के साथ और फूलों और जल की आहुति के साथ।

Chapter 201

7.201.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । अथार्वाक्साधुवादेषु प्रशान्तेषु शनैःशनैः । ज्ञानोपदेशमासाद्य प्रोल्लसत्स्विव राजसु ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | athārvāksādhuvādeṣu praśānteṣu śanaiḥśanaiḥ | jñānopadeśamāsādya prollasatsviva rājasu || 1 ||

Sri Valmiki said: After the good wishes were gradually calmed down, having obtained the teachings of knowledge, the kings rejoiced as if they were shining.

श्री वाल्मीकि ने कहा: शुभकामनाओं के धीरे-धीरे शान्त होने के बाद, ज्ञान के उपदेश प्राप्त करके, राजाओं ने प्रकाशित होने के समान आनंद लिया।

7.201.2

प्रशान्तसंसृतिभ्रान्तौ जने चरितमात्मनःस्वयं हसति चित्तेन सत्यं समनुधावता ॥ २ ॥

praśāntasaṃsṛtibhrāntau jane caritamātmanaḥsvayaṃ hasati cittena satyaṃ samanudhāvatā || 2 ||

The one who is free from the delusion of worldly existence, whose conduct is pure, laughs at the world with a mind that follows the truth.

जो संसार के भ्रम से मुक्त है, जिसका आचरण शुद्ध है, वह सत्य का अनुसरण करने वाले मन से संसार पर हँसता है।

7.201.3

वलच्चित्तकलं ज्ञानसमास्वादनतत्परे । विवेकिनि सभालोके शान्ते ध्यानमिवास्थिते ॥ ३ ॥

valaccittakalaṃ jñānasamāsvādanatatpare | vivekini sabhāloke śānte dhyānamivāsthite || 3 ||

In the assembly of the wise, where the mind is engaged in the enjoyment of knowledge, it is as if in a state of meditation, calm and discerning.

बुद्धिमानों की सभा में, जहाँ मन ज्ञान के आस्वादन में लगा है, वहाँ ऐसा लगता है मानो ध्यान की अवस्था में है, शांत और विवेकपूर्ण।

7.201.4

बद्धपद्मासने रामे सभ्रातरि गुरोः पुरः । स्थिते कृताञ्जलौ दीप्तगुरुवक्रगतेक्षणे ॥ ४ ॥

baddhapadmāsane rāme sabhrātari guroḥ puraḥ | sthite kṛtāñjalau dīptaguruvakragatekṣaṇe || 4 ||

Rama, seated in the lotus position with his brothers in front of the guru, stood with folded hands and eyes fixed on the radiant guru.

राम, लोटस पोजीशन में बैठे हुए, अपने भाइयों के साथ गुरु के सामने, हाथ जोड़े हुए और आँखें चमकते गुरु पर टिकी हुई खड़े थे।

7.201.5

पार्थिवे किमपि ध्यानमिवास्वादयति स्थितिम् । जीवन्मुक्तात्मिकामन्तरादिमध्यान्तपावनीम् ॥ ५ ॥

pārthive kimapi dhyānamivāsvādayati sthitim | jīvanmuktātmikāmantarādimadhyāntapāvanīm || 5 ||

In the king, some kind of meditation seems to taste the state of liberation while living, purifying from beginning to end.

राजा में, किसी तरह का ध्यान जीवनमुक्ति की अवस्था का स्वाद लेता है, शुरुआत से अंत तक पवित्र करता हुआ।

7.201.6

ग्रहीतुमर्चां भक्तानां मानितार्थजनो मुनिः। तूष्णीं क्षणमिव स्थित्वा प्रोवाचानाकुलाक्षरम्॥ ६॥

grahītumarcāṃ bhaktānāṃ mānitārthajano muniḥ| tūṣṇīṃ kṣaṇamiva sthitvā provācānākulākṣaram|| 6 ||

The sage, honored by the devotees, stood silently for a moment to receive their worship. He then spoke with unsteady words.

मुनि ने भक्तों के सम्मान के लिए एक क्षण के लिए चुपचाप खड़े होकर उनकी पूजा स्वीकार की। फिर उन्होंने अस्थिर शब्दों में बोला।

7.201.7

स्वकुलाकाशशीतांशो राम राजीवलोचन। किमन्यदिच्छसि श्रोतुं कथयामिमतेच्छया॥ ७॥

svakulākāśaśītāṃśo rāma rājīvalocana| kimanyadicchasi śrotuṃ kathayāmimatecchayā|| 7 ||

O Rama, with lotus-like eyes, cool like the moon in your family lineage, what else do you wish to hear? I shall narrate according to your desire.

हे राम, जिनके नेत्र कमल के समान हैं, जो अपने कुल में चंद्रमा की तरह शीतल हैं, आप और क्या सुनना चाहते हैं? मैं आपकी इच्छा के अनुसार सुनाऊँगा।

7.201.8

स्थितिं च कीदृशीमेनामद्यानुभवसि स्वयम्। किंरूपमिदमाभासं जागतं वद पश्यसि॥ ८॥

sthitiṃ ca kīdṛśīmenāmadhyānubhavasi svayam| kiṃrūpamidamābhāsaṃ jāgataṃ vada paśyasi|| 8 ||

What kind of state are you experiencing now? Tell me, what form do you see in this manifest world?

आप अभी किस प्रकार की स्थिति का अनुभव कर रहे हैं? बताओ, आप इस प्रकट जगत में किस रूप को देखते हैं?

7.201.9

इत्युक्ते मुनिना तेन प्राह राजकुमारकः। अविह्वलं मृदु स्पष्टं गुरोरालोकयन्मुखम्॥ ९॥

ityukte muninā tena prāha rājakumārakaḥ| avihvalaṃ mṛdu spaṣṭaṃ gurorālokayanmukham|| 9 ||

Thus spoken by the sage, the prince replied with calm, soft, and clear words, looking at the face of the guru.

मुनि द्वारा ऐसा कहने पर, राजकुमार ने शांत, कोमल और स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया, गुरु के मुख की ओर देखते हुए।

7.201.10

श्रीराम उवाच। त्वत्प्रसादेन यातोऽस्मि परां निर्मलतां प्रभो। शान्ताशेषकलङ्काङ्कं शरदीव नभस्तलम्॥ १०॥

śrīrāma uvāca| tvatprasādena yāto'smi parāṃ nirmalatāṃ prabho| śāntāśeṣakalaṅkāṅkaṃ śaradīva nabhastalam|| 10 ||

Shri Rama said, 'By your grace, O Lord, I have attained supreme purity. Like the autumn sky, I am free from all blemishes, calm and serene.'

श्री राम ने कहा, 'हे प्रभु, आपकी कृपा से मैं परम पवित्रता को प्राप्त हुआ हूँ। शरद ऋतु के आकाश की तरह, मैं सभी दोषों से मुक्त, शांत और प्रसन्न हूँ।'

7.201.11

सर्वा एवोपशान्ता मे भ्रान्तयो भवभङ्गदाः । स्वरूपेणावदातेन तिष्ठाम्यच्छमिवाम्बरम् ॥ ११ ॥

sarvā evopaśāntā me bhrāntayo bhavabhaṅgadāḥ | svarūpeṇāvadātena tiṣṭhāmyacchamivāmbaram || 11 ||

All my delusions, which are the cause of the destruction of the world, have been pacified. I remain like the clear sky, revealed by my own nature.

मेरी सभी भ्रांतियाँ, जो संसार के विनाश का कारण हैं, शान्त हो गई हैं। मैं अपने स्वरूप से प्रकट होकर निर्मल आकाश की तरह स्थित हूँ।

7.201.12

स्थितोऽहं गलितग्रन्थिः शान्ताशेषविशेषणः । स्फटिकालयमध्यस्थस्फटिकामलधीरहम् ॥ १२ ॥

sthito'haṃ galitagranthiḥ śāntāśeṣaviśeṣaṇaḥ | sphaṭikālayamadhyasthasphaṭikāmaladhīraham || 12 ||

I am established, with all my knots dissolved, devoid of all distinctions. I am like a crystal placed in the middle of a crystal, with a pure and clear mind.

मैं स्थित हूँ, मेरे सभी ग्रंथियाँ घुल गई हैं, सभी विशेषणों से रहित। मैं एक स्फटिक के मध्य रखे हुए स्फटिक की तरह हूँ, पूर्ण और निर्मल मन के साथ।

7.201.13

अन्यच्छ्रोतुमथाहर्तुं शान्तं नेच्छति मे मनः । परां तृप्तिमुपायान्तं सुषुप्तमिव संस्थितम् ॥ १३ ॥

anyacchrotumathāhartuṃ śāntaṃ necchati me manaḥ | parāṃ tṛptimupāyāntaṃ suṣuptamiva saṃsthitam || 13 ||

My mind does not desire to hear or grasp anything else. It is completely satisfied and remains in a state of deep sleep-like tranquility.

मेरा मन किसी और चीज को सुनना या ग्रहण करना नहीं चाहता। यह पूर्ण संतुष्ट है और गहरी नींद की तरह शान्त स्थिति में रहता है।

7.201.14

शान्ताशेषपरामर्शं विगताशेषकौतुकम् । संत्यक्ताशेषसंकल्पं शान्तं मम मुने मनः ॥ १४ ॥

śāntāśeṣaparāmarśaṃ vigatāśeṣakautukam | saṃtyaktāśeṣasaṅkalpaṃ śāntaṃ mama mune manaḥ || 14 ||

My mind, O sage, is peaceful, having completely reflected on the highest truth, devoid of all curiosities, and having abandoned all resolves.

हे मुनि, मेरा मन शान्त है, जिसने सर्वोच्च सत्य पर पूर्ण रूप से ध्यान किया है, सभी जिज्ञासाओं से मुक्त है और सभी संकल्पों को त्याग दिया है।

7.201.15

परिनिर्वामि शाम्यामि जाग्रदेव जगत्स्थितौ । अस्वप्नमपुनर्बोधं स्वपिमीव निरामयम् ॥ १५ ॥

parinirvāmi śāmyāmi jāgradeva jagatsthitau | asvapnamapunarbodhaṃ svapimīva nirāmayam || 15 ||

I am completely liberated and peaceful, even while awake in this world. I sleep without dreams and without the need for awakening, free from all afflictions.

मैं पूर्ण रूप से मुक्त और शान्त हूँ, Even while awake in this world. मैं स्वप्न और पुनर्बोध के बिना सोता हूँ, सभी कष्टों से मुक्त।

7.201.16

आशाविधुरितामात्मसंस्थितिं प्राक्तनीं तनौप्रविहस्य स्फुरत्सूक्तैः स्वस्थस्तिष्ठाम्यसंशयम् ॥ १६ ॥

āśāvidhuritāmātmasaṃsthitiṃ prāktanīṃ tanaupravihasya sphuratsūktaiḥ svasthastiṣṭhāmyasaṃśayam || 16 ||

Having abandoned the previous state of the self, which was disturbed by hope, I stand firm, without doubt, with the vibrant words.

आशा से विचलित पूर्व स्थिति को त्यागकर, मैं निश्चित रूप से स्थिर खड़ा हूँ, विचारों के साथ।

7.201.17

नोपदेशेन नार्थेन न शास्त्रैर्न च बन्धुभिःत्यागेन च न चैतेषामधुना मम कारणम् ॥ १७ ॥

nopadeśena nārthena na śāstrairna ca bandhubhiḥtyāgena ca na caiteṣāmadhunā mama kāraṇam || 17 ||

Neither by instruction, nor by wealth, nor by scriptures, nor by relatives, nor by renunciation, are these the cause of my current state.

न तो उपदेश से, न धन से, न शास्त्रों से, न रिश्तेदारों से, और न त्याग से, ये मेरी वर्तमान स्थिति का कारण नहीं हैं।

7.201.18

साम्राज्यस्याथवा व्योम्नि या स्थितिः क्षोभवर्जिताताामेवानुभवाम्यत्र मच्चित्तामनपायिनीम् ॥ १८ ॥

sāmrājyasyāthavā vyomni yā sthitiḥ kṣobhavarjitātāmevānubhavāmyatra maccittāmanapāyinīm || 18 ||

I experience here the state of sovereignty or the sky, which is free from disturbance, and my mind does not waver.

मैं यहाँ साम्राज्य या आकाश की उस स्थिति का अनुभव करता हूँ, जो विचलन से मुक्त है, और मेरा मन नहीं डोलता।

7.201.19

खादप्यतितरामच्छं चिदाकाशांशमात्रकम्जगदित्येव पश्यामि लोचनाद्यङ्गतां गतः ॥ १९ ॥

khādapyatitarāmacchaṃ cidākāśāṃśamātrakamjagadityeva paśyāmi locanādyaṅgatāṃ gataḥ || 19 ||

I see the world as if it were the purest sky, merely a part of the space of consciousness, having attained the state of the eyes and other senses.

मैं संसार को देखता हूँ जैसे कि वह सबसे शुद्ध आकाश हो, केवल चेतना के आकाश का एक हिस्सा, नेत्रों और अन्य इंद्रियों की स्थिति प्राप्त करके।

7.201.20

आकाशमात्रमेवेदं जगदित्येकनिश्चयःदृश्यनाम्नि नभस्यस्मिन्क्षये जागर्मि चाक्षयः ॥ २० ॥

ākāśamātramevedaṃ jagadityekaniścayaḥdṛśyanāmni nabhasyasminkṣaye jāgarmi cākṣayaḥ || 20 ||

This world is indeed only space, this is the certain conclusion. In the destruction of the visible sky, I remain awake and imperishable.

यह संसार वास्तव में केवल आकाश है, यह निश्चित निष्कर्ष है। दृश्य आकाश के विनाश में भी मैं जाग्रत और अविनाशी रहता हूँ।

7.201.21

यथाकामं यथाप्राप्तं यथास्थितमिव स्थितम्यद्वक्ति तदविघ्नेन करोम्यपगतैषणम् ॥ २१ ॥

yathākāmaṃ yathāprāptaṃ yathāsthitamiva sthitamyadvakti tadavighnena karomyapagataiṣaṇam || 21 ||

I remain as I desire, as I have attained, and as I am situated. I do what is spoken without obstacles, free from desires.

मैं जैसा चाहता हूँ, जैसा प्राप्त हुआ हूँ, और जैसा स्थित हूँ, वैसा ही रहता हूँ। मैं जो कहता हूँ, वह बिना बाधा के, इच्छाओं से मुक्त होकर करता हूँ।

7.201.22

न तुष्यामि न हृष्यामि न पुष्यामि न रोदिमिकार्यं कार्यं करोम्येको भ्रान्तिर्दूरं गता मम ॥ २२ ॥

na tuṣyāmi na hṛṣyāmi na puṣyāmi na rodimikāryaṃ kāryaṃ karomyeko bhrāntirdūraṃ gatā mama || 22 ||

I am neither satisfied nor excited, neither nourished nor grieved. I do my duty alone, my delusion has gone far away.

मैं न तो संतुष्ट हूँ न ही उत्साहित, न तो पोषित हूँ न ही दुःखी। मैं अकेला अपना कर्तव्य करता हूँ, मेरी भ्रांति दूर चली गई है।

7.201.23

अन्यतामेतु सर्गोऽयं वातु वा प्रलयानिलःसौम्यो भवतु वा देशः स्वस्थोऽहं स्वात्मनि स्थितः ॥ २३ ॥

anyatāmetu sargo'yaṃ vātu vā pralayānilaḥsaumyo bhavatu vā deśaḥ svastho'haṃ svātmani sthitaḥ || 23 ||

Let this creation be otherwise, or let the wind of destruction blow. Let the place be peaceful or not, I am well, established in my own self.

यह सृष्टि दूसरी हो जाए, या विनाश की हवा चले। स्थान शांत हो या न हो, मैं स्वस्थ हूँ, अपने स्वयं में स्थित हूँ।

7.201.24

विश्रान्तोस्मि विलक्ष्योस्मि दुर्लक्ष्योस्मि निरामयःनाशाभिर्बन्धमाप्नोमि मुने खमिव मुष्टिभिः ॥ २४ ॥

viśrāntosmi vilakṣyosmi durlakṣyosmi nirāmayaḥnāśābhirbandhamāpnomi mune khamiva muṣṭibhiḥ || 24 ||

I am rested, I am distinct, I am hard to perceive, I am without disease. I do not attain bondage with hopes, O sage, like the sky with fists.

मैं विश्राम पा चुका हूँ, मैं विशिष्ट हूँ, मैं दुर्लभ हूँ, मैं रोगमुक्त हूँ। मैं आशाओं के साथ बंधन नहीं पाता, हे मुनि, जैसे आकाश मुट्ठियों के साथ नहीं बंधता।

7.201.25

यथा तरुगतात्पुष्पाद्गन्धः प्राप्य नभःपदम्तिष्ठत्येवमहं देहादतीतः संस्थितः समः ॥ २५ ॥

yathā tarugatātpuṣpādgandhaḥ prāpya nabhaḥpadamtiṣṭhatyevamahaṃ dehādatītaḥ saṃsthitaḥ samaḥ || 25 ||

Just as the fragrance of a flower, having reached the sky, remains there, so I, having transcended the body, remain established in equanimity.

जैसे फूल की सुगंध, आकाश तक पहुँचकर, वहाँ रहती है, वैसे ही मैं, शरीर से पार होकर, समता में स्थित रहता हूँ।

7.201.26

यथैव सर्वे राजानो विहरन्ति यथासुखम् । अप्रबुद्धाः प्रबुद्धाश्च राज्येषु बहुकर्मसु ॥ २६ ॥

yathaiva sarve rājāno viharanti yathāsukham | aprabuddhāḥ prabuddhāśca rājyeṣu bahukarmasu || 26 ||

Just as all kings enjoy as they please, whether they are enlightened or not, in their kingdoms with many duties.

जैसे सभी राजा अपनी इच्छानुसार आनंद लेते हैं, चाहे वे जाग्रत हों या न हों, अपने कर्मों से भरे राज्यों में।

7.201.27

शान्तहर्षविषादाशः स्थिरैकसमदर्शनः । स्थित आत्मनि निःशङ्कं तथैव विहराम्यहम् ॥ २७ ॥

śāntaharṣaviṣādāśaḥ sthiraikasamadarśanaḥ | sthita ātmani niḥśaṅkaṃ tathaiva viharāmyaham || 27 ||

Free from joy, sorrow, and confusion, with a steady and equal vision, I remain established in the self, fearless, and thus I enjoy.

हर्ष, विषाद और भ्रम से मुक्त, स्थिर और समान दृष्टि से, मैं आत्मा में स्थित हूँ, निर्भय, और इस प्रकार आनंद लेता हूँ।

7.201.28

सर्वस्योपर्यपि सुखी सुखं नेहामि मे प्रभो । जनसाम्येन तिष्ठामि यथेच्छं मां नियोजय ॥ २८ ॥

sarvasya uparyapi sukhī sukhaṃ nehāmi me prabho | janasāmyena tiṣṭhāmi yathecchaṃ māṃ niyojaya || 28 ||

I am happy above all, I do not seek happiness here, O Lord. I stand equal to all, as I wish, direct me.

मैं सभी से ऊपर खुश हूँ, मैं यहाँ सुख नहीं चाहता, हे प्रभो। मैं सभी के समान खड़ा हूँ, जैसे मैं चाहता हूँ, मुझे निर्देश दें।

7.201.29

बालो लीलामिव त्यक्तशङ्कं संसारसंस्थितिम्। यावद्देहमिमां साधो पालयाम्यमलैकदृक् ॥ २९ ॥

bālo līlāmiva tyaktaśaṅkaṃ saṃsārasaṃsthitim | yāvaddēhamimāṃ sādho pālayāmyamalaikadṛk || 29 ||

Like a child playing, free from fear, I maintain this worldly existence. O virtuous one, I protect this pure, single vision as long as I have this body.

बच्चे की तरह खेलते हुए, निर्भय, मैं इस संसारिक अस्तित्व को बनाए रखता हूँ। हे साधु, मैं इस शुद्ध, एकाग्र दृष्टि को जब तक मेरा यह शरीर है, बनाए रखता हूँ।

7.201.30

भुञ्जे पिबामि तिष्ठामि पालयामि निजक्रियाम्। जातोऽहं विगताशङ्कस्त्वत्प्रसादान्मुनीश्वर ॥ ३० ॥

bhujje pibāmi tiṣṭhāmi pālayāmi nijakriyām | jāto'haṃ vigatāśaṅkastvatprasādānmunīśvara || 30 ||

I eat, drink, stand, and perform my duties. I am born free from fear by your grace, O great sage.

मैं खाता हूँ, पीता हूँ, खड़ा हूँ, और अपने कर्तव्यों का पालन करता हूँ। मैं आपकी कृपा से निर्भय होकर जन्मा हूँ, हे महान ऋषि।

7.201.31

श्रीराम उवाच। अहो बत महापुण्यं पदमासादितं त्वया। अनादिमध्यपर्यन्तमिदं यत्र न शोच्यते ॥ ३१ ॥

śrīrāma uvāca | aho bata mahāpuṇyaṃ padamāsāditaṃ tvayā | anādimadhyaparyantamidaṃ yatra na śocyate || 31 ||

Sri Rama said: Indeed, you have attained the supreme state of great merit, where there is no sorrow from beginning to end.

श्रीराम ने कहा: वास्तव में, तुमने महान पुण्य की स्थिति प्राप्त कर ली है, जहाँ आदि से अंत तक कोई शोक नहीं है।

7.201.32

सम्यक्समसमाभोगे शीतले स्वात्मनि स्वयम्। नभसीव नभः शान्ते विश्रान्तिमसि लब्धवान् ॥ ३२ ॥

samyaksamasamābhoge śītale svātmani svayam | nabhasīva nabhaḥ śānte viśrāntimasi labdhavān || 32 ||

You have attained perfect equanimity, experiencing the coolness of your own self, like the sky merging with the sky, in a state of tranquility.

तुमने पूर्ण समता प्राप्त कर ली है, अपने स्वयं की शीतलता का अनुभव करते हुए, जैसे आकाश आकाश में विलीन हो जाता है, एक शांत अवस्था में।

7.201.33

दिष्ट्या जातो विशोकस्त्वं दिष्ट्या सम्यगवस्थितः। दिष्ट्या लोकद्वयेऽनर्थशङ्का ते शममागता ॥ ३३ ॥

diṣṭayā jāto viśokastvaṃ diṣṭyā samyagavasthitaḥ | diṣṭayā lokadvaye'narthaśaṅkā te śamamāgatā || 33 ||

By fate, you are born without sorrow, by fate, you are rightly established. By fate, your fear of misfortune in both worlds has come to an end.

भाग्य से, तुम शोक से मुक्त होकर जन्मे हो, भाग्य से, तुम सही ढंग से स्थापित हो। भाग्य से, दोनों लोकों में तुम्हारा अनर्थ का भय समाप्त हो गया है।

7.201.34

दिष्टया रघूणां तनय संज्ञः पावितवानसि । भूतभव्यभविष्यस्थां बोधेन कुलसंततिम् ॥ ३४ ॥

diṣṭayā raghūṇāṃ tanaya saṃjñaḥ pāvitavānasi | bhūtabhavyabhaviṣyasthāṃ bodhena kulasantatim || 34 ||

By fate, O son of Raghu, you have purified the lineage with your wisdom, which exists in the past, present, and future.

भाग्य से, हे रघु के पुत्र, तुमने अपनी बुद्धि से वंश को पवित्र कर दिया है, जो भूत, भविष्य और वर्तमान में मौजूद है।

7.201.35

अधुना मुनिनाथस्य विश्वामित्रस्य राघव । पूरयित्वार्थितां भुक्त्वा पित्रा सह महीमिमाम् ॥ ३५ ॥

adhunā munināthasya viśvāmitrasya rāghava | pūrayitvārthitāṃ bhuktvā pitrā saha mahīmimām || 35 ||

Now, O Raghava, fulfill the request of the sage Visvamitra and enjoy this earth with your father.

अब, हे राघव, ऋषि विश्वामित्र की प्रार्थना को पूरा करो और अपने पिता के साथ इस पृथ्वी का आनंद लो।

7.201.36

त्वयान्विताः सतनयभृत्यबान्धवाः पदातयः सरथंगजाश्वमण्डलाः । निरामया विगतभयाः स्थिरश्रियः सदोदयाः सुभग भवन्तु राघवाः ॥ ३६ ॥

tvayānvitāḥ satanayabhṛtyabāndhavāḥ padātayaḥ sarathaṃgajāśvamaṇḍalāḥ | nirāmayā vigatabhayāḥ sthiraśriyaḥ sadodayāḥ subhaga bhavantu rāghavāḥ || 36 ||

May the descendants, servants, and relatives of Raghava, who are accompanied by you, be free from disease, fearless, prosperous, and always rising, along with the infantry, chariots, elephants, and horses.

रघुवंशी के संतान, सेवक और बंधु, जो आपके साथ हैं, रोगमुक्त, निडर, समृद्ध और सदा उन्नति करते रहें, पैदल सेना, रथ, हाथी और घोड़ों के साथ।

Chapter 202

7.202.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । एतच्छ्रुत्वा वसिष्ठस्य वचः संसदि पार्थिवाः । सिक्ता इवामृतापूरैरन्तःशीतलतां ययुः ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | etacchrutvā vasiṣṭhasya vacaḥ saṃsadi pārthivāḥ | siktā ivāmṛtāpūrairantaḥśītalatāṃ yayuḥ || 1 ||

Shri Valmiki said: Hearing the words of Vasistha in the assembly, the kings felt as if they were sprinkled with nectar, and their hearts became cool.

श्री वाल्मीकि ने कहा: वसिष्ठ के वचन सुनकर सभा में राजाओं के हृदय अमृत से सींचे जाने के समान शीतल हो गए।

7.202.2

रामः कमलपत्राक्षो रराज वदनेन्दुना । क्षीरोद इव संपूर्णः सुधापूरेण चारुणा ॥ २ ॥

rāmaḥ kamalapatrākṣo rarāja vadanenduna | kṣīroda iva saṃpūrṇaḥ sudhāpūreṇa cāruṇā || 2 ||

Rama, with lotus-like eyes, shone with his moon-like face, as if the ocean of milk was full with the beautiful nectar.

कमल के समान नेत्रों वाले राम अपने चंद्रमा जैसे मुख से प्रकाशित हो रहे थे, मानो दूध का समुद्र सुंदर अमृत से भरा हो।

7.202.3

वामदेवादयः सर्वे तत्त्वज्ञानविशारदाः । अहो भगवता ज्ञानमुक्तमित्यूचुरादरात् ॥ ३ ॥

vāmadevādayaḥ sarve tattvajñānaviśāradāḥ | aho bhagavatā jñānamuktamityūcurādarāt || 3 ||

All, beginning with Vamadeva, who were skilled in the knowledge of truth, said with respect, 'Ah, the knowledge spoken by the Lord is wonderful.'

वामदेव आदि सभी सत्य के ज्ञान में निपुण लोग आदर से कहने लगे, 'अहो, भगवान द्वारा कहा गया ज्ञान अद्भुत है।'

7.202.4

शान्तान्तःकरणो राजा मुदा दशरथो बभौ । तुष्ट्यैव संप्रहृष्टाङ्गो नवां द्युतिमुपागतः ॥ ४ ॥

śāntāntaḥkaraṇo rājā mudā daśaratho babhau | tuṣṭyaiva saṃprahṛṣṭāṅgo navāṃ dyutimupāgataḥ || 4 ||

King Dasharatha, with a peaceful mind, shone with joy. He was delighted with satisfaction and attained a new radiance.

राजा दशरथ, शांत अंतःकरण वाले, आनंद से प्रकाशित हो रहे थे। वे संतुष्टि से प्रसन्न होकर नए तेज को प्राप्त हो गए।

7.202.5

ज्ञातज्ञेयेषु बहुषु साधुवादकथास्वथ । उवाच गलिताज्ञानो रामो वाक्यमिदं पुनः ॥ ५ ॥

jñātajñeyeṣu bahuṣu sādhuvādakathāsvatha | uvāca galitājñāno rāmo vākyamidaṃ punaḥ || 5 ||

Amidst many known and unknown things and good discussions, Rama, whose ignorance had melted away, spoke these words again.

बहुत से ज्ञात और अज्ञात विषयों और साधुवाद कथाओं में, जिसका अज्ञान पिघल चुका था, राम ने फिर से ये वचन कहे।

7.202.7

अभूम वयमात्मीयकायमात्रदृशः पुरा । प्रभो संप्रति संपन्ना विष्वग्विश्वावलोकिनः ॥ ७ ॥

abhūma vayamātmīyakāyamātradṛśaḥ purā | prabho saṃprati saṃpannā viṣvagviśvāvalokinaḥ || 7 ||

We were once limited to seeing only our own bodies, but now, O Lord, we are endowed with the ability to see everything everywhere.

हम पहले अपने शरीर को ही देखते थे, परंतु अब, हे प्रभु, हम सब कुछ हर जगह देखने में समर्थ हैं।

7.202.8

स्थितोऽस्मि सर्वसंपूर्णः संपन्नोऽस्मि निरामयः । जातोऽस्मि विगताशङ्को बुधो जागर्मि संप्रति ॥ ८ ॥

sthito'smi sarvasaṃpūrṇaḥ saṃpanno'smi nirāmayaḥ | jāto'smi vigatāśaṅko budho jāgarmi saṃprati || 8 ||

I am now complete in every way, free from disease, born without doubts, wise, and awake.

मैं अब हर तरह से पूर्ण हूँ, रोगमुक्त हूँ, संदेह रहित जन्म लिया हूँ, बुद्धिमान हूँ और जागरूक हूँ।

7.202.9

आनन्दितोऽस्म्यखेदाय सुखितोस्मि चिराय च । स्थितोऽनस्तमयायैव शाश्वतार्थोदयो मम ॥ ९ ॥

ānandito'smi akhedāya sukhitosmi cirāya ca | sthito'nastamayāyaiva śāśvatārthodayo mama || 9 ||

I am filled with bliss, free from sorrow, happy for a long time, and established in the eternal truth.

मैं आनंद से भरा हूँ, दुःख से मुक्त हूँ, लंबे समय तक सुखी हूँ, और सनातन सत्य में स्थित हूँ।

7.202.10

अहो बत पवित्रेण शीतेन ज्ञानवारिणा । त्वया सिक्तोस्मि हृष्यामि पद्मवद्धृदये स्वयम् ॥ १० ॥

aho bata pavitreṇa śītena jñānavāriṇā | tvayā sikto'smi hṛṣyāmi padmavaddhṛdaye svayam || 10 ||

Ah, by the pure, cool water of knowledge, I am sprinkled by you, and I rejoice like a lotus in my heart.

अहो, पवित्र, शीतल ज्ञान के जल से मैं तुम्हारे द्वारा सिंचित हूँ, और मेरा हृदय कमल की तरह हर्षित हो रहा है।

7.202.11

इयमद्य मया लब्धा पदवी त्वत्प्रसादतः । यस्यां स्थितस्य मे सर्वममृतत्वं गतं जगत् ॥ ११ ॥

iyamadya mayā labdhā padavī tvatprasādataḥ | yasyāṃ sthitasya me sarvamamṛtatvaṃ gataṃ jagat || 11 ||

Today, by your grace, I have attained this state where everything in the world has become immortal for me.

आज, तुम्हारी कृपा से, मैंने इस अवस्था को प्राप्त किया है जहाँ मेरे लिए सारा संसार अमर हो गया है।

7.202.12

अन्तःप्रसन्नमतिरस्तसमस्तशोकः शोभां गतोऽहममलाशय एव शान्त्या । आनन्दमात्मनि गतः स्वयमात्मनैव नैर्मल्यमभ्युपगतोऽस्मि नमोस्तु मह्यम् ॥ १२ ॥

antaḥprasannamatirastasamastasokaḥ śobhāṃ gato'hamamalāśaya eva śāntyā | ānandamātmani gataḥ svayamātmanaiva nairmalyamabhyupagato'smi namostu mahyam || 12 ||

With a serene mind, free from all sorrows, I have attained purity and peace. I have found bliss within myself, and I bow to myself with respect.

मन में शांति है, सभी दुःखों से मुक्त हूँ, शुद्धता और शांति प्राप्त हुई है| आत्मा में आनंद पाया है, स्वयं आत्मा से ही शुद्धता प्राप्त हुई है, मैं स्वयं को प्रणाम करता हूँ|

Chapter 203

7.203.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इत्थं विचारपरयोर्मुनिराघवयोस्तयोः । भास्करः श्रवणायेव व्योममध्यमुपाययौ ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | itthaṃ vicāraparayormunirāghavayostayoḥ | bhāskaraḥ śravaṇāyeva vyomamadhyamupāyayau || 1 ||

Thus, while the sage and Rama were engaged in deep thought, the sun reached the zenith for the purpose of hearing.

इस प्रकार, जब मुनि और राम गहन विचार में लगे थे, सूर्य श्रवण के लिए आकाश के मध्य में पहुंच गया।

7.203.2

तीक्ष्णतामाजगामाशु सर्वदिक्क्रमथातपः । पदार्थौघविकासार्थं रामस्येव महामतिः ॥ २ ॥

tīkṣṇatāmājagāmāśu sarvadikkamathātapaḥ | padārthaughavikāsārthaṃ rāmasyeva mahāmatiḥ || 2 ||

The intense heat quickly spread in all directions, as if to expand the realm of objects, just like the great intellect of Rama.

तीव्र गर्मी शीघ्र ही सभी दिशाओं में फैल गई, मानो पदार्थों के क्षेत्र का विस्तार करने के लिए, जैसे राम की महान बुद्धि।

7.203.3

उत्फुल्लहृदयाम्भोजस्फाराकारतया तदा । लीलापद्माकरा रेजुस्तत्रस्थाः पार्थिवा इव ॥ ३ ॥

utphullahṛdayāmbhojasphārākāratayā tadā | līlāpadmākarā rejustatrasthāḥ pārthivā iva || 3 ||

At that time, the lotus-like hearts of the kings blossomed beautifully, resembling playful lotuses.

उस समय, राजाओं के कमल-जैसे हृदय सुंदर रूप से खिल उठे, मानो खेलते हुए कमल।

7.203.4

जालं मुक्ताकलापानन्तरमाक्रान्तभास्करम् । ननर्तेव तरद्व्योम विज्ञानश्रवणादिव ॥ ४ ॥

jālaṃ muktākalāpānantaramākrāntabhāskaram | nanarteva taradvyoma vijñānaśravaṇādiva || 4 ||

The net of pearl garlands, illuminated by the sun, seemed to dance in the sky, as if listening to the knowledge.

मोती की मालाओं का जाल, सूर्य से प्रकाशित, आकाश में नाचता प्रतीत होता है, मानो ज्ञान सुन रहा हो।

7.203.5

एवं निर्वृतिमायाते रामे स्वकुलकैरवे । मुनीन्द्रवदनालोकात्सविकासमिव स्थिते ॥ ५ ॥

evaṃ nirvṛtimāyāte rāme svakulakairave | munīndravadanālokātsavikāsamiva sthite || 5 ||

Thus, with Rama experiencing joy in his own family's fragrance, and with the sage's face shining brightly, it seemed as if everything was in full bloom.

इस प्रकार, राम अपने परिवार की सुगंध में आनंद ले रहे थे, और मुनि का चेहरा चमक रहा था, मानो सब कुछ पूर्ण विकास में हो।

7.203.7

रवावौर्वोपत्र व्योम महाब्धेर्नाभितां गते । तेजःपुञ्जलसज्ज्वाले समग्ररसपायिनि ॥ ७ ॥

ravāvaurvopatra vyoma mahābdhernābhitāṃ gate | tejaḥpuñjalasajjvāle samagrarasapāyini || 7 ||

In the vast sky, which is like the navel of the great ocean, there shines a blazing mass of radiance, a confluence of all flavors.

विशाल आकाश में, जो महासागर के नाभि के समान है, एक चमकता हुआ तेज का पुंज चमक रहा है, जो सभी रसों का संगम है।

7.203.8

नभोनीलोत्पले नीले गलद्रजसि राजति । घर्मांशुकर्णिकाकान्ते स्फुरत्किरणकेसरे ॥ ८ ॥

nabhonīlotpale nīle galadrajasi rājati | gharmāṃśukarṇikākānte sphuratkiranakesare || 8 ||

In the blue lotus of the sky, the dark blue clouds shine with dissolving dust. The sun's rays gleam like the filaments of the sunflower.

आकाश के नीले कमल में, नीले बादल घुलती धूल के साथ चमक रहे हैं। सूर्य की किरणें सूर्यमुखी के रेशों की तरह चमक रही हैं।

7.203.9

अवतंसे जगल्लक्ष्म्यास्त्रिलोकीकर्णकुण्डले । अन्तर्लीनस्फुरत्तारारत्नराजिविराजिते ॥ ९ ॥

avataṃse jagallakṣmyāstrilokīkarṇakuṇḍale | antarlīnasphurattārāratnarājivirājite || 9 ||

In the embrace of the world's beauty, adorned with the earrings of the three worlds, shining with the hidden sparkling stars and jewel-like rays.

विश्व की सुंदरता के आलिंगन में, तीनों लोकों के कर्णफूल से सजे, छिपे हुए चमकते तारों और रत्नों की किरणों से चमकते हुए।

7.203.10

दिग्वधूभिर्बृहच्छृङ्गपाणिभिर्मुकुरेष्विव । धृतेषु तापभिन्नेषु महाभ्रेषु निरम्बुषु ॥ १० ॥

digvadhūbhirbṛhacchṛṅgapāṇibhirmukureṣviva | dhṛteṣu tāpabhinneṣu mahābhreṣu nirambuṣu || 10 ||

The directions are adorned with large, cloud-like hands, as if they are brides with cloud-like hands, bearing the heat-split, waterless, great clouds.

दिशाएँ बड़े, बादलों जैसे हाथों से सजी हुई हैं, जैसे कि वे बादलों जैसे हाथों वाली दुल्हनें हों, जो गर्मी से फटे, पानी रहित, बड़े बादलों को धारण करती हैं।

7.203.11

सूर्यकान्तवरोत्थेन वह्निनेव समेधिते । द्विगुणं प्रज्वलत्यर्कशून्ये गगनधामनि ॥ ११ ॥

sūryakāntavarotthena vahnineva samedhite | dviguṇaṃ prajvalatyarkaśūnye gaganadhāmani || 11 ||

Kindled by the excellent sunstone, like fire, it blazes twice as bright in the sunless sky.

श्रेष्ठ सूर्यकांत से प्रज्वलित, जैसे आग, यह सूर्य रहित आकाश में दोगुनी चमक से जलता है।

7.203.12

विनेदुर्मेदुरोद्दाममुखमारुतपूरिताः । मध्याह्नशङ्खाः कल्पान्तवातपूर्णा इवार्णवाः ॥ १२ ॥

vinedurmeduroddāmamukhamārutapūritāḥ | madhyāhnaśaṅkhāḥ kalpāntavātapūrṇā ivārṇavāḥ || 12 ||

The conch shells sounded loudly, filled with the breath of the warriors, like the oceans filled with the winds of destruction at the end of the world.

शंखों ने योद्धाओं के श्वास से भरकर ऊँची आवाज की, जैसे प्रलय के समय वायु से भरे समुद्र।

7.203.13

प्रालेयश्रीरिवाब्जेषु घर्मश्रीर्वदनेष्विव । चकार पदमाकीर्णशुद्धमुक्ताफलोपमा ॥ १३ ॥

prāleyaśrīrivābjeṣu gharmashrīrvadaneṣviva | cakāra padamākīrṇaśuddhamuktāphalopamā || 13 ||

The lotus-like faces of the women were as beautiful as the moon, and their mouths were as radiant as the sun, creating a scene as pure and lustrous as pearls scattered on the ground.

स्त्रियों के कमल के समान चेहरे चाँद के समान सुंदर थे, और उनके मुँह सूर्य के समान चमकीले थे, जो फर्श पर बिखरे मोतियों के समान शुद्ध और चमकीले दृश्य बना रहे थे।

7.203.14

गृहभित्तिपरावृत्ता सत्त्वसंरम्भमांसला । शब्दश्रीः पूरयामास कर्णमर्ण इवार्णवम् ॥ १४ ॥

gṛhabhittiparāvṛttā sattvasaṃrambhamāṃsalā | śabdaśrīḥ pūrayāmāsa karṇamarṇa ivārṇavam || 14 ||

The sound filled the ears like the ocean, echoing through the walls of the houses, resonating with the vigor and strength of the inhabitants.

आवाज ने कानों को समुद्र के समान भर दिया, घरों की दीवारों से प्रतिध्वनित होती हुई, निवासियों की उर्जा और शक्ति से गूँजती हुई।

7.203.15

पुरन्ध्रीभिर्निदाघौघशान्तये समुदीरिता । उल्ललास नवा पाण्डुकर्पूरजलदावलिः ॥ १५ ॥

purandhrībhirnidāghaughaśāntaye samudīritā | ullalāsa navā pāṇḍukarpūrajaladāvaliḥ || 15 ||

The women of the city, to soothe the intense heat, created a new and delightful breeze, like a row of pale clouds resembling camphor.

शहर की स्त्रियों ने तीव्र गर्मी को शांत करने के लिए, एक नयी और मनमोहक हवा पैदा की, जो कपूर के समान सफेद बादलों की पंक्ति के समान थी।

7.203.16

स राजा सहसामन्तः सभूपः सपरिच्छदः । सवसिष्ठः समुत्तस्थौ सहरामः स संसदः ॥ १६ ॥

sa rājā sahasāmantaḥ sabhūpaḥ saparicchadaḥ | savasiṣṭhaḥ samuttasthau saharāmaḥ sa saṃsadaḥ || 16 ||

That king, along with his ministers, kings, attendants, and the wise, arose with Rama in the assembly.

वह राजा, अपने मंत्रियों, राजाओं, सेवकों और विद्वानों के साथ, राम के साथ सभा में उठा।

7.203.17

राजानो राजपुत्राश्च मन्त्रिणो मुनयस्तथा । अन्योन्यं पूजिता जग्मुर्मुदिताः स्वं निवेशनम् ॥ १७ ॥

rājāno rājaputrāśca mantriṇo munayastathā | anyonyaṃ pūjitā jagmurmuditāḥ svaṃ niveśanam || 17 ||

The kings, princes, ministers, and sages, having honored each other, joyfully went to their respective abodes.

राजा, राजकुमार, मंत्री और ऋषि एक-दूसरे का सम्मान करके प्रसन्न होकर अपने-अपने निवास स्थानों पर चले गए।

7.203.18

अन्तःपुरगृहाग्रेषु तालवृन्तानिलाहृतैः । कर्पूरधूलिभिरभून्नवैवाम्बुदमालिका ॥ १८ ॥

antaḥpuragṛhāgreṣu tālavṛntānilāhṛtaiḥ | karpūradhūlibhirabhūnnavaivāmbudamālikā || 18 ||

In front of the inner chambers, with the breeze carrying the scent of palm leaves and camphor dust, it seemed like a new garland of clouds.

अंतःपुर के घरों के सामने, ताड़ के पत्तों और कपूर की धूल की सुगंध लेकर हवा चलने से, वहाँ एक नया बादलों का हार-सा लगा।

7.203.19

अथ मध्याह्नतूर्याणां रवे स्फूर्जति भित्तिषु । उवाच वचनं वाक्यकोविदो मुनिनायकः ॥ १९ ॥

atha madhyāhnatūryāṇāṃ rave sphūrjati bhittiṣu | uvāca vacanaṃ vākyakovido munināyakaḥ || 19 ||

Then, as the midday musical instruments resounded and the sun shone brightly on the walls, the wise sage spoke these words.

तब, जब दोपहर के वाद्यों की ध्वनि गूंजी और सूर्य की किरणें दीवारों पर चमकीं, विद्वान ऋषि ने ये शब्द कहे।

7.203.20

सर्वमेव श्रुतं श्राव्यं ज्ञेयं ज्ञातमशेषतः । त्वया राघव भो नास्ति ज्ञातव्यमपरं वरम् ॥ २० ॥

sarvameva śrutaṃ śrāvyaṃ jñeyaṃ jñātamaśeṣataḥ | tvayā rāghava bho nāsti jñātavyamaparaṃ varam || 20 ||

O Raghava, you have heard, listened to, known, and understood everything completely. There is nothing else left for you to know, O best one.

हे रघुवंशी, आपने सब कुछ सुना, सुना, जाना और समझा है। आपके लिए जानने के लिए कुछ और नहीं बचा है, हे श्रेष्ठ।

7.203.21

यथा मयोपदिष्टोऽसि यथा पश्यसि शास्त्रतः । यथानुभवसि श्रेष्ठमेकवाक्यं तथा कुरु ॥ २१ ॥

yathā mayopadiṣṭo'si yathā paśyasi śāstrataḥ | yathānubhavasi śreṣṭhamekavākyaṃ tathā kuru || 21 ||

As I have instructed you, as you see according to the scriptures, and as you experience the best, act accordingly in one word.

जैसे मैंने आपको उपदेश दिया है, जैसे आप शास्त्र के अनुसार देखते हैं, और जैसे आप सर्वोत्तम अनुभव करते हैं, उसी प्रकार एक शब्द में कार्य करें।

7.203.22

उत्तिष्ठ तावत्कार्याय वयं स्नातुं महामते । मध्याह्नसमयोऽस्माकमयमङ्गातिवर्तते ॥ २२ ॥

uttistha tavatkaryaya vayam snatum mahamate | madhyahnasamayosmakamayamangativartate || 22 ||

Arise, O wise one, for the task at hand; we must bathe, for the midday hour is passing us by.

उठो, हे बुद्धिमान, कार्य के लिए; हमें स्नान करना है, क्योंकि मध्याह्न का समय हमसे निकल रहा है।

7.203.23

अपरं यत्त्वया भद्र स्वाकाङ्क्षाविनिवृत्तये । प्रष्टव्यं तच्छुभं प्रातः प्रष्टव्यं भवता पुनः ॥ २३ ॥

aparam yattvaya bhadra svakankshavinivrittaye | prashtavyam tacchubham pratah prashtavyam bhavata punah || 23 ||

There is another matter, O virtuous one, for the fulfillment of your desire; that auspicious question should be asked again in the morning.

हे साधु, आपकी इच्छा की पूर्ति के लिए एक और विषय है; वह शुभ प्रश्न सुबह फिर से पूछा जाना चाहिए।

7.203.24

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इत्युक्ते मुनिनाथेन राजा दशरथः स्वयम् । पूजयामास तान्सभ्यान्सर्वान्साधून्सपर्यया ॥ २४ ॥

shrivalmikiruvacha | ityukte muninathena raja dasharathah svayam | pujayamasa tansabhyansarvansadhunsaparyaya || 24 ||

Sri Valmiki said: Thus addressed by the sage, King Dasharatha himself worshipped all those virtuous and wise men with due respect.

श्री वाल्मीकि ने कहा: मुनि द्वारा ऐसा कहे जाने पर, राजा दशरथ ने स्वयं उन सभी साधु और बुद्धिमान पुरुषों की यथोचित सम्मान के साथ पूजा की।

7.203.25

सह रामेण धर्मात्मा मुनिविप्रान्नृपांश्च सः । वसिष्ठाद्युपदिष्टेन क्रमेण व्योमगांस्तथा ॥ २५ ॥

saha ramena dharmatma munivipran nrpanstha | vasishthadyupadishtena kramena vyomagamstatha || 25 ||

Along with Rama, the righteous king, following the instructions of Vasistha and others, worshipped the sages, brahmins, and other kings, as well as the celestial beings in the prescribed manner.

राम के साथ, धर्मात्मा राजा ने, वसिष्ठ आदि के उपदेश के अनुसार, मुनियों, ब्राह्मणों, और अन्य राजाओं की पूजा की, साथ ही विधिवत आकाश के देवताओं की भी पूजा की।

7.203.26

मणिमुक्तागणार्थेन दिव्येन कुसुमेन च । मणिरत्नप्रदानेन मुक्ताहारार्पणेन च ॥ २६ ॥

manimuktaganarthana divyena kusumena cha | maniratnapradanena muktahararpanena cha || 26 ||

With precious gems, pearls, divine flowers, and by offering valuable jewels and pearl necklaces.

मणियों, मुक्ताओं, दिव्य फूलों, और मूल्यवान रत्नों और मोती की मालाओं के उपहार के साथ।

7.203.27

प्रणयेन प्रणामेन प्रदानेनार्थशालिना । वस्त्रासनान्नपानेन कनकेन तथा भुवा ॥ २७ ॥

praṇayena praṇāmena pradānenārthaśālinā | vastrāsanānnapānena kanakena tathā bhuvā || 27 ||

With love, respect, and valuable gifts, with clothing, seats, food, drinks, gold, and land, the king worshipped all the elders as prescribed.

प्रेम, प्रणाम, और मूल्यवान उपहारों के साथ, वस्त्र, आसन, अन्न, पान, सोने, और भूमि के साथ, राजा ने सभी बुजुर्गों की विधिवत पूजा की।

7.203.28

धूपेन गन्धमाल्याभ्यां यथोदितमनिन्दितः । पूर्वान्संपूजयामास सर्वानेव महीपतिः ॥ २८ ॥

dhūpena gandhamālyābhyāṃ yathoditamaninditaḥ | pūrvānsaṃpūjayāmāsa sarvāneva mahīpatiḥ || 28 ||

With incense, fragrance, and garlands, the king, who is blameless, worshipped all the elders as prescribed.

धूप, सुगंध, और मालाओं के साथ, निर्दोष राजा ने सभी बुजुर्गों की विधिवत पूजा की।

7.203.29

अथोत्तस्थौ सभामध्यात्सभया सह मानदः । सवसिष्ठादिदेवर्षिः सायमिन्दुरिवाम्बरात् ॥ २९ ॥

athottasthau sabhāmadhyātsabhayā saha mānadaḥ | savasiṣṭhādidevarṣiḥ sāyamindurivāmbarāt || 29 ||

Then, the respected one rose from the midst of the assembly with the sages, along with Vasistha and other divine sages, like the moon rising in the evening sky.

तब, सम्मानित व्यक्ति ने सभा के मध्य से ऋषियों के साथ, वसिष्ठ और अन्य दिव्य ऋषियों के साथ, शाम के आकाश में चंद्रमा की तरह उठकर उभरा।

7.203.30

ससभोत्थानसमयः ससंरम्भो व्यराजत । जानुदघ्नसुरोन्मुक्तपुष्पसंजातकर्दमः ॥ ३० ॥

sasabhotthānasamayaḥ sasaṃrambho vyarājata | jānudaghnasuronmuktapuṣpasañjātakardamaḥ || 30 ||

The time of the assembly's rising was filled with enthusiasm and splendor, with the ground covered in flowers released by the celestial beings, creating a mud-like layer.

सभा के उठने का समय उत्साह और शोभा से भरा था, जिसमें देवताओं द्वारा छोड़े गए फूलों से जमीन ढकी हुई थी, जो कीचड़ जैसा बना रहा था।

7.203.31

संघट्टाघट्टकेयूररत्नचूर्णारुणावनिः । छिन्नहारस्फुरन्मुक्ताताराजितनिशाम्बरः ॥ ३१ ॥

saṃghaṭṭāghaṭṭakeyūraratnacūrṇāruṇāvaniḥ | chinnahārasphuranmuktātārājitanishāmbaraḥ || 31 ||

The ground was reddened by the dust of the ornaments, and the night sky was adorned with the sparkling pearls from the broken necklaces.

जमीन आभूषणों की धूल से लाल हो गई थी, और रात का आकाश टूटे हुए हारों से छिटकी चमकीली मोतियों से सजा हुआ था।

7.203.32

देवर्षिमुनिविप्रेन्द्रपार्थिवस्पन्दसंकुलः । व्यग्रभृत्याङ्गनाहस्तकेशचञ्चलचामरः ॥ ३२ ॥

devarṣimuniviprendrapārthivaspandasankulaḥ | vyagrabhṛtyāṅganāhastakeśacañcalacāmaraḥ || 32 ||

The assembly was filled with divine sages, great scholars, kings, and their attendants, all busy with their duties, holding fans with trembling hands.

देवर्षियों, मुनियों, विप्रों, राजाओं और उनके सेवकों से भरा हुआ सभा था, जो अपने कामों में व्यस्त थे और हाथों में कंपते चंवर पकड़े हुए थे।

7.203.33

ज्ञानप्रमेयीकरणस्पन्दमानो न दारुणः । शिरःकरत्रिनयनजिह्वेष्वेव विराजितः ॥ ३३ ॥

jñānaprameyīkaraṇaspandamāno na dāruṇaḥ | śiraḥkaratrinetrajihveṣveva virājitaḥ || 33 ||

The knowledge, the object of knowledge, and the means of knowledge were all vibrating, not harshly, but shining in the head, hands, eyes, and tongue.

ज्ञान, ज्ञान का विषय, और ज्ञान के साधन सभी कंपित हो रहे थे, कठोरता से नहीं, बल्कि सिर, हाथ, आँखों और जीभ में चमक रहे थे।

7.203.34

परस्परमथापृच्छ्य पूजिताः पेशलोक्तयः । राजानो मुनयश्चैव सर्वे दशरथादयः ॥ ३४ ॥

parasparamathāpṛcchya pūjitāḥ peśaloktayaḥ | rājāno munayaścaiva sarve daśarathādayaḥ || 34 ||

After mutually inquiring about each other's well-being, the kings and sages, including Dasharatha, were honored with sweet words.

एक-दूसरे के कल्याण के बारे में पूछने के बाद, दशरथ सहित राजा और ऋषि मधुर शब्दों से सम्मानित किए गए।

7.203.35

स्वाश्रमान्साधवो जग्मुस्तुष्टस्निग्धाशया मिथः । लोकसप्तकवास्तव्या देवाः शक्रपुरादिव ॥ ३५ ॥

svāśramānsādhavo jagmustuṣṭasnigdhāśayā mithaḥ | lokasaptakavāstavyā devāḥ śakrapurādiva || 35 ||

The virtuous ones, satisfied and affectionate towards each other, returned to their respective hermitages, as if the gods were returning to Indra's city.

संतुष्ट और एक-दूसरे के प्रति स्नेहपूर्ण विचारों वाले साधु पुरुष अपने-अपने आश्रमों को लौट गए, मानो देवता इंद्र के नगर को लौट रहे हों।

7.203.36

अन्योन्यं प्रणयात्सर्वे पूजयित्वा यथाक्रमम् । तद्विसृष्टाः स्वमागत्य गृहं चक्रुर्दिनक्रियाम् ॥ ३६ ॥

anyonyaṁ praṇayātsarve pūjayitvā yathākramaṁ | tadvisṛṣṭāḥ svamāgatya gṛhaṁ cakrurdinakriyām || 36 ||

After honoring each other with affection according to their order, they were dismissed and returned to their homes to perform their daily duties.

एक-दूसरे को स्नेह से अपने-अपने क्रम से सम्मानित करके, वे विदा हुए और अपने घरों को लौटकर अपने दैनिक कार्यों को किया।

7.203.37

अथ सर्वे वसिष्ठाद्यास्तथा दशरथादयः । चक्रुर्दिवसकार्याणि राजानो मुनयस्तथा ॥ ३७ ॥

atha sarve vasiṣṭhādyāstathā daśarathādayaḥ | cakrurdivasakāryāṇi rājāno munayastathā || 37 ||

Then all, including Vasistha and others, as well as Dasharatha and others, performed their daily duties, both the kings and the sages.

फिर सभी, जिनमें वसिष्ठ और अन्य शामिल हैं, तथा दशरथ और अन्य, अपने दैनिक कार्यों को करने लगे, चाहे वे राजा हों या मुनि।

7.203.38

यथाप्राप्तं क्रियां तेषु कृतवत्स्वथ दैवसीम् । क्रमेणाकाशपथिको भास्करोऽस्तमुपाययौ ॥ ३८ ॥

yathāprāptaṃ kriyāṃ teṣu kṛtavatsvatha daivasīm | krameṇākāśapathiko bhāskaro'stamupāyayau || 38 ||

After performing their respective duties, the sun, the traveler of the sky, gradually set.

अपने-अपने कार्यों को करने के बाद, सूर्य, आकाश का यात्री, धीरे-धीरे अस्त हो गया।

7.203.39

तयैव कथया तेषां रामस्य च महामतेः । प्रबोधवशतः शीघ्रं सा व्यतीयाय शर्वरी ॥ ३९ ॥

tayaiva kathayā teṣāṃ rāmasya ca mahāmateḥ | prabodhavśataḥ śīghraṃ sā vyatīyāya śarvarī || 39 ||

Due to the conversation about Rama, the great-minded one, that night quickly passed for them.

राम, महामति के बारे में वार्तालाप के कारण, उनके लिए वह रात तेजी से बीत गई।

7.203.40

उत्सारिततमःपांसुताराकुसुमनिर्भरम् । भुवनं भवनीकुर्वन्नाजगाम दिवाकरः ॥ ४० ॥

utsāritatamaḥpāṃsutārākusumanirbharam | bhuvanaṃ bhavanīkurvannājagāma divākaraḥ || 40 ||

The sun rose, making the world bright, filled with scattered dust, stars, and flowers.

सूर्य उदय हुआ, जिससे दुनिया उज्ज्वल हो गई, जो बिखरे हुए धूल, तारों और फूलों से भरी थी।

7.203.41

करवीरकुसुम्भाभैः करैररुणयन् दिशः । विवेश गगनाम्भोधिमथ बालदिवाकरः ॥ ४१ ॥

karavīrakusumbhābhaiḥ karairaruṇayan diśaḥ | viveśa gaganāmbhodhimatha bāladivākaraḥ || 41 ||

With hands resembling red karavira and kusumbha flowers, the young sun reddened the directions and entered the sky.

हाथों के साथ जो लाल करवीर और कुसुम्भ फूलों के समान थे, युवा सूर्य ने दिशाओं को लाल किया और आकाश में प्रवेश किया।

7.203.42

राजानो राजपुत्राश्च मन्त्रिणो मुनयस्तथा । वसिष्ठाद्याः समाजग्मुः पुनर्दाशरथीं सभाम् ॥ ४२ ॥

rājāno rājaputrāśca mantriṇo munayastathā | vasiṣṭhādyāḥ samājagmuḥ punardāśarathīṃ sabhām || 42 ||

Kings, princes, ministers, and sages, including Vasistha and others, assembled again in the court of Dasharatha.

राजा, राजकुमार, मंत्री और ऋषि, जिनमें वसिष्ठ आदि शामिल थे, फिर से दशरथ की सभा में एकत्र हुए।

7.203.43

यथाक्रमं यथासंस्थं यथादेशं यथासनम्। सा विवेश सभा तत्र धिष्ण्यश्रीरम्बरे यथा ॥ ४३ ॥

yathākramaṃ yathāsaṃsthaṃ yathādeśaṃ yathāsanam | sā viveśa sabhā tatra dhiṣṇyaśrīrambare yathā || 43 ||

According to their rank, position, direction, and seating arrangement, the assembly entered the court, like the divine Lakshmi entering the sky.

अपनी क्रम, स्थिति, दिशा और बैठने के अनुसार, सभा ने उस सभा में प्रवेश किया, जैसे दिव्य लक्ष्मी आकाश में प्रवेश करती है।

7.203.44

ततो दशरथाद्येषु सुमन्त्रादिषु चाप्यलम्। वसिष्ठं संप्रशंसत्सु मुनिमासनसंस्थितम् ॥ ४४ ॥

tato daśarathādyeṣu sumantrādiṣu cāpyalam | vasiṣṭhaṃ saṃpraśaṃsatsu munimāsanasansthitam || 44 ||

Then, among Dasharatha and others, including Sumantra and others, they praised Vasistha, the sage seated on the throne.

तब, दशरथ और अन्य, जिनमें सुमंत्र और अन्य शामिल थे, उन्होंने सिंहासन पर बैठे ऋषि वसिष्ठ की प्रशंसा की।

7.203.45

वसिष्ठस्य पितुश्चाग्रे राजीवदललोचनः। उवाच राघवो धीमान्मृदुवर्णमिदं वचः ॥ ४५ ॥

vasiṣṭhasya pitusca agre rājīvadalalocanaḥ | uvāca rāghavo dhīmānmṛduvarṇamidaṃ vacaḥ || 45 ||

In the presence of his father and Vasistha, the wise Raghava, with lotus-petal eyes, spoke these gentle words.

अपने पिता और वसिष्ठ के सामने, कमल के पत्ते जैसी आँखों वाले बुद्धिमान रघुवंशी ने ये कोमल शब्द कहे।

7.203.46

श्रीराम उवाच। भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वज्ञानमहार्णव। सर्वसंदेहपरशो परशोकभयापह ॥ ४६ ॥

śrīrāma uvāca | bhagavansarvadharmajña sarvajñānamahārṇava | sarvasaṃdehaparaśo paraśokabhayāpaha || 46 ||

Sri Rama said: O Lord, knower of all duties, ocean of all knowledge, remover of all doubts, dispeller of all sorrows and fears.

श्री राम ने कहा: हे भगवान, सभी धर्मों के ज्ञाता, सभी ज्ञान के महासागर, सभी संदेहों के नाशक, सभी शोक और भय के नाशक।

7.203.47

श्रोतव्यमपरं किं मे विद्यते वेद्यमेव वा। श्रोतव्यं विद्यते यद्वा तत्सर्वं वक्तुमर्हसि ॥ ४७ ॥

śrotavyamaparaṃ kiṃ me vidyate vedyameva vā | śrotavyaṃ vidyate yadvā tatsarvaṃ vaktumarhasi || 47 ||

What else is there for me to hear or to know? If there is anything else to be heard, please tell me all about it.

मुझे और क्या सुनना है या जानना है? यदि और कुछ सुनने को है, तो उस सब के बारे में बताओ।

7.203.48

श्रीवसिष्ठ उवाच । राम संप्राप्तबुद्धिस्त्वं श्रोतव्यं ते न विद्यते । कृतकृत्या तवैषा धीः प्राप्तप्राप्या स्थितात्मनि ॥ ४८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | rāma saṃprāptabuddhis tvaṃ śrotavyaṃ te na vidyate | kṛtakṛtyā tava eṣā dhīḥ prāptaprāpyā sthitātmani || 48 ||

Vasistha said: O Rama, you have attained wisdom. There is nothing more for you to hear. Your intellect is fulfilled, having achieved its purpose in the self-realized state.

वसिष्ठ ने कहा: हे राम, तुम बुद्धिमान हो गए हो। तुम्हारे लिए और कुछ सुनने को नहीं है। तुम्हारी बुद्धि पूर्ण हो गई है, जो आत्म-स्थिति में अपने उद्देश्य को प्राप्त हो गई है।

7.203.49

त्वमेव तावत्कथय प्रविचार्य धियात्मना । कीदृशोऽद्य भवानन्तः किं शेषं श्राव्यमस्ति ते ॥ ४९ ॥

tvameva tāvat kathaya pravicārya dhiyātmanā | kīdṛśo'dya bhavānantaḥ kiṃ śeṣaṃ śrāvyamasti te || 49 ||

You yourself now describe, having reflected with your intellect, what kind of state you are in now and what remains to be heard by you.

तुम स्वयं अब बताओ, अपनी बुद्धि से विचार करके, कि तुम अब किस अवस्था में हो और तुम्हारे लिए और क्या सुनना बाकी है।

7.203.50

श्रीराम उवाच । ब्रह्मन्नेवमहं मन्ये यथाहं कृतकृत्यधीः । निर्वाणोस्मि प्रशान्तोस्मि नाकाङ्क्षा मम विद्यते ॥ ५० ॥

śrīrāma uvāca | brahmann evam ahaṃ manye yathāhaṃ kṛtakṛtyadhīḥ | nirvāṇosmi praśāntosmi nākāṅkṣā mama vidyate || 50 ||

Rama said: O Brahman, I think as you say, I am of fulfilled intellect. I am liberated, I am peaceful, I have no desires.

राम ने कहा: हे ब्रह्मन, मैं ऐसा ही सोचता हूँ जैसा आप कहते हैं, मैं पूर्ण बुद्धि वाला हूँ। मैं मुक्त हूँ, मैं शांत हूँ, मेरी कोई इच्छा नहीं है।

7.203.51

वक्तव्यमुक्तं भवता ज्ञातं ज्ञेयं मयाखिलम् । तव विश्रान्तिमायातु कृतकृत्या सरस्वती ॥ ५१ ॥

vaktavyamuktaṃ bhavatā jñātaṃ jñeyaṃ mayākhilam | tava viśrāntimāyātu kṛtakṛtyā sarasvatī || 51 ||

What was to be said has been said by you, what was to be known has been known by me completely. May Sarasvati, who is fulfilled, bring you rest.

जो कहना था वह आपने कह दिया है, जो जानना था वह मैंने पूरी तरह से जान लिया है। पूर्ण सरस्वती आपको विश्राम दें।

7.203.52

अधिगतमधिगम्यं ज्ञेयमाप्तु मयेदं विगतमखिलमैक्यं द्वैतमस्तं प्रयातम् । परिगलितमशेषं दृश्यभेदावभानं ननु निपुणमपास्ताशेषसंसारितास्था ॥ ५२ ॥

adhigatamadhigamyaṃ jñeyamāptu mayedaṃ vigatamakhilamaikyaṃ dvaitamastaṃ prayātam | parigalitamaśeṣaṃ dṛśyabhedāvabhānaṃ nanu nipuṇamapāstāśeṣasaṃsāritāsthā || 52 ||

I have attained the attainable, the knowable is to be known by me, all duality has ceased, the oneness has gone, all differences in perception have dissolved, indeed, the expert has abandoned all worldly existence.

मैंने प्राप्त किया है जो प्राप्त किया जा सकता है, ज्ञेय ज्ञात होना चाहिए मुझसे, सभी द्वैत समाप्त हो गया है, एकता चली गई है, सभी दृश्य भेद विलीन हो गए हैं, वास्तव में, विशेषज्ञ ने सभी संसारिक अस्तित्व को त्याग दिया है।

Chapter 204

7.204.1

श्रीवसिष्ठ उवाच भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः आदर्शो राजतेऽत्यर्थं पौनःपुन्येन मार्जितः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca bhūya eva mahābāho śṛṇu me paramaṃ vacaḥ ādarśo rājate'tyarthaṃ paunḥpunyena mārjitaḥ || 1 ||

Vasishtha said: O mighty-armed one, listen to my supreme words again. The mirror shines exceedingly, being polished repeatedly.

वसिष्ठ ने कहा: हे महाबाहो, मेरे परम वचन को फिर से सुनो। दर्पण बार-बार मार्जित होने से अत्यधिक चमकता है।

7.204.2

अर्थो वेदनसंकेतः शब्दो जलरवोपमः दृश्यमेतच्चिदाभानं स्वप्नवत्काभवज्जगत् ॥ २ ॥

artho vedanasanketaḥ śabdo jalaravopamaḥ dṛśyametaccidābhānaṃ svapnavatkvābhavajjagat || 2 ||

Meaning is indicated by experience, sound is like the sound of water. This visible world is a reflection of consciousness, like a dream arising from the self.

अर्थ अनुभव से इंगित होता है, शब्द जल की ध्वनि के समान है। यह दृश्य जगत चेतना का प्रतिबिंब है, जैसे स्वप्न स्वयं से उत्पन्न होता है।

7.204.3

जाग्रद्वै स्वप्नसंदृष्टः स्मरणात्म स्थितं पुरः संविद्वेदनमात्रं सत्तदन्याकारवत्ततम् ॥ ३ ॥

jāgradvai svapnasandṛṣṭaḥ smaraṇātma sthitaṃ puraḥ saṃvidvedanamātraṃ sattadanyākāravattatam || 3 ||

In the waking state, the dream is remembered, and it exists before the mind as mere awareness and experience, having a different form from that.

जाग्रत अवस्था में, स्वप्न याद किया जाता है, और वह मन के सामने केवल चेतना और अनुभव के रूप में मौजूद होता है, जिसका रूप उससे भिन्न होता है।

7.204.4

यथाच्छं संविदाकाशं मयि स्वप्नपुरात्मकम् सरूपमपि नीरूपं तथेदं भुवनत्रयम् ॥ ४ ॥

yathācchaṃ saṃvidākāśaṃ mayi svapnapurātmakam sarūpamapi nīrūpaṃ tathedaṃ bhuvanatrayam || 4 ||

Just as the dream city in the space of consciousness in me is both with form and formless, so is this threefold world.

जैसे चेतना के आकाश में मेरे अंदर स्वप्न नगर रूप और निराकार दोनों है, वैसे ही यह त्रिलोकी है।

7.204.5

श्रीराम उवाच संपन्नेयं कथं भूमिः संपन्ना गिरयः कथम् कथं संपन्नमम्भश्च संपन्ना उपलाः कथम् ॥ ५ ॥

śrīrāma uvāca saṃpanneyaṃ kathaṃ bhūmiḥ saṃpannā girayaḥ katham kathaṃ saṃpannamambhaśca saṃpannā upalāḥ katham || 5 ||

Rama said: How is this earth complete? How are the mountains complete? How is the water complete? How are the stones complete?

राम ने कहा: यह पृथ्वी कैसे पूर्ण है? पर्वत कैसे पूर्ण हैं? जल कैसे पूर्ण है? पत्थर कैसे पूर्ण हैं?

7.204.6

कथं च तेजः संपन्नं संपन्ना च कथं क्रिया । कथं च कालः संपन्नः संपन्नः पवनः कथम् ॥ ६ ॥

kathaṃ ca tejaḥ saṃpannaṃ saṃpannā ca kathaṃ kriyā | kathaṃ ca kālaḥ saṃpannaḥ saṃpannaḥ pavanaḥ katham || 6 ||

How is the fire accomplished and how is the action accomplished? How is time accomplished and how is the wind accomplished?

कैसे अग्नि संपन्न हुई और कैसे क्रिया संपन्न हुई? कैसे समय संपन्न हुआ और कैसे वायु संपन्न हुई?

7.204.7

कथं च शून्यं संपन्नं संपन्नं चिन्नभः कथम् । इति ज्ञातं मया भूयो बोधाय वद मे प्रभो ॥ ७ ॥

kathaṃ ca śūnyaṃ saṃpannaṃ saṃpannaṃ cinnabhaḥ katham | iti jñātaṃ mayā bhūyo bodhāya vada me prabho || 7 ||

How is emptiness accomplished and how is the ether accomplished? I have known this before, O Lord, please tell me for enlightenment.

कैसे शून्यता संपन्न हुई और कैसे आकाश संपन्न हुआ? मैंने यह पहले ही जान लिया है, हे प्रभु, बोध के लिए मुझे बताओ।

7.204.8

श्रीवसिष्ठ उवाच । ब्रूहि राघव तत्त्वेन स्वप्नदृष्टमहापुरे । संपन्ना भूः कथमिव संपन्नं कथमम्बरम् ॥ ८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | brūhi rāghava tattvena svapnadṛṣṭamahāpure | saṃpannā bhūḥ kathamiva saṃpannaṃ kathamambaram || 8 ||

Vasishtha said: Tell me, Raghava, the truth about the great city seen in the dream. How is the earth accomplished and how is the sky accomplished?

वसिष्ठ ने कहा: हे रघुवंशी, स्वप्न में देखी गई महान नगरी के बारे में सत्य बताओ। पृथ्वी कैसे संपन्न हुई और आकाश कैसे संपन्न हुआ?

7.204.9

कथं वारि च संपन्नं संपन्ना उपलाः कथम् । कथं च तेजः संपन्नं संपन्नाश्च कथं दिशः ॥ ९ ॥

kathaṃ vāri ca saṃpannaṃ saṃpannā upalāḥ katham | kathaṃ ca tejaḥ saṃpannaṃ saṃpannāśca kathaṃ diśaḥ || 9 ||

How is water accomplished and how are stones accomplished? How is fire accomplished and how are directions accomplished?

कैसे जल संपन्न हुआ और कैसे पत्थर संपन्न हुए? कैसे अग्नि संपन्न हुई और कैसे दिशाएँ संपन्न हुईं?

7.204.10

संपन्नश्च कथं कालः संपन्ना च कथं क्रिया । कथमेतन्निमित्तादि सर्वं संपन्नमुच्यताम् ॥ १० ॥

saṃpannaśca kathaṃ kālaḥ saṃpannā ca kathaṃ kriyā | kathametannimittādi sarvaṃ saṃpannamucyatām || 10 ||

How is time accomplished and how is action accomplished? How is all this, including causes and effects, said to be accomplished?

कैसे समय संपन्न हुआ और कैसे क्रिया संपन्न हुई? कैसे यह सब, कारण और परिणाम सहित, संपन्न कहा जाता है?

7.204.11

केनेदं निर्मितं दग्धमानीतं रचितं चितम्। उत्पादितं प्रकटितं किमाचारं किमात्मकम्॥ ११॥

kenedaṃ nirmitaṃ dagdhamānītaṃ racitaṃ citam | utpāditaṃ prakaṭitaṃ kimācāraṃ kimātmakam || 11 ||

By whom is this created, burnt, brought, composed, piled up, produced, and manifested? What is its nature and essence?

इसे किसने बनाया, जलाया, लाया, रचा, जमाया, उत्पन्न किया और प्रकट किया? इसका स्वभाव और सार क्या है?

7.204.12

श्रीराम उवाच। आत्मास्य केवलं व्योम न सद्भूम्यचलादिकम्। जगतः स्वप्नरूपस्य निराकारो निरास्पदः॥ १२॥

śrīrāma uvāca | ātmāsya kevalaṃ vyoma na sadbhūmyacalādikam | jagataḥ svapnarūpasya nirākāro nirāspadaḥ || 12 ||

Sri Rama said: The self is merely space, not the earth, mountains, etc. The world, which is like a dream, is formless and without support.

श्री राम ने कहा: आत्मा केवल आकाश है, धरती, पहाड़ आदि नहीं। यह स्वप्न-सा जगत निराकार और बिना आधार का है।

7.204.13

आत्मैव व्योमरूपोऽस्य निराधारो निराकृतिः। विनाकृतेर्वा व्योम्नोऽस्य किमाधारेण कारणम्॥ १३॥

ātmaiva vyomarūpo'sya nirādhāro nirākṛtiḥ | vinākṛtervā vyomno'sya kimādhāreṇa kāraṇam || 13 ||

The self itself is in the form of space, without support and without form. What is the cause of this formless space?

आत्मा स्वयं आकाश के रूप में है, बिना आधार और बिना रूप। इस निराकार आकाश का कारण क्या है?

7.204.14

न किंचिदेतत्संपन्नं सद्यथैतन्न संविदः। एतच्चित्कचनं नाम मन एव तथा स्थितम्॥ १४॥

na kiṃcidetatsaṃpannaṃ sadyathaitanna saṃvidaḥ | etaccitkacanaṃ nāma mana eva tathā sthitam || 14 ||

Nothing here is complete or real. This is not a matter of consciousness. This is called the mind, and it is thus established.

यहाँ कुछ भी पूर्ण या वास्तविक नहीं है। यह चेतना का मामला नहीं है। इसे मन कहते हैं, और यह ऐसे ही स्थापित है।

7.204.15

संविदेव किल व्योम तिष्ठति व्योमतामिता। दृषत्तयास्ते काठिन्याद्द्रवाज्जलमिव स्थिता॥ १५॥

saṃvideva kila vyoma tiṣṭhati vyomatāmitā | dṛṣattayāste kāṭhinyāddravājjalamiva sthitā || 15 ||

Consciousness alone is the space that exists. The spaciousness is like water, which appears solid due to its fluidity.

चेतना ही वह आकाश है जो मौजूद है। यह आकाशता पानी की तरह है, जो अपनी तरलता के कारण ठोस लगता है।

7.204.17

वस्तुतस्तु न भूम्यादि किंचित्तन्न च दृश्यता। चिदाकाशमनन्तं तत्सर्वमेकं तदात्मकम्॥ १७॥

vastutastu na bhūmyādi kiṃcittanna na ca dṛśyatā | cidākāśamanantaṃ tatsarvamekaṃ tadātmakam || 17 ||

In reality, there is nothing such as earth and other elements, nor is anything visible. That infinite consciousness-space is all one and of that nature.

वास्तव में, पृथ्वी और अन्य तत्व कुछ नहीं हैं, न ही कुछ दिखाई देता है। वह अनन्त चेतना-आकाश सब कुछ एक है और उसी स्वभाव का है।

7.204.18

द्रवत्वादम्बु हृद्याब्धेर्नानावृत्तितया यथा। अनानैव भवेन्नाना चिद्व्योमात्मनि वै तथा ॥ १८ ॥

dravatvādambu hṛdyābdhernānāvṛttitayā yathā | anānaiva bhavennānā cidvyomātmani vai tathā || 18 ||

Just as water, due to its fluidity, appears in various forms in the heart of the ocean, similarly, the various forms appear as non-different in the consciousness-sky.

जैसे पानी, अपनी तरलता के कारण, समुद्र के हृदय में विभिन्न रूपों में दिखाई देता है, उसी प्रकार, विभिन्न रूप चेतना-आकाश में अभिन्न के रूप में दिखाई देते हैं।

7.204.19

काठिन्यवेदनादुर्वी गिरितामागतेव चित्। शून्यतावेदनाच्छून्यं वेत्ति व्योमेव चिद्वपुः ॥ १९ ॥

kāṭhinyavedanādurvī girītāmāgateva cit | śūnyatāvedanācchūnyaṃ vetti vyomeva cidvapuḥ || 19 ||

Just as hardness is experienced in a mountain, consciousness experiences emptiness as empty. It knows the sky-like consciousness itself.

जैसे एक पर्वत में कठोरता का अनुभव होता है, उसी प्रकार चेतना शून्यता को शून्य के रूप में अनुभव करती है। यह आकाश-जैसी चेतना को स्वयं जानती है।

7.204.20

द्रवत्ववेदनाद्वेत्ति वारि स्पन्दतयानिलम्। औष्ण्यसंवित्ततो वह्निमत्यजन्ती निजं वपुः ॥ २० ॥

dravatvavedanādvetti vāri spandatayānilam | auṣṇyasaṃvittato vahnim atyajantī nijaṃ vapuḥ || 20 ||

From the experience of fluidity, it knows water; from the vibration, it knows air; from the experience of heat, it knows fire, abandoning its own form.

तरलता के अनुभव से, यह पानी को जानता है; स्पंदन से, यह वायु को जानता है; गर्मी के अनुभव से, यह आग को जानता है, अपने रूप को त्यागकर।

7.204.21

एवंस्वभाव एवायं चिद्धातुर्गगनात्मकः। यदेवं नाम कचति निष्कारणगुणक्रमम् ॥ २१ ॥

evaṃsvabhāva evāyaṃ ciddhāturgaganātmakaḥ | yadevaṃ nāma kacati niṣkāraṇaguṇakramam || 21 ||

Thus, the nature of this consciousness element is indeed like the sky. If it is so, it is called the sequence of causeless qualities.

इस प्रकार, इस चेतना तत्व का स्वभाव वास्तव में आकाश की तरह है। यदि ऐसा है, तो इसे निष्कारण गुणों की क्रम कहा जाता है।

7.204.22

न चैतद्व्यतिरेकेण किंचिन्नापीह विद्यते। अन्यच्छून्यत्ववारिभ्यामृते खार्णवयोरिव ॥ २२ ॥

na caitadvyatirekeṇa kiṃcinna pīha vidyate | anyacchūnyatvavāribhyāmṛte khārṇavayoriva || 22 ||

Without this, nothing else exists here | Just as the sky and the ocean are void of anything else || 22 ||

इसके बिना यहाँ कुछ भी नहीं है | जैसे आकाश और समुद्र किसी और चीज से रहित हैं || २२ ||

7.204.23

न तु चिद्गगनादन्यन्न संभवति किंचन । इदं त्वमहमित्यादि तस्मादाशान्तमास्यताम् ॥ २३ ॥

na tu cidgaganādanyann na saṃbhavati kiṃcana | idaṃ tvamahamityādi tasmādāśāntamāsyatām || 23 ||

Nothing else exists apart from the sky of consciousness | Therefore, let the notions of 'I' and 'you' be stilled || 23 ||

चेतना के आकाश के अलावा कुछ और नहीं है | इसलिए, 'मैं' और 'तुम' जैसी धारणाओं को शांत हो जाना चाहिए || २३ ||

7.204.24

त्वं यथास्मिन् गृहे कुर्वन्नग्निशैलादिकां विदम् । तदेव पश्यस्यवपुरेवं चिद्गगनं तथा ॥ २४ ॥

tvaṃ yathāsmiṅ gṛhe kurvannagnīśailādikāṃ vidam | tadeva paśyasyavapurevaṃ cidgaganaṃ tathā || 24 ||

Just as you perceive fire, mountains, etc., in a house | Similarly, you perceive the body as the sky of consciousness || 24 ||

जैसे आप घर में अग्नि, पर्वत आदि देखते हैं | वैसे ही, आप शरीर को चेतना के आकाश के रूप में देखते हैं || २४ ||

7.204.25

चिद्व्योम भाति देहाभं सर्गादौ न तु देहकः । अकारणत्वादसतश्चिदुदेतीति चिन्त्यताम् ॥ २५ ॥

cidvyoma bhāti dehābhaṃ sargādau na tu dehakaḥ | akāraṇatvādasataścidudetīti cintyatām || 25 ||

The sky of consciousness appears as the body at the beginning of creation | It is not the body, due to its causeless nature and non-existence || 25 ||

चेतना का आकाश सृष्टि के आरंभ में शरीर के रूप में प्रकट होता है | यह शरीर नहीं है, क्योंकि यह कारणरहित और असत् है || २५ ||

7.204.26

मनोबुद्धिरहंकारो भूतानि गिरयो दिशः । शिलाजठरवन्मौनमयं सर्वे यथास्थितम् ॥ २६ ॥

manobuddhirahaṃkāro bhūtāni girayo diśaḥ | śilājaṭharavanmauṇamayaṃ sarve yathāsthitam || 26 ||

The mind, intellect, ego, elements, mountains, directions, stones, water, air, fire, and space | All these are as they are || 26 ||

मन, बुद्धि, अहंकार, भूत, पर्वत, दिशाएँ, पत्थर, जल, वायु, अग्नि और आकाश | ये सभी जैसे हैं वैसे ही हैं || २६ ||

7.204.27

एवं न किंचिदुत्पन्नं नष्टं न च न किंचन । यथास्थितं जगद्रूपं चिद्ब्रह्मात्मनि तिष्ठति ॥ २७ ॥

evaṃ na kiṃcidutpannaṃ naṣṭaṃ na ca na kiṃcana | yathāsthitaṃ jagadrūpaṃ cidbrahmātmani tiṣṭhati || 27 ||

Thus, nothing is created, nothing is destroyed, and nothing is non-existent. The world exists in its true form within the consciousness of Brahman.

इस प्रकार, कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ है, कुछ भी नष्ट नहीं हुआ है, और कुछ भी अस्तित्वहीन नहीं है। संपूर्ण जगत् अपने वास्तविक रूप में ब्रह्म चेतना में स्थित है।

7.204.28

चितौ यत्कचनं नाम स्वरूपप्रविजृम्भणम् । तदेतज्जगदित्युक्तं द्रव एव यथा जलम् ॥ २८ ॥

citau yatkacanaṃ nāma svarūpapravijṛmbhaṇam | tadetajjagadityuktaṃ drava eva yathā jalam || 28 ||

Whatever is manifested in consciousness is called the world, just as water is called fluid.

चेतना में जो भी प्रकट होता है, उसे जगत् कहते हैं, जैसे पानी को द्रव कहते हैं।

7.204.29

इदं जगद्भानमभानमेव चिद्व्योम शून्यं परमार्थ एव । यथर्थसंदर्शनबुद्धबुद्धेरबुद्धबुद्धेस्तु यथा तथास्तु ॥ २९ ॥

idaṃ jagadbhānamabhānameva cidvyoma śūnyaṃ paramārtha eva |
yatharthasandarśanabuddhabuddherabuddhabuddhestu yathā tathāstu || 29 ||

This world is both real and unreal, it is the void of pure consciousness, the ultimate truth. To the enlightened, it appears as it is, to the unenlightened, it appears otherwise.

यह जगत् सत्य और असत्य दोनों है, यह शुद्ध चेतना का शून्य है, परम सत्य है। ज्ञानी को यह जैसा है वैसा ही दिखता है, अज्ञानी को यह दूसरे रूप में दिखता है।

Chapter 205

7.205.1

श्रीराम उवाच । एवं यथैतद्भगवन्स्वप्ने दृश्यं परं नभः । तथैव जाग्रतीत्यत्र न चेत्संदेहजालिका ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | evaṃ yathaitadbhagavansvapne dṛśyaṃ paraṃ nabhaḥ | tathaiva jāgratītyatra na cet saṃdehajālikā || 1 ||

Shri Rama said: Just as the supreme vision is seen in a dream, O Lord, so it is in the waking state; if not, there is a network of doubts.

श्री राम ने कहा: जैसे स्वप्न में परम दृश्य दिखाई देता है, वैसे ही जाग्रत अवस्था में भी दिखाई देता है; यदि ऐसा नहीं है, तो संदेह का जाल है।

7.205.2

इदं मे भगवन्ब्रूहि महाप्रश्नमनुत्तमम् । कथं भवत्यदेहा चिज्जाग्रत्स्वप्न स्वदेहवत् ॥ २ ॥

idaṃ me bhagavanbrūhi mahāpraśnamanuttamam | kathaṃ bhavatyadehā cijjāgratsvapna svadehavat || 2 ||

O Lord, please tell me this supreme question: How does the bodiless consciousness become like its own body in the waking and dream states?

हे भगवन्, मुझे यह उत्तम महाप्रश्न बताएँ: कैसे बिना शरीर की चेतना जाग्रत और स्वप्न अवस्था में अपने शरीर के समान हो जाती है?

7.205.3

श्रीवसिष्ठ उवाच । दृश्यं जाग्रत्यथ स्वप्ने खाधारं खात्मकं खजम् । खं च नान्यत्परं जातु संदेहोऽस्त्युपपत्तितः ॥ ३ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | dṛśyaṃ jāgratyatha svapne khādhāraṃ khātmakaṃ khajam | khaṃ ca nānyatparaṃ jātu saṃdeho'styupapattitaḥ || 3 ||

Shri Vasistha said: The vision in the waking state and in the dream is the support of the sky, the nature of the sky, and the sky itself. There is no other supreme than the sky, and doubt arises from reasoning.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जाग्रत और स्वप्न अवस्था में दृश्य आकाश का आधार, आकाश की प्रकृति, और आकाश स्वयं है। आकाश के अलावा कोई अन्य परम नहीं है, और संदेह तर्क से उत्पन्न होता है।

7.205.4

समस्तकारणाकारप्रत्यस्तमयरूपिणि । सर्गादावेव भूतानि संभवन्ति न कानिचित् ॥ ४ ॥

samastakāraṇākārapratyastamayarūpiṇi | sargādāveva bhūtāni saṃbhavanti na kānicit || 4 ||

In the form of the cause and effect, which is the nature of illusion, all beings arise only at the beginning of creation, not at any other time.

कारण और कार्य के रूप में, जो माया की प्रकृति है, सभी प्राणी सृष्टि के आरंभ में ही उत्पन्न होते हैं, किसी अन्य समय में नहीं।

7.205.5

पृथ्व्यादिनियतस्तेन देहोऽयं नास्ति किंचन । भूतान्येव किलैतानि देहस्तानि न सन्त्यलम् ॥ ५ ॥

pṛthvyādiniyatastena deho'yaṃ nāsti kiṃcana | bhūtānyeva kilaaitāni dehas tāni na santyalam || 5 ||

This body, which is determined by the elements, does not exist at all. Only the elements exist; the body does not exist independently.

यह शरीर, जो तत्वों द्वारा निर्धारित है, वास्तव में नहीं है। केवल तत्व ही हैं; शरीर स्वतंत्र रूप से नहीं है।

7.205.6

तेन स्वप्नवदाभासमिदं पश्यति चिन्नभःस्वरूपमात्रकचनमाकारवदिवाकुलम् ॥ ६ ॥

tena svapnavadābhāsamidaṃ paśyati cinnabhaḥsvarūpamātrakacanamākāravadivākulam || 6 ||

By that, one sees this world as a mere appearance like a dream, which is nothing but the form of pure consciousness, agitated like a wave.

उससे, यह दुनिया एक स्वप्न की तरह एक मात्र आभास दिखती है, जो केवल शुद्ध चेतना का रूप है, जो एक तरंग की तरह व्याकुल है।

7.205.7

भानमाभानमात्रत्वमिदं यत्तच्चिदात्मनानभसा स्वप्नशब्देन कथ्यते जगदाकृतिः ॥ ७ ॥

bhānamābhānamātratvamidaṃ yattaccidātmanānabhasā svapnaśabdena kathyate jagadākṛtiḥ || 7 ||

This world, which is merely an appearance, is described as a dream by the term 'sky'. It is nothing but the form of pure consciousness.

यह दुनिया, जो केवल एक आभास है, 'आकाश' शब्द से एक स्वप्न के रूप में वर्णित की जाती है। यह केवल शुद्ध चेतना का रूप है।

7.205.8

यदेतद्वेदनं नाम चिद्व्योम्नो व्योमनिर्मलमेतदन्तश्चितो रूपं स्वप्नो जगदिति स्थितम् ॥ ८ ॥

yadetadvedanaṃ nāma cidvyomno vyomanirmalametadantaścito rūpaṃ svapno jagaditi sthitam || 8 ||

That which is called suffering is the pure space of consciousness, which is the form of the inner consciousness. The world is established as a dream.

जो दुःख कहलाता है, वह चेतना का शुद्ध आकाश है, जो आंतरिक चेतना का रूप है। दुनिया एक स्वप्न के रूप में स्थापित है।

7.205.9

एतस्मिन्नेव तेनाथ स्वभावकचने ततेचिद्रूपेण कृताः संज्ञाः पृथक्पृथ्व्यादिका इमाः ॥ ९ ॥

etasminneva tenātha svabhāvakacane tatecidrūpeṇa kṛtāḥ saṃjñāḥ pṛthakpṛthvyādikā imāḥ || 9 ||

In this very consciousness, by its own nature, these various names and forms such as earth, etc., are created.

इसी चेतना में, अपने स्वभाव से, ये विभिन्न नाम और रूप जैसे पृथ्वी आदि बनाए गए हैं।

7.205.10

चिद्भानमेव तत्स्वप्नजगच्छब्दैः प्रकथ्यतेभानं चास्याः स्वभावः खं तत्कदाचिन्न शाम्यति ॥ १० ॥

cidbhānameva tatsvapnajagacchabdaiḥ prakathyatebhānaṃ cāsyāḥ svabhāvaḥ khaṃ tatkadācinna śāmyati || 10 ||

That consciousness alone is described by the terms 'dream' and 'world'. Its nature is appearance, and it never ceases.

वह चेतना ही 'स्वप्न' और 'दुनिया' शब्दों से वर्णित की जाती है। इसका स्वभाव आभास है, और यह कभी नहीं रुकता।

7.205.11

बह्वयः सर्गदृशो भिन्ना ब्रह्मेव ब्रह्मखे च ताः । शून्यतानभसी वातस्तिष्ठन्ति च विशन्ति च ॥ ११ ॥

bahvayaḥ sargadṛśo bhinnā brahmeva brahmakhe ca tāḥ | śūnyatānabhasī vātastiṣṭhanti ca viśanti ca || 11 ||

There are many creations, distinct like Brahma, and they exist and enter into the void and the sky.

बहुत से सृष्टियाँ हैं, जो ब्रह्मा के समान अलग-अलग हैं, और वे शून्य और आकाश में रहते हैं और प्रवेश करते हैं।

7.205.12

श्रीराम उवाच । सर्गाणां कोटयः प्रोक्ता भगवन्भवता किल । काश्चिद्ब्रह्माण्डकोशस्थाः काश्चिदण्डविवर्जिताः ॥ १२ ॥

śrīrāma uvāca | sargāṇāṃ koṭayaḥ proktā bhagavanbhavatā kila | kāścibbrahmāṇḍakośasthāḥ kāścidaṇḍavivarjitāḥ || 12 ||

Sri Rama said: O Lord, you have described the multitudes of creations. Some are within the Brahmanda (cosmic egg), and some are without it.

श्री राम ने कहा: हे भगवन्, आपने सृष्टियों की अनेकता का वर्णन किया है। कुछ ब्रह्माण्ड (ब्रह्मांडीय अण्डे) में हैं, और कुछ उससे बाहर हैं।

7.205.13

काश्चिन्महीकोशगताः काश्चिदाकाशसंस्थिताः । तेजःकोशगताः काश्चित्काश्चित्पवनकोशगाः ॥ १३ ॥

kāścinmahīkośagatāḥ kāścidākāśasaṃsthitāḥ | tejaḥkośagatāḥ kāścitkāścitpavanakośagāḥ || 13 ||

Some are situated in the earthly realm, some in the sky, some in the realm of fire, and some in the realm of air.

कुछ पृथ्वी के क्षेत्र में स्थित हैं, कुछ आकाश में, कुछ अग्नि के क्षेत्र में, और कुछ वायु के क्षेत्र में।

7.205.14

काश्चिद्व्योमस्थभूपीठा ऊर्ध्वाधस्थविनिश्चयाः । बुध्नाकाशादूर्ध्वखुरा लम्बमानवनाचलाः ॥ १४ ॥

kāścidvyomastabhūpīṭhā ūrdhvādhastaviniścayāḥ | budhnākāśādūrdhvakhurā lambamānavanācalāḥ || 14 ||

Some are situated in the sky and on the earth, determined to be above and below. They are like mountains hanging from the sky, with their peaks upward.

कुछ आकाश और पृथ्वी पर स्थित हैं, ऊपर और नीचे के निश्चय के साथ। वे आकाश से लटकते हुए पर्वतों के समान हैं, जिनकी चोटियाँ ऊपर की ओर हैं।

7.205.15

काश्चिद्वातात्मभूतौघाः काश्चिन्नित्यं तमोधराः । व्योमसंस्थानकाः काश्चित्काश्चित्क्रिमिकुलाकुलाः ॥ १५ ॥

kāścidvātātmabhūtaughāḥ kāścinnityaṃ tamodharāḥ | vyomasansthānakāḥ kāścitkāścitkrimikulākulāḥ || 15 ||

Some are like the masses of wind, some are always bearers of darkness. Some are situated in the sky, and some are filled with worms.

कुछ वायु के समूह के समान हैं, कुछ हमेशा अंधकार के वाहक हैं। कुछ आकाश में स्थित हैं, और कुछ कीड़ों से भरे हुए हैं।

7.205.16

काश्चिदाकाशकोशस्थाः काश्चिच्चोपलकोशगाः । काश्चित्सकुण्डकोशस्थाः काश्चित्खे खगवत्स्थिताः ॥ १६ ॥

kāścidākāśakośasthāḥ kāściccopalakośagāḥ | kāścitsakuṇḍakośasthāḥ kāścitkhe khagavatsthitāḥ || 16 ||

Some are situated in the space-cavity, some in the stone-cavity, some in the pit-cavity, and some are situated in the sky in the form of birds.

कुछ आकाश-कोश में स्थित हैं, कुछ पत्थर-कोश में गए हैं, कुछ कुण्ड-कोश में स्थित हैं, और कुछ आकाश में पक्षी के रूप में स्थित हैं।

7.205.17

तासां मध्ये यथा हीदं ब्रह्माण्डं यादृशं स्थितम्। अस्माकं भगवंस्तन्मे ब्रूहि तत्त्वविदां वर ॥ १७ ॥

tāsāṃ madhye yathā hīdaṃ brahmāṇḍaṃ yādṛśaṃ sthitam | asmākaṃ bhagavaṃstanme brūhi tattvavidāṃ vara || 17 ||

Among them, O Lord, please tell me the truth about how this universe is situated, as it is known to the best knowers of truth.

उनमें से, हे भगवन्, मुझे यह बताएँ कि यह ब्रह्माण्ड कैसे स्थित है, जैसा कि सत्य के ज्ञाताओं में से श्रेष्ठ जानते हैं।

7.205.18

श्रीवसिष्ठ उवाच। यदपूर्वमदृष्टं वा नानुभूतं न वा श्रुतम्। तद्वर्ण्यते सुदृष्टान्तैर्गृह्यते च तदूह्यते ॥ १८ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yadapūrvamadṛṣṭaṃ vā nānubhūtaṃ na vā śrutam | tadvartyate sudṛṣṭāntairgṛhyate ca tadūhyate || 18 ||

Vasishtha said: That which is unprecedented, unseen, not experienced, or not heard, is described with good examples and is understood and explained.

वसिष्ठ ने कहा: जो अनुभव नहीं किया गया है, न देखा गया है, न अनुभव किया गया है, या न सुना गया है, वह अच्छे उदाहरणों के साथ वर्णित किया जाता है और समझा जाता है और स्पष्ट किया जाता है।

7.205.19

इदं तु राम ब्रह्माण्डमागमैर्मुनिभिः सुरैः। शतशो वर्णितं तच्च ज्ञातमेतत्त्वयाऽखिलम् ॥ १९ ॥

idaṃ tu rāma brahmāṇḍamāgamairmunibhiḥ suraiḥ | śataśo varṇitaṃ tacca jñātametattvayā'khilam || 19 ||

O Rama, this universe has been described hundreds of times by the scriptures, sages, and gods. All of this is known to you.

हे राम, यह ब्रह्माण्ड शास्त्रों, ऋषियों और देवताओं द्वारा सैकड़ों बार वर्णित किया गया है। यह सब तुम्हें ज्ञात है।

7.205.20

यथेदं भवता ज्ञातमागमैर्वर्णितं यथा। स्थितं तदेतदखिलं किमन्यदिह वर्ण्यते ॥ २० ॥

yathedaṃ bhavatā jñātamāgamairvarṇitaṃ yathā | sthitaṃ tadetadakhilaṃ kimanyadih varṇyate || 20 ||

As this has been known by you and described by the scriptures, all of this is established. What else is there to describe here?

जैसे यह तुम्हें ज्ञात है और शास्त्रों द्वारा वर्णित किया गया है, यह सब स्थापित है। यहाँ और क्या वर्णन करना है?

7.205.21

श्रीराम उवाच। कथमेतद्वद ब्रह्मन्संपन्नं चिन्महानभः। कियत्प्रमाणमेतद्वा कियत्कालं च वा स्थितम् ॥ २१ ॥

śrīrāma uvāca | kathametadvad brahmansaṃpannaṃ cinmahānabhaḥ | kiyatpramāṇametadvā kiytakālaṃ ca vā sthitam || 21 ||

Sri Rama said: How is this, O Brahman, the great ocean of consciousness, established? What is its extent and how long has it been in existence?

श्री राम ने कहा: हे ब्रह्मन्, यह चेतना का महान सागर कैसे स्थापित है? इसका परिमाण कितना है और यह कितने समय से स्थित है?

7.205.22

श्रीवसिष्ठ उवाच । अनादिनिधनं ब्रह्म नित्यमस्त्येतदव्ययम् । आदिमध्यान्तता नास्ति नाकाराः परमाम्बरे ॥ २२ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | anādinidhanaṃ brahma nityamastyetadavyayam | ādimadhyāntatā nāsti nākārāḥ paramāmbare || 22 ||

Vasishtha said: The supreme Brahman is eternal, without beginning or end, and imperishable. It has no beginning, middle, or end, and no forms in the supreme ether.

वसिष्ठ ने कहा: परम ब्रह्म अनादि, अनंत और अविनाशी है। इसमें न आदि है, न मध्य है, न अंत है, और न ही परम आकाश में कोई रूप है।

7.205.23

ब्रह्माकाशमनाद्यन्तमेतदव्ययमाततम् । एतन्मयमिदं विश्वं विष्वगाद्यन्तवर्जितम् ॥ २३ ॥

brahmākāśam anādyantam etad avyayam ātatam | etanmayam idaṃ viśvaṃ viṣvag ādyantavarjitam || 23 ||

This Brahman, which is the ether, is without beginning or end, imperishable, and pervades everything. This universe is permeated by it and is devoid of beginning or end.

यह ब्रह्म, जो आकाश है, अनादि और अनंत है, अविनाशी है, और सब कुछ में व्याप्त है। यह ब्रह्माण्ड इससे भरा हुआ है और आदि या अंत से रहित है।

7.205.24

परमस्यास्य चिद्व्योम्नः स्वयं यद्भानमात्मनि । तदेतद्विश्वमित्युक्तं स्वयं तेनैव तन्मृषा ॥ २४ ॥

paramasyāsya cidvyomnaḥ svayaṃ yadbhānamātmani | tadetadviśvamityuktaṃ svayaṃ tenaiva tanmṛṣā || 24 ||

The self-luminous manifestation of this supreme consciousness is this universe. It is said to be false, created by itself.

इस परम चेतना का स्वयं प्रकाशित रूप यह ब्रह्माण्ड है। यह स्वयं द्वारा बनाया गया और मिथ्या कहा जाता है।

7.205.25

पुरुषस्य यथा स्वप्नपुरसंदर्शनं तथा । तत्तस्य भानं पुरवत्तदिदं विश्वमुच्यते ॥ २५ ॥

puruṣasya yathā svapnapurasandarśanaṃ tathā | tattasya bhānaṃ puravattadidaṃ viśvamucyate || 25 ||

Just as a person sees a dream city, similarly, the manifestation of that (consciousness) is like a city, and this universe is called that.

जैसे एक व्यक्ति स्वप्न में एक नगर देखता है, उसी प्रकार, उस (चेतना) का प्रकटीकरण एक नगर के समान है, और यह ब्रह्माण्ड उसी कहलाता है।

7.205.26

कठिना नेह गिरयो न द्रवाणि जलानि च । न शून्यमेतदाकाशं कालो न कलनात्मकः ॥ २६ ॥

kaṭhinā neha girayo na dravāṇi jalāni ca | na śūnyametadākāśaṃ kālo na kalanātmakaḥ || 26 ||

There are no hard mountains, no flowing waters, no empty space, and time is not a measurer.

यहाँ कोई कठोर पर्वत नहीं हैं, कोई बहता पानी नहीं है, कोई खाली आकाश नहीं है, और समय कोई मापने वाला नहीं है।

7.205.27

यद्यथा चाव्ययं यत्र स्वतः संचेतितं चिता । तत्तथा तत्र चित्तत्त्वे अलं शैलादिवत्स्थितम् ॥ २७ ॥

yadyathā cāvyayaṃ yatra svataḥ saṃcetitaṃ citā | tattathā tatra cittattve alaṃ śailādivatsthitam || 27 ||

Whatever is imperishable and self-aware, that exists in the essence of consciousness, just as a mountain stands firm.

जो कुछ भी अविनाशी और स्वयं-जागरूक है, वह चेतना के सार में मौजूद है, जैसे कि एक पर्वत मजबूती से खड़ा होता है।

7.205.28

अशिलैव शिला स्वप्ने नभ एवानभो यथा । भवेत्तथेह सर्गादि स्वप्ने दृश्यस्थितिश्चितौ ॥ २८ ॥

aśilaiava śilā svapne nabha evānabho yathā | bhavettatheha sargādi svapne dṛśyasthitiścitau || 28 ||

Just as a stone in a dream is not a real stone, and the sky in a dream is not the real sky, so too the creation and existence of the world in consciousness is like a dream.

जैसे सपने में पत्थर असली पत्थर नहीं होता, और सपने में आकाश असली आकाश नहीं होता, उसी तरह चेतना में जगत की सृष्टि और अस्तित्व सपने की तरह होता है।

7.205.29

अनाकारैव चिच्छान्ता स्वप्नवत्यत्स्वचेतनम् । वेत्ति तज्जगदित्युक्तं तच्चानाकारमेव सत् ॥ २९ ॥

anākāraiva cicchāntā svapnavatyatsvacetanam | vetti tajjagadityuktaṃ taccānākārameva sat || 29 ||

The formless consciousness, which is peaceful, knows the world as a dream. That world is said to be formless.

निराकार चेतना, जो शांत है, जगत को सपने की तरह जानती है। वह जगत निराकार कहा जाता है।

7.205.30

वायोः स्पन्दो यथान्तस्थो वात एव निरन्तरः । तथेदं ब्रह्मणि ब्रह्म न चोदेति न शाम्यति ॥ ३० ॥

vāyoḥ spando yathāntastho vāta eva nirantaraḥ | tathedaṃ brahmaṇi brahma na codeti na śāmyati || 30 ||

Just as the vibration of air is inherent in the air itself and is continuous, so too is Brahman inherent in Brahman and does not arise or subside.

जैसे हवा की कंपन हवा में ही निहित होती है और निरंतर होती है, उसी तरह ब्रह्म भी ब्रह्म में ही निहित है और न उठता है न बैठता है।

7.205.31

द्रवत्वमम्भसि यथा शून्यत्वं नभसो यथा । यथा वस्तुनि वस्तुत्वं ब्रह्मणीदं जगत्तथा ॥ ३१ ॥

dravatvamambhasi yathā śūnyatvaṃ nabhaso yathā | yathā vastuni vastutvaṃ brahmaṇīdaṃ jagattathā || 31 ||

Just as liquidity is in water, emptiness is in the sky, and reality is in an object, so is this world in Brahman.

जैसे द्रवत्व पानी में है, शून्यता आकाश में है, और वस्तुता वस्तु में है, वैसे ही यह जगत ब्रह्म में है।

7.205.32

न प्रयातं न वाऽऽयातमकारणमकारणात् । न च नास्ति न वास्तीदं भिन्नं ब्रह्मपदे जगत् ॥ ३२ ॥

na prayātaṃ na vā''yātamakāraṇamakāraṇāt | na ca nāsti na vāstīdaṃ bhinnaṃ brahmapade jagat || 32 ||

This world is not moving, nor is it stationary, it is not caused by any cause, nor is it uncaused. It is neither non-existent nor existent, it is not different from Brahman.

यह जगत न तो चल रहा है, न ही ठहरा हुआ है, यह किसी कारण से नहीं है, न ही बेकारण है। यह न तो असत् है, न ही सत् है, यह ब्रह्म से भिन्न नहीं है।

7.205.33

न चानादि निराभासं निराकारं चिदम्बरम् । दृशः कारणमन्यस्याः क्वचिद्भवितुमर्हति ॥ ३३ ॥

na cānādi nirābhāsaṃ nirākāraṃ cidambaram | dṛśaḥ kāraṇamanyasyāḥ kvacidbhavitumarhati || 33 ||

The beginningless, formless, and luminous consciousness cannot be the cause of any other perception.

अनादि, निराकार, और चिदाकाश चेतना किसी अन्य दृष्टि का कारण नहीं हो सकती।

7.205.34

तस्माद्यथावयविनोऽवयवाः स्वात्ममात्रकाः । तथानवयवे ब्रह्मव्योम्नि व्योम जगत्स्थितम् ॥ ३४ ॥

tasmādyathāvayavino''vayavāḥ svātmamātrakāḥ | tathānavayave brahmavyosni vyoma jagatsthitam || 34 ||

Therefore, just as the parts of a whole are only the whole itself, so the world is situated in the partless Brahman.

इसलिए, जैसे पूर्ण के भाग केवल पूर्ण ही हैं, उसी प्रकार अविभाजित ब्रह्म में जगत स्थित है।

7.205.35

सर्वं शान्तं निरालम्बं ज्ञप्तिमात्रमनामयम् । नेह सत्ता न वासत्ता न च नानास्ति किंचन ॥ ३५ ॥

sarvaṃ śāntaṃ nirālambaṃ jñaptimātramanāmayam | neha sattā na vāsattā na ca nānāsti kiṃcana || 35 ||

Everything is peaceful, without support, mere cognition, free from disease. Here, there is neither existence nor non-existence, nor is there any diversity.

सब कुछ शान्त है, बिना आधार के, केवल ज्ञान, रोगमुक्त। यहाँ न तो अस्तित्व है, न ही अनस्तित्व, न ही कोई विविधता है।

7.205.36

संकल्पस्वप्ननगरनृत्तवत्सर्वमाततम् । स्थितमेव समं शान्तमाकाशमजमव्ययम् ॥ ३६ ॥

saṃkalpasvapnanagaranṛttavatsarvamātatam | sthitameva samaṃ śāntamākāśamajamavyayam || 36 ||

All that is perceived is like a dance in a dream city, imagined and unreal. It is steady, equal, peaceful, like the sky, unborn, and imperishable.

जो कुछ भी दिखाई देता है, वह एक स्वप्न नगर में नृत्य की तरह कल्पित और अवास्तविक है | यह स्थिर, समान, शान्त, आकाश की तरह, अजन्मा और अविनाशी है |

7.205.37

परमचिदम्बरहृदयं चित्त्वाद्यत्कचति कान्तममलमलम् । तदिदं जगदिति कलितं तेनैव तदात्मरूपमाकल्पम् ॥ ३७ ॥

paramacidambarahṛdayaṃ cittvādyatkacati kāntamamalamalam | tadidaṃ jagaditi kalitaṃ tenaiva tadātmarūpamākalpam || 37 ||

The heart of the supreme consciousness is pure and beautiful. This world is imagined by that consciousness itself, and it takes the form of that consciousness.

परम चेतना का हृदय शुद्ध और सुंदर है | यह संसार उसी चेतना द्वारा कल्पित है, और वह उसी चेतना का रूप लेता है |

Chapter 206

7.206.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । यदकारणकं भाति भानं तन्नैव किंचन । तत्तथा परमार्थेन परमार्थः स्थितोऽनघ ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yadakāraṇakaṃ bhāti bhānaṃ tannaiva kiṃcana | tattathā paramārtheṇa paramārthaḥ sthito'nagha || 1 ||

Vasishtha said: That which appears without a cause is not real. That is the ultimate truth, O sinless one.

वसिष्ठ ने कहा: जो किसी कारण के बिना दिखाई देता है, वह वास्तव में कुछ नहीं है। वही परम सत्य है, हे निष्पाप।

7.206.2

अत्रेमं केनचित्पृष्टोऽयमहं तं महामते । सम्यग्बोधस्य पुष्ट्यर्थं महाप्रश्नं परं शृणु ॥ २ ॥

atremam kenacitpṛṣṭo'yamaham taṃ mahāmate | samyagbodhasya puṣṭyarthaṃ mahāpraśnaṃ paraṃ śṛṇu || 2 ||

Here, I was asked by someone about this. O wise one, listen to the great question for the nourishment of true knowledge.

यहाँ, मुझसे किसी ने इसके बारे में पूछा। हे बुद्धिमान, सत्य ज्ञान की पोषण के लिए इस महान प्रश्न को सुनो।

7.206.3

अस्त्यब्धिभ्यामुभयतो व्याप्तं ख्यातं जगत्त्रये । कुशद्वीपमिति द्वीपं भूमौ वलयवत्स्थितम् ॥ ३ ॥

astyabdhibhyāmubhayato vyāptaṃ khyātaṃ jagattraye | kuśadvīpamiti dvīpaṃ bhūmau valayavatsthitam || 3 ||

There is a famous island known as Kushadvipa, surrounded by oceans on both sides, situated on the earth in the form of a ring.

दोनों ओर से समुद्रों से घिरा हुआ, पृथ्वी पर एक चक्राकार द्वीप है जिसे कुशद्वीप के नाम से जाना जाता है।

7.206.4

तत्रास्तीलावती नाम हैमी पूर्वोत्तरे पुरी । दीप्तिज्वालामयस्तम्भप्रोतावनिनभस्तला ॥ ४ ॥

tatrāstīlāvatī nāma haimī pūrvottare purī | dīptijvālāmayastambhaprotāvaninabhastalā || 4 ||

There is a city named Ilavati, made of gold, located in the northeast, with pillars of shining flames, extending to the sky.

वहाँ एक सोने की नगरी है जिसे इलावती कहते हैं, जो पूर्वोत्तर दिशा में स्थित है, जिसके स्तंभ चमकीली ज्वालाओं से बने हुए हैं, जो आकाश तक फैले हुए हैं।

7.206.5

पूर्वे तस्यामभूद्राजा प्रज्ञप्तिरिति विश्रुतः । अनुरक्तजगद्भूतः शक्रः स्वर्ग इवापरः ॥ ५ ॥

pūrve tasyāmabhūdrājā prajñaptiriti viśrutaḥ | anuraktajagadbhūtaḥ śakraḥ svarga ivāparaḥ || 5 ||

In the east of that city, there was a famous king named Prajñapti, who was beloved by all beings, like another Indra in heaven.

उस नगरी के पूर्व में एक प्रसिद्ध राजा था जिसका नाम प्रज्ञप्ति था, जो सभी प्राणियों से प्रेम किया जाता था, जैसे कोई दूसरा इंद्र स्वर्ग में।

7.206.6

केनचित्कारणेनाहं कदाचित्तस्य भूपतेः। प्राप्तः समीपं नभसः प्रलयार्क इव च्युतः ॥ ६ ॥

kenacitkāraṇenāhaṃ kadācittasya bhūpateḥ| prāptaḥ samīpaṃ nabhasaḥ pralayārka iva cyutaḥ || 6 ||

By some reason, I once reached the vicinity of that king, like the sun falling from the sky at the time of dissolution.

किसी कारण से, मैं कभी उस राजा के निकट पहुंचा, जैसे प्रलय के समय सूर्य आकाश से गिरता है।

7.206.7

पुष्पार्घ्याचमनीयैर्मां पूजयित्वोपविश्य सः। मध्ये कथायां कस्यांचिदपृच्छत्प्रणयादिदम् ॥ ७ ॥

puṣpārghyācamanīyairmāṃ pūjayitvopaviśya saḥ| madhye kathāyāṃ kasyāṃcidapṛcchatpraṇayādidam || 7 ||

Having worshipped me with flowers, water, and other offerings, he sat down and, in the midst of some conversation, asked me this with affection.

फूलों, जल और अन्य पूजा सामग्री से मेरी पूजा करके, वह बैठा और किसी वार्तालाप के बीच में स्नेह से मुझसे यह प्रश्न किया।

7.206.8

भगवन्सर्वसंहारे जाते शून्यतते स्थिते। अवाच्ये परमे व्योम्नि सर्वकारणसंक्षये ॥ ८ ॥

bhagavansarvasaṃhāre jāte śūnyatate sthite| avācye parame vyomni sarvakāraṇasaṃkṣaye || 8 ||

O Lord, when the complete destruction occurs, and everything is in a state of emptiness, in the indescribable supreme sky, where all causes are dissolved.

हे भगवान, जब पूर्ण विनाश होता है, और सब कुछ शून्यता में स्थित होता है, अवर्णनीय परम आकाश में, जहाँ सभी कारण विलीन हो जाते हैं।

7.206.9

सर्गारम्भस्य भूयः स्याद्वद किं मूलकारणम्। कानि वा सहकारीणि कारणानि कुतः कथम् ॥ ९ ॥

sargārambhasya bhūyaḥ syādvada kiṃ mūlakāraṇam| kāni vā sahakārīṇi kāraṇāni kutaḥ katham || 9 ||

Tell me, what is the root cause for the beginning of creation again? And what are the assisting causes, from where and how?

बताओ, सृष्टि के पुनरारंभ का मूल कारण क्या है? और सहायक कारण कौन से हैं, वे कहाँ से और कैसे?

7.206.10

किं जगत्किं च सर्गादि काश्चिन्नित्यं तमोधराः। व्योमसंस्थार्णवाः काश्चित्काश्चित्कृमिकुलाकुलाः ॥ १० ॥

kiṃ jagatkiṃ ca sargādi kāścinnityaṃ tamodharāḥ| vyomasansthārṇavāḥ kāścitkāścitsṛmikulākulāḥ || 10 ||

What is the world? And what is the beginning of creation? Are there some eternal abodes of darkness? Are there some oceans situated in the sky? Are there some filled with worms?

यह जगत क्या है? और सृष्टि का आरंभ क्या है? क्या कुछ नित्य अंधकार के आश्रय हैं? क्या कुछ आकाश में स्थित समुद्र हैं? क्या कुछ कीटों से भरे हुए हैं?

7.206.11

काश्चिदाकाशकोशस्थाः काश्चिच्चोपलकोशगाः। किंच वा भूतभूतादि कुतो बुद्ध्यादयः कथम् ॥ ११ ॥

kāścidākāśakośasthāḥ kāściccopalakośagāḥ | kiṃca vā bhūtabhūtādi kuto buddhyādayaḥ katham || 11 ||

Some are in the space-container, some are in the stone-container | What then is the origin of the elements and the intellect, etc.? How?

कुछ आकाश के कोश में हैं, कुछ पत्थर के कोश में हैं | फिर भूतों और बुद्धि आदि का उद्गम कहाँ से है, कैसे?

7.206.12

कः कर्ता कोऽथ वा द्रष्टा काधाराधेयता कथम्। न कदाचिन्महानाशो जगतामिति निश्चयः ॥ १२ ॥

kaḥ kartā ko'tha vā draṣṭā kādhārādheyatā katham | na kadācinmahānāśo jagatāmiti niścayaḥ || 12 ||

Who is the doer, and who is the seer? What is the relationship between the support and the supported? There is no great destruction of the worlds, this is certain.

कौन कर्ता है, और कौन द्रष्टा है? आधार और आधेय का संबंध क्या है? जगतों का कोई महान विनाश नहीं है, यह निश्चित है।

7.206.13

समस्तवेदशास्त्रार्थाविरोधाय समर्थितः। यथा संवेदनं नाम तथा नामानुभूतयः ॥ १३ ॥

samastavedaśāstrārthāvirodhāya samarthitaḥ | yathā saṃvedanaṃ nāma tathā nāmānubhūtayaḥ || 13 ||

To avoid contradiction with the meaning of all Vedic scriptures, it is justified | Just as there is perception, so there are experiences of names.

सभी वेद शास्त्रों के अर्थ के विरोध से बचने के लिए, यह समर्थित है | जैसे संवेदन होता है, वैसे ही नामों के अनुभव होते हैं।

7.206.14

यतस्ततो वेदनं स्यात्किमनाशमसन्मयम्। अन्यच्च जम्बूद्वीपादौ देशेऽद्य मुनिनायक ॥ १४ ॥

yatastato vedanaṃ syātkimanāśamasanmayam | anyacca jambūdvīpādau deśe'dya munināyaka || 14 ||

From that, perception arises, what is imperishable and true | Moreover, in the land of Jambudvipa and other places, O sage leader.

उससे, संवेदन उत्पन्न होता है, जो अविनाशी और सत्य है | इसके अलावा, जम्बूद्वीप और अन्य स्थानों में, हे मुनि नायक।

7.206.15

मृतानामग्निदग्धानामिह वा देहनाशिनाम्। नरकस्वर्गभोगाय विदेहे देहकारणम् ॥ १५ ॥

mṛtānāmagni dagdhānāmiha vā dehanāśinām | narakasvargabhogāya videhe dehakāraṇam || 15 ||

For the dead, burned by fire, or whose bodies are destroyed here | In the disembodied state, the body is the cause of enjoyment in hell and heaven.

मृतकों, अग्नि से दग्ध हुए, या जिनके शरीर यहाँ नष्ट हो गए हैं | विदेह अवस्था में, शरीर नरक और स्वर्ग के भोग का कारण है।

7.206.16

किं तत्स्यात्सहकारीणि कारणान्यथ कानि वा धर्माधर्मावमूर्तौ द्वौ तस्यामूर्तस्य मूर्तता ॥ १६ ॥

kiṃ tatsyātsahakārīṇi kāraṇānyatha kāni vā dharmādharmāvamūrtau dvau tasyāmūrtasya mūrtatā || 16 ||

What are the causes that are cooperative, or what are the other causes? Dharma and adharma are two formless entities; how does the formless attain form?

किन कारणों के सहयोग से यह होता है, या किन कारणों से होता है? धर्म और अधर्म दो निराकार हैं, निराकार कैसे साकार हो जाता है?

7.206.17

निर्द्रव्यं कुरुते द्रव्यैर्युक्तिरित्यसमञ्जसा मातापित्राद्यभावो हि बीजं किं तत्र कारणम् ॥ १७ ॥

nirdravyaṃ kurute dravyairyuktirityasamañjasā mātāpitrādyabhāvo hi bījaṃ kiṃ tatra kāraṇam || 17 ||

It is illogical to say that the formless is created by material causes. The absence of parents and other factors is the seed; what is the cause there?

यह कहना असंगत है कि निराकार को द्रव्य से बनाया जाता है। माता-पिता आदि का अभाव बीज है, वहाँ कारण क्या है?

7.206.18

अन्ये वा हेतवः के स्युः कथं द्रव्यादिसंभवः परलोकोऽस्य नास्तीति यथासंवेदनं स्थितेः ॥ १८ ॥

anye vā hetavaḥ ke syuḥ kathaṃ dravyādisaṃbhavaḥ paraloko'sya nāstīti yathāsaṃvedanaṃ sthiteḥ || 18 ||

What other causes could there be? How can there be the creation of material things? It is said that there is no other world; how is this perception established?

कौन से अन्य कारण हो सकते हैं? द्रव्य के उत्पादन कैसे हो सकता है? यह कहा जाता है कि परलोक नहीं है, यह अनुभव कैसे स्थापित होता है?

7.206.19

समस्तलोकवेदादिविरोधाच्चासमञ्जसम् अनिच्छितेहितैर्दूरदेशान्तरगतैः फलम् ॥ १९ ॥

samastalokavedādivirodhāccāsamañjasaṃ anicchitehaitairdūradeśāntaragataiḥ phalam || 19 ||

It is inconsistent due to the contradiction with all the worlds and the Vedas. How can the result be obtained by those who are in distant lands and do not desire benefit?

यह समस्त लोकों और वेदों के विरोध से असंगत है। दूर देशों में रहने वाले और हित न चाहने वालों से फल कैसे प्राप्त हो सकता है?

7.206.20

प्रजा प्राप्नोत्यसंबन्धैरमूर्तैरत्र कः क्रमः स्तम्भो वरेण सौवर्णो विना हेमगमागमैः ॥ २० ॥

prajā prāpnotyasaṃbandhairamūrtairatra kaḥ kramaḥ stambho vareṇa sauvarṇo vinā hemagamāgamaiḥ || 20 ||

How does one obtain progeny through formless entities without any connection? What is the sequence here? A pillar becomes golden without the coming and going of gold.

निराकार वस्तुओं से बिना किसी संबंध के संतान कैसे प्राप्त होती है? यहाँ क्रम क्या है? एक स्तंभ सोने के आने-जाने के बिना सोने का बन जाता है।

7.206.21

क्षणात्संपद्यते तत्र संपत्तिः कथमुच्यताम् । विधीनां प्रतिषेधानां निर्निमित्तं विवल्गताम् ॥ २१ ॥

kṣaṇātsaṃpadyate tatra saṃpattiḥ kathamucyatām | vidhīnāṃ pratiṣedhānāṃ nirnimittaṃ vivalgatām || 21 ||

How can it be said that prosperity is achieved there in an instant? How can the injunctions and prohibitions be without cause?

कैसे कहा जा सकता है कि वहाँ क्षणभर में समृद्धि प्राप्त होती है? विधियों और प्रतिषेधों का कोई कारण नहीं होना कैसे हो सकता है?

7.206.22

रूढानामप्यरूढानां किं प्रयोजनमुच्यताम् । असदासीज्जगत्पूर्वं सत्संपन्नमनन्तरम् ॥ २२ ॥

rūḍhānāmapyarūḍhānāṃ kiṃ prayojanamucyatām | asadāsījjagatpūrvaṃ satsaṃpannamanantaram || 22 ||

What is the purpose of both the established and the unestablished? Previously, the world was non-existent, and subsequently, it became existent and prosperous.

स्थापित और अस्थापित दोनों का क्या उद्देश्य है? पहले संसार असत् था, और फिर वह सत् और समृद्ध हो गया।

7.206.23

इति श्रुतेः कथं ब्रह्मन्कथ्यतां संगतार्थता । अयं भवेत्कथं ब्रह्मा भवेच्चेत्तन्महामुने ॥ २३ ॥

iti śruteḥ kathaṃ brahman kathyatāṃ saṃgatārthatā | ayaṃ bhavet kathaṃ brahmā bhaveccettanmahāmune || 23 ||

O Brahman, how can the consistency of this heard statement be explained? How can this become Brahma, O great sage, if it were to be?

हे ब्रह्मन्, इस सुनी गई बात की संगति कैसे समझाई जा सकती है? हे महामुनि, यदि ऐसा होता तो यह ब्रह्मा कैसे बन सकता है?

7.206.24

एवंप्रभावान्नभसः किं सर्वस्मान्न जायते । ओषधीनामथार्थानां सर्वेषां वा स्थितिं गताः ॥ २४ ॥

evaṃprabhāvānnabhasaḥ kiṃ sarvasmānna jāyate | oṣadhīnāmathārthānāṃ sarveṣāṃ vā sthitiṃ gatāḥ || 24 ||

With such influence, why does everything not arise from the sky? Or have all herbs and objects attained stability?

ऐसे प्रभाव के साथ, आकाश से सब कुछ क्यों नहीं उत्पन्न होता? या फिर सभी औषधियाँ और वस्तुएँ स्थिरता प्राप्त कर चुकी हैं?

7.206.25

कथं स्वभावाः कथय यथाबोधं मुनीश्वर । एकस्य जीवितं पुंसः सुहृदा मरणं द्विषा ॥ २५ ॥

kathaṃ svabhāvāḥ kathaya yathābodhaṃ munīśvara | ekasya jīvitaṃ puṃsaḥ suhṛdā maraṇaṃ dviṣā || 25 ||

O lord of sages, explain the nature of things as you understand them. The life of one person is a friend's death to another.

हे मुनीश्वर, चीजों के स्वभाव को अपने ज्ञान के अनुसार समझाइए। एक व्यक्ति का जीवन दूसरे के लिए मित्र की मृत्यु होती है।

7.206.26

मृत्वार्थितं प्रयागादौ क्षेत्रे तत्कथमुच्यताम् । खे स्यामक्षयपूर्णेन्दुरिति ध्यायिचितैः फलैः ॥ २६ ॥

mṛtvārthitaṃ prayāgādau kṣetre tatkathamucyatām | khe syāmakṣayapūrṇenduriti dhyāyicitaiḥ phalaiḥ || 26 ||

In the holy place of Prayag and others, how is the desire for death expressed? In the sky, I will be like the full moon that never wanes, meditating on such fruits.

प्रयाग और अन्य तीर्थों में मृत्यु की इच्छा कैसे व्यक्त की जाती है? आकाश में, मैं उस पूर्ण चंद्रमा की तरह होऊंगा जो कभी घटता नहीं, ऐसे फलों पर ध्यान करते हुए।

7.206.27

तुल्यकालमनुप्राप्तैः सहस्रेन्दु न किं नभः । अन्यच्च ध्यायिनां लक्षैर्ध्यातैका स्त्री यथाक्रमम् ॥ २७ ॥

tulyakālamanuprāptaiḥ sahasrendu na kiṃ nabhaḥ | anyacca dhyāyināṃ lakṣairdhyātaikā strī yathākramam || 27 ||

Those who have attained the same time, a thousand moons, what is the sky? And another, by meditating on hundreds of thousands, one woman is meditated upon in sequence.

जो समान समय प्राप्त कर चुके हैं, हजार चंद्रमा, आकाश क्या है? और दूसरा, लाखों पर ध्यान करके, एक स्त्री क्रमशः ध्यान की जाती है।

7.206.28

जायात्वेन समं कालं लब्धं ध्यानफलं च तैः । साध्व्यसाध्वी गृहे भर्तुः संस्थिता तपसा परा ॥ २८ ॥

jāyātvena samaṃ kālaṃ labdhaṃ dhyānaphalaṃ ca taiḥ | sādhvyasādhvī gṛhe bhartuḥ saṃsthitā tapasā parā || 28 ||

By being a wife, the same time was obtained, and the fruit of meditation was also obtained by them. The virtuous and non-virtuous wife is established in the husband's house with supreme austerity.

पत्नी बनकर, समान समय प्राप्त हुआ, और ध्यान का फल भी उन्होंने प्राप्त किया। साध्वी और असाध्वी पत्नी पति के घर में उत्कृष्ट तपस्या के साथ स्थापित है।

7.206.29

तेषां च जाया संपन्ना कथमेतन्महामुने । गृहानिर्गच्छमाकल्पं नृपः स द्वीपसप्तके ॥ २९ ॥

teṣāṃ ca jāyā saṃpannā kathametanmahāmune | gṛhānirgacchamākalpaṃ nṛpaḥ sa dvīpasaptake || 29 ||

And their wife is accomplished, how is this, O great sage? The king, having left home, wanders in the seven islands for a kalpa.

और उनकी पत्नी संपन्न है, यह कैसे है, हे महामुनि? घर छोड़कर राजा सात द्वीपों में एक कल्प तक भटकता है।

7.206.30

वरत्वं वरशापाभ्यामिति अन्तः क्व तिष्ठति । दानधर्मादितपसामौर्ध्वदेहिककर्मणाम् ॥ ३० ॥

varatvaṃ varaśāpābhyāmiti antaḥ kva tiṣṭhati | dānadharmāditapasāmaurdhvadehikakarmaṇām || 30 ||

The boon and the curse, where does it end? Of charity, duty, austerity, and other ascetic acts.

वर और शाप, यह कहाँ समाप्त होता है? दान, धर्म, तपस्या और अन्य तपस्वी कर्मों का।

7.206.31

इहस्थानाममूर्तानां मूर्तं प्रीत्यास्ति सत्फलम् । व्यवहर्ता न मूर्तोऽत्र विद्यते लोकयोर्द्वयोः ॥ ३१ ॥

ihasthānāmamūrtānāṃ mūrtaṃ prītyāsti satphalam| vyavahartā na mūrto'tra vidyate lokayordvayoḥ || 31 ||

In this world, the embodied beings experience the fruits of their actions| There is no embodied transactor here in both worlds

इस स्थान पर मूर्त प्राणियों के लिए प्रीति से सत्फल है| यहाँ दोनों लोकों में कोई मूर्त व्यवहारकर्ता नहीं है

7.206.32

देशान्तरे भृशं जीवो भृशं कालान्तरेऽपि वा । फलं संभवतीयत्तद्विनानुभवनं मुने ॥ ३२ ॥

deśāntare bhṛśaṃ jīvo bhṛśaṃ kālāntare'pi vā| phalaṃ saṃbhavatīyattadvinānubhavanaṃ mune || 32 ||

In another place, the soul intensely experiences| In another time as well, the fruit arises without experience, O sage

दूसरे स्थान पर, आत्मा तीव्रता से अनुभव करता है| दूसरे समय में भी, फल अनुभव के बिना उत्पन्न होता है, हे मुने

7.206.33

असमञ्जसमेवाति कथं स्यात्सुसमञ्जसम् । इत्यादिसंशयगणं गिरा शीतावदातया । छिन्धि मेऽभ्युदितं भासा सान्ध्यमान्ध्यमिवोडुपः ॥ ३३ ॥

asamañjasamevāti kathaṃ syātsusamañjasam| ityādisaṃśayagaṇaṃ girā śītāvadātayā| chindhi me'bhyuditaṃ bhāsā sāndhyamāndhyamivodupaḥ || 33 ||

How can the improper become proper?| O sage, with your cool and soothing words, dispel this doubt and others like the setting sun dispels darkness

असमञ्जस कैसे सुसमञ्जस हो सकता है?| हे मुने, अपने ठंडे और शांत शब्दों से इस संदेह और अन्य संदेहों को दूर करो, जैसे सूर्य संध्या के समय अंधेरा दूर करता है

7.206.34

परमवस्तुनि संशयनाशनादुभयलोकहितं भवति स्फुटम्। तदिह मे कुरु साधुसमागमस्तनुफलो भवतीह न कस्यचित्॥ ३४॥

paramavastuni saṃśayanāśanādubhayalokahitaṃ bhavati sphuṭam| tadih me kuru sādhusamāgamas tanuphalo bhavatīha na kasyacit || 34 ||

By removing doubts about the ultimate reality, the welfare of both worlds becomes clear|
Therefore, O sage, make this good union for me, the fruit of which is not for anyone else
परम वस्तु में संदेह दूर करने से दोनों लोकों का कल्याण स्पष्ट होता है| इसलिए, हे मुने, मेरे लिए यह साधु समागम करो, जिसका फल किसी और के लिए नहीं है

Chapter 207

7.207.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । शृणु राजन्यथा स्पष्टमेतत्ते कथयाम्यहम् । येन ते सर्वसंदेहा यास्यन्त्यलममूलताम् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | śṛṇu rājanyathā spaṣṭametatte kathayāmyaham | yena te sarvasandehā yāsyantyalamamūlatām || 1 ||

Vasishtha said: Listen, O King, I will clearly explain to you how all your doubts will be completely uprooted.

वसिष्ठ ने कहा: सुनो, हे राजन्, मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से बताऊँगा कि कैसे तुम्हारे सभी संदेह जड़ से उखड़ जाएँगे।

7.207.2

सर्वे तावज्जगद्भावा असद्रूपाः सदैव हि । सद्रूपाश्च सदैवेमे यथासवेदनं स्थितेः ॥ २ ॥

sarve tāvajjagadbhāvā asadrūpāḥ sadaiva hi | sadrūpāśca sadaiveme yathāsvedanaṃ sthitēḥ || 2 ||

All worldly phenomena are always unreal in nature. They are always real in accordance with the experience of existence.

सभी संसारिक भाव सदा असत् स्वरूप के होते हैं। वे अनुभव के अनुसार सदा सत् स्वरूप के होते हैं।

7.207.3

इदमित्थमिति प्रोता यत्र संवित्तदेव तत् । भवत्यवश्यं तत्त्वङ्ग सदेवास्त्वसदेव वा ॥ ३ ॥

idamitthamiti protā yatra saṃvittadeva tat | bhavatyavaśyaṃ tattvaṅga sadevāstvasadeva vā || 3 ||

Wherever there is a notion of 'this is that,' there is only awareness. That indeed becomes inevitable, O Tattvanga, whether it is real or unreal.

जहाँ भी 'यह वह है' की धारणा होती है, वहाँ केवल चेतना होती है। हे तत्त्वांग, वह अवश्यंभावी हो जाता है, चाहे वह सत् हो या असत्।

7.207.4

ईदृक्स्वभावा संवित्तिस्तया देहो विभाव्यते । एक एव स्वरूपेण तस्यास्ते न च तद्विदा ॥ ४ ॥

īdṛksvabhāvā saṃvittistayā deho vibhāvyate | eka eva svarūpeṇa tasyāste na ca tadvidā || 4 ||

Such is the nature of awareness by which the body is imagined. It exists as one in essence, and it is not known to those who know that.

ऐसी ही चेतना की प्रकृति है, जिससे शरीर की कल्पना की जाती है। यह स्वरूप में एक है, और यह उन लोगों को ज्ञात नहीं है जो इसे जानते हैं।

7.207.5

आश्रितस्वप्नसंदर्शस्तथेदं भासते जगत् । समस्तकारणाभावात्सर्गादावन्यतात्र का ॥ ५ ॥

āśritasvapnasandarśastathedaṃ bhāsate jagat | samastakāraṇābhāvātsargādāvanyatātra kā || 5 ||

Just as a dream is perceived, so does this world appear. Due to the absence of all causes, there is no other reality in creation.

जैसे स्वप्न दिखाई देता है, वैसे ही यह संसार प्रतीत होता है। सभी कारणों की अनुपस्थिति के कारण, सृष्टि में कोई अन्य वास्तविकता नहीं है।

7.207.7

एवं यदेव विमलं वेदनं ब्रह्मसंज्ञितम्तदेवेदं जगद्भाति तत्केव जगतोऽन्यता ॥ ७ ॥

evaṃ yadeva vimalaṃ vedanaṃ brahmasaṃjñitamtadevedaṃ jagadbhāti tatkeva jagato'nyatā || 7 ||

Thus, whatever is pure consciousness, known as Brahman, that alone shines as the world, and there is nothing else in the world.

इस प्रकार, जो कुछ भी शुद्ध चेतना है, जिसे ब्रह्म कहा जाता है, वही जगत के रूप में चमकता है, और जगत में कुछ और नहीं है।

7.207.8

एवं पूर्वापरं शुद्धमविकार्यजगत्स्थितेःलोकवेदमहाशास्त्रैरनुभूतमुदाहृतम् ॥ ८ ॥

evaṃ pūrvāparaṃ śuddhamavikāryajagatsthiteḥlokavedamahāśāstrairanubhūtamudāhṛtam || 8 ||

Thus, the pure and unchanging world, which is the basis of past and future, is experienced and declared by the people, Vedas, and great scriptures.

इस प्रकार, शुद्ध और अपरिवर्तनशील जगत, जो भूत और भविष्य का आधार है, लोगों, वेदों और महान शास्त्रों द्वारा अनुभव किया और घोषित किया गया है।

7.207.9

अपलाप्यैव ये मूढा अन्धकूपकमेकवत्समस्तभूतसंवित्तौ रूढपूर्णं महात्मभिः ॥ ९ ॥

apalāpyaiva ye mūḍhā andhakūpakamekavatsamastabhūtasaṃvittau rūḍhapūrṇaṃ mahātmabhiḥ || 9 ||

Those foolish ones who do not understand, like a blind well, are fully established in the consciousness of all beings by the great souls.

वे मूर्ख लोग जो समझ नहीं पाते, जैसे अंधे कुएँ की तरह, महात्माओं द्वारा समस्त प्राणियों की चेतना में पूर्ण रूप से स्थापित होते हैं।

7.207.10

वर्तमानानुभवनमात्रमोहप्रमाणकाःशरीरकारणा संविदिति मोहमुपागताः ॥ १० ॥

vartamānānubhavanamātramohapramāṇakāḥśarīrakāraṇā saṃviditi mohamupāgatāḥ || 10 ||

Those who consider the present experience as the only measure of delusion, consider the body as the cause of consciousness, and thus fall into delusion.

जो वर्तमान अनुभव को भ्रम का एकमात्र मापदंड मानते हैं, शरीर को चेतना का कारण मानते हैं, और इस प्रकार भ्रम में फँस जाते हैं।

7.207.11

उन्मत्ता एव तेऽज्ञास्ते योग्या नास्मत्कथासु तेअक्षीबक्षीबयोर्मूढबुद्धयोः कैव संकथा ॥ ११ ॥

unmattā eva te'jñāste yogyā nāsmatkathāsu teakṣībakṣībayormūḍhabuddhayoḥ kaiva saṃkathā || 11 ||

Those who are ignorant are indeed mad; they are not fit for this conversation. How can there be any discussion between one who sees and one who does not see?

जो अज्ञानी हैं, वे पागल हैं; वे इस बातचीत के लिए उपयुक्त नहीं हैं। एक देखने वाले और एक न देखने वाले के बीच कैसे कोई चर्चा हो सकती है?

7.207.12

यया विपश्चित्कथया सर्वसंशयसंक्षयःन भवेत्त्रिषु लोकेषु ज्ञेया मूर्खकथैव सा ॥ १२ ॥

yayā vipaścitkathayā sarvasaṃśayasaṃkṣayaḥna bhavetrtriṣu lokeṣu jñeyā mūrkhakathaiva sā || 12 ||

That conversation which does not dispel all doubts in the three worlds should be known as the talk of fools.

वह बातचीत जो तीनों लोकों में सभी संदेहों को दूर नहीं करती, उसे मूर्खों की बातचीत ही समझना चाहिए।

7.207.13

प्रत्यक्षमात्रनिष्ठोऽसौ मूढास्थ इति वक्ति यत्तेन निर्युक्तिनोक्तेन शिलासदृशवृत्तिना ॥ १३ ॥

pratyakṣamātraniṣṭho'sau mūḍhāstha iti vakti yattena niryuktinoktena śilāsadṛśavṛttinā || 13 ||

He who is solely attached to direct perception is considered a fool. Such a person speaks without logic, like a stone.

जो केवल प्रत्यक्ष के आधार पर ही चलता है, वह मूर्ख माना जाता है। ऐसा व्यक्ति तर्क के बिना बोलता है, जैसे पत्थर की तरह।

7.207.14

प्रोक्तः सर्वविरुद्धेन सोऽज्ञः कूपान्धदर्दुरःपूर्वापरधियं त्यक्त्वा वर्तमाने मतिस्थितः ॥ १४ ॥

proktaḥ sarvaviruddhena so'jñaḥ kūpāndhadarduraḥpūrvāparadhiyaṃ tyaktvā vartamāne matisthitaḥ || 14 ||

He who is declared ignorant by all contradictions is like a blind well-frog, having abandoned the past and future, and is fixed in the present mind.

जो सभी विरोधों द्वारा अज्ञानी घोषित किया जाता है, वह अंधे कूपमण्डूक की तरह है, जिसने भूत और भविष्य को छोड़ दिया है और वर्तमान मन में स्थित है।

7.207.15

संविदेव शरीरं चेच्छवं कस्मान्न चेततिइति यस्य मतिस्तस्मै मूढायेदमिहोच्यते ॥ १५ ॥

saṃvideva śarīraṃ cecchavaṃ kasmānna cetatiiti yasya matistasmai mūḍhāyedamihocyate || 15 ||

If one thinks that the body, which is merely a corpse, does not perceive, then such a person is considered a fool.

अगर कोई सोचता है कि शरीर, जो केवल एक शव है, नहीं जानता, तो ऐसा व्यक्ति मूर्ख माना जाता है।

7.207.17

ब्रह्मणो ब्रह्मरूपस्य संकल्पनगरं ततमिदं तावज्जगद्भानं तव स्वप्नपुरं यथा ॥ १७ ॥

brahmaṇo brahmarūpasya saṃkalpanagaraṃ tatamidaṃ tāvajjagadbhānaṃ tava svapnapuraṃ yathā || 17 ||

This world, which is the city of imagination of Brahman, who is of the form of Brahman, is like your dream city.

यह जगत, जो ब्रह्म के कल्पना नगर का रूप है, ब्रह्म के रूप में है, आपके स्वप्न नगर की तरह है।

7.207.18

तत्समस्तं सदैवेदं चिन्मात्रात्म निरन्तरम्भवत्यत्र न ते भ्रान्तिः स्वे स्वप्ननगरे यथा ॥ १८ ॥

tatsamastaṃ sadaivedaṃ cinmātrātma nirantarambhavatyatra na te bhrāntiḥ sve svapnanagare yathā || 18 ||

All this is always pure consciousness, the self of pure consciousness, continuously present here. There is no delusion for you in your own dream city, just as it is.

यह सब हमेशा शुद्ध चेतना है, शुद्ध चेतना का स्वयं है, यहाँ लगातार उपस्थित है। आपके लिए आपके स्वप्न नगर में कोई भ्रम नहीं है, जैसे कि यह है।

7.207.19

तत्र तावद्दिशः शैलाः पृथ्व्यादि नगरादि च सर्वं चिन्मयमाकाशमिति ते स्वानुभूतिमत् ॥ १९ ॥

tatra tāvaddiśaḥ śailāḥ pṛthvyādi nagarādi casarvaṃ cinmayamākāśamiti te svānubhūtimat || 19 ||

There, all directions, mountains, earth, cities, and everything are the sky of pure consciousness, according to your own experience.

वहाँ, सभी दिशाएँ, पर्वत, पृथ्वी, नगर, और सब कुछ शुद्ध चेतना का आकाश है, आपके अपने अनुभव के अनुसार।

7.207.20

संविद्व्योम घनं ब्रह्म तत्सकल्पपुरं विराट्शुद्धसंविन्मयो ब्रह्मा तदिदं जगदुच्यते ॥ २० ॥

saṃvidvyoma ghanaṃ brahma tatsakalpapuraṃ virāṭśuddhasaṃvinmayo brahmā tadidaṃ jagaducyate || 20 ||

The dense sky of consciousness is Brahman, the city of imagination is the cosmic being, pure consciousness is Brahman, and this world is said to be that.

चेतना का घना आकाश ब्रह्म है, कल्पना का नगर विराट है, शुद्ध चेतना ब्रह्म है, और यह जगत उसी कहलाता है।

7.207.21

ब्राह्मे संकल्पनगरे यद्यत्संकल्पितं यथातथानुभूयते तत्तत्त्वत्संकल्पपुरे यथा ॥ २१ ॥

brāhme saṃkalpanagare yadyatsaṃkalpitaṃ yathātathānubhūyate tattattvatsaṃkalpapure yathā || 21 ||

In the city of Brahma's imagination, whatever is imagined is experienced exactly as it is imagined. Similarly, in the city of your imagination, it is experienced exactly as it is imagined.

ब्रह्मा की कल्पना नगरी में, जो भी कल्पना की जाती है, वह ठीक वैसे ही अनुभव की जाती है। इसी प्रकार, आपकी कल्पना नगरी में, वह ठीक वैसे ही अनुभव की जाती है।

7.207.22

संकल्पनगरे यद्यद्यथा संकल्प्यते तथातत्थास्त्येव च तदा त्वत्संकल्पपुरे यथा ॥ २२ ॥

saṃkalpanagare yadyadyathā saṃkalpyate tathātattathāstyeva ca tadā tvatsaṃkalpapure yathā || 22 ||

In the city of imagination, whatever is imagined in whatever way, it exists exactly so. Similarly, in your city of imagination, it exists exactly so.

कल्पना नगरी में, जो भी जिस तरह से कल्पना किया जाता है, वह ठीक वैसे ही मौजूद होता है। इसी प्रकार, आपकी कल्पना नगरी में, वह ठीक वैसे ही मौजूद होता है।

7.207.23

तस्माद्देहस्य नियतौ यथेतौ ब्रह्मणा चितास्पन्दास्पन्दौ कल्पितौ द्वौ स तथैवानुभूतवान् ॥ २३ ॥

tasmāddehasya niyatau yathetau brahmaṇā citāspandāspandau kalpitau dvau sa tathaivānubhūtavān || 23 ||

Therefore, the two states of the body, moving and non-moving, imagined by Brahma, are experienced exactly as they are imagined.

इसलिए, शरीर के दो अवस्थाएँ, चलने वाली और न चलने वाली, जो ब्रह्मा द्वारा कल्पना की गई हैं, ठीक वैसे ही अनुभव की जाती हैं।

7.207.24

महाप्रलयपर्यन्ते पुनः सर्गः प्रवर्ततेसमस्तकारणाभावाद्द्रव्यं तावन्न विद्यते ॥ २४ ॥

mahāpralayaparyante punaḥ sargaḥ pravartatesamastakāraṇābhāvāddravyaṃ tāvanna vidyate || 24 ||

Until the great dissolution, creation continues. Due to the absence of all causes, substance does not exist until then.

महाप्रलय तक, सृष्टि चलती रहती है। सभी कारणों के अभाव के कारण, तब तक द्रव्य मौजूद नहीं होता।

7.207.25

विमुक्तत्वात्प्रजेशस्यन च संभवति स्मृतिःब्रह्मैवेयमतो दीप्तिर्जगदित्येव भासते ॥ २५ ॥

vimuktatvātprajeśasyana ca saṃbhavati smṛtiḥbrahmaiveyamato dīptirjagadityeva bhāsate || 25 ||

Due to the liberated state of the Lord of creatures, there is no memory. Therefore, this brilliance is indeed Brahman. The world shines as if it were the sun.

प्राणियों के स्वामी की मुक्त अवस्था के कारण, स्मृति नहीं होती। इसलिए, यह चमक वास्तव में ब्रह्मा है। जगत सूर्य की तरह चमकता है।

7.207.26

तस्मादाद्यात्मना भातं स्वमेव ब्रह्मणा स्वतःजगत्संकल्पनगरमिति बुद्धं च खेन खम्॥ २६॥

tasmādādyātmanā bhātaṃ svameva brahmaṇā svataḥjagatsaṃkalpanagaramiti buddhaṃ ca khena kham || 26 ||

Therefore, the self-luminous self, which is the same as Brahman, is perceived as the city of imagination of the world.

इसलिए, स्वयं प्रकाशमान आत्मा, जो ब्रह्म के समान है, वह संसार के कल्पना के नगर के रूप में देखा जाता है।

7.207.27

यथा संकल्पनगरं चिन्मात्रं भाति केवलम्तथैवाकारणं भाति चिन्मात्रोन्मेषणं जगत्॥ २७॥

yathā saṃkalpanagaraṃ cinmātraṃ bhāti kevalamtathaivākāraṇaṃ bhāti cinmātronmeṣaṇaṃ jagat || 27 ||

Just as the city of imagination appears as pure consciousness alone, so too the world appears as pure consciousness without any cause.

जैसे कल्पना का नगर केवल चित् के रूप में प्रकट होता है, वैसे ही संसार भी किसी कारण के बिना केवल चित् के रूप में प्रकट होता है।

7.207.28

शरीरमस्तु वा मास्तु यत्र यत्रास्ति चिन्नभःवेत्त्यात्मानं तत्र तत्र द्वैताद्वैतमयं जगत्॥ २८॥

śarīramastu vā māstu yatra yatrāsti cinnabhaḥvettyātmānaṃ tatra tatra dvaitādvaitamayaṃ jagat || 28 ||

Whether the body exists or not, wherever there is the light of consciousness, one should know the self there. The world is both dual and non-dual.

चाहे शरीर हो या न हो, जहाँ भी चित् का प्रकाश है, वहाँ आत्मा को जानना चाहिए। संसार द्वैत और अद्वैत दोनों है।

7.207.29

तस्माद्यथा स्वप्नपुरं यथा संकल्पपत्तनम्तथा पश्यति चिद्व्योम मरणानन्तरं जगत्॥ २९॥

tasmādyathā svapnapuraṃ yathā saṃkalpapattanamtathā paśyati cidvyoma maraṇānantaraṃ jagat || 29 ||

Therefore, just as one sees a dream city or an imagined city, so too one sees the world as the expanse of consciousness after death.

इसलिए, जैसे कोई स्वप्न का नगर या कल्पना का नगर देखता है, वैसे ही मृत्यु के बाद संसार को चित् के विस्तार के रूप में देखता है।

7.207.30

अपृथ्व्यादिमयं भाति पृथ्व्यादिमयवज्जगत्यत्हेदमा''प्रथमतो मृतस्याप्यखिलं तथा॥ ३०॥

apṛthvyādimayaṃ bhāti pṛthvyādimayavajjagatyathedamā''prathamato mṛtasyāpyakhilaṃ tathā || 30 ||

The world appears as not made of earth and other elements, just as it appears to be made of earth and other elements. Thus, it is the same for the dead as well.

संसार पृथ्वी और अन्य तत्वों से नहीं बना होता है, जैसे कि वह पृथ्वी और अन्य तत्वों से बना होता है। इसलिए, मृतकों के लिए भी यह समान है।

7.207.31

देशकालौ न सर्गेण प्रबुद्धस्येव तौ यथाणुमात्रमपि व्याप्तौ तथैव परलोकिनः॥ ३१॥

deśakālau na sargeṇa prabuddhasyeva tau yathāaṇumātramapi vyāptau tathaiva paralokinaḥ || 31 ||

Just as space and time are not created and pervade even the smallest particle for the enlightened, so too for those in the other world.

जैसे देश और काल सृष्टि नहीं होते और प्रबुद्ध के लिए सबसे छोटे कण तक व्याप्त होते हैं, वैसे ही परलोक में भी होते हैं।

7.207.32

इदं प्रबुद्धविषये स्वानुभूतमपि स्फुटम्जगन्न विद्यते किंचित्कारणं गगने यथा ॥ ३२ ॥

idaṃ prabuddhaviṣaye svānubhūtamapi sphuṭamjaganna vidyate kiṃcitkāraṇaṃ gagane yathā || 32 ||

In the realm of the enlightened, even personal experiences are clearly perceived, just as there is no cause for anything in the sky.

प्रबुद्ध के क्षेत्र में, व्यक्तिगत अनुभव भी स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं, जैसे आकाश में किसी भी चीज का कोई कारण नहीं होता।

7.207.33

अप्रबुद्धस्यासदेव यथेदं भाति भासुरम्तथैव सर्गवद्भाति व्योमैव परलोकिनः ॥ ३३ ॥

aprabuddhasyāsadeva yathedaṃ bhāti bhāsuramtathaiva sargavadbhāti vyomaiva paralokinaḥ || 33 ||

For the unenlightened, this world appears as real, just as the sky appears to be created.

अप्रबुद्ध के लिए, यह दुनिया वास्तविक लगती है, जैसे आकाश सृष्टि हुआ लगता है।

7.207.34

शुद्धराद्रियमाद्याड्ह्यं खमेव परलोकिनःअभूतपूर्वमाभाति भूतपूर्ववदाततम् ॥ ३४ ॥

śudharādriyamādyāḍhyaṃ khameva paralokinaḥabhūtapūrvamābhāti bhūtapūrvavadātatam || 34 ||

For those in the other world, the pure mountains and the sky appear as if they have never existed before, just like something that has always existed.

परलोक में, शुद्ध पर्वत और आकाश ऐसे लगते हैं जैसे उन्होंने पहले कभी अस्तित्व में नहीं थे, जैसे कि वे हमेशा से मौजूद थे।

7.207.35

मृतोऽयं पुनरुत्पन्नो यमलोके शुभाशुभम्भुञ्जेऽहमित्यतिघनं मृतो भ्रान्तिं प्रपश्यति ॥ ३५ ॥

mṛto'yaṃ punarutpanno yamaloke śubhāśubhambhuñje'hamityatighanaṃ mṛto bhrāntiṃ prapaśyati || 35 ||

The dead one, born again in the world of Yama, sees the dense illusion of enjoying good and bad.

मृत व्यक्ति, यमलोक में पुनर्जन्म लेकर, अच्छे और बुरे का आनंद लेने के घने भ्रम को देखता है।

7.207.36

मोक्षोपायानादरिणामेष मोहो न शाम्यतिबोधादवासनत्वेन मोह एष प्रशाम्यति ॥ ३६ ॥

mokṣopāyānādariṇāmeṣa moho na śāmyatibodhādavāsanatvena moha eṣa praśāmyati || 36 ||

This delusion does not cease by disregarding the means of liberation; this delusion ceases by understanding it as a habit.

यह मोह मोक्ष के उपायों को अनादर करने से नहीं शान्त होता; यह मोह इसे आदत के रूप में समझने से शान्त होता है।

7.207.37

अप्रबुद्धस्य या संवित्सा धर्माधर्मवासनाख एव खात्मिका भाति यत्तदेव जगत्स्थितम् ॥ ३७ ॥

aprabuddhasya yā saṃvitsā dharmādharmavāsanākha eva khātmikā bhāti yattadeva jagatsthitam || 37 ||

The consciousness of the unawakened appears as the inherent nature of virtue and vice; that itself is the state of the world.

अप्रबुद्ध की चेतना पुण्य और पाप की आदत के रूप में प्रकट होती है; वही संसार की स्थिति है।

7.207.38

न शून्यरूपं न च सत्स्वरूपं ब्रह्माभिधं भाति जगत्स्वरूपमत्च्चापरिज्ञानवशादनर्थभूतं परिज्ञातवतः शिवात्म ॥ ३८ ॥

na śūnyarūpaṃ na ca satsvarūpaṃ brahmābhidhaṃ bhāti jagatsvarūpamtaccāparijñānavaśādanarthabhūtaṃ parijñātavataḥ śivātma || 38 ||

The nature of the world does not appear as void nor as real; it is called Brahman. This, due to ignorance, appears as unreal, but to the knower, it is the auspicious self.

संसार का स्वरूप शून्य नहीं है और न ही सत्य है; यह ब्रह्म कहलाता है। यह अज्ञान के कारण असत्य प्रतीत होता है, लेकिन ज्ञानी के लिए यह शिव का स्वरूप है।

Chapter 208

7.208.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । शुभाशुभं यथोदेति प्रजानां गृहसंगमे । असंबद्धैरप्रतिघैर्दूरस्थैस्तदिदं श्रृणु ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | śubhāśubhaṃ yathodeti prajānāṃ gṛhasaṃgame |
asaṃbaddhairapratighairdūrasthaitadidaṃ śṛṇu || 1 ||

Shri Vasishtha said: Listen to this, which arises as good and bad in the association of people in the house, from those who are unrelated, unopposed, and distant.

श्री वसिष्ठ ने कहा: सुनो, यह जो घर में लोगों के संग में भला-बुरा उत्पन्न होता है, वह असंबंधित, अविरोधी और दूरस्थ से है।

7.208.2

ब्रह्मसंकल्पनगरं जगत्तावदिदं स्थितम् । यद्दृश्यं दृश्यबोधेन ब्रह्मैव ब्रह्मबोधतः ॥ २ ॥

brahmasaṃkalpanagaraṃ jagattāvadidaṃ sthitam | yaddṛśyaṃ dṛśyabodhena brahmaiva brahmabodhataḥ || 2 ||

This world is established as the city of Brahma's will. Whatever is seen through the perception of the seen is indeed Brahma, through the knowledge of Brahma.

यह जगत ब्रह्म की इच्छा का नगर है। जो कुछ भी दृश्य बोध से देखा जाता है, वह ब्रह्म ही है, ब्रह्म बोध से।

7.208.3

यद्यत्संकल्पनगरे यदा संकल्प्यते यथा । तथानुभूयते तत्तत्तादृग्विरचनं तदा ॥ ३ ॥

yadyatsaṃkalpanagare yadā saṃkalpyate yathā | tathānubhūyate tattattādṛgviracanaṃ tadā || 3 ||

Whatever is willed in the city of will, whenever it is willed, it is experienced exactly as it is willed, in that manner.

जो कुछ भी इच्छा नगर में इच्छा किया जाता है, जब भी वह इच्छा की जाती है, वह उसी तरह से अनुभव किया जाता है, उसी तरह से।

7.208.4

एवमस्मिन्गृहे याते संपन्नैवमियं प्रजा । एवं संकल्पसंपन्ने जगत्येवं भवत्यलम् ॥ ४ ॥

evamasmin gṛhe yāte saṃpannaivamiyaṃ prajā | evaṃ saṃkalpasampanne jagatyevaṃ bhavatyalam || 4 ||

Thus, in this house, the people are fulfilled in this way. In the world fulfilled by will, it becomes thus sufficient.

इस प्रकार, इस घर में, लोग इस तरह से पूर्ण होते हैं। इच्छा से पूर्ण होने पर, जगत इस तरह से पर्याप्त होता है।

7.208.5

एतत्स्वसंकल्पपुरे यादृशं ते तथा स्थितम् । यथा संकल्पयसि यत्तत्तथा किल पश्यसि ॥ ५ ॥

etatsvasaṃkalpapure yādṛśaṃ te tathā sthitam | yathā saṃkalpayasi yattattathā kila paśyasi || 5 ||

In your own city of will, whatever is as you are, it is thus established. As you will, so you see.

अपने इच्छा नगर में, जैसा भी आप हैं, वह उसी तरह से स्थापित है। जैसे आप इच्छा करते हैं, वैसे ही आप देखते हैं।

7.208.6

यथैव वरशापाभ्यां शुद्धसंविदवाप्यते । संवित्तथैव भवति ब्राह्ममेवेति कल्पनम् ॥ ६ ॥

yathaiva varaśāpābhyāṃ śuddhasaṃvidavāpyate | saṃvittathaiva bhavati brāhma meveti kalpanam || 6 ||

Just as by boons and curses, pure consciousness is obtained, so also consciousness becomes Brahman itself.

जैसे वर और शाप से शुद्ध संविद प्राप्त होती है, वैसे ही संविद ब्रह्म ही बन जाती है।

7.208.7

प्रजाविधिनिषेधाभ्यामेकयाऽऽस्थाव्यवस्थया । तथैव फलमाप्नोति ब्राह्ममेवेति कल्पनम् ॥ ७ ॥

prajāvidhinisheḍābhyāmekayāsthāvyavasthayā | tathaiva phalamāpnoti brāhma meveti kalpanam || 7 ||

By the methods of creation and prohibition, by a single stable state, one attains the result, which is Brahman itself.

उत्पत्ति और निषेध के विधियों से, एक स्थिर अवस्था से, ब्रह्म ही फल प्राप्त होता है।

7.208.8

देहिनो ये जगत्यस्मिंस्तान्प्रत्यनुपलम्भतः । असदासीज्जगत्पूर्वं सत्यमित्युपलभ्यते ॥ ८ ॥

dehino ye jagatyasmins tān praty anupalambhathḥ | asadāsīj jagat pūrvaṃ satyam ity upalabhyate || 8 ||

Those who are embodied in this world, they are perceived. Before the world, there was non-existence, which is perceived as truth.

जो इस जगत में शरीरधारी हैं, वे देखे जाते हैं। जगत से पहले असत्य था, जिसे सत्य के रूप में देखा जाता है।

7.208.9

चिद्रूपब्रह्मसंकल्पवशादेवैतदङ्ग सत् । चिदुन्मेषनिमेषौ यौ तावेतौ प्रलयोदयौ ॥ ९ ॥

cidrūpabrahmasaṃkalpavaśādevaitadaṅga sat | cidunmeṣanimeṣau yau tāvetau pralayodayau || 9 ||

By the will of Brahman, who is of the nature of consciousness, this world exists. The opening and closing of consciousness are the dissolution and creation.

ब्रह्म की इच्छा से, जो चेतना का स्वरूप है, यह जगत है। चेतना का उदय और अस्त ही प्रलय और उत्पत्ति हैं।

7.208.10

राजोवाच । किं नोपलभ्यते पूर्वं किं पश्चादुपलभ्यते । जगच्चलद्वपुरिदं सुस्थिरारम्भभास्वरम् ॥ १० ॥

rājovāca | kiṃ nopalabhyate pūrvaṃ kiṃ paścād upalabhyate | jagaccaladvapuridaṃ susthirārambhabhāsvaram || 10 ||

The king said: What is not perceived before? What is perceived afterwards? This moving world is stable and radiant.

राजा ने कहा: पहले क्या नहीं देखा जाता है? बाद में क्या देखा जाता है? यह चलने वाला जगत स्थिर और चमकीला है।

7.208.11

श्रीवसिष्ठ उवाच । अस्मिंश्चिद्व्योमसंकल्पपुरस्थे भाव ईदृशः । यद्भूत्वा न भवत्येव पुनर्भवति च क्षणात् ॥ ११ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | asmiṃścidvyomasaṁkalpapurasthē bhāva īdṛśaḥ | yadbhūtvā na bhavatyēva punarbhāvati ca kṣaṇāt || 11 ||

Vasishtha said: In this realm of the mind, which is like the sky of consciousness, there exists a state where something, after coming into being, does not remain and then becomes again in an instant.

वसिष्ठ ने कहा: इस चिद्व्योम संकल्प पुर में, जो चेतना के आकाश के समान है, ऐसा भाव है जो होकर भी नहीं रहता और फिर क्षण भर में हो जाता है।

7.208.12

बालसंकल्पपुरवद्व्योमकेशोण्ड्रकादिवत् । किलैते सदसद्रूपा भान्ति सर्गाश्चिदात्मनि ॥ १२ ॥

bālasaṁkalpapuravadvyomakeśoṇḍrakādivat | kilaite sadasadrūpā bhānti sargāścidātmani || 12 ||

Just like the imaginary city of a child, or like clouds in the sky, these appear as both real and unreal in the consciousness.

जैसे बच्चे की कल्पना का नगर, या आकाश में बादलों की तरह, ये चेतना में सत् और असत् दोनों रूप में प्रकट होते हैं।

7.208.13

त्वं संकल्पपुरं कृत्वा विनाशयसि तत्क्षणात् । स्वतोऽन्यसंविद्वशतः स्वस्वभावः स ते यथा ॥ १३ ॥

tvaṃ saṁkalpapuraṃ kṛtvā vināśayasi tatkṣaṇāt | svato'nyasaṁvidvaśataḥ svasvabhāvaḥ sa te yathā || 13 ||

You create an imaginary city and destroy it instantly. By your own will or the will of another consciousness, such is your nature.

तुम एक कल्पना का नगर बनाते हो और उसे तुरंत नष्ट कर देते हो। अपनी इच्छा या दूसरी चेतना की इच्छा से, ऐसा ही तुम्हारा स्वभाव है।

7.208.14

चिद्व्योमकल्पनपुरे यदुन्मज्जनमज्जनम् । स्वभावकचनं तस्य तद्विद्धि विमलं तथा ॥ १४ ॥

cidvyomakalpanapure yadunmajjjanamajjanam | svabhāvakacanaṃ tasya tadviddhi vimalaṃ tathā || 14 ||

In the imaginary city of the sky of consciousness, whatever rises and falls, know that to be the pure nature of that.

चेतना के आकाश की कल्पना के नगर में, जो कुछ भी उठता और गिरता है, उसे उसके शुद्ध स्वभाव के रूप में जानो।

7.208.15

संविद्धनस्त्वनाद्यन्तव्योमैव त्रिजगन्नभः । तेनासावद्य यन्नाम करोत्यपि च चेतति ॥ १५ ॥

saṁviddhanastvanādyantavyomaiva trijagannabhaḥ | tenāsāvadya yannāma karotyapi ca cetati || 15 ||

The one who is endowed with consciousness is the endless and beginningless sky itself, the lord of the three worlds. By that, he creates names and also thinks.

जो चेतना से युक्त है, वह अनादि और अनंत आकाश स्वयं है, तीनों लोकों का स्वामी। उसी के द्वारा वह नाम बनाता है और सोचता है।

7.208.16

तदनावरणस्यास्य योजनानां शतेष्वपि । युगैरपि स्वप्न इव कार्यकृद्वर्तमानवत् ॥ १६ ॥

tadanāvaraṇasyāsya yojanānāṃ śateṣvapi | yugairapi svapna iva kāryakṛdvartamānavat || 16 ||

Even if it is covered, this (reality) is present in hundreds of yojanas and in yugas, like a dream, as if it is the doer of actions.

यदि यह ढका हुआ है, तो भी यह वास्तविकता सैकड़ों योजन और युगों में उपस्थित है, जैसे सपना, जैसे यह कार्य करने वाला है।

7.208.17

किल देशान्तरे नित्यमथ लोकान्तरेऽपि च । निरावृतो य एकात्मा स किं नाम न चेतति ॥ १७ ॥

kila deśāntare nityamatha lokāntare'pi ca | nirāvṛto ya ekātmā sa kiṃ nāma na cetati || 17 ||

In another place, always, and even in another world, the one who is uncovered and has a single self, why would he not think?

किसी दूसरे स्थान पर, हमेशा, और किसी दूसरे लोक में भी, जो अपना ढका हुआ नहीं है और एक आत्मा है, वह क्यों नहीं सोचेगा?

7.208.18

यथा मणौ प्रकचति प्रोन्मज्जननिमज्जने । परावर्तः स्वभासास्य चिन्मणौ जगतां तथा ॥ १८ ॥

yathā maṇau prakacati pronmajjjananimajjane | parāvartaḥ svabhāsāsya cinmaṇau jagatāṃ tathā || 18 ||

Just as a gem shines during its emergence and submergence, similarly, the reflection of the self-luminous consciousness gem shines in the worlds.

जैसे एक मणि अपने उभरने और डूबने के दौरान चमकती है, उसी तरह, स्वयं-प्रकाशित चेतना मणि का प्रतिबिंब लोकों में चमकता है।

7.208.19

विधीनां प्रतिषेधानां लोकसंस्थाप्रयोजनम् । सैव संविदि रूढत्वात्प्रेत्यापि फलदा स्थिता ॥ १९ ॥

vidhīnāṃ pratiṣedhānāṃ lokasaṃsthāprayojanam | saiva saṃvidi rūḍhatvātpretyāpi phaladā sthitā || 19 ||

The purpose of the injunctions and prohibitions is the establishment of the world. That very consciousness, being firmly established, remains fruitful even after death.

विधियों और प्रतिषेधों का उद्देश्य लोक की स्थापना है। वही चेतना, जो दृढ़ता से स्थापित है, मृत्यु के बाद भी फलदायी बनी रहती है।

7.208.20

न कदाचन यात्यस्तमुदेति न कदाचन । ब्रह्म ब्रह्मचिदाभानं सर्वदात्मन्यवस्थितम् ॥ २० ॥

na kadācana yātyastamudeti na kadācana | brahma brahmacidābhānaṃ sarvadātmanyavasthitam || 20 ||

It never sets nor rises. Brahman, the luminous consciousness, is always established in the self.

यह कभी अस्त नहीं होता और न ही उदय होता है। ब्रह्म, प्रकाशमान चेतना, हमेशा आत्मा में स्थापित है।

7.208.21

यथा तु द्रष्टृदृश्यत्वात्कल्पना कल्पनापुरम् । स्वयं जगदिवाभाति जातमित्युच्यते तथा ॥ २१ ॥

yathā tu draṣṭṛdṛśyatvātkalpanā kalpanāpuram | svayaṃ jagadivābhāti jātamityucyate tathā || 21 ||

Just as the observer and the observed are imagined, the world appears to be created by itself. Thus, it is said to be born.

जैसे देखने वाला और देखा जाने वाला कल्पना है, वैसे ही स्वयं जगत प्रकट होता है। इस प्रकार, यह कहा जाता है कि यह उत्पन्न हुआ है।

7.208.22

यदा स्वभावात्कचनं संहृत्यात्मनि तिष्ठति । ब्रह्मचिद्गगनैकात्मा शान्त इत्युच्यते तथा ॥ २२ ॥

yadā svabhāvātkacanaṃ saṃhṛtyātmani tiṣṭhati | brahmachidgaganaiakātmā śānta ityucyate tathā || 22 ||

When the individual self (kacanaṃ) is absorbed into the true self (ātmani), it becomes one with the infinite consciousness (brahmachidgagana). Thus, it is said to be peaceful (śānta).

जब व्यक्तिगत आत्मा (कचनं) सच्चिदानंद आत्मा (आत्मनि) में विलीन हो जाता है, तो यह अनंत चेतना (ब्रह्मचिद्गगन) से एक हो जाता है। इस प्रकार, यह कहा जाता है कि यह शांत (शान्त) है।

7.208.23

कचनाकचने यस्य स्वभावो निर्मलोऽक्षयः । यथैतावात्मनो नान्यौ स्पन्दास्पन्दौ नभस्वतः ॥ २३ ॥

kacanākacane yasya svabhāvo nirmalo'kṣayaḥ | yathaitāvātmano nānyau spandāspandau nabhasvataḥ || 23 ||

The nature of the self (svabhāvo) is pure and eternal (nirmalo'kṣayaḥ), whether it is in motion (spandā) or stillness (aspandau). These are not different from the self (ātmano), just as the sky (nabhasvataḥ) is not different from itself.

आत्मा का स्वभाव (स्वभावो) शुद्ध और अक्षय (निर्मलोऽक्षयः) है, चाहे यह गति (स्पन्दा) में हो या स्थिरता (अस्पन्दौ) में। ये आत्मा (आत्मनो) से भिन्न नहीं हैं, जैसे आकाश (नभस्वतः) अपने से भिन्न नहीं है।

7.208.24

जरामरणहन्तृणि क्षणान्यत्र पृथक्पृथक् । भवन्त्विति यथैतानि सन्ति त्वत्कल्पनापुरे ॥ २४ ॥

jarāmaraṇahantṛṇi kṣaṇānyatra pṛthakpṛthak | bhavantviti yathaitāni santi tvatkalpanāpure || 24 ||

Old age (jarā), death (maraṇa), and destruction (hantṛṇi) exist separately in different moments (kṣaṇānyatra pṛthakpṛthak). Thus, they are said to exist in the city of your imagination (tvatkalpanāpure).

बुढ़ापा (जरा), मृत्यु (मरण), और विनाश (हन्तृणि) अलग-अलग क्षणों (क्षणान्यत्र पृथक्पृथक्) में अस्तित्व में हैं। इस प्रकार, यह कहा जाता है कि ये आपकी कल्पना के नगर (त्वत्कल्पनापुरे) में हैं।

7.208.25

ब्रह्मसंकल्पनगरे स्वभावा उदितास्तथा । ओषधीनां पदार्थानां सर्वेषां च जगत्त्रये ॥ २५ ॥

brahmasaṃkalpanagare svabhāvā uditāstathā | oṣadhīnāṃ padārthānāṃ sarveṣāṃ ca jagattraye || 25 ||

In the city of Brahma's imagination (brahmasaṃkalpanagare), the natural qualities (svabhāvā) of herbs (oṣadhīnāṃ) and all substances (padārthānāṃ) are manifested in all three worlds (jagattraye).

ब्रह्मा की कल्पना के नगर (ब्रह्मसंकल्पनगरे) में, औषधियों (ओषधीनां) और सभी पदार्थों (पदार्थानां) के स्वाभाविक गुण (स्वभावा) तीनों लोकों (जगत्त्रये) में प्रकट होते हैं।

7.208.26

न संकल्पयिता राजन्संकल्पनगरे स्वयम् । तृणं तृणं कल्पयति बालः क्रीडनकानिव ॥ २६ ॥

na saṃkalpayitā rājansaṃkalpanagare svayaṃ | tṛṇaṃ tṛṇaṃ kalpayati bālaḥ krīḍanakāniva || 26 ||

O King, the one who does not imagine, imagines in the city of imagination | Like a child playing with blades of grass

हे राजन्, जो संकल्प नहीं करता, वह संकल्पना के नगर में स्वयं संकल्प करता है | जैसे बच्चा घास के तिनकों से खेलता है

7.208.27

स्वयं स्वभाव एवैष चिद्घनस्यास्य सुस्फुटम्। यद्यत्संकल्पयत्याशु तत्र तेऽवयवा अपि ॥ २७ ॥

svayaṃ svabhāva evaiṣa ciddhanasyāsya susphuṭam | yadyatsaṃkalpayatyāśu tatra te'vayavā api || 27 ||

This is indeed the very nature of the self, which is pure consciousness | Whatever it imagines quickly, even the parts of it are there

यह आत्मा का स्वभाव ही है, जो शुद्ध चेतना है | जो कुछ भी वह शीघ्र संकल्प करता है, उसके अंग भी वहाँ होते हैं

7.208.28

चिदात्मकतया भान्ति नानात्मकतयात्मना। अप्येकसारास्तिष्ठन्ति नानाकारस्वभावगाः ॥ २८ ॥

cidātmakatayā bhānti nānātmakatayātmanā | apyekasārāstiṣṭhanti nānākārasvabhāvagāḥ || 28 ||

They shine with the nature of pure consciousness, with various forms by the self | Although they are of one essence, they exist with diverse forms and natures

वे शुद्ध चेतना के स्वभाव से चमकते हैं, आत्मा द्वारा विभिन्न रूपों में | यद्यपि वे एक ही सार के हैं, वे विभिन्न रूपों और स्वभावों के साथ exist करते हैं

7.208.29

प्रत्येकं किल तत्रास्ति ब्रह्मचिन्मात्रतात्मनि। सर्वात्मिका सा यत्रास्ते यथान्तर्भाति तत्तथा ॥ २९ ॥

pratyekaṃ kila tatrāsti brahmacinmātratātmani | sarvātmikā sā yatrāste yathāntarbhāti tattathā || 29 ||

Indeed, each one exists in the self, which is the essence of pure consciousness | That which is all-pervading, exists there as it is internally manifested

निश्चित रूप से, प्रत्येक आत्मा में exist करता है, जो शुद्ध चेतना का सार है | जो सर्वव्यापी है, वह वहाँ उसी प्रकार exist करता है जैसे वह आंतरिक रूप से प्रकट होता है

7.208.30

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यं किंचिन्न किंचिच्च सदप्यसत्यम्। स्थितं यथा यत्र तदात्म तत्र सर्वात्मभूर्भूततृणादिजातौ ॥ ३० ॥

anādimadhyāntamanantavīryaṃ kiṃcinna kiṃcicca sadapyasatyam | sthitaṃ yathā yatra tadātma tatra sarvātmabhūrbhūtatṛṇādijātau || 30 ||

Without beginning, middle, or end, with infinite power, neither something nor nothing, both real and unreal | It exists as it is, wherever it is, that is the self, the essence of all beings from grass to the highest

जिसका न आदि है, न मध्य है, न अंत है, जिसकी शक्ति अनंत है, जो न कुछ है न कुछ नहीं, जो सत् भी है और असत् भी | जैसे वह exist करता है, जहाँ वह exist करता है, वही आत्मा है, घास से लेकर सबसे ऊँचे तक सभी प्राणियों का सार

Chapter 209

7.209.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । एकस्य जीवितं पुंसः सुहृदा मरणं द्विषा । मृत्वार्थितं प्रयागादौ क्षेत्रे यत्तदिदं शृणु ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ekasya jīvitaṃ puṃsaḥ suhṛdā maraṇaṃ dviṣā | mṛtvārthitaṃ prayāgādau kṣetre yattadidaṃ śṛṇu || 1 ||

Vasishtha said: Listen to this, the life of one person is the death of a friend and the death of an enemy. What is desired for death in sacred places like Prayag, etc., that is this.

वसिष्ठ ने कहा: सुनो, एक व्यक्ति का जीवन एक मित्र की मृत्यु और एक शत्रु की मृत्यु है। प्रयाग जैसे पवित्र स्थानों में जो मृत्यु के लिए चाहिए, वह यही है।

7.209.2

क्षेत्राणामर्थधर्माणां सर्वेषां प्रति तं फलम् । ब्रह्मणा कल्पितं सर्गे स्वके संकल्पपत्तने ॥ २ ॥

kṣetrāṇāmarthadharmāṇāṃ sarveṣāṃ prati taṃ phalaṃ | brahmaṇā kalpitaṃ sarge svake saṃkalpapattane || 2 ||

The fruits of all sacred places and their respective dharmas are ordained by Brahma in the creation according to his own will.

सभी पवित्र स्थानों और उनके धर्मों के फल ब्रह्मा द्वारा सृष्टि में अपनी इच्छा के अनुसार निर्धारित किए गए हैं।

7.209.3

यत्र पुण्यं यदर्थं च क्षेत्रं ताभ्यां तथा कृतम् । यदि तद्विनियोज्यस्य तस्योन्नमति निष्कृतात् ॥ ३ ॥

yatra puṇyaṃ yadarthaṃ ca kṣetraṃ tābhyāṃ tathā kṛtam | yadi tadviniyojyasya tasyonnamati niṣkṛtāt || 3 ||

Where there is merit and purpose, the sacred place is made accordingly. If it is to be assigned, it rises from expiation.

जहाँ पुण्य और उद्देश्य है, वहाँ पवित्र स्थान उसी प्रकार बनाया जाता है। यदि यह सौंपा जाना है, तो यह प्रायश्चित से उठता है।

7.209.4

तत्तस्मान्महतः पापाद्भागमेनोखिलं च वा । चितिशक्त्यात्म तत्पुण्यं परिभ्राम्योपशाम्यति ॥ ४ ॥

tattasmānmahataḥ pāpādbhāgamenokhilaṃ ca vā | citiśaktyātma tatpuṇyaṃ paribhrāmyopaśāmyati || 4 ||

Therefore, from that great sin, a part or the whole, by the power of consciousness, that merit wanders and then subsides.

इसलिए, उस महान पाप से, एक भाग या पूरा, चेतना की शक्ति से, वह पुण्य भटकता है और फिर शांत हो जाता है।

7.209.5

विनेयपापमल्पं चेत्क्षेत्रधर्मोऽधिकस्ततः । तत्पापं नाशयित्वा तच्छब्द एव विवल्गति ॥ ५ ॥

vineyapāpamalpaṃ cetkṣetradharmo'dhikastataḥ | tatpāpaṃ nāśayitvā taçchabda eva vivalgati || 5 ||

If the sin to be removed is small and the dharma of the sacred place is greater, then that sin is destroyed and it merges into that sound.

यदि दूर करने के लिए पाप छोटा है और पवित्र स्थान का धर्म अधिक है, तो वह पाप नष्ट हो जाता है और वह उस ध्वनि में विलीन हो जाता है।

7.209.6

क्षेत्रधर्मेण तेनास्य विनेयस्य महीपते । द्वे शरीरे विदौ सम्यक्कचतः प्रतिभात्मिके ॥ ६ ॥

kṣetradharmeṇa tenāsya vineyasya mahīpate | dve śarīre vidau samyakkacataḥ pratibhātmike || 6 ||

O king, by the duty of the field, the two bodies of the one to be disciplined are properly known by the intelligence.

हे राजन्, क्षेत्र के धर्म से, जिसकी शिक्षा करनी है, उसके दो शरीर बुद्धि द्वारा ठीक से जाने जाते हैं।

7.209.7

इत्येवमादिपापानां पुण्यानां च फलं महत् । ब्रह्मसंकल्पकचितं यथा यद्यत्तथैव तत् ॥ ७ ॥

ityevamādipāpānāṃ puṇyānāṃ ca phalaṃ mahat | brahmasaṃkalpakacitaṃ yathā yadyattathaiva tat || 7 ||

Thus, the great fruit of sins and virtues is created by the will of Brahma, exactly as it is.

इस प्रकार, पापों और पुण्यों का महान फल ब्रह्मा की इच्छा से बनाया जाता है, जैसा कि वह है।

7.209.8

ब्रह्मोच्यतेऽसौ चिद्धातुः सोऽब्जजाद्यहमादि च । स यथास्ते तथा तत्तत्तस्य संकल्पनं जगत् ॥ ८ ॥

brahmocyate'sau ciddhātuḥ so'bjajādyahamādi ca | sa yathāste tathā tattattasya saṃkalpanaṃ jagat || 8 ||

Brahma is said to be the element of consciousness, the first born, the beginning of 'I'. As he is, so is the world created by his will.

ब्रह्मा चेतना का तत्व कहा जाता है, प्रथम जन्म, 'मैं' की शुरुआत। जैसा वह है, वैसा ही उसकी इच्छा से बना हुआ जगत है।

7.209.9

प्रतिभैव विनेयस्य क्षेत्रपुण्येन तादृशी । तथैवोदेति सा धातुर्विपरीतवतो यथा ॥ ९ ॥

pratibhaiva vineyasya kṣetrapuṇyena tādṛśī | tathaivodeti sā dhāturviparītavato yathā || 9 ||

The intelligence of the one to be disciplined arises exactly according to the merit of the field. It manifests in the same way as the opposite.

जिसकी शिक्षा करनी है, उसकी बुद्धि क्षेत्र के पुण्य के अनुसार उत्पन्न होती है। वह विपरीत की तरह ही प्रकट होती है।

7.209.10

एकात्मनाहमद्यैष मृतोऽमी मम बन्धवः । रुदन्तीमे परं लोकं प्राप्तोऽयमहमेककः ॥ १० ॥

ekātmanāhamadyaiṣa mṛto'mī mama bandhavāḥ | rudantīme paraṃ lokaṃ prāpto'yamahamekakaḥ || 10 ||

With one soul, I am this today, I am dead, these are my relatives, they are crying, I have attained the other world, I am alone.

एक आत्मा के साथ, मैं आज यह हूँ, मैं मर गया हूँ, ये मेरे रिश्तेदार हैं, वे रो रहे हैं, मैंने दूसरी दुनिया प्राप्त कर ली है, मैं अकेला हूँ।

7.209.11

बन्धूनामपि तत्रैव तदैवास्य तथैव च प्रतिभा तादृशैवेति धातुक्षोभवतामिव ॥ ११ ॥

bandhūnāmapi tatraiva tadaivāsya tathaiva ca pratibhā tādṛśaiva iti dhātukṣobhavatāmiva || 11 ||

Even among relatives, one's intelligence is perceived in the same manner as it is, just as the qualities of elements are perceived.

भाई-बंद में भी वही समझ होती है जैसी है और धातु के गुणों की तरह ही होती है।

7.209.12

अत्युग्रैः पुण्यपापैः स्वैर्वा महात्मभिरीक्षिते लक्ष्याण्यप्यन्यथा सन्ति नृणां चित्कल्पनावशात् ॥ १२ ॥

atyugraiḥ puṇyapāpaiḥ svairvā mahātmabhirīkṣite lakṣyāṇyapyanyathā santi nṛṇāṃ citkalpanāvaśāt || 12 ||

Even the most virtuous and sinful deeds are perceived differently by great souls due to the imaginative power of humans.

महान आत्माओं द्वारा देखे गए पुण्य और पाप के कार्य भी मनुष्यों की कल्पना शक्ति के कारण अलग-अलग दिखाई देते हैं।

7.209.13

अचेतनं शवीभूतं तेऽपि पश्यन्ति तं मृतम् रुदन्ति तं च दहने क्षिपन्ति सह बान्धवैः ॥ १३ ॥

acetanaṃ śavībhūtaṃ teapi paśyanti taṃ mṛtam rudanti taṃ ca dahane kṣipanti saha bāndhavaiḥ || 13 ||

Even they see the lifeless body as dead, cry for it, and cast it into the funeral pyre along with relatives.

वे भी निर्जीव शरीर को मृत देखते हैं, उसके लिए रोते हैं, और उसे भाई-बंदों के साथ चिता में डालते हैं।

7.209.14

विनेयः स यथान्येन संविद्रूपेण देहिनाऽजरामरणमात्मानं वेत्ति स्थितमदुःखितम् ॥ १४ ॥

vineyaḥ sa yathānyena saṃvidrūpeṇa dehinā'jarāmaraṇamātmānaṃ vetti sthitamaduḥkhitam || 14 ||

He should be disciplined by another in the form of consciousness, the embodied one knows the self as free from old age and death, and as steady and free from sorrow.

उसे दूसरे रूप में विनम्र होना चाहिए, शरीरधारी आत्मा को बुढ़ापे और मृत्यु से मुक्त, स्थिर और दुःख से मुक्त जानता है।

7.209.15

यथास्थितेन देहेन वेत्त्यसौ जीवितस्थितम् मृतिं त्वदृश्येनान्येन क्षेत्रपुण्यविदेरितः ॥ १५ ॥

yathāsthitena dehena vettiyasau jīvitasthitam mṛtiṃ tvadṛśyenānyena kṣetrapuṇyavidēritaḥ || 15 ||

One knows the state of life through the body as it is, and death through another, invisible, guided by the merit of the field.

कोई जीवन की स्थिति को शरीर के माध्यम से जानता है, जैसा है, और मृत्यु को दूसरे, अदृश्य, क्षेत्र के पुण्य द्वारा मार्गदर्शित होता है।

7.209.16

आविला संविदा संविच्छून्यया वेद्यते क्षणात् । न हि सन्नद्धगात्रस्य क्लेशोऽसन्नद्धमेदने ॥ १६ ॥

āvilā saṃvidā saṃvicchūnyayā vedyate kṣaṇāt | na hi sannaddhagātrasya kleśo'sannaddhamedane || 16 ||

The consciousness that is free from the sense of 'I' is realized in an instant | There is no suffering for the one whose body is not bound, in the unbound mind

जो चेतना 'मैं' के भाव से मुक्त है, वह क्षणभर में जानी जाती है | जिसका शरीर बंधनमुक्त है, उसके लिए असंयत मन में कोई क्लेश नहीं है

7.209.17

पश्यन्ति बन्धवोऽप्येनं तथैवामरतां गतम्द्वयमित्येष लभते जीवितं मरणं समम् ॥ १७ ॥

paśyanti bandhavo'pyenaṃ tathaivāmaratāṃ gatamdvayamityeṣa labhate jīvitaṃ maraṇaṃ samam || 17 ||

Even his relatives see him as having attained immortality. Thus, he gains life and death equally.

उसके रिश्तेदार भी उसे अमरता प्राप्त करने वाला देखते हैं। इस प्रकार, वह जीवन और मृत्यु को समान रूप से प्राप्त करता है।

7.209.18

इदमप्रतिघारम्भं भ्रान्तिमात्रं जगत्त्रयम्। न संभवति को नाम भ्रान्तौ भ्रान्तिविपर्ययः ॥ १८ ॥

idamapratighārambhaṃ bhrāntimātraṃ jagattrayam | na saṃbhavati ko nāma bhrāntau bhrāntiviparyayaḥ || 18 ||

This world is merely an illusion, without any real substance | There is no one who can be deluded by illusion

यह संसार केवल एक भ्रम है, जिसमें कोई वास्तविक सत्ता नहीं है | भ्रम में कोई भी भ्रमित नहीं हो सकता

7.209.19

संकल्पस्वप्नपुरयोर्या भ्रान्तिरनुभूयते। ततोऽधिकोऽयं न न्यूनाज्जाग्रत्स्वप्नेऽनुभूयते ॥ १९ ॥

saṃkalpasvapnapurayoryā bhrāntiranubhūyate | tato'dhiko'yaṃ na nyūnājjāgratsvapne'nubhūyate || 19 ||

The illusion experienced in the dream state is neither greater nor lesser than that experienced in the waking state

स्वप्न अवस्था में अनुभव की गई भ्रांति जाग्रत अवस्था में अनुभव की गई भ्रांति से न तो अधिक है न ही कम

7.209.20

राजोवाच। धर्माधर्मौ कथं ब्रह्मन्कारणं देहसंविदः। तस्यामूर्तौ कथं चैको द्विशरीरत्वमृच्छति ॥ २० ॥

rājovāca | dharmādharmau kathaṃ brahman kāraṇaṃ dehasaṃvidaḥ | tasyāmūrtau kathaṃ caiko dviśarīratvamṛcchati || 20 ||

The king said: O Brahman, how are virtue and vice the cause of bodily consciousness? How does one attain a dual body in that formless state?

राजा ने कहा: हे ब्रह्मन्, पुण्य और पाप शरीर की चेतना का कारण कैसे हैं? उस निराकार अवस्था में एक व्यक्ति द्विशरीरता कैसे प्राप्त करता है?

7.209.21

श्रीवसिष्ठ उवाच। संकल्पनगरे ब्राह्मे जगत्यस्मिन्महामते। किं नाम नो संभवति सत्यं वाप्यसमञ्जसम् ॥ २१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | saṃkalpanagare brāhme jagatyasminmahāmate | kiṃ nāma no saṃbhavati satyaṃ vāpyasamañjasam || 21 ||

Śrīvasiṣṭha said: In this great universe, which is the city of imagination, what is there that is true or false?

श्रीवसिष्ठ ने कहा: इस महान ब्रह्माण्ड में, जो कि कल्पना का नगर है, क्या ऐसा कुछ है जो सत्य हो या असत्य?

7.209.22

यथैव संकल्पपुरे यन्न संभवतीह हि। तन्नास्त्येव तदेतस्मिन्किं वाऽस्तु ब्रह्मकल्पने ॥ २२ ॥

yathaiva saṃkalpapure yann na saṃbhavatīha hi | tannāstyeva tadetasminkiṃ vā'stu brahmakalpane || 22 ||

Just as whatever does not exist in the city of imagination does not exist here, what is there in this Brahman's imagination?

जैसे कल्पना के नगर में जो कुछ नहीं है, वह यहाँ भी नहीं है, तो ब्रह्मा की कल्पना में क्या है?

7.209.23

स्वप्नसंकल्पपुरयोरेको गच्छति लक्षताम्। तथा चैकैव चित्स्वप्ने सेनात्वमुपगच्छति ॥ २३ ॥

svapnasankalpapurayoreko gacchati lakṣatām | tathā caikaiava cit svapne sēnātvamupagacchati || 23 ||

Just as one goes to the city of imagination in a dream, so too in a dream, the consciousness alone becomes an army.

जैसे स्वप्न में कोई कल्पना के नगर में जाता है, वैसे ही स्वप्न में चेतना ही एक सेना बन जाती है।

7.209.24

सहस्राण्येकतां यान्ति तथा सैव सुषुप्तकम्। अन्यथा स्वप्नसंकल्पसेनानुभवसंस्मृतौ ॥ २४ ॥

sahasrāṇyekatāṃ yānti tathā saiva suṣuptakam | anyathā svapnasankalpasenānubhavasaṃsmṛtau || 24 ||

Thousands become one, and so does that in deep sleep. Otherwise, the experience and memory of the dream army are different.

हजारों एक बन जाते हैं, और वही गहरी नींद में होता है। अन्यथा, स्वप्न सेना का अनुभव और स्मृति अलग-अलग होती है।

7.209.25

संकल्पस्वप्नपुरयोरिति को नानुभूतवान्। संविदाकाशमात्रेऽस्मिञ्जगत्यनुभवात्मनि ॥ २५ ॥

saṃkalpasvapnapurayoriti ko nānubhūtavān | saṃvidākāśamātre'smiñjagatyānubhavātmani || 25 ||

Who has not experienced the city of imagination and dreams in this world, which is the essence of consciousness?

कौन नहीं अनुभव कर चुका है कल्पना और स्वप्न के नगर का इस जगत में, जो चेतना का सार है?

7.209.26

तस्मादस्मिंश्चिदाकाशसंकल्पे जगदात्मनि। न संभवति किं नाम तत्संभवति वापि किम् ॥ २६ ॥

tasmādasmiṁścidākāśasaṃkalpe jagadātmani | na saṃbhavati kiṃ nāma tatsaṃbhavati vāpi kim || 26 ||

Therefore, in this space of consciousness, which is the essence of the universe, nothing exists or does not exist.

इसलिए, इस चिदाकाश संकल्प में, जो जगत का आत्मा है, कुछ भी नहीं है या कुछ भी नहीं होता है।

7.209.27

एवमेवमियं भ्रान्तिर्भाति भास्वन्नभोमयम्। नेह किंचन सन्नासन्न वाऽऽसदिह किंचन ॥ २७ ॥

evamevamiyaṃ bhrāntirbhāti bhāsvannabhomayam | neha kiṃcana sannāsanna vā'sadih kiṃcana || 27 ||

Thus, this delusion appears as a shining sky, but here there is nothing real or unreal.

इस प्रकार, यह भ्रम एक चमकीले आकाश के रूप में दिखाई देता है, लेकिन यहाँ कुछ भी सत्य या असत्य नहीं है।

7.209.28

यथानुभूयते यद्यत्तत्तथा तत्त्वदर्शिनः। प्रबुद्धस्यात्र किं नाम तत्स एवाङ्गतेत्यलम् ॥ २८ ॥

yathānubhūyate yadyattattathā tattvadarśinaḥ | prabuddhasyātra kiṃ nāma tatsa evāṅgatetyalam || 28 ||

Whatever is experienced, that is as it is for the seer of truth. What is the name of that for the awakened one here? That is enough.

जो भी अनुभव किया जाता है, वह सत्य दर्शक के लिए वैसा ही है। यहाँ जागृत व्यक्ति के लिए उसका नाम क्या है? वह पर्याप्त है।

7.209.29

इह चेद्विहितो धर्मस्तत्स्वर्गेऽमृतपर्वताः। स्थिता इतीह संकल्पे कस्मान्न प्राप्तवान्गिरीन् ॥ २९ ॥

iha cedvihito dharmastatsvarge'mṛtaparvatāḥ | sthitā itīha saṃkalpe kasmānna prāptavāngirīn || 29 ||

If righteousness is ordained here, then in that heaven, the immortal mountains stand. Why has one not attained the mountains in this resolve?

यदि यहाँ धर्म विहित है, तो उस स्वर्ग में, अमृत पर्वत स्थित हैं। इस संकल्प में क्यों नहीं पर्वतों को प्राप्त हुआ है?

7.209.30

इह यत्क्रियते कर्म तत्परत्रोपभुज्यते । इतीह संकल्पपुरे सर्वमेवासमञ्जसम् ॥ ३० ॥

iha yatkriyate karma tatparatropabhujyate | itīha saṃkalpapure sarvamevāsamañjasam || 30 ||

Whatever action is performed here, that is enjoyed in the hereafter. Thus, in this city of resolve, everything is inconsistent.

यहाँ जो कर्म किया जाता है, वह परलोक में भोगा जाता है। इसलिए, इस संकल्प नगर में, सभी कुछ असमंजस है।

7.209.31

यदि स्यात्सुस्थिरं किंचिद्वस्तु तद्दृश्यको भवेत् । न्याय एषोऽखिलः किंतु संवित्त्वात्स्वस्वकं स्थितः ॥ ३१ ॥

yadi syātsusthiraṃ kiṃcidvastu taddṛśyako bhavet| nyāya eṣo'khilaḥ kiṃtu saṃvittvātsvasvakaṃ sthitaḥ || 31 ||

If there is any stable object, it becomes visible| This is the complete principle, however, it remains in its own nature due to consciousness

अगर कोई स्थिर वस्तु हो तो वह दृश्य बन जाती है| यह पूरा नियम है, फिर भी, यह चेतना के कारण अपने स्वभाव में रहता है

7.209.32

इत्येष कथितो न्यायः सिद्धास्वनुभवस्ततः । यतो जगन्ति संकल्पश्चितो ब्रह्मस्वरूपतः ॥ ३२ ॥

ityeṣa kathito nyāyaḥ siddhāsvanubhavastataḥ| yato jaganti saṃkalpaścito brahmasvarūpataḥ || 32 ||

Thus, this principle is explained, and from that, the experience of the perfect ones arises| Because the world is a thought, conscious of the nature of Brahman

इस प्रकार, यह नियम समझाया गया है, और उससे सिद्धों का अनुभव उत्पन्न होता है| क्योंकि जगत एक विचार है, ब्रह्म के स्वरूप का चेतन

7.209.33

इव संकल्पनगरे नास्त्येवासंभवो यथा । सर्वार्थानां तथा ब्राह्मे संकल्पे नास्त्यसंभवः ॥ ३३ ॥

iva saṃkalpanagare nāstyevāsaṃbhavaḥ yathā| sarvārthānāṃ tathā brāhme saṃkalpe nāstyasaṃbhavaḥ || 33 ||

Just as in the city of imagination, there is no impossibility| Similarly, in the divine thought, there is no impossibility for all purposes

जैसे कि कल्पना के नगर में, कोई असंभव नहीं है| उसी प्रकार, ब्रह्म के विचार में, सभी उद्देश्यों के लिए कोई असंभव नहीं है

7.209.34

यद्यथा कल्पितं तत्र यावत्संकल्पमेव तत् । स्वभावेन तथैवास्ति यतस्तत्संनिवेशवत् ॥ ३४ ॥

yadyathā kalpitaṃ tatra yāvatsaṃkalpameva tat| svabhāvena tathaivāsti yatastatsaṃniveśavat || 34 ||

Whatever is imagined there, it exists as long as the thought| It exists in that very nature because it is established in that way

जो कुछ भी वहाँ कल्पित है, वह तब तक मौजूद है जब तक विचार है| यह उसी स्वभाव में मौजूद है क्योंकि यह उसी तरह से स्थापित है

7.209.35

ततः संप्रेक्षणमिह संकरो न प्रवर्तते । विनान्यच्चित्प्रयत्नेन भवत्यर्थस्तु नान्यथा ॥ ३५ ॥

tataḥ saṃprekṣaṇamih saṃkaro na pravartate| vinānyaccitprayatnena bhavatyarthastu nānyathā || 35 ||

Therefore, here, the observation does not cause confusion| Without the effort of another consciousness, the meaning does not arise otherwise

इसलिए, यहाँ, observation भ्रम नहीं पैदा करता| दूसरी चेतना के प्रयास के बिना, अर्थ दूसरे तरीके से नहीं उत्पन्न होता

7.209.36

आकल्पमजसंकल्पे यथा भातं जगत्स्थितम्। पुनरन्येन संकल्परूपेणान्यदुपैष्यति ॥ ३६ ॥

ākalpamajasaṃkalpe yathā bhātaṃ jagatsthitam | punaranyena saṃkalparūpeṇānyadupaiṣyati || 36 ||

Just as the world appears to be established in the beginning of a creation, it will again appear in another form by another resolution.

जैसे सृष्टि के आरंभ में संसार स्थापित होता है, वैसे ही दूसरे संकल्प के रूप में फिर से अन्य रूप में प्रकट होगा।

7.209.37

संकल्पात्म स्वयं भाति कल्पे कल्पे जगत्तथा। प्रतिजीवं चितिस्वप्ने स्वप्ने स्वाप्नपुरं यथा ॥ ३७ ॥

saṃkalpātma svayaṃ bhāti kalpe kalpe jagattathā | pratijīvaṃ citisvapne svapne svāpnpuraṃ yathā || 37 ||

The self-resolution appears by itself in every creation, just as in every dream, the dream city appears to each individual.

स्वयं संकल्प हर सृष्टि में प्रकट होता है, जैसे हर स्वप्न में स्वप्न नगर प्रत्येक जीव को प्रकट होता है।

7.209.38

संकल्पपत्तनतनोर्न तदस्ति किंचिद्यद्यन्न संभवति तच्च चिदात्मनोऽस्मात्। नान्यत्प्रकम्पयितुराद्यपरस्वरूपाद्ब्रह्मैव तेन सकलं जगदङ्ग विद्धि ॥ ३८ ॥

saṃkalpapattana tanor na tadasti kiṃcid yad yan na saṃbhavati tac ca cidātmano'smāt | nānyat prakampayiturādyaparasvarūpād brahmaiva tena sakalaṃ jagadaṅga viddhi || 38 ||

There is nothing that does not exist in the self-resolution and the self. Whatever does not manifest, that too is from the self. There is nothing else that can disturb the primordial and ultimate form of Brahman. Therefore, know that the entire world is Brahman.

संकल्प और स्वयं में कुछ भी नहीं है जो अस्तित्व में नहीं है। जो भी नहीं होता है, वह भी स्वयं से है। ब्रह्म के प्राथमिक और अंतिम रूप को विचलित करने वाला कुछ भी नहीं है। इसलिए, समूचा संसार ब्रह्म है, यह जानो।

Chapter 210

7.210.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । फले क्षयेन्दुभारूपे प्राप्ते ध्यातृशतैर्नभः । यथा न शतपूर्णेन्दु तथेदं कथनं शृणु ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | phale kṣayendubhārūpe prāpte dhyātṛśatairnabhaḥ | yathā na śatapūrṇendu tathedaṃ kathanaṃ śṛṇu || 1 ||

Shri Vasishtha said: Just as the full moon is not seen by hundreds of meditators when the moon is in its waning phase, similarly, listen to this narration.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जैसे चन्द्रमा के घटते हुए चरण में सौ ध्यान करने वालों द्वारा पूर्ण चन्द्रमा नहीं देखा जाता, वैसे ही इस कथन को सुनो।

7.210.2

चन्द्रबिम्बस्य ध्यातारः प्राप्ताः प्राप्तव्यसुस्थिताः । नेदं नभस्तलं प्राप्ता न चेमं शशिनं श्रिताः ॥ २ ॥

candrabimbasya dhyātāraḥ prāptāḥ prāptavyasusthitāḥ | nedaṃ nabhastalaṃ prāptā na cemaṃ śaśinaṃ śritāḥ || 2 ||

The meditators on the moon's disc, having reached the state of attainment, are not in this sky, nor have they taken refuge in this moon.

चन्द्रमा के डिस्क पर ध्यान करने वाले, प्राप्ति की अवस्था में पहुंच गए हैं, वे इस आकाश में नहीं हैं, न ही इस चन्द्रमा में शरण ले चुके हैं।

7.210.3

क्वेवान्यसंकल्पपुरमन्यः प्राप्नोति कथ्यताम् । संकल्पपुर्यामर्थाप्तिस्तज्जन्तावेव नापरे ॥ ३ ॥

kvevānyasaṃkalpapuramanyaḥ prāpnoti kathyatām | saṃkalpapuryāmarthāptistajjantāveva nāpare || 3 ||

Tell me, who else reaches another realm of imagination? The attainment of the goal is only for those born in the realm of imagination, not for others.

बताओ, कौन और किसी अन्य कल्पना के लोक में पहुंचता है? लक्ष्य की प्राप्ति केवल उन्हीं के लिए है जो कल्पना के लोक में जन्मे हैं, दूसरों के लिए नहीं।

7.210.4

पृथक्पृथक्स्वसंकल्पसर्गखेष्वेव ते स्थिताः । चन्द्रास्तपन्ति तत्रैव कलाक्षयविवर्जिताः ॥ ४ ॥

pṛthakpṛthaksvasaṃkalpasargakheṣveva te sthitāḥ | candrāstapanti tatraiva kalākṣayavivarjitāḥ || 4 ||

They are situated in their own separate realms of imagination. The moons shine there without any diminution of their phases.

वे अपने-अपने अलग-अलग कल्पना के लोकों में स्थित हैं। वहां चन्द्रमा अपने कलाओं के क्षय से रहित चमकते हैं।

7.210.5

विशेयमस्मिन्नेवेन्दाविनि ध्याता निशाकरे । अस्मिन्नेव विशत्यन्तरात्मबुद्धिसुखोज्झितः ॥ ५ ॥

viśeyamasminnevendāvini dhyātā niśākare | asminneva viśatyantarātmabuddhisukhojjihitaḥ || 5 ||

The meditator on the moon, being in this very moon, enters into it, devoid of inner consciousness, intellect, and happiness.

चन्द्रमा पर ध्यान करने वाला, इसी चन्द्रमा में होने पर, अंतरात्मा, बुद्धि और सुख से रहित होकर उसमें प्रवेश करता है।

7.210.6

अहमिन्दुं प्रविष्टः स्यामिन्दुबिम्बसुखान्वितः । ध्यातेति तादृक्सुखभाग्भवतीति विनिश्चयः ॥ ६ ॥

ahamindum̐ praviṣṭaḥ syāmindubimbasukhānvitaḥ | dhyāteti tādṛksukhabhāgbhvatīti viniścayaḥ || 6 ||

I have entered the moon and am endowed with the bliss of the moon's reflection. By meditating thus, one becomes endowed with such bliss, this is the firm conviction.

मैं चंद्रमा में प्रवेश कर चुका हूँ और चंद्रमा के प्रतिबिम्ब के आनंद से युक्त हूँ | ऐसा ध्यान करने से वह ऐसे ही आनंद से युक्त हो जाता है, यह दृढ़ निश्चय है।

7.210.7

यथायमनुसंधत्ते स्वभावं संविदव्यया । तं तथैवानुभवति भवेच्चेद्दृढनिश्चयः ॥ ७ ॥

yathāyamanusaṃdhatte svabhāvaṃ saṃvidavyayā | taṃ tathaivānubhavati bhaveccedd̠ṛḍhaniścayaḥ || 7 ||

As one contemplates one's own nature with unwavering consciousness, one experiences it exactly thus if there is firm conviction.

जैसे कोई अपने स्वभाव को अव्यय संविद के साथ ध्यान करता है, वैसे ही उसे ऐसा ही अनुभव होता है यदि दृढ़ निश्चय हो।

7.210.8

यथेन्दुत्वं स्वसंकल्पात्सर्वध्यातुः पृथक्पृथक् । भात्येवमेव वनितालाभः काल्पनिकः स्वतः ॥ ८ ॥

yathendutvaṃ svasaṃkalpātsarvadhyātuḥ pṛthakpṛthak | bhātyevameva vanitālābhḥ kālpanikaḥ svataḥ || 8 ||

Just as the moon's reflection appears differently to each meditator according to their own resolve, so too the attainment of a beloved is purely imaginative.

जैसे चंद्रमा का प्रतिबिम्ब हर ध्याता के लिए उसके संकल्प के अनुसार अलग-अलग दिखाई देता है, वैसे ही प्रियतमा का लाभ पूर्णतः कल्पनात्मक है।

7.210.9

या ध्याने ध्यातृलक्षाणां साध्वी भार्यात्वमागता । तत्कल्पनानुभवनं तेषां सत्त्वात्मनि स्थितम् ॥ ९ ॥

yā dhyāne dhyātṛlakṣāṇāṃ sādhvī bhāryātvamāgatā | tatkalpanānubhavanaṃ teṣāṃ sattvātmani sthitam || 9 ||

She who is the object of meditation for the meditators has become a virtuous wife. Their experience of that imagination is established in their pure consciousness.

जो ध्याताओं के ध्यान की लक्ष्य है, वह एक साध्वी पत्नी बन गई है। उनके उस कल्पना का अनुभव उनके शुद्ध चेतना में स्थापित है।

7.210.10

गृहादनिर्गतो जीवः सप्तद्वीपपरः स्थितः । तस्यापि तत्काल्पनिकं राज्यं व्योम्नि स्वमन्दिरे ॥ १० ॥

gṛhādanirgato jīvaḥ saptadvīpaparaḥ sthitaḥ | tasyāpi tatkālpanikaṃ rājyaṃ vyomni svamandire || 10 ||

The soul that has left the home is situated beyond the seven islands. Even for that soul, the imagined kingdom is in its own mansion in the sky.

घर से निकला हुआ जीव सात द्वीपों से परे स्थित है। उसके लिए भी, कल्पनात्मक राज्य आकाश में अपने महल में है।

7.210.11

समस्तं कल्पनामात्रमिदमाद्यज्ञजन्मनः । शून्यमप्रतिघं शान्तं तेष्वपि स्यात्किमन्यथा ॥ ११ ॥

samastaṃ kalpanāmātramidamādyajñajanmanaḥ | śūnyamapratighaṃ śāntaṃ teṣvapi syātkimanyathā || 11 ||

All this is merely imagination of the primordial sacrifice. It is void, non-resisting, and peaceful. What else could it be?

यह सब आदि यज्ञ की कल्पना मात्र है | यह शून्य, अप्रतिघाती और शान्त है | इसमें और क्या हो सकता है?

7.210.12

दानौर्ध्वदेहिकतपोजपादीनां परत्र यत् । अमूर्तानां फलं मूर्तं तदिदं कथ्यते श्रृणु ॥ १२ ॥

dānaurdhvadehikatapojapādīnāṃ paratra yat | amūrtānāṃ phalaṃ mūrtaṃ tadidaṃ kathyate śṛṇu || 12 ||

The fruits of charity, austerities, and rituals performed in this life are tangible in the afterlife. Listen to this being explained.

दान, तप और जप आदि के फल परलोक में मूर्त होते हैं | यह बात कही जाती है, सुनो |

7.210.13

दानादिचिह्नितधियः परत्र स्वप्नवत्फलम् । पश्यन्त्यमूर्तामूर्ताभमजं चिन्मूर्तिकल्पनात् ॥ १३ ॥

dānādicihnitadhiyaḥ paratra svapnavatphalaṃ | paśyantyamūrtāmūrtābhamaṃ jaṃ cinmūrtikalpanāt || 13 ||

Those whose minds are marked by charity and other virtues see the results in the afterlife as if in a dream. They perceive the unmanifest as manifest through the power of consciousness.

जिनके मन दान और अन्य गुणों से चिह्नित हैं, वे परलोक में सपने की तरह फल देखते हैं | वे चेतना की शक्ति से अमूर्त को मूर्त के रूप में देखते हैं |

7.210.14

वेदनावेदनाकारा स्पन्दास्पन्दात्म वै पुनः । चिन्मात्रस्यास्य तद्भ्रान्तिशान्तौ शान्तात्म निर्मलम् ॥ १४ ॥

vedanāvedanākārā spandāspandātma vai punaḥ | cinmātrasya asya tadbhāntiśāntau śāntātma nirmalam || 14 ||

The nature of pure consciousness is both with and without sensation, both moving and still. In the cessation of delusion, it is peaceful and pure.

पूर्ण चेतना की प्रकृति अनुभूति और अननुभूति दोनों है, स्पंदित और अस्पंदित दोनों है | भ्रांति की समाप्ति में, यह शांत और निर्मल है |

7.210.15

चिन्मात्राभमितो दानादमुत्रात्तमवाप्नुयात् । संकल्पात्मेति कवयः कथं तन्नोपलभ्यते ॥ १५ ॥

cinmātrābhama ito dānādamutrāttamavāpnuyāt | saṃkalpātmeti kavayaḥ kathaṃ tannopalabhyate || 15 ||

From the perspective of pure consciousness, one attains the highest state through charity and other virtues. The wise say it is the nature of resolve. How is it not perceived?

पूर्ण चेतना के दृष्टिकोण से, दान और अन्य गुणों द्वारा उत्तम अवस्था प्राप्त होती है | विद्वान कहते हैं कि यह संकल्प की प्रकृति है | यह कैसे अनुभव नहीं किया जाता?

7.210.16

कल्पनात्मनि संसारे संकल्पोऽकृत्रिमं फलम् । चिन्मात्रमभितोऽदानाद्दानाद्वाऽस्तु यथोदितः ॥ १६ ॥

kalpanātmani saṃsāre saṃkalpo'kṛtrimaṃ phalaṃ | cinmātramabhito'dānāddānādvā'stu yathoditaḥ || 16 ||

In this world, which is a product of imagination, the result of resolve is spontaneous. Whether it is given or not given, let it be as it is said.

इस कल्पना से बने संसार में, संकल्प का फल अकृत्रिम होता है। चाहे दिया जाए या न दिया जाए, जैसा कहा गया है वैसा ही हो।

7.210.17

एतत्ते कथितं सर्वं यथापृष्टं महीपते । जगदप्रतिघं सर्वमिदं चिन्मात्रकल्पनम् ॥ १७ ॥

etatte kathitaṃ sarvaṃ yathāpṛṣṭaṃ mahīpate | jagadapratighaṃ sarvamidaṃ cinmātrakalpanam || 17 ||

All this has been told to you, O king, as you have asked. This entire world is non-resistant, and it is all a creation of pure consciousness.

हे राजन्, जैसे आपने पूछा था, वैसे ही यह सब कुछ आपको बताया गया है। यह पूरा संसार प्रतिरोध रहित है, और यह सब चिन्मात्र की कल्पना है।

7.210.18

राजोवाच । सर्गादौ भगवन्देहमिदं चिन्मात्रकल्पनम् । कथं भाति कथं कुड्यं विना दीपः प्रकाशते ॥ १८ ॥

rājovāca | sargādau bhagavandehamidaṃ cinmātrakalpanam | kathaṃ bhāti kathaṃ kuḍyaṃ vinā dīpaḥ prakāśate || 18 ||

The king said: O Lord, how does this body, which is a creation of pure consciousness, appear at the beginning of creation? How does a wall shine without a lamp?

राजा ने कहा: हे भगवन्, यह शरीर, जो चिन्मात्र की कल्पना है, सृष्टि के आरंभ में कैसे प्रकट होता है? दीपक के बिना किसी दीवार कैसे चमकती है?

7.210.19

श्रीवसिष्ठ उवाच । त्वयार्थो देहशब्दस्य यो बुद्धः स महामते । तत्त्वज्ञं प्रति नास्त्येव शिलानृत्तमिवाम्बरे ॥ १९ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | tvayārtho dehaśabdasya yo buddhaḥ sa mahāmate | tattvajñaṃ prati nāstyeva śilānṛttamivāmbare || 19 ||

Vasishtha said: O wise one, the meaning you have understood of the word 'body' does not exist for the knower of truth, just as the dance of a stone does not exist in the sky.

वसिष्ठ ने कहा: हे महामते, जो तुमने 'शरीर' शब्द का अर्थ समझा है, वह तत्त्वज्ञ के लिए नहीं है, जैसे आकाश में पत्थर का नृत्य नहीं होता।

7.210.20

य एव ब्रह्मशब्दार्थो देहशब्दार्थ एव सः । नार्थयोरनयोर्भेदो विद्यतेऽम्ब्वम्भसोरिव ॥ २० ॥

ya eva brahmaśabdārtho dehaśabdārtha eva saḥ | nārthayoranayorbhedo vidyate'mbvambhasoriva || 20 ||

The meaning of the word 'Brahman' is the same as the meaning of the word 'body'. There is no difference between these two meanings, just as there is no difference between water and water.

ब्रह्म शब्द का अर्थ शरीर शब्द का अर्थ ही है। इन दोनों अर्थों में कोई अंतर नहीं है, जैसे जल और जल में कोई अंतर नहीं है।

7.210.21

यदेव ब्रह्मदेहोऽसौ स्वप्नाभः स्वप्न एष तु । त्वद्बोधायोच्यते युक्तिर्न तु तत्स्वप्न एव तु ॥ २१ ॥

yadeva brahmadeho'sau svapnābhaḥ svapna eṣa tu | tvadvodhāyocyate yuktirna tu tatsvapna eva tu || 21 ||

Whatever this body of Brahman is, it is like a dream, this is indeed a dream | For your awakening, reasoning is explained, not that it is merely a dream

जो यह ब्रह्म का शरीर है, वह स्वप्न के समान है, यह स्वप्न ही है | आपके जागरण के लिए, तर्क बताया जाता है, यह केवल स्वप्न नहीं है

7.210.22

स्वप्नस्तवानुभूतार्थस्तेनातस्त्वं प्रबोध्यसे । न तु सर्गे चिदाभाते सादृश्यं स्वप्नभस्मना ॥ २२ ॥

svapnastavānubhūtārthastenātastvaṃ prabodhyase | na tu sarge cidābhāte sādṛśyaṃ svapnabhasmanā || 22 ||

The dream is the experienced reality, by that you are awakened | Not in creation, in the appearance of consciousness, similarity with the dream is not

स्वप्न अनुभव की वास्तविकता है, उससे आप जागरण को प्राप्त होते हैं | सृष्टि में, चेतना के प्रकटीकरण में, स्वप्न के साथ समानता नहीं है

7.210.23

कस्तत्र नाम देहोऽयं कस्यैते स्वप्नधीः क्व वा । स्वप्नेन ज्ञावबुद्धेन भ्रमेणाज्ञोऽवबोध्यते ॥ २३ ॥

kastatra nāma deho'yaṃ kasyaita svapnadhīḥ kva vā | svapnena jñāvabuddhena bhrameṇājño'vabodhyate || 23 ||

Who is this body there, whose are these dream thoughts, where indeed | By the dream, by the knowledge of the ignorant, the ignorant is awakened

वहाँ यह शरीर किसका है, ये स्वप्न विचार किसके हैं, कहाँ वास्तव में | स्वप्न से, अज्ञानी के ज्ञान से, अज्ञानी जागरण को प्राप्त होता है

7.210.24

तत्र जाग्रन्न च स्वप्नो न सुषुप्तं न चेतरत् । किमपीत्थमिदं भानं खमात्रं मौनमोमलम् ॥ २४ ॥

tatra jāgrann na ca svapno na suṣuptaṃ na cetarat | kimapītthamidaṃ bhānaṃ khamātraṃ maunamomalam || 24 ||

There, neither wakefulness nor dream nor deep sleep nor anything else | What is this appearance here, merely space, silent, pure

वहाँ, न जागरण है, न स्वप्न है, न सुषुप्ति है, न ही कुछ और | यहाँ यह प्रकटीकरण क्या है, केवल आकाश, मौन, शुद्ध

7.210.25

अभातमेव भातीव यदद्येत्थमिदं तु तत् । प्राग्विभातं तथात्यच्छं जाग्रत्स्वप्नादि नो यथा ॥ २५ ॥

abhātameva bhātīva yadadyetthamidaṃ tu tat | prāgvibhātaṃ tathātyacchaṃ jāgratsvapnādi no yathā || 25 ||

That which appears here now as if it is unreal, it is indeed that | Previously manifested, thus transcending, wakefulness, dream, etc., not like that

जो यहाँ अब असली लगता है, वह वास्तव में वही है | पहले प्रकट हुआ, इस प्रकार पार करता हुआ, जागरण, स्वप्न, आदि, उसके समान नहीं

7.210.26

देशाद्देशान्तरप्राप्तौ यन्मध्ये संविदो वपुः । तन्मयं सर्वमेवेदं द्वैतमद्वैतमेव च ॥ २६ ॥

deśāddeśāntaraprāptau yanmadhye saṃvido vapuḥ| tanmayam sarvamevedam dvaitamadvaitameva ca || 26 ||

In the transition from one place to another, the form of consciousness in the middle is all this, both duality and non-duality.

एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा में, बीच में चेतना का रूप यह सब कुछ है, द्वैत और अद्वैत दोनों।

7.210.27

अन्यत्र चिन्मयं स्वप्नं द्वैताद्वैतं शुभाशुभम् । निरावरणचिन्मात्रनभसैवोपमीयते ॥ २७ ॥

anyatra cinmayam svapnam dvaitādvaitam śubhāśubham| nirāvaraṇacinmātranabhasaivopamīyate || 27 ||

Elsewhere, the dream of pure consciousness is both duality and non-duality, auspicious and inauspicious. It is compared to the pure, unobstructed sky of consciousness alone.

अन्यत्र, चिन्मय स्वप्न द्वैत और अद्वैत, शुभ और अशुभ दोनों है। यह केवल चेतना के शुद्ध, अवरोधरहित आकाश के समान है।

7.210.28

शून्यमर्थोपलम्भश्च भानं चाभानमेव च। द्वैतमैक्यमसत्सच्च सर्वं चिद्गगनं परम्॥ २८॥

śūnyamarthopalambhaśca bhānam cābhānameva ca| dvaitamaikyamasatsacca sarvam cidgaganam param || 28 ||

Emptiness, the perception of objects, appearance and non-appearance, duality, unity, unreality, and reality—all are the supreme sky of consciousness.

शून्यता, वस्तुओं की उपलब्धि, प्रकट होना और अप्रकट होना, द्वैत, एकता, असत् और सत्—सब कुछ चेतना का परम आकाश है।

7.210.29

पूर्णात्पूर्णं प्रसरति पूर्णमेव स्थितं जगत्। न च भातं न चाभातं शिलाबद्धोदरोपमम्॥ २९॥

pūrṇātpūrṇam prasarati pūrṇameva sthitam jagat| na ca bhātam nacaābhātam śilābaddhodaropamam || 29 ||

From the full, the full expands; the world is established as full. It neither appears nor disappears, like a stone within a belly.

पूर्ण से पूर्ण फैलता है; संसार पूर्ण के रूप में स्थापित है। यह न तो प्रकट होता है न अप्रकट, जैसे पेट में पत्थर की तरह।

7.210.30

यतो जगच्चिदुन्मेषो व्योमात्माप्रतिघं ततः। चिन्मात्रं यत्र यत्रास्ति तत्र तत्रोचितं जगत्॥ ३०॥

yato jagaccidunmeṣo vyomātmāpratigham tataḥ| cinmātram yatra yatrāsti tatra tatrocitam jagat || 30 ||

From where the universe arises as pure consciousness, unobstructed like the sky. Wherever there is pure consciousness, there the universe is appropriate.

जहाँ से ब्रह्मांड शुद्ध चेतना के रूप में उत्पन्न होता है, आकाश की तरह अवरोधरहित। जहाँ-जहाँ शुद्ध चेतना है, वहाँ-वहाँ ब्रह्मांड उपयुक्त है।

7.210.31

चिद्व्योम चास्ति सर्वत्र सर्वं चैतज्जगन्मयम्। सर्वं ब्रह्ममयं शान्तं जगदित्यपि शब्दितम्॥ ३१॥

cidvyoma cāsti sarvatra sarvaṃ caitajjaganmayam | sarvaṃ brahmamayaṃ śāntaṃ jagadityapi śabditam || 31 ||

The consciousness-space exists everywhere, and everything is pervaded by this world. Everything is permeated by Brahman, peaceful, and is also called the world.

चिद्व्योम सर्वत्र है, और सब कुछ इस जगत से व्याप्त है | सब कुछ ब्रह्ममय है, शान्त, और जगत भी कहा जाता है |

7.210.32

यथास्थितमिदं विश्वं तथासंस्थमनामयम्। ब्रह्मैव निरवद्यात्म चित्संकल्पपुराकृति॥ ३२॥

yathāsthitamidaṃ viśvaṃ tathāsaṃsthamanāmayam | brahmaiva niravadyātma citsaṃkalpapurākṛti || 32 ||

This universe is established as it is, flawless and without defects. Brahman alone is the pure, flawless self, the original form of consciousness.

यह विश्व जैसा है वैसा ही स्थापित है, दोषरहित और निर्दोष | ब्रह्म ही शुद्ध, निर्दोष आत्मा है, चेतना का मूल रूप |

7.210.33

असंभवादन्ययुक्तेर्युक्तिरेषैव शोभना। अयुक्त्यनुभवं तूक्तं नार्थिनामिह शोभते॥ ३३॥

asaṃbhavādanyayukteryuktireṣaiva śobhanā | ayuktyanubhavaṃ tūktaṃ nārthināmiha śobhate || 33 ||

From the impossibility of any other reasoning, this reasoning alone is beautiful. It is said that the experience of irrationality does not suit the seekers here.

किसी अन्य तर्क की असंभावना से, यही तर्क सुंदर है | यहाँ अतर्क्य अनुभव का अनुभव साधकों के लिए उपयुक्त नहीं है, यह कहा जाता है |

7.210.34

लोके शास्त्रेऽथ वेदादौ यत्सिद्धं सिद्धमेव तत् । सदस्त्वसद्वात्मनि तद्धातुं शक्यं न वा क्वचित् ॥ ३४ ॥

loke śāstre'tha vedādau yatsiddhaṃ siddham eva tat | sadas tv asadvātmani taddhātuṃ śakyaṃ na vā kvacit || 34 ||

In the world, in the scriptures, and in the Vedas, whatever is established is indeed established. Whether it is real or unreal in the self, it cannot be removed anywhere.

लोक में, शास्त्रों में, और वेदों में, जो कुछ भी सिद्ध है वह सिद्ध ही है | चाहे वह आत्मा में सत्य हो या असत्य, उसे कहीं भी हटाया नहीं जा सकता |

7.210.35

तदेवेत्थं परिज्ञातं ब्रह्मतामुपगच्छति । यदा तेन समं विश्वं स्थितमेव विलीयते ॥ ३५ ॥

tadevetthaṃ parijñātaṃ brahmatāmupagacchati | yadā tena samaṃ viśvaṃ sthitameva vilīyate || 35 ||

That alone, thus known, attains the state of Brahman. When the universe is established in it, it dissolves into it.

वही, इस प्रकार ज्ञात, ब्रह्म की स्थिति प्राप्त करता है | जब विश्व उसमें स्थापित होता है, तो वह उसमें विलीन हो जाता है |

7.210.36

न्यायेनैतदिहोक्तेन लोकवेदादि सिध्यति । सर्वं स जीवन्मुक्तत्वमेष एवोचितस्ततः ॥ ३६ ॥

nyāyenaitadihoktena lokavedādi sidhyati | sarvaṃ sa jīvanmuktatvameṣa evocitastataḥ || 36 ||

By the logic stated here, the world, Vedas, and other things are established. All this is the state of liberation while living, and this alone is appropriate.

इस यहाँ कहे गए न्याय से लोक, वेद आदि सिद्ध होते हैं | सब कुछ यह जीवन्मुक्तत्व है, और यही उचित है |

7.210.37

परिज्ञातं चिदाकाशमपरिज्ञातपादपे । सोऽहं त्रिजगदित्येव बन्धमोक्षविनिर्णयः ॥ ३७ ॥

parijñātaṃ cidākāśamaparijñātapādape | so'haṃ trijagadityeva bandhamokṣavinirṇayaḥ || 37 ||

The known space of consciousness is in the unknowable foot. I am that, the three worlds, and the determination of bondage and liberation.

ज्ञात चेतना का आकाश अज्ञात पाद में है | मैं वही हूँ, तीनों लोक और बंधन और मुक्ति का निर्णय |

7.210.38

यथास्थितमिदं दृश्यं परिज्ञानाद्विलीयते । तज्ज्ञस्यास्तंगतस्यैव शिलामौनं तु शिष्यते ॥ ३८ ॥

yathāsthitamidaṃ dṛśyaṃ parijñānādvilīyate | tajjñasyāstagatasyeva śilāmaunaṃ tu śiṣyate || 38 ||

As it is, this visible world dissolves through knowledge. The silence of the stone is taught to the one who has attained that knowledge.

जैसा है, यह दृश्य जगत ज्ञान से विलीन हो जाता है | उस ज्ञानी को, जो उस ज्ञान में स्थित हो गया है, शिला का मौन सिखाया जाता है |

7.210.39

लोके शास्त्रे च वेदे च यत्सिद्धं सिद्धमेव तत् । संवेद्यते तदेवातस्तदेवं फलति स्फुटम् ॥ ३९ ॥

loke śāstre ca vede ca yatsiddhaṃ siddhameva tat | saṃvedyate tadevātastadevaṃ phalati sphuṭam || 39 ||

Whatever is established in the world, scriptures, and Vedas is indeed established. That is perceived, and that alone clearly bears fruit.

जो कुछ भी लोक, शास्त्र और वेदों में सिद्ध है, वही सिद्ध है | वही अनुभव किया जाता है, और वही स्पष्ट रूप से फल देता है |

7.210.40

सकलार्थनिरासेन यद्यत्संवेद्यते चिरम्। तदेव प्राप्यतेऽवश्यं सर्वत्रैवान्यभावितम्॥ ४०॥

sakalārthanirāsena yadyatsaṃvedyate ciram | tadeva prāpyate'vaśyaṃ sarvatraivānyabhāvitam || 40 ||

By the negation of all objects, whatever is perceived for a long time is certainly attained, being devoid of anything else everywhere.

सभी वस्तुओं के निराकरण से, जो कुछ भी लंबे समय तक अनुभव किया जाता है, वही अवश्य प्राप्त होता है, सब जगह अन्य किसी चीज से रहित होता है |

7.210.41

यथानुभूतं यत्तत्तत्तथा नामानुभूयते तत्सत्यमस्त्वसत्यं वा यावल्लाभं तथा नु तत्॥ ४१॥

yathānubhūtaṃ yattattattathā nāmānubhūyate tatsatyamastvaṃ vā yāvallābhaṃ tathā nu tat || 41 ||

Whatever is experienced as it is, is experienced as such. Whether it is true or false, it is so until it is realized.

जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, वह वैसे ही अनुभव किया जाता है। चाहे वह सत्य हो या असत्य, वह तब तक वैसा ही है जब तक कि उसका अनुभव नहीं होता।

7.210.42

इत्थं महाप्रश्नविचारणं ते मयेदमुक्तं मतिमन्महात्मन् अनेन गच्छाशु पथा निराधिर्निरामयो निर्व्यसनो भवोच्चैः॥ ४२॥

itthaṃ mahāpraśnavicāraṇaṃ te mayedamuktaṃ matimanmahātman anena gacchāśu pathā nirādhirnirāmayo nirvyasano bhavoccaiḥ || 42 ||

Thus, this great inquiry has been explained to you, O wise one. By this, go quickly on the path free from obstacles, free from disease, free from distress, and be exalted.

इस प्रकार, यह महान प्रश्न विचार आपको समझाया गया है, हे बुद्धिमान। इसके द्वारा, शीघ्र ही बाधाओं से मुक्त, रोगों से मुक्त, व्यसनों से मुक्त मार्ग पर चलें और उच्च हों।

Chapter 211

7.211.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । इति तत्रोपविश्याहं पूजितस्तेन भूभुजा । प्रयोजनं स्वं संपाद्य स्वर्गन्तुं गगनं प्लुतः ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | iti tatropaviśyāhaṃ pūjitastena bhūbhujā | prayojanaṃ svaṃ saṃpādya svargantuṃ gaganaṃ plutaḥ || 1 ||

Shri Vasishtha said: Having sat there, I was honored by that king. Having accomplished my purpose, I flew to heaven.

श्री वसिष्ठ ने कहा: वहाँ बैठकर, मैं उस राजा द्वारा सम्मानित हुआ। अपने उद्देश्य को पूरा करके, मैं स्वर्ग की ओर आकाश में उड़ा।

7.211.2

अद्यैतद्भवता प्रोक्तं मया मतिमतां वर । अनया सुदृशा शान्तमनाः स्वात्मा भविष्यसि ॥ २ ॥

adyaitadbhavatā proktaṃ mayā matimatāṃ vara | anayā sudṛśā śāntamanāḥ svātmā bhaviṣyasi || 2 ||

Today, this has been said by you, O best among the wise. By this vision, you will become calm-minded and self-realized.

आज, यह आपने कहा है, हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ। इस दृष्टि से, आप शान्त मन और आत्मज्ञानी बनेंगे।

7.211.3

ब्रह्मैव तदिदं सर्वं निर्नामैवामलं नभः । किमप्येवाजमाशान्तमादिमध्यान्तवर्जितम् ॥ ३ ॥

brahmaiva tadidaṃ sarvaṃ nirnāmaivāmalaṃ nabhaḥ | kimapyevājamāśāntamādimadhyāntavarjitam || 3 ||

All this is indeed Brahman, nameless, pure, and like the sky. It is eternal, peaceful, without beginning, middle, or end.

यह सब कुछ वास्तव में ब्रह्म है, नामहीन, पवित्र, और आकाश के समान। यह अनंत, शांत, आदि, मध्य और अंत से रहित है।

7.211.4

चिद्भानमात्रमित्युक्तं ब्रह्मेति कलिताभिधम् । परात्परमिति प्रोक्तं तत्तु निर्नामकं पदम् ॥ ४ ॥

cibbhānamātramityuktaṃ brahmeti kalitābhidham | parātparamiti proktaṃ tattu nirnāmakaṃ padam || 4 ||

It is said to be mere consciousness, known as Brahman, the supreme of the supreme. That indeed is the nameless state.

यह केवल चेतना कहा जाता है, जिसे ब्रह्म के रूप में जाना जाता है, सर्वोच्च का सर्वोच्च। वही नामहीन अवस्था है।

7.211.5

श्रीराम उवाच । सिद्धसाध्ययमब्रह्मविद्याधरदिवौकसाम् । ब्रह्मन्कथय दृश्यन्ते लोका लोकधराः कथम् ॥ ५ ॥

śrīrāma uvāca | siddhasādhyayamabrahma vidyādharadivaukasām | brahman kathaya dṛśyante lokā lokadharāḥ katham || 5 ||

Shri Rama said: O Brahman, tell me how the worlds and their supporters, including the perfected beings, demigods, and celestial beings, are seen.

श्री राम ने कहा: हे ब्रह्मन्, मुझे बताओ कि सिद्ध, साध्य, विद्याधर, देवता और दिव्य प्राणी सहित लोक और उनके समर्थक कैसे दिखाई देते हैं।

7.211.6

श्रीवसिष्ठ उवाच । सिद्धसाध्ययमब्रह्मविद्याधरदिवौकसाम् । अन्येषामपि भूतानामपूर्वाणां महात्मनाम् ॥ ६ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | siddhasādhyayamabrahma vidyādhara divaukasām | anyeṣāmapi bhūtānāmapūrvāṇāṃ mahātmanām || 6 ||

Vasishtha said: Among the accomplished, the aspirants, the knowers of Brahman, the celestial beings, and other great souls who have never been seen before.

वसिष्ठ ने कहा: सिद्धों, साधकों, ब्रह्मज्ञानियों, देवताओं और अन्य महात्माओं के बीच, जिन्हें पहले कभी नहीं देखा गया है।

7.211.7

प्रतिरात्रं प्रतिदिनं पुरः पश्चादुपर्यधः । पश्यस्यालोकयँल्लोकानपश्यंश्च न पश्यसि ॥ ७ ॥

pratirātraṃ pratidinaṃ puraḥ paścāduparyadhaḥ | paśyasyālokayañllokānapaśyaṃśca na paśyasi || 7 ||

Every night and every day, in front, behind, above, and below, you see and perceive the worlds, but without seeing, you do not see.

प्रति रात्रि और प्रति दिन, आगे, पीछे, ऊपर, और नीचे, आप देखते हैं और समझते हैं संसार को, लेकिन बिना देखे, आप नहीं देखते।

7.211.8

एते लोकाः किलैतेषां नाभ्यासः स्थानदूरगाः । एते संकल्पलोकाख्या व्याप्तमेभिः किलाखिलम् ॥ ८ ॥

ete lokāḥ kilaiteṣāṃ nābhyāsaḥ sthānadūragāḥ | ete saṃkalpalokākhyā vyāptamebhiḥ kilākhilam || 8 ||

These worlds are said to be not far from them, these are called the worlds of imagination, and they pervade everything.

ये लोक उनसे दूर नहीं हैं, ये कल्पना के लोक कहलाते हैं, और ये सब कुछ व्याप्त करते हैं।

7.211.9

यथैते कल्पनालोका अयं लोकस्तथैव नः । यथा काल्पनिको वातो लोकालोकास्तथैव ते ॥ ९ ॥

yathaite kalpanālokā ayaṃ lokastathaiva naḥ | yathā kālpaniko vāto lokālokāstathaiva te || 9 ||

Just as these are worlds of imagination, so is this world for us. Just as the imagined wind, so are the worlds and non-worlds.

जैसे ये कल्पना के लोक हैं, वैसे ही यह लोक हमारे लिए है। जैसे कल्पित हवा, वैसे ही लोक और अलोक हैं।

7.211.10

संकल्पस्वप्नलोका ये तव भान्ति दिवानिशम् । त एव तादृशाश्चान्ये संकल्पेन स्थिरीकृताः ॥ १० ॥

saṃkalpasvapnalokā ye tava bhānti divāniśam | ta eva tādṛśāścānye saṃkalpena sthirīkṛtāḥ || 10 ||

These worlds of imagination and dreams appear to you day and night. Those very same and other similar ones are stabilized by imagination.

ये कल्पना और स्वप्न के लोक दिन और रात आपको दिखाई देते हैं। वही और अन्य ऐसे ही लोक कल्पना से स्थिर होते हैं।

7.211.11

ध्यानेन त्वमपीतांश्चेत्स्थिरतां सुस्थिरात्मना । नयस्याशु तदेवैते स्थिरतां यान्त्यविघ्नतः ॥ ११ ॥

dhyānena tvamapītāṃścetsthiratāṃ susthirātmanā | nayasyāśu tadevaitesthiratāṃ yāntyavighnataḥ || 11 ||

If you also attain stability through meditation with a steady mind, then those will quickly attain stability without obstacles.

अगर तुम भी ध्यान से स्थिर मन से स्थिरता प्राप्त करते हो, तो वे भी बिना किसी बाधा के शीघ्र ही स्थिरता प्राप्त करेंगे।

7.211.12

यथाभिमतविस्तारा यथाभिमतसंपदः । संकल्पभाववलितो जनः पश्यति सिद्धवत् ॥ १२ ॥

yathābhimatavistārā yathābhimata saṃpadaḥ | saṃkalpabhāvavali tojanaḥ paśyati siddhavat || 12 ||

According to one's desired expansion and desired prosperity, a person influenced by determination sees success.

अपनी इच्छा के अनुसार विस्तार और समृद्धि के अनुसार, संकल्प से प्रभावित व्यक्ति सफलता देखता है।

7.211.13

किंतु ते स्थिरतां नीताः सिद्धैः स्वर्यानसंपदा । अस्थिरैर्ध्यानविश्रान्तौ तैर्दुःखैस्तदमी कृताः ॥ १३ ॥

kiṃtu te sthiratāṃ nītāḥ siddhaiḥ svar yānasampadā | asthirairdhyānaviśrāntau tairduḥkhais tadamī kṛtāḥ || 13 ||

However, those who are led to stability by the accomplished ones with their own prosperity, are made miserable by the unstable ones through the sorrows of meditation.

हालांकि, जो सिद्धों द्वारा अपनी समृद्धि से स्थिरता की ओर ले जाए जाते हैं, वे अस्थिर लोगों द्वारा ध्यान के दुःखों से दुःखी किए जाते हैं।

7.211.14

जगदप्रतिघं सर्वं शान्तचिद्व्योम सर्वदा । यथा दृढं संविदितं तथैवाभाति नान्यथा ॥ १४ ॥

jagadapratighaṃ sarvaṃ śāntacidvyoma sarvadā | yathā dṛḍhaṃ saṃviditaṃ tathaivābhāti nānyathā || 14 ||

The entire universe, which is non-resistant and always peaceful consciousness, appears exactly as it is firmly known, and not otherwise.

पूरा ब्रह्मांड, जो अवरोध रहित और हमेशा शांत चेतना है, वह उसी तरह प्रकट होता है जैसे उसे दृढ़ता से जाना जाता है, और किसी अन्य तरह से नहीं।

7.211.15

न भात्येवासंविदितमस्ति नास्ति न चोद्यता । शून्यं ह्यप्रतिघं चैतत्पराकाशमरोधकम् ॥ १५ ॥

na bhātyevāsaṃviditamasti nāsti na codyatā | śūnyaṃ hyapratighaṃ caitatparākāśamarodhakam || 15 ||

That which is not known does not appear at all, it neither exists nor does not exist, nor is it manifested. This is indeed empty, non-resistant, and the supreme sky that does not obstruct.

जो जाना नहीं गया है, वह बिलकुल नहीं दिखता, न तो वह है और न ही नहीं है, न ही वह प्रकट होता है। यह वास्तव में शून्य, अवरोध रहित, और वह परम आकाश है जो बाधा नहीं डालता।

7.211.16

चित्स्वभावतया भातं भारूपमिव दृश्यते । अस्मिंश्चिदभिमानश्च विद्यते न स्वभावतः ॥ १६ ॥

citsvabhāvatayā bhātaṃ bhārūpamiva dṛśyate | asmiṃścidabhimānaśca vidyate na svabhāvataḥ || 16 ||

The nature of consciousness appears as if it were a burden | In this, the ego does not exist inherently || 16 ||

चेतना का स्वभाव एक बोझ की तरह दिखता है | इसमें, अहंकार स्वभाविक रूप से नहीं होता || १६ ||

7.211.17

कार्यकारणभावाच्चेत्कथैवात्र न विद्यते । व्योम्नोऽनन्तस्य सिद्धस्य किं कथं किल जायते ॥ १७ ॥

kāryakāraṇabhāvāccetkathaivātra na vidyate | vyomno'nantasya siddhasya kiṃ kathaṃ kila jāyate || 17 ||

If it is due to the cause-effect relationship, how can it not exist here? | What and how does the infinite and established space arise? || 17 ||

यदि यह कारण-कार्य संबंध के कारण है, तो यहां यह कैसे नहीं हो सकता? | अनंत और स्थापित आकाश कैसे और कैसे उत्पन्न होता है? || १७ ||

7.211.18

यच्च जातमिवाभाति व्योम्नि व्योमैव तत्तथा । तत्रैकद्वित्वकलना कीदृशी स्यादरूपिणी ॥ १८ ॥

yaccajātamivābhāti vyomni vyomaiva tattathā | tatraikadvitvakalanā kīdṛśī syādarūpiṇī || 18 ||

That which appears as if born in space is indeed space itself | How can there be a calculation of oneness or duality there? || 18 ||

जो आकाश में जन्मा हुआ प्रतीत होता है, वह वास्तव में आकाश ही है | वहां एकत्व या द्वैतता की गणना कैसे हो सकती है? || १८ ||

7.211.19

तद्धि यादृशमेवासीत्तादृगेवावतिष्ठते । निर्विकारं यथा स्वप्ने व्योमैवाचलवद्भवेत् ॥ १९ ॥

taddhi yādṛśamevāsīttādṛgevāvatiṣṭhate | nirvikāraṃ yathā svapne vyomaiva acalavadbhave || 19 ||

That indeed remains as it was, unchanged | Just as in a dream, space remains steady and unchanging || 19 ||

वह वैसा ही रहता है जैसा कि वह था, अपरिवर्तित | जैसे सपने में, आकाश स्थिर और अपरिवर्तित रहता है || १९ ||

7.211.20

संकल्पे चित्तमाकारं यथोदेत्यद्रिलीलया । न च सोऽद्रिर्न तद्व्योम तथा ब्रह्म जगत्स्थितिः ॥ २० ॥

saṃkalpe cittamākāraṃ yathodetyadrilīlayā | na ca so'drirna tadvyoma tathā brahma jagatsthitiḥ || 20 ||

In imagination, the mind takes the form, as it arises like a mountain in play | But that is not a real mountain, nor is it space | Similarly, Brahman is the stability of the world || 20 ||

कल्पना में, मन एक रूप लेता है, जैसे खेल में एक पहाड़ उठता है | लेकिन वह असली पहाड़ नहीं है, न ही वह आकाश है | इसी तरह, ब्रह्म दुनिया की स्थिरता है || २० ||

7.211.21

काष्ठवन्मौनमास्थाय रटन्तोऽपि महाधियः । इह व्यवहरन्त्येते बुधा दारुनरा इव ॥ २१ ॥

kāṣṭhavanmounamāsthāya raṭanto'pi mahādhiyaḥ | iha vyavaharantyete budhā dārunarā iva || 21 ||

Those who are wise, even though they engage in worldly activities, remain silent like a piece of wood. They behave in this world like wooden men.

जो लोग बुद्धिमान हैं, वे इस दुनिया में लकड़ी के मनुष्यों की तरह मौन रहते हैं, भले ही वे दुनियावी गतिविधियों में लगे हों।

7.211.22

यथा वारिणि वर्तन्ते तरङ्गावर्तवृत्तयः । अनन्याः परिवर्तन्ते तथा ब्रह्मणि सृष्टयः ॥ २२ ॥

yathā vāriṇi vartante taraṅgāvartavṛttayaḥ | ananyāḥ parivartante tathā brahmaṇi sṛṣṭayaḥ || 22 ||

Just as waves and whirlpools exist in water, similarly, creations exist in Brahman, inseparable from it.

जैसे पानी में लहरें और भंवर होते हैं, वैसे ही ब्रह्म में सृष्टियाँ होती हैं, जो उससे अलग नहीं होतीं।

7.211.23

यथा वायौ परिस्पन्दा यथा व्योमनि शून्यता। अनन्याश्चाप्यमूर्ताश्च तथा ब्रह्मणि सृष्टयः ॥ २३ ॥

yathā vāyau parispandā yathā vyomani śūnyatā | ananyāścāpyamūrtāśca tathā brahmaṇi sṛṣṭayaḥ || 23 ||

Just as vibrations exist in the air and emptiness in the sky, similarly, creations exist in Brahman, inseparable and formless.

जैसे हवा में कंपन होते हैं और आकाश में शून्यता होती है, वैसे ही ब्रह्म में सृष्टियाँ होती हैं, जो अलग नहीं होतीं और निराकार होती हैं।

7.211.24

यथा संकल्पनगरं शून्यमेव पुरं स्थितम्। साकारमप्यनाकारं ब्रह्मणीदं तथा जगत् ॥ २४ ॥

yathā saṅkalpanagaraṃ śūnyameva puraṃ sthitam | sākāramapyanākāraṃ brahmaṇīdaṃ tathā jagat || 24 ||

Just as an imagined city is empty yet appears to have form, similarly, this world in Brahman is formless yet appears to have form.

जैसे कल्पना की नगरी खाली होती है पर रूप लगता है, वैसे ही ब्रह्म में यह जगत निराकार है पर रूप लगता है।

7.211.25

चिरानुभूतमप्यर्थकार्यपीदं जगत्त्रयम्। शून्यमेव निराकारं संकल्पनगरं यथा ॥ २५ ॥

cirānubhūtamapyarthakāryapīdaṃ jagattrayam | śūnyameva nirākāraṃ saṅkalpanagaraṃ yathā || 25 ||

Even though this world of three realms has been experienced for a long time, it is empty and formless, like an imagined city.

यह तीनों लोकों का जगत चाहे लंबे समय से अनुभव किया जाता रहा हो, फिर भी यह खाली और निराकार है, जैसे कल्पना की नगरी।

7.211.26

यदेव चित्तसंकल्पस्तदेव नगरं यथा। तदा तथायं ब्रह्माच्छं तदेव जगदुच्यते ॥ २६ ॥

yadeva cittasaṃkalpastadeva nagaraṃ yathā | tadā tathāyaṃ brahmācchaṃ tadeva jagaducyate || 26 ||

Whatever is the intention of the mind, that becomes the city, just as that, this Brahman is said to be the world.

जो भी मन का संकल्प है, वही नगर है, जैसे वही, यह ब्रह्म वही जगत कहलाता है।

7.211.27

चिरं नित्यानुभूतोऽपि जगदर्थो न किंचन। विद्यते पुरुषस्येह स्वप्ने स्वमरणं यथा ॥ २७ ॥

ciraṃ nityānubhūto'pi jagadartho na kiṃcana | vidyate puruṣasyeha svapne svamaraṇaṃ yathā || 27 ||

Even though the world is experienced continuously, it is nothing. Just as in a dream, one's own death is seen.

यद्यपि जगत निरंतर अनुभव किया जाता है, फिर भी यह कुछ नहीं है। जैसे स्वप्न में अपनी मृत्यु देखी जाती है।

7.211.28

स्वप्ने पुंसा मृतेनापि स्वदाहो दृश्यते यथा। असदेव सदाभासं जगद्दृष्टं परे तथा ॥ २८ ॥

svapne puṃsā mṛtenāpi svadāho dṛśyate yathā | asadeva sadābhāsaṃ jagaddṛṣṭaṃ pare tathā || 28 ||

Just as in a dream, even when a person dies, their own burning is seen. Similarly, the world seen in the supreme is an illusion, appearing as real.

जैसे स्वप्न में, यदि कोई व्यक्ति मर जाता है, तो उसका दाह दिखाई देता है। इसी प्रकार, परम में देखा गया जगत एक भ्रम है, जो सत्य के रूप में प्रकट होता है।

7.211.29

जगत्ता चाजगत्ता च परस्यैवामलं वपुः । पराभिधानं च परं न च सत्परमार्थतः ॥ २९ ॥

jagattā cājagattā ca parasyaivāmalaṃ vapuḥ | parābhidhānaṃ ca paraṃ na ca satparamārthataḥ || 29 ||

Both the existence and non-existence of the world are the pure form of the supreme. The supreme is beyond description and is not the ultimate reality.

जगत का अस्तित्व और अनस्तित्व दोनों परम का शुद्ध रूप हैं। परम वर्णन से परे है और परम सत्य नहीं है।

7.211.30

इत्थमस्तु यदि वान्यथास्तु वा मैव भूद्भवतु कोऽत्र संभ्रमः । मुञ्च फल्गुनि फले फलग्रहं बुद्धवानसि कृतं परिश्रमैः ॥ ३० ॥

itthamastu yadi vānyathāstu vā maiva bhūdbhavatu ko'tra saṃbharamaḥ | muñca phalguni phale phalagrahaṃ buddhvānasi kṛtaṃ pariśramaiḥ || 30 ||

Let it be so, or let it be otherwise, let it not be or let it be. What is the confusion here? O Arjuna, give up the attachment to the fruits of actions, you are wise, having done the efforts.

ऐसा हो या कुछ और हो, न हो या हो, यहाँ क्या भ्रम है? हे अर्जुन, कर्मों के फलों की आसक्ति को त्याग दो, तुम बुद्धिमान हो, प्रयास कर चुके हो।

Chapter 212

7.212.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । चित्त्वाद्ब्रह्मखमेवाहमिति वेत्तीव यस्त्वयम् । तदेव परमेष्ठित्वं तस्योदरमिदं जगत् ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | cittvād brahmakhamevāhamiti vettīva yastvayaṃ | tadeva parameṣṭhitvaṃ tasyodaramidaṃ jagat || 1 ||

Vasishtha said: The one who knows 'I am the pure consciousness of Brahman' attains the highest state, and this universe is within him.

वसिष्ठ ने कहा: जो जानता है कि 'मैं ब्रह्म की शुद्ध चेतना हूँ', वह परम स्थिति को प्राप्त करता है, और यह ब्रह्माण्ड उसके अन्दर है।

7.212.2

एवं स्थिते न च ब्रह्मा न च जातं जगत्स्थितम् । स्थितं यथास्थितमजं परं ब्रह्मैव पूर्ववत् ॥ २ ॥

evaṃ sthite na ca brahmā na ca jātaṃ jagatsthitam | sthitaṃ yathāsthitamajaṃ paraṃ brahmaiva pūrvavat || 2 ||

Thus situated, there is neither Brahma nor the created universe. Everything remains as it is, unborn and eternal, just as the supreme Brahman.

इस प्रकार स्थिति में, न तो ब्रह्मा है और न ही सृष्टि का जगत्। सब कुछ जैसा है वैसा ही रहता है, अजन्मा और अनन्त, जैसे परम ब्रह्म।

7.212.3

संवित्तौ तु जगद्रूपं भासतेऽप्येवमेव तत् । मृगतृष्णेव मिथ्यैव दृश्यमानमपि त्वसत् ॥ ३ ॥

saṃvittau tu jagadrūpaṃ bhāsate'pyevameva tat | mṛgatṛṣṇeva mithyaiva dṛśyamānamapi tvasat || 3 ||

In consciousness, the form of the universe appears thus, but it is illusory like a mirage, even though it is perceived, it is unreal.

चेतना में, ब्रह्माण्ड का रूप ऐसे ही प्रकट होता है, लेकिन यह मृगतृष्णा की तरह भ्रामक है, भले ही यह दिखाई देता है, यह असत्य है।

7.212.4

अतःप्रभृति शून्येयं भ्रान्तिरभ्युदिता नवा । कुतः केव किल भ्रान्तिर्ब्रह्मैव तदनामयम् ॥ ४ ॥

ataḥprabhṛti śūnyeyaṃ bhrāntirabhyuditā navā | kutaḥ keva kila bhrāntirbrahmaiva tadanāmayam || 4 ||

From this point onwards, this illusion arises as emptiness. Wherefrom indeed is this illusion? It is Brahman itself, free from any defect.

इसके बाद से, यह भ्रम शून्यता के रूप में उत्पन्न होता है। कहाँ से है यह भ्रम? यह ब्रह्म ही है, जो किसी दोष से मुक्त है।

7.212.5

जगद्ब्रह्मजलावर्तो द्वित्वैकत्वे किलात्र के । क्वावर्तपयसोर्द्वित्वं द्वित्वाभावात्क्व चैकता ॥ ५ ॥

jagadbrahmajalāvarto dvitvaikatve kilātra ke | kvāvartapayasordvitvaṃ dvitvābhāvātkva caikatā || 5 ||

The universe and Brahman are like a whirlpool in water. Where is the duality or unity here? Where is the duality in the whirlpool and water? Due to the absence of duality, where is the unity?

ब्रह्माण्ड और ब्रह्म पानी में भँवर की तरह हैं। यहाँ द्वैत या अद्वैत कहाँ है? भँवर और पानी में द्वैत कहाँ है? द्वैत के अभाव में, अद्वैत कहाँ है?

7.212.6

तद्ब्रह्म घनमाशान्तं चित्त्वाच्चेतत्यहं विदत्। निजं शून्यत्वमन्तस्थं व्योमेव विततान्तरम्॥ ६॥

tadbrahma ghanamāśāntaṃ cittvāccetatyahaṃ vidat| nijaṃ śūnyatvamantasthaṃ vyomeva vitatāntaram || 6 ||

That Brahman is dense, peaceful, and conscious; I know it as the self. Its inherent emptiness is like the expansive sky.

वह ब्रह्म घना, शान्त और चेतन है; मैं उसे आत्मा के रूप में जानता हूँ। उसकी अन्तर्निहित शून्यता व्यापक आकाश की तरह है।

7.212.7

पवनः स्पन्दनमिव हुताशन इवोष्णताम्। स्वशैत्यमिव पूर्णेन्दुः सत्तामर्थ इवात्मनः॥ ७॥

pavanaḥ spandanamiva hutāśana ivouṣṇatām| svaśaitynamiva pūrṇenduḥ sattāmartha ivātmanaḥ || 7 ||

Like the wind causes vibration, fire causes heat, the full moon causes coolness, the self (ātman) causes existence.

जैसे हवा कम्पन पैदा करती है, अग्नि गर्मी पैदा करती है, पूर्ण चन्द्रमा ठंडक पैदा करता है, वैसे ही आत्मा अस्तित्व पैदा करता है।

7.212.8

श्रीराम उवाच। एतद्ब्रह्मन्कदा नाम तन्न चेतितवन्मुने। निरावृतमनाद्यन्तं किमिदानीं प्रचेतति॥ ८॥

śrīrāma uvāca| etadbrahmannkadā nāma tann na cetitavanmune| nirāvṛtamanādyantaṃ kimidānīṃ pracetati || 8 ||

Sri Rama said: O sage, when did this Brahman, which is without beginning or end, become conscious? Why does it think now?

श्री राम ने कहा: हे मुनि, यह ब्रह्म, जो अनादि और अनन्त है, कब चेतन हुआ? यह अब क्यों सोचता है?

7.212.9

श्रीवसिष्ठ उवाच। एवमेतत्सदैवैतदहमाद्यपि चेतति। न ह्यनादेरजस्यास्य काप्यपेक्षा स्वसंविदा॥ ९॥

śrīvasiṣṭha uvāca| evametatsadaivaitadahamādyapi cetati| na hyanāderajasyāsya kāpyapekṣā svasaṃvidā || 9 ||

Sri Vasistha said: Indeed, this Brahman always exists and is always conscious. There is no dependence on anything for its self-awareness.

श्री वसिष्ठ ने कहा: निश्चय ही, यह ब्रह्म हमेशा मौजूद है और हमेशा चेतन है। इसकी आत्म-चेतना के लिए किसी चीज पर निर्भरता नहीं है।

7.212.10

सर्गासर्गनभोरूपं ब्रह्म सर्वत्र सर्वदा। न कदाचिदिदं नेदं ज्ञातं नेदं च किंचन॥ १०॥

sargāsarganabhorūpaṃ brahma sarvatra sarvadā| na kadācididaṃ nedaṃ jñātaṃ nedaṃ ca kiṃcana || 10 ||

Brahman, which is the form of creation and dissolution, is everywhere and always. It is never known as 'this' or 'that', nor is it anything specific.

ब्रह्म, जो सृष्टि और विनाश का रूप है, हर जगह और हमेशा है। यह कभी 'यह' या 'वह' के रूप में जाना नहीं जाता, न ही यह कुछ विशेष है।

7.212.11

पवनस्पन्दनं चन्द्रशैत्यं शून्यत्वमम्बरम्। ब्रह्माहंत्वमनन्यात्म न कदाचिन्न चेतति॥ ११॥

pavanaspaṇḍanaṃ candraśaityaṃ śūnyatvamambaram | brahmāhaṃtvamananyātma na kadācinnaca cetati || 11 ||

The movement of the wind, the coolness of the moon, the emptiness of the sky, the realization of 'I am Brahman,' the non-dual self, never at any time, does not think.

हवा का चलना, चंद्रमा की ठंडक, आकाश की शून्यता, 'मैं ब्रह्म हूँ' का बोध, अद्वैत आत्मा, कभी भी, नहीं सोचता।

7.212.12

सर्वदैवेदृशी सत्ता न कदाचिदनीदृशी । जगद्यस्मादनाद्यन्तं ब्रह्मात्मैव निरामयम् ॥ १२ ॥

sarvaivaivedṛśī sattā na kadācidanīdṛśī | jagadyasmādanādyantaṃ brahmātmaiva nirāmayam || 12 ||

The eternal reality is always the same, never different. The universe, which is beginningless and endless, is indeed the flawless Brahman.

नित्य सत्ता हमेशा वैसी ही है, कभी भी अलग नहीं होती। जो अनादि और अनन्त है, वह ब्रह्म ही है, जो दोषरहित है।

7.212.13

केवलं त्वमबुद्धत्वाच्छब्दश्रवणवेधितः । अद्वये ब्रह्मबोधेऽस्मिन्द्वितामभ्युपगच्छसि ॥ १३ ॥

kevalaṃ tvamabuddhatvācchabdaśravaṇavedhitaḥ | advaye brahma bodhe'smin dvitāmabhyupagacchasi || 13 ||

Due to ignorance, you are deluded by hearing words. In this non-dual realization of Brahman, you accept duality.

अज्ञान के कारण, आप शब्दों को सुनकर भ्रमित हो जाते हैं। इस अद्वैत ब्रह्म बोध में, आप द्वैत को स्वीकार करते हैं।

7.212.14

न कश्चित्किंचिदेवेह न कदाचिन्न चेतति । न कश्चिच्च तदन्यात्मा न कदाचिच्च चेतति ॥ १४ ॥

na kaścitkiṃcideveha na kadācinnaca cetati | na kaścicca tadanyātmā na kadācicca cetati || 14 ||

No one thinks anything here at any time. No one different from that ever thinks at any time.

यहाँ कोई भी कभी भी कुछ नहीं सोचता। उससे अलग कोई भी कभी भी कुछ नहीं सोचता।

7.212.15

इदं त्रिभुवनाभासमीदृशं भाति सर्वदा । शान्तं राम समं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन ॥ १५ ॥

idaṃ tribhuvanābhāsamīdṛśaṃ bhāti sarvadā | śāntaṃ rāma samaṃ brahma neha nānāsti kiṃcana || 15 ||

This three-world appearance always shines in this way. Peaceful, equal Brahman, here there is no diversity at all.

यह तीनों लोकों का प्रकाश हमेशा इस तरह चमकता है। शान्त, समान ब्रह्म, यहाँ कोई विविधता नहीं है।

7.212.16

न कदाचन जायन्ते नभसः पादपाद्रयः । ब्रह्मणश्च जयन्तीति मत्वा शान्तिं परां व्रज ॥ १६ ॥

na kadācana jāyante nabhasaḥ pādapādrayaḥ | brahmaṇaśca jayantīti matvā śāntiṃ parāṃ vraja || 16 ||

Never do trees grow in the sky | Knowing that Brahman is victorious, attain supreme peace || 16 ||

कभी भी आकाश में पेड़ नहीं उगते | ब्रह्म की विजय मानकर परम शान्ति प्राप्त करो || १६ ||

7.212.17

उपदेश्योपदेशार्थं संदेहावसरेऽल्पधीः । यावन्न बुद्धस्तावत्त्वं भेदमभ्युपगच्छसि ॥ १७ ॥

upadeśyopadeśārthaṃ saṃdehāvasare'lpadhīḥ | yāvanna buddhas tāvattvaṃ bhedam abhyupagacchasi || 17 ||

For the sake of instruction, in the opportunity of doubt, the less intelligent | Until you are not enlightened, you accept duality || 17 ||

उपदेश के लिए, संदेह के अवसर पर, कम बुद्धिमान | जब तक आप बुद्ध नहीं हैं, तब तक आप द्वैत को स्वीकार करते हैं || १७ ||

7.212.18

बोधस्य तु विबुद्धस्य न शास्त्रादि न शब्दधीः । न भेदबुद्धिर्नो भेदः किमप्येष प्रजापतेः ॥ १८ ॥

bodhasya tu vibuddhasya na śāstrādi na śabdadhīḥ | na bhedabuddhir no bhedaḥ kim apyeṣa prajāpateḥ || 18 ||

But for the enlightened one, there is no scripture, no sound, no duality, no difference | What is this of the Lord of creatures? || 18 ||

परन्तु ज्ञानी के लिए, न शास्त्र है, न शब्द है, न द्वैत है, न भेद है | प्रजापति का यह क्या है? || १८ ||

7.212.19

श्रीराम उवाच । बुद्धमेतन्मया ब्रह्मन्प्रकृतं तदुदाहर । वचो मदवबोधार्थं यदुदाहृतवानसि ॥ १९ ॥

śrīrāma uvāca | buddham etan mayā brahman prakṛtaṃ tad udāhara | vaco madavabodhārthaṃ yad udāhṛtavān asi || 19 ||

Sri Rama said | I have understood this, O Brahman, explain that original | The words you have spoken for my enlightenment || 19 ||

श्री राम ने कहा | मैंने यह समझ लिया है, हे ब्रह्मन्, उस मूल को बताओ | जो शब्द आपने मेरे ज्ञान के लिए कहे हैं || १९ ||

7.212.20

किं तस्मिंश्चेतितेऽहंत्वे पदे संपद्यते परे । बुद्धवानसि शुश्रूषुर्नाहं तृप्तिमुपैमि हि ॥ २० ॥

kiṃ tasmins cetite'haṃtve pade saṃpadyate pare | buddhvān asi śuśrūṣur nāhaṃ tṛptim upaimi hi || 20 ||

What happens in that state of 'I-ness'? What is attained in the supreme state? You are enlightened and eager to listen, but I am not satisfied || 20 ||

उस 'मैं' पद में क्या होता है? परम अवस्था में क्या प्राप्त होता है? आप ज्ञानी और सुनने के इच्छुक हैं, पर मैं संतुष्ट नहीं हूँ || २० ||

7.212.21

श्रीवसिष्ठ उवाच । अहंत्वे सत्यथैतस्मिन्व्योमसत्ता प्रवर्तते । दिक्सत्ता कालसत्ता च भेदसत्ताभ्युदेति च ॥ २१ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | ahaṃtve satyathaitasminvyomasattā pravartate | diksattā kālasattā ca bhedasattābhyudeti ca || 21 ||

Sri Vasishtha said: When the sense of 'I' arises, the existence of space, direction, time, and differentiation manifests.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जब 'मैं' का भाव उत्पन्न होता है, तब आकाश, दिशा, काल और भेद की सत्ता प्रकट होती है।

7.212.22

यदा किलेहाहमिति तदा नात्राहमित्यपि । भातीत्युदेति नाना खे स्वात्मैव द्वैतमक्रमम् ॥ २२ ॥

yadā kilehāhamiti tadā nātrāhamityapi | bhātītyudeti nānā khe svātmaiva dvaitamakramam || 22 ||

When one thinks 'I am this,' then there is no 'I' here either. Various forms appear in the sky, which is the self itself, without duality.

जब कोई सोचता है 'मैं यह हूँ,' तब यहाँ भी 'मैं' नहीं है। आकाश में विभिन्न रूप प्रकट होते हैं, जो स्वयं ही है, द्वैत के बिना।

7.212.23

व्योमात्मिकानामेतासां सत्तानामभिधानधीः । भविष्यत्युत्तरं कालं तदा त्वाकाशमेव तत् ॥ २३ ॥

vyomātmikānāmetāsāṃ sattānāmabhidhānadhīḥ | bhaviṣyatyuttaraṃ kālaṃ tadā tvākāśameva tat || 23 ||

The understanding of the existence of these entities, which are of the nature of space, will occur in the future. Then, that will be space itself.

इन सत्ताओं के स्वभाव को समझना, जो आकाश के स्वभाव की हैं, भविष्य में होगा। तब, वह आकाश ही होगा।

7.212.24

एतस्मिन्परिसंपन्ने दिक्कालकलनात्मनि । अहंभावे निराकारे व्योम तन्मात्रवेदिनि ॥ २४ ॥

etasminparisaṃpanne dikkālakalanātmani | ahaṃbhāve nirākāre vyoma tanmātravedini || 24 ||

In this complete state, which is the essence of direction, time, and calculation, in the formless sense of 'I,' space is the knower of that essence.

इस पूर्ण अवस्था में, जो दिशा, काल और गणना का सार है, निराकार 'मैं' के भाव में, आकाश उस सार का ज्ञाता है।

7.212.25

इदमाभाति भारूपं वेदनं दृश्यनाम यत् । भूत्वा ब्रह्मैव निर्बाधमब्रह्मेव विराजते ॥ २५ ॥

idamābhāti bhārūpaṃ vedaṇaṃ dṛśyanāma yat | bhūtvā brahmaiva nirbādhamabrahmeve virājate || 25 ||

This appears as the form of the universe, known as perception, named the visible. Having become Brahman, it shines without obstruction, even in the non-Brahman.

यह ब्रह्मांड के रूप में प्रकट होता है, जिसे अनुभूति कहते हैं, दृश्य नाम से जाना जाता है। ब्रह्म बनकर, यह बाधा के बिना चमकता है, अब्रह्म में भी।

7.212.26

ब्रह्मैव शान्तमजमेकमनादिमध्यं व्योमैव जीवकलनामिव भावयित्वा । व्योम्येव पश्यति निरावरणे विसारि दृश्यं स्वरूपमपि चान्यदिवाऽऽत्मवित्त्वात् ॥ २६ ॥

brahmaiva śāntamajamekamanādimadhyaṃ vyomaiva jīvakalanāmiva bhāvayitvā | vyomnyeva paśyati nirāvaraṇe visāri dṛśyaṃ svarūpamapi cānyadivā'tmavittvāt || 26 ||

Brahman alone is peaceful, unborn, one without beginning or end, like the sky, imagining the individual souls as particles. In the sky, it sees the visible form, even another, as if it were the self, due to the knowledge of the self.

ब्रह्म ही शान्त, अजन्मा, एक, अनादि, अनंत है, आकाश की तरह, जीवों को कणों की तरह कल्पना करता है | आकाश में ही वह देखता है, बाधारहित, व्यापक, दृश्य स्वरूप, यहां तक कि दूसरा भी, जैसे आत्मा का ज्ञान हो |

Chapter 213

7.213.1

श्रीवसिष्ठ उवाच । यथा यत्पृष्टवानद्य त्वं मामरिनिषूदन । शिष्येणैव सता पूर्वमहं पृष्टो गुरुस्त्वया ॥ १ ॥

śrīvasiṣṭha uvāca | yathā yatpṛṣṭavānadya tvaṃ māmari niṣūdana | śiṣyeṇaiva satā pūrvamahaṃ pṛṣṭo gurustvayā || 1 ||

Sri Vasishtha said: Just as you have asked me today, O destroyer of enemies, I was asked by you, the same disciple, in the past.

श्री वसिष्ठ ने कहा: जैसे आज तुमने मुझसे पूछा है, हे शत्रुनाशक, वैसे ही पहले भी तुमने शिष्य के रूप में मुझसे पूछा था।

7.213.2

पुराकल्पे हि कस्मिंश्चित्तत्त्वमात्मादिकात्मिका । आसीदियं चित्प्रतिभा गुरुशिष्यात्मना वने ॥ २ ॥

purākalpe hi kasmiṃścittattvamātmādikātmikā | āsīdiyaṃ citpratibhā guruśiṣyātmanā vane || 2 ||

In some ancient era, this divine consciousness, which is the essence of the self and other principles, existed in the form of guru and disciple in the forest.

किसी प्राचीन कल्प में, यह दिव्य चेतना, जो आत्मा और अन्य तत्वों का सार है, गुरु और शिष्य के रूप में वन में विद्यमान थी।

7.213.3

गुरुस्तत्राहमभवं शिष्यस्त्वमभवस्तदा । पृष्टवान्मां त्वमग्रस्थ इदमुद्दामधीरधीः ॥ ३ ॥

gurustatrāhamabhavaṃ śiṣyastvamabhavastadā | pṛṣṭavānmāṃ tvamagrastha idamuddāmadhīradhīḥ || 3 ||

There, I was the guru, and you were the disciple. You, being at the forefront, asked me this with great intelligence.

वहाँ, मैं गुरु था और तुम शिष्य थे। तुम, अग्रस्थ होकर, मुझसे इस प्रश्न को बड़ी बुद्धिमत्ता से पूछा था।

7.213.4

शिष्य उवाच । सर्वस्य भगवञ्छिन्धि ममेममतिसंशयम् । किं नश्यति महाकल्पे किं वस्तु न विनश्यति ॥ ४ ॥

śiṣya uvāca | sarvasya bhagavañchindhi mamemamatisaṅśayam | kiṃ naśyati mahākalpe kiṃ vastu na vinaśyati || 4 ||

The disciple said: O Lord, please dispel all my doubts. What perishes in the great cycle, and what does not perish?

शिष्य ने कहा: हे भगवन्, मेरे सभी संदेहों को दूर करें। महाकल्प में क्या नष्ट होता है और क्या नहीं नष्ट होता?

7.213.5

गुरुरुवाच । पुत्र शेषमशेषेण दृश्यमाशु विनश्यति । यथा तथा स्वप्नपुरं सौषुप्तीं स्थितिमीयुषः ॥ ५ ॥

gururuvāca | putra śeṣamaśeṣeṇa dṛśyamāśu vinaśyati | yathā tathā svapnapuraṃ sauṣuptīṃ sthitimīyuṣaḥ || 5 ||

The guru said: O son, everything that is seen perishes quickly. Just as a dream city vanishes upon waking.

गुरु ने कहा: हे पुत्र, जो कुछ भी दिखाई देता है वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। जैसे स्वप्न का नगर जागने पर लुप्त हो जाता है।

7.213.6

निर्विशेषेण नश्यन्ति भुवः शैला दिशो दश । क्रिया कालः क्रमश्चैव न किंचिदवशिष्यते ॥ ६ ॥

nirviśeṣeṇa naśyanti bhuvaḥ śailā diśo daśa | kriyā kālaḥ kramascaiava na kiñcidavaśiṣyate || 6 ||

Without distinction, the earth, mountains, and the ten directions will perish | Action, time, and sequence will not remain.

बिना किसी भेदभाव के, पृथ्वी, पर्वत और दस दिशाएँ नष्ट हो जाएँगी | क्रिया, समय और क्रम कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

7.213.7

नश्यन्ति सर्वभूतानि व्योमापि परिणश्यति । स सर्वजगदाभासमुपलब्धुरसंभवात् ॥ ७ ॥

naśyanti sarvabhūtāni vyomāpi pariṇaśyati | sa sarvajagadābhāsamupalabdhurasaṃbhavaat || 7 ||

All beings perish, even the sky will be destroyed | That which perceives the entire universe is impossible to grasp.

सभी प्राणी नष्ट हो जाते हैं, Even आकाश भी नष्ट हो जाएगा | जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड को ग्रहण करता है, उसे समझना असंभव है।

7.213.8

ब्रह्मविष्ण्विन्द्ररुद्राद्या ये हि कारणकारणम् । तेषामप्यतिकल्पान्ते नामापीह न विद्यते ॥ ८ ॥

brahmaviṣṇvindrarudrādyā ye hi kāraṇakāraṇam | teṣāmapyatikalpānte nāmāpīha na vidyate || 8 ||

Even the great gods like Brahma, Vishnu, Indra, and Rudra, who are the causes of causes, will not have their names at the end of the great cycle.

Even ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र और रुद्र जैसे महान देवता, जो कारणों के कारण हैं, महाकल्प के अंत में अपने नाम नहीं रखेंगे।

7.213.9

शिष्यते हि चिदाकाशमव्ययस्यानुमीयते । तत्कालशेषतानेन सर्गानुभवहेतुना ॥ ९ ॥

śiṣyate hi cidākāśamavyayasyānumīyate | tatkālaśeṣatānena sargānubhavahētunā || 9 ||

The eternal consciousness remains, it is inferred | By the cause of creation and experience, which is the remnant of time.

अव्यय चेतना शेष रहती है, यह अनुमान लगाया जाता है | सृष्टि और अनुभव के कारण से, जो समय का शेष है।

7.213.10

शिष्य उवाच । नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः । इदं तत्कथमाभोगि विद्यमानं क्व गच्छति ॥ १० ॥

śiṣya uvāca | nāsato vidyate bhāvo nābhāvo vidyate sataḥ | idaṃ tatkathamābhogi vidyamānaṃ kv gacchati || 10 ||

The disciple said, 'There is no existence of the non-existent, nor is there non-existence of the existent | How then does this existent thing disappear?'

शिष्य ने कहा, 'असत् का कोई अस्तित्व नहीं है, न ही सत् का कोई अस्तित्व नहीं है | फिर यह मौजूद चीज कहाँ चली जाती है?'

7.213.11

गुरुरुवाच । न विनश्यत एवेदं ततः पुत्र न विद्यते । नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ॥ ११ ॥

gururuvāca | na vinaśyata evedaṃ tataḥ putra na vidyate | nāsato vidyate bhāvo nābhāvo vidyate sataḥ || 11 ||

The Guru said: This does not perish, therefore, O son, it does not exist | There is no existence of non-existence, nor is there non-existence of existence.

गुरु ने कहा: यह नष्ट नहीं होता, इसलिए, हे पुत्र, यह अस्तित्व में नहीं है | असत् का कोई अस्तित्व नहीं है, न ही सत् का कोई अभाव है।

7.213.12

यत्तु वस्तुत एवास्ति न कदाचन किंचन। तदभावात्म तद्राम कथं नाम विनश्यति ॥ १२ ॥

yattu vastuta evāsti na kadācana kiṃcana | tadabhāvātma tadrāma kathaṃ nāma vinaśyati || 12 ||

That which truly exists, never at any time ceases to be | O Rama, how can that which is of the nature of non-existence perish?

जो वास्तव में है, वह कभी भी किसी भी समय नहीं छूटता | हे राम, जो अस्तित्व के स्वभाव का है, वह कैसे नष्ट हो सकता है?

7.213.13

क्व स्थितं मृगतृष्णाम्बु क्व स्थिरो द्वीन्दुविभ्रमः। क्व स्थिरा केशदृग्व्योम्नि क्व भ्रान्त्यनुभवः स्थिरः ॥ १३ ॥

kva sthitaṃ mṛgatṛṣṇāmbu kva sthiro dvīnduvibhramaḥ | kva sthirā keśadṛgvyomni kva bhrāntyanubhavaḥ sthiraḥ || 13 ||

Where is the mirage water stable? Where is the stability in the illusion of the moon? Where is the stability in the vision of hair in the sky? Where is the stability in the experience of delusion?

मृगतृष्णा के जल की स्थिरता कहाँ है? चंद्रमा के भ्रम में स्थिरता कहाँ है? आकाश में बालों की दृष्टि में स्थिरता कहाँ है? भ्रांति के अनुभव में स्थिरता कहाँ है?

7.213.14

सर्वं दृश्यमिदं पुत्र भ्रान्तिमात्रमसन्मयम्। स्वप्ने पुरमिवाभाति कथमेतन्न शाम्यति ॥ १४ ॥

sarvaṃ dṛśyamidaṃ putra bhrāntimātramasantam | svapne puramivābhāti kathametanna śāmyati || 14 ||

All this visible world, O son, is merely an illusion, unreal | Like a city seen in a dream, how does it not cease?

हे पुत्र, यह सारा दृश्य जगत केवल एक भ्रांति है, असत्य | जैसे स्वप्न में देखी गई नगरी, यह कैसे नहीं समाप्त होता?

7.213.15

शाम्यतीदमशेषेण तथा सर्वत्र सर्वदा। यथा जाग्रद्विधौ स्वप्नः स्वप्ने वा जागरो यथा ॥ १५ ॥

śāmyatīdam aśeṣeṇa tathā sarvatra sarvadā | yathā jāgradvidhau svapnaḥ svapne vā jāgaro yathā || 15 ||

This ceases entirely, thus everywhere and always | Just as a dream ceases upon waking, or waking in a dream.

यह पूरी तरह से समाप्त होता है, इसलिए हर जगह और हमेशा | जैसे स्वप्न जागने पर समाप्त होता है, या स्वप्न में जागना।

7.213.16

यथा स्वप्नपुरं शान्तं न जाने क्वाशु गच्छति। शान्तं तथा जगद्दृश्यं न जाने क्वाशु गच्छति ॥ १६ ॥

yathā svapnapuraṃ śāntaṃ na jāne kvāśu gacchati | śāntaṃ tathā jagaddṛśyaṃ na jāne kvāśu gacchati || 16 ||

Just as a peaceful dream city, I do not know where it goes quickly | Similarly, I do not know where this peaceful visible world goes quickly || 16 ||

जैसे शान्त स्वप्न नगर, मैं नहीं जानता कि वह कहाँ जल्दी जाता है | उसी प्रकार, मैं नहीं जानता कि यह शान्त दृश्य जगत कहाँ जल्दी जाता है || १६ ||

7.213.17

शिष्य उवाच । किमिदं भाति भगवन्न विभाति च किं पुनः । कस्येदं वस्तुनो रूपं चिद्व्योम्नो विततात्कृतेः ॥ १७ ॥

śiṣya uvāca | kimidaṃ bhāti bhagavann vibhāti ca kiṃ punaḥ | kasyedaṃ vastuno rūpaṃ cidvyomno vitatākṛteḥ || 17 ||

The disciple said | What is this that appears, O Lord, and what is it that does not appear? Moreover, what is the form of this substance of the expanded consciousness? || 17 ||

शिष्य ने कहा | यह क्या है जो प्रकट होता है, हे भगवन्, और यह क्या है जो प्रकट नहीं होता? और फिर, यह किसका रूप है इस वस्तु का जो विस्तृत चेतना का है? || १७ ||

7.213.18

गुरुरुवाच । चिदाकाशमिदं पुत्र स्वच्छं कचकचायते । यन्नाम तज्जगद्भाति जगदन्यन्न विद्यते ॥ १८ ॥

gururuvāca | cidākāśamidaṃ putra svacchaṃ kacakacāyate | yannāma tajjagadbhāti jagadanyanna vidyate || 18 ||

The guru said | This is the pure space of consciousness, O son, which shines brightly | Whatever name it has, that is what appears as the world; there is no other world || 18 ||

गुरु ने कहा | यह शुद्ध चेतना का आकाश है, हे पुत्र, जो चमकता है | जो भी नाम है, वही जगत प्रकट होता है; कोई दूसरा जगत नहीं है || १८ ||

7.213.19

अस्यैतद्वस्तुनो रूपं चिद्व्योम्नो विततात्कृतेः । रूपमत्यजदेवाच्छं यदित्थमवभासते ॥ १९ ॥

asyaitadvastuno rūpaṃ cidvyomno vitatākṛteḥ | rūpamatyajadevācchaṃ yaditthamavabhāsate || 19 ||

This is the form of that substance of the expanded consciousness | It abandoned its form and became transparent, thus it shines || 19 ||

यह उस वस्तु का रूप है जो विस्तृत चेतना का है | इसने अपना रूप छोड़ दिया और पारदर्शी हो गया, इसलिए यह चमकता है || १९ ||

7.213.20

कचनाकचनं सर्गक्षयात्मास्य निजं वपुः । व्योमात्म शुक्लकृष्णं स्याद्यथावयविनो वपुः ॥ २० ॥

kacanākacanaṃ sargakṣayātmāsya nijaṃ vapuḥ | vyomātma śuklakṛṣṇaṃ syādyathāvayavino vapuḥ || 20 ||

The inherent form of this, which has creation and destruction as its nature, is both manifest and unmanifest | Its form, which is the nature of space, would be both bright and dark, like the form of a composite object || 20 ||

इसका स्वाभाविक रूप, जिसकी प्रकृति सृष्टि और विनाश है, दोनों व्यक्त और अव्यक्त है | इसका रूप, जो आकाश की प्रकृति का है, दोनों उज्ज्वल और अंधेरा होगा, जैसे कि एक संयुक्त वस्तु का रूप || २० ||

7.213.21

यथायं त्वं सितोदान्तरेक एवादितः कचैः । तथा ब्रह्मैवमच्छात्म सर्गे सर्गक्षयेऽक्षयम् ॥ २१ ॥

yathāyaṃ tvaṃ sitodāntareka evāditaḥ kacaiḥ | tathā brahmaivamacchātma sarge sargakṣaye'kṣayam || 21 ||

Just as you are one with the white teeth from the beginning, similarly, Brahman is eternal in creation and dissolution.

जैसे तुम श्वेत दाँतों के साथ एक हो आदि से, वैसे ही ब्रह्म सृष्टि और प्रलय में अक्षय है।

7.213.22

यथा स्वप्ने सुषुप्ते च निद्रैकैवाक्षयानिशम्। सर्गेऽस्मिन्प्रलये चैव ब्रह्मैकं चितिरव्ययम्॥ २२॥

yathā svapne suṣupte ca nidraikaiavākṣayāniśam | sarge'sminpralaye caiva brahmaikaṃ citiravyayam || 22 ||

Just as in dream and deep sleep, there is only one eternal sleep, similarly, in this creation and dissolution, there is only one eternal Brahman, the imperishable consciousness.

जैसे स्वप्न और सुषुप्ति में, एक ही अक्षय निद्रा होती है, वैसे ही इस सृष्टि और प्रलय में, एक ही अक्षय ब्रह्म, अविनाशी चेतना है।

7.213.23

यथा स्वप्ने जगद्द्रष्टुः शान्तं शाम्यत्यशेषतः। तद्वदस्मज्जगदिदं शान्तं शाम्यत्यशेषतः॥ २३॥

yathā svapne jagaddraṣṭuḥ śāntaṃ śāmyatyśeṣataḥ | tadvadasmajjagadidaṃ śāntaṃ śāmyatyśeṣataḥ || 23 ||

Just as the world seen in a dream becomes calm and completely peaceful, similarly, this world becomes calm and completely peaceful.

जैसे स्वप्न में देखा गया जगत् शान्त और पूर्णतः शान्त हो जाता है, वैसे ही यह जगत् शान्त और पूर्णतः शान्त हो जाता है।

7.213.24

तदन्यत्रास्ति खे खाख्यं तथेत्यङ्ग न विद्महे। अशङ्क्यं परखे त्वेतदस्मच्चिद्व्योम्नि संभवात्॥ २४॥

tadanyatrāsti khe khākhyam tathetyaṅga na vidmahe | aśaṅkyaṃ parakhe tvetadasmaccidvyomni saṃbhavāt || 24 ||

There is nothing else in the sky known as space, thus we do not know it as such. This is inconceivable in the supreme sky, as it arises from our consciousness.

आकाश में अन्य कुछ नहीं है जिसे खगोल कहा जाता है, इसलिए हम इसे ऐसा नहीं जानते। यह परम आकाश में अकल्पनीय है, क्योंकि यह हमारी चेतना से उत्पन्न होता है।

7.213.25

यथेहास्मच्चिदाकाशकचनं सर्गसंक्षये। तथान्यत्संविदाकाशं नैवमित्यत्र का प्रमा॥ २५॥

yathehāsmaccidākāśakacanaṃ sargasaṃkṣaye | tathānyatsaṃvidākāśaṃ naivamityatra kā pramā || 25 ||

Just as here, our consciousness space is a part of creation and dissolution, similarly, another consciousness space is not so, what is the proof here?

जैसे यहाँ, हमारी चेतना का आकाश सृष्टि और प्रलय का एक हिस्सा है, वैसे ही दूसरा चेतना का आकाश ऐसा नहीं है, यहाँ प्रमाण क्या है?

7.213.26

शिष्य उवाच। एवं चेत्तद्यथा स्वप्ने द्रष्टुरन्यः स दृश्यधीः। विद्यते तद्वदन्यत्र मन्येऽस्ति जगदादिधीः॥ २६॥

śiṣya uvāca | evaṃ cet tad yathā svapne draṣṭur anyaḥ sa dṛśyadhīḥ | vidyate tadvad anyatra manye asti jagadādidhīḥ || 26 ||

The disciple said: If it is so, then just as in a dream the seer is different from the seen, I think that the same applies to the world and the primordial consciousness.

शिष्य ने कहा: यदि ऐसा है, तो जैसे स्वप्न में देखने वाला देखे जाने वाले से अलग होता है, उसी तरह मैं सोचता हूँ कि जगत और आदि चेतना भी अलग-अलग हैं।

7.213.27

गुरुरुवाच। एवमेतन्महाप्राज्ञ स्वरूपं तु न तज्जगत्। चिति भाति स्वरूपं तत्तद्वदेव न भाति च ॥ २७ ॥

gurur uvāca | evam etan mahāprājña svarūpaṃ tu na taj jagat | citi bhāti svarūpaṃ tat tadvad eva na bhāti ca || 27 ||

The guru said: O wise one, it is indeed so. The true nature is not this world. It shines in consciousness, but that true nature does not shine in the same way.

गुरु ने कहा: हे महाप्राज्ञ, ऐसा ही है। स्वरूप वह जगत नहीं है। वह चेतना में चमकता है, पर वह स्वरूप उसी तरह नहीं चमकता।

7.213.28

न भाति न च तत्किंचिन्न च तत्किंचिदेव सत्। तच्चिदाकाशकचनं के तत्र सदसद्दृशौ ॥ २८ ॥

na bhāti na ca tat kiṃcin na ca tat kiṃcid eva sat | tac cidākāśa kacanaṃ ke tatra sadasadṛśau || 28 ||

It does not shine, nor is there anything at all. That is the pure space of consciousness. Who can describe it as either real or unreal?

वह नहीं चमकता, न ही कुछ भी है। वह चेतना का शुद्ध आकाश है। कौन उसे वास्तविक या अवास्तविक कह सकता है?

7.213.29

विद्यते तद्धि सर्वत्र सर्वं सर्वेण सर्वदा। न विद्यते च तत्किंचित्सर्वं सर्वत्र सर्वदा ॥ २९ ॥

vidyate taddhi sarvatra sarvaṃ sarveṇa sarvadā | na vidyate ca tat kiṃcit sarvaṃ sarvatra sarvadā || 29 ||

It exists everywhere, always, in everything. Yet, nothing of it exists anywhere, always.

वह हर जगह, हमेशा, हर चीज में मौजूद है। फिर भी, उसका कुछ भी कहीं नहीं है, हमेशा।

7.213.30

तत्सत्तत्सर्वदा सर्वमसच्चासद्धि वाखिलम्। तन्मयं तच्चिदाकाशं न नाशि न च नाशि तत् ॥ ३० ॥

tatsat tatsarvadā sarvam asac cāsaddhi vākhilam | tanmayam tac cidākāśaṃ na nāśi na ca nāśi tat || 30 ||

That is the eternal truth, always and everywhere. It is both real and unreal, pervading everything. It is the essence of the pure space of consciousness, neither destroyed nor destructible.

वह नित्य सत्य है, हमेशा और हर जगह। वह वास्तविक और अवास्तविक दोनों है, हर चीज में व्याप्त है। वह चेतना के शुद्ध आकाश का सार है, न तो नष्ट होता है न ही नष्ट हो सकता है।

7.213.31

यन्नाम सच्चिदाकाशं सर्गप्रलयरूपि तत्। तदुःखायापरिज्ञातं परिज्ञातं परः शमः ॥ ३१ ॥

yannāma saccidākāśaṃ sargapralayarūpi tat| taduḥkhāyāparijñātaṃ parijñātaṃ paraḥ śamaḥ || 31 ||

That which is named as the eternal, conscious space, which takes the form of creation and dissolution, is known as suffering when not understood, but when understood, it is the supreme peace.

जो सच्चिदाकाश कहलाता है, जो सृष्टि और प्रलय का रूप धारण करता है, वह जब नहीं समझा जाता है तो दुःख कहलाता है, लेकिन जब समझा जाता है तो वह परम शांति है।

7.213.32

विद्यते सर्वथैवेदं सर्वं सर्वत्र सर्वदा । न विद्यते सर्वथा च सर्वं सर्वत्र सर्वदा ॥ ३२ ॥

vidyate sarvathaivedaṃ sarvaṃ sarvatra sarvadā| na vidyate sarvathā ca sarvaṃ sarvatra sarvadā || 32 ||

Everything exists in every way, everywhere, and at all times. Yet, everything does not exist in every way, everywhere, and at all times.

सब कुछ हर तरह से, हर जगह, और हर समय मौजूद है। फिर भी, सब कुछ हर तरह से, हर जगह, और हर समय मौजूद नहीं है।

7.213.33

एष देवो घटः शैलः पटः स्फोटस्तटो वटः । तृणमग्निः स्थावरं च जंगमं सर्वमेव च ॥ ३३ ॥

eṣa devo ghaṭaḥ śailaḥ paṭaḥ sphoṭastato vaṭaḥ| tṛṇamagniḥ sthāvaraṃ ca jaṅgamaṃ sarvameva ca || 33 ||

This divine being is the pot, the mountain, the cloth, the sound, the shore, the banyan tree, the grass, the fire, the immovable, the movable, and everything else.

यह दिव्य प्राणी घड़ा, पर्वत, कपड़ा, ध्वनि, तट, बरगद का पेड़, घास, आग, अचल, चल, और सब कुछ है।

7.213.34

अस्ति नास्ति च शून्यं च क्रिया कालो नभो मही । भावाभावौ भवो भूतिर्नाशाः पाशाः शुभाशुभाः ॥ ३४ ॥

asti nāsti ca śūnyaṃ ca kriyā kālo nabho mahī| bhāvābhāvau bhavo bhūtirnāśāḥ pāśāḥ śubhāśubhāḥ || 34 ||

There is existence and non-existence, emptiness, action, time, sky, earth, being and non-being, becoming, prosperity, destruction, bondage, auspiciousness, and inauspiciousness.

अस्तित्व और अनस्तित्व, शून्यता, क्रिया, समय, आकाश, पृथ्वी, भाव और अभाव, होना, समृद्धि, विनाश, बंधन, शुभ और अशुभ है।

7.213.35

तन्नास्त्येव न यन्नाम नित्यमेकस्तथा बहिः । आदिमध्यमथान्तं तु कालत्रितयमेव च ॥ ३५ ॥

tannāstyeva na yannāma nityamekastathā bahiḥ| ādimadhyamathāntaṃ tu kālatritayameva ca || 35 ||

That which is named does not exist, it is eternal and one, yet it is many. It is the beginning, the middle, and the end, the triad of time.

जो नामित है वह अस्तित्व नहीं रखता, वह नित्य और एक है, फिर भी वह बहुत से है। वह आदि, मध्य, और अंत है, समय का त्रय।

7.213.36

सर्वं सर्वेण सर्वत्र सर्वदैवात्र विद्यते । सर्वं सर्वेण सर्वत्र सर्वदात्र न विद्यते ॥ ३६ ॥

sarvaṃ sarveṇa sarvatra sarvadaivātra vidyate | sarvaṃ sarveṇa sarvatra sarvadātra na vidyate || 36 ||

Everything exists everywhere and always in everything | Everything does not exist everywhere and always in everything

सब कुछ हर जगह और हमेशा हर चीज में मौजूद है | सब कुछ हर जगह और हमेशा हर चीज में मौजूद नहीं है

7.213.37

यदैवं राम सर्वात्म सर्वमेवास्ति सर्वदा । ब्रह्मात्मत्वात्स्वप्नसंवित्पुरन्यायेन वै तदा ॥ ३७ ॥

yadaivaṃ rāma sarvātma sarvamevāsti sarvadā | brahmātmatvātsvapnasanvitpuranyāyena vai tadā || 37 ||

O Rama, if everything is the self, then everything exists always | Due to the identity with Brahman, like the awareness in a dream city

हे राम, यदि सब कुछ आत्मा है, तो सब कुछ हमेशा मौजूद है | ब्रह्म की पहचान के कारण, जैसे स्वप्न में नगर की चेतना

7.213.38

तृणं कर्तृ तृणं भोक्तृ ब्रह्मात्मत्वात्तृणं विभुः । घटः कर्ता घटो भोक्ता घटः सर्वेश्वरेश्वरः ॥ ३८ ॥

tṛṇaṃ kartṛ tṛṇaṃ bhoktṛ brahmātmatvāttṛṇaṃ vibhuḥ | ghaṭaḥ kartā ghaṭo bhoktā ghaṭaḥ sarveśvareśvaraḥ || 38 ||

Grass is the doer, grass is the enjoyer, due to the identity with Brahman, grass is omnipresent | The pot is the doer, the pot is the enjoyer, the pot is the lord of all lords

घास कर्ता है, घास भोक्ता है, ब्रह्म की पहचान के कारण, घास सर्वव्यापी है | घड़ा कर्ता है, घड़ा भोक्ता है, घड़ा सब ईश्वरों का ईश्वर है

7.213.39

पटः कर्ता पटो भोक्ता पटः सर्वेश्वरेश्वरः । दृशिः कर्ता दृशिर्भोक्ता दृशिः सर्वेश्वरेश्वरः ॥ ३९ ॥

paṭaḥ kartā paṭo bhoktā paṭaḥ sarveśvareśvaraḥ | dṛśiḥ kartā dṛśirbhoktā dṛśiḥ sarveśvareśvaraḥ || 39 ||

The cloth is the doer, the cloth is the enjoyer, the cloth is the lord of all lords | The vision is the doer, the vision is the enjoyer, the vision is the lord of all lords

कपड़ा कर्ता है, कपड़ा भोक्ता है, कपड़ा सब ईश्वरों का ईश्वर है | दृष्टि कर्ता है, दृष्टि भोक्ता है, दृष्टि सब ईश्वरों का ईश्वर है

7.213.40

गिरिः कर्ता गिरिर्भोक्ता गिरिः सर्वेश्वरेश्वरः । नरः कर्ता नरो भोक्ता नरः सर्वेश्वरेश्वरः ॥ ४० ॥

giriḥ kartā girirbhoktā giriḥ sarveśvareśvaraḥ | naraḥ kartā narobhoktā naraḥ sarveśvareśvaraḥ || 40 ||

The mountain is the doer, the mountain is the enjoyer, the mountain is the lord of all lords | The man is the doer, the man is the enjoyer, the man is the lord of all lords

पर्वत कर्ता है, पर्वत भोक्ता है, पर्वत सब ईश्वरों का ईश्वर है | मनुष्य कर्ता है, मनुष्य भोक्ता है, मनुष्य सब ईश्वरों का ईश्वर है

7.213.41

प्रत्येकं सर्ववस्तूनां कर्ता भोक्ता परात्परः । अनादिनिधनो धाता सर्वं ब्रह्मात्मकं यतः ॥ ४१ ॥

pratyekaṃ sarvavastūnāṃ kartā bhoktā parātparaḥ | anādinidhano dhātā sarvaṃ brahmātmakaṃ yataḥ || 41 ||

Everything in the universe is created and enjoyed by the Supreme Being, who is eternal and the creator of all. Everything is pervaded by Brahman.

प्रत्येक वस्तु परमात्मा द्वारा बनाई और भोगी जाती है, जो अनादि और अनंत है और सबका सृष्टिकर्ता है। सब कुछ ब्रह्म से भरा हुआ है।

7.213.42

तृणकुम्भादयस्त्वेते स्वया विभुतया विभुः । एवंरूपा स्थिता रूपं यद्विभातः क्षयोदयौ ॥ ४२ ॥

tṛṇakumbhādayastvetesvayā vibhutayā vibhuḥ | evaṃrūpā sthitā rūpaṃ yadvibhātaḥ kṣayodayau || 42 ||

Objects like grass and pots exist with their own magnificence, and their forms are manifested through their rise and fall.

घास और मिट्टी के बर्तन जैसी वस्तुएँ अपनी महिमा के साथ मौजूद हैं, और उनके रूप उनके उदय और अस्त से प्रकट होते हैं।

7.213.43

बाह्योऽर्थोस्ति स एवेह कर्ता भोक्ता तथाविधः । विज्ञानमात्रमेवास्ति कर्तृ भोक्तृ तथाविदाम् ॥ ४३ ॥

bāhyo'rthostisaeveha kartā bhoktā tathāvidhaḥ | vijñānamātramevāsti kartṛ bhoktṛ tathāvidām || 43 ||

The external object is the same as the creator and enjoyer. Only consciousness exists for the creator and enjoyer.

बाहरी वस्तु ही कर्ता और भोक्ता है। कर्ता और भोक्ता के लिए केवल चेतना ही मौजूद है।

7.213.44

न कश्चिच्चैव कर्तेह न च भोक्ता तथाविदाम्। कश्चिदीश्वर एवेह कर्ता भोक्ता तथाविदाम्॥ ४४॥

na kaściccaiva karteha na ca bhoktā tathāvidām | kaścidīśvara eva eha kartā bhoktā tathāvidām || 44 ||

There is no one who is the creator or enjoyer. Only the Lord is the creator and enjoyer here.

कोई भी कर्ता या भोक्ता नहीं है। केवल ईश्वर ही यहाँ कर्ता और भोक्ता है।

7.213.45

सर्वमेव पदे तस्मिन्संभवत्युत्तमोत्तमे। विधयः प्रतिषेधाश्च के ते सन्ति न सन्ति के॥ ४५॥

sarvameva pade tasmin saṃbhavatyuttamottame | vidhayaḥ pratiṣedhāśca ke te santi na santi ke || 45 ||

Everything exists in that supreme state. What are the rules and prohibitions? Do they exist or not?

सब कुछ उस परम अवस्था में मौजूद है। नियम और प्रतिबंध क्या हैं? वे मौजूद हैं या नहीं?

7.213.46

शुद्धे द्रष्टेव चिद्व्योम दृश्यतामिव भावयत्। स्वमात्मानं जगदिति पश्येत्तिष्ठेदनामयम्॥ ४६॥

śuddhe draṣṭeva cidvyoma dṛśyatāmiva bhāvayat | svamātmānaṃ jagaditi paśyettiṣṭhedanāmayam || 46 ||

In the pure consciousness, one should meditate on the world as if it were seen | One should see the self as the world and remain free from afflictions

शुद्ध चेतना में, एक को जगत को देखने की तरह ध्यान करना चाहिए | एक को आत्मा को जगत के रूप में देखना चाहिए और व्याधियों से मुक्त रहना चाहिए

7.213.47

सर्वा दृशो विधिनिषेधदृशश्च सर्वाः संकल्पवेदनविशेषसशेषपूर्वाः। सत्यात्मिकाः सततमेव न चैव सत्या रूपं यथानुभवमत्र यतः स्वरूपम्॥ ४७॥

sarvā dṛśo vidhinisheṣhadṛśaśca sarvāḥ saṃkalpavedanaviśeṣasaśeṣapūrvāḥ | satyātmikāḥ satatameva na caiva satyā rūpaṃ yathānubhavamatra yataḥ svarūpam || 47 ||

All perceptions, whether of injunction or prohibition, are preceded by intentions and experiences | They are always true in essence, but not true in reality | The form is as experienced here, hence the true nature

सभी धारणाएं, चाहे वे आदेश हों या प्रतिबंध, इरादों और अनुभवों से पहले होती हैं | वे हमेशा सत्य होती हैं, लेकिन वास्तविकता में नहीं | रूप यहां अनुभव के अनुसार है, इसलिए सच्चा स्वरूप

7.213.48

इति त्वया शिष्यतया मदन्तिकाच्छ्रुतं पुरा तेन न चासि बुद्धवान्। ततोऽनुभूयान्यजगद्भवाद्भवानिहाद्य जातोऽसि तदेव पृच्छसि॥ ४८॥

iti tvayā śiṣyatayā madantikācchrutaṃ purā tena na cāsi buddhvān |
tato'nubhūyānyajagadbhavādbhavānihaādya jāto'si tadeva pṛcchasi || 48 ||

Thus, you have heard from me as a disciple long ago, but you have not understood | Therefore, experiencing other worldly affairs, you have been born again and are asking the same question

इस प्रकार, आपने मुझसे शिष्य के रूप में पहले सुना था, लेकिन आपने समझा नहीं | इसलिए, दूसरी दुनियावी बातों का अनुभव करके, आप फिर से जन्म ले चुके हैं और वही प्रश्न पूछ रहे हैं

7.213.49

ज्ञानं सदेतदखिलं श्रुतमुत्तमं चित्संसारदीर्घरजनीसितरश्मिबिम्बम्। जातस्त्वमभ्युदयवानमलैकबोध उत्सार्य मोहमनुतिष्ठ यथागतं त्वम्॥ ४९॥

jñānaṃ sade tadakhilaṃ śrutamuttamaṃ citsaṃsāradīrgharajanīsitarśmibimbaṃ |
jātastvamabhyudayavānamalaikabodha utsārya mohamanutiṣṭha yathāgataṃ tvam || 49 ||

That knowledge is eternal and supreme, heard as the best, the reflection of the long night of worldly existence | Born with pure understanding, free from delusion, follow the path as you have come

वह ज्ञान सनातन और उत्तम है, जो सर्वश्रेष्ठ के रूप में सुना जाता है, दुनियावी अस्तित्व की लंबी रात का प्रतिबिंब | शुद्ध बोध के साथ जन्म लेकर, भ्रम से मुक्त, जैसे आप आए हैं वैसे ही मार्ग पर चलें

7.213.50

तिष्ठंस्तदात्मनि परे विमलस्वभावे सर्वात्मके तपति सर्वपदार्थमुक्तः। निर्वाणशान्तमतिरम्बरकोशकान्तो धर्मेण राज्यमनुपालय तीर्णतृष्णः॥ ५०॥

tiṣṭhaṃstadātmani pare vimalasvabhāve sarvātmake tapati sarvapadārthamuktaḥ |
nirvāṇaśāntamatirambarakośakānto dharmeṇa rājyamanupālaya tīrṇatṛṣṇaḥ || 50 ||

Abide in that supreme self, of pure nature, which is the essence of all | Free from all objects, radiant, with a mind peaceful in nirvana, clad in the garment of the sky, govern the kingdom with dharma, free from desire

उस परम आत्मा में रहें, जो शुद्ध स्वभाव का है, जो सबका आत्मा है | सभी वस्तुओं से मुक्त, चमकदार, निर्वाण में शांत मन के साथ, आकाश के वस्त्र से ढंके हुए, धर्म से राज्य का पालन करें, इच्छा से मुक्त

Chapter 214

7.214.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच इत्युक्तवत्यथ मुनौ नभसो ननाद वर्षामृताभ्रमिव दुन्दुभिरामरो द्राक् शुक्लीकृताखिलककुब्वदना तुषारवर्षोपमा भुवि पपात च पुष्पवृष्टिः ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca ityuktavatyatha munau nabhaso nanāda varṣāmṛtābhraṃiva dundubhirāmaro drāk śuklīkṛtākhilakakubvadanā tuṣāravarṣopamā bhuvi papāta ca puṣpavṛṣṭiḥ || 1 ||

Having said this, the sage Valmiki spoke. Then, as if a cloud of nectar rained from the sky, a divine drum resounded. A shower of flowers, resembling a snowfall, fell to the earth, whitening all directions.

यह कहकर महर्षि वाल्मीकि ने कहा। तब आकाश से अमृत के बादल की तरह दिव्य ढोल बजा। चारों ओर सफेद करते हुए, बर्फ की वर्षा की तरह फूलों की वर्षा पृथ्वी पर गिरी।

7.214.2

किंजल्कजालदिवसान्तघनाङ्गरागा वातावधूतसितकेसरगौरहारा पुष्पोदरोत्थमृदुसीकरशीतलाङ्गा प्राप्ता स्वयं सुरपुरादिव पुण्यलक्ष्मीः ॥ २ ॥

kiṃjalakajāladivasāntaghanāṅgarāgā vātāvadhūtasitakesaragaurahārā puṣpodarotthamṛdusīkarashītalāṅgā prāptā svayaṃ surapurādiva puṇyalakṣmīḥ || 2 ||

The auspicious Lakshmi herself appeared as if from the heavenly abode, her body cooled by the soft, gentle drops from the shower of flowers. Her limbs were adorned with the hue of the setting sun, and her hair was blown by the wind, white and radiant.

पुण्य लक्ष्मी स्वयं देवलोक से प्रकट हुईं, उनका शरीर फूलों की वर्षा से निकले कोमल, ठंडे बूंदों से ठंडा हो गया था। उनके अंगों पर सूर्यास्त के रंग की चमक थी, और उनके बाल हवा से उड़े हुए, सफेद और चमकदार थे।

7.214.3

कल्पान्तकालकपिकम्पितशुष्कशाखात्स्वर्गद्रुमात्पतितमाशु विडम्बयन्ती तारागणं
प्रथितभासमनल्पहासमाशामुखप्रसृतभैरवमम्बरस्था ॥ ३ ॥

kalpāntakālakapikampitaśuṣkaśākhātsvargadrumātpatitamāśu viḍambayantī tārāgaṇaṃ prathitabhāsamanalpahāsamāśāmukhaprasṛtabhairavamambarasthā || 3 ||

Immediately, a star fell from the heavenly tree, its dry branches trembling at the end of the cosmic cycle, mocking the famous radiance of the stars with its terrifying laughter spread across the sky.

तुरंत ही, एक तारा स्वर्ग के वृक्ष से गिरा, जिसकी सूखी शाखाएँ कल्पांत के समय काँप रही थीं, और उसने अपने भयानक हँसी से तारों की प्रसिद्ध चमक की नकल की, जो आकाश में फैली हुई थी।

7.214.4

सा पुष्पवृष्टिरथ दुन्दुभिनादगर्जत्किंजल्कपुञ्जजलदा शममाजगाम आपूरिताखिलसभा हिमहारिपुष्पपूरेण कौतुकविकासकरीक्षणेन ॥ ४ ॥

sā puṣpavṛṣṭiratha dundubhināḍagarjatkiṃjalakapuñjajaladā śamamājagāma āpūritākhilasabhā himahāripuṣpapūreṇa kautukavikāsakarīkṣaṇena || 4 ||

That shower of flowers, accompanied by the resounding of drums, became calm like a cloud of kiṃjalka flowers. The entire assembly was filled with the delightful sight of flowers that dispelled the cold.

वह फूलों की वर्षा, ढोल की गड़गड़ाहट के साथ, किंजल्क फूलों के बादल की तरह शांत हो गई। सारी सभा ठंड को दूर करने वाले फूलों के आनंदमय दृश्य से भर गई।

7.214.5

तानि दिव्यानि पुष्पाणि यथास्थानमधःस्थिताः वसिष्ठाय नमस्कृत्वा सभ्याः संशोकितां जहुः ॥ ५ ॥

tāni divyāni puṣpāṇi yathāsthānamadhaḥsthitāḥ vasiṣṭhāya namaskṛtvā sabhyāḥ saṃśokitāṃ jahuḥ || 5 ||

Those divine flowers, having fallen to their respective places, paid homage to Vasistha. The assembly members then abandoned their grief.

वे दिव्य फूल, अपने-अपने स्थानों पर गिरकर, वसिष्ठ को प्रणाम करते हुए, सभा के सदस्यों ने अपना शोक त्याग दिया।

7.214.6

दशरथ उवाच । अहोऽनुसुविशात्मानः संसारविततताकृतेः । विश्रान्ताः स्मश्चिरं श्रान्ताः शुद्धा मेघा इवाचले ॥ ६ ॥

dashaRatha uvāca | aho'nusuviśātmānaḥ saṃsāravitataākṛteḥ | viśrāntāḥ smaśchiraṃ śrāntāḥ śuddhā meghā ivāchale || 6 ||

King Dasharatha said: Alas, we have been wandering in the vast expanse of the world, tired for a long time, and now we are resting like pure clouds on a mountain.

राजा दशरथ ने कहा: अहो, हम संसार के विस्तृत रूप में घूमते रहे हैं, दीर्घकाल से थके हुए, और अब हम पर्वत पर शुद्ध बादलों की तरह विश्राम कर रहे हैं।

7.214.7

कर्मणामवधिः पूर्णो दृष्टः सीमान्त आपदाम् । ज्ञातं ज्ञेयमशेषेण विश्रान्ताः स्मः परे पदे ॥ ७ ॥

karmaṇāmavadhiḥ pūrṇo dṛṣṭaḥ sīmānta āpadām | jñātaṃ jñeyamaśeṣeṇa viśrāntāḥ smaḥ pare pade || 7 ||

The end of actions is complete, the limit of calamities is seen. The knowable has been known completely, we are resting in the supreme state.

कर्मों का अंत पूरा हो गया है, विपत्तियों की सीमा दिखाई देती है। ज्ञेय पूर्णतः ज्ञात हो गया है, हम परम पद में विश्राम कर रहे हैं।

7.214.8

ध्यानलब्धपरव्योमचिरानुभवनभ्रमैः । धारणाधारविश्रान्त्या देहसंत्यजनक्रमैः ॥ ८ ॥

dhyānalabdhaparavyomachirānubhavanabhramaiḥ | dhāraṇādhāravishrāntyā dehasaṃtyajanakramaiḥ || 8 ||

Through the attainment of the supreme sky by meditation, through the long experience of delusions, through the stability of concentration, and through the process of renouncing the body.

ध्यान द्वारा परम आकाश की प्राप्ति, लंबे समय तक भ्रम के अनुभव, धारणा की स्थिरता, और शरीर को त्यागने की प्रक्रिया के द्वारा।

7.214.9

संकल्पनवनिर्माणैः स्वप्नदृष्टिजगज्ज्वरैः । शुक्तिरूप्यानुभवनैः स्वप्नात्ममृतिदर्शनैः ॥ ९ ॥

saṃkalpanavanirmāṇaiḥ svapnadṛṣṭijagajjvaraiḥ | śuktirūpyānubhavanaiḥ svapnātmamṛtidarśanaiḥ || 9 ||

Through the creation of new resolutions, through the fever of seeing the world in dreams, through the experience of mistaking a shell for silver, and through the vision of death in dreams.

नए संकल्पों की रचना, स्वप्न में संसार को देखने की बुखार, शंख को चांदी समझने का अनुभव, और स्वप्न में मृत्यु की दृष्टि के द्वारा।

7.214.10

अनन्यैः पवनस्पन्दैरनन्यैः सलिलद्रवैः । इन्द्रजालपुरापूरैर्गन्धर्वनगरोत्करैः ॥ १० ॥

ananyaiḥ pavanaspanadaiḥrananyaiḥ saliladravaiḥ | indrajālapurāpūraiḥrgandharvanagarotkaraiḥ || 10 ||

Through the unique vibrations of the wind, through the unique flows of water, through the expansive illusions, and through the elevations of the Gandharva cities.

वायु की अनूठी स्पंदन, जल की अनूठी प्रवाह, विस्तृत भ्रम, और गंधर्व नगरों की उन्नति के द्वारा।

7.214.11

मायापूर्णपुराभोगैर्मृगतृष्णानदीरयैः । आयतौ पवनस्पर्शैर्द्विचन्द्रानुभवोदयैः ॥ ११ ॥

māyāpūrṇapurābhogairmṛgatṛṣṇānadīrayaiḥ| āyatau pavanasparsairdvicandrānubhavodayaiḥ|| 11 ||

By the enjoyment of the illusory world, by the mirage of a deer, by the flow of the river, by the touch of the wind, by the experience of the two moons, and so on.

मायापूर्ण पुराभोगों से, मृगतृष्णा नदी के प्रवाह से, पवन के स्पर्श से, दो चन्द्रों के अनुभव से, और इसी तरह के अन्य अनुभवों से।

7.214.12

मदभ्रंशपुरस्पन्दैर्मुधा त्ववनिकम्पनैः । बालयक्षाद्यनुभवैः खकेशोण्ड्रकदर्शनैः ॥ १२ ॥

madabhraṃśapuraspadairmudhā tvavanikampanaiḥ| bālayakṣādyanubhavaiḥ khakeśoṇḍrakadarśanaiḥ|| 12 ||

By the trembling of pride, by the shaking of the earth, by the experiences of young demons, by the sight of hair in the sky, and so on.

अहंकार के डगमगाने से, पृथ्वी के काँपने से, बाल यक्षों के अनुभव से, आकाश में बाल दिखाई देने से, और इसी तरह के अन्य अनुभवों से।

7.214.13

एवमादिभिरन्यैश्च दृष्टान्तैः स्वानुभूतिदैः । अहो नु मार्जिता दृश्यदृष्टिर्भगवता मम ॥ १३ ॥

evamādibhiranyaiśca dṛṣṭāntaiḥ svānubhūtidaiḥ| aho nu mārjitā dṛśyadṛṣṭirbhagavatā mama|| 13 ||

Thus, by these and other examples, my vision of the visible world has been cleansed by the Lord.

इस प्रकार, इन और अन्य उदाहरणों से, मेरी दृष्टि दृश्य जगत को देखने के लिए भगवान द्वारा पवित्र की गई है।

7.214.14

श्रीराम उवाच । नष्टो मोहः पदं प्राप्तं त्वत्प्रसादान्मुनीश्वर । संपन्नोऽहमहं सत्यमत्यन्तमवदातधीः ॥ १४ ॥

śrīrāma uvāca| naṣṭo mohaḥ padaṃ prāptaṃ tvatprasādānmunīśvara| saṃpanno'hamahaṃ satyamatyantamavadātadhīḥ|| 14 ||

Sri Rama said: The delusion is destroyed, the supreme state is attained by your grace, O sage. I am truly fulfilled, I am of steady intellect.

श्रीराम ने कहा: मोह नष्ट हो गया, आपकी कृपा से परम पद प्राप्त हुआ, हे मुनीश्वर! मैं सत्य में सम्पन्न हूँ, मैं अत्यन्त स्थिर बुद्धि का हूँ।

7.214.15

स्थितोऽस्मि गतसंदेहः स्वभावे ब्रह्मरूपिणि । निरावरणविज्ञानः करिष्ये वचनं तव ॥ १५ ॥

sthito'smi gatasaṃdehaḥ svabhāve brahmarūpiṇi| nirāvaraṇavijñānaḥ kariṣye vacanaṃ tava|| 15 ||

I am established, free from doubt, in the nature of Brahman. With unobstructed knowledge, I will follow your command.

मैं स्थित हूँ, संदेह रहित, ब्रह्म के स्वभाव में। अवरोध रहित ज्ञान exposes करते हुए, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

7.214.16

स्मृत्वा स्मृत्वाऽमृतासेकसौख्यदं वचनं तव । अर्हितोऽपि च शान्तोपि हृष्यामीव मुहुर्मुहुः ॥ १६ ॥

smṛtvā smṛtvā'mṛtāsekasaukhyaḍaṃ vacanaṃ tava| arhito'pi ca śāntopi hṛṣyāmīva muhurmuhuḥ || 16 ||

Remembering your words, which are like a shower of nectar and bring happiness, even though I am worthy and calm, I rejoice again and again.

आपके वचनों को याद करते हुए, जो अमृत की वर्षा के समान सुख देते हैं, यद्यपि मैं योग्य और शान्त हूँ, फिर भी मैं बार-बार आनंदित होता हूँ।

7.214.17

नैव मेऽद्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन । यथा स्थितोऽस्मि तिष्ठामि तथैव विगतज्वरः ॥ १७ ॥

naiva me'dya kṛtenārtho nākṛteneiha kaścana| yathā sthito'smi tiṣṭhāmi tathaiva vigatajvaraḥ || 17 ||

Neither do I have any purpose today by doing or not doing anything. I remain as I am, free from fever.

न तो आज मेरे किसी काम से कोई लाभ है, न ही किसी काम न करने से। मैं जैसा हूँ, वैसे ही रहता हूँ, बुखार से मुक्त।

7.214.18

उपायस्तु तथा तेन दृष्टिर्वास्तीह कीदृशी । अहो नु विततता भूमिः कष्टमेतादृशी दशा ॥ १८ ॥

upāyastu tathā tena dṛṣṭirvāstīha kīdṛśī| aho nu vitatā bhūmiḥ kaṣṭametādṛśī daśā || 18 ||

What kind of vision is there in this means? Alas, the earth is spread out, how painful is this state.

इस उपाय में कैसी दृष्टि है? अहो, पृथ्वी फैली हुई है, यह दशा कितनी दुःखदायी है।

7.214.19

न शत्रुर्न च मित्रं मे न क्षेत्रं दुर्जनो जनः । दुर्बोधैषा जगत्क्षुब्धा शान्ता सर्वार्थसुन्दरी ॥ १९ ॥

na śatrurna ca mitraṃ me na kṣetraṃ durjano janaḥ| durbodhaiṣā jagatkṣubdhā śāntā sarvārthasundarī || 19 ||

I have no enemy, nor a friend, nor a field of evil people. This is difficult to understand, the world is agitated, peaceful and beautiful in every way.

मेरा न तो कोई शत्रु है, न ही मित्र, न ही दुष्ट लोगों का क्षेत्र। यह समझना कठिन है, संसार व्याकुल है, शांत और हर तरह से सुंदर।

7.214.20

कथमेतां जनो वेत्ति विना भवदनुग्रहम् । विनैव सेतुं पोतं वा बालोऽब्धिं लङ्घयेत्कथम् ॥ २० ॥

kathametāṃ jano vetti vinā bhavadanugraham| vinaiva setuṃ potaṃ vā bālo'bdhiṃ laṅghayetkatham || 20 ||

How can one understand this without your grace? Just as a child cannot cross the ocean without a bridge or a boat.

बिना आपकी कृपा के कोई इसे कैसे समझ सकता है? जैसे कि बिना पुल या नाव के बच्चा समुद्र को कैसे पार कर सकता है।

7.214.21

लक्ष्मण उवाच । जन्मान्तरोपचितसंशयनाशनेन जन्मान्तरोपचितपुण्यशतोदितेन । जातोऽद्य मे मुनिवचःपरिबोधनेन जातोऽद्य मे मनसि चन्द्र इव प्रकाशः ॥ २१ ॥

lakṣmaṇa uvāca | janmāntaropacitasanśayanāśanena janmāntaropacitapuṇyaśatoditena | jāto'dya me munivacaḥparibodhanena jāto'dya me manasi candra iva prakāśaḥ || 21 ||

Lakshmana said: By the destruction of doubts accumulated over many births, and by the merits accumulated over many births, today, through the understanding of the sage's words, a brightness like the moon has arisen in my mind.

लक्ष्मण ने कहा: अनेक जन्मों में एकत्रित संशयों के नाश और अनेक जन्मों में एकत्रित पुण्यों के कारण, आज, मुनि के वचनों के बोध से, मेरे मन में चन्द्रमा की तरह प्रकाश उत्पन्न हुआ है।

7.214.22

ईदृश्यां दृश्यमानायां दृशि दोषदशाशतैः । काष्ठवद्दह्यते लोकः स्वदुर्भगतया तया ॥ २२ ॥

īdṛśyāṃ dṛśyamānāyāṃ dṛśi doṣadaśāśataiḥ | kāṣṭhavaddahyate lokaḥ svadurbhagatayā tayā || 22 ||

In such a vision, with hundreds of faults, the world burns like wood due to its own misfortune.

ऐसी दृष्टि में, सैकड़ों दोषों के साथ, दुर्भाग्य के कारण लोक लकड़ी की तरह जलता है।

7.214.23

विश्वामित्र उवाच । अहो बत महत्पुण्यं श्रुतं ज्ञानं मुनेर्मुखात् । येन गङ्गासहस्रेण स्नाता इव वयं स्थिताः ॥ २३ ॥

viśvāmitra uvāca | aho bata mahatpuṇyaṃ śrutaṃ jñānaṃ munermukhāt | yena gaṅgāsahasreṇa snātā iva vayaṃ sthitāḥ || 23 ||

Vishvamitra said: Ah, what great merit we have heard as knowledge from the mouth of the sage, by which we stand as if bathed in a thousand Ganges.

विश्वामित्र ने कहा: अहा, कितना बड़ा पुण्य हमने मुनि के मुख से ज्ञान के रूप में सुना है, जिससे हम हजार गंगा में स्नान करने के समान खड़े हैं।

7.214.24

श्रीराम उवाच । संपदामथ दृष्टीनां शास्त्राणामापदां गिराम् । देशानामथ दृष्टानां दृष्टः सीमान्त उत्तमः ॥ २४ ॥

śrīrāma uvāca | saṃpadāmatha dṛṣṭīnāṃ śāstrāṇāmāpadāṃ girām | deśānāmatha dṛṣṭānāṃ dṛṣṭaḥ sīmānta uttamaḥ || 24 ||

Shri Rama said: The best boundary is seen in the prosperity of visions, scriptures, calamities, and lands.

श्री राम ने कहा: दृष्टियों, शास्त्रों, विपत्तियों और देशों की समृद्धि में सीमा का उत्तम दृश्य दिखाई देता है।

7.214.25

नारद उवाच । यन्न श्रुतं ब्रह्मलोके स्वर्गे भूमितले तथा । कर्णौ तज्ज्ञानमाकर्ण्य यातौ मेऽद्य पवित्रताम् ॥ २५ ॥

nārada uvāca | yanna śrutaṃ brahmaloke svarge bhūmitale tathā | karṇau tajjñānamākarṇya yātau me'dya pavitratām || 25 ||

Narada said: That knowledge which has not been heard in Brahmaloka, heaven, or on earth, having heard it today, my ears have attained purity.

नारद ने कहा: जो ज्ञान ब्रह्मलोक, स्वर्ग या पृथ्वी पर नहीं सुना गया है, उसे आज सुनकर मेरे कानों ने पवित्रता प्राप्त की है।

7.214.26

लक्ष्मण उवाच । हार्दं बाह्यं च तिमिरमपमृष्टवता त्वया । मुने परमभानुत्वं नूनं नः संप्रदर्शितम् ॥ २६ ॥

lakṣmaṇa uvāca | hārdaṃ bāhyaṃ ca timiramapamṛṣṭavatā tvayā | mune paramabhānutvaṃ nūnaṃ naḥ saṃpradarśitam || 26 ||

Lakshmana said: O sage, you have certainly shown us the supreme light by dispelling both the internal and external darkness.

लक्ष्मण ने कहा: हे मुनि, आपने आंतरिक और बाह्य अंधकार को दूर करके हमें परम प्रकाश दिखाया है।

7.214.27

शत्रुघ्न उवाच । निर्वृतोऽस्मि प्रशान्तोऽस्मि प्राप्तोस्मि परमं पदम् । चिराय परिपूर्णोऽस्मि सुखमासे च केवलम् ॥ २७ ॥

śatrughna uvāca | nirvṛto'smi praśānto'smi prāptosmi paramaṃ padam | cirāya paripūrṇo'smi sukhamāse ca kevalam || 27 ||

Shatrughna said: I am content, I am peaceful, I have attained the supreme state. I am fully satisfied for a long time and I sit in pure bliss.

शत्रुघ्न ने कहा: मैं संतुष्ट हूँ, मैं शांत हूँ, मैंने परम पद प्राप्त कर लिया है। मैं लंबे समय से पूर्णतः संतुष्ट हूँ और मैं शुद्ध आनंद में बैठा हूँ।

7.214.28

दशरथ उवाच । बहुजन्मोपलब्धेन पुण्येनायं मुनीश्वरः । धीरः कथितवान्नस्तद्येन पावनतां गताः ॥ २८ ॥

daśaratha uvāca | bahujanmopalabdhena puṇyenāyaṃ munīśvaraḥ | dhīraḥ kathitavānnastadyena pāvanatāṃ gatāḥ || 28 ||

Dasharatha said: This great sage, having attained merit over many births, has spoken to us wisely, by which we have been purified.

दशरथ ने कहा: इस महान मुनि ने बहुत से जन्मों में प्राप्त पुण्य के साथ हमें बुद्धिमानी से बात की है, जिससे हम पवित्र हो गए हैं।

7.214.29

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इति तेषु वदत्स्वत्र सभ्येषु सह भूभृता । वसिष्ठः स उवाचेदं ज्ञानपावनया गिरा ॥ २९ ॥

śrīvālmīkiruvāca | iti teṣu vadatsvatra sabhyeṣu saha bhūbhṛtā | vasiṣṭhaḥ sa uvācedaṃ jñānapāvanayā girā || 29 ||

Sri Valmiki said: While they were speaking thus among the assembled kings, Vasistha spoke these purifying words of wisdom.

श्री वाल्मीकि ने कहा: जब वे राजाओं के बीच ऐसे बात कर रहे थे, तब वसिष्ठ ने ये पवित्र ज्ञान के शब्द कहे।

7.214.30

राजन्रघुकुलैकेन्दो यदहं वच्मि तत्कुरु । इतिहासकथान्ते हि पूजनीया द्विजातयः ॥ ३० ॥

rājanraghukulaikendho yadahaṃ vacmi tatkuru | itihāsakathānte hi pūjanīyā dvijātayaḥ || 30 ||

O king, the sole luminary of the Raghu dynasty, do what I say. Indeed, at the end of the narrative, the Brahmins should be worshipped.

हे राजन्, रघु वंश के एकमात्र चंद्रमा, मेरे कहे अनुसार करो। वास्तव में, कथा के अंत में ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिए।

7.214.31

तदद्य ब्राह्मणौघांस्त्वं सर्वकामैः प्रपूरय । वेदार्थसमनुष्ठानफलं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥ ३१ ॥

tadadya brāhmaṇaughāṃstvaṃ sarvakāmaiḥ prapūraya | vedārthasamanuṣṭhānaphalaṃ prāpsyasi śāśvatam || 31 ||

Today, you should fulfill all the desires of the Brahmin scholars. By doing so, you will attain the eternal fruit of following the Vedic principles.

आज आप सभी ब्राह्मणों की इच्छाओं को पूरा करें। इससे आप वेद के अर्थ के अनुसार अमर फल प्राप्त करेंगे।

7.214.32

मोक्षोपायकथावस्तुसमाप्तौ द्विजपूजनम् । शक्तितः कीटकेनापि कार्यं किमु महीभृता ॥ ३२ ॥

mokṣopāyakathāvastusamāptau dvijapūjanam | śaktitaḥ kīṭakenāpi kāryaṃ kimu mahībhṛtā || 32 ||

At the end of the story of the means to liberation, the worship of the Brahmins should be done. Even a small insect can perform this duty, let alone a king.

मोक्ष के उपाय की कथा के अंत में ब्राह्मणों की पूजा की जानी चाहिए। एक छोटे कीट भी इस कार्य को कर सकता है, फिर एक राजा तो क्या ही नहीं कर सकता।

7.214.33

इति मौनं वचः श्रुत्वा सहस्राणि नृपो दश । दूतैराकारयामास द्विजानां वेदवादिनाम् ॥ ३३ ॥

iti mauṃaṃ vacaḥ śrutvā sahasrāṇi nṛpo daśa | dūtairākārayāmāsa dvijānāṃ vedavādinām || 33 ||

Having heard this silent speech, the king ordered ten thousand messengers to invite the Brahmins who are scholars of the Vedas.

इस मौन वचन को सुनकर, राजा ने दस हजार दूतों को आदेश दिया कि वे वेद के विद्वानों को आमंत्रित करें।

7.214.34

मथुरायां सुराष्ट्रेषु गौडेषु च वसन्ति ये । तेभ्यः कुलेभ्यःसोऽभ्यर्च्य समानीय द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

mathurāyāṃ surāṣṭreṣu gauḍeṣu ca vasanti ye | tebhyaḥ kulebhyaḥso'bhyarcya samānīya dvijanmanām || 34 ||

In Mathura, Surashtra, and Gauda, wherever they reside, he honored and invited the Brahmins from those families.

मथुरा, सुराष्ट्र और गौड में, जहाँ भी वे रहते हैं, उन परिवारों के ब्राह्मणों को उनका सम्मान करके और आमंत्रित किया।

7.214.35

अधिकात्यधिकज्ञानप्रकृतद्विजभोजनः । तदा दशसहस्राणि भोजयामास भूपतिः ॥ ३५ ॥

adhikātyadhikajñānaprakṛtadvijabhojanaḥ | tadā daśasahasrāṇi bhojayāmāsa bhūpatiḥ || 35 ||

At that time, the king, who was naturally inclined to feed the Brahmins with the highest knowledge, fed ten thousand Brahmins.

उस समय, जो ब्राह्मणों को सबसे ऊँचे ज्ञान से खिलाने के लिए प्रकृति से प्रवृत्त था, राजा ने दस हजार ब्राह्मणों को खिलाया।

7.214.36

यथाभिमतभोज्यान्नदानदक्षिणया तया । एवं संपूज्य तान्विप्रान्पितॄन्देवान्नृपांस्तथा ॥ ३६ ॥

yathābhimatabhojyānnadānadakṣiṇayā tayā | evaṃ saṃpūjya tānviprānpitṛndevānnṛpāṃstathā || 36 ||

With the desired food offerings and gifts, he honored the Brahmins, ancestors, gods, and kings in the same manner.

मनचाही भोजन और दान दक्षिणा से उन ब्राह्मणों, पितरों, देवताओं और राजाओं का इसी प्रकार से सम्मान किया।

7.214.37

पौरामात्यांस्तथा भृत्यान्दीनान्धकृपणांश्च तान्। तस्मिन्दशरथो राजा दिने सह सुहृज्जनैः ॥ ३७ ॥

paurāmātyāṃstathā bhṛtyāndīnāndhakṛpaṇāṃśca tān | tasmindaśaratho rājā dine saha suhṛjjanaḥ || 37 ||

On that day, King Dasharatha, along with his friends, honored the citizens, ministers, servants, the poor, the blind, and the miserable.

उस दिन, राजा दशरथ ने अपने मित्रों के साथ, नागरिकों, मंत्रियों, सेवकों, गरीबों, अंधों और दुःखियों का सम्मान किया।

7.214.38

लब्धसंसृतिसीमान्तश्चकारोत्सवमुत्तमम्। तथा नृपगृहे तस्मिन्कौशेयमणिकाञ्चने ॥ ३८ ॥

labdhasaṃsṛtisīmāntaścakārotsavamuttamam | tathā nṛpagṛhe tasmin kauśeyamaṇikāñcane || 38 ||

Having attained the highest level of prosperity, he celebrated an excellent festival in that royal palace adorned with silk, jewels, and gold.

सर्वोच्च समृद्धि की सीमा प्राप्त करके, उन्होंने उस रेशम, रत्न और सोने से सजे राजमहल में एक उत्तम उत्सव मनाया।

7.214.39

भूषिते नगरे चैव गीर्वाणनगसुन्दरे। ननृतुर्मत्तकामिन्यो विलासिन्यो गृहे गृहे ॥ ३९ ॥

bhūṣite nagare caiva gīrvāṇanagasundare | nanṛtur mattakāminyo vilāsinyo gṛhe gṛhe || 39 ||

In the beautifully adorned city, which was as lovely as the city of the gods, passionate and playful women danced in every house.

सुसज्जित और देवनगरी के समान सुंदर नगर में, हर घर में मतवाली और विलासिनी स्त्रियां नृत्य कर रही थीं।

7.214.40

लसद्वंशलताकांस्यवीणामुरजमर्दलम्। ताण्डवेनोद्धतारावमन्योन्येतरशेखराः ॥ ४० ॥

lasadvāśalatākāṃsyavīṇāmurajamardalam | tāṇḍavenoddhataārāvamanyonyetaraśekharāḥ || 40 ||

With the sound of flutes, lutes, drums, and other instruments, they danced the Tandava dance with great enthusiasm, their hair swaying in rhythm.

बांसुरी, वीणा, मृदंग और अन्य वाद्यों की ध्वनि के साथ, वे बड़े उत्साह के साथ तांडव नृत्य कर रहे थे, उनके बाल ताल पर लहरा रहे थे।

7.214.41

क्षुभ्दीकृतापणकरभ्रान्तिपल्लविताम्बराःमुग्धाट्टहासविक्षिप्तदन्तेन्दुकिरणच्छटाः ॥ ४१ ॥

kṣubdhīkṛtāpaṇakarabhrāntipallavitāmbarāḥmugdhāṭṭahāsavikṣiptadantendukiraṇacchaṭāḥ || 41 ||

The women, with their garments fluttering due to the agitation of their hands, and their teeth gleaming with innocent laughter, danced.

स्त्रियाँ, जिनके हाथों के हिलने से वस्त्र फड़क रहे थे, और जिनके दाँत निर्दोष हँसी से चमक रहे थे, नाच रही थीं।

7.214.42

मदाकुलितहुंकारा लीलासु तरलस्वराःएकपादतलाघातहेलाहतधरातलाः ॥ ४२ ॥

madākulitahuṃkārā līlāsu taralasvarāḥekapādatalāghātahelāhatadharātalāḥ || 42 ||

The women, intoxicated with pride, made humming sounds in their play, their voices trembling, and they struck the ground with one foot, causing it to tremble.

स्त्रियाँ, जो अहंकार से मदमस्त थीं, अपने खेल में गुनगुनाहट कर रही थीं, उनकी आवाजें काँप रही थीं, और वे एक पैर से धरती पर प्रहार कर रही थीं, जिससे धरती काँप रही थी।

7.214.43

स्रग्दामतारविगलत्कुसुमासारपाण्डुराःधारापातितविच्छिन्नहारमुक्तास्खलत्पदाः ॥ ४३ ॥

sragdāmatāravigalatkusumāsārapāṇḍurāḥdhārāpātitavicchinnahāramuktāskhalatpadāḥ || 43 ||

The women, with their garlands loosened and flowers scattered, their complexion pale, and their necklaces broken and scattered, stumbled with faltering steps.

स्त्रियाँ, जिनकी मालाएँ ढीली हो गई थीं और फूल बिखर गए थे, उनका रंग पीला पड़ गया था, और उनके हार टूट गए थे और बिखर गए थे, लड़खड़ाते हुए चल रही थीं।

7.214.44

लोलाभरणसाकारं कामं ननृतुरङ्गनाःपेठुः स्फुटपदं विप्रा बन्दिनोऽप्यङ्गनाश्च ताः ॥ ४४ ॥

lolābharaṇasākāraṃ kāmaṃ nanṛturaṅganāḥpeṭhuḥ sphuṭapadaṃ viprā bandino'pyaṅganāśca tāḥ || 44 ||

The women, with their ornaments swaying, danced in the form of desire. Even the Brahmins and the bards, along with those women, danced with clear steps.

स्त्रियाँ, जिनके आभूषण हिल रहे थे, काम के रूप में नाच रही थीं। ब्राह्मण और कवि भी, उन स्त्रियों के साथ, स्पष्ट कदमों से नाच रहे थे।

7.214.45

पपुरुत्ताण्डवं पानं पानपा मदशालिनःभोज्यं बुभुजिरे चित्रं भूषिता भोजनार्थिनः ॥ ४५ ॥

papuruttāṇḍavaṃ pānaṃ pānapā madaśālinaḥbhojyaṃ bubhujire citraṃ bhūṣitā bhojanārthinaḥ || 45 ||

They drank the intoxicating drink and performed the Tandava dance. Intoxicated with pride, they enjoyed the varied food, adorned and eager to eat.

उन्होंने नशीली शराब पी और तांडव नृत्य किया। अहंकार से मदमस्त, वे विविध भोजन का आनंद ले रहे थे, सजे-धजे और भोजन के लिए उत्सुक।

7.214.46

सुधादिपरिलेपेन रञ्जिता गृहभित्तयः । रेजू रामेन्दुभानेन पुष्पधूपविलेपनैः ॥ ४६ ॥

sudhādiparilepena rañjitā gṛhabhittayaḥ | rejū rāmendubhānena puṣpadhūpavilepanaiḥ || 46 ||

The walls of the houses were decorated with a coating of nectar and other substances, and they shone with the moonlight of Rama, adorned with flowers and incense.

घरों की दीवारें अमृत और अन्य पदार्थों के लेप से सजाई गई थीं, और वे राम के चाँदनी प्रकाश से चमक रही थीं, फूलों और धूप से सजी हुई।

7.214.47

वासांसि वसिताश्चित्राण्युत्तमस्रग्विभूषणाः । चेरुः परिचराश्चेट्यश्चारुगन्धा नृपाध्वरे ॥ ४७ ॥

vāsāṃsi vasitāścitrāṇyuttamasragvibhūṣaṇāḥ | ceruḥ paricarāśceṭyaścārugaṇdhā nṛpādhvare || 47 ||

The servants wore beautiful and colorful garments adorned with the best garlands, and they moved around with pleasant fragrances in the royal ceremony.

सेवक सुंदर और रंगीन वस्त्र पहने हुए थे, जो श्रेष्ठ मालाओं से सजे हुए थे, और वे राजसी समारोह में सुगंधित सुगंधों के साथ घूम रहे थे।

7.214.48

देहयष्टिषु संयोज्य वनिता यक्षकर्दमम् । जग्मुस्ताण्डवनर्तक्यः शृङ्गारात्माङ्गणान्तरम् ॥ ४८ ॥

dehayaṣṭiṣu saṃyojya vanitā yakṣakardamam | jagmustāṇḍavanartakyaḥ śṛṅgārātmāṅgaṇāntaram || 48 ||

The women, adorning their bodies with yaksha paste, went to the inner courtyard to perform the Tandava dance, filled with the essence of love.

स्त्रियाँ, अपने शरीर को यक्ष पेस्ट से सजाकर, प्रेम की आत्मा से भरे अंतरंग आँगन में तांडव नृत्य करने गईं।

7.214.49

भवबहुलनिशावसानहर्षादिति घनमुत्सवमेव सप्तरात्रम् । दशरथनृपतिः सदानभोगश्रियमकरोत्पदमक्षयं समेतः ॥ ४९ ॥

bhavabahulaniśāvasānaharṣāditi ghanamutsavameva saptarātram | daśarathanṛpatiḥ sadānabhogaśriyamakarotpadamakṣayaṃ sametaḥ || 49 ||

King Dasharatha, along with his family, celebrated a grand festival for seven nights, filled with joy at the end of the night of Shiva's abundance, creating everlasting prosperity and enjoyment.

राजा दशरथ, अपने परिवार के साथ, शिव की प्रचुरता की रात के अंत में खुशी से भरे सात रातों का एक grand उत्सव मनाया, जिससे अनंत समृद्धि और आनंद की स्थापना हुई।

Chapter 215

7.215.2

श्रीवाल्मीकिरुवाच । भरद्वाज महाबुद्धे मम शिष्याधिनायक । इति रामादयो ज्ञातज्ञेया निःशोकतां गताः ॥ २ ॥

śrīvālmīkiruvāca | bharadvāja mahābuddhe mama śiṣyādhināyaka | iti rāmādayo jñātajñeyā niḥśokatāṃ gatāḥ || 2 ||

The great sage Valmiki said: O Bharadvaja, the wise one, the leader of my disciples, thus Rama and others, having known the knowable, have attained a state free from sorrow.

महर्षि वाल्मीकि ने कहा: हे बुद्धिमान भरद्वाज, मेरे शिष्यों के नेता, इस प्रकार राम और अन्य जो ज्ञात और ज्ञेय हैं, वे शोक से मुक्त हो गए हैं।

7.215.3

धीरनभ्यस्तसङ्गा हि रामादीनामिवानघ । घनमोहनिमग्नापि विमूढापि न मुह्यति ॥ ३ ॥

dhīranabhyastasaṅgā hi rāmādīnāmivānagha | ghanamohanimagnāpi vimūḍhāpi na muhyati || 3 ||

The wise one, who is not attached to worldly pleasures, like Rama and others, even if immersed in deep delusion, does not get confused.

जो बुद्धिमान है, वह संसारिक भोगों से आसक्त नहीं है, जैसे राम और अन्य, भले ही वह गहरे मोह में डूबा हो, भ्रमित नहीं होता।

7.215.4

एवमेते महासत्त्वा जीवन्मुक्तपदं गताः । राजपुत्रा राघवाद्या राजा दशरथादयः ॥ ४ ॥

evamete mahāsattvā jīvanmuktapadaṃ gatāḥ | rājaputrā rāghavādyā rājā daśarathādayaḥ || 4 ||

Thus, these great beings, the princes like Raghava and others, and King Dasharatha and others, have attained the state of liberation while living.

इस प्रकार, ये महान आत्माएँ, रघुवंशी राजकुमार और अन्य, और राजा दशरथ और अन्य, जीवन मुक्ति की स्थिति प्राप्त कर चुके हैं।

7.215.5

त्वं च पुत्र भरद्वाज स्वयमेवासि मुक्तधीः । सत्यं मुक्ततरोऽस्यद्य श्रुत्वेमां मोक्षसंहिताम् ॥ ५ ॥

tvaṃ ca putra bharadvāja svayamevāsi muktadhīḥ | satyaṃ muktataro'syadya śrutvimāṃ mokṣasaṃhitām || 5 ||

And you, O son Bharadvaja, are indeed liberated in mind. Truly, you will be more liberated today after hearing this treatise on liberation.

और तुम, हे पुत्र भरद्वाज, वास्तव में मन से मुक्त हो। सच में, आज इस मुक्ति के ग्रंथ को सुनने के बाद तुम और अधिक मुक्त होगे।

7.215.6

मोक्षोपायानिमान्पुण्यान्प्रत्यक्षानुभवार्थदान् । बालोप्याकर्ण्य तज्ज्ञत्वं याति का त्वादृशे कथा ॥ ६ ॥

mokṣopāyānimānpunyānpratyakṣānubhavārthadān | bālopyākarṇya tajjñatvaṃ yāti kā tvādṛśe kathā || 6 ||

These means of liberation are pure and give direct experiential knowledge. Even a child, by listening to them, attains knowledge. What then to speak of someone like you?

ये मुक्ति के उपाय पवित्र हैं और प्रत्यक्ष अनुभव का ज्ञान देते हैं। एक बच्चा भी, इन्हें सुनकर, ज्ञान प्राप्त करता है। फिर तुम जैसे के बारे में क्या कहना?

7.215.7

यथा पदं पुण्यमनुप्रयाता महानुभावा रघवो विशोकाः । वसिष्ठवाक्यप्रसरेण साधो गन्तव्यमाद्यं पदमेवमेव ॥ ७ ॥

yathā padam puṇyamanuprayātā mahānubhāvā raghavo viśokāḥ | vasisthavākyaprasareṇa sādho gantavyamādyam padamevameva || 7 ||

Just as the great souls, following the path of virtue, attain the supreme state without sorrow, so should you, O virtuous one, follow the path indicated by the words of Vasistha.

जैसे महानुभाव पुण्य के पथ पर चलकर शोकरहित परम पद को प्राप्त होते हैं, वैसे ही हे साधु, वसिष्ठ के वचनों के अनुसार तुम्हें भी परम पद को प्राप्त करना चाहिए।

7.215.8

सतां नयेनोत्तमसेवया च प्रश्नेन चोदारकथागतेन । विन्दन्ति वेद्यं सुधियोऽप्रमत्ता वसिष्ठसङ्गादिव राघवाद्याः ॥ ८ ॥

satāṃ nayenottamasevayā ca praśnena codārakathāgatena | vindanti vedyaṃ sudhiyo'pramattā vasisthasaṅgādiva rāghavādyāḥ || 8 ||

The wise, who are attentive and follow the path of the virtuous, find the knowable through excellent service, inquiry, and noble discourse, just as Raghava and others did through their association with Vasistha.

जो सत्पुरुषों के मार्ग का अनुसरण करते हैं और सावधान रहते हैं, वे उत्तम सेवा, प्रश्न और उदार कथाओं द्वारा ज्ञेय को प्राप्त करते हैं, जैसे कि रघव और अन्य वसिष्ठ के संग से किया करते थे।

7.215.9

तृष्णावरत्रादृढबन्धबद्धा ये ग्रन्थयोऽज्ञस्य हृदि प्ररूढाः । सर्वे हि ते मोक्षकथाविचाराद्बाला ह्यबाला इव यान्त्यभेदम् ॥ ९ ॥

tṛṣṇāvaratrādṛḍhabandhabaddhā ye granthayo'jñasya hṛdi prarūḍhāḥ | sarve hi te mokṣakathāvicārād bālā hyabālā iva yāntyabhedam || 9 ||

Those who are bound by strong desires and ignorance, with their minds filled with such thoughts, all of them, through the contemplation of liberation stories, become like children, free from differences.

जो तृष्णा और अज्ञान के दृढ़ बन्धन से बंधे हुए हैं, और उनके हृदय में ऐसे विचार भरे हुए हैं, वे सभी मोक्ष कथाओं के विचार से बालकों की तरह भेदरहित हो जाते हैं।

7.215.10

मोक्षाभ्युपायान्सुमहानुभावान् ज्ञास्यन्ति ये तत्त्वविदां वरिष्ठाः । पुनः समेष्यन्ति न संसृतिं ते कोऽर्थः सुताऽन्येन बहूदितेन ॥ १० ॥

mokṣābhyupāyānsumahānubhāvān jñāsyanti ye tattvavidāṃ variṣṭhāḥ | punaḥ sameṣyanti na saṃsṛtiṃ te ko'rthaḥ sutā'nyena bahūditena || 10 ||

Those who know the great means of liberation, the foremost among the knowers of truth, will not return to the cycle of rebirth. What is the use of many other teachings?

जो मोक्ष के महान उपायों को जानते हैं, वे तत्त्वज्ञों में श्रेष्ठ हैं, और वे पुनः संसार के चक्र में नहीं आएंगे। दूसरे बहुत से उपदेशों का क्या लाभ?

7.215.11

बहुश्रुता ये प्रविचार्य सम्यक्प्रबोधितार्थे कथया जनाय । सन्तो वदिष्यन्ति पुनः शिशुत्वं न ते प्रयास्यन्ति किमन्यवाक्यैः ॥ ११ ॥

bahuśrutā ye pravicārya samyakprabodhitārthe kathayā janāya | santo vadiṣyanti punaḥ śiśutvaṃ na te prayāsyanti kimanyavākyaiḥ || 11 ||

Those who have heard much and have properly understood the meaning through reflection will speak to the people. The wise will not speak of childhood again. What is the use of other words?

जो बहुत सुन चुके हैं और विचार करके सही अर्थ को समझ चुके हैं, वे लोगों को बताएंगे। बुद्धिमान लोग पुनः बालपन की बात नहीं करेंगे। दूसरे शब्दों का क्या लाभ?

7.215.12

ये वाचयिष्यन्त्यनपेक्षितार्था ये लेखयिष्यन्ति च पुस्तकं वा । ये कारयिष्यन्त्यपि वाचकं वा व्याख्यातृयुक्तं शुभमार्यदेशे ॥ १२ ॥

ye vācayiṣyantyanapekṣitārthā ye lekhayiṣyanti ca pustakaṃ vā | ye kārayiṣyantyapi vācakaṃ vā vyākhyātṛyuktaṃ śubhamāryadeśe || 12 ||

Those who will recite this without any expectation, those who will write this book, and those who will cause it to be recited or explained in the noble land will be blessed.

जो इसे बिना किसी अपेक्षा के पढ़ेंगे, जो इस पुस्तक को लिखेंगे, और जो इसे पढ़वाएँगे या व्याख्या करवाएँगे, वे आर्य देश में शुभ होंगे।

7.215.13

ते राजसूयस्य फलेन युक्ता मुहुर्मुहुः स्वर्गमुदारसत्त्वाः । मोक्षं प्रयास्यन्ति तृतीयजन्मलाभेन लक्ष्मीमिव पुण्यवन्तः ॥ १३ ॥

te rājasūyasya phalena yuktā muhurmuhuḥ svargamudārasattvāḥ | mokṣaṃ prayāsyanti tṛtīyajanmalābhena lakṣmīmiva puṇyavantaḥ || 13 ||

Those who are endowed with the fruits of the Rajasuya sacrifice will repeatedly attain heaven with noble qualities and will achieve liberation in their third birth, like Lakshmi, the goddess of fortune, who is full of merit.

जो राजसूय यज्ञ के फल से युक्त हैं, वे बार-बार उत्तम गुणों के साथ स्वर्ग प्राप्त करेंगे और अपने तीसरे जन्म में मोक्ष प्राप्त करेंगे, लक्ष्मी की तरह, जो पुण्य से भरी है।

7.215.14

इमां पुरा मोक्षमयीं विचार्य सुसंहितां सद्वचनाद्विरिञ्चः । प्रयुक्तवानेतदचिन्त्यरूपो भवन्त्यसत्याश्च न तस्य वाचः ॥ १४ ॥

imāṃ purā mokṣamayīṃ vicārya susaṃhitāṃ sadvacanādviriñcaḥ | prayuktavānetadacintyarūpo bhavantyasatyāśca na tasya vācaḥ || 14 ||

In ancient times, having contemplated this path to liberation, which is well-composed and based on true words from Brahma, the one with an inconceivable form put it into practice. His words are never untrue.

प्राचीन काल में, इस मोक्ष के मार्ग को सोच-विचार कर, जो अच्छी तरह से संयोजित और ब्रह्मा के सत्य वचनों पर आधारित है, अचिंत्य रूप वाले ने इसे लागू किया। उनके वचन कभी असत्य नहीं होते।

7.215.15

मोक्षाभ्युपायाख्यकथाप्रबन्धे याते समाप्तिं सुधिया प्रयत्नात्। सुवेश्म दत्त्वाभिमतान्नपानदानेन विप्राः परिपूजनीयाः ॥ १५ ॥

mokṣābhyupāyākhyakathāprabandhe yāte samāptiṃ sudhiyā prayatnāt | suveśma dattvābhimatānna pānadānena viprāḥ paripūjanīyāḥ || 15 ||

In the narrative that describes the means to liberation, having reached completion with effort and wisdom, one should offer a good residence, desired food, and drink to the Brahmins, who should be worshipped.

मोक्ष के उपायों की कथा में, जो प्रयास और बुद्धि से पूर्ण हो गई है, उसमें एक अच्छा निवास, इच्छित भोजन और पेय देकर ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिए।

7.215.16

देयं च तेभ्यः खलु दक्षिणादि चित्तेप्सितं स्वस्य धनस्य शक्त्या। मत्वानुरूपं कृतमेव सङ्गपुण्यं यथाशास्त्रमुपैत्यसौ तत्॥ १६ ॥

deyaṃ ca tebhyaḥ khalu dakṣiṇādi cittēpsitaṃ svasya dhanasya śaktyā | matvānurūpaṃ kṛtamēva saṅgapuṇyaṃ yathāśāstramupaiti yasau tat || 16 ||

One should also give to them (the Brahmins) appropriate gifts according to one's ability and the desire of the mind. Considering it suitable, the merit of association is achieved according to the scriptures.

उन्हें (ब्राह्मणों को) अपनी शक्ति और मन की इच्छा के अनुसार उपयुक्त दक्षिणा भी देनी चाहिए। इसे उचित मानकर, संग का पुण्य शास्त्रों के अनुसार प्राप्त होता है।

7.215.17

एतत्ते कथितं कथाक्रमशतैर्बोधाय बुद्धैर्वृहच्छास्त्रं बृंहितब्रह्मतत्त्वममलं दृष्टान्तयुक्त्याञ्चितम्। श्रुत्वैतच्चिरनिर्वृतिं भज भृशं जीवद्विमुक्ताशयो लक्ष्मीं ज्ञानतपःक्रियाक्रमयुतां भुक्त्वाऽक्षयामक्षयः ॥ १७ ॥

etatte kathitaṃ kathākramaśatairbodhāya buddhairvṛhacchāstraṃ bṛṃhitabrahmatattvamamalaṃ dṛṣṭāntayuktyāñcitam | śrutvaetacciranirvṛtiṃ bhaja bhṛśaṃ jīvadvimuktāśayo lakṣmīṃ jñānatapaḥkriyākramayutāṃ bhuktvā'kṣayāmakṣayaḥ || 17 ||

This great scripture, which has been told to you through hundreds of stories to enlighten the wise, is adorned with the pure essence of the expanded Brahman and illustrated with examples and reasoning. Having heard this, attain eternal bliss, O liberated one, and enjoy the imperishable Lakshmi, who is endowed with the sequence of knowledge, austerity, and ritual.

यह महान शास्त्र, जो बुद्धिमानों को बोध देने के लिए सैकड़ों कथाओं द्वारा आपको बताया गया है, विस्तृत ब्रह्म के शुद्ध तत्त्व से सुशोभित है और उदाहरणों और तर्क से अलंकृत है। इसे सुनकर, हे मुक्त आत्मा, चिरन्तन आनंद प्राप्त करो और ज्ञान, तप और क्रिया के क्रम से युक्त अक्षय लक्ष्मी का आनंद लो।

Chapter 216

7.216.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । एतत्ते कथितं राजन्कुम्भयोनेः सुभाषितम् । अमुना तत्त्वमार्गेण तत्पदं प्राप्स्यसि ध्रुवम् ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | etatte kathitaṃ rājankumbhayoneḥ subhāṣitam | amunā tattvamārgeṇa tatpadaṃ prāpsyasi dhruvam || 1 ||

Sri Valmiki said: O King, this has been narrated to you, the excellent words of Kumbhayoni. By this path of truth, you will surely attain that state.

श्री वाल्मीकि ने कहा: हे राजन्, यह तुम्हें कुम्भयोनि के उत्तम वचन कहे गए हैं। इस तत्व मार्ग से तुम निश्चित रूप से उस पद को प्राप्त करोगे।

7.216.2

राजोवाच । भगवन्भवतो दृष्टिर्भवबन्धविनाशनी । आलोकितो यया चाहमुत्तीर्णोऽस्मि भवाम्बुधेः ॥ २ ॥

rājovāca | bhagavanbhava to dṛṣṭirbhava bandhavināśanī | ālokito yayā cāhamuttīrṇo'smi bhavāmbudheḥ || 2 ||

The king said: O Lord, your sight is the destroyer of worldly bonds. By your grace, I have been freed from the ocean of worldly existence.

राजा ने कहा: हे भगवन्, आपकी दृष्टि संसार बंधन की नाशक है। आपकी कृपा से मैं संसार सागर से उबर गया हूँ।

7.216.3

देवदूत उवाच । इत्युक्त्वासौ ततो राजा विस्मयोत्फुल्ललोचनः । उवाच वचनं मां तु मधुर श्लक्ष्णया गिरा ॥ ३ ॥

devadūta uvāca | ityuktvāsau tato rājā vismayotphullalocanaḥ | uvāca vacanaṃ māṃ tu madhura ślakṣṇayā girā || 3 ||

The celestial messenger said: Having said this, the king, with eyes wide open in wonder, spoke to me with sweet and gentle words.

देवदूत ने कहा: ऐसा कहकर, राजा ने आश्चर्य से भरी आँखों से मुझसे मधुर और कोमल वचन कहे।

7.216.4

राजोवाचदेवदूत नमस्तुभ्यं कुशलं चास्तु ते विभोसतां साप्तपदं मैत्रमित्युक्तं तत्त्वया कृतम् ॥ ४ ॥

rājovācadevadūta namastubhyaṃ kuśalaṃ cāstu te vibhosatāṃ sāptapadaṃ maitramityuktaṃ tattvayā kṛtam || 4 ||

The king said: O divine messenger, I bow to you. May you be well. May your friendship last for seven steps. This has been said by you.

राजा ने कहा: हे देवदूत, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। तुम्हारा कल्याण हो। तुम्हारी मित्रता सात कदमों तक रहे। यह तुमने कहा है।

7.216.5

इदानीं गच्छ भद्रं ते देवराजनिवेशनम् । अनेन श्रवणेनाहं निर्वृतो मुदितोऽपि च ॥ ५ ॥

idānīṃ gaccha bhadraṃ te devarājaniveśanam | anena śravaṇenāhaṃ nirvṛto mudito'pi ca || 5 ||

Now go, may you be blessed, to the abode of the king of the gods. By this listening, I am satisfied and delighted.

अब जाओ, तुम्हारा कल्याण हो, देवराज के निवास पर। इस श्रवण से मैं संतुष्ट और प्रसन्न हूँ।

7.216.6

श्रुतार्थं चिन्तयन्नत्र स्थास्यामि विगतज्वरः । इत्युक्तोऽहं ततो भद्रे परं विस्मयमागतः ॥ ६ ॥

śrutārthaṃ cintayannatra sthāsyāmi vigatajvaraḥ | ityukto'haṃ tato bhadre paraṃ vismayamāgataḥ || 6 ||

Reflecting on the meaning of what I have heard, I will stay here free from fever. Having been told thus, O blessed one, I have attained great wonder.

जो मैंने सुना है, उसके अर्थ पर विचार करते हुए मैं यहाँ ज्वर मुक्त होकर रहूँगा | ऐसा कहकर मैं तुम्हारे पास आया हूँ, हे भद्रे, मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है |

7.216.7

न श्रुतं पूर्वमेवैतज्ज्ञानसारं श्रुतं मया । तेनैव मुदितश्चान्तः पीतामृत इवाधुना ॥ ७ ॥

na śrutaṃ pūrvamevaitajjñātanasāraṃ śrutaṃ mayā | tenaiva muditaścāntaḥ pītāmṛta ivādhunā || 7 ||

I have not heard this essence of knowledge before. By hearing it now, I am delighted within, as if I have drunk nectar.

मैंने पहले इस ज्ञान का सार नहीं सुना था | इसे सुनकर मैं अंदर से प्रसन्न हूँ, मानो मैंने अमृत पी लिया हो |

7.216.8

ततो वाल्मीकिमापृच्छय आगतोऽस्मि त्वदन्तिके । एतत्ते सर्वमाख्यातं त्वया पृष्टं ममानघे । इतः परं गमिष्यामि शक्रस्य सदनं प्रति ॥ ८ ॥

tato vālmīkimāpṛcchaya āgato'smi tvadantike | etatte sarvamākhyātaṃ tvayā pṛṣṭaṃ mamānaghe | itaḥ paraṃ gamiṣyāmi śakrasya sadanaṃ prati || 8 ||

Then, having asked Valmiki, I have come to your presence. All that you have asked me, O sinless one, has been told to you. From here, I will go to the abode of Indra.

तब, वाल्मीकि से पूछकर मैं तुम्हारे पास आया हूँ | हे निष्पाप, तुमने जो पूछा था, वह सब मैंने तुम्हें बता दिया है | अब मैं इंद्र के घर जाऊँगा |

7.216.9

अप्सरा उवाच । नमोऽस्तु ते महाभाग देवदूत त्वया मम । श्रावितादर्थविज्ञानात्परां निर्वृतिमागता ॥ ९ ॥

apsarā uvāca | namo'stu te mahābhāga devadūta tvayā mama | śrāvitādarśavijñānātparāṃ nirvṛtimāgatā || 9 ||

The Apsara said: Salutations to you, O fortunate one, O messenger of the gods. By the knowledge of the meaning of the sound heard from you, I have attained great satisfaction.

अप्सरा ने कहा: तुम्हारे चरणों में प्रणाम, हे भाग्यवान, हे देवदूत | तुमसे सुने गए अर्थ के ज्ञान से मुझे बड़ी संतुष्टि मिली है |

7.216.10

कृतार्था वीतशोकास्मि स्थास्यामि विगतज्वरा । इदानीं गच्छ भद्रं ते यथेच्छं शक्रसंनिधौ ॥ १० ॥

kṛtārthā vītaśokāsmi sthāsyāmi vigatajvarā | idānīṃ gaccha bhadraṃ te yathecchaṃ śakrasannidhau || 10 ||

I am fulfilled and free from sorrow. I will stay here free from fever. Now go, may it be well with you, as you wish, to the presence of Indra.

मैं संतुष्ट और शोकमुक्त हूँ | मैं यहाँ ज्वर मुक्त होकर रहूँगी | अब जाओ, तुम्हारा कल्याण हो, जैसे तुम चाहो, इंद्र के पास |

7.216.11

अग्निवेश्य उवाच । ततः सा सुरुचिः श्रेष्ठा तमेवार्थमचिन्तयत् । स्थिता सा हिमवत्पृष्ठे समीपे गन्धमादने ॥ ११ ॥

agniveśya uvāca | tataḥ sā suruciḥ śreṣṭhā tamevārthamacintayat | sthitā sā himavatpṛṣṭhe samīpe gandhamādane || 11 ||

Agni Veshya said: Then, the best Suruchi thought about that very purpose. She was situated on the peak of the Himalayas, near Gandhamadana.

अग्निवेश्य ने कहा: तब, श्रेष्ठ सुरुचि ने उसी उद्देश्य पर विचार किया। वह हिमालय के शिखर पर, गन्धमादन के पास स्थित थी।

7.216.12

कच्चिदेतच्छ्रुतं पुत्र वसिष्ठस्योपदेशनम् । तत्सर्वमवधार्याथ यथेच्छसि तथा कुरु ॥ १२ ॥

kaccidetacchrutaṃ putra vasiṣṭhasyopadeśanam | tatsarvamavadhāryātha yathecchasi tathā kuru || 12 ||

O son, have you heard the teachings of Vasistha? Understanding all that, do as you wish.

हे पुत्र, क्या तुमने वसिष्ठ के उपदेश सुने हैं? उस सब को समझकर, जैसे तुम चाहो वैसे करो।

7.216.13

कारुण्य उवाच । स्मृतिर्वाग्दृष्टिसत्ता च स्वप्ने वन्ध्यासुतेऽजले । मरीचिका यथा तद्वज्ज्ञानात्सांसारिकी स्थितिः ॥ १३ ॥

kāruṇya uvāca | smṛtirvāgdṛṣṭisattā ca svapne vandhyāsute'jale | marīcikā yathā tadvajjñānātsāṃsārikī sthitiḥ || 13 ||

Karunya said: Memory, speech, sight, and existence are like a mirage in a dream, a barren woman's son, and a waterless cloud. Similarly, the worldly state is an illusion from knowledge.

कारुण्य ने कहा: स्मृति, वाणी, दृष्टि और अस्तित्व स्वप्न, वंध्या का पुत्र और जलहीन बादल की तरह हैं। इसी प्रकार, ज्ञान से संसारिक स्थिति एक भ्रम है।

7.216.14

मम नास्ति कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन । यथाप्राप्तेन तिष्ठामि ह्यकर्मणि क आग्रहः ॥ १४ ॥

mama nāsti kṛtenārtho nākṛteneha kaścana | yathāprāptena tiṣṭhāmi hyakarmaṇi ka āgrahaḥ || 14 ||

I have no purpose in doing or not doing. I remain as I am. What is the attachment in non-action?

मेरा करने या न करने से कोई उद्देश्य नहीं है। मैं जैसा हूं वैसा ही रहता हूं। न करने में आसक्ति क्या है?

7.216.15

अगस्तिरुवाच । इत्युक्त्वा नाम कारुण्य अग्निवेश्यसुतः कृती । प्राप्तकर्मा यथान्यायं काले काले ह्युपाहरत् ॥ १५ ॥

agastiruvāca | ityuktvā nāma kāruṇya agniveśyasutaḥ kṛtī | prāptakarmā yathānyāyaṃ kāle kāle hyupāharat || 15 ||

Agastya said: Having said this, Karunya, the wise son of Agniveshya, performed his duties appropriately at the right times.

अगस्त्य ने कहा: ऐसा कहकर, कारुण्य, अग्निवेश्य का बुद्धिमान पुत्र, अपने कर्तव्य को समय पर उचित रूप से निभाता रहा।

7.216.16

संदेहोऽत्र न कर्तव्यः सुतीक्ष्ण ज्ञानकर्मणि । संशयाद्भ्रश्यते स्वार्थात्संशयात्मा विनश्यति ॥ १६ ॥

sandeho'tra na kartavyaḥ sutīkṣṇa jñānakarmaṇi | saṃśayādbhraśyate svārthātsaṃśayātmā vinaśyati || 16 ||

There should be no doubt in knowledge and action, O Sutikshna. From doubt, one falls from one's own purpose; the doubting self perishes.

ज्ञान और कर्म में कोई संदेह नहीं करना चाहिए, हे सुतीक्ष्ण | संदेह से अपने उद्देश्य से गिर जाता है, संदेह वाला आत्मा नष्ट हो जाता है |

7.216.17

एतच्छ्रुत्वा मुनेर्वाक्यमनेकार्थैक्यबोधनम्। नमस्कृत्य गुरुं प्राह अन्तिके विनयान्वितः ॥ १७ ॥

etacchrutvā munervākyamanekārthaikyabodhanam | namaskṛtya guruṃ prāha antike vinayānvitaḥ || 17 ||

Hearing these words of the sage, which conveyed the unity of various meanings, he bowed to the guru and spoke with humility in his presence.

ऋषि के इन शब्दों को सुनकर, जो कई अर्थों की एकता को बताते हैं, उसने गुरु को प्रणाम किया और विनम्रता से उनके समक्ष बोला |

7.216.18

सुतीक्ष्ण उवाच। नष्टमज्ञानतत्कार्यं प्राप्तं ज्ञानमनुत्तमम्। साक्षिणि स्फुरिताभासे ध्रुवे दीप इव क्रियाः ॥ १८ ॥

sutīkṣṇa uvāca | naṣṭamajñānatatkāryaṃ prāptaṃ jñānamanuttamam | sākṣiṇi sphuritābhāse dhruve dīpa iva kriyāḥ || 18 ||

Sutikshna said: The effects of ignorance are destroyed, and supreme knowledge is attained. Actions shine like a steady lamp in the witnessing consciousness.

सुतीक्ष्ण ने कहा: अज्ञान के परिणाम नष्ट हो गए हैं, और अनुत्तम ज्ञान प्राप्त हुआ है | क्रियाएँ साक्षी चेतना में स्थिर दीपक की तरह चमकती हैं |

7.216.19

सति यस्मिन्प्रवर्तन्ते वित्तेहाः स्पन्दपूर्विकाः। कटकाङ्गदकेयूरनूपुरैरिव काञ्चनम् ॥ १९ ॥

sati yasminpravartante vittehāḥ spandapūrvikāḥ | kaṭakāṅgadakeyūranūpurairiva kāñcanam || 19 ||

In the presence of which, desires vibrate like bracelets, armlets, and anklets made of gold.

जिसके समक्ष, इच्छाएँ सोने के कंगन, बाजूबंद और पायजेब की तरह काँपती हैं |

7.216.20

पयसीव तरङ्गाली यस्मात्स्फुरति दृश्यभूः। तदेवेदं जगत्सर्वं पूर्णे पूर्णं व्यवस्थितम् ॥ २० ॥

payasīva tarangālī yasmātsphurati dṛśyabhūḥ | tadevedaṃ jagatsarvaṃ pūrṇe pūrṇaṃ vyavasthitam || 20 ||

Just as waves arise from water, the entire visible world arises from that complete reality.

जैसे लहरें जल से उठती हैं, वैसे ही पूर्ण वास्तविकता से सारा दृश्य जगत उत्पन्न होता है |

7.216.21

यथाप्राप्तोऽनुवर्तामि को लङ्घयति सद्वचः। भगवंस्त्वत्प्रसादेन ज्ञातज्ञेयोऽस्मि संस्थितः ॥ २१ ॥

yathāprāpto'nuvartāmi ko laṅghayati sadvacaḥ| bhagavaṃstvatprasādena jñātajñeyo'smi saṃsthitaḥ || 21 ||

I follow as I have received, who transgresses the good words? By your grace, O Lord, I am established, having known the knowable.

मैं जैसे प्राप्त हुआ हूँ वैसे ही अनुसरण करता हूँ, कौन सत्य वचन को लंघन करता है? हे भगवन्, आपकी कृपा से मैं ज्ञात ज्ञेय होकर स्थित हूँ।

7.216.22

कृतार्थोऽहं नमस्तेऽस्तु दण्डवत्पतितो भुवि। गुरोरुत्तीर्णता केन शिष्याणामस्ति कर्मणा ॥ २२ ॥

kṛtārtho'haṃ namaste'stu daṇḍavatpatito bhuvi| guroruttīrṇatā kena śiṣyāṇāmasti karmaṇā || 22 ||

I am fulfilled, salutations to you, I fall prostrate on the ground. By what action of the disciples is the elevation of the guru achieved?

मैं कृतार्थ हूँ, आपको नमस्कार है, मैं धरती पर दण्डवत प्रणाम करता हूँ। गुरु की उत्तीर्णता शिष्यों के किस कर्म से होती है?

7.216.23

कायवाङ्मनसा तस्माच्छिष्यैरात्मनिवेदनम्। गुरोरुत्तीर्णता सैव नान्या केनापि कर्मणा ॥ २३ ॥

kāyavāṅmanasā tasmācchīṣyairātmanivedanam| guroruttīrṇatā saiva nānyā kenāpi karmaṇā || 23 ||

Therefore, the disciples should offer themselves with body, speech, and mind. That alone is the elevation of the guru, not by any other action.

इसलिए, शिष्यों को शरीर, वाणी और मन से स्वयं को समर्पित करना चाहिए। वही गुरु की उत्तीर्णता है, किसी अन्य कर्म से नहीं।

7.216.24

स्वामिंस्तव प्रसादेन उत्तीर्णोऽहं भवाम्बुधेः। आपूरितजगज्जालं स्थितोस्मि गतसंशयः ॥ २४ ॥

svāmiṃstava prasādena uttīrṇo'haṃ bhavāmbudheḥ| āpūritajagajjālaṃ sthitosmi gatasaṃśayaḥ || 24 ||

By your grace, O Lord, I am elevated from the ocean of existence. I am established, free from doubts, in the world filled with the web of existence.

आपकी कृपा से, हे स्वामी, मैं अस्तित्व के सागर से उत्तीर्ण हूँ। मैं संशयरहित होकर अस्तित्व के जाल से भरे जगत में स्थित हूँ।

7.216.25

यत्सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति च स्फुटम्। श्रुत्वा ह्युदीर्यते साम्नि तस्मै ब्रह्मात्मने नमः ॥ २५ ॥

yatsarvaṃ khalvidam brahma tajjalāniti ca sphuṭam| śrutvā hyudīryate sāmni tasmai brahmātmane namaḥ || 25 ||

All this is indeed Brahman, and that is clearly the web. Having heard this, one is uplifted in the Sama Veda. Salutations to that Brahman, the Self.

यह सब कुछ वास्तव में ब्रह्म है, और वह स्पष्ट रूप से जाल है। इसे सुनकर, वह सामवेद में उत्थान पाता है। उस ब्रह्म, आत्मा को नमस्कार।

7.216.26

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं श्रीवसिष्ठं नताःस्मः ॥ २६ ॥

brahmānandaṃ paramasukhadaṃ kevalaṃ jñānamūrtiṃ dvandvātītaṃ gaganasadṛśaṃ tattvamasyādilakṣyam | ekaṃ nityaṃ vimalamacalaṃ sarvadhīsākṣibhūtaṃ bhāvātītaṃ triguṇarahitaṃ śrīvasiṣṭhaṃ natāḥsmaḥ || 26 ||

We bow to Śrī Vasistha, who is the bliss of Brahman, the supreme happiness, the embodiment of pure knowledge, beyond duality, like the sky, the ultimate reality, one, eternal, pure, unmoving, the witness of all thoughts, beyond all states, and devoid of the three gunas.

हम श्री वसिष्ठ को प्रणाम करते हैं, जो ब्रह्मानन्द, परम सुख, ज्ञान की मूर्ति, द्वंद्वातीत, आकाश के समान, तत्त्व का लक्ष्य, एक, नित्य, निर्मल, अचल, सभी विचारों के साक्षी, भावातीत और त्रिगुण रहित हैं।

7.216.27

अ इत्यार्षे श्रीवासिष्ठमहारामायणे वाल्मीकीये देवदूतोक्ते मोक्षोपायेषु निर्वाणप्रकरणे उत्तरार्धे बालकाण्डे ॥ २७ ॥

a ityārṣe śrīvāsiṣṭhamahārāmāyaṇe vālmīkīye devadūtokte mokṣopāyeṣu nirvāṇaprakaraṇe uttarārdhe bālakāṇḍe || 27 ||

Thus ends the section on the means of liberation in the Uttara Kanda of the great Ramayana composed by Valmiki, as narrated by the divine messenger, in the tradition of Śrī Vasistha.

इस प्रकार वाल्मीकि द्वारा रचित श्री वसिष्ठ महारामायण के उत्तर काण्ड में देवदूत द्वारा कहे गए मोक्ष के उपायों का निर्वाण प्रकरण समाप्त होता है।